

यह अनुवाद हरमैन शरीफैन सेवक
किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज़ आल सऊद
की ओर से अल्लाह के वास्ते बक्फ़ है।
और उस का बेचना उचित नहीं है।
मुफ़्त में बांटा जाता है।

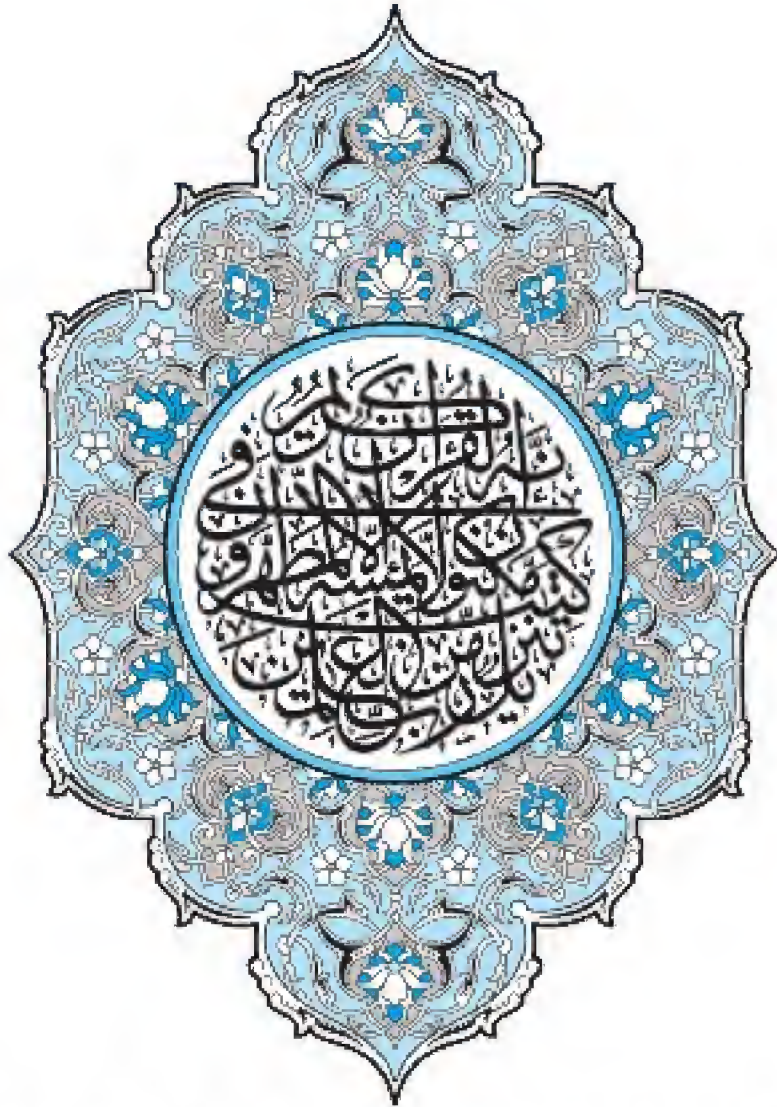


कुर्आन मजीद

और उस के अर्थों का
हिन्दी भाषा में अनुवाद
और व्याख्या।

अनुवाद और व्याख्या मौलाना अजीज़ुल हक़ उमरी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



इस क़र्आन मजीद और उस के अर्थों का अनुवाद तथा व्याख्या के छापने का आदेश
(सऊदी अरब के बादशाह)
हरमैन शरीफ़ैन सेवक किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद ने दिया।

تَرْجُمَ الْأَمْرَ بِطَرِيقَاتٍ عَرَبِيَّةٍ وَمَعْنَاهَا
تَرْجُمَ الْأَمْرَ بِطَرِيقَاتٍ عَرَبِيَّةٍ وَمَعْنَاهَا
تَرْجُمَ الْأَمْرَ بِطَرِيقَاتٍ عَرَبِيَّةٍ وَمَعْنَاهَا

وَقَفَّ لِلَّهِ تَعَالَى مِنْ خَادِمِ الْحَرَمَيْنِ الشَّرِيفَيْنِ
الْمَلِكِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ آلِ سُعُودٍ
وَلَا يَجُوزُ بَيْعُهُ

بِكُلِّ مَخَارِجٍ



مَجْمَعُ الْمَلِكِ فِيهِ دُرَرُ طَبَايعِ الْمُصَنَّفِ الشَّرِيفِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مقدمة

بقلم معالي الشيخ: صالح بن عبدالعزيز بن محمد آل الشيخ
وزير الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد
المشرف العام على المجمع

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:

﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾.

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين: نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

أما بعد:

فإنفاذاً لتوجيهات خدام الحرمين الشريفين، الملك عبد الله بن عبد العزيز آل سعود، -حفظه الله-، بالعناية بكتاب الله، والعمل على تيسير نشره، وتوزيعه بين المسلمين، في مشارق الأرض ومغاربها، وتفسيره، وترجمة معانيه إلى مختلف لغات العالم.

وإيماناً من وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية بأهمية ترجمة معاني القرآن الكريم إلى جميع لغات العالم المهمة تسهيلاً لفهمه على المسلمين الناطقين بغير العربية، وتحقيقاً للبلاغ المأمور به في قوله ﷺ: «بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً».

وخدمةً لإخواننا الناطقين باللغة الهندية بطيب لمجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة المنورة أن يقدم للفارسي الكريم هذه الترجمة إلى اللغة الهندية التي أعدها الشيخ عزيز الحق عمري، وقام بالإشراف عليها

ومراجعتها من قبل المجمع الأستاذ الدكتور محمد الأعظمي، وقام بالتدقيق والمراجعة النهائية الدكتور سعيد أحمد حياة المشرفي.

ونحمد الله سبحانه وتعالى أن وفق لإنجاز هذا العمل العظيم الذي نرجو أن يكون خالصاً لوجهه الكريم، وأن ينفع به الناس.

إننا لنذكر أن ترجمة معاني القرآن الكريم -مهما بلغت دقتها- ستكون قاصرة عن أداء المعاني العظيمة التي يدل عليها النص القرآني المعجز، وأن المعاني التي تؤديها الترجمة إنما هي حصيلة ما بلغه علم المترجم في فهم كتاب الله الكريم، وأنه يعثر بها ما يعثري عمل البشر كله من خطأ ونقص.

ومن ثم نرجو من كل قارئ لهذه الترجمة أن يوافي مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف بالمدينة النبوية بما قد يجده فيها من خطأ أو نقص أو زيادة للإفادة من الاستدراكات في الطباعات القادمة إن شاء الله.

والله موفق، وهو الهادي إلى سواء السبيل، اللهم تقبل منا إنك أنت السميع العليم.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

प्राक्कथन

लेखक:- आदर्णीय शीख सलिह बिन अब्दुल अजीज़
बिन मुहम्मद आले शीख, इस्लामी कर्म, बक्फ
तथा दावत व इरशाद मंत्री, एवं प्रधान निरीक्षक शाह फहद
कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरह।

الحمد لله رب العالمين، القائل في كتابه الكريم:
﴿... قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ﴾.

والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، القائل:
«خيركم من تعلم القرآن وعلمه».

अनुवाद: सारी प्रशंसायें अल्लाह के लिये हैं जो सारे संसारों का पालनहार है। जिस का अपनी किताब में कथन है: (तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली किताब आ गई है।)

और रहमत तथा सलाम हों उस नबी पर जो सब नबियों में श्रेष्ठ और उत्तम है। अर्थात् हमारे नबी आदर्णीय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। जिन का कथन है: „तुम में सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो कुर्आन सीखता और सिखाता है।“

अल्लाह की प्रशंसा और रहमत तथा सलाम के पश्चात्:

हरमैन शरीफैन सेवक: शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज़ आल सऊद (अल्लाह उन की रक्षा करे) का आदेश है कि अल्लाह की पुस्तक (कुर्आन मजीद) के प्रचार, प्रसार तथा विश्व के मुसलमानों के बीच उस के वितरण तथा विभिन्न भाषाओं में उस के अनुवाद एवं व्याख्या की व्यवस्था की जाये।

हरमैन शरीफैन सेवक की आज्ञापालन करते हुये इस्लामी कर्म एवं बक्फ तथा प्रचार प्रसार मंत्रालय विश्व की सभी महत्वपूर्ण भाषाओं में कुर्आन के अर्थों के अनुवाद और व्याख्या करने का प्रयत्न कर रहा है। इन्हीं भाषाओं में हिन्दी भाषा भी है। ताकि हिन्दी भाषक कुर्आन के भावार्थ को सरलता से समझ सकें। ताकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कथन: „मेरी बात लोगों तक पहुँचाओ, चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो।“ के आदेश की पूर्ति हो सके।

इसलिये हमें इस बात से अपार हर्ष हो रहा है कि हम "शाह फहद कुर्आन प्रकाशन साहित्य, मदीना मुनव्वरा" की ओर से पूरे कुर्आन के अर्थों का हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा उस की संक्षेप व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह अनुवाद और व्याख्या डॉक्टर प्रो॰ मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आजमी के संरक्षण में, मौलाना अज़ीज़ुल हक़ उमरी ने तैयार किया है। और कुर्आन प्रकाशन साहित्य की ओर से इस का संशोधन डॉक्टर सईद अहमद हयात मुशर्रफी ने किया है।

हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं कि उस ने हमें यह कार्य करने का साहस दिया। और हम आशा करते हैं कि यह कार्य मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिये होगा। और लोग इस से लाभान्वित होंगे।

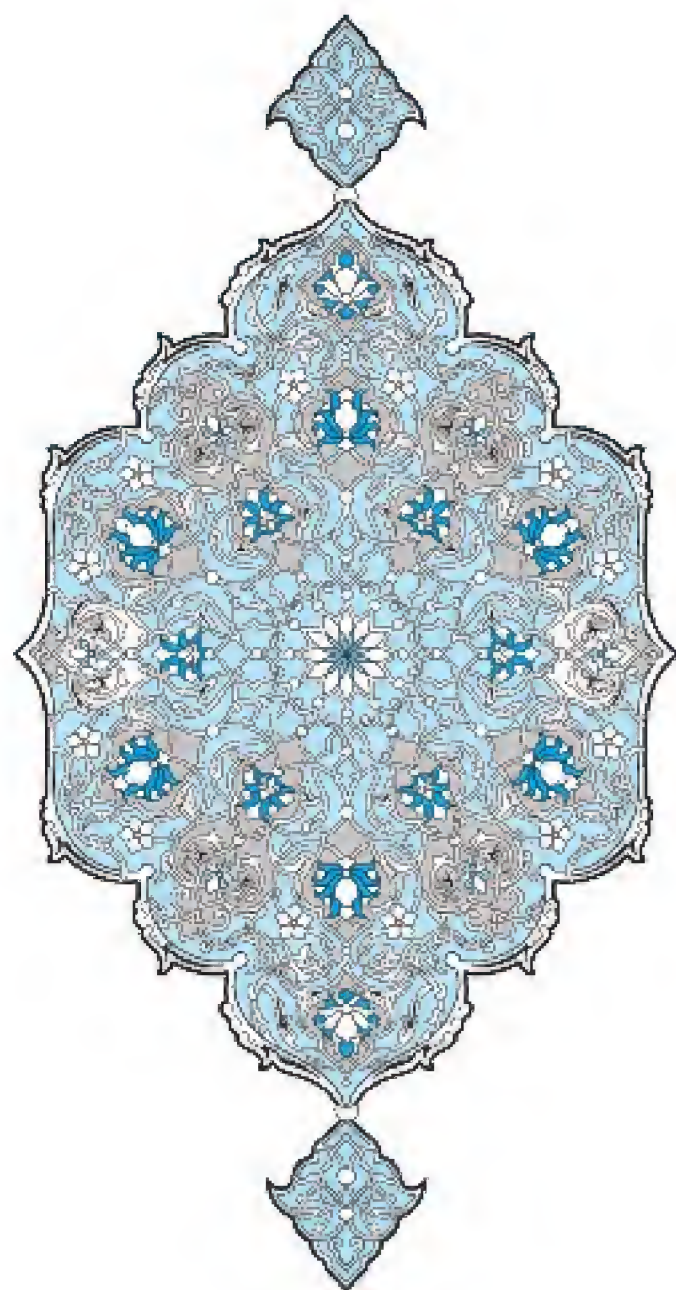
हम मानते हैं कि कुर्आन के अर्थों का कितनी ही गंभीरता से अनुवाद किया जाये पर वह उस के महान् अर्थों को वर्णित नहीं कर सकता। क्योंकि कुर्आन अपनी वर्णन शैली में भी चमत्कार है। अतः अनुवाद के द्वारा जो अर्थ दिखाई देता है वह उस का भावार्थ होता है जो अनुवादक ने कुर्आन से समझा है। जिस में हर प्रकार की त्रुटि संभव है। इसलिये प्रत्येक पाठक से अनुरोध है कि इस में वह जो भी त्रुटि पाये उस से "शाह फहद कुर्आन प्रकाशन साहित्य"।

King Fahd Qur'an printing Complex,
Madina Munawarah, K. S. A.

को अबगत कराये ताकि आगामी प्रकाशन में उस का सुधार कर लिया जाये।

अल्लाह ही हम सब का सहायक तथा मार्गदर्शक है।

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ!



सूरह फातिहा - 1

سُورَةُ الْفَاتِحَةِ

सूरह फातिहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- यह सूरह आरंभिक युग में मक्का में उतरी, जो कुर्आन की भूमिका के समान है। इसी कारण इस का नाम "सूरह फातिहा" अर्थात: "आरंभिक सूरह" है। इस का चमत्कार यह है कि इस की सात आयतों में पूरे कुर्आन का सारांश रख दिया गया है। और इस में कुर्आन के मौलिक संदेश: तौहीद, परलोक तथा रिसालत के विषय को संक्षेप में समो दिया गया है। इस में अल्लाह की दया, उस के पालक तथा पूज्य होने के गुणों को वर्णित किया गया है।
- इस सूरह के अर्थों पर विचार करने से बहुत से तथ्य उजागर हो जाते हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि सागर को गागर में बंद कर दिया गया है।
- इस सूरह में अल्लाह के गुण-गान तथा उस से प्रार्थना करने की शिक्षा दी गई है कि अल्लाह की सराहना और प्रशंसा किन शब्दों से की जाये। इसी प्रकार इस में बंदों को न केवल बंदना की शिक्षा दी गई है बल्कि उन्हें जीवन यापन के गुण भी बताये गये हैं।
- अल्लाह ने इस से पहले बहुत से समुदायों को सुपथ दिखाया किन्तु उन्होंने ने कुपथ को अपना लिया, और इस में उसी कुपथ के अंधेरे से निकलने की दुआ है। बंदा अल्लाह से मार्ग-दर्शन के लिये दुआ करता है तो अल्लाह उस के आगे पूरा कुर्आन रख देता है कि यह सीधी राह है जिसे तू खोज रहा है। अब मेरा नाम लेकर इस राह पर चल पड़।

1. अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. सब प्रशंसायें अल्लाह^[1] के लिये हैं,

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

1 "अल्लाह" का अर्थ: "हकीकी पूज्य" है। जो विश्व के रचयिता विधाता के लिये विशेष है।

जो सारे संसारों का पालनहार^[1] है।

3. जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान्^[2] है।

الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

4. जो प्रतिकार^[3] (बदले) के दिन का मालिक है।

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ

5. (हे अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं, और केवल तुझी से सहायता माँगते^[4] हैं।

إِلَّاكَ نَعْبُدُ وَإِلَّاكَ نَسْتَعِينُ

1 "पालनहार होने" का अर्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की रचना कर के उस के प्रतिपालन की ऐसी विचित्र व्यवस्था की है कि सभी को अपनी आवश्यकता तथा स्थिति के अनुसार सब कुछ मिल रहा है। और विश्व का यह पूरा कार्य, सूर्य, वायु, जल, धरती सब जीवन की रक्षा एवं जीवन की प्रत्येक योग्यता की रखवाली में लगे हुए हैं, इस से सत्य पूज्य का परिचय और ज्ञान होता है।

2 अर्थात् वह विश्व की व्यवस्था एवं रक्षा अपनी अपार दया से कर रहा है, अतः प्रशंसा और पूजा के योग्य भी मात्र वही है।

3 प्रतिकार (बदले) के दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है। आयत का भावार्थ यह है कि सत्य धर्म प्रतिकार के नियम पर आधारित है। अर्थात् जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। जैसे कोई जौ बोकर गोहूँ की, तथा आग में कूद कर शीतल होने की आशा नहीं कर सकता, ऐसे ही भले, बुरे कर्मों का भी अपना स्वभाविक गुण और प्रभाव होता है। फिर संसार में भी कुकर्मों का दुष्परिणाम कभी कभी देखा जाता है। परन्तु यह भी देखा जाता है कि दुराचारी, और अत्यचारी सुखी जीवन निर्वाह कर लेता है, और उसकी पकड़ इस संसार में नहीं होती, इस लिये न्याय के लिये एक दिन अवश्य होना चाहिये। और उसी का नाम "क्यामत" (प्रलय का दिन) है।

"प्रतिकार के दिन का मालिक" होने का अर्थ यह है कि संसार में उस ने इन्सानों को भी अधिकार और राज्य दिये हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब अधिकार उसी का रहेगा। और वही न्याय पूर्वक सब को उन के कर्मों का प्रतिफल देगा।

4 इन आयतों में प्रार्थना के रूप में मात्र अल्लाह ही की पूजा और उसी को सहायतार्थ गुहारने की शिक्षा दी गई है। इस्लाम की परिभाषा में इसी का नाम "तौहीद" (एकेश्वरवाद) है। जो सत्य धर्म का आधार है। और अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी अन्य देवी देवता आदि को पुकारना, उस की पूजा करना, किसी प्रत्यक्ष साधन के बिना किसी को सहायता के लिये गुहारना, क्षचवम अथवा किसी व्यक्ति और वस्तु में अल्लाह का कोई विशेष गुण मानना आदि एकेश्वरवाद (तौहीद) के विरुद्ध है जो अक्षम्य पाप है। जिस के साथ कोई पुण्य का कार्य मान्य नहीं।

6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।
 7. उन का मार्ग जिन पर तू ने पुरस्कार किया।^[1] उन का नहीं जिन पर तेरा प्रकोप^[2] हुआ, और न ही उन का जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ
 صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
 وَلَا الضَّالِّينَ

- 1 इस आयत में सुपथ (सीधी राह) का चिन्ह यह बताया गया है कि यह उन की राह है जिन पर अल्लाह का पुरस्कार हुआ। उन की नहीं जो प्रकोपित हुये, और न उन की जो सत्य मार्ग से बहक गये।
 2 "प्रकोपित" से अभिप्राय वह है जो सत्य धर्म को जानते हुये, मात्र अभिमान अथवा अपने पूर्वजों की परम्परागत प्रथा के मोह में अथवा अपनी बड़ाई के जाने के भय से नहीं मानते।

"कुपथ" (गुमराह) से अभिप्रेत वह है जो सत्य धर्म के होते हुए उस से दूर हो गये और देवी देवताओं आदि में अल्लाह के विशेष गुण मान कर उन को रोग निवारण, दुख दूर करने और सुख संतान आदि देने के लिये गुहारने लगे।

सूरह फातिहा का महत्व:

इस सूरह के अर्थों पर विचार किया जाये तो इस में और कुर्आन के शेष भागों में संक्षेप तथा बिस्तार जैसा संबंध है। अर्थात् कुर्आन की सभी सूरतों में कुर्आन के जो लक्ष्य विस्तार के साथ बताये गये हैं सूरह फातिहा में उन्हीं को संक्षिप्त रूप में बताया गया है। यदि कोई मात्र इसी सूरह के अर्थों को समझ ले तो भी वह सत्य धर्म तथा अल्लाह की इबादत (पूजा) के मूल लक्ष्यों को जान सकता है। और यही पूरे कुर्आन के विवरण का निचोड़ है।

सत्य धर्म का निचोड़:

यदि सत्य धर्म पर विचार किया जाये तो उस में इन चार बातों का पाया जाना आवश्यक है:

- 1- अल्लाह के विशेष गुणों की शुद्ध कल्पना।
- 2- प्रतिफल के नियम का विश्वास। अर्थात् जिस प्रकार संसार की प्रत्येक वस्तु का एक स्वभाविक प्रभाव होता है इसी प्रकार कर्मों के भी प्रभाव और प्रतिफल होते हैं। अर्थात् सुकर्म का शुभ, और कुकर्म का अशुभ फल।
- 3- मरने के पश्चात् आखिरत में जीवन का विश्वास। कि मनुष्य का जीवन इसी संसार में समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि इस के पश्चात् भी एक जीवन है।
- 4- कर्मों के प्रतिकार (बदले) का विश्वास।

सूरह फातिहा की शिक्षा:

सूरह फातिहा एक प्रार्थना है। यदि किसी के दिल तथा मुख से रात दिन यही दुआ निकलती हो तो ऐसी दशा में उस के विचार तथा अक़ीदे (आस्था) की क्या

स्थिति हो सकती है! वह अल्लाह की सराहना करता है, परन्तु उस की नहीं जो वर्णों, जातियों तथा धार्मिक दलों का पूज्य है। बल्कि उस की जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है। इस लिये वह पूरी मानव जाति का समान रूप से प्रतिपालक तथा सब के लिये दयालु है।

फिर उस के गुणों में से दया और न्याय के गुणों ही को याद करता है, मानो अल्लाह उस के लिये सर्वथा दया और न्याय है फिर वह उसके सामने अपना सिर झुका देता है और अपने भक्त होने का इक्कार करता है। वह कहता है: (हे अल्लाह!) मात्र तेरे ही आगे भक्ति और विनय के लिये सिर झुक सकता है। और मात्र तू ही हमारी विवशता और आवश्यकता में सहायता का सहारा है। वह अपनी पूजा तथा प्रार्थना दोनों को एक के साथ जोड़ देता है। और इस प्रकार सभी संसारिक शक्तियों और मानवी आदेशों से निश्चिन्त हो जाता है। अब किसी के द्वार पर उस का सिर नहीं झुक सकता। अब वह सब से निर्भय है। किसी के आगे अपनी विनय का हाथ नहीं फैला सकता। फिर वह अल्लाह से सीधी राह पर चलने की प्रार्थना करता है। इसी प्रकार वह बंचना और गुमराही से शरण (बचाव) की माँग करता है। मानव की विश्व व्यापी बुराई से, वर्ग तथा देश और धार्मिक दलों के भेद भाव से ताकि विभेद का कोई धब्बा भी उसके दिल में न रहे।

यही वह इन्सान है जिस के निर्माण के लिये कुर्आन आया है।

(देखिये: "उम्मुल किताब" - मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

इस सूरह की प्रधानता:

इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि जिब्रील फरिश्ता (अलैहिस्सलाम) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आकाश से एक कड़ी आवाज़ सुनाई दी। जिब्रील ने सिर ऊपर उठाया, और कहा: यह आकाश का द्वार आज ही खोला गया है। आज से पहले यह कभी नहीं खुला। फिर उस से एक फरिश्ता उतरा। और कहा कि यह फरिश्ता धरती पर पहली बार उतरा है। फिर उस फरिश्ते ने सलाम किया, और कहा: आप दो "ज्योती" से प्रसन्न हो जाईये, जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दी गई: "फातिहतुल किताब" (अर्थात: सूरह फातिहा), और सूरह "बकर" की अन्तिम आयतों। आप इन दोनों का कोई भी शब्द पढ़ेंगे तो उस में जो भी है वह आप को प्रदान किया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 806) और सहीह हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "अल्हम्दु लिज्जल्लाहि रब्बिल आलमीन", "सब्अ मसानी" (अर्थात सूरह फातिहा), और महा कुर्आन है। जो विशेष रूप से मुझे प्रदान की गई है। (सहीह बुखारी, 4474)। इसी कारण हदीस में आया है कि जो सूरह फातिहा न पढ़े उस की नमाज़ नहीं होती। (बुखारी- 756, मुस्लिम- 394)।

सूरह बकरह - 2

سُورَةُ الْبَقَرَةِ

सूरह बकरह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 286 आयतें हैं।

- यह सूरह कुर्आन की सब से बड़ी सूरह है। इस के एक स्थान पर "बकरह" (अर्थात्: गाय) की चर्चा आई है जिस के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस की आयत 1 से 21 तक में इस पुस्तक का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि किस प्रकार के लोग इस मार्गदर्शन को स्वीकार करेंगे, और किस प्रकार के लोग इसे स्वीकार नहीं करेंगे।
- आयत 22 से 29 तक में सर्व साधारण लोगों को अपने पालनहार की आज्ञा का पालन करने के निर्देश दिये गये हैं। और जो इस से विमुख हों उन के दुराचारी जीवन और उस के दुष्परिणाम को, और जो स्वीकार कर लें उन के सदाचारी जीवन और शुभपरिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 39 तक के अन्दर प्रथम मनुष्य आदम (अलैहिस्सलाम) की उत्पत्ति, और शैतान के विरोध की चर्चा करते हुये यह बताया गया है कि मनुष्य की रचना कैसे हुई, उसे क्यों पैदा किया गया, और उस की सफलता की राह क्या है?
- आयत 40 से 123 तक, बनी इस्राईल को सम्बोधित किया गया है कि यह अन्तिम पुस्तक और अन्तिम नबी वही है जिन की भविष्यवाणी और उन पर ईमान लाने का वचन तुम से तुम्हारी पुस्तक तौरात में लिया गया है। इस लिये उन पर ईमान लाओ। और इस आधार पर उन का विरोध न करो कि वह तुम्हारे वंश से नहीं है। वह अरबों में पैदा हुये हैं, इसी के साथ उन के दुराचारों और अपराधों का वर्णन भी किया गया है।
- आयत 124 से 167 तक आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के काबा का निर्माण करने तथा उन के धर्म को बताया गया है जो बनी इस्राईल तथा बनी इसमाईल (अरबों) दोनों ही के परम पिता थे कि वह यहूदी, ईसाई या किसी अन्य धर्म के अनुयायी नहीं थे। उन का धर्म यही इस्लाम था। और उन्होंने ने ही काबा बनाने के समय मक्का में एक नबी भेजने की

प्रार्थना की थी जिसे अल्लाह ने पूरी किया। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धर्म पुस्तक कुर्आन के साथ भेजा।

- आयत 168 से 242 तक बहुत से धार्मिक, सामाजिक तथा परिवारिक विधान और नियम बताये गये हैं जो इस्लामी जीवन से संबन्धित हैं। और कुछ मूल आस्थाओं का भी वर्णन किया गया है जिन के कारण मनुष्य मार्गदर्शन पर स्थित रह सकता है।
- आयत 243 से 283 तक के अन्दर मार्गदर्शन केन्द्र काबा को मुश्रिकों के नियंत्रण से मुक्त कराने के लिये जिहाद की प्रेरणा दी गई है, तथा ब्याज को अवैध घोषित कर के आपस के व्यवहार को उचित रखने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 284 से 286 तक अन्तिम आयतों में उन लोगों के ईमान लाने की चर्चा की गई है जो किसी भेद-भाव के बिना अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाये। इस लिये अल्लाह ने उन पर सीधी राह खोल दी। और उन्होंने ने ऐसी दुआयें की जो उन के ईमान को उजागर करती हैं।
- हदीस में है कि जिस घर में सूरह बकरः पढ़ी जाये उस से शैतान भाग जाता है। (सहीह मुस्लिम- 780)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, मीम।
2. यह पुस्तक है, जिस में कोई संशय (संदेह) नहीं, उन को सीधी डगर दिखाने के लिये है, जो (अल्लाह से) डरते हैं।
3. जो गैब (परोक्ष)^[1] पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तथा नमाज़ की

الْقُرْ

ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ

1 इस्लाम की परिभाषा में, अल्लाह, उस के फ़रिश्तों, उस की पुस्तकों, उस के रसूलों तथा अन्तदिवस (प्रलय) और अच्छे बुरे भाग्य पर ईमान (विश्वास) को (ईमान बिल गैब) कहा गया है। (इब्ने कसीर)

وَمِمَّا زَكَّاهُمْ أَن يَقُولُوا

स्थापना करते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दिया है, उस में से दान करते हैं।

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ
وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

4. तथा जो आप (नबी) पर उतारी गई (पुस्तक-क़ुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गई (पुस्तकों^[1]) पर ईमान रखते हैं। तथा आखिरत (परलोक)^[2] पर भी विश्वास रखते हैं।

أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ

5. वही अपने पालनहार की बताई सीधी डगर पर हैं, तथा वही सफल होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذِرَتْهُمْ
أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

6. वास्तव^[3] में जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये (हे नबी!) उन्हें आप सावधान करें या न करें, वह ईमान नहीं लायेंगे।

خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ وَعَلَى
أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

7. अल्लाह ने उन के दिलों तथा कानों पर मुहर लगा दी है। और उन की आँखों पर पर्दे पड़े हैं। तथा उन्हीं के लिये घोर यातना है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

8. और^[4] कुछ लोग कहते हैं कि हम अल्लाह तथा आखिरत (परलोक) पर

1 अर्थात् तौरात, इंजील तथा अन्य आकाशीय पुस्तकों पर।

2 आखिरत पर ईमान का अर्थ है: प्रलय तथा उस के पश्चात् फिर जीवित किये जाने तथा कर्मों के हिसाब एवं स्वर्ग तथा नरक पर विश्वास करना।

3 इस से अभिप्राय वह लोग हैं, जो सत्य को जानते हुए उसे अभिमान के कारण नकार देते हैं।

4 प्रथम आयतों में अल्लाह ने ईमान वालों की स्थिति की चर्चा करने के पश्चात् दो आयतों में काफिरों की दशा का वर्णन किया है। और अब उन मुनाफ़िकों (दुविधावादियों) की दशा बता रहा है जो मुख से तो ईमान की बात कहते हैं लेकिन दिल से अविश्वास रखते हैं।

ईमान ले आये। जब कि वह ईमान नहीं रखते।

الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ٦

9. वह अब्राह को तथा जो ईमान लाये, उन्हें धोखा देते हैं। जब कि वह स्वयं अपने आप को धोखा देते हैं, परन्तु वह इसे समझते नहीं।

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ٧

10. उन के दिलों में रोग (दुविधा) है, जिसे अब्राह ने और अधिक कर दिया। और उन के लिये झूठ बोलने के कारण दुखदायी यातना है।

فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ذَلِذَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ٨

11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ٩

12. सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उन्हें इस का बोध नहीं।

أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِنْ لَا يَشْعُرُونَ ١٠

13. और^[1] जब उन से कहा जाता है कि जैसे और लोग ईमान लाये तुम भी ईमान लाओ, तो कहते हैं कि क्या मूर्खों के समान हम भी विश्वास कर लें? सावधान! वही मूर्ख हैं, परन्तु वह जानते नहीं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْكُفُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ١١

14. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, और जब अकेले में अपने शैतानों (प्रमुखों) के साथ होते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो मात्र परिहास कर रहे हैं।

وَإِذَا قَالُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَؤُونَ ١٢

1 यह दशा उन मुनाफिकों की है जो अपने स्वार्थ के लिये मुसलमान हो गये, परन्तु दिल से इन्कार करते रहे।

15. अल्लाह उन से परिहास कर रहा है। तथा उन्हें उन के कुकर्मों में बहकने का अवसर दे रहा है।
16. यह वे लोग हैं जिन्होंने सीधी डगर (सुपथ) के बदले गुमराही (कुपथ) खरीद ली। परन्तु उन के व्यापार में लाभ नहीं हुआ। और न उन्होंने ने सीधी डगर पाई।
17. उन^[1] की दशा उन के जैसी है, जिन्होंने अग्नि सुलगाई, और जब उन के आस-पास उजाला हो गया, तो अल्लाह ने उन का उजाला छीन लिया, तथा उन्हें ऐसे अंधेरो में छोड़ दिया जिन में उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता।
18. वह गूँगे, बहरे, अंधे हैं। अतः अब वह लौटने वाले नहीं।
19. अथवा^[2] (उन की दशा) आकाश की वर्षा के समान है, जिस में अंधेरे और कड़क तथा विद्युत हो, वह कड़क के कारण मृत्यु के भय से अपने कानों में उंगलियाँ डाल लेते हैं। और अल्लाह, काफिरों को अपने नियंत्रण में लिये हुये हैं।
20. विद्युत उन की आँखों को उचक लेने के समीप हो जाती है, जब उन के लिये चमकती है तो उस के उजाले में चलने लगते हैं, और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े हो जाते हैं। और

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ لَا يَبْصُرُونَ ۝

صُمُّ بَعْمٌ عُتَىٰ قَهْمٌ لَا يُرْجِعُونَ ۝

أَوْ كَصَيْبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمٌ وَرَعْدٌ وَنَارٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۝

يَكَادُ الْبَرْقُ يَغْطِفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 यह दशा उन की है जो संदेह तथा दुविधा में पड़े रह गये। कुछ सत्य को उन्होंने स्वीकार भी किया, फिर भी अविश्वास के अंधेरो ही में रह गये।

2 यह दूसरी उपमा भी दूसरे प्रकार के मुनाफिकों की दशा की है।

यदि अल्लाह चाहे तो उन के कानों को बहरा, और उन की आँखों को अंधा कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

21. हे लोगो! केवल अपने उस पालनहार की इबादत (बंदना) करो, जिस ने तुम्हें तथा तुम से पहले वाले लोगों को पैदा किया, इसी में तुम्हारा बचाव^[1] है।

22. जिस ने धरती को तुम्हारे लिये बिछौना तथा गगन को छत बनाया। और आकाश से जल बरसाया, फिर उस से तुम्हारे लिये प्रत्येक प्रकार के खाद्य पदार्थ उपजाये, अतः जानते हुये^[2] भी उस के साझी न बनाओ।

23. और यदि तुम्हें उस में कुछ संदेह हो जो (अथवा कुर्आन) हम ने अपने भक्त पर उतारा है, तो उस के समान कोई सुरह ले आओ? और अपने समर्थकों को भी, जो अल्लाह के सिवा हों, बुला लो, यदि तुम सच्चे^[3] हो।

24. और यदि यह न कर सको, तथा कर भी नहीं सकोगे, तो उस अग्नि

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا
لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوا لَهُ آدَاءً ۚ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

وَلِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا
بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ ۚ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِّنْ
دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَأْزَنُوا لِلنَّارِ الَّتِي

1 अर्थात् संसार में कुकर्मों तथा परलोक की यातना से।

2 अर्थात् जब यह जानते हो कि तुम्हारा उत्पत्तिकार तथा पालनहार अल्लाह के सिवा कोई नहीं, तो बंदना भी उसी एक की करो, जो उत्पत्तिकार तथा पूरे विश्व का व्यवस्थापक है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी के सत्य होने का प्रमाण आप पर उतारा गया कुर्आन है। यह उन की अपनी बनाई बात नहीं है। कुर्आन ने ऐसी चुनौती अन्य आयतों में भी दी है। (देखिये: सूरह कसस, आयत: 49, इस्रा, आयत: 88, हूद आयत: 13, और यूनस, आयत: 38)

(नरक) से बचो, जिस का ईंधन मानव तथा पत्थर होंगे।

25. हे नबी! उन लोगों को शुभ सूचना दो, जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये कि उन के लिये ऐसे स्वर्ग है, जिन में नहरें बह रही होंगी। जब उन का कोई भी फल उन्हें दिया जायेगा तो कहेंगे: यह तो वही है जो इस से पहले हमें दिया गया। और उन्हें समरूप फल दिये जायेंगे। तथा उन के लिये उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी, और वह उन में सदावासी होंगे।

26. अब्राह, ^[1] मच्छर अथवा उस से तुच्छ चीज से उपमा देने से नहीं लज्जाता। जो ईमान लाये वह जानते है कि यह उन के पालनहार की ओर से उचित है। और जो काफिर (विश्वासहीन) हो गये वह कहते है कि अब्राह ने इस से उपमा दे कर क्या निश्चय किया है? अब्राह इस से बहुतों को गुमराह (कुपथ) करता है, और बहुतों को मार्गदर्शन देता है। तथा जो अवैज्ञाकारी है, उन्हीं को कुपथ करता है।

27. जो अब्राह से पक्का वचन करने के बाद उसे भंग कर देते है, तथा जिसे अब्राह ने जोड़ने का आदेश दिया, उसे तोड़ते है, और धरती में उपद्रव करते है, यही लोग क्षति में पड़ेंगे।

وَتُؤَدُّهَا النَّاسُ وَالْجِبَارَةُ أَعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَنُؤَاهُ مِمَّا نَسْنَأُ بِهِ وَهُمْ فِيهَا مُتَنَبِّهُونَ ۝

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا نَبَوْذَةً مِمَّا يُؤْتِيهَا قَالُوا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَنَا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ۝

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَهُ بِهِ إِنْ يُؤْصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

1 जब अब्राह ने मुनाफ़िकों की दो उपमा दी, तो उन्होंने कहा कि अब्राह ऐसी तुच्छ उपमा कैसे दे सकता है? इसी पर यह आयत उतरी। (देखिये: तफ़्सीर इब्ने कसीर)।

28. तुम अल्लाह का इन्कार कैसे करते हो? जब कि पहले तुम निर्जीव थे, फिर उस ने तुम को जीवन दिया, फिर तुम को मौत देगा, फिर तुम्हें (परलोक में) जीवन प्रदान करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये^[1] जाओगे?

29. वही है, जिस ने धरती में जो भी है, सब को तुम्हारे लिये उत्पन्न किया। फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ, तो बराबर सात आकाश बना दिये। और वह प्रत्येक चीज़ का जानकार है।

30. और (हे नबी! याद करो) जब आपके पालनहार ने फरिश्तों से कहा कि मैं धरती में एक खलीफा^[2] बनाने जा रहा हूँ। वह बोले: क्या तू उस में उसे बनायेगा जो उस में उपद्रव करेगा, तथा रक्त बहायेगा? जब कि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं। (अल्लाह) ने कहा: जो मैं जानता हूँ, वह तुम नहीं जानते।

31. और उस ने आदम^[3] को सभी नाम सिखा दिये, फिर उन को फरिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया, और कहा: मुझे इन के नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

32. सब ने कहा: तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तू ने हमें

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا
فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُعْزِيْكُمْ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ فَاِىَ الْاَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ
اَسْتَوٰى اِلَى السَّمَاءِ فَسَوّٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىْ جَاعِلٌ فِى الْاَرْضِ
خَلِيْفَةًۭ قَالُوا اَتَجْعَلُ فِىْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ
الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ
اِنِّىْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ
فَقَالَ اَنْۢبِئُوْنِىْ بِاَسْمَآءِ هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّاۤ اِلٰهًا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ اَنْتَ

1 अर्थात् परलोक में अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 खलीफा का अर्थ है: स्थानापन्न, अर्थात् ऐसा जीव जिस का वंश हो, और एक दूसरे का स्थान ग्रहण करे। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

3 आदम प्रथम मनु का नाम।

सिखाया है। वास्तव में तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ^[1] है।

الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠﴾

33. (अल्लाह ने) कहा: हे आदम! इन्हें इन के नाम बताओ। और आदम ने जब उन के नाम बता दिये तो (अल्लाह ने) कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की क्षिप्त बातों को जानता हूँ, तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूँ।

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

34. और जब हम ने फरिश्तों से कहा: आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया, उस ने इन्कार तथा अभिमान किया, और काफिरों में से हो गया।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

35. और हम ने कहा: हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो, तथा इस में से जिस स्थान से चाहो मनमानी खाओ, और इस वृक्ष के समीप न जाना, अन्यथा अत्याचारियों में से हो जाओगे।

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

36. तो शैतान ने दोनों को उस से भटका दिया, और जिस (सुख) में थे उस से उन को निकाल दिया, और हम ने कहा: तुम सब उस से उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु हो, और तुम्हारे लिये धरती में रहना, तथा एक निश्चित अवधि^[2] तक उपभोग्य है।

كَذَٰلِكَ هَمَّ الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

1 तत्वज्ञ: अर्थात् जो भेद तथा रहस्य को जानता हो।

2 अर्थात् अपनी निश्चित आयु तक सांसारिक जीवन के संसाधन से लाभान्वित होना है।

37. फिर आदम ने अपने पालनहार से कुछ शब्द सीखे, तो उस ने उसे क्षमा कर दिया, वह बड़ा क्षमी दयावान्^[1] है।
38. हम ने कहा: इस से सब उतरो, फिर यदि तुम्हारे पास मेरा मार्गदर्शन आये तो जो मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उन के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।
39. तथा जो अस्वीकार करेंगे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहेंगे तो वही नारकी है, और वही उस में सदावासी होंगे।
40. हे बनी इस्राईल^[2]! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, तथा मुझ से किया गया वचन पूरा करो, मैं तुम को अपना दिया वचन पूरा करूँगा, तथा मुझी से डरो^[3]।

فَتَلَقَّى آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَإِنَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى
مِّن رَّبِّكُمْ هَذَا يَوْمَئِذٍ فَلَاحُوفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾

يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ
عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِنِّي
فَارَاهُمُونَ ﴿٤٠﴾

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि: आदम ने कुछ शब्द सीखे और उन के द्वारा क्षमा याचना की, तो अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया। आदम के उन शब्दों की व्याख्या भाष्यकारों ने इन शब्दों से की है: "आदम तथा हव्वा दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने प्राणों पर अत्याचार कर लिया, और यदि तू ने हमें क्षमा, और हम पर दया नहीं की तो हम क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे"। (सूरह आराफ, आयत 23)
- 2 इस्राईल आदरणीय इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पौत्र याकूब अलैहिस्सलाम की उपाधि है। इस लिये उन की सन्तान को बनी इस्राईल कहा गया है। यहाँ उन्हें यह प्रेरणा दी जा रही है कि: कुर्आन तथा अन्तिम नबी को मान लें जिस का वचन उन की पुस्तक "तौरात" में लिया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि: इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दो पुत्रों इस्माईल तथा इसहाक हैं। इसहाक की सन्तान से बहुत से नबी आये, परन्तु इस्माईल अलैहिस्सलाम के गोत्र से केवल अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आये।
- 3 अर्थात् वचन भंग करने से।

41. तथा उस (कुरआन) पर ईमान लाओ जो मैं ने उतारा है, वह उस का प्रमाणकारी है, जो तुम्हारे पास^[1] है, और तुम सब से पहले इस के निवर्ती न बन जाओ, तथा मेरी आयतों को तनिक मूल्य पर न बेचो, और केवल मुझी से डरो।

42. तथा सत्य को असत्य में न मिलावो, और न सत्य को जानत हुये छुपाओ।^[2]

43. तथा नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो तथा झुकने वालों के साथ झुको (रुकू करो)।

44. क्या तुम, लोगों को सदाचार का आदेश देते हो, और अपने आप को भूल जाते हो, जब कि: तुम पुस्तक (तौरात) का अध्ययन करते हो, क्या तुम समझ नहीं रखते?^[3]

45. तथा धैर्य और नमाज़ का सहारा लो, निश्चय नमाज़ भारी है, परन्तु विनीतों पर (भारी नहीं)^[4]

وَأٰمِنُوْا بِمَا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْا
اَوَّلَ كٰفِرِيْهِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِآٰتِيْ نَبَا قَلِيْلًا
وَرٰثَتِيْ فَاَتَّقُوْنِ ۝

وَلَا تَلْبِسُوْا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝

وَأَقِمُوْا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَبُوْا مَعَ الرّٰكِبِيْنَ ۝

اَآءَمْرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ
وَاَنْتُمْ تَقْلُوْنَ الْكِتٰبَ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝

وَأَسْبِغُوْا الصُّبْرَ وَالصَّلٰوةَ وَآٰتِهَا الْكِبْرٰةُ الْاَعْلٰى
الْحٰشِعِيْنَ ۝

1 अर्थात धर्मपुस्तक तौरात।

2 अर्थात: अन्तिम नबी के गुणों को, जो तुम्हारी पुस्तकों में वर्णित किये गये हैं।

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस (कथन) में इस का दुष्परिणाम यह बताया गया है कि: प्रलय के दिन एक व्यक्ति को लाया जायेगा, और नरक में फेंक दिया जायेगा। उस की अंतड़ियाँ निकल जायेंगी, और वह उन को लेकर नरक में ऐसे फिरेगा जैसे गधा चक्की के साथ फिरता है। तो नारकी उस के पास जायेंगे तथा कहेंगे कि: तुम पर यह क्या आपदा आ पड़ी है? तुम तो हमें सदाचार का आदेश देते, तथा दुराचार से रोकते थे। वह कहेगा कि मैं तुम्हें सदाचार का आदेश देता था, परन्तु स्वयं नहीं करता था। तथा दुराचार से रोकता था और स्वयं नहीं रुकता था। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 3267)

4 भावार्थ यह है कि धैर्य तथा नमाज़ से अल्लाह की आज्ञा के अनुपालन तथा

46. जो समझते हैं कि: उन्हें अपने पालनहार से मिलना है, और उन्हें फिर उसी की ओर (अपने कर्मों का फल भोगने के लिये) जाना है।

47. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो, जो मैं ने तुम पर किया, और यह कि: तुम्हें संसार वासियों पर प्रधानता दी थी।

48. तथा उस दिन से डरो, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस की कोई अनुशंसा (सिफारिश) मानी जायेगी, और न उस से कोई अर्धदण्ड लिया जायेगा, और न उन्हें कोई सहायता मिल सकेगी।

49. तथा (वह समय याद करो) जब हमने तुम्हें फिरऔनियों^[1] से मुक्ति दिलाई। वह तुम्हें कड़ी यातना दे रहे थे: वह तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, तथा तुम्हारी नारियों को जीवित रहने देते थे, इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से कड़ी परीक्षा थी।

50. तथा (याद करो) जब हम ने तुम्हारे लिये सागर को फाड़ दिया, फिर तुम्हें बचा लिया, और तुम्हारे देखते देखते फिरऔनियों को डुबो दिया।

51. तथा (याद करो) जब हम न मूसा को (तौरात प्रदान करने के लिये) चालीस

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿٤٦﴾

يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنصَبْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٨﴾

وَإِذْ نَجَّيْنَكُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُم بِسُوءِ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٤٩﴾

وَإِذْ فَرَقْنَا بَيْنَكُمُ الْبَحْرَافَاجَيْنِ لَكُمْ وَلِأَخِيهِمْ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾

وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ

सदाचार की भावना उत्पन्न होती है।

1 फिरऔन मिस्र के शासकों की उपाधि होती थी।

रात्री का बचन दिया, फिर उन के पीछे तुम ने बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और तुम अत्याचारी थे।

52. फिर हम ने इस के पश्चात् तुम्हें क्षमा कर दिया, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

53. तथा (याद करो) जब हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) तथा फुर्कान^[1] प्रदान किया, ताकि तुम सीधी डगर पा सको।

54. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: तुम ने बछड़े को पूज्य बना कर अपने ऊपर अत्याचार किया है, अतः तुम अपने उत्पत्तिकार के आगे क्षमा याचना करो, वह यह कि आपस में एक दूसरे^[2] को बध करो, इसी में तुम्हारे उत्पत्तिकार के समीप तुम्हारी भलाई है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा स्वीकार कर ली, वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील, दयावान् है।

55. तथा (याद करो) जब तुम न मूसा से कहा: हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे, जब तक हम अब्राह को आँखों से देख नहीं लेंगे, फिर तुम्हारे देखते देखते तुम्हें कड़क ने धर लिया (जिस से सब निर्जीव होकर गिर गये)।

56. फिर (निर्जीव होने के पश्चात्) हम ने

الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥٢﴾

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِرَاكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَى بَارِيكُمْ فَاقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٥٥﴾

وَإِذْ قُلْتُمْ لِمُوسَى لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرًا فَأَخَذْنَا لِكُلِّ صُفْصَةٍ مِنْكُمْ شَرْجُومًا وَانْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٦﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِ مُوسَى لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٥٧﴾

1 फुर्कान का अर्थ: विवेककारी है, अर्थात् जिस के द्वारा सत्योसत्य में अन्तर और विवेक किया जाये।

2 अर्थात् जिस ने बछड़े की पूजा की है, उसे, जो निर्दोष हो वह हत करो। यही दोषी के लिये क्षमा है। (इब्ने कसीर)

तुम्हें जीवित कर दिया, ताकि तुम हमारा उपकार मानो।

57. और हम ने तुम पर बादलों की छाँव^[1] की, तथा तुम पर "मन्न"^[2] और "सलवा" उतारा, तो उन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम को प्रदान की है खाओ। और उन्होंने ने हम पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर ही अत्याचार कर रहे थे।

58. और (याद करो) जब हम ने कहा कि इस बस्ती^[3] में प्रवेश करो, फिर उस में से जहाँ से चाहो मनमानी खाओ। और उस के द्वार में सज्दा करते (सिर झुकाये) हुये प्रवेश करो, और क्षमा-क्षमा कहते जाओ, हम तुम्हारे पापों को क्षमा कर देंगे, तथा सुकर्मियों को अधिक प्रदान करेंगे।

59. फिर इन अत्याचारियों ने जो बात उन से कही गई थी, उसे दूसरी बात से बदल दिया। तो हम ने इन अत्याचारियों पर आकाश से उन की अवैज्ञा के कारण प्रकोप उतार दिया।

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति के लिये जल की प्रार्थना की तो

وَلَقَدْ لَنَّا عَلَيْكُمْ الْعِمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالتَّلَاقِي كُلَّوَامِنٍ طَيِّبَاتٍ مَّا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

وَلَاذْقَلْنَا اذْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَاذْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَتَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رَجُومًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَايِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ

1 अधिकांश भाष्यकारों ने इसे "तीह" के क्षेत्र से संबंधित माना है। (देखिये: तफ्सीरे कुर्तुबी)।

2 भाष्यकारों ने लिखा है कि: "मन्न" एक प्रकार का अति मीठा स्वादिष्ट गोंद था, जो ओस के समान रात्री के समय आकाश से गिरता था। तथा "सलवा" एक प्रकार के पक्षी थे जो संध्या के समय सेना के पास हजारों की संख्या में एकत्र हो जाते, जिन्हें बनी इस्राईल पकड़ कर खाते थे।

3 साधारण भाष्यकारों ने इस बस्ती को "बैतुल मुकद्दस्" माना है।

हम ने कहा: अपनी लाठी को पत्थर पर मारो तो उस से बारह¹ सोते फूट पड़े। और प्रत्येक परिवार ने अपने पीने के स्थान को पहचान लिया। अल्लाह का दिया खाओ और पीओ, और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

61. तथा (याद करो) जब तुम ने कहा: हे मूसा! हम एक प्रकार का खाना सहन नहीं करेंगे, तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हमारे लिये धरती की उपज, साग, ककड़ी, लहसुन, प्याज, दाल आदि निकाले, (मूसा ने) कहा: क्या तुम उत्तम के बदले तुच्छ माँगते हो? तो किसी नगर में उतर पड़ो, जो तुम ने माँगा है वहाँ वह मिलेगा। और उन पर अपमान तथा दरिद्रता धोप दी गई, और वह अल्लाह के प्रकोप के साथ फिरो। यह इस लिये कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र कर रहे थे, और नबियों की अकारण हत्या कर रहे थे, यह इस लिये कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया।

62. वस्तुतः जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और नसारा (ईसाई) तथा साबी, जो भी अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, और सत्कर्म करेगा, उन का प्रतिफल उन के पालनहार के पास है। और उन्हें

الْحَجَرِ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَا عَشَرَ نَبِئًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ كَوْنًا وَاشْرَبُوا مِنْ رِزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

وَرَادُّكُمْ يَسُوسِي لَنْ نُصِيرَ عَلَى طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُنَا رِزْقَكَ يُخْرِجُ لَنَا مِمَّا تُثْمِتُ الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلِهَا ۚ قَالَ أَتَسْتَبِدُّونَ النَّاسَ هُوَ الَّذِي يَأْتِي هُوَ خَيْرٌ أَهْبِطُوا مَصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءَ وَأَوْقَعَ صَبْرٍ ۚ مِّنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَى وَالصَّبِيَّانَ مَن آمَنَ يَأْتِلُهُ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا أَهْمٌ يَحْزَنُونَ ۝

1 इसराईली वंश के बारह कबीले थे। अल्लाह ने प्रत्येक कबीले के लिये अलग-अलग सोते निकाल दिये ताकि उन के बीच पानी के लिये झगड़ा न हो। (देखिये: तफ्सीरे कुर्तुबी)।

कोई डर नहीं होगा, और न ही वे उदासीन होंगे।^[1]

63. और (याद करो) जब हम ने तूर (पर्वत) को तुम्हारे ऊपर करके तुम से वचन लिया, कि जो हम ने तुम को दिया है, उसे दृढ़ता से पकड़ लो, और उस में (जो आदेश-निर्देश है) उन्हें याद रखो, ताकि तुम (यातना से) बच सको।

64. फिर उस के बाद तुम मुकर गये, तो यदि तुम पर अल्लाह की अनुग्रह और दया न होती, तो तुम क्षतिग्रस्तों में हो जाते।

65. और तुम उन्हें जानते ही हो जिन्होंने शनिवार के बारे में (धर्म की) सीमा का उल्लंघन किया, तो हम ने कहा कि तुम तिरिस्कृत बंदर^[2] हो जाओ।

66. फिर हम ने उसे, उस समय के तथा बाद के लोगों के लिये चेतावनी, और (अल्लाह से) डरने वालों के लिये शिक्षा बना दिया।

67. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अल्लाह तुम्हें एक गाय

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُفُّوا فِرْدَوْهُ خَسِيرِينَ ﴿٦٥﴾

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ

1 इस आयत में यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि मुक्ति केवल उन्हीं के गिरोह के लिये है। आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी अपने समय में सत्य आस्था तथा सत्कर्म के कारण मुक्ति के योग्य थे परन्तु अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप की शिक्षाओं को मानना मुक्ति के लिये अनिवार्य है।

2 यहूदियों के लिये यह नियम है कि वे शनिवार का आदर करें और इस दिन कोई संसारिक कार्य न करें, तथा उपासना करें। परन्तु उन्होंने ने इस का उल्लंघन किया और उन पर यह प्रकोप आया।

बध करने का आदेश देता है। उन्होंने ने कहा: क्या तुम हम से उपहास कर रहे हो? (मूसा ने) कहा: मैं अब्राह की शरण माँगता हूँ कि मूर्खों में हो जाऊँ।

68. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो? (मूसा ने) कहा: वह (अर्थात: अब्राह) कहता है कि वह न बूढ़ी हो, और न बछिया हो, इस के बीच आयु की हो। अतः जो आदेश तुम्हें दिया जा रहा है उसे पूरा करो।

69. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें उस का रंग बता दे। (मूसा ने) कहा: वह कहता है कि पीले गहरे रंग की गाय हो। जो देखने वालों को प्रसन्न कर दे।

70. वह बोले कि अपने पालनहार से हमारे लिये निवेदन करो कि हमें बताये कि वह किस प्रकार की हो? वास्तव में हम गाय के बारे में दुविधा में पड़ गये हैं। और यदि अब्राह ने चाहा तो हम (उस गाय का) पता लगा लेंगे।

71. मूसा बोले: वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सेवा कार्य न करती हो, न खेत (भूमि) जोतती हो, और न खेत सींचती हो, वह स्वस्थ हो, और उस में कोई धब्बा न हो। वह बोले: अब तुम ने उचित बात बताई है। फिर उन्होंने उसे बध कर दिया। जब कि वह समीप थे कि इस काम को न करें।

تَذَبُّحًا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُ الْهَٰرُونَ قَالَ
أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝

قَالُوا ادْعُ لِنَارِكَ يَبْتَئِن لَّنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ
يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَلِكَ فَاذْعُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۝

قَالُوا ادْعُ لِنَارِكَ يَبْتَئِن لَّنَا مَا لَوْ هِيَ قَالَ
إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا
فَسِرُّ الْغَيْبِ ۝

قَالُوا ادْعُ لِنَارِكَ يَبْتَئِن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ
شُبُهَةٌ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَنُهْتَدُونَ ۝

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولَ تُثَمِّرُ الْأَرْضَ
وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا قَالُوا لَنَنْ
جِدَنَّ بِالْحَقِّ قَدْ ذُبِحَ وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ۝

72. और (याद करो) जब तुम ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी, तथा एक दूसरे पर (दोष) थोपने लगे, और अल्लाह को उसे व्यक्त करना था जिसे तुम छुपा रहे थे।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَءْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

73. अतः हम ने कहा कि उस (निहत व्यक्ति के शव) को उस (गाय) के किसी भाग से मारो^[1], इसी प्रकार अल्लाह मुर्दों को जीवित करेगा। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَلِكَ يُخَيِّ اللَّهُ الْمَوْتَى وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

74. फिर यह (निशानियाँ देखने) के बाद तुम्हारे दिल पत्थरों के समान या उन से भी अधिक कठोर हो गये। क्योंकि पत्थरों में कुछ ऐसे होते हैं, जिन से नहरें फूट पड़ती हैं। और कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकल आता है। और कुछ अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنْ مِنَ الْحِجَارَةِ لِمَا يُتَنَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنْ مِنْهَا لِمَا يَنْسَقُونَ فَيَجُرُّ مِنْهُ الْهَاءُ وَإِنْ مِنْهَا لِمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٧٤﴾

75. क्या तुम आशा रखते हो कि (यहूदी) तुम्हारी बात मान लेंगे, जब कि उन में एक गिरोह ऐसा था जो अल्लाह की वाणी (तौरात) को सुनता था, और समझ जाने के बाद जान बूझ कर उस में परिवर्तन कर देता था?

أَقْتَضِعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِالْكِتَابِ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि इस प्रकार निहत व्यक्ति जीवित हो गया। और उस ने अपने हत्यारे को बताया, और फिर मर गया। इस हत्या के कारण ही बनी इस्राईल को गाय की बलि देने का आदेश दिया गया था। अगर वह चाहते तो किसी भी गाय की बलि दे देते, परन्तु उन्होंने ने टाल मटोल से काम लिया, इस लिये अल्लाह ने उस गाय के विषय में कठोर आदेश दिया।

76. तथा जब वह ईमान वालों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि हम भी ईमान^[1] लाये, और जब एकान्त में आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं कि तुम उन्हें वह बातें क्यों बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली^[2] है? इस लिये कि प्रलय के दिन तुम्हारे पालनहार के पास इसे तुम्हारे विरुद्ध प्रमाण बनाये, क्या तुम समझते नहीं हो?

77. क्या वह नहीं जानते कि वह जो कुछ छुपाते तथा व्यक्त करते हैं, उस सब को अल्लाह जानता है?

78. तथा उन में कुछ अनपढ़ है, वह पुस्तक (तौरात) का ज्ञान नहीं रखते, परन्तु निराधार कामनायेँ करते, तथा केवल अनुमान लगाते हैं।

79. तो विनाश है उन के लिये^[3] जो अपने हाथों से पुस्तक लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, ताकि उस के द्वारा तनिक मूल्य खरीदें। तो विनाश है उन के अपने हाथों के लेख के कारण! और विनाश है उन की कमाई के कारण!

80. तथा उन्होंने ने कहा कि हमें नरक की अग्नि गिनती के कुछ दिनों के सिवा स्पर्श नहीं करेगी। (हे नबी!) उन से कहो कि क्या तुम ने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है, कि अल्लाह अपना

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا الْوَأْمَانَ إِذْ أَخْلَا
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتُوعَدُونَ بِمَا فَتُم
اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُخَاجِبَكُمْ بِهِ عِندَ رَبِّكُمْ أَفَلَا
تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُشْرُونَ وَمَا
يُغْلِبُونَ ﴿٧٧﴾

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا عَمَائٍ
وَلَنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾

قَوْلِ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ
يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيُشْرَوْا بِهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا قَوْلِ لَهُمْ مِمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَقَوْلِ
لَهُمْ مِمَّا يَكْتُمُونَ ﴿٧٩﴾

وَقَالُوا لَنْ نَمَسَّ النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا مَعْدُودَةً مَثَلُ
أَخَذَ ثَمَرٍ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدٌ أُقْلِنُ يَخْلِفَ اللَّهُ
عَهْدَهُ أَفَرْتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम पर।

2 अर्थात् अन्तिम नबी के विषय में तौरात में बताई है।

3 इस में यहूदी विद्वानों के कुकर्मों को बताया गया है।

वचन भंग नहीं करेगा? बल्कि तुम अल्लाह के बारे में ऐसी बातें करते हो, जिन का तुम्हें ज्ञान नहीं।

81. क्यों^[1] नहीं, जो भी बुराई कमायेगा, तथा उस का पाप उसे घेर लेगा, तो वही नारकीय है। और वही उस में सदावासी होंगे।

82. तथा जो ईमान लायें और सत्कर्म करें, वही स्वर्गीय है। और वह उस में सदावासी होंगे।

83. और (याद करो) जब हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) नहीं करोगे, तथा माता-पिता के साथ उपकार करोगे, और समीपवर्ती संबंधियों, अनाथों, दीन-दुखियों के साथ, और लोगों से भली बात बोलोगे, तथा नमाज़ की स्थापना करोगे, और ज़कात दोगे, फिर तुम में से थोड़े के सिवा सब ने मुंह फेर लिया, और तुम (अभी भी) मुंह फेरे हुए हो।

84. तथा (याद करो) जब हमने तुम से दृढ़ वचन लिया कि आपस में रक्तपात नहीं करोगे, और न अपनों को अपने घरों से निकालोगे। फिर तुम ने स्वीकार किया, और तुम उस के साक्षी हो।

بَلَىٰ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ
قَالَ لَيْسَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٨٢﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ لَا
تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ سُبْحَٰنَ مَا لِلَّذِينَ إِخْسَٰنًا
وَدَى الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَالْتُوا الزَّكَاةَ وَذُكِّرْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا
مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٨٣﴾

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَآءَكُمْ وَلَا
تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيََارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ
وَأَنتُمْ شَٰهِدُونَ ﴿٨٤﴾

1 यहाँ यहूदियों के दावे का खण्डन तथा नरक और स्वर्ग में प्रवेश के नियम का वर्णन है।

85. फिर^[1] तुम वही हो, जो अपनों की हत्या कर रहे हो, तथा अपनों में से एक गिरोह को उन के घरों से निकाल रहे हो, और पाप तथा अत्याचार के साथ उन के विरुद्ध सहायता करते हो, और यदि वे बंदी होकर तुम्हारे पास आयें तो उन का अर्थदण्ड चुकाते हो, जब कि उन को निकालना ही तुम पर हराम (अवैध) था, तो क्या तुम पुस्तक के कुछ भाग पर ईमान रखते हो, और कुछ का इन्कार करते हो? फिर तुम में से जो ऐसा करते हों, तो उन का दण्ड क्या है? इस के सिवा कि सांसारिक जीवन में अपमान तथा प्रलय के दिन अति कड़ी यातना की ओर फेरे जायें, और अब्बाह तुम्हारे कर्तूतों से निश्चेत नहीं है।

86. उन्होंने ने ही आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन खरीद लिया, अतः उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन की सहायता की जायेगी।

87. तथा हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की, और उस के पश्चात् निरन्तर रसूल भेजे, और हम ने मर्यम के पुत्र ईसा को खुली

ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدَاوَةِ وَإِنْ يَأْتُواكُمْ السَّوْءُ لَتَقْعُدَنَّ عَنْهُمْ دُونَهُمْ وَهُمْ مُعْتَمِرُونَ عَلَىٰ كَمَا أَخْرَأْبَاهُمْ أَفْتَوْهُمْ يُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خُزْنٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يَحْقِيقُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَفَعَّلْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ ۖ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ

1 मदीने में यहूदियों के तीन कबीलों में बनी कैनुकाअ और बनी नजीर मदीने के अरब कबीले खजरज के सहयोगी थे। और बनी कुरैजा औस कबीले के सहयोगी थे। जब इन दोनों कबीलों में युद्ध होता तो यहूदी कबीले अपने पक्ष के साथ दूसरे पक्ष के साथी यहूदी की हत्या करते। और उसे बे घर कर देते थे। और युद्ध विराम के बाद पराजित पक्ष के बंदी यहूदी का अर्थदण्ड दे कर यह कहते हुये मुक्त करा देते कि हमारी पुस्तक तौरात का यही आदेश है। इसी का वर्णन अब्बाह ने इस आयत में किया है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

निशानियाँ दीं, और रूहुल कुदुस^[1] द्वारा उसे समर्थन दिया, तो क्या जब भी कोई रसूल तुम्हारी अपनी मनमानी के विरुद्ध कोई बात तुम्हारे पास लेकर आया तो तुम अकड़ गये, अतः कुछ नबियों को झुठला दिया, और कुछ की हत्या करने लगे?

88. तथा उन्होंने ने कहा कि हमारे दिल तो बंद^[2] हैं। बल्कि उन के कुफ्र (इन्कार) के कारण अब्बाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। इसी लिये उन में से बहुत थोड़े ही ईमान लाते हैं।

89. और जब उन के पास अब्बाह की ओर से एक पुस्तक (कुरआन) आ गई, जो उन के साथ की पुस्तक का प्रमाणकारी है, जब कि: इस से पूर्व वह स्वयं काफिरों पर विजय की प्रार्थना कर रहे थे, तो जब उन के पास वह चीज़ आ गई जिसे वह पहचान भी गये, फिर भी उस का इन्कार कर^[3] दिया, तो

بِمَا لَا تَهْتَدَىٰ أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ۝

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ۝

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَهُ اللَّهُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

1 रूहुल कुदुस से अभिप्रेत: फरिश्ता जिवरील अलैहिस्सलाम है।

2 अर्थात्: नबी की बातों का हमारे दिलों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

3 आयत का भावार्थ यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस पुस्तक (कुरआन) के साथ आने से पहले वह काफिरों से युद्ध करते थे, तो उन पर विजय की प्रार्थना करते और बड़ी व्याकुलता के साथ आप के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जिस की भविष्यवाणी उन के नबियों ने की थी, और प्रार्थनायें किया करते थे कि आप शीघ्र आयें, ताकि काफिरों का प्रभुत्व समाप्त हो, और हमारे उत्थान के युग का शुभारंभ हो। परन्तु जब आप आ गये तो उन्होंने आप के नबी होने का इन्कार कर दिया, क्यों कि आप बनी इस्राईल में नहीं पैदा हुये, जो यहूदियों का गोत्र है। फिर भी आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही के पुत्र

काफिरों पर अल्लाह की धिक्कार है।

90. अल्लाह की उतारी हुई (पुस्तक)^[1] का इन्कार कर के बुरे बदले पर इन्होंने अपने प्राणों को बेच दिया, इस द्वेष के कारण कि अल्लाह ने अपना प्रदान (प्रकाशना) अपने जिस भक्त^[2] पर चाहा उतार दिया। अतः वह प्रकोप पर प्रकोप के अधिकारी बन गये, और ऐसे काफिरों के लिये अपमानकारी यातना है।

91. और जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो उतारा^[3] है, उस पर ईमान लाओ तो कहते हैं हम तो उसी पर ईमान रखते हैं जो हम पर उतरा है, और इस के सिवा जो कुछ है उस का इन्कार करते हैं। जब कि वह सत्य है। और उस का प्रमाणकारी है जो उन के पास है। कहो कि फिर इस से पूर्व अल्लाह के नबियों की हत्या क्यों करते थे, यदि तुम ईमान वाले थे तो?

92. तथा मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ ले कर आये। फिर तुम ने अत्याचार करते हुए बछड़े को पूज्य बना लिया।

93. फिर उस दृढ़ वचन को याद करो, जो हम ने तुम्हारे ऊपर तूर (पर्वत)

يَسْمَا شَرَّ وَآيَةٍ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا بِمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ بَعْدَ أَن يُنَزِّلَ اللَّهُ مِنْ قُلُوبِهِمْ عَنْ
مَنْ يُنْشِئُ مِنْ عِبَادِهِ قَبَائِدَ وَيَعْصِبُ عَلَى
غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ امْكُتُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَلْبَسُوا
تُؤْمِنُ بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا
وَرَأَوْا وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ قُلْ
فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ
اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ

इस्माईल अलैहिस्सलाम के वंश से हैं, जैसे बनी इस्राईल उन के पुत्र इस्राईल की संतान हैं।

1 अर्थात् कुर्आन।

2 भक्त अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम को नबी बना दिया।

3 अर्थात् कुर्आन पर।

सूरह नास^[1]- 114

سُورَةُ النَّاسِ

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है जिस का अर्थ इन्सान है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्न तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब बिस्तर पर जाते तो सूरह इक्लास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थात: फलक) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूंकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुखारी: 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।^[2]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ

مَلِكِ النَّاسِ

رَبِّ النَّاسِ

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1-3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

97. (हे नबी!)^[1] कह दो कि जो व्यक्ति जibreel का शत्रु है (तो रहे)। उस ने तो अल्लाह की अनुमति से इस संदेश (कुरआन) को आप के दिल पर उतारा है, जो इस से पूर्व की सभी पुस्तकों का प्रमाणकारी तथा ईमान वालों के लिये मार्गदर्शन एवं (सफलता) का शुभ समाचार है।
98. जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों और उस के रसूलों और जibreel तथा मीकाईल का शत्रु हो, तो अल्लाह काफिरों का शत्रु है।^[2]
99. और (हे नबी!) हम ने आप पर खुली आयतें उतारी हैं, और इस का इन्कार केवल वही लोग^[3] करेंगे जो कुकर्मि हैं।
100. क्या ऐसा नहीं हुआ है कि जब कभी उन्होंने ने कोई वचन दिया तो उन के एक गिरोह ने उसे भंग कर दिया? बल्कि इन में बहुतेरे ऐसे हैं जो ईमान नहीं रखते।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ
عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ
وَمِيكَائِيلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۝

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا
يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۝

أَوْ كَلِمَاتٍ عَاهَدُوا بِهَا وَأَنبَدَاهُ قَوْمٌ مِّنْهُمْ بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

- 1 यहूदी, केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों ही को बुरा नहीं कहते थे, वह अल्लाह के फरिश्ते जibreel को भी गालियाँ देते थे कि वह दया का नहीं, प्रकोप का फरिश्ता है। और कहते थे कि हमारा मित्र मीकाईल है।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने अल्लाह के किसी रसूल -चाहे वह फरिश्ता हो या इन्सान- से बैर रखा तो वह सभी रसूलों का शत्रु तथा कुकर्मि है। (इब्ने कसीर)
- 3 इब्ने अब्बास रजियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि यहूदियों के विद्वान इब्ने सूरिया ने कहा: हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप हमारे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं लाये जिसे हम पहचानते हों। और न आप पर कोई खुली आयत उतारी गई कि हम आप का अनुसरण करें। इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

101. तथा जब उन के पास अल्लाह की ओर से एक रसूल उस पुस्तक का समर्थन करते हुये जो उन के पास है, आ गया^[1] तो उन के एक समुदाय ने जिन को पुस्तक दी गई अल्लाह की पुस्तक को ऐसे पीछे डाल दिया जैसे वह कुछ जानते ही न हों।
102. तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे उस का अनुसरण करने लगे। जब कि सुलैमान ने कभी कुफ़ (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़ तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे, तथा उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर उतारी गई, और वह दोनों किसी को (जादू) नहीं सिखाते जब तक यह न कह देते कि: हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः तू कुफ़ में न पड़। फिर भी वह उन दोनों से वह चीज सीखते जिस के द्वारा वह पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें। और वह अल्लाह की अनुमति बिना इस के द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे जो उन के लिये हानिकारक हों, और लाभकारी न हों। और वह भली भाँति जानते थे कि जो इस का खरीदार बना परलोक में उस का कोई भाग नहीं, तथा कितना बुरा उपभोग्य है जिस

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ
لِمَا مَعَهُمْ بَيِّنَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ أَلْفَوْا
الْكِتَابَ كَمَا كَانَ اللَّهُ ذَا بَصَرٍ أَفْطَنَ
لِكُلِّ شَيْءٍ ۖ فَكَيْفَ يُؤْمِنُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَرَسُولِهِمْ غَوًى ۖ لَهُمْ
الْآلِهَةُ الْغَالِبَةُ ۚ

وَأَتَّبَعُوا مَا تَتْلُو الشَّيَاطِينُ عَلَى مُلْكٍ
سُلَيْمٍ ۖ وَمَا كَفَرُ سُلَيْمٍ وَلَكِنَّ الشَّيَاطِينَ
كَفَرُوا وَيَعْلَمُونَ النَّاسَ الَّتِي خَرَوْا وَمَا أَتَزَلُ عَلَى
الْمُلْكَيْنِ يَبَازِلُ ۚ هَارُوتَ وَمَارُوتَ وَمَا يَظُنُّ
مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا
تَكْفُرْ ۖ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَآئِرٍ بِهِ مِنْ
أَحَدٍ ۚ وَإِذَا ذُنُوقُوا مِنْهُ يَتَذَكَّرُونَ
مَا بَيَّضَرُّهُمْ وَلَا يُنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا
لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ
ۚ وَلِكُلِّ شَيْءٍ مَسْئُورٌ ۖ أَنفُسُهُمْ
كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٥٠﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़र्आन के साथ आ गये।

के बदले वह अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं^[1], यदि वह जानते होते।

103. और यदि वह ईमान लाते, और अल्लाह से डरते, तो अल्लाह के पास इस का जो प्रतिकार (बदला) मिलता, वह उन के लिये उत्तम होता, यदि वह जानते होते।

104. हे ईमान वालो! तुम "राइना"^[2] न कहो, "उन्जुरना" कहो, और ध्यान से बात सुनो, तथा काफिरों के लिये दुखदायी यातना है।

105. अहले किताब में से जो काफिर हो गये, तथा जो मिश्रणवादी हो गये, यह नहीं चाहते कि तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर कोई भलाई उतारी जाये, और

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّوَلَا كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَائِنَا
وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا
الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ خَيْرٍ مِنْ
رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿١٠٥﴾

1. इस आयत का दूसरा अर्थ यह भी किया गया है कि सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, परन्तु शैतानों ने कुफ़्र किया, वह मानव को जादू सिखाते थे और न दो फ़रिश्तों पर जादू उतारा गया, उन शैतानों या मानव में से हारूत तथा मारूत जादू सिखाते थे। (तफ़सीरे कुर्तुबी)। जिस ने प्रथम अनुबाद किया है उस का यह विचार है कि मानव के रूप में दो फ़रिश्तों को उन की परीक्षा के लिये भेजा गया था।

सुलैमान अलैहिस्सलाम एक नबी और राजा हुये हैं। आप दावूद अलैहिस्सलाम के पुत्र थे।

2. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभा में यहूदी भी आ जाते थे। और मुसलमानों को आप से कोई बात समझनी होती तो "राइना" कहते। अर्थात: हम पर ध्यान दीजिये, या हमारी बात सुनिये। इबरानी भाषा में इस का बुरा अर्थ भी निकलता था, जिस से यहूदी प्रसन्न होते थे, इस लिये मुसलमानों को आदेश दिया गया कि: इस के स्थान पर तुम "उन्जुरना" कहा करो। अर्थात हमारी ओर देखिये। (तफ़सीरे कुर्तुबी)

अल्लाह जिस पर चाहे अपनी विशेष दया करता है, और अल्लाह बड़ा दानशील है।

106. हम अपनी कोई आयत निरस्त कर देते अथवा भुला देते हैं तो उस से उत्तम अथवा उस के समान लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जो चाहे¹ कर सकता है?

107. क्या तुम यह नहीं जानते कि: अकाशों तथा धरती का राज्य अल्लाह ही के लिये है, और उस के सिवा तुम्हारा कोई रक्षक और सहायक नहीं है?

108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी प्रकार प्रश्न करो, जैसे मुसा से प्रश्न किये जाते रहे? और जो व्यक्ति ईमान की नीति को कुफ्र से बदल लेगा तो वह सीधी डगर से विचलित हो गया।

109. अहले किताब में से बहुत से चाहते हैं कि तुम्हारे ईमान लाने के पश्चात् अपने द्वेष के कारण तुम्हें कुफ्र की ओर फेर दें जब कि सत्य उन के लिये उजागर हो गया, फिर भी तुम क्षमा से काम लो और जाने दो। यहाँ तक कि अल्लाह अपना निर्णय कर दे। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

مَا نَسْخَرُهُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا لَأَنْتَ عَوِیْتَهَا أَوْ مِثْلَهَا ۚ أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ ذَلِيلٍ وَلَا تَصِيرُوا

أَمْ تُرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلُوا مُوسَى مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْأَمْرَ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝

وَكَثِيرٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُّوْكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ لَقَدْ أَخَذْنَا مِنْ عِبَادِنَا مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْتَصُوا وَاصْصَبُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 इस आयत में यहूदियों के तौरात के आदेशों के निरस्त किये जाने तथा ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबूय्यत के इन्कार का खण्डन किया गया है।

110. तथा तुम नमाज़ की स्थापना करो, और ज़कात दो। और जो भी भलाई अपने लिये किये रहोगे, उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उसे देख रहा है।

111. तथा उन्होंने ने कहा कि कोई स्वर्ग में कदापि नहीं जायेगा, जब तक यहूदी अथवा नसारा^[1] (ईसाई) न हो। यह उन की कामनायें हैं। उन से कहो कि यदि तुम सत्यवादी हो तो कोई प्रमाण प्रस्तुत करो।

112. क्यों नहीं^[2] जो भी स्वयं को अल्लाह की आज्ञा पालन के समर्पित कर देगा, तथा सदाचारी होगा तो उस के पालनहार के पास उस का प्रतिफल है। और उन पर कोई भय नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

113. तथा यहूदियों ने कहा कि ईसाईयों के पास कुछ नहीं। और ईसाईयों ने कहा कि यहूदियों के पास कुछ नहीं है। जब कि वह धर्म पुस्तक^[3] पढ़ते हैं। इसी जैसी बात उन्होंने ने भी कही, जिन के पास धर्मपुस्तक का कोई ज्ञान^[4] नहीं,

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمِمَّا
نَقَضَ مُؤَاظِمُكُمْ مِنْ خَيْرِ مَا جَاءَكُمْ مِنْ
عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا
أَوْ نَصْرًا يَتْلُكَ أَمْ إِنَّا لَأَنبِيَاهُمْ قُلُوبًا
بُرْهَانًا لَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ
أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ
النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ
الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ
قَوْلِهِمْ ۚ قَالَ اللَّهُ إِنَّكُمْ تُجَادِلُونَ فِي آيَاتِهِ
كَأَنُتَوَافِينَ يَتَّبِعُونَ ۝

1 अर्थात् यहूदियों ने कहा कि केवल यहूदी जायेंगे, और ईसाईयों ने कहा कि केवल ईसाई जायेंगे।

2 स्वर्ग में प्रवेश का साधारण नियम अर्थात् मुक्ति एकेध्वरवाद तथा सदाचार पर आधारित है, किसी जाति अथवा गिरोह पर नहीं।

3 अर्थात् तौरात तथा इंजील जिस में सब नबियों पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है।

4 धर्म पुस्तक से अज्ञान अरब थे। जो यह कहते थे कि: (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ नहीं है।

यह जिस विषय में विभेद कर रहे हैं उस का निर्णय अल्लाह प्रलय के दिन उन के बीच कर देगा।

114. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह की मस्जिदों में उस के नाम का वर्णन करने से रोके। और उन्हें उजाड़ने का प्रयत्न करे^[1], उन्हीं के लिये योग्य है कि उस में डरते हुये प्रवेश करें, उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये आखिरत (परलोक) में घोर यातना है।

115. तथा पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं, तुम जिधर भी मुख करो^[2], उधर ही अल्लाह का मुख है। और अल्लाह विशाल अति ज्ञानी है।

116. तथा उन्होंने ने कहा^[3] कि अल्लाह ने कोई संतान बना ली। वह इस से पवित्र है। आकाशों तथा धरती में जो भी है, वह उसी का है, और सब उसी के आज्ञाकारी है।

117. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है। जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये बस यह आदेश देता है कि "हो

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانُوا لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِبِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

وَيَلَهُ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ ۚ فَأَيُّ مَتَاكُوتٍ هَٰذَا وَجْهَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ بَلْ السُّجُودُ لِلَّهِ ۚ إِنَّا فِى السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ لَمُعَلَّمُونَ ۝

بَيِّنَةُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

1 जैसे मक्का वासियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को सन् 6 हिजरी में काबा में आने से रोक दिया। या ईसाईयों ने बैतुल मुकद्दस् को ढाने में बुद्ध नस्सर (राजा) की सहायता की।

2 अर्थात् अल्लाह के आदेशानुसार जिधर भी रुख करोगे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

3 अर्थात् यहूद और नसारा तथा मिश्रणवादियों ने।

जा" और वह हो जाती है।

118. तथा उन्होंने ने कहा जो ज्ञान^[1] नहीं रखते कि अल्लाह हम से बात क्यों नहीं करता, या हमारे पास कोई आयत क्यों नहीं आती। इसी प्रकार की बात इन से पूर्व के लोगों ने कही थी। इन के दिल एक समान हो गये। हम ने उन के लिये निशानियाँ उजागर कर दी हैं जो विश्वास रखते हैं।

119. (हे नबी!) हम ने आप को सत्य के साथ शुभ सूचना देने तथा सावधान^[2] करने वाला बना कर भेजा है। और आप से नारकियों के विषय में प्रश्न नहीं किया जायेगा।

120. हे नबी! आप से यहूदी तथा ईसाई सहमत (प्रसन्न) नहीं होंगे, जब तक आप उन की रीति पर न चलें। कह दो कि सीधी डगर वही है जो अल्लाह ने बताई है। और यदि आप ने उन की आकांक्षाओं का अनुसरण किया, इस के पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह (की पकड़) से आप का कोई रक्षक और सहायक नहीं होगा।

121. और हम ने जिन को पुस्तक प्रदान की है, और उसे वैसे पढ़ते हैं, जैसे

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَنْزِيلًا أَيْنَ تُكَذِّبُ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا
وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ۝

وَلَنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَكْتُمَ
مِلَّتَهُمْ قُلْ إِن هَدَى اللَّهُ فَمَا لَبَسَ وَلَا تَكُونُ
الْبَاطِلَ أَمْوَالَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَصِيٍّ ۝

الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَةٍ

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादियों ने।

2 अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुपालन पर स्वर्ग की शुभ सूचना देने, तथा इन्कार पर नरक से सावधान करने के लिये। इस के पश्चात् भी कोई न माने तो आप उस के उत्तरदायी नहीं हैं।

पढ़ना चाहिये, वही उस पर ईमान रखते हैं। और जो उसे नकारते हैं वही क्षतिग्रस्तों में से हैं।

122. हे बनी इस्राईल! मेरे उस पुरस्कार को याद करो जो तुम पर किया। और यह कि तुम्हें (अपने युग के) संसार-वासियों पर प्रधानता दी थी।

123. तथा उस दिन से डरो जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम नहीं आयेगा, और न उस से कोई अर्धदण्ड स्वीकार किया जायेगा, और न उसे कोई अनुशंसा (सिफारिश) लाभ पहुँचायेगी, और न उन की कोई सहायता की जायेगी।

124. और (याद करो) जब इब्राहीम की उस के पालनहार ने कुछ बातों से परीक्षा ली। और वह उस में पुरा उतरा, तो उस ने कहा कि मैं तुम्हें सब इन्सानों का इमाम (धर्मगुरु) बनाने वाला हूँ। (इब्राहीम ने) कहा: तथा मेरी सन्तान से भी। (अब्राहम ने कहा:) मेरा वचन उन के लिये नहीं जो अत्याचारी¹ हैं।

125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (अर्थात: काबा) को लोगों के लिये बार बार आने का केन्द्र तथा शान्ति स्थल निर्धारित कर दिया। तथा यह आदेश दे दिया कि "मकामे इब्राहीम" को नमाज़ का

أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَٰسِرُونَ ﴿١٢٢﴾

يٰٓبَنِي إِسْرَٰءِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْصَبْتُ عَلَيْكُمْ وَإِنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٢٣﴾

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا يُغْزَىٰ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٢٤﴾

وَإِذِ ابْتَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ ﴿١٢٥﴾

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَنَجَّيْنَا إِبْرَاهِيمَ مِّنْهُم مَّصْرًا وَعَهْدًا إِلَىٰٓ اِبْرَاهِيمَ وَأَسْمِعْنَا أَنَّهُ طَهَرًا يٰٓبَنِي إِسْرَٰءِيلَ اتَّقُوا اللَّهَ وَالْعَٰقِبِينَ وَاللَّوْكُمُ الشُّجُورِ ﴿١٢٦﴾

1 आयत में अत्याचार से अभिप्रेत केवल मानव पर अत्याचार नहीं, बल्कि सत्य को नकारना तथा शिर्क करना भी अत्याचार में सम्मिलित हैं।

स्थान^[1] बना लो। तथा इब्राहीम और इस्माईल को आदेश दिया कि मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) तथा एतिकाफ़^[2] करने वालों, और सज्दा तथा रुकू करने वालों के लिये पवित्र रखो।

126. और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पालनहार से प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस छेत्र को शान्ति का नगर बना दे। तथा इस के वासियों को जो उन में से अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखे, विभिन्न प्रकार की उपज (फलों) से आजीविका प्रदान कर। (अल्लाह ने) कहा: तथा जो काफिर है उन्हें भी मैं थोड़ा लाभ दूँगा, फिर उसे नरक की यातना की ओर बाध्य कर दूँगा। और वह बहुत बुरा स्थान है।

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की नींव ऊँची कर रहे थे। तथा प्रार्थना कर रहे थे: हे हमारे पालनहार! हम से यह सेवा स्वीकार कर ले। तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

128. हे हमारे पालनहार! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना। तथा हमारी संतान से एक ऐसा समुदाय बना

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُمْ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَى عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ ۝

1 "मकामे इब्राहीम" से तात्पर्य वह पत्थर है जिस पर खड़े हो कर उन्होंने ने काबा का निर्माण किया। जिस पर उन के पदचिन्ह आज भी सुरक्षित हैं। तथा तवाफ़ के पश्चात् वहाँ दो रकअत नमाज़ पढ़नी सुन्नत है।

2 "एतिकाफ़" का अर्थ किसी मस्जिद में एकांत में हो कर अल्लाह की इबादत करना है।

أَنْتَ النَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝

दे जो तेरा आज्ञाकारी हो। और हमें
हमारे (हज्ज) की विधियाँ बता दे।
तथा हमें क्षमा कर। वास्तव में तू
अतिक्षमी दयावान् है।

129. हे हमारे पालनहार! उन के बीच
इन्हीं में से एक रसूल भेज, जो उन्हें
तेरी आयतें सुनाये, और उन्हें पुस्तक
(कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत)
की शिक्षा दे। और उन्हें शुद्ध तथा
आज्ञाकारी बना दे। वास्तव में तू ही
प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ^[1] है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو
عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

130. तथा कौन होगा, जो इब्राहीम के
धर्म से विमुख हो जाये परन्तु वही
जो स्वयं को मूर्ख बना ले? जब कि
हम ने उसे संसार में चुन^[2] लिया,
तथा अखिरत (परलोक) में उस की
गणना सदाचारियों में होगी।

وَمَنْ يُرِغِبْ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ الْأَمِّنِ سَفِيهَةٌ
نَفْسُهُ وَقَدْ أَصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي
الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝

131. तथा (याद करो) जब उस के
पालनहार ने उस से कहा: मेरा
आज्ञाकारी हो जा। तो उस ने तुरन्त
कहा: मैं बिस्व के पालनहार का
आज्ञाकारी हो गया।

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝

1 यह इब्राहीम तथा इस्माईल अलैहिमस्सलाम की प्रार्थना का अन्त है। एक रसूल से अभिप्रेत: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। क्योंकि इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में आप के सिवा कोई दूसरा रसूल नहीं हुआ। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मैं अपने पिता इब्राहीम की प्रार्थना, ईसा की शुभ सूचना, तथा अपनी माता का स्वप्न हूँ। आप की माता आमिना ने गर्भ अवस्था में एक स्वप्न देखा कि मुझ से एक प्रकाश निकला, जिस से शाम (देश) के भवन प्रकाशमान हो गये। (देखिये: हाकिम 2600)। इस को उन्होंने ने सहीह कहा है। और इमाम जहबी ने इस की पुष्टि की है।

2 अर्थात् मार्गदर्शन देने तथा नबी बनाने के लिये निर्वाचित कर लिया।

132. तथा इब्राहीम ने अपने पुत्रों को तथा याकूब ने इसी बात पर बल दिया कि: हे मेरे पुत्रो! अल्लाह ने तुम्हारे लिये यह धर्म (इस्लाम) निर्वाचित कर दिया है। अतः मरते समय तक तुम इसी पर स्थिर रहना।

133. क्या तुम याकूब के मरने के समय उपस्थित थे, जब याकूब ने अपने पुत्रों से कहा: मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम किस की इबादत (बंदना) करोगे? उन्होंने ने कहा: हम तेरे तथा तेरे पिता इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक के एक पूज्य की इबादत (बंदना) करेंगे, और उसी के आज्ञाकारी रहेंगे।

134. यह एक समुदाय था जो जा चुका। उन्होंने ने जो कर्म किये वे उन के लिये हैं। तथा जो तुम ने किये वह तुम्हारे लिये। और उन के किये का प्रश्न तुम से नहीं किया जायेगा।

135. और वह कहते हैं कि यहूदी हो जाओ अथवा ईसाई हो जाओ, तुम्हें मार्गदर्शन मिल जायेगा। आप कह दें: नहीं। हम तो एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर हैं, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

136. (हे मुसलमानो!) तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये, तथा उस पर जो (कुरआन) हमारी ओर उतारा गया। और उस पर जो इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब, तथा उन की संतान की

وَوَضَىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَيْنَهُ وَيَعْقُوبَ يُبْقَىٰ إِنَّ
اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ
مُسْلِمُونَ ﴿١٣٢﴾

أَمَرْتُمْ شُهَدَاءَ أَمْرٍ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتَ إِذْ
قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ
الْهَكَ وَالْآلَةَ ابْنَاكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
الْهَآؤِ أَجْمَعَةَ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾

بَلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا
كَسَبْتُمْ وَلَا تَسْأَلُونَ عَنْهَا فَتَأْتِيَكُمْ

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ
مِلَّةُ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٣٥﴾

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْآلِهَآؤِ
وَمَا أَوْثَرُ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أَوْثَرُ الَّذِينَ
رَبُّهُمْ لَا تَقْرَأُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾

और उतारा गया। और जो मूसा तथा ईसा को दिया गया, तथा जो दूसरे नबियों को उन के पालनहार की ओर से दिया गया। हम इन में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम उसी के आज्ञाकारी हैं।

137. तो यदि वह तुम्हारे ही समान ईमान ले आये, तो वह मार्गदर्शन पा लेंगे। और यदि विमुख हों तो वह विरोध में लीन हैं। उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये अल्लाह बस है। और वह सब सुनने वाला और जानने वाला है।

138. तुम सब अल्लाह के रंग^[1] (स्वभाविक धर्म) को ग्रहण कर लो। और अल्लाह के रंग से अच्छा किस का रंग होगा? हम तो उसी की इबादत (बंदना) करते हैं।

139. (हे नबी!) कह दो कि: क्या तुम हम से अल्लाह के (एकत्व) होने के विषय में झगड़ते हो? जब कि वही हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है।^[2] फिर हमारे लिये हमारा कर्म है, और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। और हम तो बस उसी की इबादत (बंदना) करने वाले हैं।

140. हे अहले किताब! क्या तुम कहते हो

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدْ اهْتَدَوْا
وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ مِّسْكِينٌ
اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً
وَنَعْنُ لَهُ عِذَابٌ

قُلْ إِنَّمَا جُؤِنَا إِلَى اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا
أَعْمَالُنَا وَأَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ خَاشِعُونَ

أَمْ نَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ

1 इस में ईसाई धर्म की (वैट्रिज्म) की परम्परा का खण्डन है। ईसाईयों ने पीले रंग का जल बना रखा था। और जब कोई ईसाई होता या उन के यहाँ कोई शिशु जन्म लेता तो उस में स्नान करा के ईसाई बनाते थे। अल्लाह के रंग से अभिप्राय एकेश्वरवाद पर आधारित स्वभाविक धर्म इस्लाम है। (तफ्सीरे कुतुबी)

2 अर्थात् फिर बंदनीय भी केवल वही है।

कि इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक, याकूब तथा उन की संतान यहूदी या ईसाई थी? उन से कह दो कि तुम अधिक जानते हो अथवा अल्लाह? और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा। जिस के पास अल्लाह का साक्ष्य हो, और उसे छुपा दे? और अल्लाह तुम्हारे कर्तूतों से अचेत तो नहीं है^[1]।

141. यह एक समुदाय था, जो जा चुका। उन के लिये उन का कर्म है, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म है। तुम से उन के कर्मों के बारे में प्रश्न नहीं किया जायेगा^[2]।

142. शीघ्र ही मुख लोग कहेंगे कि उन को जिस किबले^[3] पर वह थे, उस से किस बात ने फेर दिया? (हे नबी!) उन्हें बता दो कि पूर्व और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। वह जिसे चाहे सीधी राह पर लगा देता है।

143. और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत (समुदाय) बना दिया, ताकि तुम सब पर साक्षी^[4]

وَيَعْقُوبَ وَالْإِسْحَاقَ كَانُوا يَمُودًا أَوْ تَصْرِيًّا قُلْ
ءَ أَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمْ اللَّهُ لَوْ أَنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ مِمَّنْ كُنتُمْ
شُهَدَاءَ لَأَعْنَدَكُمْ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

بَلْ لَكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مِمَّا
كَسَبْتُمْ عَوَّلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤٢﴾

سَيَقُولُ الشُّقَقَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَهُمْ عَن
قِبَلِهِمُ النَّبِيُّ كَانُوا عَلَيْهَا قُلُوبًا مَشْرِقُ
وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٣﴾

وَلَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ
وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي

1 इस में यहूदियों तथा ईसाईयों के इस दावे का खण्डन किया गया है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम आदि नबी यहूदी अथवा ईसाई थे।

2 अर्थात् तुम्हारे पूर्वजों के सदाचारों से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, और न उन के पापों के विषय में तुम से प्रश्न किया जायेगा, अतः अपने कर्मों पर ध्यान दो।

3 नमाज़ में मुख करने की दिशा।

4 साक्षी होने का अर्थ जैसा कि हदीस में आया है यह है कि प्रलय के दिन नूह अलैहिस्सलाम को बुलाया जायेगा और उन से प्रश्न किया जायेगा कि क्या तुम ने अपनी जाति को संदेश पहुँचाया? वह कहेंगे: हाँ। फिर उन की जाति से प्रश्न किया जायेगा, तो वह कहेंगे कि हमारे पास सावधान करने के लिये कोई नहीं

बनो, और रसूल तुम पर साक्षी हों, और हम ने वह किबला जिस पर तुम थे, इसी लिये बनाया था ताकि यह बात खोल दें कि कौन (अपने धर्म से) फिर जाता है। और यह बात बड़ी भारी थी, परन्तु उन के लिये नहीं जिन्हें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान (अर्थात् बैतुलमक़दिस की दिशा में नमाज़ पढ़ने) को व्यर्थ कर दे,^[1] वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अत्यन्त करुणामय तथा दयावान् है।

144. (हे नबी!) हम आप के मुख को बार बार आकाश की ओर फिरते देख रहे हैं। तो हम अवश्य आप को उस किबले (काबा) की ओर फेर देंगे जिस से आप प्रसन्न हो जायें। तो (अब) अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेर लो^[2], तथा (हे मुसलमानो!) तुम भी जहाँ रहो उसी की ओर मुख किया करो। और निश्चय अहले किताब जानते हैं कि यह उन के पालनहार की ओर से

كُنْتُ عَلَيْهَا إِلَّا لِمَعْلُومٍ مِّن رَّبِّيَ الرَّسُولُ مِمَّن يَنْقَلِبُ
عَلَىٰ عَقْبَيْهِ ۚ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى
اللَّهُ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ عِبْرَانَا ۚ تَنكِتُ اللَّهُ بِالنَّاسِ
لِرُؤُوفٍ رَّحِيمٍ

قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً
تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا
يَعْمَلُونَ ۝

आया। तो अल्लाह तआला नूह अलैहिस्सलाम से कहेगा कि तुम्हारा साक्षी कौन है? वह कहेंगे: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन की उम्मत। फिर आप की उम्मत साक्ष्य देगी कि नूह ने अल्लाह का सन्देश पहुँचाया है। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम पर अर्थात् मुसलमानों पर साक्षी होंगे। (सहीह बुखारी, 4486)

- 1 अर्थात् उस का फल प्रदान करेगा।
- 2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से मदीना प्रस्थान करने के पश्चात्, बैतुलमक़दिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ते रहे। फिर आप को काबा की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया गया।

सत्य है^[1], और अल्लाह उन के कर्मों से असूचित नहीं है।

145. और यदि आप अहले किताब के पास प्रत्येक प्रकार की निशानी ला दें तब भी वह आप के क़िबले का अनुसरण नहीं करेंगे। और न आप उन के क़िबले का अनुसरण करेंगे, और न उन में से कोई दूसरे के क़िबले का अनुसरण करेगा। और यदि ज्ञान आने के पश्चात् आप ने उन की अकांक्षाओं का अनुसरण किया तो आप अत्याचारियों में से हो जायेंगे।

146. और जिन्हें हम ने पुस्तक दी है वह आप को ऐसे ही^[2] पहचानते हैं जैसे अपने पुत्रों को पहचानते हैं। और उन का एक समुदाय जानते हुये भी सत्य को छुपा रहा है।

147. सत्य वही है जो आप के पालनहार की ओर से उतारा गया। अतः आप कदापि सन्देह करने वालों में न हों।

148. प्रत्येक के लिये एक दिशा है, जिस की ओर वह मुख कर रहा है। अतः तुम भलाईयों में अग्रसर बनो। तुम जहाँ भी रहोगे अल्लाह तुम सभी को (प्रलय के दिन) ले आयेगा। निश्चय अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلَيْسَ اتِّبَعَتِ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكِ النَّبِيُّ قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ وَلَيِّسَ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَ لَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُتَعَذِّرِينَ ﴿١٤٧﴾

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّئُهَا فَاتَّبِعُوا مَا خَيْرَ آيَاتٍ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا إِنَّ اللَّهَ عَلَّ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٤٨﴾

1 क्योंकि अंतिम नबी के गुणों में उन की पुस्तकों में बताया गया है कि वह क़िब्ला बदल देंगे।

2 आप के उन गुणों के कारण जो उन की पुस्तकों में अंतिम नबी के विषय में वर्णित किये गये हैं।

149. और आप जहाँ भी निकलें अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें निसन्देह यह आप के पालनहार की ओर से सत्य (आदेश) है, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है।

150. और आप जहाँ से भी निकलें, अपना मुख मस्जिदे हराम की ओर फेरें, और (हे मुसलमानो!) तुम जहाँ भी रहो अपने मुखों को उसी की ओर फेरो, ताकि उन को तुम्हारे विरुद्ध किसी विवाद का अवसर न मिले। मगर उन लोगों के अतिरिक्त जो अत्याचार करें अतः उन से न डरो। मुझी से डरो। और ताकि मैं तुम पर अपना पुरस्कार (धर्मविधान) पूरा कर दूँ और ताकि तुम सीधी डगर पा जाओ।

151. जिस प्रकार हम ने तुम्हारे लिये तुम्हीं में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता तथा तुम को शुद्ध आज्ञाकारी बनाता है, और तुम्हें पुस्तक (क़र्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) सिखाता है, तथा तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम नहीं जानते थे।

152. अतः मुझे याद करो,^[1] मैं तुम्हें याद करूँगा।^[2] और मेरे आभारी रहो। और मेरे कृतघ्न न बनो।

153. हे ईमान वालो! धैर्य तथा नमाज़ का सहारा लो, निश्चय अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوْلٍ وَتَحَاكَ سَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِلَاقَةَ الْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ قَوْلٍ وَتَحَاكَ سَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ قُولُوا أَوْجُوهَكُمْ تَطَرُّعًا لِلنَّاسِ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَحْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلَا تَحْشَوْهُمْ بَعِثْنَا عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمُ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا يَا الضَّعِيفُ وَالضَّالُّونَ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

1 अर्थात् मेरी आज्ञा का अनुपालन और मेरी अराधना करो।

2 अर्थात् अपनी क्षमा और पुरस्कार द्वारा।

154. तथा जो अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह जीवित है, परन्तु तुम (उन के जीवन की दशा) नहीं समझते।

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتٌ بَلْ أحيَاءٌ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٥٤﴾

155. तथा हम अवश्य कुछ भय, भूक तथा धनों और प्राणों तथा खाद्य पदार्थों की कमी से तुम्हारी परीक्षा करेंगे, और धैर्यवानों को शुभ समाचार सुना दो।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْهَوْجِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالشَّرْعِ وَيَكْثُرُ الضَّيِّقِينَ ﴿١٥٥﴾

156. जिन पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं, और हमें उसी के पास फिर कर जाना है।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

157. इन्हीं पर उन के पालनहार की कृपायें तथा दया है, और यही सीधी राह पाने वाले हैं।

وَأُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

158. बेशक सफा तथा मरवा पहाड़ी^[1] अल्लाह (के धर्म) की निशानियों में से हैं। अतः जो अल्लाह के घर का हज्ज या उमरह करे तो उस पर कोई दोष नहीं कि उन दोनों का फेरा लगाये और जो स्वेच्छा से भलाई करे, तो निःसन्देह अल्लाह उस का गुणग्राही अति जानी है।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوَاعْتَمَرَ فَلَا جُنَاHَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

159. तथा जो हमारी उतारी हुई आयतों (अन्तिम नबी के गुणों) तथा मार्गदर्शन को इस के पश्चात् कि:

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا مِنَ الْكِتَابِ وَالْمُذَنَّبِينَ مِنْ بَعْدِهِ مَا يَقْتُلُهُ النَّاسُ فِي الْكُتُبِ أُولَئِكَ

1 यह दो पर्वत हैं जो काबा की पूर्वी दिशा में स्थित हैं। जिन के बीच सात फेरे लगाना हज्ज तथा उमरे का अनिवार्य कर्म है। जिस का आरंभ सफा पर्वत से करना सुन्नत है।

हम ने पुस्तक⁽¹⁾ में उसे लोगों के लिये उजागर कर दिया है, छुपाते हैं उन्हीं को अल्लाह धिक्कारता है⁽²⁾ तथा सब धिक्कारने वाले धिक्कारते हैं।

160. और जिन लोगों ने तौबा (क्षमा याचना) कर ली, और सुधार कर लिया, और उजागर कर दिया, तो मैं उन की तोबा स्वीकार कर लूँगा, तथा मैं अत्यन्त क्षमाशील दयावान् हूँ।

161. वास्तव में जो काफिर (अविश्वासी) हो गये, और इसी दशा में मरे तो वही हैं जिन पर अल्लाह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार है।

162. वह इस (धिक्कार) में सदावासी होंगे, उन से यातना मंद नहीं की जायेगी, और न उन को अवकाश दिया जायेगा।

163. और तुम्हारा पूज्य एक ही⁽³⁾ पूज्य है, उस अत्यन्त दयालु, दयावान् के सिवा कोई पूज्य नहीं।

164. वैशक आकाशों तथा धरती की रचना में, रात तथा दिन के एक दूसरे के पीछे निरन्तर आने जाने में, उन नावों में जो मानव के लाभ के साधनों को लिये सागरों में चलती फिरती हैं, और वर्षा के उस पानी में जिसे अल्लाह आकाश से बरसाता

يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ النَّاسُ

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا فَأُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمُ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَجْعَلُ لَهُمُ اللَّهُ عَذَابًا وَلَا هُمْ يُنْقَرُونَ

وَالْهَكْمَ إِلَهُ وَاحِدًا لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاحْتِلَافٍ أَلِيلٍ وَالنَّهَارِ وَالْقُلُوبِ الَّتِي تَجْرِي فِي الصُّعُرِ مَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَرَكَ فِيهَا مِنْ كُلِّ ذَاتٍ مَرَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسْتَظَلِّينَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا يَتَى الْقَوْمُ يَعْقِلُونَ

1 अर्थात् तौरात, इंजील आदि पुस्तकों में।

2 अल्लाह के धिक्कारने का अर्थ अपनी दया से दूर करना है।

3 अर्थात् जो अपने स्तित्व तथा नामों और गुणों तथा कर्मों में अकेला है।

है, फिर धरती को उस के द्वारा उस के मरण (सूखने) के पश्चात् जीवित करता है, और उस में प्रत्येक जीवों को फैलाता है, तथा वायुओं को फेरने में, और उन बादलों में जो आकाश और धरती के बीच उस की आज्ञा^[1] के अधीन रहते हैं, (इन सब चीजों में) अगणित निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ बूझ रखते हैं।

165. कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उस का साझी बनाते हैं, और उन से, अल्लाह से प्रेम करने जैसा प्रेम करते हैं, तथा जो ईमान लाये वह अल्लाह से सर्वाधिक प्रेम करते हैं, और क्या ही अच्छा होता यदि यह अत्याचारी यातना देखने के समय^[2] जो बात जानेंगे इसी समय^[3] जानते कि सब शक्ति तथा अधिकार अल्लाह ही को है। और अल्लाह का दण्ड भी बहुत कड़ा है (तो अल्लाह के सिवा दूसरे की पूजा अराधना नहीं करते।)

166. जब यह दशा^[4] होगी कि जिस का अनुसरण किया गया^[5] वह

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرْوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ

إِذْ تَنْبَرَأُ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوْا

1 अर्थात् इस विश्व की पूरी व्यवस्था इस बात का तर्क और प्रमाण है कि इस का व्यवस्थापक अल्लाह ही एकमात्र पूज्य तथा अपने गुण कर्मों में एकता है। अतः पूजा अर्चना भी उसी एक की होनी चाहिये। यही समझ बूझ का निर्णय है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 अर्थात् संसार ही में।

4 अर्थात् प्रलय के दिन।

5 अर्थात् संसार में जिन प्रमुखों का अनुसरण किया गया।

अपने अनुयायियों से विरक्त हो जायेंगे, और उन के आपस के सभी सम्बन्ध^[1] टूट जायेंगे।

167. तथा जो अनुयायी होंगे, वह यह कामना करेंगे कि एक बार और हम संसार में जाते, तो इन से ऐसे ही विरक्त हो जाते जैसे यह हम से विरक्त हो गये। ऐसे ही अल्लाह उन के कर्मों को उन के लिये संताप बना कर दिखाएगा, और वह अग्नि से निकल नहीं सकेंगे।

168. हे लोगो! धरती में जो अनुसरण किया गया हलाल (वैध) स्वच्छ चीजें हैं उन्हें खाओ। और शैतान की बताई राहों पर न चलो^[2], वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

169. वह तुम को बुराई तथा निर्लज्जा का आदेश देता है, और यह कि अल्लाह पर उस चीज का आरोप^[3] धरो, जिसे तुम नहीं जानते हो।

170. और जब उन^[4] से कहा जाता है कि जो (कुर्आन) अल्लाह ने उतारा है, उस पर चलो, तो कहते हैं कि हम तो उसी रीति पर चलेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है क्या यदि उन के पूर्वज कुछ न समझते रहे, तथा कुपथ पर रहे हों (तब भी वह

الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الرِّبَابُ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّا كُنَّا نَدْرِكُهُمْ لَسَخَّطْنَا لَهُمْ أَعْيُنَ الْوَحْيِ
كَهَاتِهِمْ وَآوَيْنَا إِلَيْكَ يَوْمَ يُبْعَثُهُمُ اللَّهُ أَعْمَاءَ الْعَمْرِ
حَسْرَتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُمْ بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا
تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالشُّوْءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى
اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

وَأَذِيقُوا لَهُمْ أَصْحَابُ مَا أُنْزِلَ اللَّهُ قَالَُوا بَلْ
نَتَّبِعُ مَا الْفَيْدَا عَلَيْهِ أَبَاءَنَا وَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ
لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ۝

1 अर्थात् सामीप्य, अनुसरण तथा धर्म आदि के।

2 अर्थात् उस की बताई बातों को न मानो।

3 अर्थात् वैध को अवैध करने आदि का।

4 अर्थात् अहले किताब तथा मिश्रणवादियों से।

उन्हीं का अनुसरण करते रहेंगे?)

171. उन की दशा जो काफिर हो गये उस के समान है जो उस (पशु) को पुकारता है, जो हाँक पुकार के सिवा कुछ^[1] नहीं सुनता, यह (काफिर) बहरे, गुंगे तथा अँधे है। इस लिए कुछ नहीं समझते।

172. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से खाओ जो हम ने तुम्हें दी है। तथा अल्लाह की कृतज्ञता का वर्णन करो। यदि तुम केवल उसी की इबादत (बंदना) करते हो।

173. (अल्लाह) ने तुम पर मुद्दार^[2] तथा (बहता) रक्त और सुअर का माँस, तथा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो उन को हराम (निषेध) कर दिया है। फिर भी जो विवश हो जाये जब कि वह नियम न तोड़ रहा हो, और आवश्यकता की सीमा का उल्लंघन न कर रहा हो तो उस पर कोई दोष नहीं। अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।^[3]

174. वास्तव में जो लोग अल्लाह की उतारी पुस्तक (की बातों) को छुपा

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً صُمُّ بِكُمْ عَنْ قَوْمٍ لَا يُفْقَهُونَ ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخَوَازِغِ وَمَا أُهْلَ بِهِ بِغَيْرِ اللَّهِ فَمَن اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ

1 अर्थात् ध्वनि सुनता है परन्तु बात का अर्थ नहीं समझता।

2 जिसे धर्म विधान के अनुसार बध न किया गया हो, अधिक विवरण सूरह माइदह में आ रहा है।

3 अर्थात् ऐसा विवश व्यक्ति जो हलाल जीविका न पा सके उस के लिये निषेध नहीं कि वह अपनी आवश्यकतानुसार हराम चीजें खा ले। परन्तु उस पर अनिवार्य है कि वह उस की सीमा का उल्लंघन न करे और जहाँ उसे हलाल जीविका मिल जाये वहाँ हराम खाने से रुक जाये।

रहे हैं, और उस के बदले तनिक मूल्य प्राप्त कर लेते हैं, वही अपने उदर में केवल अग्नि भर रहे हैं। तथा अल्लाह उन से बात नहीं करेगा, और न उन को विशुद्ध करेगा। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

175. यही वह लोग हैं जिन्होंने सुपथ (मार्गदर्शन) के बदले कुपथ खरीद लिया है। तथा क्षमा के बदले यातना। तो नरक की अग्नि पर वह कितने सहनशील हैं?

176. इस यातना के अधिकारी वह इस लिये हुये कि अल्लाह ने पुस्तक को सत्य के साथ उतारा। और जो पुस्तक में विभेद कर बैठे। वह वास्तव में विरोध में बहुत दूर निकल गये।

177. भलाई यह नहीं है कि तुम अपने मुख को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेर लो। भला कर्म तो उस का है। जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया। तथा फरिश्तों और सब पुस्तकों तथा नबियों पर, तथा धन का मोह रखते हुये, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों, यात्रियों तथा याचकों (फकीरों) को और दास मुक्ति के लिये दिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा ज़कात दी, और अपने वचन को, जब भी वचन दिया, पूरा करते रहे। और निर्धनता और रोग तथा युद्ध की

يَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلٰةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابُ أَشَدُّ مِنْ أَصْبَرِهِمْ عَلَى النَّارِ ۝

ذٰلِكَ بِأَنَّهُ تَنَزَّلَ الْكِتٰبُ بِالْحَقِّ وَآلِ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتٰبِ لَعْنَةُ رَبِّكَ عَلَىٰ بَعْضِهِمْ ۝

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُولُوا وَجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَآلِهَتِهِ وَآلِ الْهَالِ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَابْنِ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَآتَى الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِعَهْدِهِمْ
إِذَا عٰهَدُوا أُوْلَٰئِكَ الَّذِينَ هُمْ الْمُتَّقُونَ ۝
وَالضَّٰرَّاءَ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ

स्थिति में धैर्यवान रहे। यही लोग सच्चे हैं, तथा यही (अब्लाह से) डरते⁽¹⁾ हैं।

178. हे ईमान वालो! तुम पर निहत व्यक्तियों के बारे में किसास (बराबरी का बदला) अनिवार्य⁽²⁾ कर दिया गया है। स्वतंत्र का बदला स्वतंत्र से लिया जायेगा, तथा दास का दास से, और नारी का नारी से, और जिस अपराधी के लिये उस के भाई की ओर से कुछ क्षमा कर⁽³⁾ दिया जाये, तो उसे सामान्य नियम का अनुसरण (अनुपालन) करना चाहिये। निहत व्यक्ति के वारिस को भलाई के साथ दियत (अर्धदण्ड) चुका देना चाहिये। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से सुविधा तथा

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ: الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَىٰ بِالْأُنْثَىٰ مَنْ عُقِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَإِذَا أُعْطِيَ بِالْعُرْوَةِ: وَأَذَاهُ إِلَيْهِ بِأَصْلَانِ ذَلِكَ تَخَفِيفٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ مِّنْ أَعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ عَذَابُ اللَّهِ

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नमाज़ में कब्जे की ओर मुख करना अनिवार्य है, फिर भी सत्धर्म इतना ही नहीं कि धर्म की किसी एक बात को अपना लिया जाये। सत्धर्म तो सत्य आस्था, सत्कर्म और पूरे जीवन को अब्लाह की आज्ञा के अधीन कर देने का नाम है।
- 2 अर्थात् यह नहीं हो सकता कि निहत की प्रधानता अथवा उच्च वंश का होने के कारण कई व्यक्ति मार दिये जायें, जैसा कि इस्लाम से पूर्व जाहिलियत की रीति थी कि एक के बदले कई को ही नहीं, यदि निर्बल कबीला हो तो, पूरे कबीले ही को मार दिया जाता था। इस्लाम ने यह नियम बना दिया कि स्वतंत्र तथा दास और नर नारी सब मानवता में बराबर हैं। अतः बदले में केवल उसी को मारा जाये जो अपराधी है। वह स्वतंत्र हो या दास, नर हो या नारी। (संक्षिप्त, डब्बे कसीर)
- 3 क्षमा दो प्रकार से हो सकता है: एक तो यह कि निहत के लोग अपराधी को क्षमा कर दें। दूसरा यह कि किसास को क्षमा कर के दियत (अर्धदण्ड) लेना स्वीकार कर लें। इसी स्थिति में कहा गया है कि नियमानुसार दियत (अर्धदण्ड) चुका दे।

दया है। इस पर भी जो अत्याचार^[1]
करे तो उस के लिये दुःखदायी
यातना है।

179. और हे समझ वालो! तुम्हारे लिये
किसास (के नियम में) जीवन है,
ताकि तुम रक्तपात से बचो।^[2]

180. और जब तुम में से किसी के निधन
का समय हो, और वह धन छोड़
रहा हो तो उस पर माता पिता
और समीपवर्तियों के लिये साधारण
नियमानुसार वसियत (उत्तरदान)
करना अनिवार्य कर दिया गया
है। यह आज्ञाकारियों के लिये
सुनिश्चित^[3] है।

181. फिर जिस ने वसियत सुनने के
पश्चात् उसे बदल दिया तो उस का
पाप उन पर है जो उसे बदलेंगे। और
अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۝

كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا أَحْصَا أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ أَنْ تَرِثَ خَيْرُ
الْوَصِيَّةِ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا
عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَأَثِمَ إِثْمُهُ عَلَى
الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

1 अर्थात् क्षमा कर देने या दियत लेने के पश्चात् भी अपराधी को मार डाले तो
उसे किंसास में हत किया जायेगा।

2 क्योंकि इस नियम के कारण कोई किसी को हत करने का साहस नहीं करेगा।
इस लिये इस के कारण समाज शान्तिमय हो जायेगा। अर्थात् एक किंसास से
लोगों के जीवन की रक्षा होगी। जैसा कि उन देशों में जहाँ किंसास का नियम
है देखा जा सकता है। कुर्आन इसी ओर संकेत करते हुये कहता है कि किंसास
नियम के अन्दर वास्तव में जीवन है।

3 यह वसियत (मीरास) की आयत उतरने से पहले अनिवार्य थी, जिसे (मीरास)
की आयत से निरस्त कर दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन
है कि अल्लाह ने प्रत्येक अधिकारी को उस का अधिकार दे दिया है, अतः अब
वारिस के लिये कोई वसियत नहीं है। फिर जो वारिस न हो तो उसे भी तिहाई
धन से अधिक की वसियत उचित नहीं है। (सहीह बुखारी-4577, सुनन अबू
दाबूद-2870, इब्ने माजा-2210)

182. फिर जिसे डर हो कि बसिय्यत करने वाले ने पक्षपात या अत्याचार किया है, फिर उस ने उन के बीच सुधार करा दिया तो उस पर कोई पाप नहीं। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

183. हे ईमान वालो! तुम पर रोजे^[1] उसी प्रकार अनिवार्य कर दिये गये हैं, जैसे तुम से पूर्व लोगों पर अनिवार्य किये गये, ताकि तुम अल्लाह से डरो।

184. वह गिनती के कुछ दिन है। फिर यदि तुम में से कोई रोगी, अथवा यात्रा पर हो तो यह गिनती दूसरे दिनों से पूरी करो। और जो उस (रोजे) को सहन न कर सके^[2] वह फिदया (प्रायश्चित) दे। जो एक निर्धन को खाना खिलाना है। और जो स्वेच्छा भलाई करे वह उस के लिये अच्छी बात है। और यदि तुम समझो तो तुम्हारे लिये रोज़ा रखना ही अच्छा है।

185. रमज़ान का महीना वह है, जिस में कुर्आन उतारा गया, जो सब मानव के लिये मार्गदर्शन है। तथा मार्गदर्शन और सत्योसत्य के बीच

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُوَسٍ جَنًّا أَوْ أَثْنًا فَاصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ فَمَن شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَن كَانَ مَرِيضًا

1 रोज़े को अरबी भाषा में "सौम" कहा जाता है, जिस का अर्थ: रुकना तथा त्याग देना है। इस्लाम में रोज़ा सन् दो हिजरी में अनिवार्य किया गया। जिस का अर्थ है प्रत्युष (भोर) से सूर्यास्त तक रोज़े की नीति से खाने पीने तथा संभोग आदी चीज़ों से रुक जाना।

2 अर्थात् अधिक बुढ़ापे अथवा ऐसे रोग के कारण जिस से आरोग्य होने की आशा न हो तो प्रत्येक रोज़े के बदले एक निर्धन को खाना खिला दिया करें।

अन्तर करने के खुले प्रमाण रखता है। अतः जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित^[1] हो तो वह उस का रोज़ा रखे, फिर यदि तुम में से कोई रोगी^[2] अथवा यात्रा^[3] पर हो, तो उसे दूसरे दिनों से गिनती पूरी करनी चाहिये। अल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है, तंगी (असुविधा) नहीं चाहता। और चाहता है कि तुम गिनती पूरी करो, तथा इस बात पर अल्लाह की महिमा का वर्णन करो कि उस ने तुम्हें मार्गदर्शन दिया, इस प्रकार तुम उस के कृतज्ञ^[4] बन सको।

186. (हे नबी!) जब मेरे भक्त मेरे विषय में आप से प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कि निश्चय मैं समीप हूँ। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। अतः उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें, तथा मुझ पर ईमान (विश्वास) रखें, ताकि वह सीधी राह पायें।

187. तुम्हारे लिये रोज़े की रात में अपनी स्त्रियों से सहवास हलाल (उचित) कर दिया गया है। वह तुम्हारा वस्त्र^[5] है, तथा तुम उन का वस्त्र हो। अल्लाह को ज्ञान हो गया कि

أَوْ عَلَ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ اجِئْ بِدَعْوَتِي الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝

أَحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الضِّيَافِ الرَّفَقِ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ۖ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ كَفَّارِينَ أَنْفُسَكُمْ ۚ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ

1 अर्थात् अपने नगर में उपस्थित हो।

2 अर्थात् रोग के कारण रोज़े न रख सकता हो।

3 अर्थात् इतनी दूर की यात्रा पर हो जिस में रोज़ा न रखने की अनुमति हो।

4 इस आयत में रोज़े की दशा तथा गिनती पूरी करने पर प्रार्थना करने की प्रेरणा दी गयी है।

5 इस से पति पत्नी के जीवन साथी, तथा एक की दूसरे के लिये आवश्यकता को दर्शाया गया है।

तुम अपना उपभोग^[1] कर रहे थे। उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार कर ली, तथा तुम्हें क्षमा कर दिया। अब उन से (रात्रि में) सहवास करो, और अब्ब्राह के (अपने भाग्य में) लिखे की खोज करो, और (रात्रि में) खाओ तथा पीओ, यहाँ तक कि भोर की सफेद धारी, रात की काली धारी से उजागर हो^[2] जाये फिर रोजे को रात्रि (सुर्यास्त) तक पूरा करो, और उन से सहवास न करो, जब मस्जिदों में ऐतिकाफ (एकान्तवास) में रहो। यह अब्ब्राह की सीमायें हैं, इन के समीप भी न जाओ। इसी प्रकार अब्ब्राह लोगों के लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि वह (उन के उल्लंघन) से बचें।

188. तथा आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, और न अधिकारियों के पास उसे इस धेय से ले जाओ कि लोगों के धन का कोई भाग जान बूझ कर पाप^[3] द्वारा खा जाओ।

189. (हे नबी!) लोग आप से चन्द्रमा के (घटने बढ़ने) के विषय में प्रश्न

وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتُوا الصِّيَامَ إِلَى الْغَيْهِ وَلَا تَبْأِشْرُوا مَعَ وَاسْتُمْ عَلَيْكُمْ فِي الْمَسْجِدِ بِتِلْكَ الْخُذُودِ الَّتِي لَا تَقْرُبُوهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتَذُنُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا قَرِيبًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْهَارِ قُلْ فِي مَوَاقِفِكُمْ

1 अर्थात् पत्नी से सहवास कर रहे थे।

2 इस्लाम के आरंभिक युग में रात्री में सो जाने के पश्चात् रमज़ान में खाने पीने तथा स्त्री से सहवास की अनुमति नहीं थी। इस आयत में इन सब की अनुमति दी गयी है।

3 इस आयत में यह संकेत है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों के स्वत्व और धन से तथा अवैध धन उपार्जन से स्वयं को रोक न सकता हो इबादत का कोई लाभ नहीं।

करते हैं? कह दें इस से लोगों को तिथियों के निर्धारण तथा हज्ज के समय का ज्ञान होता है। और यह कोई भलाई नहीं है कि घरों में उन के पीछे से प्रवेश करो, परन्तु भलाई तो अल्लाह की अवैज्ञा से बचना है। और घरों में उन के द्वारों से आओ, तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम^[1] सफल हो जाओ।

190. तथा तुम अल्लाह की राह में, उन से युद्ध करो जो तुम से युद्ध करते हों। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

191. और उन को हत करो, जहाँ पाओ, और उन्हें निकालो, जहाँ से उन्होंने तुम को निकाला है, इस लिये कि फितना^[2] (उपद्रव) हत करने से भी बुरा है। और उन से मस्जिदे हराम के पास युद्ध न करो, जब तक वह तुम से वहाँ युद्ध न^[3] करें। परन्तु यदि वह तुम से युद्ध करे तो उन की हत्या करो, यही काफिरों का बदला है।

192. फिर यदि वह (आक्रमण करने से) रुक जायें तो अल्लाह अति क्षमी, दयावान् है।

لِلنَّاسِ وَالْحَجَّةِ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا
الْمُيُتُونَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ
اتَّقَىٰ وَأَتَىٰ الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا
وَاتَّقَىٰ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْسُدُوا إِلَى اللَّهِ
لَا يُحِبُّ الْمُعْسِدِينَ ۝

وَأَقْتُلُواهُمْ حَيْثُ تَقْبَلُونَهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ
حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ
وَلَا تُقَاتِلُواهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى
يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۖ فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ
فَأَقْتُلُوهُمْ كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۝

فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

1 इस्लाम से पूर्व अरब में यह प्रथा थी कि जब हज्ज का एहराम बांध लेते तो अपने घरों में द्वार से प्रवेश न कर के पीछे से प्रवेश करते थे। इस अंधविश्वास के खण्डन के लिये यह आयत उतरी कि भलाई इन रीतियों में नहीं बल्कि अल्लाह से डरने और उस के आदेशों के उल्लंघन से बचने में है।

2 अर्थात् अधर्म, मिश्रणवाद और सत्धर्म इस्लाम से रोकना।

3 अर्थात् स्वयं युद्ध का आरंभ न करो।

193. तथा उन से युद्ध करो, यहाँ तक कि फितना न रह जाये, और धर्म केवल अल्लाह के लिये रह जाये, फिर यदि वह रुक जायें, तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी और पर अत्याचार नहीं करना चाहिये।

194. सम्मानित^[1] मास, सम्मानित मास के बदले है। और सम्मानित विषयों में बराबरी है, अतः जो तुम पर अतिक्रमण (अत्याचार) करें तो तुम भी उन पर उसी के समान (अतिक्रमण) करो। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और जान लो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

195. तथा अल्लाह की राह (जिहाद) में धन खर्च करो, और अपने आप को बिनाश में न डालो, तथा उपकार करो, निश्चय अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

196. तथा हज्ज और उमरा अल्लाह के लिये पूरा करो, और यदि रोक दिये जाओ^[2] तो जो कुर्बानी सुलभ हो (कर दो), और अपने सिर न मुँडाओ, जब तक कि कुर्बानी अपने स्थान पर न पहुँच^[3] जाये, यदि तुम

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ
الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنْ اُسْتُعْذِرُوا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا
عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُمُوتُ
قِصَاصٌ مِمَّنْ اَعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاَعْتَدُوا عَلَيْهِ
بِمِثْلِ مَا اَعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۖ وَانْقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ
إِلَى الْهَلَاكِه ۖ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

وَاتِمُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُخْصِرْتُمْ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تُلْقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى
يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيضًا أَوْ بِهِ
أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَغَدِيَّةٌ مِنْ صَلَافٍ أَوْ صَدَقَةٍ
أَوْ نُسُكٍ فَإِذَا أَمُنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى

1 सम्मानित मासों से अभिप्रेत चार अर्बी महीने: जुलकादह, जुलहिज्जह, मुहर्रम तथा रजब हैं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग से इन मासों का आदर सम्मान होता आ रहा है। आयत का अर्थ यह है कि कोई सम्मानित स्थान अथवा युग में अतिक्रमण करे तो उसे बराबरी का बदला दिया जाये।

2 अर्थात् शत्रु अथवा रोग के कारण।

3 अर्थात् कुरबानी न कर लो।

में कोई व्यक्ति रोगी हो, या उस के सिर में कोई पीड़ा हो (और सिर मुँडा ले) तो उस के बदले में रोजा रखना या दान^[1] देना अथवा कुर्बानी देना है, और जब तुम निर्भय (शान्त) रहो तो जो उमरे से हज्ज तक लाभान्वित^[2] हो वह जो कुर्बानी सुलभ हो उसे करो। और जिसे उपलब्ध न हो तो वह तीन रोजे हज्ज के दिनों में रखे, और सात जब रखे जब तुम (घर) वापस आओ। यह पूरे दस हुये। यह उस के लिये है जो मस्जिदे हुराम का निवासी न हो। और अल्लाह से डरो, तथा जान लो कि अल्लाह की यातना बहुत कड़ी है।

197. हज्ज के महीने प्रसिद्ध है, तो जो व्यक्ति इन में हज्ज का निश्चय कर ले तो (हज्ज के बीच) काम बासना तथा अवैज्ञा और झगड़े की बातें न करे, तथा तुम जो भी अच्छे कर्म करोगे तो उस का ज्ञान अल्लाह को हो जायेगा, और अपने लिये पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता है, तथा हे समझ वालो! मुझी से डरो।

الْحَجُّ قَبْلَ الْاِسْتِيسْرِ مِنَ الْهَدْيِ فَمَنْ اَمَرَ بِحَدِّ
فَصِيَامٍ ثَلَاثًا فَاَتَمَّهُ فِي الْحَجَّةِ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ
يَٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ذٰلِكَ لَعَنَ لَكُمْ اٰهْلُكُمْ
حَافِظِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْقَوَى الْاَسْفَلَ وَاعْلَمُوْا اَنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ

الْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمَةٌ فَمَنْ قَرَضَ مِنْهُنَّ الْحَجَّ
فَلَا رَفْعَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمُهُ اللّٰهُ وَسُوْدٌ اَقْبَانِ خَيْرٌ لِّلرَّادِّ
الْقَوَى وَالْقَوَى يٰۤاُولِ الْاَلْبَابِ

1 जो तीन रोजे अथवा तीन निर्धनों को खिलाना या एक बकरे की कुरबानी देना है (तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 लाभान्वित होने का अर्थ यह है कि उमरे का एहराम बाँधे, और उस के कार्यक्रम पूरे कर के एहराम खोल दे, और जो चीजें एहराम की स्थिति में अवैध थी, उन से लाभान्वित हो। फिर हज्ज के समय उस का एहराम बाँधे, इसे (हज्ज तमत्तुअ) कहा जाता है। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

198. तथा तुम पर कोई दोष^[1] नहीं कि अपने पालनहार के अनुग्रह की खोज करो, तो फिर जब तुम अरफात^[2] से चलो, तो मशअरे हराम (मुज्दलिफह) के पास अल्लाह का स्मरण करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हें बताया है। यद्यपि इस से पहले तुम कुपथों में थे।

199. फिर तुम^[3] भी वही से फिरो जहाँ से लोग फिरते हैं। तथा अल्लाह से क्षमा माँगो। निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान् है।

200. और जब तुम अपने (हज्ज के) मनासिक (कर्म) पूरे कर लो तो जिस प्रकार पहले अपने पूर्वजों की चर्चा करते रहे, उसी प्रकार बल्कि उस से भी अधिक अल्लाह का स्मरण^[4] करो। उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हे हमारे पालनहार! (हमें जो देना है) संसार ही में दे दे। अतः ऐसे व्यक्ति के लिये परलोक में कोई भाग नहीं है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ، فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوا كَمَا هَدَيْتُمْ، وَإِنْ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِمْ لَيْسَ الضَّالِّينَ ۝

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَقَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِنْ مَنَاسِكُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشْدَّ ذِكْرًا، فَمَنْ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلْقٍ ۝

1 अर्थात् व्यापार करने में कोई दोष नहीं है।

2 अरफात उस स्थान का नाम है जिस में हाजी 9 जिलहिज्जह को विराम करते, तथा सूर्यास्त के पश्चात् वहाँ से वापिस होते हैं।

3 यह आदेश कुरैश के उन लोगों को दिया गया है जो मुज्दलिफह ही से वापिस चले आते थे। और अरफात नहीं जाते थे। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

4 जाहिलिय्यत में अरबों की यह रीति थी कि हज्ज पूरा करने के पश्चात् अपने पूर्वजों के कर्मों की चर्चा कर के उन पर गर्व किया करते थे। तथा इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस का अर्थ यह किया है कि जिस प्रकार शिशु अपने माता पिता को गुहारता, पुकारता है उसी प्रकार तुम अल्लाह को गुहारो और पुकारो। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

201. तथा उन में से कुछ ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि: हमारे पालनहार! हमें संसार की भलाई दे, तथा परलोक में भी भलाई दे, और हमें नरक की यातना से सुरक्षित रख।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِمَا عَذَابَ النَّارِ ۝

202. इन्हीं को इन की कमाई के कारण भाग मिलेगा, और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

203. तथा इन गिनती^[1] के कुछ दिनों में अल्लाह को स्मरण (याद) करो, फिर जो कोई व्यक्ति शीघ्रता से दो ही दिन में (मिना से) चल^[2] दे, तो उस पर कोई दोष नहीं, और जो विलम्ब^[3] करे, तो उस पर भी कोई दोष नहीं, उस व्यक्ति के लिये जो अल्लाह से डरा, तथा तुम अल्लाह से डरते रहो और यह समझ लो कि तुम उसी के पास प्रलय के दिन एकत्र किये जाओगे।

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَىٰ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ تُحْشَرُونَ ۝

204. हे नबी! लोगों^[4] में ऐसा व्यक्ति भी है जिस की बात आप को संसारिक विषय में भाती है, तथा जो कुछ उस के दिल में है, वह उस पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, जब कि वह बड़ा झगड़ालू है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ الذَّاكِرُ الْخَصِيمُ ۝

1 गिनती के कुछ दिनों से अभिप्रेत जुलहिज्जह मास की 11, 12, और 13 तारीखें हैं। जिन को (अय्यामे तशरीक) कहते हैं।

2 अर्थात् 12 जुलहिज्जह को ही सूर्यास्त के पहले कैंकरी मारने के पश्चात् चल दे।

3 विलम्ब करे, अर्थात् मिना में रात बिताये। और तेरह जुलहिज्जह को कैंकरी मारे, फिर मिना से निकल जाये।

4 अर्थात् मुनाफ़िकों (दुविधावादियों) में।

205. तथा जब वह आप के पास से जाता है तो धरती में उपद्रव मचाने का प्रयास करता है, और खेती तथा पशुओं का विनाश करता है। और अल्लाह उपद्रव से प्रेम नहीं करता।

وَإِذَا تَوَلَّى سَفَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ۝

206. तथा जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अभिमान उसे पाप पर उभार देता है। अतः उस के (दण्ड) के लिये नरक काफी है। और वह बहुत बुरा बिछोना है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَبِئْسَ الْيِهَادُ ۝

207. तथा लोगों में ऐसा व्यक्ति भी है जो अल्लाह की प्रसन्नता की खोज में अपना प्राण बेच^[1] देता है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝

208. हे ईमान वालो! तुम सर्वथा इस्लाम में प्रवेश^[2] कर जाओ, और शैतान की राहों पर मत चलो, निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝

209. फिर यदि तुम खुले तर्कों (दलीलों)^[3] के आने के पश्चात् विचलित हो गये, तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्त्वज्ञ^[4] है।

وَإِنْ رَأَيْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمْ الْبَيِّنَاتُ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

210. क्या (इन खुले तर्कों के आ जाने के पश्चात्) वह इस की प्रतिक्षा कर रहे हैं कि उन के समक्ष अल्लाह

مَنْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ

1 अर्थात् उस की राह में और उस की आज्ञा के अनुपालन द्वारा।

2 अर्थात् इस्लाम के पूरे संविधान का अनुपालन करो।

3 खुले तर्कों से अभिप्राय कुरआन और सुन्नत है।

4 अर्थात् तथ्य को जानता और प्रत्येक वस्तु को उस के उचित स्थान पर रखता है।

बादलों के छत्र में आ जाये, तथा फरिश्ते भी, और निर्णय ही कर दिया जाये? और सभी विषय अल्लाह ही की ओर फेरे^[1] जायेंगे।

211. बनी इस्राईल से पूछो कि हम ने उन्हें कितनी खुली निशानियाँ दी? इस पर भी जिस ने अल्लाह की अनुकम्पा को, उस के अपने पास आ जाने के पश्चात् बदल दिया, तो अल्लाह की यातना भी बहुत कड़ी है।

212. काफ़िरों के लिये संसारिक जीवन शोभनीय (मनोहर) बना दिया गया है। तथा जो ईमान लाये यह उन का उपहास^[2] करते हैं, और प्रलय के दिन अल्लाह के आज्ञाकारी उन से उच्च स्थान^[3] पर रहेंगे। तथा अल्लाह जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

213. (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे। (फिर विभेद हुआ)। तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,^[4] और

الْأَمْرُ وَالْإِلَهُ تَرْجِعُ الْأُمُورُ

سَلِّ بَيْنِي إِسْرَاءَ نِيلَ كَمْ أَتَيْتُهُمْ مِنْ آيَةٍ
بَيِّنَةٍ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ نَعْدٍ
مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

رَبِّهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْعَوْنَ مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا قُلُوبُهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يُزِقُّ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ
النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ
الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيُبَيِّنَ لِلنَّاسِ فِيهَا

1 अर्थात् सब निर्णय परलोक में बही करेगा।

2 अर्थात् उन की निर्धनता तथा दरिद्रता के कारण।

3 आयत का भावार्थ यह है कि काफ़िर संसारिक धन धान्य ही को महत्व देते हैं। जब कि परलोक की सफलता जो सत्धर्म और सत्कर्म पर आधारित है वही सब से बड़ी सफलता है।

4 आयत 213 का सारांश यह है कि सभी मानव आरंभिक युग में स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे थे। फिर आपस में विभेद हुआ तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। तब अल्लाह की ओर से नबी आने लगे ताकि सब को एक सत्धर्म पर कर दें। और आकाशीय पुस्तकें भी इसी लिये अवतरित हुई कि विभेद में निर्णय

(अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा, और उन पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी, ताकि वह जिन बातों पर विभेद कर रहे हैं, उन का निर्णय कर दें, और आप की दुराग्रह से उन्होंने ने ही विभेद किया, जिन को (विभेद निवारण के लिये) यह पुस्तक दी गयी, तो जो ईमान लाये अल्लाह ने उस विभेद में उन्हें अपनी अनुमति से सत्पथ दर्शा दिया। और अल्लाह जिसे चाहे सत्पथ दर्शा देता है।

214. क्या तुम ने समझ रखा है कि यूँ ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे, हालाँकि अभी तक तुम्हारी वह दशा नहीं हुई जो तुम से पूर्व के ईमान वालों की हुई? उन्हें तंगियों तथा आपदाओं ने घेर लिया, और वह झंझोड़ दिये गये, यहाँ तक कि रसूल और जो उस पर ईमान लाये गुहारने लगे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी? (उस समय कहा गया:) सुन लो! अल्लाह की सहायता समीप^[1] है।

215. हे नबी! वह आप से प्रश्न करते हैं कि कैसे व्यय (खर्च) करें? उन से कहो

اٰخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَمَا اٰخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنٰتُ بَغْيًاۙ بَيْنَهُمْ فَهَدٰى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اٰخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِ اللّٰهِ يَهْدِى اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍۭ

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوْا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْۢ قَبْلِكُمْ مَّتَشٰهُمْ الْجَآئَةُ وَالصَّآءُ وَرُزِقُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ مَتٰى نَصُرَ اللّٰهُ الْاٰرَاقَ نَصُرَ اللّٰهُ قُرْبٰىۭ

يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَا اَنْفَقْتُمْ مِّنْ

कर के सब को एक मूल सत्धर्म पर लायें। परन्तु लोगों की दुराग्रह और आपसी द्वेष विभेद का कारण बने रहे। अन्यथा सत्धर्म (इस्लाम) जो एकता का आधार है वह अब भी सुरक्षित है। और जो व्यक्ति चाहेगा तो अल्लाह उस के लिये यह सत्य दर्शा देगा। परन्तु यह स्वयं उस की इच्छा पर आधारित है।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि ईमान के लिये इतना ही बस नहीं कि ईमान को स्वीकार कर लिया तथा स्वर्गीय हो गये। इस के लिये यह भी आवश्यक है कि उन सभी परीक्षाओं में स्थिर रहो जो तुम से पूर्व सत्य के अनुयायियों के सामने आयीं, और तुम पर भी आयेंगी।

कि जो भी धन तुम खर्च करो, अपने माता पिता, समीपवर्तियों, अनाथों, निर्धनों तथा यात्रियों (को दो)। तथा जो भी भलाई तुम करते हो, उसे अल्लाह भली भाँति जानता है।

216. हे ईमान वालो! तुम पर युद्ध करना अनिवार्य कर दिया गया है, और वह तुम्हें अप्रिय है, हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय हो, और वही तुम्हारे लिये अच्छी हो, और इसी प्रकार सम्भव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय हो, और वह तुम्हारे लिये बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं^[1] जानते।

217. हे नबी! वह^[2] आप से प्रश्न करते हैं कि सम्मानित मास में युद्ध करना कैसा है? तो आप उन से कह दें कि उस में युद्ध करना घोर पाप है, परन्तु अल्लाह की राह से रोकना और उस का इन्कार करना, तथा मस्जिदे हराम से रोकना, और उस के निवासियों को उस से निकालना, अल्लाह के समीप उस से भी घोर पाप है। तथा फ़ितना (सत्धर्म) से विचलाना हत्या से भी भारी है। और वह तो तुम से युद्ध करते ही जायेंगे, यहाँ तक कि उन के बस

خَيْرَ قِيلُوا لِلَّذِينَ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَى
وَالْمَسْكِينِ وَالَّذِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ٢

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَلَى أَنْ
تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَعَلَى أَنْ تُحِبُّوا
شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ٣

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشُّهُورِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهَا قُلْ
قِتَالٌ فِيهَا كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْأَخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ
اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ
يُعَاقِبُونَكُمْ حَتَّى يَرْدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ
اسْتَطَاعُوا وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
مُمْرِقِينَهَا خَالِدُونَ ٤

1 आयत का भावार्थ यह है कि युद्ध ऐसी चीज़ नहीं जो तुम्हें प्रिय हो। परन्तु जब ऐसी स्थिति आ जाये कि शत्रु इस लिये आक्रमण और अत्याचार करने लगे कि लोगों ने अपने पूर्वजों की आस्था परम्परा त्याग कर सत्य को अपना लिया है, जैसा कि इस्लाम के आरंभिक युग में हुआ, तो सत्धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।

2 अर्थात् मिश्रणवादी।

में हो तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें, और तुम में से जो व्यक्ति अपने धर्म (इस्लाम) से फिर जायेगा, फिर कुफ्र पर ही उस की मौत होगी, तो ऐसों का किया कराया, संसार तथा परलोक में व्यर्थ हो जायेगा। तथा वही नारकी है। और वह उस में सदावासी होंगे।

218. (इस के विपरीत) जो लोग ईमान लाये, और उन्होंने हिजरत^[1] की, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया, तो वास्तव में वही अल्लाह की दया की आशा रखते हैं। तथा अल्लाह अति क्षमाशील और बहुत दयालु है।

219. हे नबी! वह आप से मदिरा और जूआ के विषय में प्रश्न करते हैं। आप बता दें कि इन दोनों में बड़ा पाप है। तथा लोगों का कुछ लाभ भी है। परन्तु उन का पाप उन के लाभ से अधिक^[2] बड़ा है। तथा वह आप से प्रश्न करते हैं कि अल्लाह की राह में क्या खर्च करें? उन से कह दो कि जो अपनी आवश्यकता से अधिक हो। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों (धर्मदिशों) को उजागर करता है। ताकि तुम सोच विचार करो।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْمِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا. وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾

1 हिजरत का अर्थ है: अल्लाह के लिये स्वदेश त्याग देना।

2 अर्थात् अपने लोक परलोक के लाभ के विषय में विचार करो और जिस में अधिक हानि हो उसे त्याग दो। यद्यपि उस में थोड़ा लाभ ही क्यों न हो यह मदिरा और जूआ से सम्बन्धित प्रथम आदेश है। आगामी सूरह निसा आयत 43 तथा सूरह माइदह आयत 90 में इन के विषय में अन्तिम आदेश आ रहा है।

220. और वह आप से अनाथों के विषय में प्रश्न करते हैं। तो उन से कह दो कि जिस बात में उन का सुधार हो वही सब से अच्छी है। यदि तुम उन से मिल कर रहो तो वह तुम्हारे भाई ही है, और अल्लाह जानता है कि कौन सुधारने और कौन बिगाड़ने वाला है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुम पर सख्ती^[1] कर देता। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्त्वज्ञ है।

221. तथा मुशिरक^[2] स्त्रियों से तुम विवाह न करो, जब तक वह ईमान न लायें, और ईमान वाली दासी मुशिरक स्त्री से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हारे मन को भा रही हो, और अपनी स्त्रियों का विवाह मुशिरकों से न करो जब तक वह ईमान न लायें। और ईमान वाला दास मुशिरक से उत्तम है, यद्यपि वह तुम्हें भा रहा हो। वह तुम्हें अग्नि की ओर बुलाते हैं तथा अल्लाह स्वर्ग और क्षमा की ओर बुला रहा है। और सभी मानव के लिये अपनी आयतें (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।

222. तथा वह आप से मासिक धर्म के

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَىٰ قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَئِمَّةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَحْبَبْتُمْ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَحْبَبْتُمْ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى التَّارِكِ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْحَيَّةِ وَالْمَعْفَرَةِ بِأَذْنِهِ وَبَيِّنَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْحَيْضِ قُلْ هُوَ آذَىٰ

1 उन का खाना पीना अलग करने का आदेश दे कर।

2 इस्लाम के विरोधियों से युद्ध ने यह प्रश्न उभार दिया कि उन से विवाह उचित है या नहीं? उस पर कहा जा रहा है कि उन से विवाह सम्बन्ध अवैध है, और इस का कारण भी बता दिया गया है कि वह तुम्हें सत्य से फेरना चाहते हैं। उन के साथ तुम्हारा विवाहिक सम्बन्ध कभी सफलता का कारण नहीं हो सकता।

विषय में प्रश्न करते हैं, तो कह दें कि वह मलीनता है। और उन के समीप भी न^[1] जाओ जब तक पवित्र न हो जायें। फिर जब वह भली भाँति स्वच्छ^[2] हो जायें तो उन के पास उसी प्रकार जाओ जैसे अल्लाह ने तुम्हें आदेश^[3] दिया है। निश्चय अल्लाह तौबा करने वालों तथा पवित्र रहने वालों से प्रेम करता है।

223. तुम्हारी पत्नियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ^[4] हैं। तुम्हें अनुमति है कि जैसे चाहो अपनी खेतियों में जाओ। परन्तु भविष्य के लिये भी सत्कर्म करो। तथा अल्लाह से डरते रहो। और विश्वास रखो कि तुम्हें उस से मिलना है। और ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दो।

224. तथा अल्लाह के नाम पर अपनी शपथों को उपकार तथा सदाचार और लोगों में मिलाप कराने के लिये रोक^[5] न बनाओ। और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

225. अल्लाह तुम्हारी निरर्थक शपथों पर तुम्हें नहीं पकड़ेगा, परन्तु जो शपथ

فَاتَّقُوا النَّسَاءَ فِي الْمَحْضِ وَلَا تَقْرَبُوا حَتَّى يَطْهَرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۝

نِسَاءُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنْ شِئْتُمْ وَقَدْ مَوْلَا أَنْفُسَكُمْ وَأَتَوْا اللَّهَ وَعَلِمُوا أَنَّكُمْ مُلْقَوْنَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ

1 अर्थात् संभोग करने के लिये।

2 मासिक धर्म बन्द होने के पश्चात् स्नान कर के स्वच्छ हो जायें।

3 अर्थात् जिस स्थान को अल्लाह ने उचित किया है, वही संभोग करो।

4 अर्थात् संतान उत्पन्न करने का स्थान और इस में यह संकेत भी है कि भग के सिवा अन्य स्थान में संभोग हराम (अनुचित) है।

5 अर्थात् सदाचार और पुण्य न करने की शपथ लेना अनुचित है।

अपने दिलों के संकल्प से लोगे,
उन पर पकड़ेगा, और अल्लाह अति
क्षमाशील सहनशील है।

226. तथा जो लोग अपनी पत्नियों से
संभोग न करने की शपथ लेते हों,
वह चार महीने प्रतीक्षा करें। फिर⁽¹⁾
यदि अपनी शपथ से इस (बीच)
फिर जायें तो अल्लाह अति क्षमाशील
दयावान् है।

227. और यदि उन्होंने तलाक़ का संकल्प
ले लिया हो तो निःसन्देह अल्लाह सब
कुछ सुनता और जानता है।

228. तथा जिन स्त्रियों को तलाक़ दी गयी
हो वह तीन बार रजवती होने तक
अपने आप को विवाह से रोकी रखें।
उन के लिये हलाल (वैध) नहीं है
कि अल्लाह ने जो उन के गर्भाशयों
में पैदा किया⁽²⁾ है, उसे छुपायें। यदि
वह अल्लाह तथा आखिरत (परलोक)
पर ईमान रखती हों। तथा उन के
पति इस अवधि में अपनी पत्नियों
को लौटा लेने के अधिकारी⁽³⁾ है
यदि वह मिलाप⁽⁴⁾ चाहते हों। तथा

يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ
حَلِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

لِّأُولَئِكَ يَنْفَرُ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةٍ
أَشْهُرٍ فَإِنْ قَامُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

وَأَنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٨﴾

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ شُرُوكٍ وَلَا
يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ
إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبَعُولَتُهُنَّ
أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا
وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ
وَاللِّزْجَالُ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ مَوْلَاهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ ﴿٢٢٩﴾

1 यदि पत्नी से संबंध न रखने की शपथ ली जाये जिसे अरबी में "ईला" के नाम से जाना जाता है तो उस का यह नियम है कि चार महीने प्रतीक्षा की जायेगी। यदि इस बीच पति ने फिर संबंध स्थापित कर लिया तो उसे शपथ का कप्फ़ारह (प्रायश्चित्त) देना होगा। अन्यथा चार महीने पूरे हो जाने पर न्यायालय उसे शपथ से फिरने या तलाक़ देने के लिये बाध्य करेगा।

2 अर्थात् मासिक धर्म अथवा गर्भ को।

3 यह बताया गया है कि पति तलाक़ के पश्चात् पत्नी को लौटाना चाहे तो उसे इस का अधिकार है। क्यों कि विवाह का मूल लक्ष्य मिलाप है, अलगाव नहीं।

4 हानि पहुँचाने अथवा दुःख देने के लिये नहीं।

सामान्य नियमानुसार स्त्रियों^[1] के लिये वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषों का उन के ऊपर है। फिर भी पुरुषों को स्त्रियों पर एक प्रधानता प्राप्त है। और अब्बाह अति प्रभुत्वशील तत्त्वज्ञ है।

229. तलाक दो बार है। फिर नियमानुसार स्त्री को रोक लिया जाये या भली

الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ فَإِنْ سَاكَ بِمَعْرُوفٍ أَوْ

1. यहाँ यह ज्ञातव्य है कि जब इस्लाम आया तो संसार यह जानता ही न था कि स्त्रियों के भी कुछ अधिकार हो सकते हैं। स्त्री को संतान उत्पन्न करने का एक साधन समझा जाता था, और उन की मुक्ति इसी में थी कि वह पुरुषों की सेवा करें, प्राचीन धर्मानुसार स्त्री को पुरुष की सम्पत्ति समझा जाता था। पुरुष तथा स्त्री समान नहीं थे। स्त्री में मानव आत्मा के स्थान पर एक दूसरी आत्मा होती थी, रूमी विधान में भी स्त्री का स्थान पुरुष से बहुत नीचा था। जब कभी मानव शब्द बोला जाता तो उस से संबोधित पुरुष होता था। स्त्री पुरुष के साथ खड़ी नहीं हो सकती थी।

कुछ अमानवीय विचारों में जन्म से पाप का सारा बोझ स्त्री पर डाल दिया जाता। आदम के पाप का कारण हवा हुई। इस लिये पाप का पहला बीज स्त्री के हाथों पड़ा। और वही शैतान का साधन बनी। अब सदा स्त्री में पाप की प्रेरणा उभरती रहेगी, धार्मिक विषय में भी स्त्री पुरुष के समान न हो सकी।

परन्तु इस्लाम ने केवल स्त्रियों के अधिकार का विचार ही नहीं दिया बल्कि खुला एलान कर दिया कि जैसे पुरुषों के अधिकार हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी पुरुषों पर अधिकार हैं।

कुर्आन ने इन चार शब्दों में स्त्री को वह सब कुछ दे दिया है जो उस का अधिकार था। और जो उसे कभी नहीं मिला था। इन शब्दों द्वारा उस के सम्मान और समता की घोषणा कर दी। दाम्पत्य जीवन तथा सामाजिकता की कोई ऐसी बात नहीं जो इन चार शब्दों में न आ गई हो। यद्यपि आगे यह भी कहा गया है कि पुरुषों के लिये स्त्रियों पर एक विशेष प्रधानता है। ऐसा क्यों है? इस का कारण हमें अगामी सूरह "निसा" में मिल जाता है कि यह इस लिये है कि पुरुष अपना धन स्त्रियों पर खर्च करते हैं। अर्थात् परिवारिक जीवन की व्यवस्था के लिये कोई व्यवस्थापक अवश्य होना चाहिये। और इस का भार पुरुषों पर रखा गया है। यही उन की प्रधानता तथा विशेषता है। जो केवल एक भार है इस से पुरुष की जन्म से कोई प्रधानता सिद्ध नहीं होती। यह केवल एक परिवारिक व्यवस्था के कारण हुआ है।

भाँति बिदा कर दिया जाये। और तुम्हारे लिये यह हलाल (वैध) नहीं है कि उन्हें जो कुछ तुम ने दिया है उस में से कुछ वापिस लो। फिर यदि तुम्हें यह भय^[1] हो कि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमाओं को स्थापित न रख सकेंगे तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि पत्नी अपने पति को कुछ देकर मुक्ति^[2] करा ले। यह अल्लाह की सीमायें हैं इन का उल्लंघन न करो। और जो अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करेंगे वही अत्याचारी है।

230. फिर यदि उसे (तीसरी बार) तलाक दे दी तो वह स्त्री उस के लिये हलाल (वैध) नहीं होगी, जब तक दूसरे पति से विवाह न कर ले। अब यदि दूसरा पति (संभोग के पश्चात्) उसे तलाक दे दे तब प्रथम पति से (निर्धारित अवधि पूरी कर के) फिर विवाह कर सकती है, यदि वह दोनों समझते हों कि अल्लाह की सीमाओं को स्थापित रख^[3] सकेंगे। और यह

تَسْرِيحٌ بِأَحْسَنِ وَلَا يَجِدُ لَكُمْ أَنْ
تَأْخُذُوا بِمَنْ أَسْرَعْتُمْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا أَنْ يَخَافَا
أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ
بِهِ يَتْلِكَ حُدُودَ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوا وَهَاءَ وَمَنْ
يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣٠﴾

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى
تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ وَبِذَلِكَ حُدُودُ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾

1 अर्थात् पति के संरक्षकों को।

2 पत्नी के अपने पति को कुछ दे कर विवाह बंधन से मुक्त करा लेने को इस्लाम की परिभाषा में "खुलअ" कहा जाता है। इस्लाम ने जैसे पुरुषों को तलाक का अधिकार दिया है उसी प्रकार स्त्रियों को भी "खुलअ" ले लेने का अधिकार दिया है। अर्थात् वह अपने पति से तलाक मांग सकती है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि प्रथम पति ने तीन तलाक दे दी हों तो निर्धारित अवधि में भी उसे पत्नी को लौटाने का अवसर नहीं दिया जायेगा। तथा पत्नी को यह अधिकार होगा कि निर्धारित अवधि पूरी कर के किसी दूसरे पति से धर्मविधान के अनुसार सहीह विवाह कर ले, फिर यदि दूसरा पति उसे सम्भोग

अल्लाह की सीमायें हैं, जिन्हें उन लोगों के लिये उजागर कर रहा है जो ज्ञान रखते हों।

231. और यदि स्त्रियों को (एक या दो) तलाक़ दे दो और उन की निर्धारित अवधि (इद्दत) पूरी होने लगे तो नियमानुसार उसे रोक लो, अथवा नियमानुसार विदा कर दो। उन्हें हानि पहुँचाने के लिये न रोको, ताकि उन पर अत्याचार करो, और जो कोई ऐसा करेगा तो वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करेगा। तथा अल्लाह की आयतों (आदेशों) को उपहास न बनाओ। और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार तथा उस पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) को याद करो जिसे उस ने तुम पर उतारा है। और उस के द्वारा तुम को शिक्षा दे रहा है। तथा अल्लाह से डरो, और विश्वास रखो कि अल्लाह सब कुछ जानता है।^[1]

232. और जब तुम अपनी पत्नियों को (तीन से कम) तलाक़ दो, और वह अपनी निश्चित अवधि (इद्दत) पूरी

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَّغْنِ أَجَلَهُنَّ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ وَلَا تَمْسِكُوهُنَّ فَسْرًا
لِّتَعْتَدُوا وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ، وَلَا تَتَّبِعُوا آيَاتِ اللَّهِ هُرُوفًا
وَأَذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةَ يَعِظُكُمْ بِهِ
وَالْتَقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَكُلُّ شَيْءًا
عَلَيْهِمْ

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَّغْنِ أَجَلَهُنَّ
فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا

के पश्चात् तलाक़ दे, या उस का देहान्त हो जाये तो प्रथम पति से निर्धारित अवधि पूरी करने के पश्चात् नये महर के साथ नया विवाह कर सकती है। लेकिन यह उस समय है जब दोनों यह समझते हों कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन कर सकेंगे।

- 1 आयत का अर्थ यह है कि पत्नी को पत्नी के रूप में रखो, और उन के अधिकार दो। अन्यथा तलाक़ दे कर उन की राह खोल दो। जाहिलिय्यत के युग के समान अंधेरे में न रखो। इस विषय में भी नैतिकता एवं संयम के आदर्श बनो और कुर्आन तथा सुन्नत के आदेशों का अनुपालन करो।

कर लें, तो (स्त्रियों के संरक्षको!) उन्हें अपने पतियों से विवाह करने से न रोको, जब कि सामान्य नियमानुसार वह आपस में विवाह करने पर सहमत हों, यह तुम में से उसे निर्देश दिया जा रहा है जो अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखता है, यही तुम्हारे लिये अधिक स्वच्छ तथा पवित्र है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

233. और मातायें अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें, और पिता को नियमानुसार उन्हें खाना कपड़ा देना है, किसी पर उस की सक्त से अधिक भार नहीं डाला जायेगा, न माता को उस के बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये, और न पिता को उस के बच्चे के कारण। और इसी प्रकार उस (पिता) के वारिस (उत्तराधिकारी) पर (खाना कपड़ा देने का) भार है। फिर यदि दोनों आपस की सहमति तथा परामर्श से (दो वर्ष से पहले) दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई दोष नहीं। और यदि (तुम्हारा विचार किसी अन्य स्त्री से) दूध पिलवाने का हो तो इस में भी तुम पर कोई दोष नहीं, जब कि जो कुछ नियमानुसार उसे देना है उस को चुका दिया हो, तथा अल्लाह से डरते रहो। और जान लो कि तुम जो कुछ करते हो उसे

تَرَاضُوا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُؤْخِظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ أَزْكَى لَكُمْ وَأَطْهَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٢

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُنْفِقَ الرِّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا لَا نُفْأَرُ وَالِدًا أَنْ يُولِّيَهُ أُولَئِكَ لَهُ يُولِيهِمْ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تُسْرِضُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ أَلْتُمُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ٢

अल्लाह देख रहा^[1] है।

234. और तुम में से जो मर जायें और अपने पीछे पत्नियाँ छोड़ जायें तो वह स्वयं को चार महीने दस दिन रोके रखें^[2] फिर जब उन की अवधि पूरी हो जाये तो वह सामान्य नियमानुसार अपने विषय में जो भी करें उस में तुम पर कोई दोष^[3] नहीं। तथा अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

235. इस अवधि में यदि तुम (उन) स्त्रियों को विवाह का संकेत दो अथवा अपने मन में छुपाये रखो तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह जानता है कि उन का विचार तुम्हारे मन में आयेगा, परन्तु उन्हें गुप्त रूप से विवाह का वचन न दो। परन्तु यह कि नियमानुसार^[4] कोई बात कहो। तथा विवाह के बंधन का निश्चय उस समय तक न करो जब तक

وَالَّذِينَ يَتُوفُونَ مِنْكُمْ وَیَذَرُونَ أَزْوَاجًا لَا تَنْصَحْنَ
بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ خِطْبَةِ
النِّسَاءِ أَوْ أَنْصَبْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عَلِيمَ اللَّهِ أَنَّكُمْ
سَتَذَكَّرُونَ لَهُنَّ وَلَكِنْ لَا تَأْخُذُوا عَنْهُمْ إِنْ سَبُّوا إِلَّا أَنْ
تَقُولُوا أَوْ لَا تَعْرِفُونَ وَلَا تَعْرِضُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ
حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوا وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝

- 1 तलाक की स्थिति में यदि माँ की गोद में बच्चा हो तो यह आदेश दिया गया है कि माँ ही बच्चे को दूध पिलाये और दूध पिलाने तक उस का खर्च पिता पर है। और दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है। साथ ही दो मूल नियम भी बताये गये हैं कि न तो माँ को बच्चे के कारण हानि पहुँचाई जाये और न पिता को। और किसी पर उस की शक्ति से अधिक खर्च का भार न डाला जाये।
- 2 उस की निश्चित अवधि चार महीने दस दिन है। वह तुरंत दूसरा विवाह नहीं कर सकती, और न इस से अधिक पति का सोग मनाये। जैसा कि जाहिलियत में होता था कि पत्नी को एक वर्ष तक पति का सोग मनाना पड़ता था।
- 3 यदि स्त्री निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे, तो उसे रोका न जाये।
- 4 विवाह के विषय में जो बात की जाये वह खुली तथा नियमानुसार हो, गुप्त नहीं।

निर्धारित अवधि पूरी न हो जाये^[1],
तथा जान लो कि जो कुछ तुम्हारे
मन में है उसे अल्लाह जानता है।
अतः उस से डरते रहो और जान लो
कि अल्लाह क्षमाशील, सहनशील है।

236. और तुम पर कोई दोष नहीं यदि
तुम स्त्रियों को संभोग करने तथा
महर (विवाह उपहार) निर्धारित
करने से पहले तलाक़ दे दो।
(इस स्थिति में) उन्हें कुछ दो।
नियमानुसार धनी पर अपनी शक्ति
के अनुसार तथा निर्धन पर अपनी
शक्ति के अनुसार देना है। यह
उपकारियों पर आवश्यक है।

237. और यदि तुम उन को उन से संभोग
करने से पहले तलाक़ दो इस स्थिति
में कि तुम ने उन के लिये महर
(विवाह उपहार) निर्धारित किया
है तो निर्धारित महर का आधा
देना अनिवार्य है। यह और बात है
कि वह क्षमा कर दें। अथवा वह
क्षमा कर दें जिन के हाथ में विवाह
का बंधन^[2] है। और क्षमा कर देना
संयम से अधिक समीप है। और

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَكُمْ
تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً مِّمَّا مَتَّعُوهُنَّ
عَلَى النُّبُوسِ قَدْ رُدَّتْهُنَّ وَ عَلَى الْمُغَيَّرَاتِ مَتَّاعًا
يَا مَعْزُومٍ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ٢٣٦

وَإِنْ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ
قَرَضْتُمُ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَرِيضَةً فَرِيضَةً فَرِيضَةً
أَنْ يَعْطُوا أَوْ يَعْطُوا الَّذِي يَبْدُونَ عَقْدَةً
النِّكَاحِ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى وَلَا تَنْسُوا
الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ٢٣٧

1 जब तक अवधि पूरी न हो विवाह की बात तथा बचन नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात् पति अपनी ओर से अधिक अर्थात् पूरा महर दे तो यह प्रधानता की बात होगी। इन दो आयतों में यह नियम बताया गया है कि यदि विवाह के पश्चात् पति और पत्नी में कोई सम्बंध स्थापित हुआ हो, तो इस स्थिति में यदि महर निर्धारित न किया गया हो तो पति अपनी शक्ति अनुसार जो भी दे सकता हो, उसे अवश्य दे। और यदि महर निर्धारित हो तो इस स्थिति में आधा महर पत्नी को देना अनिवार्य है। और यदि पुरुष इस से अधिक दे सके तो संयम तथा प्रधानता की बात होगी।

आपस में उपकार को न भूलो। तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह सब देख रहा है।

238. नमाज़ों का, विशेष रूप से माध्यमिक नमाज़ (अस्र) का ध्यान रखो।^[1] तथा अल्लाह के लिये विनय पूर्वक खड़े रहो।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ
وَقُومُوا لِلَّهِ خُضُّوعًا مُّخْلِطِينَ

239. और यदि तुम्हें भय^[2] हो तो पैदल या सवार (जैसे संभव हो) नमाज़ पढ़ो, फिर जब निश्चित हो जाओ तो अल्लाह ने तुम्हें जैसे सिखाया है, जिसे पहले तुम नहीं जानते थे, वैसे अल्लाह को याद करो।

إِن خِفْتُمْ فِرَاجًا أَوْ كِبَاءً فَاذْكُرُوا
اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ

240. और जो तुम में से मर जायें, तथा पत्नियाँ छोड़ जायें, वह अपनी पत्नियों के लिये एक वर्ष तक उन को खर्च देने, तथा (घर से) न निकालने की वसियत कर जायें तो यदि वह स्वयं निकल जायें^[3] तथा सामान्य नियमानुसार अपने विषय में कुछ भी करें, तो तुम पर कोई दोष नहीं। अल्लाह प्रभावशाली तत्त्वज्ञ है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا
وَصِیَّةً لِّأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ
إِخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ
حَكِيمٌ

241. तथा जिन स्त्रियों को तलाक दी गयी हो, तो उन्हें भी उचित रूप से सामग्री मिलनी चाहिये, यह आज्ञाकारियों पर आवश्यक है।

وَالْمُطَلَّقَاتُ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى
الْمُتَّقِينَ

1 अस्र की नमाज़ पर ध्यान रखने के लिये इस कारण बल दिया गया है कि व्यवसाय में लीन रहने का समय होता है।

2 अर्थात् शत्रु आदि का।

3 अर्थात् एक वर्ष पूरा होने से पहले। क्योंकि उन की निश्चित अवधि चार महीनो और दस दिन ही निर्धारित है।

242. इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर कर देता है ताकि तुम समझो।

243. क्या आप ने उन की दशा पर विचार नहीं किया जो अपने घरों से मौत के भय से निकल गये^[1], जब कि उन की संख्या हजारों में थी, तो अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ, फिर उन्हें जीवित कर दिया। वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये बड़ा उपकारी है, परन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञयता नहीं करते।^[2]

244. और तुम अल्लाह (के धर्म के समर्थन) के लिये युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

245. कौन है, जो अल्लाह को अच्छा उधार^[3] देता है, ताकि अल्लाह उसे उस के लिये कई गुना अधिक कर दे? और अल्लाह ही थोड़ा और अधिक करता है, और उसी की ओर तुम सब फेरे जावोगे।

246. हे नबी! क्या आप ने बनी इस्राईल के प्रमुखों के विषय पर विचार नहीं किया, जो मूसा के बाद सामने आया? जब उस ने अपने नबी से कहा: हमारे लिये एक राजा बना दो।

كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَر النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

مَنْ ذَا الَّذِي يَرْضَىٰ اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضِعَّهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْطِطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ مَنبِيئَ إِمْرًا ذَلِيلٍ مِّنْ بَعْدِهِ مُوسَىٰ إِذْ قَالَ لِلَّهِ إِنَّهُمْ يَبْعُثُ لَنَا مُلْكًا فَقَالَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي

1 इस में बनी इस्राईल के एक गिरोह की ओर संकेत किया गया है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जो लोग मौत से डरते हों, वह जीवन में सफल नहीं हो सकते, तथा जीवन और मौत अल्लाह के हाथ में है।

3 अर्थात् जिहाद के लिये धन खर्च करना अल्लाह को उधार देना है।

हम अल्लाह की राह में युद्ध करेंगे, (नबी ने) कहा: ऐसा तो नहीं होगा कि तुम्हें युद्ध का आदेश दे दिया जाये तो अवैज्ञा कर जाओ? उन्होंने ने कहा: ऐसा नहीं हो सकता कि हम अल्लाह की राह में युद्ध न करें। जब कि हम अपने घरों और अपने पुत्रों से निकाल दिये गये हैं। परन्तु जब उन्हें युद्ध का अदेश दे दिया गया तो उन में से थोड़े के सिवा सब फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँति जानता है।

247. तथा उन के नबी ने कहा: अल्लाह ने "तालूत" को तुम्हारा राजा बना दिया है। वह कहने लगे: "तालूत" हमारा राजा कैसे हो सकता है? हम उस से अधिक राज्य का अधिकार रखते हैं, वह तो बड़ा धनी भी नहीं है। (नबी ने) कहा: अल्लाह ने उसे तुम पर निर्वाचित किया है, और उसे अधिक ज्ञान तथा शारिरिक बल प्रदान किया है। और अल्लाह जिसे चाहे अपना राज्य प्रदान करे तथा अल्लाह ही विशाल, अति ज्ञानी^[1] है।

248. तथा उन के नबी ने उन से कहा: उस के राज्य का लक्षण यह है कि वह ताबूत तुम्हारे पास आयेगा, जिस में तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिये संतोष तथा मसा और हारून के घराने के छोड़े हुये

سَيَبِلُ اللَّهُ وَقَدْ أَخْرَجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ
مِنْكُمْ قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ
أَعْيُنُ بِالْمَلِكِ مِنْهُ وَلَمْ يَكُنْ سَعَةً مِنَ الْمَالِ
قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي
الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِمَّا تَرَكَ
آلُ مُوسَىٰ وَالْهَارُونَ نَحْبِلُهُ الْمُلْكُ لَهُ أَنْ يَخُذَ
ذَلِكَ آيَةً لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

1 अर्थात् उसी के अधिकार में सब कुछ है। और कौन राज्य की क्षमता रखता है? उसे भी वही जानता है।

अवशेष है, उसे फरिश्ते उठाये हुये होंगे। निश्चय यदि तुम ईमान वाले हो तो इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी^[1] (लक्षण) है।

249. फिर जब तालूत सेना ले कर चला, तो उस ने कहा: निश्चय अल्लाह एक नहर द्वारा तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। तो जो उस में से पीयेगा वह मेरा साथ नहीं देगा, और जो उसे नहीं चखेगा, वह मेरा साथ देगा, परन्तु जो अपने हाथ से चुल्लू भर पी ले (तो कोई दोष नहीं। तो थोड़े के सिवा सब ने उस में से पी लिया। फिर जब उस (तालूत) ने और जो उस के साथ ईमान लाये, उस (नहर) को पार किया, तो कहा आज हम में (शत्रु) जालूत और उस की सेना से युद्ध करने की शक्ति नहीं। (परन्तु) जो समझ रहे थे कि उन्हें अल्लाह से मिलना है उन्होंने कहा: बहुत से छोटे दल अल्लाह की अनुमति से भारी दलों पर विजय प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।

250. और जब वह जालूत और उस की सेना के सम्मुख हुये तो प्रार्थना की, हे हमारे पालनहार! हम को धैर्य प्रदान कर। तथा हमारे चरणों को (रणक्षेत्र में) स्थिर कर दे। और काफिरों पर हमारी सहायता कर।

251. तो उन्होंने ने अल्लाह की अनुमति से

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اعْتَرَفَ غُرْفَةً بَيْنَهُ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلتَقَوْنَ اللَّهَ كَمُ مِّنْ فِتْنَةٍ فَلَيْسَ وَغَلَبَتْ فِئَتُهُ كَثِيرَةٌ يُؤَاذِنُ اللَّهُ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

فَهَزَمُوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَانْتَصَٰهُ

1 अर्थात् अल्लाह की ओर से तालूत को निर्वाचित किये जाने की।

उन्हें पराजित कर दिया, और दावूद ने जालूत का वध कर दिया। तथा अल्लाह ने उस (दावूद)^[1] को राज्य और हिक्मत (नुबूवत) प्रदान की, तथा उसे जो ज्ञान चाहा दिया, और यदि अल्लाह कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा रक्षा न करता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, परन्तु संसार वासियों पर अल्लाह बड़ा दयाशील है।

252. (हे नबी!) यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को सुना रहे हैं, तथा वास्तव में आप रसूलों में से हैं।

253. वह रसूल है। उन को हम ने एक दूसरे पर प्रधानता दी है। उन में से कुछ ने अल्लाह से बात की। और कुछ को कई श्रेणियाँ ऊँचा किया। तथा मरयम के पुत्र ईसा को खुली निशानियाँ दीं। और रूहुलकुदुस^[2] द्वारा उसे समर्थन दिया। और यदि अल्लाह चाहता तो इन रसूलों के पश्चात् खुली निशानियाँ आ जाने पर लोग आपस में न लड़ते, परन्तु उन्होंने ने विभेद किया, तो उन में से कोई ईमान लाया, और किसी ने कुफ़्र किया। और यदि अल्लाह चाहता तो

اللَّهُ الْمَلِكُ وَالْحَيُّ وَنَبَأِ شَاءِهِ وَلَوْ لَدَفَعُ اللَّهُ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَاتِّكِلْ لِنِ الْمُرْسَلِينَ ۝

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَاتَّخَذْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيْتَ ۚ وَآتَيْنَاهُ يُرُوحَ الْقُدُسِ ۚ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَلْنَا الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَلْنَا ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۚ

1 दावूद अलैहिस्सलाम तालूत की सेना में एक सैनिक थे, जिन को अल्लाह ने राज्य देने के साथ नबी भी बनाया। उन्हीं के पुत्र सुलैमान अलैहिस्सलाम थे। दावूद अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने धर्मपुस्तक ज़बूर प्रदान की। सूरह साद में उन की कथा आ रही है।

2 "रूहुलकुदुस" का शाब्दिक अर्थ: पवित्रात्मा है। और इस से अभिप्रेत एक फरिश्ता है, जिस का नाम "जिब्रील" अलैहिस्सलाम है।

वह नहीं लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. हे ईमान वालो! हम ने तुम्हें जो कुछ दिया है उस में से दान करो, उस दिन (अर्थात् प्रलय) के आने से पहले, जिस में कोई सौदा नहीं होगा, और न कोई मैत्री, तथा न कोई अनुशंसा (सिफारिश) काम आयेगी, तथा काफिर लोग^[1] ही अत्याचारी^[2] हैं।

255. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित^[3] तथा नित्य स्थाई है, उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का^[4] है। कौन है जो उस के पास उस की अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफारिश) कर सके? जो कुछ उन के समक्ष और जो कुछ उन से ओझल है सब को जानता है। वह उस के ज्ञान में से वही जान सकते हैं जिसे वह चाहे। उस की कुर्सी आकाश तथा धरती को समोये हुये है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च^[5] महान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خِلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾

أَلَمْ يَلِكْ لَإِلَهِ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

1 अर्थात् जो इस तथ्य को नहीं मानते वही स्वयं को हानि पहुँचा रहे हैं।

2 आयत का भावार्थ यह है कि परलोक की मुक्ति ईमान और सदाचार पर निर्भर है, न वहाँ मुक्ति का सौदा होगा न मैत्री और सिफारिश काम आयेगी।

3 अर्थात् स्वयंभू, अनन्त है।

4 अर्थात् जो स्वयं स्थित तथा सब उस की सहायता से स्थित है।

5 यह क़ुरआन की सर्वमहान् आयत है। और इस का नाम "आयतुलकुर्सी" है। हदीस में इस की बड़ी प्रधानता बताई गई है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

256. धर्म में बल प्रयोग नहीं। सुपथ कुपथ से अलग हो चुका है। अतः अब जो तागूत (अर्थात् अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे, तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता। तथा अल्लाह सब कुछ सुनता जानता^[1] है।

257. अल्लाह उन का सहायक है जो ईमान लाये। वह उन को अंधेरो से निकालता है। और प्रकाश में लाता है। और जो काफिर (विश्वासहीन) है। उन के सहायक तागूत (उन के मिथ्या पूज्य) है। जो उन्हें प्रकाश से अंधेरी की ओर ले जाते हैं। यही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

258. हे नबी! क्या आप ने उस व्यक्ति की दशा पर विचार नहीं किया, जिस ने इब्राहीम से उस के पालनहार के विषय में विवाद किया, इसलिये कि अल्लाह ने उसे राज्य दिया था? जब इब्राहीम ने कहा: मेरा पालनहार वह है जो जीवित करता तथा मारता है तो उस ने कहा: मैं भी जीवित^[2] करता

لَا أَمْرَآةَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ
فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمَرْ بِاللَّهِ فَقَدْ
اسْتَسْلَمَ بِالْعَزَازَةِ الْوُثْقَى لَا انْقِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَانَهُمُ الطَّاغُوتُ
يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الدَّارِ الَّتِي فِيهَا خُلِدُوا ۖ وَنَ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ
أَسْأَلَهُ الْمَلِكُ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي
يُعْبُدُ وَيُصَلِّيُ قَالَ أَفَأَتَى بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ
قُلْتُ بِهَا مِنْ الْمَغْرِبِ فَثَبَّتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि धर्म तथा आस्था के विषय में बल प्रयोग की अनुमति नहीं, धर्म दिल की आस्था और विश्वास की चीज है। जो शिक्षा दिक्षा से पैदा हो सकता है, न कि बल प्रयोग और दबाव से। इस में यह संकेत भी है कि इस्लाम में जिहाद अत्याचार को रोकने तथा सत्धर्म की रक्षा के लिये है न कि धर्म के प्रसार के लिये। धर्म के प्रसार का साधन एक ही है, और वह प्रचार है, सत्य प्रकाश है। यदि अंधकार हो तो केवल प्रकाश की आवश्यकता है। फिर प्रकाश जिस ओर फिरेगा तो अंधकार स्वयं दूर हो जायेगा।

2 अर्थात् जिसे चाहूँ मार दूँ, और जिसे चाहूँ क्षमा कर दूँ। इस आयत में अल्लाह

तथा मारता हैं। इब्राहीम ने कहा: अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है, तू उसे पश्चिम से ला दे। (यह सुन कर) काफिर चकित रह गया। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

259. अथवा उस व्यक्ति के प्रकार जो एक ऐसी नगरी से गुजरा जो अपनी छतों सहित ध्वस्त पड़ी थी? उस ने कहा: अल्लाह इस के ध्वस्त हो जाने के पश्चात् इसे कैसे जीवित (आबाद) करेगा? फिर अल्लाह ने उसे सौ वर्ष तक मौत दे दी। फिर उसे जीवित किया। और कहा: तुम कितनी अवधि तक मुर्दे पड़े रहे? उस ने कहा: एक दिन अथवा दिन के कुछ क्षण। (अल्लाह ने) कहा: बल्कि तुम सौ वर्ष तक पड़े रहे। अपने खाने पीने को देखो कि तनिक परिवर्तन नहीं हुआ है। तथा अपने गधे की ओर देखो, ताकि हम तुम्हें लोगों के लिये एक निशानी (चिन्ह) बना दें। तथा (गधे की) स्थियों को देखो कि हम उसे कैसे खड़ा करते हैं। और उन पर कैसे माँस चढ़ाते हैं। इस प्रकार जब उस के समक्ष बातें उजागर हो गयीं, तो वह^[1] पुकार उठा कि मुझे ज्ञान (प्रत्यक्ष) हो गया कि अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

أَوَكَلَّيْنِي مَرْغَلًا قَرِيْبَةً وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُغْفِي هَٰذَا اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّمَا أَنَا اللَّهُ مَائَةٌ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهُمَا الْحَمَاءُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

के विषय व्यवस्थापक होने का प्रमाणिकरण है। और इस के पश्चात् की आयत में उस के मुर्दे को जीवित करने की शक्ति का प्रमाणिकरण है।

- 1 इस व्यक्ति के विषय में भाष्यकारों ने विभेद किया है। परन्तु सम्भवतः वह व्यक्ति (उजैर) थे। और नगरी (बैतुल मक्दिस) थी। जिसे बुख्त नस्सर राजा ने आक्रमण कर के उजाड़ दिया था। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

260. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे दिखा दे कि तू मुर्दे को कैसे जीवित कर देता है? कहा: क्या तुम ईमान नहीं लाये? उस ने कहा: क्यों नहीं? परन्तु ताकि मेरे दिल को संतोष हो जाये। अल्लाह ने कहा: चार पक्षी ले आओ। और उन को अपने से परचा लो। (फिर उन को बध कर के) उन का एक एक अंश (भाग) पर्वत पर रख दो। फिर उन को पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़े चले आयेंगे। और यह जान ले कि अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

261. जो अल्लाह की राह में अपने धनों को दान करते हैं, उस की दशा, उस एक दाने जैसी है जिस ने सात बालियाँ उगाई हों। (उस की) प्रत्येक बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह जिसे चाहे और भी अधिक देता है। तथा अल्लाह विशाल^[1] ज्ञानी है।

262. जो अपना धन अल्लाह की राह में दान करते हैं, फिर दान करने के पश्चात् उपकार नहीं जताते, और न (जिसे दिया हो) दुख देते हैं उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिकार (बदला) है, और उन पर कोई डर नहीं होगा, और न ही वह उदासीन^[2] होंगे।

263. भली बात बोलना तथा क्षमा, उस दान से उत्तम है जिस के पश्चात्

وَلَا تَقَالِ إِزْمَهُمْ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُخَيِّمُ الْمَوْتِ
قَالَ أَوْ لَمْ تُؤْمِنْ قَالَ بَلَىٰ وَلَكِنْ لِيَطْمَئِنَّ قُلُوبِي
قَالَ فَمَخِذْ أَرْبَعَةً مِنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ
اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ
يَأْتِيَنَّكَ سَعْيًا وَاعْلَمَنَّ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَتَتْ سَبْعَ سَبَائِلَ فِي كُلِّ سُبُلَةٍ
مِائَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
لَا يَتَّبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا

1 अर्थात् उस का प्रदान विशाल है, और उस के योग्य को जानता है।

2 अर्थात् संसार में दान न करने पर कोई संताप होगा।

दुःख दिया जाये। तथा अब्राह निस्पृह सहनशील है।

أَذَى وَاللَّهُ عَنِّي حَلِيمٌ ۝

264. हे ईमान वालो! उस व्यक्ति के समान उपकार जता कर तथा दुःख दे कर, अपने दानों को व्यर्थ न करो जो लोगों को दिखाने के लिये दान करता है, और अब्राह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान नहीं रखता। उस का उदाहरण उस चटेल पत्थर जैसा है जिस पर मिट्टी पड़ी हो, और उस पर घोर वर्षा हो जाये, और उस (पत्थर) को चटेल छोड़ दे। वह अपनी कमाई का कुछ भी न पा सकेंगे, और अब्राह काफ़िरों को सीधी डगर नहीं दिखाता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَتَكُمْ يَا مَعْزُومِي ۚ إِنَّكُمْ لَا تَبْطُلُونَ ۚ وَاللَّهُ يَوْمَئِذٍ يُنْفِقُ مَالَهُ رِيقَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ إِلَّا اللَّهُ وَالْيَوْمُ الْآخِرُ ۚ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۚ الْأَقْفَادُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

265. तथा उन की उपमा जो अपना धन अब्राह की प्रसन्नता की इच्छा में अपने मन की स्थिरता के साथ दान करते हैं, उस बाग (उद्यान) जैसी है, जो पृथ्वी तल के किसी ऊँचे भाग पर हो, उस पर घोर वर्षा हुई, तो दुगना फल लाया, और यदि घोर वर्षा नहीं हुई, तो (उस के लिये) फुहार ही बस^[1] हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अब्राह देख रहा है।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَشْيِئَتِمْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابٌ فَأَمَتْ أَكْثَرُهَا ضَعْفَيْنِ ۚ فَإِنْ لَمْ يُصِبْهَا وَابٌ قَطَلُهَا ۚ وَاللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

266. क्या तुम में से कोई चाहेगा कि उस के खजूर तथा अँगूरों के बाग हों,

أَيُّوَدَّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ تَحْتِ

1 यहाँ से अब्राह की प्रसन्नता के लिये जिहाद तथा दीन, दुखियों की सहायता के लिये धन दान करने की विभिन्न रूप से प्रेरणा दी जा रही है। भावार्थ यह है कि यदि निःस्वार्थता से थोड़ा दान भी किया जाये, तो शुभ होता है, जैसे वर्षा की फुहारें भी एक बाग (उद्यान) को हरा भरा कर देती हैं।

जिन में नहरें बह रही हों, उन में उस के लिये प्रत्येक प्रकार के फल हों, तथा वह बूढ़ा हो गया हो, और उस के निर्बल बच्चे हों, फिर वह बगोल के आघात से जिस में आग हो, झुलस जाये।^[1] इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम सोच विचार करो।

267. हे ईमान वालो! उन स्वच्छ चीजों में से जो तुम ने कमाई है, तथा उन चीजों में से जो हम ने तुम्हारे लिये धरती से उपजाई है, दान करो। तथा उस में से उस चीज़ को दान करने का निश्चय न करो जिसे तुम स्वयं न ले सको, परन्तु यह कि अंदेखी कर जाओ। तथा जान लो कि अल्लाह निःस्पृह प्रशंसित है।

268. शैतान तुम्हें निर्धनता से डराता है, तथा निलज्जा की प्रेरणा देता है, तथा अल्लाह तुम को अपनी क्षमा और अधिक देने का वचन देता है, तथा अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

269. वह जिसे चाहे प्रबोध (धर्म की समझ) प्रदान करता है, और जिसे प्रबोध प्रदान कर दिया गया, उसे

وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَةٌ ضُعْفَاءُ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِآخِذِيهِ إِلَّا أَنْ تُغِشُّوا وُجُوهَكُمْ وَأَعْلَوُا أَنْ اللَّهَ عَنِِّي حَمِيدٌ ﴿٢٦٨﴾

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يَعِدُكُم مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٩﴾

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا

1 अर्थात् यही दशा प्रलय के दिन काफिर की होगी। उस के पास फल पाने के लिये कोई कर्म नहीं होगा। और न कर्म का अवसर होगा। तथा जैसे उस के निर्बल बच्चे उस के काम नहीं आ सके, उसी प्रकार उस श का दिखावे का दान भी काम नहीं आयेगा, वह अपनी आवश्यकता के समय अपने कर्मों के फल से वंचित कर दिया जायेगा। जैसे इस व्यक्ति ने अपने बुढ़ापे तथा बच्चों की निर्बलता के समय अपना बाग खो दिया।

يَذَكِّرُ إِلَّا لَوَالِئَ الْبَابِ ۝

बड़ा कल्याण मिल गया, और समझ वाले ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

270. तथा तुम जो भी दान करो, अथवा मनौती^[1] मानो, अल्लाह उसे जानता है, तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝

271. यदि तुम खुले दान करो, तो वह भी अच्छा है, तथा यदि छुपा कर करो और कंगालों को दो तो वह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा^[2] है। यह तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा। तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उस से अल्लाह सूचित है।

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَيَمْضَىٰ هِيَ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

272. उन को सीधी डगर पर लगा देना आप का दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहे सीधी डगर पर लगा देता है। तथा तुम जो भी दान देते हो तो अपने लाभ के लिये देते हो, तथा तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये ही देते हो, तथा तुम जो भी दान दोगे, तुम्हें उस का भरपूर प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा, और तुम पर अत्याचार^[3] नहीं किया जायेगा।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا تُنْفِيسُكُمْ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۝

273. दान उन निर्धनों (कंगालों) के लिये है जो अल्लाह की राह में ऐसे घिर

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ

- 1 अर्थात् अल्लाह की विशेष रूप से इबादत (वन्दना) करने का संकल्प ले। (तफ्सीरे कुर्तुबी)
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि दिखावे के दान से रोकने का यह अर्थ नहीं है कि: छुपा कर ही दान दिया जाये, बल्कि उस का अर्थ केवल यह है कि निस्वार्थ दान जैसे भी दिया जाये, उस का प्रतिफल मिलेगा।
- 3 अर्थात् उस के प्रतिफल में कोई कमी न की जायेगी।

गये हों कि धरती में दौड़ भाग न कर^[1] सकते हों, उन्हें अज्ञान लोग न माँगने के कारण धनी समझते हैं, वह लोगों के पीछे पड़ कर नहीं माँगते। तुम उन्हें उन के लक्षणों से पहचान लोगे। तथा जो भी धन तुम दान करोगे, निस्सन्देह अल्लाह उसे भली भाँति जानने वाला है।

274. जो लोग अपना धन रात दिन, खुले छुपे दान करते हैं तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास, उन का प्रतिफल (बदला) है। और उन को कोई डर नहीं होगा। और न वह उदासीन होंगे।

275. जो लोग व्याज खाते हैं ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है जिसे शैतान ने छू कर उन्मत्त कर दिया हो। उन की यह दशा इस कारण होगी कि उन्होंने ने कहा कि व्यापार भी तो व्याज ही जैसा है, जब कि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध), तथा व्याज को हराम (अवैध) कर दिया^[2] है। अब

لَا يَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ
الْجَاهِلُ أَغْنَىٰ عَنْهُ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ
بِئْسِمَا لَهُمْ لَا يَسْتَلُونَ النَّاسَ الْحَقَّ وَمَا
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِالْإِثْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقْوَمُونَ إِلَّا كَمَا
يَقُومُ الَّذِينَ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ
اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ
مِّنْ رَبِّهِ فَاسْتَهْلَ فَلَهُ مَاسَلَفٌ وَأَمْرًا إِلَى اللَّهِ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ ۝

1 इस से सांकेतिक वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना हिज्रत कर गये। जिस के कारण उन का सारा सामान मक्का में छूट गया। और अब उन के पास कुछ भी नहीं बचा। परन्तु वह लोगों के सामने हाथ फैला कर भीख नहीं माँगते।

2 इस्लाम मानव में परस्पर प्रेम तथा सहानुभूति उत्पन्न करना चाहता है, इसी कारण उस ने दान करने का निर्देश दिया है कि एक मानव दूसरे की आवश्यकता पूर्ति करे। तथा उस की आवश्यकता को अपनी आवश्यकता समझे। परन्तु व्याज खाने की मासिकता सर्वथा इस के विपरीत है। व्याज भक्षी किसी की आवश्यकता को देखता है तो उस के भीतर उस की सहायता की भावना उत्पन्न नहीं होती। वह उस की विवशता से अपना स्वार्थ पूरा करता तथा उस की आवश्यकता को अपने धनी होने का साधन बनाता है। और क्रमशः एक निर्दयी हिंसक पशु बन

जिस के पास उस के पालनहार की ओर से निर्देश आ गया, और इस कारण उस से रुक गया, तो जो कुछ पहले लिया वह उसी का हो गया। तथा उस का मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो फिर वही करें तो वही नारकी है, जो उस में सदावासी होंगे।

276. अल्लाह व्याज को मिटाता है, और दानों को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी कृतघ्न घोर पापी से प्रेम नहीं करता।

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزِيلُ الصَّدَاقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ۝

277. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तथा नमाज़ की स्थापना करते रहे, और ज़कात देते रहे तो उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास उन का प्रतिफल है, और उन्हें कोई डर नहीं होगा और न उदासीन होंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

278. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और जो व्याज शेष रह गया है उसे छोड़ दो, यदि तुम ईमान रखने वाले हो तो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

279. और यदि तुम ने ऐसा नहीं किया, तो अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। और यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो तुम्हारे लिये तुम्हारा मूल धन है।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ شِئْتُمْ فَلَكُمْ زُكُوفُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ۝

कर रह जाता है, इस के सिवा व्याज की रीति धन को सीमित करती है, जब कि इस्लाम धन को फैलाना चाहता है, इस के लिये व्याज को मिटाना, तथा दान की भावना का उत्थान चाहता है। यदि दान की भावना का पूर्णतः उत्थान हो जाये तो कोई व्यक्ति दीन तथा निर्धन रह ही नहीं सकता।

न तुम अत्याचार करो⁽¹⁾, न तुम
पर अत्याचार किया जाये।

280. और यदि तुम्हारा ऋणी असुविधा में
हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो।
और अगर क्षमा कर दो (अर्थात् दान
कर दो) तो यह तुम्हारे लिये अधिक
अच्छा है, यदि तुम समझो तो।

281. तथा उस दिन से डरो जिस में तुम
अल्लाह की ओर फेंरे जाओगे, फिर
प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का
भरपर प्रतिकार दिया जायेगा, तथा
किसी पर अत्याचार न होगा।

282. हे ईमान वालो! जब तुम आपस
में किसी निश्चित अवधि तक के
लिये उधार लेन देन करो, तो उसे
लिख लिया करो, तुम्हारे बीच न्याय
के साथ कोई लेखक लिखे, जिसे
अल्लाह ने लिखने की योग्यता दी
है। वह लिखने से इन्कार न करो।
तथा वह लिखवाये जिस पर उधार
है। और अपने पालनहार अल्लाह से
डरो। और उस में से कुछ कम न
करो। यदि जिस पर उधार है वह
निर्बोध अथवा निर्बल हो, अथवा
लिखना न सकता हो तो उस का
संरक्षक न्याय के साथ लिखवाये।
तथा अपने में से दो पुरुषों को साक्षी
(गवाह) बना लो। यदि दो पुरुष न
हों तो एक पुरुष तथा दो स्त्रियों को
उन साक्षियों में से जिन को साक्षी
बनाना पसन्द करो। ताकि दोनों

وَأِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ وَأَنْ
تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَوَلَّيْتُمْ بِذَيْنِ إِلَىٰ أَجَلٍ
مَّسْمُومٍ فَاذْكُرُوا لَهُ وَلْيُكْتُبَ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ
وَلْيَمْلِكِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا
يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ
سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُبْلِغَ
فَلْيَمْلِكْ وَلِيْلُهُ بِالْعَدْلِ وَاسْأَشْهَدُوا شَهِيدَيْنِ
مِّن رِّجَالِكُمْ فَإِنْ لَّمْ يَكُنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ
وَأَمْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشَّاهِدَاتِ أَنْ
تُضِلَّ أَحَدُهُمَا فَتَذْهَبَ رِجَاؤُهُمَا الْآخَرَىٰ وَلَا
يَأْتِ الشَّهَادَةُ إِلَّا إِذَا مَادَّعَوْهُمَا وَلَا تَشْعُمُونَ أَنَّ
تُكْتَبُ لَهُ صَغِيرٌ أَوْ كَبِيرٌ إِلَىٰ أَجَلِهِ ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ
عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ إِنْ تَرَأَيْتُمَا
إِلَّا أَنْ تَكُونَا تِجَارَةً حَافِظَةً بُدِئُوا بِهَا
بَيْنَكُمْ فَلْيَسْ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ الْإِ
تَكْتَبُوهَا وَاسْأَشْهَدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا

1 अर्थात् मूल धन से अधिक लो।

(स्त्रियों) में से एक भूल जाये तो दूसरी याद दिला दे। तथा जब साक्षी बुलाये जायें तो इन्कार न करें। तथा विषय छोटा हो या बड़ा उस की अवधि सहित लिखवाने में आलस्य न करो, यह अल्लाह के समीप अधिक न्याय है। तथा साक्ष्य के लिये अधिक सहायका और इस से अधिक समीप है कि संदेह न करो। परन्तु यदि तुम व्यापारिक लेन देन हाथों हाथ (नगद करते हो) तो तुम पर कोई दोष नहीं कि उसे न लिखो। तथा जब आपस में लेन देन करो तो साक्षी बना लो। और लेखक तथा साक्षी को हानि न पहुँचाई जाये। और यदि ऐसा करोगे तो तुम्हारी अवैजा ही होगी, तथा अल्लाह से डरो। और अल्लाह तुम्हें सिखा रहा है। और निःसन्देह अल्लाह सब कुछ जानता है।

283. और यदि तुम यात्रा में रहो, तथा लिखने के लिये किसी को न पाओ तो धरोहर रख दो। और यदि तुम में परस्पर एक दूसरे पर भरोसा हो (तो धरोहर की भी आवश्यकता नहीं) जिस पर अमानत (उधार) है, वह उसे चुका दे। तथा अल्लाह (अपने पालनहार) से डरे, और साक्ष्य को न छुपाओ, और जो उसे छुपायेगा तो उस का दिल पापी है, तथा तुम जो करते हो अल्लाह सब जानता है।

284. आकाशों तथा धरती में जो कुछ है सब अल्लाह का है। और जो तुम्हारे मन में है उसे बोलो अथवा मन

يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ
مُسَوِّقٌ بِكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيَعْلَمُ اللَّهُ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنَ
مَقْبُوضَةً فَإِنْ أَصْنَعْتُمْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي
أُؤْتِيَ مَأْمَنَةً وَلْيَكُنْ لِلَّهِ رِجَالُهُ وَلَا تُكْسَبُوا
الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْسِبْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلِيلٌ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنْ تُبَدَّوْا مَا
فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفَوْا يُحَاسِبُكُمْ بِهِ اللَّهُ

ही में रखो अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जिसे चाहे दण्ड देगा। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

285. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया जो उस के लिये अल्लाह की ओर से उतारी गई। तथा सब ईमान वाले उस पर ईमान लाये। वह सब अल्लाह तथा उस के फ़रिश्तों और उस की सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाये। (वह कहते हैं:) हम उस के रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हम ने सुना, और हम आज्ञाकारी हो गये। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे, और हमें तेरे ही पास^[1] आना है।

286. अल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक (दायित्व का) भार नहीं रखता। जो सदाचार करेगा उस का लाभ उसी को मिलेगा, और जो दुराचार करेगा उस की हानि भी उसी की होगी। हे हमारे पालनहार! यदि हम भूल चूक जायें तो हमें न पकड़ा। हे हमारे पालनहार! हमारे ऊपर इतना बोझ न डाल जितना हम से पहले के लोगों पर डाला गया। हे हमारे पालनहार! हमारे पापों की अनदेखी कर दे, और हमें क्षमा कर दे, तथा हम पर दया कर, तू ही हमारा स्वामी है, तथा काफ़िरों के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

كَيْفَ يُغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

أَمَّنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَكِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا تَفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝

لَا يَكِلِفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ لَيْسَ لَنَا إِثْمٌ أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُغْلِبْنَا مَا لَنَا قُوَّةٌ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا ۝
وَاعْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا إِنَّكَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

1. इस आयत में सत्यधर्म इस्लाम की आस्था तथा कर्म का सारांश बताया गया है।

सूरह आले इमरान - 3

سُورَةُ آلِ اِمْرَانَ

सूरह आले इमरान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 200 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 33 में आले इमरान (इमरान की संतान) का वर्णन हुआ है जो ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहिस्सलाम) के पिता का नाम है। इस लिये इस का नाम ((आले इमरान)) रखा गया है।
- इस की आरंभिक आयत 9 तक तौहीद (अद्वैतवाद) को प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है इस लिये सभी धार्मिक विवाद में यही निर्णयकारी है।
- आयत 10 से 32 तक अहले किताब तथा दूसरों को चेतावनी दी गई है कि यदि उन्होंने ने कुर्आन के मार्गदर्शन को जिस का नाम इस्लाम है नहीं माना तो यह अल्लाह से कुफ़्र होगा जिस का दण्ड सदैव के लिये नरक होगा। और उन्होंने ने धर्म का जो बस्त्र धारण कर रखा है प्रलय के दिन उस की वास्तविकता खुल जायेगी और वह अपमानित हो कर रह जायेंगे।
- आयत 33 से 63 तक में मर्यम (अलैहस्सलाम) तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) से संबन्धित तथ्यों को उजागर किया गया जो उन निर्मूल विचारों का खण्डन करते हैं जिन्हें ईसाईयों ने धर्म में मिला लिया है और इस संदर्भ में ज़करिया (अलैहिस्सलाम) तथा यहया (अलैहिस्सलाम) का भी वर्णन हुआ है।
- आयत 64 से 101 तक अहले किताब ईसाईयों के कुपथ और उन के नैतिक तथा धार्मिक पतन का वर्णन करते हुये मुसलमानों को उन से बचने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 102 से 120 तक मुसलमानों को इस्लाम पर स्थित रहने तथा कुर्आन पाक को दृढ़ता से थामे रहने और अपने भीतर एक ऐसा गिरोह बनाने के निर्देश दिये गये हैं जो धार्मिक सुधार तथा सत्य का प्रचार करे और इसी के साथ अहले किताब के उपद्रव से सावधान रहने पर बल दिया गया है।
- आयत 121 से 189 तक उहुद के युद्ध की स्थितियों की समीक्षा की गई है। तथा उन कमज़ोरियों की ओर संकेत किया गया है जो उस समय उजागर हुईं।
- आयत 190 से अन्त तक इस का वर्णन है कि ईमान कोई अन्ध विश्वास

नहीं, यह समझ बूझ तथा स्वभाव की आवाज़ है। और जब मनुष्य इसे दिल से स्वीकार कर लेता है तो उस का संबन्ध अल्लाह से हो जाता और उस की यह प्रार्थना होती है कि उस का अन्त शुभ हो। उस समय उस का पालनहार उसे शुभपरिणाम की शुभसूचना सुनाता है कि उस ने सत्धर्म का पालन करने में जो योगदान दिये हैं वह उसे उन का भरपूर सुफल प्रदान करेगा। फिर अन्त में सत्य की राह में संघर्ष करने और सत्य तथा असत्य के संघर्ष में स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।
3. उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्आन) उतारी है, जो इस से पहले की पुस्तकों के लिये प्रमाणकारी है, और उसी ने तौरात तथा इंजील उतारी है।
4. इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फुर्कान उतारा है^[1], तथा जिन्होंने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है।
5. निस्संदेह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज़ छुपी नहीं है।

الْحَمْدُ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

تَنْزِيلُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْقُرْآنَ لِنَاسٍ أَلَذِّينَ كَفَرُوا يَا أَيُّهَا اللَّهُ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ

1 अर्थात् तौरात और इंजील अपने समय में लोगों के लिये मार्गदर्शन थीं। परन्तु फुर्कान (कुर्आन) उतरने के पश्चात् अब वह मार्गदर्शन केवल कुर्आन पाक में है।

6. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाषयो में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

7. उसी ने आप पर^[1] यह पुस्तक (कुर्आन) उतारी है जिस में कुछ आयतें मुहकम^[2] (सुदृढ़) हैं जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिह^[3] (संदिग्ध) हैं। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पकड़े हैं वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से है, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

8. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार!

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُخَكَّمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने मानव का रूप आकार बनाने और उसकी आर्थिक आवश्यकता की व्यवस्था करने के समान, उस की आत्मिक आवश्यकता के लिये कुर्आन उतारा है, जो अल्लाह की प्रकाशना तथा मार्गदर्शन और फुर्कान है। जिस के द्वारा सत्योसत्य में विवेक (अन्तर) कर के सत्य को स्वीकार करें।

2 मुहकम (सुदृढ़) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन के अर्थ स्थिर, खुले हुये हैं। जैसे एकेधरवाद, रिसालत तथा आदेशों और निषेधों एवं हलाल (वैध) और हराम (अवैध) से सम्बन्धित आयतें, यही पुस्तक का मूल आधार हैं।

3 मुतशाबिह (संदिग्ध) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन में उन तथ्यों की ओर संकेत किया गया है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों में नहीं आ सकते, जैसे मौत के पश्चात् जीवन, तथा परलोक की बातें, इन आयतों के विषय में अल्लाह ने हमें जो जानकारी दी है हम उन पर विश्वास करते हैं, क्योंकि इनका विस्तार विवरण हमारी बुद्धि से बाहर है, परन्तु जिन के श दिलों में खोट है वह इन की वास्तविकता जानने के पीछे पड़ जाते हैं जो उन की शक्ति से बाहर हैं।

हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है।

9. हे हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई सदेह नहीं, निस्सदेह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरुद्ध नहीं करता।

10. निश्चय जो काफिर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के ईंधन बनेंगे।

11. जैसे फिरऔनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्होंने ने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।

12. हे नबी! काफिरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना¹⁾ है।

13. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये, एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफिर था, वह अपनी आँखों से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग

لَكَ نَجْمَةٌ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَكَابُ ۝

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۝

كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَآخَذَ اللَّهُ مِنْهُمْ يَذُوقُهُمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْيُهُمْ وَهُمْ يُشْرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ مَوْبِشَ الْجَهَادِ ۝

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتَيْنِ الَّذِينَ اتَّخَذْتُمُ الْمُشْرِكِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْحَرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مُمِلِّيهِمْ رَأَى الْعَيْنُ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بَصَرَهُ مَنْ يَشَأْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

1. इस में काफिरों की मुसलमानों के हाथों पराजय की भविष्यवाणी है।

रहे हैं। तथा अब्बाह अपनी सहायता द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। निःसंदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बड़ी शिक्षा^[1] है।

14. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीजें, जैसे स्त्रियाँ, संतान, सोने चाँदी के ढेर, निशान लगे घोड़े, पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई हैं। यह सब संसारिक जीवन के उपभोग्य हैं। और उत्तम आवास अब्बाह के पास है।

15. (हे नबी!) कह दो: क्या मैं तुम्हें इस से उत्तम चीज़ बता दूँ? उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं। जिन में नहरें बह रही हैं। वह उन में सदावासी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ होंगी, तथा अब्बाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी। और अब्बाह अपने भक्तों को देख रहा है।

16. जो (यह) प्रार्थना करते हैं कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।

17. जो सहनशील हैं, सत्यवादी हैं, आज्ञाकारी हैं, दानशील तथा भोरों में अब्बाह से क्षमा याचना करने वाले हैं।

18. अब्बाह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई

رُزِينَ لِلنَّاسِ حُبَّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرَ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْخَيْلِ الْمُنَصَّاةِ وَالْخَنَازِيرَ وَالْأَنْعَامَ وَالْخُرُثَ
ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا إِنَّهُ عِنْدَ حُسْنِ
الْمَالِ ۝

قُلْ أُوْثِقْتُكُمْ بِعَهْدِي مِنْ ذَلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ
رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّكَ آَمِنًا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوبَنَا وَفِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

الضَّالِّينَ وَالضَّالِّينَ وَالضَّالِّينَ وَالضَّالِّينَ
وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقِينَ بِالْأَسْحَارِ ۝

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْيَقِينُ وَأُولُوا

1 अर्थात् इस बात की कि विजय अब्बाह के समर्थन से प्राप्त होती है, सेना की संख्या से नहीं।

पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फुरिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

19. निस्संदेह (वास्तविक) धर्म अल्लाह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने के पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

20. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अल्लाह के आज्ञाकारी हो गये। तथा अहले किताब, और उम्मीयों (अर्थात् जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा⁽¹⁾ देना है। तथा अल्लाह भक्तों को देख रहा है।

21. जो लोग अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करते हों, तथा नबियों को अवैध बध्न करते हों, तथा उन लोगों का बध्न करते हों जो न्याय का आदेश देते हैं तो उन्हें दुःखदायी यातना⁽²⁾ की शुभ सूचना सुना दो।

الْعِلْمُ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۚ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بِنِعْمَةِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ الْحَسِيبُ ۝

فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۚ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأُمِّيِّينَ ۖ أَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ ۚ وَاللَّهُ بِصِرَاطِ الْعِبَادِ لَدُنْهُ

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۖ يُؤْتَقَاتُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

1 अर्थात् उन से बाद विवाद करना व्यर्थ है।

2 इस में यहूद की आस्थिक तथा कर्मिक कुपथा की ओर संकेत है।

22. यही हैं जिन के कर्म संसार तथा परलोक में अकारथ गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٢٢﴾

23. हे नबी! क्या आप ने उन की^[1] दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे हैं, ताकि उन के बीच निर्णय^[2] करे तो उन का एक गिरोह मुँह फेर रहा है। और वह है ही मुँह फेरने वाले।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّى فَوَاقِلُهُمْ وَمِنْهُمْ مَّنْ عَصَاكَ ﴿٢٣﴾

24. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्होंने ने कहा कि नरक की अग्नि हमें गिनती के कुछ दिन ही छूएगी, तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ نَمَسَّنَا النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً ۖ وَهُمْ فِي ذَوِّهَا يَغْتَابُونَ ﴿٢٤﴾

25. तो उन की क्या दशा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे, जिस (के आने) में कोई संदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा, और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।

كَيْفَ إِذَا جُمِعْتُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

26. हे (नबी)! कहो: हे अल्लाह! राज्य के^[3] अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य

قُلِ اللَّهُمَّ لِلَّهِ الْمُلْكُ تُوَفَّى الْمُلُوكُ مَن كَسَبُوا

1 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं।

2 अर्थात् विभेद का निर्णय कर दे। इस आयत में अल्लाह की पुस्तक से अभिप्राय: तौरात और इंजील हैं। और अर्थ यह है कि जब उन्हें उन की पुस्तकों की ओर बुलाया जाता है कि अपनी पुस्तकों ही को निर्णायक मान लो, तथा बताओ कि उन में अंतिम नबी पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है या नहीं? तो वह कतरा जाते हैं, जैसे कि उन्हें कोई ज्ञान ही न हो।

3 अल्लाह की अपार शक्ति का वर्णन।

दे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है।

27. तू रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है, तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर^[1] देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।

28. मुमिनों को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरुद्ध काफिरों को अपना सहायक मित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये^[2] और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है। और अल्लाह ही की ओर जाना है।

29. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

30. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मा के बीच बड़ी दूरी होती।

وَتَنَزِّلُ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّارِ النَّدِيمَةِ ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

تُولِيهِ الْبَيْتَ فِي النَّهَارِ وَتُولِيهِ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُزَوِّجُ الْمَتَّيَّ وَتُزَوِّجُ الْمَيِّتَ ۚ وَتُزَوِّجُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

لَا يَجِدُ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ ۚ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُ تُقَاتُوا ۚ وَيُخَوِّدُكُمْ اللَّهُ فَتَسْخَرُوا لَهُ الْاَرْضُ كُلَّهَا ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۝

قُلْ إِنْ تَحْتَوِمْ مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ يُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

يَوْمَ يُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرَةً ۚ وَمَا كُنَّا عَمَلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۚ أَوْ يُعَذِّبُهُمْ اللَّهُ فَتَلْسَهُ تِلَاسًا ۚ وَاللَّهُ رَءُوفٌ ۝

بِالْبَيِّنَاتِ ۝

1 इस में रात्रि-दिवस के परिवर्तन की ओर संकेत है।

2 अर्थात् संधि मित्र बना सकते हो।

तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता^[1] है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये अति करुणामय है।

31. हे नबी! कह दो: यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम^[2] करेगा। तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

32. हे नबी! कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्सदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

33. वस्तुतः अल्लाह ने आदम, नूह, इब्राहीम की संतान तथा इमरान की संतान को संसार वासियों में चुन लिया था।

34. यह एक दूसरे की संतान हैं, और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

35. जब इमरान की पत्नी^[3] ने कहा: हे मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है, मैं ने तेरे^[4] लिये उसे मुक्त करने की मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से स्वीकार कर ले। वास्तव में तू ही सब कुछ सुनता और जानता है।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

ذُرِّيَّةَ بَعْضِهِم مِّن بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَدَارْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي فَاعْزُزْنِي فَتَكُنْ مِنِّي إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

1 अर्थात् अपनी अबैजा से ।

2 इस में यह संकेत है कि जो अल्लाह से प्रेम का दावा करता हो, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अनुसरण न करता हो तो वह अल्लाह का प्रेमी नहीं हो सकता।

3 अर्थात् मर्यम की माँ।

4 अर्थात् बेटुल मक़दिस की सेवा के लिये।

36. फिर जब उस ने बालिका जनी तो (संताप से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था-और नर, नारी के समान नहीं होता-, और मैं ने उस का नाम मर्यम रखा है। और मैं उसे तथा उस की संतान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ।^[1]

37. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और ज़करिया को उस का संरक्षक बनाया। ज़करिया जब भी उस के मेहराब (उपासना कोष्ठ) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहता कि हे मर्यम! यह कहाँ से (आया) है? वह कहती: यह अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।

38. तब ज़करिया ने अपने पालनहार से प्रार्थना की हे मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान कर। निस्संदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

39. तो फ़रिश्तों ने उसे पुकारा- जब वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था- कि: अल्लाह तुझे "यहया" की शुभ:

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ وَلَئِنْ كُنَّا إِلَّا نُنْثَىٰ وَإِنِّي سَتِيئُهَا مَرِيئَمَ وَإِنِّي أَعِيزُ هَٰذَاكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝

فَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَ هَٰرِزٍ قَالًا قَالَ لِمَ يَرِيءُ أَنَّىٰ لِي هَٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

هَٰذَا لَكَ دُعَاؤُكَ رَبَّكَ وَقَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ۝

فَتَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا لِّكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ

1 हदीस में है कि जब कोई शिशु जन्म लेता है, तो शैतान उसे स्पर्श करता है जिस के कारण वह चीख कर रोता है, परन्तु मर्यम और उस के पुत्र को स्पर्श नहीं किया है। (सही बुखारी भ 4548)

सूचना दे रहा है, जो अल्लाह के शब्द (इसा) का पुष्टि करने वाला, प्रमुख तथा संयमी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।

وَسَيِّدًا أَوْ حَصُورًا أَوْ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾

40. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहां से होगा, जब कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ¹ है? उस ने कहा: अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।

قَالَ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿١٠﴾

41. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत से। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रह। और संध्या, प्रातः उस की पवित्रता का वर्णन कर।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّي آيَةً قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْرًا أَوْ كُفًّا وَكَذَلِكَ نُبَيِّنُ لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١١﴾

42. और (याद करो) जब फ़रिश्तों ने मर्यम से कहा: हे मर्यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَايِكَةُ يَمْرُؤُومَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ﴿١٢﴾

43. हे मर्यम! अपने पालनहार की अज्ञाकारी रहो। और सज्दा करो तथा रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रहो।

يَمْرُؤُومَ اقْنُطِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ﴿١٣﴾

44. यह ग़ैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशना कर रहे हैं। और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी

ذَلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهُمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿١٤﴾

1 यह प्रश्न ज़करिया ने प्रसन्न हो कर आश्चर्य से किया।

लेखनियाँ^[1] फेंक रहे थे कि कौन मर्यम का अभिरक्षण करेगा। और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड़ रहे थे।

45. जब फरिश्तों ने कहा: हे मर्यम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द^[2] की शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह ईसा पुत्र मर्यम होगा। वह लोक-परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।

46. वह लोगों से गोद में तथा अघेड़ आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।

47. मर्यम ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने^[3] कहा: इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है कि: "हो जा" तो वह हो जाता है।

48. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबोध और तौरात तथा इंजील की शिक्षा देगा।

49. और फिर वह बनी इस्राईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार

إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ

وَنُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْبَيْتِ وَكَهْلًا وَبَيْنَ الصُّلُوحِينَ ۝

قَالَتْ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ ۚ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالْتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ

وَنُؤْتِيهِ الْإِسْرَءِيلَ نَبِيًّا ۖ فَقَدْ جَعَلْنَاكِ رَاسِدَةً

1 अर्थात् यह निर्णय करने के लिये कि: मर्यम का संरक्षक कौन हो?

2 अर्थात् वह अल्लाह के शब्द "कुन" से पैदा होगा। जिस का अर्थ है "हो जा"।

3 अर्थात् फरिश्ते ने।

की ओर से निशानी लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार के समान बनाऊँगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को स्वस्थ कर दूँगा। और मुर्दों को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्संदेह इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानियाँ हैं, यदि तुम ईमान वाले हो।

50. तथा मैं उस की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है "तौरात"। तुम्हारे लिये कुछ चीजों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ, जो तुम पर हaram (अवैध) की गयी हैं। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अतः तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।

51. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो। यही सीधी डगर है।

52. तथा जब ईसा ने उन से कुफ़्र का संवेदन किया तो कहा: अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरों) ने कहा: हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) हैं।

مِّن رَّبِّكُمْ إِنِّي أَلْخَلَقْتُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ كَبِيرًا بِإِذْنِ اللَّهِ وَأُبْرِئُ الْكَلِمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأُخْرِجُ السَّمُوتَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَ أَنْتُمْ لَكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمِمَّا تَخْرُجُونَ فِي يَوْمَيْكُمْ إِنِّي ذَلِك لَآيَةٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَلَأُنَحِلَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۝

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ غَنًّا أَنْصَارُ اللَّهِ أَلَمْ نَكُنْ بِاللهِ وَاشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝

53. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।

54. तथा उन्होंने ने षड्यंत्र^[1] रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचने वालों में सब से अच्छा है।

55. जब अल्लाह ने कहा: हे ईसा! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला तथा अपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफिरों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफिरों के ऊपर^[2] करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम बिभेद कर रहे हो।

56. फिर जो काफिर हो गये, उन्हें लोक परलोक में कड़ी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।

57. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

58. हे नबी! यह हमारी आयतें और

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝

وَمَكْرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكِيرِينَ ۝

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَسَىٰ إِنِّي مُتَوَقِّيكَ وَرَافِعَكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرَكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلَ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا أُنْتُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أَجُورَهُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

ذَٰلِكَ نَمُثِّلُكَ عَلَىٰكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالَّذِي كَرَّمُوكُمُ

1 अर्थात् ईसा (अलैहिस्सलाम) को हत् करने का। तो अल्लाह ने उन्हें विफल कर दिया। (देखिये: सूरह निसा, आयत 157)।

2 अर्थात् यहूदियों तथा मुशिरकों के ऊपर।

तत्त्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

59. वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है,^[1] जैसे आदम की। उसे (अर्थात् आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहा: "हो जा" तो वह हो गया।

60. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य^[2] है, अतः आप संदेह करने वालों में न हों।

61. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों, और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं, और स्वयं को भी, फिर अल्लाह से सविनय प्रार्थना करें, कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर^[3] हो।

62. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُتَرَدِّينَ ۝

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ آيَاتِهِ مِّنَ الْعُلَمَاءِ فُلْ
تَكَلِّمُوا لَهُم مَّا تَشَاءُوا وَأَنبِئُوهُمْ وَأَنبِئُوا
وَأَنبِئُوا أَنفُسَكُمْ وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ تَبَيِّنْ
فَتَجْعَلُ لَعْنَتُ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ۝

إِنَّ هَذَا هُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِن إِلَهِ إِلَّا
اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

1 अर्थात् जैसे प्रथम पुरुष आदम (अलैहिस्सलाम) को बिना माता-पिता के उत्पन्न किया, उसी प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) को बिना पिता के उत्पन्न कर दिया, अतः वह भी मानव पुरुष है।

2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम का मानव पुरुष होना। अतः आप उन के विषय में किसी संदेह में न पड़ें।

3 अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि वह हम में से मिथ्यावादियों को अपनी दया से दूर कर दे।

63. फिर भी यदि वह मुँह^[1] फेरे, तो निस्सदिह अल्लाह उपद्रवियों को भली भाँति जानता है।

64. हे नबी! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है। कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें, तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न बनाये। फिर यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के)^[2] अज्ञाकारी हैं।

65. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद^[3] क्यों करते हो, जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात् उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?

66. और फिर तुम्हीं ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान^[4] था, तो उस विषय में क्यों विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

فَلَنْ يَأْهَلَ الْكِتَابُ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَئِنْ كُنَّا لَبَعْضُكُمْ لَبَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ۝

يَأْهَلَ الْكِتَابُ لِمُحَاجَّةٍ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

هَآأَنْتُمْ مَوْلَاؤَآ حَآجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् सत्य को जानने की इस विधि को स्वीकार न करें।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम से संबंधित विवाद के निवारण के लिये एक दूसरी विधि बताई गई है।

3 अर्थात् यह क्यों कहते हो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम हमारे धर्म पर थे। तौरात और इंजील तो उन के सहस्रों वर्ष के पश्चात् अवतरित हुई। तो वह इन धर्मों पर कैसे हो सकते हैं।

4 अर्थात् अपने धर्म के विषय में।

कोई ज्ञान^[1] नहीं? तथा अब्राह
जानता है, और तुम नहीं जानते।

67. इब्राहीम न यहूदी था, न नस्रानी
(ईसाई)। परन्तु वह एकेधरवादी,
मुस्लिम "आज्ञाकारी" था। तथा वह
मिश्रणवादियों में से नहीं था।

68. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक
समीप तो वह लोग हैं जिन्होंने उस
का अनुसरण किया, तथा यह नबी^[2],
और जो ईमान लाये। और अब्राह
ईमान वालों का संरक्षकभूमित्र है।

69. अहले किताब में से एक गिरोह की
कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दे।
जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा
है, परन्तु वह समझते नहीं हैं।

70. हे अहले किताब! तुम अब्राह की
आयतों^[3] के साथ कुफ्र क्यों कर रहे
हो, जब कि: तुम साक्षी^[4] हो? के
विषय में।

71. हे अहले किताब! क्यों सत्य को
असत्य के साथ मिलाकर संदिग्ध कर
देते हो, और सत्य को छुपाते हो,
जब कि तुम जानते हो।

72. अहले किताब के एक समुदाय ने
कहा: कि दिन के आरंभ में उस पर
ईमान ले आओ जो ईमान वालों पर

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ
كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝

إِنَّ أَوَّلَ الْبَائِسِ يَا إِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ
اتَّبَعُوهُ وَهَذَا الْكَيْدُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَاللَّهُ وَرِثَةُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يُضِلُّوكُمْ عَنْ آلِهَتِكُمْ، وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلِيْسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ
وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

وَقَالَتِ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ الْمُنَافِقُ الَّذِي أَنْزَلَ
عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَآخِرَهُ

1 अर्थात् इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म के बारे में।

2 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायी।

3 जो तुम्हारी किताब में अंतिम नबी से संबंधित है।

4 अर्थात् उन अयतों के सत्य होने के साक्षी हो।

उतारा गया है, और उस के अन्त (अर्थात: संध्या समय) कुफ़्र कर दो, संभवतः वह फिर^[1] जायें।

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٣٠﴾

73. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन तो वही है जो अल्लाह का मार्गदर्शन है। (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास विवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अल्लाह विशाल ज्ञानी है।

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا بِمَا نُنَزِّلُ مِنْ رَبِّكُمْ قُلْ إِنْ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلُ مَا أُوتِيَ مُحَمَّدٌ أَوْ يَخْأَجُوكُمْ بَعْدَ رِكْكُمْ قُلْ إِنْ الْفَضْلُ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣١﴾

74. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अल्लाह बड़ा दानशील है।

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٣٢﴾

75. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चाँदी-सोने का ढेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा। तथा उन में वह भी है कि: जिस के पास एक दीनार^[2] भी धरोहर रख दो, तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्होंने ने कहा कि उम्मीयों के बारे में हम पर कोई

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ يُقَنطَرِ بِوَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمَنَهُ بَدَىٰ بِكَ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيَّاتِ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

1 अर्थात मुसलमान इस्लाम से फिर जायें।

2 दीनार- सोने के सिक्के को कहा जाता है।

दोष^[1] नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

76. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।

77. निस्संदेह जो अल्लाह के^[2] वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य खरीदते हैं, उन्हीं का अखिरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

78. और बैशक उन में से एक गिरोह^[3] ऐसा है जो अपनी जुबानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ते हैं ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते हैं कि वह अल्लाह के पास से है जब कि वह अल्लाह के पास से नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

79. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वत दी हो उस के लिये योग्य नहीं कि लोगों

يَلِي مَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ وَاتَّقَى إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا
قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا
يَكَلِمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْحِسَابِ وَلَا
يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَإِنْ مِنْهُمْ لَفَرِيقٌ يَلْعَنُونَ أَلَيْسَتْ لَهُمْ بِالْكِتَابِ
لِتَحْسِبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ
اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ
وَالْحُكْمَ وَالنَّبُوءَةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا

1 अर्थात् उन के धन का अपभोग करने पर कोई पाप नहीं। क्यों कि: यहूदियों ने अपने अतिरिक्त सब का धन हलाल समझ रखा था। और दूसरों को वह "उम्मी" कहा करते थे। अर्थात् वह लोग जिन के पास कोई आसमानी किताब नहीं है।

2 अल्लाह के वचन से अभिप्राय वह वचन है, जो उन से धर्म पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

3 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं। और पुस्तक से अभिप्राय तौरात है।

से कहे कि अल्लाह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ।^[1] अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।

80. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फरिश्तों तथा नबियों को अपना पालनहार^[2] (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ्र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अल्लाह के अज्ञाकारी हो?

81. तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्त्वदर्शिता) दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हुये आये, जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अल्लाह) ने कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहा: हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे^[3] साथ साक्षियों में हूँ।

إِن مِّن دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُنُوا ذُرِّيَّتَيْنِ مِنَّا مُكْتَفَيْنَ
تَعْلَمُونَ الْكُذِبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَن تَسْجُدَ وَالْمَلَائِكَةَ
وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ
أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ
مِّن كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ
لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ
أَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ أَصْرِي فَأَلَّوْا أَفْوَارًا
قَالَ فَاصْبِرُوا وَأَوَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝

1 भावार्थ यह है कि जब नबी के लिये योग्य नहीं कि: लोगों से कहे कि मेरी इबादत करो तो किसी अन्य के लिये कैसे योग्य हो सकता है?

2 जैसे अपने पालनहार के आगे झुकते हो, उसी प्रकार उन के आगे भी झुको।

3 भावार्थ यह है कि: जब आगामी नबियों को ईमान लाना आवश्यक है, तो उन के अनुयायियों को भी ईमान लाना आवश्यक होगा। अतः अंतिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लहु अलैहि, व सल्लम) पर ईमान लाना सभी के लिये अनिवार्य है।

82. फिर जिस ने इस के^[1] पश्चात् मुँह फेर लिया, तो वही अवैज्ञाकारी है।

83. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं? जब कि जो आकाशों तथा धरती में हैं, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी^[2] हैं, तथा सब उसी की ओर फेरे^[3] जायेंगे।

84. (हे नबी!) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक और याकूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा, ईसा, तथा अन्य नबियों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) ईमान लाये। हम उन (नबियों) में किसी के बीच कोई अंतर नहीं^[4] करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।

85. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

فَمَنْ تَوَلَّى بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٨٢﴾

أَفَتَعْبُرُونَ اللَّهَ بِبَيْعُونَ وَلَهُ اسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا ۗ وَالْيٰهِي يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

كُلُّ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا اُنْزِلَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيٰعْقُوبَ وَالْاِسْبٰطِ وَمَا اَوْفٰى مُوسٰى وَعِيسٰى وَالنَّبِيُّنَ مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾

وَمَنْ يَّتَّبِعْ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾

1 अर्थात् इस वचन और प्रण के पश्चात्।

2 अर्थात् उसी की आज्ञा तथा व्यवस्था के अधीन हैं। फिर तुम्हें इस स्वभाविक धर्म से इन्कार क्यों है?

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों के प्रतिफल के लिये।

4 अर्थात् मूल धर्म अल्लाह की आज्ञाकारिता है, और अल्लाह की पुस्तकों तथा उस के नबियों के बीच अंतर करना, किसी को मानना और किसी को न मानना अल्लाह पर ईमान और उस की आज्ञाकारिता के विपरीत है।

86. अब्राह ऐसी जाति को कैसे मार्गदर्शन देगा जो अपने ईमान के पश्चात् काफिर हो गये, और साक्षी रहे कि यह रसूल सत्य है, तथा उन के पास खुले तर्क आ गये?? और अब्राह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

87. इन्हीं का प्रतिकार (बदला) यह है कि उन पर अब्राह तथा फरिश्तों और सब लोगों की धिक्कार होगी।

88. वह उस में सदावासी होंगे, उन से यातना कम नहीं की जायेगी, और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।

89. परन्तु जिन्होंने इस के पश्चात् तौबः (क्षमा याचना) कर ली, तथा सुधार कर लिया, तो निश्चय अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

90. वास्तव में जो अपने ईमान लाने के पश्चात् काफिर हो गये, फिर कुफ्र में बढ़ते गये तो उन की तौबः (क्षमा याचना) कदापि¹ स्वीकार नहीं की जायेगी, तथा वही कुपथ है।

91. निश्चय जो काफिर हो गये, तथा काफिर रहते हुये मर गये तो उन से धरती भर सोना भी स्वीकार नहीं किया जायेगा, यद्यपि उस के द्वारा अर्थदण्ड दे। उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है। और उन का कोई सहायक न होगा।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ
وَشَهِدُوا أَنَّ الرُّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

أُولَئِكَ جَزَاءُهُمْ أَنْ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُونَ ۝

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا
كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا قَدْ
كُنُوا يُعَذَّبُونَ مِنَ الْأَرْضِ ذَرِيرًا
وَلَوْ آمَنَ تَدَىٰ بَيْتِهِ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ۝ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

1 अर्थात् यदि मौत के समय क्षमा याचना करें।

92. तुम पुण्य^[1] नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

93. प्रत्येक खाद्य पदार्थ बनी इस्राईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इस्राईल^[2] ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नबी!) कहो कि तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो, यदि तुम सत्यवादी हो।

94. फिर इस के पश्चात् जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अत्याचारी है।

95. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो, तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

96. निस्संदेह पहला घर जो मानव के

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ
وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حَلَالًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا
حَرَّمَ إِسْرَءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ
التَّوْرَةُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا إِن
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

فَمَنْ أَظْلَمُ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۚ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا
كَانَ مِنَ الشِّرْكِ بِشَيْءٍ ۝

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا

1 अर्थात् पुण्य का फल स्वर्ग।

2 जब कुर्आन ने यह कहा कि यहूद पर बहुत से स्वच्छ खाद्य पदार्थ उन के अत्याचार के कारण अवैध कर दिये गये। (देखिये सूरह निसा आयत 160, सूरह अन्आम आयत 146)। अन्यथा यह सभी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग में वैध थे। तो यहूद ने इसे झुठलाया तथा कहने लगे कि यह सब तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग ही से अवैध चले आ रहे हैं। इसी पर यह आयतें श उतरी। कि तौरात से इस का प्रमाण प्रस्तुत करो कि यह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग ही से अवैध है। यह और बात है कि इस्राईल ने कुछ चीजों जैसे ऊँट का मांस रोग अथवा मनौती के कारण अपने लिये स्वयं अवैध कर लिया था। यहाँ यह याद रखें कि इस्लाम में किसी उचित चीज़ को अनुचित करने की अनुमति किसी को नहीं है। (देखिये: शौकानी।)

وَهْدَىٰ إِلَىٰ الْعَلَمِينَ ﴿٩٦﴾

लिये (अब्राह की वन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।

97. उस में खुली निशानियाँ हैं (जिन में) मकामे⁽¹⁾ इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शांत (सुरक्षित) हो गया। तथा अब्राह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हो। तथा जो कुफ़ करेगा, तो अब्राह संसार वासियों से निस्पृह है।

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا بُرَهِيمُ وَمِمَّنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٩٧﴾

98. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! यह क्या है कि तुम अब्राह की आयतों के साथ कुफ़ कर रहे हो, जब कि अब्राह तुम्हारे कर्मों का साक्षी है?

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾

99. हे अहले किताब! किस लिये लोगों को जो ईमान लाना चाहें, अब्राह की राह से रोक रहे हो, उसे उलझाना चाहते हो जब कि तुम साक्षी⁽²⁾ हो, और अब्राह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है?

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُوا فِتْنًا عِوَجًا وَأَنْتُمْ شُهَدَاءُ وَمَا اللَّهُ بِغَائِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾

100. हे ईमान वालो! यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफ़िर बना देंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَطِيعُوا فَرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرًا ﴿١٠٠﴾

101. तथा तुम कुफ़ कैसे करोगे जब कि

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُثَلِّثُونَ آلَ اللَّهِ

1 अर्थात् वह पत्थर जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने काबा का निर्माण किया जिस पर उन के पैरों के निशान आज तक हैं।

2 अर्थात् इस्लाम के सत्धर्म होने को जानते हो।

तुम्हारे सामने अब्राह की आयतें पढ़ी जा रही हैं, और तुम में उस के रसूल^[1] मौजूद हैं? और जिस ने अब्राह को^[2] धाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।

102. हे ईमान वालो! अब्राह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।

103. तथा अब्राह की रस्सी^[3] को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और बिभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अब्राह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गड़हे के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अब्राह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

104. तथा तुम में एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिये जो भली बातों^[4] की ओर बुलाये, तथा भलाई का आदेश देता रहे, और

وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يَعْتَصِمْ بِإِمَامِهِ فَقَدْ هَدَىٰ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ فِئَتَيْكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

وَالَّذِينَ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात् अब्राह का आज्ञाकारी हो गया।

3 अब्राह की रस्सी से अभिप्राय कुरआन और नबी (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत है। यही दोनों मुसलमानों की एकता और परस्पर प्रेम का सूत्र हैं।

4 अर्थात् धर्मानुसार बातों का।

बुराई^[1] से रोकता रहे, और बही सफल होंगे।

105. तथा उन^[2] के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।

106. जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जिन के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़ कर लिया था? तो अपने कुफ़ करने का दण्ड चखो।

107. तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अब्बाह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावासी होंगे।

108. यह अब्बाह की आयतें हैं, जो हम आप को हक्क के साथ सुना रहे हैं, तथा अब्बाह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।

109. तथा अब्बाह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अब्बाह ही की ओर सब विषय फेरे जायेंगे।

110. तुम सब से अच्छी उम्मत हो, जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो, तथा बुराई से रोकते हो, और अब्बाह पर ईमान (विश्वास)

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ كَافِرُونَ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ يَا حَقُّقُ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ۝

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِلٰى اللَّهِ تُرْجَعُ الْاُمُورُ ۝

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ مِنْهُمْ الْمُؤْمِنُونَ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا مِنْكُمْ ۝

1 अर्थात् धर्म विरोधी बातों से।

2 अर्थात् अहले किताब (यहूदी व ईसाई)।

रखते^[1] हो। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ ईमान वाले हैं, और अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

111. वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।

112. इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण^[2] अथवा लोगों की शरण में हो^[3], यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये, तथा उन पर दरिद्रता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़र कर रहे थे और नबियों का अवैध बध कर रहे थे। यह इस कारण कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे।

113. वह सभी समान नहीं हैं, अहले

لَنْ يَضُرُّكُمْ إِلَّا أذى وَإِنْ يُقَاتِلُوكُمْ يُؤْذِكُمْ
الْأَذَى بَارَكُمْ لَا يُنْصَرُونَ ①

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثَقِفُوا إِلَّا عَجِلَ
مِّنَ اللَّهِ وَحِيلَ مِنَ الْمُنَافِقِينَ وَبَاءَ مَا يَغْضَبُ مِنْ
اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الرُّسُلَ
بَغْيَ حَقٍّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ②

لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ

1 इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है, तथा उन्हें उम्मत कहा गया है। किसी जाति अथवा वर्ग और वर्ण के नाम से संबोधित नहीं किया गया है। और इस में यह संकेत है कि मुसलमान उन का नाम है जो सत्धर्म के अनुयायी हों। तथा उन के अस्तित्व का लक्ष्य यह बताया गया है कि वह सम्पूर्ण मानव विश्व को सत्धर्म इस्लाम की ओर बुलायें जो सर्व मानव जाति का धर्म है। किसी विशेष जाति और क्षेत्र अथवा देश का धर्म नहीं है।

2 दूसरा बचाव का तरीका यह है कि किसी गैर मुस्लिम शक्ति की उन्हें सहायता प्राप्त हो जाये।

3 अल्लाह की शरण से अभिप्राय इस्लाम धर्म है।

किताब में एक (सत्य पर) स्थित उम्मत^[1] भी है, जो अल्लाह की आयतों रातों में पढ़ते हैं, तथा सज्दा करते रहते हैं।

114. अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हैं, तथा भलाई का अदेश देते, और बुराई से रोकते हैं, तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं, और यही सदाचारियों में हैं।

115. वह जो भी भलाई करेंगे, उस की उपेक्षा(अनादर) नहीं किया जायेगा और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँति जानता है।

116. (परन्तु) जो काफिर^[2] हो गये, उन के धन और उन की संतान अल्लाह (की यातना) से उन्हें तनिक भी बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी है, वही उस में सदावासी होंगे।

117. जो दान वह इस संसारिक जीवन में करते हैं वह उस वायु के समान है जिस में पाला हो, जो किसी कौम की खेती को लग जाये जिन्होंने ने अपने ऊपर अत्याचार^[3] किया हो, और उस का नाश कर दे। तथा अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु वह

يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْاءً تَيْلٍ وَهُمْ
يَسْجُدُونَ ۝

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَهُمْ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ أُولَئِكَ
فِي الْحُسْنَىٰ وَأُولَئِكَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

وَمَا يَنْفَعُ لَهُمْ مِنْ خَيْرٍ فَكَانَ يُكْفَرُ لَهُ
وَاللَّهُ عَلَيْهِ بِالْمُنْتَقِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا
أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ
رِيحٍ فِيهَا صَارَاظٌ صَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا
أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكْنَاهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ
أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

1 अर्थात् जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) आदि।

2 अर्थात् अल्लाह की आयतों (कुर्आन) को नकार दिया।

3 अवैज्ञा तथा अस्वीकार करते रहे थे। इस में यह संकेत है कि अल्लाह पर ईमान के बिना दानों का प्रतिफल परलोक में नहीं मिलेगा।

स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

118. हे ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ,^[1] वह तुम्हारा बिगाड़ने में तनिक भी नहीं चूकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है, तथा जो उन के दिल छुपा रहे हैं वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है, यदि तुम समझो।

119. सावधान! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करते हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करते। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उँगलियों की पोरें चबाते हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्संदेह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।

120. यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है। और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بَاطِلَةً مِّنْ دُونِكُمْ لَا يَأْتِيَنَّكُم بِهَا الْوَيْدُ وَآمَنَ بِهَا قَدْ بَدَأَ الْبَغْضَاءُ مِن أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تَحِثُّ صُدُورُهُمْ أَكْثَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

هَآأَنْتُمْ أُولَآءِ يُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا الْقَوْلُ إِلَىٰ مِلَّةِ آلِ مَرْيَمَ إِذَا هَلَكُوا عَصَاكُمْ عَلَىٰ كَيْدِ الْإِنسِ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُؤْمِنُوا بِحُكْمِ اللَّهِ عَلَيْهِمْ بَدَأَ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

إِن تَسْتَكْبِرُوا تَكُونُوا كَالشُّجَرِ الَّتِي لَا تَحْمِلُ ثَمَرًا سَيِّئَةً يَفْرَحُونَ بِهَا وَأَن تَصِيرُوا تَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُ هُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾

1 अर्थात् वह गैर मुस्लिम जिन पर तुम को विश्वास नहीं की वह तुम्हारे लिये किसी प्रकार की अच्छी भावना रखते हों।

121. तथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध¹ के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

وَاذْعَدَّوَتْ مِنْ أَهْلِكَ تُتَوَّى الْمُؤْمِنِينَ
مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

122. तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों² ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अल्लाह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।

إِذْ هَمَّتْ طَلِيفَتَيْنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝

123. अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब कि तुम निर्बल थे।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ

1 साधारण भाष्यकारों ने इसे उहुद के युद्ध से संबंधित माना है। जो बद्र के युद्ध के पश्चात् सन् 3 हिजरी में हुआ। जिस में कुरैश ने बद्र की पराजय का बदला लेने के लिये तीन हजार की सेना के साथ उहुद पर्वत के समीप पड़ाव डाल दिया। जब आप को इस की सूचना मिली तो मुसलमानों से परामर्श किया। अधिकांश की राय हुई कि मदीना नगर से बाहर निकल कर युद्ध किया जाये। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हजार मुसलमानों को लेकर निकले। जिस में से अब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफिकों का मुख्या अपने तीन सौ साथियों के साथ वापिस हो गया। आप ने रणक्षेत्र में अपने पीछे से शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिये 70 धनुर्धरों को नियुक्त कर दिया। और उन का सेनापति अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बना दिया। तथा यह आदेश दिया कि कदापि इस स्थान को न छोड़ना। युद्ध आरंभ होते ही कुरैश पराजित हो कर भाग खड़े हुये। यह देख कर धनुर्धरों में से अधिकांश ने अपना स्थान छोड़ दिया। कुरैश के सेनापति खालिद पुत्र वलीद ने अपने सवारों के साथ फिर कर धनुर्धरों के स्थान पर आक्रमण कर दिया। फिर अकस्मात् मुसलमानों पर पीछे से आक्रमण कर के उन की विजय को पराजय में बदल दिया। जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आघात पहुँचा। (तफ्सीर इब्ने कसीर।)

2 अर्थात् दो कबीले बनू सलमा तथा बनू हारिसा ने भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य के साथ वापिस हो जाना चाहा। (सहीह बुखारी हदीस 4558)

لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि उस के कृतज्ञ रहो।

124. (हे नबी! वह समय भी याद करें) जब आप ईमान वालों से कह रहे थे: क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं है कि अल्लाह तुम्हें (आकाश से) उतारे हुये तीन हजार फरिश्तों द्वारा समर्थन दे?

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُنَزِّلَ
رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ أَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُزْلِلِينَ ﴿١٢٤﴾

125. क्यों^[1] नहीं? यदि तुम सहन करोगे, तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह (शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी उत्तेजना के साथ आ गये, तो तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं) पाँच हजार चिन्ह^[2] लगे फरिश्तों द्वारा समर्थन देगा।

بَلَىٰ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّنْ فُورِهِمْ
هَذَا يُمْدَدُكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ أَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ
مُؤَيَّدِينَ ﴿١٢٥﴾

126. और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिये केवल शुभ सूचना बनाया है। और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ
بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾

127. ताकि^[3] वह काफिरों का एक भाग काट दे, अथवा उन को अपमानित कर दे। फिर वह असफल वापिस हो जायें।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْتَسِبُ
غُلَامًا حَرًّا ﴿١٢٧﴾

1 अर्थात् इतना समर्थन बहुत है।

2 अर्थात् उन पर तथा उन के घोड़ों पर चिन्ह लगे होंगे।

3 अर्थात् अल्लाह तुम्हें फरिश्तों द्वारा समर्थन इस लिये देगा ताकि काफिरों का कुछ बल तोड़ दे, और उन्हें निष्फल वापिस कर दे।

128. हे नबी! इस^[1] विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार^[2] करे, या दण्ड^[3] दे, क्योंकि वह अत्याचारी हैं।
129. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
130. हे ईमान वालो! कई कई गुणा कर के ब्याज^[4] न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।
131. तथा उस अग्नि से बचो जो काफिरों के लिये तैयार की गयी है।
132. तथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।
133. और अपने पालनहार की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ,

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾

وَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا
أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً سَاقِطُوا إِلَافَةً لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿١٣١﴾

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾

وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ لِّمَن رَّزَقْتُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फज्र की नमाज़ में रुकूअ के पश्चात् यह प्रार्थना करते थे कि हे अल्लाह! अमुक को अपनी दया से दूर कर दे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4559)

2 अर्थात् उन्हें मार्गदर्शन दे।

3 यदि काफिर ही रह जायें।

4 उहुद की पराजय का कारण धन का लोभ बना था। इस लिये यहाँ ब्याज से सावधान किया जा रहा है, जो धन के लोभ का अति भयावह साधन है। तथा आज्ञाकारिता की प्रेरणा दी जा रही है। कई कई गुणा ब्याज न खाने का अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार ब्याज न खाओ, बल्कि ब्याज अधिक हो या धोड़ी सर्वथा हराम (वर्जित) है। यहाँ जाहिलिय्यत के युग में ब्याज की जो रीति थी, उस का वर्णन किया गया है। जैसा कि आधुनिक युग में ब्याज पर ब्याज लेने की रीति है।

जिस की चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के लिये तैयार की गयी है।

134. जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते, और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं। और अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है।

135. और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें, अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें, तो अल्लाह को याद करते हैं, फिर अपने पापों के लिये क्षमा माँगते हैं। तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते।

136. इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग है जिन में नहरें प्रवाहित हैं, जिन में वह सदावासी होंगे, तो क्या ही अच्छा है सत्कर्मियों का यह प्रतिफल?

137. तुम से पहले भी इसी प्रकार हो चुका^[1] है। तुम धरती में फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम कैसा रहा?

138. यह (क़ुर्आन) लोगों के लिये एक वर्णन तथा माँग दर्शन, और एक शिक्षा है (अल्लाह से) डरने वालों के लिये।

السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ أَعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٤﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكُظُمِ
الْعَظِيمِ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٥﴾

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرِ
اللَّهُ فَاِنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَهُ يُصَوِّرُ مَا يَشَاءُ
مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿١٣٦﴾

أُولَئِكَ جَزَاءُ أَفْعَالِهِمْ مَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ
وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا وَلَهُمْ فِيهَا زَوْجَاتٌ مُطَهَّرَاتٌ ﴿١٣٧﴾

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ﴿١٣٨﴾

هَذَا بَيَانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَنُورٌ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٩﴾

1 उहूद की पराजय पर मुसलमानों को दिलासा दी जा रही है जिस में उन के 70 व्यक्ति मारे गये। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

139. (इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो।

وَلَا يَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

140. यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो कौम (शत्रु)^[1] को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते^[2] हैं। और ताकि अल्लाह उन को जान ले^[3] जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

إِنْ يَسْسِسْكُمْ فَرَحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ فَرَحٌ مِثْلُهُ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ بَيْنَ الْيَمِينِ الْثَّانِيَةِ وَلَيَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذُ مِنْكُمْ شُهَدَاءَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

141. तथा ताकि अल्लाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफ़िरों का नाश कर दे।

وَلَيُخَيِّضَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ۝

142. क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अल्लाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الظَّالِمِينَ ۝

143. तथा तुम मौत की कामना कर^[4] रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो, तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝

1 इस में कुरैश की बद्र में पराजय और उन के 70 व्यक्तियों के मारे जाने की ओर संकेत है।

2 अर्थात् कभी किसी की जीत होती है, कभी किसी की।

3 अर्थात् अच्छे बुरे में विवेक (अन्तर) कर दे।

4 अर्थात् अल्लाह की राह में शहीद हो जाने की।

144. मुहम्मद केवल एक रसूल हैं, इस से पहले बहुत से रसूल हो चुके हैं, तो क्या यदि वह मर गये अथवा मार दिये गये, तो तुम अपनी एड़ियों के बल⁽¹⁾ फिर जाओगे? तथा जो अपनी एड़ियों के बल फिर जायेगा, तो वह अल्लाह को कुछ हानि नहीं पहुँचा सकेगा, और अल्लाह शीघ्र ही कृतज्ञों को प्रतिफल प्रदान करेगा।

145. कोई प्राणी ऐसा नहीं जो अल्लाह की अनुमति के बिना मर जाये, उस का अंकित निर्धारित समय है, और जो संसारिक प्रतिफल चाहेगा, हम उसे उस में से कुछ देंगे, तथा जो परलोक का प्रतिफल चाहेगा हम उसे उस में से देंगे। और हम कृतज्ञों को शीघ्र ही प्रतिफल देंगे।

146. कितने ही नबी थे जिन के साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया, तो वह अल्लाह की राह में आई आपदा पर न आलसी हुये, न निर्बल बने और न (शत्रु से) दबे। तथा अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ
الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى
أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبَيْهِ فَلَنْ
يُضْرَ اللَّهُ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝

وَمَا كَانَ لِلنَّفْسِ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا
مُقَدَّرًا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا
وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا
وَسَيَجْزِي الشَّاكِرِينَ ۝

وَكَايُنْ مِنْ نَبِيٍّ قُتِلَ مَعَهُ رِبِّيُّونَ
كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ
الظَّاهِرِينَ ۝

1 अर्थात् इस्लाम से फिर जावोगे भावार्थ यह है कि सत्धर्म इस्लाम स्थायी है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के न रहने से समाप्त नहीं हो जायेगा। उहुद में जब किसी विरोधी ने यह बात उड़ाई कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मार दिये गये तो यह सुन कर बहुत से मुसलमान हताश हो गये। कुछ ने कहा कि अब लड़ने से क्या लाभ? तथा मुनाफिकों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होते तो मार नहीं खाते। इस आयत में यह संकेत है कि दूसरे नबियों के समान आप को भी एक दिन संसार से जाना है। तो क्या तुम उन्हीं के लिये इस्लाम को मानते हो, और आप नहीं रहेंगे तो इस्लाम नहीं रहेगा?

147. तथा उन का कथन बस यही था कि उन्होंने ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को, और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे, और काफिर जाति के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

148. तो अल्लाह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आखिरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है।

149. हे ईमान वाले! यदि तुम काफिरों की बात मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओगे।

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।

151. शीघ्र ही हम काफिरों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्होंने ने अल्लाह का साझी उसे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है?

152. तथा अल्लाह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट⁽¹⁾ रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने

وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَن قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

قَالَ اللَّهُ إِنَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَخَيْرَ ثَوَابٍ الْآخِرَةِ ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَرُدُّوكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ۝

بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۝

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۖ وَمَا لَهُمْ فِي النَّارِ وَبِئْسَ مَثْوًى الظَّالِمِينَ ۝

وَلَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُمْ بِأَذُنِهِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَفْسَلْتُمْ وَتَنَادَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِمَّن بَعْدَ مَا أَرْسَلَكُمْ

1 अर्थात् उहद के आरंभिक क्षणों में।

कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश^[1] में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चात् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अब्बाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

153. (और याद करो) जब तुम चढ़े (भागो) जा रहे थे, और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार^[2] रहे थे, तो (अब्राह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम से खो गया और जो दुख तुम्हें पहुँचा उस पर उदासीन न हो, तथा अब्राह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

154. फिर तुम पर शोक के पश्चात् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह^[3] को आने लगी, और

تَجِبُونَ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ تَمْ صَرْفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

إِذْ تَصْعِدُونَ وَلَا تُلْقُونَ عَلَى أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أَخْرَاكُمْ فَأَتَابَكُمْ عَثًّا بَغِيْمَ لِكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ وَاللَّهُ حَسْبُ بِنَا تَعْمَلُونَ ۝

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمْنَةً نَحَاسًا يَغْشَى كَلِيفَةً وَتُكْمٌ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ

- 1 अर्थात् कुछ धनुर्धरों ने आप के आदेश का पालन नहीं किया, और परिहार का धन संचित करने के लिये अपना स्थान त्याग दिया, जो पराजय का कारण बन गया। और शत्रु को उस दिशा से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।
- 2 बराअ बिन आज़िब कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहूद के दिन अब्दुल्लाह बिन जुवैर को पैदल सेना पर रखा। और वह पराजित हो कर आ गये, इसी के बारे में यह आयत है। उस समय नबी के साथ बारह व्यक्ति ही रह गये। (सहीह बुखारी -4561)
- 3 अबु तलहा रज़ियल्लाह अन्हु ने कहा: हम उहूद में ऊँघने लगे। मेरी तलवार मेरे हाथ से गिरने लगती और मैं पकड़ लेता, फिर गिरने लगती और पकड़ लेता।

एक गिरोह को अपनी^[1] पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के बारे में असत्य जाहिलिय्यत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वह अपने मनों में जो छुपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते, आप कह दें: यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने के स्थानों की ओर निकल आते। और ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दे। और अल्लाह दिलों के भेदों से अवगत है।

155. वस्तुतः तुम में से जिन्होंने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुँह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मों के कारण फिसला दिया। तथा अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

156. हे ईमान वाले! उन के समान न हो जाओ जो काफिर हो गये, तथा अपने भाईयों से- जब यात्रा में हों, अथवा युद्ध में- कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और

يُظَنُّونَ بِاللّهِ عِوَاظَ ظَنِّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلّهِ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ نَّافِقْتَلَاهُمَنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُبَدِّخَكُمْ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١٥٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا كَاذِبِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لَإِغْوَاؤُهُمْ إِذَا ضَرَبُوا إِلَى الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُرًى لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُعَذِّبُ

(सहीह बुखारी -4562)

- 1 यह मुनाफिक लोग थे।

न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे संताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है, और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

157. यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

158. तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।

159. अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के^[1] लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अकखड़ तथा कड़े दिल के होते, तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो, और उन के लिये क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्संदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।

160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह

وَيُسَبِّتُ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرَةً ۝

وَلَيْنَ قَاتَلْتُمُوهُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مِتُّمْ لَغَفْرَةً مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝

وَلَيْنَ مِتُّمْ أَوْ قَاتَلْتُمُوهُ لَأَلِيَّ اللَّهُ تُخْرَجُونَ ۝

مِمَّا رَحِمَهُ مِنَ اللَّهِ لَئِن لَّهُمْ لَوْ كُنْتَ ظَآئِرًا لِّغَلِيظِ الْقَلْبِ لَا نَقْضُوا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ۝

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَخْذَلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

1 अर्थात् अपने साथियों के लिये, जो उहद में रणक्षेत्र से भाग गये।

ही पर भरोसा करना चाहिये।

161. किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग^[1] करे। और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
162. तो क्या जिस ने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध^[2] लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?
163. अल्लाह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अल्लाह उसे देख^[3] रहा है जो वह कर रहे हैं।
164. अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (कुर्आन) और हिकमत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِهَا
عَلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ نَاقِصَتَ
وَمُهم لَا يظلمون *

أَفَمَنْ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ بَاءَ بِسَخَطِ اللَّهِ
وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ *

هُمُ دَرَجَاتٍ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ بِصِرْطِهِم
يَعْلَمُونَ *

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِن
قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ *

- 1 उहुद के दिन जो अपना स्थान छोड़ कर इस विचार से आ गये कि यदि हम न पहुँचे तो दूसरे लोग गनीमत का सब धन ले जायेंगे, उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है कि तुम ने कैसे सोच लिया कि इस धन में से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा, क्या तुम्हें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो! नबी से किसी प्रकार का अपभोग असम्भव है। यह घोर पाप है जो कोई नबी कभी नहीं कर सकता।
- 2 अर्थात् पापों में लीन रहा।
- 3 अर्थात् लोगों के कर्मों के अनुसार उन की अलग अलग श्रेणियाँ हैं।

वह इस से पहले खुले कुपथ में थे।

165. तथा जब तुम को एक दुख पहुँचा^[1] जब कि इस के दुगना तुम ने पहुँचाया^[2], तो तुम ने कह दिया कि यह कहाँ से आ गया? (हे नबी!) कह दो: यह तुम्हारे पास से^[3] आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

166. तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन तुम पर आई, तो वह अल्लाह की अनुमति से, और ताकि वह ईमान वालों को जान ले।

167. और ताकि उन को जान ले, जो मुनाफ़िक हैं। और उन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्होंने ने कहा कि यदि हम युद्ध होना जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते। वह उस दिन ईमान से अधिक कुफ़्र के समीप थे, वह अपने मुखों से ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के दिलों में नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।

168. इन्होंने ने ही अपने भाईयों से कहा, और (स्वयं घरों में) आसीन रह गये: यदि वह हमारी बात मानते, तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह

أَوَلَيْسَ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَهَا
قُلْتُمْ أَتَى هَذَا قُلٌّ مَوْمِنٌ عِنْدَ أَنْفُسِكُمْ إِنَّ
اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّحِيٍّ الْجَمْعُ فَقَدْ بَايَعُوا
وَلَيَعْلَمُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَلَيَعْلَمُ الَّذِينَ تَافَعُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ ادْفَعُوا قَالُوا لَوْ لَعَلَّمُوا أَنَّا
لَا تُبْعَثُكُمْ هُمْ يَلْكُفَرُ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ تَالَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۝

الَّذِينَ قَالُوا لِلْإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُوا مَا
قَتَلُوا قُلٌّ فَادْرَأُوا عَنْ أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنَّ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝

1 अर्थात् उहद के दिन।

2 अर्थात् बद्र के दिन।

3 अर्थात् तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने के कारण आया, जो धनुर्धरों को दिया गया था।

दो: फिर तो मौत से^[1] अपनी रक्षा कर लो, यदि तुम सच्चे हो।

169. जो अब्राह की राह में मार दिये गये तो तुम उन को मरा हुआ न समझो, बल्कि वह जीवित है,^[2] अपने पालनहार के पास जीविका दिये जा रहे हैं।

170. तथा उस से प्रसन्न है जो अब्राह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है, और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो रहे हैं जो उन से मिले नहीं, उन के पीछे^[3] रह गये हैं कि उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होंगे।

171. वह अब्राह के पुरस्कार और प्रदान के कारण प्रसन्न हो रहे हैं। तथा इस पर कि अब्राह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

172. जिन्होंने अब्राह और रसूल की पुकार को स्वीकार^[4] किया, इस के

وَالَّذِينَ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَالُهُمْ
أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلِهِ وَإِنَّ اللَّهَ
لَافْضِئٌ غَيْرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِقَوْلِ الرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا

1 अर्थात् अपने उपाय से सदाजीवी हो जाओ।

2 शहीदों का जीवन कैसा होता है? हदीस में है कि उन की आत्मायें हरे पक्षियों के भीतर रख दी जाती हैं और वह स्वर्ग में चुगते तथा आनन्द लेते फिरते हैं। (सहीह मुस्लिम- हदीस -1887)

3 अर्थात् उन मुजाहिदीन के लिये जो अभी संसार में जीवित रह गये हैं।

4 जब काफिर उहुद से मक्का वापिस हुये तो मदीने से 30 मील दूर "रौहाअ" से फिर मदीने वापिस आने का निश्चय किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचना मिली तो सेना लेकर "हमराउल असद" तक पहुँचे जिसे सुन कर वह भाग गये। इधर मुसलमान सफल वापिस आये। इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों की सराहना की गई है जिन्होंने उहुद में घाव खाने के पश्चात् भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ दिया। यह आयत इसी से संबंधित है।

पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँचा, उन में से उन के लिये जिन्होंने सुकर्म किया तथा (अल्लाह से) डरे, महा प्रतिफल है।

173. यह वह लोग है, जिन से लोगों ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों (शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प^[1] लिया है। अतः उन से डरो, तो इस ने उन के ईमान को और अधिक कर दिया, और उन्होंने ने कहा: हमें अल्लाह बस है, और वह अच्छा काम बनाने वाला है।

174. तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया के साथ^[2] वापिस हुये। उन्हें कोई दुःख नहीं पहुँचा। तथा अल्लाह की प्रसन्नता पर चले, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।

175. वह शैतान है, जो तुम्हें अपने सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन^[3] से न डरो, तथा मुझी से डरो यदि तुम ईमान वाले हो।

176. हे नबी! आप को वह काफिर उदासीन न करें, जो कुफ्र में अग्रसर है, वह अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि आखिरत (परलोक) में

أَصَابَهُمُ الْقَرْصَةُ الَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ عَظِيمٌ

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝

فَأَنْقَلَبُوا بِنِعْمَةِ رَبِّهِمْ إِلَى اللَّهِ وَفَضِّلَ لَمْ يَمَسَّهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانِ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝

إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا اللَّهَ إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَلَا تَحْزَنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنْ يَصُرُوا إِلَى اللَّهِ شَيْئًا رُبُّدًا إِنَّهُ لَا يَعْمَلُ لَهُمْ حِطَّانِي الْآخِرَةَ وَهُمْ عِنْدَ الْعَظِيمِ ۝

1 अर्थात् शत्रु ने मक्का जाते हुये राह में सोचा कि मुसलमानों के परास्त हो जाने पर यह अच्छा अवसर था कि मदीने पर आक्रमण कर के उन का उन्मूलन कर दिया जाये, तथा वापिस आने का निश्चय किया। (तफ्सीरे कुतुबी)।

2 अर्थात् "हमराउल असद" से मदीना वापिस हुये।

3 अर्थात् मिश्रणवादियों से।

उन का कोई भाग न बनाये, तथा
उन्हीं के लिये घोर यातना है।

177. वस्तुतः जिन्होंने ने ईमान के बदले
कुफ़ ख़रीद लिया, वह अल्लाह को
कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, तथा
उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

178. जो काफ़िर हो गये, वह कदापि
यह न समझें कि हमारा उन को
अवसर^[1] देना उन के लिये अच्छा
है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये
अवसर दे रहे हैं कि उन के पाप^[2]
अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये
अपमानकारी यातना है।

179. अल्लाह ऐसा नहीं है कि ईमान वालों
को उसी (दशा) पर छोड़ दे, जिस
पर तुम हो, जब तक बुरे को अच्छे
से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा
(भी) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब (परोक्ष)
से^[3] सूचित कर दे, और परन्तु
अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर
अवगत करने के लिये) जिसे चाहे
चुन लेता है। तथा यदि तुम ईमान
लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो
तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ
شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

وَلَا يَحْزَنُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ خَيْرٌ
لِّأَنفُسِهِمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ
عَذَابٌ مُّهِينٌ

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ
حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَيْبَ مِنَ الْكَلْبِ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُظِلَّكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِيٰ مِنْ
رَّسُولِهِ مَنْ يَشَاءُ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْ
تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ

1 अर्थात् उन्हें संसारिक सुख सुविधा देना। भावार्थ यह है कि इस संसार में अल्लाह, सत्योसत्य, न्याय तथा अत्याचार सब के लिये अवसर देता है। परन्तु इस से धोखा नहीं खाना चाहिये, यह देखना चाहिये कि परलोक की सफलता किस में है। सत्य ही स्थायी है तथा असत्य को ध्वस्त हो जाना है।

2 यह स्वभाविक नियम है कि पाप करने से पापाचारी में पाप करने की भावना अधिक हो जाती है।

3 अर्थात् तुम्हें बता दे कि कौन ईमान वाला और कौन दुविधावादी है।

180. वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी) करते हैं, जो अल्लाह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया^[1] है कि वह उन के लिये अच्छा है, बल्कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्होंने ने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार^[2] बना दिया जायेगा। और आकाशों तथा धरती की मीरास (उत्तराधिकार) अल्लाह के^[3] लिये है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।

181. अल्लाह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन और हम धनी^[4] हैं, उन्होंने ने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नवियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।

182. यह तुम्हारे? कर्तूतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अल्लाह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं है।

183. जिन्होंने ने कहा: अल्लाह ने हम से वचन लिया है कि किसी रसूल का

وَلَا يَحْسَبُونَ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ أَلَيْسَ لَهُمْ
سَيِّطُونَ مَا بَعَثْنَا بِهِ بِرُوحِ الْقُدُسِ
وَنَزَّلْنَا بِهِ الْوَحْيَ وَإِنَّهُمْ فِي شَكٍّ
الْمُنْتَوِينَ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ
فَعِيرٌ وَهَنٌ أَعْيَاءُ سَتَكْبُ مَا قَالُوا وَكَانَ
الْأَنْبِيَاءُ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ
الْحَرِيقِ

ذَلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَالِمٍ لِّلْعَبِيدِ

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عٰهَدَ إِلَيْنَا لَآ نُرْسِلَ

1 अर्थात् धन धान्य की जकात नहीं देते।

2 सहीह बुखारी में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जिसे अल्लाह ने धन दिया है, और वह उस की जकात नहीं देता तो प्रलय के दिन उस का धन गंजा सर्प बना दिया जायेगा, जो उस के गले का हार बन जायेगा। और उसे अपने जबड़ों से पकड़ लेगा, तथा कहेगा कि मैं तुम्हारा कोष हूँ, मैं तुम्हारा धन हूँ। (सहीह बुखारी: 4565)

3 अर्थात् प्रलय के दिन वही अकेला सब का स्वामी होगा।

4 यह बात यहूदियों ने कही थी। (देखिये: सूरह बकरह आयत: 254)

विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दें जिसे अग्नि खा^[1] जाये। (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज़ लाये जो तुम ने कही। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?

184. फिर यदि इन्होंने ने^[2] आप को झुठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये हैं, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।^[3]

185. प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्माँ का) प्रलय के दिन भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया^[4], तो वह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

186. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे धनों तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी। और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुखद बातें सुनोगे जो तुम

لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا يَضْرِبَانِ تَأْكُلُهُ النَّارُ
قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن قَبْلِ يَأْتِيَنَا يَضْرِبَانِ تَأْكُلُهُ النَّارُ
قُلْتُمْ قَلِيلًا مَّا تَعْلَمُونَ هُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ ضَالِّينَ ۝

قَالَ كَذَّبْتُمْ فَلَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ
جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّا تَوَوُّونَ
أَجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَن رَّحِمَ عَن
النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝

لَتَسْتَبْرَأَ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ
وَلَتَسْمَعَنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن
قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا

1 अर्थात् आकाश से अग्नि आकर जला दे, जो उस के स्वीकार्य होने का लक्षण है।

2 अर्थात् यहूद आदि ने।

3 प्रकाशक जो सत्य को उजागर कर दे।

4 अर्थात् सत्य आस्था और सत्कर्मों के द्वारा इस्लाम के नियमों का पालन कर के।

से पूर्व पुस्तक दिये गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी^[1] हैं। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अब्राह से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।

187. तथा (हे नबी!) याद करो जब अब्राह ने उन से दृढ़ वचन लिया था जो पुस्तक^[2] दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करते रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्होंने ने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद^[3] लिया। तो वह कितनी बुरी चीज़ खरीद रहे हैं!

188. (हे नबी!) जो^[4] अपने कर्तूतों पर प्रसन्न हो रहे हैं और चाहते हैं कि उन कर्मों के लिये सराहे जायें जो उन्होंने ने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे। तथा उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكُنُ مِنْ غَافِلِينَ ۚ وَرَأَىٰ ظُهُورَهُمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبُخْسَ مَا يَشْتَرُونَ ۝

لَا تَحِبُّوا الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا آتَوْا وَيُحِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسِبْهُمْ بِمَعَاذٍ ۖ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

- 1 मिश्रणवादी अर्थात् मूर्तियों के पुजारी, जो पूजा अर्चना तथा अब्राह के विशेष गुणों में अन्य को उस का साझी बनाते हैं।
- 2 जो पुस्तक दिये गये, अर्थात्: यहूद और नसारा (ईसाई) जिन को तौरात तथा इंजील दी गयी।
- 3 अर्थात् तुच्छ संसारिक लाभ के लिये सत्य का सौदा करने लगे।
- 4 अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि कुछ द्विधावादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में आप युध के लिये निकलते तो आप का साथ नहीं देते थे। और इस पर प्रसन्न होते थे और जब आप वापिस आते तो बहाने बनाते और शपथ लेते थे। और जो नहीं किया है उस की सराहना चाहते थे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी -4567)

189. तथा आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاللّٰهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌۭ

190. वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्री तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण)^[1] हैं।

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاٰخِلَافِ الْاَيِّمِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ۝

191. जो खड़े, बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं:) हे हमारे पालनहार! तू ने इसे^[2] व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्नि के दण्ड से बचा ले।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا سُبْحٰنَكَ قِيٰمًا عَدًّاۙ اَبِ النَّارِ ۝

192. हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

رَبَّنَا اِنَّكَ مَن تَدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اُخْرِيتَهُۥٓ وَءَالِ الظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝

193. हे हमारे पालनहार! हम ने एक^[3] पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी

رَبَّنَا اِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِيۤى۟ لِلْاِيْمٰنِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّاۙ رَبَّنَا فَاغْنِهِمْۙ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَاۙ مَعَ الْاَبْرَارِ ۝

1 अर्थात् अल्लाह के राज्य, स्वामित्व तथा एकमात्र पूज्य होने के।

2 अर्थात् यह विचित्र रचना तथा व्यवस्था अकारण नहीं तथा आवश्यक है कि इस जीवन के पश्चात् भी कोई जीवन हो। जिस में इस जीवन के कर्मों के परिणाम सामने आयें।

3 अर्थात् अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

कर दे, तथा हमारी मौत पुनीतों
(सदाचारियों) के साथ हो।

194. हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने
अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया
है, हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय
के दिन हमें अपमानित न कर,
वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।

195. तो उन के पालनहार ने उन की
(प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि):
निस्संदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य
को व्यर्थ नहीं करता^[1], नर हो
अथवा नारी। तो जिन्होंने ने हिजरत
(प्रस्थान) की, तथा अपने घरों से
निकाले गये, और मेरी राह में सताये
गये और युद्ध किया, तथा मारे गये,
तो हम अवश्य उन के दोषों को
क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों
में प्रवेश देंगे जिन में नहरें बह रही
हैं। यह अल्लाह के पास से उन का
प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के
पास अच्छा प्रतिफल है।

196. हे नबी! नगरों में काफिरों का
(सुख सुविधा के साथ) फिरना आप
को धोखे में न डाल दे।

197. यह तनिक लाभ^[2] है, फिर उन का
स्थान नरक है। और वह क्या ही
बुरा आवास है।

رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا نَعُودُنَا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أَضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ
مِّنْكُمْ مِّمَّنْ ذُكِّرُوا أَنِّي بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۖ
فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُودُوا
فِي سَبِيلِي وَهَمَلُوا وَقَتَلُوا الْأَكْفَرِينَ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَآءِ خِلَافُهُمْ جَدَّتْ لِحَجَّتِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ كَوَآبًا مِّنْ عِشْدِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ
حُسْنُ الثَّوَابِ ۝

لَا يَغُرُّكَ قَلْبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۝

مَّا أَزِلُّ قَلِيلًا مِّنْهُمْ وَهُم جَهَنَّمُ وَبَشَى
الْبِهَادِ ۝

1 अर्थात् अल्लाह का यह नियम है कि वह सत्कर्म अकारण नहीं करता, उस का प्रतिफल अवश्य देता है।

2 अर्थात् सामयिक संसारिक आनन्द है।

198. परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अब्राह के पास से अतिथि सत्कार होगा। तथा जो अब्राह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।

199. और निःसंदेह अहले किताब (अर्थात् यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी। अल्लाह से डरे रहते हैं। और उस की आयतों को थोड़ी थोड़ी कीमतों पर बेचते भी नहीं।^[1] उन का बदला उन के रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।

200. हे ईमान वाले! तुम धैर्य रखो।^[2] और एक दूसरे को थामे रखो। और जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَزُولُ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ۝

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خَشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

1 अर्थात् यह यहूदियों और ईसाईयों का दूसरा समुदाय है जो अल्लाह पर और उस की किताबों पर सहीह प्रकार से ईमान रखता था। और सत्य को स्वीकार करता था। तथा इस्लाम और रसूल तथा मुसलमानों के विपरीत साजिशें नहीं करता था। और चन्द टकों के कारण अल्लाह के आदेशों में हेर फेर नहीं करता था।

2 अर्थात् अल्लाह और उस के रसूल की फरमाँ बरदारी कर के और अपनी मनमानी छोड़ कर धैर्य करो। और यदि शत्रु से लड़ाई हो जाये तो उस में सामने आने वाली परेशानियों पर डटे रहना बहुत बड़ा धैर्य है। इसी प्रकार शत्रु के बारे में सदेव चोक्न्ना रहना भी बहुत बड़े साहस का काम है। इसी लिये हदीस में आया है कि अल्लाह के रास्ते में एक दिन मोरचे बन्द रहना इस दुनिया और उस की तमाम चीजों से उत्तम है। (सहीह बुखारी)

सूरह निसा - 4

سُورَةُ النِّسَاءِ

यह सूरह मदनी है, इस में 176 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे मनुष्यों! अपने^[1] उस पालनहार से डरो, जिस ने तुम को एक जीव (आदम) से उत्पन्न किया, तथा उसी से उस की पत्नी (हव्वा) को उत्पन्न किया, और उन दोनों से बहुत से नर नारी फैला दिये। उस अल्लाह से डरो जिस के द्वारा तुम एक दूसरे से (अधिकार) माँगते हो, तथा रक्त संबंधों को तोड़ने से डरो, निस्संदेह अल्लाह तुम्हारा निरीक्षक है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝

2. तथा (हे संरक्षको!) अनाथों को उन

وَالَّذِينَ يَتَّبِعُ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَنْبَغُ لَهُمْ الْحَيْثُ

1. यहाँ से सामाजिक व्यवस्था का नियम बताया गया है कि बिश्व के सभी नर नारी एक ही माता पिता से उत्पन्न किये गये हैं। इस लिये सब समान हैं। और सब के साथ अच्छा व्यवहार तथा भाई चारे की भावना रखनी चाहिये। और सब के अधिकार की रक्षा करनी चाहिये। यह उस अल्लाह का आदेश है जो तुम्हारे मूल का उत्पत्तिकार है। और जिस के नाम से तुम एक दूसरे से अपना अधिकार माँगते हो कि अल्लाह के लिये मेरी सहायता करो। फिर इस साधारण संबंध के सिवा गर्भाशयिक अर्थात् समीपवर्ती परिवारिक संबंध भी हैं जिसे जोड़ने पर अधिक बल दिया गया है। एक हदीस में है कि संबंध भंगी स्वर्ग में नहीं जायेगा। (सहीह बुखारी - 5984, मुस्लिम- 2555) इस आयत के पश्चात् कई आयतों में इन्हीं अल्लाह के निर्धारित किये मानव अधिकारों का वर्णन किया जा रहा है।

के धन चुका दो, और (उन की) अच्छी चीज़ से (अपनी) बुरी चीज़ न बदलो, और उन के धन अपने धनों में मिला कर न खाओ, निस्संदेह वह बहुत बड़ा पाप है।

3. और यदि तुम डरो कि अनाथ (बालिकाओं) के विषय^[1] में न्याय नहीं कर सकोगे तो नारियों में से जो भी तुम्हें भायें, दो से, तीन से चार तक से विवाह कर लो। और यदि डरो कि न्याय नहीं करोगे तो एक ही से करो, अथवा जो तुम्हारे स्वामित्व^[2] में हों उसी पर बस करो। यह अधिक समीप है कि अन्याय न करो।

4. तथा स्त्रियों को उन के महर (विवाह उपहार) सप्रसन्नता से चुका दो। फिर यदि वह उस में से कुछ तुम्हें अपनी इच्छा से दे दें तो प्रसन्न हो कर खाओ।

5. तथा अपने धन जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये जीवन स्थापन का साधन बनाया है अज्ञानों को न^[3] दो। हाँ, उस में से

بِالْظُّلُمِ وَلَآ تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَى أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۝

وَلَا تُخِفَتُمْ الْأَرْمَلَتِ وَأَنْتُمْ بِلِلَّهِ شَهِيدُونَ
فَالَّذِي حُوبًا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ
مِمَّا تَنْتَوُونَ مِنْهُ وَلَآ تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ
الَّتِي كَانَتْ لِلَّهِ فِئَةً مِّنْ أَمْوَالِكُمْ
الَّتِي كَانَتْ لِلَّهِ فِئَةً مِّنْ أَمْوَالِكُمْ
الَّتِي كَانَتْ لِلَّهِ فِئَةً مِّنْ أَمْوَالِكُمْ

وَأَتُوا النِّسَاءَ صَدُقَتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ۝

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ

1 अरब में इस्लाम से पूर्व अनाथ बालिका का संरक्षक यदि उस के खजूर का बाग़ हो तो उस पर अधिकार रखने के लिये उस से विवाह कर लेता था। और उस में उसे कोई रुचि नहीं होती थी। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं०, 4573)

2 अर्थात् युद्ध में बंदी बनाई गई दासी।

3 अर्थात् धन, जीवन स्थापन का साधन है। इस लिये जब तक अनाथ चतुर तथा व्यस्क न हो जायें और अपने लाभ की रक्षा न कर सकें उस समय तक उन का धन उन के नियंत्रण में न दो।

उन्हें खाना, कपड़ा दो, और उन से भली बात बोलो।

6. तथा अनाथों की परीक्षा लेते रहो यहाँ तक कि वह विवाह की आयु को पहुँच जायें। तो यदि तुम उन में सुधार देखो तो उन का धन उन को समर्पित कर दो। और उसे अपव्यय तथा शीघ्रता से इस लिये न खाओ कि वह बड़े हो जायेंगे। और जो धनी हो तो वह बचे, तथा जो निर्धन हो तो वह नियमानुसार खा ले। तथा जब तुम उन का धन उन के हवाले करो तो उन पर साक्षी बना लो। और अल्लाह हिसाब लेने के लिये काफी है।

7. और पुरुषों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा है, तथा स्त्रियों के लिये उस में से भाग है जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो, वह थोड़ा हो अथवा अधिक, सब के भाग¹ निर्धारित है।

8. और जब मीरास विभाजन के समय

وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَابْتَغُوا الْيَسْرَ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ
أَسْنَمْتُمْ مِنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ
أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا
أَنْ يَكْفُرُوا وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ
فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللهِ حَسِيبًا ۝

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ
وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا
تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ
أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۝

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ

1 इस्लाम से पहले साधारणतः यह विचार था कि पुत्रियों का धन और संपत्ति की विरासत (उत्तराधिकार) में कोई भाग नहीं। इस में इस कुरीति का निवारण किया गया और यह नियम बना दिया गया कि अधिकार में पुत्र और पुत्री दोनों समान हैं। यह इस्लाम ही की विशेषता है जो संसार के किसी धर्म अथवा विधान में नहीं पाई जाती। इस्लाम ही ने सर्वप्रथम नारी के साथ न्याय किया, और उसे पुरुषों के बराबर अधिकार दिया है।

समीपवर्ती^[1], तथा अनाथ और निर्धन उपस्थित हों तो उन्हें भी थोड़ा बहुत दे दो, तथा उन से भली बात बोलो।

9. और उन लोगों को डरना चाहिये, जो यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जायें, और उन के नाश होने का भय हो, अतः उन्हें चाहिये कि अल्लाह से डरें, और सीधी बात बोलें।
10. जो लोग अनाथों का धन अत्याचार से खाते हैं वह अपने पेटों में आग भरते हैं, और शीघ्र ही नरक की अग्नि में प्रवेश करेंगे।
11. अल्लाह तुम्हारी संतान के संबंध में तुम्हें आदेश देता है कि पुत्र का भाग दो पुत्रियों के बराबर है। और यदि पुत्रियाँ दो^[2] से अधिक हों तो उन के लिये छोड़े हुये धन का दो तिहाई (भाग) है। और यदि एक ही हो तो उस के लिये आधा है। और उस के माता पिता के लिये, दोनों में से प्रत्येक के लिये उस में से छठा भाग है जो छोड़ा हो, यदि उस के कोई संतान^[3] हो। और यदि उस के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हों और उस का वारिस उस का पिता हो,

وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ قَارِضُ قَوْلِهِمْ مِنْهُ
وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَالْيَخْسَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ
ذُرِّيَّةً ضِعَفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ
فَلْيَسْتَعِزُوا بِاللَّهِ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
ظُلُمًا إِنَّهَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ ثَأْرًا
وَيَصْصَلُونَ سَعِيرًا ۝

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلَّذِ كَرُمِشْلِ حَظُّ
الْأُنثَىٰ إِنْ كَانَ كَرْنُ نِسَاءٍ فَوَقَى اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا
مَا تَرَكَ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ وَلِأَبَوَيْهِ
لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ
وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَتْهُ أَبَوَاهُ فَلِلْأُمِّ
الْأَبِ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِلْأُمِّهِ الشُّدُسُ مِنْ
بَعْدِ وَصِيَّةِ يُوصِي بِهَا أَوْ زَيْنَ آبَائِكُمْ وَأَبْنَاؤَكُمْ
لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا فَرِيضَةٌ مِنْ
اللَّهِ إِنْ كَانَ عَلَىٰ مَا حَكَمْنَا ۝

1 इन से अभिप्राय वह समीपवर्ती है जिन का मीरास में निर्धारित भाग न हो। जैसे अनाथ, पौत्र तथा पौत्री आदि। (सहीह बुखारी- 4576)

2 अर्थात् केवल पुत्रियाँ हों, तो दो हों अथवा दो से अधिक हों।

3 अर्थात् न पुत्र हो और न पुत्री।

तो उस की माता का तिहाई (भाग)^[1] है, (और शेष पिता का)। फिर यदि (माता पिता के सिवा) उस के एक से अधिक भाई अथवा बहनें हों तो उस की माता के लिये छठा भाग है जो वसियत^[2] तथा कर्ज चुकाने के पश्चात् होगा। तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिताओं और पुत्रों में से कौन तुम्हारे लिये अधिक लाभदायक है। वास्तव में अल्लाह अति बड़ा तथा गुणी, ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

12. और तुम्हारे लिये उस का आधा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ जायें, यदि उन के कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि उन की कोई संतान हो तो तुम्हारे लिये उस का चौथाई है जो वह छोड़ गई हों, वसियत (उत्तरदान) या ऋण चुकाने के पश्चात्। और (पत्नियों) के लिये उस का चौथाई है जो (माल आदि) तुम ने छोड़ा हो, यदि तुम्हारे कोई संतान (पुत्र या पुत्री) न हो। फिर यदि तुम्हारे कोई संतान हो तो उन के लिये उस का आठवा^[3] (भाग)

وَلَكُمْ بِمَنْزِلَةِ أَوْلَادِكُمُ الرِّبَا إِن لَّمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ
وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرِّبَا مِمَّا تَرَكَنَّ
مِنْ بَعْدٍ وَصِيَّةً يُوصِينَ بِهَا أَوْ دِينَ وَلَهُنَّ الرِّبَا
مِمَّا تَرَكَنَّ إِن لَّمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَكُمْ
وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدٍ وَصِيَّةً
يُوصُونَ بِهَا أَوْ دِينَ وَلَمَن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَّةً
أَوْ امْرَأَةً وَوَلَدٌ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا
النَّصِيبُ إِن كَانَ أَكْثَرُ مِنْ ذَلِكَ فَهَبْ شُرَكَاءَ لِّي
الثَّلَاثِ مِنَ بَعْدٍ وَصِيَّةً يُوصَى بِهَا أَوْ دِينَ غَيْرِ
مُضَآءٍ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ٥

- 1 और शेष पिता का होगा। भाई, बहनों को कुछ नहीं मिलेगा।
2 वसियत का अर्थ उत्तरदान है, जो एक तिहाई या उस से कम होना चाहिये परन्तु वारिस के लिये उत्तरदान नहीं है। (देखिये: त्रिमिज़ी- 975) पहले ऋण चुकाया जायेगा, फिर वसियत पूरी की जायेगी, फिर माँ का छठा भाग दिया जायेगा।
3 यहाँ यह बात विचारणीय है कि जब इस्लाम में पुत्र पुत्री तथा नर नारी बराबर हैं, तो फिर पुत्री को पुत्र के आधा, तथा पत्नी को पति के आधा भाग क्यों

है, जो तुम ने छोड़ा है, वसिय्यत (उत्तरदान) जो तुम ने किया हो पूरा करने अथवा ऋण चुकाने के पश्चात्। और यदि किसी ऐसे पुरुष या स्त्री का वारिस होने की बात हो जो (कलाला)^[1] हो, तथा (दूसरी माता से) उस का भाई अथवा बहन हो तो उन में से प्रत्येक के लिये छठा (भाग) है। फिर यदि (माँ जाये) (भाई या बहनें) इस से अधिक हों तो वह सब तिहाई (भाग) में (बराबर के) साझी होंगे। यह सब वसिय्यत (उत्तरदान) तथा ऋण चुकाने के पश्चात् होगा। और किसी को हानि नहीं पहुँचाई जायेगी। यह अल्लाह की ओर से वसिय्यत है। और अल्लाह ज्ञानी तथा हिक्मत वाला है।

दिया गया है? इस का कारण यह है कि पुत्री जब युवती और विवाहित हो जाती है, तो उसे अपने पति से महर (विवाह उपहार) मिलता है, और उस के तथा उस की संतान के यदि हो, तो भरण पोषण का भार उस के पति पर होता है। इस के विपरीत पुत्र युवक होता है तो विवाह करने पर अपनी पत्नी को महर (विवाह उपहार) देने के साथ ही उस का तथा अपनी संतान के भरण पोषण का भार भी उसी पर होता है। इसी लिये पुत्र को पुत्री के भाग का दुगना दिया जाता है, जो न्यायोचित है।

1 कलालः वह पुरुष अथवा स्त्री है जिस के न पिता हो और न पुत्र-पुत्री। अब इस के वारिस तीन प्रकार के हो सकते हैं:

1. सगे भाई बहन।

2. पिता एक तथा माताएँ अलग हों।

3. माता एक तथा पिता अलग हों। यहाँ इसी प्रकार का आदेश वर्णित किया गया है। ऋण चुकाने के पश्चात् बिना कोई हानि पहुँचाये, यह अल्लाह की ओर से आदेश है, तथा अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील है।

13. यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमायें हैं, और जो अल्लाह तथा उस के रसूल का आज्ञाकारी रहेगा तो उसे ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देगा जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। जिन में वह सदावासी होंगे। तथा यही बड़ी सफलता है।
14. और जो अल्लाह तथा उस के रसूल की अवज्ञा तथा उस की सीमाओं का उल्लंघन करेगा तो उस को नरक में प्रवेश देगा। जिस में वह सदावासी होगा। और उसी के लिये अपमानकारी यातना है।
15. तथा तुम्हारी स्त्रियों में से जो व्याभिचार कर जायें तो उन पर अपनों में से चार साक्षी लाओ। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तो उन्हें घरों में बन्द कर दो यहाँ तक कि उन को मौत आ जाये अथवा अल्लाह उन के लिये कोई अन्य^[1] राह बना दे।
16. और तुम में से जो दो व्यक्ति ऐसा करें तो दोनों को दुख पहुँचाओ। यहाँ तक कि वह तौबा (क्षमा याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें। तो उन को छोड़ दो। निश्चय अल्लाह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يَدْخُلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يَدْخُلْهُ نَارُ الْخَالِدِ فِيهَا كَذَلِكَ عَذَابُ
مُهِينٍ

وَالَّذِي يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِهِمْ
فَسُتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةٌ مِنْكُمْ
شَهِدُوا فَأَمْسَكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى
يَتَوَقَّعَهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا

وَالَّذِينَ يَأْتِيهِمَا مِنْكُمْ فَادُّوهُمَا فَإِنْ تَابَا
وَأَصْلَحَا فَاغْلُظْوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا
رَحِيمًا

1 यह आदेश इस्लाम के आरम्भिक युग व्याभिचार का साम्यिक दण्ड था इस का स्थायी दण्ड सूरह नूर आयत 2 में आ रहा है। जिस के उतरने पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: अल्लाह ने जो वचन दिया था उसे पूरा कर दिया। उसे मुझ से सीख लो।

17. अल्लाह के पास उन्हीं की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार है, जो अन जाने में बुराई कर जाते हैं, फिर शीघ्र ही क्षमा याचना कर लेते हैं, तो अल्लाह उन की तौब: (क्षमायाचना) स्वीकार कर लेता है, तथा अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

18. और उन की तौब: (क्षमा याचना) स्वीकार्य नहीं, जो बुराईयाँ करते रहते हैं, यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत का समय आ जाता है, तो कहता है, अब मैं ने तौब: कर ली, और न ही उन की जो काफिर रहते हुये मर जाते हैं, इन्हीं के लिये हम ने दुखदायी यातना तैयार कर रखी है।

19. हे ईमान वालो! तुम्हारे लिये हलाल (वैध) नहीं है कि बलपूर्वक स्त्रियों के बारिस बन जाओ।^[1] तथा उन्हें इस लिये न रोको कि उन्हें जो दिया हो उस में से कुछ मार लो। परन्तु यह कि खुली बुराई कर जायें। तथा उन के साथ उचित^[2] व्यवहार से रहो। फिर यदि वह तुम्हें अप्रिय लगें तो संभव है कि तुम किसी चीज को अप्रिय समझो, और अल्लाह ने उस में

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ النَّاسَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارًا ۚ أُولَئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرْتَدُّوا النِّسَاءَ كُرْهًا وَلَا تَعْضِلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا اتَّيَمَّمْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِعَاقِبَةٍ مُبِينَةٍ ۚ وَاعْبُرُوا مِنْ بَيْنِ يَدَيْهَا وَلَا تَغْلَبُوا فَكَيْفَا ۚ إِنَّ تَكْذُوبًا شَرًّا وَبَعَلَّ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۝

1 हदीस में है कि जब कोई मर जाता तो उस के बारिस उस की पत्नी पर भी अधिकार कर लेते थे इसी को रोकने के लिये यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4579)

2 हदीस में है कि पूरा ईमान उस में है जो सुशील हो। और भला वह है जो अपनी पत्नियों के लिये भला हो। (त्रिमिज़ी- 1162)

बड़ी भलाई^[1] रख दी हो।

20. और यदि तुम किसी पत्नी के स्थान पर किसी दूसरी पत्नी से विवाह करना चाहो और तुम ने उन में से एक को (सोने चांदी का) ढेर भी (महर में) दिया हो तो उस में से कुछ न लो। क्या तुम चाहते हो कि उसे आरोप लगा कर तथा खुले पाप द्वारा ले लो?

21. तथा तुम उसे ले भी कैसे सकते हो, जब कि तुम एक दूसरे से मिलन कर चुके हो। तथा उन्होंने तुम से (विवाह के समय) दृढ़ वचन लिया है।

22. और उन स्त्रियों से विवाह^[2] न करो जिन से तुम्हारे पिताओं ने विवाह किया हो, परन्तु जो पहले हो चुका^[3] वास्तव में यह निर्लज्जा की तथा अप्रिय बात और बुरी रीति थी।

23. तुम पर^[4] हराम (अवैध) कर दी

وَأَنْ أَرْتُمْ أَسْتَيْدَ الْرَّوْحَ مَكَانَ رَوْحٍ وَأَنْتُمْ
لَا تَحُدُّهُمْ قِطَارًا أَفَلَا تَأْخُذُوا بِمَنْ شِئْنَا
أَتَأْخُذُونَ بِهِتَانًا أَفَلَا تَأْمَنُونَ ۝

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى بَعْضٍ
وَلَقَدْ بَيْنَكُمْ بَيْنَاتٍ آفَافًا عَلِيمٌ ۝

وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ
إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلٌ ۝

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَخَنَاتُكُمْ

1 अर्थात् पत्नी किसी कारण न भाये तो तुरन्त तलाक़ न दे दो बल्कि धैर्य से काम लो।

2 जैसा कि इस्लाम से पहले लोग किया करते थे। और हो सकता है कि आज भी संसार के किसी कोने में ऐसा होता हो। परन्तु यदि भोग करने से पहले बाप ने तलाक़ दे दी हो तो उस स्त्री से विवाह किया जा सकता है।

3 अर्थात् इस आदेश के आने से पहले जो कुछ हो गया अल्लाह उसे क्षमा करने वाला है।

4 दादियाँ तथा नानियाँ भी इसी में आती हैं। इसी प्रकार पुत्रियों में अपनी संतान की नीचे तक की पुत्रियाँ, और बहनों में सगी हों या पिता अथवा माता से हों,

गई है: तुम्हारी मातायें, तथा तुम्हारी पुत्रियाँ, और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियाँ, और तुम्हारी मौसियाँ और भतीजियाँ, और भौजियाँ, तथा तुम्हारी वह मातायें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो, तथा दूध पीने से संबंधित बहनें, और तुम्हारी पत्नियों की मातायें, तथा तुम्हारी पत्नियों की पुत्रियाँ जिन का पालन पोषण तुम्हारी गोद में हुआ हो, जिन पत्नियों से तुम ने संभोग किया हो, और यदि उन से संभोग न किया हो तो तुम पर कोई दोष नहीं। तथा तुम्हारे सगे पुत्रों की पत्नियाँ, और यह^[1] कि तुम दो बहनों को एकत्र करो, परन्तु जो हो चुका। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

24. तथा उन स्त्रियों से (विवाह वर्जित है) जो दूसरों के निकाह में हों।

وَمَلَائِكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأَخْتِ وَأُمَّهَاتُ الْمَوْلَاةِ
الْأَخْتِ وَأَخَوَاتُكُمْ مِنَ الرِّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ
نِسَائِكُمْ وَرَبَّائِبُكُمْ الَّتِي فِي حُجُورِكُمْ مِنْ نِسَائِكُمُ
الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِنْ لَمْ تَلِدُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ
أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ تَتَّخِذُوا بَيْنَ الْأَخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ
سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ

फूफियों में पिता तथा दादाओं की बहनें, और मौसियों में माताओं तथा नानियों की बहनें, तथा भतीजी और भौजी में उन की संतान भी आती है। हदीस में है कि दूध से वह सभी रिश्ते हराम हो जाते हैं जो गोत्र से हराम होते हैं। (सहीह बुखारी- 5099 मुस्लिम- 1444)।

पत्नी की पुत्री जो दूसरे पति से हो उसी समय हराम (वर्जित) होगी जब उस की माता से संभोग किया हो, केवल विवाह कर लेने से हराम नहीं होगी। जैसे दो बहनों को निकाह में एकत्र करना वर्जित है उसी प्रकार किसी स्त्री के साथ उस की फूफी अथवा मौसी को भी एकत्र करना हदीस से वर्जित है। (देखिये: सहीह बुखारी- 5109-सहीह मुस्लिम-1408)

1 अर्थात् जाहिलियत के युग में।

परन्तु तुम्हारी दासियाँ^[1] जो (युद्ध में) तुम्हारे हाथ आई हों। (यह) तुम पर अल्लाह ने लिख दिया^[2] है। और इन के सिवा (स्त्रियाँ) तुम्हारे लिये हलाल (उचित) कर दी गयी हैं। (प्रतिबंध यह है कि) अपने धनों द्वारा व्यभिचार से सुरक्षित रहने के लिये विवाह करो। फिर उन में से जिस से लाभ उठाओ उन्हें उन का महर (विवाह उपहार) अवश्य चुका दो। तथा महर (विवाह उपहार) निर्धारित करने के पश्चात् (यदि) आपस की सहमति से (कोई कमी या अधिकता कर लो) तो तुम पर कोई दोष नहीं। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

25. और जो व्यक्ति तुम में से स्वतंत्र ईमान वालियों से विवाह करने की सकत न रखे तो वह अपने हाथों में आई हुई अपनी ईमान वाली दासियों से (विवाह कर ले)। तथा अल्लाह तुम्हारे ईमान को अधिक जानता है। तुम आपस में एक ही हो^[3] अतः

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا جَاءَكُم مَّا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَنْتَحُوا بِأَمْوَالِكُمْ فُتُخَيَّرَ مَسْفُوحِينَ قَبْلًا أَسْتَفْتَحُ بِهِ مِنْهُنَّ فَإِذَا تَوَفَّقَ أُولَئِكَ فَرِيضَةً وَأَلْجَبَانًا عَلَيْكُمْ فِيمَا تَوَرَّعْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَمَنْ فَتَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَأَنْكِحُوهُنَّ بِأُذْنِ أَهْلِهِنَّ وَاتَّوَفَّقَ أَجُورُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسْفُوحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُخْصِيَ وَإِنْ أَتَيْنَ

- 1 दासी वह स्त्री जो युद्ध में बन्दी बनाई गई हो। उस से एक बार मासिक धर्म आने के पश्चात् सम्भोग करना उचित है, और उसे मुक्त कर के उस से विवाह कर लेने का बड़ा पुण्य है। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् तुम्हारे लिये नियम बना दिया है।
- 3 तुम आपस में एक ही हो, अर्थात् मानवता में बराबर हो। ज्ञातव्य है कि इस्लाम से पहले दासिता की परम्परा पूरे विश्व में फैली हुई थी। बलवान जातियाँ निर्बलों को दास बना कर उन के साथ हिंसक व्यवहार करती थीं। कुरआन ने दासिता को केवल युद्ध के बंदियों में सीमित कर दिया। और उन्हें भी अर्घ्यदण्ड ले कर अथवा उपकार कर के मुक्त करने की प्रेरणा दी। फिर उन के साथ अच्छे व्यवहार पर बल दिया। तथा ऐसे आदेश और नियम बना दिए कि दासिता,

तुम उन के स्वामियों की अनुमति से उन (दासियों) से विवाह कर लो, और उन्हें नियमानुसार उन के महरें (विवाह उपहार) चुका दो, वह सती हों, व्याभिचारिणी न हों, न गुप्त प्रेमी बना रखी हों। फिर जब वह विवाहित हो जायें तो यदि व्याभिचार कर जायें, तो उन पर उस का आधा^[1] दण्ड है, जो स्वतंत्र स्त्रियों पर है। यह (दासी से विवाह) उस के लिये है, जो तुम में से व्याभिचार से डरता हो। और सहन करो तो यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

26. अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे लिये उजागर कर दे, तथा तुम को भी उन की नितियों की राह दर्शा दे जो तुम से पहले थे। और तुम्हारी क्षमा याचना स्वीकार करे। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

27. और अल्लाह चाहता है कि तुम पर दया करे। तथा जो लोग आकांक्षाओं के पीछे पड़े हुये हैं वह चाहते हैं कि तुम बहुत अधिक झुक^[2] जाओ।

بِمَا حَسَنَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ حَقَّتِ الْعَنَتُ مِنْكُمْ وَأَنْ تَصِيرُوا خَيْرَ لَكُمْ وَأَلَّهُ عَفُورٌ رَحِيمٌ

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ الَّذِينَ فِيهِمْ وَيُزَكِّيَ الَّذِينَ يَزْنُونَ وَيُؤْتِيَ الْمُؤْمِنِينَ سَلَامًا

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ يُسَيِّئُوا مِثْلَ بَعْضِهَا

दासिता नहीं रह गई। यहाँ इसी बात पर बल दिया गया है कि दासियों से विवाह कर लेने में कोई दोष नहीं। इसलिये मानवता में सब बराबर हैं, और प्रधानता का मापदण्ड ईमान तथा सत्कर्म हैं।

1 अर्थात् पचास कोड़े।

2 अर्थात् सत्धर्म से कतरा जाओ।

28. अब्राह तुम्हारा (बोझ) हल्का करना^[1] चाहता है। तथा मानव निर्बल पैदा किया गया है।

29. हे ईमान वालो! आपस में एक दूसरे का धन अवैध रूप से न खाओ, परन्तु यह कि: लेन देन तुम्हारी आपस की स्वीकृति से (धर्मविधानानुसार) हो। और आत्महत्या^[2] न करो, वास्तव में अब्राह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

30. और जो अतिक्रमण तथा अत्याचार से ऐसा करेगा, समीप है कि: हम उसे अग्नि में झोंक देंगे, और यह अब्राह के लिये सरल है।

31. तथा यदि तुम उन महा पापों से बचते रहे, जिन से तुम्हें रोका जा रहा है, तो हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे। और तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे।

32. तथा उस की कामना न करो, जिस के द्वारा अब्राह ने तुम को एक दूसरे पर श्रेष्ठता दी है। पुरुषों के लिये उस का भाग है जो उन्होंने कमाया।^[3]

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وُجُوحَ الْإِنْسَانِ ضَعِيفًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِإِلْبَاطٍ طِيلٍ إِلَّا أَنْ تَكُونَ بَيْعًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدَّ وَابًا وَظَلَمًا فَسَوْفَ نُنْصِلِيهِ تَارًا أَوْ كَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

إِنْ جَحَدْتُمُوكُمْ أَمْ لَا تَنْهَوْنَ عَنْهُ نَكْفُرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنَذْخَلُكُمْ فِي الْخَلَاكِ بَرِيًّا ۝

وَلَا تَتَّبِعُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبْنَ وَسَعُلُوا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ

1 अर्थात् अपने धर्मविधान द्वारा।

2 इस का अर्थ यह भी किया गया है कि: अवैध कर्मों द्वारा अपना विनाश न करो, तथा यह भी कि: आपस में रक्तपात न करो, और यह तीनों ही अर्थ सहीह हैं। (तफ्सीरे कुर्तबी)

3 कुरआन उतरने से पहले संसार का यह साधारण विध्वन्यापी विचार था कि: नारी का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं है। उसे केवल पुरुषों की सेवा और काम वासना की पूर्ति के लिये बनाया गया है। कुरआन इस विचार के विरुद्ध यह कहता है कि अब्राह ने मानव को नर तथा नारी दो लिंगों में विभाजित कर दिया है। और

يُحِلُّ شَيْءًا عَلَيْهِمَا ۝

और स्त्रियों के लिए उस का भाग है जो उन्होंने कमाया है। तथा अल्लाह से उस के अधिक की प्रार्थना करते रहो, निस्संदेह अल्लाह सब कुछ जानता है।

33. और हम ने प्रत्येक के लिये वारिस (उत्तराधिकारी) बना दिये हैं उस में से जो माता पिता तथा समीपवर्तियों ने छोड़ा हो। तथा जिन से तुम ने समझौता^[1] किया हो उन्हें उन का भाग दो। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज़ से सूचित है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيًّا وَمَثَلُ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبُونَ
وَالَّذِينَ عَقَدْتَ أَيْمَانُكُمْ فَأَوْهَهُمْ نَصِيْبَهُمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

34. पुरुष स्त्रियों के व्यवस्थापक^[2] हैं, इस कारण कि अल्लाह ने उन में से एक को दूसरे पर प्रधानता दी है। तथा इस कारण कि उन्होंने ने अपने धनों में से (उन पर) खर्च किया है। अतः सदाचारी स्त्रियाँ वह हैं जो आज्ञाकारी तथा उनकी अनुपस्थिति में अल्लाह की रक्षा में उन के अधिकारों की रक्षा

الْبَحَالُ قَوْمُونَ عَلَىٰ النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ
بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنْفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ
وَالصِّلَاتُ قِيَمْتُ خِفْتُ لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ
وَالَّذِينَ تَخَافُونَ شُرُوكَهُمْ فَعِظُواهُمْ وَابْجُرُوهُمْ
فِي الْمَضَاجِعِ وَاصْرَبُواهُمْ فَإِنْ أَطَعْتُمْ فَلَا
تَسْغَوْا عَلَيْهِمْ سَبِيلًا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
كَثِيرًا ۝

दोनों ही समान रूप से अपना अपना अस्तित्व, अपने अपने कर्तव्य तथा कर्म रखते हैं। और जैसे आर्थिक कार्यालय के लिये एक लिंग की आवश्यकता है वैसे ही दूसरे की भी है। मानव के सामाजिक जीवन के लिये यह दोनों एक दूसरे के सहायक हैं।

- 1 यह संधिभ मीरास इस्लाम के आरंभिक युग में थी, जिसे (मबारीस की आयत) से निरस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि परिवारिक जीवन के प्रबंध के लिये एक प्रबंधक होना आवश्यक है। और इस प्रबंध तथा व्यवस्था का भार पुरुष पर रखा गया है। जो कोई विशेषता नहीं, बल्कि एक भार है। इस का यह अर्थ नहीं कि जन्म से पुरुष की स्त्री पर कोई विशेषता है। प्रथम आयत में यह आदेश दिया गया है कि यदि पत्नी पति की अनुगामी न हो तो वह उसे समझाये। परन्तु यदि दोष पुरुष का हो तो दोनों के बीच मध्यस्थता द्वारा संधि कराने की प्रेरणा दी गयी है।

करती हों। और तुम्हें जिन की अबज्ञा का डर हो तो उन्हें समझाओ। और शयनागारों (सोने के स्थानों) में उन से अलग हो जाओ। तथा उनको मारो। फिर यदि वह तुम्हारी बात मानें तो उन पर अत्याचार का बहाना न खोजो। और अल्लाह सब से ऊपर, सब से बड़ा है।

35. और यदि तुम^[1] को दोनों के बीच वियोग का डर हो तो एक मध्यस्थ उस (पति) के घराने से तथा एक मध्यस्थ उस (पत्नी) के घराने से नियुक्त करो, यदि वह दोनों संधि कराना चाहेंगे तो अल्लाह उन दोनों^[2] के बीच संधि करा देगा। वास्तव में अल्लाह अति ज्ञानी सर्वसूचित है।

36. तथा अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, और किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। तथा माता पिता, समीपवर्तियों और अनाथों एवं निर्धनों तथा समीप और दूर के पड़ोसी, यात्रा के साथी तथा यात्री और अपने दास दासियों के साथ उपकार करो। निःसंदेह अल्लाह उस से प्रेम नहीं करता जो अभिमानी अहंकारी^[3] हो।

37. और जो स्वयं कृपण (कंजूसी) करते हैं, तथा दूसरों को भी कृपण (कंजूसी) का आदेश देते हैं, और उसे

وَأِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا
مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ يُرِيدَا
إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
خَبِيرًا

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا
وَيَالِ الْيَادَيْنِ إِحْسَانًا قُرْبَى الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى
وَالسَّكِينِ وَالْحَارِثِ الْقُرْبَى وَالْحَارِثِ الْجَنِّبِ
وَالصَّاحِبِ الْجَنِّبِ وَالْبَنِ السَّيِّئِ وَمَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا
فَخُورًا

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ
وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ

1 इस में पति पत्नी के संरक्षकों को संबोधित किया गया है।

2 अर्थात् पति पत्नी में।

3 अर्थात् डींगें मारता तथा इतराता हो।

छुपाते हैं जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है। और हम ने कृतघ्नों के लिये अपमानकारी यातना तैयार कर रखी है।

38. तथा जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए दान करते हैं, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान नहीं रखते। तथा शैतान जिस का साथी हो, तो वह बहुत बुरा साथी⁽¹⁾ है।

39. और उन का क्या बिगड़ जाता, यदि वह अल्लाह तथा अन्तिम दिन (परलोक) पर ईमान (विश्वास) रखते, और अल्लाह ने जो उन्हें दिया है उस में से दान करते? और अल्लाह उन्हें भली भाँति जानता है।

40. अल्लाह कण भर भी किसी पर अत्याचार नहीं करता, यदि कुछ भलाई (किसी ने) की हो, तो (अल्लाह) उसे अधिक कर देता है, तथा अपने पास से बड़ा प्रतिफल प्रदान करता है।

41. तो क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) से एक साक्षी लायेंगे, और (हे नबी!) आप को

وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٣٩﴾

وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ شَيْئًا ذَرَّةً وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً يَّضْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٤١﴾

تَكُنْ إِنْ أَجْمَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا وَجَعَلْنَاكَ عَلَىٰ هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤٢﴾

1 आयत 36 से 38 तक साधारण सहानुभूति और उपकार का आदेश दिया गया है कि: अल्लाह ने जो धन धान्य तुम को दिया उस से मानव की सहायता और सेवा करो। जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता हो उस का हाथ अल्लाह की राह में दान करने से कभी नहीं रुक सकता। फिर भी दान करो तो अल्लाह के लिये करो, दिखावे और नाम के लिये न करो। जो नाम के लिये दान करता है वह अल्लाह तथा आखिरत पर सच्चा ईमान (विश्वास) नहीं रखता।

उन पर साक्षी लायेंगे।^[1]

42. उस दिन जो काफिर तथा रसूल के अवैज्ञाकारी हो गये यह कामना करेंगे कि उन के सहित भूमि बराबर^[2] कर दी जाये। और वे अल्लाह से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे।

43. हे ईमान वालो! तुम जब नशे^[3] में रहो तो नमाज़ के समीप न जाओ। जब तक जो कुछ बोलो उसे न समझो। और न जनाबत^[4] की स्थिति में (मस्जिदों के समीप जाओ) परन्तु रास्ता पार करते हुये। और यदि तुम रोगी हो अथवा यात्रा में रहो, या स्त्रियों से सहवास कर लो, फिर जल न पाओ, तो पवित्र मिट्टी से तयम्मूम^[5] कर लो। उसे अपने मुखों तथा हाथों पर फेर लो। वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त (सहिष्णु) क्षमाशील है।

44. क्या आप ने उनकी दशा नहीं देखी

يَوْمَئِذٍ يَوْمَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا الرَّسُولَ
لَوْ تَسَوَّى بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ
حَدِيثًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنتُمْ
سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا
إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا. وَإِنْ كُنْتُمْ
مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُم مِّنَ
الْحَايِطِ أَوْ لَبَسْتُمْ الثَّيَابَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً
فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا
بِأُفُوجِهِمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ

1 आयत का भावार्थ यह है कि प्रलय के दिन अल्लाह प्रत्येक समुदाय के रसूल को उन के कर्म का साक्षी बनायेगा। इस प्रकार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अपने समुदाय पर साक्षी बनायेगा। तथा सब रसूलों पर कि उन्होंने ने अपने पालनहार का संदेश पहुँचाया है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् भूमि में घँस जायें, और उन के ऊपर से भूमि बराबर हो जाये। या वह भी मिट्टी हो जायें।

3 यह आदेश इस्लाम के आरंभिक युग का है जब मदिरा को वर्जित नहीं किया गया था। (इब्ने कसीर)

4 जनाबत का अर्थ वीर्यपात के कारण मलिन तथा अपवित्र होना है।

5 अर्थात् यदि जल का अभाव हो, अथवा रोग के कारण जल प्रयोग हानिकारक हो तो बुजू तथा स्नान के स्थान पर तयम्मूम कर लो।

जिन्हें पुस्तक^[1] का कुछ भाग दिया गया? वह कुपथ खरीद रहे हैं, तथा चाहते हैं कि तुम भी सुपथ से विचलित हो जाओ।

45. तथा अब्ब्राह तुम्हारे शत्रुओं से भली भाँति अवगत है। और (तुम्हारे लिये) अब्ब्राह की रक्षा काफी है। तथा अब्ब्राह की सहायता काफी है।

46. (हे नबी!) यहूदियों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो शब्दों को उन के (वास्तविक) स्थानों से फेरते हैं। और (आप से) कहते हैं कि हम ने सुन लिया, तथा (आप की) अवज्ञा की, और आप सुनिये, आप सुनाये न जायें, तथा अपनी जुबानें मोड़ कर "राइना" कहते और सत्धर्म में व्यंग करते हैं, और यदि वह "हम ने सुन लिया तथा आज्ञाकारी हो गये", और "हमें देखिये" कहते, तो उन के लिये अधिक अच्छी तथा सही बात होती। परन्तु अब्ब्राह ने उन के कुफ़ के कारण उन्हें धिक्कार दिया है। अतः उन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

47. हे अहले किताब! उस (कुर्आन) पर ईमान लाओ जिसे हम ने उन का प्रमाणकारी बना कर उतारा है जो (पुस्तकें) तुम्हारे साथ हैं। इस से पहले कि हम चेहरे बिगाड़ कर पीछे फेर दें।

يَشْتَرُونَ الصَّلَاةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَضِلُّوا
الْبَيْتَ ۖ

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَى
بِاللَّهِ نَصِيرًا ۖ

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُخَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ
مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا
وَأَنصَرُغُوا غَيْرَ مُنْصَرِعِينَ وَرَاعِنَا لَيْئَالًا لَّيْسَتْ لَهُمْ
وَطْعَنَاتِي الَّذِينَ وَلُوا أَنفُسَهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا
وَأَطَعْنَا وَأَنصَرُغُوا وَأَنصَرُغُوا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ
وَأَقْوَمَ وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْكِتَابَ آمَنُوا بِمَا نَزَّلْنَا
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَنْ نَقِطِسَ
وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ تَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا
أَصْحَابَ السَّبْتِ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۖ

1 अर्थात् अहले किताब की जिन को तौरात का ज्ञान दिया गया। भावार्थ यह है कि उन की दशा से शिक्षा ग्रहण करो। उन्हीं के समान सत्य से विचलित न हो जाओ।

अथवा उन्हें ऐसे ही धिक्कार^[1] दें जैसे शनिवार वालों को धिक्कार दिया। और अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

48. निःसंदेह अल्लाह यह नहीं क्षमा करेगा कि उस का साझी बनाया जाये^[2], और उस के सिवा जिसे चाहे क्षमा कर देगा। और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।

49. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपने आप पवित्र बन रहे हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहे पवित्र करता है। और (लोगों पर) कण बराबर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

50. देखो यह लोग कैसे अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे^[3] हैं! उन के खुले पाप के लिये यही बहुत है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۝

الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ مُبْرَأُونَ مِنَ اللَّهِ يُزْعِمُونَ يَتَّبِعُونَ مَا تَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

أَنظَرَكُمُ يَفْعَلُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۝

- 1 मदीने के यहूदियों का यह दुर्भाग्य था कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलते, तो द्विअर्थक तथा संदिग्ध शब्द बोल कर दिल की भड़ास निकालते, उसी पर उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है। शनिवार वाले, अर्थात् जिन को शनिवार के दिन शिकार से रोका गया था। और जब वे नहीं माने तो उन्हें बन्दर बना दिया गया।
- 2 अर्थात् पूजा, अराधना तथा अल्लाह के विशेष गुण-कर्मों में किसी वस्तु अथवा व्यक्ति को साझी बनाना घोर अक्षम्य पाप है, जो सत्धर्म के मूलाधार एकेस्वरवाद के विरुद्ध, और अल्लाह पर मिथ्या आरोप है। यहूदियों ने अपने धर्माचार्यों तथा पादरियों के विषय में यह अंधविश्वास बना लिया कि: उन की बात को धर्म समझ कर उन्हीं का अनुपालन कर रहे थे। और मूल पुस्तकों को त्याग दिया था, कुर्आन इसी को शिर्क कहता है, वह कहता है कि: सभी पाप क्षमा किये जा सकते हैं परन्तु शिर्क के लिये क्षमा नहीं, क्योंकि: इस से मूलधर्म की नींव ही हिल जाती है। और मार्गदर्शन का केन्द्र ही बदल जाता है।
- 3 अर्थात् अल्लाह का नियम तो यह है कि: पवित्रता, ईमान तथा सत्कर्म पर निर्भर है, और यह कहते हैं कि: यहूदियत पर है।

51. हे नबी! क्या आप ने उन की दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह मुर्तियों तथा शैतानों की इबादत (बंदना) करते हैं। और काफ़िरो^[1] के बारे में कहते हैं कि यह ईमान वालों से अधिक सीधी डगर पर हैं।

52. और जिसे अल्लाह धिक्कार दे तो आप उस का कदापि कोई सहायक नहीं पायेंगे।

53. क्या उन के पास राज्य का कोई भाग है, इस लिए लोगों को (उस में से) तनिक भी नहीं देंगे?

54. बल्कि वह लोगों^[2] से उस अनुग्रह पर विद्वेष कर रहे हैं जो अल्लाह ने उन को प्रदान किया है। तो हम ने (पहले भी) इब्राहीम के घराने को पुस्तक तथा हिकमत (तत्त्वदर्शिता) दी है।

55. फिर उन में से कोई ईमान लाया, और कोई उस से विमुख हो गया। (तो उस के लिए) नरक की भड़कती अग्नि बहुत है।

56. वास्तव में जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया, हम उन्हें नरक में झोंक देंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَالْكَافُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا ۖ

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن يَجِدَ لَهُ نَصِيرًا ۝

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ۝

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَهُم مَّا عَظَمُوا ۖ

فِيهِمْ مِّنْ أَمَنٍ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كَلْبًا ۖ نَخْتُمُ جُلُودَهُمْ بَنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا

1 अर्थात् मक्का के मुर्ति के पूजारियों के बारे में मदीना के यहूदियों की यह दशा थी कि वह सदैव मुर्ति पूजा के विरोधी रहे। और उस का अपमान करते रहे। परन्तु अब मुसलमानों के विरोध में उन की प्रशंसा करते तथा कहते कि मुर्ति पूजकों का आचरण स्वभाव अधिक अच्छा है।

2 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों पर कि अल्लाह ने आप को नबी बना दिया तथा मुसलमानों को ईमान दे दिया।

जब जब उन की खालें पकेंगी हम उन की खालें दूसरी बदल देंगे, ताकि वह यातना चखें, निःसंदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

57. और जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार किये तो हम उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे, उन के लिए उन में निर्मल पत्नियाँ होंगी और हम उन को घनी छाओं में रखेंगे।

58. अल्लाह^[1] तुम्हें आदेश देता है कि धरोहर उन के स्वामियों को चुका दो, और जब लोगों के बीच निर्णय करो तो न्याय के साथ निर्णय करो। अल्लाह तुम्हें अच्छी बात का निर्देश दे रहा है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ सुनने, देखने वाला है।

59. हे ईमान वालो! अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो, और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो, तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो, फिर यदि किसी बात में तुम आपस में विवाद (विभेद) कर लो, तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हो। यह (तुम्हारे लिये) अच्छा^[2] और इस का

الْعَذَابُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا ظِلِيلٌ

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا

1 यहाँ से ईमान वालों को संबोधित किया जा रहा है कि सामाजिक जीवन की व्यवस्था के लिए मूल नियम यह है कि जिस का जो भी अधिकार हो उसे स्वीकार किया जाये और दिया जाये। इसी प्रकार कोई भी निर्णय बिना पक्षपात के न्याय के साथ किया जाये, किसी प्रकार कोई अन्याय नहीं होना चाहिये।

2 अर्थात् किसी के विचार और राय को मानने से। क्योंकि कुर्आन और नबी

परिणाम अच्छा है।

60. (हे नबी!) क्या आप ने उन (द्विधावादियों) को नहीं जाना, जिन का यह दावा है कि वह जो कुछ आप पर अवतरित हुआ है तथा जो कुछ आप से पूर्व अवतरित हुआ है, उस पर ईमान रखते हैं, तथा चाहते हैं कि अपने विवाद का निर्णय बिद्रोही के पास ले जायें, जब कि उन्हें आदेश दिया गया है कि उसे अस्वीकार कर दें। और शैतान चाहता है कि उन्हें सत्धर्म से बहुत दूर⁽¹⁾ कर दे।

61. तथा जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो (कुरआन) अल्लाह ने उतारा है तथा रसूल की (सुन्नत की) ओर तो आप मुनाफिकों (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मुंह फेर रहे हैं।

62. फिर यदि उन के अपने ही कर्तूतों के कारण उन पर कोई आपदा आ पड़े, तो फिर आप के पास आकर शपथ लेते हैं कि हम ने⁽²⁾ तो केवल भलाई

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا
أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ
يَتَّخِذُوا إِلَى الْغَاوِثِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ
يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ
صَلًّا بَعِيدًا ۝

وَلَا ذَائِقِلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أُنْزِلَ اللَّهُ وَآلِ
الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ
صُدُّوًّا ۝

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبَتْ
أَيْدِيَهُمْ شُرُكَاءُؤُكَ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا
إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا ۝

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत ही धर्मदिशों की शिलाधार है।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि जो धर्म विधान कुरआन तथा सुन्नत के सिवा किसी अन्य विधान से अपना निर्णय चाहते हों उन का ईमान का दावा मिथ्या है।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि मुनाफिक ईमान का दावा तो करते थे, परन्तु अपने विवाद चुकाने के लिये इस्लाम के विरोधियों के पास जाते, फिर जब कभी उन की दो रंगी पकड़ी जाती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर मिथ्या शपथ लेते। और यह कहते कि हम केवल विवाद सुलझाने के लिये उन के पास चले गये थे। (इब्ने कसीर)

तथा (दोनों पक्ष में) मेल कराना चाहा था।

63. यही वह लोग हैं जिन के दिलों के भीतर की बातें अल्लाह जानता है। अतः आप उन को क्षमा कर दें, तथा उन्हें उपदेश दें, और उन से ऐसी प्रभावी बात बोलें जो उन के दिलों में उतर जाये।
64. और हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये। और जब उन लोगों ने अपने ऊपर अत्याचार किया तो यदि वह आप के पास आते, फिर अल्लाह से क्षमा याचना करते, तथा उन के लिये रसूल क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को अति क्षमाशील दयावान् पाते।
65. तो आप के पालनहार की शपथ! वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें^[1], फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें, और पूर्णतः स्वीकार कर लें।
66. और यदि हम उन्हें^[2] आदेश देते कि स्वयं को बध करो, तथा अपने घरों से निकल जाओ तो इन में से थोड़े के सिवा कोई ऐसा नहीं करता। और

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رُسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِي مَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ اقْتُلُوا مَنْ فِي بَيْتِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ

1 यह आदेश आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में था। तथा आप के निधन के पश्चात अब आप की सुन्नत से निर्णय लेना है।

2 अर्थात् जो दूसरों से निर्णय कराते हैं।

यदि उन्हें जो निर्देश दिया जाता है वह उस का पालन करते तो उन के लिये अच्छा और अधिक स्थिरता का कारण होता।

خَيْرَ لَهُمْ وَأَشَدَّ ثَبَاتًا ۝

67. और हम उन को अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते।

وَلَا إِلَٰهَ إِلَّا هُمْ مِّنْ دُونِ أَجْرٍ عَظِيمٍ ۝

68. तथा हम उन्हें सीधी डगर दर्शा देते।

وَلَهَدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝

69. तथा जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करेंगे तो वही (स्वर्ग में) उन के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया है, अर्थात् नबियों तथा सत्यवादियों, शहीदों और सदाचारियों के साथ। और वह क्या ही अच्छे साथी हैं?

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۝

70. यह प्रदान अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह का ज्ञान बहुत^[1] है।

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عِلْمًا ۝

71. हे ईमान वालो! अपने (शत्रु से) बचाव के साधन तय्यार रखो, फिर गिरोहों में अथवा एक साथ निकल पड़ो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِزْبًا وَكُلُّوا وَامْكُمُوا
نَبَاتٍ أَوْ اتَّقُوا جَمِيعًا ۝

72. और तुम में कोई ऐसा व्यक्ति^[2] भी है जो तुम से अवश्य पीछे रह जायेगा, और यदि तुम पर (युद्ध में) कोई आपदा आ पड़े तो कहेगा: अल्लाह ने मुझ पर उपकार किया कि मैं उनके साथ उपस्थित न था।

وَإِنْ مِنْكُمْ لَمَنْ يُبْتَغِئُ فَإِنْ أَصَابَكُمْ
مُّصِيبَةٌ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ
شَهِيدًا ۝

73. और यदि तुम पर अल्लाह की दया हो

وَلَوْ أَنَّ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَفُتُوهُ كَانُوا لَكُم

1 अर्थात् अपनी दया तथा प्रदान के योग्य को जानने के लिये।

2 यहाँ युद्ध से संबंधित अब्दुल्लाह बिन उबय्य जैसे मुनाफिकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

जाये, तो वह अवश्य यह कामना करेगा कि काश! मैं भी उन के साथ होता, तो बड़ी सफलता प्राप्त कर लेता। मानो उस के और तुम्हारे मध्य कोई मित्रता ही न थी।

74. तो चाहिये कि अल्लाह की राह^[1] में वह लोग युद्ध करें जो आखिरत (परलोक) के बदले संसारिक जीवन बेच चुके हैं। और जो अल्लाह की राह में युद्ध करेगा, तो वह मारा जाये अथवा विजयी हो जाये तो हम उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

75. और तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह की राह में युद्ध नहीं करते, जब कि कितने ही निर्बल पुरुष तथा स्त्रियाँ और बच्चे हैं, जो गुहार रहे हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें इस नगर^[2] से निकाल दे, जिस के निवासी अत्याचारी हैं। और हमारे लिये अपनी ओर से कोई रक्षक बना दे, और हमारे लिये अपनी ओर से कोई सहायक बना दे।

76. जो लोग ईमान लाये वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं। और जो काफिर है वह उपद्रव के लिये युद्ध करते हैं। तो

تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَلَيْتَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ
فَأُفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

فَلْيَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَيَمُتْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيَهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا
مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الْكَافِرُ أَهْلُهَا وَاجْعَلْ
لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ
لَدُنْكَ نَصِيرًا ۝

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الْكَافِرِينَ

1 अल्लाह के धर्म को ऊँचा करने, और उस की रक्षा के लिये। किसी स्वार्थ अथवा किसी देश और संसारिक धन धान्य की प्राप्ति के लिये नहीं।

2 अर्थात् मक्का नगर से। यहाँ इस तथ्य को उजागर कर दिया गया है कि कुर्आन ने युद्ध का आदेश इस लिये नहीं दिया है कि दूसरों पर अत्याचार किया जाये। बल्कि नृशंसितों तथा निर्बलों की सहायता के लिये दिया है। इसी लिये वह बार बार कहता है कि "अल्लाह की राह में युद्ध करो" अपने स्वार्थ और मनोकामनाओं के लिये नहीं। न्याय तथा सत्य की स्थापना और सुरक्षा के लिये युद्ध करो।

शैतान के साथियों से युद्ध करो। निःसंदेह शैतान की चाल निर्बल होती है।

77. (हे नबी!) क्या आप ने उन की नहीं देखी, जिस से कहा गया कि अपने हाथों को (युद्ध से) रोके रखो, तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो? और जब उन पर युद्ध करना लिख दिया गया तो उन में से एक गिरोह लोगों से ऐसे डर रहा है जैसे अल्लाह से डर रहा हो। या उस से भी अधिक। तथा वह कहते हैं कि हे हमारे पालनहार! हम को युद्ध करने का आदेश क्यों दे दिया, क्यों न हमें थोड़े दिनों का और अवसर दिया? आप कह दें कि संसारिक सुख बहुत थोड़ा है, तथा परलोक उस के लिये अधिक अच्छा है जो अल्लाह^[1] से डरा, और उन पर कण भर भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

78. तुम जहाँ भी रहो, तुम्हें मौत आ पकड़ेगी, यद्यपि दृढ़ दुर्गों में क्यों न रहो। तथा उन को यदि कोई सुख पहुँचता है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। और यदि कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं कि यह आपके कारण है। (हे नबी!) उन से कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है। इन लोगों को क्या हो गया कि कोई बात समझने के समीप भी नहीं^[2] होते?

فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كُتِبَ عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْ أَنَّا خَرْتُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّقْرَّبٍ أَوْ لَمَّا تَأْتُوا الدُّنْيَا قِيلَ لِلَّذِينَ خَلَوْا مِنَ الدَّهْرِ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝

أَيَّنَ مَا تَكُونُوا يَدْرِكُهُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ وَإِنْ تُضِلُّهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تُضِلُّهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝

1 अर्थात् परलोक का सुख उस के लिये है जिस ने अल्लाह के आदेशों का पालन किया।

2 भावार्थ यह है कि जब मुसलमानों को कोई हानि हो जाती तो मुनाफ़िक

79. (वास्तविकता तो यह है कि) तुम को जो सुख पहुँचता है वह अल्लाह की ओर से होता है। तथा जो हानि पहुँचती है वह स्वयं (तुम्हारे कुकर्मों के) कारण होती है। और हम ने आप को सब मानव का रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा^[1] है। और (आपके रसूल होने के लिये) अल्लाह का साक्ष्य बहुत है।

80. जिस ने रसूल की आज्ञा का अनुपालन किया (वास्तव में) उस ने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया है। तथा जिस ने मुँह फेर लिया तो (हे नबी!) हम ने आप को उन का प्रहरी (रक्षक) बना कर नहीं भेजा^[2] है।

81. तथा वह (आपके सामने कहते हैं कि हम आज्ञाकारी हैं, और जब आप के पास से जाते हैं तो इन में से कुछ लोग रात में आप की बात के

مَا أَصَابَكُمْ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكُمْ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّىٰ مِمَّا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۝

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَأُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ

(द्विधावादी) तथा यहूदी कहते: यह सब नबी सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के कारण हुआ। कुर्आन कहता है कि सब कुछ अल्लाह की ओर से होता है। अर्थात् उस ने प्रत्येक दशा तथा परिणाम के लिए कुछ नियम बना दिये हैं। और जो कुछ भी होता है वह उन्हीं दशाओं का परिणाम होता है। अतः तुम्हारी यह बातें जो कह रहे हो, बड़ी अज्ञानता की बातें हैं।

1 इस का भावार्थ यह है कि तुम्हें जो कुछ हानि होती है तो वह तुम्हारे कुकर्मों का दुष्परिणाम होता है। इस का आरोप दूसरे पर न धरो। इस्लाम के नबी तो अल्लाह के रसूल हैं। और रसूल का काम यही है कि संदेश पहुँचा दें, और तुम्हारा कर्तव्य है कि उन के सभी आदेशों का अनुपालन करो। फिर यदि तुम अवैज्ञा करो, और उस का दुष्परिणाम सामने आये, तो दोष तुम्हारा है, न कि इस्लाम के नबी का।

2 अर्थात् आप का कर्तव्य अल्लाह का संदेश पहुँचाना है, उन के कर्मों तथा उन्हें सीधी डगर पर लगा देने का दायित्व आप पर नहीं।

بِاللهِ وَكَذَلِكَ

विरुद्ध परामर्श करते हैं। और वह जो परामर्श कर रहे हैं उसे अल्लाह लिख रहा है। अतः आप उन पर ध्यान न दें। और अल्लाह पर भरोसा करें, तथा अल्लाह पर भरोसा काफी है।

82. तो क्या वह कुर्आन (के अर्थों) पर सोच विचार नहीं करते? यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल (बे मेल) बातें पाते?^[1]

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا

83. और जब उन के पास शान्ति या भय की कोई सूचना आती है तो उसे फैला देते हैं। और यदि वह उसे अल्लाह के रसूल तथा अपने अधिकारियों की ओर फेर देते तो जो बात की तह तक पहुँचते हैं वे उस की वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम पर अल्लाह की अनुकम्पा तथा दया न होती तो तुम में थोड़े के सिवा सब शैतान के पीछे लग^[2] जाते।

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَكْبِطُونَ مِنْهُمْ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَفُتِنْتُمْ الشَّيْطَانَ إِلَّا وَلِيلًا

84. तो (हे नबी!) आप अल्लाह की राह में युद्ध करें। केवल आप पर यह भार डाला जा रहा है, तथा ईमान वालों को (इस की) प्रेरणा दें। संभव है कि अल्लाह काफिरों का बल (तोड़ दे)। और अल्लाह का बल और उस का दण्ड सब से कड़ा है।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكْفِ بِكَ النَّاسَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا

1 अर्थात् जो व्यक्ति कुर्आन में विचार करेगा, उस पर यह तथ्य खुल जायेगा कि कुर्आन अल्लाह की वाणी है।

2 इस आयत द्वारा यह निर्देश दिया जा रहा है कि जब भी साधारण शान्ति या भय की कोई सूचना मिले तो उसे अधिकारियों तथा शासकों तक पहुँचा दिया जाये।

85. जो अच्छी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा उसे उस का भाग (प्रतिफल) मिलेगा। तथा जो बुरी अनुशंसा (सिफारिश) करेगा तो उसे भी उस का भाग (कुफल)^[1] मिलेगा। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।

86. और जब तुम से सलाम किया जाये, तो उस से अच्छा उत्तर दो, अथवा उसी को दुहरा दो। निःसंदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का हिसाब लेने वाला है।

87. अल्लाह के सिवा कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं, वह अवश्य तुम्हें प्रलय के दिन एकत्र करेगा, इस में कोई संदेह नहीं। तथा बात कहने में अल्लाह से अधिक सच्चा कौन हो सकता है?

88. तुम्हें क्या हुआ है कि मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) के बारे में दो पक्ष^[2] बन गये हो। जब कि अल्लाह ने उन के कुकर्मा के कारण उन्हें औंधा कर दिया है। क्या तुम उसे सुपथ दर्शा देना चाहते हो जिसे अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और जिसे अल्लाह कुपथ

مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا
وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ
اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُتَبَيِّنًا ۝

وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّاتِهِ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا
أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُصَوِّرُكُمْ فِي يَوْمٍ الْوَاحَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا ۝

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةً وَاللَّهُ أَرْكَهُمْ
بِمَا كَسَبُوا أَتُرِيدُونَ أَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ
اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ يَهْدِيَهُ سَبِيلًا ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि अच्छाई तथा बुराई में किसी की सहायता करने का भी पुण्य और पाप मिलता है।

2 मक्का वासियों में कुछ अपने स्वार्थ के लिये मौखिक मुसलमान हो गये थे, और जब युद्ध आरंभ हुआ तो उन के बारे में मुसलमानों में दो विचार हो गये। कुछ उन्हें अपना मित्र और कुछ उन्हें अपना शत्रु समझ रहे थे। अल्लाह ने यहाँ बता दिया कि वह लोग मुनाफ़िक (द्विधावादी) हैं। जब तक मक्का से हिजरत कर के मदीना में न आ जायें, और शत्रु ही के साथ रह जायें, तो उन्हें भी शत्रु समझा जायेगा। यह वह मुनाफ़िक नहीं हैं जिन की चर्चा पहले की गयी है। यह मक्का के विशेष मुनाफ़िक हैं, जिन से युद्ध की स्थिति में कोई मित्रता की जा सकती थी, और न ही उन से कोई संबंध रखा जा सकता था।

कर दे तो तुम उस के लिये कोई राह नहीं पा सकते।

89. (हे ईमान वालो!) वे तो यह कामना करते हैं कि उन्हीं के समान तुम भी काफिर हो जाओ, तथा उन के बराबर हो जाओ। अतः उन में से किसी को मित्र न बनाओ, जब तक अल्लाह की राह में हिजरत न करें। और यदि वह इस से विमुख हों तो उन्हें जहाँ पाओ बध करो और उन में से किसी को मित्र न बनाओ, और न सहायक बनाओ।

90. परन्तु इन में से जो किसी ऐसी कौम से जा मिलें जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, अथवा ऐसे लोग हों जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उन के दिल इस से संकुचित हो रहे हों कि वह तुम से युद्ध करें, अथवा (तुम्हारे साथ) अपनी जाति से युद्ध करें। और यदि अल्लाह चाहता तो उन को तुम पर सामर्थ्य दे देता, फिर वह तुम से युद्ध करते, तो यदि वह तुम से बिलग रह गये और तुम से युद्ध नहीं किया, और तुम से संधि कर ली, तो उन के विरुद्ध अल्लाह ने तुम्हारे लिये कोई (युद्ध करने की) राह नहीं बनाई^[1] है।

91. तथा तुम को कुछ ऐसे दूसरे लोग भी

وَذُو الْوَلْتِكُمْ ۚ وَمَنْ كَفَرَ ۖ فَمَا تَصِفُوا أَمْثَلُكُمْ ۚ سَوَاءٌ
فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ ۚ خَلَعَهُمْ بِهَا حِجْرًا ۚ وَفِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَعَلْنَا وَهُمْ وَأَمْثَلُهُمْ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ۚ

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَنْ
يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَسَطَّخَهُمْ عَلَيْهِمْ فَأَفْشَوْا ۚ فَمَنْ تَوَلَّوْكُمْ فَلَمْ
يُقَاتِلْكُمْ وَالْقَوْلُ إِلَيْكُمْ السَّلَامُ ۚ فَمَا جَعَلَ
اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۚ

سَوِّدُونَ الْخَرِيفَ ۚ يُرِيدُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِكُمْ

1 अर्थात् इस्लाम में युद्ध का आदेश उन के विरुद्ध दिया गया है जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध कर रहे हों। अन्यथा उन से युद्ध करने का कोई कारण नहीं रह जाता क्योंकि मूल चीज़ शान्ति तथा संधि है, युद्ध और हत्या नहीं।

मिलेंगे जो तुम्हारी ओर से भी शान्त रहना चाहते हैं, और अपनी जाति की ओर से भी शान्त रहना (चाहते हैं)। फिर जब भी उपद्रव की ओर फेर दिये जायें, तो उस में औधे हो कर गिर जाते हैं। तो यदि वह तुम से बिलग न रहें और तुम से संधि न करें, तथा अपना हाथ न रोकें तो उन्हें पकड़ो, और जहाँ पाओ बध करो। हम ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिये खुला तर्क बना दिया है।

92. किसी ईमान वाले के लिये वैध नहीं है कि वह किसी ईमान वाले की हत्या कर दे, परन्तु चूक^[1] से। तथा जो किसी ईमान वाले की चूक से हत्या कर दे तो उसे एक ईमान वाला दास मुक्त करना है, और उस के घर वालों को दियत (अर्धदण्ड)^[2] दे, परन्तु यह कि वह दान (क्षमा) कर दें। फिर यदि वह (निहत) उस जाति में से हो जो तुम्हारी शत्रु है,

وَيَا مَنُوا قَوْمَهُمْ كَلِمَاتُ وَالِّ الْفِتْنَةِ أُرْكَبُوا فِيهَا فَإِنْ لَمْ يَعْزُوا لَكُمْ وَيُلْفُوا إِلَيْكُمْ السَّلَامَ وَيَلْفُوا أَيْدِيَهُمْ فَعُدُّوهُمْ وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ تَقْتُلُوهُمْ وَأُولَئِكَ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ۝

وَمَا كَانَ لِمَنْ يَكْفُرُ أَنْ يَكْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ إِلَّا أَنْ يَصَّدَّقُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمُ بَيْتَانٌ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

1 अर्थात् निशाना चूक कर उसे लग जाये।

2 यह अर्धदण्ड सौ ऊँट अथवा उन का मूल्य है। आयत का भावार्थ यह है कि जिन की हत्या करने का आदेश दिया गया है वह केवल इस लिये दिया गया है कि उन्होंने ने इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध आरंभ कर दिया है। अन्यथा यदि युद्ध की स्थिति न हो तो हत्या एक महापाप है। और किसी मुसलमान के लिये कदापि यह वैध नहीं कि किसी मुसलमान की, या जिस से समझौता हो, उस की जान बूझ कर हत्या कर दें। संधि मित्र से अभिप्राय वह सभी गैर मुस्लिम हैं जिन से मुसलमानों का युद्ध न हो, संधि तथा संबिदा हो। फिर यदि चूक से किसी ने किसी की हत्या कर दी तो उस का यह आदेश है जो इस आयत में बताया गया है। यह ज्ञातव्य है कि कुर्आन ने केवल दो ही स्थिति में हत्या को उचित किया है: युद्ध की स्थिति में, अथवा नियमानुसार किसी अपराधी की हत्या की जाये। जैसे हत्यारे को हत्या के बदले हत किया जाये।

और वह (निहत) ईमान वाला है तो एक ईमान वाला दास मुक्त करना है। और यदि ऐसी कौम से हो जिस के और तुम्हारे बीच संधि है तो उस के घर वालों को अर्धदण्ड देना, तथा एक ईमान वाला दास (भी) मुक्त करना है, और जो दास न पाये तो उसे निरंतर दो महीने रोजा रखना है। अल्लाह की ओर से (उस के पाप की) यही क्षमा है। और अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

93. और जो किसी ईमान वाले की हत्या जान बूझ कर कर दे तो उस का कुफल (बदला) नरक है। जिस में वह सदावासी होगा, और उस पर अल्लाह का प्रकोप तथा धिक्कार है। और उस ने उस के लिये घोर यातना तैयार कर रखी है।

94. हे ईमान वालो! जब तुम अल्लाह की राह में (जिहाद के लिये) निकलो तो भली भाँति परख^[1] लो, और कोई तुम को सलाम^[2] करे तो यह न कहो कि तुम ईमान वाले नहीं हो। क्या तुम संसारिक जीवन का उपकरण चाहते हो? और अल्लाह के पास बहुत से परिहार (शत्रुधन) हैं। तुम भी पहले ऐसे^[3] ही थे, तो अल्लाह ने तुम

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا
وَعُذِّبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعْنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْفَىٰ إِلَيْكُمْ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا
تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَالِمُ
كَثِيرَةٌ لِّذَلِكَ كُنتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ
فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

1 अर्थात् यह कि वह शत्रु है या मित्र है।

2 सलाम करना मुसलमान होने का एक लक्षण है।

3 अर्थात् इस्लाम के शब्द के सिवा तुम्हारे पास इस्लाम का कोई चिन्ह नहीं था। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हु कहते हैं कि रात के समय एक व्यक्ति यात्रा कर रहा था। जब उस से कुछ मुसलमान मिले तो उस ने अस्सलामु अलैकुम कहा।

पर उपकार किया। अतः भली भाँति परख लिया करो, निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

95. ईमान वालों में जो अकारण अपने घरों में रह जाते हैं, और जो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, दोनों बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने उन को जो अपने धनों तथा प्राणों के द्वारा जिहाद करते हैं, उन पर जो घरों में रह जाते हैं, पद में प्रधानता दी है। और प्रत्येक को अल्लाह ने भलाई का वचन दिया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को उन पर जो घरों में बैठे रह जाने वाले हैं, बड़े प्रतिफल में भी प्रधानता दी है।

96. अल्लाह की ओर से कई (उच्च) श्रेणियाँ हैं तथा क्षमा और दया है। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

97. निःसंदेह वह लोग जिन के प्राण फरिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वह अपने ऊपर (कुफ़्र के देश में रह कर) अत्याचार करने वाले हों, तो उन से कहते हैं: तुम किस चीज़ में थे? वह कहते हैं कि हम धरती में विवश थे। तब फरिश्ते कहते हैं: क्या अल्लाह की धरती विस्तृत नहीं थी कि

لَا يَسْتَوِي الْقُعْدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرَ أُولِي الضَّرَرِ
وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى
الْقُعْدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ
اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقُعْدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

دَرَجَاتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ
اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي
أَنْفُسِهِمْ قَالَ الْوَاقِفِينَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا
مُسْتَضْعِفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ
أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَٰئِكَ
مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝

फिर भी एक मुसलमान ने उसे झूठा समझ कर मार दिया। इसी पर यह आयत उतरी। जब नबी सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम को इस का पता चला तो आप बहुत नाराज़ हुये। (इब्ने कसीर)

उस में हिज्रत कर^[1] जाते? तो इन्हीं का आवास नरक है। और वह क्या ही बुरा स्थान है!

98. परन्तु जो पुरुष और स्त्रियों तथा बच्चे ऐसे विवश हों कि कोई उपाय न रख सकें, और न (हिज्रत की) कोई राह पाते हों।

إِلَّا الْمُسْتَضْعِفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا
يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝

99. तो आशा है कि अल्लाह उन को क्षमा कर देगा। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञान्त क्षमाशील है।

فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ۝

100. तथा जो कोई अल्लाह की राह में हिज्रत करेगा तो वह धरती में बहुत से निवास स्थान तथा विस्तार पायेगा। और जो अपने घर से अल्लाह और उस के रसूल की ओर निकल गया, फिर उसे (राह में ही) मौत ने पकड़ लिया तो उस का प्रतिफल अल्लाह के पास निश्चित हो

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي
الْأَرْضِ مُرْعًى كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَنْ
يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ
ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى
اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1 जब सत्य के विरोधियों के अत्याचार से विवश हो कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने हिज्रत (प्रस्थान) कर गये, तो अरब में दो प्रकार के देश हो गये। मदीना दारुल हिज्रत (प्रवास गृह) था। जिस में मुसलमान हिज्रत कर के एकत्र हो गये। तथा दारुल हर्ब। अर्थात् वह क्षेत्र जो शत्रुओं के नियंत्रण में था। और जिस का केन्द्र मक्का था। यहाँ जो मुसलमान थे वह अपनी आस्था तथा धार्मिक कर्म से वंचित थे। उन्हें शत्रु का अत्याचार सहना पड़ता था। इस लिये उन्हें यह आदेश दिया गया था कि मदीने हिज्रत कर जायें। और यदि वह शक्ति रखते हुये हिज्रत नहीं करेंगे तो अपने इस आलस्य के लिए उत्तर दायी होंगे। इस के पश्चात् आगामी आयत में उन की चर्चा की जा रही है जो हिज्रत करने से विवश थे। मक्का से मदीना हिज्रत करने का यह आदेश मक्का की विजय सन् 8 हिज्री के पश्चात् निरस्त कर दिया गया। इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में कुछ मुसलमान काफिरों की संख्या बढ़ाने के लिये उन के साथ हो जाते थे। और तीर या तलवार लगने से मारे जाते थे, उन्हीं के बारे में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी, 4596)

गया। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

101. और जब तुम धरती में यात्रा करो तो नमाज़^[1] क़स्र (संक्षिप्त) करने में तुम पर कोई दोष नहीं, यदि तुम्हें डर हो कि काफ़िर तुम्हें सतायेंगे। वास्तव में काफ़िर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।

102. तथा (हे नबी!) जब आप (रणक्षेत्र में) उपस्थित हों, और उन के लिये नमाज़ की स्थापना करें तो उन का एक गिरोह आप के साथ खड़ा हो जाये, और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहे। और जब वह सजदा कर लें, तो तुम्हारे पीछे हो जायें, तथा दूसरा गिरोह आये जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है, और आप के साथ नमाज़ पढ़े। और अपने अस्त्र शस्त्र लिये रहें। काफ़िर चाहते हैं कि तुम अपने शस्त्रों से निश्चेत हो जाओ तो तुम पर यकायक धावा बोल दें। और तुम पर कोई दोष नहीं, यदि वर्षा के कारण तुम्हें दुख हो अथवा तुम रोगी रहो कि अपने शस्त्र^[2] उतार दो। तथा अपने बचाव का

وَإِذَا صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدَاوًا مُبِينًا ۝

وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقْبِتْ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَى لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا بِأَحْذَرِهِمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَذَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَاغِفُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْرِكُمْ فَيَسْبِغُونَ عَلَيْكُمْ قَبِيلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۝

- 1 क़स्र का अर्थ चार रकअत वाली नमाज़ को दो रकअत पढ़ना है। यह अनुमति प्रत्येक यात्रा के लिये है शत्रु का भय हो, या न हो।
- 2 इस का नाम (सलातुल खौफ़) अर्थात् भय के समय की नमाज़ है। जब रणक्षेत्र में प्रत्येक समय भय लगा रहे, तो उस की विधि यह है कि सेना के दो भाग कर लें। एक भाग को नमाज़ पढ़ायें, तथा दूसरा शत्रु के सम्मुख खड़ा रहे, फिर दूसरा आये और नमाज़ पढ़े। इस प्रकार प्रत्येक गिरोह की एक रकअत और इमाम की दो रकअत होंगी। हदीसों में इस की और भी विधियाँ आई हैं। और यह युद्ध की स्थितियों पर निर्भर है।

ध्यान रखो। निःसंदेह अल्लाह ने काफ़िरों के लिये अपमान कारी यातना तय्यार कर रखी है।

103. फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर लो, तो खड़े, बैठे, लेटे प्रत्येक स्थिति में अल्लाह का स्मरण करो। और जब तुम शान्त हो जाओ तो पूरी नमाज़ पढ़ो। निःसंदेह नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर अनिवार्य की गई है।

104. तथा तुम (शत्रु) जाति का पीछा करने में शिथिल न बनो, यदि तुम्हें दुःख पहुँचा है, तो तुम्हारे समान उन्हें भी दुःख पहुँचा है। तथा तुम अल्लाह से जो आशा^[1] रखते हो, वह आशा वह नहीं रखते। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

105. (हे नबी!) हम ने आप की ओर इस पुस्तक (क़ुर्आन) को सत्य के साथ उतारा है, ताकि आप लोगों के बीच उस के अनुसार निर्णय करें, जो अल्लाह ने आप को बताया है, और विश्वासघातियों के पक्षधर न^[2] बनें।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيَمًا
وَقَعُودًا أَوْ عَلَى جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأَنَّكُمْ
فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَوْقُوتًا ۝

وَلَا يَهْدِي إِلَى ابْتِعَاءِ الْقَوْمِ ذِي نَعْتٍ
كَالْمُؤْنِ فَإِنَّهُمْ يَكْمُنُ كَمَا كَالْمُؤْنُ
وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَا أَرْسَلَ اللَّهُ وَأَلَّا تَكُنَ لِلظَّالِمِينَ حَصِيمًا ۝

1 अर्थात प्रतिफल तथा सहायता और समर्थन की।

2 यहाँ से अर्थात आयत 105 से 113 तक, के विषय में भाष्यकारों ने लिखा है कि एक व्यक्ति ने एक अन्सारी की कवच (ज़िरह) चुरा ली। और जब देखा कि उस का भेद खुल जायेगा तो उस का आरोप एक यहूदी पर लगा दिया। और उस के कबीले के लोग भी उस के पक्षधर हो गये। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये, और कहा कि आप इसे निर्दोष घोषित कर दें। और उन की बातों के कारण समीप था कि आप उसे निर्दोष घोषित कर के यहूदी को अपराधी बना दें। कि आप को सावधान करने के लिये यह आयतें उतरी। (इब्ने जरीर) इन आयतों का साधारण भावार्थ यह है कि मुसलमान न्यायधीश को चाहिये कि किसी पक्ष

106. तथा अल्लाह से क्षमा याचना करते रहें, निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
107. और उन का पक्ष न लें, जो स्वयं अपने साथ विश्वासघात करते हों, निःसंदेह अल्लाह विश्वासघाती, पापी से प्रेम नहीं करता।^[1]
108. वह (अपने करतूत) लोगों से छुपा सकते हैं। तथा अल्लाह से नहीं छुपा सकते। और वह उन के साथ होता है, जब वह रात में उस बात का परामर्श करते हैं, जिस से वह प्रसन्न नहीं^[2] होता। तथा अल्लाह उसे घेरे हुये है जो वह कर रहे हैं।
109. सुनो! तुम्हीं वह हो कि संसारिक जीवन में उन की ओर से झगड़ लियो तो प्रलय के दिन उन की ओर से कौन अल्लाह से झगड़ेगा, और कौन उन का अभिभाषक (प्रतिनिधि) होगा?
110. जो व्यक्ति कोई कुकर्म करेगा, अथवा अपने ऊपर अत्याचार करेगा, और फिर अल्लाह से क्षमा याचना करेगा, तो वह उसे अति क्षमी दयावान् पाएगा।

وَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا

وَلَا تَجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَلُونَ أَنفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُمْ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَى مِنَ الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا

هَٰ أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَنْ يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا

का इस लिये पक्षपात न करे कि वह मुसलमान है। और दूसरा मुसलमान नहीं है, बल्कि उसे हर हाल में निष्पक्ष हो कर न्याय करना चाहिए।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि न्यायधीश को ऐसी बात नहीं करनी चाहिये, जिस में किसी का पक्षपात हो।
- 2 आयत का भावार्थ यह है कि मुसलमानों को अपना सहधर्मी अथवा अपनी जाति या परिवार का होने के कारण किसी अपराधी का पक्षपात नहीं करना चाहिये। क्योंकि संसार न जाने, परन्तु अल्लाह तो जानता है कि कौन अपराधी है, कौन नहीं।

111. और जो व्यक्ति कोई पाप करता है तो अपने ऊपर करता^[1] है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

112. और जो व्यक्ति कोई चूक अथवा पाप स्वयं करे, और फिर किसी निर्दोष पर उस का आरोप लगा दे तो उस ने मिथ्या दोषारोपण तथा खुले पाप का^[2] बोझ अपने ऊपर लाद लिया।

113. और (हे नबी!) यदि आप पर अल्लाह की दया तथा कृपा न होती तो उन के एक गिरोह ने संकल्प ले लिया था कि आप को कुपथ कर दें, और वह स्वयं को ही कुपथ कर^[3] रहे थे। तथा वह आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। क्योंकि अल्लाह ने आप पर पुस्तक (कुर्आन) तथा हिक्मत (सुन्नत) उतारी है। और आप को उस का ज्ञान दे दिया है जिसे आप नहीं जानते थे। तथा यह आप पर अल्लाह की बड़ी दया है।

114. उन के अधिकांश सरगोशी में कोई भलाई नहीं होती, परन्तु जो दान अथवा सदाचार या लोगों में सुधार कराने का आदेश दे। और जो कोई ऐसे कर्म अल्लाह की प्रसन्नता के

وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِثْمًا يَكْسِبُهُ عَلَى نَفْسِهِ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا
فَكَانَ مُحْتَضِلًا ۝

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ
طَائِفَةٌ مِنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا
أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَصُدُّونَكَ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْزَلَ اللَّهُ
عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ
كَانَ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِنْ نَجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ
بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ
فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

1 भावार्थ यह है कि जो अपराध करता है उस के अपराध का दुष्परिणाम उसी के ऊपर है। अतः तुम यह न सोचो कि अपराधी के अपने सहधर्मी अथवा संबंधी होने के कारण, उस का अपराध सिद्ध हो गया, तो हम पर भी धब्बा लग जायेगा।

2 अर्थात् स्वयं पाप कर के दूसरे पर आरोप लगाना दुहरा पाप है।

3 कि आप निर्दोष को अपराधी समझ लें।

लिये करेगा तो हम उसे बहुत भारी प्रतिफल प्रदान करेंगे।

115. तथा जो व्यक्ति अपने ऊपर मार्गदर्शन उजागर हो जाने के^[1] पश्चात् रसूल का विरोध करे, और ईमान वालों की राह के सिवा (दूसरी राह) का अनुसरण करे तो हम उसे वहीं फेर^[2] देंगे जिधर फिरा है। और उसे नरक में झोंक देंगे तथा वह बुरा निवास स्थान है।

116. निःसंदेह अल्लाह इसे क्षमा^[3] नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये, और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा। तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

117. वह (मिश्रणवादी) अल्लाह के सिवा देवियों को ही पुकारते हैं। और धिक्कारे हुये शैतान को पुकारते हैं।

118. अल्लाह ने जिसे धिक्कार दिया है। और उस (शैतान) ने कहा था कि मैं तेरे भक्तों से एक निश्चित भाग ले कर रहूँगा।

119. और उन्हें अवश्य बहकाऊँगा, तथा

وَمَنْ يُضَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِإِلَهِهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنثَاءً ۚ وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ۝

لَعَنَهُ اللَّهُ ۖ وَقَالَ لَا تَجِدَنِّي مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ۝

وَأُضِلَّهُمْ وَلَا مَنِيَّةَ لَهُمْ وَلَا مَرْتَبَهُمْ

- 1 ईमान वालों से अभिप्राय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा (साथी) हैं।
- 2 विद्वानों ने लिखा है कि यह आयत भी उसी मुनाफिक से संबंधित है। क्योंकि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस के विरुद्ध दण्ड का निर्णय कर दिया तो वह भाग कर मक्का के मिश्रणवादियों से मिल गया। (तफ्सीरे कुर्तुबी)। फिर भी इस आयत का आदेश साधारण है।
- 3 अर्थात् शिर्क (मिश्रणवाद) अक्षम्य पाप है।

कामनायें दिलाऊंगा, और आदेश दूंगा कि वह पशुओं के कान चीर दें तथा उन्हें आदेश दूंगा, तो वे अवश्य अल्लाह की संरचना में परिवर्तन^[1] कर देंगे। तथा जो शैतान को अल्लाह के सिवा सहायक बनायेगा तो वह खुली क्षति में पड़ गया।

120. वह उन को वचन देता, तथा कामनाओं में उलझाता है। और उन को जो वचन देता है वह धोखे के सिवा कुछ नहीं है।
121. उन्हीं का निवास स्थान नरक है। और वह उस से भागने की कोई राह नहीं पायेंगे।
122. तथा जो लोग ईमान लाये, और सत्कर्म किये, हम उन को ऐसे स्वर्गों में प्रवेश देंगे जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वे उस में सदावासी होंगे। यह अल्लाह का सत्य वचन है। और अल्लाह से अधिक सत्य कथन किस का हो सकता है?
123. (यह प्रतिफल) तुम्हारी कामनाओं तथा अहले किताब की कामनाओं पर निर्भर नहीं। जो कोई भी दुष्कर्म करेगा तो वह उस का कुफल पायेगा, तथा अल्लाह के सिवा अपना कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेगा।

فَلْيَعْبُدُونِي أَذِنَ الْأَنْعَامَ وَلَا مَعْرَفَهُمْ
فَلْيَعْبُدُوا خَلْقَ اللَّهِ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ
وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرًا مُبِينًا ۝

يَعْبُدُهُمْ وَلِمَنِائِهِمْ وَمَا يَعْبُدُهُمُ الشَّيْطَانُ
إِلَّا غُرُورًا ۝

أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُجِدُونَ عَنْهَا
مَخْرَجًا ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَمَنْ
أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ۝

لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ
مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزِيهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

1 इस के बहुत से अर्थ हो सकते हैं, जैसे गोदना, गुदवाना, स्त्री का पुरुष का आचरण और स्वभाव बनाना, इसी प्रकार पुरुष का स्त्री का आचरण, तथा रूप धारण करना आदि।

124. तथा जो सत्कर्म करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान भी¹ रखता होगा, तो वही लोग स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे, और तनिक भी अत्याचार नहीं किये जायेंगे।

125. तथा उस व्यक्ति से अच्छा किस का धर्म हो सकता है जिस ने स्वयं को अल्लाह के लिये झुका दिया, और वह एकेध्वरवादी भी हो। और एकेध्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण कर रहा हो? और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना विशुद्ध मित्र बना लिया।

126. तथा अल्लाह ही का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह प्रत्येक चीज़ को अपने नियंत्रण में लिये हुये है।

127. (हे नबी!) वह स्त्रियों के बारे में आप से धर्मादेश पूछ रहे हैं। आप कह दें कि अल्लाह उन के बारे में तुम्हें आदेश देता है, और वह आदेश भी है जो इस से पूर्व पुस्तक (कुर्आन) में तुम्हें उन अनाथ स्त्रियों के बारे में सुनाये गये हैं, जिन के निर्धारित अधिकार तुम नहीं देते,

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ
وَهُوَ مُؤْمِنٌ قَالُوا لَكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا
يُظْلَمُونَ نَبْرًا ۝

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ
وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا
وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ۝

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَانَ
اللَّهُ كُلَّ شَيْءٍ حَٰصِدًا ۝

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ
فِيهِنَّ وَمَا يُثَلِّ عَلَيْكُمْ فِي الْكُفْرِ فِي يُثَلِّمِ
النِّسَاءِ الَّتِي لَا تَرْتَوْنَ لَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ
وَتَرْغَبُونَ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ
مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا لِلنِّسَاءِ بِالْقِسْطِ
وَمَا تَعْلَمُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ۝

1 अर्थात् सत्कर्म का प्रतिफल सत्य आस्था और ईमान पर आधारित है कि अल्लाह तथा उस के सब नबियों पर ईमान लाया जाये। तथा हदीसों से विद्वित होता है कि एक बार मुसलमानों और अहले किताब के बीच विवाद हो गया। यहूदियों ने कहा कि हमारा धर्म सब से अच्छा है। मुक्ति केवल हमारे ही धर्म में है। मुसलमानों ने कहा: हमारा धर्म सब से अच्छा तथा अंतिम धर्म है। उसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने जरीर)

और उन से विवाह करने की रुचि रखते हो, तथा उन बच्चों के बारे में भी जो निर्बल हैं। तथा (यह भी आदेश देता है कि) अनाथों के लिये न्याय पर स्थित रहो^[1] तथा तुम जो भी भलाई करते हो अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।

128. और यदि किसी स्त्री को अपने पति से दुर्व्यवहार अथवा विमुख होने की शंका हो, तो उन दोनों पर कोई दोष नहीं कि आपस में कोई संधि कर लें, और संधि कर लेना ही अच्छा^[2] है। और लोभ तो सभी में होता है। और यदि तुम एक दूसरे के साथ उपकार करो और (अल्लाह से) डरते रहो तो निःसंदेह तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह उस से सूचित है।

129. और यदि तुम अपनी पत्नियों के बीच न्याय करना चाहो, तो भी ऐसा कदापि नहीं कर^[3] सकोगे। अतः एक ही की ओर पूर्णतः झुक^[4]

وَابْنِ امْرَأَةٍ خَاثِمَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ
إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا
صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنفُسُ
الشُّرَّ وَابْنِ خُسَيْنٍ وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
تَعْلَمُونَ خَيْرًا ۝

وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ
حَرَضْتُمْ فَلَا تَبِيلُوا كُلُّ النَّسْلِ فَمَدَّ رُؤُوسَهَا
كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ

1 इस्लाम से पहले यदि अनाथ स्त्री सुन्दर होती तो उस का संरक्षक यदि उस का विवाह उस से हो सकता हो, तो उस से विवाह कर लेता परन्तु उसे महर (विवाह उपहार) नहीं देता। और यदि सुन्दर न हो तो दूसरे से उसे विवाह नहीं करने देता था। ताकि उस का धन उसी के पास रह जाये। इसी प्रकार अनाथ बच्चों के साथ भी अत्याचार और अन्याय किया जाता था, जिन से रोकने के लिये यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

2 अर्थ यह है कि स्त्री, पुरुष की इच्छा और रुचि पर ध्यान दे। तो यह संधि की रीति अलगाव से अच्छी है।

3 क्यों कि यह स्वभाविक है कि मन का आकर्षण किसी एक की ओर होगा।

4 अर्थात् जिस में उसके पति की रुचि न हो, और न व्यवहारिक रूप से बिना

عَفْوًا رَاجِعًا ۝

न जाओ, और (शेष को) बीच में लटकी हुई न छोड़ दो। और यदि (अपने व्यवहार में) सुधार^[1] रखो और अल्लाह से डरते रहो तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

130. और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी दया से (दूसरे से) निश्चित^[2] कर देगा। और अल्लाह बड़ा उदार तत्वज्ञ है।

وَلَنْ يَتَعَفَّرَ فَإِنَّ اللَّهَ كُلَّامٍ سَعِيدٌ ۝
اللَّهُ وَاسِعٌ حَكِيمٌ ۝

131. तथा अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने तुम से पूर्व अहले किताब को तथा तुम को आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो। और यदि तुम कुफ़्र (अवैज्ञा) करोगे तो निस्संदेह जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह निस्पृह^[3] प्रशंसित है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنْ اتَّقُوا اللَّهَ فَإِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ عَنِ السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا ۝

132. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है। और अल्लाह काम बनाने के लिये बस है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

133. और वह चाहे तो, हे लोगो! तुम्हें ले जाये^[4] और तुम्हारे स्थान पर

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ

पति के हो।

1 अर्थात् सब के साथ व्यवहार तथा सहवास संबंध में बराबरी करो।

2 अर्थात् यदि निभाव न हो सके तो विवाह बंधन में रहना आवश्यक नहीं। दोनों अलग हों जायें, अल्लाह दोनों के लिये पति तथा पत्नी की व्यवस्था बना देगा।

3 अर्थात् उस की अवैज्ञा से तुम्हारा ही बिगड़ेगा।

4 अर्थात् तुम्हारी अवैज्ञा के कारण तुम्हें ध्वस्त कर दे। और दूसरे आज्ञाकारियों

दूसरों को ला दे। तथा अल्लाह ऐसा कर सकता है।

134. जो संसारिक प्रतिकार (बदला) चाहता हो तो अल्लाह के पास संसार तथा परलोक दोनों का प्रतिकार (बदला) है। तथा अल्लाह सब की बात सुनता और सब के कर्म देख रहा है।

135. हे ईमान वालो! न्याय के साथ खड़े रह कर अल्लाह के लिये साक्षी (गवाह) बन जाओ। यद्यपि साक्ष्य (गवाही) तुम्हारे अपने अथवा माता पिता और समीपवर्तियों के विरुद्ध हो, यदि कोई धनी अथवा निर्धन हो तो अल्लाह तुम से अधिक उन दोनों का हितैषी है। अतः अपनी मनोकामना के लिये न्याय से न फिरो। और यदि तुम बात घुमा फिरा कर करोगे, अथवा साक्ष्य देने से कतराओगे, तो निःसंदेह अल्लाह उस से सूचित है जो तुम करते हो।

136. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल, और उस पुस्तक (कुर्आन) पर जो उस ने अपने रसूल पर उतारी है, तथा उन पुस्तकों पर जो इस से पहले उतारी हैं, ईमान लाओ। और जो अल्लाह तथा उस के फरिश्तों, उस की पुस्तकों और अन्त दिवस (प्रलय) को अस्वीकार करेगा, तो वह कुपथ में बहुत दूर जा पड़ा।

137. निःसंदेह जो ईमान लाये, फिर
को पैदा कर दे।

يَا خَيْرِينَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى ذَلِكَ قَدِيرًا ۝

مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَنْ تَعْدِلُوا وَإِنْ تَلَوَّا أَوْ تَعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ

काफिर हो गये, फिर ईमान लाये,
फिर काफिर हो गये, फिर कुफ्र में
बढ़ते ही चले गये तो अल्लाह उन्हें
कदापि क्षमा नहीं करेगा और न
उन्हें सीधी डगर दिखायेगा।

138. (हे नबी!) आप मुनाफिकों
(द्विधावादियों) को शुभ सूचना सुना दें
कि उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

139. जो ईमान वालों को छोड़ कर,
काफिरों को अपना सहायक मित्र
बनाते हैं, क्या वह उन के पास मान
सम्मान चाहते हैं? तो निःसंदेह सब
मान सम्मान अल्लाह ही के लिये^[1] है।

140. और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए
अपनी पुस्तक (कुरआन) में यह
आदेश उतार^[2] दिया है कि जब
तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को
अस्वीकार किया जा रहा है, तथा
उन का उपहास किया जा रहा है,
तो उन के साथ न बैठो, यहाँ तक
कि वह दूसरी बात में लग जायें।
निःसंदेह तुम उस समय उन्हीं के
समान हो जाओगे। निश्चय अल्लाह
मुनाफिकों (द्विधावादियों) तथा
काफिरों सब को नरक में एकत्र
करने वाला है।

141. जो तुम्हारी प्रतीक्षा में रहा करते
हैं, यदि तुम्हें अल्लाह की सहायता से
विजय प्राप्त हो, तो कहते हैं: क्या

إِذَا دُؤِ الْكُفْرَ أَلَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ
سَبِيلًا

بَشِيرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّهُمْ عَدَاؤُ الْيَسَاءِ

وَالَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الْكُفْرَ مِنْ أَوْلِيَاءٍ مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ يَنْتَقِمُونَ عَنْهُمْ الْعِزَّةُ فَإِنَّ الْعِزَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ أَيْتَ
اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ
حَتَّى تَخْرُجُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذَا
مَثَلْتُمْ دَانَ اللَّهُ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ
وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا

وَالَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ تَحَرُّمٌ
اللَّهُ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ

1 अर्थात् अल्लाह के अधिकार में है, काफिरों के नहीं।

2 अर्थात् सूरह अन्आम आयत नम्बर 68 में।

हम तुम्हारे साथ न थे? और यदि उन (काफिरों) का पन्ना भारी रहे, तो कहते हैं कि क्या हम तुम पर छा नहीं गये थे, और तुम्हें ईमान वालों से बचा रहे थे? तो अल्लाह ही प्रलय के दिन तुम्हारे बीच निर्णय करेगा। और अल्लाह काफिरों के लिये ईमान वालों पर कदापि कोई राह नहीं बनायेगा।^[1]

142. वास्तव में मुनाफ़िक (द्विधावादी) अल्लाह को धोखा दे रहे हैं, जब कि: वही उन्हें धोखे में डाल रहा^[2] है, और जब वह नमाज़ के लिये खड़े होते हैं, तो आलसी होकर खड़े होते हैं, वह लोगों को दिखाते हैं, और अल्लाह का स्मरण थोड़ा ही करते हैं।

143. वह इस के बीच द्विधा में पड़े हुये है, न इधर न उधर। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो आप उस के लिये कोई राह नहीं पा सकेंगे।

144. हे ईमान वालो! ईमान वालों को

يَصِيبُ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحِذْكُمْ وَعَلَيْكُمْ وَنَمْنَعُكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ قَالُوا يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالَى يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا

مُتَدَبِّبِينَ بَيْنَ ذَلِكَ الْكَاذِبُ هُوَ لَا إِلَى هُوَ لَا إِلَى هُوَ لَا وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ يَهْدِيَهُ سَبِيلًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ

- 1 अर्थात् द्विधावादी काफिरों की कितनी ही सहायता करें, उन की ईमान वालों पर स्थायी विजय नहीं होगी। यहाँ से द्विधावादियों के आचरण और स्वभाव की चर्चा की जा रही है।

- 2 अर्थात् उन्हें अवसर दे रहा है, जिसे वह अपनी सफलता समझते हैं। आयत 139 से यहाँ तक मुनाफ़िकों के कर्म और आचरण से संबंधित जो बातें बताई गई हैं वह चार हैं:

1- वह मुसलमानों की सफलता पर विश्वास नहीं रखते।

2- मुसलमानों को सफलता मिले तो उनके साथ हो जाते हैं, और काफिरों को मिले तो उन के साथ।

3- नमाज़ मन से नहीं बल्कि केवल दिखाने के लिये पढ़ते हैं।

4- वह ईमान और कुफ़्र के बीच द्विधा में रहते हैं।

छोड़ कर काफ़िरों को सहायक मित्र न बनाओ। क्या तुम अपने विरुद्ध अल्लाह के लिये खुला तर्क बनाना चाहते हो?

145. निश्चय मुनाफ़िक (द्विधावादी) नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे। और आप उन का कोई सहायक नहीं पायेंगे।

146. परन्तु जिन्होंने ने क्षमा याचना कर ली, तथा अपना सुधार कर लिया, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़ लिया, तथा अपने धर्म को विशुद्ध कर लिया, तो वह लोग ईमान वालों के साथ होंगे। और अल्लाह ईमान वालों को बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा।

147. अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो, तथा ईमान रखो। और अल्लाह^[1] बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।

148. अल्लाह को अपशब्द (बुरी बात) की चर्चा नहीं भाती, परन्तु जिस पर अत्याचार किया गया^[2] हो। और अल्लाह सब सुनता और जानता है।

149. यदि तुम कोई भली बात खुल कर

أُولَئِكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَرِيتُمْ أَن تُجْعَلُوا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ۝

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللّٰهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولَئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللّٰهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۝

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَن ظَلَمَ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ۝

إِن تَبَدُّوا فَأَخْبِرُوا أَوْ عَفْوُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ

1 इस आयत में यह संकेत है कि अल्लाह, कुफल और सुफल मानव कर्म के परिणाम स्वरूप देता है। जो उसके निर्धारित किये हुये नियम का परिणाम होता है। जिस प्रकार संसार की प्रत्येक चीज़ का एक प्रभाव होता है, ऐसे ही मानव के प्रत्येक कर्म का भी एक प्रभाव होता है।

2 आयत में कहा गया है कि किसी व्यक्ति में कोई बुराई हो तो उस की चर्चा न करते फिरो। परन्तु उत्पीड़ित व्यक्ति अत्याचारी के अत्याचार की चर्चा कर सकता है।

اللَّهُ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ۝

करो अथवा उसे गुप्त करो या किसी बुराई को क्षमा कर दो, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी सर्व शक्तिशाली है।

150. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों के साथ कुफ्र (अविश्वास) करते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस के रसूलों के बीच अन्तर करें, तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं, तथा कुछ के साथ कुफ्र करते हैं, और इस के बीच राह^[1] बनाना चाहते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنُكْفِرُ بِبَعْضٍ وَهُمْ يُرِيدُونَ أَنْ يَخْلُقُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۝

151. वही शुद्ध काफिर हैं, और हम ने काफिरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

152. तथा जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाये, और उन में से किसी के बीच अंतर नहीं किया, तो उन्हीं को हम उन का प्रतिफल प्रदान करेंगे, तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُعْطِيهِمْ أَجْرُهُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

153. हे नबी! आप से अहले किताब माँग करते हैं कि आप उन पर आकाश से कोई पुस्तक उतार दें, तो इन्होंने मसा से इस से भी बड़ी माँग की थी। उन्होंने ने कहा कि हमें अल्लाह को प्रत्यक्ष^[2] दिखा दो, तो इन के

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُخِزَلَ عَلَيْهِمْ كِتَابٌ مِنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىَٰ أَكْبَرًا مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا أَرَأَيْتَ إِنْ جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنَ السَّمَاءِ فَفُتِنُوا بِهِ خَطِئْتُمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْحُجُلَ مِنَ بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ ثُمَّ الْبَيْتُكَ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ وَإِنَّا مُوسَىٰ

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस है कि सब नबी भाई हैं उन के बाप एक और मायें अलग-अलग हैं। सब का धर्म एक है, और हमारे बीच कोई नबी नहीं है। (सहीह बुखारी - 3443)

2 अर्थात् आँखों से दिखा दो।

سُلْطَانًا مُّبِينًا ۝

अत्याचारों के कारण इन्हें बिजली ने धर लिया, फिर इन्होंने खुली निशानियाँ आने के पश्चात् बछड़े को पूज्य बना लिया, फिर हम ने इसे भी क्षमा कर दिया, और हम ने मूसा को खुला प्रभुत्व प्रदान किया।

154. और हम ने (उन से वचन लेने के लिये) उन के ऊपर तूर (पर्वत) उठा दिया, तथा हम ने उन से कहा: द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, तथा हम ने उन से कहा कि शनिवार^[1] के विषय में अति न करो। और हम ने उन से दृढ़ वचन लिया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بَيْنَنَا وَهُمْ وَكُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا أَوْ كَلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝

155. तो उन के अपना वचन भंग करने, तथा उन के अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र करने, और उन के नबियों को अवैध बध करने, तथा उन के यह कहने के कारण कि हमारे दिल बंद हैं। (ऐसी बात नहीं है) बल्कि अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है। अतः इन में से थोड़े ही ईमान लायेंगे।

فِيمَا نَقُصُّهُمْ بَيْنًا قَهُمْ وَكُفِّرْهُمْ بَابِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الرِّبَا وَبَغْيِهِمْ وَكُفْرِهِمْ قُلُوبَنَا غَلَّتْ بَلْ طَمِعَ اللَّهُ عَلَيْهَا يَكْفُرْهُمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

156. तथा उन के कुफ़्र और मर्यम पर घोर आरोप लगाने के कारण।

وَكُفِّرْهُمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ نَهَمًا عَظِيمًا ۝

157. तथा उन के (गर्व से) कहने के कारण कि हम ने अल्लाह के रसूल, मर्यम के पुत्र: ईसा मसीह को बध कर दिया, जब कि (वास्तव में) उसे बध नहीं किया। और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उन के

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظُّلُمِ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝

1 देखिये: सूरह बकरह आयत- 65।

लिये (इसे) संदिग्ध कर दिया गया। और निःसंदेह जिन लोगों ने इस में विभेद किया वह भी शंका में पड़े हुये हैं। और उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं, केवल अनुमान के पीछे पड़े हुये हैं। और निश्चय उसे उन्होंने बध नहीं किया है।

158. बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी ओर (आकाश) में उठा लिया है, तथा अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

159. और सभी अहले किताब उस (ईसा) के मरण से पहले उस पर अवश्य ईमान^[1] लायेंगे, और प्रलय के दिन वह उन के विरुद्ध साक्षी^[2] होगा।

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِمْ
وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝

160. यहूदियों के (इन्हीं) अत्याचार के कारण हम ने उन पर स्वच्छ खाद्य पदार्थों को हराम (वर्जित) कर दिया जो उन के लिये हलाल (वैध) थे। तथा उन के बहुधा अल्लाह की राह से रोकने के कारण।

مِمَّا ظَلَمُوا مِنَ الَّذِينَ هَذَا حَرَمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتِ
أُجَلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝

161. तथा उन के व्याज लेने के कारण जब कि उन्हें उस से रोका गया था, और उन के लोगों का धन अवैध रूप से खाने के कारण, तथा

وَأَخَذُوا مِنَ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلَمَهُمْ آمَالًا
الْبَاسُ بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के समीप ईसा अलैहिस्सलाम के आकाश से उतरने पर उस समय के सभी अहले किताब उन पर ईमान लायेंगे, और वह उस समय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायी होंगे। सलीब तोड़ देंगे, और सूअरों को मार डालेंगे, तथा इस्लाम के नियमानुसार निर्णय और शासन करेंगे। (सहीह बुखारी- 2222, 3449, मुस्लिम- 155, 156)

2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम प्रलय के दिन ईसाइयों के बारे में साक्षी होंगे। (देखिये: सूरह माइदा, आयत 117)

हम ने उन में से काफ़िरों के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

162. परन्तु जो उन में से ज्ञान में पक्के हैं, तथा वह ईमान वाले जो आप की ओर उतारी गयी (पुस्तक कुर्आन) तथा आप से पूर्व उतारी गयी (पुस्तक) पर ईमान रखते हैं, और जो नमाज़ की स्थापना करने वाले, तथा ज़कात देने वाले, और अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान रखने वाले हैं, उन्हीं को हम बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेंगे।

163. (हे नबी!) हम ने आप की ओर वैसे ही बह्नी भेजी है, जैसे नूह और उस के पश्चात् के नबियों के पास भेजी, और इब्राहीम तथा इस्माईल और इस्हाक तथा याकूब और उस की संतान, तथा ईसा और अय्यूब, तथा यूनस और हारून तथा सुलैमान के पास बह्नी भेजी, और हम ने दावूद को ज़बूर प्रदान ^[1] की थी।

164. कुछ रसूल तो ऐसे हैं जिन की चर्चा हम इस से पहले आप से कर चुके हैं। और कुछ की चर्चा आप से नहीं की है, और अल्लाह ने मूसा से वास्तव में बात की।

لَكِنَّ الرّٰسِخِيْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ اُولٰٓئِكَ سَنُعْطِيْهِمْ اَنْجَرَ عَظِيْمًا ۝

اِنَّا اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ كَمَا اَوْحَيْنَا اِلٰى نُوْحٍ وَالْيَسٰقِيْنَ مِنْ بَعْدِهٖ ۝ وَاَوْحَيْنَا اِلٰى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ وَعِيسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسَلٰمٰنَ وَاٰتَيْنَا دَاوُدَ ذُرْوٰرًا ۝

وَرَسٰلًا قَدْ تَصَدَّقْنَا عَنْكَ مِنْ قَبْلُ وَرَسٰلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَخِيْمًا ۝

1 बह्नी का अर्थ: संकेत करना, दिल में कोई बात डाल देना, गुप्त रूप से कोई बात कहना तथा संदेश भेजना है। हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रश्न किया: अल्लाह के रसूल आप पर बह्नी कैसे आती है? आप ने कहा: कभी निरन्तर घंटी की ध्वनि जैसे आती है जो मेरे लिये बहुत भारी होती है। और यह दशा दूर होने पर मुझे सब बात याद रहती है। और कभी फ़रिश्ता मनुष्य के रूप में आकर मुझ से बात करता है तो मैं उसे याद कर लेता हूँ। (सहीह बुखारी - 2, मुस्लिम- 2333)

165. यह सभी रसूल शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन रसूलों के (आगमन के) पश्चात् लोगों के लिये अल्लाह पर कोई तर्क न रह^[1] जाये। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

166. (हे नबी!) (आप को यहूदी आदि नबी न मानें) परन्तु अल्लाह उस (कुर्आन) के द्वारा जिसे आप पर उतारा है, साक्ष्य (गवाही) देता है कि (आप नबी हैं)। उस ने इसे अपने ज्ञान के साथ उतारा है, तथा फरिश्ते साक्ष्य देते हैं, और अल्लाह का साक्ष्य ही बहुत है।

167. वास्तव में जिन्होंने ने कुफ़ किया और अल्लाह की राह^[2] से रोका वह सुपथ से बहुत दूर जा पड़े।

168. निःसंदेह जो काफ़िर हो गये, और अत्याचार करते रह गये, तो अल्लाह ऐसा नहीं है कि उन्हें क्षमा कर दे, तथा न उन्हें कोई राह दिखायेगा।

169. परन्तु नरक की राह, जिस में वह सदावासी होंगे, और यह अल्लाह के लिये सरल है।

170. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से रसूल सत्य

رُسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا
حَكِيمًا ۝

لَكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ
وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْطَادُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيُغْفِرَ
لَهُمْ وَلَا لِيُعَذِّبَهُمْ عَذَابًا ۝

إِلَّا ظَرِيقٌ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الرُّسُلُ بِالْحَقِّ مِنْ

1 अर्थात् कोई अल्लाह के सामने यह न कह सके कि हमें मार्गदर्शन देने के लिये कोई नहीं आया।

2 अर्थात् इस्लाम से रोका।

ले कर⁽¹⁾ आ गये हैं। अतः उन पर ईमान लाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, तथा यदि कुफ़्र करोगे, तो अल्लाह ही का है, जो आकाशों तथा धरती में है, और अल्लाह बड़ा ज्ञानी गुणी है।

171. हे अहले किताब (ईसाइयो!) अपने धर्म में अधिकता न⁽²⁾ करो, और अल्लाह पर केवल सत्य ही बोलो। मसीह मर्यम का पुत्र केवल अल्लाह का रसूल और उस का शब्द है, जिसे मर्यम की ओर डाल दिया, तथा उस की ओर से एक आत्मा⁽³⁾ है, अतः अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और यह न कहो कि (अल्लाह) तीन हैं, इस से रुक जाओ, यही तुम्हारे लिये अच्छा है, इस के सिवा कुछ नहीं कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है, वह इस से पवित्र है कि उस का कोई पुत्र हो,

رَبِّكُمْ فَأَمِنُوا خَيْرَ الْكُفْرِ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلَّمَتْهُ الْفُجَاهُ إِلَى مَرْيَمَ وَرَدَّهُ مِنْهُ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ إِنَّهُ هُوَ أَحَدٌ خَيْرَ الْكُفْرِ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ وَاحِدٌ سُبْحَنَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

- 1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लाम धर्म लेकर आ गये। यहाँ पर यह बात विचारणीय है कि कूर्आन ने किसी जाति अथवा देशवासी को संबोधित नहीं किया है। वह कहता है कि आप पूरे मानव विश्व के नबी हैं। तथा इस्लाम और कूर्आन पूरे मानव विश्व के लिये सत्धर्म है जो उस अल्लाह का भेजा हुआ सत्धर्म है जिस की आज्ञा के आधीन यह पूरा विश्व है। अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ।
- 2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को रसूल से पूज्य न बनाओ, और यह न कहो कि वह अल्लाह का पुत्र है, और अल्लाह तीन हैं: पिता और पुत्र तथा पवित्रात्मा।
- 3 अर्थात् ईसा अल्लाह का एक भक्त है, जिसे अपने शब्द (कुन्) अर्थात् "हो जा" से उत्पन्न किया है। इस शब्द के साथ उस ने फरिश्ते जिबरील को मर्यम के पास भेजा, और उस ने उस में अल्लाह की अनुमति से यह शब्द फूँक दिया, और ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये। (इब्ने कसीर)

आकाशों तथा धरती में जो कुछ है उसी का है, और अल्लाह काम बनाने के^[1] लिये बहुत है।

172. मसीह कदापि अल्लाह का दास होने को अपमान नहीं समझता, और न (अल्लाह के) समीपवर्ती फ़रिश्ते, तथा जो व्यक्ति उस की (बंदना को) अपमान समझेगा, तथा अभिमान करेगा, तो उन सभी को वह अपने पास एकत्र करेगा।

173. फिर जो लोग ईमान लाये, तथा सत्यकर्म किये, तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल देगा, और उन्हें अपनी दया से अधिक भी देगा।^[2] परन्तु जिन्होंने (बंदना को) अपमान समझा, और अभिमान किया, तो उन्हें दुःखदायी यातना देगा। तथा अल्लाह के सिवा वह कोई रक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

174. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण^[3] आ गया है। और हम ने तुम्हारी ओर खुली बह्नी^[4] उतार दी है।

175. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये, तथा इस (क़ुर्आन को) दृढ़ता से

لَنْ يَسْتَكْبِفَ السَّيِّئُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَكْبِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَمُوَافِقُهُمْ أَجُورُهُمْ وَزَيْدٌ لَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَكْبَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ

1 अर्थात् उसे क्या आवश्यकता है कि किसी को संसार में अपना पुत्र बना कर भेजे।

2 यहाँ (अधिक) से अभिप्राय: स्वर्ग में अल्लाह का दर्शन है। (सहीह मुस्लिम: 181 त्रिमिजी: 2552)

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

4 अर्थात् क़ुर्आन शरीफ़। (इब्ने जरीर)

पकड़ लिया वह उन्हीं को अपनी दया तथा अनुग्रह से (स्वर्ग) में प्रवेश देगा। और उन्हें अपनी ओर सीधी राह दिखा देगा।

176. (हे नबी!) वह आप से कलाला के विषय में आदेश चाहते हैं। तो आप कह दें कि वह कलाला के विषय में तुम्हें आदेश दे रहा है कि यदि कोई ऐसा पुरुष मर जाये जिस के संतान न हो, (और न पिता और दादा) और उस के एक बहन हो, तो उस के लिये उस के छोड़े हुये धन का आधा है। और वह (पुरुष) उस के पूरे (धन का) वारिस होगा यदि उस (बहन) के कोई संतान न हो, (और न पिता और दादा हो)। और यदि उस की दो बहनें हों (अथवा अधिक) तो उन्हें छोड़े हुये धन का दो तिहाई मिलेगा। और यदि भाई बहन दोनों हों तो नर (भाई) को दो नारियों (बहनों) के बराबर^[1] भाग मिलेगा। अल्लाह तुम्हारे लिये (आदेश) उजागर कर रहा है ताकि तुम कुपथ न हो जाओ, तथा अल्लाह सब कुछ जानता है।

فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ
وَيَهْدِيَهُمْ لِيُصْرَافَ عَلَيْهَا مُسْتَقِيمًا ۝

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَامَةِ إِنِ
أَمَرُوا هَكَذَا أَوْ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا
نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ
فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الشُّكْلَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِنْ
كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ
الْأُنثَىٰ إِنَّ إِلَهًا لَّهُمْ لَكُمَ أَنْ تَصْلُوا ۝ وَاللَّهُ يُخَيِّرُ
شَيْءٌ عَلَيْهِمْ ۝

1 कलाला की मीरास का नियम आयत नं० 12 में आ चुका। जो उस के तीन प्रकार में से एक के लिये था। अब यहाँ शेष दो प्रकारों का आदेश बताया जा रहा है। अर्थात् यदि कलाला के सगे भाई बहन हों अथवा अल्लाती (जो एक पिता तथा कई माता से हों) तो उन के लिये यह आदेश है।

सूरह माइदा - 5

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

सूरह माइदा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 120 आयतें हैं

- इस सूरह में शरीअत (धर्म विधान) के पूरे होने की घोषणा के साथ इस के आदेशों तथा नियमों के पालन और धार्मिक नियमों को लागू करने पर बल दिया गया है। यह चूँकि धार्मिक विधान के पूरे होने का समय था इस लिये व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन से संबंधित धार्मिक आदेशों को बताने के साथ मुसलमानों को अल्लाह की प्रतिज्ञा पर अस्थित रहने पर बल दिया गया है। और इस संदर्भ में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि वह यहूदियों तथा ईसाईयों की नीति न अपनायें जिन्होंने वचन भंग कर दिया और धर्म विधान को नाश कर दिया और उस की सीमा से निकल भागे और धर्म में नई-नई बातें पैदा कर लीं। चूँकि कुर्आन की शैली मार्ग दर्शन तथा प्रशिक्षण की है इस लिये इन सभी बातों को मिला जुला कर वर्णित किया गया है ताकि मनो में धार्मिक नियमों के पालन की भावना पैदा हो जाये। इस में यहूदियों तथा ईसाईयों को अन्तिम सीमा तक झंझोड़ा गया है और मुसलमानों का मार्ग उजागर किया गया है।
- इस में प्रतिबंधों तथा अल्लाह से किये वचन के पालन और न्याय की नीति अपनाने पर बल दिया गया है।
- इस में धर्म के वह आदेश बताये गये हैं जो वैध तथा अवैध से संबंधित हैं।
- इस में प्रलय के दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के गवाही देने की बात कही गई है। और ईसा (अलैहिस्सलाम) का उदाहरण दिया गया है।
- इस में यहूदियों तथा ईसाईयों आदि को अरबी नबी पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

1. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो!
प्रतिबंधों का पूर्ण रूप^[1] से पालन
करो, तुम्हारे लिये सब पशु हलाल
(वैध) कर दिये गये, परन्तु जिन का
आदेश तुम्हें सुनाया जायेगा, सिवाये
इस के कि तुम एहराम^[2] की स्थिति
में अपने लिये शिकार को हलाल
(वैध) न कर लो, वैशक अल्लाह जो
आदेश चाहता है, देता है।
2. हे ईमान वालो! अल्लाह की
निशानियों^[3] (चिन्हों) का अनादर
न करो, और न सम्मानित मासों^[4]
का, और न (हज्ज की) कुर्बानी का,
न उन में से जिन के गले में पट्टे
पड़े हों, और न उन का जो अपने
पालनहार की अनुग्रह और उस की
प्रसन्नता की खोज में सम्मानित घर
(काबा) की ओर जा रहे हों, और
जब एहराम खोल दो, तो शिकार
कर सकते हो, तथा तुम्हें किसी
गिरोह की शत्रुता इस बात पर न
उभार दे कि अत्याचार करने लगो,
क्यों कि उन्होंने ने मस्जिदे-हराम से
तुम्हें रोक दिया था, सदाचार तथा
संयम में एक दूसरे की सहायता

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَتُؤَاوِلُ الْعُقُودَ الَّتِي أَحَلَّتْ
لَكُمْ بَيْنَكُمْ الْإِنْفَاعَ الْأَمَانَةَ عَلَيْكُمْ غَيْرَ حِلٍّ
الضَّيِّدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا
الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آيَاتِ
الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَرِضْوَانًا
وَلَا أَحَلَّ اللَّهُ فَاَصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمُكُمْ شَتَانُ قَوْمٍ
أَنْ صَدَّوْهُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا
وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى
الْإِلْهِمِ وَالْعُدُوِّ إِنَّ اللَّهَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ②

1 यह प्रतिबंध धार्मिक आदेशों से संबंधित हों अथवा आपस के हों।

2 अर्थात् जब हज्ज अथवा उमरे का एहराम बाँधे रहो।

3 अल्लाह की बंदना के लिये निर्धारित चिन्हों का।

4 अर्थात् जुलकादा, जुलहिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के मासों में युद्ध न करो।

करो, तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो। और अल्लाह से डरते रहो। निस्संदेह अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

3. तुम पर मुर्दार^[1] हराम (अवैध) कर दिया गया है, तथा (बहता हुआ) रक्त और सुअर का मांस, तथा जिस पर अल्लाह से अन्य का नाम पुकारा गया हो, तथा जो श्वास रोध और आघात के कारण, तथा गिर कर और दूसरे के सींग मारने से मरा हो, तथा जिसे हिंसक पशु ने खा लिया हो, परन्तु इन में^[2] से जिसे तुम बध (ज़िब्ह) कर लो, और जिसे धान पर बध किया गया हो, और यह कि पांसे द्वारा अपना भाग्य निकालो, यह सब आदेश उल्लंघन के कार्य हैं। आज काफिर तुम्हारे धर्म से निराश^[3] हो गये हैं। अतः उन से न डरो, मुझी से डरो। आज^[4] मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है। तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَحُمُ الْحَيْزِ وَمَا
أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ
وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيغَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا
مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذَرَعَ عَلَى النَّصَبِ وَأَنْ تَتَقَبَّلُوا
بِالْأَذْكَرِ ذَلِكَ لَكُمْ فِتْنَةٌ الْيَوْمَ بَيْنَ الْكَافِرِ وَالْكَافِرِ
مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَحْشَوْهُمْ وَاخْتَوَى الْيَوْمَ الْكَافِرُ
لَكُمْ دِينَكُمْ وَالْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نَعْمَى وَرَفِيتُ لَكُمْ
الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنْ اضْطَرَّ فِي مَخْصَصَةٍ غَيْرِ
مَخْصَصٍ لِإِسْلَامِهِ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

- 1 मुर्दार से अभिप्राय वह पशु है, जिसे धर्म के नियमानुसार बध (ज़िब्ह) न किया गया हो
- 2 अर्थात् जीवित मिल जाये और उसे नियमानुसार बध (ज़िब्ह) कर दो।
- 3 अर्थात् इस से कि तुम फिर से मूर्तियों के पुजारी हो जाओगे।
- 4 सूरह बकरह आयत नं० 28 में कहा गया कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने यह प्रार्थना की थी कि "इन में से एक आज्ञाकारी समुदाय बना दे"। फिर आयत 150 में अल्लाह ने कहा कि "अल्लाह चाहता है कि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे"। और यहाँ कहा कि आज अपना पुरस्कार पूरा कर दिया। यह आयत हज्जतुल वदाअ में अरफा के दिन अरफात में उतरी। (सहीह बुखारी-4606) जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अंतिम हज्ज था, जिस के लगभग तीन महीने बाद आप संसार से चले गये।

कर दिया, और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया। फिर जो भूक से आतुर हो जाये जब कि उस का झुकाव पाप के लिये न हो, (प्राण रक्षा के लिये खा ले) तो निश्चय अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

4. वे आप से प्रश्न करते हैं कि उन के लिये क्या हलाल (वैध) किया गया? आप कह दें कि सभी स्वच्छ पवित्र चीजें तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दी गयी हैं। और उन शिकारी जानवरों का शिकार जिन को तुम ने उस ज्ञान द्वारा जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, उस में से कुछ सिखा कर सधाय़ा हो। तो जो, (शिकार) वह तुम पर रोक दें उस में से खाओ, और उस पर अल्लाह का नाम^[1] लो। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

5. आज सब स्वच्छ खाद्य तुम्हारे लिये हलाल (वैध) कर दिये गये हैं। और ईमान वाली सतबंती स्त्रियाँ, तथा उन में से सतबंती स्त्रियाँ जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं। जब कि उन को उन का महर (विवाह

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا حَلَلْ لَهُمْ قُلْ حَلَلْتُ لَكُمْ الْطَيِّبَاتِ وَمَا عَلَيْكُمْ مِنْ أَجْوَارٍ مَنِعِلَيْنَ تَعْلَمُونَ لَهُنَّ وَمَنْعَكُمْ اللَّهُ فَكُلُوا مِنْهُمَا مَسْكَنَ عَلَيْكُمْ وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

الْيَوْمَ حَلَلْتُ لَكُمْ الْطَيِّبَاتِ وَطَعَامَ الْبَهِيمِ أَوْتُوا الْكِتَابَ حِلًّا لَكُمْ وَطَعَامُ الْبَهِيمِ لَكُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا اتَّيَسَّرَ لَكُمْ مِنْ أَجْوَارٍ مُخَصَّيْنَ غَيْرَ مُسْفِحِينَ وَلَا مَسْجِدِي أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرْ

1 अर्थात् सधाय़े हुये कुत्ते और बाज़-शिकरे आदि का शिकार, उस के शिकार के उचित होने के लिये निम्नलिखित दो बातें आवश्यक हैं:

1. उसे बिस्मिल्लाह कह कर छोड़ा गया हो। इसी प्रकार शिकार जीवित हो तो बिस्मिल्लाह कर के वध किया जाये।
2. उस ने शिकार में से कुछ खाया न हो। (बुखारी: 5478, मु० 1930)

उपहार) चुका दिया हो, विवाह में लाने के लिये, व्याभिचार के लिये नहीं, और न प्रेमिका बनाने के लिये। और जो ईमान को नकार देगा, उस का सत्कर्म व्यर्थ हो जायेगा, तथा परलोक में वह विनाशों में होगा।

6. हे ईमान वालो! जब नमाज़ के लिये खड़े हो तो (पहले) अपने मुँह तथा हाथों को कुहनियों तक धो लो, और अपने सिरों का मसह^[1] कर लो, तथा अपने पावों टखनों तक (धो लो) और यदि जनाबत^[2] की स्थिति में हो तो (स्नान कर के) पवित्र हो जाओ। तथा यदि रोगी अथवा यात्रा में हो अथवा तुम में से कोई शौच से आये, अथवा तुम ने स्त्रियों को स्पर्श किया हो और तुम जल न पाओ तो शुद्ध धूल से तयम्मूम कर लो, और उस से अपने मुखों तथा हाथों का मसह^[3] कर लो। अल्लाह तुम्हारे लिये कोई संकीर्णता (तंगी) नहीं चाहता। परन्तु तुम्हें पवित्र करना चाहता है, और ताकि तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दे, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

7. तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ
فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۚ وَإِنْ
كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ
أَوْ لَسْتُمْ بِالنِّسَاءِ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا
صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ
مِنْهُ ۚ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ
وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ كُؤُوبَكُمْ وَيُعِمَّنِي
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّتِي

- 1 मसह का अर्थ है, दोनों हाथ भिगो कर सिर पर फेरना।
- 2 जनाबत से अभिप्राय वह मलिनता है जो स्वप्न दोष तथा स्त्री संभोग से होती है। यही आदेश मासिक धर्म तथा प्रसव का भी है।
- 3 हदीस में है कि एक यात्रा में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का हार खी गया, जिस के लिये बैदा के स्थान पर रुकना पड़ा। भोर की नमाज़ के वुजू के लिये पानी नहीं मिल सका और यह आयत उतरी। (देखिये: सहीह बुखारी- 4607) मसह का अर्थ हाथ फेरना है। तयम्मूम के लिये देखिये सूरह निसा, आयत 43)।

और उस दृढ़ वचन को याद करो जो तुम से लिया है। जब तुम ने कहा: हम ने सुन लिया और आज्ञाकारी हो गये। तथा अल्लाह से डरते रहो। निःसंदेह अल्लाह दिलों के भेदों को भली भाँति जानने वाला है।

8. हे ईमान वाले! अल्लाह के लिये खड़े रहने वाले, न्याय के साथ साक्ष्य देने वाले रहो, तथा किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस पर न उभार दे कि न्याय न करो। वह (अर्थात: सब के साथ न्याय) अल्लाह से डरने के अधिक समीप^[1] है। निःसंदेह तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से भली भाँति सूचित है।

9. जो लोग ईमान लाये, तथा सत्कर्म किये तो उन से अल्लाह का वचन है कि उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

10. तथा जो काफिर रहे, और हमारी आयतों को मिथ्या कहा, तो वही लोग नारकी हैं।

11. हे ईमान वाले! उस समय को याद करो जब एक गिरोह ने तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाना^[2] चाहा, तो अल्लाह ने

وَأَتَقَكُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ
شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَا
نُ قَوْمٍ عَلَى أَنْ تَتَّعِدُوا إِعْدَالُوا هُوَ أَقْرَبُ
لِلتَّقْوَى وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا
تَعْمَلُونَ ②

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ③

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْحَرِيقِ ④

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ذُكِّرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَنْسُطُوا إِلَيْكُمْ

1 हदीस में वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो न्याय करते हैं वह अल्लाह के पास नूर (प्रकाश) के मंच पर उस के दायें ओर रहेंगे, - और उस के दोनों हाथ दायें हैं- जो अपने आदेश तथा अपने परिजनो और जो उन के अधिकार में हो, में न्याय करते हैं। (सहीह मुस्लिम - 1827)

2 अर्थात तुम पर आक्रमण करने का निश्चय किया तो अल्लाह ने उन के आक्रमण से तुम्हारी रक्षा की। इस आयत से सम्बन्धित बुखारी में सहीह हदीस आती है कि

उन के हाथों को तुम से रोक दिया,
तथा अल्लाह से डरते रहो, और
ईमान वालों को अल्लाह ही पर निर्भर
करना चाहिये।

12. तथा अल्लाह ने बनी इस्राईल से
(भी) दृढ़ वचन लिया था, और उन
में बारह प्रमुख नियुक्त कर दिये थे,
तथा अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे
साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ की स्थापना
करते, और ज़कात देते रहे, तथा मेरे
रसूलों पर ईमान (विश्वास) रखते,
और उन को समर्थन देते रहे, तथा
अल्लाह को उत्तम ऋण देते रहे, तो
मैं अवश्य तुम को तुम्हारे पाप क्षमा
कर दूँगा, और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में
प्रवेश दूँगा जिन में नहरें प्रवाहित
होंगी। और तुम में से जो इस के
पश्चात् भी कुफ़्र (अविश्वास) करेगा
वह सुपथ^[1] से विचलित हो गया।

13. तो उन के अपना वचन भंग करने के
कारण, हम ने उन को धिक्कार दिया,
और उन के दिलों को कड़ा कर
दिया, वह अल्लाह की बातों को उन

أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا
اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٥﴾

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ
إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ
الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَرْتُمْ أَوْسَارَكُمْ
وَاقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿٥﴾

فَبِمَا نَقَضْتُمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا
قُلُوبَهُمْ قَسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ
مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ

एक युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एकान्त में एक पेड़ के नीचे विश्राम
कर रहे थे कि एक व्यक्ति आया और आप की तलवार खींच कर कहा तुम को
अब मुझ से कौन बचायेगा? आप ने कहा: अल्लाह! यह सुनते ही तलवार उस के
हाथ से गिर गई। और आप ने उसे क्षमा कर दिया। (सहीह बुखारी- 4139)

- 1 अल्लाह को ऋण देने का अर्थ उस के लिये दान करना है। इस आयत में ईमान
वालों को सावधान किया गया है कि तुम अहले किताब: यहूद और नसारा जैसे
न हो जाना जो अल्लाह के वचन को भंग कर के उस की धिक्कार के अधिकारी
बन गये। (इब्ने कसीर)

के वास्तविक स्थानों से फेर देते^[1] है, तथा जिस बात का उन को निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, और (अब) आप बराबर उन के किसी न किसी विश्वासघात से सूचित होते रहेंगे, परन्तु उन में बहुत थोड़े के सिवा जो ऐसा नहीं करते, अतः आप उन्हें क्षमा कर दें, और उन को जाने दें, निस्संदेह अल्लाह उपकारियों से प्रेम करता है।

وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ⑥

14. तथा जिन्होंने ने कहा कि हम नसारा (ईसाई) हैं, हम ने उन से (भी) दृढ़ वचन लिया था, तो उन्हें जिस बात का निर्देश दिया गया था, उसे भुला दिया, तो प्रलय के दिन तक के लिये हम ने उन के बीच शत्रुता तथा पारस्परिक (आपसी) विद्वेष भड़का दिया, और शीघ्र ही अल्लाह जो कुछ वह करते रहे हैं, उन्हें^[2] बता देगा।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ⑥

- 1 सही हदीस में आया है कि कुछ यहूदी, रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक नर और नारी को लाये जिन्होंने ने व्यभिचार किया था, आप ने कहा: तुम तौरात में क्या पाते हो? उन्होंने ने कहा: उन का अपमान करें और कोड़े मारें। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: तुम झुठे हो। बल्कि उस में (रज्म) करने का आदेश है। तौरात लाओ। वह तौरात लाये तो एक ने रज्म की आयत पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे पढ़ दिया। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा: हाथ उठाओ। उस ने हाथ उठाया तो उस में रज्म की आयत थी। (सहीह बुखारी - 3559, सहीह मुस्लिम - 1699)
- 2 आयत का अर्थ यह है कि जब ईसाइयों ने वचन भंग कर दिया तो उन में कई परस्पर विरोधी सम्प्रदाय हो गये, जैसे याकूबिय्यः, नसतूरियः आरयूसियः और सभी एक दूसरे के शत्रु हो गये। तथा इस समय आर्थिक और राजनितिक सम्प्रदायों में विभाजित हो कर आपस में रक्तपात कर रहे हैं। इस में भी मुसलमानों को सावधान किया गया है कि कुर्आन के अर्थों में परिवर्तन कर के ईसाइयों के समान सम्प्रदायों में विभाजित न होना।

15. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं^[1], जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं, जिन्हें तुम छुपा रहे थे, और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं, अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश तथा खुली पुस्तक (कुर्आन) आ गई है।

16. जिस के द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का मार्ग दिखा रहा है, जो उस की प्रसन्नता पर चलते हों, उन्हें अपनी अनुमति से अंधेरो से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाता है, और उन्हें सुपथ दिखाता है।

17. निश्चय वह काफिर^[2] हो गये, जिन्होंने कहा कि मर्यम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है। (हे नबी!) उन से कह दो कि यदि अल्लाह मर्यम के पुत्र और उस की माता तथा जो भी धरती में है, सब का विनाश कर देना चाहे, तो किसी में शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाशों और धरती और जो भी इन के बीच है, सब अल्लाह ही का राज्य है, वह जो चाहे उत्पन्न करता है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

18. तथा यहूदी और ईसाइयों ने कहा कि हम अल्लाह के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا
يَبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ
الْكِتَابِ وَيَعْقُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ
جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ
مُبِينٌ ۝

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ
سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِي يُهْدِي إِلَى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ
اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ
مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَفَنَ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ
مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ
وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लमा तथा प्रकाश से अभिप्राय कुर्आन पाक है।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह होने की मिथ्या आस्था का खण्डन किया जा रहा है।

तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुम भी वैसे ही मानव पुरुष हो जैसे दूसरे हैं, जिन की उत्पत्ति उस ने की है। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा आकाशों और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, अल्लाह ही का राज्य (अधिपत्य)^[1] है, और उसी की ओर सब को जाना है।

19. हे अहले किताब! तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात् हमारे रसूल आ गये^[2] है, वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया, तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

20. तथा याद करो, जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो कि उस ने तुम में नबी और शासक बनाये, तथा तुम्हें वह कुछ दिया जो संसार वासियों में किसी को नहीं दिया।

بَشَرًا مِّمَّنْ خَلَقَ يُغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْاَرْضِ وَنَا بَيْنَهُمَا ۚ اُو۟لٰٓئِكَ اِلٰهُ الْمَصِيۜرِ ۝

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوۡلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰٓى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا مَا جَآءَنَا مِنۡ نَّبِيٍّ۬ ؕ وَلَا نَذِيۡرٍ۬ فَقَدْ جَآءَكُمْ يٰۤسِيۡرٌۭ وَنَذِيۡرٌۭ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰٓى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيۡرٌۭ ۝

وَإِذۡ قَالَ مُوسٰٓى لِقَوۡمِهِۦ يُقُوۡمُوا۟ اذۡكُرُوا۟ نِعۡمَةَ اللّٰهِ عَلَيۡكُمۡ اِذۡ جَعَلَ فِیۡكُمۡ اَنْبِيَآءَ وَجَعَلَ لَكُمۡ مَّوَدِّعًا وَّاَتٰكُم مِّنَّا لَٔمۡزُوتٍۭ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِیۡنَ ۝

1 इस आयत में ईसाइयों तथा यहूदियों के इस भ्रम का खण्डन किया जा रहा है कि वह अल्लाह के प्रियवर हैं, इस लिये जो भी करें, उन के लिये मुक्ति ही मुक्ति है।

2 अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, ईसा अलैहिस्सलाम के छः सौ वर्ष पश्चात् 610 ई. में नबी हुये। आप के और ईसा अलैहिस्सलाम के बीच कोई नबी नहीं आया।

21. हे मेरी जाति! उस पवित्र धरती (बैतुल मक़दिस) में प्रवेश कर जाओ, जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है, और पीछे न फिरो, अन्यथा असफल हो जाओगे।

22. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! उस में बड़े बलवान लोग हैं, और हम उस में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक वह उस से निकल न जायें, तभी हम उस में प्रवेश कर सकते हैं।

23. उन में से दो व्यक्तियों ने जो (अल्लाह से) डरते थे, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया, कहा कि: उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ, तुम जब उस में प्रवेश कर जाओगे, तो निश्चय तुम प्रभुत्वशाली होगे। तथा अल्लाह ही पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो।

24. वह बोले: हे मूसा! हम उस में कदापि प्रवेश न करेंगे, जब तक वह उस में (उपस्थित) रहेंगे, अतः तुम और तुम्हारा पालनहार जाये, फिर तुम दोनों युद्ध करो, हम यही बैठे रहेंगे।

25. (यह दशा देख कर) मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर कोई अधिकार नहीं रखता। अतः तू हमारे तथा अवैज्ञाकारी जाति के बीच निर्णय कर दे।

26. अल्लाह ने कहा: वह (धरती) उन पर चालीस वर्ष के लिये हराम (वर्जित)

يَقُومُوا ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ
اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتُدُّوا عَلَىٰ آدِبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا
خِصْرًا ۝

قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَلِينَ ۖ وَإِنَّا لَنَ
نَدْخُلُهَا حَتَّىٰ يُخْرِجُوا مِنهَا فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا
فَإِنَّا نَدْخُلُون ۝

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنِعَمَ اللَّهُ
عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ
فَأِنَّكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا ۖ إِنَّ
كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

قَالُوا يٰيُوسَىٰ إِنَّا لَنَدْخُلُهَا أَبَدًا إِنَّا دَامُوا فِيهَا
فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا
قَوِيدُونَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي
فَاذْفَرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً

कर दी गई। वह धरती में फिरते रहेंगे, अतः तुम अवैज्ञाकारी जाति पर तरस न खाओ।^[1]

27. तथा उन को आदम के दो पुत्रों का सहीह समाचार^[2] सुना दो, जब दोनों ने एक उपायन (कुर्बानी) प्रस्तुत की, तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से स्वीकार नहीं की गई। उस (दूसरे) ने कहा: मैं अवश्य तेरी हत्या कर दूंगा। उस (प्रथम) ने कहा: अल्लाह आज्ञाकारियों ही से स्वीकार करता है।

28. यदि तुम मेरी हत्या करने के लिये मेरी ओर हाथ बढ़ाओग^[3], तो भी मैं तुम्हारी ओर तुम्हारी हत्या करने के लिये हाथ बढ़ाने वाला नहीं हूँ। मैं विश्व के पालनहार अल्लाह से डरता हूँ।

29. मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी (हत्या के) पाप और अपने पाप के साथ फिरो, तो नारकी हो जाओगे, और यही अत्याचारियों का प्रतिकार (बदला) है।

يَتِيمُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ۝

وَإِئْتِ عَلِيهِمُ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا
قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ
الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ۝

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسٍ
بِئْسَى إِلَيْكَ إِقْتُلَكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبْشُرَ آبِيَاسِي وَأَشِيكَ فَتَكُونَ
مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब मुसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल को ले कर मिस्र से निकले, तो अल्लाह ने उन्हें बैतुल मक्दिस में प्रवेश कर जाने का आदेश दिया, जिस पर अमालिका जाति का अधिकार था। और वही उस के शासक थे, परन्तु बनी इसराईल ने जो कायर हो गये थे, अमालिका से युद्ध करने का साहस नहीं किया। और इस आदेश का विरोध किया, जिस के परिणाम स्वरूप उसी क्षेत्र में 40 वर्ष तक फिरते रहे। और जब 40 वर्ष बीत गये, और एक नया वंश जो साहसी था पैदा हो गया तो उस ने उस धरती पर अधिकार कर लिया। (इब्ने कसीर)

2 भाष्यकारों ने इन दोनों के नाम काबील और हाबील बताये हैं।

3 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: जो भी प्राणी अत्याचार से मारा जाये तो आदम के प्रथम पुत्र पर उन के खून का भाग होता है क्यों कि उसी ने प्रथम हत्या की रीति बनाई है। (सहीह बुखारी: 6867, मुस्लिम: 1677)

30. अंततः उस ने स्वयं को अपने भाई की हत्या पर तय्यार कर लिया, और बिनाशों में हो गया।

قَطَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾

31. फिर अब्राह ने एक कौआ भेजा, जो भूमि कुरेद रहा था, ताकि उसे दिखायै कि अपने भाई के शव को कैसे छुपाये, उस ने कहा: मुझ पर खेद है! क्या मैं इस कौआ जैसा भी न हो सका कि अपने भाई का शव छुपा सकूँ, फिर बड़ा लज्जित हुआ।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحِثُ فِي الْأَرْضِ لِيُؤْتِيَهُ كَيْفَ يُؤَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يُؤَيِّلَتْنِي أَعْجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ الْقُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾

32. इसी कारण हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया^[1] कि जिस ने भी किसी प्राणी की हत्या की किसी प्राणी का खून करने अथवा धरती में विद्रोह के बिना तो समझो उस ने पुरे मनुष्यों की हत्या^[2] कर दी। और जिस ने जीवित रखा एक प्राणी को तो वास्तव में उस ने जीवित रखा सभी मनुष्यों को। तथा उन के पास हमारे रसूल खुली निशानियाँ लाये, फिर भी उन में से अधिकांश धरती में विद्रोह करने वाले हैं।

مَنْ أَحْيَىٰ ذَلِكَ نَكَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

33. जो लोग^[3] अब्राह और उस के रसूल से युद्ध करते हों, तथा धरती में उपद्रव करते फिर रहे हों, उन का दण्ड यह है कि उन की हत्या

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأرجُلُهُمْ مِنْ

1 अर्थात नियम बना दिया, इस्लाम में भी यही नियम और आदेश है।

2 क्यों कि सभी प्राण, प्राण होने में बराबर हैं।

3 इस आयत में देश द्रोहियों तथा तस्करों को दण्ड देने का नियम तथा आदेश बताया जा रहा है। तथा अब्राह और उस के रसूल के आदेशों के उल्लंघन को उन के विरुद्ध युद्ध कहा गया है। (अधिक विवरण के लिये देखिये: सहीह बुखारी, हदीस- 4610)

की जाये, तथा उन्हें फाँसी दी जाये, अथवा उन के हाथ पाँव विपरीत दिशाओं से काट दिये जायें, अथवा उन्हें देश निकाला दे दिया जाये। यह उन के लिये संसार में अपमान है, तथा परलोक में उन के लिये इस से बड़ा दण्ड है।

34. परन्तु जो तौबा (क्षमा याचना) कर लें, इस से पहले कि तुम उन्हें अपने नियंत्रण में लाओ, तो तुम जान लो कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
35. हे ईमान वालो! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरते रहो, और उस की ओर वसीला¹ खोजो, तथा उस की राह में जिहाद करो, ताकि तुम सफल हो जाओ।
36. जो लोग काफिर हैं, यद्यपि धरती के सभी (धन धान्य) उन के अधिकार (स्वामित्व) में आ जायें और उसी के समान और भी हो, ताकि वे, यह सब प्रलय के दिन की यातना से अर्थ दण्ड स्वरूप देकर मुक्त हो जायें, तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जायेगा, और उन्हें दुखदायी यातना होगी।
37. वह चाहेंगे कि नरक से निकल जायें, जब कि वह उस से निकल नहीं

يَخْلَافُ أَوْ يُسْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَحِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالَّذِينَ لَهُمْ مَسَاقِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا نَقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوكَ مِنَ النَّارِ وَمَأْتَهُمُ

1 (वसीला) का अर्थ है: अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और उस की अवैज्ञा से बचने तथा ऐसे कर्मों के करने का जिन से वह प्रसन्न हो। वसीला हदीस में स्वर्ग के उस सर्वोच्च स्थान को भी कहा गया है जो स्वर्ग में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मिलेगा जिस का नाम ((मकामे महमूद)) है। इसी लिये आप ने कहा: जो अज्ञान के पश्चात् मेरे लिये वसीला की दुआ करेगा वह मेरी सिफारिश के योग्य होगा। (बुखारी- 4719) पीरों और फकीरों आदि की समाधियों को वसीला समझना निर्मूल और शिर्क है।

सकेंगे, और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

38. चोर, पुरुष और स्त्री दोनों के हाथ काट दो, उन के करतूत के बदले, जो अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड है^[1] और अल्लाह प्रभावशाली गुणी है।

39. फिर जो अपने अत्याचार (चोरी) के पश्चात् तौब: (क्षमा याचना) कर ले, और अपने को सुधार ले, तो अल्लाह उस की तौब: स्वीकार कर लेगा^[2], निःसंदेह अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يُخْرِجِينَ مِنْهَا وَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ مُقِيمُونَ ﴿٣٨﴾

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جِزَاءً بِمَا كَسَبَا لَكَ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٩﴾

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٤٠﴾

1. यहाँ पर चोरी के विषय में इस्लाम का धर्म विधान वर्णित किया जा रहा है कि यदि चौथाई दीनार अथवा उस के मूल्य के सामान की चोरी की जाये, तो चोर का सीधा हाथ कलाई से काट दो। इस के लिये स्थान तथा समय के और भी प्रतिबंध हैं। शिक्षाप्रद दण्ड होने का अर्थ यह है कि दूसरे इस से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि पूरा देश और समाज चोरी के अपराध से स्वच्छ और पवित्र हो जाये। तथा यह ऐतिहासिक सत्य है कि इस घोर दण्ड के कारण, इस्लाम के चौदह सौ वर्षों में जिन्हें यह दण्ड दिया गया है, वह बहुत कम हैं। क्योंकि यह सज़ा ही ऐसी है कि जहाँ भी इस को लागू किया जायेगा वहाँ चोर और डाकू बहुत कुछ सोच समझ कर ही आगे कदम बढ़ायेंगे। जिस के फलस्वरूप पूरा समाज अमन और चैन का गह्वारा बन जायेगा। इस के विपरीत संसार के आधुनिक विधानों ने अपराधियों को सुधारने तथा उन्हें सभ्य बनाने का जो नियम बनाया है, उस ने अपराधियों में अपराध का साहस बढ़ा दिया है। अतः यह मानना पड़ेगा कि इस्लाम का यह दण्ड चोरी जैसे अपराध को रोकने में अब तक सब से अधिक सफल सिद्ध हुआ है। और यह दण्ड मानवता के मान और उस के अधिकार के विपरीत नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति ने अपना माल अपने खून पसीना, परिश्रम तथा अपने हाथों की शक्ति से कमाया है तो यदि कोई चोर आ कर उस को उचकना चाहे तो उस की सज़ा यही होनी चाहिये कि उस का वह हाथ ही काट दिया जाये जिस से वह अन्य का माल हड़प करना चाह रहा है।

2. अर्थात् उसे परलोक में दण्ड नहीं देगा, परन्तु न्यायालय चोरी सिद्ध होने पर उसे चोरी का दण्ड देगा। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

40. क्या तुम जानते नहीं कि अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जिसे चाहे क्षमा कर दे, और जिसे चाहे दण्ड दे, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

41. हे नबी! वह आप को उदासीन न करें, जो कुफ़्र में तीव्रगामी हैं, उन में से जिन्होंने कहा कि हम ईमान लाये, जब कि उन के दिल ईमान नहीं लाये और उन में से जो यहूदी हैं, जिन की दशा यह है कि मिथ्या बातें सुनने के लिये कान लगाये रहते हैं, तथा दूसरों के लिये जो आप के पास नहीं आये कान लगाये रहते हैं, वह शब्दों को उन के निश्चित स्थानों के पश्चात् वास्तविक अर्थों से फेर देते हैं। वह कहते हैं कि यदि तुम को यही आदेश दिया जाये (जो हम ने बताया है) तो मान लो, और यदि वह न दिये जाओ, तो उस से बचो। (हे नबी!) जिसे अल्लाह अपनी परीक्षा में डालना चाहे, आप उसे अल्लाह से बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकते। यही वह है जिन के दिलों को अल्लाह ने पवित्र करना नहीं चाहा। उन्हीं के लिये संसार में अपमान है, और उन्हीं के लिये परलोक में घोर^[1] यातना है।

أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ
فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِمَا نُوْحِيهِمْ
وَلَمْ تُؤْمِنُوا قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا
سَمِعُواكَ يَمْدُونَ لَكِنَّا نَسْمَعُ لِقَوْمٍ آخَرِينَ
لَمْ يَأْتُواكَ بِشَيْءٍ مِنَ الْكَلِمِ مِنْ بَعْدِ
مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوا
وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ
فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئاً
أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرْ
قُلُوبَهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

1 मदीना के यहूदी विद्वान, मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजते कि आप की बातें सुनें और उन को सूचित करें। तथा अपने विवाद आपके पास ले जायें। और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई निर्णय करें तो हमारे आदेशानुसार हो तो स्वीकार करें अन्यथा स्वीकार न करें। जब कि तौरात की आयतों में इन के आदेश थे, फिर भी वे उन में परिवर्तन कर के उन का अर्थ कुछ का कुछ बना देते थे। (देखिये व्याख्या आयत- 13)

42. वह मिथ्या बातें सुनने वाले अवैध भक्षी हैं। अतः यदि वह आप के पास आयें, तो आप उन के बीच निर्णय कर दें, अथवा उन से मुँह फेर लें (आप को अधिकार है)। और यदि आप उन से मुँह फेर लें, तो वे आप को कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि निर्णय करें, तो न्याय के साथ निर्णय करें। निस्संदेह अल्लाह न्यायकारियों से प्रेम करता है।

43. और वह आप को निर्णयकारी कैसे बना सकते हैं, जब कि उन के पास तौरात (पुस्तक) मौजूद है, जिस में अल्लाह का आदेश है। फिर इस के पश्चात् उस से मुँह फेर रहे हैं? वास्तव में वह ईमान वाले हैं ही⁽¹⁾ नहीं।

44. निःसंदेह हम ने ही तौरात उतारी जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है, जिस के अनुसार वह नबी निर्णय करते रहे जो आज्ञाकारी थे,⁽²⁾ उन के लिये जो यहूदी थे। तथा धर्माचारी और विद्वान लोग। क्योंकि वह अल्लाह की पुस्तक के रक्षक बनाये गये थे, और उस के (सत्य होने के) साक्षी थे। अतः तुम (भी) लोगों से न डरो, मुझी से डरो, और मेरी आयतों के बदले तनिक मूल्य न खरीदो, और जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक

سَمِعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْثَرُونَ لِلسَّخَةِ فَإِنْ
جَاءُوا فَاخْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ عَرِضْ عَنْهُمْ وَإِنْ
تَعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا وَلَنْ
فَاخْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ۝

وَكَيْفَ يَحْكُمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا
حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا
أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ
بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ
هَادُوا وَالرَّبُّ يَشْفِئُ وَالْأَعْيَارُ بِهَا
اسْتُخْفِظُوا مِنْ كُتُبِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهَا
شُهَدَاءَ أَمْ فَلَا تَحْشَوْنَ النَّاسَ وَاتَّخَذُوا
شُرَكَاءَ بَالِغِينَ تَسَاءَ قَوْلًا وَمَنْ أَمْ يَحْكُمُ
بِهَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۝

1. क्यों कि वह न तो आप को नबी मानते, और न आप का निर्णय मानते, तथा न तौरात का आदेश मानते हैं।

2. इस्लाम में भी यही नियम है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाँत तोड़ने पर यही निर्णय दिया था। (सहीह बुखारी: 4611)

के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही काफिर है।

45. और हम ने उन (यहूदियों) पर उस (तौरात) में लिख दिया कि प्राण के बदले प्राण है, तथा आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, तथा कान के बदले कान, और दाँत के बदले दाँत, तथा सभी आघातों में बराबरी का बदला है। फिर जो कोई बदला लेने को दान (क्षमा) कर दे, तो वह उस के लिये (उस के पापों का) प्रायश्चित्त हो जायेगा, तथा जो अल्लाह की उतारी (पुस्तक के) अनुसार निर्णय न करें, तो वही अत्याचारी है।

46. फिर हम ने उन (नबियों) के पश्चात् मर्यम के पुत्र ईसा को भेजा, उसे सच बताने वाला जो उस के सामने तौरात थी। तथा उसे इंजील प्रदान की, जिस में मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। उसे सच बताने वाली जो उस के आगे तौरात थी तथा अल्लाह से डरने वालों के लिये सर्वथा मार्गदर्शन तथा शिक्षा थी।

47. और इंजील के अनुयायी भी उसी से निर्णय करें, जो अल्लाह ने उस में उतारा है, और जो उस से निर्णय न करें, जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो वही अधर्मी है।

48. और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (कुर्आन)

وَكُتِبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ
وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ
بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ
فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ وَمَنْ
كُفِرَ بِحُكْمِ رَبِّهِ أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَلَيْنَهُ الْإِنجِيلُ
فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَصَدَّقْنَا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ
التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾

وَلِيَحْكُمَ أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَنْ
كُفِرَ بِحُكْمِ رَبِّهِ أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٧﴾

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ

उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक^[1] है, अतः आप लोगों का निर्णय उसी से करें, जो अब्बाह ने उतारा है, तथा उन की मन मानी पर उस सत्य से विमुख हो कर न चलें, जो आप के पास आया है। हम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया^[2] था, और यदि अब्बाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता, परन्तु उस ने जो कुछ दिया है, उस में तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है। अतः भलाईयों में एक दूसरे से अग्रसर होने का प्रयास करो^[3], अब्बाह ही की ओर तुम सब को लोट कर जाना है। फिर वह तुम्हें बता देगा, जिन बातों में तुम विभेद करते रहे।

يَدَّيْنِهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهِمِّنَا عَلَيْهِ فَأَحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِثْقَلَهُ خَيْرَةً وَنَسْأَلُ اللَّهَ لِنَجْعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝

- 1 संरक्षक होने का अर्थ यह है कि कुर्आन अपने पूर्व की धर्म पुस्तकों का केवल पुष्टिकर ही नहीं, कसोटि (परख) भी है। अतः आदि पुस्तकों में जो भी बात कुर्आन के विरुद्ध होगी वह सत्य नहीं परिवर्तित होगी, सत्य वही होगी जो अब्बाह की अन्तिम किताब कुर्आन पाक के अनुकूल हो।
- 2 यहाँ यह प्रश्न उठता है कि जब तौरात तथा इंजील और कुर्आन सब एक ही सत्य लाये हैं, तो फिर इन के धर्म विधानों तथा कार्य प्रणाली में अन्तर क्यों है? कुर्आन उस का उत्तर देता है कि एक चीज़ मूल धर्म है, अर्थात् एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म का नियम, और दूसरी चीज़ धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली है, जिस के अनुसार जीवन व्यतीत किया जाये, तो मूल धर्म तो एक ही है, परन्तु समय और स्थितियों के अनुसार कार्य प्रणाली में अन्तर होता रहा है, क्यों कि प्रत्येक युग की स्थितियाँ एक समान नहीं थी, और यह मूल धर्म का अन्तर नहीं, कार्य प्रणाली का अन्तर हुआ। अतः अब समय तथा स्थितियाँ बदल जाने के पश्चात् कुर्आन जो धर्म विधान तथा कार्य प्रणाली प्रस्तुत कर रहा है वही सत्धर्म है।
- 3 अर्थात् कुर्आन के आदेशों का पालन करने में।

49. तथा (हे नबी!) आप उन का निर्णय उसी से करें, जो अल्लाह ने उतारा है, और उन की मन मानी पर न चले तथा उन से सावधान रहें कि आप को जो अल्लाह ने आप की ओर उतारा है, उस में से कुछ से फेर न दें। फिर यदि वह मुँह फेरें, तो जान लें कि अल्लाह चाहता है कि उन के कुछ पापों के कारण उन्हें दण्ड दे। वास्तव में बहुत से लोग उल्लंघनकारी हैं।

50. तो क्या वह जाहिलिय्यत (अंधकार युग) का निर्णय चाहते हैं? और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है, उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

51. हे ईमान वालो! तुम यहूदी तथा ईसाईयों को अपना मित्र न बनाओ, वह एक दूसरे के मित्र हैं, और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में होगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सीधी राह नहीं दिखाता।

52. फिर (हे नबी!) आप देखेंगे कि जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है, वह उन्हीं में दौड़े जा रहे हैं, वह कहते हैं कि हम डरते हैं कि हम किसी आपदा के कुचक्र में न आ जायें, तो दूर नहीं कि अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान करेगा, अथवा उस के पास से कोई बात हो जायेगी, तो वह लोग उस बात पर जो उन्हीं ने अपने मनों में छुपा रखी है, लज्जित होंगे।

53. तथा (उस समय) ईमान वाले कहेंगे।

وَأَن اَحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَن يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذِيبَهُمْ بَعْضُ ذُنُوبِهِمْ وَإِن كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ﴿٤٩﴾

أَحْكُمُ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا الْقَوْمُ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنكُمْ فَإِنَّهُ مِنَّهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

فَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَن تُصِيبَنَا آيَةٌ ۚ قَالُوا قَسَىٰ اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ وَأَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ ۚ فَيُصْرِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرَوْا فِي أَنفُسِهِمْ فَدَمَرِين ۚ

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ

क्या यही वह है, जो अल्लाह की बड़ी गंभीर शपथें ले कर कहा करते थे कि वह तुम्हारे साथ है? इन के कर्म अकारथ गये और अंततः वह असफल हो गये।

54. हे ईमान वालो! तुम में से जो अपने धर्म से फिर जायेगा, तो अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जिन से वह प्रेम करेगा, और वह उस से प्रेम करेंगे। वह ईमान वालों के लिये कोमल तथा काफिरों के लिये कड़े^[1] होंगे। अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे। यह अल्लाह की दया है, जिसे चाहे प्रदान करता है, और अल्लाह (की दया) विशाल है और वह अति ज्ञानी है।

55. तुम्हारे सहायक केवल अल्लाह और उस के रसूल तथा वह है, जो ईमान लाये, जो नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं, और अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं।

56. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल तथा ईमान वालों को सहायक बनायेगा, तो निश्चय अल्लाह का दल ही छा कर रहेगा।

57. हे ईमान वालो! उन को जिन्होंने तुम्हारे धर्म को उपहास तथा खेल

جَهَدُوا فِيهِمْ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ
فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ٥٤

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ
فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٌ
 عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ
 فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَخِيضُونَ لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ذَلِكَ
 فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ٥٥

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ
 يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
 رَاكِعُونَ ٥٦

وَمَنْ يُضِلَّهُ اللَّهُ فَقَدْ ضَلَّ سَبِيلَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
 جَزَاءُ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ٥٧

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْتَحْيُوا الَّذِينَ آمَنُوا

1 कड़े होने का अर्थ यह है कि वह युद्ध तथा अपने धर्म की रक्षा के समय उन के दबाव में नहीं आयेंगे, न जिहाद की निन्दा उन्हें अपने धर्म की रक्षा से रोक सकेगी।

बना रखा है उन में से जो तुम से पहले पुस्तक दिये गये हैं, तथा काफ़िरो को सहायक (मित्र) न बनाओ, और अल्लाह से डरते रहो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

58. और जब तुम नमाज़ के लिये पुकारते हो, तो वे उस का उपहास करते तथा खेल बनाते हैं, इस लिये कि वह समझ नहीं रखते।

59. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! इस के सिवा हमारा दोष क्या है, जिस का तुम बदला लेना चाहते हो, कि हम अल्लाह पर तथा जो हमारी ओर उतारा गया और जो हम से पूर्व उतारा गया उस पर ईमान लाये हैं, और इस लिये कि तुम में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं?

60. आप उन से कह दें कि क्या मैं तुम्हें बता दूँ, जिन का प्रतिफल (बदला) अल्लाह के पास इस से भी बुरा है? वह हैं जिन को अल्लाह ने धिक्कार दिया और उन पर उस का प्रकोप हुआ, तथा उन में से बंदर और सूअर बना दिये गये, तथा तागूत (असुर- धर्म विरोधी शक्तियों) को पूजने लगे। इन्हीं का स्थान सब से बुरा है, तथा सर्वाधि कुपथ हैं।

61. जब वह^[1] तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, जब

دِينَكُمْ هُزُوا وَلَيَأْتِيَنَّ الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكَافِّرَ أَفْوَاجًا وَأَنفَعُوا اللَّهَ إِنَّ كُفْرَكُمْ شُرُوءٌ

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا هُزُوعًا وَلَيَأْتِيَنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامِ

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَقْتُلُونَ مَنَآ أَنِ الْمَنَآ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ وَأَنِ أَكْثَرُكُمْ فَاسِقُونَ

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرِّ مِّنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَن لَعَنَهُ اللَّهُ وَعُصِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْفِرْدَاةَ وَالْحَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ أُولَئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ

وَإِذَا جَاءُوكُم قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكَفْرِ

1 इस में द्विविधावादियों का दूराचार बताया गया है।

कि वह कुफ़्र लिये हुये आये और उसी के साथ वापिस हुये, तथा अल्लाह उसे भली भाँति जानता है, जिस को वह छुपा रहे हैं।

62. तथा आप उन में से बहुतों को देखेंगे कि पाप तथा अत्याचार और अपने अवैध खाने में दौड़ रहे हैं, वह बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।

63. उन को उन के धर्माचारी तथा विद्वान पाप की बात करने तथा अवैध खाने से क्यों नहीं रोकते? वह बहुत बुरी रीति बना रहे हैं।

64. तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह के हाथ बँधे^[1] हुये हैं, उन्हीं के हाथ बँधे हुये हैं। और वह अपने इस कथन के कारण धिक्कार दिये गये हैं, बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हुये हैं, वह जैसे चाहे व्यय (खर्च) करता है, और इन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से आप पर उतारा गया है, उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक कर देगा, और हम ने उन के बीच प्रलय के दिन तक के लिये शत्रुता तथा बैर डाल दिया है। जब कभी वह युद्ध की अग्नि सुलगाते हैं, तो अल्लाह उसे बुझा^[2] देता है। वह धरती में उपद्रव

وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦٢﴾

وَرَأَى كَثِيرٌ مِنْهُمْ يَسْرِعُونَ فِي الْأَثَمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٦٣﴾

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبِيدُونَ وَالْأَخْبَارُ عَنْ تَوَلِّيهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٦٤﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلِجُنَابِهِ قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُضِلُّنَّ كَيْفَ يَشَاءُ وَلْيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا أَلَيْسَ لِيَوْمِ الْعَدَاوَةِ وَالْبَعْثِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ كُتُبًا أَوْ قَدْ وَانَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٥﴾

1 अरबी मुहावरे में हाथ बँधे का अर्थ है कंजूस होना, और दान-दक्षिणा से हाथ रोकना। (देखिये: सूरह आले इमरान, आयत- 181)

2 अर्थात् उन के षडयंत्र को सफल नहीं होने देता बल्कि उस का कुफल उन्हीं को भोगना पड़ता है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के समय में विभिन्न दशाओं में हुआ।

का प्रयास करते हैं, और अल्लाह विद्रोहियों से प्रेम नहीं करता।

65. और यदि अहले किताब ईमान लाते, तथा अल्लाह से डरते, तो हम अवश्य उन के दोषों को क्षमा कर देते, और उन्हें सुख के स्वर्गों में प्रवेश देते।

66. तथा यदि वह स्थापित^[1] रखते तौरात और इंजील को, और जो भी उन की ओर उतारा गया है, उन के पालनहार की ओर से, तो अवश्य उन को अपने ऊपर (आकाश) से, तथा पैरों के नीचे (धरती) से^[2] जीविका मिलती, उन में एक संतुलित समुदाय भी है। और उन में से बहुत से कुकर्म कर रहे हैं।

67. हे रसूल!^[3] जो कुछ आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है उसे (सब को) पहुँचा दें, और यदि ऐसा नहीं किया, तो आप ने उस का उपदेश नहीं पहुँचाया। और अल्लाह (विरोधियों से) आप की रक्षा करेगा^[4], निश्चय अल्लाह,

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ سَبِيلًا ۖ وَلَا دَخَلْنَاهُمْ حَتَّىٰ النَّبِيِّ ۝

وَلَوْ أَنَّهُمْ آتَمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكْمَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ دَمِينًا فَحَرَّجْنَا عَلَيْهِمْ مِنْهُمْ شَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन करते और उसे अपना जीवन विधान बनाते।

2 अर्थात् आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज में अधिकता होती।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

4 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने के पश्चात् आप पर विरोधियों ने कई बार प्राण घातक आक्रमण का प्रयास किया। जब आप ने मक्का में सफ़ा पर्वत से एकेश्वरवाद का उपदेश दिया तो आप के चचा अबू लहब ने आप पर पत्थर चलाये। फिर उसी युग में आप काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू जहल ने आप की गरदन रौदने का प्रयास किया, किन्तु आप के रक्षक फ़रिश्तों को देख कर भागा। और जब कुरैश ने यह योजना बनाई कि

काफ़िरों को मार्गदर्शन नहीं देता।

68. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहल किताब! तुम किसी धर्म पर नहीं हो, जब तक तौरात तथा इंजील और उस (कुर्आन) की स्थापना^[1] न करो, जो तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, तथा उन में से अधिकतर को जो (कुर्आन) आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है, अवश्य उल्लंघन तथा कुफ़्र (अविश्वास) में अधिक

فَلَنْ يَأْتِيَنَّ الْكِتَابَ لَنْتَحْمَلَ عَنْ شَيْءٍ حَتَّى تُفِيَمُوا
التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ
وَلَا يَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِمَّا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

आप को बध कर दिया जाये और प्रत्येक कबीले का एक युवक आप के द्वार पर तलवार लेकर खड़ा रहे और आप निकलें तो सब एक साथ प्रहार कर दें, तब भी आप उन के बीच से निकल गये। और किसी ने देखा भी नहीं। फिर आप ने अपने साथी अबू बक्र के साथ हिज्रत के समय सौर पर्वत की गुफा में शरण ली। और काफ़िर गुफा के मुंह तक आप की खोज में आ पहुँचे। उन्हें आप के साथी ने देखा, किन्तु वे आप को नहीं देख सके। और जब वहाँ से मदीना चले तो सुराका नामी एक व्यक्ति ने कुरैश के पुरस्कार के लोभ में आ कर आप का पीछा किया। किन्तु उस के घोड़े के अगले पैर भूमी में धंस गये। उस ने आप को गुहारा, आप ने दुआ कर दी, और उस का घोड़ा निकल गया। उस ने ऐसा प्रयास तीन बार किया फिर भी असफल रहा। आप ने उस को क्षमा कर दिया। और यह देख कर वह मुसलमान हो गया। आप ने फरमाया कि एक दिन तुम अपने हाथ में ईरान के राजा के कंगन पहनोगे। और उमर बिन खत्ताब के युग में यह बात सच साबित हुई। मदीने में भी यहूदियों के कबीले बनू नजीर ने छत के ऊपर से आप पर भारी पत्थर गिराने का प्रयास किया जिस से अब्बाह ने आप को सूचित कर दिया। खैबर की एक यहूदी स्त्री ने आप को विष मिला के बकरी का माँस खिलाया। परन्तु आप पर उस का कोई बड़ा प्रभाव नहीं हुआ। जब कि आप का एक साथी उसे खा कर मर गया। एक युध्द यात्रा में आप अकेले एक वृक्ष के नीचे सो गये, एक व्यक्ति आया, और आप की तलवार लेकर कहा: मुझ से आप को कौन बचायेगा? आप ने कहा: अब्बाह! यह सुन कर वह कांपने लगा, और उस के हाथ से तलवार गिर गई और आप ने उसे क्षमा कर दिया। इन सब घटनाओं से यह सिद्ध हो जाता है कि अब्बाह ने आप की रक्षा करने का जो वचन आप को दिया, उस को पूरा कर दिया।

1 अर्थात् उन के आदेशों का पालन न करो।

कर देगा, अतः आप काफिरों (के अविश्वास) पर दुखी न हों।

69. वास्तव में जो ईमान लाये, तथा जो यहूदी हुये, और साबी, तथा ईसाई, जो भी अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान लायेगा, तथा सत्कर्म करेगा, तो उन्हीं के लिये कोई डर नहीं, और न वह उदासीन^[1] होंगे।

70. हम ने बनी इस्राईल से दृढ़ वचन लिया, तथा उन के पास बहुत से रसूल भेजे, (परन्तु) जब कभी कोई रसूल उन की अपनी आकांक्षाओं के विरुद्ध कुछ लाया, तो एक गिरोह को उन्हीं ने झुठला दिया, तथा एक गिरोह को बध करते रहे।

71. तथा वह समझे कि कोई परीक्षा न होगी, इस लिये अंधे बहरे हो गये, फिर अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया, फिर भी उन में से अधिकतर अंधे और बहरे हो गये, तथा वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उसे देख रहा है।

72. निश्चय वह काफिर हो गये, जिन्होंने

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِغِينَ
وَالنَّصَارَى مِنَ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَلَى
صَالِحَاتٍ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ
رُسُلًا كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُهُمْ
فَرَضُوا كَذِبًا وَفَرِحُوا بِقَتْلِهِمْ ۝

وَحَسِبُوا أَنَّ أَكْثَرَهُمْ فَتْنَةً فُتِنُوا وَصَمُّوا ظُهُورَهُمْ
لِلَّهِ عَلَيْهِمْ ثَمَرُ عَمَلِهِمْ وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِنْهُمْ وَاللَّهُ
بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम से पहले यहूदी, ईसाई तथा साबी जिन्होंने अपने धर्म को पकड़ रखा है, और उस में किसी प्रकार का हेर-फेर नहीं किया, अल्लाह तथा आखिरत पर ईमान रखा और सदाचार किये उन को कोई भय और चिन्ता नहीं होनी चाहिये। इसी प्रकार की आयत सूरह बकरह (62) में भी आई है जिस के विषय में आता है कि कुछ लोगों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया कि उन लोगों का क्या होगा जो अपने धर्म पर स्थित थे और मर गये? इसी पर यह आयत उतरी। परन्तु अब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के लाये धर्म पर ईमान लाना अनिवार्य है इस के बिना मोक्ष नहीं मिल सकता।

ने कहा कि अल्लाह,^[1] मर्यम का पुत्र मसीह ही है। जब कि मसीह ने कहा था: हे बनी इसराईल! उस अल्लाह की इबादत (बंदना) करो जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया। और उस का निवास स्थान नरक है। तथा अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।

73. निश्चय वह भी काफिर हो गये, जिन्होंने ने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है, जब कि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है, और यदि वह जो कुछ कहते हैं, उस से नहीं रुके, तो उन में से काफिरों को दुखदायी यातना होगी।

74. वह अल्लाह से तौब: तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जब कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है?

75. मर्यम का पुत्र मसीह इस के सिवा कुछ नहीं कि वह एक रसूल है, उस से पहले भी बहुत से रसूल हो चुके हैं, उस की माँ सच्ची थी, दोनों भोजन करते थे, आप देखें कि हम कैसे उन के लिये निशानियाँ (एकेश्वरवाद के लक्षण) उजागर

وَقَالَ الْمَسِيحُ يَنْفِي إِسْرَآءِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَزَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَهَنَّمَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَالظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارِهِ ۝

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ وَمِمَّنْ إِلَٰهٌ إِلَّا إِلَٰهُ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ يَشْعُرُوا بِمَا يَقُولُونَ يُسَبِّحُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَإِنَّهُمْ لَعَٰدَابُ اللَّهِ ۝

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ وَاللَّهُ شَفِيعٌ ۝

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأَنَّهُ صِدْقَةٌ كَانَ لَكُمْ الْطَّعَامُ أَنْظَرُ كَيْفَ يُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَكُونَ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी। परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

कर रहे हैं, फिर देखिये कि वह कहाँ बहके^[1] जा रहे हैं।

76. आप उन से कह दें कि क्या तुम अल्लाह के सिवा उस की इबादत (बंदना) कर रहे हो, जो तुम्हें कोई हानि और लाभ नहीं पहुँचा सकता? तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

77. (हे नबी!) कह दो कि हे अहले किताब! अपने धर्म में अवैध अति न करो^[2], तथा उन की अभिलाषाओं पर न चलो, जो तुम से पहले कुपथ हो^[3] चुके, और बहुतों को कुपथ कर गये, और संमार्ग से विचलित हो गये।

78. बनी इस्राईल में से जो काफिर हो गये, वह दावूद तथा मर्यम के पुत्र ईसा की जुबान पर धिक्कार दिये^[4] गये, यह इस कारण कि उन्होंने ने अवैज्ञा की, तथा (धर्म की सीमा का) उल्लंघन कर रहे थे।

79. वह एक दूसरे को किसी बुराई से, जो वे करते, रोकते नहीं थे, निश्चय

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُم ضَرًّا وَلَا نَفْعًا، وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَصْلُوا كَثِيرًا مِّنْ ضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

لِوَحْيِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

كَانُوا إِلَّا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّسْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ

1 आयत का भावार्थ यह है कि ईसाइयों को भी मूल धर्म एकेश्वरवाद और सदाचार की शिक्षा दी गयी थी, परन्तु वह भी उस से फिर गये, तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) को स्वयं अल्लाह अथवा अल्लाह का अंश बना दिया, और पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के योग को एक प्रभु मानने लगे।

2 (अति न करो): अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम को प्रभु अथवा प्रभु का पुत्र न बनाओ।

3 इन से अभिप्राय वह हो सकते हैं, जो नबियों को स्वयं प्रभु अथवा प्रभु का अंश मानते हैं।

4 अर्थात् धर्म पुस्तक ज़बूर तथा इंजील में इन के धिक्कृत होने की सूचना दी गयी है। (इब्ने कसीर)

वह बड़ी बुराई कर रहे थे।^[1]

80. आप उन में से अधिकतर को देखेंगे कि काफ़िरो को अपना मित्र बना रहे हैं। जो कर्म उन्होंने ने अपने लिये आगे भेजा है बहुत बुरा है कि अल्लाह उन पर क्रुद्ध हो गया तथा यातना में वही सदावासी होंगे।

81. और यदि वह अल्लाह पर, तथा नबी पर, और जो उन पर उतारा गया, उस पर ईमान लाते, तो उन को मित्र न बनाते^[2], परन्तु उन में अधिकतर उल्लंघनकारी हैं।

82. (हे नबी!) आप उन का जो ईमान लाये हैं, सब से कड़ा शत्रु यहूदियों तथा मिश्रणवादियों को पायेंगे। और जो ईमान लाये हैं उन के सब से अधिक समीप आप उन्हें पायेंगे, जो अपने को ईसाई कहते हैं। यह बात इस लिये है कि उन में उपासक तथा सन्यासी हैं, और वह अभिमान^[3] नहीं करते।

83. तथा जब वह (ईसाई) उस (कुर्आन) को सुनते हैं, जो रसूल पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उन की आखें

مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْمَسْكُونَةُ أَقْبَضَتْ لَهُمْ أَنْفُسَهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ لَهُمْ خِلْدٌ وَنَ ۝

وَأُولَٰئِكَ لَوْ أَنَّهُمْ فُتِنُوا فَوَلَّوْا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَةَ وَالْمَسْكِينَ يَوْمَ تَأْتِي السَّحَابُ مِنْهُمْ وَهُمْ أَوْلِيَاءُ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ذَٰلِكَ يَأَن مِنْهُمْ قَسِيمِينَ وَرَهْبَانًا وَآلَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

وَإِذَا سَبَّحُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِن

1 इस आयत में उन पर धिक्कार का कारण बताया गया है।

2 भावार्थ यह है कि यदि यहूदी, मुसा अलैहिस्सलाम को अपना नबी, और तौरात को अल्लाह की किताब मानते हैं, जैसा कि उन का दावा है तो वे मुसलमानों के शत्रु और काफ़िरो को मित्र नहीं बनाते। कुर्आन का यह सच आज भी देखा जा सकता है।

3 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि यह आयत हब्शा के राजा नजाशी और उस के साथियों के बारे में उतरी, जो कुर्आन सुन कर रोने लगे, और मुसलमान हो गये। (इब्ने जरीर)

आँसू से उबल रही है, उस सत्य के कारण जिसे उन्होंने ने पहचान लिया है। वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हम ईमान ले आये, अतः हमें (सत्य) के साक्षियों में लिख^[1] ले।

84. (तथा कहते हैं): क्या कारण है कि हम अल्लाह पर तथा इस सत्य (कुरआन) पर ईमान (विश्वास) न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा।

85. तो अल्लाह ने उन के यह कहने के कारण उन्हें ऐसे स्वर्ग प्रदान कर दिये, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, वह उन में सदावासी होंगे। तथा यही सत्कर्मियों का प्रतिफल (बदला) है।

86. तथा जो काफिर हो गये, और हमारी आयतों को झुठला दिया, तो वही नारकी है।

87. हे ईमान बलो! उन स्वच्छ पवित्र चीजों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल (वैध) की है, हराम (अवैध)^[2] न करो, और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्सदेह अल्लाह उल्लंघनकारियों^[3]

الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَفْكَتْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَقُصُّ
أَنْ يَدْخُلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝

فَأَنبَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا وَاجْتَبَىٰ عَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرِمُوا مَوْصِطَاتٍ مَّا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۝

1 जब जाफर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हब्शा के राजा नजाशी को सूरह मर्यम की आरंभिक आयतें सुनाई तो वह और उस के पादरी रोने लगे। (सीरत इब्ने हिशाम-1।359)

2 अर्थात् किसी भी खाद्य अथवा वस्तु को वैध अथवा अवैध करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

3 यहाँ से वर्णन क्रम, फिर आदेशों तथा निषेधों की ओर फिर रहा है। अन्य धर्मों के अनुयायियों ने सन्यास को अल्लाह के सामिप्य का साधन समझ लिया

से प्रेम नहीं करता।

88. तथा उस में से खाओ जो हलाल (वैध) स्वच्छ चीज़ अल्लाह ने तुम्हें प्रदान की है। तथा अल्लाह (की अबैजा) से डरते रहो, यदि तुम उसी पर ईमान (विश्वास) रखते हो।

89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी व्यर्थ शपथों^[1] पर नहीं पकड़ता, परन्तु जो शपथ जान बूझ कर ली हो, उस पर पकड़ता है, तो उस का^[2] प्रायश्चित्त दस निर्धनों को भोजन कराना है, उस माध्यमिक भोजन में से जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो, अथवा उन्हें वस्त्र दो, अथवा एक दास मुक्त करो, और जिसे यह सब उपलब्ध न हो, तो तीन दिन रोज़ा रखना है। यह तुम्हारी शपथों का प्रायश्चित्त है, जब तुम शपथ लो। तथा अपनी शपथों की रक्षा करो, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) का वर्णन करता है, ताकि तुम उस का उपकार मानो।

90. हे ईमान वालो! निस्संदेह^[3] मदिरा,

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِالْعِثَّةِ فِي آيَاتِكُمْ وَلَكِنْ
يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْآيَاتِ ۚ فَمَنْ كَفَرَ
بِآيَاتِهِ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ مُنِيعٌ ۚ
إِذَا عَمَلْتُمْ عَمَلًا مَسْكُونًا مِنْ أَوْسَطِ مَا نَفَعَكُمُ
أَهْلِيكُمْ وَأَسْوَدَتْكُمْ أَوْ غَيَّرَتْكُمْ رِقَبَةً فَمَنْ لَمْ
يَجِدْ فَصِيَامَ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَلِكَ كَفَّارَةُ آيَاتِكُمْ
إِذَا أَحْلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا آيَاتَكُمْ كَذَلِكَ يَتَبَيَّنُ
لَكُمْ الْآيَاتُ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْبَيْسُ وَالْآفَاصُ

था, और ईसाइयों ने सन्यास की रीति बना ली थी और अपने ऊपर संसारिक उचित स्वाद तथा सुख को अबैध कर लिया था। इस लिये यहाँ सावधान किया जा रहा है कि यह कोई अच्छाई नहीं, बल्कि धर्म सीमा का उल्लंघन है।

1 व्यर्थ: अर्थात् बिना निश्चय के। जैसे कोई बात बात पर बोलता है: (नहीं, अल्लाह की शपथ!) अथवा: (हाँ, अल्लाह की शपथ!) (बुखारी- 4613)

2 अर्थात् यदि शपथ तोड़ दे, तो यह प्रायश्चित्त है।

3 शराब के निषेध के विषय में पहले सूरह बकरा आयत 219, और सूरह निसा आयत 43 में दो आदेश आ चुके हैं। और यह अन्तिम आदेश है, जिस में शराब

जुआ तथा देवस्थान^[1] और पाँसे^[2] शैतानी मलिन कर्म है, अतः इन से दूर रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

91. शैतान तो यही चाहता है कि शराब (मदिरा) तथा जूए द्वारा तुम्हारे बीच बैर तथा द्वेष डाल दे, और तुम्हें अल्लाह की याद तथा नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम रुकोगे या नहीं?
92. तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो, और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, तथा (उन की अवैज्ञा से) सावधान रहो और यदि तुम विमुख हुये, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल खुला उपदेश पहुँचा देना है।
93. उन पर जो ईमान लाये तथा सदाचार करते रहे, उस में कोई दोष नहीं, जो (निषेधाज्ञा से पहले) खा लिया, जब वह अल्लाह से डरते रहे, तथा ईमान पर स्थिर रह गये, और सत्कर्म करते रहे, फिर डरते और सत्कर्म करते रहे, फिर (रोके गये तो) अल्लाह से डरे और सदाचार करते रहे, तो अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता^[3] है।

وَالَّذِينَ يُحْسِنُ كِتَابَهُمْ وَالَّذِينَ يُحْسِنُ كِتَابَهُمْ وَالَّذِينَ يُحْسِنُ كِتَابَهُمْ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْمِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ
وَعَنِ الصَّلَاةِ فَعَلَىٰ أَنْتُمْ مَتَّعُهُمْ ۝

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ
فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ
فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا
وَأَمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

को सदैव के लिये वर्जित कर दिया गया है।

1. देव स्थान: अर्थात् वह वेदियाँ जिन पर देवी देवताओं के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती हैं। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य के नाम से बलि दिया हुआ पशु अथवा प्रसाद अवैध है।
2. पाँसे: यह तीन तीर होते थे, जिन से वह कोई काम करने के समय यह निर्णय लेते थे कि उसे करें या न करें। उन में एक पर "करो", और दूसरे पर "मत करो" और तीसरे पर "शून्य" लिखा होता था। जूबे में लाटी और रेश इत्यादि भी शामिल हैं।
3. आयत का भावार्थ यह है कि जिन्होंने ने वर्जित चीजों का निषेधाज्ञा से पहले प्रयोग

94. हे ईमान वालो! अल्लाह कुछ शिकार द्वारा जिन तक तुम्हारे हाथ तथा भाले पहुँचेंगे, अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेगा, ताकि यह जान ले कि तुम में से कौन उस से बिन देखे डरता है? फिर इस (आदेश) के पश्चात् जिस ने (इस का) उल्लंघन किया, तो उसी के लिये दुःखदायी यातना है।

95. हे ईमान वालो! शिकार न करो⁽¹⁾, जब तुम एहराम की स्थिति में रहो, तथा तुम में से जो कोई जान बूझ कर ऐसा कर जाये, तो पालतू पशु से शिकार किये पशु जैसा बदला (प्रतिकार) है, जिस का निर्णय तुम में से दो न्यायकारी व्यक्ति करेंगे, जो काबा तक हथ (उपहार स्वरूप) भेजा जाये। अथवा⁽²⁾ प्रायश्चित्त है, जो कुछ निर्धनों का खाना है, अथवा उस के बराबर रोजे रखना है। ताकि अपने किये का दुष्परिणाम चखे। इस आदेश से पूर्व जो हुआ, अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया, और जो फिर करेगा, अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْتُلُوا مِنَ الْبَهِيمِ مَا كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا كُنْتُمْ فِي الْحَجِّ أَوْ عَلَىٰ غَيْرِهِ لَكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْتُلُوا ۚ وَلَكِنَّ جُنَاحَكُمْ عَلَىٰ أَنْ تَقْتُلُوا مَا كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الْبَهِيمَ الَّتِي كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
وَلَكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْتُلُوا مَا كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ وَلَكِنْ جُنَاحُكُمْ عَلَىٰ أَنْ تَقْتُلُوا مَا كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
كَلَّا لَا تَتْلُوا جُنَاحَ الْبَهِيمِ الَّتِي كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا مَا كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا مَا كُنْتُمْ تَكْتُلُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

किया, फिर जब भी उन को अवैध किया गया तो उन से रुक गये, उन पर कोई दोष नहीं। सहीह हदीस में है कि जब शराब वर्जित की गयी तो कुछ लोगों ने कहा कि कुछ लोग इस स्थिति में मारे गये कि वह शराब पिये हुये थे, उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी-4620)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: जो भी नशा लाये वह मदिरा और अवैध है। (सहीह बुखारी-2003)। और इस्लाम में उस का दण्ड अस्सी कोड़े है। (बुखारी- 6779)

1 इस से अभिप्राय थल का शिकार है।

2 अर्थात् यदि शिकार के पशु के समान पालतू पशु न हो, तो उस का मूल्य हरम के निर्धनों को खाने के लिये भेजा जाये अथवा उस के मूल्य से जितने निर्धनों को खिलाया जा सकता हो उतने ब्रत रखे।

प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।

96. तथा तुम्हारे लिये जल का शिकार और उस का खाद्य^[1] हलाल (वैध) कर दिया गया है, तुम्हारे तथा यात्रियों के लाभ के लिये, तथा तुम पर धल का शिकार जब तक एहराम की स्थिति में रहो, हराम (अवैध) कर दिया गया है, और अल्लाह (की अवैजा) से डरते रहो, जिस की ओर तुम सभी एकत्र किये जाओगे।

97. अल्लाह ने आदरणीय घर काबा को लोगों के लिये (शान्ति तथा एकता की) स्थापना का साधन बना दिया है, तथा आदरणीय मासों^[2] और (हज्ज) की कुर्बानी तथा कुर्बानी के पशुओं को जिन्हें पट्टे पहनाये गये हों, यह इस लिये किया गया ताकि तुम्हें ज्ञान हो जाये कि अल्लाह जो कुछ आकाशों और जो कुछ धरती में है सब को जानता है। तथा निस्संदेह अल्लाह प्रत्येक विषय का ज्ञानी है।

98. तुम जान लो कि अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है, और यह कि अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

99. अल्लाह के रसूल का दायित्व इस के सिवा कुछ नहीं कि उपदेश पहुँचा दे। और अल्लाह जो तुम बोलते और जो

أَجَلٌ لَّكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ
وَالنَّيَّارَةُ وَخِزْمَةٌ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْيَوْمِ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَتَذَكَّرُونَ ۝

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِّلنَّاسِ
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ذَلِكَ لِيَتَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ۝

1 अर्थात् जो बिना शिकार किये हाथ आये, जैसे मरी हुई मछली। अर्थात् जल का शिकार एहराम की स्थिति में तथा साधारण अवस्था में उचित है।

2 आदरणीय मासों से अभिप्रेत: जुलकादा जुलहिज्जा तथा मुहर्रम और रजब के महीने हैं।

मन में रखते हो, सब जानता है।

100. (हे नबी!) कह दो कि मलिन तथा पवित्र समान नहीं हो सकते। यद्यपि मलिन की अधिकता तुम्हें भा रही हो। तो हे मतिमानों! अल्लाह (की अवैज्ञा) से डरो, ताकि तुम सफल हो जाओ।^[1]

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ
كَثْرَةُ الْخَبِيثِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

101. हे ईमान वालो! ऐसी बहुत सी चीजों के विषय में प्रश्न न करो, जो यदि तुम्हें बता दी जायें, तो तुम्हें बुरा लग जाये। तथा यदि तुम उन के विषय में जब कि कुआन उतर रहा है, प्रश्न करोगे, तो वह तुम्हारे लिये खोल दी जायेगी, अल्लाह ने तुम्हें क्षमा कर दिया। और अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील^[2] है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءٍ إِنْ
تُبَدَّلْ لَكُمْ تَسْأَلُهُمْ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ
الْقُرْآنُ تَبَدَّلْ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ
حَلِيمٌ

102. ऐसे ही प्रश्न एक समुदाय ने तुम से पहले^[3] किये, फिर इस के कारण वह काफिर हो गये।

وَقَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا
بِهَا كَافِرِينَ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जिसे रोक दिया है, वही मलिन और जिस की अनुमति दी है, वही पवित्र है। अतः मलिन में रुची न रखो, और किसी चीज की कमी और अधिकता को न देखो, उस के लाभ और हानि को देखो।
- 2 इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि कुछ लोग नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उपहास के लिये प्रश्न किया करते थे। कोई प्रश्न करता कि मेरा पिता कौन है? किसी की ऊँटनी खो गयी हो तो आप से प्रश्न करता कि मेरी ऊँटनी कहाँ है? इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी-4622)
- 3 अर्थात् अपने रसूलों से। आयत का भावार्थ यह है कि धर्म के विषय में कुरेद न करो। जो करना है, अल्लाह ने बता दिया है, और जो नहीं बताया है, उसे क्षमा कर दिया है, अतः अपने मन से प्रश्न न करो, अन्यथा धर्म में सुविधा की जगह असुविधा पैदा होगी, और प्रतिबंध अधिक हो जायेंगे, तो फिर तुम उन का पालन न कर सकोगे।

103. अब्ब्राह ने बहीरा और साइबा तथा वसीला और हाम कुछ नहीं बनाया^[1] है, परन्तु जो काफिर हो गये, वह अब्ब्राह पर झूठ घड़ रहे हैं, और उन में अधिकतर निर्बोध हैं।

104. और जब उन से कहा जाता है कि उस की ओर आओ जो अब्ब्राह ने उतारा है, तथा रसूल की ओर (आओ) तो कहते हैं: हम को बही बस है, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है, क्या उन के पूर्वज कुछ न जानते रहे हों और न संमार्ग पर रहे हों?

105. हे ईमान वालो! तुम अपनी चिन्ता करो, तुम्हें वे हानि नहीं पहुँचा सकेंगे जो कुपथ हो गये, जब तुम सुपथ पर रहो। अब्ब्राह की ओर तुम सब को (परलोक में) फिर कर

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَيْفَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَالْأَكْثَرُ لَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَتَذَكَّرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا تَقْرِضُوا مَن صَلَّ إِذَا هْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مُجِيعَةً لِّمَعَايِبِكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

1 अरब के मिश्रणवादी देवी देवता के नाम पर कुछ पशुओं को छोड़ देते थे, और उन्हें पवित्र समझते थे, यहाँ उन्हीं की चर्चा की गयी है।

बहीरा- वह ऊँटनी जिस को, उस का कान चीर कर देवताओं के लिये मुक्त कर दिया जाता था, और उस का दूध कोई नहीं दूह सकता था।

साइबा- वह पशु जिसे देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे, जिस पर न कोई बोझ लाद सकता था, न सवार हो सकता था।

वसीला- वह ऊँटनी जिस का पहला तथा दूसरा बच्चा मादा हो, ऐसी ऊँटनी को भी देवताओं के नाम पर मुक्त कर देते थे।

हाम- नर जिस के वीर्य से दस बच्चे हो जायें, उन्हें भी देवताओं के नाम पर साँड बना कर मुक्त कर दिया जाता था।

भावार्थ यह है कि यह अनर्गल चीजें हैं। अब्ब्राह ने इन का आदेश नहीं दिया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं ने नरक को देखा कि उस की ज्वाला एक दूसरे को तोड़ रही है। और अमर बिन लुहय्य को देखा कि वह अपनी आँतें खींच रहा है। उसी ने सब से पहले साइबा बनाया था। (बुखारी- 4624)

जाना है, फिर वह तुम्हें तुम्हारे^[1]
कर्मों से सूचित कर देगा।

106. हे इमान वालो! यदि किसी के मरण का समय हो, तो बसिय्यत^[2] के समय तुम में से दो न्यायकारियों को अथवा तुम्हारे सिवा दो दूसरों को गवाह बनाये, यदि तुम धरती में यात्रा कर रहे हो, और तुम्हें मरण की आपदा आ पहुँचे। और उन दोनों को नमाज के बाद रोक लो, फिर वह दोनों अल्लाह की शपथ लें, यदि तुम्हें उन पर संदेह हो। वह यह कहें कि हम गवाही के द्वारा कोई मूल्य नहीं खरीदते, यद्यपि वह समीपवर्ती क्यों न हों, और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाते हैं, यदि हम ऐसा करें तो पापियों में हैं।

107. फिर यदि ज्ञान हो जाये कि वह दोनों (साक्षी) किसी पाप के अधिकारी हुये हैं, तो उन दोनों के स्थान पर दो दूसरे गवाह खड़े हो जायें, उन में से जिन का अधिकार पहले दोनों ने दबाया है, और वह दोनों शपथ लें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सही है, और हम ने कोई अत्याचार नहीं किया है। यदि किया है, तो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَيْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ أَوْ آخَرَيْنِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَصَ إِلَيْكُم مِّنْ صِيبَةِ الْمَوْتِ تُحْسِنُونَهَا مِنْ بَعْدِ الْقَوْلِ فَيَقْسِمُ بِاللَّهِ إِنْ أَرَسْتُمْ لَهُ شَيْئًا مِنْهُ ثَمًّا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا تَكْتُمُ شَهَادَةَ الْفُلُوكِ إِنْ أَدَّيْتُمُ الْأَشْيَاءَ ۖ

وَإِنْ عُرِضَ عَلَىٰ أُمَّتِكُمْ أَمَّا فَوَاحِشٌ يُقُومُونَ مِنْهَا مَهْمًا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوَّلِينَ فَيَقْسِمُ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَبْنَا إِلَّا بِالْأَيْمَنِ الظَّالِمِينَ ۖ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि यदि लोग कुपथ हो जायें, तो उन का कुपथ होना तुम्हारे लिये तर्क (दलील) नहीं हो सकता कि जब सभी कुपथ हो रहे हैं तो हम अकेले क्या करें? प्रत्येक व्यक्ति पर स्वयं अपना दायित्व है, दूसरों का दायित्व उस पर नहीं, अतः पूरा संसार कुपथ हो जाये तब भी तुम सत्य पर स्थित रहो।
2 बसिय्यत का अर्थ है: उत्तरदान, मरणासन्न आदेश।

(निस्सदेह) हम अत्याचारी हैं।

108. इस प्रकार अधिक आशा है कि वह सही गवाही देंगे, अथवा इस बात से डरेंगे कि उन की शपथों को दूसरी शपथों के पश्चात् न माना जाये, तथा अब्राह से डरते रहो, और (उस का आदेश) सुनो, और अब्राह उल्लंघनकारियों को सीधी राह नहीं^[1] दिखाता।

109. जिस दिन अब्राह सब रसूलों को एकत्र करेगा, फिर उन से कहेगा कि तुम्हें (तुम्हारी जातियों की ओर से) क्या उत्तर दिया गया? वह कहेंगे कि हमें इस का कोई ज्ञान^[2] नहीं। निस्सदेह तू ही सब छुपे तथ्यों का ज्ञानी है।

110. तथा याद करो, जब अब्राह ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! अपने ऊपर तथा अपनी माता पर मेरे पुरस्कार को याद कर, जब मैं ने पवित्रात्मा (जिब्रिल) द्वारा तुझे समर्थन दिया, तू गहवारे (गोद) में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था, तथा तुझे पुस्तक और प्रबोध तथा तौरात

ذَلِكَ أَذِّنُ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَى وَجْهِهَا
أَوْ يَخَافُوا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ إِجْرَائِهِمْ وَأَتَقُوا اللَّهَ
وَاسْتَعُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا
لَا عِلْمَ لَنَا بِكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ۝

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَعْصِي أَمْرَ مَرْيَمَ إِذْ تُرِيحُ عَلَىكَ
وَعَلَى وَالِدَتِكَ إِذْ أَبَدْتُكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ
تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْبَيْتِ وَكَلَّمَكَ الْكِتَابُ
وَالْحِكْمَةَ وَالنُّورَ وَالْإِنجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ
الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِأَذْنِ فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ
طَائِرًا بِأَذْنِ وَتُخْبِرُ الْأَكْثَمَ وَالْأَبْرَصَ بِأَذْنِ

- 1 आयत 106 से 108 तक में बसिय्यत तथा उस के साक्ष्य का नियम बताया जा रहा है कि दो विश्वस्त व्यक्तियों को साक्षी बनाया जाये, और यदि मुसलमान न मिलें तो गैर मुस्लिम भी साक्षी हो सकते हैं।
साक्षियों को शपथ के साथ साक्ष्य देना चाहिये।
विवाद की दशा में दोनों पक्ष अपने अपने साक्षी लायें।
जो इन्कार करे उस पर शपथ है।

- 2 अर्थात् हम नहीं जानते कि उन के मन में क्या था, और हमारे बाद उन का कर्म क्या रहा?

और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का रूप बनाता, और उस में फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था। और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था, और जब तू मुर्दों को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था, और मैं ने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उन के पास खुली निशानियाँ लाया, तो उन में से काफ़िरो ने कहा कि यह तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।

111. तथा याद कर, जब मैं ने तेरे हवारियों के दिलों में यह बात डाल दी कि मुझ पर तथा मेरे रसूल (ईसा) पर ईमान लाओ, तो सब ने कहा कि हम ईमान लाये, और तू साक्षी रह कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।

112. जब हवारियों ने कहा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तेरा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आकाश से थाल (दस्तर ख़्वान) उतार दे। उस (ईसा) ने कहा: तुम अब्राह से डरो, यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।

113. उन्होंने ने कहा: हम चाहते हैं कि उस में से खायें, और हमारे दिलों को संतोष हो जाये, तथा हमें विश्वास हो जाये कि तू ने हमें जो कुछ बताया है सचच है, और हम उस के साक्षियों में से हो जायें।

وَإِذْ أَخْرَجَ الْمُوتَىٰ بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنكَ إِذْ جُنَّتْهُمُ بِأَلْسِنَتِهِمْ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَشَهِدُوا بِآثَانَا مُسْلِمُونَ ۝

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

قَالُوا ارْزُقْنَا إِنَّ نَآكِلَ مِنْهَا وَنَطْمِئِنُّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمُ أَنَّ قَدْ صَدَّقْتَنَا وَتَكُونُ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝

114. मर्यम के पुत्र ईसा ने प्रार्थना की: हे अल्लाह हमारे पालनहार! हम पर आकाश से एक थाल उतार दे, जो हमारे तथा हमारे पश्चात् के लोगों के लिये उत्सव (का दिन) बन जाये, तथा तेरी ओर से एक चिन्ह (निशानी)। तथा हमें जीविका प्रदान कर, तू उत्तम जीविका प्रदाता है।

115. अल्लाह ने कहा मैं तुम पर उसे उतारने वाला हूँ, फिर उस के पश्चात् भी जो कुफ़्र (अविश्वास) करेगा, तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा, ऐसा दण्ड¹ कि संसार बासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूँगा।

116. तथा जब अल्लाह (प्रलय के दिन) कहेगा: हे मर्यम के पुत्र ईसा! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे तथा मेरी माता को पूज्य (अराध्य) बना लो? वह कहेगा: तू पवित्र है, मुझ से यह कैसे हो सकता है कि ऐसी बात कहूँ जिस का मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैं ने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उस का ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है, और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में तू ही परोक्ष (गैब) का अति ज्ञानी है।

117. मैं ने तो उन से केवल वही कहा था, जिस का तू ने आदेश दिया था

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً
مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً
مِّنكَ وَأَرْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ
فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ
الْعَالَمِينَ ۝

وَلَمَّا قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ
اتَّخِذُونِي وَأُمَّيَ الْهَيْوَتِ مِن دُونِ اللَّهِ قُلْتُ سُبْحَانَكَ مَا
يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّهِ إِن كُنْتُ قُلْتُهُ
فَقَدْ عَلِمْتُمْ لَعْنَتِي فَنَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي
نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنْتَ عََلَمُ الْغُيُوبِ ۝

فَأَقْبَلْتُ لَهُمُ الْآيَاتِ مَوْجِبَةً إِلَيْنَا أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي

1 अधिकतर भाष्यकारों ने लिखा है, कि वह थाल आकाश से उतरा। (इब्ने कसीर)

कि अल्लाह की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उन की दशा जानता था जब तक उन में था और जब तू ने मेरा समय पूरा कर दिया^[1], तो तू ही उन को जानता था। और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है।

118. यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वह तेरे दास (बन्दे) हैं, और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।

119. अल्लाह कहेगा: यह वह दिन है, जिस में सच्चों को उन का सच्च ही लाभ देगा। उन्हीं के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उन में नित्य सदावासी होंगे, अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया तथा वह अल्लाह से प्रसन्न हो गये और यही सब से बड़ी सफलता है।

120. आकाशों तथा धरती और उन में जो कुछ है, सब का राज्य अल्लाह ही का^[2] है, तथा वह जो चाहे कर सकता है।

وَرَبَّكُمْ وَكَذُتْ عَلَيْهِمْ شَهِيدٌ اِمَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَبَّتْ
تَوْفِيقِي كُنْتُ اَنْتَ الرَّحِيْمُ عَلَيْهِمْ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ وَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ وَاِنَّكَ
اَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ ۝

قَالَ اللهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ فِيْهِمْ اَمْ لَهُمْ
حَبْتٌ خَيْرٌ مِّنْ خُبْرِهَا الْاَنْهَرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا اَبَدًا رَّضِيَ
اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

لِلّٰهِ تِلْكَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضُ وَمَا فِيْهِنَّ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

- 1 और मुझे आकाश पर उठा लिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा, जब प्रलय के दिन कुछ लोग बायें से धर लिये जायेंगे तो मैं भी यही कहूंगा। (बुखारी- 4626)

- 2 आयत 116 से अब तक की आयतों का सारांश यह है कि अल्लाह ने पहले अपने वह पुरस्कार याद दिलाये जो ईसा अलैहिस्सलाम पर किये। फिर कहा कि सत्य की शिक्षाओं के होते तेरे अनुयायियों ने क्यों तुझे तथा तेरी माता को पूज्य बना लिया? इस पर ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मैं इस से निर्दोष हूँ। अभिप्राय यह है कि सभी नबियों ने एकेश्वरवाद तथा सत्कर्म की शिक्षा दी। परन्तु उन के अनुयायियों ने उन्हीं को पूज्य बना लिया। इसलिये इस का भार अनुयायियों और वे जिस की पूजा कर रहे हैं उन पर है। वह स्वयं इस से निर्दोष हैं।

सूरह अन्आम - 6

سُورَةُ الْأَنْعَامِ

सूरह अन्आम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह भक्की है, इस में 165 आयते हैं

- अन्आम का अर्थ: चौपाये होता है। इस सूरह में कुछ चौपायों के वैध तथा अवैध होने के संबंध में अरब वासियों के भ्रम का खण्डन किया गया है। और इसी लिये इस सूरह का नाम (अन्आम) रखा गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन किया गया है। और एकेश्वर का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में आखिरत (परलोक) के प्रति आस्था का प्रचार है। तथा इस कुबिचार का खण्डन है कि जो कुछ है यही संसारिक जीवन है।
- इस में उन नैतिक नियमों को बताया गया है जिन पर इस्लामी समाज की स्थापना होती है और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरुद्ध आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।
- आकाशों तथा धरती और स्वयं मनुष्य में अल्लाह के एक होने की निशानियों पर ध्यान दिलाया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मुसलमानों को दिलासा दी गई है।
- इस्लाम के विरोधियों को उन की अचेतना पर सावधान किया गया है।
- अन्त में कहा गया है कि लोगों ने अलग-अलग धर्म बना लिये हैं जिन का सत्धर्म से कोई संबंध नहीं। और प्रत्येक अपने कर्म का उत्तरदायी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने आकाशों तथा धरती को बनाया तथा अंधेरे और उजाला

أَحْمَدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا

يَرْبِّيهِمْ يَعْدِلُونَ ۝

बनाया, फिर भी जो काफिर हो गये, वह (दूसरों को) अपने पालनहार के बराबर समझते^[1] हैं।

2. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से उत्पन्न^[2] किया फिर (तुम्हारे जीवन की) अवधि निर्धारित कर दी, और एक निर्धारित अवधि (प्रलय का समय) उस के पास^[3] है, फिर भी तुम सदेह करते हो।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلَكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

3. वही अल्लाह पूज्य है आकाशों तथा धरती में वह तुम्हारे भेदों तथा खुली बातों को जानता है। तथा तुम जो भी करते हो उस को जानता है।

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ بِكُمْ وَجْهَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝

4. और उन के पास उन के पालनहार की आयतों (निशानियों) में से कोई आयत (निशानी) नहीं आई, जिस से उन्होंने ने मुँह फेर न^[4] लिये हों।

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

5. उन्होंने ने सत्य को झुठला दिया है, जब भी उन के पास आया। तो शीघ्र ही उन के पास उस के समाचार आ जायेंगे^[5] जिस का उपहास कर रहे हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

6. क्या वह नहीं जानते कि उन से पहले हम ने कितनी जातियों का नाश कर

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قُرُونٍ مَضَتْهُمْ

1 अर्थात् वह अंधेरी और प्रकाश में विवेक (अन्तर) नहीं करते, और रचित को रचयिता का स्थान देते हैं।

2 अर्थात् तुम्हारे पिता आदम अलैहिस्सलाम को।

3 दो अवधि एक जीवन और कर्म के लिये, तथा दूसरी कर्मों के फल के लिये।

4 अर्थात् मिश्रणवादियों के पास।

5 अर्थात् उस के तथ्य का ज्ञान हो जायेगा। यह आयत मक्का में उस समय उतरी जब मुसलमान विवश थे, परन्तु बद्र के युद्ध के बाद यह भविष्य वाणी पूरी होने लगी और अन्ततः मिश्रणवादी परास्त हो गये।

दिया जिन्हें हम ने धरती में ऐसी शक्ति और अधिकार दिया था जो अधिकार और शक्ति तुम्हें नहीं दिये हैं। और हम ने उन पर धारा प्रवाह वर्षा की, और उन की धरती में नहरें प्रवाहित कर दी, फिर हम ने उन के पापों के कारण उन्हें नाश कर दिया,^[1] और उन के पश्चात् दूसरी जातियों को पैदा कर दिया।

7. (हे नबी!) यदि हम आप पर कागज में लिखी हुई कोई पुस्तक उतार^[2] दें, फिर वह उसे अपने हाथों से छुयें, तब भी जो काफिर है, कह देंगे कि यह तो केवल खुला हुआ जादू है।

8. तथा उन्होंने ने कहा:^[3] इस (नबी) पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा^[4] गया? और यदि हम कोई फरिश्ता उतार देते, तो निर्णय ही कर दिया जाता, फिर उन्हें अब्सर नहीं दिया जाता।^[5]

9. और यदि हम किसी फरिश्ते को नबी बनाते, तो उसे किसी पुरुष ही के में बनाते,^[6] और उन को उसी संदेह में

فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نَكُنْ لَكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ
مِدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ
فَآهَلْكَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا
الْآخَرِينَ ۝

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرطاسٍ فَلَمَسُوهُ
بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا
سِحْرٌ مُبِينٌ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا
لَقُضِيَ الْأَمْرُ لَمْ لَا يُنْظَرُونَ ۝

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا
عَلَيْهِمْ مَا يَلْبَسُونَ ۝

1 अर्थात् अब्राह का यह नियम है कि पापियों को कुछ अब्सर देता है, और अन्ततः उन का विनाश कर देता है।

2 इस में इन काफिरों के दुराग्रह की दशा का वर्णन है।

3 जैसा कि वह माँग करते हैं। (देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 93)

4 अर्थात् अपने वास्तविक रूप में जब कि जिवरील (अलैहिस्सलाम) मनुष्य के रूप में आया करते थे।

5 अर्थात् मानने या न मानने का।

6 क्योंकि फरिश्ते को आँखों से उस के स्वभाविक रूप में देखना मानव के बस में नहीं है। और यदि फरिश्ते को रसूल बना कर मनुष्य के रूप में भेजा जाता

डाल देते जो सदेह (अब) कर रहे हैं।

10. हे नबी! आप से पहले भी रसूलों के साथ उपहास किया गया, तो जिन्होंने उन से उपहास किया, उन को उन के उपहास के (दुष्परिणाम ने) घेर लिया।

وَلَقَدْ اسْتَهْزَؤْا بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَمَّاتِ
بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ۝

11. (हे नबी!) उन से कहो कि धरती में फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का दुष्परिणाम क्या^[1] हुआ?

قُلْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

12. (हे नबी!) उन से पूछिये कि जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह किस का है? कहो: अल्लाह का है, उस ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर^[2] लिया है, वह तुम्हें अवश्य प्रलय के दिन एकत्र^[3] करेगा जिस में कोई संदेह नहीं, जिन्होंने ने अपने आप को क्षति में डाल लिया वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

قُلْ لِّمَن مَّا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ قُلْ لِلَّهِ
كُتِبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ لِيَجْمعَهُم إِلَى يَوْمِ
الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝

तब भी यह कहते यह तो मनुष्य हैं। यह रसूल कैसे हो सकता है?

- 1 अर्थात् मक्का से शाम तक आद, समुद्र तथा लूत (अलैहिस्सलाम) की बस्तियों के अवशेष पड़े हुये हैं, वहाँ जाओ और उन के दुष्परिणामों से शिक्षा लो।
- 2 अर्थात् पूरे विश्व की व्यवस्था उस की दया का प्रमाण है। तथा अपनी दया के कारण ही विश्व में दण्ड नहीं दे रहा है। हदीस में है कि जब अल्लाह ने उत्पत्ति कर ली तो एक लेख लिखा जो उस के पास उस के अर्श (सिंहासन) के ऊपर है: ((निश्चय मेरी दया मेरे क्रोध से बढ़ कर है।)) (सहीह बुखारी- 3194, मुस्लिम-2751) दूसरी हदीस में है कि अल्लाह के पास सौ दया हैं। उस में से एक को जिबों, इन्सानों तथा पशुओं और कीड़ों-मकोड़ों के लिये उतारा है। जिस से वह आपस में प्रेम तथा दया करते हैं तथा निन्हावे दया अपने पास रख ली है। जिन से प्रलय के दिन अपने बंदों (भक्तों) पर दया करेगा। (सहीह बुखारी- 6000, सहीह मुस्लिम-2752)
- 3 अर्थात् कर्मों का फल देने के लिये।

13. तथा उसी का^[1] है, जो कुछ रात और दिन में बस रहा है, और वह सब कुछ सुनता जानता है।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الْبَيْتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ

14. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवा (किसी) को सहायक बना लूँ, जो आकाशों तथा धरती का बनाने वाला है, वह सब को खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता? आप कहिये कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ तथा कदापि मुश्रिकों में से न बनूँ।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أُعْجِدُ وَلَئِنْ قُطِرَ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ وَهُوَ يُطْعِمُهُمْ وَلَا يُطْعَمُهُمْ قُلْ إِنْ أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

15. आप कह दें कि मैं डरता हूँ यदि अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो एक घोर दिन^[2] की यातना से।

قُلْ إِنْ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ

16. तथा जिस से उस (यातना) को उस दिन फेर दिया गया, तो अल्लाह ने उस पर दया कर दी, और यही खुली सफलता है।

مَنْ يُصِرْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَجِمَهُ وَذَلِكَ الْقُورَةُ الْمُنِيْنُ

17. यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाये, तो उस के सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर दे और यदि तुम्हें कोई लाभ पहुँचाये, तो वही जो चाहे कर सकता है।

وَإِنْ يَسْأَلْكَ اللَّهُ بَصِيرَةً فَلَا تُصِرْ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَسْأَلْكَ عَنْ شَيْءٍ فَعَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

18. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْغَنِيُّ

1 अर्थात् उसी के अधिकार में तथा उसी के आधीन है।

2 इन आयतों का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ही ने इस विश्व की उत्पत्ति की है, वही अपनी दया से इस की व्यवस्था कर रहा है, और सब को जीविका प्रदान कर रहा है, तो फिर तुम्हारा स्वभाविक कर्म भी यही होना चाहिये कि उसी एक की वंदना करो। यह तो बड़े कुपथ की बात होगी कि उस से मुँह फेर कर दूसरों की पूजा अराधना करो और उन के आगे झुको।

पूरा अधिकार रखता है तथा वह बड़ा ज्ञानी सर्वसूचित है।

19. हे नबी! इन (मुश्रिकों) से पूछो कि किस की गवाही सब से बड़ कर है? आप कह दें कि अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच गवाह^[1] है। तथा मेरी ओर यह कुर्आन वही (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है, ताकि मैं तुम्हें सावधान करूँ^[2] तथा उसे जिस तक यह पहुँचे। क्या वास्तव में तुम यह साक्ष्य (गवाही) दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? आप कह दें कि मैं तो इस की गवाही नहीं दे सकता। आप कह दें कि वह तो केवल एक ही पूज्य है, तथा वास्तव में मैं तुम्हारे शिर्क से विरक्त हूँ।

20. जिन लोगों को हम ने पुस्तक^[3] प्रदान की है, वह आप को उसी प्रकार पहचानते हैं, जैसे अपने पुत्रों को पहचानते^[4] हैं, परन्तु जिन्होंने स्वयं को क्षति में डाल रखा है, वही ईमान नहीं ला रहे हैं।

21. तथा उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये^[5], अथवा उस की आयतों को

قُلْ أَيْ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلْ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي
وَبَيْنَكُمْ وَأَوْحَىٰ إِلَيَّ هَذَ الْقُرْآنَ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ
وَمَنْ لَبَّغَكُمْ أَفَبِكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً
أُخْرَىٰ قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌُ وَاحِدٌ وَإِنِّي
بِرَأْيِي مُنَافٍ شَرِكُونَ

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
أَبْنَاءَهُمُ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ

1 अर्थात् मेरे नबी होने का साक्षी अल्लाह तथा उस का मुझ पर उतारा हुआ कुर्आन है।

2 अर्थात् अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से।

3 अर्थात् तौरात तथा इंजील आदि।

4 अर्थात् आप के उन गुणों द्वारा जो उन की पुस्तकों में वर्णित हैं।

5 अर्थात् अल्लाह का साक्षी बनाये।

झूठलाये? निस्संदेह अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

22. जिस दिन हम सब को एकत्र करेंगे, तो जिन्होंने शिर्क किया है, उन से कहेंगे कि तुम्हारे वह साझी कहाँ गये जिन्हें तुम (पूज्य) समझ रहे थे?
23. फिर नहीं होगा उन का उपद्रव इस के सिवा कि: वह कहेंगे कि अल्लाह की शपथ! हम मुश्रिक थे ही नहीं।
24. देखो कि कैसे अपने ऊपर ही झूठ बोल गये और उन से वह (मिथ्या पूज्य) जो बना रहे थे खो गये!
25. और उन (मुशिरकों) में से कुछ आप की बात ध्यान से सुनते हैं, और (वास्तव में) हम ने उन के दिलों पर पर्दे (आवरण) डाल रखे हैं कि बात न समझें^[1], और उन के कान भारी कर दिये हैं, यदि वह (सत्य के) प्रत्येक लक्षण देख लें, तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे यहाँ तक कि जब वह आप के पास आ कर झगड़ते हैं, जो काफिर है तो वह कहते हैं कि यह तो पूर्वजों की कथायें हैं।
26. वह उसे^[2] (सुनने से) दूसरों को रोकते हैं, तथा स्वयं भी दूर रहते हैं। और वह अपना ही विनाश कर रहे हैं। परन्तु समझते नहीं हैं।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
أَيْنَ مُرْكَاؤُكُمْ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبُّنَا مَا كُنَّا
مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

أَنظُرْ كَيْفَ كَذَّبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٢٤﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يَرَوْا
آيَةً لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ لُجُودُ لَوْ أَنَّكَ
يَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ
إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

1 न समझने तथा न सुनने का अर्थ यह है कि उस से प्रभावित नहीं होते क्योंकि कि कुफ़्र तथा निफ़ाक़ के कारण सत्य से प्रभावित होने की क्षमता खो जाती है।

2 अर्थात् कुआन सुनने से।

27. तथा (हे नबी!) यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे, जब वह नरक के समीप खड़े किये जायेंगे, तो वह कामना कर रहे होंगे कि ऐसा होता कि हम संसार की ओर फेर दिये जाते और अपने पालनहार की आयतों को नहीं झुठलाते, और हम ईमान वालों में हो जाते।

28. बल्कि उन के लिये वह बात खुल जायेगी, जिसे वह इस से पहले छुपा रहे थे^[1], और यदि संसार में फेर दिये जायें, तो फिर वही करेंगे जिस से रोके गये थे। वास्तव में वह है ही झूठा।

29. तथा उन्होंने ने कहा कि: जीवन बस हमारा संसारिक जीवन है और हमें फिर जीवित होना^[2] नहीं है।

30. तथा यदि आप उन्हें उस समय देखेंगे जब वह (प्रलय के दिन) अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे, उस समय अब्बाह उन से कहेगा: क्या यह (जीवन) सत्य नहीं? वह कहेंगे: क्यों नहीं, हमारे पालनहार की शपथ! इस पर अब्बाह कहेगा: तो अब अपने कुफ्र करने की यातना चखो।

31. निश्चय वह क्षति में पड़ गये, जिन्होंने

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَىٰ النَّارِ يَبْتَغُونَ الْبَرْدَ وَلَا تُكْذِبُ يَابِيتَ رَبِّنَا وَلَنُكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

بَلْ يَدْعَاهُم مَّا كَانُوا يَعْبُدُونَ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

وَقَالُوا إِنَّا فِي الْأَحْيَاءِ أَشْيَاءُ الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٠﴾

فَذُوقُوا الْعَذَابَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣١﴾

1 अर्थात् जिस तथ्य को वह शपथ लेकर छुपा रहे थे कि हम मिश्रणवादी नहीं थे, उस समय खुल जायेगा। अथवा आप (सब अब्बाह अलैहि व सब्रम) को पहचानते हुये भी यह बात जो छुपा रहे थे, वह खुल जायेगी। अथवा द्विधावादियों के दिल का वह रोग खुल जायेगा, जिसे वह संसार में छुपा रहे थे। (तफसीर इब्ने कसीर)

2 अर्थात् हम मरने के पश्चात् परलोक में कर्मों का फल भोगने के लिये जीवित नहीं किये जायेंगे।

ने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, यहाँ तक कि जब प्रलय अचानक उन पर आ जायेगी तो कहेंगे: हाय! इस विषय में हम से बड़ी चूक हुई। और वह अपने पापों का बोझ अपनी पीठों पर उठाये होंगे। तो कैसा बुरा बोझ है जिसे वह उठा रहे हैं।

32. तथा संसारिक जीवन एक खेल और मनोरंजन^[1] है। तथा परलोक का घर ही उत्तम^[2] है, उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों, तो क्या तुम समझत^[3] नहीं हो?

33. (हे नबी!) हम जानते हैं कि उन की बातें आप को उदासीन कर देती हैं, तो वास्तव में वह आप को नहीं झुठलाते, परन्तु यह अत्याचारी अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

34. और आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये। तो इसे उन्होंने ने सहन किया, और उन्हें दुःख दिया गया, यहाँ तक कि हमारी सहायता आ गयी। तथा अल्लाह की बातों को कोई बदल नहीं^[4] सकता, और आप के

جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَخْتَرُونَ مَا كُنَّا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَى ظُهُورِهِمْ أَلَسَاءَ مَا يَرْثُونَ ﴿٣٢﴾

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَلَكِنَّ الْآخِرَةَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٣٣﴾

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يَكْذِبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿٣٤﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأَوْدُوا وَاحْتَفَىٰ أَتُهُمْ نَضْرِبُهَا وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِن نَّبَائِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् साम्यिक और आस्थायी है।

2 अर्थात् स्थायी है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यदि कर्मों के फल के लिये कोई दूसरा जीवन न हो तो, संसारिक जीवन एक मनोरंजन और खेल से अधिक कुछ नहीं रह जायेगा। तो क्या यह संसारिक व्यवस्था इसी लिये की गयी है कि कुछ दिनों खेलो और फिर समाप्त हो जाये? यह बात तो समझ बूझ का निर्णय नहीं हो सकती। अतः एक दूसरे जीवन का होना ही समझ बूझ का निर्णय है।

4 अर्थात् अल्लाह के निर्धारित नियम को, कि पहले वह परीक्षा में डालता है, फिर

पास रसूलों के समाचार आ चुके हैं।

35. और यदि आप को उन की विमुखता भारी लग रही है, तो यदि आप से हो सके, तो धरती में कोई सुरंग खोज लें, अथवा आकाश में कोई सीढ़ी लगा लें, फिर उन के पास कोई निशानी (चमत्कार) ला दें, और यदि अल्लाह चाहे तो इन्हें मार्गदर्शन पर एकत्र कर दे। अतः आप कदापि अज्ञानों में न हों।

36. आप की बात वही स्वीकार करेंगे, जो सुनते हों, परन्तु जो मुर्दे हैं उन्हें तो अल्लाह^[1] ही जीवित करेगा, फिर उसी की ओर फेंरे जायेंगे।

37. तथा उन्होंने ने कहा कि: नबी पर उस के पालनहार की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह इस का सामर्थ्य रखता है, परन्तु अधिकतर लोग अज्ञान हैं।

38. धरती में विचरते जीव तथा अपने दो पंखों से उड़ते पक्षी तुम्हारी जैसी जातियाँ हैं, हम ने पुस्तक^[2] में कुछ

وَلَنْ كَانَ كِبَرُ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَكًا فِي السَّمَاءِ فَتُلَاقِهِمْ بِآيَةٍ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَى فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْخَاطِلِينَ ۝

إِنَّمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَمْعُونَ وَالْمُتَوَلِّينَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً وَلَٰكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا ظِحْرٍ يَظِيرُ إِلَّا أَمَّا أَمْثَلَكُمْ مَأْفُوكُنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ

सहायता करता है।

- 1 अर्थात् प्रलय के दिन उन की समाधियों से। आयत का भावार्थ यह है कि आप के सदुपदेश को वही स्वीकार करेंगे जिन की अन्तरात्मा जीवित हो। परन्तु जिन के दिल निर्जीव हैं तो यदि आप धरती अथवा आकाश से लाकर उन्हें कोई चमत्कार भी दिखा दें तब भी वह उन के लिये व्यर्थ होगा। यह सत्य को स्वीकार करने की योग्यता ही खो चुके हैं।

- 2 पुस्तक का अर्थ ((लौहे महफूज)) है जिस में सारे संसार का भाग्य लिखा हुआ है।

कमी नहीं की⁽¹⁾ है, फिर वह अपने पालनहार की ओर ही एकत्र किये⁽²⁾ जायेंगे।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَرْثَدَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ جَاءَ بِمَنْفَعَةٍ لِقَوْمٍ فَهُوَ شَرِيحٌ مِنْهُمْ» ⑤

39. तथा जिन्होंने ने हमारी निशानियों को झुठला दिया, वह गूंगे, बहरे, अंधेरो में हैं। जिसे अल्लाह चाहता है कुपथ करता है, और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا إِلَيْنَا مِنْهُمْ وَكَانُوا فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ
يَشَاءُ اللَّهُ يَصِلْهُ وَمَنْ يَشَاءُ اللَّهُ عَلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ۝

40. (हे नबी!) उन से कहो कि यदि तुम पर अल्लाह का प्रकोप आ जाये अथवा तुम पर प्रलय आ जाये, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, यदि तुम सच्चे हो?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَتُؤْمِنُونَ
السَّاعَةَ أَغْبِرَ اللَّهُ نَدْوَاهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٠﴾

41. बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, तो वह दूर करता है उस को जिस के लिये तुम पुकारते हो, यदि वह चाहे, और तुम उसे भूल जाते हो, जिसे साझी^[3] बनाते हो।

بَلْ أَرِيتُمْ مَا تُدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنِّي
سَمَاءٌ وَتُفُونُ فَمَا تُدْرِكُونَ ﴿١٠﴾

42. और आप से पहले भी समुदायों की

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُمْ بِالْبَأْسَاءِ

1 इन आयतों का भावार्थ यह है कि यदि तुम निशानियों और चमत्कार की माँग करते हो, तो यह पूरे विश्व में जो जीव और पक्षी हैं, जिन के जीवन साधनों की व्यवस्था अब्राहम ने की है, और सब के भाग्य में जो लिख दिया है, वह पूरा हो रहा है। क्या तुम्हारे लिये अब्राहम के अस्तित्व और गुणों के प्रतीक नहीं हैं? यदि तुम ज्ञान तथा समझ से काम लो, तो यह विश्व की व्यवस्था ही ऐसा लक्षण और प्रमाण है कि जिस के पश्चात् किसी अन्य चमत्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।

2. अर्थ यह है सब जीवों के प्राण मरने के पश्चात् उसी के पास एकत्रित हो जाते हैं क्योंकि वही सब का उत्पत्तिकार है।

3 इस आयत का भावार्थ यह है कि किसी घोर आपदा के समय तुम्हारा अल्लाह ही को गुहारना स्वयं तुम्हारी ओर से उस के अकेले पूज्य होने का प्रमाण और स्वीकार है।

ओर हम ने रसूल भेजे, तो हम ने उन्हें आपदाओं और दुखों में डाला^[1], ताकि वह विनय करें।

وَالْفَرَاءَ لَعَلَّهُمْ يَنْصَرُّونَ ۝

43. तो जब उन पर हमारी यातना आई, तो वह हमारे समक्ष झुक क्यों नहीं गये? परन्तु उन के दिल और भी कड़े हो गये, तथा शैतान ने उन के लिये उन के कुकर्मों को सुन्दर बना^[2] दिया।

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

44. तो जब उन्होंने ने उसे भुला दिया जो याद दिलाये गये थे, तो हम ने उन पर प्रत्येक (सुख सुविधा) के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब जो कुछ वह दिये गये उस से प्रफुल्ल हो गये, तो हम ने उन्हें अचानक घेर लिया, और वह निराश हो कर रह गये।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى إِذَا فَرِحُوا بِهَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ۝

45. तो उन की जड़ काट दी गई जिन्होंने ने अत्याचार किया, और सब प्रशंसा अल्लाह ही के लिये है। जो पूरे विश्व का पालनहार है।

نَقُطِعَ دَائِرَةُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

46. (हे नबी!) आप कहें कि क्या तुम ने इस पर भी विचार किया कि यदि अल्लाह तुम्हारे सुनने तथा देखने की शक्ति छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन है जो तुम्हें इसे वापस दिला सके? देखो, हम कैसे बार बार आयतें^[3] प्रस्तुत कर रहे हैं। फिर भी

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَبَصَارَكُمْ وَخَدَمَ عَلَى قُلُوبِكُمْ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِهِ أَنْفَرُ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْأَيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذَبُونَ ۝

1 अर्थात् ताकि अल्लाह से विनय करें, और उस के सामने झुक जायें।

2 आयत का अर्थ यह है कि जब कुकर्मों के कारण दिल कड़े हो जाते हैं, तो कोई भी बात उन्हें सुधार के लिये तय्यार नहीं कर सकती।

3 अर्थात् इस बात की निशानियाँ की अल्लाह ही पूज्य है, और दूसरे सभी पूज्य

वह मुँह^[1] फेर रहे हैं।

47. आप कहें कि कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना अचानक या खुल कर आ जाये, तो अत्याचारियों (मुश्रिकों) के सिवा किस का विनाश होगा?
48. और हम रसूलों को इसी लिये भेजते हैं कि वह (आज्ञाकारियों को) शुभ सुचना दें तथा (अवैज्ञाकारियों को) डरायें। तो जो ईमान लाये तथा अपने कर्म सुधार लिये, उन के लिये कोई भय नहीं, और न वह उदासीन होंगे।
49. और जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अपनी अवैज्ञा के कारण यातना अवश्य मिलेगी।
50. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पास अल्लाह का कोष नहीं है, और न मैं परोक्ष का ज्ञान रखता हूँ, तथा न मैं यह कहता कि मैं कोई फरिश्ता हूँ। मैं तो केवल उसी पर चल रहा हूँ जो मेरी ओर बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है। आप कहें कि क्या अन्धा^[2] तथा आँख वाला बराबर हो जायेंगे? क्या तुम सोच विचार नहीं करते?
51. और इस (बह्नी द्वारा) उन को सचेत करो, जो इस बात से डरते हों कि

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَشْرَكُوا بِاللهِ بَعْثَةً
أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْعَظُمُ الظَّالِمُونَ ۝

وَالرُّسُلُ الْمُرْسَلِينَ الْإِمْبِيَّيْنَ وَمُنذِرِينَ
فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ۝

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ إِنِّي أَتَّبِعُ إِلَّا مَا
يُوحَىٰ إِلَيَّ، قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ۝

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُنْشَرَوْا إِلَىٰ

मिथ्या हैं। (इब्ने कसीर)

1 अर्थात् सत्य से।

2 अन्धा से अभिप्राय: सत्य से विचलित है। इस आयत में कहा गया है कि नबी, मानव पुरुष से अधिक और कुछ नहीं होता। वह सत्य का अनुयायी तथा उसी का प्रचारक होता है।

वे अपने पालनहार के पास (प्रलय के दिन) एकत्र किये जायेंगे, इस दशा में कि अल्लाह के सिवा कोई सहायक तथा अनुशंसक (सिफारशी) न होगा, संभवतः वह आज्ञाकारी हो जायें।

رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝

52. (हे नबी!) आप उन्हें अपने से दूर न करें जो अपने पालनहार की बंदना प्रातः संध्या करते उस की प्रसन्नता की चाह में लगे रहते हैं। उन के हिसाब का कोई भार आप पर नहीं है और न आप के हिसाब का कोई भार उन पर^[1] है, अतः यदि आप उन्हें दूर करेंगे, तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

53. और इसी प्रकार^[2] हम ने कुछ लोगों की परीक्षा कुछ लोगों द्वारा की है, ताकि वह कहें कि क्या यही है जिन पर हमारे बीच से अल्लाह ने उपकार किया^[3] है? तो क्या अल्लाह कृतज्ञों को भली भाँति जानता नहीं है?

وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝

54. तथा (हे नबी!) जब आप के पास वह लोग आयें, जो हमारी आयतों (कुरआन) पर ईमान लाये हैं तो आप कहें कि तुम^[4] पर सलाम (शान्ति)

وَإِذَا جَاءَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا إِبْهَالًا فَلَهُ نَقَبٌ ۝

1 अर्थात् न आप उन के कर्मों के उत्तरदायी हैं, न वे आप के कर्मों को रिवायतों से विद्वित होता है कि मक्का के कुछ धनी मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आप की बातें सुनना चाहते हैं। किन्तु आप के पास नीच लोग रहते हैं, जिन के साथ हम नहीं बैठ सकते। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)। हदीस में है कि अल्लाह, तुम्हारे रूप और वस्त्र नहीं देखता किन्तु तुम्हारे दिलों और कर्मों को देखता है। (सहीह मुस्लिम- 2564)

2 अर्थात् धनी और निर्धन बना कर।

3 अर्थात् मार्ग दर्शन प्रदान किया।

4 अर्थात् उन के सलाम का उत्तर दें, और उन का आदर सम्मान करें।

है। अब्राह ने अपने ऊपर दया अनिवार्य कर ली है कि तुम में से जो भी अज्ञानता के कारण कोई कुकर्म कर लेगा, फिर उस के पश्चात् तौबा (क्षमा याचना) कर लेगा, और अपना सुधार कर लेगा तो निःसंदेह अब्राह अति क्षमाशील दयावान् है।

55. और इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन करते हैं, और इस के लिये ताकि अपराधियों का पथ उजागर हो जाये (और सत्यवादियों का पथ संदिग्ध न हो।)

56. (हे नबी!) आप (मुशरिकों से) कह दें कि मुझे रोक दिया गया है कि मैं उन की बंदना करूँ जिन्हें तुम अब्राह के सिवा पुकारते हो। उन से कह दो कि मैं तुम्हारी आकांक्षाओं पर नहीं चल सकता। मैं ने ऐसा किया तो मैं सत्य से कुपथ हो गया, और मैं सुपथों में से नहीं रह जाऊँगा।

57. आप कह दें कि मैं अपने पालनहार के खुले तर्क पर स्थित^[1] हूँ और तुम ने उसे झुठला दिया है। जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता करते हो, वह मेरे पास नहीं। निर्णय तो केवल अब्राह के अधिकार में है। वह सत्य को वर्णित कर रहा है। और वह सर्वोत्तम निर्णयकारी है।

وَأَصْلَحَ فَإِنَّهُ عَفَّوٌّ رَحِيمٌ ۝

وَكُنَّا لَكَ نَقِصٌ الْآيَاتِ وَلَسْتَنِّيَنَّ سَيِّئِ
الْمُجْرِمِينَ ۝

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا أَصْنَعُ أَهْوَاءَ كُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذَا
وَمَا أَنَا مِنَ الْهَادِينَ ۝

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا
عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ
يَقْضُ الْحَقُّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝

1 अर्थात् सत्यधर्म पर जो बह्यी द्वारा मुझ पर उतारा गया है। आयत का भावार्थ यह है कि बह्यी (प्रकाशना) की राह ही सत्य और विश्वास तथा ज्ञान की राह है। और जो उसे नहीं मानते उन के पास शंका और अनुमान के सिवा कुछ नहीं।

58. आप कह दें कि जिस (निर्णय) के लिये तुम शीघ्रता कर रहे हो, मेरे अधिकार में होता तो हमारे और तुम्हारे बीच निर्णय हो गया होता। तथा अब्बाह अत्यचारियों^[1] को भलि भाँति जानता है।

59. और उसी (अब्बाह) के पास गैब (परोक्ष) की कुंजियाँ^[2] हैं। उन्हें केवल वही जानता है। तथा जो कुछ थल और जल में है, वह सब का ज्ञान रखता है। और कोई पत्ता नहीं गिरता परन्तु उसे वह जानता है। और न कोई अब जो धरती के अंधेरो में हो, और न कोई आर्द्र (भीगा) और शुष्क (सखा) है परन्तु वह एक खुली पुस्तक में है।

60. वही है जो रात्रि में तुम्हारी आत्माओं को ग्रहण कर लेता है, तथा दिन में जो कुछ किया है उसे जानता है। फिर तुम्हें उस (दिन) में जगा देता है, ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो जाये^[3]। फिर तुम्हें उसी की ओर प्रत्यागत (वापस) होना है। फिर वह तुम्हें तुम्हारे कर्मों से सूचित कर देगा।

61. तथा वही है, जो अपने सेवकों पर पूरा अधिकार रखता है, और तुम पर

قُلْ لَّوْ أَن عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَفُضِيَ
الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي
الْبُرُوجِ وَالْبَحْرُ وَالسَّيْفُ مِنْ وَرَقَةٍ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا جَنَّةُ فِي
ظِلِّهَا الْأَرْضُ وَالرُّيُوبُ وَلَا يَأْسُ الْأَفْنَى كُتُبٍ
مُبِينٍ ۝

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم
بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ
إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنْفِخُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

وَهُوَ الْعَالِمُ بِقَوَىٰ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۝

1 अर्थात् निर्णय का अधिकार अब्बाह को है, जो उस के निर्धारित समय पर हो जायेगा।

2 सहीह हदीस में है कि गैब की कुंजियाँ पाँच हैं: अब्बाह ही के पास प्रलय का ज्ञान है। और वही वर्षा करता है। और जो गर्भाशयों में है उस को वही जानता है। तथा कोई जीव नहीं जानता कि वह कल क्या कमायेगा। और न ही यह जानता है कि वह किस भूमि में मरेगा। (सहीह बुखारी- 4627)

3 अर्थात् संसारिक जीवन की निर्धारित अवधि।

रक्षकों⁽¹⁾ को भेजता है। यहाँ तक कि जब तुम में से किसी के मरण का समय आ जाता है तो हमारे फरिश्ते उस का प्राण ग्रहण कर लेते हैं और वह तनिक भी आलस्य नहीं करते।

62. फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापिस लाये जाते हैं। सावधान! उसी को निर्णय करने का अधिकार है। और वह अति शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

63. हे नबी! उन से पूछिये कि धल तथा जल के अंधेरो में तुम्हें कौन बचाता है, जिसे तुम विनय पूर्वक और धीरे धीरे पुकारते हो कि यदि उस ने हमें बचा दिया, तो हम अवश्य कृतज्ञों में हो जायेंगे?

64. आप कह दें कि अल्लाह ही उस से तथा प्रत्येक आपदा से तुम्हें बचाता है। फिर भी तुम उस का साझी बनाते हो।

65. आप उन से कह दें कि वह इस का सामर्थ्य रखता है कि वह कोई यातना तुम्हारे ऊपर (आकाश) से भेज दे। अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे (धरती) से, या तुम्हें सम्प्रदायों में कर के एक को दूसरे के आक्रमण⁽²⁾ का स्वाद चखा दे। देखिये कि हम किस प्रकार

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ أَفِيضُونَ ﴿٦٢﴾

ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۖ أَلَا إِلَهُ الْخَلْقِ وَهُمْ أَسْرِعُ الْحِسَابِ ﴿٦٣﴾

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنَ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنِ اجْتَبَأْنَا مِنْ هَٰذَا لَمَلَكُوتٌ مِّنَ الشُّكْرِ ۖ ۞ ﴿٦٤﴾

قُلِ اللَّهُ يَنجِيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ مُشْكِرُونَ ﴿٦٥﴾

قُلْ هُوَ الْفَاعِلُ ۖ عَلَيَّ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ ۖ أَوْ يَلْبَسَكُمْ لُتُفًا ۚ وَيُذِيقْ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۚ لَّنْظُرَ كَيْفَ تُصْرَفُ الْأَرْبَابُ لَعَلَّكُمْ يَتَّقُهُ ۚ ۞ ﴿٦٦﴾

1 अर्थात् फरिश्तों को तुम्हारे कर्म लिखने के लिये।

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी उम्मत के लिये तीन दुआएँ की: मेरी उम्मत का विनाश डूब कर न हो। साधारण आकाल से न हो। और आपस के संघर्ष से न हो। तो पहली दो दुआ स्वीकार हुई। और तीसरी से आप को रोक दिया गया। (बुखारी- 2216)

आयतों का वर्णन कर रहे हैं कि
संभवतः वह समझ जायें।

66. और (हे नबी!) आप की जाति ने इस
(कुर्आन) को झुठला दिया, जब कि
वह सत्य है। और आप कह दें कि मैं
तुम पर अधिकारी नहीं^[1] हूँ।

67. प्रत्येक सुचना के पूरे होने का एक
निश्चित समय है, और शीघ्र ही तुम
जान लोगे।

68. और जब आप उन लोगों को देखें जो
हमारी आयतों में दोष निकालते हों तो
उन से विमुख हो जायें, यहाँ तक कि
वह किसी दूसरी बात में लग जायें।
और यदि आप को शैतान भुला दे तो
याद आ जाने के पश्चात् अत्याचारी
लोगों के साथ न बैठें।

69. तथा उन^[2] के हिसाब में से कुछ का
भार उन पर नहीं है जो अल्लाह से
डरते हों, परन्तु याद दिला^[3] देना उन
का कर्तव्य है, ताकि वह भी डरने लगें।

70. तथा आप उन्हें छोड़ें जिन्होंने अपने
धर्म को क्रीड़ा और खेल बना लिया
है। और संसारिक जीवन ने उन्हें धोखे
में डाल रखा है। और इस (कुर्आन)
द्वारा उन्हें शिक्षा दें। ताकि कोई
प्राणी अपने कर्तूतों के कारण बंधक

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ
بِكَافِلٍ ۝

لِكُلِّ نَبَأٍ مُّسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ
عَنْهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِمَّا
يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَعْتَدْ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْهُ
يَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ
وَلَكِنْ ذُكِّرُوا لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لُحُوبًا وَلَهُمْ أَعْرَافُهُمْ
الْعِوَةُ الدُّنْيَا وَذِكْرِيهِ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا
كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَاقٍ وَلَا سَفِيحَةٌ
وَأَنْ تَعْدِلَ كُلُّ أَعْدَلٍ لَّا يُؤْخَذُ بِهَا وَلَوْ أَنَّ
الَّذِينَ آمَنُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَّابٌ مِنْ حَمِيمٍ

1 कि तुम्हें बलपूर्वक मनवाऊँ। मेरा दायित्व केवल तुम को अल्लाह का आदेश
पहुँचा देना है।

2 अर्थात् जो अल्लाह की आयतों में दोष निकालते हैं।

3 अर्थात् समझा देना।

न बन जाये, जिस का अल्लाह के सिवा कोई सहायक और अभिस्तावक (सिफारशी) न होगा। और यदि वह सब कुछ बदले में दें तो भी उन से नहीं लिया जायेगा।^[1] यही लोग अपने कर्तुतों के कारण बंधक होंगे। उन के लिये उन के कुफ़्र (अविश्वास) के कारण ख़ौलता पेय तथा दुःखदायी यातना होगी।

وَعَذَابُ الْآلِهَةِ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٦﴾

71. हे नबी! उन से कहिये कि क्या हम अल्लाह के सिवा उन की बंदना करें जो हमें कोई लाभ और हानि नहीं पहुँचा सकते? और हम एड़ियों के बल फिर जायें, इस के पश्चात जब हमें अल्लाह ने मार्गदर्शन दे दिया है, उस के समान जिसे शैतानों ने धरती में बहका दिया हो, वह आश्चर्य चकित हो, उस के साथी उस को पुकार रहे हों कि सीधी राह की ओर हमारे पास आ जाओ?^[2] आप कह दें कि मार्गदर्शन तो वास्तव में वही है जो अल्लाह का मार्ग दर्शन है। और हमें तो यही आदेश दिया गया कि हम विश्व के पालनहार के आज्ञाकारी हो जायें।

قُلْ أَنتَ غَوَاةٌ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَمَّاتِ اللَّهُ كَأَنِّي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَبْرَانٍ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَىٰ ائْتِنَا قُلْ إِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَأْمُرْنَا لِلْإِسْلَامِ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

72. और नमाज़ की स्थापना करें, और उस से डरते रहें तथा वही है जिस के पास तुम एकत्रित किये जाओगे।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧﴾

- 1 संसारिक दण्ड से बचाव के लिये तीन साधनों से काम लिया जाता है: मैत्री, सिफारिश और अर्धदण्ड। परन्तु अल्लाह के हों ऐसे साधन किसी काम नहीं आयेंगे। वहाँ केवल ईमान और सत्कर्म ही काम आयेंगे।
2 इस में कुफ़्र और ईमान का उदाहरण दिया गया है कि ईमान की राह निश्चित है। और अविश्वास की राह अनिश्चित तथा अनेक है।

73. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की^[1] है। और जिस दिन वह कहेगा कि "हो जा" तो वह (प्रलय) हो जायेगी। उस का कथन सत्य है। और जिस दिन नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा उस दिन उसी का राज्य होगा। वह परोक्ष तथा^[2] प्रत्यक्ष का ज्ञानी है। और वही गुणी सर्वसूचित है।

74. तथा जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा: क्या आप मूर्तियों को पूज्य बनाते हैं? मैं आप को तथा आप की जाति को खुले कुपथ में देख रहा हूँ।

75. और इब्राहीम को इसी प्रकार हम आकाशों तथा धरती के राज्य की व्यवस्था दिखाते रहे, और ताकि वह विश्वासियों में हो जाये।

76. तो जब उस पर रात छा गयी, तो उस ने एक तारा देखा। कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया, तो कहा मैं डूबने वालों से प्रेम नहीं करता।

77. फिर जब उस ने चाँद को चमकते देखा तो कहा: यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह डूब गया तो कहा: यदि मुझे मेरे पालनहार ने मार्गदर्शन नहीं दिया तो मैं अवश्य कुपथों में से हो जाऊँगा।

78. फिर जब (प्रातः) सूर्य को चमकते

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ
وَيَوْمَ يَقُولُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ
الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ نُفْحُهُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ إِذْ رَأَى أَنَّهُ أَخَذَ أَصْنَانًا
الِهَةً ۖ إِنِّي أَرَىٰ أَرْبَكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

وَكَذَلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُتَوَقِّينَ ۝

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَذَا رَبِّي
فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِفْلَاقَ ۝

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ
لَئِنْ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّالِّينَ ۝

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي ۖ هَذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا

1 अर्थात् विश्व की व्यवस्था यह बता रही है कि इस का कोई रचयिता है।

2 जिन चीजों को हम अपनी पाँच ज्ञान इन्द्रियों से जान लेते हैं वह हमारे लिये प्रत्यक्ष है, और जिन का ज्ञान नहीं कर सकते वह परोक्ष है।

देखा तो कहा यह मेरा पालनहार है। यह सब से बड़ा है। फिर जब वह भी डूब गया तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! निःसंदेह मैं उस से विरक्त हूँ जिसे तुम (अब्राह का) साझी बनाते हो।

79. मैं ने तो अपना मुख एकाग्र हो कर उस की ओर कर लिया है जिस ने आकाशों तथा धरती की रचना की है। और मैं मुशिरकों में से नहीं⁽¹⁾ हूँ।

80. और जब उस की जाति ने उस से वाद झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम अब्राह के विषय में मुझे से झगड़ रहे हो, जब कि उस ने मुझे सुपथ दिखा दिया है। तथा मैं उस से नहीं डरता हूँ जिसे तुम साझी बनाते हो। परन्तु मेरा पालनहार कुछ चाहे (तभी वह मुझे हानि पहुँचा सकता है।) मेरा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है। तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?

81. और मैं उन से कैसे डरूँ जिन को तुम ने उस का साझी बना लिया है, जब तुम उस चीज को उस का साझी बनाने से नहीं डरते जिस का अब्राह

أَفَلَمْ تَقَالِ يَوْمَ إِنْ بَرِّئْتُكُمْ أَفَكُنتُمْ مِنْ بَعْدِ الْإِيمَانِ ۚ

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلدِّينِ فَطَرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَحَاجَّةُ قَوْمِهِ قَالَ أَخَا الْحَوَافِ فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ وَلَا تَحَافَ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُكُمْ وَلَا خَافُونَ أَكُفُّوا أَشْرَافَكُمْ بِاللَّهِ مَا لَهُ يُزِيلُ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

1 इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस युग में नबी हुये जब बाबिल तथा नेनवा के निवासी आकाशीय ग्रहों की पूजा कर रहे थे। परन्तु इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर अब्राह ने सत्य की राह खोल दी। उन्होंने इन आकाशीय ग्रहों पर विचार किया तथा उन को निकलते और फिर डूबते देख कर यह निर्णय लिया कि यह किसी की रचना तथा उस के अधीन हैं। और इन का रचयिता कोई और है। अतः रचित तथा रचना कभी पूज्य नहीं हो सकती, पूज्य वही हो सकता है जो इन सब का रचयिता तथा व्यवस्थापक है।

ने तुम पर कोई तर्क (प्रमाण) नहीं उतारा है? तो दोनों पक्षों में कौन अधिक शान्त रहने का अधिकारी है, यदि तुम कुछ ज्ञान रखते हो?

82. जो लोग ईमान लाये, और अपने ईमान को अत्याचार (शिरक) से लिप्त नहीं^[1] किया, उन्हीं के लिये शान्ति है, तथा वही मार्ग दर्शन पर हैं।

83. यह हमारा तर्क था, जो हम ने इब्राहीम को उस की जाति के विरुद्ध प्रदान किया, हम जिस के पदों^[2] को चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। वास्तव में आप का पालनहार गुणी तथा ज्ञानी है।

84. और हम ने इब्राहीम को (पुत्र) इसहाक तथा (पौत्र) याकूब प्रदान किये। प्रत्येक को हम ने मार्गदर्शन दिया। और उस से पहले हम ने नूह को मार्गदर्शन दिया। और इब्राहीम की संतति में से दावूद तथा सुलैमान और अय्यूब तथा यूसुफ़ और मूसा तथा हारून को। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल प्रदान करते हैं।

85. तथा ज़करिया और यहया तथा ईसा और इल्यास को। यह सभी

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمَنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۝

وَبَلَدِكَ حُجَّتْنَا عَلَيْهِمُ الْبِرَّهِيمُ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۖ تَرَفُّعُ دَرَجَاتٍ مِّنْ نَّشَأٍ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلْطٰنًا وَنَعْتُوْبَ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَأَيُّوبَ ۚ وَيُوسُفَ وَمُوسٰى وَهٰرُونَ ۚ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيسٰى وَإِسٰٓءٰلَ كُلٍّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

1 हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों ने कहा: हम में कौन है जिस ने अत्याचार न किया हो? उस समय यह आयत उतरी। जिस का अर्थ यह है कि निश्चय शिरक (मिश्रणवाद) ही सब से बड़ा अत्याचार है। (सहीह बुखारी-4629)

2 एक व्यक्ति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हे सर्वोत्तम पुरुष! आप ने कहा: वह (सर्वोत्तम पुरुष) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (सहीह मुस्लिम- 2369)

सदाचारियों में से थे।

86. तथा इस्माईल और यसम तथा यूनस और लूत को। प्रत्येक को हम ने संसार वासियों पर प्रधानता दी।

87. तथा उन के पूर्वजों और उन की संतति तथा उन के भाईयों को और हम ने इन सब को निर्वाचित कर लिया। और उन्हें सुपथ दिखा दिया था।

88. यही अल्लाह का मार्गदर्शन है जिस के द्वारा अपने भक्तों में से जिसे चाहे सुपथ दर्शा देता है। और यदि वह शिर्क करते, तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।^[1]

89. (हे नबी!) यही वह लोग है जिन्हें हम ने पुस्तक तथा निर्णय शक्ति एवं नुबूवत प्रदान की। फिर यदि यह (मुशरिक) इन बातों को नहीं मानते तो हम ने इसे कुछ ऐसे लोगों को सौंप दिया है जो इसका इन्कार नहीं करते।

90. (हे नबी!) यही वह लोग है जिन को अल्लाह ने सुपथ दर्शा दिया, तो आप भी उन्हीं के मार्गदर्शन पर चलें तथा कह दें कि मैं इस (कार्य)^[2] पर तुम से कोई प्रतिदान नहीं माँगता। यह सब संसार वासियों के लिये एक शिक्षा के सिवा कुछ नहीं है।

وَأَسْمِعِلْ وَيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَأَخْوَانِهِمْ وَأَجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحِطَّ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنَّبُوءَةَ ۖ إِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَؤُلَاءُ فَقَدْ وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَيُهْدِي اللَّهُ إِلَيْهِمْ ۖ قَدْ لَآ اسْطَلَكُمُ عَلَيْهِمْ سَبِيلٌ ۚ هَؤُلَاءِ ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ۝

1 इन आयतों में 18 नबियों की चर्चा करने के पश्चात् यह कहा है कि यदि यह सब भी मिश्रण करते तो इन के सत्कर्म व्यर्थ हो जाते। जिस से अभिप्राय शिर्क (मिश्रणवाद) की गंभीरता से सावधान करना है।

2 अर्थात् इस्लाम का उपदेश देने पर

91. तथा उन्होंने ने अल्लाह का सम्मान जैसे करना चाहिये नहीं किया। जब उन्होंने ने कहा कि अल्लाह ने किसी पुरुष पर कुछ नहीं उतारा, उन से पूछिये कि वह पुस्तक जिसे मूसा लाये, जो लोगों के लिये प्रकाश तथा मार्गदर्शन है, किस ने उतारी है जिसे तुम पन्नो में कर के रखते हो? जिस में से तुम कुछ को लोगों के लिये बयान करते हो और बहुत कुछ छुपा रहे हो। तथा तुम को उस का ज्ञान दिया गया, जिस का तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को ज्ञान न था? आप कह दें कि अल्लाह ने। फिर उन्हें उन के विवादों में खेलते हुये छोड़ दें।

92. तथा यह (कुर्आन) एक पुस्तक है जिसे हम ने (तौरात के समान) उतारा है। जो शुभ, अपने से पूर्व (की पुस्तकों) को सच्च बताने वाली है, तथा ताकि आप «उम्मुल कुरा» (मक्का नगर) तथा उस के चतुर्दिक के निवासियों को सचेत^[1] करें। तथा जो परलोक के प्रति विश्वास रखते हैं वही इस पर ईमान लाते हैं। और वही अपनी नमाजों का पालन करते^[2] हैं।

93. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ घड़े और कहे

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَن أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلْبَنَائِيں جَعَلُوا قُرْآنَ طَيْسٍ يَّبُدُونَهَا وَيُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِمَتْ لَهُمْ مَا لَمْ يَكُن لَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا الْآثَارُ قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾

وَهَذَا الْكِتَابُ أَنزَلْنَاهُ فِيكَ مُصَدِّقًا لِّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَن حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩٢﴾

وَمَن أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ

1 अर्थात् पूरे मानव संसार को अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान करें। इस में यह संकेत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव संसार के पथ प्रदर्शक तथा कुर्आन सब के लिये मार्गदर्शन है। और आप केवल किसी एक जाति या क्षेत्र अथवा देश के नबी नहीं हैं।

2 अर्थात् नमाज़ उस के निर्धारित समय पर बराबर पढ़ते हैं।

कि मेरी ओर प्रकाशना (बह्यी) की गई है, जब कि उस की ओर बह्यी (प्रकाशना) नहीं की गयी? तथा जो यह कहे कि अल्लाह ने जो उतारा है उस के समान मैं भी उतार दूँगा? और (हे नबी!) आप यदि ऐसे अत्याचारी को मरण की घोर दशा में देखते जब की फरिश्ते उन की ओर हाथ बढ़ाये (कहते हैं): अपने प्राण निकालो! आज तुम्हें इस कारण अपमानकारी यातना दी जायेगी जो अल्लाह पर झूठ बोलते और उस की आयतों (को मानने) से अभिमान कर रहे थे।

94. तथा (अल्लाह) कहेगा: तुम मेरे सामने उसी प्रकार अकेले आ गये जैसे तुम्हें प्रथम बार हम ने पैदा किया था। तथा हम ने जो कुछ दिया था, अपने पीछे (संसार ही में) छोड़ आये। और आज हम तुम्हारे साथ तुम्हारे अभिस्तावकों (सिफारशियों) को नहीं देख रहे हैं? जिन के बारे में तुम्हारा भ्रम था कि तुम्हारे कामों में वह (अल्लाह के) साझी हैं। निश्चय तुम्हारे बीच के संबंध भंग हो गये हैं, और तुम्हारा सब भ्रम खो गया है।

95. वास्तव में अल्लाह ही अब तथा गुठली को (धरती के भीतर) फाड़ने वाला है। वह निर्जीव से जीवित को निकालता है, तथा जीवित से निर्जीव को निकालने वाला। वही अल्लाह (सत्य पूज्य) है। फिर तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

أَوْحَىٰ إِلَيْنَا وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَنْ قَالَ سَأُنَزِّلُ
مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ
الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمُ
الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى
اللَّهِ عِثْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٩٤﴾

وَلَقَدْ جَعَلْنَا نَارَ آدَمَ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَتَرَكْنَاكُمْ فَاخْتَلَفْتُمْ وَرَأَى ظُهُورُكُم مِّنكُمْ
شَفَعَاءَ لَكُمُ الَّذِينَ رَعَيْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ يُشْرِكُونَ لَقَدْ
نَقَطَ بَيْنَكُمْ وَصَلَ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ
تَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ فَآلَىٰ
تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

96. वह प्रभात का तड़काने वाला, और उसी ने सुख के लिये रात्रि बनाई तथा सूर्य और चाँद हिसाब के लिये बनाया। यह प्रभावी गुणी का निर्धारित किया हुआ अंकन (माप)^[1] है।

97. उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये हैं, ताकि उन की सहायता से थल तथा जल के अंधकारों में रास्ता पाओ। हम ने (अपनी दया के) लक्षणों का उन के लिये विवरण दे दिया है जो लोग ज्ञान रखते हैं।

98. वही है जिस ने तुम्हें एक जीव से पैदा किया। फिर तुम्हारे लिये (संसार में) रहने का स्थान है। और एक समर्पण (मरण) का स्थान है। हम ने उन्हें अपनी आयतों (लक्षणों) का विवरण दे दिया जो समझ बूझ रखते हैं।

99. वही है जिस ने आकाश से जल की वर्षा की, फिर हम ने उस से प्रत्येक प्रकार की उपज निकाल दी। फिर उस से हरियाली निकाल दी। फिर उस से तह पर तह दाने निकालते हैं। तथा खजूर के गाभ से गुच्छे झुके हुये। और अँगूरों तथा जैतून और अनार के बाग समरूप तथा स्वाद में अलग-अलग। उस के फल को देखो जब फल लाता है, तथा उस के पकने को। निःसंदेह इन में उन लोगों के लिये बड़ी निशानियाँ

فَالْقِيُ الْإِصْبَارِ وَجَعَلَ الْبَيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذَلِكَ تَعْلِيمٌ لِّلْغَيْرِ الْعَلِيمِ ۝

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نَّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالزُّمَانُ مُمَشِيهَا وَغَيْرَ مُتَسَابِهٍ انْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

1 जिस में एक पल की भी कमी अथवा अधिकता नहीं होती।

(लक्षण)^[1] हैं जो ईमान लाते हैं।

100. और उन्होंने ने जिन्हों को अल्लाह का साझी बना दिया। जब कि अल्लाह ही ने उन की उत्पत्ति की है। और बिना ज्ञान के उस के लिये पुत्र तथा पुत्रियाँ गढ़ लीं। वह पवित्र तथा उच्च है उन बातों से जो वह लोग कह रहे हैं।
101. वह आकाशों तथा धरती का अविष्कारक है, उस के संतान कहाँ से हो सकती है, जब कि उस की पत्नी ही नहीं है? तथा उसी ने प्रत्येक वस्तु को पैदा किया है। और वह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानता है।
102. वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, उस के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह प्रत्येक वस्तु का उत्पत्तिकार है। अतः उस की इबादत (बंदना) करो। तथा वही प्रत्येक चीज का अभिरक्षक है।
103. उस का आँख इद्राक नहीं कर सकती,^[2] जब कि वह सब कुछ देख रहा है। वह अत्यंत सूक्ष्मदर्शी और सब चीजों से अवगत है।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ۝

يَدِيرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَلَيْسَ يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ فَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

ذِكْرُ اللَّهِ تَعَالَى لَوْلَا اللَّهُ لَفَلَاخٌ لِّلْأُمَمِ أَلَيْسَ كُلُّ شَيْءٍ قَاعِيدٌ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝

1 अर्थात् अल्लाह के पालनहार होने की निशानियाँ।

आयत का भावार्थ यह है कि जब अल्लाह ने तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये हैं तो फिर तुम्हारे आत्मिक जीवन के सुधार के लिये भी प्रकाशना और पुस्तक द्वारा तुम्हारे मार्गदर्शन की व्यवस्था की है तो तुम्हें उस पर आश्चर्य क्यों है, तथा इसे अस्वीकार क्यों करते हो?

2 अर्थात् इस संसार में उसे कोई नहीं देख सकता।

104. तुम्हारे पास निशानियाँ आ चुकी हैं। तो जिस ने समझ बझ से काम लिया उस का लाभ उसी के लिये है। और जो अन्धा हो गया तो उस की हानि उसी पर है। और मैं तुम पर संरक्षक^[1] नहीं हूँ।

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝

105. और इसी प्रकार हम अनेक शैलियों में आयतों का वर्णन कर रहे हैं। और ताकि वह (काफिर) कहें कि आप ने पढ़^[2] लिया है। और ताकि हम उन लोगों के लिये (तर्कों को) उजागर कर दें जो ज्ञान रखते हैं।

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا ادرست وَلَيْسِنَّ الْقَوْمُ يَعْلَمُونَ ۝

106. आप उस पर चलें जो आप पर आप के पालनहार की ओर से बह्यी (प्रकाशना) की जा रही है। उस के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। और मुश्रिकों की बातों पर ध्यान न दें।

اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝

107. और यदि अल्लाह चाहता तो वह लोग साझी न बनाते। और हम ने आप को उन पर निरीक्षक नहीं बनाया है। तथा न आप उन पर^[3] अधिकारी हैं।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝

108. और (हे ईमान वालो!) उन्हें बुरा न कहो जिन (मूर्तियों) को वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं। अन्यथा वह लोग अज्ञानता के कारण अति

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدَاوَةً بَغِيرَ عِلْمٍ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا

1 अर्थात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सत्धर्म के प्रचारक हैं।

2 अर्थात् काफिर यह कहें कि आप ने यह अहले किताब से सीख लिया है और इसे अस्वीकार कर दें। (इब्ने कसीर)

3 आयत का भावार्थ यह है कि नबी का यह कर्तव्य नहीं कि वह सब को सीधी राह दिखा दे। उस का कर्तव्य केवल अल्लाह का संदेश पहुँचा देना है।

कर के अल्लाह को बुरा कहेंगे। इसी प्रकार हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये उन के कर्म को सुशोभित बना दिया है। फिर उन के पालनहार की ओर ही उन्हें जाना है। तो उन्हें बता देगा जो वे करते रहे।

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦﴾

109. और उन (मुश्रिकों) ने बल पूर्वक शपथें ली कि यदि हमारे पास कोई आयत (निशानी) आ जाये तो उस पर वह अवश्य ईमान लायेंगे। आप कह दें: आयतें (निशानियाँ) तो अल्लाह ही के पास हैं। और (हे ईमान वालो!) तुम्हें क्या पता कि वह निशानियाँ जब आ जायेंगी तो वह ईमान⁽¹⁾ नहीं लायेंगे।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا
يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

110. और हम उन के दिलों और आँखों को ऐसे ही फेर⁽²⁾ देंगे जैसे वह पहली बार इस (कुर्आन) पर ईमान नहीं लाये। और हम उन्हें उन के

وَنَقَلِبْ أَقْبَادَهُمْ وَأَنصَرَّهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا
بِهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْصُونَ ﴿٦﴾

- 1 मक्का के मुश्रिकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि यदि सफा (पर्वत) सोने का हो जाये तो वह ईमान लायेंगे। कुछ मुसलमानों ने भी सोचा कि यदि ऐसा हो जाये तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। इसी पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् कोई चमत्कार आ जाने के पश्चात् भी ईमान नहीं लायेंगे, क्यों कि अल्लाह, जिसे सुपथ दर्शाना चाहता है, वह सत्य को सुनते ही उसे स्वीकार कर लेता है। किन्तु जिस ने सत्य के विरोध ही को अपना आचरण-स्वभाव बना लिया हो तो वह चमत्कार देख कर भी कोई बहाना बना लेता है। और ईमान नहीं लाता। जैसे इस से पहले नबियों के साथ हो चुका है। और स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी निशानियाँ दिखाईं फिर भी ये मुश्रिक ईमान नहीं लाये। जैसे आप ने मक्का वासियों की माँग पर चाँद के दो भाग कर दिये। जिन दोनों के बीच लोगों ने हिरा (पर्वत) को देखा। (परन्तु वे फिर भी ईमान नहीं लाये।) (सहीह बुखारी- 3637, मुस्लिम- 2802)

कुकर्मों में बहकते छोड़ देंगे।

111. और यदि हम इन की ओर (आकाश से) फरिश्ते उतार देते और इन से मुर्दे बात करते और इन के समक्ष प्रत्येक वस्तु एकत्र कर देते, तब भी यह ईमान नहीं लाते परन्तु जिसे अल्लाह (मार्गदर्शन देना) चाहता। और इन में से अधिकतर (तथ्य से) अज्ञान हैं।

112. और (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने मनुष्यों तथा जिनों में से प्रत्येक नबी का शत्रु बना दिया जो धोका देने के लिये एक दूसरे को शोभनीय बात सुझाते रहते हैं। और यदि आप का पालनहार चाहता तो ऐसा नहीं करते। तो आप उन्हें छोड़ दें, और उन की घड़ी हुई बातों को।

113. (वह ऐसा इस लिये करते हैं) ताकि उस की ओर उन लोगों के दिल झुक जायें जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह उस से प्रसन्न हो जायें और ताकि वह भी वही कुकर्म करने लगें जो कुकर्म वह लोग कर रहे हैं।

114. (हे नबी!) उन से कहो कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी दूसरे न्यायकारी की खोज करूँ, जब कि उसी ने तुम्हारी ओर यह खुली पुस्तक (क़ुर्आन) उतारी^[1] है? तथा जिन को हम ने पुस्तक^[2] प्रदान की है वह जानते हैं

وَلَوْ أَنَّا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَكَةَ وَكَلَّمَهُمُ
الْمَوْئِي وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ
يُجَاهِلُونَ ﴿١١١﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَاطِئِينَ
الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ
زُخْرَفَ الْقَوْلِ عَزَّوَجَلَّ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلْنَاهُ
فَدَّرَهُمْ وَمَا يَنْقُضُونَ ﴿١١٢﴾

وَلِتَصْغَى إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرَبِّضُوهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ
مُنْكَرُونَ ﴿١١٣﴾

أَفَقَدْ آتَيْنَاكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَمَا الَّذِي أُنْزِلَ
إِلَيْكَ إِلَّا الْكِتَابُ مُقَصَّلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٤﴾

1 अर्थात् इस में निर्णय के नियमों का विवरण है।

2 अर्थात् जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जिब्रिल प्रथम बह्यी लाये और

कि यह (कुर्आन) आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ उतारा है। अतः आप सदेह करने वालों में न हों।

115. आप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है, कोई उस की बात (नियम) बदल नहीं सकता और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

116. और (हे नबी!) यदि आप संसार के अधिकतर लोगों की बात मानेंगे तो वह आप को अल्लाह के मार्ग से बहका देंगे। वह केवल अनुमान पर चलत^[1] है, और आँकलन करते हैं।

117. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है कि कौन उस की राह से बहकता है। तथा वही उन्हें भी जानता है जो सुपथ पर हैं।

118. तो उन पशुओं में से जिस पर बध करते समय अल्लाह का नाम लिया गया हो खाओ,^[2] यदि तुम उस

وَقَتَّتْ كَلِمَاتِكَ صِدْقًا وَعَدًا لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾

وَأَنْ تَطْعَمَ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا خَيْرُ صُورٍ ﴿١١٦﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ اللَّهُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

आप ने मक्का के ईसाई विद्वान वर्का बिन नौफल को बताया तो उस ने कहा कि यह वही फरिश्ता है जिसे अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा था। (बुखारी -3, मुस्लिम-160) इसी प्रकार मदीना के यहूदी विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम ने भी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को माना और इस्लाम लाये।

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि सत्योसत्य का निर्णय उस के अनुयायियों की संख्या से नहीं। सत्य के मूल नियमों से ही किया जा सकता है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी उम्मत के 72 सम्प्रदाय नरक में जायेंगे। और एक स्वर्ग में जायेगा। और वह, वह होगा जो मेरे और मेरे साथियों के पथ पर होगा। (तिर्मिजी- 263)

- 2 इस का अर्थ यह है कि बध करते समय जिस जानवर पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो, बल्कि देवी-देवता तथा पीर-फकीर के नाम पर बलि दिया गया

की आयतों (आदेशों) पर ईमान
(विश्वास) रखते हो।

119. और तुम्हारे उस में से न खाने का क्या कारण है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया^[1] हो, जब कि उस ने तुम्हारे लिये स्पष्ट कर दिया है जिसे तुम पर हराम (अवैध) किया है? परन्तु जिस (वर्जित) के (खाने के लिये) विवश कर दिये जाओ^[2], और वास्तव में बहुत से लोग अपनी मनमानी के लिये लोगों को अपनी अज्ञानता के कारण बहकाते हैं। निश्चय आप का पालनहार उल्लंघनकारियों को भली भाँति जानता है।

120. (हे लोगो!) खुले तथा छुपे पाप छोड़ दो। जो लोग पाप कमाते हैं वे अपने कुकर्मों का प्रतिकार (बदला) दिये जायेंगे।

121. तथा उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। वास्तव में उसे खाना (अल्लाह की) अवैज्ञा है। निःसंदेह शैतान अपने सहायकों के मनो में संशय डालते रहते हैं, ताकि वह तुम से विवाद

وَمَا لَكُمْ إِلَّا أَنْ تَكُونُوا مِنَ الَّذِينَ ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَقَدْ
فُضِّلَ لَكُمْ مَا حَزَمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرُّرْتُمْ
إِلَيْهِ وَإِنْ كَثُرَ الْيُضْلُونَ بِأَهْوَاءِهِمْ يَغَيِّرُ
عِلْمُ إِنْ رَبِّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ
يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا مِنَ الَّذِينَ ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَإِنَّ
لِأَنفُسِكُمْ مِنَ الشَّيْطَانِ نِيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ
لِيُجَادُّوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ۝

हो तो वह तुम्हारे लिये वर्जित है। (इब्ने कसीर)

- 1 अर्थात् उन पशुओं को खाने में कोई हरज नहीं जो मुसलमानों की दुकानों पर मिलते हैं क्योंकि कोई मुसलमान अल्लाह का नाम लिये बिना बध नहीं करता। और यदि शंका हो तो खाते समय ((बिस्मिल्लाह)) कह लो जैसा कि हदीस शरीफ में आया है। (देखिये: बुखारी- 5507)
- 2 अर्थात् उस वर्जित को प्राण रक्षा के लिये खाना उचित है।

करें।^[1] और यदि तुम ने उन की बात मान ली तो निश्चय तुम मुश्रिक हो।

122. तो क्या जो निर्जीव रहा हो फिर हम ने उसे जीवन प्रदान किया हो तथा उस के लिये प्रकाश बना दिया हो जिस के उजाले में वह लोगों के बीच चल रहा हो, उस जैसा हो सकता है जो अंधेरी में हो उस से निकल न रहा हो?^[2] इसी प्रकार काफिरों के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं।

123. और इसी प्रकार हम ने प्रत्येक बस्ती में उस के बड़े अपराधियों को लगा दिया ताकि उस में षड्यंत्र रचें। तथा वह अपने ही विरुद्ध षड्यंत्र रचते^[3] हैं परन्तु समझते नहीं हैं।

124. और जब उन के पास कोई निशानी आती है तो कहते हैं कि हम उसे कदापि नहीं मानेंगे, जब तक उसी के समान हमें भी प्रदान न किया जाये जो अल्लाह के रसूलों को प्रदान किया गया है। अल्लाह ही अधिक जानता है कि अपना

أَوْ مَنْ كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يَتَشَوَّى بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلَهُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْكَافِرِينَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُخْرِجُهَا
لِيَسْمُكُوا فِيهَا وَمَا يَكْتُمُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّى نُؤْتَى
مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَتَهُ لِيُبَيِّنَ لِلَّذِينَ آمَنُوا آيَاتِهِ عِنْدَ
اللَّهِ وَعِنْدَ ابْنِ شَدِيدٍ كَذَلِكَ مَا كُنَّا يَتَكُمُونَ ﴿١٢٤﴾

- 1 अर्थात् यह कहें कि जिसे अल्लाह ने मारा हो, उसे नहीं खाते। और जिसे तुम ने बध किया हो उसे खाते हो? (इब्ने कसीर)
- 2 इस आयत में ईमान की उपमा जीवन से तथा ज्ञान की प्रकाश से, और अविश्वास की मरण तथा अज्ञानता की उपमा अंधकारों से दी गयी है।
- 3 भावार्थ यह है कि जब किसी नगर में कोई सत्य का प्रचारक खड़ा होता है तो वहाँ के प्रमुखों को यह भय होता है कि हमारा अधिकार समाप्त हो जायेगा। इस लिये वह सत्य के विरोधी बन जाते हैं। और उस के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगते हैं। मक्का के प्रमुखों ने भी यही नीति अपना रखी थी।

संदेश पहुँचाने का काम किस से ले। जो अपराधी है शीघ्र ही अब्राह के पास उन्हें अपमान तथा कड़ी यातना उस षड्यंत्र के बदले मिलेगी जो वे कर रहे हैं।

125. तो जिसे अब्राह मार्ग दिखाना चाहता है, उस का सीना (वक्ष) इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे कुपथ करना चाहता है उस का सीना संकीर्ण (तंग) कर देता है। जैसे वह बड़ी कठिनाई से आकाश पर चढ़ रहा^[1] हो। इसी प्रकार अब्राह उन पर यातना भेज देता है जो ईमान नहीं लाते।

126. और यही (इस्लाम) आप के पालनहार की सीधी राह है। हम ने उन लोगों के लिये आयतों को खोल दिया है जो शिक्षा ग्रहण करते हों।

127. उन्हीं के लिये आप के पालनहार के पास शान्ति का घर (स्वर्ग) है। और वही उन के सुकर्मों के कारण उन का सहायक होगा।

128. तथा (हे नबी!) याद करो जब वह सब को एकत्र कर के (कहेगा): हे जिन्हों के गिरोह! तुम ने बहुत से मनुष्यों को कुपथ कर दिया और मानव में से उन के मित्र कहेंगे कि

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ
ضَيْقًا ضَرَبًا كَانَمَا يُضَعْدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ
يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ *

وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا
الْآيَاتِ لِلْعَوْمِ يُذَكِّرُونَ *

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُمْ وَلِيُّهَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ *

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَنْشُرُ الْيَحْيَى قَدْ
اسْتَكْبَرُوا مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ أَوْلِيَّتُهُمْ مِنَ
الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْمَعْ بَعْضًا بَعْضًا وَبَلَّغْنَا لَكُمَا
الَّذِي أَجَلْتُمَا قَالَ تَاللَّهِ لَأَمْتُوكُمْ

1 अर्थात् उसे इस्लाम का मार्ग एक कठिन चढ़ाई लगता है जिस के विचार ही से उस का सीना तंग हो जाता है और श्वास रोध होने लगता है।

हे हमारे पालनहार! हम एक दूसरे से लाभावित होते रहे,^[1] और वह समय आ पहुँचा जो तू ने हमारे लिये निर्धारित किया था। (अल्लाह) कहेगा: तुम सब का आवास नरक है जिस में सदावासी रहोगे। परन्तु जिसे अल्लाह (बचाना) चाहे। वास्तव में आप का पालनहार गुणी सर्व ज्ञानी है।

129. और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को उन के कुकर्मा के कारण एक दूसरे का सहायक बना देते हैं।

130. (तथा कहेगा:) हे जिन्हों तथा मनुष्यों के (मुशरिक) समुदाय! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये^[2], जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाते और तुम्हें तुम्हारे इस दिन (के आने) से सावधान करते? वह कहेंगे: हम स्वयं अपने ही विरुद्ध गवाह हैं। तथा उन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में रखा था। और अपने ही विरुद्ध गवाह हो गये

خَلِيدِينَ فِيهَا أَلَا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا لِّمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

يَمْعَشَرَتَيْنِ وَالْإِنْسَ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمُ الْآيَاتِ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۝

1. इस का भावार्थ यह है कि जिन्हों ने लोगों को संशय और धोखे में रख कर कुपथ किया, और लोगों ने उन्हें अल्लाह का साझी बनाया और उन के नाम पर बलि देते और चढ़ावे चढ़ाते रहे और ओझाई तथा जादू तंत्र द्वारा लोगों को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा करते रहे।

2. कुर्आन की अनेक आयतों से यह विद्वित होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन्हों के भी नबी थे जैसा कि सूरह जिन्न आयत 1, 2 में उन के कुर्आन सुनने और ईमान लाने का वर्णन है। ऐसे ही सूरह अहकाफ में है कि जिन्हों ने कहा: हम ने ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात् उतरी है। इसी प्रकार वह सुलैमान के आधीन थे। परन्तु कुर्आन और हदीस से जिन्हों में नबी होने का कोई संकेत नहीं मिलता। एक विचार यह भी है कि जिन्न आदम (अलैहिस्सलाम) से पहले के हैं इसलिये हो सकता है पहले उन में भी नबी आये हों।

कि वास्तव में वही काफिर थे।

131. (हे नबी!) यह (नबियों को भेजना) इस लिये हुआ कि आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि अत्याचार से बस्तियों का विनाश कर दे,^[1] जब कि उस के निवासी (सत्य से) अचेत रहे हों।

132. प्रत्येक के लिये उस के कर्मानुसार पद है। और आप का पालनहार लोगों के कर्मों से अचेत नहीं है।

133. तथा आप का पालनहार निस्पृह दयाशील है। वह चाहे तो तुम्हें ले जाये और तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ले आये। जैसे तुम लोगों को दूसरे लोगों की संतति से पैदा किया है।

134. तुम्हें जिस (प्रलय) का वचन दिया जा रहा है उसे अवश्य आना है। और तुम (अब्राह को) विवश नहीं कर सकते।

135. आप कह दें: हे मेरी जाति के लोगो! (यदि तुम नहीं मानते) तो अपनी दशा पर कर्म करते रहो। मैं भी कर्म कर रहा हूँ। शीघ्र ही तुम्हें यह ज्ञान हो जायेगा कि किस का अन्त (परिणाम)^[2] अच्छा है। निःसंदेह

ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْكُفَّارِ يَطْلُو
وَأَقْلَاهَا غُفْلُونَ ۝

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِّنْ أَعْمَالِهِمْ مَّا رُبُّكُمْ
يَغَافِلُ عَنْهَا يَعْمَلُونَ ۝

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ إِن يَشَاءْ يُدْهِبْكُمْ
وَيَسْتَخْلِفْ مِن بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ لَكُمَا أَنتَاهُ
مِن دُرِّيَّةٍ قَوْمِ الْخَوَارِجِ ۝

إِن مَّا تَوْعَدُونَ لَأَن يَأْتِيَنَّكُمْ
بِمُعْجِزَةٍ ۝

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ
فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُونَ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يَفْسُدُ الظَّالِمُونَ ۝

1 अर्थात् संसार की कोई बस्ती ऐसी नहीं है जिस में समार्ग दर्शाने के लिये नबी न आये हों। अब्राह का यह नियम नहीं है कि किसी जाति को बह्यी द्वारा मार्गदर्शन से वंचित रखे और फिर उस का नाश कर दे। यह अब्राह के न्याय के बिल्कुल प्रतिकूल है।

2 इस आयत में काफिरों को सचेत किया गया है कि यदि सत्य को नहीं मानते तो

अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

136. तथा उन लोगों ने उस खेती और पशुओं में जिन्हें अल्लाह ने पैदा किया है। उस का एक भाग निश्चित कर दिया, फिर अपने विचार से कहते हैं: यह अल्लाह का है और यह उन (देवताओं) का है जिन को उन्होंने (अल्लाह का) साझी बनाया है। फिर जो उन के बनाये हुये साझियों का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता परन्तु जो अल्लाह का है वह उन के साझियों⁽¹⁾ को पहुँचता है। वह क्या ही बुरा निर्णय करते हैं!

137. और इसी प्रकार बहुत से मुश्रिकों के लिये अपनी संतान के बध करने को उन के बनाये हुये साझियों ने सुशोभित बना दिया है, ताकि उन का विनाश कर दें। और ताकि उन के धर्म को उन पर संदिग्ध कर दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह यह (कुकर्म) नहीं करते। अतः आप उन्हें छोड़⁽²⁾ दें तथा उन की बनाई हुई बातों को।

138. तथा वे कहते हैं कि यह पशु और

وَجَعَلُوا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ
وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلّٰهِ
بِرَّعِيهِمْ وَهَذَا لِلشُّرَكَائِ مِنَّا قَمًا كَانَ
إِشْرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللّٰهِ وَمَا كَانَ
لِلّٰهِ أَن يَصِلُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ۝

وَكَذٰلِكَ رَزَقْنَا لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ
مَثَلًا ۚ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاءُ لَهُمْ يَزِيدُهُمْ
وَلِيَتَّبِعُوا عَلَىٰ هِهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ
مَا فَعَلُوهُ قَدْ زُفِرَ لَهُمْ وَمَا يَفْقَهُونَ ۝

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا

जो कर रहे हो वही करो तुम्हें जल्द ही इस के परिणाम का पता चल जायेगा।

- 1 इस आयत में अरब के मुश्रिकों की कुछ धार्मिक परम्पराओं का खण्डन किया गया है कि सब कुछ तो अल्लाह पैदा करता है और यह उस में से अपने देवताओं का भाग बनाते हैं। फिर अल्लाह का जो भाग है उसे देवताओं को दे देते हैं। परन्तु देवताओं के भाग में से अल्लाह के लिये व्यय करने को तैयार नहीं होते।

- 2 अरब के कुछ मुश्रिक अपनी पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे।

खेत वर्जित है, इसे वही खा सकता है, जिसे हम अपने विचार से खिलाना चाहें। फिर कुछ पशु है, जिन की पीठ हराम^[1] (वर्जित) है, और कुछ पशु है, जिन पर (बध करते समय) अल्लाह का नाम नहीं लेते, अल्लाह पर आरोप लगाने के कारण, अल्लाह उन्हें उन के आरोप लगाने का बदला अवश्य देगा।

139. तथा उन्होंने ने कहा कि जो इस पशुओं के गर्भों में है वह हमारे पुरुषों के लिये विशेष है, और हमारी पत्नियों के लिये वर्जित है। और यदि मुर्दा हो तो सभी उस में साझी हो सकते^[2] हैं। अल्लाह उन के विशेष करने का क़फल उन्हें अवश्य देगा, वास्तव में वह तत्त्वज्ञ अति ज्ञानी है।

140. वास्तव में वह क्षति में पड़ गये जिन्होंने ने मुर्खता से किसी ज्ञान के बिना अपनी संतान को बध किया और उस जीविका को जो अल्लाह ने उन्हें प्रदान कि अल्लाह पर आरोप लगा कर, अवैध बना लिया, वह बहक गये और सीधी राह पर नहीं आ सके।

يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ يَزِغُ بِهِمْ وَأَنْعَامٌ
حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ
اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءٌ عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِمْ بِمَا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٣٩﴾

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ
لِّذُنُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَى أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ
مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ
إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٤٠﴾

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا
بَغْيٍ وَعِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً
عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

1 अर्थात् उन पर सवारी करना तथा बोझ लादना अवैध है। (देखिये: सूरह माइदा-103)।

2 अर्थात् वधित पशु के गर्भ से बच्चा निकल जाता और जीवित होता तो उसे केवल पुरुष खा सकते थे। और मुर्दा होता तो सभी (स्त्री-पुरुष) खा सकते थे। (देखिये: सूरह नहल 16: 58-59)। सूरह अनमाम-151, तथा सूरह इस्रा-31)। जैसा कि आधुनिक सभ्य समाज में «सुखी परिवार» के लिये अनेक प्रकार से किया जा रहा है।

141. अल्लाह वही है जिस ने बेलों वाले तथा बिना बेलों वाले बाग पैदा किये। तथा खजूर और खेत जिन से विभिन्न प्रकार की पैदावार होती है और जैतून तथा अनार समरूप तथा स्वाद में विभिन्न, इस का फल खाओ जब फले, और फल तोड़ने के समय कुछ दान करो, तथा अपव्यय^[1] (बेजा खर्च) न करो। निःसंदेह अल्लाह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

142. तथा चौपायों में कुछ सवारी और बोझ लादने योग्य^[2] है। और कुछ धरती से लगे^[3] हुये, तुम उन में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें जीविका प्रदान की है। और शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु^[4] है।

143. आठ पशु आपस में जोड़े हैं: भेड़ में से दो, तथा बकरी में से दो। आप उन से पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हARAM (वर्जित) किये

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَدَّتٍ مَّعْرُوشٍ وَغَيْرَ مَّعْرُوشٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالزُّمَانُ مَثَابَهُمْ إِذَا شَرُوا وَاتُّوا مَثَابَهُ كَلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولُهُ وَفَرَشَاتُهَا كُلُوا مِنْهَا وَرَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

ثَلَاثِينَ أَزْوَاجًا مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ قُلْ آلَذَّكَوَيْنِ حَرَّمَ لَكُمْ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا الشَّمْلُكَ عَلَيْهِ أَرْحَامُ

1 अर्थात् इस प्रकार उन्होंने पशुओं में विभिन्न रूप बना लिये थे। जिन को चाहते अल्लाह के लिये विशेष कर देते और जिसे चाहते अपने देवी देवता के लिये विशेष कर देते। यहाँ इन्हीं अन्ध विश्वासियों का खण्डन किया जा रहा है। दान करो अथवा खाओ परन्तु अपव्यय न करो। क्योंकि यह शैतान का काम है, सब में संतुलन होना चाहिये।

2 जैसे ऊँट और बैल आदि।

3 जैसे बकरी और भेड़ आदि।

4 अल्लाह ने चौपायों को केवल सवारी और खाने के लिये बनाया है, देवी-देवताओं के नाम चढ़ाने के लिये नहीं। अब यदि कोई ऐसा करता है तो वह शैतान का बन्दा है और शैतान के बनाये मार्ग पर चलता है जिस से यहाँ मना किया जा रहा है।

हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? मुझे ज्ञान के साथ बताओ, यदि तुम सच्चे हो।

144. और ऊँट में से दो, तथा गाय में से दो। आप पूछिये कि क्या अल्लाह ने दोनों के नर हराम (वर्जित) किये हैं, अथवा दोनों की मादा, अथवा दोनों के गर्भ में जो बच्चे हों? क्या तुम उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया था, तो बताओ? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो बिना ज्ञान के अल्लाह पर झूठ घड़े? निश्चय अल्लाह अत्याचारियों को संमार्ग नहीं दिखाता।

145. (हे नबी!) आप कह दें कि उस में जो मेरी ओर बह्यी (प्रकाशना) की गयी है इन^[1] में से खाने वालों पर कोई चीज़ वर्जित नहीं है, सिवाये उस के जो मरा हुआ हो^[2] अथवा बहा हुआ रक्त हो या सूअर का मांस हो। क्योंकि वह अशुद्ध है, अथवा अवैध हो जिसे अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम पर बध किया गया हो। परन्तु जो विवश हो जाये (तो वह खा सकता है) यदि वह द्रोही तथा सीमा लाँघने वाला न हो। तो वास्तव में आप का पालनहार

الْأَنْثَىٰ يُتَوَنَّىٰ يَعْلَمُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ
الَّذِينَ حَرَّمَ آمَ الْأَنْثَىٰ بِمَا شَاءَ
عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَىٰ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ
وَضَعُوا اللَّهُ يُهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقَ إِلَىٰ
الَّذِي كَذَّبَ بِالْبَيِّنَاتِ لَئِنْ لَمْ يَنْهَ اللَّهُ
يَهْدِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ
طَائِفَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْمَةً أَوْ دَمًا
مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خَنَازِيرٍ فَإِنَّهُ رَجَسٌ أَوْ
فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمِنَ اضْطَرَّ غَيْرَ بَاطِلٍ
وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1 जो तुम ने वर्जित किया है।

2 अर्थात् धर्म विधान अनुसार बध न किया गया हो।

अति क्षमी दयावान्^[1] है।

146. तथा हम ने यहूदियों पर नखधारी^[2] जीव हराम कर दिये थे और गाय तथा बकरी में से उन पर दोनों की चर्बियाँ हराम (वर्जित) कर दी^[3] थी। परन्तु जो दोनों की पीठों या आंतों से लगी हों, अथवा जो किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह हम ने उन की अवज्ञा के कारण उन्हें^[4] प्रतिकार (बदला) दिया था। तथा निश्चय हम सच्चे हैं।

147. फिर (हे नबी!) यदि यह लोग आप को झुठलायें तो कह दें कि तुम्हारा पालनहार विशाल दयाकारी है तथा उस की यातना को अपराधियों से फेरा नहीं जा सकेगा।

148. मिश्रणवादी अवश्य कहेंगे: यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे पूर्वज (अल्लाह का) साझी न बनाते, और न कुछ हराम (वर्जित) करते। इसी प्रकार इन से पूर्व के लोगों ने (रसूलों को) झुठलाया था, यहाँ तक

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُلْفُرٍ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُكُومَهَا إِلَّا
مَا حَمَلَتْ فَهُوَ لَهُمَا أَوْ الْخَوَاطِ أَوْ مَا
اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَغْيِهِمْ
وَإِنَّ الصِّدْقَ ۝

فَإِنْ كَذَّبُوا فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسْعَةٍ
وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ كَذَبَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا قُلْ
هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ
تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ أَنْتُمْ لَآخْرُصُونَ ۝

- 1 अर्थात् कोई भूक से विवश हो जाये तो अपनी प्राण रक्षा के लिये इन प्रतिबंधों के साथ हराम खा ले तो अल्लाह उसे क्षमा कर देगा।
- 2 अर्थात् जिन की उँगलियाँ फटी हुई न हों जैसे ऊँट, शुतुरमुर्ग, तथा बत्तख इत्यादि। (इब्ने कसीर)
- 3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: यहूदियों पर अल्लाह की धिक्कार हो! जब चर्बियाँ वर्जित की गईं तो उन्हें पिघला कर उन का मुल्य खा गये। (बुखारी - 2236)
- 4 देखिये: सूरह आले इमरान, आयत: 93 तथा सूरह निसा आयत: 160।

कि हमारी यातना का स्वाद चख लिया। (हे नबी!) उन से पूछिये कि क्या तुम्हारे पास (इस विषय में) कोई ज्ञान है, जिसे तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत कर सको? तुम तो केवल अनुमान पर चलते हो, और केवल आंकलन कर रहे हो।

149. (हे नबी!) आप कह दें कि पूर्ण तर्क अल्लाह ही का है। तो यदि वह चाहता तो तुम सब को सुपथ दिखा देता^[1]।

150. आप कहिये कि अपने साक्षियों (गवाहों) को लाओ^[2], जो साक्ष्य दें कि अल्लाह ने इसे हराम (अवैध) कर दिया है। फिर यदि वह साक्ष्य (गवाही) दें तब भी आप उन के साथ हो कर इसे न मानें, तथा उन की मनमानी पर न चलें, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया, और परलोक पर ईमान (विश्वास) नहीं रखते, तथा दूसरों को अपने पालनहार के बराबर करते हैं।

151. आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या हराम

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

قُلْ هَلْ مِمَّ شُهَدَاءُ كُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعِ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ يَرِثُهُمْ يُعَذِّبُهُمْ ۝

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّي عَلَيْكُمْ الْأَكْثَرُ كُتُوبِهِ شَيْئًا وَالَّذِينَ إِحْسَانًا وَلَا

1 परन्तु उस ने इसे लोगों को समझ बूझ दे कर प्रत्येक दशा का एक परिणाम निर्धारित कर दिया है। और सत्योसत्य दोनों की राहें खोल दी हैं। अब जो व्यक्ति जो राह चाहे अपना ले। और अब यह कहना अज्ञानता की बात है कि यदि अल्लाह चाहता तो हम संमार्ग पर होते।

2 हदीस में है कि सब से बड़ा पाप: अल्लाह का साझी बनाना तथा माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार और झूठी शपथ लेना है। (तिर्मिजी -3020, यह हदीस हसन है।)

(अवैध) किया है? वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ। और माता-पिता के साथ उपकार करो। और अपनी संतानों को निर्धनता के भय से बध न करो। हम तुम्हें जीविका देते हैं और उन्हें भी देंगे और निर्लज्जा की बातों के समीप भी न जाओ, खुली हों अथवा छुपी, और जिस प्राण को अल्लाह ने हaram (अवैध) कर दिया है उसे बध न करो परन्तु उचित कारण¹ से। अल्लाह ने तुम्हें इस का आदेश दिया है ताकि इसे समझो।

152. और अनाथ के धन के समीप न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये। तथा नाप-तौल न्याय के साथ पूरा करो। हम किसी प्राण पर उस की सकत से अधिक भार नहीं रखते और जब बोलो तो न्याय करो, यद्यपि समीपवर्ती ही क्यों न हो। और अल्लाह का वचन पूरा करो, उस ने तुम्हें इस का आदेश दिया है, संभवतः तुम शिक्षा ग्रहण करो।

153. तथा (उस ने बताया है कि) यह

تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ٥٠

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ وَالْعَهْدُ الَّذِي بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الْأَنْفُسِ الَّتِي أُوعِدْتُمُوهَا وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْبُدُوا وَلَوْ كَانُوا قُرْبَىٰ وَبَعِيدًا اللَّهُ أَوْفُوا ذَلِكُمْ وَصَّيْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ٥١

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَالْيَقْوَةَ وَلَا تَتَّبِعُوا

- 1 सहीह हदीस में है कि किसी मुसलमान का खून तीन कारणों के सिवा अवैध है:
1. किसी ने विवाहित हो कर व्यभिचार किया हो।
2. किसी मुसलमान को जान बूझ कर अवैध मार डाला हो।
3. इस्लाम से फिर गया हो और अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करने लगे। (सहीह मुस्लिम, हदीस-1676)

(इस्लाम ही) अल्लाह की सीधी राह^[1] है। अतः इसी पर चलो और दूसरी राहों पर न चलो अन्यथा वह तुम्हें उस की राह से दूर कर के तित्तर बित्तर कर देंगे। यही है जिस का आदेश उस ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम उस के आज्ञाकारी रहो।

154. फिर हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की थी उस पर पुरस्कार पूरा करने के लिये जो सदाचारी हो, तथा प्रत्येक वस्तु के विवरण के लिये, तथा यह मार्गदर्शन और दया थी, ताकि वह अपने पालनहार से मिलने पर ईमान लायें।

155. तथा (उसी प्रकार) यह पुस्तक (कुर्आन) हम ने अवतरित की है, यह बड़ा शुभकारी है। अतः इस पर चलो^[2] और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।

156. ताकि (हे अरब वासियो!) तुम यह न कहो कि हम से पूर्व दो सुमदाय (यहूद तथा ईसाई) पर पुस्तक उतारी गयी और हम उन के पढ़ने-पढ़ाने से अनजान रह गये।

157. या यह न कहो कि यदि हम पर

السُّبُلَ تَفْقَرُ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ دَلِيلٌ وَضَعْنَاهُ لَكُمْ تَسْتَقُونَهُ ۝

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْصَىٰ وَنُفُوسًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّعَالَمِهِمْ بِإِيقَاعِ رَبِّهِمْ يُوقِنُونَ ۝

وَهَذَا كِتَابُنَا أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكًا فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفِيلِينَ ۝

وَتَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْهِ الْكِتَابُ لَنُكَذِّبُكَ أَهْدَىٰ

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक लकीर बनाई, और कहा: यह अल्लाह की राह है। फिर दायें बायें कई लकीरें खींची और कहा: इन पर शैतान है जो इन की ओर बुलाता है और यही आयत पढ़ी। (मुसन्द अहमद-431)

2 अर्थात् अब अहले किताब सहित पूरे संसार वासियों के लिये प्रलय तक इसी कुर्आन का अनुसरण ही अल्लाह की दया का साधन है।

पुस्तक उतारी जाती तो निश्चय हम उन से अधिक सीधी राह पर होते, तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक खुला तर्क आ गया, मार्ग दर्शन तथा दया आ गई। फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को मिथ्या कह दे, और उन से कतरा जाये? और जो लोग हमारी आयतों से कतराते हैं हम उन के कतराने के बदले उन्हें कड़ी यातना देंगे।

158. क्या वह लोग इसी बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फरिश्ते आ जायें, या स्वयं उन का पालनहार आ जाये या आप के पालनहार की कोई आयत (निशानी) आ जाये? ^[1] जिस दिन आप के पालनहार की कोई निशानी आ जायेगी तो किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या अपने ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो। आप कह

مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ
وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَجِرَى الَّذِينَ
يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا
يَصْدِفُونَ ﴿٥٨﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ
أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ
رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَوَ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ
أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلِ انْظُرُوا إِلَا
مُسْتَظَرُّونَ ﴿٥٩﴾

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि इन सभी तर्कों के प्रस्तुत किये जाने पर भी यदि यह ईमान नहीं लाते तो क्या उस समय ईमान लायेंगे जब फरिश्ते उन के प्राण निकालने आयेंगे? या प्रलय के दिन जब अल्लाह इन का निर्णय करने आयेगा? या जब प्रलय की कुछ निशानियाँ आ जायेंगी? जैसे सूर्य का पश्चिम से निकल आना। सहीह बुखारी की हदीस है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि प्रलय उस समय तक नहीं आयेगी जब तक कि सूर्य पश्चिम से नहीं निकलेगा। और जब निकलेगा तो जो देखेंगे सभी ईमान ले आयेंगे। और यह वह समय होगा कि किसी प्राणी को उस का ईमान लाभ नहीं देगा। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी, हदीस-4636)

दें कि तुम प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

159. जिन लोगों ने अपने धर्म में विभेद किया और कई समुदाय हो गये, (हे नबी!) आप का उन से कोई सम्बंध नहीं, उन का निर्णय अल्लाह को करना है, फिर वह उन्हें बतायेगा कि वह क्या कर रहे थे।

إِنَّ الَّذِينَ قَاتَلُوا بِهَيْبَةٍ وَكَانُوا لِيَعْلَمُونَ
فِي شَيْءٍ أَمْرَهُمُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ أَنَّهُمْ
يَفْعَلُونَ ۝

160. जो (प्रलय के दिन) एक सत्कर्म ले कर (अब्राह्म से) मिलेगा, उसे उस के दस गुना प्रतिफल मिलेगा। और जो कुकर्म लायेगा तो उस को उसी के बराबर कुफल दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ امْتَالِهَا وَمَنْ جَاءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلُهَا وَهُمْ لَا يُظَاهَرُونَ ﴿٥٠﴾

161. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने निश्चय मुझे सीधी राह (सुपथ) दिखा दी है। वही सीधा धर्म जो एकेश्वरवादी इब्राहीम का धर्म था, और वह मुशरिकों में से न था।

قُلْ إِنِّي هَدَيْتُ رَبِّيَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ
 دِينًا قَوْمًا وَإِثْمَ آلِ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَهُوَ كَانُ مِنَ
 الْغَالِبِينَ ﴿١٠٠﴾

162. आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٠﴾

163. जिस का कोई साझी नहीं तथा मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुसलमानों में से हूँ।

لَا تُشْرِكْ بِهِ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ﴿٢٧﴾

164. आप उन से कह दें कि क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी ओर पालनहार की खोज करूँ? जब कि वह (अल्लाह) प्रत्येक चीज का पालनहार है। तथा

ثُمَّ أَتَى اللَّهُ الْبَنِيَّ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ أَخَاهُ الْكَبِيرَ فَقَالَ خُذْ هَذَيْنِ ۖ ذِكْرًا لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِكَ يُبَارَكُ اسْمُهُ ۚ وَهُوَ إِسْمَاعِيلُ ۚ وَإِسْحَاقُ أَخَاهُ الْكَبِيرَ ۚ وَقَالَ إِسْمَاعِيلُ إِنَّي سَمِعْتُكَ نَادِيًا وَنَادِيًا ۖ فَقَالَ لَا تَحْزَنْ ۖ إِنِّي مُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ فَطِيحٍ ۚ فَوَدَّعَاهُمَا أَيْدِيَهُمَا فَوَجَدَا إِسْحَاقَ ۚ وَكَانَ بَيْنَهُمَا خُضُوعٌ ۚ ثُمَّ قَالَ إِسْمَاعِيلُ يَا أَبَتِ إِنَّي أَرَاكَ مُتَعَمِّقًا فِي الدِّينِ ۖ فَوَدَّعَاكَ فَأَخَذَ أَيْدِيَهُمَا ۚ وَكَانَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ نَذِيرٌ ۚ وَلَوْ كُنَّا فَاعِلِينَ ۖ قَدْ جَاءَ الْفَصْلُ وَلَوْ كُنَّا فَاعِلِينَ ۖ

कोई प्राणी कोई भी कुकर्म करेगा,
तो उस का भार उसी पर होगा।
और कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं
उठायेगा। फिर (अन्ततः) तुम्हें अपने
पालनहार के पास ही जाना है। तो
जिन बातों में तुम विभेद कर रहे हो
वह तुम्हें बता देगा।

165. वही है जिस ने तुम्हें धरती में
अधिकार दिया है और तुम में से कुछ
को (धन शक्ति में) दूसरे से कई
श्रेणियाँ ऊँचा किया है। ताकि उस में
तुम्हारी परीक्षा^[1] ले जो तुम्हें दिया
है। वास्तव में आप का पालनहार
शीघ्र ही दण्ड देने वाला^[2] है और
वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ
سَرِيعُ الْعَقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: कौवा के रब्ब की शपथ! वह क्षति में पड़ गया। अबूजर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: कौन? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: (धनी)। परन्तु जो दान करता रहता है। (सहीह बुखारी-6638, सही मुस्लिम-990)

2 अर्थात् अवैज्ञाकारियों को।

सूरह आराफ़ - 7

سُورَةُ الْأَعْرَافِ

सूरह आराफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 206 आयतें हैं।

इस में «आराफ़» की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह आराफ़ है।

- इस में अल्लाह के भेजे हुये नबी का अनुसरण करने पर बल दिया गया है, जिस में डराने तथा सावधान करने की भाषा अपनाई गई है।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) को शैतान के धोखा देने का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य उस से सावधान रहे।
- इस में यह बताया गया है कि अगले नबियों की जातियाँ नबियों के विरोध का दुष्परिणाम देख चुकी है, फिर अहले किताब को संबोधित किया गया है और एक जगह पूरे संसार वासियों को संबोधित किया गया है।
- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की वंदना की, और उसी की ओर बुलाया और सब का मूल धर्म एक है।
- इस में यह भी बताया गया है कि ईमान लाने के पश्चात् निफ़ाक़ (द्विधा) का क्या दुष्परिणाम होता है और बचन तोड़ने का अन्त क्या होता है।
- सूरह के अन्त में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथियों को उपदेश देने के कुछ गुण बताये गये हैं और विरोधियों की बातों को सहन करने तथा उत्तोजित हो कर ऐसा कार्य करने से रोका गया है जो इस्लाम के लिये हानिकारक हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम, साद।
2. यह पुस्तक है, जो आप की ओर उतारी गई है। अतः (हे नबी!) आप के मन में इस से कोई संकोच न

الْقَصَصِ

كِتَابُ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ
مِّنْهُ لِتُنذِرَ بِهِ وَذَكِّرَ لِلْمُؤْمِنِينَ

हो, ताकि आप इस के द्वारा सावधान करें^[1], और ईमान वालों के लिये उपदेश है।

3. (हे लोगो!) जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा गया है उस पर चलो, और उस के सिवा दूसरे सहायकों के पीछे न चलो। तुम बहुत थोड़ी शिक्षा लेते हो।

4. तथा बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया है, उन पर हमारा प्रकोप अकस्मात् रात्रि में आया या जब वह दोपहर के समय आराम कर रहे थे।

5. और जब उन पर हमारा प्रकोप आ पड़ा तो उन की पुकार यही थी कि वास्तव में हम ही अत्याचारी^[2] थे।

6. तो हम उन से अवश्य प्रश्न करेंगे जिन के पास रसूलों को भेजा गया तथा रसूलों से भी अवश्य^[3] प्रश्न करेंगे।

7. फिर हम अपने ज्ञान से उन के समक्ष वास्तविकता का वर्णन कर देंगे। तथा हम अनुपस्थित नहीं थे।

8. तथा उस (प्रलय के) दिन (कर्मों

إِشْعُرُوا مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَا تَسْمِعُوا
مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مِمَّا تَدَّكُرُونَ ۝

وَكَمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا
أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ۝

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ قَالُوا إِنَّا
كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ
الْمُرْسَلِينَ ۝

فَلَنَقْضَنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمِهِ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ۝

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ

1 अर्थात् अल्लाह के इन्कार तथा उस के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् अपनी हठधर्मी को उस समय स्वीकार किया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन उन समुदायों से प्रश्न किया जायेगा कि तुम्हारे पास रसूल आये या नहीं? वह उत्तर देंगे: आये थे। परन्तु हम ही अत्याचारी थे। हम ने उन की एक न सुनी। फिर रसूलों से प्रश्न किया जायेगा कि उन्होंने अल्लाह का संदेश पहुँचाया या नहीं? तो वह कहेंगे: अवश्य हम ने तेरा संदेश पहुँचा दिया।

की) तौल न्याय के साथ होगी।
फिर जिस के पलड़े भारी होंगे वही
सफल होंगे।

فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٦٠﴾

9. और जिन के पलड़े हलके होंगे तो
वही स्वयं को क्षति में डाल लिये
होंगे। क्यों कि वह हमारी आयतों के
साथ अत्याचार करते^[1] रहे।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ﴿٦١﴾

10. तथा हम ने तुम्हें धरती में अधिकार
दिया और उस में तुम्हारे लिये जीवन
के संसाधन बनाये। तुम थोड़े ही
कृतज्ञ होते हो।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا
مَعَايِشَ قَلِيلًا لَّأَنَّا نَتَّكِرُونَ ﴿٦٢﴾

11. और हम ने ही तुम्हें पैदा
किया^[2], फिर तुम्हारा रूप बनाया,
फिर हम ने फरिश्तों से कहा कि
आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के
सिवा सब ने सज्दा किया। वह सज्दा
करने वालों में से न हुआ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ
اسْجُدُوا لِلْآدَمِ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُنْ مِنَ
السَّاجِدِينَ ﴿٦٣﴾

12. अब्ब्राह ने उस से कहा: किस बात ने
तुझे सज्दा करने से रोक दिया जब
कि मैं ने तुझे आदेश दिया था? उस
ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। मेरी
रचना तू ने अग्नि से की, और उस
की मिट्टी से।

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ قَالَ أَنَا خَيْرٌ
مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ﴿٦٤﴾

13. तो अब्ब्राह ने कहा: इस (स्वर्ग) से
उतर जा। तेरे लिये यह योग्य नहीं
कि इस में घमंड करे। तू निकल जा।
वास्तव में तू अपमानितों में है।

قَالَ فَأَمِيطْ مِنْهَا إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ أَن تَتَكَبَّرَ فِيهَا
فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿٦٥﴾

1 भावार्थ यह है कि यह अब्ब्राह का नियम है कि प्रत्येक व्यक्ति तथा समुदाय को
उन के कर्मनुसार फल मिलेगा। और कर्मों की तौल के लिये अब्ब्राह ने नाप
निर्धारित कर दी है।

2 अर्थात् मूल पुरुष आदम को अस्तित्व दिया।

14. उस ने कहा: मुझे उस दिन तक के लिये अवसर दे दो जब लोग फिर जीवित किये जायेंगे।

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

15. अब्ब्राह ने कहा: तुझे अवसर दिया जा रहा है।

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾

16. उस ने कहा: तो जिस प्रकार तू ने मुझे कुपथ किया है मैं भी तेरी सीधी राह पर इन की घात में लगा रहूंगा।

قَالَ فَمَا آفُقْتَ لِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾

17. फिर उन के पास उन के आगे और पीछे तथा दायें और बायें से आऊंगा।⁽¹⁾ और तू उन में से अधिकतर को (अपना) कृतज्ञ नहीं पायेगा।⁽²⁾

لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا مِنَ الَّذِينَ لَا يَذَرُونِمْ خَلْفَهُمْ وَعَنْ يَمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

18. अब्ब्राह ने कहा: यहाँ से अपमानित धिक्कारा हुआ निकल जा। जो भी उन में से तेरी राह चलेगा तो मैं तुम सभी से नरक को अवश्य भर दूँगा।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْذُورًا مِمَّنْ يَبْعَثُ مِنْهُمْ لَآئِمِينَ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

19. और हे आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ। और इस वृक्ष के समीप न जाना अन्यथा अत्याचारियों में हो जाओगे।

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

20. तो शैतान ने दोनों को संशय में डाल दिया, ताकि दोनों के लिये उन के गुप्तांगों को खोल दे जो उन से छुपाये गये थे। और कहा: तुम्हारे पालनहार ने तुम दोनों को इस वृक्ष से केवल इसलिये रोक दिया है कि तुम दोनों फरिश्ते अथवा सदावासी हो जाओगे।

فَوَسَّوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَاتِحِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ﴿٢٠﴾

1 अर्थात् प्रत्येक दिशा से घेरूँगा और कुपथ करूँगा।

2 शैतान ने अपना विचार सच्च कर दिखाया और अधिकतर लोग उस के जाल में फँस कर शिर्क जैसे महा पाप में पड़ गये। (देखिये सूरह सबा आयत-20)

21. तथा दोनों के लिये शपथ दी कि वास्तव में मैं तुम दोनों का हितैषी हूँ।
22. तो उन दोनों को धोखे से रिझा लिया। फिर जब दोनों ने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उन के लिये उन के गुप्तांग खुल गये और वे उन पर स्वर्ग के पत्ते चिपकाने लगे। और उन्हें उन के पालनहार ने आवाज़ दी: क्या मैं ने तुम्हें इस वृक्ष से नहीं रोका था। और तुम दोनों से नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला शत्रू है?
23. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हम ने अपने ऊपर अत्याचार कर लिया और यदि तू हमें क्षमा तथा हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य ही नाश हो^[1] जायेंगे।
24. उस ने कहा: तुम सब उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रू हो। और तुम्हारे लिये धरती में रहना और एक निर्धारित समय तक जीवन का साधन है।
25. तथा कहा: तुम उसी में जीवित रहोगे और उसी में मरोगे और उसी से (फिर) निकाले जाओगे।
26. हे आदम के पुत्रो! हम ने तुम पर ऐसा वस्त्र उतार दिया है जो तुम्हारे गुप्तांगों को छुपाता, तथा शोभा है। और अल्लाह की आज्ञाकारिता का वस्त्र ही सर्वोत्तम है। यह अल्लाह

وَقَالَتْ لَهُمَا أَيْنَ الْمَأْمَنِ النَّاصِحِينَ ۝

فَدَلَّاهُمَا الْغُرُوبَ فَلَمَّا أَذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفَفَا نَجْفِيسًا عَلَيْهِمَا لَمَسَ رِيقَ الْهَيْكَلِ تَوَدَّاهُمَا الْمَوْتَ لَمَّا نَعَنَّ رَبَّكَمَا الشَّجَرَةَ وَأَقْبَلَ تَكَادَى الشَّيْطَانُ لَكُمَا عَذَابٌ مُبِينٌ ۝

قَالَ رَبِّمَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ۝

يَا أَيُّهَا آدَمُ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا يُؤَدِّي سَوَاتِرَكُمْ وَرَيْشًا وَلِبَاسُ الْقَفَىٰ ذَلِكَ خَيْرٌ ذَلِكُم مِّنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ۝

1 अर्थात् आदम तथा हव्वा ने अपने पाप के लिये अल्लाह से क्षमा मांग ली। शैतान के समान अभिमान नहीं किया।

की आयतों में से एक है, ताकि वह शिक्षा लें^[1]

27. हे आदम के पुत्रो! ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें बहका दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को स्वर्ग से निकाल दिया, उन के वस्त्र उतरवा दिये ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखा दे। वास्तव में वह तथा उस की जाति तुम्हें ऐसे स्थान से देखती है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते। वास्तव में हम ने शैतानों को उन का सहायक बना दिया है जो ईमान नहीं रखते।

28. तथा जब वह (मुश्रिक) कोई निर्लज्जा का काम करते हैं तो कहते हैं कि इसी (रीति) पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। तथा अल्लाह ने हमें इस का आदेश दिया है। (हे नबी!) आप उन से कह दें कि अल्लाह कभी निर्लज्जा का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात का आरोप धरते हो जिसे तुम नहीं जानते?

29. आप उन से कह दें कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है। (और वह यह है कि) प्रत्येक मस्जिद में नमाज के समय अपना ध्यान सीधे उसी की ओर करो^[2] और उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के उसी को पुकारो। जिस

يٰۤاٰدَمُ لَا يَفْتِنَنَّكَ الشَّيْطٰنُ كَمَا اَخْرَجَ اٰدَمَ
مِنَ الْجَنَّةِ يَتَزَوَّجُ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
وَلَهُنَّ اَزْوَاجٌ مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يَرْبٰۤى عَنْهُمْ وَلَدُهُمْ
وَلَا تُؤْمِنُوْنَ
الشَّيْطٰنُ اَوْلٰٓئَآءُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاٰجِزَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَا
اٰبَادًا وَاللّٰهُ
اَمْرًا بِهَا قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَمُرُّ بِالْفَحْشَآءِ
اَتَقُوْلُوْنَ
عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

قُلْ اَمَرَرَنِيْ بِالْقِسْطِ وَاَقِيْمُوا وُجُوْهَكُمْ
عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
الدِّيْنَ ۝
كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝

1 तथा उस के आज्ञाकारी एवं कृतज्ञ बनें।

2 इस आयत में सत्य धर्म के निम्नलिखित तीन मूल नियम बताये गये हैं:
कर्म में संतुलन,
बंदना में अल्लाह की ओर ध्यान,
तथा धर्म में विशुद्धता तथा एक अल्लाह की बंदना करना।

प्रकार उस ने तुम्हें पहले पैदा किया है उसी प्रकार (प्रलय में) फिर जीवित कर दिये जाओगे।

30. एक समुदाय को उस ने सुपथ दिखा दिया और दूसरा समुदाय कुपथ पर स्थित रह गया। वास्तव में इन लोगों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को सहायक बना लिया, फिर भी वह समझते हैं कि वास्तव में वही सुपथ पर हैं।

31. हे आदम के पुत्रो! प्रत्येक मस्जिद के पास (नमाज़ के समय) अपनी शोभा धारण करो^[1], तथा खाओ और पीओ और बेजा खर्च न करो। वस्तुतः वह बेजा खर्च करने वालों से प्रेम नहीं करता।

32. (हे नबी!) इन (मिश्रणवादियों) से कहिये कि किस ने अल्लाह की उस शोभा को हराम (वर्जित) किया है^[2] जिसे उस ने अपने सेवकों के लिये निकाला है? तथा स्वच्छ जीविकाओं को? आप कह दें यह संसारिक जीवन में उन के लिये (उचित) है, जो ईमान लाये तथा प्रलय के दिन (उन्हीं के लिये) विशेष^[3] है। इसी प्रकार हम

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ
إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنََّّهُم مُّهْتَدُونَ ۝

يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ
مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

1 कुरैश नग्न होकर काँवा की परिक्रमा करते थे। इसी पर यह आयत उतरी।

2 इस आयत में सन्यास का खण्डन किया गया है कि जीवन के सुखों तथा शोभावों से लाभान्वित होना धर्म के विरुद्ध नहीं है। इन सब से लाभान्वित होने में ही अल्लाह की प्रसन्नता है। नग्न रहना तथा संसारिक सुखों से वंचित हो जाना सत्धर्म नहीं है। धर्म की यह शिक्षा है कि अपनी शोभावों से सुसज्जित हो कर अल्लाह की बंदना और उपासना करो।

3 एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमर (रजियल्लाहु अन्हु) से

अपनी आयतों का सविस्तार वर्णन उन के लिये करते हैं जो ज्ञान रखते हों।

33. (हे नबी!) आप कह दें कि मेरे पालनहार ने तो केवल खुले तथा छुपे कुकर्मों और पाप तथा अवैध विद्रोह को ही हराम (वर्जित) किया है, तथा इस बात को कि तुम उसे अल्लाह का साझी बनाओ जिस का कोई तर्क उस ने नहीं उतारा है तथा अल्लाह पर ऐसी बात बोलो जिसे तुम नहीं जानते।

34. प्रत्येक समुदाय का⁽¹⁾ एक निर्धारित समय है, फिर जब वह समय आ जायेगा तो क्षण भर देर या सवेर नहीं होगी।

35. हे आदम के पुत्रो! जब तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ जायें जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो डरेगा और अपना सुधार कर लेगा तो उस के लिये कोई डर नहीं होगा, और न वह⁽²⁾ उदासीन होंगे।

36. और जो हमारी आयतें झुठलायेंगे और उन से घमंड करेंगे वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

37. फिर उस से बड़ा अत्याचारी कौन

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ
وَالزُّنُوحَ وَالْمَعْيَ وَغَيْرَ الْحَقِّ وَإِنْ تَثْشَرُّوا بِاللَّهِ مَا لَكُمْ
بِنَزْلِ بِهِ سُلْطَانًا وَإِنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ وَإِذَا أَجَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْبِلُونَ ﴿٣٤﴾

يَا أَيُّهَا آدَمُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ رَسُولًا مِنْكُمْ يُخَوِّنُ عَلَيْكُمْ
الَّذِينَ فِيكُمْ أَتَقُونَ أَصْلَحُوا فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الدَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِنْهُمْ فَخْرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ

कहा: क्या तुम प्रसन्न नहीं हो कि संसार काफिरों के लिये हो और परलोक हमारे लिये? (बुखारी- 2468 , मुस्लिम- 1479)

- 1 अर्थात् काफिर समुदाय की यातना के लिये।

- 2 इस आयत में मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये समय समय पर रसूलों के आने के बारे में सूचित किया गया है और बताया जा रहा है कि अब इसी नियमानुसार अंतिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये हैं। अतः उन की बात मान लो, अन्यथा इस का परिणाम स्वयं तुम्हारे सामने आ जायेगा।

है जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाये
अथवा उस की आयतों को मिथ्या
कहे? उन को उन के भाग्य में लिखा
भाग मिल जायेगा। यहाँ तक कि जिस
समय हमारे फ़रिश्ते उन का प्राण
निकालने के लिये आयेंगे तो उन से
कहेंगे कि वह कहाँ है जिन को तुम
अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह
कहेंगे कि वह तो हम से खो गये,
तथा अपने ही विरुद्ध साक्षी (गवाह)
बन जायेंगे कि वस्तुतः वह काफ़िर थे।

38. अल्लाह का आदेश होगा कि तुम भी
प्रवेश कर जाओ उन समुदायों में जो
तुम से पहले के जिनों और मनुष्यों में
से नरक में हैं। जब भी कोई समुदाय
(नरक में) प्रवेश करेगा तो अपने
समान दूसरे समुदाय को धिक्कार
करेगा, यहाँ तक कि जब उस में
सब एकत्र हो जायेंगे तो उन का
पिछला अपने पहले के लिये कहेगा:
हे हमारे पालनहार इन्होंने ही हमें
कुपथ किया है। अतः इन्हें दुगनी
यातना दे। वह (अल्लाह) कहेगा तुम
में से प्रत्येक के लिये दुगनी यातना
है, परन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं।

39. तथा उन का पहला समुदाय अपने
दूसरे समुदाय से कहेगा: (यदि हम
दोषी थे) तो हम पर तुम्हारी कोई
प्रधानता नहीं¹ हुई, तो तुम अपने

بِأَيِّهِمْ أُولَئِكَ يَتْلُوهُمْ نُصَيْبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ
حَتَّى إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا يُخَوِّفُهُمْ قَالُوا
بَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا
صَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا
كَافِرِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ آخِثَهَا
حَتَّىٰ إِذَا لُكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ
لِلْأُولَىٰ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَاجْعَلْ لَهُمْ عَذَابًا ضِعْفًا
مِّنَ النَّارِ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٌ وَلَكِن لَّا تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

وَقَالَتْ أُولَئِكَ لَئِنْ كُنَّا لَنَكُونُ عَلَيْكُمُ
مِّنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُونَ ﴿٤٠﴾

1 और हम और तुम यातना में बराबर हैं। आयत में इस तथ्य की ओर संकेत है कि कोई समुदाय कुपथ होता है तो वह स्वयं कुपथ नहीं होता, वह दूसरों को भी अपने कुचरित्र से कुपथ करता है अतः सभी दुगनी यातना के अधिकारी हुये।

कुकर्मों की यातना का स्वाद लो।

40. वास्तव में जिन्होंने ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उन से अभिमान किया उन के लिये आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, जब तक^[1] ऊँट सूई के नाके से पार न हो जाये। और हम इसी प्रकार अपराधियों को बदला देते हैं।
41. उन्हीं के लिये नरक का बिछौना और उन के ऊपर से ओढ़ना होगा। और इसी प्रकार हम अत्याचारियों को प्रतिकार (बदला^[2]) देते हैं।
42. और जो ईमान लाये और सत्कर्म किये, और हम किसी पर उस की सक्त से (अधिक) भार नहीं रखते। वही स्वर्गी हैं और वही उस में सदावासी होंगे।
43. तथा उन के दिलों में जो द्वेष होगा उसे हम निकाल देंगे।^[3] उन (स्वर्गी में) नहरें बहती होंगी तथा वह कहेंगे कि उस अब्राह की प्रशंसा है जिस ने हमें इस की राह दिखाई और यदि अब्राह हमें मार्गदर्शन न देता तो हमें मार्गदर्शन न मिलता। हमारे पालनहार के रसूल सत्य ले कर आये, तथा उन्हें पुकारा जायेगा कि

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝

لَهُمْ فِيهَا مِهَادٌ وَخِزْمٌ مَخْرُوجٌ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَيْرِ تَجَرُّوهُ مِنْ تُحْرِيهِمْ الْأَنْهَارُ وَالْوُحُوشُ يَرِيهِمْ هَذَا سَاحًا لِهَذَا وَمَا كُنَّا الْمُهْتَدِينَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَنْ تَتْلُوا الْجَنَّةَ زُورٍ ثُمَّ قَالُوا لِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

1 अर्थात उन का स्वर्ग में प्रवेश असंभव होगा।

2 अर्थात उन के कुकर्मों तथा अत्याचारों का।

3 स्वर्गीयों को सब प्रकार के सुख, सुविधा के साथ यह भी बड़ी नेमत मिलेगी कि उन के दिलों का बैर निकाल दिया जायेगा, ताकि स्वर्ग में मित्र बन कर रहें। क्योंकि आपस के बैर से सब सुख किरकिरा हो जाता है।

इस स्वर्ग के अधिकारी तुम अपने सत्कर्मों के कारण हुये हो।

44. तथा स्वर्गवासी नरकवासियों को पुकारेंगे कि हम को हमारे पालनहार ने जो वचन दिया था उसे हम ने सचच पाया, तो क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें जो वचन दिया था उसे तुम ने सचच पाया? वह कहेंगे कि हाँ। फिर उन के बीच एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अल्लाह की धिक्कार है उन अत्याचारियों पर

45. जो लोगों को अल्लाह की राह (सत्धर्म) से रोकते तथा उसे टेढ़ा करना चाहते थे। और वही परलोक के प्रति अविश्वास नहीं रखते थे।

46. और दोनों (नरक तथा स्वर्ग) के बीच एक पर्दा होगा और कुछ लोग आराफ^[1] (ऊँचाईयों) पर होंगे। जो प्रत्येक को उन के लक्षणों से पहचानेंगे और स्वर्गवासियों को पुकार कर उन्हें सलाम करेंगे। और उन्होंने उस में प्रवेश नहीं किया होगा, परन्तु उस की आशा रखते होंगे।

47. और जब उन की आँखें नरकवासियों की ओर फिरेगी तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

48. फिर आराफ (ऊँचाईयों) के लोग

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنِ قَدْ
وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ
رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا مُوَدِّعٌ بَيْنَهُمْ
أَلَعَنَهُ اللَّهُ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا
عُوجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ ﴿٤٥﴾

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ
كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَنَادُوا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَشْعُرُونَ ﴿٤٦﴾

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ

1 आराफ नरक तथा स्वर्ग के मध्य एक दीवार है जिस पर वह लोग रहेंगे जिन के सुकर्म और कुकर्म बराबर होंगे। और वह अल्लाह की दया से स्वर्ग में प्रवेश की आशा रखते होंगे। (इब्ने कसीर)

कुछ लोगों को उन के लक्षणों से पहचान जायेंगे⁽¹⁾, उन से कहेंगे कि तुम्हारे जत्थे और तुम्हारा घमंड तुम्हारे किसी काम नहीं आया।

49. (और स्वर्गवासियों की ओर संकेत करेंगे कि) क्या यही वह लोग नहीं हैं जिन के सम्बंध में तुम शपथ ले कर कह रहे थे कि अल्लाह इन्हें अपनी दया में से कुछ नहीं देगा? (आज उन से कहा जा रहा है कि) स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ, न तुम पर किसी प्रकार का भय है और न तुम उदासीन होगे।

50. तथा नरकवासी स्वर्गवासियों को पुकारेंगे कि हम पर तनिक पानी डाल दो, अथवा जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है उस में से कुछ दे दो। वह कहेंगे कि अल्लाह ने यह दोनों (आज) काफिरों के लिये हराम (वर्जित) कर दिया है।

51. (उस का निर्णय है कि) जिन्होंने ने अपने धर्म को तमाशा और खेल बना लिया था, तथा जिन्हें संसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था, तो आज हम उन्हें ऐसे ही भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने आज के दिन के आने को भुला दिया था⁽²⁾ और इस लिये भी कि वह

يَسْأَلُهُمْ قَالُوا مَا آخَذَ مِنْكُمْ جُنُودٌ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٥٠﴾

أَهْلَآءَ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٥١﴾

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ مِمَّا عَلَيَ الْكَافِرِينَ ﴿٥٢﴾

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّبَهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا قَالُوا لِمَ نَحْنُ نُنْفِسُ قَالُوا مَا نَسُوا الْآيَاتِ يَوْمَهُمْ هَذَا وَمَا كَانُوا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٣﴾

1 जिन को संसार में पहचानते थे और याद दिलायेंगे कि जिस पर तुम्हें घमंड था आज तुम्हारे काम नहीं आया।

2 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: प्रलय के दिन अल्लाह ऐसे बंदों से कहेगा: क्या मैं ने तुम्हें बीबी-बच्चे नहीं दिये, आदर-मान नहीं दिया? क्या ऊँट-

हमारी आयतों का इन्कार करते रहे।

52. जब कि हम ने उन के लिये एक ऐसी पुस्तक दी जिसे हम ने ज्ञान के आधार पर सविस्तार वर्णित कर दिया है जो मार्गदर्शन तथा दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

53. (फिर) क्या वह इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि इस का परिणाम सामने आ जाये? जिस दिन इस का परिणाम आ जायेगा तो वही जो इस से पहले इसे भूले हुये थे कहेंगे कि हमारे पालनहार के रसूल सच्च ले कर आये थे, (परन्तु हम ने नहीं माना) तो क्या हमारे लिये कोई अनुशंसक (सिफारशी) है, जो हमारी अनुशंसा (सिफारिश) करे? अथवा हम संसार में फेर दिये जायें तो जो कर्म हम करते रहे उन के विपरीत कर्म करेंगे! उन्होंने ने स्वयं को क्षति में डाल दिया, तथा उन से जो मिथ्या बातें बना रहे थे खो गईं।

54. तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस ने आकाशों तथा धरती को छः दिनों में बनाया^[1], फिर अर्श

وَلَقَدْ جِئْنَهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عَلَيْهِمْ هُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ
يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ
رَبِّنَا بِالْحَقِّ قَالُوا لَنَا مِنْ شَفْعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا
أَوْ نُرَدِّ فَعَصَلْ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَيَّرُوا
أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى النَّجْمُ

घोड़े तेरे आधीन नहीं किये, क्या तू मुख्या बन कर चुंगी नहीं लेता था? वह कहेगा: हे अल्लाह सब सहीह है। अल्लाह प्रश्न करेगा: क्या मुझे से मिलने की आशा रखता था? वह कहेगा: नहीं। अल्लाह कहेगा जैसे तू मुझे भूला रहा, आज मैं तुझे भूल जाता हूँ। (सहीह मुस्लिम- 2968)

- 1 यह छः दिन शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, और वृहस्पतिवार हैं। पहले दो दिन में धरती को, फिर आकाश को बनाया, फिर आकाश को दो दिन में बराबर किया, फिर धरती को फैलाया और उस में पर्वत, पानी और

(सिंहासन) पर स्थित हो गया। वह रात्री से दिन को ढक देता है, दिन उस के पीछे दौड़ता हुआ आ जाता है, सूर्य तथा चाँद और तारे उस की आज्ञा के अधीन हैं। सुन लो! वही उत्पत्तिकार है, और वही शासक^[1] है। वही अल्लाह अति शुभ, संसार का पालनहार है।

55. तुम अपने (उसी) पालनहार को रोते हुये तथा धीरे-धीरे पुकारो। निःसंदेह वह सीमा पार करने वालों से प्रेम नहीं करता।

56. तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात्^[2] उपद्रव न करो, और उसी से डरते हुये, तथा आशा रखते हुये^[3] प्रार्थना करो। वास्तव में अल्लाह की दया सदाचारियों के समीप है।

57. और वही है जो अपनी दया (वर्षा) से पहले वायुओं को (वर्षा) की शुभ सूचना देने के लिये भेजता है। और जब वह भारी बादलों को लिये उड़ती है तो हम उसे किसी निर्जीव धरती को (जीवित) करने के लिये पहुँचा देते हैं, फिर उस से जल वर्षा कर के उस के द्वारा प्रत्येक प्रकार के फल उपजा देते हैं। इसी प्रकार हम

الَّذِي يَخْلُقُ حَبِيبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ
مُسْحَرَاتٍ بِأَمْرِ الْإِلَهِ الْخَلْقِ وَالْأَمْرِ تَبَرُّدَ اللَّهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الْمُعْتَدِينَ ۝

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ
خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِينَ ۝

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقْلَّتْ مَحَابِلُهَا نَبَأَ الْبَرْقُ
لَيْكِدَ فَجَاءَتْ فَأَنْزَلْنَا مِنْهُ آبًا مُّخْرَجًا
مِّن كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

उपज की व्यवस्था दो दिन में की। इस प्रकार यह कुल छः दिन हुये। (देखिये: सूरह सज्दा, आयत- 9,10)

1 अर्थात् इस विश्व की व्यवस्था का अधिकार उस के सिवा किसी को नहीं है।

2 अर्थात् सत्धर्म और रसूलों द्वारा सुधार किये जाने के पश्चात्।

3 अर्थात् पापाचार से डरते और उस की दया की आशा रखते हुये।

मुर्दों को जीवित करते हैं, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण कर सको।

58. और स्वच्छ भूमि अपनी उपज अल्लाह की अनुमति से भरपूर देती है। तथा खराब भूमि की उपज थोड़ी ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी^[1] आयतें (निशानियाँ) उन के लिये दुहराते हैं जो शुक अदा करते हैं।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتَهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ
وَالَّذِي خَبِلَ إِلَّا تَعْرِجُ إِلَّا تَكِيدُ أَكْذَابَكَ
نُصُوفِ الْأَيْتِ بِقَوْمٍ يُشْكِرُونَ ۝

59. हम ने नूह^[2] को उस की जाति की ओर (अपना संदेश पहुँचाने के लिये) भेजा था, तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! (केवल) अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَفْؤُورِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ الْعِزَّةِ إِنِّي أَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

60. उस की जाति के प्रमुखों ने कहा: हमें

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنِّي لَأَنْذِرُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

- 1 नबी (सल्लल्लुआहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मुझे अल्लाह ने जिस मार्ग दर्शन और ज्ञान के साथ भेजा है वह उस वर्षा के समान है जो किसी भूमि में हूई। तो उस का कुछ भाग अच्छा था जिस ने पानी लिया और उस से बहुत सी घास और चारा उगाया। और कुछ कड़ा था जिस ने पानी रोक लिया तो लोगों को लाभ हुआ और उस से पिया और सीचा। और कुछ चिकना था, जिस ने न पानी रोका न घास उपजाई। तो यही उस की दशा है जिस ने अल्लाह के धर्म को समझा और उसे सीखा तथा सिखाया। और उस की जिस ने उस पर ध्यान ही नहीं दिया और न अल्लाह के मार्गदर्शन को स्वीकार किया जिस के साथ मुझे भेजा गया है। (सहीह बुखारी-79)

- 2 बताया जाता है कि नूह (अलैहिस्सलाम) प्रथम मनु आदम (अलैहिस्सलाम) के दसवें वंश में थे। उन से कुछ पहले तक लोग इस्लाम पर चले आ रहे थे। फिर अपने धर्म से फिर गये और अपने पुनीत पूर्वजों की मूर्तियाँ बना कर पूजने लगे। तब अल्लाह ने नूह को भेजा। किन्तु कुछ के सिवा किसी ने उन की बात नहीं मानी। अन्ततः सब डुबो दिये गये। फिर नूह के तीन पुत्रों से मानव वंश चला इसी लिये उन को दूसरा आदम भी कहा जाता है। (देखिये सूरह नूह, आयत: 71)

लगता है कि तुम खुले कुपथ में पड़ गये हो।

61. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मैं किसी कुपथ में नहीं हूँ। परन्तु मैं विश्व के पालनहार का रसूल हूँ।

62. तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा भला चाहता हूँ, और अल्लाह की ओर से उन चीज़ों का ज्ञान रखता हूँ जिन का ज्ञान तुम्हें नहीं है।

63. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है, ताकि वह तुम्हें सावधान करे, और ताकि तुम आज्ञाकारी बनो और अल्लाह की दया के योग्य हो जाओ?

64. फिर भी उन्होंने उस को झुठला दिया। तो हम ने उसे और जो नौका में उस के साथ थे उन को बचा लिया। और उन्हें डुबो दिया जो हमारी आयतों को झुठला चुके थे। वास्तव में वह (समझ बूझ के) अंधे थे।

65. (और इसी प्रकार) आद^[1] की ओर उन के भाई हूद को (भेजा)। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की इबादत (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तो क्या तुम (उस की अवैज्ञा से) नहीं डरते?

قَالَ يَقُولُ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَتِلْغَاكُمْ رَسُولَ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

أَوْحَيْبُكُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَسْتَفْتُوا وَلَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَعْيَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا شَقِيqِينَ ۝

وَالِإِلَىٰ عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقُولُ أُغْيِدُوا إِلَهُ مَا لَكُمْ مِّنَ اللَّهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝

1 नूह की जाति के पश्चात् अरब में आद जाति का उत्थान हुआ। जिस का निवास स्थान अहक़ाफ़ का क्षेत्र था। जो हिजाज़ तथा यमामा के बीच स्थित है। उन की आबादियाँ उमान से हज़रमौत और ईराक़ तक फैली हुई थीं।

66. (इस पर) उस की जाति में से उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये कि हमें ऐसा लग रहा है कि तुम ना समझ हो गये हो। और वास्तव में हम तुम्हें झुठों में समझ रहे हैं।

67. उस ने कहा: हे मेरी जाति! मुझ में कोई ना समझी की बात नहीं है परन्तु मैं तो संसार के पालनहार का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।

68. मैं तुम्हें अपने पालनहार का संदेश पहुँचा रहा हूँ और वास्तव में मैं तुम्हारा भरोसा करने योग्य शिक्षक हूँ।

69. क्या तुम्हें इस पर आश्चर्य हो रहा है कि तुम्हारे पालनहार की शिक्षा तुम्हीं में से एक पुरुष द्वारा तुम्हारे पास आ गई है ताकि वह तुम्हें सावधान करे?। तथा याद करो कि अब्बाह ने नुह की जाति के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है, और तुम्हें अधिक शारीरिक बल दिया है। अतः अब्बाह के पुरस्कारों को याद^[1] करो। संभवतः तुम सफल हो जाओगे।

70. उन्होंने ने कहा: क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम केवल एक ही अब्बाह की इबादत (बंदना) करें और उन्हें छोड़ दें जिन की पूजा हमारे पूर्वज करते आ रहे हैं? तो वह बात हमारे पास ला दो जिस से हमें डरा रहे हो, यदि तुम सच्चे हो?

71. उस ने कहा: तुम पर तुम्हारे

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرِيكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

أَبْلَغُكُمْ رَسُولًا لَوْ أَنَّكُمْ تَأْمِنُونَ ۝

أَوْحَيْنَا أَنْ جَاءَ كُذِّبُوا مِنْ رَبِّكَ عَلَى رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَأَذْكُرُوا أَنَّهُ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَضْطَةً فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

قَالُوا اجْعَلْنَا لِنُعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرُ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَإِنَّا بِنُفُسِنَا قَانِعُونَ وَإِن كُنْتُمْ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

قَالَ كَذَّبْتُمْ عَلَيَّ مِنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ

1 अर्थात् उस के आज्ञाकारी तथा कृतज्ञ बनो।

पालनहार का प्रकोप और क्रोध आ पड़ा है। क्या तुम मुझ से कुछ (मूर्तियों के) नामों के विषय में विवाद कर रहे हो जिन का तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने (पूज्य) नाम रख दिया है। जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है? तो तुम (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और तुम्हारे साथ मैं भी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

72. फिर हम ने उसे और उस के साथियों को बचा लिया। तथा उन की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों (आदेशों) को झुठला दिया था। और वह ईमान लाने वाले नहीं थे।

73. और (इसी प्रकार) समूद^[1] (जाति) के पास उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति! अल्लाह की (वन्दना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण (चमत्कार) आ गया है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक चमत्कार^[2] है। अतः इसे अल्लाह की धरती में चरने के लिये छोड़ दो और इसे बुरे विचार से हाथ न लगाना, अन्यथा तुम्हें दुःखदायी यातना घेर लेगी।

وَعَصَبٌ أَمْعَادٍ لِّوَيْحِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاءُكُمْ مِمَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ فَانْتَقَرُوا إِلَيَّ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ ۝

فَأَجْنَحْنَاهُ وَالدَّيْنِ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَقَطَّعْنَاهُ إِبْرَاهِيمَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝

وَالِى سَمُودَ أَخَاهُ صَالِحًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ الْوَعْدَةِ قَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَاكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمْسُوهَا سَوْءَ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ الْيَوْمِ ۝

1 समूद जाति अरब के उस क्षेत्र में रहती थी जो हिजाज़ तथा शाम के बीच «बादिये-कुर» तक चला गया है। जिस को आज ((अल उला)) कहते हैं। इसी को दूसरे स्थान पर «अलहिज्र» भी कहा गया है।

2 समूद जाति ने अपने नबी सालेह अलैहिस्सलाम से यह माँग की थी कि: पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दें और सालेह अलैहिस्सलाम की प्रार्थना से अल्लाह ने उन की यह माँग पूरी कर दी। (इब्ने कसीर)

74. तथा याद करो कि अल्लाह ने आद जाति के ध्वस्त किये जाने के पश्चात् तुम्हें धरती में अधिकार दिया है और तुम्हें धरती में बसाया है, तुम उस के मैदानों में भवन बनाते हो और पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपकारों को याद करो और धरती में उपद्रव करते न फिरो।

75. उस की जाति के घमंडी प्रमुखों ने उन निर्बलों से कहा जो उन में से ईमान लाये थे: क्या तुम विश्वास रखते हो कि सालेह अपने पालनहार का भेजा हुआ है? उन्होंने ने कहा: निश्चय जिस (संदेश) के साथ वह भेजा गया है हम उस पर ईमान (विश्वास) रखते हैं।

76. (तो इस पर) घमंडियों^[1] ने कहा: हम तो जिस का तुम ने विश्वास किया है उसे नहीं मानते।

77. फिर उन्होंने ने ऊँटनी को बध कर दिया और अपने पालनहार के आदेश का उल्लंघन किया और कहा: हे सालेह! तू हमें जिस (यातना) की धमकी दे रहा था उसे ला दे, यदि तू वास्तव में रसूलों में से है।

78. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया। फिर जब भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

79. तो सालेह ने उन से मेह फेर लिया और

وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَخِفُونَ مِنْهُنَّ سُهُولَهَا فُتُورًا وَتَتَعَشَّوْنَ فِي الْجِبَالِ يَبُوتًا ۖ فَاذْكُرُوا الْآيَةَ الَّتِي كُنْتُمْ فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضِعُوا لِنِسَاءِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّهُمْ مُفْسِدُونَ ۚ إِنَّ صَلَاحَ مَنْ رُسُلٍ مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّهُمْ بِلَا إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ مُؤْمِنُونَ ۝

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِينَ آمَنُوا كَافِرُونَ ۝

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُضْلِلُ الْغَنَاءُ بِنَاءِ بَعْدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيمِينَ ۝

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰ قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ

1 अर्थात् अपने संसारिक सुखों के कारण अपने बड़े होने का गर्व था।

कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के उपदेश पहुँचा दिये थे और मैं ने तुम्हारा भला चाहा। परन्तु तुम उपकारियों से प्रेम नहीं करते।

80. और हम ने लूत^[1] को भेजा। जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम ऐसी निर्लज्जा का काम कर रहे हो जो तुम से पहले संसारवासियों में से किसी ने नहीं किया है?

81. तुम स्त्रियों को छोड़ कर कामवासना की पूर्ति के लिये पुरुषों के पास जाते हो? बल्कि तुम सीमा लांघने वाली जाति^[2] हो।

82. और उस की जाति का उत्तर बस यह था कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग अपने में बड़े पवित्र बन रहे हैं।

83. हम ने उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा बचा लिया, वह पीछे रह जाने वाली थी।

84. और हम ने उन पर (पत्थरों) की वर्षा कर दी। तो देखो कि अपराधियों का परिणाम कैसा रहा?

رِسَالَةً رَّبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُحِبُّونَ
التَّصَحُّبِينَ

وَلَوْظِلَّا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ أَبَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا
أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنْفُسٌ
يَتَطَهَّرُونَ ۝

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ
الْغَابِرِينَ ۝

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَأَنْظَرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। और वह जिस जाति के मार्गदर्शन के लिये भेजे गये थे वह उस क्षेत्र में रहती थी जहाँ अब «मृत सागर» स्थित है। उस का नाम भाष्यकारों ने सडूम बताया है।

2 लूत अलैहिस्सलाम की जाति ने निर्लज्जा और बालमैथुन की कुरीति बनाई थी जो मनुष्य के स्वभाव के विरुद्ध था। आज रिसर्च से पता चला कि यह विभिन्न प्रकार के रोगों का कारण है जिस में विशेष कर «एड्स» के रोगों का वर्णन करते हैं। परन्तु आज पश्चिमि देश दुबारा उस अंधकार युग की ओर जा रहे हैं। और इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नाम दे रखा है।

85. तथा मद्यन^[1] की ओर हम ने उस के भाई शूऐब को रसूल बना कर भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत (बंदना) करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार का खुला तर्क (प्रमाण) आ गया है। अतः नाप और तौल पूरी करो और लोगों की चीजों में कमी न करो। तथा धरती में उस के सुधार के पश्चात् उपद्रव न करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ईमान वाले हो।

86. तथा प्रत्येक मार्ग पर लोगों को धमकाने के लिये न बैठो और उन्हें अल्लाह की राह से न रोको जो उस पर ईमान लाये^[2] है। और उसे टेढ़ा न बनाओ, तथा उस समय को याद करो जब तुम थोड़े थे, तो तुम्हें अल्लाह ने अधिक कर दिया। तथा देखो कि उपद्रवियों का परिणाम क्या हुआ?

87. और यदि तुम्हारा एक समुदाय उस पर ईमान लाया है जिस के साथ मैं

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ
جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَتَّبِعُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تُفْسِدُوا فِى الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ
وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنِ آمَنَ بِهِ
وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَذْكُرُوا أَن كُنْتُمْ
قَلِيلًا فَكَثَرْتُمْ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

وَإِنْ كَانَ طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ آمَنُوا

1 मद्यन् एक कबीले का नाम था। और उसी के नाम पर एक नगर बस गया जो हिजाज़ के उत्तर-पश्चिम तथा फ़लस्तीन के दक्षिण में लाल सागर और अकबा खाड़ी के किनारे पर रहता था। यह लोग व्यापार करते थे प्राचीन व्यापार राजपथ, लाल सागर के किनारे यमन से मक्का तथा यंबुअ होते हुये सीरिया तक जाता था।

2 जैसे मक्का वाले मक्का के बाहर से आने वालों को कुर्आन सुनने से रोका करते थे। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादूगर कह कर आप के पास जाने से रोकते थे। परन्तु उन की एक न चली, और कुर्आन लोगों के दिलों में उतरता और इस्लाम फैलता गया। इस से पता चलता है कि नबियों की शिक्षाओं के साथ उन की जातियों ने एक जैसा व्यवहार किया।

भेजा गया हूँ और दूसरा ईमान नहीं लाया है तो तुम धैर्य रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे। और वह उत्तम न्याय करने वाला है।

88. उस की जाति के प्रमुखों ने जिन्हें घमंड था कहा कि हे शुऐब! हम तुम को तथा जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपने नगर से अवश्य निकाल देंगे। अथवा तुम सब को हमारे धर्म में अवश्य वापिस आना होगा। (शुऐब) ने कहा: क्या यदि हम उसे दिल से न मानें तो?

89. हम ने अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाया है, यदि तुम्हारे धर्म में इस के पश्चात् वापिस आ गये, जब कि हमें अल्लाह ने उस से मुक्त कर दिया है। और हमारे लिये संभव नहीं कि उस में फिर आ जायें, परन्तु यह कि हमारा पालनहार चाहता हो। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान में समोये हुये है, अल्लाह ही पर हमारा भरोसा है। हे हमारे पालनहार! हमारे और हमारी जाति के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दे। और तू ही उत्तम निर्णयकारी है।

90. तथा उस की जाति के काफिर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम लोग शुऐब का अनुसरण करोगे तो वस्तुतः तुम लोगों का उस समय नाश हो जायेगा।

91. तो उन्हें भूकम्प ने पकड़ लिया फिर भोर हुई तो वे अपने घरों में औंधे पड़े हुये थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُرْسِلْتُمْ بِهِمْ وَطَائِفَةٌ لَمْ يُؤْمِنُوا
فَأَصِيدُوا أَحَدًا يَحْكُمُ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ
خَيْرُ الْحَكِمِينَ ۝

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعَبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ
قَرْيَتِنَا أَوْ لَنَعُودَنَّ فِي بَلَدِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِمِينَ ۝

قَدْ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنَّ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ
إِذْ عٰثَرْنَا اللَّهَ مِنْهَا أَوْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا
عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا اقْبَلْ تَوْبَتَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا
يَا نَحْيَىٰ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنْ لَمْ تَنْبَغِ
شُعَيْبًا لَكُمْ إِذْ أَخْبَرُوكُمْ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جُثَّةٍ ۝

92. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया (उन की यह दशा हुई कि) मानो कभी उस नगर में बसे ही नहीं थे।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۝

93. तो शुऐब उन से विमुख हो गया, तथा कहा: हे मेरी जाति! मैं ने तुम्हें अपने पालनहार के संदेश पहुँचा दिये, तथा तुम्हारा हितकारी रहा। तो काफ़िर जाति (के विनाश) पर कैसे शोक करें?

مَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَ قَوْمٍ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَتِي وَرَبِّي وَتَصَدَّقْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ آتَى عَلَى قَوْمٍ كُفْرًا ۝

94. तथा हम ने जब किसी नगरी में कोई नबी भेजा, तो उस के निवासियों को आपदा, तथा दुःख में ग्रस्त कर दिया कि संभवतः वह विन्ती करें।^[1]

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبِاسِ أَوَّاعٍ وَالضَّرَاءِ لَعَلَّهُمْ يَضُرَّغُونَ ۝

95. फिर हम ने आपदा को सुख सुविधा से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वह सुखी हो गये, और उन्होंने ने कहा कि हमारे पूर्वजों को भी दुःख तथा सुख पहुँचता रहा है, तो अकस्मात् हम ने उन्हें पकड़ लिया, और वह समझ नहीं सके।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَاءُ وَالسَّرَاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَعَثَةً فِيهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّهُمْ

96. और यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते, और कुकर्मों से बचे रहते, तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا فَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि सभी नबी अपनी जाति में पैदा हुये। सब अकेले धर्म का प्रचार करने के लिये आये। और सब का उपदेश एक था कि अल्लाह की बंदना करो उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। सब ने सत्कर्म की प्रेरणा दी, और कुकर्म के दुष्परिणाम से सावधान किया। सब का साथ निर्धनों तथा निर्बलों ने दिया। प्रमुखों और बड़ों ने उन का विरोध किया। नबियों का विरोध भी उन्हें धमकी तथा दुःख दे कर किया गया। और सब का परिणाम भी एक प्रकार हुआ, अर्थात् उन को अल्लाह की यातना ने घेर लिया। और यही सदा इस संसार में अल्लाह का नियम रहा है।

परन्तु उन्होंने ने झुठला दिया। अतः हम ने उन के कर्तुतों के कारण उन्हें (यातना में) घेर लिया।

97. तो क्या नगरवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारी यातना रातों रात आ जाये, और वह पड़े सो रहे हों?
98. अथवा नगरवासी निश्चिन्त हो गये हैं कि हमारी यातना उन पर दिन के समय आ पड़े, और वह खेल रहे हों?
99. तो क्या वह अल्लाह के गुप्त उपाय से निश्चिन्त हो गये हैं? तो (याद रखो!) अल्लाह के गुप्त उपाय से नाश होने वाली जाति ही निश्चिन्त होती है।
100. तो क्या उन को शिक्षा नहीं मिली जो धरती के वारिस होते हैं उस के अगले वासियों के पश्चात्? कि यदि हम चाहें, तो उन के पापों के बदले उन्हें आपदा में ग्रस्त कर दें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दें, फिर वह कोई बात ही न सुन सकें?
101. (हे नबी!) यह वह नगर हैं जिन की कथा हम आप को सुना रहे हैं। इन सब के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, तो वह ऐसे न थे कि उस (सत्य) पर विश्वास कर लें जिस को वे इस से पूर्व झुठला¹ चुके थे। इसी प्रकार अल्लाह काफिरों

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
نَهَارًا وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۝

أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا
الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۝

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ
أَهْلِهَا أَن لَّوْ شَاءَ أَصْبَنَهُم بِذُنُوبِهِمْ
وَنُظِّمَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَمْ يُؤْمِنُوا ۝

بِذَلِكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ
حَضَرَكَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ كَذَّابِك يَطْغَىٰ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् सत्य का प्रमाण आने से पहले झुठला दिया था उस के पश्चात् भी अपनी हठधर्मी से उसी पर अड़े रहे।

के दिलों पर मुहर लगाता है।

102. और हम ने उन में अधिकतर को वचन पर स्थित नहीं पाया^[1] तथा हम ने उन में अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

103. फिर हम ने इन रसूलों के पश्चात् मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ फिरऔन^[2] और उस के प्रमुखों के पास भेजा, तो उन्होंने ने भी हमारी आयतों के साथ अन्याय किया, तो देखो कि उपद्रवियों का क्या परिणाम हुआ?

104. तथा मूसा ने कहा: हे फिरऔन! मैं वास्तव में विश्व के पालनहार का रसूल (संदेश वाहक) हूँ।

105. मेरे लिये यही योग्य है कि अल्लाह के विषय में सत्य के अतिरिक्त कोई बात न करूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से खुला प्रमाण लाया हूँ। इस लिये मेरे साथ बनी इस्राईल^[3] को जाने दे।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ رَاسِلًا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ يُفْرَعُونَ إِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ قَدْ جئتكم ببينّةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝

1 इस से उस प्रण (वचन) की ओर संकेत है, जो अल्लाह ने सब से «आदि काल» में लिया था कि क्या मैं तुम्हारा पालनहार (पूज्य) नहीं हूँ? तो सब ने इसे स्वीकार किया था। (देखिये: सूरह आराफ़, आयत, 172)

2 मिस्र के शासकों की उपाधि फिरऔन होती थी। यह ईसा पूर्व डेढ़ हजार वर्ष की बात है। उन का राज्य शाम से लीबिया तथा हब्श्शा तक था। फिरऔन अपने को सब से बड़ा पूज्य मानता था और लोग भी उस की पूजा करते थे। उस की ओर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को एक अल्लाह की इबादत का संदेश देकर भेजा कि पूज्य तो केवल अल्लाह है उस के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

3 बनी इस्राईल यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के युग में मिस्र आये थे। तथा चार सौ वर्ष का युग बड़े आदर के साथ व्यतीत किया। फिर उन के कुकर्मों के कारण फिरऔन

106. उस ने कहा: यदि तुम कोई प्रमाण (चमत्कार) लाये हो तो उसे प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो।

قَالَ إِنْ كُنْتُمْ حَقًّا بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِنْ كُنْتُمْ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠٦﴾

107. फिर मूसा ने अपनी लाठी फेंकी, तो अकस्मात् वह एक अजगर बन गई।

فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

108. और अपना हाथ (जैब से) निकाला तो वह देखने वालों के लिये चमक रहा था।

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظِيرِينَ ﴿١٠٨﴾

109. फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा: वास्तव में यह बड़ा दक्ष जादूगर है।

قَالَ الْمَلَائِكَةُ قَوْمُ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا السَّحَرُ عَلَىٰ نَجْوٍ ﴿١٠٩﴾

110. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकालना चाहता है। तो अब क्या आदेश दे रहे हो?

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ قَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

111. सब ने कहा: उस को और उस के भाई (हारून) को अभी छोड़ दो, और नगरों में एकत्र करने के लिये हरकारे भेजो।

قَالُوا الرَّجُلُ وَآخَاهُ وَآزِيلٌ فِي الْمَدَائِنِ خَشِيرِينَ ﴿١١١﴾

112. जो प्रत्येक दक्ष जादूगरों को तुम्हारे पास लायें।

يَأْتُواكَ بِكُلِّ سَحَرٍ عَلَيْهِمْ ﴿١١٢﴾

113. और जादूगर फिरऔन के पास आ गये। उन्होंने ने कहा: हमें निश्चय पुरस्कार मिलेगा, यदि हम ही विजयी हो गये तो?

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَكْبَرَ إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿١١٣﴾

114. फिरऔन ने कहा: हाँ। और तुम मेरे समीपवर्तियों में से भी हो जाओगे।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

और उस की जाति ने उन को अपना दास बना लिया। जिस के कारण मूसा (अलैहिस्सलाम) ने बनी इस्राईल को मुक्त करने की माँग की। (इब्ने कसीर)

115. जादूगरों ने कहा: हे मूसा! तुम (पहले) फेंकोगे, या हमें फेंकना होगा?
116. मूसा ने कहा: तुम्हीं फेंको। तो उन्होंने ने जब (रस्सियाँ) फेंकी, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया, और उन्हें भयभीत कर दिया। और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।
117. तो हम ने मूसा को बह्दी की, कि अपनी लाठी फेंको। और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी।
118. अतः सत्य सिद्ध हो गया, और उन का बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ हो कर^[1] रह गया।
119. अन्ततः वह पराजित कर दिये गये, और तुच्छ तथा अपमानित हो कर रह गये।
120. तथा सभी जादूगर (मूसा का सत्य) देख कर सज्दे में गिर गये।
121. उन्होंने ने कहा: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
122. जो मूसा तथा हारून का पालनहार है।
123. फिरऔन ने कहा: इस से पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ तुम उस पर ईमान ले आये? वास्तव में यह षड्यंत्र है जिसे तुम ने नगर में रचा है, ताकि उस के निवासियों को उस से निकाल दो! तो शीघ्र ही तुम्हें इस

قَالُوا يَمُوسَى إِنَّا أَنْتَلِفِي وَمَا أَنْ تَكُونَ عَنْ الْمَلِئِينَ ۝

قَالَ الْقَوْمُ افْكُنَّا الْقَوْمَ سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَجَعَلْنَاهُمْ أَهْلًا لَكَ وَقَتَلْنَا الْأَصْغَرَيْنِ ۝

وَالْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ۝

قَالُوا الْمَلَأَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ۝

قَالَ فِرْعَوْنُ امْكُنْ بِمِ قَبْلَ أَنْ أَذِنَ لَكَ إِنَّ هَذَا لَكُنْ مَكْرُومًا ۝ فِي الْمَدِينَةِ لَتُفْرِحُوا مِنْهَا أَهْلُهَا فَسَوْفَ نَعْتَبُونُ ۝

1 कुर्आन ने अब से तेरह सौ वर्ष पहले यह घोषणा कर दी थी कि जादू तथा मंत्र-तंत्र निर्मूल हैं।

(के परिणाम) का ज्ञान हो जायेगा।

124. मैं अवश्य तुम्हारे हाथ तथा पाँव विपरीत दिशाओं से काट दूँगा, फिर तुम सभी को फाँसी पर लटका दूँगा।

لَأَقْطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

125. उन्होंने ने कहा: हमें अपने पालनहार ही की ओर प्रत्येक दशा में जाना है।

قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُتَقِلُونَ ۝

126. तू हम से इसी बात का तो बदला ले रहा है कि हमारे पास हमारे पालनहार की आयतें (निशानियाँ) आ गई? तो हम उन पर ईमान ला चुके हैं। हे हमारे पालनहार! हम पर धैर्य (की धारा) उँडेल दे! और हमें इस दशा में (संसार से) उठा कि तेरे आज्ञाकारी रहें।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَنَا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقَّنَا مُسْلِمِينَ ۝

127. और फिरऔन की जाति के प्रमुखों ने (उस से) कहा: क्या तुम मूसा और उस की जाति को छोड़ दोगे कि देश में विद्रोह करें, तथा तुम को और तुम्हारे पूज्यों^[1] को छोड़ दें? उस ने कहा: हम उन के पुत्रों को बध कर देंगे, और उन की स्त्रियों को जीवित रहने देंगे, हम उन पर दबाव रखते हैं।

وَقَالَ الْهَلَّاؤُ مِنْ قَوْمٍ فِرْعَوْنُ أَتَدْرِي مَوْسَىٰ وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَالْهَتَكَ قَالَ سَنَقْتُلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ۝

128. मूसा ने अपनी जाति से कहा: अब्राह से सहायता माँगो, और सहन करो, वास्तव में धरती अब्राह की है, वह

قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ

1 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि मिस्री अनेक देवताओं की पूजा करते थे। जिन में सब से बड़ा देवता: सूर्य था। जिसे «रूअ», कहते थे। और राजा को उसी का अवतार मानते थे, और उस की पूजा, और उस के लिये सज्दा करते थे जिस प्रकार अब्राह के लिये सज्दा किया जाता है।

अपने भक्तों में से जिसे चाहे उस का बारिस (उत्तराधिकारी) बना देता है। और अन्त उन्हीं के लिये है जो आज्ञाकारी हों।

129. उन्होंने ने कहा: हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के पश्चात् भी (सताये जा रहे हैं)। मूसा ने कहा: समीप है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु का विनाश कर दे, और तुम्हें देश में अधिकारी बना दे। फिर देखे कि तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं।

130. और हम ने फिरऔन की जाति को अकालों तथा उपज की कमी में ग्रस्त कर दिया ताकि वह सावधान हो जायें।

131. तो जब उन पर सम्पन्नता आती तो कहते कि हम इस के योग्य हैं। और जब अकाल पड़ता, तो मूसा और उस के साथियों से बुरा सगुन लेते। सुन लो! उन का बुरा सगुन तो अब्राह के पास^[1] था, परन्तु अधिकतर लोग इस का ज्ञान नहीं रखते।

132. और उन्होंने ने कहा: तू हम पर जादू करने के लिये कोई भी आयत (चमत्कार) ले आये तो हम तेरा विश्वास करने वाले नहीं हैं।

عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝

قَالُوا أَوِذْ يَبْنَؤُا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَلَىٰ رُبِّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوُّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّيْنِ وَقَفَضْنَا مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

فَإِذَا جَاءَهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَئِنْ هَذِهِ إِلَّا نُسَبِّحُكُمْ بِبَيِّنَاتٍ يُظَاهِرُونَ مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ إِلَّا إِنَّمَا ظَنَرَهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنْ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَقَالُوا مَهْمَا آتَاكَ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِنَا لَنَسْحَرَنَّ بِهَا أَفَمَا نَعْنُكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

1 अर्थात् अब्राह ने प्रत्येक दशा के लिये एक नियम बना दिया है जिस के अनुसार कर्मों के परिणाम सामने आते हैं चाहे वह अशुभ हों या न हों सब अब्राह के निर्धारित नियमअनुसार होते हैं।

133. अन्ततः हम ने उन पर तूफान (उग्र वर्षा) तथा टिड्डी दल और जुअँ एवं मेढक और रक्त की वर्षा भेजी।
अलग अलग निशानियाँ, फिर भी उन्होंने ने अभिमान किया, और वह थी ही अपराधी जाति।

134. और जब उन पर यातना आ पड़ी तो उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू अपने पालनहार से उस वचन के कारण जो उस ने तुझे दिया है, हमारे लिये प्रार्थना कर। यदि तू ने (अपनी प्रार्थना से) हम से यातना दूर कर दी तो हम अवश्य तेरा विश्वास कर लेंगे, और बनी इस्राईल को तेरे साथ जाने की अनुमति दे देंगे।

135. फिर जब हम ने एक विशेष समय तक के लिये उन से यातना दूर कर दी जिस तक उन्हें पहुँचना था, तो अकस्मात् वह वचन भंग करने लगे।

136. अन्ततः हम ने उन से बदला लिया और उन्हें सागर में डुबो दिया इस कारण कि उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया और उन से निश्चेत हो गये थे। उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरौन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परोँ पर चढ़ा रही थी।⁽¹⁾

137. और हम ने उस जाति (बनी

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالضَّفَادَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالَ الْيَاسُوتَىٰ اِدْعُوا
رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ لِيُنْزِلَ عَلَيْنَا مَاءً
الْحَرِيمَ ۚ لَيُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي
إِسْرَءِيلَ ۝

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ
بِلُغْوِهِ إِذَا هُمْ يَنْكُتُونَ ۝

فَأَنشَأْنَا مِنْهُمُ اقْرَءَهُمْ فِي الْيَوْمِ بِأَنَّهُمْ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ۝

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ

1 अर्थात: उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग बगीचे।

इस्राईल) को जो निर्बल समझे जा रहे थे धरती (शाम देश) के पश्चिमों तथा पूर्वी का जिस में हम ने बरकत दी थी अधिकारी बना दिया। और (इस प्रकार हे नबी!) आप के पालनहार का शुभ वचन बनी इस्राईल के लिये पूरा हो गया, उन के धैर्य रखने के कारण, तथा हम ने उसे ध्वस्त कर दिया जो फिरऔन और उस की जाति कलाकारी कर रही थी, और जो बेलै छप्परोँ पर चढ़ा रहे थे।^[1]

138. और बनी इस्राईल को हम ने सागर पार करा दिया, तो वह एक जाति के पास से हो कर गये जो अपनी मूर्तियों की पूजा कर रही थी, उन्होंने ने कहा: हे मूसा! हमारे लिये बैसा ही एक पूज्य बना दीजिये जैसे उन के पूज्य हैं। मूसा ने कहा: वास्तव में तुम अज्ञान जाति हो।

139. यह लोग जिस रीति में है उसे नाश हो जाना है, और वह जो कुछ कर रहे हैं सर्वथा असत्य है।

140. मूसा ने कहा: क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिये कोई दूसरा पूज्य निर्धारित करूँ जब कि उस ने तुम्हें सारे संसारों के बासियों पर प्रधानता दी है?

141. तथा उस समय को याद करो, जब हम ने तुम्हें फिरऔन की जाति से बचाया। वह तुम्हें घोर यातना दे रहे

مَشَارِقِ الْأَرْضِ وَمَغَارِبِهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَنَمَتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ
بِمَا صَبَرُوا وَذَمَرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
وَقَوْمَهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝

وَجَوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ
يَعْبُدُونَ عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ قَالُوا يَهُوسُفُ اجْعَلْ
لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ
تَجَاهِلُونَ ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَّبِعَةٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبِطِلٌ مَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝

قَالَ أَتَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ أَدْعِيكُمْ إِلَهُاتِهَا هِيَ فَضَّلَكُمْ عَلَى
الْعَالَمِينَ ۝

وَلَاذِ انْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ
الْعَذَابِ يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْمِلُونَ

1 अर्थात: उन के ऊँचे ऊँचे भवन, तथा सुन्दर बाग बगीचे।

थे। तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे, और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रख रहे थे। और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी।

142. और हम ने मूसा को तीस रातों का वचन^[1] दिया। और उस की पूर्ति दस रातों से कर दी। तो तेरे पालनहार की निर्धारित अवधि चालीस रात पूरी हो गयी। तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा: तुम मेरी जाति में मेरा प्रतिनिधि रहना तथा सुधार करते रहना, और उपद्रवकारियों की नीति न अपनाना।

143. और जब मूसा हमारे निर्धारित समय पर आ गया, और उस के पालनहार ने उस से बात की, तो उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरे लिये अपने आप को दिखा दे ताकि मैं तेरा दर्शन कर लूँ। अल्लाह ने कहा: तू मेरा दर्शन नहीं कर सकेगा। परन्तु इस पर्वत की ओर देखा। यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह गया तो तू मेरा दर्शन कर सकेगा। फिर जब उस का पालनहार पर्वत की ओर प्रकाशित हुआ तो उसे चूर-चूर कर दिया। और मूसा निश्चेत हो कर गिर गया। और जब चेतना में आया, तो उस ने कहा: तू पवित्र है! मैं तुझ से क्षमा माँगता हूँ। तथा मैं सर्व

فَسَاءَ كَذُوبِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ

وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ أَمْثَلٍ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ قَالَ لَن نَرَا فَنِي وَلَكِن أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ نَرِيهِ فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ

1 अर्थात् तुर पर्वत पर आकर अल्लाह की इबादत करने और धर्मविधान प्रदान करने के लिये।

प्रथम^[1] ईमान लाने वालों में से हूँ।

144. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! मैं ने तुझे लोगों पर प्रधानता दे कर अपने संदेशों तथा अपने वार्तालाप द्वारा निर्वाचित कर लिया है। अतः जो कुछ तुझे प्रदान किया है उसे ग्रहण कर ले, और कृतज्ञों में हो जा।

145. और हम ने उस के लिये तख्तियों पर (धर्म के) प्रत्येक विषय के लिये निर्देश और प्रत्येक बात का विवरण लिख दिया। (तथा कहा कि) इसे दृढ़ता से पकड़ लो, और अपनी जाति को आदेश दो कि उस के उत्तम निर्देशों का पालन करें। और मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखा दूँगा।

146. मैं उन्हें^[2] अपनी आयतों (निशानियों) से फेर^[3] दूँगा जो धरती में अवैध अभिमान करते हैं। और यदि वह प्रत्येक आयत (निशानी) देख लें तब भी उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और यदि वह सुपथ देखेंगे तो उसे नहीं अपनायेंगे। और यदि कुपथ देख लें तो उसे अपना लेंगे। यह इस कारण कि

قَالَ يٰمُوسَى إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ
بِرِسَالَتِي وَبِكَلَامِي فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُنْ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْعِظَةً
وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ
قَوْمَكَ بِأَخْذِهَا بِأَحْسَنِ سَأْوٍ رَّبِّكُمْ دَارَ
الْآٰفِيَةِ ۝

سَاصِرُفٌ عَنِ الْبَنَى الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ فِي
الْأَرْضِ بَغْيُ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَا
يُؤْمِنُوْا بِهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ
سَبِيْلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيْلَ الْعَنَى يَتَّخِذُوْهُ
سَبِيْلًا ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِآيَاتِنَا وَكَانُوْا
عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝

1 इस से प्रत्यक्ष हुआ कि कोई व्यक्ति इस संसार में रहते हुये अल्लाह को नहीं देख सकता और जो ऐसा कहते हैं वह शैतान के बहकावे में हैं। परन्तु सहीह हदीस से सिद्ध होता है कि आखिरत में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे।

2 अर्थात् तुम्हें उन पर विजय दूँगा जो अवैज्ञाकारी हैं, जैसे उस समय की अमालिका इत्यादि जातियों पर।

3 अर्थात् जो जान बूझ कर अवैज्ञा करेगा अल्लाह का नियम यही है कि वह तर्कों तथा प्रकाशों से प्रभावित होने की योग्यता खो देगा। इस का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह किसी को अकारण कुपथ पर बाध्य कर देता है।

उन्होंने ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, और उन से निश्चेत रहे।

147. और जिन लोगों ने हमारी आयतों, तथा परलोक (में हम से) मिलने को झुठला दिया, उन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और उन्हें उसी का बदला मिलेगा, जो कुकर्म वह कर रहे थे।

148. और मूसा की जाति ने उस के (पर्वत पर जाने के) पश्चात् अपने आभूषणों से एक बछड़े की मूर्ति बना ली, जिस से गाय के डकारने के समान ध्वनि निकलती थी। क्या उन्होंने ने यह नहीं सोचा कि न तो वह उन से बात^[1] करता है और न किसी प्रकार का मार्गदर्शन देता है? उन्होंने ने उसे बना लिया, तथा वे अत्याचारी थे।

149. और जब वह (अपने किये पर) लज्जित हुये और समझ गये कि वह कुपथ हो गये हैं, तो कहने लगे: यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया नहीं की, और हमें क्षमा नहीं किया, तो हम अवश्य बिनाशों में हो जायेंगे।

150. और जब मूसा अपनी जाति की ओर क्रोध तथा दुःख से भरा हुआ वापिस आया तो उस ने कहा: तुम ने मेरे

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هُمْ هُنَا يُجْرُونَ إِلَّا مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ بَعْدِهِ مِنْ خَلْقِهِمْ
عِجْلًا صِنْدًا لَهُمْ فَخُوتُوا لَهُمْ أَوْثَانًا
يَكْلَبُوهُمْ وَالْأَيْدِي بِهَيْمِهِمْ سَبِيلًا ۚ وَاتَّخَذُوا
ذُلًّا لِلظَّالِمِينَ ﴿١٤٨﴾

وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ
ضَلُّوا قَالُوا لَوْ أَنَّا كُنَّا نَعْلَمُ سُبُلَ الْغَيْبِ لَكُنَّا
مِنَ الْخَائِرِينَ ﴿١٤٩﴾

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَى إِلَى قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۖ أَتَعْبَدُونَ
مِمَّا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۚ قَالُوا يَبْنَؤُنَا
فَأَنْتَ نَافِلٌ ۖ قُلْ إِنِّي خَشِيتُ الْمَوْعِدَ الَّذِي
إِلَيَّْ أُصْعِقُ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَعْبُدُونَ ۚ إِنَّهُ
سَبِيغٌ مُهِيمٌ ۚ قُلْ إِنِّي خَشِيتُ أَنْ يَحْدِثَ لَكُمْ
فِتْنَةً ۚ فَذُكِّرْتُم بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّزِرُونَ ﴿١٥٠﴾

1 अर्थात् उस से एक ही प्रकार की ध्वनि क्यों निकलती है। बाबिल और मिस्र में भी प्राचीन युग में गाय-बैल की पूजा हो रही थी। और यदि बाबिल की सभ्यता को प्राचीन मान लिया जाये तो यह विचार दूसरे देशों में वहीं से फैला होगा।

पश्चात् मेरा बहुत बुरा प्रतिनिधित्व किया। क्या तुम अपने पालनहार की आज्ञा से पहले ही जल्दी कर^[1] गये। तथा उस ने लेख तख्तियाँ डाल दी, तथा अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ के अपनी ओर खींचने लगा। उस ने कहा: हे मेरे माँ जाये भाई! लोगों ने मुझे निर्बल समझ लिया तथा समीप था कि वे मुझे मार डालें। अतः तू शत्रुओं को मुझ पर हंसने का अवसर न दे। मुझे अत्याचारियों का साथी न बना।

151. मूसा ने कहा:^[2] हे मेरे पालनहार! मुझे तथा मेरे भाई को क्षमा कर दे। और हमें अपनी दया में प्रवेश दे। और तू ही सब दयाकारियों से अधिक दयाशील है।

152. जिन लोगों ने बछड़े को पूज्य बनाया उन पर उन के पालनहार का प्रकोप आयेगा और वे संसारिक जीवन में अपमानित होंगे। और इसी प्रकार हम झूठ घड़ने वालों को दण्ड देते हैं।

153. और जिन लोगों ने दुष्कर्म किया, फिर उस के पश्चात् क्षमा माँग ली, और ईमान लाये, तो वास्तव में तेरा पालनहार अति क्षमाशील दयावान् है।

154. फिर जब मूसा का क्रोध शान्त हो गया तो उस ने लेख तख्तियाँ उठा

رَبِّكُمْ وَالْقَى الْأَوَاعِدَ وَاتَّخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ
إِلَيْهِ قَالَ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّوْنَ
وَكَاذِبُونَ قَالَتْ هُنَّ أُمَّهَاتُ لَأَنكِحْنَ الْأَكْدَانَ لَوْلَا
مَجْعَلُنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الصُّوْلَةَ سَبِيلًا لَّهُمْ عَذَابٌ
مِّن رَّبِّهِمْ وَذُلٌّ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَكَذَلِكَ نَجْزِي
الْمُفْسِدِينَ ۝

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا
وَأٰمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَوَاعِدَ

1 अर्थात् मेरे आने की प्रतीक्षा नहीं की।

2 अर्थात् जब यह सिद्ध हो गया कि मेरा भाई निर्दोष है।

ली, और उस के लिखे आदेशों में मार्गदर्शन तथा दया थी उन लोगों के लिये जो अपने पालनहार से ही डरते हों।

155. और मूसा ने हमारे निर्धारित^[1] समय के लिये अपनी जाति के सत्तर व्यक्तियों को चुन लिया। और जब उन्हें भूकम्प ने घेर^[2] लिया तो मूसा ने कहा: हे मेरे पालनहार! यदि तू चाहता तो इन सब का इस से पहले ही विनाश कर देता, और मेरा भी। क्या तू हमारा उस कुकर्म के कारण नाश कर देगा जो हम में से कुछ निर्बोध कर गये? यह^[3] तेरी ओर से केवल एक परीक्षा थी। तू जिसे चाहे उस के द्वारा कुपथ कर दे, और जिसे चाहे सुपथ दर्शा दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे। और हम पर दया कर, तू सर्वोत्तम क्षमावान् है।

156. और हमारे लिये इस संसार में भलाई लिख दे तथा परलोक में भी, हम तेरी ओर लौट आये। उस (अब्राह) ने कहा: मैं अपनी यातना जिसे चाहता हूँ देता हूँ। और मेरी दया प्रत्येक चीज़ को समोये हुये

وَنُحِبُّهَا هُدًى وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يُذَبُّونَ ﴿٩٥﴾

وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا أُولِيَّ قُوَّةٍ
فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم
مِّن قَبْلُ وَإِنِّي أَنُفِّلُكَ إِنَّمَا فَعَلْتُ الشَّعَاءَ مِنَّا إِنَّ
هُمُ الْإِفْسَنْتُكَ تَضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن
تَشَاءُ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الْغَافِرِينَ ﴿٩٦﴾

وَالْكِتَابَ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا أَلَيْنَا إِلَيْكَ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ
بِهِ مَن أَشَاءُ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ
فَسَاكِنُهَا الَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٧﴾

1. अब्राह ने मूसा अलैहिस्सलाम को आदेश दिया था कि वह तूर पर्वत के पास बछड़े की पूजा से क्षमा याचना के लिये कुछ लोगों को लाये। (इब्ने कसीर)
2. जब वह उस स्थान पर पहुँचे तो उन्होंने यह माँग की कि हम को हमारी आँखों से अब्राह को दिखा दे। अन्यथा हम तेरा विश्वास नहीं करेंगे। उस समय उन पर भूकम्प आया। (इब्ने कसीर)
3. अर्थात् बछड़े की पूजा।

है। मैं उसे उन लोगों के लिये लिख दूँगा जो अवैज्ञा से बचेंगे, तथा जकात देंगे, और जो हमारी आयतों पर ईमान लायेंगे।

157. जो उस रसूल का अनुसरण करेंगे जो उम्मी नबी^[1] है, जिन (के आगमन) का उल्लेख वह अपने पास तौरात तथा इंजील में पाते हैं। जो सदाचार का आदेश देंगे, और दुराचार से रोकेंगे। और उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल (वैध) तथा मलीन चीजों को हराम (अवैध) करेंगे। और उन से उन के बोझ उतार देंगे, तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे। अतः जो लोग आप पर ईमान लाये और आप का समर्थन किया और आप की सहायता की, तथा उस प्रकाश (कुर्आन) का अनुसरण किया जो आप के साथ उतारा गया, तो वही सफल होंगे।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ
الَّذِي يَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ كَتَبْنَا لَهُمُ فِي الْتَّوْرَةِ
وَالْإِنْجِيلِ يَا أُولَئِكَ أَنْتُمْ أَعْلَمُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ
الطَّيِّبَاتِ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ
الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَإِنَّهُمْ قَالُوا إِنَّا آمَنُوا بِه
وَعَزَّزْنَاهُ وَنَصَرْنَاهُ وَاتَّبَعْنَا الْتَّوْرَ الَّذِي
أُنْزِلَ مَعَهُ وَلَئِنْ كُنَّا لَمُفْلِحُونَ

158. (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

1 अर्थात् बनी इस्राईल से नहीं। इस से अभिप्राय अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन के आगमन की भविष्यवाणी तौरात, इंजील तथा दूसरे धर्म शास्त्रों में पाई जाती है। यहाँ पर आप की तीन विशेषताओं की चर्चा की गयी है:

1. आप सदाचार का आदेश देंगे तथा दुराचार से रोकेंगे।
2. स्वच्छ चीजों के प्रयोग को उचित तथा मलीन चीजों के प्रयोग को अनुचित घोषित करेंगे।
3. अहले किताब जिन कड़े धार्मिक नियमों के बोझ तले दबे हुये थे उन्हें उन से मुक्त करेंगे। और सरल इस्लामी धर्मविधान प्रस्तुत करेंगे, और उन के आगमन के पश्चात् लोक-परलोक की सफलता आप ही के धर्मविधान के अनुसरण में सीमित होगी।

हे मानव जाति के लोगो! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का रसूल हूँ जिस के लिये आकाश तथा धरती का राज्य है। कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही, जो जीवन देता तथा मारता है। अतः अल्लाह पर ईमान लाओ, और उस के उस उम्मी नबी पर जो अल्लाह पर और उस की सभी (आदि) पुस्तकों पर ईमान रखते हैं। और उन का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग दर्शन पा जाओ।^[1]

159. और मूसा की जाति में एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्य पर स्थित है, और उसी के अनुसार निर्णय (न्याय) करता है।

160. और^[2] हम ने मूसा की जाति के बारह घरानों को बारह समुदायों में विभक्त कर दिया। और हम ने मूसा की ओर बह्यी भेजी, जब उस की जाति ने उस से जल माँगा कि अपनी लाठी इस पत्थर पर मारो,

جَمِيعًا إِلَٰهَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَآمِنُوا
بِإِلَٰهِهِ وَرَسُولِهِ ۚ النَّبِيُّ الَّذِي يَأْتِيكُمُ
بِآيَاتِهِ وَكَلِمَتِهِ ۚ وَأَتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَيَسْأَلُونَ
يَعْدِلُونَ ۝

وَقَطَّعْنَاهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَاحِيَةً ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَمَ قَوْمُهُ أَنَّ
اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانفَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا
عَشْرَةَ عَيْنًا ۚ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ
وَوَضَّعْنَاهُمْ عَلَىٰ هُمْ الْغَنَامَ ۚ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ

1 इस आयत का भावार्थ यह है कि इस्लाम के नबी किसी विशेष जाति तथा देश के नबी नहीं हैं, प्रलय तक के लिये पूरी मानव जाति के नबी हैं। यह सब को एक अल्लाह की बंदना कराने के लिये आये हैं, जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं। आप का चिन्ह अल्लाह पर तथा सब प्राचीन पुस्तकों और नवियों पर ईमान है। आप का अनुसरण करने का अर्थ यह है कि अब उसी प्रकार अल्लाह की पूजा-अराधना करो जैसे आप ने की और बताई है। और आप के लाये हुये धर्म विधान का पालन करो।

2 इस से अभिप्राय वह लोग हैं जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के लाये हुये धर्म पर कायम थे और आने वाले नबी की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब वह आये तो तुरन्त आप पर ईमान लाये, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम इत्यादि।

तो उस से बारह स्रोत उबल पड़े, तथा प्रत्येक समुदाय ने अपने पीने का स्थान जान लिया। और उन पर बादलों की छाँव की, और उन पर मन्ष तथा सल्वा उतारा। (हम ने कहा): इन स्वच्छ चीजों में से जो हम ने तुम्हें प्रदान की है, खाओ। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं (अवैज्ञा कर के) अपने प्राणों पर अत्याचार कर रहे थे।

161. और जब उन (बनी इस्राईल) से कहा गया कि इस नगर (बैतुल मक्दिस) में बस जाओ, और उस में से जहाँ इच्छा हो खाओ, और कहो कि हमें क्षमा कर दे, तथा द्वार में सज्दा करते हुये प्रवेश करो, हम तुम्हारे लिये तुम्हारे दोषों को क्षमा कर देंगे, और सत्कर्मियों को और अधिक देंगे।

162. तो उन में से अत्याचारियों ने उस बात को दूसरी बात से¹ बदल दिया जो उन से कही गयी थी। तो हम ने उन पर आकाश से प्रकोप उतार दिया। क्यों कि वह अत्याचार कर रहे थे।

163. तथा (हे नबी!) इन से उस नगरी के सम्बन्ध में प्रश्न करो जो समुद्र (लाल सागर) के समीप थी, जब उस के निवासी सब्त (शनिवार) के

النَّهْرِ وَالسَّلْوَى كُلُّوْا مِنْ حَيْثُ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝

وَأَذَقْنَا لَهُمْ اسْكَنْتُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُّوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ سَأَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُوْنَ ۝

وَسَأَلْنَاهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً الْيَوْمَ يَأْتِيهِمْ يَوْمَ السَّبْتِ رِجْزٌ وَأَتَتْهُمْ فِيهَا نَارُ الْيَوْمِ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا

1 और चूतड़ों के बल खिसकते और यह कहते हुये प्रवेश किया कि गेहूँ मिले। (सहीह बुखारी- 4641)

दिन के विषय में आज्ञा का उल्लंघन^[1] कर रहे थे, जब उन के पास उन की मछलियाँ उन के सब्त के दिन पानी के ऊपर तैर कर आ जाती थीं और सब्त का दिन न हो तो नहीं आती थीं। इसी प्रकार उन की अवैज्ञा के कारण हम उन की परीक्षा ले रहे थे।

164. तथा जब उन में से एक समुदाय ने कहा कि तुम उन्हें क्यों समझा रहे हो जिन्हें अब्राह (उन की अवज्ञा के कारण) ध्वस्त करने अथवा कड़ा दण्ड देने वाला है? उन्होंने कहा: तुम्हारे पालनहार के समक्ष क्षम्य होने के लिये, और इस आशा में कि वह आज्ञाकारी हो जायें।^[2]

165. फिर जब उन्होंने जो कुछ उन्हें स्मरण कराया गया, उसे भुला दिया तो हम ने उन लोगों को बचा लिया, जो उन को बुराई से रोक रहे थे, और हम ने अत्याचारियों को कड़ी यातना में उन की अवैज्ञा के कारण घेर लिया।

166. फिर जब उन्होंने ने उस का उल्लंघन किया जिस से वे रोकें गये थे, तो हम ने उन से कहा कि तुच्छ बंदर

وَيَوْمَ لَا يَنْصِتُونَ لَأَنذَرْتَهُمْ كَذَلِكَ
نَبَّأُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

وَإِذْ قَالَتْ أُمَةٌ مِنْهُمْ لِمَ يُعَذِّبُونَ قَوْمًا لَّيْسَ
مِنْهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا
مُعَذِّبُهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ وَعَلَانُهُمْ يُعَذِّبُونَ ۝

فَلَمَّا نَسُوا مَا آدَبُوا رَبَّهُمْ عَلَّيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنْ
الشُّؤْمِ وَآخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَیِّنٍ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝

1. क्योंकि उन के लिये यह आदेश था कि शनिवार को मछलियों का शिकार नहीं करेंगे। अधिकांश भाष्यकारों ने उस नगरी का नाम ईला (ईलात) बताया है जो कुलजुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

2. आयत में यह संकेत है कि बुराई को रोकने से निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि हो सकता है कि किसी के दिल में बात लग ही जाये, और यदि न भी लगे तो अपना कर्तव्य पूरा हो जायेगा।

हो जाओ।

167. और याद करो जब आप के पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह प्रलय के दिन तक उन (यहूदियों) पर उन्हें प्रभुत्व देता रहेगा जो उन को घोर यातना देते रहेंगे⁽¹⁾ निःसंदेह आप का पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है, और वह अति क्षमाशील दयावान् (भी) है।

168. और हम ने उन्हें धरती में कई सम्प्रदायों में विभक्त कर दिया, उन में कुछ सदाचारी थे, और कुछ इस के विपरीत थे। हम ने अच्छाईयों तथा बुराईयों दोनों के द्वारा उन की परीक्षा ली, ताकि वह (कुकर्मों से) हक जायें।

169. फिर उन के पीछे कुछ ऐसे लोगों ने उन की जगह ली जो पुस्तक के उत्तराधिकारी हो कर भी तुच्छ संसार का लाभ समेटने लगे। और कहने लगे कि हमें क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि उसी के समान उन्हें लाभ हाथ आ जाये तो उसे भी ले लेंगे। क्या उन से पुस्तक का दृढ़ वचन नहीं लिया गया है कि अल्लाह पर सचच ही बोलेंगे, जब कि पुस्तक में जो कुछ है उस का

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ وَأَنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَسْبَاطًا مِنْهُمْ الْمُضِلُّونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرَبُّوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُ يَأْخُذُوا أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ بِلِتْنَانِي الْكِتَابِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَاللَّذَّارِ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا يَتَّقُونَ ۝

1 यह चेतावनी बनी इस्राईल को बहुत पहले से दी जा रही थी। ईसा (अलैहिस्सलाम) से पूर्व आने वाले नबियों ने बनी इस्राईल को डराया कि अल्लाह की अवैज्ञा से बचो। और स्वयं ईसा ने भी उन को डराया परन्तु वह अपनी अवैज्ञा पर बाकी रहे जिस के कारण अल्लाह की यातना ने उन्हें घेर लिया और कई बार बैतुल मक़दिस को उजाड़ा गया, और तौरात जलाई गई।

अध्ययन कर चुके हैं और परलोक का घर (स्वर्ग) उत्तम है उन के लिये जो अल्लाह से डरते हों। तो क्या वह इतना भी नहीं^[1] समझते?

170. और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता से पकड़ते, और नमाज़ की स्थापना करते हैं तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत् नहीं करते।

171. और जब हम ने उन के ऊपर पर्वत को इस प्रकार छा दिया जैसे वह कोई छतरी हो, और उन्हें विश्वास हो गया कि वह उन पर गिर पड़ेगा, (तथा यह आदेश दिया कि) जो (पुस्तक) हम ने तुम्हें प्रदान की है उसे दृढ़ता से थाम लो, तथा उस में जो कुछ है उसे याद रखो, ताकि तुम आज्ञाकारी हो जाओ।

172. तथा (वह समय याद करो) जब आप के पालनहार ने आदम के पुत्रों की पीठों से उन की संतति को निकाला, और उन को स्वयं उन पर साक्षी (गवाह) बनाया: क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ? सब ने कहा: क्यों नहीं? हम (इस के) साक्षी^[2] हैं। ताकि प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इस से असूचित थे।

وَالَّذِينَ يَمْتَنُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِذَا لَا تُؤْتِيهِمْ أَجْرُ الْمُصْلِحِينَ ۝

وَإِذْ نَفَخْنَا الْجِبِلَّ فَوَقَّهُمْ كَأَنَّهُ طَلَّةٌ وَكَلَّمُوا أَنَّهُ
وَإِقْرَأْ بِهِمْ ۚ هَذَا وَمَا آتَيْنَاكُمْ بَعْدَهُ وَادْكُرُوا مَا
فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

وَإِذْ أَخَذْنَاكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَنْ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ
بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَى أَشْهَدُ نَأْتِيكَ قَوْلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ۝

1 इस आयत में यहूदी विद्वानों की दुर्दशा बताई गयी है कि वह तुच्छ संसारिक लाभ के लिये धर्म में परिवर्तन कर देते थे और अवैध को वैध बना लेते थे। फिर भी उन्हें यह गर्व था कि अल्लाह उन्हें अवश्य क्षमा कर देगा।

2 यह उस समय की बात है जब आदम अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के पश्चात् उन की सभी संतान को जो प्रलय तक होगी, उन की आत्माओं से अल्लाह ने अपने पालनहार होने की गवाही ली थी। (इब्ने कसीर)

173. अथवा यह कहो कि हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने शिर्क (मिश्रण) किया और हम उन के पश्चात् उन की संतान थे। तो क्या तू गुमराहों के कर्म के कारण हमारा विनाश^[1] करेगा?

174. और इसी प्रकार हम आयतों को खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि लोग (सत्य की ओर) लौट जायें।

175. और उन्हें उस की दशा पढ़ कर सुनायें जिसे हम ने अपनी आयतों (का ज्ञान) दिया, तो वह उस (के खोल से) निकल गया। फिर शैतान उस के पीछे लग गया और वह कुपथों में हो गया।

176. और यदि हम चाहते तो उन (आयतों) द्वारा उस का पद ऊँचा कर देते, परन्तु वह माया मोह में पड़ गया, और अपनी मनमानी करने लगा। तो उस की दशा उस कुत्ते के समान हो गयी जिसे हाँको तब भी जीभ निकाले हाँपता रहे और छोड़ दो तब भी जीभ निकाले हाँपता है। यही उपमा है उन लोगों की जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं। तो आप यह कथायें उन को सुना दें, संभवतः वह सोच विचार करें।

177. उन की उपमा कितनी बुरी है

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَيْنِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ۝

وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

وَإِذْ عَلَّمْنَاهُ بِنَا آلِهَةَ إِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِلنَّبِيِّ إِتْبَعْنِي أَقْسَدُ لِلَّهِ مِنَهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ۝

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُ الْكَلْبِ إِنْ تَحَبَّلَ عَلَيْهِ يَلْهَثُ أَوْ تُتْرَكْهُ يَلْهَثُ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۝ فَاقْصُصْ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद की आस्था सभी मानव का स्वभाविक धर्म है। कोई यह नहीं कह सकता की मैं अपने पूर्वजों की गुमराही से गुमराह हो गया। यह स्वभाविक आन्तरिक आवाज़ है जो कभी दब नहीं सकती।

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया! और वे अपने ही ऊपर अत्याचार^[1] कर रहे थे।

وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا بِظُلْمٍ ۝

178. जिसे अल्लाह सुपथ कर दे वही सीधी राह पा सकता है। और जिसे कुपथ कर दे^[2] तो वही लोग असफल है।

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىٌّ وَمَنْ يُضِلِّ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

179. और बहुत से जिन्न और मानव को हम ने नरक के लिये पैदा किया है। उन के पास दिल है जिन से सोच विचार नहीं करते, तथा उन की आँखें हैं जिन से^[3] देखते नहीं, और कान हैं जिन से सुनते नहीं। वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ है, यही लोग अचेतना में पड़े हुये हैं।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ لَهُمْ
قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ
بِهَا وَلَهُمْ أُذُنٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَٰئِكَ
كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ لَوْلَا يُفْقَهُوا

180. और अल्लाह ही के शुभ नाम है, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो। और उन्हें छोड़ दो जो उस के नामों

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ
يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

1 भाष्यकारों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग और प्राचीन युग के कई ऐसे व्यक्तियों का नाम लिया है जिन का यह उदाहरण हो सकता है। परन्तु आयत का भावार्थ बस इतना है कि प्रत्येक व्यक्ति जिस में यह अवगुण पाये जाते हों उस की दशा यही होती है, जिस की जीभ से माया मोह के कारण राल टपकती रहती है, और उस की लोभाग्नि कभी नहीं बुझती।

2 कुर्आन ने बार बार इस तथ्य को दुहराया है कि मार्गदर्शन के लिये सोच विचार की आवश्यकता है। और जो लोग अल्लाह की दी हुई विचार शक्ति से काम नहीं लेते वही सीधी राह नहीं पाते। यही अल्लाह के सुपथ और कुपथ करने का अर्थ है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि सत्य को प्राप्त करने के दो ही साधन हैं: ध्यान और ज्ञान। ध्यान यह है कि अल्लाह की दी हुयी विचार शक्ति से काम लिया जाये। और ज्ञान यह है कि इस विश्व की व्यवस्था को देखा जाये और नबियों द्वारा प्रस्तुत किये हुये सत्य को सुना जाये, और जो इन दोनों से वंचित हो वह अन्धा बहरा है।

में परिवर्तन^[1] करते हैं, उन्हें शीघ्र ही उन के कुकर्मों का कुफल दे दिया जायेगा।

181. और उन में से जिन्हें हम ने पैदा किया है, एक समुदाय ऐसा (भी) है, जो सत्य का मार्ग दर्शाता तथा उसी के अनुसार (लोगों के बीच) न्याय करता है।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْبُدُونَ ﴿١٨١﴾

182. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया, हम उन्हें क्रमशः (विनाश तक) ऐसे पहुँचायेंगे कि उन्हें इस का ज्ञान नहीं होगा।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

183. और उन्हें अवसर देंगे, निश्चय मेरा उपाय बड़ा सुदृढ़ है।

وَأَمْلَأْ لَهُمْ أَنْ كُذِّبَتْ مَتَنٌ ﴿١٨٣﴾

184. और क्या उन्होंने यह नहीं सोचा कि उन का साथी^[2] तनिक भी पागल नहीं है? वह तो केवल खुले रूप से सचेत करने वाला है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ حُنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١٨٤﴾

185. क्या उन्होंने ने आकाशों तथा धरती के राज्य को और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है, उसे नहीं देखा?^[3] और (यह भी नहीं सोचा कि) हो सकता है कि उन का (निर्धारित) समय समीप आ गया हो? तो फिर

أَوَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى مَكْذُوبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

1 अर्थात् उस के गौणिक नामों से अपनी मूर्तियों को पुकारते हैं। जैसे अज़ीज़ से «उज़्ज़ा», और इलाह से «लात» इत्यादि।

2 साथी से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है, जिन को नबी होने से पहले वही लोग "अमीन" कहते थे।

3 अर्थात् यदि यह विचार करें, तो इस पूरे विश्व की व्यवस्था और उस का एक एक कण अल्लाह के अस्तित्व और उस के गुणों का प्रमाण है। और उसी ने मानव जीवन की व्यवस्था के लिये नबियों को भेजा है।

इस (कुर्आन) के पश्चात् वह किस बात पर ईमान लायेंगे?

186. जिसे अल्लाह कुपथ कर दे उस का कोई पथदर्शक नहीं और उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये छोड़ देता है।

مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

187. (हे नबी!) वे आप से प्रलय के विषय में प्रश्न करते हैं कि वह कब आयेगी? कह दो कि उस का ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है, उसे उस के समय पर वही प्रकाशित कर देगा। वह आकाशों तथा धरती में भारी होगी, तुम पर अकस्मात् आ जायेगी। वह आप से ऐसे प्रश्न कर रहे हैं जैसे कि आप उसी की खोज में लगे हुये हों। आप कह दें कि उस का ज्ञान अल्लाह ही को है। परन्तु^[1] अधिकांश लोग इस (तथ्य) को नहीं जानते।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِمُهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجِيبُهُهَا الْقَوْمُ وَلَا هُمْ يَرْجِئُونَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَا يُبَيِّنُهَا لَكُمُ الْوَحْيُ يَسْأَلُونَكَ كَذِبًا حَقٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَر النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

188. आप कह दें कि मुझे तो अपने लाभ और हानि का अधिकार नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहे (वही होता है)। और यदि मैं गैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता तो मैं बहुत सा लाभ प्राप्त कर लेता। मैं तो केवल उन लोगों को सावधान करने तथा शुभसूचना देने वाला हूँ जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَاسْتَكْبَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

189. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारी उत्पत्ति एक जीव^[2] से की, और

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ

1 मक्का के मिश्रणवादी आप से उपहास स्वरूप प्रश्न करते थे, कि यदि प्रलय होना सत्य है, तो बताओ वह कब होगी?

2 अर्थात् आदम अलैहिस्सलाम से।

उसी से उस का जोड़ा बनाया,
ताकि उस से उसे संतोष मिले। फिर
जब किसी^[1] ने उस (अपनी स्त्री) से
सहवास किया तो उस (स्त्री) को
हल्का सा गर्भ हो गया। जिस के
साथ वह चलती फिरती रही,
फिर जब बोझल हो गयी तो दोनों
(पति-पत्नी) ने अपने पालनहार से
प्रार्थना की: यदि तू हमें एक अच्छा
बच्चा प्रदान करेगा तो हम अवश्य
तेरे कृतज्ञ (आभारी) होंगे।

190. और जब उन दोनों को (अल्लाह ने)
एक स्वस्थ बच्चा प्रदान कर दिया
तो अल्लाह ने जो प्रदान किया उस
में दूसरों को उस का साझी बनाने
लगे। तो अल्लाह इन की शिक^[2] की
बातों से बहुत ऊँचा है।

191. क्या वह अल्लाह का साझी उन्हें बनाते
हैं जो कुछ पैदा नहीं कर सकते, और
वह स्वयं पैदा किये हुये हैं?

192. तथा न उन की सहायता कर सकते
हैं, और न स्वयं अपनी सहायता
कर सकते हैं?

193. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की
ओर बुलाओ तो तुम्हारे पीछे नहीं चल
सकते। तुम्हारे लिये बराबर है चाहे

مِنْهَا زَوْجَهَا يَسْكُنُ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ
حَمْلًا خَفِيًّا فَأَمْرَتْ بِهِ فَلَئِمَّا أَتَتْكَ دَعَاكَ اللَّهُ
رَبُّهَا الْيَوْمَ اتَّبَعْنَاهَا لِنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝

فَلَئِمَّا أَتَاهَا صَالِحًا جَعَلَهُ سُورًا رَفِيمًا ۝
فَعَلَّ اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

أَيُّشْرِكُونَ مَا لَمْ يَخْلُقْ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ۝

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرٌ وَلَا أَنْفُسُهُمْ
يَنْصُرُونَ ۝

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ
عَلَيْكُمْ أَدْعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝

1 अर्थात् जब मानव जाति के किसी पुरुष ने स्त्री के साथ सहवास किया।

2 इन आयतों में यह बताया गया है कि मिश्रणवादी स्वस्थ बच्चे अथवा किसी भी आवश्यकता या आपदा निवारण के लिये अल्लाह ही से प्रार्थना करते हैं। और जब स्वस्थ सुन्दर बच्चा पैदा हो जाता है तो देवी देवताओं, और पीरों के नाम चढ़ावे चढ़ाने लगते हैं। और इसे उन्हीं की दया समझते हैं।

उन्हें पुकारो अथवा तुम चुप रहो।

194. वास्तव में अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो वे तुम्हारे जैसे ही (अल्लाह के) दास हैं। अतः तुम उन से प्रार्थना करो फिर वह तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, यदि उन के बारे में तुम्हारे विचार सत्य हैं।

195. क्या इन (पत्थर की मूर्तियों) के पाँव हैं जिन से चलती हों? अथवा उन के हाथ हैं जिन से पकड़ती हों? या उन के आँखें हैं जिन से देखती हों? अथवा कान हैं जिन से सुनती हों? आप कह दें कि अपने साक्षियों को पुकार लो, फिर मेरे विरुद्ध उपाय कर लो, और मुझे कोई अवसर न दो।

196. वास्तव में मेरा संरक्षक अल्लाह है। जिस ने यह पुस्तक (कुरआन) उतारी है। और वही सदाचारियों की रक्षा करता है।

197. और जिन को अल्लाह के सिवा तुम पुकारते हो वह न तो तुम्हारी सहायता कर सकते हैं, और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं।

198. और यदि तुम उन्हें सीधी राह की ओर बुलाओ तो वह सुन नहीं सकते। और (हे नबी!) आप उन्हें देखेंगे कि वे आप की ओर देख रहे हैं, जब कि वास्तव में वह कुछ नहीं देखते।

199. (हे नबी!) आप क्षमा से काम लें, और सदाचार का आदेश दें। तथा

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا فَلَا تُنْظَرُونَ ۝

إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ۝

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ ۝

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْخَبِيلِينَ ۝

अज्ञानियों की ओर ध्यान^[1] न दें।

200. और यदि शैतान आप को उकसाये तो अल्लाह से शरण माँगिये। निःसंदेह वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

201. वास्तव में जो आज्ञाकारी होते हैं यदि शैतान की ओर से उन्हें कोई बुरा विचार आ भी जाये तो तत्काल चौंक पड़ते हैं और फिर अकस्मात् उन को सूझ आ जाती है।

202. और जो शैतानों के भाई हैं वे उन को कुपथ में खींचते जाते हैं, फिर (उन्हें कुपथ करने में) तनिक भी कमी (आलस्य) नहीं करते।

203. और जब आप इन (मिश्रणवादियों) के पास कोई निशानी न लायेंगे तो कहेंगे कि क्यों (अपनी ओर से) नहीं बना ली? आप कह दें कि मैं केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार के पास से मेरी ओर वहयी की जाती है। यह सूझ की बातें हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से, (प्रमाण) है, तथा मार्गदर्शन और दया है, उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

204. और जब कुर्आन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो, तथा मौन साध लो। शायद कि तुम पर दया^[2] की जाये।

وَأَمَّا يَنْزِعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعًا فَاسْتَعِذْ
بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ ظِلْفٌ مِّنَ
الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ

وَإِخْوَانُهُمْ يَبْتَغُونَ فِي النَّفْسِ لَوْمَةً لِّيُضِلُّوهُمْ

وَإِذَا أَلَمْ تَأْتِهِم بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ
إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُؤْتِي إِلَىٰ مِن رَّبِّي هَذَا بَصَائِرُ
مِّن رَّبِّكُمْ وَهَدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَكُنُوا
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

1 हदीस में है कि अल्लाह ने इसे लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बारे में उतारा है। (देखिये: सहीह बुख़ारी- 4643)

2 यह कुर्आन की एक विशेषता है कि जब भी उसे पढ़ा जाये तो मुसलमान पर

205. और (हे नबी!) अपने पालनहार का स्मरण विनय पूर्वक तथा डरते हुये और धीमे स्वर में प्रातः तथा संध्या करते रहो। और उन में न हो जाओ जो अचेत रहते हैं।

وَإِذْ تُرِيدُكَ فِي نَفْسِكَ تَقْصِرُ عَا وَخِيفَةً
وَدَوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ
وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ۝

206. वास्तव में जो (फ़रिश्ते) आप के पालनहार के समीप हैं वह उस की इबादत (बंदना) से अभिमान नहीं करते। और उस की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, और उसी को सज्दा^[1] करते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَسِبْخُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ۝

अनिवार्य है कि वह ध्यान लगा कर अल्लाह का कलाम सुने। हो सकता है कि उस पर अल्लाह की दया हो जाये। काफिर कहते थे कि जब कुर्आन पढ़ा जाये तो सुनो नहीं, बल्कि शोर गुल करो। (देखिये: सूरह हा, मीम सज्दा-26)

1 इस आयत के पढ़ने तथा सुनने वाले को चाहिये कि सज्दा तिलावत करें।

सूरह अन्फाल - 8

سُورَةُ الْأَنْفَالِ

सूरह अन्फाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदीनी है, इस में 75 आयतें हैं।

- यह सूरह सन् 2 हिजरी में बद्र के युद्ध के पश्चात् उतरी। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब काफिरों ने मारने की योजना बनाई और आप मदीना हिजरत कर गये तो उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उबय्य को पत्र लिखा और यह धमकी दी कि आप उन को मदीना से निकाल दें अन्यथा वह मदीना पर आक्रमण कर देंगे। अब मुसलमानों के लिये यही उपाय था कि शाम के व्यापारिक मार्ग से अपने विरोधियों को रोक दिया जाये। सन् 2 हिजरी में मक्के का एक बड़ा काफिला शाम से मक्का वापिस हो रहा था। जब वह मदीना के पास पहुँचा तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ उस की ताक में निकले। मुसलमानों के भय से काफिले का मुख्या अबू सुफ्यान ने एक व्यक्ति को मक्का भेज दिया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने साथियों के साथ तुम्हारे काफिले की ताक में हैं। यह सुनते ही एक हजार की सेना निकल पड़ी। अबू सुफ्यान दूसरी राह से बच निकला। परन्तु मक्का की सेना ने यह सोचा कि मुसलमानों को सदा के लिये कुचल दिया जाये। और इस प्रकार मुसलमानों से बद्र के क्षेत्र में सामना हुआ तथा दोनों के बीच यह प्रथम ऐतिहासिक संघर्ष हुआ जिस में मक्का के काफिरों के बड़े बड़े 70 व्यक्ति मारे गये और इतने ही बंदी बना लिये गये।
- यह इस्लाम का प्रथम ऐतिहासिक युद्ध था जिस में सत्य की विजय हुई। इस लिये इस में युद्ध से संबंधित कई नैतिक शिक्षायें दी गई हैं। जैसे यह की जिहाद धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये, धन के लोभ, तथा किसी पर अत्याचार के लिये नहीं।
- विजय होने पर अल्लाह का आभारी होना चाहिये। क्यों कि विजय उसी की सहायता से होती है। अपनी वीरता पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- जो गैर मुस्लिम अत्याचार न करें उन पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। और जिन से संधि हो उन पर धोखा दे कर नहीं आक्रमण करना चाहिये और न ही उन के विरुद्ध किसी की सहायता करनी चाहिये।

- शत्रु से जो सामान (गनीमत) मिले उसे अल्लाह का माल समझना चाहिये और उस के नियमानुसार उस का पाँचवाँ भाग निर्धनों और अनाथों की सहायता के लिये खर्च करना चाहिये जो अनिवार्य है।
- इस में युद्ध के बंदियों को भी शिक्षा प्रद शैली में संबोधित किया गया है।
- इस सूरह से इस्लामी जिहाद की वास्तविकता की जानकारी होती है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! आप से (आप के साथी) युद्ध में प्राप्त धन के विषय में प्रश्न कर रहे हैं। कह दें कि युद्ध में प्राप्त धन अल्लाह और रसूल के है। अतः अल्लाह से डरो और आपस में सुधार रखो, तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो^[1] यदि तुम ईमान वाले हो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا اَمْرًا بَيْنَكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ قُلْ لَّكُمْ مَوَدَّةٌ مِّنْ الْمُؤْمِنِينَ

2. वास्तव में ईमान वाले वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन किया जाये तो उन के दिल काँप उठते हैं। और जब उन के समक्ष उस की आयतें पढ़ी जायें तो उन का ईमान अधिक हो जाता है। और वह अपने पालनहार

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَّتْ لَهُمْ رُءُوسُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

- 1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरह वर्ष तक मक्का के मिश्रणवादियों के अत्याचार सहन किये। फिर मदीना हिज्रत कर गये। परन्तु वहाँ भी मक्का वासियों ने आप को चैन नहीं लेने दिया। और निरन्तर आक्रमण आरंभ कर दिये। ऐसी दशा में आप भी अपनी रक्षा के लिये वीरता के साथ अपने 313 साथियों को लेकर बद्र के रणक्षेत्र में पहुँचे। जिस में मिश्रणवादियों की पराजय हुई। और कुछ सामान भी मुसलमानों के हाथ आया। जिसे इस्लामी परिभाषा में "माले गनीमत" कहा जाता है। और उसी के विषय में प्रश्न का उत्तर इस आयत में दिया गया है। यह प्रथम युद्ध हिज्रत के दूसरे वर्ष हुआ।

पर ही भरोसा रखते हों।

3. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।
4. वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास श्रेणियाँ तथा क्षमा और उत्तम जीविका है।
5. जिस प्रकार^[1] आप को आप के पालनहार ने आप के घर (मदीना) से (मिश्रणवादियों से युद्ध के लिये सत्य के साथ) निकाला। जब कि ईमान वालों का एक समुदाय इस से अप्रसन्न था।
6. वह आप से सच्च (युद्ध) के बारे में झगड़ रहे थे जब कि वह उजागर हो गया था (कि युद्ध होना है) जैसे वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों, और वे उसे देख रहे हों।
7. तथा (वह समय याद करो) जब अल्लाह तुम्हें वचन दे रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आयेगा। और तुम चाहते थे कि निर्बल गिरोह तुम्हारे हाथ लगे।^[2] परन्तु अल्लाह चाहता था कि अपने वचन द्वारा सत्य को सिद्ध कर दे,

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٣﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ جُنْدٌ رَّبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَاذِبُونَ ﴿٥﴾

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ لَكُمُ الْيَسَارُوتُ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٦﴾

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشُّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَيِّطَ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾

1 अर्थात् यह युद्ध के माल का विषय भी उसी प्रकार है, कि अल्लाह ने उसे अपना और अपने रसूल का भाग बना दिया। जिस प्रकार अपने आदेश से आप को युद्ध के लिये निकाला।

2 इस में निर्बल गिरोह व्यापारिक काफ़िले को कहा गया है। अर्थात् कुरैश मक्का का व्यापारिक काफ़िला जो सीरिया की ओर से आ रहा था, या उन की सेना जो मक्का से आ रही थी।

और काफिरों की जड़ काट दे।

8. इस प्रकार सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कर दे। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।
9. जब तुम अपने पालनहार को (बद्र के युद्ध के समय) गृहार रहे थे। तो उस ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली। (और कहा:) मैं तुम्हारी सहायता के लिये लगातार एक हजार फरिश्ते भेज रहा⁽¹⁾ हूँ।
10. और अब्बाह ने यह इस लिये बता दिया ताकि (तुम्हारे लिये) शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। अन्यथा सहायता तो अब्बाह ही की ओर से होती है। वास्तव में अब्बाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
11. और वह समय याद करो जब अब्बाह अपनी ओर से शान्ति के लिये तुम पर ऊँघ डाल रहा था। और तुम पर आकाश से जल बरसा रहा था, ताकि तुम्हें स्वच्छ कर दे। और तुम से शैतान की मलीनता दूर कर दे। और तुम्हारे दिलों को साहस दे, और

لِيُحْيِيَ الْحَيَّ وَيُجْلِيَ الْبَاطِلَ وَلِتُكْرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

إِذْ قَسَتَ عَيْنُكُمْ رَأَيْتُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ
بِالْفِئَةِ مِنَ الْمَلَكِ مُرْسَلِينَ ۝

وَمَا جَعَلَ اللَّهُ الْفِتْرَىٰ وَكَطَمْتُمْ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا
التَّصَدُّقِ الْأَمِينِ عِنْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

إِذْ يُخَشِّكُمُ النَّعَاسُ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنْزِلُ عَلَيْكُمْ
مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَ كُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ
عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ
وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बद्र के दिन कहा: यह घोड़े की लगाम थामे और हथियार लगाये जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आये हुये हैं। (देखिये: सहीह बुखारी- 3995)

इसी प्रकार एक मुसलमान एक मुश्रिक का पीछा कर रहा था कि अपने ऊपर से घुड़सवार की आवाज़ सुनी: हैजूम (घोड़े का नाम) आगे बढ़ा। फिर देखा कि मुश्रिक उस के सामने चित गिरा हुआ है। उस की नाक और चेहरे पर कोड़े की मार का निशान है। फिर उस ने यह बात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बतायी। तो आप ने कहा: सचच है। यह तीसरे आकाश की सहायता है। (देखिये: सहीह मुस्लिम- 1763)

(तुम्हारे) पाँव जमा^[1] दे।

12. (हे नबी!) यह वह समय था जब आप का पालनहार फ़रिश्तों को संकेत कर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम ईमान वालों को स्थिर रखो, मैं काफ़िरों के दिलों में भय डाल दूँगा। तो (हे मुसलमानो!) तुम उन की गरदनो पर तथा पोर पोर पर आघात पहुँचाओ।

13. यह इस लिये कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल का विरोध किया। तथा जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करेगा तो निश्चय अल्लाह उसे कड़ी यातना देने वाला है।

14. यह है (तुम्हारी यातना), तो इस का स्वाद चखो। और (जान लो कि) काफ़िरों के लिये नरक की यातना (भी) है।

15. हे ईमान वालो! जब काफ़िरों की सेना से भिड़ो तो उन्हें पीठ न दिखाओ।

16. और जो कोई उस दिन अपनी पीठ दिखायेगा, परन्तु फिर कर आक्रमण करने अथवा (अपने) किसी गिरोह से मिलने के लिये, तो वह अल्लाह के

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنْ مَعَكُمْ فَتَبَيَّنُوا
الَّذِينَ آمَنُوا سَالِفِينَ فِي ثُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ فَأَصْرَبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَأَصْرَبُوا
مِنْهُمْ كُلُّ بَنَانٍ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ
يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝

ذَلِكَ قَدْ وَفَّوْهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا الْقِتْمَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا
رَجَعًا فَلَا تَوَلَّوْهُمْ أَلْدَابَارَ ۝

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ
أَوْ مُتَحَرِّفًا إِلَى قِتَالٍ فَإِنَّهُ بِأَوْ يَغْتَضِبُ مِنَ
اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

1 बद्र के युद्ध के समय मुसलमानों की संख्या मात्र 313 थी। और सिवाये एक व्यक्ति के किसी के पास घोड़ा न था। मुसलमान डरे सहमे थे। जल के स्थान पर पहले ही शत्रु ने अधिकार कर लिया था। भूमि रेतीली थी जिस में पाँव धँस जाते थे। और शत्रु सवार थे। और उन की संख्या भी तीन गुणा थी। ऐसी दशा में अल्लाह ने मुसलमानों पर निद्रा उतार कर उन्हें निश्चिन्त कर दिया और वर्षा करके पानी की व्यवस्था कर दी। जिस से भूमि भी कड़ी हो गई। और अपनी असफलता का भय जो शैतानी संशय था वह भी दूर हो गया।

प्रकोप में घिर जायेगा। और उस का स्थान नरक है। और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

17. अतः (रणक्षेत्र में) उन्हें बध तुम ने नहीं किया परन्तु अल्लाह ने उन को बध किया। और हे नबी! आप ने नहीं फेंका जब फेंका, परन्तु अल्लाह ने फेंका। और (यह इस लिये हुआ) ताकि अल्लाह इस के द्वारा इमान वालों की एक उत्तम परीक्षा ले। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने और जानने^[1] वाला है।

18. यह सब तुम्हारे लिये हो गया। और अल्लाह काफिरों की चालों को निर्बल करने वाला है।

19. यदि तुम^[2] निर्णय चाहते हो तो तुम्हारे सामने निर्णय आ गया है। और यदि तुम रुक जाओ तो तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि फिर पहले जैसा करोगे तो हम भी वैसा ही करेंगे। और तुम्हारा जत्था तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगा, यद्यपि अधिक हो। और निश्चय अल्लाह इमान वालों के साथ है।

20. हे इमान वालो! अल्लाह के आज्ञाकारी

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتُمْ إِذْ رَمَيْتُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلَئِنْ لَّمْ يَكُفِّرْ بَعْدَ ذَلِكَ نَبَلَّأْتُمْ لَنْ يَسْمِعَ اللَّهُ سَمِيْعًا عَلَيْهِمْ ۖ

ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُؤَمِّنٌ كَذِبَ الْكَافِرِينَ ۖ

إِنْ كَسَفَتْ حُجُوفُ قَدْ جَاءَكُمْ الْقَوْمُ وَإِنْ تَدَّهَمُوا فَمَوْخِيَكُمْ وَإِنْ تَوَدُّوا عُدَّةً وَلَنْ تُغْنِي عَنْكُمْ فُتُنُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ

1 आयत का भावार्थ यह है कि शत्रु पर विजय तुम्हारी शक्ति से नहीं हुई। इसी प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रण क्षेत्र में कंकरियाँ लेकर शत्रु की सेना की ओर फेंकी जो प्रत्येक शत्रु की आँख में पड़ गई। और वहीं से उन की पराजय का आरंभ हुआ तो उस धूल को शत्रु की आँखों तक अल्लाह ही ने पहुँचाया था। (इब्ने कसीर)

2 आयत में मक्का के काफिरों को संबोधित किया गया है जो कहते थे कि यदि तुम सच्चे हो तो इस का निर्णय कब होगा? (देखिये: सूरह सज्दा, आयत-28)

रहो तथा उस के रसूल को और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

21. तथा उन के समान^[1] न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हम ने सुन लिया जब कि वास्तव में वह सुनते नहीं थे।

22. वास्तव में अल्लाह के हाँ सब से बुरे पशु वह (मानव) है जो बहरे गूँगे हों, जो कुछ समझते न हों।

23. और यदि अल्लाह उन में कुछ भी भलाई जानता तो उन्हें सुना देता। और यदि उन्हें सुना भी दे तो भी वह मुँह फेर लेंगे। और वह विमुख हैं ही।

24. हे ईमान वालो! अल्लाह और उस के रसूल की पुकार को सुनो, जब तुम्हें उस की ओर बुलाये जो तुम्हारी^[2] (आत्मा) को जीवन प्रदान करे। और जान लो कि अल्लाह मानव और उस के दिल के बीच आड़े^[3] आ जाता है। और निःसंदेह तुम उसी के पास (अपने कर्मफल के लिये) एकत्र किये जाओगे।

25. तथा उस आपदा से डरो जो तुम में से अत्याचारियों पर ही विशेष रूप से नहीं आयेगी। और विश्वास रखो^[4] कि अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

وَلَا تَوَلَّوْا عُنُقَهُ وَآتُوا تَسْمِعُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمِعُونَ ۝

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّعُفَاءُ الَّذِينَ لَا يُعْقِلُونَ ۝

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَاسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَهٌُ مُّخْتَصِرٌ ۝

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

1 इस में संकेत अहले किताब की ओर है।

2 इस से अभिप्रेत कुर्आन तथा इस्लाम है। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् जो अल्लाह, और उस के रसूल की बात नहीं मानता, तो अल्लाह उसे मार्गदर्शन भी नहीं देता।

4 इस आयत का भावार्थ यह है कि अपने समाज में बुराईयों को न पनपने दो। अन्यथा जो आपदा आयेगी वह सर्वसाधारण पर आयेगी। (इब्ने कसीर)

26. तथा वह समय याद करो, जब तुम (मक्का में) बहुत थोड़े निर्बल समझे जाते थे। तुम डर रहे थे कि लोग तुम्हें उचक न लें। तो अल्लाह ने तुम्हें (मदीना में) शरण दी। और अपनी सहायता द्वारा तुम्हें समर्थन दिया। और तुम्हें स्वच्छ जीविका प्रदान की, ताकि तुम कृतज्ञ रहो।
27. हे ईमान वालो! अल्लाह तथा उस के रसूल के साथ विश्वासघात न करो। और न अपनी अमानतों (कर्तव्य) के साथ विश्वासघात^[1] करो, जानते हुये।
28. तथा जान लो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी संतान एक परीक्षा है। तथा यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है।
29. हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो तुम्हारे लिये विवेक^[2] बना देगा। तथा तुम से तुम्हारी बुराईयाँ दूर कर देगा। और तुम्हें क्षमा कर देगा, और अल्लाह बड़ा दयाशील है।
30. तथा (हे नबी! वह समय याद करो) जब (मक्का में) काफिर आप के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे, ताकि आप को कैद कर लें। अथवा आप को बध कर दें, अथवा देश निकाला दे दें। तथा वे षड्यंत्र रच रहे थे,

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَفَكَ الْبَاقِيَ فَأَوْثَقَكُمْ
وَأَيْدِيَكُمْ بِمِصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ
وَتَخُونُوا أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَشَاءُوا اللَّهُ يُجْعَلَ لَكُمْ
فُرْقَانًا فَيُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ
يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ
وَاللَّهُ خَبِيرُ الْمَكْرِينَ ﴿٣٠﴾

- 1 अर्थात् अल्लाह तथा उस के रसूल के लिये जो तुम्हारा दायित्व और कर्तव्य है उसे पूरा करो। (इब्ने कसीर)
- 2 विवेक का अर्थ है: सत्य और असत्य के बीच अन्तर करने की शक्ति। कुछ ने फुर्कान का अर्थ निर्णय लिया है अर्थात् अल्लाह तुम्हारे और तुम्हारे विरोधियों के बीच निर्णय कर देगा।

और अल्लाह अपनी उपाय कर रहा था। और अल्लाह का उपाय^[1] सब से उत्तम है।

31. और जब उन को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहते हैं: हम ने (इसे) सुन लिया है। यदि हम चाहें तो इसी (क़ुर्आन) जैसी बातें कह दें। यह तो वही प्राचीन लोगों की कथायें हैं।

32. तथा (याद करो) जब उन्होंने ने कहा: हे अल्लाह! यदि यह^[2] तेरी ओर से सत्य है तो हम पर आकाश से पत्थरों की वर्षा कर दे, अथवा हम पर दुःखदायी यातना ला दे।

33. और अल्लाह उन्हें यातना नहीं दे सकता था जब तक आप उन के बीच थे, और न उन्हें यातना देने वाला है जब तक कि वह क्षमा याचना कर रहे हों।

34. और (अब) उन पर क्यों न यातना उतारे जब कि वह सम्मानित मस्जिद (काँबा) से रोक रहे हैं, जब कि वह उस के संरक्षक नहीं हैं। उस के संरक्षक तो केवल अल्लाह के आज्ञकारी हैं, परन्तु अधिकांश लोग (इसे) नहीं जानते।

35. और अल्लाह के घर (काँबा) के पास

وَإِذْ أَتْنَاهُمْ مِنْ رَبِّنَا قَالُوا لَئِنَّا بِمَا نُرَىٰ هَٰذَا لَشَيْءٌ أَلْوَنٌ ۚ
نَشَاءُ لَنُكَلِّمَنَّ هَٰذَا الْإِنْسَانَ هَٰذَا هَٰذَا الْآلُ
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ
عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوْ
أَرْسِلْ عَلَيْنَا مَاءً كَالْمُغْرِقِ ۝

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ
اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝

وَمَا لَهُمْ آلَ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنْ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ
أَوْلِيَاءُؤُهُ إِلَّا الْمُتَفَقِّهُونَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ الْأَمْكَاءِ

1 अर्थात् उन की सभी योजनाओं को असफल कर के आप को सुरक्षित मदीना पहुँचा दिया।

2 अर्थात् क़ुर्आन। यह बात कुरैश के मुख्या अबू जहल ने कही थी जिस पर आगे की आयत उतरती। (सहीह बुखारी- 4648)

इन की नमाज़ इस के सिवा क्या थी कि सीटियाँ और तालियाँ बजायें? तो अब^[1] अपने कुफ़्र (अस्वीकार) के बदले में यातना का स्वाद चखो।

36. जो काफ़िर हो गये वह अपना धन इस लिये खर्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोक दें। तो वे अपना धन खर्च करते रहेंगे फिर (वह समय आयेगा कि) वह उन के लिये पछतावे का कारण हो जायेगा। फिर पराजित होंगे। तथा जो काफ़िर हो गये वे नरक की ओर हाँक दिये जायेंगे।

37. ताकि अल्लाह, मलीन को पवित्र से अलग कर दे। तथा मलीनों को एक दूसरे से मिला दे। फिर सब का ढेर बना दे, और उन्हें नरक में फेंक दे, यही क्षतिग्रस्त हैं।

38. (हे नबी!) इन काफ़िरों से कह दो: यदि वह रुक^[2] गये तो जो कुछ हो गया है वह उन से क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि पहले जैसा ही करेंगे तो अगली जातियों की दुर्गत हो चुकी है।

39. हे ईमान वालो! उन से उस समय तक युद्ध करो कि^[3] फित्ना

وَتَصْدِيْقَةٌ فَرَدُّوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْفُرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ
لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيَفْقَهُمْ نَهَارُ
تَكْوِينٍ عَلَيْهِمْ حَسْرَةٌ ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُخْشَرُونَ ۝

لِيَبَيِّنَ اللَّهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ
الْخَبِيْثَ بَعْضُهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكَبَهُ جَمِيْعًا
فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۝

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَشَاءُوا غَفِرَ اللَّهُ مَا قَدْ
سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ
الْأَوَّلِينَ ۝

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَيَكُوْنَ

1 अर्थात् बद्र में पराजय की यातना।

2 अर्थात् ईमान लाये।

3 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मुशरिकों से उस समय युद्ध कर रहे थे जब मुसलमान कम थे। और उन्हें अपने धर्म के कारण सताया, मारा और बंदी बना लिया जाता था। (सहीह बुखारी - 4650, 4651)

(अत्याचार तथा उपद्रव) समाप्त हो जाये, और धर्म पूरा अल्लाह के लिये हो जाये। तो यदि वह (अत्याचार से) रुक जायें तो अल्लाह उन के कर्मों को देख रहा है।

40. और यदि वह मुंह फेरें तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है। और वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

41. और जान⁽¹⁾ लो कि तुम्हें जो कुछ ग़नीमत में मिला है तो उस का पाँचवाँ भाग अल्लाह तथा रसूल और (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। यदि तुम अल्लाह पर तथा उस (सहायता) पर ईमान रखते हो जो हम ने अपने भक्त पर निर्णय⁽²⁾ के दिन उतारी जिस दिन

الَّذِينَ كُلُّهُمْ لِلَّهِ فَإِنْ اُشْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ يَمَّا يَعْمَلُونَ بِصِيرَةٍ ۝

وَأَنْ تَوَكَّلُوا فَإِنَّمَا يَعْلَمُ الْوَأَلَّهُ مَوْلَاكُمْ
نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۝

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ
خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ
بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَيَّ عَبْدِي يَوْمَ الْقُرْآنِ
يَوْمَ النَّفْثِ الْجَمْعِينَ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1 इस में ग़नीमत (युद्ध में मिले सामान) के वितरण का नियम बताया गया है: कि उस के पाँच भाग करके चार भाग मुजाहिदों को दिये जायें। पैदल को एक भाग तथा सवार को तीन भाग। फिर पाँचवाँ भाग अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये था जिसे आप अपने परिवार और समीप वर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों की सहायता के लिये खर्च करते थे। इस प्रकार इस्लाम ने अनाथों तथा निर्धनों की सहायता पर सदा ध्यान दिया है। और ग़नीमत में उन्हें भी भाग दिया है यह इस्लाम की वह विशेषता है जो किसी धर्म में नहीं मिलेगी।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर। निर्णय के दिन से अभिप्राय बद्र के युद्ध का दिन है जो सत्य और असत्य के बीच निर्णय का दिन था। जिस में काफ़िरों के बड़े बड़े प्रमुख और धवीर मारे गये जिन के शव बद्र के एक कुबे में फेंक दिये गये। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कुबे के किनारे खड़े हुये और उन्हें उन के नामों से पुकारने लगे कि क्या तुम प्रसन्न होते कि अल्लाह और उस के रसूल को मानते? हम ने अपने पालनहार का वचन सच्च पाया तो क्या तुम ने भी सच्च पाया? उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: क्या आप ऐसे शरीरों से बात कर रहे हैं जिन में प्राण नहीं? आप ने कहा: मेरी बात

दो सेनाएँ भिड़ गईं और अब्राह जो चाहे कर सकता है।

42. तथा उस समय को याद करो जब तुम (रणक्षेत्र में) इधर के किनारे तथा वह (शत्रु) उधर के किनारे पर थे, और काफिला तुम से नीचे था। और यदि तुम आपस में (युद्ध का) निश्चय करते तो निश्चित समय से अवश्य कतरा जाते। परन्तु अब्राह ने (दोनों को भिड़ा दिया) ताकि जो होना था उस का निर्णय कर दे। ताकि जो मरे तो वह खुले प्रमाण के पश्चात् मरे। और जो जीवित रहे तो वह खुले प्रमाण के साथ जीवित रहे। और वस्तुतः अब्राह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

43. तथा (हे नबी! वह समय याद करें) जब आप को (अब्राह) आप के सपने^[1] में उन्हें (शत्रु को) थोड़ा दिखा रहा था। और यदि उन्हें आप को अधिक दिखा देता तो तुम साहस खो देते। और इस (युद्ध के) विषय में आपस में झगड़ने लगते। परन्तु अब्राह ने तुम्हें बचा दिया। वास्तव में वह सीनों (अन्तरात्मा) की बातों से भली भाँती अवगत है।

44. तथा (याद करो उस समय को) जब अल्लाह उन (शत्रु) को

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ الدِّينِ وَهُمْ بِالْعُدُوِّ الْقُصْوَى وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاجْتِماعٍ فِي الْمُبْعَدِ وَلَكِنْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ

إِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا وَلَوْ أَرَاكُمْ كَثِيرًا لَغُلِبْتُمْ وَلَقَدْ زَلَلْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَالْحَكْمِ إِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ اتَّقَبْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا

तुम उन से अधिक नहीं सुन रहे हो। (सहीह बुखारी- 3976)

- 1 इस में उस स्वप्न की ओर संकेत है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को युद्ध से पहले दिखाया गया था।

लड़ाई के समय तुम्हारी आँखों में तुम्हारे लिये थोड़ा कर के दिखा रहा था, और उन की आँखों में तुम्हें थोड़ा कर के दिखा रहा था, ताकि जो होना था, अल्लाह उस का निर्णय कर दे। और सभी कर्म अल्लाह ही की ओर फेरे^[1] जाते हैं।

45. हे ईमान वाले! जब (आक्रमण कारियों) के किसी गिरोह से भिड़ो तो जम जाओ। तथा अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम सफल रहो।
46. तथा अल्लाह और उस के रसूल के आज्ञाकारी रहो, और आपस में विवाद न करो, अन्यथा तुम कमजोर हो जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी। तथा धैर्य से काम लो, वास्तव में अल्लाह धैर्यवानों के साथ है।
47. और उन^[2] के समान न हो जाओ जो अपने घरों से इतराते हुये तथा लोगों को दिखाते हुये निकले। और वह अल्लाह की राह (इस्लाम) से लोगों को रोकते हैं। और अल्लाह उन के कर्मों को (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है।
48. जब शैतान^[3] ने उन के लिये उन के कर्मों को शोभनीय बना दिया था। और उस (शैतान) ने कहा: आज तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता, और

وَيَقَالُ لَكُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ يَقْضَى اللَّهُ آمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا الْيَقِينُ فَانْجَبُوا وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٩﴾

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَمَا تَحْتَثَلُّوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطْرًا وَرَأَيْتُمُ النَّاسَ وَيُصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُخِيطٌ ﴿١١﴾

وَإِذْ زَيَّنَّ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَ اتَّوَلَّى الْفِئْتَيْنِ نَكَصَ عَلَى عَقَبَيْهِ وَقَالَ

1 अर्थात् सब का निर्णय वही करता है।

2 इस से अभिप्राय मक्का की सेना है जिसको अबू जहल लाया था।

3 बद्र के युद्ध में शैतान भी अपनी सेना के साथ सुराका बिन मालिक के रूप में आया था। परन्तु जब फ़रिश्तों को देखा तो भाग गया। (इब्ने कसीर)

मैं तुम्हारा सहायक हूँ। फिर जब दोनों सेनायें सम्मुख हो गई, तो अपनी एड़ियों के बल फिर गया। और कह दिया कि मैं तुम से अलग हूँ। मैं जो देख रहा हूँ तुम नहीं देखते। वास्तव में मैं अल्लाह से डर रहा हूँ। और अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

إِن يَرَوْا مِّنْكُمْ آيَةً يُقَالُوا إِنَّا لَنَافِلُ
اللَّهِ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

49. तथा (वह समय भी याद करो), जब मुनाफिक तथा जिन के दिलों में रोग है, वे कह रहे थे कि इन (मुसलमानों) को इन के धर्म ने धोखा दिया है। तथा जो अल्लाह पर निर्भर करे तो वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّهُمْ أَلاَّ دِينُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

50. और क्या ही अच्छा होता यदि आप उस दशा को देखते जब फरिश्ते (बधित) काफिरों के प्राण निकाल रहे थे तो उन के मुखों और उन की पीठों पर मार रहे थे। तथा (कह रहे थे कि) दहन की यातना^[1] चखो।

وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَكَّلُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى
الْمَلَائِكَةِ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا
عَذَابَ الْحَرِيقِ ۝

51. यही तुम्हारे कर्तूतों का प्रतिफल है। और अल्लाह अपने भक्तों पर अत्याचार करने वाला नहीं है।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَالِمٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝

52. इन की दशा भी फिरऔनियों तथा उन के जैसी हुई जिन्होंने इन से

كَذَّابٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَفَرُوا

1 बद्र के युद्ध में काफिरों के कई प्रमुख मारे गये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध से पहले बता दिया कि अमुक इस स्थान पर मारा जायेगा तथा अमुक इस स्थान पर। और युद्ध समाप्त होने पर उन का शव उन्हीं स्थानों पर मिला तनिक भी इधर-उधर नहीं हुआ। (बुखारी- 4480)

ऐसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के समय कहा कि सारे जत्थे पराजित हो जायेंगे और पीठ दिखा देंगे। और उसी समय शत्रु पराजित होने लगे। (बुखारी-4875)

पहले अल्लाह की आयतों को नकार दिया, तो अल्लाह ने उन के पापों के बदले उन्हें पकड़ लिया। वास्तव में अल्लाह बड़ा शक्तिशाली कड़ी यातना देने वाला है।

53. अल्लाह का यह नियम है कि वह उस पुरस्कार में परिवर्तन करने वाला नहीं है जो किसी जाति पर किया हो, जब तक वह स्वयं अपनी दशा में परिवर्तन न कर लें। और वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

54. इन की दशा फिरऔनियों तथा उन लोगों जैसी हुई जो इन से पहले थे, उन्होंने ने अल्लाह की आयतों को झुठला दिया, तो हम ने उन्हें उन के पापों के कारण ध्वस्त कर दिया। तथा फिरऔनियों को डुबो दिया। और वह सभी अत्याचारी⁽¹⁾ थे।

55. वास्तव में सब से बुरे जीव अल्लाह के पास वह है जो काफिर हो गये, और ईमान नहीं लाते।

56. यह वे⁽²⁾ लोग हैं जिन से आप ने संधि की। फिर वह प्रत्येक अवसर पर अपना वचन भंग कर देते हैं। और (अल्लाह से) नहीं डरते।

يَا أَيُّهَا اللَّهُ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَ عَلَيْ قَوْمٍ فَتَنَّا لَهُمُ أَمْثَلًا يُغْنِي عَنْهُمْ وَاللَّهُ سَمِيمٌ عَلَيْهِمُ

كَذَّابٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَآلِهِ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَاهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَعْرَفْنَاهُ آلَ فِرْعَوْنَ وَكُلَّ كَاذِبٍ ظَالِمِينَ ۝

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ عَاهَدْتَ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۝

1 इस आयत में तथा आयत नं० 52 में व्यक्तियों तथा जातियों के उत्थान और पतन का विधान बताया गया है कि वह स्वयं अपने कर्मों से अपना जीवन बनाती या अपना विनाश करती है।

2 इस में मदीना के यहूदियों की ओर संकेत है। जिन से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संधि थी। फिर भी वे मुसलमानों के विरोध में गतिशील थे और बद्र के तुरन्त बाद ही कुरैश को बदले के लिये भड़काने लगे थे।

57. तो यदि ऐसे (वचनभंगी) आप को रणक्षेत्र में मिल जायें तो उन को शिक्षाप्रद दण्ड दें, ताकि जो उन के पीछे हैं वह शिक्षा ग्रहण करें।

58. और यदि आप को किसी जाति से विश्वासघात (संधि भंग करने) का भय हो तो बराबरी के आधार पर संधि तोड़^[1] दें। क्यों कि अल्लाह विश्वासघातियों से प्रेम नहीं करता।

59. जो काफिर हो गये वे कदापि यह न समझें कि हम से आगे हो जायेंगे। निश्चय वह (हमें) विवश नहीं कर सकेंगे।

60. तथा तुम से जितनी हो सके उन के लिये शक्ति तथा सीमा रक्षा के लिये घोड़े तय्यार रखो। जिस से अल्लाह के शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को और इन के सिवा दूसरों को डराओ।^[2] जिन को तुम नहीं जानते, उन्हें अल्लाह ही जानता है। और अल्लाह की राह में तुम जो भी व्यय (खर्च) करोगे तो तुम्हें पूरा मिलेगा। और तुम पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

61. और यदि वह (शत्रु) संधि की ओर झुकें तो आप भी उस के लिये झुक जायें। और अल्लाह पर भरोसा करें। निश्चय वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

فَمَا تَتَقَتَّلُهُمْ فِي الْحَرْبِ فَمَرَدُّيْهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ
أَعْلَهُمْ يَدْرِكُونَهُ ۝

وَأَمَّا عَاقِبَتُ مَن قَوْمِيَّانَةٌ فَأَيْدِيهِمْ
عَلَىٰ سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِبِينَ ۝

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِلَهُهُمْ
لَا يُعْجِزُونَ ۝

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ
رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَالْآخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَأَعْلَمَنَّ اللَّهُ
يَعْمَلُهُمْ وَأَسْفَقُوا ۖ إِنَّ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
يُوفَىٰ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تظَلُمُونَ ۝

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلَامِ فَاجْعَلْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى
اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

1 अर्थात् उन्हें पहले सूचित कर दो कि अब हमारे तुम्हारे बीच संधि नहीं है।

2 ताकि वह तुम पर आक्रमण करने का साहस न करें, और आक्रमण करें तो अपनी रक्षा करो।

62. और यदि वह (संधि कर के) आप को धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह आप के लिये काफी है। वही है जिस ने अपनी सहायता तथा ईमान वालों के द्वारा आप को समर्थन दिया है।

63. और उन के दिलों को जोड़ दिया। और यदि आप धरती में जो कुछ है सब व्यय (खर्च) कर देते तो भी उन के दिलों को नहीं जोड़ सकते थे। वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ (निपुण) है।

64. हे नबी! आप के लिये तथा आप के ईमान वाले साथियों के लिये अल्लाह काफी है।

65. हे नबी! ईमान वालों को युद्ध की प्रेरणा दो।¹ यदि तुम में से बीस धैर्यवान होंगे तो दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से सौ होंगे तो उन काफिरों के एक हजार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। इस लिये कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और जान लिया कि तुम में कुछ निर्बलता है, तो यदि तुम में से सौ सहनशील हों तो वे दो सौ पर विजय प्राप्त कर लेंगे। और यदि तुम में से एक हजार हों तो अल्लाह की अनुमति से दो हजार पर

وَلَا تُرِيدُ وَأَنَّ يَخْذَلَ عَوْلَكَ فِإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي يَمْلِكُ بَصِيرَةً وَالْمُؤْمِنِينَ ۝

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ فَتَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا وَمَنْ مَتَّعِينَ ۖ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَإِنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

الَّذِينَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مَاتَّعِينَ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مَاتَّعِينَ ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

1 इस लिये कि काफिर मैदान में आ गये हैं और आप से युद्ध करना चाहते हैं। ऐसी दशा में जिहाद अनिवार्य हो जाता है ताकि शत्रु के आक्रमण से बचा जाये।

प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। और अल्लाह सहनशीलों के साथ है।^[1]

67. किसी नबी के लिये यह उचित न था कि उस के पास बंदी हों, जब तक कि धरती (रण क्षेत्र) में अच्छी प्रकार रक्तपात न कर दे। तुम संसारिक लाभ चाहते हो, और अल्लाह (तुम्हारे लिये) आखिरत (परलोक) चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

68. यदि इस के बारे में पहले से अल्लाह का लेख (निर्णय) न होता, तो जो (अर्थ दण्ड) तुम ने लिया^[2] है, उस के लेने में तुम्हें बड़ी यातना दी जाती।

69. तो उस गनीमत में से^[3] खाओ, वह हलाल (उचित) स्वच्छ है। तथा अल्लाह के आज्ञाकारी रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमा करने वाला दयावान् है।

70. हे नबी! जो तुम्हारे हाथों में बंदी है, उन से कह दो कि यदि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में कोई भलाई देखी तो तुम को उस से उत्तम चीज (ईमान) प्रदान करेगा जो (अर्थदण्ड) तुम से लिया गया है, और तुम्हें क्षमा कर देगा।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَوَصَ الدَّائِيَةِ وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ وَاللَّهُ غَزِيرٌ حَكِيمٌ ۝

كُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَكُمْ فِيهَا ۚ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُلْ لَّيْسَ فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرِ إِن لَّمْ يَأْمُرْ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا ۖ إِن يُرِيدُوا خَيْرًا لَّكُمْ فَخَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَعِزُّ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

1 अर्थात् उन का सहायक है जो दुःख तथा सुख प्रत्येक दशा में उस के नियमों का पालन करते हैं।

2 यह आयत बद्र के बंदियों के बारे में उतरती। जब अल्लाह के किसी आदेश के बिना आपस के परामर्श से उन से अर्थदण्ड ले लिया गया। (इब्ने कसीर)

3 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी एक विशेषता यह भी है कि मेरे लिये गनीमत उचित कर दी गई जो मुझ से पहले किसी नबी के लिये उचित नहीं थी। (बुखारी- 335 मुस्लिम- 521)

और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

71. और यदि वह आप के साथ विश्वासघात करना चाहेंगे तो इस से पूर्व वे अल्लाह के साथ विश्वासघात कर चुके हैं। इसी लिये अल्लाह ने उन को (आप के) वश में किया है। तथा अल्लाह अति ज्ञानी उपाय जानने वाला है।

72. निःसंदेह जो ईमान लाये, तथा हिजरत (प्रस्थान) कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, तथा जिन लोगों ने उन को शरण दिया तथा सहायता की, वही एक दूसरे के सहायक हैं। और जो ईमान नहीं लाये और न हिजरत (प्रस्थान) की, उन से तुम्हारी सहायता का कोई संबन्ध नहीं, यहाँ तक कि हिजरत करके आ जायें। और यदि वह धर्म के बारे में तुम से सहायता माँगें, तो तुम पर उन की सहायता करना आवश्यक है। परन्तु किसी ऐसी जाति के विरुद्ध नहीं जिन के और तुम्हारे बीच संधि हो, तथा तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह देख रहा है।

73. और काफिर एक दूसरे के समर्थक हैं। और यदि तुम ऐसा न करोगे तो धरती में उपद्रव तथा बड़ा बिगाड़ उत्पन्न हो जायेगा।

74. तथा जो ईमान लाये, और हिजरत कर गये, और अल्लाह की राह में संघर्ष किया, और जिन लोगों ने

وَأِنْ يُرِيدُوا إِخِيَاةَكَ فَقَدْ خَالَوْا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ
فَإَمَّا لَكَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا
أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَلَمْ يَهَاجَرُوا أَمْوَالُهُمْ مِنْ وَلَا يَكُنْ لَهُمْ مِنَ الشَّيْءِ
عَلَى يَهَاجَرُوا وَلَنْ يُسْتَنْصَرُوا فِي الدِّينِ
فَعَلَيْكُمْ النَّصْرُ الْأَعْلَى قَوْمُ بَيْنَتُمْ وَبَيْنَهُمْ
مِيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَبَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ الْأَفْعَالُ
تَكُنْ فِتْنَةً فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَئِكَ هُمْ

(उन को) शरण दी, और (उन की) सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा उन्हीं के लिये उत्तम जीविका है।

75. तथा जो लोग इन के पश्चात् ईमान लाये और हिजरत कर गये, और तुम्हारे साथ मिल कर संघर्ष किया, वही तुम्हारे अपने हैं। और वही परिवारिक समीपवर्ती अल्लाह के लेख (आदेश) में अधिक समीप^[1] हैं। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक चीज का अति ज्ञानी है।

الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

وَالَّذِينَ آمَنُوا بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَحْيَاءُ
أُولَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

1 अर्थात् मीरास में उन को प्राथमिकता प्राप्त है।

सूरह तौबा - 9

سُورَةُ التَّوْبَةِ

सूरह तौबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मद्नी है, इस में 129 आयतें हैं।

इस सूरह में तौबा की शुभ सूचना तथा वचन भंगी काफ़िरों से विरक्त होने की घोषणा है। इसलिये इस का नाम सूरह तौबा और बराआ (विरक्ति) दोनों हैं।

- यह सन् (8-9) हिजरी के बीच मक्का की विजय के पश्चात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समय-समय से उतरी। और सन् (9) हिजरी में जब आप ने अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) को हज्ज का अमीर बना कर भेजा तो इस की आरंभिक आयतें उतरी। और यह एलान किया गया कि काफ़िरों से संधि तोड़ दी गई और अहले किताब से संबंधित इस्लामी शासन की नीति बताते हुये उन्हें सावधान किया गया।
- इस में इस्लामी वर्ष और महीने का पालन करने का निर्देश दिया गया।
- तबूक के युद्ध के लिये मुसलमानों को उभारा गया तथा मुनाफ़िकों की निन्दा की गई जो जिहाद से जी चुराते थे।
- यह बताया गया कि ज़कात किन को दी जाये। और ईमान वालों को सफल होने की शुभ सूचना दी गई।
- मुनाफ़िकों के साथ जिहाद करने का आदेश दिया गया। और उन्हें सुधर जाने और अल्लाह तथा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा का पालन करने को कहा गया अन्यथा वह अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सच्चे साथियों को शुभ सूचना देने के साथ ग्रामीण वासियों को उन के निफ़ाक़ पर धमकी दी गई।
- जिहाद से जी चुराने वालों के झूठ को उजागर किया गया और ईमान वालों के दोष क्षमा करने का एलान किया गया।
- मुनाफ़िकों के मस्जिद बना कर षड्यंत्र रचने का भंडा फोड़ने के साथ मुश्रिकों के लिये क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया। और मदीना के आस-पास के ग्रामिणों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान दे देने तथा धर्म के समझने के निर्देश दिये गये।

- ईमान वालों को जिहाद का निर्देश और मुनाफिकों को अन्तिम चेतावनी दी गई।
- अन्त में कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी केवल भलाई चाहते हैं। इसलिये यदि तुम उन का आदर करोगे तो तुम्हारा ही भला होगा।

1. अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मुक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया^[1] था।

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمُ
الْمُشْرِكِينَ

2. तो (हे काफ़िरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र हो कर) फिरो। तथा जान लो कि तुम अल्लाह को बिबश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अल्लाह, काफ़िरो को अपमानित करने वाला है।

فَيُخَوِّنُ الْأَرْضَ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَلَيْكُمْ غَيْرُ
مُغْضَى إِلَهِ وَأَنَّ اللَّهَ مُغْضَى الْكَافِرِينَ

3. तथा अल्लाह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है, महा हज्ज^[2] के दिन कि अल्लाह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि

وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ
الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ يَرْفِئُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ
فَإِنْ تَبَيَّنْتُمْ لَهُمْ خَيْرٌ لَكُمْ وَأَنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَوْنَا
أَنْتُمْ غَيْرُ مَغْضَى إِلَهِ وَبَشِيرٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا
بِعَذَابِ الْيَوْمِ

1 यह सूरह सन् 9 हिजरी में उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुँचे तो आप ने अनेक जातियों से समझौता किया था। परन्तु सभी ने समय समय से समझौते का उल्लंघन किया। लेकिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर उस का पालन करते रहे। और अब यह घोषणा कर दी गई कि मिश्रणवादियों से कोई समझौता नहीं रहेगा।

2 यह एलान ज़िल हिज्जा सन् (10) हिजरी को मीना में किया गया। कि अब काफ़िरो से कोई संधि नहीं रहेगी। इस वर्ष के बाद कोई मुशरिक हज्ज नहीं करेगा और न कोई कौबा का नंगा तवाफ़ करेगा। (बुखारी- 4655)

तुम अल्लाह को बिबश करने वाले नहीं हो। और आप उन्हें जो काफिर हो गये दुखदायी यातना का शुभ समाचार सुना दें।

4. सिवाय उन मुश्रिकों के जिन से तुम ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की, और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की, तो उन से उन की संधि उन की अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।
5. अतः जब सम्मानित महीने बीत जाये तो मिश्रणवादियों का बध करो उन्हें जहाँ पाओ, और उन्हें पकड़ो, और घेरो^[1], और उन की घात में रहो। फिर यदि वह तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें तथा ज़कात दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
6. और यदि मुश्रिकों में से कोई तुम से शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक कि अल्लाह की बातें सुन लो। फिर उसे पहुँचा दो उस के शान्ती के स्थान तक। यह इसलिये कि वह ज्ञान नहीं रखते।
7. इन मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) की कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल के पास कैसे हो सकती है? उन के सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित मस्जिद (काँबा) के पास संधि

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوا شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتَيْنُوا الْيَوْمَ عَاهِدَهُمْ إِلَىٰ مَدَنِهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٩﴾

وَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاتُّبِعُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُواهُمْ وَأَحْضُرُواهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ إِنَّا تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلَوْا بِمَسَابِقِهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠﴾

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلِمَةَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُوا عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا الْأَكْمَامَ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢﴾

1 यह आदेश मक्का के मुश्रिकों के बारे में दिया गया है, जो इस्लाम के विरोधी थे और मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

की^[1] थी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहें तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

8. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते हैं, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।
9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया^[2], और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।
10. वह किसी ईमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।
11. तो यदि वह (शिरक से) तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें, और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो ज्ञान रखते हों।
12. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़्र

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا تَرْفُقُوا بِهِمْ إِلَّا
وَلَا ذِمَّةً يُرْضَوْنَ بَعْدَ أَنْ يَأْفِوَاهُمْ وَتَأْنِي
قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَيِّسُونَ ۝

إِشْرَاقًا بِآيَاتِ اللَّهِ تَمَتُّنًا قَلِيلًا قَصْدًا وَاعْنِ
سَبِيلِهِمْ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

لَا يَرْفُقُونَ فِي مَوَدِّعِهِمْ إِلَّا وَادِّعَاءُ وَأُولَئِكَ
هُمْ الْمُتَعَدُّونَ ۝

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
وَأَخْلَوْا بِكُمُ فِي الدِّينِ وَتَقَضَّلُوا إِلَيْكُمْ
يَوْمَ يُعْتَلَمُونَ ۝

وَإِنْ تَكُونُوا آيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا ۝

- 1 इस से अभिप्रेत हुदैबिया की संधि है जो सन् (6) हिजरी में हुई। जिसे काफिरों ने तोड़ दिया। और यही सन् (8) हिजरी में मक्का की विजय का कारण बना।
- 2 अर्थात् संसारिक स्वार्थ के लिये सत्धर्म ईस्लाम को नहीं माना।

के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वह (अत्याचार से) रुक जायें।

13. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्होंने अपने वचन भंग कर दिये? तथा रसूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान¹ वाले हो।

14. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हें अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमान वालों के दिलों का सब दुख दूर कर देगा।

15. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा। और अल्लाह अति ज्ञानी नीतिज्ञ है।

16. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हें नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।

17. मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये

آيَةُ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ

أَلَا تَتَذَكَّرُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ يَدْعُوكُمْ أُولَٰئِكَ مَرْءَةٌ أَنْ تُغِشُّوهُمْ فَأَلَّفَهُ أَحَقُّ أَنْ تَعِشُّوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

فَأَلَّفَهُمُ بَعْدَ بَيْعِهِمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَتَجَرَّعَهُمْ وَيَنْصَرُّكُمْ عَلَيْهِمْ وَيُثَاقِفُ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ۝

وَيَذِهُبُ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْبُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ

1 आयत नं० 7 से लेकर 13 तक यह बताया गया है कि शत्रु ने निरन्तर संधि को तोड़ा है। और तुम्हें युद्ध के लिये बाध्य कर दिया है। अब उन के अत्याचार और आक्रमण को रोकने का यही उपाय रह गया है कि उन से युद्ध किया जाये।

योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ़्र (अधर्म) के साक्षी हैं। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।

18. वास्तव में अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया, तथा नमाज़ की स्थापना की, और ज़कात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

19. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (काँबा) की सेवा को उस के (ईमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

20. जो लोग ईमान लाये तथा हिज़रत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धन और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले हैं।

21. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।

22. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के

شَهِيدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿٩﴾

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مِنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَحْشَ إِلَّا لِلَّهِ فَعَلَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٠﴾

لَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجْهَهُمْ وَإِلَىٰ سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١٢﴾

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَدَتْ لَهُمْ فِيهَا نَفْسُهُمْ مُقْبِلِينَ ﴿١٣﴾

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٤﴾

लिये) बड़ा प्रतिफल है।

23. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ़्र से प्रेम करें। और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।

24. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन से मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय है तो प्रतिक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये। और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

25. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथा हुनैन^[1] के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम को तुम्हारी अधिक्ता पर गर्व था, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ
وَأِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى
الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَوَلَّيَكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

فَلَنْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ يُقَرَّبُكُمْ
وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكِنٌ
تَرْضَوْنَ فَأَحَبُّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرْتَوُونَ أَمْ يَأْتِي اللَّهَ
بِأَمْرٍ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٤﴾

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كُرُوكُكُمْ فَلَمْ
تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ
بِمَا رَحِبْتُمْ ثُمَّ وَلَّيْتُمُ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾

1 «हुनैन» मक्का तथा ताइफ़ के बीच एक वादी है। वही पर यह युद्ध सन् 8 हिजरी में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। आप को मक्का में यह सूचना मिली कि हवाजिन और सकीफ़ कबीले मक्का पर आक्रमण करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। जिस पर आप बारह हजार की सेना लेकर निकले। जब कि शत्रु की संख्या केवल चार हजार थी। फिर भी उन्होंने ने अपने तीरों से मुसलमानों का मुँह फेर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी रणक्षेत्र में रह गये, अन्ततः फिर इस्लामी सेना ने व्यवस्थित हो कर विजय प्राप्त की। (इब्ने कसीर)

धरती अपने विस्तार के होते संकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागो।

26. फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारी जिन्हें तुम ने नहीं देखा^[1], और काफिरों को यातना दी। और यही काफिरों का प्रतिकार (बदला) है।

27. फिर अल्लाह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे^[2] और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

28. हे ईमान वालो! मुशरिक (मिश्रणवादी) मलीन है। अतः इस वर्ष^[3] के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (कॉबा) के समीप भी न आयें। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय^[4] हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

29. (हे ईमान वालो!) उन से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अल्लाह और उस के

ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ جِزَاءُ الْكَافِرِينَ ۝

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عِلْمِهِمْ هَذَا أَوْ إِنْ أَخْفَأْتُمْ عُيْلَةً فَمُتَّ فَيُفْخِرُوا اللَّهَ مِنْ قُصْبِهِ إِنْ شَاءَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ

1 अर्थात् फरिश्ते भी उतारे गये जो मुसलमानों के साथ मिल कर काफिरों से जिहाद कर रहे थे। जिन के कारण मुसलमान विजयी हुये और काफिरों को बंदी बना लिया गया जिन को बाद में मुक्त कर दिया गया।

2 अर्थात् उस के सत्धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेने के कारण।

3 अर्थात् सन् 9 हिजरी के पश्चात्।

4 अर्थात् उन से व्यापार न करने के कारण। अपवित्र होने का अर्थ शिर्क के कारण मन की मलीनता है। (इब्ने कसीर)

रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सत्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज़्या^[1] दें और वह अपमानित हो कर रहें।

الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا
الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ مُنْكَرُونَ ۝

30. तथा यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह का पुत्र है। और नसारा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह उन के अपने मुँह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफिर हो गये। उन पर अल्लाह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ
النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ
كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ إِنَّهُ
يُؤْتِكُون ۝

31. उन्होंने ने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य^[2] बना लिया। तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (बंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस से पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे हैं।

اتَّخَذُوا أَحِبَارَهُمْ وَرُهَبَانَهُمْ أَرْبَابًا
مِن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ
وَمَا أُمْرُوا إِلَّا لِعِبَادَتِهَا وَآلِهَا وَاجِدَاءَ
إِلَهِ الْإِلَهِاتِ سُبْحَانَهُ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ۝

32. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा^[3] दें और अल्लाह

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ

1 जिज़्या अर्थात् रक्षा कर। जो उस रक्षा का बदला है जो इस्लामी देश में बसे हुये अहले किताब से इसलिये लिया जाता है ताकि वह यह सोचें कि अल्लाह के लिये जकात न देने और गुमराही पर अड़े रहने का मूल्य चुकाना कितना बड़ा दुर्भाग्य है जिस में वह फँसे हुये हैं।

2 हदीस में है कि उन के बनाये हुये वैध तथा अवैध को मानना ही उन को पूज्य बनाना है। (तिर्मिज़ी - 2471- यह सहीह हदीस है।)

3 आयत का अर्थ यह है कि यहूदी, ईसाई तथा काफिर स्वयं तो कुपथ हैं ही वह

अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, यद्यपि काफ़िरो को बुरा लगे।

33. उसी ने अपने रसूल^[1] को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकी उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे^[2], यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।

34. हे ईमान वालो! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं। और (उन्हें) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तथा जो सोना-चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुखदायी यातना की शुभसूचना सुना दें।

35. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पाश्वर्ी (पहलू) और पीठों को दागा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने संचित किये धनों का स्वाद चखो।

36. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अल्लाह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती

وَيَأْتِي اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُشِيعَ نُورُهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالزُّهَّادِينَ لَبَيَّا كُلُّونَ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

يَوْمَ يُخْلَىٰ عَنْكَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَيُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وظُهُرُهُمْ هَذَا مِمَّا كَسَبْتُمْ أَنْفُسَكُمْ فَذُوقُوا كَمَا كَسَبْتُمْ تُكَلِّفُونَ ۝

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

सत्धर्म इस्लाम से रोकने के लिये भी धोखा-धड़ी से काम लेते हैं जिस में वह कदापि सफल नहीं होंगे।

- 1 रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।
2 इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों की संख्या लगभग दो अरब है। और अब भी इस्लाम पूरी दुनिया में तेज़ी से फैलता जा रहा है।

की रचना की है। उन में से चार हराम (सम्मानित)^[1] महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपने प्राणों पर अत्याचार^[2] न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं, और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

37. नसी^[3] (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ़्र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफ़िर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उसी को दूसरे वर्ष हराम (अवैध) कर देते हैं। ताकि अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुकर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफ़िरों को सुपथ नहीं दर्शाता।

38. हे ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आखिरत

وَالْأَرْضُ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ
الَّذِينَ الْقِيَمَةُ فَلَا تَطْلُبُوا فِيهِمْ
أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الشِّرْكَ كَافَّةً
كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّمَا النَّسِي زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا يُجِلُّونَهُ عَامًا وَبَعَثُوا مَعَهُ
لِيُؤْاطُوا عِدَّةَ مَا حَزَمَ اللَّهُ فَيُجِلُّوا مَا حَزَمَ
اللَّهُ رَبِّينَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالٍ لَهُمْ وَأَلَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ افْعَلُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَقَالْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ارْجِعُوا
بِأَحْيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ قَبَا مَنَافِعِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا

1 जिन में युद्ध निषेध है। और वह जुलकादा, जुल हिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के अर्बी महीने हैं। (बुखारी- 4662)

2 अर्थात् इन में युद्ध तथा रक्तपात न करो, इन का आदर करो।

3 इस्लाम से पहले मक्का के मिश्रणवादी अपने स्वार्थ के लिये सम्मानित महीनों साधारणतः मुहर्रम के महीने को सफ़र के महीने से बदल कर युद्ध कर लेते थे। इसी प्रकार प्रत्येक तीन वर्ष पर एक महीना अधिक कर लिया जाता था ताकि चांद का वर्ष सूर्य के वर्ष के अनुसार रहे। कुर्आन ने इस कुरीति का खण्डन किया है, और इसे अधर्म कहा है। (इब्ने कसीर)

فِي الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۖ

(परलोक) की अपेक्षा संसारिक जीवन से प्रसन्न हो गये हो? जब कि परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन के लाभ बहुत थोड़े हैं।^[1]

1 यह आयतें तबूक के युद्ध से संबन्धित हैं। तबूक मदीने और शाम के बीच एक स्थान का नाम है। जो मदीने से 610 कि॰मी॰ दूर है।

सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली कि रोम के राजा कैसर ने मदीने पर आक्रमण करने का आदेश दिया है। यह मुसलमानों के लिये अरब से बाहर एक बड़ी शक्ति से युद्ध करने का प्रथम अवसर था। अतः आप ने तय्यारी और कूच का एलान कर दिया। यह बड़ा भीषण समय था, इस लिये मुसलमानों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस युद्ध के लिये निकलें।

तबूक का युद्ध मक्का की विजय के पश्चात् ऐसे समाचार मिलने लगे कि रोम का राजा कैसर मुसलमानों पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप ने भी मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उस समय स्थिति बड़ी गंभीर थी। मदीना में अकाल था। कड़ी धूप तथा खजूरों के पकने का समय था। सवारी तथा यात्रा के संसाधन की कमी थी। मदीना के मुनाफिक अबू आमिर राहिब के द्वारा गुस्सान के ईसाई राजा और कैसर से मिले हुये थे। उन्होंने मदीना के पास अपने षड्यंत्र के लिये एक मस्जिद भी बना ली थी। और चाहते थे कि मुसलमान पराजित हो जायें। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का उपहास करते थे। और तबूक की यात्रा के बीच आप पर प्राण घातक आक्रमण भी किया। और बहुत से द्विधावादियों ने आप का साथ भी नहीं दिया और झूठे बहाने बना लिये। रजब सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हजार मुसलमानों के साथ निकले। इन में दस हजार सवार थे। तबूक पहुँच कर पता लगा कि कैसर और उस के सहयोगियों ने साहस खो दिया है। क्योंकि इस से पहले मूता के रण में तीन हजार मुसलमानों ने एक लाख ईसाईयों का मुकाबला किया था। इसलिये कैसर तीस हजार की सेना से भिड़ने का साहस न कर सका। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबूक में बीस दिन रह कर रोमियों के आधीन इस क्षेत्र के राज्यों को अपने आधीन बनाया। जिस से इस्लामी राज्य की सीमायें रोमी राज्य की सीमा तक पहुँच गईं। जब आप मदीना पहुँचे तो द्विधावादियों ने झूठे बहाने बना कर क्षमा माँग ली। तीन मुसलमान जो आप के साथ आलस्य के कारण नहीं जा सके थे और अपना दोष स्वीकार कर लिया था आप ने उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। किन्तु अल्लाह ने उन तीनों को भी उन के सत्य के कारण क्षमा कर दिया। आप ने उस मस्जिद को भी गिराने का आदेश दिया जिसे मुनाफिकों ने अपने षड्यंत्र का केन्द्र बनाया था।

39. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें अल्लाह दुःखदायी यातना देगा, तथा तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा। और तुम उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

40. यदि तुम उस (नबी) की सहायता नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की सहायता उस समय^[1] की है जब काफिरों ने उसे (मक्का से) निकाल दिया। वह दो में दूसरे थे। जब दोनों गुफा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहे थे: उदासीन न हो, निश्चय अल्लाह हमारे साथ है।^[2] तो अल्लाह ने अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया जिसे तुम ने नहीं देखा। और काफिरों की बात नीची कर दी। और अल्लाह की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

41. हलक़े^[3] होकर और बोझिल (जैसे हो)

إِلَّا تَنْفَرُوا يَعْبُدُوا بِالْغَيْبِ وَالْغَيْبِ وَالْغَيْبِ
قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٣٩

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذَا أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٤٠

إِنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالاً وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ

1 यह उस अवसर की चर्चा है जब मक्का के मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बध कर देने का निर्णय किया। उसी रात आप मक्का से निकल कर सौर पर्वत नामक गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। फिर मदीना पहुँचे। उस समय गुफा में केवल आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे।

2 हदीस में है कि अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैं गुफा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। और मैं ने मुशरिकों के पैर देख लिये। और आप से कहा: यदि इन में से कोई अपना पैर उठा दे तो हमें देख लेगा। आप ने कहा: उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है। (सहीह बुखारी- 4663)

3 संसाधन हो या न हो।

निकल पड़ो। और अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

42. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफिक) अवश्य आप के साथ हो जाते। परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब) अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।

43. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे! आप ने उन्हें अनुमति क्यों दे दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सच्चे हैं उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते।

44. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हों कि अपने धनों तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँती जानता है।

45. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और अपने संदेह में पड़े हुये हैं।

46. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना

وَأَنْفُسَكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا
لَاجْتَمَعْتُمْ وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ
وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا الْفَرَجَ جَاءَ
مَعَكُمْ يَهْلِكُونَ أَنْفُسُهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ إِذْنْتَ لَهُمْ حَتَّى
يَتَّبِعِينَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ
الْكَاذِبِينَ ۝

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۝

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي
رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ۝

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً
وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْقِسَاءَهُمْ فَلَبِثُوا

अप्रिय था, अतः उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

47. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करते। और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करते। और तुम में वह भी है जो उन की बातों पर ध्यान देते हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।
48. (हे नबी!) वह इस से पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बातों में हेर फेर कर चुके हैं। यहाँ तक कि सत्य आ गया, और अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बात उन्हें अप्रिय है।
49. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता है: आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालें। सुन लो! परीक्षा में तो यह पहले ही से पड़े हुए हैं। और वास्तव में नरक काफिरों को घेरी हुयी है।
50. (हे नबी!) यदि आप का कुछ भला होता है तो उन (द्विविधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं: हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।
51. आप कह दें: हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर

وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْعَصِيدِينَ ۝

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبًا إِلَّا أَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمْعُونُ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمُ بِالظَّالِمِينَ ۝

لَقَدْ ابْتَغُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا الْأُمُورَ حَتَّىٰ جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِّي وَلَا تَفْتِنِّي ۚ أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ فَسُوءُهُمْ وَلَنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرًا مِنْ قَبْلُ وَبَيَّتُوا وَهُمْ قَرِحُونَ ۝

ثُلٌ لَّنْ يُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ تَلْتَوَكَّلُ الْيَوْمِئِذِينَ ۝

ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।

52. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो⁽¹⁾ भलाईयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।

53. आप (मुनाफ़िकों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्योंकि तुम अवज्ञाकारी हो।

54. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय कुछ नहीं है कि उन्होंने ने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कफ़ किया है। और वह नमाज़ के लिये आलसी होकर आते हैं, तथा दान भी करते हैं तो अनिच्छा करते हैं।

55. अतः आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करे। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इन के द्वारा संसारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफ़िर हों।

56. वह (मुनाफ़िक) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से हैं,

قُلْ مَنْ تَرْتَضُونَ مِنَّا إِلَّا أَحَدَى
الْحَسَنَيْنِ وَتَعْنُ تَرْتَضُونَ يَكْمُرُ أَنْ
يُضَيِّبَكُمْ اللَّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عَذَابِهِ أَوْ
يَأْتِيَنَّيَا فَيَقْرَأْصُورًا إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَضُونَ ۝

قُلْ أَنُفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّنْ يَتَقَبَّلَ مِنْكُمْ
إِثْمُ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا
أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَبِرُسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ
الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَىٰ وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا
وَهُمْ كَارِهُونَ ۝

كَلَّا لَيُضْحِكَنَّ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ
أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝

وَيَجْعَلُونَ بِاللَّهِ إِثْمَهُمْ لِيَكْنُمُوهُمْ وَمَا لَهُمْ مِنْكُمْ

1. दो भलाईयों से अभिप्राय: विजय या अल्लाह की राह में शहीद होना है। (इब्ने कसीर)

जब कि वह तुम में से नहीं है, परन्तु भयभीत लोग हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهِمْ وَنُسُلِهِمْ غَافِلُونَ ٥٧

57. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।

لَوْ كُنُوا يَعْلَمُونَ ٥٨

58. (हे नबी!) उन (मुनाफ़िकों) में से कुछ ज़कात के वितरण में आप पर आक्षेप करते हैं। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं, और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْعَنُ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْتَعْجِلُونَ ٥٩

59. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें अल्लाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी, हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ٦٠

60. ज़कात (देय, दान) केवल फ़कीरों^[1], मिसकीनों और कार्य-कर्ताओं^[2] के लिये, तथा उन के लिये जिन के दिलों को जोड़ा जा रहा है^[3] और दास मुक्ति, तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغُرَمَاتِ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٦١

1 कुर्आन ने यहाँ फ़कीर और मिसकीन के शब्दों का प्रयोग किया है। फ़कीर का अर्थ है जिस के पास कुछ न हो। परन्तु मिसकीन वह है जिस के पास कुछ धन हो मगर उस की आवश्यकता की पूर्ति न होती हो।

2 जो ज़कात के काम में लगे हों।

3 इस से अभिप्राय वह हैं जो नये नये इस्लाम लाये हों। तो उन के लिये भी ज़कात है। या जो इस्लाम में रुचि रखते हों, और इस्लाम के सहायक हों।

राह में तथा यात्रियों के लिये है।
अल्लाह की ओर से अनिवार्य (देय) है।^[1]
और अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

61. तथा उन(मुनाफ़िकों) में से कुछ नबी को दुख देते हैं, और कहते हैं कि वह बड़े सुनवा^[2] है। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे है। वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों की बात का विश्वास करते हैं, और उन के लिये दया है जो तुम में से ईमान लाये हैं। और जो अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उन के लिये दुखदायी यातना है।

62. वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ
هُوَ آذُنٌ قُلْ أَذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَيُؤْمِنُ بِالْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِلَّذِينَ
آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ وَاللَّهُ

- 1 संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस ने दीन दुखियों की सहायता और सेवा की प्रेरणा न दी हो। और उसे इबादत (बंदना) का अनिवार्य अंश न कहा हो। परन्तु इस्लाम की यह विशेषता है कि उस ने प्रत्येक धनी मुसलमान पर एक विशेष कर-निर्धारित कर दिया है जो उस पर अपनी पूरी आय का हिसाब करके प्रत्येक वर्ष देना अनिवार्य है। फिर उसे इतना महत्व दिया है कि कर्मों में नमाज़ के पश्चात् उसी का स्थान है। और क़ुरआन में दोनों कर्मों की चर्चा एक साथ करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी समुदाय में इस्लामी जीवन के सब से पहले यही दो लक्षण है। नमाज़ तथा ज़कात, यदि इस्लाम में ज़कात के नियम का पालन किया जाये तो समाज में कोई गरीब नहीं रह जायेगा। और धनवानों तथा निर्धनों के बीच प्रेम की ऐसी भावना पैदा हो जायेगी कि पुरा समाज सुखी और शान्तिमय बन जायेगा। ब्याज का भी निवारण हो जायेगा। तथा धन कुछ हाथों में सीमित नहीं रह कर उस का लाभ पूरे समाज को मिलेगा। फिर इस्लाम ने इस का नियम निर्धारित किया है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा और यह भी निश्चित कर दिया कि ज़कात का धन किन को दिया जायेगा, और इस आयत में उन्हीं की चर्चा की गई है, जो यह है: 1- फ़कीर, 2- मिस्कीन, 3- ज़कात के कार्यकर्ता, 4- नये मुसलमान, 5- दास-दासी, 6- ऋणी, 7- धर्म के रक्षक, 8- और यात्री। अल्लाह की राह से अभिप्राय वह लोग हैं जो धर्म की रक्षा के लिये काम कर रहे हैं।

- 2 अर्थात् जो कहो मान लेते हैं।

लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अब्बाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य हैं कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले हैं।

وَرَسُولُهُ أَهَقُ أَنْ يَرْضَوْهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝

63. क्या वह नहीं जानते कि जो अब्बाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस में वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَنْ يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝

64. मुनाफ़िक (द्विधावादी) इस से डरते हैं कि उन^[1] पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हँसी उड़ा लो। निश्चय अब्बाह उसे खोल कर रहेगा जिस से तुम डर रहे हो।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَهِزُّوْا إِنْ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ ۝

65. और यदि आप^[2] उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे। आप कहिये कि क्या अब्बाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?

وَالَّذِينَ سَأَلَتَهُمْ لِيَتَّقُوا إِنَّمَا كُنَّا نَعُوضُ وَنَلْعَبُ قُلِ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ سَاهِفَةً ۝

66. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने इमान के पश्चात् कुफ़ किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्योंकि वही अपराधी हैं।

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنَّ نَعْفَ عَنْ ظُلْمَتِكُمْ مُنْكَرٌ وَعَذَابٌ طَائِفَةٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝

67. मुनाफ़िक पुरुष तथा स्त्रियाँ सब

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ

1 ईमान वालों पर।

2 तबूक की यात्रा के बीच मुनाफ़िक लोग, नबी तथा इस्लाम के विरुद्ध बहुत सी दुःखदायी बात कर रहे थे।

एक-दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं। और अपने हाथ बंद किये रहते^[1] हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला^[2] दिया। वास्तव में मुनाफिक ही भ्रष्टाचारी हैं।

68. अल्लाह ने मुनाफिक पुरुषों तथा स्त्रियों और काफिरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावासी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

69. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्होंने ने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अतः तुम भी अपने भाग का आनन्द लो, जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझते हो जैसे वह उलझते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।

70. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थे: नूह की जाति तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जाति के और मद्यन^[3] के वासियों

يَا مُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ تَسْأَلُ اللَّهَ فَتَسِيَهُمْ إِنَّ
الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ
جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا هُمْ حَسِبُهُمْ وَعَنْهُمْ
اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝

كَانَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً
وَكَثُرَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَائِقِهِمْ
فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَائِقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعْتُمُ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَائِقِهِمْ وَخُصُّمُكَ الَّذِينَ
خَاصُّوا أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمُ نُوحٍ
وَعَادٌ وَثَمُودَ وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ
مَدْيَنَ وَالنُّؤَيْفَاتِ إِنَّهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

1 अर्थात् दान नहीं करते।

2 अल्लाह के भुला देने का अर्थ है: उन पर दया न करना।

3 मद्यन् के वासी शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति थे।

के, और उन बस्तियों के जो पलट दी^[1] गई? उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार^[2] कर रहे थे।

71. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं। और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्त्वज्ञ है।

72. अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अल्लाह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी, वही बहुत बड़ी सफलता है।

73. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद करो, और उन पर सख़्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।

74. वह अल्लाह की शपथ लेते हैं कि उन्होंने

فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٌ وَلَدِيمٌ فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

يَعْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ

1 इस से अभिप्राय लूत अलैहिस्सलाम की जाति है। (इब्ने कसीर)

2 अपने रसूलों को अस्वीकार कर के।

ने यह^[1] बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कुफ़्र की बात कही^[2] है। और इस्लाम ले आने के पश्चात् काफ़िर हो गये हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर नहीं सके। और उन को यही बात बुरी लगी कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह से धनी^[3] कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अल्लाह उन्हें दुखदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई संरक्षक और सहायक न होगा।

75. उन में से कुछ ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन-धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे, और सुकर्मियों में हो जायेंगे।

76. फिर जब अल्लाह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कंजूसी कर गये, और वचन से विमुख हो कर फिर गये।

77. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन

وَكُفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا
وَمَا تَقْتَضُوا إِلَّا أَنْ اعْتَصِمُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ
قُضِيهِ فَإِنْ يُتُونَا بَيْتُكَ خَبَرًا لَّهُمْ وَإِنْ
يَسْتَوُوا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا
نَصِيرٍ ۝

وَمِنْهُمْ مَنُ عَاهَدَ اللَّهُ لَئِنْ أُتُوا مِنْ قُضِيهِ
لَيَقْعَدَنَّ وَلَيَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

فَلَمَّا آتَاهُمُ مِنْ قُضِيهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ
مُخَوِّضُونَ ۝

فَاعْتَصِمُوا بِغَارِي قُلُوبِهِمْ إِلَى يَوْمِ يَلْقَوُوهُ

1 अर्थात् ऐसी बात जो रसूल और मुसलमानों को बुरी लगे।

2 यह उन बातों की ओर संकेत है जो द्विधावादियों ने तबूक की मुहिम के समय की थी। उन की ऐसी बातों के विवरण के लिये (देखिये: सूरह मुनाफिकून, आयत: 7-8)

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले मदीने का कोई महत्व न था। आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं थी। जो कुछ था यहूदियों के अधिकार में था। वह व्याज भक्षी थे, शराब का व्यापार करते थे, और अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। आप के आगमन के पश्चात् आर्थिक दशा सुधर गई, और व्यवसायिक उन्नति हुई।

के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अल्लाह से मिले। क्यों कि उन्होंने ने उस वचन को भंग कर दिया जो अल्लाह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।

78. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है।

79. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों में से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफ़िक) उन से उपहास करते हैं, अल्लाह उन से उपहास करता^[1] है। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

80. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़र कर दिया। और अल्लाह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

يٰۤاٰخِلَافِيَ اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰمُ الْغُیُوْبِ ۝

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُكَذِبِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ذٰلِكَ يَاۤاٰلِهٖمْ كُفْرًا وَّيَاۤاَلِهٖمْ سُوْرَةٌ وَّلِلّٰهِ اَلْبَهْدٰى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ۝

1 अर्थात् उन के उपहास का कुफल दे रहा है। अबू मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब हमें दान देने का आदेश दिया गया तो हम कमाने के लिये बोल लाने लगे ताकि हम दान कर सकें और अबू अक़ील (रज़ियल्लाहु अन्हु) आधा साअ (सवा किलो) लाया और एक व्यक्ति उन से अधिक लेकर आया। तो मुनाफ़िकों ने कहा: अल्लाह को उस के (थोड़े से) दान की जरूरत नहीं। और यह दिखावे के लिये (अधिक) लाया है। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी- 4668)

81. वे प्रसन्न^[1] हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करें अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्होंने ने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझते (तो ऐसी बात न करते)।
82. तो उन्हें चाहिये कि हँसे कम, और रोयें अधिक। जो कुछ वे कर रहे हैं उस का बदला यही है।
83. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिरोह के पास (तबूक से) वापस लाये, और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति मांगें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम बार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।
84. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाजे की नमाज़ कभी न पढ़ें, और न उस की समाधि (कब्र) पर खड़े हों। क्योंकि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़ किया है, और अवज्ञाकारी रहते हुये मरे^[2] हैं।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرْبِ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُواكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تُخْرَجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ۝

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنُتُوا وَهُمْ فِي سَعَتٍ ۝

1 अर्थात् मुनाफ़िक जो मदीना में रह गये और तबूक की यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गये।

2 सहीह हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुनाफ़िकों

85. आप को उन के धन तथा उन की संतान चकित न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफिर हों।

86. तथा जब कोई सूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफिकों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दें। हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।

87. तथा प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रहें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।

88. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं, और वही सफल होने वाले हैं।

89. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।

90. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये, ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से

وَلَا تُحِبُّكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَرْفِقَ أَنْفُسَهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

وَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الْقُلُوبِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْفَاقِينَ ﴿٨٦﴾

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾

لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾

أَعَدَّ اللهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾

के मुख्या अब्दुल्लाह बिन उबय्य का जनाजा पड़ा तो यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4672)

झूठ बोला। तो इन में से काफिरों को दुखदायी यातना पहुँचेगी।

91. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाते कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अल्लाह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا انْصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

92. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि, मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखें आँसू बहा रही^[1] थीं।

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَعَيْنُهُمْ يُفِيضُ مِنَ الْكُفْرِ حَزَنًا لَّا يَجِدُوا مَا يَنْفِقُونَ ۝

93. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं। और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُوكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

94. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे। आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अल्लाह

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذْ رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُونَ لِي أَنَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ لَكُمُ الْقَدِيبَاتُ مِنَ اللَّهِ مِنْ خَبَائِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُزَدُّونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

- 1 यह विभिन्न कबीलों के लोग थे जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये कि आप हमारे लिये सवारी का प्रबंध कर दें। हम भी आप के साथ तबूक के जिहाद में जायेंगे। परन्तु आप सवारी का कोई प्रबंध न कर सके और वह रोते हुये वापिस हो गये। (इब्ने कसीर)

और उस के रसूल तुम्हारा कर्म देखेंगे। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।

95. वह तुम से अल्लाह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन है। और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।

96. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अल्लाह उल्लंघनकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।

97. देहाती^[1] अविश्वास तथा द्विवधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य है कि: उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अल्लाह ने उतारा है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

98. देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने दिये हुए दान को अर्धदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

99. और देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो

سَيَخْلِقُونَ بِاللّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لَتَعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رَجِسٌ وَمَا وَهُمْ بِجَاهٍ عِزٍّ لَهُمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

يَخْلِقُونَ لَكُمْ لَتَرْضُوا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَيَرْضَى عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَكْرِهْضُ بِكُمْ الدَّيْنَ وَيَرْتَدُّ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ

1 इस से अभिप्राय मदीना के आस पास के कबीले हैं।

अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और अपने दिये हुये दान को अल्लाह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते हैं। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

100. तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन^[1] और अनुसारी, और जिन लोगों ने सुकर्म के साथ उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, वही बड़ी सफलता है।

101. और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण हैं उन में से कुछ मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। और कुछ मदीना में हैं। जो (अपने) निफाक में अभ्यस्त (निपुण) हैं। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते हैं। हम उन्हें दो बार^[2] यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।

الْآخِرُ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ أَلَّا تَأْخُذَ بِهِمْ
لَهُمْ سَيِّدٌ يَخْلُفُهُمْ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝

وَالشَّيْقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْغَوْرُ الْعَظِيمُ ۝

وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۚ وَمِنْ
أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَقَرَّدٌ وَعَلَى الْفِتَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ
نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَلْعِدًا بِهِمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يَرْكُزُونَ
إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝

1 प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन उन को कहा गया है जो मक्का से हिज्रत करके हुदैबिया की संधि सन् 6 से पहले मदीना आ गये थे। और प्रथम अग्रसर अनुसार मदीना के वह मुसलमान हैं जो मुहाजिरीन के सहायक बने और हुदैबिया में उपस्थित थे। (इब्ने कसीर)

2 संसार में तथा कब्र में फिर परलोक की घोर यातना होगी। (इब्ने कसीर)

102. और कुछ दूसरे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सुकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म को मिश्रित कर लिया है। आशा है कि: अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

103. हे नबी! आप उन के धनों से दान लें, और उस के द्वारा उन (के धनों) को पवित्र और उन (के मनो) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें। वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।

104. क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

105. और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और ईमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।

106. और (इन के सिवाय) कुछ दूसरे भी हैं जो अल्लाह के आदेश के लिये विलंबित^[1] हैं। वह उन्हें दण्ड दे,

وَالْخَوْرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا
وَأَعْمَىٰ عَمَلًا سَاءًا إِنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا
وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ
وَأَنَّهُ يَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَيُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَذُنُوبُهُمْ إِنَّمَا كُنَّ نَجَسًا بَاطِلًا ﴿١٠٥﴾

وَالْخَوْرُونَ مُرَجُّونَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِنَّا بَعَدْنَا رَبَّنَا
بِئْتَابٍ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٦﴾

1 अर्थात् अपने विषय में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह तीन व्यक्ति

अथवा उन को क्षमा कर दे तो
अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

107. तथा (द्विधावादियों में) वह भी है
जिन्होंने ने एक मस्जिद^[1] बनाई,
इस लिये कि (इस्लाम को) हानि
पहुँचायें, तथा कुफ़ करें, और
ईमान वालों में विभेद उत्पन्न करें,
तथा उस का घात-स्थल बनाने के
लिये जो इस से पूर्व अल्लाह और
उस के रसूल से युद्ध कर^[2] चुका
है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि
हमारा संकल्प भलाई के सिवा और
कुछ न था। तथा अल्लाह साक्ष्य देता
है कि वह निश्चय मिथ्यावादी है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا
وَتَفْزِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَرِصَادًا لِّلْعَن
حَارِبِ اللّٰهِ وَرَسُولِهِ مِنْ قَبْلُ وَلِيَحْلِفُنَّ اِنْ
اَرَادَا اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ
لَكٰذِبُوْنَ ۝

108. (हे नबी!) आप उस में कभी खड़े

لَا تَقُومُ فِيْهِ اَبَدًا لِّمَسْجِدٍ اَنۡسَ عَلَى التَّغٰوٰى مِنْ

थे, जिन्होंने ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबूक से वापिस आने पर यह
कहा कि वह अपने आलस्य के कारण आप का साथ नहीं दे सके। आप ने उन
से कहा कि अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा करो। और आगामी आयत 117 में उन
के बारे में आदेश आ रहा है।

- 1 इसलामी इतिहास में यह «मस्जिदे ज़िरार» के नाम से याद की जाती है।
जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आये तो आप के आदेश से "कुबा"
नाम के स्थान में एक मस्जिद बनाई गई। जो इस्लामी युग की प्रथम मस्जिद है।
कुछ मुनाफ़िकों ने उसी के पास एक नई मस्जिद का शनिर्माण किया। और जब
आप तबूक के लिये निकल रहे थे तो आप से कहा कि आप एक दिन उस में
नमाज़ पढ़ा दें। आप ने कहा कि: यात्रा से वापसी पर देखा जायेगा। और जब
वापिस मदीना के समीप पहुँचे तो यह आयत उतरी, और आप के आदेश से
उसे ध्वस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)
- 2 इस से अभिप्रेत अबू आमिर राहिब है। जिस ने कुछ लोगों से कहा कि एक
मस्जिद बनाओ और जितनी शक्ति और अस्त्र-शस्त्र हो सके तय्यार कर लो। मैं
रोम के राजा कैसर के पास जा रहा हूँ। रोमियों की सेना लाऊँगा, और मुहम्मद
तथा उस के साथियों को मदीना से निकाल दूँगा। (इब्ने कसीर)

न हों। वास्तव में वह मस्जिद^[1] जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं, जो स्वच्छता से प्रेम^[2] करते हैं, और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।

109. तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है, अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरते हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

110. यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक संदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

111. निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उन के धनों को इस के बदले खरीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है। वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन

أَوَّلَ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ رَبِّعَالٌ
يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ۝

أَفَمَنْ أَشَسَ بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَشَسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا
خُرْفٍ هَارٍ فَأَنفَارِيهِ فِي تَارِجِهِمْ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي
قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ يُقَاتِلُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا
عَلَيْهِمْ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ
وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا

1 इस मस्जिद से अभिप्राय कुबा की मस्जिद है। तथा मस्जिद नववी शरीफ भी इसी में आती है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् शुद्धता के लिये जल का प्रयोग करते हैं।

है, तौरात तथा इंजील और कुर्आन में। और अल्लाह से बढ़ कर अपना वचन पूरा करने वाला कौन हो सकता है? अतः अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया। और यही बड़ी सफलता है।

112. जो क्षमा याचना करने, वंदना करने तथा अल्लाह की स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने तथा रुकुअ और सजदा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं। और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।

113. किसी नबी तथा^[1] उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी^[2] हैं।

114. और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उस ने

يَبَيِّنُ لَكُمْ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْلُ الْعَظِيمُ ۝

الَّتَابِعُونَ الْغَيْدُونَ الْحِمْدُ وَالسَّابِقُونَ
الرُّكُوعُونَ السَّجْدُونَ الْأُمُورَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَفِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ
مُوعَدٍ وَأَصْدَاهَا أَيُّهَا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ

1 हदीस में है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब के निधन का समय आया तो आप उस के पास गये। और कहा: चाचा! «ला इलाहा इल्लल्लाह» पढ़ लो। मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिये इस को प्रमाण बना लूंगा। उस समय अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबु उमय्या ने कहा: क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से फिर जाओगे? (अतः वह काफिर ही मरा।) तब आप ने कहा: मैं तुम्हारे लिये क्षमा की प्रार्थना करता रहूंगा, जब तक उस से रोक न दिया जाऊँ। और इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी- 4675)

2 देखिये: सूरह माइदा, आयत: 72, तथा सूरह निसा, आयत: 48, 116।

उस को इस का वचन दिया^[1] था। और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।

115. अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से बचना चाहिये उसे उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।

116. वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।

117. अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्होंने तंगी के समय आप का साथ दिया, इस के पश्चात् कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।

118. तथा उन तीनों^[2] पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था,

عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَأْمِنَهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِن قُوَّةٍ وَلَا نَصِيرٍ ۝

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِن بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَافَتْ

1 देखिये: सूरह मुम्तहिना, आयत: 4।

2 यह वही तीन हैं जिन की चर्चा आयत नं० 106 में आ चुकी है। इन के नाम थे 1-काब बिन मालिक, 2- हिलाल बिन उमय्या, 3- मुरारह बिन रबीअ। (सहीह बुखारी - 4677)

जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण^[1] हो गये, और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उसी की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

119. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सच्चों के साथ हो जाओ।

120. मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और थकान तथा भूक नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रोंदते हैं जो काफिरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।

121. और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है,

عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَكُفُّوا أَنْ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٩٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ﴿٩١﴾

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَنْغَرَابِ أَنْ يَتَخَفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطَلُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوِّ نِيلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٢﴾

وَلَا يُفْقِرُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادًى إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِحَجْرِ يَوْمٍ اللَّهُ أَحْسَنُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

1. क्योंकि उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था।

ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।

122. ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें। तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करे। और ताकि अपनी जाति को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्मों से) बचें।^[1]

123. हे ईमान वालो! अपने आस-पास के काफिरों से युद्ध करो^[2], और चाहिये कि वह तुम में कुटिलता पायें, तथा विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

124. और जब (कुर्आन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहते हैं कि तुम में से किस का ईमान (विश्वास) इस ने अधिक किया?^[3] तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विश्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَآفَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلظَةً وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ إِنَّكُمْ زَادْتُمُ هَذِهِ آيْمَانًا قَالَتِ الَّذِينَ آمَنُوا أَفَزَادْتُمْ آيْمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

1 इस आयत में यह संकेत है कि धार्मिक शिक्षा की एक साधारण व्यवस्था होनी चाहिये। और यह नहीं हो सकता कि सब धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये निकल पड़ें। इस के लिये प्रत्येक समुदाय से कुछ लोग जा कर धर्म की शिक्षा ग्रहण करें। फिर दूसरों को धर्म की बातें बतायें।

कुर्आन के इसी संकेत ने मुसलमानों में शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी भावना उत्पन्न कर दी कि एक शताब्दी के भीतर उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी व्यवस्था बना दी जिस का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता।

2 जो शत्रु इस्लामी केन्द्र के समीप के क्षेत्रों में हों पहले उन से अपनी रक्षा करो।

3 अर्थात् उपहास करते हैं।

125. परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो उस ने उन की गन्दगी और अधिक बढ़ा दी। और वह काफिर रहते हुये ही मर गये।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا
وَهُمْ كَافِرُونَ ۝

126. क्या वह नहीं देखते कि उन की परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती^[1] है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ
مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ
يَذْكُرُونَ ۝

127. और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर चल देते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से) ^[2] फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।

وَلَا أَمَّا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ
هَلْ يَأْتِيهِمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوا صَرَفَ
اللَّهُ قُلُوبَهُمْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَفْقَهُوْنَ ۝

128. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह बात भारी लगती है जिस से तुम्हें दुःख हो। वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं। और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् है।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ
رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

129. (हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हकीकी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ۝

1 अर्थात् उन पर आपदा आती है तथा अपमानित किये जाते हैं। (इब्ने कसीर)

2 इस से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

सूरह यूनस - 10

سُورَةُ يُوسُفَ

यह सूरह मक्की है, इस में 109 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, रा। यह तत्वज्ञता से परिपूर्ण पुस्तक (कुरआन) की आयतें हैं।
2. क्या मानव के लिये आश्चर्य की बात है कि हम ने उन्हीं में से एक पुरुष पर⁽¹⁾ प्रकाशना भेजी है कि आप मानवगण को सावधान कर दें। और जो ईमान लायें उन्हें शुभ सूचना सुना दें कि उन्हीं के लिये उन के पालनहार के पास सत्य सम्मान है? तो काफ़िरो ने कह दिया कि यह खुला जादूगर है।
3. वास्तव में तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिस नें आकाशों तथा धरती को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर अर्श (राज सिंहासन) पर स्थिर हो गया। वही विश्व की व्यवस्था कर रहा है। कोई उस के पास अनुशंसा (सिफारिश) नहीं कर सकता, परन्तु उस की अनुमति के पश्चात् वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, अतः

الرَّسُولَ ذَلِكَ الْكِتَابُ الْحَكِيمُ

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ
أُنْذِرَ النَّاسَ وَيُخَرِّجَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ لَهُمْ قَدَمٌ
صَدِيقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ
مُفْتَرٍ

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي
سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُدِيرُ الْأَمْرَ
مَا مِنْ شَيْءٍ إِلَّا مِنْ عِنْدِ إِذْنِهِ ذَلِكَ اللَّهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ

1 सत्य सम्मान से अभिप्रेत स्वर्ग है। अर्थात् उन के सत्कर्मों का फल उन्हें अल्लाह की ओर से मिलेगा।

उसी की इबादत (बंदना)^[1] करो।
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

4. उसी की ओर तुम सब को लौटना है। यह अल्लाह का सत्य वचन है। वही उत्पत्ति का आरंभ करता है। फिर वही पुनः उत्पन्न करेगा ताकि उन्हें न्याय के साथ प्रतिफल प्रदान^[2] करे। जो ईमान लाये और सदाचार किये, और जो काफिर हो गये उन के लिये खौलता पेय तथा दुखदायी यातना है। उस अविश्वास के बदले जो कर रहे थे।

5. उसी ने सूर्य को ज्योति तथा चाँद को प्रकाश बनाया है। और उस (चाँद) के गंतव्य स्थान निर्धारित कर दिये, ताकि तुम वर्षों की गिनती तथा हिसाब का ज्ञान कर लो। इन की उत्पत्ति अल्लाह ने नहीं की है परन्तु सत्य के साथ। वह उन लोगों के लिये निशानियों (लक्षणों) का वर्णन कर रहा है, जो ज्ञान रखते हों।

6. निसंदेह रात्रि तथा दिवस के एक दूसरे के पीछे आने में, और जो कुछ अल्लाह ने आकाशों तथा धरती में उत्पन्न किया है उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो अल्लाह से डरते हों।

7. वास्तव में जो लोग (प्रलय के दिन)

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيُعْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ
حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ
مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ
اللَّهُ ذَٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُتَّقُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ

- 1 भावार्थ यह है कि जब विश्व की व्यवस्था वही अकेला कर रहा है तो पूज्य भी वही अकेला होना चाहिये।
2 भावार्थ यह है कि यह दूसरा परलोक का जीवन इस लिये आवश्यक है कि कर्मों के फल का नियम यह चाहता है कि जब एक जीवन कर्म के लिये है तो दूसरा कर्मों के प्रतिफल के लिये होना चाहिये।

हम से मिलने की आशा नहीं रखते और संसारिक जीवन से प्रसन्न हैं तथा उसी से संतुष्ट हैं, तथा जो हमारी निशानियों से असावधान हैं।

8. उन्हीं का आवास नरक है, उस के कारण जो वह करते रहे।
9. वास्तव में जो ईमान लाये और सुकर्म किये उन का पालनहार उन के ईमान के कारण उन्हें (स्वर्ग की) राह दर्शा देगा, जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह सुख के स्वर्गों में होंगे।
10. उन की पुकार उस (स्वर्ग) में यह होगी: "हे अब्बाह! तू पवित्र है।" और एक दूसरे को उस में उन का आशीर्वाद यह होगा: "तुम पर शान्ति हो।" और उन की प्रार्थना का अन्त यह होगा: "सब प्रशंसा अब्बाह के लिये है जो सम्पूर्ण विश्व का पालनहार है।"
11. और यदि अब्बाह लोगों को तुरन्त बुराई का (बदला) दे देता, जैसे वह तुरन्त (संसारिक) भलाई चाहते हैं तो उन का समय कभी पूरा हो चुका होता। अतः जो (मरने के पश्चात्) हम से मिलने की आशा नहीं रखते हम उन्हें उन के कुकर्मों में बहकते हुये⁽¹⁾ छोड़ देते हैं।
12. और जब मानव को कोई दुख पहुँचता

الدُّنْيَا وَالْآٰلِآءِ الْبَٰرِيَةِ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آٰلِهَآئِهِمْ غَافِلُونَ ۝

اُولٰٓئِكَ مَا لَهُمْ اَللَّآلِہِآ مَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ۝

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ یَهْدِیْہُمْ رَبُّہُمْ بِاٰیٰتِہِمْ خَیْرًا مِّنْ غَیْرِہِمْ اَلَا تَرٰۤی جَنَّتِ النَّعِیْمُ ۝

دَعُوْهُمْ فِیْہَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَنَحْمَدُکَ فِیْہَا سَلٰمٌ وَّاٰخِرُ دَعْوٰہُمْ اَنْ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝

وَلَوْ یَعِیْلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَآءُ بِمَا کَفَرُوْا بِالْغَیْرِ لَفُتِنَ بِہِمْ اَجَلُہُمْ فَنَدَّرُ الَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ لِقَاَنَا فِیْ طٰغٰیٰتِہِمْ یَسْمٰہُوْنَ ۝

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنَّةٍ

1 आयत का अर्थ यह है कि अब्बाह के दुष्कर्मों का दण्ड देने का नियम यह नहीं है कि तुरन्त संसार ही में उस का कुफल दे दिया जाये। परन्तु दुष्कर्मों को यहाँ अवसर दिया जाता है अन्यथा उन का समय कभी का पूरा हो चुका होता।

है, तो हमें लेटे या बैठे या खड़े हो कर पुकारता है। फिर जब हम उस का दुख दूर कर देते हैं, तो ऐसे चल देता है जैसे कभी हम को किसी दुख के समय पुकारा ही न हो। इसी प्रकार उल्लंघनकारियों के लिये उन के कर्तूत शोभित बना दिये गये हैं।

13. और तुम से पहले हम कई जातियों को ध्वस्त कर चुके हैं, जब उन्होंने ने अत्याचार किये, और उन के पास उन के रसूल खुले तर्क (प्रमाण) लाये, परन्तु वह ऐसे नहीं थे कि: ईमान लाते, इसी प्रकार हम अपराधियों को बदला देते हैं।

14. फिर हम ने धरती में उन के पश्चात् तुम्हें उन का स्थान दिया, ताकि हम देखें कि: तुम्हारे कर्म कैसे होते हैं?

15. और (हे नबी!) जब हमारी खुली आयतें उन्हें सुनायी जाती हैं तो जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते वे कहते हैं कि इस के सिवा कोई दूसरा कुर्आन लाओ, या इस में परिवर्तन कर दो। उन से कह दो कि मेरे बस में यह नहीं है कि अपनी ओर से इस में परिवर्तन कर दूँ। मैं तो बस उस प्रकाशना का अनुयायी हूँ जो मेरी ओर की जाती है। मैं यदि अपने पालनहार की अबैजा करूँ तो मैं एक घोर दिन की यातना से डरता हूँ।

16. आप कह दें: यदि अब्बाह चाहता तो मैं कुर्आन तुम्हें सुनाता ही नहीं, और

أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ثَلَاثًا كَشَفْنَا عَنْهُ صُورَهُ
مَرَّكَانَ ثُمَّ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضَرْمَتِهِ كَذَلِكَ
رُبُّنَا لِلْمُشْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونُ مِن قَبْلِكَ لَمَّا ظَلَمُوا
وَجَاءَهُمْ رَسُولُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ
لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

وَإِذَا اشْتُلَ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بِكَيْدٍ قَالَ الَّذِينَ
لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا انْتِهِ بِمُرٍّ إِلَىٰ غَيْرِ هَذَا أَوْ
بَدَلَهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَن أَبْدِلَهُ مِنْ وَّلَقَائِي
فَقُيِّمُوا إِن كُنتُمْ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ إِلَيَّ إِنِّي أَخَافُ
إِن عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا كَلَفُوكُمُ عَلَيْهِمْ وَلَا أَذْرَكُكُمْ

न वह तुम्हें इस से सूचित करता। फिर मैं इस से पहले तुम्हारे बीच एक आयु व्यतीत कर चुका हूँ। तो क्या तुम समझ बूझ नहीं रखते हो?^[1]

17. फिर उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाये, अथवा उस की आयतों को मिथ्या कहे? वास्तव में ऐसे अपराधी सफल नहीं होते।

18. और वह अल्लाह के सिवा उस की इबादत (बंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ। और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं आप कहिये: क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना दे रहे हो जिस के होने को न वह आकाशों में जानता है, और न धरती में? वह पवित्र और उच्च है उस शिर्क (मिश्रणवाद) से जो वे कर रहे हैं।

19. लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे, फिर उन्होंने ने विभेद^[2] किया। और

بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ فِتْرَتُهُمْ مِنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

مَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الْمُجْرِمُونَ ۝

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَنْصُرُهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ كُلُّ أَتَّخِذُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُونَ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ مُبْتَدَأَ وَتَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً

1. आयत का भावार्थ यह है कि यदि तुम एक इसी बात पर विचार करो कि मैं तुम्हारे लिये कोई अपरिचित अज्ञात नहीं हूँ। मैं तुम्हीं में से हूँ। यही मक्का में पैदा हुआ, और चालीस वर्ष की आयु तुम्हारे बीच व्यतीत की। मेरा पूरा जीवन चरित्र तुम्हारे सामने है, इस अवधि में तुम ने सत्य और अमानत के विरुद्ध मुझ में कोई बात नहीं देखी तो अब चालीस वर्ष के पश्चात यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह पर यह मिथ्या आरोप लगा दूँ कि उस ने यह कुर्आन मुझ पर उतारा है? मेरा पवित्र जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण है कि यह कुर्आन अल्लाह की वाणी है। और मैं उस का नबी हूँ। और उसी की अनुमति से यह कुर्आन तुम्हें सुना रहा हूँ।

2. अतः कुछ शिर्क करने और देवी देवताओं को पूजने लगे। (इब्ने कसीर)

यदि आप के पालनहार की ओर से पहले ही से एक बात निश्चित न^[1] होती, तो उन के बीच उस का (संसार ही में) निर्णय कर दिया जाता जिस में वह विभेद कर रहे हैं।

20. और वह यह भी कहते हैं कि आप पर कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा गया?^[2] आप कह दें कि परोक्ष की बातें तो अल्लाह के अधिकार में हैं। अतः तुम प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।^[3]

21. और जब हम, लोगों को दुःख पहुँचने के पश्चात् दया (का स्वाद) चखाते हैं तो तुरन्त हमारी आयतों (निशानियों) के बारे में षड्यंत्र रचने लगते हैं। आप कह दें कि अल्लाह का उपाय अधिक तीव्र है। हमारे फरिश्ते तुम्हारी चालें लिख रहे हैं।

22. वही है जो जल तथा धूल में तुम्हें फिराता है। फिर जब तुम नौकाओं में होते हो, और उन को ले कर अनुकूल वायु के कारण चलती है, और वह उस से प्रसन्न होते हैं, तो अकस्मात् प्रचण्ड वायु का झोंका आ जाता है, और प्रत्येक स्थान से उन्हें लहरें मारने लगती हैं, और समझते

فَاَخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُتِنَ بَيْنَهُمْ فَيُضِلُّوهُ وَيَضِلُّونَ ﴿٢٠﴾

وَيَقُولُونَ لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَيْنَا آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوا ۖ اِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿٢١﴾

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ ضَرَاءَ مَا كَسَبُوا وَكَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٢٢﴾

هُوَ الَّذِي يَنْفِرُ كُرْسِيُّهُ فِي السَّحَابِ وَيُنْزِلُ السَّمَاءَ مَاءً فَالْكُلْبُ يَحْمِلُ زَيْجَ طَائِفَةٍ وَيَقْرَحُونَ بِهَا جَاءَتْهُمْ رَعِيَّةٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمُ اجْتَبِطُوا فَنَادَوْا اللَّهُ تَحْلِسْ لَهُ الَّذِينَ دَلُّوا أَنْجِيَّتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٣﴾

1 कि संसार में लोगों को कर्म करने का अवसर दिया जाये।

2 जैसे कि सफा पर्वत सोने का हो जाता। अथवा मक्का के पर्वतों के स्थान पर उद्यान हो जाते। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् अल्लाह के आदेश की।

हैं कि उन्हें घेर लिया गया तो अल्लाह से उस के लिये धर्म को विशुद्ध कर के¹ प्रार्थना करते हैं कि यदि तू ने हमें बचा लिया तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ बन कर रहेंगे।

23. फिर जब उन्हें बचा लेता है तो अकस्मात् धरती में अवैध विद्रोह करने लगते हैं। हे लोगो! तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे ही विरुद्ध पड़ रहा है। यह संसारिक जीवन के कुछ लाभ² हैं। फिर तुम्हें हमारी ओर फिर कर आना है। तब हम तुम्हें बता देंगे कि तुम क्या कर रहे थे?

24. संसारिक जीवन तो ऐसा ही है जैसे हम ने आकाश से जल बरसाया, जिस से धरती की उपज घनी हो गयी, जिस में से लोग और पशु खाते हैं। फिर जब वह समय आया कि धरती ने अपनी शोभा पूरी कर ली और सुसज्जित हो गयी, और उस के स्वामी ने समझा कि वह उस से लाभांवित होने पर सामर्थ्य रखते हैं, तो अकस्मात् रात या दिन में हमारा आदेश आ गया, और हम ने उसे इस प्रकार काट कर रख दिया,

فَلَمَّا أَنبَأَهُمُ إِذْ هُمْ يَبْعُونَ فِي الْأَرْضِ بِعَذْرِ الْحَقِّ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا بَعَثْنَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ مَثَلَهُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أُنْزِلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ
فَلْيَنْتَظِرِ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ وَمِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ
وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَضُرَّتْ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قُلُوبُونَ عَلَيْهَا إِنَّمَا أَمْرُنَا
لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ
تَغْنِ يَا أَيُّهَا النَّاسُ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

1 और सब देवी देवताओं को भूल जाते हैं।

2 भावार्थ यह है कि जब तक संसारिक जीवन के संसाधन का कोई सहारा होता है तो लोग अल्लाह को भुले रहते हैं। और जब यह सहारा नहीं होता तो उन का अन्तर्ज्ञान उभरता है। और वह अल्लाह को पुकारने लगते हैं। और जब दुख दूर हो जाता है तो फिर वही दशा हो जाती है। इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सदा सुख दुख में उसे याद करते रहो।

जैसे कि कल वहाँ थी^[1] ही नहीं। इसी प्रकार हम आयतों का वर्णन खोल-खोल कर, करते हैं, ताकि लोग मनन चिंतन करें।

25. और अल्लाह तुम्हें शान्ति के घर (स्वर्ग) की ओर बुला रहा है। और जिसे चाहता है सीधी डगर दर्शा देता है।

26. जिन लोगों ने भलाई की, उन के लिये भलाई ही होगी, और उस से भी अधिक^[2]।

27. और जिन लोगों ने बुराईयाँ की तो बुराई का बदला उसी जैसा होगा। तथा उन पर अपमान छाया होगा। और उन के लिये अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। उन के मुखों पर ऐसे कालिमा छायी होगी जैसे अंधेरी रात के काले पर्दे उन पर पड़े हुये हों। वही नारकी होंगे। और वही उस में सदावासी होंगे।

28. जिस दिन हम उन सब को एकत्र करेंगे फिर उन से कहेंगे जिन्होंने साझी बनाया है, कि अपने स्थान पर रुके रहो, और तुम्हारे (बनाये हुये) साझी भी। फिर हम उन के बीच अलगाव कर देंगे। और उन के साझी कहेंगे: तुम तो हमारी बंदना ही नहीं करते थे।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ يَمْثِلُهَا ۖ وَتَرَهُمْ فِيهَا مَأَلَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَذَابٍ كَانَتْ أَغْشِيَتٌ ۖ وَجُوهُهُمْ قُطَعًا مِنَ النَّارِ ۖ مُظْلِمًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ ۖ فَتَتْلَأُنَا بِهِنَّ هُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِلَّا نَاعِبُونَ

1 अर्थात् संसारिक आनंद और सुख वर्षा की उपज के समान सामयिक और अस्थायी है।

2 अधिकांश भाष्यकारों ने, «अधिक» का भावार्थ: "आखिरत में अल्लाह का दर्शन" और «भलाई» का: "स्वर्ग" किया है। (इब्ने कसीर)

29. हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य बस है, कि तुम्हारी वंदना से हम असूचित थे।

فَكَفَى بِاللّٰهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ كُنَّا لَعَنَ عِبَادِكُمْ اَغْفِيْلَيْنِ ۝

30. वहीं प्रत्येक व्यक्ति उसे परख लेगा जो पहले किया है। और वह (निर्णय के लिये) अपने सत्य स्वामी की ओर फेर दिये जायेंगे। और जो मिथ्या बातें बना रहे थे उन से खो जायेंगी।

هٰذَا لِكَيْ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّا اَسْلَفَتْ وَرُدُّوْا اِلَى اللّٰهِ مُوَلِّهٖمُ الْحَقَّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝

31. (हे नबी!) उन से पूछें कि तुम्हें कौन आकाश तथा धरती^[1] से जीविका प्रदान करता है? सुनने तथा देखने की शक्तियाँ किस के अधिकार में हैं? कौन निर्जीव से जीव को तथा जीव को निर्जीव से निकालता है? वह कौन है जो विश्व की व्यवस्था कर रहा है? वह कह देंगे कि अल्लाह^[2] फिर कहो कि क्या तुम (सत्य के विरोध से) डरते नहीं हो?

كُلٌّ مِّنْ رِّزْقِكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْأَمْرَ فَيَقُولُوْنَ اللّٰهُ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝

32. तो वही अल्लाह तुम्हारा सत्य पालनहार है, फिर सत्य के पश्चात कुपथ (असत्य) के सिवा क्या रह गया? फिर तुम किधर फिराये जा रहे हो?

فَذَلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلٰةُ ۝
فَاَنْتُمْ تُصْرَفُوْنَ ۝

33. इस प्रकार आप के पालनहार की बातें अवज्ञाकारियों पर सत्य सिद्ध हो गयीं कि वह ईमान नहीं लायेंगे।

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوا اَللّٰهُمَّ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

34. आप उन से कहिये: क्या तुम्हारे साक्षियों में कोई है, जो उत्पत्ति का

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مِّنْ يَّبْدِئُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ

1 आकाश की वर्षा तथा धरती की उपज से।

2 जब यह स्वीकार करते हो कि विश्व की व्यवस्था अल्लाह ही कर रहा है तो पूजा अराधना भी उसी की होनी चाहिये।

आरंभ करता फिर उसे दुहराता हो?
आप कह दें अल्लाह उत्पत्ति का आरंभ
करता, फिर उसे दुहराता है। फिर
तुम कहाँ बहके जा रहे हो?

35. आप कहिये: क्या तुम्हारे साझियों में
कोई संमार्ग दर्शाता है? तो क्या जो
संमार्ग दर्शाता हो वह अधिक योग्य
है कि उस का अनुपालन किया जाये
अथवा वह जो स्वयं संमार्ग पर न
हो, परन्तु यह कि उसे संमार्ग दर्शा
दिया जाये? तो तुम्हें क्या हो गया है,
तुम कैसा निर्णय कर रहे हो?

36. और उन (मिश्रणवादियों) में
अधिकांश अनुमान का अनुसरण
करते हैं। और सत्य को जानने में
अनुमान कुछ काम नहीं दे सकता।
वास्तव में अल्लाह जो कुछ वे कर रहे
हैं भली भाँति जानता है।

37. और यह कुर्आन ऐसा नहीं है कि अल्लाह
के सिवा अपने मन से बना लिया
जाये, परन्तु उन की पुष्टि है जो इस
से पहले (पुस्तकों) उतरी हैं। और यह
पुस्तक (कुर्आन) विवरण¹ है। इस में
कोई संदेह नहीं कि यह सम्पूर्ण विश्व के
पालनहार की ओर से है।

38. क्या वह कहते हैं कि इस (कुर्आन)
को उस (नबी) ने स्वयं बना लिया
है? आप कह दें: इसी के समान एक
सूरह ला दो। और अल्लाह के सिवा

قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَلَيْ تَتَذَكَّرُونَ ﴿١٠﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شَرِكِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ
يَهْدِي لِلْحَقِّ أَكْفَنُ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ
يُتَّبَعَ أَمْ مَنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يَهْدَىٰ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ
تَحْكُمُونَ ﴿٣٥﴾

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ
الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَلَكِنْ تَصْدِيقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ
الْكِتَابِ لَأَرِيبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ
وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

1 अर्थात् अल्लाह की पुस्तकों में जो शिक्षा दी गयी है उस का कुर्आन में सविस्तार
वर्णन है।

जिसे (अपनी सहायता के लिये)
बुला सकते हो बुला लो, यदि तुम
सत्यवादी हो।

39. बल्कि उन्होंने ने उस (कुरआन) को
झुठला दिया जो उन के ज्ञान के
घेरे में नहीं^[1] आया, और न उस
का परिणाम उन के सामने आया।
इसी प्रकार उन्होंने भी झुठलाया था,
जो इन से पहले थे। तो देखो कि
अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ?

40. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस
(कुरआन) पर ईमान लाते हैं और
कुछ ईमान नहीं लाते। और आप का
पालनहार उपद्रवकारियों को अधिक
जानता है।

41. और यदि वे आप को झुठलायें तो
आप कह दें: मेरे लिये मेरा कर्म है
और तुम्हारे लिये तुम्हारा कर्म। तुम
उस से निर्दोष हो जो मैं करता हूँ।
तथा मैं उस से निर्दोष हूँ जो तुम
करते हो।

42. इन में से कुछ लोग आप की ओर
कान लगाते हैं। तो क्या आप बहरों^[2]
को सुना सकते हैं, यद्यपि वह कुछ
भी न समझ सकते हों?

43. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो आप
की ओर तकते हैं तो क्या आप अन्धे
को राह दिखा देंगे? यद्यपि उन्हें कुछ

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ
تَأْوِيلُهُ لَكُذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ
وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝

وَإِنْ كَذَّبُوا فَقُلْ أُولَئِكَ عَمَلُكُمْ أَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ وَمِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بِرَبِّي وَثِقٌ
تَعْمَلُونَ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَسْمِعُ
الْأَعْمَى وَلَوْ كَانَ إِلَّا نَجْمٌ ۝

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْى
وَلَوْ كَانَ إِلَّا نَجْمٌ ۝

1 अर्थात् बिना सोचे समझे इसे झुठलाने के लिये तैयार हो गये।

2 अर्थात् जो दिल और अन्तर्ज्ञान के बहरे हैं।

सूझता न हो?

44. वास्तव में अल्लाह, लोगों पर अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं।^[1]

45. और जिस दिन अल्लाह उन्हें एकत्र करेगा तो उन्हें लगेगा कि वह (संसार में) दिन के केवल कुछ क्षण रहे। वह आपस में परिचित होंगे। वास्तव में वह क्षतिग्रस्त हो गये जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठला दिया, और वह सीधी डगर पाने वाले न हुये।

46. और यदि हम आप को उस (यातना) में से कुछ दिखा दें जिस का वचन उन्हें दे रहे हैं अथवा (उस से पहले) आप का समय पूरा कर दें तो भी उन्हें हमारे पास ही फिर कर आना है। फिर अल्लाह उस पर साक्षी है जो वे कर रहे हैं।

47. और प्रत्येक समुदाय के लिये एक रसूल है। फिर जब उन का रसूल आ गया तो (हमारा नियम यह है कि) उन के बीच न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाता है, और उन पर अत्याचार नहीं किया जाता।

48. और वह कहते हैं कि हम पर यातना का वचन कब पूरा होगा, यदि तुम सत्यवादी हो?

49. आप कह दें कि मैं स्वयं अपने लाभ

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ كَانُ ثُمَّ يُنْفِثُوهُنَّ إِلَى سَاعَةِ مِنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

وَأَمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَتَوَقَّعَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قَضِيَ بَيْنَهُمُ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ لِذِكْرِ اللَّهِ

1 भावार्थ यह है कि लोग अल्लाह की दी हुयी समझ-बूझ से काम न ले कर सत्य और वास्तविकता के ज्ञान की अर्हता खो देते हैं।

तथा हानि का अधिकार नहीं रखता। वही होता है जो अल्लाह चाहता है। प्रत्येक समुदाय का एक समय निर्धारित है। तथा जब उन का समय आ जायेगा तो न एक क्षण पीछे रह सकते हैं, और न आगे बढ़ सकते हैं।

50. (हे नबी!) कह दो कि तुम बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात अथवा दिन में आ जाये (तो तुम क्या कर सकते हो?) ऐसी क्या बात है कि अपराधि उस के लिये जल्दी मचा रहे हैं?

51. क्या जब वह आ जायेगी उस समय तुम उसे मानोगे? अब जब कि उस के शीघ्र आने की मांग कर रहे थे।

52. फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि सदा की यातना चखो। तुम्हें उसी का प्रतिकार (बदला) दिया जा रहा है जो तुम (संसार में) कमा रहे थे।

53. और वह आप से पूछते हैं कि क्या यह बात वास्तव में सत्य है? आप कह दें कि मेरे पालनहार की शपथ! यह वास्तव में सत्य है। और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते।

54. और यदि प्रत्येक व्यक्ति के पास जिस ने अत्याचार किया है, जो कुछ धरती में है सब आ जाये, तो वह अवश्य उसे अर्थदण्ड के रूप में देने को तय्यार हो जायेगा। और जब वह उस यातना को देखेंगे तो दिल ही दिल में पछतायेंगे। और उन के बीच न्याय के

لَیْکُنْ اَمْرًا لَّعَلْ اِذَا جَاءَ اَجَلُهُمْ فَلَا یَسْتَاخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا یَسْتَعِیْذُوْنَ ۝

قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَسْأَلُکُمْ عَدَاوَةً بَیْنَا وَاَنْتُمْ اَوْ هَآءَا مَا اِذَا یَسْتَعِیْذُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝

اَلَمْ اَکُنْ اِذَا مَا وُقِعَ اَمْتُمْ بِهٖ النَّاسُ وَقَدْ کُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝

تَعْرِیْنَ اِلَیْهِمْ یَنْظُرُوْنَ ۝ اَذُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ۝ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَیْهَا کُنْتُمْ تُکْسِبُوْنَ ۝

وَسْتَکْفِرُوْنَ لَکَ اَحْسَ ۝ اَوْ قُلْ اِیَّ وَرَیْتُ لَکَ اَحْسَ ۝ وَاَلَا اَنْتُمْ بِمُفْجِرِیْنَ ۝

وَلَوْ اَنَّ اِلَیْکَ نَفْسٌ ظَلَمَتْ مَا فِی الْاَرْضِ لَا فَعَلَتْ بِهٖ ۝ وَاَسْأَلُ اللّٰهَ لَکُمَا رَاَوْ الْعَذَابَ وَفُصِّلَ بَیْنَهُمْ بِالْاَسْبَاطِ ۝ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ۝

साथ निर्णय कर दिया जायेगा, और
उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

55. सुनो! अल्लाह ही का है वह जो कुछ
आकाशों तथा धरती में है। सुनो!
उस का बचन सत्य है। परन्तु
अधिकतर लोग इसे नहीं जानते।

الْأَيْنَ يُلْهِمُهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ الْأَيْنَ وَعَدَ
اللَّهُ حَقًّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٥﴾

56. वही जीवन देता तथा वही मारता है।
और उसी की ओर तुम सब लौटाये
जाओगे।^[1]

هُوَ الْحَيُّ وَيُمِيتُ وَالْبَیْهُ تُرْجَعُونَ ﴿٥٦﴾

57. हे लोगो!^[2] तुम्हारे पास तुम्हारे
पालनहार की ओर से शिक्षा
(कुर्आन) आ गयी है, जो अन्तरात्मा
के सब रोगों का उपचार (स्वास्थ्य
कर) तथा मार्ग दर्शन और दया है
उन के लिये जो विश्वास रखते हों।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تِلْكَ مُوعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَبَيِّنَاتٌ
لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهَدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

58. आप कह दें कि यह (कुर्आन) अल्लाह
का अनुग्रह और उस की दया है।
अतः लोगों को इस से प्रसन्न हो जाना
चाहिये। और यह उस (धन-धान्य) से
उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

59. (हे नबी!) उन से कहो: क्या तुम ने
इस पर विचार किया है कि अल्लाह
ने तुम्हारे लिये जो जीविका उतारी
है, तुम ने उस में से कुछ को हराम
(अवैध) बना दिया है, और कुछ को

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنَّا نَزَّلْنَا اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ
حَرَامًا وَحَلَلًا قُلْ اللَّهُ أَزْوَنُ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ
تَفْتَرُونَ ﴿٥٩﴾

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 इस में कुर्आन के चार गुणों का वर्णन किया गया है:

1. यह सत्य शिक्षा है।
2. द्विधा के सभी रोगों के लिये स्वास्थ्यकर है।
3. संमार्ग दर्शाता है।
4. ईमान वालों के लिये दया का उपदेश है।

हलाल (वैध)। तो कहो कि क्या अल्लाह ने तुम को इस की अनुमति दी है? अथवा तुम अल्लाह पर आरोप लगा रहे^[1] हो?

60. और जो लोग अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं उन्होंने ने प्रलय के दिन को क्या समझ रखा है? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये दयाशील^[2] है। परन्तु उन में अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।

61. (हे नबी!) आप जिस दशा में हों, और कुर्आन में से जो कुछ भी सुनाते हों, तथा तुम लोग भी कोई कर्म नहीं करते हो, परन्तु हम तुम्हें देखते रहते हैं, जब तुम उसे करते हो। और आप के पालनहार से धरती में कण भर भी कोई चीज़ छुपी नहीं रहती और न आकाश में न इस से कोई छोटी न बड़ी, परन्तु वह खुली पुस्तक में अंकित है।

62. सुनो! जो अल्लाह के मित्र है, न उन्हें कोई भय होगा, और न वह उदासीन होंगे।

63. जो ईमान लाये, तथा अल्लाह से डरते रहे।

64. उन्हीं के लिये संसारिक जीवन में

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفْعَلُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

إِلَّا إِنْ أَوْلِيَاهُ اللَّهُ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۝

1 आयत का भावार्थ यह है कि किसी चीज़ को वर्जित करने का अधिकार केवल अल्लाह को है। अपने विचार से किसी चीज़ को अवैध करना अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगाना है।

2 इसी लिये प्रलय तक का अवसर दिया है।

शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है।

65. तथा (हे नबी!) आप को उन (काफ़िरों) की बात उदासीन न करो। वास्तव में सभी प्रभुत्व अल्लाह ही के लिये है। और वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

66. सुनो! वास्तव में अल्लाह ही के अधिकार में है जो आकाशों में तथा धरती में है। और जो अल्लाह के सिवा दूसरे साक्षियों को पुकारते हैं वह केवल अनुमान के पीछे लगे हुये हैं। और वे केवल आँकलन कर रहे हैं।

67. वही है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई है ताकि उस में सुख पाओ। और दिन बनाया, ताकि उस के प्रकाश में देखो। निःसंदेह इस में (अल्लाह के व्यवस्थापक होने की) उन के लिये बड़ी निशानियाँ हैं जो (सत्य को) सुनते हों।

68. और उन्होंने ने कह दिया कि अल्लाह ने कोई पुत्र बना लिया है। वह पवित्र है। वह निस्पृह है। वही स्वामी है उस का जो आकाशों में तथा धरती में है। क्या तुम्हारे पास इस का कोई प्रमाण है? क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात कह रहे हो जिस का तुम ज्ञान नहीं रखते?

69. (हे नबी!) आप कह दें जो अल्लाह पर मिथ्या बातें बनाते हैं वह सफल नहीं होंगे।

لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْرُ الْعَظِيمُ ۝

وَلَا يَخْرُجُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَشْعُرُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنْ يَسْتَعِزُّونَ إِلَّا الظَّنُّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهَا وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بِهَذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝

70. उन के लिये संसार ही का कुछ आनन्द है, फिर हमारी ओर ही आना है। फिर हम उन्हें उन के कुफ़्र (अविश्वास) करते रहने के कारण घोर यातना चखायेंगे।

71. आप उन्हें नूह की कथा सुनायें, जब उस ने अपनी जाति से कहा: हे मेरी जाति! यदि मेरा तुम्हारे बीच रहना और तुम्हें अल्लाह की आयतों (निशानियों) द्वारा मेरा शिक्षा देना तुम पर भारी हो तो अल्लाह ही पर मैं ने भरोसा किया है। तुम मेरे विरुद्ध जो करना चाहो उसे निश्चित कर लो और अपने साझियों (देवी-देवताओं) को भी बुला लो। फिर तुम्हारी योजना तुम पर तनिक भी छुपी न रह जाये, फिर जो करना हो उसे कर जाओ और मुझे कोई अवसर न दो।

72. फिर यदि तुम ने मुख फेरा तो मैं ने तुम से किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं की है। मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के सिवा किसी के पास नहीं है। और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में रहूँ।

73. फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया, तो हम ने उसे और जो नाव में उस के साथ (सवार) थे बचा लिया और उन्हीं को उन का उत्तराधिकारी बना दिया। और उन्हें जलमग्न कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठला दिया। अतः देख लो कि उन का परिणाम क्या हुआ जो सचेत किये गये थे।

مَتَاعُ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُعَذِّبُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ۝

وَأَنذَرْنَاهُمْ نَارَ تَوْحِشٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يُقُولُونَ
كَانَ كِبْرُ عَلِيٍّ مَقَامِي وَتَذَكَّرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَّ
اللَّهُ تَوَكُّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ
لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غِنَةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ
وَلَا تُنْظِرُونِ ۝

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاءَ لَكُم مِّنْ أَجِيرٍ إِنِ أَجْرِي إِلَّا
عَلَى اللَّهِ وَأَمْرُكَ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَتَبَيَّنْهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلَيْنِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلْقًا وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

74. फिर हम ने उस (नूह) के पश्चात बहुत से रसूलों को उन की जाति के पास भेजा, वह उन के पास खुली निशानियाँ (तर्क) लाये तो वह ऐसे न थे कि जिसे पहले झुठला दिया था उस पर ईमान लाते, इसी प्रकार हम उल्लंघनकारियों के दिलों पर मुहर¹ लगा देते हैं।
75. फिर हम ने उन के पश्चात मुसा और हारून को फिरऔन और उस के प्रमुखों के पास भेजा। तो उन्होंने अभिमान किया। और वह थे ही अपराधीगण।
76. फिर जब उन के पास हमारी ओर से सत्य आ गया तो उन्होंने ने कह दिया कि वास्तव में यह तो खुला जादू है।
77. मूसा ने कहा: क्या तुम सत्य को जब तुम्हारे पास आ गया तो जादू कहने लगे? क्या यह जादू है? जब कि जादूगर (तांत्रिक) सफल नहीं होते।
78. उन्होंने ने कहा: क्या तुम इसलिये हमारे पास आये हो ताकि हमें उस (प्रथा) से फेर दो, जिस पर हम ने अपने पूर्वजों को पाया है। और देश (मिस्र) में तुम दोनों की महिमा स्थापित हो जाये? हम तुम दोनों का विश्वास करने वाले नहीं हैं।
79. और फिरऔन ने कहा: (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं उन्हें मेरे पास लाओ।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا ۖ فَكَانُوا يُسْتَكْبِرُونَ ۚ فَكَانُوا لِيَوْمِهِمْ مِنَ الْمُسْتَضَرِّينَ ۝

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا سِحْرٌ مُّؤْتَمِرٌ ۝

قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۚ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا لِلْحَقِّ كَافِرِينَ ۝

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَكَ وَآبَاءَكَ ۚ مَا أَكُنَّا لِخَدِّكَ مُخْلِعينَ ۚ وَأَنْتَ بِآيَاتِنَا كَافِرٌ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ أَتَدْعُونِي إِلَىٰ عِبَادَةِ اللَّهِ عَالِمِ الْغُيُوبِ ۚ

1 अर्थात् जो बिना सोचे समझे सत्य को नकार देते हैं उन के सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो जाती है।

80. फिर जब जादूगर आ गये तो मूसा ने कहा: जो कुछ तुम्हें फेंकना है उसे फेंक दो।

81. और जब उन्होंने फेंक दिया तो मूसा ने कहा: तुम जो कुछ लाये हो वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता।

82. और अल्लाह सत्य को अपने आदेशों के अनुसार सत्य कर दिखायेगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।

83. तो मूसा पर उस की जाति के कुछ नवयुवकों के सिवा कोई ईमान नहीं लाया। फिरऔन और अपने प्रमुखों के भय से कि उन्हें किसी यातना में न डाल दे। और वास्तव में फिरऔन का धरती में बड़ा प्रभुत्व था, और वह वस्तुतः उल्लंघनकारियों में था।

84. और मूसा ने (अपनी जाति बनी इस्राईल से) कहा: हे मेरी जाति! जब तुम अल्लाह पर ईमान लाये हो तो उसी पर निर्भर रहो, यदि तुम आज्ञाकारी हो।

85. तो उन्होंने ने कहा: हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हे हमारे पालनहार! हमें अत्याचारियों के लिये परीक्षा का साधन न बना।

86. और अपनी दया से हमें काफ़िरों से बचा ले।

87. और हम ने मूसा तथा उस के भाई

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوَامُ أَنْتُمْ مُتَّفَقُونَ ۝

فَلَمَّا الْوَعَا قَالَ مُوسَى مَا جِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ۝

وَيُحْيِي اللَّهُ الْحَيَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ۝

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنْ فِرْعَوْنُ لَعَالِي فِي الْأَرْضِ وَإِنَّ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَقَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْكُمْ تَوَكَّلُوا إِنَّ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ۝

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوِّا الْقَوْمَ كَمَا

(हारून) की ओर प्रकाशना भेजी, कि अपनी जाति के लिये मिस्र में कुछ घर बनाओ। और अपने घरों को क़िब्ला¹ बना लो। तथा नमाज़ की स्थापना करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दो।

88. और मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! तू ने फिरऔन और उस के प्रमुखों को संसारिक जीवन में शोभा तथा धन-धान्य प्रदान किया है। तो मेरे पालनहार! क्या इस लिये कि वह तेरी राह से विचलित करते रहें? हे मेरे पालनहार! उन के धनों को निरस्त कर दे, और उन के दिल कड़े कर दे कि वह ईमान न लायें जब तक दुःखदायी यातना न देख लें।

89. अल्लाह ने कहा: तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी। तो तुम दोनों अडिग रहो, और उन की राह का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।

90. और हम ने बनी इस्राईल को सागर पार करा दिया तो फिरऔन और उस की सेना ने उन का पीछा किया, अत्याचार तथा शत्रुता के ध्येय से। यहाँ तक कि जब वह जलमग्न होने लगा तो बोला: मैं ईमान ले आया, और मान लिया कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं है जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, और मैं आज्ञाकारियों में हूँ।

بَعْضَ يَوْمَاتِهِمْ لِتَجْعَلُوا يَوْمَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَئَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٩﴾

قَالَ قَدْ أُجِيبَتِ دَعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعِنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٠﴾

وَجُودْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُودًا بَغِيًّا وَعَدَّ وَاحْتِى إِذَا دَرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ امْنُتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو إِسْرَءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٠﴾

1 «क़िब्ला» उस दिशा को कहा जाता है जिस की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ी जाती है।

91. (अल्लाह ने कहा) अब? जब कि इस से पूर्व अवैज्ञा करता रहा, और उपद्रवियों में से था?

الَّذِينَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾

92. तो आज हम तेरे शव को बचा लेंगे ताकि तू उन के लिये जो तेरे पश्चात होंगे, एक (शिक्षाप्रद) निशानी^[1] बने। और वास्तव में बहुत से लोग हमारी निशानियों से अचेत रहते हैं।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِمَدَنِكَ لَتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً
وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ﴿٩٢﴾

93. और हम ने बनी इस्राईल को अच्छा निवास स्थान^[2] दिया, और स्वच्छ जीविका प्रदान की। फिर उन्होंने परस्पर विभेद उस समय किया जब उन के पास ज्ञान आ गया। निश्चय अल्लाह उन के बीच प्रलय के दिन उस का निर्णय कर देगा जिस में वह विभेद कर रहे थे।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبْوَءَ صَدِيقٍ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ قَمَا ائْتَمَرُوا حَتَّى
جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

94. फिर यदि आप को उस में कुछ संदेह^[3] हो, जो हम ने आप की ओर उतारा है तो उन से पूछ लें जो आप के पहले से पुस्तक (तौरात) पढ़ते हैं। आप के पास आप के पालनहार की ओर से सत्य आ गया है। अतः आप कदापि संदेह करने वालों में न हों।

وَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ
الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ
جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَ مِنَ الْمُتَنَبِّهِينَ ﴿٩٤﴾

95. और आप कदापि उन में से न हों जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठला

وَلَا تَكُونَ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ

1 बताया जाता है कि: 1898 ई० में इस फिरऔन का मम्मी किया हुआ शव मिल गया है जो काहिरा के बिचित्रालय में रखा हुआ है।

2 इस से अभिप्राय मिस्र और शाम के नगर हैं।

3 आयत में संबोधित नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किया गया है। परन्तु वास्तव में उन को संबोधित किया गया है जिन को कुछ संदेह था। यह अरबी की एक भाषा शैली है।

दिया, अन्यथा क्षतिग्रस्तों में हो जायेंगे।

96. (हे नबी!) जिन पर आप के पालनहार का आदेश सिद्ध हो गया है, वह ईमान नहीं लायेंगे।
97. यद्यपि उन के पास सभी निशानियाँ आ जायें, जब तक दुःखदायी यातना नहीं देख लेंगे।
98. फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि कोई बस्ती ईमान^[1] लाये फिर उस का ईमान उसे लाभ पहुँचाये, यूनस की जाति के सिवा, जब वह ईमान लाये तो हम ने उन से संसारिक जीवन में अपमानकारी यातना दूर कर^[2] दी, और उन्हें एक निश्चित अवधि तक लाभान्वित होने का अवसर दे दिया।
99. और यदि आप का पालनहार चाहता तो जो भी धरती में है सब ईमान ले आते तो क्या आप लोगों को बाध्य करेंगे यहाँ तक कि ईमान ले आयें?^[3]
100. किसी प्राणी के लिये यह संभव नहीं है कि अल्लाह की अनुमति^[4]

فَتَكُونُ مِنَ الْخَاسِرِينَ

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَبْرُزَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا آلِئِنَّهَا الْإِقْوَمَ
يُونُسَ لَنَبَأَ آمَنُوا كَسَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ الْخِزْيَ فِي
الْعَبْرَةِ الدُّنْيَا وَنَعْتَنَّهُمْ إِلَى جَيْنَ

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّ نَفْسٍ خَائِفَةً
أَفَأَنْتَ تَكْفُرُ النَّاسَ حَتَّى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ

وَمَا كَانَ لِلنَّفْسِ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَجْعَلُ

1 अर्थात् यातना का लक्षण देखने के पश्चात्।

2 यूनस अलैहिस्सलाम का युग ईसा मसीह से आठ सौ वर्ष पहले बताया जाता है। भाष्यकारों ने लिखा है कि वह यातना की सूचना दे कर अल्लाह की अनुमति के बिना अपने नगर नीनवा से निकल गये। इस लिये जब यातना के लक्षण नागरिकों ने देखे और अल्लाह से क्षमायाचना करने लगे तो उन से यातना दूर कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

3 इस आयत में यह बताया गया है कि सत्धर्म और ईमान ऐसा विषय है जिस में बल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। यह अनहोनी बात है कि किसी को बलपूर्वक मुसलमान बना लिया जाये। (देखिये: सूरह बकरा, आयत-256)।

4 अर्थात् उस के स्वभाविक नियम के अनुसार जो सोच-विचार से काम लेता है

के बिना ईमान लाये, और वह मलीनता उन पर डाल देता है, जो बुद्धि का प्रयोग नहीं करते।

101. (हे नबी!) उन से कहो कि उसे देखो जो आकाशों तथा धरती में है। और निशानियाँ तथा चेतावनियाँ उन्हें क्या लाभ दे सकती है जो ईमान (विश्वास) न रखते हों?

102. तो क्या वह इस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर वैसे ही (बुरे) दिन आयें जैसे उन से पहले लोगों पर आ चुके हैं? आप कहिये: फिर तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।

103. फिर हम अपने रसूलों को और जो ईमान लाये, बचा लेते हैं। इसी प्रकार हम ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि ईमान वालों को बचा लेते हैं।

104. आप कह दें: हे लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के बारे में किसी संदेह में हो तो मैं उस की इबादत (वन्दना) कभी नहीं करूँगा जिस की इबादत (वन्दना) अब्राह के सिवा तुम करते हो। परन्तु मैं उस अब्राह की इबादत (वन्दना) करता हूँ जो तुम्हें मौत देता है। और मुझे आदेश दिया गया है कि ईमान वालों में रहूँ।

105. और यह कि अपने मुख को धर्म के लिये सीधा रखो एकेश्वरवादी हो कर। और कदापि मिश्रणवादियों में न रहो।

الرَّحْمَنُ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

قُلْ أَنْظِرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُعْبُدُونَ
الْأَلِهَةِ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ

فَهُمْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ آيَاتِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ

ثُمَّ نَحْنُ رُسُلْنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ عَاجِبًا
عَلَيْكَ الشُّعْرُ الْمُؤْمِنِينَ

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي
فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ
أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَكَّلُكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا أُولَئِكَ لَمْ يَكُنْ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ

वही ईमान लाता है।

106. और अल्लाह के सिवा उसे न पुकारो जो आप को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि पहुँचा सकता है। फिर यदि आप ऐसा करेंगे तो अत्याचारियों में हो जायेंगे।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنْ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

107. और यदि अल्लाह आप को कोई दुख पहुँचाना चाहे तो उस के सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और यदि आप को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो कोई उस की भलाई को रोकने वाला नहीं। वह अपनी दया अपने भक्तों में से जिस पर चाहे करता है, तथा वह क्षमाशील दयावान् है।

وَلَنْ يُمْسِكَ اللَّهُ يَضُرَّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَلَنْ يُرِيدَ إِذْ يَفِئْوَ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٧﴾

108. (हे नबी!) कह दो कि हे लोगो! तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया^[1] है। अब जो सीधी डगर अपनाता हो तो उसी के लिये लाभदायक है। और जो कुपथ हो जाये तो उस का कुपथ उसी के लिये नाशकारी है। और मैं तुम पर अधिकारी नहीं हूँ^[2]।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَنْتَعِبُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٨﴾

109. आप उसी का अनुसरण करें जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है। और धैर्य से काम लें, यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे। और वह सर्वोत्तम निर्णैता है।

وَاسْمِعْ مَا يُنَادِي إِلَيْكَ وَأَصْبِرْ حَتَّى يَحْكُمَ اللَّهُ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿١٠٩﴾

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुआन ले कर आ गये हैं।

2 अर्थात् मेरा कर्तव्य यही है कि तुम्हें बलपूर्वक सीधी डगर पर कर दूँ।

सूरह हूद - 11

سُورَةُ هُودٍ

यह सूरह मक्की है, इस में 123 आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, रा। यह पुस्तक है जिस की आयतें सुदृढ़ की गयीं, फिर सविस्तार वर्णित की गयी है उस की ओर से जो तत्वज्ञ सर्वसूचित है।
2. कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो। वास्तव में, मैं उस की ओर से तुम को सचेत करने वाला तथा शुभसूचना देने वाला हूँ।
3. और यह कि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ। वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा। और प्रत्येक श्रेष्ठ को उस की श्रेष्ठता प्रदान करेगा। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।
4. अल्लाह ही की ओर तुम सब को पलटना है, और वह जो चाहे कर सकता है।
5. सुनो! यह लोग अपने सीनों को

الرَّكِيبِ أَحْكَمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْكَ حِكْمٌ
جَبِيْرٌ

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَمِنْتُكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ

وَأَن اسْتَغْفِرُوا ذُنُوبَكُمْ ثُمَّ تَوَلَّوْا إِلَيْهِ يَمْحَلْكُمْ مَتَاعًا
حَسَنًا إِنْ أَحْبَبَ مُسَمًّى وَ يُؤْتِ كُلَّ ذِي فَضْلٍ
فَضْلَهُ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ كَبِيرٍ

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

إِلَّا أَنَّهُمْ يَتَشَكَّوْنَ صُدُّهُمْ عَنْ طَاعَتِهِ أُمْنَةً الرَّحْمَنِ

मोड़ते हैं, ताकि उस^[1] से छुप जायें सुनो! जिस समय वे अपने कपड़ों से स्वयं को ढाँपते हैं, तब भी वह (अल्लाह) उन के छुपे को जानता है। तथा उन के खुले को भी। वास्तव में वह उसे भी भली भाँति जानने वाला^[2] है जो सीनों में (भेद) है।

6. और धरती में कोई चलने वाला नहीं है परन्तु उस की जीविका अल्लाह के ऊपर है। तथा वह उस के स्थायी स्थान तथा सौपने के स्थान को जानता है। सब कुछ एक खुली पुस्तक में अंकित है।^[3]

7. और वही है, जिस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति छः दिनों में की। उस समय उस का सिंहासन जल पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में किस का कर्म सब से उत्तम है। और (हे नबी!) यदि आप उन से कहें कि वास्तव में तुम सभी मरण के पश्चात् पुनः जीवित किये जाओगे तो जो काफिर हो गये अवश्य कह देंगे कि यह तो केवल खुला जादू है।

8. और यदि हम उन से यातना में किसी विशेष अवधि तक देर कर दें तो

يَسْتَفْتُونَ رِيًّا لَّهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسْتَفْتُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ
إِنَّكَ عَلَيْهِمْ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّمَا وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ يَبِينُ لَكُمْ الْآيَاتِ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَكِنْ كُنْتُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لِيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا إِسْحَارٌ مُبِينٌ ۝

وَلَكِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَى آتَةٍ مَعْدُودَةٍ

1 अर्थात् अल्लाह से।

2 आयत का भावार्थ यह है कि मिश्रणवादी अपने दिलों में कुफ़र को यह समझ कर छुपाते हैं कि अल्लाह उसे नहीं जानेगा। जब कि वह उन के खुले छुपे और उन के दिलों के भेदों तक को जानता है।

3 अर्थात्: अल्लाह, प्रत्येक व्यक्ति की जीवन मरण आदि की सब दशाओं से अवगत है।

अवश्य कहेंगे कि उसे क्या चीज़ रोक रही है? सुन लो! वह जिस दिन उन पर आ जायेगी तो उन से फिरेगी नहीं। और उन्हें वह (यातना) घेर लेगी जिस की वह हँसी उड़ा रहे थे।

9. और यदि हम मनुष्य को अपनी कुछ दया चखा दें, फिर उस को उस से छीन लें, तो हताशा कृतघ्न हो जाता है।

10. और यदि हम उसे सुख चखा दें, दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कहेगा कि मेरा सब दुःख दूर हो गया। वास्तव में वह प्रफुल्ल हो कर अकड़ने लगता है।^[1]

11. परन्तु जिन्होंने धैर्य धारण किया और सुकर्म किये, तो उन के लिये क्षमा और बड़ा प्रतिफल है।

12. तो (हे नबी!) संभवतः आप उस में कुछ को जो आप की ओर प्रकाशना की जा रही है, त्याग देने वाले हैं और इस के कारण आप का दिल सिकुड़ रहा है कि वह कहते हैं कि इस पर कोई कोष क्यों नहीं उतारा गया, या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों आया?? आप केवल सचेत करने वाले हैं। और अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ पर रक्षक है।

13. क्या वह कहते हैं कि उस ने इस (क़ुर्आन) को स्वयं बना लिया है?

لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِبُهُ إِلَيْنَا يَوْمَ يُنْفَخُ الْيَوْمُ ثَوْبُ يَوْمٍ مَّصْرُوفًا
عَنَّهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

وَلَيَنْ أَذَقْنَاهُ الْإِنْسَانَ مِرَارَ حَمَةٍ ثُمَّ نَرْغَبْنَاهَا
مِنْهُ إِنَّهُ لَكَنُفُوسٌ كَفُورٌ ۝

وَلَيَنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ مَرَاءٍ مَسْتَهْزِئَةٍ لَيَقُولُنَّ
ذَهَبَ النَّبِيُّاتُ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا نُوحِيَ إِلَيْكَ
وَضَائِقُ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا الْوَلَا نُزِّلَ
عَلَيْهِ كُتُبٌ وَجَاءَ مَعَهُ مَلَكَ إِنَّمَا أُتِيَ
نَذِيرٌ وَإِنَّهٗ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأَنذَرْتُكُمْ سُورًا مِّثْلَهُ

1. इस में मनुष्य की स्वभाविक दशा की ओर संकेत है।

आप कह दें कि इसी के समान दस सूरतें बना लाओ^[1], और अल्लाह के सिवा जिसे हो सके बुला लो, यदि तुम लोग सच्चे हो।

14. फिर यदि वह उत्तर न दें तो विश्वास कर लो कि उसे (कुर्आन को) अल्लाह के ज्ञान के साथ ही उतारा गया है। और यह कि कोई बंदनीय (पूज्य) नहीं है, परन्तु वही। तो क्या तुम मुस्लिम होते हो?

15. जो व्यक्ति संसारिक जीवन तथा उस की शोभा चाहता हो, हम उन के कर्मों का (फल) उसी में चुका देंगे। और उन के लिये (संसार में) कोई कमी नहीं की जायेगी।

16. यही वह लोग हैं जिन का परलोक में अग्नि के सिवा कोई भाग नहीं होगा। और उन्होंने जो कुछ किया वह व्यर्थ हो जायेगा, और वे जो कुछ कर रहे हैं असत्य सिद्ध होने वाला है।

17. तो क्या जो अपने पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण^[2] रखता हो, और

مُتَّبِعِينَ وَأَدْعُوا مِمَّنْ اسْتَعْظَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

فَإِلَّا يَنْتَحِبُوا إِلَيْكُمْ فَاَلْعَمَلُ الْأَوَّلُ إِنَّمَا أَنزَلَ اللَّهُ
وَأَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كَهَذَا أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّا لَوُفٍّ إِلَيْهِمْ
أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ
وَحَبِطَ مَا صَبَعُوا فِيهَا وَبِطِلَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝

أَفَمَنْ كَانَ عَلَى يَتِيمَةٍ مِنْ رَبِّهِ وَتِلْكَ شَاهِدٌ

1 अल्लाह का यह चैलन्ज है कि अगर तुम को शंका है कि यह कुर्आन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने स्वयं बना लिया है तो तुम इस जैसी दस सूरतें ही बना कर दिखा दो। और यह चैलन्ज प्रलय तक के लिये है। और कोई दस तो क्या इस जैसी एक सूरह भी नहीं ला सकता। (दिखिये: सूरह यूनस, आयत: 38, तथा सूरह बकरा, आयत: 23)

2 अर्थात् जो अपने अस्तित्व तथा विश्व की रचना और व्यवस्था पर विचार कर के यह जानता था कि इस का स्वामी तथा शासक केवल अल्लाह ही है, उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकता।

उस के साथ ही एक गवाह (साक्षी)^[1] भी उस की ओर से आ गया हो, और इस के पहले मूसा की पुस्तक मार्ग दर्शक तथा दया बन कर आ चुकी हो, ऐसे लोग तो इस(कुर्आन) पर ईमान रखते हैं। और संप्रदायों में से जो इसे अस्वीकार करेगा तो नरक ही उस का वचन स्थान है। अतः आप इस के बारे में किसी संदेह में न पड़ें। वास्तव में यह आप के पालनहार की ओर से सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

18. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे? वही लोग अपने पालनहार के समक्ष लाये जायेंगे, और साक्षी (फरिश्ते) कहेंगे कि इन्होंने ही अपने पालनहार पर झूठ बोले। सुनो! अत्याचारियों पर अल्लाह की धिक्कार है।
19. वही लोग अल्लाह की राह से रोक रहे हैं, और उसे टेढ़ा बनाना चाहते हैं। वही परलोक को न मानने वाले हैं।
20. वह लोग धरती में बिबश करने वाले नहीं थे। और न उन का अल्लाह के सिवा कोई सहायक था। उन के लिये दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे, न देख सकते थे।
21. उन्होंने ने ही स्वयं अपना विनाश कर लिया, और उन से वह बात खो गयी जो वे बना रहे थे।

مِنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبْتُ مُوسَى إِمَامًا وَرَحْمَةً أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ قَالُوا زَمُونَهُ فَلَا تُكْفِرُوا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَى رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلٰى رَبِّهِمْ أَلَا لعنة الله عَلَى الظَّالِمِينَ ۝

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝

أُولَئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ يُضْعِفُ لَهُمْ الْعَذَابَ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

1 अर्थात् नबी और कुर्आन।

22. यह आवश्यक है कि परलोक में यही सर्वाधिक विनाश में होंगे।
23. वास्तव में जो ईमान लाये, और सदाचार किये तथा अपने पालनहार की ओर आकर्षित हुये, वही स्वर्गीय हैं। और वह उस में सदैव रहेंगे।
24. दोनों समुदाय की दशा ऐसी है जैसे एक अन्धा और बहरा हो, और दूसरा देखने और सुनने वाला हो। तो क्या दोनों की दशा समान हो सकती है? क्या तुम (इस अन्तर को) नहीं समझते? ^[1]
25. और हम ने नूह को उस की जाति की ओर रसूल बना कर भेजा। उन्होंने कहा वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये खुले रूप से सावधान करने वाला हूँ।
26. कि इबादत (बंदना) केवल अल्लाह ही की करो। मैं तुम्हारे ऊपर दुख दायी दिन की यातना से डरता हूँ।
27. तो उन प्रमुखों ने जो उन की जाति में से काफिर हो गये, कहा: हम तो तुझे अपने ही जैसा मानव पुरुष देख रहे हैं। और हम देख रहे हैं कि तुम्हारा अनुसरण केवल वही लोग कर रहे हैं जो हम में नीचे हैं। वह भी बिना सोचे-समझे। और हम अपने ऊपर तुम्हारी कोई प्रधानता भी नहीं देखते, बल्कि हम तुम्हें झूठा समझते हैं।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخُسْرَاءُونَ ﴿٢٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبْتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٣﴾

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْصَّابِرِ وَالسَّمِيعِ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

أَنْ لَا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ إِلَهِتُمْ

فَقَالَ الْمَلَأَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا تَأْتِيكَ إِلَّا بَشِيرٌ مِثْلُنَا وَمَا شَرَكُكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا لَنَا بَأْسًا زَوَائِي وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَحْنُ لَكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾

1 कि दोनों का परिणाम एक नहीं हो सकता। एक को नरक में और दूसरे को स्वर्ग में जाना है। (देखिये: सूरह, हश्र आयत: 20)

28. उस (अथात् नूह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! तुम ने इस बात पर विचार किया कि यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और मुझे उस ने अपने पास से एक दया^[1] प्रदान की हो, फिर वह तुम्हें सुझायी न दे, तो क्या हम उसे तुम से चिपका^[2] दें, जब कि तुम उसे नहीं चाहते?
29. और हे मेरी जाति के लोगों! मैं इस (सत्य के प्रचार) पर तुम से कोई धन नहीं माँगता। मेरा बदला तो अल्लाह के ऊपर है। और मैं उन्हें (अपने यहाँ से) धुतकार नहीं सकता जो ईमान लाये हैं, निश्चय वे अपने पालनहार से मिलने वाले हैं, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम जाहिलों जैसी बातें कर रहे हो।
30. और हे मेरी जाति के लोगों! कौन अल्लाह की पकड़ से^[3] मुझे बचायेगा, यदि मैं उन को अपने पास से धुतकार दूँ? क्या तुम सोचते नहीं हो?
31. और मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोषागार (खज़ाने) हैं। और न मैं गुप्त बातों का ज्ञान रखता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी नहीं कहता कि जिन को तुम्हारी

قَالَ يَقَوْمِ ارْتَبِعُوا إِن كُنْتُمْ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي
وَالَّذِي رَحْمَةٌ مِّن عِندِي فَتَعَيَّنْتُ عَلَيْكُمْ
أَنزِلُكُمْ مَعَهَا وَأَنزِلُهَا لَهُمْ هَؤُلَاءِ ۝

وَيَقَوْمِ لَا تَزْنِيكُمْ عَلَيْهِ مَا لَا بَأْسَ فِيهِ الْإِن جَرَىٰ إِلَّا عَلَىٰ
اللَّهِ وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ الَّذِينَ آمَنُوا لَأَتَمُ اللَّهُ أَرْحَامَهُمْ
وَلَكِنِّي أَرْسَلُكُمْ قَوْمًا يَّجْهَلُونَ ۝

وَيَقَوْمِ مَن يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ طَرَدْتُهُمْ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لِي مَلَكٌ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ
تَوَدَّعُوا أَنِّي كُنْتُ نُؤَيِّدُهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذًا لِّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝

1 अर्थात् नबूवत और मार्गदर्शन।

2 अर्थात् मैं बलपूर्वक तुम्हें सत्य नहीं मनवा सकता।

3 अर्थात् अल्लाह की पकड़ से, जिस के पास ईमान और कर्म की प्रधानता है, धन-धान्य की नहीं।

आँखें घृणा से देखती हैं अल्लाह उन्हें कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह अधिक जानता है जो कुछ उन के दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो निश्चय अत्याचारियों में हो जाऊँगा।

32. उन्होंने ने कहा: हे नूह! तू ने हम से झगड़ा किया और बहुत झगड़ लिया, अब वह (यातना) ला दो जिस की धमकी हमें देते हो यदि तुम सच्च बोलने वालों में हो।

33. उस ने कहा: उसे तो तुम्हारे पास अल्लाह ही लायेगा, यदि वह चाहेगा। और तुम (उसे) विवश करने वाले नहीं हो।

34. और मेरी शुभ चिन्ता तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकती यदि मैं तुम्हारा हित चाहूँ जब कि अल्लाह तुम्हें कुपथ करना चाहता हो। और तुम उसी की ओर लोटाये जाओगे।

35. क्या वह कहते हैं कि उस ने यह बात स्वयं बना ली है? तुम कहो कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है, तो मेरा अपराध मुझी पर है, और मैं निर्दोष हूँ उस अपराध से जो तुम कर रहे हो।

36. और नूह की ओर बह्वी (प्रकाशना) की गयी कि तुम्हारी जाति में से ईमान नहीं लायेंगे, उन के सिवा जो ईमान ला चुके हैं। अतः उस से दुखी न बनो जो वह कर रहे हैं।

37. और हमारी आँखों के सामने हमारी

قَالُوا يَنْوُحُ قَدْ جَاءَ لَنَا بَلَاءٌ كَذَرْتِ جَدَّالَنَا قَالَيْنَا
بِمَا تَعْبُدُونَ أَنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ إِنَّ شَاءَ مَا أَنْتُمْ
بِعَاصِرِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَصِيحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَصْمَرَ لَكُمْ إِنْ
كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ وَمَنْ يَلِيهِ
رُجْعُونَ ﴿٣٤﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَى
إِجْرَائِي وَأَنَا بِرَبِّي وَمِمَّا تَجْحَرُونَ ﴿٣٥﴾

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا
مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَهْطِفْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَأَصْنِعِ الْفُلَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي

वहूी के अनुसार एक नाव बनाओ, और मुझ से उन के बारे में कुछ^[1] न कहना जिन्होंने अत्याचार किये हैं। वास्तव में वे डूबने वाले हैं।

38. और वह नाव बनाने लगा, और जब भी उस की जाति के प्रमुख उस के पास से गुज़रते, तो उस की हँसी उड़ाते। नूह ने कहा: यदि तुम हमारी हँसी उड़ाते हो तो हम भी ऐसे ही (एक दिन) तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे।

39. फिर तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर अपमान कारी यातना आयेगी। और स्थाई दुख किस पर उतरेगा?

40. यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया, और तबूत उबलने लगा तो हम ने (नूह से) कहा: उस में प्रत्येक प्रकार के जीवों के दो जोड़े रख लो। और अपने परिजनों को, उन के सिवा जिन के बारे में पहले बता दिया गया है, और जो ईमान लाये हैं। और उस के साथ थोड़े ही ईमान लाये थे।

41. और उस (नूह) ने कहा: इस में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम ही से इस का चलना तथा इसे रुकना है। वास्तव में मेरा पालनहार बड़ा क्षमाशील दयावान् है।

42. और वह उन्हें लिये पर्वत जैसी ऊँची लहरों में चलती रही। और नूह ने अपने पुत्र को पुकारा, जब कि वह उन से अलग था: हे मेरे पुत्र! मेरे साथ सवार

فِي الْذَيْنَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُخْرَجُونَ ﴿١٠﴾

وَيَصْنَعُ الْفُلَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿١١﴾

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿١٢﴾

حَتَّى إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنَوُّزُ كُلَّنَا بِجِذْرِهَا مِنْ شَرْبٍ رَوْحَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَمْلَكِ الْإِنْسَانَ سَبْقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿١٣﴾

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ جَرَدَهَا وَمُوسِمَهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾

وَهِيَ تَجْرِي بِمَوْجٍ مُخَالٍ كَالْجِبَالِ وَكَأَنَّ نُوحًا يَأْتِيهِ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبَيِّنُ الرُّكْبَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ﴿١٥﴾

1 अर्थात् प्रार्थना और सिफारिश न करना।

हो जा, और काफ़िरों के साथ न रहा।

43. उस ने कहा: मैं किसी पर्वत की ओर शरण ले लूँगा, जो मुझे जल से बचा लेगा। नूह ने कहा: आज अल्लाह के आदेश (यातना) से कोई बचाने वाला नहीं, परन्तु जिस पर वह (अल्लाह) दया कर दे। और दोनों के बीच एक लहर आड़े आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

44. और कहा गया: हे धरती! अपना जल निगल जा। और हे आकाश! तू थम जा। और जल उतर गया, और आदेश पूरा कर दिया गया, और नाव "जूदी"^[1] पर ठहर गई। और कहा गया कि अत्याचारियों के लिये (अल्लाह की दया से) दूरी है।

45. तथा नूह ने अपने पालनहार से प्रार्थना की, और कहा: मेरे पालनहार! मेरा पुत्र मेरे परिजनों में से है। निश्चय तेरा वचन सत्य है, तथा तू ही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

46. उस (अल्लाह) ने उत्तर दिया: वह तेरा परिजन नहीं। (क्योंकि) वह कुकर्मि है। अतः मुझ से उस चीज़ का प्रश्न न करो जिस का तुझे कोई ज्ञान नहीं। मैं तुझे बताता हूँ कि अज्ञानों में न हो जा।

47. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण चाहता हूँ कि मैं तुझ से

قَالَ سَأُوۡبَىٰٓٓ إِلَىٰ جَبَلٍ يَّعۡصِمُنِي مِنَ الْمَآءِ ۖ قَالَ
لَا عَاصِمَ الْيَوۡمَ مِنۡ أَمۡرِ اللّٰهِ ۖ اَلَا مَنۡ رَّجِعُوۡا حَالَ
بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُنۡفَرِقِيۡنَ ۝

وَقِيلَ يَآ اَرْضُ اَبۡلِغِيۡ مَآءَكَ وَنِسَاءَ اٰقِلِغِيۡ
وَوَغِيۡضَ الْمَآءِ وَتَقۡصِیۡ الْاَمۡرَ ۚ وَاسۡتَوۡتِ عَلٰی
الْجُوۡدِیِّ وَقِيلَ بَعۡدَ الْاَلۡفَوۡمِ الطَّلِيۡعِيۡنَ ۝

وَنَادٰۤی نُوۡحٌ رَبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ اِبۡنِیۡ مِنۡ
اَهۡلِیۡ وَاِنَّ وَعۡدَكَ الْحَقُّ ۚ وَاَنْتَ اَحۡكَمُ
الۡحَٰكِمِیۡنَ ۝

قَالَ یٰۤاِیُّوۡحَ اِنَّهٗ لَیۡسَ مِنۡ اَهۡلِکَ ۚ اِنَّهٗ عَمِلَ عَمَلًا
صَٰلِحًا ۚ فَکَلَّا تَسۡتَلِیۡنَ ۚ مَا لَیۡسَ لَکَ بِهٖ عِلۡمٌ ۚ اِنَّ
اَعۡیُنَکَ اَنۡ تَکُوۡنَ مِنَ الْجَٰهِلِیۡنَ ۝

قَالَ رَبِّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِکَ اَنَّ اَسۡتَکَ مَا لَیۡسَ لِیۡ

1 "जूदी" एक पर्वत का नाम है जो कुर्दिस्तान में "इब्ने उमर" द्वीप के उत्तर-पूर्व और स्थित है। और आज भी जूदी के नाम से ही प्रसिद्ध है।

ऐसी चीज़ की मांग करूँ जिस (की वास्तविकता) का मुझे कोई ज्ञान नहीं है।^[1] और यदि तू ने मुझे क्षमा नहीं किया और मुझ पर दया न की तो मैं क्षतिग्रस्तों में हो जाऊँगा।

يَا عَلِيُّ وَالْأَنْفَرُ وَالْأَنْفَرُ وَالْأَنْفَرُ
الْخُسْرَيْنِ ۝

48. कहा गया कि हे नूह! उतर जा हमारी ओर से रक्षा और सम्पन्नता के साथ अपने ऊपर तथा तेरे साथ के समुदायों के ऊपर। और कुछ समुदाय ऐसे हैं जिन को हम संसारिक जीवन सामग्री प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी दुःखदायी यातना पहुँचेगी।

قَالَ يُوحَا اٰهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ
وَعَلَىٰ اٰمِرٍ مِّنْ مَّعَكَ وَاَمْرٌ سَمْعُهُمْ نَحْنُ
يَعْتَمِدُهُمْ مِّنْ اَعْدَابِ الْيَوْمِ ۝

49. यह ग़ैब की बातें हैं जिन्हें (हे नबी!) हम आप की ओर प्रकाशना (बढ़ी) कर रहे हैं। इस से पूर्व न तो आप इन्हें जानते थे और न आप की जाति। अतः आप सहन करें। वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

يَاكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيْهَا اِلَيْكَ مَا كُنْتَ
تَعْلَمُهَا اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا فَاَصْبِرْ
اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝

50. और "आद" (जाति) की ओर उन के भाई हूद को भेजा उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगों! अब्ब्राह की इबादत (बंदना) करो। उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। तुम इस के सिवा कुछ नहीं हो कि झूठी बातें घड़ने वाले हो।^[2]

وَالِى عَادِ اَخَاهُمْ هُوْدًا قَالَ يَقُوْمُ اَعْبُدُوا اللّٰهَ
مَا لَكُمْ مِنَ الْاِلٰهِ غَيْرِ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝

51. हे मेरी जाति के लोगो! मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता।

يَقُوْمُ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ اَجْرِيْ اِلَّا اَعْلٰى

1 अर्थात् जब नूह (अलैहिस्सलाम) को बता दिया गया कि तुम्हारा पुत्र ईमान वालों में से नहीं है इस लिये वह अब्ब्राह के अजाब से बच नहीं सकता तो नूह तुरन्त अब्ब्राह से क्षमा माँगने लगे।

2 अर्थात् अब्ब्राह के सिवा तुम ने जो पूज्य बना रखे हैं वह तुम्हारे मन घड़त पूज्य हैं।

मेरा पारिश्रमिक बदला उसी (अल्लाह) पर है जिस ने मुझे पैदा किया है। तो क्या तुम (इतनी बात भी) नहीं समझते।^[1]

الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

52. हे मेरी जाति के लोगो! अपने पालनहार से क्षमा माँगो। फिर उस की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वह आकाश से तुम पर धारा प्रवाह वर्षा करेगा। और तुम्हारी शक्ति में अधिक शक्ति प्रदान करेगा। और अपराधी हो कर मुँह न फेरो।

وَيَقُومِ اسْتَغْفِرُكُمْ ذَارِكُمْ ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَيْهِ يَرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَبُرِّدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَكَّلُوا مُجْرِمِينَ ۝

53. उन्होंने ने कहा: हे हूद! तुम हमारे पास कोई स्पष्ट (खुला) प्रमाण नहीं लाये। तथा हम तुम्हारी बात के कारण अपने पूज्यों को त्यागने वाले नहीं है, और न हम तुम्हारा विश्वास करने वाले हैं।

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

54. हम तो यही कहेंगे कि तुझे हमारे किसी देवता ने बुराई के साथ पकड़ लिया है। हूद ने कहा: मैं अल्लाह को (गवाह) बनाता हूँ, और तुम भी साक्षी रहो कि मैं उस शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त हूँ जो तुम कर रहे हो।

إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرِكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوَّةٍ قَالَ إِنْ أَشْهَدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُ الَّذِي بَرَّئْتُ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝

55. उस (अल्लाह) के सिवा। तुम सब मिल कर मेरे विरुद्ध षडयंत्र रच लो, फिर

مِنْ دُونِهِ وَلَكِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَحْطَرُوا ۝

1 अर्थात् यदि तुम समझ रखते तो अवश्य सोचते कि एक व्यक्ति अपने किसी संसारिक स्वार्थ के बिना क्यों हमें रातो दिन उपदेश दे रहा है और सारे दुख झेल रहा है। उस के पास कोई ऐसी बात अवश्य होगी जिस के लिये अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

मुझे कुछ भी अवसर न दो।^[1]

56. वास्तव में, मैं ने अल्लाह पर जो मेरा पालनहार और तुम्हारा पालनहार है, भरोसा किया है। कोई चलने वाला जीव ऐसा नहीं जो उस के अधिकार में न हो, वास्तव में मेरा पालनहार सीधी राह^[2] पर है।

57. फिर यदि तुम विमुख रह गये तो मैं ने तुम्हें वह उपदेश पहुँचा दिया है जिस के साथ मुझे भेजा गया है। और मेरा पालनहार तुम्हारा स्थान तुम्हारे सिवा किसी^[3] और जाति को दे देगा। और तुम उसे कुछ हानि नहीं पहुँचा सकोगे, वास्तव में मेरा पालनहार प्रत्येक चीज का रक्षक है।

58. और जब हमारा आदेश आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उन को जो उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से बचा लिया, और हम ने उन को घोर यातना से बचा लिया।

59. वही (जाति) "आद" है, जिस ने अपने पालनहार की आयतों (निशानियों) का इन्कार किया, और उस के रसूलों की बात नहीं मानी, और प्रत्येक सच्च के विरोधी के पीछे चलते रहे।

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أَرْسَلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا لَنَجِيَنَّهُمْ أَهْلَ الْاُذَيْنِ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَيْنَهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

وَبَلَّغْنَاكَ عَلَىٰ جَدِّ وَأَبَائِكَ رَوْحَهُمْ وَعَصَوُا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝

1 अर्थात् तुम और तुम्हारे सब देवी-देवता मिल कर भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। क्योंकि मेरा भरोसा जिस अल्लाह पर है पूरा संसार उस के नियंत्रण में है उस के आगे किसी की शक्ति नहीं कि किसी का कुछ बिगाड़ सके।

2 अर्थात् उस की राह अत्याचार की राह नहीं हो सकती कि तुम दुराचारी और कुपथ में रह कर सफल रहो और मैं सदाचारी रह कर हानि में पड़ूँ।

3 अर्थात् तुम्हें ध्वस्त निरस्त कर देगा।

60. और इस संसार में धिक्कार उन के साथ लगा दी गई। तथा प्रलय के दिन भी लगी रहेगी। सुनो! आद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुनो! हूद की जाति: आद के लिये दूरी^[1] हो!

61. और समुद्र^[2] की ओर उन के भाई सालेह को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अब्राह की इबादत (बंदना) करो उस के सिवा तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है। उसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया, और तुम को उस में बसा दिया, अतः उस से क्षमा माँगो और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ, वास्तव में मेरा पालनहार समीप है (और दुआयें) स्वीकार करने वाला है।^[3]

62. उन्होंने ने कहा: हे सालेह! हमारे बीच इस से पहले तुझ से बड़ी आशा थी, क्या तू हमें इस बात से रोक रहा है कि हम उस की पूजा करें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? तू जिस चीज़ (एकेश्वरवाद) की ओर बुला रहा है, वास्तव में उस के बारे में हमें संदेह है, जिस में हमें द्विधा है।

63. उस (सालेह) ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम ने विचार किया कि

وَأَشِيعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةُ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ
إِنَّ آدَامَ أَكْفَرُ وَأَكْفَرُهُمُ الْآبَدُ الْعَادُ قَوْمُ هُودٍ

وَالِ شَمُودَ أَخَاهُمْ صَاحِبًا قَالَ يَقَوْمِ لِعِبَادُ اللَّهِ
مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُهُ هُوَ أَنشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ
وَأَسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ تَوَلَّوْا إِلَيْهِ
إِنْ رَأَيْتُمْ قِيَامِي يَحْيَىٰ

قَالُوا لِيُصْلِحَ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْحُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَانَا
أَنْ نَعْبُدَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّ الْفِئَةَ شَكَّ فِيهَا
لَتَدْعُونَنَا إِلَيْهِ قَوْمِي

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ لَكُمْ عَلَىٰ بَيْتَةٍ مِّن رَّبِّي

1 अर्थात् अब्राह की दया से दूरी। इस का प्रयोग धिक्कार और विनाश के अर्थ में होता है।

2 यह जाति तबूक और मदीना के बीच "अल-हिज्र" में आबाद थी।

3 देखिये: सूरह बकरा, आयत: 186।

यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट खुले प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अपनी दया प्रदान की हो, तो कौन है जो अल्लाह के मुकाबले में मेरी सहायता करेगा, यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ? तुम मुझे घाटे में डालने के सिवा कुछ नहीं दे सकते।

وَأَتَيْنَا مِنْهُ رَحْمَةً مَّنْ يَنْصُرُنِي مِنَ الْغُلُوِّ
عَصِيَّةَ اللَّهِ يَتْلُوا بَيِّنَاتٍ مِّنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ يُخْفُونَ ۝

64. और हे मेरी जाति के लोगो! यह अल्लाह^[1] की ऊँटनी तुम्हारे लिये एक निशानी है तो इसे छोड़ दो, अल्लाह की धरती में चरती फिरो। और उसे कोई दुख न पहुँचाओ, अन्यथा तुम्हें तुरन्त यातना पकड़ लेगी।

وَلَقَوْمٌ هُمُومٌ نَّافِقَةٌ لِّلَّهِ لَكُمُ الْآيَةُ فَنَّا كُنَّا فِي
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَتَّبِعُوا بَنُوهُ فَيُخَذَكُمُ عَذَابٌ
قَرِيبٌ ۝

65. तो उन्होंने उसे मार डाला। तब सालेह ने कहा: तुम अपने नगर में तीन दिन और आनन्द ले लो। यह वचन झूठा नहीं है।

فَعَصَوْا وَآمَنُوا فَاتَّبَعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ
وَعَدُ غَيْرِ مُلْدُ ۝

66. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उस के साथ ईमान लाये अपनी दया से और उस दिन के अपमान से बचा लिया। वास्तव में आप का पालनहार ही शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَحْنُ صَٰلِحُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
بِرَحْمَةِ رَبِّهِمْ وَأَمِنْ يَوْمِهِمْ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ
الْعَزِيزُ ۝

67. और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया, और अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

وَأَخَذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ
جُثَّةٍ ۝

1 उसे अल्लाह की ऊँटनी इस लिये कहा गया है कि उसे अल्लाह ने उन के लिये एक पर्वत से निकाला था। क्योंकि उन्होंने ने इस की माँग की थी कि यदि पर्वत से ऊँटनी निकलेगी तो हम ईमान लायेंगे। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

68. जैसे वह वहाँ कभी बसे ही नहीं थे। सावधान! समूद ने अपने पालनहार को अस्वीकार कर दिया। सुन लो, समूद के लिये दूरी हो।

69. और हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास शुभसूचना ले कर आये। उन्होंने सलाम किया तो उस ने उत्तर में सलाम किया। फिर देर न हुई कि वह एक भुना हुआ बछड़ा^[1] ले आये।

70. फिर जब देखा कि उन के हाथ उस की ओर नहीं बढ़ते तो उन की ओर से संशय में पड़ गया। और उन से दिल में भय का अनुभव किया। उन्होंने कहा: भय न करो। हम लूत^[2] की जाति की ओर भेजे गये हैं।

71. और उस (इब्राहीम) की पत्नी खड़ी हो कर सुन रही थी। तो वह हँस पड़ी^[3], तो उसे हम ने इसहाक (के जन्म) की शुभ सूचना^[4] दी। और इसहाक के पश्चात् याकूब की।

72. वह बोली: हाय मेरा दुर्भाग्य! क्या मेरी संतान होगी, जब कि मैं बुढ़िया हूँ, और मेरा यह पति भी बूढ़ा है? वास्तव में यह बड़े आश्चर्य की बात है।

73. फरिश्तों ने कहा: क्या तू अब्राह के

كَانَ لَمْ يَغْتَوِ فِيهَا إِلَّا أَنْ تَبُودَ الْكُفْرُ وَأَرْبَعًا
الْأَبْعَدُ الشُّؤْدُ

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلَنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا
قَالَ سَلَامٌ قَالُوا لَيْتَ أَنْ جَاءَ بِعِجْلٍ حَنِينٍ

فَلَمَّا رَأَى إِلَيْهِمْ أَنْ يَكُونُوا وَاجِبِينَ
مِنْهُمْ حَيْفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَى قَوْمِ
لُوطٍ

وَأَمْرَانَهُ قَالِمَةً فَضَجَّكَتْ فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَاقَ
وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ

قَالَتْ يَوَيْلَيَّ أَلَيْدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَهَذَا بَعْلٌ
شَيْخٌ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ

قَالُوا أَتَعْجَبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ وَرَحِمْتُ الْوَهْمَ وَبَرَكَةً

1 अर्थात् अतिथि सत्कार के लिये।

2 लूत अलैहिस्सलाम को भाष्यकारों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम का भतीजा बताया है, जिन को अल्लाह ने सदूम की ओर नबी बना कर भेजा।

3 कि भय की कोई बात नहीं है।

4 फरिश्तों द्वारा।

आदेश से आश्चर्य करती है? हे घर वालों! तुम सब पर अल्लाह की दया तथा सम्पन्नता है, निःसंदेह वह अति प्रशंसित श्रेष्ठ है।

عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَسِيدٌ خَبِثٌ ۝

74. फिर जब इब्राहीम से भय दूर हो गया और उसे शुभ सूचना मिल गयी तो वह लूत की जाति के बारे में हम से आग्रह करने लगा।^[1]

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ
يَحْمِلُونَ فِي نَارٍ قَوْمَهُ لُوطٌ ۝

75. वास्तव में इब्राहीम बड़ा सहनशील, कोमल हृदय तथा अल्लाह की ओर ध्यानमग्न रहने वाला था।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۝

76. (फरिश्तों ने कहा): हे इब्राहीम! इस बात को छोड़ो, वास्तव में तेरे पालनहार का आदेश^[2] आ गया है, तथा उन पर ऐसी यातना आने वाली है जो टलने वाली नहीं है।

يَا إِبْرَاهِيمُ اقْضُ عَنْ هَٰذَا الزَّوْجَ قَدْ جَاءَكَ أَمْرٌ
رَّبِّكَ وَالنَّهْمُ إِلَيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مُرْدُوْدٍ ۝

77. और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास आये तो उन का आना उसे बुरा लगा। और उन के कारण व्याकुल हो गया। और कहा: यह तो बड़ी विपत्ता का^[3] दिन है।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا بَيِّنَاتٍ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ
دُرْعًا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ۝

78. और उस की जाति के लोग दोड़ते हुये उस के पास आ गये। और इस

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا

1 अर्थात् प्रार्थना करने लगा कि लूत की जाति को अभी संभलने का और अवसर दिया जाये हो सकता है वह ईमान लायें।

2 अर्थात् यातना का आदेश।

3 फरिश्ते सुन्दर किशोरों के रूप में आये थे। और लूत अलैहिस्सलाम की जाति का आचरण यह था कि वह बालमैथुन में रुचि रखती थी। इसलिये उन्होंने उन को पकड़ने की कोशिश की। इसीलिये इन अतिथियों के आने पर लूत अलैहिस्सलाम व्याकुल हो गये थे।

से पूर्व वह कुकर्म^[1] किया करते थे। लूत ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! यह मेरी^[2] पुत्रियाँ हैं, वह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र हैं, अतः अब्राह से डरो, और मेरे अतिथियों के बारे में मुझे अपमानित न करो। क्या तुम में कोई भला मनुष्य नहीं है।

79. उन लोगों ने कहा: तुम तो जानते ही हो कि हमारा तेरी पुत्रियों में कोई अधिकार नहीं^[3] तथा वास्तव में तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

80. उस (लूत) ने कहा: काश मेरे पास बल होता! या कोई दृढ़ सहारा होता जिस की शरण लेता!

81. फरिश्तों ने कहा: हे लूत! हम तेरे पालनहार के भेजे हुये (फरिश्ते) हैं। वह कदापि तुझ तक नहीं पहुँच सकेंगे, जब कुछ रात रह जाये तो अपने परिवार के साथ निकल जा, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। परन्तु तेरी पत्नी (साथ नहीं जायेगी)। उस पर भी वही बीतने वाला है जो उन पर बीतेगा। उन की यातना का निर्धारित समय प्रातः काल है। क्या प्रातः काल समीप नहीं है?

82. फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हम ने उस बस्ती को तहस नहस

يَعْمَلُونَ الشَّيَاطِ قَالَ يَغْوِرُ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي مَنْ أَظْهَرَ لَكُمْ فَأَتَعُوا اللَّهَ وَلَا تَحْزُونِ فِي صَيْفِي أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۝

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا تُرِيدُ ۝

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أُوَدِّعُ إِلَىٰ دُكْنٍ شَدِيدٍ ۝

قَالُوا لَوْلَا رَأَىٰ رَسُولَ رَبِّكَ لَنْ يَصْلَوْا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْمُوكَ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرًا نَكَ إِذْ هُمْ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۝

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَاهَا سَافِلًا فَلَهَا وَأَمْطَرْنَا

1 अर्थात् बालमैथुन। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात् बस्ती की स्त्रियाँ। क्यों कि जाति का नबी उन के पिता के समान होता है। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

3 अर्थात् हमें स्त्रियों में कोई रुचि नहीं है।

कर दिया। और उन पर पकी हुई कंकरियों की बारिश कर दी।

83. जो तेरे पालनहार के यहाँ चिन्ह लगायी हुयी थीं। और वह^[1] (बस्ती) अत्याचारियों^[2] से कोई दूर नहीं है।

84. और मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को भेजा। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अब्बाह की इबादत (बंदना) करो। उस के सिवा कोई तुम्हारा पूज्य नहीं है। और नाप तौल में कमी न करो।^[3] मैं तुम्हें सम्पन्न देख रहा हूँ। इसलिये मुझे डर है कि तुम्हें कहीं यातना न घेर ले।

85. हे मेरी जाति के लोगो! नाप तौल न्यायपूर्वक पूरा करो, और लोगों को उन की चीजें कम न दो, तथा धरती में उपद्रव फैलाते न फिरो।

86. अब्बाह की दी हुई बचत तुम्हारे लिये अच्छी है, यदि तुम ईमान वाले हो। और मैं तुम पर कोई रक्षक नहीं हूँ।

87. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! क्या तेरी नमाज़ (इबादत) तुझे आदेश दे रही है कि हम उसे त्याग दें जिस की पूजा हमारे बाप दादा करते रहे? अथवा अपने धनों में जो चाहें करें?

عَلَيْهَا حِجَارَةٌ مِّنْ سِجِّيلٍ مُّتَنَضُّودٍ ۝

مُسَوَّمَةٌ عِندَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ۝

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ وَلَا تَنفَقُوا الْيَكْبَالَ وَالْيَمْرَانَ إِنِّىٓ أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۝

وَيَقُومُوا أَوْفُوا الْيَكْبَالَ وَالْيَمْرَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَ مِّمَّكُمْ وَلَا تَعْتَوُوا الْاَرْضَ مُفْسِدِينَ ۝

بَقِيتُ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝

قَالُوا شُعَيْبُ أَصْلُكَ تَامِرٌ أَتَأْمُرُكَ أَنْ نَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَأُنَا وَنَفْعَلُ فِىٓ أَمْوَالِنَا مَا نَشَآءُ ۚ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝

1 अर्थात् सदूम, जो समूद की बस्ती थी।

2 अर्थात् आज भी जो उन की नीति पर चल रहे हैं उन पर ऐसी ही यातना आ सकती है।

3 शुऐब की जाति में शिर्क (मिश्रणवाद) के सिवा नाप तौल में कमी करने का रोग भी था।

वास्तव में तू बड़ा ही सहनशील तथा भला व्यक्ति है!

88. शुऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! तुम बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से प्रत्यक्ष प्रमाण पर हूँ, और उस ने मुझे अच्छी जीविका प्रदान की हो (तो कैसे तुम्हारा साथ दूँ?) मैं नहीं चाहता कि उस के विरुद्ध करूँ, जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं जहाँ तक हो सके सुधार ही चाहता हूँ। और यह जो कुछ करना चाहता हूँ, अब्राह के योगदान पर निर्भर करता है। मैं ने उसी पर भरोसा किया है, और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ।

89. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हें मेरा विरोध इस बात पर न उभार दे कि तुम पर वही यातना आ पड़े जो नूह की जाति या हूद की जाति अथवा सालेह की जाति पर आई। और लूत की जाति तुम से कुछ दूर नहीं है।

90. और अपने पालनहार से क्षमा माँगो, फिर उसी की ओर ध्यानमग्न हो जाओ। वास्तव में मेरा पालनहार अति क्षमाशील तथा प्रेम करने वाला है।

91. उन्होंने ने कहा: हे शुऐब! तुम्हारी बहुत सी बात हम नहीं समझते। और हम तुम्हें अपने बीच निर्बल देख रहे हैं। और यदि भाई बन्धु न होते तो हम तुम को पथराव कर के मार डालते। और तुम हम पर कोई भारी तो नहीं हो।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَأَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَرَزَقْنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا وَمَا اُرِيدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَا اَنْهٰكُمْ عَنْهُ اِنْ اُرِيدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِيْ اِلَّا بِاللّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَالْيَهُ الْيَتِيْبُ ۝

وَيَقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْ اَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ مَا اَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ اَوْ قَوْمَ هُودٍ اَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝

وَاسْتَغْفِرْ لِرَبِّكَ وَاِنَّكَ تَتُوْنُوْا اِلَيْهِ اِنْ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّذُوْدٌ ۝

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفَقْتَ كَثِيْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ وَاِنَّ لَرَبِّكَ فِتْنًا صَعِيْبًا وَّلَوْلَا رَهْمَتُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَاَنْتَ عَلَيْنَا بِعَرِيْزٌ ۝

92. शूऐब ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! क्या मेरे भाई बन्धु तुम पर अल्लाह से अधिक भारी है? कि तुम ने उसे पीठ पीछे डाल दिया है? ⁽¹⁾ निश्चय मेरा पालनहार उसे (अपने ज्ञान के) घेरे में लिये हुये है जो तुम कर रहे हो।

93. और हे मेरी जाति के लोगो! तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं (अपने स्थान पर) काम कर रहा हूँ। तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि किस पर ऐसी यातना आयेगी जो उसे अपमानित कर दे। तथा कौन झूठा है? तुम प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वाला हूँ।

94. और जब हमारा आदेश आ गया, तो हमने शूऐब को, और जो उस के साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और अत्याचारियों को कड़ी ध्वनी ने पकड़ लिया। फिर वे अपने घरों में औंधे मुँह पड़े रह गये।

95. जैसे वह कभी उन में बसे ही न रहे हों। सुन लो! मद्यन वाले भी वैसे ही दूर फेंक दिये गये जैसे समूद दूर फेंक दिये गये।

96. और हम ने मूसा को अपनी निशानियों (चमत्कार), तथा खुले तर्क के साथ भेजा।

قَالَ يٰٓأَقْرَبُ أَهْلِيَّ أَعَزَّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ
وَاتَّخَذَ سَمُوهُ وَزَأْرُكُمْ ظَهْرًا لِّانِ رَّبِّي بِمَا
تَعْمَلُونَ ۝

وَيَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ
تَعْلَمُونَ ۝ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ
كَاذِبٌ وَارْتَبِعُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَٱلَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَٱخَذْنَا ٱلَّذِينَ ظَلَمُوا
ٱلضَّرِبَةَ فَأَصْبَحُوا ٱلَّذِينَ دَيَّرُوا لَهُمُ جَحِيمٌ ۝

كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ٱلَّذِينَ ٱلْبُدَيْنَ كَمَا
يَعِدُ ٱلْمُؤَدُّ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِينٍ ۝

1 अर्थात् तुम मेरे भाई बन्धु के भय से मेरे विरुद्ध कुछ करने से रुक गये तो क्या वह तुम्हारे विचार में अल्लाह से अधिक प्रभाव रखते हैं?

97. फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उन्होंने ने फिरऔन की आज्ञा का अनुसरण (पालन) किया। जब कि फिरऔन की आज्ञा सुधरी हुई न थी।
98. वह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा, और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है?
99. और वे धिक्कार के पीछे लगा दिये गये इस संसार में भी और प्रलय के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उन्हें दिया जायेगा?
100. हे नबी! यह उन बस्तियों के समाचार है जिन का वर्णन हम आप से कर रहे हैं। उन में से कुछ निर्जन खड़ी और कुछ उजड़ चुकी हैं।
101. और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया। तो उन के वे पूज्य जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, उन के कुछ काम नहीं आये, जब आप के पालनहार का आदेश आ गया, और उन्होंने ने उन को हानि पहुँचाने के सिवा और कुछ नहीं किया।^[1]
102. और इसी प्रकार तेरे पालनहार की पकड़ होती है, जब वह किसी अत्याचार करने वालों की, बस्ती को

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِم فَاتَّبَعُوْا أَمْرَ
فِرْعَوْنَ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ
وَبِئْسَ الْاَوْرَادُ الْمُرُوْدُ ۝

وَاتَّبَعُوْا فِيْ هٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ يَكُوْنُ
الْوَرْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاہِ الْقُرْاٰی نَقُصُّهُ عَلَیْكَ مِنْهَا قَلِيْلٌ
وَّحَصِيْدٌ ۝

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ فَمَا اَغْنٰتِ
عَنْهُمْ اِلٰهَهُمُ الَّذِیْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ شَیْءٍ لِّتَاْجِءَ اَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ
تَضٰیْفٍ ۝

وَكَذٰلِكَ اَخَذْنٰ رَبِّكَ اِذَا الْاَعْدَا الْقُرْاٰی وَهٰی
ظُلُمَةٌ اِذْ اَخَذَ الْاَلِیْمُ شَدِيْدًا ۝

1 अर्थात् यह जातियाँ अपने देवी-देवता की पूजा इसलिये करती थी कि वह उन्हें लाभ पहुँचायेंगे। किन्तु उन की पूजा ही उन पर अधिक यातना का कारण बन गई।

पकड़ता है। निश्चय उस की पकड़ दुखदायी और कड़ी होती^[1] है।

103. निश्चय इस में एक निशानी है, उस के लिये जो परलोक की यातना से डरे। वह ऐसा दिन होगा जिस के लिये सभी लोग एकत्रित होंगे, तथा उस दिन सब उपस्थित होंगे।

104. और हम उसे केवल एक निर्धारित अवधि के लिये देर कर रहे हैं।

105. जब वह दिन आ जायेगा तो अल्लाह की अनुमति बिना कोई प्राणी बात नहीं करेगा, फिर उन में से कुछ आभागे होंगे और कुछ भाग्यवान होंगे।

106. फिर जो भाग्यहीन होंगे, वही नरक में होंगे, उन्हीं की उस में चीख और पुकार होगी।

107. वे उस में सदावासी होंगे, जब तक आकाश तथा धरती अवस्थित हैं। परन्तु यह कि आप का पालनहार कुछ और चाहे। वास्तव में आप का पालनहार जो चाहे कर देने वाला है।

108. और जो भाग्यवान हैं, वह स्वर्ग ही में सदैव रहेंगे, जब तक आकाश तथा धरती स्थित हैं। परन्तु आप का पालनहार कुछ और चाहे, यह प्रदान है अनवरत (निरन्तर)।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ
ذَلِكَ يَوْمُ مَعْمُورٍ لَهُ النَّاسُ وَذَلِكَ يَوْمُ
مَشْهُودٍ ۝

وَمَا تُؤَخِّرُهُ إِلَّا إِلَاجٌ مِّنْهُ ۝

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلُمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهِ فَمِنْهُمْ
سَقِيٌّ وَسَعِيدٌ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ
وَشَهِيقٌ ۝

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ
إِلَّا مَنَاشَأَ رَبِّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ سَعِدُوا فَيُفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا
مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَنَاشَأَ رَبِّكَ
عَطَاءٌ غَيْرَ يُحْدَوِّدُ ۝

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि अल्लाह अत्याचारी को अवसर देता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो उस से बचता नहीं, और आप ने फिर यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 4686)

109. अतः (हे नबी!) आप उस के बारे में किसी संदेह में न हों जिसे वे पूजते हैं। वे उसी प्रकार पूजते हैं जैसे इस से पहले इन के बाप दादा पूजते^[1] रहे हैं। वस्तुतः हम उन्हें उन का बिना किसी कमी के पूरा भाग देने वाले हैं।

110. और हम ने मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की। तो उस में विभेद किया गया। और यदि आप के पालनहार ने पहले से एक बात^[2] निश्चित न की होती तो उन के बीच निर्णय कर दिया गया होता, और वास्तव में वे^[3] उस के बारे में संदेह और शंका में हैं।

111. और प्रत्येक को आप का पालनहार अवश्य उन के कर्मों का पूरा बदला देगा। क्योंकि वह उन के कर्मों से सूचित है।

112. अतः (हे नबी!) जैसे आप को आदेश दिया गया है, उस पर सुदृढ़ रहिये। और वह भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा याचना) कर के हो लिये हैं। और सीमा का उल्लंघन न^[4] करो क्योंकि वह (अल्लाह)

فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ
مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِنْ قَبْلُ
وَأَنَّا لَمَوْفُقُونَ لَتَصِيبَهُمْ غَيْرُ مَنْفُوعٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ فِيهِ وَتُؤَدَّ
كُلِمَةً سَبْعَ شَعْرَاتٍ مِنْ رَبِّكَ لَقَدْ كَانَ بَيْنَهُمْ وَآلِهِمْ
كَيْفٌ شَالِكٌ مِنْهُ مِوَيْبٍ ۝

وَإِنْ كُنَّا لَنَاقِفُ فِيهِمْ رَبَّنَا أَعْمَالَهُمْ إِنَّهُ بِمَا
يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمِنْ تَابِ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात् इन की पूजा निर्मूल और बाप-दादा की परम्परा पर आधारित है, जिस का सत्य से कोई संबंध नहीं है।

2 अर्थात् यह कि संसार में प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार कर्म करने का अवसर दिया जायेगा।

3 अर्थात् मिश्रणवादी कुर्आन के विषय में।

4 अर्थात् धर्मदेश की सीमा का।

तुम्हारे कर्मों को देख रहा है।

113. और अत्याचारियों की ओर न झुक पड़ो। अन्यथा तुम्हें भी अग्नि स्पर्श कर लेगी। और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम्हारी सहायता नहीं की जायेगी।

114. तथा आप नमाज़ की स्थापना करें, दिन के सीरों पर और कुछ रात बीतने^[1] पर। वास्तव में सदाचार दुराचारों को दूर कर देते^[2] हैं। यह एक शिक्षा है, शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिये।

115. तथा आप धैर्य से काम लें, क्योंकि अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

116. तो तुम से पहले युगों में ऐसे सदाचारी क्यों नहीं हुये जो धरती में उपद्रव करने से रोकते? परन्तु ऐसा बहुत थोड़े युगों में हुआ, जिन्हें हम ने बचा दिया, और अत्याचारी उस स्वाद के पीछे पड़े रहे, जो धन-धान्य दिये गये थे। और वह अपराधि बन कर रहे।

وَلَا تَرْكُؤُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِن أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُفْعًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبُنَ الشَّرَّاتِ ذَلِكَ ذِكْرُكَ لِلَّذِينَ يَذْكُرُونَ ﴿١١٤﴾

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٥﴾

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَجْبَأْنَا مِنْهُمْ وَالِاتَّبَاعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَوْا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾

1 नमाज़ के समय के सविस्तार विवरण के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 78, सूरह ताहा, आयत: 130, तथा सूरह रूम, आयत: 17-18।

2 हदीस में आता है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: यदि किसी के द्वार पर एक नहर जारी हो जिस में वह पाँच बार स्नान करता हो तो क्या उस के शरीर पर कुछ मैल रह जायेगा? इसी प्रकार पाँचों नमाज़ों से अल्लाह भूल-चूक को दूर (क्षमा) कर देता है। (बुखारी: 528, मुस्लिम: 667) किन्तु बड़े बड़े पाप जैसे शिर्क, हत्या इत्यादि, बिना तौबा के क्षमा नहीं किये जाते।

117. और आप का पालनहार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जब कि उन के वासी सुधारक हों।

118. और यदि आप का पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक समुदाय बना देता। और वह सदा विचार विरोधी रहेंगे।

119. परन्तु जिस पर आप का पालनहार दया कर दे, और इसी के लिये उन्हें पैदा किया है^[1] और आप के पालनहार की बात पूरी हो गयी कि मैं नरक को सब जिनों तथा मानवों से अवश्य भर दूँगा^[2]।

120. और (हे नबी!) यह नबियों की सब कथाएँ हम आप को सुना रहे हैं, जिन के द्वारा आप के दिल को सुदृढ़ कर दें, और इस विषय में आप के पास सत्य आ गया। और ईमान वालों के लिये एक शिक्षा और चेतावनी है।

121. और (हे नबी!) आप उन से कह दें, जो ईमान नहीं लाते कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो। हम अपने स्थान पर काम करते हैं।

122. तथा तुम प्रतीक्षा^[3] करो, हम भी

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهِدِكَ الْغُرَىٰ يُظْلِمُهُ وَأَهْلُهَا مُضِلُّونَ ﴿١١٧﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يَزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿١١٨﴾

إِلَّا مَن دَجَمَ رَبُّكَ وَلَدَانِكَ حَقَّقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٩﴾

وَكَلَّا نَقْصُصْ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نَشِئْتُمْ بِهِ فُؤَادَكَ وَجَاءَكُمُ مِنْهُ الْخَبْرُ وَنُوحِي إِلَيْنَا الْوَعْدَ ﴿١٢٠﴾

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَاكِفُونَ ﴿١٢١﴾

وَأَنْتُمْ بِمَا تَعْمَلُونَ مُتَبَرِّونَ ﴿١٢٢﴾

1 अर्थात् एक ही सत्धर्म पर सब को कर देता। परन्तु उस ने प्रत्येक को अपने विचार की स्वतंत्रता दी है कि जिस धर्म या विचार को चाहे अपनाये ताकि प्रलय के दिन सत्धर्म को ग्रहण न करने पर उन्हें यातना का स्वाद चखाया जाये।

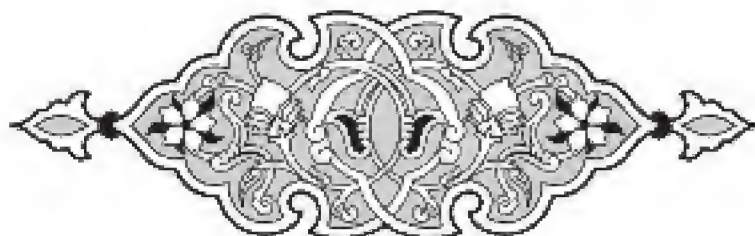
2 क्योंकि इस स्वतंत्रता का ग़लत प्रयोग कर के अधिकतर लोग सत्धर्म को छोड़ बैठे।

3 अर्थात् अपने परिणाम की।

प्रतीक्षा करने वाले हैं।

123. अल्लाह ही के अधिकार में आकाशों तथा धरती की छिपी हुई चीजों का ज्ञान है, और प्रत्येक विषय उसी की ओर लौटाये जाते हैं। अतः आप उसी की इबादत (बंदना) करें, और उसी पर निर्भर रहें। आप का पालनहार उस से अचेत नहीं है जो तुम कर रहे हो।

وَمَلَوْ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْيُوسُفَ الْأَكْمَرُ
كُلُّهُ وَالْعَبْدُ لَا تَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
تَعْمَلُونَ ﴿١٢٣﴾



सूरह यूसुफ - 12

سُورَةُ يُوسُفَ

सूरह यूसुफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस में नबी यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की पूरी कथा का वर्णन किया गया है। इस के द्वारा यह संकेत किया गया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन को मक्का में कुरैश ने जान से मार देने अथवा देश से निकाल देने की योजना बनायी है वह ऐसे ही निष्फल हो जायेंगे जैसे यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाईयों की सारी योजना निष्फल हो गई। और एक दिन ऐसा भी आया कि सब भाई उन के आगे हाथ फैलाये खड़े थे। और कुरआन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना हिज्रत कर गये। फिर सन् (8) हिजरी में आप ने मक्का को विजय किया तो आप के विरोधि कुरैश आप के आगे उसी प्रकार विवश खड़े थे जैसे यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के भाई उन के आगे हाथ फैलाये कह रहे थे की आप हमे दान कीजिये, अल्लाह दानशीलों को अच्छा बदला देता है। और जैसे यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों को क्षमा कर दिया वैसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा: जाओ, तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सर्वोत्तम दयावान् है। आप उन के अत्याचार का बदला ले सकते थे किन्तु जब आप ने उन से पूछा कि तुम्हारा विचार क्या है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?? तो उन के यह कहने पर कि आप सज्जन भाई तथा सज्जन भाई के पुत्र है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम पर कोई दोष नहीं, जाओ तुम सभी स्वतंत्र हो।

हदीस में है कि सज्जन के सज्जन पुत्र के सज्जन पुत्र, यूसुफ पुत्र याकूब पुत्र इसहाक पुत्र इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (देखिये: सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 3382)

एक दूसरी हदीस में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि यदि मैं उतने दिन बंदी रहता जितने दिन यूसुफ (अलैहिस्सलाम) बंदी रहे तो जो व्यक्ति उन को बुलाने आया था मैं उस

के साथ चला जाता।

(देखिये: सहीह बुखारी: हदीस नं: 3372, और सहीह मुस्लिम: हदीस नं: 2370)

याद रहे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से अभिप्राय यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सहन की सराहना करना है।

- इस सूरह में यह शिक्षा है कि जो अन्नाह चाहे वही होता है। विरोधियों के चाहने से कुछ नहीं होता, इस में नव युवको के लिये अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये भी एक शिक्षा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अलिफ़, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।

الرَّحْمٰنُ يَلْقٰكَ اِيْتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝

2. हम ने इस कुर्आन को अर्बी में उतारा है, ताकि तुम समझो।^[1]

اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

3. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस कुर्आन की वही द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं। अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْفَصَصِ بِمَا اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْءٰنَ ۚ وَ اِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝

4. जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा: हे मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لْاَبِيْهِ يَا اَبَتِ اِنِّىْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّ الشَّمْسَ وَّ الْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ۝

5. उस ने कहा: हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلٰى اَخَوَتِكَ

- 1 क्यों कि कुर्आन के प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे फिर उन के द्वारा दूसरे साधारण मनुष्यों को संबोधित किया गया है तो यदि प्रथम संबोधित ही कुर्आन नहीं समझ सकते तो दूसरों को कैसे समझ सकते थे?

अपने भाईयों को न बताना^[1] अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे। वास्तव में शैतान मानव को खुला शत्रु है।

6. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याकूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा।^[2] जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।

7. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाईयों (की कथा) में पछने वालों के^[3] लिये कई निशानियाँ हैं।

8. जब उन (भाईयों) ने कहा: यूसुफ़ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय है। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।

9. यूसुफ़ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ़ हो जायेगा। और इस के

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُرِيهِ مِثْلَهُ عَلَىٰ
نَفْسِهِ كَمَا أَلَمَّا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ
إِبْرَاهِيمَ وَاسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَأَخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلَّذِينَ
آلَمُوا ۝

إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخِيهِ يَا أَبَتَا إِنِّي
رَأَيْتُ الْمَنَاقِبَ إِنَّ أَبَاكَ إِنِّي ضَلُّوا سُبُلًا
مُّبِينًا ۝

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَخِيهِ يَا أَبَتَا إِنِّي
رَأَيْتُ الْمَنَاقِبَ إِنَّ أَبَاكَ إِنِّي ضَلُّوا سُبُلًا
مُّبِينًا ۝

1 यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दूसरी माँओं से दस भाई थे। और एक सगा भाई था। याकूब अलैहिस्सलाम यह जानते थे कि सौतीले भाई, यूसुफ़ से ईर्ष्या करते हैं। इसलिये उन को सावधान कर दिया कि अपना स्वप्न उन्हें न बतायें।

2 यहाँ पुरस्कार से अभिप्राय नबी बनाना है। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

3 यह प्रश्न यहूदियों ने मक्का वासियों के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था, कि वह कौनसे नबी है जो 'शाम में रहते थे, और जब उन का पुत्र मिस्र निकल गया तो उस पर रोते-रोते अन्धे हो गये?? इस पर यह पूरी सूरह उतरी। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

पश्चात् पवित्र बन जाओ।

10. उन में से एक ने कहा: यूसुफ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे कोई काफिला निकाल ले जायेगा, यदि कुछ करने वाले हों।
11. उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक हैं।
12. उसे कल हमारे साथ (बन में) भेज दें। वह खाये पिये और खेले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।
13. उस (पिता) ने कहा। मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।
14. सब (भाईयों) ने कहा: यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह हैं, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।
15. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुएं में डाल दें, और हम ने उस (यूसुफ) की ओर बह्नी की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।
16. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।
17. सब ने कहा: हे पिता! हम आपस में

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقَوْلى
غَيَّبَتِ الْجُبَّ يَلْتَقِطُهَا بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ
فَاعِلِينَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ
لَنَصِحُونَ ۝

أَرْسَلْهُ مَعَ غَدَاةٍ يُزَوِّجُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ
لَنَحْفَظُونَهُ ۝

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنَّ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ
يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ
إِنَّا إِذَا الْخِصْرُونَ ۝

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْتَمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي
غَيَّبَتِ الْجُبَّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ
هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَجَاءَهُ وَآبَاؤُهُ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝

قَالُوا يَا بَاكَ إِنْ هَذَا هَبْنَا نَسْتَفِيسَ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ

दौड़ करने लगे। और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़िया खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं हैं, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।

18. और वह यूसुफ के कुर्ते पर झूठा रक्त^[1] लगा कर लाये। उस ने कहा: बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है! तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अब्ब्राह ही से सहायता माँगनी है।

19. और एक काफिला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकारा: शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक सामग्री समझ कर छुपा लिया। और अब्ब्राह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।

20. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दिरहमों में बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।

21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहा: उस को आदर-मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और ताकि उसे बातों का अर्थ सिखायें।

عِنْدَ مَتَاعِنَا فَآكَلَهُ الذِّمْبُ وَكَأَنَّتَ يَمُومِينَ
لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝

وَجَاءَ ذُو عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ
سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَبِيلٌ وَاللَّهُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ۝

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوًا
قَالَ يَبَشِّرْهُ هَذَا عَالِمًا ۖ وَأَسْرَوْهُ بِضَاعَةً
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝

وَأَسْرَوْهُ بَشْرَيْنَ دِرَاهِمٍ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا
فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي
مَثْوَاهُ عَلَى أَنْ يَتَذَكَّرَ أَوْ تَذَكَّرَا ۚ وَكَذَلِكَ
وَكَدَّكَ مَكَانَ الْيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ
مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ عَلِيمٌ
وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि वे बकरी के बच्चे का रक्त लगा कर लाये थे।

और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।

22. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।

23. और वह जिस स्त्री^[1] के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोली: "आ जाओ"। उस ने कहा: अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वामी है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।

24. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ) भी उस की इच्छा करते, यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते^[2]। इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्जा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।

25. और दोनों द्वार की ओर दोड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

وَرَأَوْنَاهُ أَتَيْنَاهُ هَوًىٰ فَوَقَىٰ بَيْتَهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْبْ لَكَ قَالَتْ مَعَادَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَوْلَىٰ إِنَّهُ لَنَافِعٌ لِّلظَالِمِينَ ۝

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأَىٰهَا رَّبُّهُ كَذَلِكَ يَتُصَرِّفُ عَنْهُ الشَّوْءَ وَالْفَحْشَاءَ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُتَّخِصِينَ ۝

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ

1 अभिप्रेत मिस्र के राजा (अजीज) की पत्नी है।

2 यूसुफ (अलैहिस्सलाम) कोई फरिश्ता नहीं एक मनुष्य थे। इस लिये बुराई का इरादा कर सकते थे किन्तु उसी समय उन के दिल में यह बात आई कि मैं पाप कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकूँगा। इस प्रकार अल्लाह ने उन्हें बुराई से बचा लिया, जो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की बहुत बड़ी प्रधानता है।

पति को द्वार के पास पाया। उस (स्त्री) ने कहा: जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दुःखदायी यातना (दी जाये)?

26. उस ने कहा: इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।

27. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ) सच्चा है।

28. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहा: वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चालें हैं और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।

29. हे यूसुफ! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा माँग, वास्तव में तू पापियों में से है।

30. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहा: अजीज (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दास को रिझा रही है। उसे प्रेम ने मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।

31. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कारी की बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तकिये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी

أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْحَنَ أَوْ عَذَابٌ
الْيَمْرُؤُ ۝

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ
مِنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ
فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَّابَةٌ
وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

فَلَمَّا رَأَى قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ
كِبْدِ كُنَّ إِنِّي كَيْدُ كُنَّ عَظِيمٌ ۝

يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَذَا وَاسْتَغْفَرَ
لِذُنُوبِهِ ۚ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۝

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ
شَارِدَةٌ فَشَهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا
إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ
لَهُنَّ مَتْنًا وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا
وَقَالَتِ اخْرُجْنَ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ

दे दी।^[1] उस ने (यूसुफ से) कहा: इन के समक्ष "निकल आ"। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चकित (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठी, तथा पुकार उठी: अन्नाह पवित्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फरिश्ता है।

32. उस ने कहा: यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैं ने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला। और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।

33. यूसुफ ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे कैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही हैं। और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूंगा। और अज्ञानों में से हो जाऊंगा।

34. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

35. फिर उन लोगों^[2] ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख^[3] लीं, कि उस (यूसुफ) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।

أَيُّدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ۝

قَالَتْ فَذَلِكُنَ الَّذِي لَسْتِنِي فِيهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَمْ يَفْعَلْ مَا امْرَأَةٌ يُسُغِّمَنَّ وَلْيَكُونَا مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ۝

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

تَعَرَّبَ الْهُوسَىٰ مِن بَعْدِ مَا رَأَوُا الرِّبَّ لَا يَسْجُدْنَاهُ حَتَّىٰ يُؤْتَيْنِ ۝

1 ताकि अतिथि स्त्रियाँ उस से फलों को काट कर खायें जो उन के लिये रखे गये थे।

2 अर्थात् अजीज़ (मिस्र देश का शासक) और उस के साथियों ने।

3 अर्थात् यूसुफ के निर्दोष होने की निशानियाँ।

36. और उस के साथ कैद में दो युवकों ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने सिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं कि तुम सदाचारियों में से हो।

37. यूसुफ ने कहा: तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी हैं। मैं ने उस जाति का धर्म तज दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वही परलोक को नकारने वाले हैं।

38. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इस्हाक और याकूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोगों पर। परन्तु अधिक्तर लोग कृतज्ञ नहीं होते।^[1]

39. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम है, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह??

40. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (बंदना) करते हो वह केवल नाम है,

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ لَحَدًّا لَّيْ أَرَأَيْتَ
أَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ لَئِنْ أَرَأَيْتُ أَجَلَ فَوْقَ رَأْسِي
خَيْرًا أَتَأْكُلُ الطَّيْمُومَةَ تَنْشَأُ بَنَاتٍ وَأُولِيئِهِمْ إِذَا نَزَلَكَ
مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

قَالَ لَا يَأْتِيَكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِي إِلَّا يَنْتَظِلُكُمَا
بَنَاتٌ أُوتِيَهُ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا فَالْكُلَا مِمَّا مَعَكُمْ
قَالَ لَئِنْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ لَهُمْ كُفْرًا ۝

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَيَاكُوبَ وَاسْحَقَ
وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ
ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

لِيَصَاحِبِيَ السِّجْنِ ۚ أَرَأَيْتُمْ تَتَفَرَّقُونَ خَيْرًا
اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمِيَتْ لَهُمْ

1 अर्थात् तौहीद और नबियों के धर्म को नहीं मानते जो अल्लाह का उपकार है।

जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं। अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वन्दना) न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

41. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फाँसी दी जायेगी, और पक्षी उस के सिर में से खायेंगे। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।

42. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला है: मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना। तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अतः वह (यूसुफ) कई वर्ष कैद में रह गया।

43. और (एक दिन) राजा ने कहा: मैं सात मोटी गायों को सपने में देखता हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबंध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?

44. सब ने कहा: यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।

أَنْتُمْ وَإِبَادُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ
إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ أَمَرَ الْأَتَّعِبُونَ وَالْإِيَّاهُ
ذَلِكَ الَّذِينَ الْغَيْبُ وَلَكِنَّ الْكُفْرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَصَاحِبِي السَّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمْ فَاتَّبِعْ رِيَّهُ
خَمْرًا أَوْ آثَرَ الْخُرْقِ يُضَلِّبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْ رَأْسِهِ فَخُصِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ۝

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي
عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ الشَّيْطَانُ فَكَرَّرَ بِهِ فَلَبِثَ
فِي السَّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ۝

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ
يَأْكُلْنَ سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعَ سُتَبِلَاتٍ خُضِرٍ
وَأُخْرٍ يُسَيِّتُ يَأْكُلْنَ الْمَلَائِكَةُ فِي رُؤْيَايَ
إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ۝

فَالْوَاغِدَاتُ أَحْلَامُهُمْ وَمَا عَنِ بَنَائِهِ الْأَحْلَامُ
بِغُلِيٍّ ۝

45. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयी: मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बता दूँगा, तुम मुझे भेज^[1] दो।

46. हे यूसुफ! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं, और सात सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान^[2] लें।

47. यूसुफ ने कहा: तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो, परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)

48. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।

49. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरसाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।

50. और राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस

وَقَالَ الَّذِي نَجَّيْنَاهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ امَّةٍ اَنَا اَنْبِئْكُمْ بِاَوَّلِهِ فَاَرْسِلُوْنِ ۝

يُوسُفُ اِنَّهَا الصَّيْرُ فَقَبَضْنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سَمَانٍ يَا اَكْهَنَ سَبْعِ عَجَافٍ وَسَبْعِ سُتَلَاتٍ خُضْرٍ وَّاُخْرَ بَيْسَتٍ لَّعَلَّ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝

قَالَ رَزَقُوْنِ سَبْعَ سِنِيْنَ دَابَّآ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْبُلِهِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٍ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُخْصِفُوْنَ ۝

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْرِضُوْنَ ۝

وَقَالَ الْمَلِكُ التَّوْبَىْ لِيْ فَمَا جَاءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ اَرْجِعْ اِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ مَا بَالُ النَّسُوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُمْ اِنْ رَّبِّيْ يُكَيِّدُ هُمْ عَلِيمٌ ۝

1 अर्थात् कैद खाने में यूसुफ अलैहिस्सलाम के पास।

2 अर्थात् आप की प्रतिष्ठा और ज्ञान को।

जाओ^[1], और उस से पूछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि-भांति अवगत है।

51. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछा: तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ के मन को रिझाया? सब ने कहा: अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अजीज की पत्नी बोल उठी: अब सत्य उजागर हो गया, वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निःसंदेह वह सत्वादियों में है।^[2]

52. यह (यूसुफ) ने इस लिये किया, ताकि उसे (अजीज को) विश्वास हो जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के साथ विश्वास घात नहीं किया। और वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से प्रेम नहीं करता।

53. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारता है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ إِذْ أَرَدْتُمْ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ
قُلْنَ حَاشَ يَدُوكُمْ إِنَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُوهُدًا
أَلَمْ نَأْتِ الْغُرُوبَ وَالنَّحْصَ الْحَقُّ أَنَّا أَرَدْنَا عَنْ
نَفْسِهِ وَرَأَيْنَاهُ لَيْسَ بِالصَّادِقِينَ

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

وَمَا أَدْرِي نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ
بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

1 यूसुफ (अलैहिस्सलाम) को बंदी बनाये जाने से अधिक उस का कारण जानने की चिन्ता थी। वह चाहते थे कि कैद से निकलने से पहले यह सिद्ध होना चाहिये कि मैं निर्दोष था।

2 यह कुआन पाक का बड़ा उपकार है कि उस ने रसूलों तथा नबियों पर लगाये गये बहुत से आरोपों का निवारण (खण्डन) कर दिया है। जिसे अहले किताब (यहूदी तथा ईसाई) ने यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के विषय में बहुत सी निर्मूल बातें घड़ ली थीं जिन को कुआन ने आकर साफ कर दिया।

क्षमाशील तथा दयावान् है।

54. राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ। और जब उस (यूसुफ) से बात की, तो कहा: वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।
55. उस (यूसुफ) ने कहा: मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा ज्ञानी हूँ।
56. और इस प्रकार हम ने यूसुफ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।
57. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरते रहे।
58. और यूसुफ के भाई आये^[1], तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।
59. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहा: अपने सौतीले भाई^[2] को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ?

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلِمَةٌ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْهَا ﴿٥٥﴾

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَدْعُوا إِلَيْهَا حَيْثُ يَشَاءُ نُوَصِّبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَا جَزَاءُ الْوَرْدَةِ إِلَّا خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُتُكِرُونَ ﴿٥٨﴾

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخِي لَكُم مِّنْ أَيْمُنِكُمُ الْأَثَرُونَ إِنِّي وَفِي الْكَفِيلِ وَأَنَا خَيْرُ الْفَاهِشِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् अकाल के युग में अब लेने के लिये फिलस्तीन से मिस्र आये थे।

2 जो यूसुफ अलैहिस्सलाम का सगा भाई बिन्यामीन था।

60. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं, और न तुम मेरे समीप होगे।

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ۝

61. वह बोले: हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।

قَالُوا سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

62. और यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश दिया: उन का मूलधन¹ उन की बोरियों में रख दो, संभवतः वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवतः वापिस आयें।

وَقَالَ لِفَتَاتِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِجَالِهِمْ لَعَلَّاهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّاهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

63. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहा: हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (गन्ना) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا خَازِنًا لَّنُكَلِّسَ وَرِثَالَهُ لِحِفْظِ ثَوْنٍ ۝

64. उस (पिता) ने कहा: क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ? तो अब्राह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنَ ثَمُودُ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ فَأَنزَلَهُ خَازِنًا حَفِظًا ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

65. और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला, तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेर दिया गया है, उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَبْغِي آهْلَنَا وَنَحْفَظُ آهْلَنَا وَنَزِدُّهُمُ كَيْلَ يَعْزِمُ ذَلِكَ كَيْلٌ نَسِيرُ ۝

1 अर्थात् जिस धन से अन्न खरीदा है।

लिये गल्ले (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे^[1], यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।

66. उस (पिता) ने कहा: मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझे दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह कि तुम को घेर लिया^[2] जाये। और जब उन्होंने ने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी बात (वचन) का निरीक्षक है।

67. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहा: हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज़ से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।

68. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया^[3] और वास्तव में वह उस का

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَبَكُمْ فَلَمَّا أَتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ

وَقَالَ يَبْنَئِ لَكُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ وَأَدْخِلُوا مِن بَابٍ مُّتَعَدٍّ وَمَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ مِّنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةٌ فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

1 अर्थात् अपने भाई बिन्यामीन का जो उन की दूसरी माँ से था।

2 अर्थात् विवश कर दिये जाओ।

3 अर्थात् एक अपना उपाय था।

ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविकता) का ज्ञान नहीं रखते।

69. और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहा: मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अतः उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे हैं।

70. फिर जब उस (यूसुफ़) ने उन का सामान तय्यार करा दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा: हे काफ़िले वालो! तुम लोग तो चोर हो।

71. उन्होंने फिर कर कहा: तुम क्या खो रहे हो?

72. उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उस का प्रतिभू^[1] हूँ।

73. उन्होंने ने कहा: तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।

74. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा?^[2]

75. उन्होंने ने कहा: उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये,

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَتَتْهَا الْغَيْرُ لَكُمْ لَسِرِقُونَ ۝

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا اتَّعْتُمُون ۝

قَالُوا اتَّعْتُم صُوعَ الْمَلِكِ وَلَيْسَ بِنَا إِلَيْهِ جُئِلَ بَعِيرٌ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ۝

قَالُوا لَا تَلْوُا لَهُ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَآ جَاءَنَا النَّفْسُ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سِرِقِينَ ۝

قَالُوا أَفَبِعَازِ أُولَٰئِكَ لَئِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ۝

قَالُوا جَزَاءُ مَا مِنَّ وَجِدِي رَحْلِي فَهُوَ جَزَاءُ

1 अर्थात् एक ऊँट के बोझ बराबर पुरस्कार देने का भार मुझ पर है।

2 अर्थात् चोर का।

वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देते हैं।^[1]

76. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बोरी से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ के लिये उपाय^[2] किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी^[3] है।

77. उन भाईयों ने कहा: यदि उस ने चोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ ने) कहा: सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

78. उन्होंने ने कहा: हे अजीज़!^[4] उस

كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَن تَشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝

قَالُوا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَاهُ يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَشَاقِدِ الْأُولَىٰ أَعْلَمُ بِمَا تُصِفُونَ ۝

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا

- 1 अर्थात् याकूब अलैहिस्सलाम के धर्म विधान में चोर को दास बना लेने का नियम था। (तफ्सीर कुर्तुबी)
- 2 अपने भाई बिन्यामीन को रोक लेने की विधि बना दी।
- 3 अर्थात् अल्लाह से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। इसलिये किसी को अपने ज्ञान पर गर्व नहीं होना चाहिये।
- 4 यहाँ पर «अजीज़» का प्रयोग यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के लिये किया गया है। क्योंकि उन्हीं के पास सरकार के अधिकतर अधिकार थे।

का पिता बहुत बूढ़ा है। अतः हम में से किसी एक को उस के स्थान पर ले लो। वास्तव में हम आप को परोपकारी देख रहे हैं।

فَخَذَّ أَحَدُنَا مَكَانَهُ إِذَا أَتَيْنَاكَ مِنَ الْمُدِينِينَ ۝

79. उस (यूसुफ) ने कहा: अब्राह की शरण कि हम (किसी अन्य को) पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे) जिस के पास अपना सामान पाया है। (यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में अत्याचारी होंगे।

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ الْإِنْسَانَ وَحَدًّا مَنَاعَتَنَا عِنْدَهُ إِنْ أَرَادَ الظُّلْمُونَ ۝

80. फिर जब उस से निराश हो गये तो एकान्त में हो कर परामर्श करने लगे। उन के बड़े ने कहा: क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम से अब्राह को साक्षी बना कर दृढ़ वचन लिया था? और इस से पहले जो अपराध तुम ने यूसुफ के बारे में किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता अनुमति न दे दें। अथवा अब्राह मेरे लिये निर्णय न कर दें। और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

فَلَمَّا اسْتَيْسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا، قَالَ كَيْبَرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ آبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

81. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ, और कहो कि हे हमारे पिता! आप के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही साक्ष्य दिया जिसे हम ने^[1] जाना, और हम गैब के रखवाले नहीं^[2] थे।

ارْجِعُوا إِلَى آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمَنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝

82. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें,

وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي

1 अर्थात् राजा का प्याला उस के सामान से निकलते देखा।

2 अर्थात् आप को उस के वापिस लाने का वचन देते समय यह नहीं जानते थे कि वह चोरी करेगा। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

जिस में हम थे, और उस काफिले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं।

أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَدِّقُونَ ﴿٤٢﴾

83. उस (पिता) ने कहा: ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है। तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में वही जानने वाला तत्त्वदर्शी है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْراً فَصَدَّ
جَبِيلٌ عَنْهُ أَنْ يَأْتِيَنِ بِهِمْ جَبِيلًا
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ٥

84. और उन से मुँह फेर लिया, और कहा: हाय यूसुफ! और उस की दोनों आखें शोक के कारण (रोते-रोते) सफेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

وَنُوحِيْٓ اِلَيْهِمْ وَاَقَالَ يٰٓاَسْفٰى عَلٰى يُوْسُفَ
وَاٰبَيْصَتْ اَعْيُنُهُ مِنَ الْغَمِّ فَاُوْكِضِمُ۟

85. उन (पुत्रों) ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप बराबर यूसुफ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना बिनाश कर लें।

قَالُوا تَاللّٰهِ تَفْتَوْنَا لَنْ نُكَلِّمَ سَفَحًا نَّكُونُ
حُرُصًا اَوْ نَكُونُ مِنَ الْهَالِكِيْنَ ۝

86. उस ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُو بَثِّي وَخُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٠﴾

87. हे मेरे पुत्रो! जाओ, और यूसुफ और उस के भाई का पता लगाओ। और अल्लाह की दया से निराश न हो। वास्तव में अल्लाह की दया से वही निराश होते हैं जो काफिर हैं।

يٰٓبَنِيٓ اٰدَمُ اٰمُوا فَرَحْسُوا مِنْ يُّوسُفَ وَ اٰخِيهِ
وَلَا تَكْفُرُوا مِنْ رُّوحِ اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا يَأْتِسُ مِنْ
رُّوحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٥٠﴾

ss. फिर जब उस (यूसुफ़) के पास (मिस्र में) गये तो कहा: है अजीज! हम

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسْنَا

पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं, अतः हमें (अन्न का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें। वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

89. उस (यूसुफ) ने कहा: क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

90. उन्होंने ने कहा: क्या आप यूसुफ हैं? यूसुफ ने कहा: मैं यूसुफ हूँ। और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

91. उन्होंने कहा: अल्लाह की शपथ! उस ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।

92. यूसुफ ने कहा: आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे। वही सर्वाधिक दयावान् है।

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।

94. और जब काफिले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहा: मुझे यूसुफ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे

وَأَهْلَنَا الظَّارُّ وَجِئْنَا بِمِصْرَةٍ مُّزْجَجَةٍ قَاوِي
لَنَا الْكَيْلَ وَكَصَدَقَ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي
الْمُتَصَدِّقِينَ ۝

قَالَ هَلْ عَلَيْكُمْ مَا فَعَلْتُمْ يُّوسُفَ وَأَخِيهِ
إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ۝

قَالُوا إِنْ لَكَ لَأَنْتَ يُّوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ
وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ
يَشِيقُ يَصِيرُ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ۝

قَالُوا وَاللَّهِ لَقَدْ أَشْرَكْنَا بِاللَّهِ عَلِيمًا وَإِنْ
كُنَّا لَخَاطِئِينَ ۝

قَالَ لَا تَتُوبَ عَلَيْنَا الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

إِذْ هَبُوا بَقِيَّةَ مِصْرَ هَذَا أَقْلَقُوا عَلَى وَجْهِ
أَيِّ بَاتٍ يَصِيرُ أَوَاتُونِي بِأَهْلِيكُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

وَلَمَّا فَصَلَ الْعَيْبُرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ
رِيحَ يُّوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُدْبِتُوا بَنِيَّ ۝

बहका हुआ बूढ़ा न समझो।

95. उन लोगों^[1] ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।

قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِي ضَلٰلٍ اَقْبٰى ۝

96. फिर जब शुभ-सूचक आ गया, तो उस ने वह (कुत्ता) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहा: क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अल्लाह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيرَ اَلْقَاهُ عَلٰى وُجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۖ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

97. सब (भाईयों) ने कहा: हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा मांगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।

قَالُوا يَا اٰبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْخَطِيْٓءُ ۝

98. याकूब ने कहा: मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करूँगा, वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْٓ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝

99. फिर जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहा: नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अल्लाह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰى اِلَيْهِ اَبَوَيْهِ ۖ وَقَالَ ادْخُلُوْا مَعِيَ ۖ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْمُنِيْعُ ۝

100. तथा अपने माता-पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के समक्ष सज्दे में गिर गये।^[2] और यूसुफ़ ने कहा:

وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلٰى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۖ وَقَالَ يَا اَبٰٓءَ هٰذَا اَنۡوِيْلُكُمْ نَبَاً مِّنۡ قَبْلُ ۚ قَدْ جَعَلْنَا لِرَبِّيْ حَقًّا ۖ وَقدۡ اَحْسَنَ بِيْ ۖ اِذَا اَخْرَجَنِيْ

1 याकूब अलैहिस्सलाम के परिजनों ने जो फिलस्तीन में उन के पास थे।

2 जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो सब भाई तथा माता-पिता उन के सम्मान के लिये सज्दे में गिर गये। जो अब इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है। यही

हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सचच कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को गाँवों से मेरे पास (नगर में) ले आया, इस के पश्चात् कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

101. हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।

102. (हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिस की वही हम आप की ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

103. और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।

مِنَ السَّجِّينَ وَجَاءَ رِجْلُكَ مِنَ الْبَدَنِ وَمِنْ بَعْدِ
أَنْ تَرَى الشَّيْطَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ اخْوَتِي إِنَّ
رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

رَبِّ قَدْ أَنْتَبَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
أَنْتَ وَليُّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا
وَالْحَقَّنِي بِالصَّالِحِينَ ۝

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا أَمْرُهُمْ وَهُمْ يَكِيدُونَ ۝

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

उस स्वप्न का फल था जिस में यूसुफ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सितारों, सूर्य तथा चाँद को अपने लिये सज्दा करते देखा था।

104. और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (कुर्आन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।

وَمَا نَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

105. तथा आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण^[1]) हैं जिन पर से लोग गुज़रते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते।^[2]

وَكَايْنُ مِنْ آيَاتِهِ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَتُرُونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ۝

106. और उन में से अधिकतर अब्बाह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुश्रिक (मिश्रणवादी)^[3] भी हैं।

وَمَا يَزُومُنْ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ۝

107. तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अब्बाह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये, और वह अचेत रह जायें?

أَفَأَمْسُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

108. (हे नबी!) आप कह दें यही मेरी डगर है, मैं अब्बाह की ओर बुला रहा हूँ। मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ, और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अब्बाह पवित्र है, और मैं मुश्रिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَى بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَآلَا مِنْ الْمُشْرِكِينَ ۝

1 अर्थात् सहस्त्रों वर्ष की यह कथा इस विवरण के साथ वही द्वारा ही संभव है, जो आप के अब्बाह के नबी होने तथा कुर्आन के अब्बाह की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

2 अर्थात् विश्व की प्रत्येक चीज़ अब्बाह के अस्तित्व और उस की शक्ति और सद्गुणों की परिचायक है, मात्र सोच विचार की आवश्यकता है।

3 अर्थात् अब्बाह के अस्तित्व और गुणों का विश्वास रखते हैं, फिर भी पूजा-अर्चना अन्य की करते हैं।

109. और हम ने आप से पहले मानव^[1] पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशना भेजते रहे, नगरवासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन से पहले थे? और निश्चय आखिरत (परलोक) का घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अल्लाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

110. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये, और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते हैं बचा लेते हैं, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।

111. इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (कुरआन) ऐसी बातों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَلَا يَرَوْا كُذُوبًا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١١٠﴾

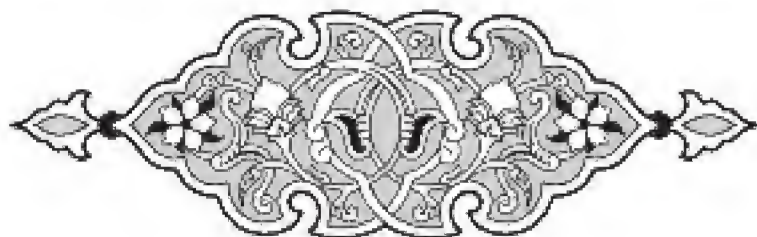
لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ

1 कुरआन की अनेक आयतों में आप को यह बात मिलेगी कि रसूलों का अस्वीकार उन की जातियों ने दो ही कारण से किया:

एक तो यह कि उन के एकेश्वरवाद की शिक्षा उन के बाप-दादा की परम्परा के विरुद्ध थी, इसलिये सत्य को जानते हुये भी उन्होंने उस का विरोध किया। दूसरा यह कि उन के दिल में यह बात नहीं उतरी कि कोई मानव पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? रसूल तो किसी फरिश्ते को होना चाहिये। फिर यदि रसूलों को किसी जाति ने स्वीकार भी किया तो कुछ युगों के पश्चात् उसे ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र बनाकर एकेश्वरवाद को आघात पहुँचाया और शिर्क (मिश्रणवाद) का द्वार खोल दिया। इसीलिये कुरआन ने इन दोनों कुविचारों का बार बार खण्डन किया है।

बना लिया जाता हो, परन्तु इस से पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (ब्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

الَّذِي يَبْدَأُ يَدْرِيهِ وَيَفْصِّلُ كُلَّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٥



सूरह रअद - 13

سُورَةُ الرَّعْدِ

सूरह रअद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 43 आयतें हैं।

- «रअद» का अर्थ: बादल की गरज है। इस सूरह की आयत नं॰ (13) में बताया गया है कि वह अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का गान करती है। इसी से इस का नाम रअद रखा गया है।
- इस सूरह में यह बताया गया है कि इस पुस्तक (कुर्आन पाक) का अल्लाह की ओर से उतरना सच्च है तथा उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से परलोक का विश्वास होता है तथा विरोधियों को चेतावनी दी गई है।
- तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के विषय तथा सत्य और असत्य के अलग अलग परिणाम को बताया गया है। और सत्य के अनुयायियों के गुण और परलोक में उन का परिणाम तथा विरोधियों के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।
- विरोधियों को चेतावनी दी गई, तथा ईमान वालों को शुभ सूचना सुनाई गई है।
- और अन्त में रिसालत (दूतत्व) के विरोधियों को सावधान करने साथ आज्ञाकारियों के अच्छे अन्त को प्रस्तुत किया गया है ताकि विरोधियों को अल्लाह से भय की प्रेरणा मिले।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग

الْمُتَّبِعِينَ لِمَا يَكْتُمُونَ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً مِمَّنْ يَتَّبِعُونَ

ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

2. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बद्ध किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (व्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।

3. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि से दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।

4. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं। कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो सूझ-बूझ रखते हैं।

5. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह^[1]

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَمِعَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُؤْتُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الْجِبَالِ جَعَلَ فِيهَا زَوَاجِدَ اثْنَيْنِ يُغِشِّي الْبَيْلَ النَّبَاتَاتِ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَبَعَةٌ وَجَنَّتْ مِنْ أَعْنَابٍ وَزَيْتُونٍ وَنَخِيلٍ صُنُوفٌ وَعَذْرُ صُنُوفٍ يُشْفِي بِهَا وَاجِدٌ وَتُفَصِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

وَإِنْ تُعْجِبُ فَعُجِبْ قَوْلُهُمْ إِذَا الْكَاكِرَاتُ رَأَتْهَا

1. क्यों कि वह जानते हैं कि बीज धरती में सड़कर मिल जाता है, फिर उस से

कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्होंने ने ही अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस में वह सदा रहेंगे।

6. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह है भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाएँ आ चुकी हैं, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।
7. तथा जो काफ़िर हो गये वह कहते हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा^[1] गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।
8. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है, तथा गर्भाशय जो कम और अधिक^[2] करते हैं, प्रत्येक चीज़ की

لَقَدْ خَلَقْنَا جَدِيدَةً أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ أَكْثَرُ الْأَغْلَالِ فِي أَعْقَابِهِمْ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑥

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَقْنَا مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّمَن يَشَاءُ عَلَى ظُلُمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ⑦

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ⑧

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ الرَّحَامُ وَمَا تَزِدُّوا مِنْ شَيْءٍ عِنْدَهُ يُبْقِنَا ⑨

पौधा उगता है।

- 1 जिस से स्पष्ट हो जाता कि आप अल्लाह के रसूल हैं।
- 2 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: ग़ैब (परोक्ष) की तालिकायें पाँच हैं। जिन को केवल अल्लाह ही जानता है: कल की बात अल्लाह ही जानता है, और गर्भाशय जो कमी करते हैं उसे अल्लाह ही जानता है। वर्षा कब होगी उसे अल्लाह ही जानता है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस धरती पर मरेगा। और न अल्लाह के सिवा कोई यह जानता

उस के यहाँ एक निश्चित मात्रा है।

9. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।
10. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बात चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अँधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।
11. उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं। उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अल्लाह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फेरा नहीं जा सकता, और न उन का उस (अल्लाह) के सिवा कोई सहायक है।
12. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा^[1] बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।
13. और कड़क, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फ़रिश्ते उस के भय से काँपते हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالْهَادِيَ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ①

سَوَاءٌ أَمْسَأْتُمْ مِنْ أَسْرَ الْقَوْلِ وَمَنْ جَهَرَهُ وَمَنْ
هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ②

لَهُ مُعَقِّدَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ
يَحْفَظُونَ أَمْرَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَى
مَا يَقُومُ حَتَّى يُعْزِرُ أَوْ مَا يَنْفِصُهُمْ إِذَا أَرَادَ
اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءَ فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ
مِنْ وَّالٍ ③

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْزِلُ
السَّحَابَ الثِّقَالَ ④

وَيَسْمِعُ الرُّعْدَ عَمْدًا وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ
وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ
يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ
الْمِحَالِ ⑤

है कि प्रलय कब आयेगी। (सहीह बुखारी-4697)

1 अर्थात् वर्षा होने की आशा।

उपाय बड़ा प्रबल है^[1]

14. उसी (अब्राह) को पुकारना सत्य है, और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की ओर फैलाया हुआ हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफिरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।

15. और अब्राह ही को सज्दा करता है, चाहे या न चाहे, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाईयाँ^[2] भी प्रातः और संध्या^[3]

16. उन से पुछो: आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दो: अब्राह है। कहो कि क्या तुम ने अब्राह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहो: क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होते हैं?^[4] अथवा उन्होंने अब्राह का साझी बना लिया

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ لَهُمْ شَيْئًا إِلَّا كَمَا يَمِيطُ كَفًى إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ أَفَاهُ وَمَأْمُورٌ بِالْإِيمَةِ وَمَا دَعَا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ قُلْ أَتَأْتِدُّكُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلَ اللَّهُ شُرَكَاءَ خَلْقِهِ كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

1 अर्थात् जैसे कोई प्यासा पानी की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना करे कि मेरे मुँह में आ जा तो न पानी में सुनने की शक्ति है न उस के मुँह तक पहुँचने की। ऐसे ही काफिर, अब्राह के सिवा जिन को पुकारते हैं न उन में सुनने की शक्ति है और न वह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं।

2 अर्थात् सब उस के स्वभाविक नियम के आधीन हैं।

3 यहाँ सज्दा करना चाहिये।

4 अंधेरे से अभिप्राय कुफ़ के अंधेरे, तथा प्राकश से अभिप्राय ईमान का प्राकश है।

है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अतः उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का उत्पत्ति करने वाला है,^[1] और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।

17. उस ने आकाश से जल बरसाया, जिस से वादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार वह पड़ी। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज़ को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है, फिर जो झाग है वह सूख कर ध्वस्त हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता^[2] है।

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्होंने ने नहीं मानी, तो यदि

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌ
بِقَدَرِهَا فَاقْتَبَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا
وَمَا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ
اَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلُهٗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ذَاكُمَا الرَّبُّ فَيُكْذِبُ
جُهَادًا وَّآمَامًا مَّا يَشْفَعُ النَّاسُ فَمِنْكُمْ
فِي الْاَرْضِ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْخَيْرُ وَالَّذِينَ لَمْ
يَسْتَجِيبُوْا لَهُ لَوْ اَنَّ لَهُمْ تَاْفِي الْاَرْضِ جَمِيعًا مِثْلُهٗ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की है। वही वास्तविक पूज्य है। और जो स्वयं उत्पत्ति हो वह पूज्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को कुर्आन पाक की और भी कई आयतों में प्रस्तुत किया गया है।
- 2 इस उदाहरण में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष को दिखाया गया है कि वही द्वारा जो सत्य उतारा गया है वह वर्षा के समान है। और जो उस से लाभ प्राप्त करते हैं वह नालों के समान हैं। और सत्य के विरोधी सैलाब के झाग के समान हैं जो कुछ देर के लिये उभरता है फिर विलय हो जाता है। दूसरे उदाहरण में सत्य को सोने और चाँदी के समान बताया गया है जिसे पिघलाने से मैल उभरता है फिर मैल उड़ता है। इसी प्रकार असत्य विलय हो जाता है। और केवल सत्य रह जाता है।

जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अब्राह के दण्ड से बचने के लिये) अर्धदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।

مَعَهُ لَأَفْتَدِىَ أُولَئِكَ لَكُمْ سُوءُ الْحِسَابِ
وَمَا دَأَبُكُمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْبِهَاقُ

19. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (कुरआन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَمَّنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ لَا يَتَذَكَّرُ أُولَئِكَ أَلْبَابٌ

20. जो अब्राह से किया बचन^[1] पूरा करते हैं, और बचन भंग नहीं करते।

الَّذِينَ يُؤْفِقُونَ بَعْدَ الْبَيْعِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْبَيْعَ

21. और उन (संबंधों) को जोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अब्राह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरते हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا آمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ

22. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीके से दान करते रहे, तो वही हैं, जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِعَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ مِنْ رَبِّهِمْ وَأَعْلَانِيَةٌ فَيَرْزُقُونَ بِالْعَمَلِ السَّيِّئَةِ أُولَئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ

23. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फरिश्ते उन के

جَعَلْتُ عَذَبَ يَدُ خُلُوتِهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمُ الْمَلَائِكَةُ يُدْخِلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ

पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत के लिये) प्रवेश करेंगे।

24. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर।

25. और जो लोग अल्लाह से किये बचन को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं, और अल्लाह ने जिस संबन्ध को जोड़ने का आदेश दिया¹ है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। वही हैं जिन के लिये धिक्कार है, और जिन के लिये बुरा आवास है।

26. और अल्लाह जिसे चाहे उसे जीविका फैला कर देता है, और जिसे चाहे नाप कर देता है। और वह (काफिर) संसारिक जीवन में मग्न है, तथा संसारिक जीवन परलोक की अपेच्छा तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है।

27. और जो काफिर हो गये, वह कहते हैं: इस पर इस के पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि वास्तव में अल्लाह जिसे चाहे कुपथ करता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उस की ओर ध्यानमग्न हों।

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنَجِّمُ عُقْبَى الدَّارِ ۝

وَالَّذِينَ يَتَّقُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَهُمْ بِهِ أَنْ يُوْصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْعَذَابُ وَالَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝

أَلَمْ يَكُنْ يَسْطُرُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَتُرْجَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَالْمَوْتَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا فِي الْأَخْرَاقِ الْإِمْتَارِ ۝

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُفْضِلُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَى الْبِرِّ مَنْ أَرَادَ ۝

1 हदीस में आया है कि जो व्यक्ति यह चाहता हो कि उस की जीविका अधिक, और आयु लम्बी हो तो वह अपने संबंधों के जोड़े। (सहीह बुखारी, 2067, सहीह मुस्लिम, 2557)

28. (अर्थात् वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝

29. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द^[1], और उत्तम ठिकाना है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسَنُ مَا يَجْزِيهِ ۝

30. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुजर चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनायें जो हम ने आप की ओर वही द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ يَا مَعْشَرَ الْمُؤْمِنِينَ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۝

31. यदि कोई ऐसा कुर्आन होता जिस से पर्वत खिसका^[2] दिये जाते, या धरती खण्ड-खण्ड कर दी जाती, या इस के द्वारा मुर्दा से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُفِّرَتْ بِهِ الرِّمَاقُ لَبَشَّرْنَا بِهِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ لَوْلِيَّ اللَّهِ لَهْدَىٰ النَّاسِ سَبِيلًا ۝ وَلَا تَزَالُ الْقَوْمُ الْكَافِرِينَ يَقُولُونَ نَحْنُ صَنَعُوا قَارِعَةً

1 यहाँ "तूबा" शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस का शाब्दिक अर्थ: सुख और सम्पन्नता है। कुछ भाष्यकारों ने इसे स्वर्ग का एक वृक्ष बताया है जिस का साया बड़ा आनन्ददायक होगा।

2 मक्का के काफिर आप से यह माँग करते थे कि यदि आप नबी है तो हमारे बाप दादा को जीवित कर दें। ताकि हम उन से बात करें। या मक्का के पर्वतों को खिसका दें। कुछ मुसलमानों के दिलों में भी यह इच्छा हुई कि ऐसा हो जाता है तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। उसी पर यह आयत उतरी। (देखिये: फत्हुल बयान, भाष्य सूरह रअद)

यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को है, तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता! और काफिरों को उन के कर्तुत के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन¹ आ जाये, और अल्लाह, वचन का विरुद्ध नहीं करता।

32. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफिरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?

33. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तुत से अवगत है, और उन्होंने ने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात² करते हो? बल्कि काफिरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं। और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।

34. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसंदेह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को

أَوْعَلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝

وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَآتَيْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْنَاهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

أَفَمَن مَّوْقَاهُ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لَهُ شُرَكَاءَ أَقْلَ مَكْرَهُمْ أَمْ يُشْفِقُونَ ۚ أَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَقْنَطُ بِهِم مِّنَ الْقَوْلِ بَلِّغُوا لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَاصْدُوا عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ۝

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَّاقٍ ۝

1 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का वचन है।

2 अर्थात् निर्मूल और निराधार।

अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं।

35. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का बचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफ़िरों का परिणाम नरक है।

36. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुर्आन) से प्रसन्न हो रहे हैं^[1] जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते^[2] आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत (बंदना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे जाना है।^[3]

37. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्बी आदेश के रूप में उतारा है^[4] और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلُّهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَخْزَابِ مَنْ يُكِبِّرُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيًّا تِلْكَ الْأُمُورُ أَنْ أُعِيدَ اللَّهُ وَلَا تَشْرِكْ بِهِ إِلَهٌ أَدْعُوا وَلِئِنْ مَالَ ﴿٣٦﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَ قَوْمٍ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ دُونِي وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

1 अर्थात् वह यहूदी, ईसाई और मूर्तिपूजक जो इस्लाम लाये।

2 अर्थात् जो अब तक मुसलमान नहीं हुये।

3 अर्थात् कोई ईमान लाये या न लाये, मैं तो कदापि किसी को उस का साझी नहीं बना सकता।

4 ताकि वह बहाना न करें कि हम कुर्आन को समझ नहीं सके, इसलिये कि सारे नबियों पर जो पुस्तकें उतरी वह उन्हीं की भाषाओं में थीं।

38. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियाँ तथा बाल-बच्चे^[1] बनाये। किसी रसूल के बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे। और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।^[2]

39. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित) रखता है। उसी के पास मूल^[3] पुस्तक है।

40. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफ़िरों) को दी है, अथवा आप को (पहले ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिसाब लेना हमारा काम है।

41. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से कम करते^[4] जा रहे हैं। और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

42. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षडयंत्र रचा, और षडयंत्र (को निष्फल करने) का सब

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرُسُلٍ أَنْ يَأْتِيَهُ
بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكِنْ أَجَلٌ كِتَابٌ ۝

يَعْلُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُخْفِي ۚ وَعِنْدَآ أُمُّ الْكِتَابِ ۝

وَأِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ
نَتَوَقَّعُكَ وَاتَّبَعَ عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا
وَاللَّهُ يَنْكُحُ لِمَنْ يَشَاءُ لِحُكْمِهِ وَهُوَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ۝

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبَلَغَهُ الْكُرْ
جِبُوعًا يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ

1 अर्थात् वह मनुष्य थे, नूर या फरिश्ते नहीं।

2 अर्थात् अल्लाह का वादा अपने समय पर पूरा हो कर रहेगा उस में देर- सवेर नहीं होगी।

3 अर्थात् (लौहे महफूज) जिस में सब कुछ अंकित है।

4 अर्थात् मुसलमानों की विजय द्वारा काफ़िरों के देश में कमी करते जा रहे हैं।

अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफ़िरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है?

الْكَافِرُ لِمَنْ عُنِيَ الدَّارُ ﴿١٣﴾

43. (हे नबी!) जो काफ़िर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफी है।^[1]

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَتَمَّ مَوْلَانُكُمْ
يَا أَيُّهَا الشَّهِيدُ أَبَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ
الْكِتَابِ ﴿١٣﴾

1 अर्थात् उन अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की जिन को अपनी पुस्तकों से नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आने की शुभसूचना का ज्ञान हुआ तो वह इस्लाम ले आये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा नजाशी (हब्शा देश का राजा), और तमीम दारी इत्यादि। और आप के रसूल होने की गवाही देते हैं।

सूरह इब्राहीम - 14

سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ

सूरह इब्राहीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं॰ 35 में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ का वर्णन है। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में रसूल तथा कुर्आन के भेजने का कारण बताया गया है। और नबियों के कुछ एतिहास प्रस्तुत किये गये हैं। जिन से रसूलों के विरोधियों के दुष्परिणाम सामने आते हैं। और परलोक में भी उस दण्ड की झलक दिखायी गई है जिस से रोयें खड़े हो जाते हैं।
- इस में बताया गया है कि ईमान वाले कैसे सफल होंगे, तथा काफिरों को अन्नाह के उपकार का आभारी न होने पर सावधान करने के साथ ही ईमान वालों को अन्नाह का कृतज्ञ होने की नीति बतायी गयी है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) कि उस एतिहासिक प्रार्थना का वर्णन है जो उन्हों ने अपनी संतति को शिर्क से सुरक्षित रखने के लिये की थी। किन्तु आज उन की संतान जो कुछ कर रही है वह उन की दुआ के सर्वथा विपरीत है।
- और अन्त में प्रलय और उस की यातना का भ्याव चित्रण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, रा। यह (कुर्आन) एक पुस्तक है, जिसे हम ने आप की ओर अवतरित किया है, ताकि आप लोगों को अंधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें, उन के पालनहार की अनुमति से, उस की राह की ओर जो बड़ा प्रबल सराहा हुआ है।

الرَّحْمَنُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

2. अब्राह की ओर। जिस के अधिकार में आकाश और धरती का सब कुछ है। तथा काफिरों के लिये कड़ी यातना के कारण विनाश है।
3. जो संसारिक जीवन को परलोक पर प्रधानता देते हैं, और अब्राह की डगर (इस्लाम) से रोकते हैं, और उसे कुटिल बनाना चाहते हैं, वही कुपथ में दूर निकल गये हैं।
4. और हम ने किसी (भी) रसूल को उस की जाति की भाषा ही में भेजा, ताकि वह उन के लिये बात उजागर कर दे। फिर अब्राह जिसे चाहता है कुपथ करता है और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और वही प्रभुत्वशाली और हिकमत वाला है।
5. और हम ने मूसा को अपनी आयतों (चमत्कारों) के साथ भेजा, ताकि अपनी जाति को अन्धेरो से निकाल कर प्रकाश की ओर लायें। और उन्हें अल्लाह के दिनों (पुरस्कार और यातना) का स्मरण कराओ। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं, प्रत्येक अति सहनशील कृतज्ञ के लिये।
6. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा: अपने ऊपर अब्राह के पुरस्कार को याद करो, जब उस ने तुम को फिरओनियों से मुक्त किया, जो तुम को घोर यातना दे रहे थे। और तुम्हारे पुत्रों को बध कर रहे थे और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَوَيْلٌ
لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَعْتَوُهَا عَصَابًا
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ
لَهُمْ بَيِّنَاتٍ مِنَ اللَّهِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ
مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

وَاذْكُرْ آلَ مُوسَىٰ إِذْ ذَكَرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
عَلَيْهِمْ إِذْ أَخْرَجَهُمْ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ
يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيَدْعُونَ
أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ
مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ

रहने देते^[1] थे, और इस में तुम्हारे पालनहार की ओर से एक महान् परीक्षा थी।

7. तथा (याद करो) जब तुम्हारे पालनहार ने घोसणा कर दी कि यदि तुम कृतज्ञ बनोगे तो तुम्हें और अधिक दूंगा। तथा यदि अकृतज्ञ रहोगे तो वास्तव में मेरी यातना बहुत कड़ी है।

8. और मूसा ने कहा: यदि तुम और सभी लोग जो धरती में है कुफ़्र करें, तो भी अल्लाह निरीह तथा^[2] सराहा हुआ है।

9. क्या तुम्हारे पास उन का समाचार नहीं आया, जो तुम से पहले थे: नूह तथा आद और समूद की जाति का और जो उन के पश्चात् हुये जिन को अल्लाह ही जानता है? उन के पास उन के रसूल प्रत्यक्ष प्रमाण लाये, तो उन्होंने ने अपने हाथ अपने मुखों में दे^[3] लिये, और कह दिया कि हम उस संदेश को नहीं मानते, जिस के साथ तुम भेजे गये हो। और वास्तव में उस के बारे में संदेह में है, जिस की ओर हमें बुला रहे हो (तथा) द्विधा में है।

وَإِذَا تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ①

وَقَالَ مُوسَى إِنْ تَكْفُرُوا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأَنَا اللَّهَ لَعْنَتِي حَمِيدٌ ②

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَشُعُوبٌ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ رُحُومًا ۚ بِالسِّبْتِ فَرَّدُوا أَيَّيِّهِمْ فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّ إِلَهِنَا مِنْهَا بَعْدُ خُوفًا ۚ أَلَيْسَ لِرَبِّهِ ③

1 ताकि उन के पुरुषों की अधिक संख्या से अपने राज्य के लिये भय न हो। और उन की स्त्रियों का अपमान करें।

2 हदीस में आया है कि अल्लाह तआला फरमाता है: हे मेरे बंदो! यदि तुम्हारे अगले-पिछले तथा सब मनुष्य और जिन संसार के सब से बुरे मनुष्य के बराबर हो जायें तो भी मेरे राज्य में कोई कमी नहीं आयेगी। (सहीह मुस्लिम, 2577)

3 यह ऐसी ही भाषा शैली है, जिसे हम अपनी भाषा में बोलते हैं कि कानों पर हाथ रख लिया, और दाँतों से उंगली दबा ली।

10. उन के रसूलों ने कहा: क्या उस अल्लाह के बारे में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। वह तुम्हें बुला^[1] रहा है ताकि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे, और तुम्हें एक निर्धारित^[2] अवधि तक अवसर दे। उन्होंने ने कहा: तुम तो हमारे ही जैसे एक मानव पुरुष हो, तुम चाहते हो कि हमें उस से रोक दो, जिस की पूजा हमारे बाप-दादा कर रहे थे। तुम हमारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।
11. उन से उन के रसूलों ने कहा: हम तुम्हारे जैसे मानव-पुरुष ही हैं, परन्तु अल्लाह अपने भक्तों में से जिस पर चाहे उपकार करता है, और हमारे बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति के बिना कोई प्रमाण ला दें। और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये।
12. और क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जब कि उस ने हमें हमारी राहें दर्शा दी हैं? और हम अवश्य उस दुःख को सहन करेंगे, जो तुम हमें दोगे, और अल्लाह ही पर भरोसा करने वालों को निर्भर रहना चाहिये।
13. और काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा: हम अवश्य तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे, अथवा तुम्हें हमारे पंथ में आना

قَالَتْ رَبُّهُمْ أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِنْ
ذُنُوبِكُمْ وَيُخَوِّدَكُمْ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوا
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا شُرَكَاءُ لَكُمْ تَتَّبِعُونَ
تَصُدُّونَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ أَنْ يَأْتِيَنَّكُمْ
فَاتُّوهُنَّ بِمُلُوكٍ مُبِينِينَ ٥

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنَّمَا نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَكِنَّ
اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا
أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ⑤

وَمَا لَنَا إِلَّا أَنْتَ كُلٌّ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ هَدانا سُبُلَنَا
وَلَتَصِيرَنَّ عَلَى مَا أَدَّيْتُمُونَا وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلرُّسُلِ إِنَّا لَنَنُفِخُ فِيكُم مِّنْ أَرْضٍ مَّأْرُوسَةٍ أَنتُمْ تَعْبُدُونَ فِي يَوْمِكُنَا ذَا قُوَّةٍ أَلَيْسَ فِي يَدَيْهِمُ السُّلْطَانُ

1 अपनी आज्ञा पालन की ओर।

2. अर्थात् मरण तक संसारिक यातना से सुरक्षित रखे। (कूर्तबी)

होगा। तो उन के पालनहार ने उन की ओर वही की, कि हम अवश्य अत्याचारियों का विनाश कर देंगे।

14. और तुम्हें उन के पश्चात् धरती में बसा देंगे, यह उस के लिये है, जो मेरे महिमा से खड़े^[1] होने से डरा, तथा मेरी चेतावनी से डरा।

15. और उन (रसूलों) ने विजय की प्रार्थना की, तो सभी उद्दंड विरोधी असफल हो गये।

16. उस के आगे नरक है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा।

17. वह उसे थोड़ा-थोड़ा गले से उतारेगा, मगर उतार नहीं पायेगा। और उस के पास प्रत्येक स्थान से मौत आयेगी जब कि वह मरेगा नहीं। और उस के आगे भीषण यातना होगी।

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार के साथ कुफ्र किया उन के कर्म उस राख के समान हैं, जिसे आँधी के दिन की प्रचण्ड वायु ने उड़ा दिया हो। यह लोग अपने किये में से कुछ भी नहीं पा सकेंगे, यही (सत्य से) दूर का कुपथ है।

19. क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने आकाशों तथा धरती की रचना सत्य के साथ की है, यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाये, और नयी उत्पत्ति ला दे?

20. और वह अल्लाह पर कठिन नहीं है।

لَا تُهْلِكُنَّ الظَّالِمِينَ ﴿١﴾

وَلَنُيَسِّتَنَّكَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَالَزَ وَعِيدِي ﴿٢﴾

وَأَسْتَفْتُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٣﴾

مِنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَى مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ ﴿٤﴾

يَجْعَلُوهُ وَلا يُكَادِّيهِمْ لَعْنَةُ رَبِّهِمُ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُمْ بِمُعِيدِينَ ﴿٥﴾ وَرَأَيْتُ عَذَابَ عَظِيمٍ ﴿٦﴾

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَأَقْبِرُونَّ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَلِكَ هُوَ الصَّلَاةُ الْبُعِيدُ ﴿٧﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ يَاشِئُكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿٨﴾

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ﴿٩﴾

1 अर्थात् संसार में मेरी महिमा का विचार कर के सदाचार किया।

21. और सब अल्लाह के सामने खुल कर^[1] आ जायेंगे, तो निर्बल लोग उन से कहेंगे जो बड़े बन रहे थे कि हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातना से बचाने के लिये हमारे कुछ काम आ सकोगे? वे कहेंगे: यदि अल्लाह ने हमें मार्ग दर्शन दिया होता, तो हम अवश्य तुम्हें मार्ग दर्शन दिखा देते। अब तो समान है, चाहे हम अधीर हों, या धैर्य से काम लें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं है।

22. और शैतान कहेगा, जब निर्णय कर दिया^[2] जायेगा: वास्तव में अल्लाह ने तुम्हें सत्य वचन दिया था, और मैं ने तुम्हें वचन दिया तो अपना वचन भंग कर दिया, और मेरा तुम पर कोई दबाव नहीं था, परन्तु यह कि मैं ने तुम को (अपनी ओर) बुलाया, और तुम ने मेरी बात स्वीकार कर ली। अतः मेरी निन्दा न करो, स्वयं अपनी निन्दा करो, न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और न तुम मेरी सहायता कर सकते हो। वास्तव में मैं ने उसे अस्वीकार कर दिया, जो इस से पहले^[3] तुम ने मुझे अल्लाह का साझी बनाया था। निस्संदेह अत्याचारियों के लिये दुख दायी यातना है।

23. और जो ईमान लाये, और सदाचार

وَرَزَّوْا إِلَهُ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا أَفَهَلْ أَنْتُمْ مُّقْتَدُونَ
عَذَابٍ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ قَالُوا لَوْ هَدَانَا
اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَحْيَيْنَا أَمْ صَبَرْنَا
مَا لَنَا مِنْ مَحْضَبٍ ۝

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لِنَاقِضَةِ الْأَمْرِ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ
وَعَدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي
عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ
لِي قَلِيلًا تَكْفُرُونَ وَلَوْ مَوَّاهُ أَنْفُسَكُمْ مَا أَنَا
بِصَاحِبِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُضِيِّنِي إِنِّي كُفِّرْتُ بِمَا
أَشْرَكْتُمْ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से निकल कर।

2 स्वर्ग और नरक के योग्य का निर्णय कर दिया जायेगा।

3 संसार में।

करते रहे, उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दिया जायेगा जिन में नहरें बहती होंगी। वह अपने पालनहार की अनुमति से उस में सदा रहने वाले होंगे, और उस में उन का स्वागत यह होगा: तुम पर शान्ति हो।

24. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ने कलिमा तय्येबा^[1] (पवित्र शब्द) का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष से दिया है, जिस की जड़ (भूमि में) सुदृढ़ स्थित है, और उस की शाखा आकाश में है?

25. वह अपने पालनहार की अनुमति से प्रत्येक समय फल दे रहा है। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

26. और बुरी^[2] बात का उदाहरण एक बुरे वृक्ष जैसा है, जिसे धरती के ऊपर से उखाड़ दिया गया हो, जिस के लिये कोई स्थिरता नहीं है।

نَجْرِي مِنْ نَعْمَتِ الْأَنْهَارِ خُلْدِيْنَ فِيْهَا يَآدِيْنَ رَبِّهِمْ يَتِيْعَتُهُمْ فِيْهَا سَلَامٌ ۝

الْمَرْكَبُ مَرْبِ اللَّهِ مَثَلًا لِّكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝

تَوَاتَى الْأَهْلُ كُلُّ جُنٍّ يَآدِيْنَ رَبِّهَا وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

1 (कलिमा तय्येबा) से अभिप्रात "ला इलाहा इल्लल्लाह" है। जो इस्लाम का धर्म सूत्र है। इस का अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं है। और यही एकेश्वरवाद का मूलाधार है। अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे कि आप ने कहा: मुझे ऐसा वृक्ष बताओ जो मुसलमान के समान होता है। जिस का पत्ता नहीं गिरता, तथा प्रत्येक समय अपना फल दिया करता है? इब्ने उमर ने कहा: मेरे मन में यह बात आयी कि वह खजूर का वृक्ष है। और अबू बक्र तथा उमर को देखा कि बोल नहीं रहे हैं इसलिये मैं ने भी बोलना अच्छा नहीं समझा। जब वे कुछ नहीं बोले, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: वह खजूर का वृक्ष है। (संक्षिप्त अनुवाद के साथ, सहीह बुखारी: 4698, सहीह मुस्लिम: 2811)

2 अर्थात् शिर्क तथा मिश्रणवाद की बात।

27. अब्राह ईमान वालों को स्थिर^[1]
कथन के सहारे लोक तथा परलोक
में स्थिरता प्रदान करता है, तथा
अत्याचारियों को कुपथ कर देता है,
और अब्राह जो चाहता है, करता है।
28. क्या आप ने उन्हें^[2] नहीं देखा जिन्हों
ने अब्राह के अनुग्रह को कुफ्र से
बदल दिया, और अपनी जाति को
बिनाश के घर में उतार दिया।
29. (अर्थात्) नरक में, जिस में वह झोंके
जायेंगे। और वह रहने का बुरा स्थान
है।
30. और उन्होंने ने अब्राह के साझी बना
लिये, ताकि उस की राह (सत्धर्म) से
कुपथ कर दें। आप कह दें कि तनिक
आनन्द ले लो, फिर तुम्हें नरक की
ओर ही जाना है।
31. (हे नबी!) मेरे उन भक्तों से कह
दो, जो ईमान लाये हैं, कि नमाज़
की स्थापना करें और उस में से जो
हम ने प्रदान किया है, छुपे और खुले
तरीके से दान करें, उस दिन के आने
से पहले जिस में न कोई क्रय-विक्रय

يُكَيِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا الْقَوْلَ الثَّابِتَ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ
وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَآخَلُوا
قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

جَهَنَّمَ يَمْشُونَ فِيهَا وَيُخَسِّسُونَ الْقَرَارِ ﴿٢٩﴾

وَجَعَلُوا لِلَّهِ إِتْدَادًا يُضِلُّوهُ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ
تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا سَعِيرَ فِيهِ وَلَا جُلُودٍ ﴿٣١﴾

1 स्थित तथा दृढ़ कथन से अभिप्रेत "ला इलाहा इल्लाह" है। (कुर्तुबी)

बराअ बिन आज़िब रज़िअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आप ने कहा: मुसलमान से जब कब्र में प्रश्न किया जाता है, तो वह «ला इलाहा इल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह» की गवाही देता है। अर्थात् अब्राह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब्राह के रसूल हैं। इसी के बारे में यह आयत है। (सहीह बुखारी: 4699)

2 अर्थात्: मक्का के मुशरिक, जिन्हों ने आप का विरोध किया। (देखिये: सहीह बुखारी: 4700)

होगा, और न कोई मैत्री।

32. और अल्लाह वही है, जिस ने तुम्हारे लिये आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की, और आकाश से जल बरसाया फिर उस से तुम्हारी जीविका के लिये अनेक प्रकार के फल निकाले। और नौका को तुम्हारे वश में किया, ताकि सागर में उस के आदेश से चले, और नदियों को तुम्हारे लिये वशवर्ती किया।

33. तथा तुम्हारे लिये सूर्य और चाँद को काम में लगाया जो दोनों निरन्तर चल रहे हैं। और तुम्हारे लिये रात्रि और दिवस को वश में⁽¹⁾ कर दिया।

34. और तुम्हें उस सब में से कुछ दिया, जो तुम ने माँगा।⁽²⁾ और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो, तो भी नहीं कर सकते। वास्तव में मनुष्य बड़ा अत्याचारी कृतघ्न (ना शुकरा) है।

35. तथा (याद करो) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! इस नगर (मक्का) को शान्ति का नगर बना दे, और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

36. मेरे पालनहार! इन मूर्तियों ने बहुत से लोगों को कुपथ किया है, अतः जो

أَلَلَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتَخْرُجُ بِهِ مِنَ
الشَّجَرِ رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفَلَكَ لِتَجْرِيَ فِي
الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَلِيلَيْنِ وَسَخَّرَ
لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ

وَأَنزَلْنَا مِنْ كُلِّ مَاءٍ شَجَرًا وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَتَ
اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَقَلْبُومٌ كَفَّارٌ

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ
أَمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ

رَبِّ إِنَّمَنْ أَضَلَّنَا كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ

1 वश में करने का अर्थ यह है कि अल्लाह ने इन के ऐसे नियम बना दिये हैं, जिन के कारण यह मानव के लिये लाभदायक हो सकें।

2 अर्थात् तुम्हारी प्रत्येक प्राकृतिक माँग पूरी की, और तुम्हारे जीवन की आवश्यकता के सभी संसाधनों की व्यवस्था कर दी।

मेरा अनुयायी हो, वही मेरा है। और जो मेरी अवैज्ञा करे, तो वास्तव में तू अति क्षमाशील दयावान् है।

37. हमारे पालनहार! मैं ने अपनी कुछ संतान मरुस्थल की एक वादी (उपत्यका) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के पास बसा दी है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करे। अतः लोगों के दिलों को उन की ओर आकर्षित कर दे, और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वह कृतज्ञ हों।

38. हमारे पालनहार! तू जानता है, जो हम छुपाते और जो व्यक्त करते हैं। और अल्लाह से कुछ छुपा नहीं रहता, घरती में और न आकाशों में।

39. सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किये। वास्तव में मेरा पालनहार प्रार्थना अवश्य सुनने वाला है।

40. मेरे पालनहार! मुझे नमाज़ की स्थापना करने वाला बना दे, तथा मेरी संतान को। हे मेरे पालनहार! और मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

41. हे हमारे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे, तथा मेरे माता-पिता और ईमान वालों को, जिस दिन हिसाब लिया जायेगा।

42. और तुम कदापि अल्लाह को उस से अचेत न समझो जो अत्याचारी कर

فَمَنْ تَبِعْنِي فَإِنَّهُ مِنِّي وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦﴾

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنْ الثَّمَرِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٧﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا تُعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٨﴾

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٩﴾

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿١٠﴾

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿١١﴾

وَلَا تَحْصِبْ لِلَّهِ عَاقِلًا يَعْْمَلُ

रहे हैं। वह तो उन्हें उस^[1] दिन के लिये टाल रहा है, जिस दिन आखें खुली रह जायेंगी।

43. वह दौड़ते हुये अपने सिर ऊपर किये हुये होंगे, उन की आँखें उन की ओर नहीं फिरेँगी, और उन के दिल गिरे^[2] हुये होंगे।

44. (हे नबी!) आप लोगों को उस दिन से डरा दें, जब उन पर यातना आ जायेगी। तो अत्याचारी कहेंगे: हमारे पालनहार! हमें कुछ समय तक अवसर दे, हम तेरी बात (आमंत्रण) स्वीकार कर लेंगे, और रसूलों का अनुसरण करेंगे, क्या तुम वही नहीं हो जो इस से पहले शपथ ले रहे थे कि हमारा पतन होना ही नहीं है?

45. जब कि तुम उन्हीं की वस्तियों में बसे हो, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया, और तुम्हारे लिये उजागर हो गया है कि हम ने उन के साथ क्या किया? और हम ने तुम्हें बहुत से उदाहरण भी दिये हैं।

46. और उन्होंने ने अपना षड्यंत्र रच लिया तथा उन का षड्यंत्र अल्लाह के पास^[3] है। और उन को षड्यंत्र ऐसा नहीं था कि उस से पर्वत टल जाये।

الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۚ

مُهْطِعِينَ مُقْنِعِينَ رُؤُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَارٌ ۝

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا آخِرْنَا إِلَىٰ آجَلٍ قَرِيبٍ نَّحِبُّ دَعْوَتَكَ وَتَتَّبِعِ الرَّسُولَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا أَقْسَبُ لَهُمْ مِنْ قَبْلِ مَا كَانُوا مِنْ نَوَالٍ ۝

وَسَكَنُوا فِي مَسَاكِينِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ وَبَيَّنَّ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْآمَثَالَ ۝

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन के लिये।

2 यहाँ अर्बी भाषा का शब्द "हवाअ" प्रयुक्त हुआ है। जिस का एक अर्थ शून्य (खाली), अर्थात् भय के कारण उसे अपनी सुध न होगी।

3 अर्थात् अल्लाह उस को निष्फल करना जानता है।

47. अतः कदापि यह न समझें कि अल्लाह अपने रसूलों से किया वचन भंग करने वाला है, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली बदला लेने वाला है।
48. जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से, तथा आकाश बदल दिये जायेंगे, और सब अल्लाह के समक्ष⁽¹⁾ उपस्थित होंगे, जो अकेला प्रभुत्वशाली है।
49. और आप उस दिन अपराधियों को जंजीरों में जकड़े हुये देखेंगे।
50. उन के वस्त्र तारकोल के होंगे, और उन के मुखों पर अग्नि छायी होगी।
51. ताकि अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उस के किये का बदला दे। निःसंदेह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
52. यह मनुष्यों के लिये एक संदेश है, और ताकि इस के द्वारा उन को सावधान किया जाये। और ताकि वे जान लें कि वही एक सत्य पूज्य है और ताकि मतिमान लोग शिक्षा ग्रहण करें।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفًا وَعْدَهُ رُسُلُهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
ذُو نِقَامٍ ﴿٤٧﴾

يَوْمَ يُبَدِّلُ الْأَرْضَ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ
وَيَرْزُقُ الْوَحِيدَ الْقَهَّارَ ﴿٤٨﴾

وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ﴿٤٩﴾

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرٍ أَوْ تَغْشَى وَجُوهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

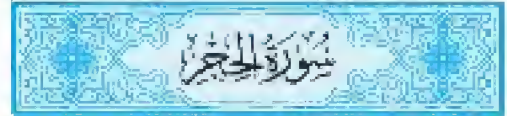
لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ
الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

هَذَا بَلَاغٌ لِلنَّاسِ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥٢﴾

إِلَهُ الْوَاحِدُ وَلَيْدٌ كَرِهُوا آلَ الْاَلْبَابِ ﴿٥٣﴾

1 अर्थात् अपनी कब्रों (समाधियों) से निकल कर।

सूरह हिज्र - 15



सूरह हिज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 99 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 80-87 में हिज्र के वासी: ((समूद जाति)) के अपने रसूलों के झुठलाने के कारण विनाश की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम ((सूरह हिज्र)) है।
- इस की आयत 1 में कुर्आन की विशेषता का वर्णन है। तथा 2-15 में रिसालत के विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है। फिर आयत 16 से 25 तक में उन निशानियों की ओर संकेत किया गया है जिन पर विचार करने से बह्नी तथा रिसालत और हथ्र से संबंधित संदेहों का निवारण हो जाता है।
- आयत 26-44 में इब्लीस के कुपथ हो जाने का वर्णन है जो मनुष्य को कुपथ करने के लिये बह्नी तथा रिसालत के बारे में संदेह पैदा कर के उसे सत्य से दूर रखना चाहता है जिस का परिणाम नरक है। तथा आयत 45 से 48 तक उन के अच्छे परिणाम को बताया गया है जो उस की बात में नहीं आये और अल्लाह से डरते तथा शिर्क और उस की अवैज्ञा से बचते रहे।
- आयत 49-84 में नबियों के इतिहास से यह बताया गया है कि अल्लाह के सदाचारी भक्तों पर उस की दया होती है और दूराचारियों पर यातना के कोड़े बरसते हैं।
- आयत 85-99 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा सदाचारियों के लिये दिलासा का सामान भी है और यह निर्देश भी है कि जो माया मोह में मग्न हैं उन के आर्थिक धन की ओर लालसा से न देखें बल्कि उस बड़े धन का आदर करें जो कुर्आन के रूप में उन्हें प्रदान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ, लाम, रा। वह इस पुस्तक,
तथा खुले कुर्आन की आयतें हैं।
2. (एक समय आयेगा), जब काफिर
यह कामना करेंगे कि क्या ही अच्छा
होता यदि वे मुसलमान^[1] होते?
3. (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें, वह
खाते, तथा आनन्द लेते रहें, और
उन्हें आशा निश्चेत किये रहे, फिर
शीघ्र ही वह जान लेंगे।^[2]
4. और हम ने जिस बस्ती को भी ध्वस्त
किया उस के लिये एक निश्चित
अवधि अंत थी।
5. कोई जाति न अपनी निश्चित अवधि
से आगे जा सकती है, और न पीछे
रह सकती।
6. तथा उन (काफिरों) ने कहा: हे
वह व्यक्ति जिस पर यह शिक्षा
(कुर्आन) उतारा गया है! वास्तव में
तू पागल है।
7. क्यों हमारे पास फ़रिश्तों को नहीं
लाता यदि तू सच्चों में से है?

الْحَرَفَاتُ تِلْكَ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ
مُّبِينٍ ۝

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَ كَانُوا
مُسْلِمِينَ ۝

ذَرُهُمْ يَكَلُوا وَيَتَمَسَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

وَمَا أَهْلُكُنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ
مَّعْلُومٌ ۝

مَا تَسْبِيحٌ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا حَلَّتْهَا وَ مَا يَسْتَخِرُونَ ۝

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ
لَجُنُونٌ ۝

لَوْ مَا تَأْتِيَنَا بِالْبَلَاغِ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

1. ऐसा उस समय होगा जब फ़रिश्ते उन की आत्मा निकालने आयेंगे, और
उन को उन का नरक का स्थान दिखा देंगे। और क्यामत के दिन तो ऐसी
दूर्दशा होगी कि धूल हो जाने की कामना करेंगे। (देखिये: सूरह नवा, आयत:
40)

2. अपने दुष्परिणाम का।

8. जब कि हम फ़रिश्तों को सत्य (निर्णय) के साथ ही^[1] उतारते हैं, और उन्हें उस समय कोई अवसर नहीं दिया जाता।
9. वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा (कुर्आन) उतारी है, और हम ही उस के रक्षक^[2] हैं।
10. और हम ने आप से पहले भी प्राचीन (विगत) जातियों में रसूल भेजे।
11. और उन के पास जो भी रसूल आया, परन्तु वह उस के साथ परिहास करते रहे।

مَا نَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِلَّا مُنْقَرِفِينَ ۝

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلُ الذِّكْرَ وَإِلَهُ الْحَفِظُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِعْرِ الْأَوَّلِينَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

1 अर्थात् यातनाओं के निर्णय के साथ।

2 यह इतिहासिक सत्य है। इस विश्व के धर्म ग्रंथों में कुर्आन ही एक ऐसा धर्म ग्रंथ है जिस में उस के अवतरित होने के समय से अब तक एक अक्षर तो क्या एक मात्रा का भी परिवर्तन नहीं हुआ। और न हो सकता है। यह विशेषता इस विश्व के किसी भी धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है। तौरात हो अथवा इंजील या इस विश्व के अन्य धर्म शास्त्र हों, सब में इतने परिवर्तन किये गये हैं कि सत्य मूल धर्म की पहचान असम्भव हो गयी है।

इसी प्रकार इस (कुर्आन) की व्याख्या जिसे हदीस कहा जाता है वह भी सुरक्षित है। और उस का पालन किये बिना किसी का जीवन इस्लामी नहीं हो सकता। क्योंकि कुर्आन का आदेश है कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हें जो दें उस को ले लो। और जिस से रोक दें उस से रुक जाओ। (देखिये: सूरह हथ्र आयत नं०: 7)

कुर्आन कहता है कि हे नबी! अब्बाह ने आप पर कुर्आन इस लिये उतारा है कि आप लोगों के लिये उस की व्याख्या कर दें। (सूरह नहल, आयत नं०: 44) जिस व्याख्या से नमाज़, व्रत आदि इस्लामी अनिवार्य कर्तव्यों की विधि का ज्ञान होता है। इसी लिये उस को सुरक्षित किया गया है। और हम हदीस के एक-एक राबी के जन्म और मौत का समय और उस की पूरी दशा को जानते हैं। और यह भी जानते हैं कि वह विश्वासनीय है या नहीं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि इस संसार में इस्लाम के सिवा कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस की मूल पुस्तकें तथा उस के नबी की सारी बातें सुरक्षित हों।

12. इसी प्रकार हम इसे^[1] अपराधियों के दिलों में पुरो देते हैं।
13. वे उस पर ईमान नहीं लाते, और प्रथम जातियों से यही रीति चली आ रही है।
14. और यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल देते, फिर वह उस में चढ़ने लगते।
15. तब भी वह यही कहते कि हमारी आँखें धोखा खा रही हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।
16. हम ने आकाश में राशि चक्र बनाये हैं, और उसे देखने वालों के लिये सुसिज्जत किया है।
17. और उसे प्रत्येक धिक्कारे हुये शैतान से सुरक्षित किया है।
18. परन्तु जो (शैतान) चोरी से सुनना चाहे, तो एक खली ज्वाला उस का पीछा करती^[2] है।
19. और हम ने धरती को फैलाया, और उस में पर्वत बना दिये, और उस में हम ने प्रत्येक उचित चीजें उगायीं।
20. और हम ने उस में तुम्हारे लिये जीवन के संसाधन बना दिये, तथा उन के लिये जिन के जीविका दाता तुम नहीं हो।

كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُغْرِبِينَ ۝

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعُوجُونَ ۝

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ عَمَّنْ قَوْمٌ مِّنْ حُورُونَ ۝

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝

وَحَفِظْنَا بِهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِيزٍ ۝

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَتَبِعَهُ بِشَهِابٍ مُّبِينٍ ۝

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا زَوَايِرَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْرُودٍ ۝

وَجَعَلْنَا الْكُفَّ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لُّسْمُ لَهُ يَرْزُقُهُ ۝

1 अर्थात् रसूलों के साथ परिहास को, अर्थात् उसे इस का दण्ड देंगे।

2 शैतान चोरी से फ़रिश्तों की बात सुनने का प्रयास करते हैं। तो ज्वलंत उल्का उन्हें मारता है। अधिक विवरण के लिये देखिये: (सूरह मुल्क, आयत नं॰: 5)

21. और कोई चीज़ ऐसी नहीं है, जिस के कोष हमारे पास न हों, और हम उसे एक निश्चित मात्रा ही में उतारते हैं।
22. और हम ने जलभरी वायुओं को भेजा, फिर आकाश से जल बरसाया, और उसे तुम्हें पिलाया, तथा तुम उस के कोषाधिकारी नहीं हो।
23. तथा हम ही जीवन देते, तथा मारते हैं, और हम ही सब के उत्तराधिकारी हैं।
24. तथा तुम में से विगत लोगों को जानते हैं और भविष्य के लोगों को भी जानते हैं।
25. और वास्तव में आप का पालनहार ही उन्हें एकत्र करेगा^[1], निश्चय वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।
26. और हम ने मनुष्य को सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से बनाया।
27. और इस से पहले जिनों को हम ने अग्नि की ज्वाला से पैदा किया।
28. और (याद करो) जब आप के पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: मैं एक मनुष्य उत्पन्न करने वाला हूँ, सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से।
29. तो जब मैं उसे पूरा बना दूँ, और उस में अपनी आत्मा फूँक दूँ, तो उस के लिये सज्दे में गिर जाना।^[2]

وَأَنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خِزْيَانُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ﴿٢١﴾

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاحِقَ فَإِذَا نَزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءٌ فَأَنشَيْنَاكُمْ مَاءً وَمَا أَنتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿٢٢﴾

وَإِنَّا لِلنَّحْسِ نَحْيٌ وَنُفَيْتٌ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْبَلِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ﴿٢٤﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَبِأٍ مُسْنُونٍ ﴿٢٦﴾

وَالْجِبَالِ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السُّمُومِ ﴿٢٧﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكِكُوْا إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَبِأٍ مُسْنُونٍ ﴿٢٨﴾

وَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢٩﴾

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

2 फरिश्तों के लिये आदम का सज्दा अल्लाह के आदेश से उन की परिक्षा के लिये था किन्तु इस्लाम में मनुष्य के लिये किसी मनुष्य या वस्तु को सज्दा करना

30. अतः उन सब फरिश्तों ने सज्दा किया।
31. इब्लीस के सिवा। उस ने सज्दा करने वालों का साथ देने से इन्कार कर दिया।
32. अल्लाह ने पूछा: हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि सज्दा करने वालों का साथ नहीं दिया?
33. उस ने कहा: मैं ऐसा नहीं हूँ कि एक मनुष्य को सज्दा करूँ, जिसे तू ने सड़े हुये कीचड़ के सूखे गारे से पैदा किया है।
34. अल्लाह ने कहा: यहाँ से निकल जा, वास्तव में तू धिक्कारा हुआ है।
35. और तुझ पर धिक्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन तक।
36. (इब्लीस) ने कहा^[1]: मेरे पालनहार! तो फिर मुझे उस दिन तक अवसर दे, जब सभी पुनः जीवित किये जायेंगे।
37. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया है।
38. विद्वित समय के दिन तक के लिये।
39. वह बोला: मेरे पालनहार! तेरे मुझ को कुपथ कर देने के कारण, मैं अवश्य उन के लिये धरती में (तेरी अवज्ञा को) मनोरम बना दूँगा, और

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٣٠﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ إِلَّا تَكُونُ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ لَوْ كُنْتُ اسْجُدَ لِشَيْءٍ خَلَقْتَهُ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٣٣﴾

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٣٤﴾

وَلَنْ عَلَيْكَ اللَّعْنَةُ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣٥﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٣٦﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٣٧﴾

إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٣٩﴾

शिकर्क और अक्षम्य पाप है। (सूरह, हा, मीम, सज्दा: आयत नं०: 37)

- 1 अर्थात् फरिश्ते परिक्षा में सफल हुये और इब्लीस असफल रहा। क्यों कि उस ने आदेश का पालन न कर के अपनी मनमानी की। इसी प्रकार वह भी है जो अल्लाह की बात न मान कर मनमानी करते हैं।

उन सभी को कुपथ कर दूंगा।

40. उन में से तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा।

41. अब्राह ने कहा: यही मुझ तक
(पहुँचने की) सीधी राह है।

42. वस्तुतः मेरे भक्तों पर तेरा कोई
अधिकार नहीं^[1] चलेगा, सिवाये उस
के जो कुपथों में से तेरा अनुसरण करे।

43. और वास्तव में उन सब के लिये
नरक का वचन है।

44. उस (नरक) के सात द्वार हैं, और
उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक
विभाजित भाग^[2] है।

45. वास्तव में आज्ञाकारी लोग स्वर्गों
तथा स्रोतों में होंगे।

46. (उन से कहा जायेगा) इस में प्रवेश कर
जाओ, शान्ति के साथ निर्भय हो कर।

47. और हम निकाल देंगे उन के दिलों
में जो कुछ बैर होगा। वे भाई भाई
होकर एक दूसरे के सम्मुख तख्तों के
ऊपर रहेंगे।

48. न उस में उन्हें कोई थकान होगी
और न वहाँ से निकाले जायेंगे।

49. (हे नबी!) आप मेरे भक्तों को

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٤٠﴾

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ﴿٤١﴾

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ
إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٤٢﴾

وَأَنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٣﴾

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ
مَّقْسُومٌ ﴿٤٤﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ آمِينَ ﴿٤٦﴾

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَى
سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٧﴾

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا
بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾

نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾

1 अर्थात् जो बन्दे कुर्आन तथा हदीस (नबी का तरीका) का ज्ञान रखेंगे उन पर शैतान का प्रभाव नहीं होगा। और जो इन दोनों के ज्ञान से जाहिल होंगे वही उस के झाँसे में आयेंगे। किन्तु जो तौबा कर लें तो उन को क्षमा कर दिया जायेगा।

2 अर्थात् इबलीस के अनुयायी अपने कुकर्मों के अनुसार नरक के द्वार में प्रवेश करेंगे।

सूचित कर दें कि वास्तव में, मैं बड़ा क्षमाशील दयावान्^[1] हूँ।

50. और मेरी यातना ही दुखदायी यातना है।

51. और आप उन्हें इब्राहीम के अतिथियों के बारे में सूचित कर दें।

52. जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम किया। उस ने कहा: वास्तव में हम तुम से डर रहे हैं।

53. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, हम तुम्हें एक ज्ञानी बालक की शुभसूचना दे रहे हैं।

54. उस ने कहा: क्या तुम ने मुझे इस बुढ़ापे में शुभ सूचना दी है, तुम मुझे यह शुभ सूचना कैसे दे रहे हो?

55. उन्होंने ने कहा: हम ने तुम्हें सत्य शुभ सूचना दी है, अतः तुम निराश न हो।

56. (इब्राहीम) ने कहा: अपने पालनहार की दया से निराश केवल कुपथ लोग ही हुआ करते हैं।

57. उस ने कहा: हे अब्राहम के भेजे हुये फरिश्तो! तुम्हारा अभियान क्या है?

58. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी जाति के पास भेजे गये हैं।

59. लूट के घराने के सिवा, उन सभी को हम बचाने वाले हैं।

وَأَنَّ عَذَابِيْ مُّوَالِ الْعَذَابِ الْاَلَمِ ۝

وَيَبْنِيْهُمْ عَنْ ضَيْفِ الْاِبْرٰهِيْمِ ۝

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالِ اِنَّ اَمْنَكُمْ وَاٰمِنُوْنَ ۝

قَالُوْا لَا تَوْجَنِ اِنَّ الْبَشٰرَةَ بِخُلُوْكُمْ عَلَيْهِ ۝

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِ عَلٰى اَنْ مَّسْنٰى الْاَكْبَرُ فَيَمَّ تَبَشِّرُوْنِ ۝

قَالُوْا بَشِّرْكَ بِالْحَقِّ فَاَلَّا تَكُنْ مِنَ الْغٰثِيْنَ ۝

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهِ اِلَّا الضَّٰلُّوْنَ ۝

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝

قَالُوْا اِنَّا اَرْسَلْنَا اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝

اِلَّا اَنْ لُّوْطَ اِنَّ لَنَا لَمَجْرُمًا اٰبَعِيْنَ ۝

1 हदीस में है कि अब्राहम ने सौ दया पैदा की, निबनावे अपने पास रख ली। और एक को पूरे संसार के लिये भेज दिया। तो यदि काफिर उस की पूरी दया जान जाये तो स्वर्ग से निराश नहीं होगा। और ईमान वाला उस की पूरी यातना जान जाये तो नरक से निर्भय नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 6469)

60. परन्तु लूत की पत्नी के लिये हम ने निर्णय किया है कि वह पीछे रह जाने वाली में होगी।
61. फिर जब लूत के घर भेजे हुये (फरिश्ते) आये।
62. तो लूत ने कहा: तुम (मेरे लिये) अपरिचित हो।
63. उन्होंने ने कहा: डरो नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह (यातना) लाये हैं, जिस के बारे में वह संदेह कर रहे थे।
64. हम तुम्हारे पास सत्य लाये हैं, और वास्तव में हम सत्यवादी हैं।
65. अतः कुछ रात रह जाये तो अपने घराने को लेकर निकल जाओ, और तुम उन के पीछे रहो, और तुम में से कोई फिर कर न देखे। तथा चले जाओ, जहाँ आदेश दिया जा रहा है।
66. और हम ने लूत को निर्णय सुना दिया कि भोर होते ही इन का उन्मूलन कर दिया जायेगा।
67. और नगरवासी प्रसन्न हो कर आ गये।^[1]
68. लूत ने कहा: यह मेरे अतिथी हैं, अतः मेरा अपमान न करो।
69. तथा अब्ब्राह से डरो, और मेरा अनादर न करो।
70. उन्होंने ने कहा: क्या हम ने तुम्हें विश्व

الْأَمْرَاتِ قَدَرْنَا إِنَّمَا لِمَنِ الْغَيْرُ ۖ

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۖ

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّتَكَبِّرُونَ ۖ

قَالُوا بَلْ جِئْنَاكَ بِآيَاتِنَا إِنَّا نُنَزِّلُكَ ۖ

وَأَتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ

فَأَسْرَأْ بِهَآئِكَ يَنْقُطُ مِنَ الْآيِلِ وَاشْمَعْ أَذْيَارَهُمْ
وَلَا يَكْتُمُونَ مِنْكُمْ أَحَدًا وَمَضُوا حَيْثُ
يُؤْمَرُونَ ۖ

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَهُمْ لَآءٌ مَّقْطُورَةٌ
مُّضْطَبَّحِينَ ۖ

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۖ

قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ صِيبِي فَلَا تَفْضَحُونِ ۖ

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تَكْفُرُوا ۖ

قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ۖ

1 अर्थात् जब फरिश्तों को नवयुवकों के रूप में देखा तो लूत अलैहिस्सलाम के यहाँ आ गये ताकि उन के साथ अश्लील कर्म करें।

वासियों से नहीं रोका^[1] था?

71. लूत ने कहा: यह मेरी पुत्रियाँ हैं यदि तुम कुछ करने वाले^[2] हो।

72. हे नबी! आप की आयु की शपथ!^[3] वास्तव में वे अपने उन्माद में बहक रहे थे।

73. अन्ततः सूर्योदय के समय उन्हें एक कड़ी ध्वनि ने पकड़ लिया।

74. फिर हम ने उस बस्ती के ऊपरी भाग को नीचे कर दिया, और उन पर कंकरीले पत्थर बरसा दिये।

75. वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं प्रतिभाशालियों^[4] के लिये।

76. और वह (बस्ती) साधारण^[5] मार्ग पर स्थित है।

77. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है, ईमान वालों के लिये।

78. और वास्तव में (ऐय्का) के^[6] वासी अत्याचारी थे।

قَالَ هَؤُلَاءِ ابْنَاتِي إِن كُنْتُمْ مُعِلِّينَ ۝

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُسْرِقِينَ ۝

فَجَعَلْنَاهَا سَافِلًا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارًا
مِّن سِجِّيلٍ ۝

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّمُتَوَسِّعِينَ ۝

وَأِنَّهَا لَلسَّبِيلِ مَقِينٍ ۝

إِن فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ۝

1 सब के समर्थक न बनो।

2 अर्थात् इन से विवाह कर लो, और अपनी कामवासना पूरी करो, और कुकर्म न करो।

3 अल्लाह के सिवा किसी मनुष्य के लिये उचित नहीं है कि वह अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ की शपथ ले।

4 अर्थात् जो लक्षणों से तथ्य को समझ जाते हैं।

5 अर्थात् जो साधारण मार्ग हिजाज़ (मक्का) से शाम को जाता है। यह शिक्षाप्रद बस्ती उसी मार्ग में आती है, जिस से तुम गुज़रते हुये शाम जाते हो।

6 इस से अभिप्रेत शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति है, ऐय्का का अर्थ वन तथा झाड़ी है।

79. तो हम ने उन से बदला ले लिया, और वह दोनों^[1] ही साधारण मार्ग पर हैं।
80. और हिज्र के^[2] लोगों ने रसूलों को झुठलाया।
81. और उन्हें हम ने अपनी आयतें (निशानियाँ) दी, तो वह उन से विमुख ही रहे।
82. वे शिलाकारी कर के पर्वतों से घर बनाते, और निर्भय होकर रहते थे।
83. अन्ततः उन्हें कड़ी ध्वनि ने भोर के समय पकड़ लिया।
84. और उन की कमाई उन के कुछ काम न आयी।
85. और हम ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है, सत्य के आधार पर ही उत्पन्न किया है, और निश्चय प्रलय आनी है। अतः (हे नबी!) आप (उन को) भली भाँति क्षमा कर दें।
86. वास्तव में आप का पालनहार ही सब का स्रष्टा सर्वज्ञ है।
87. तथा (हे नबी!) हम ने आप को सात ऐसी आयतें जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन^[3] प्रदान किया है।

فَأَسْمَأْنَا مِنْهُمْ وَارْتَهَبُوا لِيَا مَأْمُومِيْنَ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

وَاتَيْنَهُمُ الْآيَاتِ فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝

وَكَانُوا يَنْجُثُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا
أَوْسِيْنَ ۝

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۝

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُوْنَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ فَاصْفِرِ الصُّفْرَ
الْجَبِيلَ ۝

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ
الْعَظِيمَ ۝

1 अर्थात् मद्यन और ऐयका का क्षेत्र भी हिजाज़ से फिलस्तीन और सीरिया जाते हुये, राह में पड़ता है।

2 हिज्र समुद्र जाति की बस्ती थी जो सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी, यह बस्ती मदीना और तबूक के बीच स्थित थी।

3 अबु हरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

88. और आप उस की ओर न देखें, जो संसारिक लाभ का संसाधन हम ने उन में से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा है, और न उन पर शोक करें, और ईमान वालों के लिये सुशील रहें।

89. और कह दें कि मैं प्रत्यक्ष (खुली) चेतावनी^[1] देने वाला हूँ।

90. जैसे हम ने खण्डन कारियों^[2] पर (यातना) उतारी।

91. जिन्होंने कुर्आन को खण्ड खण्ड कर दिया^[3]।

92. तो शपथ है आप के पालनहार की। हम उन से अवश्य पूछेंगे।

93. तुम क्या करते रहे?

94. अतः आप को जो आदेश दिया जा

لَا تُمَدِّنْ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعَيْنَاهُمْ
أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَخَفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ الْمُقْتَسِبِينَ ﴿٩٠﴾

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٢﴾

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

فَأَصْدَعْ بِمَأْمُورٍ وَأَعِضْ عَنِ الثُّمُورِ ﴿٩٤﴾

कथन है कि उम्मुल कुर्आन (सूरह फातिहा) ही वह सात आयतें हैं जो दुहराई जाती हैं, तथा महा कुर्आन है। (सहीह बुखारी- 4704)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “अल्हम्दु लिस्ल्लाहि रब्बिल आलमीन्” ही वह सात आयतें हैं जो बार बार दुहराई जाती हैं, और महा कुर्आन है, जो मुझे प्रदान किया गया है। (संक्षिप्त अनुवाद, सहीह बुखारी- 4702)। यही कारण है कि इस के पढ़े बिना नमाज़ नहीं होती। (देखिये: सहीह बुखारी: 756, मुस्लिम: 394)

1 अर्थात् अबैजा पर यातना की।

2 खण्डन कारियों से अभिप्राय: यहूद और ईसाई हैं। जिन्होंने ने अपनी पुस्तकों तौरात तथा इंजील को खण्ड खण्ड कर दिया। अर्थात् उन के कुछ भाग पर ईमान लाये और कुछ को नकार दिया। (सहीह बुखारी- 4705-4706)

3 इसी प्रकार इन्होंने ने भी कुर्आन के कुछ भाग को मान लिया और कुछ का अगलों की कहानियाँ बताकर इन्कार कर दिया। तो ऐसे सभी लोगों से प्रलय के दिन पूछ होगी कि मेरी पुस्तकों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया?

रहा है, उसे खोल कर सुना दें। और मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की चिन्ता न करें।

95. हम आप के लिये परिहास करने वालों को काफी है।

إِنَّا كَثِيرٌ مِّنَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ۝

96. जो अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य बना लेते हैं, तो उन्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

97. और हम जानते हैं कि उन की बातों से आप का दिल संकुचित हो रहा है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝

98. अतः आप अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करें, तथा सज्दा करने वालों में रहें।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِّنَ السَّاجِدِينَ ۝

99. और अपने पालनहार की इबादत (बंदना) करते रहें, यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।^[1]

وَلَعِبْدُ رَبِّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

1 अर्थात् मरण का समय जिस का विश्वास सभी को है। (कुतुबी)

सूरह नहल - 16

سُورَةُ النَّحْلِ

सूरह नहल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 128 आयतें हैं।

- नहल का अर्थ मधु मक्खी है। जिस में अल्लाह के पालनहार होने की निशानी है। इस सूरह की आयत 68 से यह नाम लिया गया है।
- इस में शिर्क का खण्डन तथा तौहीद के सत्य होने को प्रमाणित किया गया है। और नबी को न मानने पर दुष्परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- विरोधियों के सदेह दूर कर के अल्लाह के उपकारों की चर्चा की गई है और प्रलय के दिन मुश्रिकों तथा काफिरों की दुर दशा को बताया गया है।
- बंदों का अधिकार देने तथा बुराईयों से बचने और पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है।
- शैतान के संशय से शरण माँगने का निर्देश दिया गया है और मक्का वासियों के लिये एक कृतधन बस्ती का उदाहरण देकर उन्हें कृतज्ञ होने का निर्देश दिया गया है।
- यह निर्देश दिया गया है कि शिर्क के कारण अल्लाह की वैध की हुई चीजों को वर्जित न करो और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के बारे में बताया गया है कि वह एकेश्वरवादी और कृतज्ञ थे, और मुश्रिक नहीं थे।
- यह बताया गया है कि सब्त (शनिवार) मनाने का आदेश केवल यहूद को उन के विभेद करने के कारण दिया गया था।
- और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह का आदेश आ गया है। अतः
(हे काफ़िरो!) उस के शीघ्र आने की

أَنِّي أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَنَهُ

माँग न करो। वह (अल्लाह) पवित्र तथा उस शिर्क (मिश्रणवाद) से ऊँचा है, जो वह कर रहे हैं।

2. वह फरिश्तों को वही के साथ अपने आदेश से अपने जिस भक्त पर चाहता है उतारता है, कि (लोगों को) सावधान करो, कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है अतः मुझ से ही डरो।
3. उस ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति सत्य के साथ की है, वह उन के शिर्क से बहुत ऊँचा है।
4. उस ने मनुष्य की उत्पत्ति वीर्य से की फिर वह अकस्मात् खुला झगड़ालू बन गया।
5. तथा चौपायों की उत्पत्ति की, जिन में तुम्हारे लिये गमी^[1] और बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को खाते हो।
6. तथा उन में तुम्हारे लिये एक शोभा है, जिस समय संध्या को चरा कर लाते हो और जब प्रातः चराने ले जाते हो।
7. और वह तुम्हारे बोझों को उन नगरों तक लाद कर ले जाते हैं, जिन तक तुम बिना कड़े परिश्रम के नहीं पहुँच सकते। वास्तव में तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।
8. तथा घोड़े, और खच्चर तथा गधे पैदा किये, ताकि उन पर सवारी करो। और शोभा (बनें)। और ऐसी चीजों की उत्पत्ति करेगा, जिन्हें

وَتَعْلَمُ غَيْبَاتُكُم مِّنْ فَتْرَتِكُمْ ۚ إِنَّكُم مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَأَنَّكُم مُّكْرَمُونَ ۝

يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ۝

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعْلَمُ غَيْبَاتُكُم مِّنْ فَتْرَتِكُمْ ۚ إِنَّكُم مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَأَنَّكُم مُّكْرَمُونَ ۝

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ حَصِيمٌ مُّؤْتَمِنٌ ۝

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَكُلُونَ ۝

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرْفَعُونَ وَحِينَ تُسْرَحُونَ ۝

وَتَحْمِلُ أَوْثَقَكُمْ إِلَىٰ بُكْعِكُمْ لَتَكُونُوا إِلَيْنَا أَلِيْسٌ إِلَّا بِشَىْءٍ أَلْفُسٍ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَوْفٌ رَّحِيمٌ ۝

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् उन की ऊन तथा खाल से गर्म बस्त्र बनाते हो।

(अभी) तुम नहीं जानते हो।^[1]

9. और अल्लाह पर, सीधी राह बताना है, और उन में से कुछ^[2] टेढ़े हैं। तथा यदि अल्लाह चाहता तो तुम सभी को सीधी राह दिखा देता।

10. वही है, जिस ने आकाश से जल बरसाया, जिस में से कुछ तुम पीते हो, तथा कुछ से वृक्ष उपजते हैं, जिस में तुम (पशुओं को) चराते हो।

11. और तुम्हारे लिये उस से खेती उपजाता है, और जैतून तथा खजूर और अंगूर और प्रत्येक प्रकार के फल। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिये जो सोच-विचार करते हैं।

12. और उस ने तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिवस को सेवा में लगा रखा है। तथा सूर्य और चाँद को, और सितारे उस के आदेश के आधीन हैं। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (लक्षण) हैं, उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

13. तथा जो तुम्हारे लिये धरती में विभिन्न रंगों की चीजें उत्पन्न की हैं वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो शिक्षा ग्रहण करते हैं।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَآئِزٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً لَّكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ۝

يُبْرِئُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يُعْقِلُونَ ۝

وَمَا ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝

1 अर्थात् सवारी के साधन इत्यादि। और आज हम उन में से बहुत सी चीजों को अपनी आँखों से देख रहे हैं जिन की ओर अल्लाह ने आज से चौदह सौ वर्ष पहले इस आयत के अन्दर संकेत किया था। जैसे: कार, रेल और विमान आदि....।

2 अर्थात् जो इस्लाम के विरुद्ध हैं।

14. और वही है जिस ने सागर को बश में कर रखा है, ताकि तुम उस से ताजा^[1] मांस खाओ, और उस से अलंकार^[2] निकालो जिसे पहनते हो, तथा तुम नौकाओं को देखते हो कि सागर में (जल को) फाड़ती हुई चलती है, और इस लिये ताकि तुम उस (अल्लाह) के अनुग्रह^[3] की खोज करो, और ताकि कृतज्ञ बनो।

15. और उस ने धरती में पर्वत गाड़ दिये, ताकि तुम को लेकर डोलने न लगे, तथा नदियाँ और राहें, ताकि तुम राह पाओ।

16. तथा बहुत से चिन्ह (बना दिये) और वे सितारों से (भी) राह^[4] पाते हैं।

17. तो क्या जो उत्पत्ति करता है, उस के समान है, जो उत्पत्ति नहीं करता? क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते^[5]?

18. और यदि तुम अल्लाह के पुरस्कारों की गणना करना चाहो तो कभी नहीं कर सकते। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा तथा दया करने वाला है।

19. तथा अल्लाह जानता है, जो तुम छुपाते हो, और जो तुम व्यक्त करते हो।

20. और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَنَا كُلَّوَامِنَهُ
لِحَيْاطَرٍ وَأَنْتُمْ تَخْرِجُوا مِمَّنْ حَلِيَّةٌ
تَلْمِزُونَهَا لَوْ تَرَى الْفُلُكَ مَوَاجِرَ فِيهِ
وَلَقَدْ تَقَوَّيْنَا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝

وَالَّذِي فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي أَنْ يَقْبَلَ إِلَيْكُمْ وَأَنْهَارًا
وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

وَعَلَّمَنَّا وَإِلَّا تَعْلَمُونَ ۝

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

وَأَنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْهَا إِنَّ اللَّهَ
كَغَفُورٍ رَحِيمٍ ۝

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُؤُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ

1 अर्थात् मछलियाँ।

2 अलंकार अर्थात् मोती और मूंगा निकालो।

3 अर्थात् सागरों में व्यापारिक यात्रा कर के अपनी जीविका की खोज करो।

4 अर्थात् रात्रि में।

5 और उस की उत्पत्ति को उस का साझी और पूज्य बनाते हो।

हैं, वे किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते। जब कि वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं।

21. वे निर्जीव प्राणहीन हैं, और (यह भी) नहीं जानते कि कब पुनः जीवित किये जायेंगे।

22. तुम्हारा पूज्य बस एक है, फिर जो लोग परलोक पर ईमान नहीं लाते उन के दिल निवर्ती (विरोधी) हैं, और वे अभिमानी हैं।

23. जो कुछ वे छुपाते तथा व्यक्त करते हैं निश्चय अल्लाह उसे जानता है। वास्तव में वह अभिमानियों से प्रेम नहीं करता।

24. और जब उन से पूछा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? ^[1] तो कहते हैं कि पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

25. ताकि वे अपने (पापों का) पूरा बोझ प्रलय के दिन उठायें, तथा कुछ उन लोगों का बोझ (भी) जिन्हें बिना ज्ञान के कुपथ कर रहे थे, सावधान! वे कितना बुरा बोझ उठायेंगे!

26. इन से पहले के लोग भी षड्यंत्र रचते रहे, तो अल्लाह ने उन के षड्यंत्र के भवन का उन्मूलन कर दिया, फिर ऊपर से उन पर छत गिर पड़ी, और उन पर ऐसी दिशा

شَيْئًا وَهُمْ يَخْلُقُونَ ۝

أَمْ أَمَاتُ غَيْرَ حَيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

إِلَهُهُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَأَلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فُلُوقُهُمْ مُتَكِبَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝

لَا حَرَمَ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُبْسِرُونَ وَمَا يُلْقُونَ إِلَهُهُ لَأُجِيبَ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أُنْزِلَ رَبُّكُمْ قَالَُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوهُمْ بَغِيرِ عِلْمِ الْأَسَاءِ مَا يَزِمُونَ ۝

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهَ بُنْيَانُهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَتْهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर। तो यह जानते हुये कि अल्लाह ने कुर्आन उतारा है झूठ बोलते हैं और स्वयं को तथा दूसरों को धोखा देते हैं।

से यातना आ गई, जिसे वे सोच भी नहीं रहे थे।

27. फिर प्रलय के दिन उन्हें अपमानित करेगा, और कहेगा कि मेरे वह साझी कहाँ हैं, जिन के लिये तुम झगड़ रहे थे? वे कहेंगे: जिन्हें ज्ञान दिया गया है कि वास्तव में आज अपमान तथा बुराई (यातना) काफ़िरो के लिये है।

28. जिन के प्राण फ़रिश्ते निकालते हैं, इस दशा में कि वे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले हैं, तो वह आज्ञाकारी बन जाते^[1] हैं, (कहते हैं कि) हम कोई बुराई (शिक) नहीं कर रहे थे। क्यों नहीं? वास्तव में अब्बाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

29. तो नरक के द्वारों में प्रवेश कर जाओ, उस में सदावासी रहोगे, अतः क्या ही बुरा है अभिमानियों का निवास स्थान!

30. और उन से पूछा गया जो अपने पालनहार से डरे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या उतारा है? तो उन्होंने कहा: अच्छी चीज़ उतारी है। उन के लिये जिन्होंने इस लोक में सदाचार किये बड़ी भलाई है। और वास्तव में परलोक का घर (स्वर्ग) अति उत्तम है। और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है!

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

الَّذِينَ تَتَوَفَّيهِمُ الْمَلَائِكَةُ خَالِيَةً أَنفُسِهِمْ فَأَلْقُوا السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ شَوْءٍ إِلَّا اللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فُلَيْسَ مَشْأَى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرٌ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ۝

1 अर्थात् मरण के समय अब्बाह को मान लेते हैं।

31. सदा रहने के स्वर्ग जिस में प्रवेश करेंगे, जिन में नहरें बहती होंगी, उन के लिये उस में जो चाहेंगे (मिलेगा)। इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल (बदला) देता है।

32. जिन के प्राण फरिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वे स्वच्छ-पवित्र हैं, तो कहते हैं: "तुम पर शान्ति हो।" तुम अपने सुकर्मों के बदले स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।

33. क्या वे इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन के पास फरिश्ते^[1] आ जायें, अथवा आप के पालनहार का आदेश^[2] आ पहुँचे? ऐसे ही उन से पूर्व के लोगों ने किया, और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

34. तो उन के कुकर्मों की बुराईयाँ^[3] उन पर आ पड़ी, और उन्हें उसी (यातना) ने घेर लिया जिस का वे परिहास कर रहे थे।

35. और कहा जिन लोगों ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया: यदि अल्लाह चाहता तो हम उस के सिवा किसी चीज़ की इबादत (बंदना) न करते न हम, और न हमारे बाप-दादा। और न उस के आदेश के बिना किसी चीज़ को हराम (वर्जित) करते। ऐसे

جَعَلْتُ عَذْرًا تَدْخُلُونَهَا تَجْرُونَ مِنْ عَذْرًا الْأَنْهَارِ
لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ
الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾

الَّذِينَ اتَّقَوْهُمْ السَّلَاطَةُ يُبَيِّنُ يَقُولُونَ سَلَامٌ
عَلَيْكُمْ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ
أَمْرٌ مِنْكَ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَبِأَ
ظْلَامِهِمْ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَخَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا اخْرَجْنَا
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् प्राण निकालने के लिये।

2 अर्थात् अल्लाह की यातना या प्रलय।

3 अर्थात् दुष्परिणाम।

ही इन से पूर्व वाले लोगों ने किया।
तो रसूलों पर केवल खुले रूप से
उपदेश पहुँचा देना है।

36. और हम ने प्रत्येक समुदाय में
एक रसूल भेजा कि अल्लाह की
इबादत (वंदना) करो, और तागूत
(असुर-अल्लाह के सिवा पूज्यों) से
बचो, तो उन में से कुछ को
अल्लाह ने सुपथ दिखा दिया और
कुछ पर कुपथ सिद्ध हो गया। तो
धरती में चलो-फिरो, फिर देखो
कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा
रहा?

37. (हे नबी!) आप ऐसे लोगों को सुपथ
दिखाने पर लोलुप हों, तो भी अल्लाह
उसे सुपथ नहीं दिखायेगा जिसे कुपथ
कर दे। और न उन का कोई सहायक
होगा।

38. और उन (काफ़िरों) ने अल्लाह की
भरपूर शपथ ली कि अल्लाह उसे पुनः
जीवित नहीं करेगा जो मर जाता है।
क्यों नहीं? यह तो अल्लाह का अपने
ऊपर सत्य वचन है, परन्तु अधिकतर
लोग नहीं जानते।

39. (ऐसा करना इस लिये आवश्यक है)
ताकि अल्लाह उस तथ्य को उजागर
कर दे जिस में^[1] वे विभेद कर रहे
थे, और ताकि काफ़िर जान लें कि
वही झूठे थे।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا
اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدَى اللَّهُ
وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَمِنْهُمْ
الَّذِينَ قَالُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنْ تَحْرِصْ عَلَى هَذِهِ أُمَّةٍ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ
يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ
يَمُوتُ، بَلْ وَعْدٌ عَلَيْهِمْ حَقٌّ وَلَكِنْ أَكْثَرُ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَاذِبِينَ ۝

1 अर्थात् पुनरोज्जीन आदि के विषय में।

40. हमारा कथन, जब हम किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने का निश्चय करें, तो इस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दें कि "हो जा", और वह हो जाती है।
41. तथा जो लोग अल्लाह के लिये हिजरत (प्रस्थान) कर गये अत्याचार सहने के पश्चात्, तो हम उन्हें संसार में अच्छा निवास-स्थान देंगे, और परलोक का प्रतिफल तो बहुत बड़ा है, यदि वह^[1] जानते।
42. जिन लोगों ने धैर्य धारण किया, तथा अपने पालनहार पर ही वे भरोसा करते हैं।
43. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले जो भी रसूल भेजे, वे सभी मानव-पुरुष थे। जिन की ओर हम बह्यी (प्रकाशना) करते रहे। तो तुम जानियों से पूछ लो, यदि (स्वयं) नहीं^[2] जानते।
44. प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाणों तथा पुस्तकों के साथ (उन्हें भेजा) और आप की ओर यह शिक्षा (क़ुर्आन) अवतरित की, ताकि आप उसे सर्वमानव के लिये उजागर कर दें जो कुछ उन

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنَمُوِّنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَلَآ أَجْرَ الْآخِرَةِ الْكَبِيرِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ فَتَعَلَّوْا أَهْلَ الدِّيَارِ إِن كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ الْحَقَّ لِتُنذِرَ بِهِ أَهْلَ الدِّيَارِ إِن كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

- 1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी हैं, जिन को मक्का के मुश्रिकों ने अत्याचार कर के निकाल दिया। और हब्शा और फिर मदीने हिजरत कर गये।
- 2 मक्का के मुश्रिकों ने कहा कि यदि अल्लाह को कोई रसूल भेजना होता तो किसी फरिश्ते को भेजता। उसी पर यह आयत उतरी। जानियों से अभिप्राय वह अहले किताब हैं जिन्हें आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान हो।

की ओर उतारा गया है ताकि वह सोच-विचार करें।

45. तो क्या वे निर्भय हो गये हैं, जिन्होंने बुरे षड्यंत्र रचे हैं, कि अल्लाह उन्हें धरती में धंसा दे? अथवा उन पर यातना ऐसी दिशा से आ जाये जिसे वह सोचते भी न हों?

أَقَامِينَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

46. या उन्हें चलते-फिरते पकड़ ले, तो वह (अल्लाह को) विवश करने वाले नहीं हैं।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلُبِهِمْ فَهُمْ يَمُوتُونَ ۖ أَلَمْ يَكُنْ لَهُمُ آيَاتٌ ﴿٤٦﴾

47. अथवा उन्हें भय की दशा में पकड़^[1] ले? निश्चय तुम्हारा पालनहार अति करुणामय दयावान् है।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى عَرْشٍ فَإِنَّ رَبَّكَ لَرَوْفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾

48. क्या अल्लाह की उत्पन्न की हुयी किसी चीज़ को उन्होंने नहीं देखा? जिस की छाया दायें तथा बायें झुकती है, अल्लाह को सज्दा करते हुये? और वे सर्व विनयशील हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يُتَقَبَّلُ ظِلُّهُ مِنَ الْمِيزَانِ وَالشَّمَاةُ يَلُوحِي سُجْدًا لِلَّهِ وَهُمْ ذَاكِرُونَ ﴿٤٨﴾

49. तथा अल्लाह ही को सज्दा करते हैं जो आकाशों में तथा धरती में चर (जीव) तथा फरिश्ते हैं, और वह अहंकार नहीं करते।

وَيَسْجُدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ ذَاكِرٍ إِلَى الْمَلِكَةِ وَهُمْ لَا يُنْكِرُونَ ﴿٤٩﴾

50. वे^[2] अपने पालनहार से डरते हैं जो उन के ऊपर है, और वही करते हैं जो आदेश दिये जाते हैं।

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ قُدْرَتِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

51. और अल्लाह ने कहा: दो पूज्य न बनाओ, वही अकेला पूज्य है। अतः तुम मुझी से डरो।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهَيْنِ إِلَّا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ فَإِذَا تَوَلَّى فَاذْهَبُوا ﴿٥١﴾

1 अर्थात् जब कि पहले से उन्हें आपदा का भय ही।

2 अर्थात् फरिश्ते।

52. और उसी का है, जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और उसी की बंदना स्थायी है, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा दूसरे से डरते हो?

53. तुम्हें जो भी सुख-सुविधा प्राप्त है वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुम्हें दुख पहुँचता है, तो उसी को पुकारते हो।

54. फिर जब तुम से दुख दूर कर देता है तो तुम्हारा एक समुदाय अपने पालनहार का साझी बनाने लगता है।

55. ताकि हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है, उस के प्रति कृतघ्न हों तो आनन्द ले लो, तुम्हें शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

56. और वे जिन को जानते^[1] तक नहीं उन का एक भाग उस में से बनाते हैं जो जीविका हम ने उन्हें दी है। तो अल्लाह की शपथ! तुम से अवश्य पूछा जायेगा उस के विषय में जो तुम झूठी बातें बना रहे थे?

57. और वह अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बनाते^[2] है, वह पवित्र है! और उन के लिये वह^[3] है, जो वे स्वयं चाहते हों!?

وَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ
وَإِلَٰهًا آخَرَ اللَّهُ تَعَالَى ۝

وَمَا لَكُمْ مِنْ فَتْحَةٍ مِّنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ
وَالْيَاكُوفُ تُجْعَلُونَ ۝

ثُمَّ إِذَا كُفَّتِ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا فِرْقٌ مِّنْكُمْ يَخِرُّونَ
يُخْرَتُونَ ۝

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

وَيَعْمَلُونَ لِمَا لَا يَرْجُونَ نُصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ
وَلَهُمْ لِنَسْلٍ عَمَّا كُنْتُمْ تُفْتَرُونَ ۝

وَيَعْمَلُونَ لِمَا يُبْذَرُ مِنَّاهُ وَلَهُمْ يَاسِقُونَ ۝

1 अर्थात् अपने देवी देवताओं की वास्तविकता को नहीं जानते।

2 अरब के मुश्रिकों के पूज्यों में देवताओं से अधिक देवियाँ थीं। जिन के संबन्ध में उन का विचार था कि ये अल्लाह की पुत्रियाँ हैं। इसी प्रकार फरिश्तों को भी वे अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे, जिस का यहाँ खण्डन किया गया है।

3 अर्थात् पुत्र।

58. और जब उन में से किसी को पुत्री (के जन्म) की शुभसूचना दी जाये, तो उस का मुख काला हो जाता है, और वह शोक पूर्ण हो जाता है।

59. और लोगों से छुपा फिरता है उस बुरी सूचना के कारण जो उसे दी गयी है। (सोचता है कि) क्या^[1] उसे अपमान के साथ रोक ले, अथवा भूमि में गाड़ दे? देखो! वह कितना बुरा निर्णय करते हैं।

60. उन्हीं के लिये जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते अवगुण हैं, और अल्लाह के लिये सदगुण हैं। तथा वह प्रभुत्वशाली तत्त्वदर्शी हैं।

61. और यदि अल्लाह, लोगों को उन के अत्याचार^[2] पर (तत्क्षण) धरने लगे, तो धरती में किसी जीव को न छोड़े। परन्तु वह एक निर्धारित अवधि तक निलम्बित करता^[3] है, और जब उन की अवधि आ जायेगी, तो एक क्षण न पीछे होंगे न पहले।

62. वह अल्लाह के लिये उसे^[4] बनाते हैं, जिसे स्वयं अप्रिय समझते हैं। तथा उन की जबानें झूठ बोलती हैं कि उन्हीं के लिये भलाई है। निश्चय

وَلَا بُشْرَ أَحَدٍ هُمْ بِالْأُنثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا
وَهُوَ كَاطِمٌ ۝

يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ إِنَّهُمْ عَلَىٰ
هُنَّ آمُرِينَ أَنَّهُ فِي الْكُتُبِ الْأَسَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝

الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ بِهِمْ
وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَالْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

وَلَوْ لَوَّاهُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَوْهُمُ عَلَيْهَا مِنْ
دَابَّةٍ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ سَاعَةً
وَلَا يَسْتَفِيدُونَ ۝

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْفُرُونَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكُذِبَ
أَنَّهُمْ الْمُحْسَنُونَ لِآخِرَةٍ أَنَّهُمْ التَّارُونَ أَنَّهُمْ
مُفْرَطُونَ ۝

1 अर्थात् जीवित रहने दे। इस्लाम से पूर्व अरब समाज के कुछ कबीलों में पुत्रियों के जन्म को लज्जा की चीज समझा जाता था। जिस का चित्रण इस आयत में किया गया है।

2 अर्थात् शिर्क और पापाचारों पर।

3 अर्थात् अवसर देता है।

4 अर्थात् पुत्रियाँ।

उन्हीं के लिये नरक है, और वही सब से पहले (नरक में) झोंके जायेंगे।

63. अल्लाह की शपथ! (हे नबी!) आप से पहले हम ने बहुत से समुदायों की ओर रसूल भेजे। तो उन के लिये शैतान ने उन के कुकर्मों को सुसिज्जत बना दिया। अतः वही आज उन का सहायक है, और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

وَاللّٰهُ لَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَوْمَ الْيَوْمِ وَآلِهِمْ عَذَابٌ اَلِيمٌ

64. और हम ने आप पर यह पुस्तक (क़ुर्आन) इसी लिये उतारी है ताकि आप उन के लिये उसे उजागर कर दें जिस में वह विभेद कर रहे हैं, तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हैं।

وَمَا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا تِبْيٰنَ لِهٖمُ الَّذِى اَخْتَلَفُوْا فِيْهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ

65. और अल्लाह ने ही आकाश से जल बरसाया, फिर उस ने निर्जीव धरती को जीवित कर दिया। निश्चय इस में उन लोगों के लिये एक निशानी है जो सुनते हैं।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً فَاحْيٰى بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ

66. तथा वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उस से जो उस के भीतर है गोबर तथा रक्त के बीच से शुद्ध दूध पिलाते हैं। जो पीने वालों के लिये रुचिकर होता है।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً لِّتُنْقِذُوا بِطَوٰفٍ مِّنْ بَيْنِ قَرْنٍ وَدُمٍ لِّبَآئِنَ خَالٍ صَاسًا لِّمَنْ يَّتَذَكَّرُ

67. तथा खजूरों और अँगूरों के फलों से जिस से तुम मदिरा बना लेते हो तथा उत्तम जीविका भी, वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُوْنَ

68. और हम ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी कि पर्वतों में घर (छत्ते) बना तथा वृक्षों में, और लोगों की बनायी छतों में

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ
بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا تَرْتَوْنَ ﴿٦٨﴾

69. फिर प्रत्येक फलों का रस चूस, और अपने पालनहार की सरल राहों पर चलती रह। उस के भीतर से एक पेय निकलता है, जो विभिन्न रंगों का होता है, जिस में लोगों के लिये आरोग्य है। वास्तव में इस में एक निशानी (लक्षण) है उन लोगों के लिये जो सोच-बिचार करते हैं।

تَحْكُمُ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا
يَخْرُجُ مِنْ بَطُونِهَا فَاسْوَابُ تَحْتَكَفُّ أَلْوَانُهُ فِيهِ
شِفَاءٌ لِلنَّاسِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْتَبِرُونَ ﴿٦٩﴾

70. और अल्लाह ही ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, फिर तुम्हें मौत देता है। और तुम में से कुछ को अबोध आयु तक पहुँचा दिया जाता है, ताकि जानने के पश्चात् कुछ न जाने। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सर्व सामर्थ्यवान^[1] है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَوَفِّكُمْ وَبِهِم مِّنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ
الْعُمُرِ لَٰكِن لَّا تَعْلَمُونَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
قَدِيرٌ ﴿٧٠﴾

71. और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर जीविका में प्रधानता दी है, तो जिन्हें प्रधानता दी गयी है वे अपनी जीविका अपने दासों की ओर फेरने वाले नहीं कि वह उस में बराबर हो जायें तो क्या वह अल्लाह के उपकारों को नहीं मानत है?^[2]

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضُكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا
الَّذِينَ فَضَّلُوا بَرَأَوْا بِرَبِّهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ
فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِعَمَلِهِمُ اللَّهُ يَتَحَدَّوْنَ ﴿٧١﴾

72. और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्ही में से पत्नियाँ बनायीं। और तुम्हारे लिये

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ

1 अर्थात् वह पुनः जीवित भी कर सकता है।

2 आयत का भावार्थ यह है कि जब वह स्वयं अपने दासों को अपने बराबर करने के लिये तय्यार नहीं है तो फिर अल्लाह की उत्पत्ति और उस के दासों को कैसे पूजा-अर्चना में उस के बराबर करते हैं? क्या यह अल्लाह के उपकारों का इन्कार नहीं है?

तुम्हारी पत्नियों से पुत्र तथा पौत्र बनाये। और तुम्हें स्वच्छ चीजों से जीविका प्रदान की। तो क्या वे असत्य पर विश्वास रखते हैं, और अल्लाह के पुरस्कारों के प्रति अविश्वास रखते हैं?

لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرِزْقَكُمُ
مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَنْفَالًا طَلِيلٌ يُؤْمِنُونَ وَيَنْعَمَتِ
اللَّهُ لَهُمُ يَكْفُرُونَ ﴿٦٦﴾

73. और अल्लाह के सिवा उन की वंदना करते हैं। जो उन के लिये आकाशों तथा धरती से कुछ भी जीविका देने का अधिकार नहीं रखते, और न इस का सामर्थ्य रखते हैं।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ
رِزْقًا مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا
وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٦٧﴾

74. और अल्लाह के लिये उदाहरण न दो। वास्तव में अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।^[1]

فَلَا تُضِرُّهُ بِلَهِ الْأَمْثَالِ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

75. अल्लाह ने एक उदाहरण^[2] दिया है: एक पराधीन दास है, जो किसी चीज का अधिकार नहीं रखता, और दूसरा (स्वाधीन) व्यक्ति है, जिसे हम न अपनी ओर से उत्तम जीविका प्रदान की है। और वह उस में से छुपे और खुले व्यय करता है। क्या वह दोनों समान हो जायेंगे? सब प्रशंसा अल्लाह^[3] के लिये है। बल्कि अधिकतर लोग (यह बात) नहीं जानते।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى
شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِثْلَ نِزَالِ غَائِحَاتٍ فَهُوَ يُغْفِقُ
وَمِنْهُ يَسِرُّوا وَجَهَرًا هَلْ يَسْتَوُونَ الْعَبْدُ
بِلَهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

76. तथा अल्लाह ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया है। दोनों में से एक गूँगा

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا زَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ

1. क्यों कि उस के समान कोई नहीं।

2. आयत का भावार्थ यह है कि जैसे पराधीन दास और धनी स्वतंत्र व्यक्ति को तुम बराबर नहीं समझते, ऐसे मुझे और इन मुर्तियों को कैसे बराबर समझ रहे हो जो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकती। और यदि मक्खी उन का चढ़ावा ले भागे तो वह छीन भी नहीं सकती? इस से बड़ा अत्याचार क्या हो सकता है?

3. अर्थात् अल्लाह के सिवा तुम्हारे पूज्यों में से कोई प्रशंसा के योग्य नहीं।

है। वह किसी चीज़ का अधिकार नहीं रखता। वह अपने स्वामी पर बोल है। वह उसे जहाँ भेजता है कोई भलाई नहीं लाता। तो क्या वह, और जो न्याय का आदेश देता हो, और स्वयं सीधी^[1] राह पर हो बराबर हो जायेंगे??

77. और अल्लाह ही को आकाशों तथा धरती के परोक्ष^[2] का ज्ञान है। और प्रलय (क्यामत) का विषय तो बस पलक झपकने जैसा^[3] होगा, अथवा उस से भी अधिक शीघ्र। वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

78. और अल्लाह ही ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों से निकाला, इस दशा में कि तुम कुछ नहीं जानते थे। और तुम्हारे कान और आँख तथा दिल बनाये, ताकि तुम (उस का) उपकार मानो।

79. क्या वे पक्षियों को नहीं देखते कि वह अन्तरिक्ष में कैसे वशीभूत हैं? उन्हें अल्लाह ही थामता^[4] है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

80. और अल्लाह ही ने तुम्हारे घरों को निवास स्थान बनाया। और पशुओं की खालों से तुम्हारे लिये ऐसे घर^[5] बनाये जिन्हें तुम अपनी यात्रा तथा अपने

لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاةٍ أَيْنَمَا يُوَجِّهُ لَا يَأْتِي بَعْدَ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَيَلَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٍ فِي أَصْوَادِ السَّمَاءِ مَا يَسْكُنُونَ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ وَمِنْ أَصْوَابِهَا

1 यह दूसरा उदाहरण है जो मुर्तियों का दिया है। जो गूंगी-बहरी होती हैं।

2 अर्थात् गुप्त तथ्यों का।

3 अर्थात् पलभर में आयेगी।

4 अर्थात् पक्षियों को यह क्षमता अल्लाह ही ने दी है।

5 अर्थात् चमड़ों के खेमे।

विराम के दिन हल्का (अल्पभार) पाते हो। और उन की ऊन और रोम तथा बालों से उपकरण और लाभ के समान जीवन की निश्चित अवधि तक के लिये (बनाये)।

81. और अब्राह ही ने तुम्हारे लिये उस चीज़ में से जो उत्पन्न की है छाया बनायी है। और तुम्हारे लिये पर्वतों में गुफाएं बनायी हैं। और तुम्हारे लिये ऐसे वस्त्र बनाये हैं जो तुम्हें धूप से बचायें। और ऐसे वस्त्र जो तुम्हें तुम्हारे आक्रमण से बचायें^[1] इसी प्रकार वह तुम पर अपने उपकार पूरा करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

82. फिर यदि वे विमुख हों तो आप पर बस प्रत्यक्ष (खुला) उपदेश पहुँचा देना है।

83. वे अब्राह के उपकारों को पहचानते हैं फिर उस का इन्कार करते हैं। और उन में अधिकतर कृतघ्न हैं।

84. और जिस^[2] दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी (गवाह) खड़ा^[3] करेंगे, फिर काफिरों को बात करने की अनुमति नहीं दी जायेगी और न उन से क्षमा याचना की माँग की जायेगी।

85. और जब अत्याचारी यातना देखेंगे, उन की यातना कुछ कम नहीं की जायेगी,

وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا
إِلَىٰ حِينٍ ۝

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنَ خَلْقِ ظُلُمَاتٍ لَّكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ أَضَاءٌ وَقَدْ جَعَلَ لَكُم مِّنَ سِرَاجٍ
تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَالْبُرْدَ وَسَرَابِيلٌ لِّقِيَّتِكُمْ بِأَسْكَكُمْ كَذَلِكَ
يَتِمُّ نِعْمَتُهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝

يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ
الْكَافِرُونَ ۝

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا
يُؤَدُّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

وَلَذَارَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ

1 अर्थात् कवच आदि।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 (देखिये: सूरह निसा, आयत: 41)

और न उन्हें अवकाश दिया^[1] जायेगा।

عَنَهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۝

86. और जब मुशरिक अपने (बनाये हुये) साझियों को देखेंगे तो कहेंगे: हे हमारे पालनहार! यही हमारे साझी है जिन को हम तुझे छोड़ कर पुकार रहे थे। तो वह (पुज्य) बोलेंगे कि निश्चय तुम सब मिथ्यावादी (झुठे) हो।

وَإِذْ أَرَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ قَالِقَوْلِ إِلَهُهِمُ الْقَوْلَ إِنكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

87. उस दिन वे अब्राह के आगे झुक जायेंगे, और उन से खो जायेंगी जो मिथ्या बातें वह बनाते थे।

وَالْقَوْلَ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ السَّلَامُ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْكُرُونَ ۝

88. जो लोग काफिर हो गये और (दूसरों को भी) अब्राह की डगर (इस्लाम) से रोक दिय, उन्हें हम यातना पर यातना देंगे, उस उपद्रव के बदले जो वे कर रहे थे।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْطَدُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝

89. और जिस दिन हम प्रत्येक समुदाय से एक साक्षी उन के विरुद्ध उन्हीं में से खड़ा कर देंगे। और (हे नबी!) हम आप को उन पर साक्षी (गवाह) बनायेंगे^[2] और हम ने आप पर यह पुस्तक (कुर्आन) अवतरित की है जो प्रत्येक विषय का खुला विवरण है। तथा मार्ग दर्शन और दया तथा शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ مَوْلَاكُمُ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ۝

90. वस्तुतः अब्राह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है। और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يُوعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

1 अर्थात् तौबा करने का।

2 (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143)

है। और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

91. और जब अल्लाह से कोई वचन करो तो उसे पूरा करो। और अपनी शपथों को सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग न करो, जब तुम ने अल्लाह को अपने ऊपर गवाह बनाया है। निश्चय अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है।

92. और तुम्हारी दशा उस स्त्री जैसी न हो जाये जिस ने अपना सूत कातने के पश्चात् उधेड़ दिया। तुम अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन बनाते हो ताकि एक समुदाय दूसरे समुदाय से अधिक लाभ प्राप्त करे। अल्लाह इस^[1] (वचन) के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। और प्रलय के दिन तुम्हारे लिये अवश्य उसे उजागर कर देगा जिस में तुम विभेद कर रहे थे।

93. और यदि अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है कुपथ कर देता है, और जिसे चाहता है सुपथ दर्शा देता है। और तुम से उस के बारे में अवश्य पूछा जायेगा जो तुम कर रहे थे।

94. और अपनी शपथों को आपस में विश्वासघात का साधन न बनाओ, ऐसा न हो कि कोई पग अपने स्थिर

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَقَضَتْ غَزْلَهُنَّ مِنْ بَعْدِ
قُوَّةٍ أَنْكَارًا تَتَخِفُّونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ
تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْتَلُوا اللَّهَ بِهِ
وَلِيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ
تَخْتَلِفُونَ ۝

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ
يُفْضِلُ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
وَلَتَسْأَلَنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ
قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوْمَ بِمَا

1 अर्थात् किसी समुदाय से समझौता कर के विश्वासघात न किया जाये कि दूसरे समुदाय से अधिक लाभ मिलने पर समझौता तोड़ दिया जाये।

(दृढ़) होने के पश्चात् (ईमान से) फिसल^[1] जाये और तुम उस के बदले बुरा परिणाम चखो कि तुम ने अल्लाह की राह से रोका है। और तुम्हारे लिये बड़ी यातना हो।

95. और अल्लाह से किये हुये वचन को तनिक मूल्य के बदले न बेचो^[2] वास्तव में जो अल्लाह के पास है वही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम जानो।

96. जो तुम्हारे पास है वह व्यय (खर्च) हो जायेगा। और जो अल्लाह के पास है वह शेष रह जाने वाला है। और हम, जो धैर्य धारण करते हैं उन्हें अवश्य उन का पारिश्रमिक (बदला) उन के उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।

97. जो भी सदाचार करेगा, वह नर हो अथवा नारी, और ईमान वाला हो तो हम उसे स्वच्छ जीवन व्यतीत करावेंगे। और उन्हें उन का पारिश्रमिक उन के उत्तम कर्मों के अनुसार अवश्य प्रदान करेंगे।

98. तो (हे नबी!) जब आप कुर्आन का अध्ययन करें तो धिक्कारे हुये शैतान से

صَدَّ دُثْمُكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

مَا عِندَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ ۚ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةًۖ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِن

1 अर्थात् ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति इस्लाम की सत्यता को स्वीकार करने के पश्चात् केवल तुम्हारे दुराचार को देख कर इस्लाम से फिर जाये। और तुम्हारे समुदाय में सम्मिलित होने से रुक जाये। अन्यथा तुम्हारा व्यवहार भी दूसरों से कुछ भिन्न नहीं है।

2 अर्थात् संसारिक लाभ के लिये वचन भंग न करो। (देखिये: सूरह, आराफ़, आयत: 172)

अल्लाह की शरण^[1] माँग लिया करें।

الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ①

99. वस्तुतः उस का वश उन पर नहीं है जो ईमान लाये हैं, और अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ②

100. उस का वश तो केवल उन पर चलता है जो उसे अपना संरक्षक बनाते हैं। और जो मिश्रणवादी (मुशरिक) हैं।

إِنَّمَا سُلْطَانُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ③

101. और जब हम किसी आयत (विधान) के स्थान पर कोई आयत बदल देते हैं, और अल्लाह ही अधिक जानता है उसे जिस को वह उतारता है, तो कहते हैं कि आप तो केवल घड़ लेते हैं, बल्कि उन में अधिकतर जानते ही नहीं।

وَلَا تَبْدُلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ④ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُكْرِمُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتِرٌ بَيْنَ الْأَرْفَافِ ⑤ لَا يَعْلَمُونَ ⑥

102. आप कह दें कि इसे ((रूहुल क़दूस))^[2] ने आप के पालनहार की ओर से सत्य के साथ क्रमशः उतारा है ताकि उन्हें सुदृढ़ कर दे जो ईमान लाये हैं। तथा मार्ग दर्शन और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिये।

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى الْمُسْلِمِينَ ⑦

103. तथा हम जानते हैं कि वे (काफिर) कहते हैं कि उसे (नबी को) कोई मनुष्य सिखा रहा^[3] है। जब कि उस की भाषा जिस की ओर संकेत करते

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ أَعْجِبُوا وَهَذَا لِّلْإِنْسَانِ عَرَنٌ مِّثْلُ ⑧

1 अर्थात ((अऊजुबिल्लाहि मिन शैतानि ररजीम)) पढ़ लिया करें।

2 इस का अर्थ: पवित्रात्मा है। जो जिब्रील अलैहिस्सलाम की उपाधि है। यही वह फरिश्ता है जो बह्दी लाता था।

3 इस आयत में मक्का के मिश्रणवादियों के इस आरोप का खण्डन किया गया है कि कुर्आन आप को एक विदेशी सिखा रहा है।

है विदेशी है और यह^[1] स्पष्ट अर्बी भाषा है।

104. वास्तव में जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन्हें अल्लाह सुपथ नहीं दर्शाता। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

105. झूठ केवल वही घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, और वही मिथ्यावादी (झूठे) हैं।

106. जिस ने अल्लाह के साथ कुफ़्र किया अपने ईमान लाने के पश्चात्, परन्तु जो बाध्य कर दिया गया हो इस दशा में कि उस का दिल ईमान से संतुष्ट हो, (उस के लिये क्षमा है)। परन्तु जिस ने कुफ़्र के साथ सीना खोल दिया^[2] हो, तो उन्हीं पर अल्लाह का प्रकोप है, और उन्हीं के लिये महा यातना है।

107. यह इसलिये कि उन्हीं ने संसारिक जीवन को परलोक पर प्राथमिकता दी है। और वास्तव में अल्लाह, काफ़िरों को सुपथ नहीं दिखाता।

108. वही लोग हैं जिन के दिलों तथा कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है। तथा यही लोग अचेत हैं।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ أَكْرَهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْنَاهُمْ عَذَابًا مِنْ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَإِنَّ اللَّهَ لَإَيُّهُ الْقَوْمُ الْكَافِرِينَ

أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَسَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ

1 अर्थात् मक्के वाले जिसे कहते हैं कि वह मुहम्मद को कुर्आन सिखाता है उस की भाषा तो अर्बी है ही नहीं तो वह आप को कुर्आन कैसे सिखा सकता है जो बहुत उत्तम तथा श्रेष्ठ अर्बी भाषा में है। क्या वे इतना भी नहीं समझते?

2 अर्थात् स्वेच्छा कुफ़्र किया हो।

109. निश्चय वही लोग परलोक में क्षतिग्रस्त होने वाले हैं।
110. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन लोगों^[1] के लिये जिन्होंने हिजरत (प्रस्थान) की, और उस के पश्चात् परीक्षा में डाले गये, फिर जिहाद किया, और सहन शील रहे, वास्तव में आप का पालनहार इस (परीक्षा) के पश्चात् बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
111. जिस दिन प्रत्येक प्राणी को अपने बचाव की चिन्ता होगी, और प्रत्येक प्राणी को उस के कर्मों का पूरा बदला दिया जायेगा, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
112. अल्लाह ने एक बस्ती का उदाहरण दिया है, जो शान्त संतुष्ट थी, उस की जीविका प्रत्येक स्थान से प्राचुर्य के साथ पहुँच रही थी, तो उस ने अल्लाह के उपकारों के साथ कुफ़्र किया। तब अल्लाह ने उसे भूख और भय का वस्त्र चखा^[2] दिया उस के बदले जो वह^[3] कर रहे थे।
113. और उन के पास एक^[4] रसूल उन्हीं

لَا جُرمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٩﴾

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنَّا بَعْدَ مَا قُتِلُوا لَكُمْ جِهَادًا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنَّا بَعْدَ مَا لَعَنُوا رَجِيمٌ ﴿١١٠﴾

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١١١﴾

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّن كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١١٢﴾

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ

- 1 इन से अभिप्रेत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह अनुयायी है जो मक्का से मदीना हिजरत कर गये।
- 2 अर्थात् उन पर भूख और भय की आपदायें छा गई।
- 3 अर्थात् उस बस्ती के निवासी। और इस बस्ती से अभिप्रेत मक्का है जिन पर उन के कुफ़्र के कारण अकाल पड़ा।
- 4 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के कुरैशी वंश से ही थे फिर भी

में से आया तो उन्होंने उसे झुठला दिया। अतः उन्हें यातना ने पकड़ लिया, और वह अत्याचारी थे।

114. अतः उस में से खाओ जो अल्लाह ने तुम्हें हलाल (वैध) स्वच्छ जीविका प्रदान की है। और अल्लाह का उपकार मानो यदि तुम उसी की इबादत (बंदना) करते हो।

115. जो कुछ उस ने तुम पर हराम (अवैध) किया है वह मुर्दार तथा रक्त और सूअर का मांस है, और जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरे का नाम लिया गया^[1] हो, फिर जो भूख से आतुर हो जाये, इस दशा में कि वह नियम न तोड़ रहा^[2] हो, और न आवश्यकता से अधिक खाये, तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

116. और मत कहो -उस झूठ के कारण जो तुम्हारी जुबानों पर आ जाये- कि यह हलाल (वैध) है, और यह हराम (अवैध) है ताकि अल्लाह पर मिथ्यारोप^[3] करो। वास्तव में जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोप करते हैं

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١١٤﴾

فَكُلُوا مِمَّا زَكَّاهُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَأَشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنَّ كُتُوبَكُمْ إِنَاءٌ
نَعِيمٌ ﴿١١٥﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخِزْيِئِرِ وَمَا أَهْلٌ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ
اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ﴿١١٦﴾

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ
الْكُذْبَ هَذَا حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ
لِنَعْتُرَّوَأَعْلَى اللَّهِ الْكُذْبُ إِنَّ الَّذِينَ
يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذْبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٧﴾

उन्होंने ने आप की बात को नहीं माना।

- 1 अर्थात् अल्लाह के सिवा अन्य के नाम से बलि दिया गया पशु। हदीस में है कि जो अल्लाह के सिवा दूसरे के नाम से बलि दे उस पर अल्लाह की धिक्कार है। (सहीह बुखारी-1978)
- 2 (देखिये: सूरह बकरा, आयत-173, सूरह माइदा, आयत-3, तथा सूरह अन्नाम, आयत-145)
- 3 क्योंकि हलाल और हराम करने का अधिकार केवल अल्लाह को है।

वह (कभी) सफल नहीं होते।

117. (इस मिथ्यारोपण का) लाभ तो थोड़ा है और उन्हीं के लिये (परलोक में) दुःखदायी यातना है।

118. और उन पर जो यहूदी हो गये, हम ने उसे हराम (अवैध) कर दिया जिस का वर्णन हम ने इस^[1] से पहले आप से कर दिया है। और हम ने उन पर अत्याचार नहीं किया, परन्तु वे स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

119. फिर वास्तव में आप का पालनहार उन्हें जो अज्ञानता के कारण बुराई कर बैठे, फिर उस के पश्चात् क्षमायाचना कर ली, और अपना सुधार कर लिया, वास्तव में आप का पालनहार इस के पश्चात् अति क्षमी दयावान् है।

120. वास्तव में इब्राहीम एक समुदाय^[2] था, अल्लाह का आज्ञाकारी एकेश्वरवादी था। और मिश्रणवादियों (मुश्रिकों) में से नहीं था।

121. उस के उपकारों को मानता था, उस ने उसे चुन लिया, और उसे सीधी राह दिखा दी।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا مَّا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّرُوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

شَاكِرًا لِلنِّعْمَةِ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

1 इस से संकेत सूरह अन्माम, आयत-26 की ओर है।

2 अर्थात् वह अकेला सम्पूर्ण समुदाय था। क्यों कि उस के वंश से दो बड़ी उम्मतें बनीं: एक बनी इस्राईल, और दूसरी बनी इस्माईल जो बाद में अरब कहलाये। इस का एक दूसरा अर्थ मुख्या भी होता है।

122. और हम ने उसे संसार में भलाई दी, और वास्तव में वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

وَأَتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَوَلَّاهُ فِي الْآخِرَةِ لِمَنِ الصَّالِحِينَ ۝

123. फिर हम ने (हे नबी!) आप की ओर वही की, कि एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म का अनुसरण करो, और वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।

ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

124. सब्त^[1] (शनिवार का दिन) तो उन्हीं पर निर्धारित किया गया जिन्होंने उस में विभेद किया। और वस्तुतः आप का पालनहार उन के बीच उस में निर्णय कर देगा जिस में वे विभेद कर रहे थे।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

125. (हे नबी!) आप उन्हें अपने पालनहार की राह (इस्लाम) की ओर तत्वदर्शिता तथा सदुपदेश के साथ बुलायें। और उन से ऐसे अन्दाज़ में शास्त्रार्थ करें जो उत्तम हो। वास्तव में अल्लाह उसे अधिक जानता है, जो उस की राह से विचलित हो गया, और वही सुपथों को भी अधिक जानता है।

أَدْعُرْ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ يَاقُتْبَىٰ هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَبِينَ ۝

126. और यदि तुम लोग बदला लो, तो उतना ही लो, जितना तुम्हें सताया गया हो। और यदि सहन कर जाओ

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِلصَّابِرِينَ ۝

1 अर्थात् सब्त का सम्मान जैसे इस्लाम में नहीं है इसी प्रकार इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म में भी नहीं है। यह तो केवल उन के लिये निर्धारित किया गया जिन्होंने विभेद कर के जुम्मा के दिन की जगह सब्त का दिन निर्धारित कर लिया। तो अल्लाह ने उन के लिये उसी का सम्मान अनिवार्य कर दिया कि इस में शिकार न करो। (देखिये: सूरह आराफ, आयत: 163)

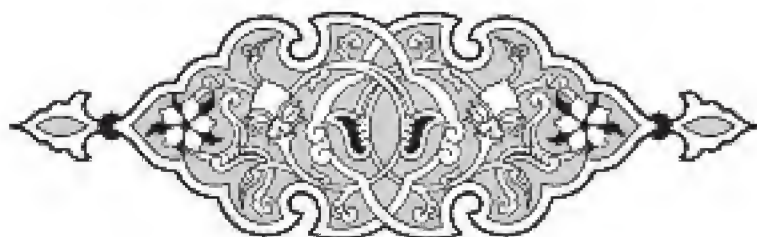
तो सहनशीलों के लिये यही उत्तम है।

127. और (हे नबी!) आप सहन करें, और आप का सहन करना अल्लाह ही की सहायता से है। और उन के (दुर्व्यवहार) पर शोक न करें, और न उन के षड्यंत्र से तनिक भी संकुचित हों।

128. वास्तव में अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो सदाचारी हैं, और जो उपकार करने वाले हैं।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَلَا تَكُ فِي ضَلٰلٍ مِّمَّا يَكْفُرُوْنَ ۝

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ
مُحْسِنُونَ ۝



सूरह बनी इस्राईल - 17

سُورَةُ بَنِي إِسْرَآءِيلَ

सूरह बनी इस्राईल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस की आयत (2-3 में बनी इस्राईल से संबंधित कुछ शिक्षाप्रद बातें सुना कर सावधान किया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह (बनी इस्राईल) रखा गया है। और इस की प्रथम आयत में इस्राअ (मेअराज) का वर्णन हुआ है इसलिये इस का दूसरा नाम सूरह (इस्राअ) भी है।
- आयत 9 से 22 तक कुर्आन का आमंत्रण प्रस्तुत किया गया है। और आयत 39 तक उन शिक्षाओं का वर्णन है जो मनुष्य के कर्मों को सजाती हैं और अल्लाह से उस का संबंध दृढ़ करती हैं। और आयत 40 से 60 तक विरोधियों के संदेहों को दूर किया गया है।
- आयत 61 से 65 तक में शैतान इब्लीस के आदम (अलैहिस्सलाम) के सज्दे से इन्कार, और मनुष्य से बैर और उस को कुपथ करने के प्रयास का वर्णन किया गया है, जो आज भी लोगों को कुर्आन से रोक रहा है। और उस से सावधान किया गया है।
- आयत 66 से 72 तक तौहीद तथा परलोक पर विश्वास की बातें प्रस्तुत करते हुये आयत 77 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध की आंधियों में सत्य पर स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 78 से 82 तक में नमाज़ की ताकीद, हिज्रत की ओर संकेत, तथा सत्य के प्रभुत्व की सूचना और अत्याचारियों के लिये चेतावनी है।
- आयत 83 से 100 तक में मनुष्य के कुकर्म पर पकड़ की गई है। तथा विरोधियों की आपत्तियों के उत्तर दिये गये हैं। फिर आयत 104 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के चमत्कारों की चर्चा और उस पर ईमान न लाने के कारण फिरौन पर यातना के आ जाने का वर्णन है।
- आयत 105 से 111 तक यह निर्देश दिये गये हैं कि अल्लाह को कैसे पुकारा जाये, तथा उस की महिमा का वर्णन कैसे किया जाये।

मेअराज की घटना:

- यह अन्तिम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशेषता है कि

हिज्रत से एक वर्ष पहले अब्बाह ने एक रात आप को मस्जिदे हराम (काँवा) से मस्जिदे अक्सा तक, और फिर वहाँ से सातवें आकाश तक अपनी कुछ निशानियाँ दिखाने के लिये यात्रा कराई। फरिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को «बुराक» (एक जानवर का नाम, जिस पर बैठ कर आप ने यह यात्रा की थी) पर सवार किया और पहले मस्जिदे अक्सा (फिलस्तीन) ले गये वहाँ आप ने सब नबियों को नमाज़ पढ़ाई। फिर आकाश पर ले गये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक आकाश पर नबियों से मिलते हुये सातवें आकाश पर पहुँचे। स्वर्ग और नरक को देखा। इस के पश्चात् आप को ((सिद्रतुल मुन्तहा)) ले जाया गया। फिर ((बैतुल मामूर)) आप के सामने किया गया। उस के पश्चात् अब्बाह के समीप पहुँचाया गया। और अब्बाह ने आप को कुछ उपदेश दिये, और दिन-रात में पाँच समय की नमाज़ अनिवार्य की। (सहीह बुखारी-3207, मुस्लिम- 164) (और देखिये: सूरह नज्म)

- जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सवेरे अपनी जाति को इस यात्रा की सूचना दी तो उन्होंने ने आप का उपहास किया और आप से कहा कि बैतुल मक्दिस की स्थिति बताओ। इस पर अब्बाह ने उसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने कर दिया, और आप ने आँखों से देख कर उन को उस की सब निशानियाँ बता दी। (देखिये: सहीह बुखारी-3437, मुस्लिम- 172)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जाते और आते हुये राह में उन के एक काफिले से मिलने की भी चर्चा की और उस के मक्का आने का समय और उस ऊँट का चिन्ह भी बता दिया जो सब से आगे था और यह सब वैसे ही हुआ जैसे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने बताया था। (सीरत इब्ने हिशाम-1/402-403)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. पवित्र है वह जिस ने रात्रि के कुछ क्षण में अपने भक्त^[1] को मस्जिदे

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा तक यात्रा कराई। जिस के चतुर्दिग हम ने सम्पन्नता रखी है, ताकि उसे अपनी कुछ निशानियों का दर्शन कराये। वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

2. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की और उसे बनी इस्राईल के लिये मार्गदर्शन का साधन बनाया कि मेरे सिवा किसी को कार्यसाधक⁽¹⁾ न बनाओ।
3. हे उन की संतति जिन को हम ने नूह के साथ (नौका में) सवार किया। वास्तव में वह अति कृतज्ञ⁽²⁾ भक्त था।
4. और हम ने बनी इस्राईल को उन की पुस्तक में सूचित कर दिया था कि तुम इस⁽³⁾ धरती में दो बार उपद्रव

الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي
بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ ۝

وَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي
إِسْرَءِيلَ الْأَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا ۝

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا
شَكُورًا ۝

وَقَضَيْنَا إِلَى بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتَقْعِدُنَّ فِي
الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝

इस आयत में उस सुप्रसिद्ध सत्य की चर्चा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से संबन्धित है। जिसे परिभाषिक रूप से "इसाअ" कहा जाता है जिस का अर्थ है: रात की यात्रा। इस का सविस्तार विवरण हदीसों में किया गया है।

भाष्यकारों के अनुसार हिजरत के कुछ पहले अल्लाह ने आप को रात्रि के कुछ भाग में मक्का से मस्जिदे अक्सा तक जो फिलस्तीन में है यात्रा कराई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि जब मक्का के मिश्रणवादियों ने मुझे झुठलाया, तो मैं हिज्र में (जो काँबा का एक भाग है) खड़ा हो गया। और अल्लाह ने बैतुम मक्दिस को मेरे लिये खोल दिया। और मैं उन्हें उस की निशानियाँ देख कर बताने लगा। (सहीह बुखारी, हदीस: 4710)।

- 1 जिस पर निर्भर रहा जाये।
- 2 अतः हे सर्वमानव तुम भी अल्लाह के उपकार के आभारी बनो।
- 3 अर्थात् बैतुल मक्दिस में।

करोगे, और बड़ा अत्याचार करोगे।

5. तो जब प्रथम उपद्रव का समय आया तो हम ने तुम पर अपने प्रबल योद्धा भक्तों को भेज दिया, जो नगरों में घुस गये, और इस वचन को पूरा होना^[1] ही था।

6. फिर हम ने उन पर तुम्हें पुनः प्रभुत्व दिया, तथा धनों और पुत्रों द्वारा तुम्हारी सहायता की, और तुम्हारी संख्या बहुत अधिक कर दी।

7. यदि तुम भला करोगे तो अपने लिये, और यदि बुरा करोगे तो अपने लिये। फिर जब दूसरे उपद्रव का समय आया ताकि (शत्रु) तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद (अक्सा) में वैसे ही प्रवेश कर जायें जैसे प्रथम बार प्रवेश कर गये, और ताकि जो भी उन के हाथ आये उसे पूर्णतः नाश^[2] कर दें।

8. संभव है कि तुम्हारा पालनहार तुम पर दया करे। और यदि तुम प्रथम स्थिति पर आ गये, तो हम भी फिर^[3] आयेंगे, और हम ने नरक को काफ़िरो

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادَْنَا أُولَى بَأْسٍ شَدِيدِينَ فَجَاءُوا بِخِلَالِ الدِّينَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَفْعُولًا ۝

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَا كَثْرَتَكُمْ قَصِيرًا ۝

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنُتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءُوا وُجُوهَكُمْ وَلِيَبَدَّلُوا الْمُسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَمِلُوا قَبْلَ ۝

عَلَى رَبِّكَ أَنْ يَرْحَمَكُم ۚ إِنَّ عَذَابَ عَدُوِّنَا وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

1 इस से अभिप्रेत बाबिल के राजा बुख्तनस्सर का आक्रमण है जो लग भग छः सौ वर्ष पूर्व मसीह हुआ। इस्राईलियों को बंदी बना कर ईराक ले गया और बैतुल मुकद्दस को तहस नहस कर दिया।

2 जब बनी इस्राईल पुनः पापाचारी बन गये, तो रोम के राजा कैसर ने लग भग सन् 70 ई० में बैतुल मक्दिस पर आक्रमण कर के उन की दुर्गत बना दी। और उन की पुस्तक तौरात का नाश कर दिया और एक बड़ी संख्या को बंदी बना लिया। यह सब उन के कुकर्म के कारण हुआ।

3 अर्थात् संसारिक दण्ड देने के लिये।

के लिये कारावास बना दिया है।

9. वास्तव में यह कुरआन वह डगर दिखाता है जो सब से सीधी है, और उन ईमान वालों को शुभसूचना देता है जो सदाचार करते हैं, कि उन्हीं के लिये बहुत बड़ा प्रतिफल है।

10. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, हम ने उन के लिये दुःखदायी यातना तय्यार कर रखी है।

11. और मनुष्य (क्षुब्ध हो कर) अभिशाप करने लगता¹ है, जैसे भलाई के लिये प्रार्थना करता है। और मनुष्य बड़ा ही उतावला है।

12. और हम ने रात्रि तथा दिवस को दो प्रतीक बनाया, फिर रात्रि के प्रतीक को हम ने अंधकार बनाया तथा दिवस के प्रतीक को प्रकाशयुक्त, ताकि तुम अपने पालनहार के अनुग्रह (जीविका) की खोज करो। और वर्षों तथा हिसाब की गिनती जानो, तथा हम ने प्रत्येक चीज़ का सविस्तार वर्णन कर दिया।

13. और प्रत्येक मनुष्य के कर्म पत्र को हम ने उस के गले का हार बना दिया है। और हम उस के लिये प्रलय के दिन एक कर्मलेख निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पायेगा।

14. अपना कर्मलेख पढ़ लो, आज तू स्वयं अपना हिसाब लेने के लिये पर्याप्त है।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِينَ هُمْ أَقْوَمُ وَيُضِلُّ الْمُضِلِّينَ الَّذِينَ يَصْلَوْنَ الصَّلَاةَ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ
كَبِيرُونَ

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

وَيَذَرُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتَيْنِ فَمَنْ حَمَلَ آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْجُورَةً لِّمَنْ تَبَغَّوْا فَضَلَّ عَنْ رَبِّكُمْ فَلَعَلَّوْا عَذَابَ الْيَتِيمِينَ وَالْحَسَابَ وَكُلُّ شَيْءٍ فَضْلُهُ تَفْصِيلًا

وَكُلُّ إِنْسَانٍ لِّرَبِّهِ أَزْمَنُ طَوِيلٌ فِي عُنُقِهِ وَنُحْمُ حُلَاهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَكُتُبًا يُلْقَاهُ مَنشُورًا

إِقْرَأْ كِتَابَكَ كُلُّ إِنْسَانٍ لِّنَفْسِهِ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا

1 अर्थात् स्वयं को और अपने घराने को शापने लगता है।

15. जिस ने सीधी राह अपनायी, उस ने अपने ही लिये सीधी राह अपनायी। और जो सीधी राह से विचलित हो गया उस का (दुष्परिणाम) उसी पर है। और कोई दूसरे का बोझ (अपने ऊपर) नहीं लादेगा।^[1] और हम यातना देने वाले नहीं हैं जब तक कि कोई रसूल न भेजे।^[2]

16. और जब हम किसी बस्ती का विनाश करना चाहते हैं तो उस के सम्पन्न लोगों को आदेश देते^[3] हैं, फिर वह उस में उपद्रव करने लगते^[4] हैं तो उस पर यातना की बात सिद्ध हो जाती है, और हम उस का पूर्णतः उन्मूलन कर देते हैं।

17. और हम ने बहुत सी जातियों का नूह के पश्चात् विनाश किया है। और आप का पालनहार अपने दासों के पापों से सूचित होने-देखने को बहुत है।

18. जो संसार ही चाहता हो हम उसे यही दे देते हैं, जो हम चाहते हैं, जिस के लिये चाहते हैं। फिर हम उस का परिणाम (परलोक में) नरक बना देते हैं, जिस में वह निन्दित-तिरस्कृत

مِنْ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَلَا تَنصُرْهُ
يُضِلُّ عَلَيْهَا وَلَا تَزِدُّهُ عُزْرَةً وَلَا تَخْرُجُ وَمَا كُنَّا
مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا
فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ وَكَفَىٰ
بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ جَنَّاهُ إِلَهٌ فِيهَا مَا تُغْنِي
لَهُمْ جَنَّاتُهُ جَنَّاتُهُ لَهُمْ فِيهَا حُمْرُ النَّعَمِ وَمِنْهَا مَدَّ حُورًا

1 आयत का भावार्थ यह है कि जो सदाचार करता है, वह किसी पर उपकार नहीं करता। बल्कि उस का लाभ उसी को मिलना है। और जो दुराचार करता है, उस का दण्ड भी उसी को भोगना है।

2 ताकि वे यह बहाना न कर सकें कि हम ने सीधी राह को जाना ही नहीं था।

3 अर्थात् आज्ञापालन का।

4 अर्थात् हमारी आज्ञा का। आयत का भावार्थ यह है कि समाज के सम्पन्न लोगों का दुष्कर्म, अत्याचार और अवैज्ञा पूरी बस्ती के विनाश का कारण बन जाती है।

हो कर प्रवेश करेगा।

19. तथा जो परलोक चाहता हो और उस के लिये प्रयास करता हो, और वह एकेश्वरवादी हो, तो वही हैं जिन के प्रयास का आदर सम्मान किया जायेगा।

20. हम प्रत्येक की सहायता करते हैं, इन की भी और उन की भी, और आप के पालनहार का प्रदान (किसी से) निषेधित (रोका हुआ) नहीं^[1] है।

21. आप विचार करें कि कैसे हम ने (संसार में) उन में से कुछ को कुछ पर प्रधानता दी है और निश्चय परलोक के पद और प्रधानता और भी अधिक होगी।

22. (हे मानव!) अब्राह के साथ कोई दूसरा पूज्य न बना, अन्यथा बुरा और असहाय हो कर रह जायेगा।

23. और (हे मनुष्य!) तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करो, तथा माता - पिता के साथ उपकार करो, यदि तेरे पास दोनों में से एक वृद्धावस्था को पहुँच जाये अथवा दोनों, तो उन्हें उफ तक न कहो, और न झिड़को। और उन से सादर बात बोलो।

24. और उन के लिये विनम्रता का बाजू दया से झुका^[2] दो, और प्रार्थना करो:

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

كَلَّا لَئِنْ هُوَ إِلَّا وَهُوَ إِلَّا مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝

أَنظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَلِلْآخِرَةِ الْكِبَرُ دَرَجَاتٍ وَالْكِبَرُ تَضْيِيلًا ۝

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا الْغَرَقَمَقَدَّ مَذْمُومًا مَعْدُودًا ۝

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا يَاقَا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ۖ إِنَّمَا يُنْفَخُ عَنْكَ الْكِبَرُ إِذَا كُنَّ أَوْ كُنَّ أَوْ كُنَّ أَوْ كُنَّ لَهُمَا ۖ أَوْ لِكُلٍّ وَكُلٍّ ۖ وَلَئِنْ تَهَمَّرْتُمَا وَقُلْتُمْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝

وَخُفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ

1 अर्थात् अब्राह संसार में सभी को जीविका प्रदान करता है।

2 अर्थात् उन के साथ विनम्रता और दया का व्यवहार करो।

أَرْحَمًا كَمَا كَانَ لِغِيثٍ صَغِيرًا ۝

हे मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन दोनों ने बाल्यावस्था में मेरा लालन-पालन किया है।

25. तुम्हारा पालनहार अधिक जानता है जो कुछ तुम्हारी अन्तरात्माओं (मन) में है। यदि तुम सदाचारी रहे, तो वह अपनी ओर ध्यानमग्न रहने वालों के लिये अति क्षमावान् है।

وَلَكُمْ أَعْلَمُ بِأَنِّي لَأَعْلَمُ بِأَن تَكُونُوا صَادِقِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۝

26. और समीपवर्तियों को उन का स्वत्व (हिस्सा) दो, तथा दरिद्र और यात्री को, और अपव्यय^[1] न करो।

وَأَن ذَا الْعَرْشِ حَقُّهُ وَالْيَسِيرِينَ وَأَيُّنَ الشَّيْبِلِ وَلَا تَجِدُ رَبِّي ذَرِيرًا ۝

27. वास्तव में अपव्ययी शैतान के भाई है और शैतान अपने पालनहार का अति कृतघ्न है।

إِنَّ الْمَلَأِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ رِبِّيًّا فَكُنُورًا ۝

28. और यदि आप उन से विमुख हों अपने पालनहार की दया की खोज के लिये जिस की आशा रखते हों तो उन से सरल^[2] बात बोलें।

وَلَا تُعْرِضْ عَنْهُمْ أَيْتَاءَ رَحْمَةٍ مِنِّي بِكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۝

29. और अपना हाथ अपनी गरदन से न बाँध^[3] लो, और न उसे पूरा खोल दो कि निन्दित विवश हो कर रह जाओ।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ لَوْلَا أَعِزُّونَا ۝

30. वास्तव में आप का पालनहार ही विस्तृत कर देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है, तथा संकीर्ण कर देता है। वास्तव में वही अपने दासों

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

1 अर्थात् अपरिमित और दुष्कर्म में खर्च न करो।

2 अर्थात् उन्हें सरलता से समझा दें कि अभी कुछ नहीं है। जैसे ही कुछ आया तुम्हें अवश्य दूँगा।

3 हाथ बाँधने और खोलने का अर्थ है, कपण तथा अपव्यय करना। इस में व्यय और दान में संतुलन रखने की शिक्षा दी गयी है।

(बंदों) से अति सूचित^[1] देखने वाला है^[2]

31. और अपनी संतान को निर्धन हो जाने के भय से बध न करो, हम उन्हें तथा तुम्हें जीविका प्रदान करेंगे, वास्तव में उन्हें बध करना महा पाप है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةً إِمَّا يَكُنْ تَرِزُقُهُمْ
وَإِنَّا لَكَرِيمُونَ ۝

32. और व्यभिचार के समीप भी न जाओ, वास्तव में वह निर्लज्जा तथा बुरी रीति है।

وَلَا تَقْرَبُوا الزَّوْنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

33. और किसी प्राण को जिसे अल्लाह ने हराम (अवैध) किया है, बध न करो, परन्तु धर्म विधान^[3] के अनुसार। और जो अत्यचार से बध (निहत) किया गया हो हम ने उस के उत्तराधिकारी को अधिकार^[4] प्रदान किया है। अतः वह बध करने में अतिक्रमण^[5] न करे, वास्तव में उसे सहायता दी गयी है।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَنْ
كُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلْيُتَرَفْ
فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝

34. और अनाथ के धन के समीप भी न जाओ, परन्तु ऐसी रीति से जो उत्तम हो, यहाँ तक कि वह अपनी युवा अवस्था को पहुँच जाये, और वचन पूरा करो, वास्तव में वचन के विषय में प्रश्न किया जायेगा।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ مُخْتَصِ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُولًا ۝

1 अर्थात् वह सब की दशा और कौन किस के योग्य है देखता और जानता है।

2 हदीस में है कि शिर्क के बाद सब से बड़ा पाप अपनी संतान को खिलाने के भय से मार डालना है। (बुखारी, 4477, मुस्लिम: 86)

3 अर्थात् प्रतिहत्या में अथवा विवाहित होते हुये व्यभिचार के कारण, अथवा इस्लाम से फिर जाने के कारण।

4 अधिकार का अर्थ यह है कि वह इस के आधार पर हत्-दण्ड की मांग कर सकता है, अथवा बध या अर्थ-दण्ड लेने या क्षमा कर देने का अधिकारी है।

5 अर्थात् एक के बदले दो को या दूसरे की हत्या न करे।

35. और पूरा नाप कर दो, जब नापो,
और सही तराजू से तौलो। यह अधिक
अच्छा और इस का परिणाम उत्तम है।
36. और ऐसी बात के पीछे न पड़ो, जिस
का तुम्हें कोई ज्ञान न हो, निश्चय
कान तथा आँख और दिल इन सब
के बारे में (प्रलय के दिन) प्रश्न
किया जायेगा।^[1]
37. और धरती में अकड़ कर न चलो,
वास्तव में न तुम धरती को फाड़
सकोगे, और न लम्बाई में पर्वतों
तक पहुँच सकोगे।
38. यह सब बातें हैं। इन में बुरी बात
आप के पालनहार को अप्रिय है।
39. यह तत्त्वदर्शिता की वह बातें हैं, जिन
की बह्नी (प्रकाशना) आप की ओर
आप के पालनहार ने की है, और
अब्राह के साथ कोई दूसरा पूज्य न
बना लेना, अन्यथा नरक में निन्दित
तिरस्कृत कर के फेंक दिये जाओगे।
40. क्या तुम्हारे पालनहार ने तुम्हें पुत्र
प्रदान करने के लिये विशेष कर
लिया है, और स्वयं ने फरिश्तों को
पुत्रियाँ बना लिया है? वास्तव में तुम
बहुत बड़ी बात कह रहे हो।^[2]

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ
ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٣٥﴾

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ
وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ﴿٣٦﴾

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ
وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ﴿٣٧﴾

كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُومًا ﴿٣٨﴾

ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ
وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُنْ فِي جَهَنَّمَ
مِمَّنْ يَمْذُحُونَ ﴿٣٩﴾

أَفَأَصْغَعَكُمْ رَبُّكُمُ الْبَاقِينَ وَالْأَخْدَانِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ
إِنَّا إِنَّا إِنَّا لَنَقُولُ لَكُمْ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

1 अब्राह, प्रलय के दिन इन को बोलने की शक्ति देगा। और वह उस के विरुद्ध
साक्ष्य देंगे। (देखिये: सूरह, हा, मीम सज्दा, आयत: 20-21)

2 इस आयत में उन अर्वा का खण्डन किया गया है जो फरिश्तों को अब्राह की
पुत्रियाँ कहते थे। जब कि स्वयं पुत्रियों के जन्म से उदास हो जाते थे। और कभी
ऐसा भी हुआ कि उन्हें जीवित गाड़ दिया जाता था। तो बताओ यह कहाँ का

41. और हम ने विविध प्रकार से इस कुरआन में (तथ्यों का) वर्णन कर दिया है, ताकि लोग शिक्षा ग्रहण करें। परन्तु उस ने उन की घृणा को और अधिक कर दिया।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝

42. आप कह दें कि यदि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य होते, जैसा कि वह (मिश्रणवादी) कहते हैं, तो वह अर्श (सिंहासन) के स्वामी (अल्लाह) की ओर अवश्य कोई राह^[1] खोजते।

فَلَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذِ الْأَمْثَلُ إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ مَبِيلًا ۝

43. वह पवित्र और बहुत उच्च है, उन बातों से जिन को वे बनाते हैं।

مُبِينًا وَتَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝

44. उस की पवित्रता का वर्णन कर रहे हैं सातों आकाश तथा धरती और जो कुछ उन में है। और नहीं है कोई चीज़ परन्तु वह उस की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन कर रही है, किन्तु तुम उन के पवित्रता गान को समझते नहीं हो। वास्तव में वह अति सहिष्णु क्षमाशील है।

تَسْبِيحُهُ السَّمَوَاتِ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا أَسْبَحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا غَفُورًا ۝

45. और जब आप कुरआन पढ़ते हैं, तो हम आप के बीच और उन के बीच जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं लाते, एक छुपा हुआ आवरण (पर्दा) बना^[2] देते हैं।

وَإِذْ أَقْرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قَبَابًا مَّسْتُورًا ۝

न्याय है कि अपने लिये पुत्रियों को अप्रिय समझते हो और अल्लाह के लिये पुत्रियाँ बना रखी हो?

1 ताकि उस से संघर्ष कर के अपना प्रभुत्व स्थापित कर लें।

2 अर्थात् परलोक पर ईमान न लाने का यही स्वभाविक परिणाम है कि कुरआन को समझने की योग्यता खो जाती है।

46. तथा उन के दिलों पर ऐसे खोल चढ़ा देते हैं कि उस (कुर्आन) को न समझें, और उन के कानों में बोझ। और जब आप अपने अकेले पालनहार की चर्चा कुर्आन में करते हैं तो वह घृणा से मुँह फेर लेते हैं।

47. और हम उन के विचारों से भली भाँति अवगत हैं, जब वे कान लगा कर आप की बात सुनते हैं, और जब वे आपस में कानाफूसी करते हैं। जब वे अत्याचारी करते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण^[1] करते हो।

48. सोचिये कि वह आप के लिये कैसे उदाहरण दे रहे हैं? अतः वे कुपथ हो गये, वह सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

49. और उन्होंने ने कहा: क्या हम जब अस्थियाँ और चूर्ण विचूर्ण हो जायेंगे तो क्या हम वास्तव में नई उत्पत्ति में पुनः जीवित कर दिये^[2] जायेंगे?

50. आप कह दें कि पत्थर बन जाओ, या लोहा।

51. अथवा कोई उत्पत्ति जो तुम्हारे मन में इस से बड़ी हो। फिर वे पूछते हैं कि कौन हमें पुनः जीवित करेगा? आप कह दें: वही जिस ने प्रथम चरण

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ كِتَابًا أَنْ يَقْنُنُوا وَنَآ إِذَا نَقَرُوا وَقُرْا وَإِذَا كُنْتَ رَتَبْتَ فِي الْقُرْآنِ حِذَاهُ وَلَوْ عَلَ الْآبَارِهِمْ نَقُورًا ۝

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَشْتَعُونَ بِهِ إِذْ يَسْمَعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَى إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْخُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْمَعُونَ سَبِيلًا ۝

وَقَالُوا لَوْ إِنْ كُنَّا عِظَامًا أَوْ رُفَاةً لَأَرْثَا لِنَبْعُوثُ خَلْقًا جَدِيدًا ۝

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ۝

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا قُلِ الْبَدِئُ فَطَرَكُمُ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى

1 मक्का के काफिर छुप-छुप कर कुर्आन सुनते। फिर आपस में परामर्श करते कि इस का तोड़ क्या हो? और जब किसी पर संदेह हो जाता कि वह कुर्आन से प्रभावित हो गया है। तो उसे समझाते कि इस के चक्कर में क्या पड़े हो, इस पर किसी ने जादू कर दिया है इस लिये बहकी-बहकी बातें कर रहा है।

2 ऐसी बात वह परिहास अथवा इन्कार के कारण कहते थे।

में तुम्हारी उत्पत्ति की है। फिर वह आप के आगे सिर हिलायेंगे^[1], और कहेंगे: ऐसा कब होगा? आप कह दें कि संभवतः वह समीप ही है।

52. जिस दिन वे तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की प्रशंसा करते हुये स्वीकार कर लोगे^[2] और यह सोचोगे कि तुम (संसार में) थोड़े ही समय रहे हो।

53. और आप मेरे भक्तों से कह दें कि वह बात बोलें जो उत्तम हो, वास्तव में शैतान उन के बीच बिगाड़ उत्पन्न करना चाहता^[3] है। निश्चय शैतान मनुष्य का खुला शत्रु है।

54. तुम्हारा पालनहार तुम से भली भाँति अवगत है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे, अथवा यदि चाहे तो तुम्हें यातना दे, और हम ने आप को उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा^[4] है।

55. (हे नबी!) आप का पालनहार भली भाँति अवगत है उस से जो आकाशों तथा धरती में है। और हम ने प्रधानता दी है कुछ नबियों को कुछ पर, और हम ने दावूद को ज़बूर (पुस्तक) प्रदान की।

هُوَ قَوْلُ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ وَتَظُنُّونَ إِن لَّبِئْسَ مَا الْإِنشَاءُ ۝

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي فِي أَحْسَنِ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ بَيْنَهُمُ الْإِنشَاءَ كَانَ لِلْإِنشَاءِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

وَكَلَّمَ آدَمَ إِذْ قَالَ إِنَّ يَتْلُو صُحُفَكُمْ أَوَّلَ مَا يَشَاءُ لَكُمْ وَلَكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زَبُورًا ۝

1 अर्थात् परिहास करते हुये आश्चर्य से सिर हिलायेंगे।

2 अर्थात् अपनी कब्रों से प्रलय के दिन जीवित हो कर उपस्थित हो जाओगे।

3 अर्थात् कटु शब्दों द्वारा।

4 अर्थात् आप का दायित्व केवल उपदेश पहुँचा देना है, वह तो स्वयं अब्राहम के समीप होने की आशा लगाये हुये हैं, कि कैसे उस तक पहुँचा जाये तो भला वे पूज्य कैसे हो सकते हैं।

56. आप कह दें कि उन को पुकारो, जिन को उस (अल्लाह) के सिवा (पूज्य) समझते हो। न वे तुम से दुख दूर कर सकते, और न (तुम्हारी दशा) बदल सकते हैं।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضَّرَرِ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۝

57. वास्तव में जिन को यह लोग^[1] पुकारते हैं वह स्वयं अपने पालनहार का सामिप्य प्राप्त करने का साधन^[2] खोजते हैं, कि कौन अधिक समीप है? और उस की दया की आशा रखते हैं। और उस की यातना से डरते हैं। वास्तव में आप के पालनहार की यातना डरने योग्य है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝

58. और कोई (अत्याचारी) बस्ती नहीं है, परन्तु हम उसे प्रलय के दिन से पहले ध्वस्त करने वाले या कड़ी यातना देने वाले हैं। यह (अल्लाह के) लेख में अंकित है।

وَلَنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْفِتْمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

59. और हमें नहीं रोका इस से कि हम निशानियाँ भेजें किन्तु इस बात ने कि विगत लोगों ने उन्हें झुठला^[3] दिया। और हम ने समुद्र को ऊँटनी का खुला चमत्कार दिया, तो उन्होंने ने उस पर अत्याचार किया। और हम चमत्कार डराने के लिये ही भेजते हैं।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْجِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَحْوِيلًا ۝

60. और (हे नबी!) याद करो जब हम

وَاذْكُرْنَا لَإِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا

1 अर्थात् मुशरिक जिन नबियों, महापुरुषों और फरिश्तों को पुकारते हैं।

2 साधन से अभिप्रेत सत्कर्म और सदाचार है।

3 अर्थात् चमत्कार की माँग करने पर चमत्कार इस लिये नहीं भेजा जाता कि उस के पश्चात् न मानने पर यातना का आना अनिवार्य हो जाता है, जैसा कि भाष्यकारों ने लिखा है।

ने आप से कह दिया था कि आप के पालनहार ने लोगों को अपने नियंत्रण में ले रखा है, और यह जो कुछ हम ने आप को दिखाया^[1] उस को और उस वृक्ष को जिस पर कुरआन में धिक्कार की गयी है, हम ने लोगों के लिये एक परीक्षा बना दिया^[2] है, और हम उन्हें चेतावनी पर चेतावनी दे रहे हैं, फिर भी वह उन की अवैज्ञा को ही अधिक करती जा रही है।

61. और (याद करो), जब हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो इब्लीस के सिवा सब ने सज्दा किया। उस ने कहा: क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तू ने गारे से उत्पन्न किया है?

62. (तथा) उस ने कहा: तू बता, क्या यही है जिसे तूने मुझे पर प्रधानता दी है? यदि तू ने मुझे प्रलय के दिन तक अवसर दिया तो मैं उस की संतति को अपने नियंत्रण में कर लूँगा^[3] कुछ के सिवा।

63. अब्राह ने कहा: "चले जाओ", जो उन में से तेरा अनुसरण करेगा तो

الَّتِي أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا قَلِيلًا مِّنَ النَّاسِ وَالتَّجْوَةَ الْمَنْعُونَ فِي
الْقُرْآنِ وَيُخَوِّفُهُمْ فَبِإِذْنِهِمُ اتَّخَذُوا آلَ كَافِرَاتٍ

وَأَوْفَيْنَا الْمَسْكُومَ سَجْدًا إِلَّا أَدَمَ مَقْسَدًا وَإِلَّا
إِبْلِيسَ قَالَ مَا أَسْجُدُ لِمِثْلِي وَلَا خُلِقْتُ طِينًا

قَالَ أَرَأَيْتَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ
إِلَى يَوْمٍ أَلِيٍّ لِّمَتِّكَ لِأَحْتَسِبَنَّ بِدُخَانِ النَّارِ أَفِيلًا ۝

قَالَ أَذْهَبُ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ

1 इस से संकेत "मेअराज" की ओर है। और यहाँ "रु.या" शब्द का अर्थ स्वप्न नहीं बल्कि आँखों से देखना है। और धिक्कारे हुये वृक्ष से अभिप्राय जकूम (थोहड़) का वृक्ष है। (सहीह बुखारी, हदीस, 4716)

2 अर्थात् काफ़िरों के लिये जिन्होंने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) एक ही रात में बैतुल मुकद्दस पहुँच जायें फिर वहाँ से आकाश की सैर कर के वापिस मक्का भी आ जायें।

3 अर्थात् कुपथ कर दूंगा।

निश्चय नरक तुम सब का प्रतिकार
(बदला) है, भरपूर बदला।

جَزَاءُكُمْ جَزَاءُ مُؤْمَرٍ ۝

64. तू उन में से जिस को हो सके अपनी ध्वनि^[1] से बहका ले। और उन पर अपनी सवार और पैदल (सेना) चढ़ा^[2] ले। और उन का (उन के) धनों और संतान में साझी बन^[3] जा। तथा उन्हें (मिथ्या) वचन दे। और शैतान उन्हें धोखे के सिवा (कोई) वचन नहीं देता।

وَأَسْتَفِزُّرْمِنْ اسْتَضَعَّتْ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ
وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ وَمَا يَعْبُدُهُمْ الشَّيْطَانُ
إِلَّا ذُرْرًا ۝

65. वास्तव में जो मेरे भक्त हैं उन पर तेरा कोई बश नहीं चल सकता। और आप के पालनहार का सहायक होना यह बहुत है।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكُنِيَ بِرَبِّكَ
وَكِيلًا ۝

66. तुम्हारा पालनहार तो वह है जो तुम्हारे लिये सागर में नौका चलाता है, ताकि तुम उस की जीविका की खोज करो, वास्तव में वह तुम्हारे लिये अति दयावान् है।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرْجِي لَكُمْ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا
مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝

67. और जब सागर में तुम पर कोई आपदा आ पड़ती है, तो अल्लाह के सिवा जिन को तुम पुकारते हो खो जाते (भूल जाते) हो।^[4] और जब तुम्हें बचा कर थल तक पहुँचा देता है तो मुख फेर लेते हो। और मनुष्य है हि अति कृतघ्न।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ
إِلَّا إِلَٰهًا فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ وَكَانَ
الْإِنْسَانُ لَكْفُورًا ۝

1 अर्थात् गाने और बाजे द्वारा।

2 अर्थात् अपने जिब और मनुष्य सहायकों द्वारा उन्हें बहकाने का उपाय कर ले।

3 अर्थात् अवैध धन अर्जित करने और व्यभिचार की प्रेरणा दे।

4 अर्थात् ऐसी दशा में केवल अल्लाह याद आता है और उसी से सहायता माँगते हो किन्तु जब सागर से निकल जाते हो तो फिर उन्हीं देवी देवताओं की वंदना करने लगते हो।

68. क्या तुम निर्भय हो गये हो कि अल्लाह तुम्हें थल (धरती) ही में धंसा दे? अथवा तुम पर पथरीली आँधी भेज दे? फिर तुम अपना कोई रक्षक न पाओ।
69. या तुम निर्भय हो गये हो कि फिर उस (सागर) में तुम को दूसरी बार ले जाये, फिर तुम पर वायु का प्रचण्ड झोंका भेज दे, फिर तुम को डूबो दे, उस कुफ़्र के बदले जो तुम ने किया है। फिर तुम अपने लिये उसे नहीं पाओगे जो हम पर इस का दोष¹ धरे।
70. और हम ने बनी आदम (मानव) को प्रधानता दी, और उन्हें थल और जल में सवार² किया, और उन्हें स्वच्छ चीजों से जीविका प्रदान की, और हम ने उन्हें बहुत सी उन चीजों पर प्रधानता दी जिन की हम ने उत्पत्ति की है।
71. जिस दिन हम सब लोगों को उन के अग्रणी के साथ बुलायेंगे तो जिन का कर्मलेख उन के सीधे हाथ में दिया जायेगा तो वही अपना कर्मलेख पढ़ेंगे, और उन पर धागे बराबर भी अत्याचार नहीं किया जयेगा।
72. और जो इस (संसार) में अन्धा³ रह गया तो वह आखिरत (परलोक) में भी अन्धा और अधिक कुपथ होगा।

أَفَآمِنْتُمْ أَنْ يَخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُ الْكَافِرِينَ

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُفْرُكُمْ تَارَةً أُخْرَى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيَمْسُقَ كُفْرُكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُ الْكَافِرِينَ عَلَيْهِمْ نَجِيعًا

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا

يَوْمَ نَدْعُو كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ فَسُوفَ أُنْفَخُ كُتُبُهُ بِيَمِينِهِ أَوْ يَمُوكَ يُعْرَوْنَ عَنْهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَبِئْسَ

وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَى فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَى وَأَضَلُّ سَبِيلًا

1 और हम से बदले की माँग कर सके।

2 अर्थात् सवारी के साधन दिये।

3 अर्थात् सत्य से अन्धा।

73. और (हे नबी!) वह (काफिर) समीप था कि आप को उस वही से फेर दें, जो हम ने आप की ओर भेजी है, ताकि आप हमारे ऊपर अपनी ओर से कोई दूसरी बात घड़ लें, और उस समय वह आप को अवश्य अपना मित्र बना लेते।

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أُوتِيتَ إِلَيْكَ
لِيَتَوَكَّلُوا عَلَيْنَا غَيْرَةً مِّمَّا وَدَّ الْأَعْدَاءُ أَنْ يَخْلِلُوا ۝

74. और यदि हम आप को सुदृढ़ न रखते, तो आप उन की ओर कुछ न कुछ झुक जाते।

وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنَ إِلَيْهِمْ ذِيئًا
قَلِيلًا ۝

75. तब हम आप को जीवन की दुगुनी तथा मरण की दोहरी यातना चखाते। फिर आप अपने लिये हमारे ऊपर कोई सहायक न पाते।

إِذَا رَأَوْكَ فَسَعَوْا عَلَى الْخِيَرَةِ وَفُضِعَتِ الْمَائِدَاتُ ثُمَّ
لَا يَجِدُ لَكَ عَلَيْهَا مُنْصِرِفًا ۝

76. और समीप है कि वह आप को इस धरती (मक्का) से विचला दें, ताकि आप को उस से निकाल दें, तब वह आप के पश्चात् कुछ ही दिन रह सकेंगे।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوا
مِنْهَا وَادًّا لَا يَلْمِزُونَ خِلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

77. यह^[1] उस के लिये नियम रहा है जिसे हम ने आप से पहले अपने रसूलों में से भेजा है। और आप हमारे नियम में कोई परिवर्तन नहीं पायेंगे।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۝

78. आप नमाज़ की स्थापना करें सूर्यास्त से रात के अन्धेरे^[2] तक, तथा प्रातः (फ़ज्र के समय) कुर्आन पढ़िये। वास्तव में प्रातः कुर्आन पढ़ना उपस्थिति का समय^[3] है।

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِلدُّلُولِ الشَّمْسِ إِلَى عَسْفِ الْبَيْلِ وَقُرْآنَ
الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۝

1 अर्थात् रसूल को निकालने पर यातना देने का हमारा नियम रहा है।

2 अर्थात् जुहर, अस्त्र और मग़रिब तथा इशा की नमाज़।

3 अर्थात् फ़ज्र की नमाज़ के समय रात और दिन के फ़रिश्ते एकत्र तथा उपस्थित

79. तथा आप रात के कुछ समय जागिये फिर "तहज्जुद"^[1] पढ़िये। यह आप के लिये अधिक (नफ़ल) है। संभव है आप का पालनहार आप को (मक़ामे महमूद)^[2] प्रदान कर दे।

80. और प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! मुझे प्रवेश^[3] दे सत्य के साथ, और निकाल सत्य के साथ। तथा मेरे लिये अपनी ओर से सहायक प्रभुत्व बना दे।

81. तथा कहिये कि सत्य आ गया, और असत्य ध्वस्त-निरस्त हो गया, वास्तव में असत्य को ध्वस्त-निरस्त होना ही है।^[4]

82. और हम कुर्आन में वह चीज़ उतार रहे हैं, जो आरोग्य तथा दया है ईमान वालों के लिये। और वह अत्याचारियों की क्षति को ही अधिक करता है।

83. और जब हम मानव पर उपकार करते हैं, तो मुख फेर लेता है और

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسُجِّدْ لَهُ وَأَقْلَمُ لَكَ نَعْمَىٰ أَنْ يَغْفِرَ لَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ أَلَدِّكَ سُلْطَانًا نَّصِيرًا ۝

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَّقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا ۝

وَنَزَّلْنَا مِنَ الْقُرْآنِ مَاهُوشَقًا وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝
وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝

وَإِذَا أُنْعِمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ ائْتَرَضَ وَكَأْبَىٰ عَلَيْهِ ۝

रहते हैं। (सहीह बुख़ारी-359, सहीह मुस्लिम-632)

1 तहज्जुद का अर्थ है: रात के अन्तिम भाग में नमाज़ पढ़ना।

2 (मक़ामे महमूद) का अर्थ है प्रशंसा योग्य स्थान। और इस से अभिप्राय वह स्थान है जहाँ से आप प्रलय के दिन शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेंगे।

3 अर्थात् मदीना में, मक्का से निकाल कर।

4 अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का (की विजय के दिन) उस में प्रवेश किया तो कौबा के आस पास तीन सौ साठ मुर्तियाँ थीं। और आप के हाथ में एक छड़ी थी, जिस से उन को मार रहे थे। और आप यही आयत पढ़ते जा रहे थे। (सहीह बुख़ारी, 4720, मुस्लिम, 1781)

दूर हो जाता^[1] है। तथा जब उसे दुःख पहुँचता है, तो निराश हो जाता है।

وَإِذَا مَسَّهُ الشُّرُكَانَ يُوَسَّوْا

84. आप कह दें कि प्रत्येक अपनी आस्था के अनुसार कर्म कर रहा है, तो आप का पालनहार ही भली भाँति जान रहा है कि कौन अधिक सीधी डगर पर है।

قُلْ كُلٌّ يَجْعَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ قَوْلَهُوَعَلَمُومِنْهُوَ هَذَايَسِيلًا

85. (हे नबी!) लोग आप से रूह^[2] के विषय में पूछते हैं, आप कह दें रूह मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुम्हें जो ज्ञान दिया गया वह बहुत थोड़ा है।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا

86. और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ ले जायें जो आप की ओर हम ने बह्नी किया है, फिर आप हम पर अपना कोई सहायक नहीं पायेंगे।

وَلَكِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ نَفْثًا لَنَجْعَلَ لَكَ بِهِ عَلَيْكَ وَكِيلًا

87. किन्तु आप के पालनहार की दया के कारण (यह आप को प्राप्त है)। वास्तव में उस का प्रदान आप पर बहुत बड़ा है।

إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ إِنْ فَضَلْنَا كَانَ عَلَيْكَ كِبِيرًا

88. आप कह दें: यदि सब मनुष्य तथा जिन इस पर एकत्र हो जायें कि इस कुर्आन के समान ला देंगे, तो इस के समान नहीं ला सकेंगे, चाहे वह एक दूसरे के समर्थक ही क्यों न हो जायें।

قُلْ لَّيْسَ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِشَيْءٍ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا

89. और हम ने लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण विविध शैली में वर्णित किया है, फिर भी

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ فَأَلَّى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا

1 अर्थात् अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से।

2 «रूह» का अर्थ: आत्मा है जो हर प्राणी के जीवन का मूल है। किन्तु उस की वास्तविकता क्या है? यह कोई नहीं जानता। क्योंकि मनुष्य के पास जो ज्ञान है वह बहुत कम है।

अधिकतर लोगों ने कुफ़्र के सिवा
अस्वीकार ही किया है।

90. और उन्होंने ने कहा: हम आप पर
कदापि ईमान नहीं लायेंगे, यहाँ तक
कि आप हमारे लिये धरती से एक
चश्मा प्रवाहित कर दें।

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَنْفِرَ كَتَائِمَ الْأَرْضِ
يَنْبُوءُ ۝

91. अथवा आप के लिये खजूर अथवा
अँगूर का कोई बाग़ हो, फिर उस के
बीच आप नहरें प्रवाहित कर दें।

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّجْمٍ وَعِنَبٍ تُفَجِّرُ
الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَفْجِيرًا ۝

92. अथवा हम पर आकाश को जैसा
आप का विचार है, खण्ड-खण्ड कर
के गिरा दें, या अल्लाह और फ़रिश्तों
को साक्षात् हमारे सामने ला दें।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمَتْ عَلَيْنَا لَأَسْفِنَا أَوْ تَأْتِي بَآلِهَةٌ
وَالْمَلَائِكَةُ قَبِيلًا ۝

93. अथवा आप के लिये सोने का एक
घर हो जाये, अथवा आकाश में चढ़
जायें, और हम आप के चढ़ने का
भी कदापि विश्वास नहीं करेंगे, यहाँ
तक की हम पर एक पुस्तक उतार
लायें जिसे हम पढ़ें। आप कह दें कि
मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो बस
एक रसूल (संदेशवाहक) मनुष्य^[1] हूँ।

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ تَرْفَىٰ فِي السَّمَاءِ
وَلَنْ نُؤْمِنَ بِرُفْعِكَ حَتَّى تُنْزِلَ عَلَيْنَا كِتَابًا تُعْرَضُهُ
قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلُكُمْ ۝

94. और नहीं रोका लोगों को कि वह
ईमान लायें, जब उन के पास

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ

1 अर्थात् मैं अपने पालनहार की वही का अनुसरण करता हूँ। और यह सब चीजें अल्लाह के बस में हैं। यदि वह चाहे तो एक क्षण में सब कुछ कर सकता है किन्तु मैं तो तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूँ मुझे केवल रसूल बना कर भेजा गया है ताकि तुम्हें अल्लाह का संदेश सुनाऊँ। रहा चमत्कार तो वह अल्लाह के हाथ में है। जिसे चाहे दिखा सकता है। फिर क्या तुम चमत्कार देख कर ईमान लाओगे? यदि ऐसा होता तो तुम कभी के ईमान ला चुके होते क्योंकि कुर्आन से बड़ा क्या चमत्कार हो सकता है।

मार्गदर्शन^[1] आ गया, परन्तु इस ने कि उन्होंने ने कहा: क्या अल्लाह ने एक मनुष्य को रसूल बना कर भेजा है?

95. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि धरती में फरिश्ते निश्चिन्त हो कर चलते-फिरते होते, तो हम अवश्य उन पर आकाश से कोई फरिश्ता रसूल बना कर उतारते।
96. आप कह दें कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का साक्ष्य^[2] बहुत है। वास्तव में वह अपने दासों (बंदों) से सूचित, सब को देखने वाला है।
97. जिसे अल्लाह सुपथ दिखा दे, वही सुपथगामी है। और जिसे कुपथ कर दे तो आप कदापि नहीं पायेंगे उन के लिये उस के सिवा कोई सहायक। और हम उन्हें एकत्र करेंगे प्रलय के दिन उन के मुखों के बल अंधे तथा गूँगे और बहरे बना कर। और उन का स्थान नरक है, जब भी वह बुझने लगेगी तो हम उसे और भड़का देंगे।
98. यही उन का प्रतिकार (बदला) है, इस लिये कि उन्होंने ने हमारी आयतों के साथ कुफ़ किया, और कहा: क्या जब हम अस्थियाँ और चूर-चूर हो जायेंगे तो नई उत्पत्ति में पुनः जीवित किये जायेंगे?^[3]

الْآن قَالَ الْوَّاعِبَتِ اللَّهُ بَشَرًا مَّرْسُولًا

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَتَّبِعُونَ مُطِيعِينَ
لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاء مَلَكًا رَسُولًا

قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلْ فَلَنْ
يَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ يُنْفِخُ لَهُم يَوْمَ الْقِيَمَةِ
عَلَى أُذُنِهِمْ فَهِيَ مُخْمِيَةٌ وَابُكْمٌ وَأَصْلًا مَّا وَلَّهُمْ جَهَنَّمَ
كُلَّمَا خَبَتْ إِزِدْنَا لَهُمْ سَعِيرًا

ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُكَذِّبِينَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْوَعْدِ إِذَا
كُنَّا عِظَامًا مَّوَرَّاتٍ إِنَّ الْمُبْعُوثِينَ خَلْقًا
جَدِيدًا

1 अर्थात् रसूल तथा पुस्तकें संमार्ग दर्शाने के लिये।

2 अर्थात् मेरे रसूल होने का साक्षी अल्लाह है।

3 अर्थात् ऐसा होना संभव नहीं है कि जब हमारी हड्डियाँ सड़ गल जायें तो हम

99. क्या वह विचार नहीं करते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति की है, वह समर्थ है इस बात पर कि उन के जैसी उत्पत्ति कर दे^[1] तथा उस ने उन के लिये एक निर्धारित अवधि बनायी है, जिस में कोई संदेह नहीं है। फिर भी अत्याचारियों ने कुफ़्र के सिवा अस्वीकार ही किया।
100. आप कह दें कि यदि तुम ही स्वामी होते अपने पालनहार की दया के कोषों के, तब तो तुम खर्च हो जाने के भय से (अपने ही पास) रोक रखते, और मनुष्य बड़ा ही कंजूस है।
101. और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियाँ दी^[2], अतः बनी इस्राईल से आप पूछ लें, जब वह (मूसा) उन के पास आया, तो फिरऔन ने उस से कहा: हे मूसा! मैं समझता हूँ कि तुझ पर जादू कर दिया गया है।
102. उस (मूसा) ने उत्तर दिया: तूझे विश्वास है कि इन को आकाशों तथा धरती के पालनहार ही ने सोच-विचार करने के लिये उतारा है, और हे फिरऔन! मैं तुम्हें निश्चय ध्वस्त समझता हूँ।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
قَادِرٌ عَلَى أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا
لَّيْسَ فِيهِ فِتْنَةٌ قَالُوا الْكَاذِبُونَ إِلَّا كُفُورًا ۝

قُلْ لَوْ أَنَّهُمْ تَعْلَمُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ
مُتَوَرِّدًا ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَمَثَلٌ بَيْنِي
وَبَيْنَهُ إِذَا هُمْ فَجَعَلَهُ قَوْلَهُ لَقَدْ آتَيْنَاكَ
بِأَيُّ مَظْهَرٍ ۝

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُمْ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ بَصَائِرُكُمْ أَنَّي لَأَكْفُلَنَّكُمْ فَيُرْعَوْنَ مَثْبُورًا ۝

फिर उठाये जायें।

- 1 अर्थात् जिस ने आकाश तथा धरती की उत्पत्ति की उस के लिये मनुष्य को दोबारा उठाना अधिक सरल है, किन्तु वह समझते नहीं हैं।
- 2 वह नौ निशानियाँ निम्नलिखित थीं: हाथ की चमक, लाठी, आकाल, तूफान, टिंडी, जूयें, मेंढक, खून, और सागर का दो भाग हो जाना।

103. अन्ततः उस ने निश्चय किया कि उन^[1] को धरती से^[2] उखाड़ फेंके, तो हम ने उसे और उस के सब साथियों को डुबो दिया।

104. और हम ने उस के पश्चात् बनी इस्राईल से कहा: तुम इस धरती में बस जाओ। और जब आखिरत के वचन का समय आयेगा, तो हम तुम्हें एकत्र कर लायेंगे।

105. और हम ने सत्य के साथ ही इस (कुर्आन) को उतारा है, तथा वह सत्य के साथ ही उतरा है। और हम ने आप को बस शुभ सूचना देने तथा सावधान करने वाला बना कर भेजा है।

106. और इस कुर्आन को हम ने थोड़ा थोड़ा कर के उतारा है, ताकि आप लोगों को इसे रुक रुक कर सुनायें, और हम ने इसे क्रमशः^[3] उतारा है।

107. आप कह दें कि तुम इस पर ईमान लाओ अथवा ईमान न लाओ, वास्तव में जिन को इस से पहले ज्ञान दिया^[4] गया है, जब उन्हें यह सुनाया जाता है, तो वह मुँह के बल सज्दे में गिर जाते हैं।

108. और कहते हैं: पवित्र है हमारा

فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَفِرَ مِنْهُمِ الْأَرْضَ فَطَرَقَهُ وَمِنْ مَعَهُ جَبِينًا ۝

وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَ إِبْرَاهِيمَ إِنَّا نَعْلَمُ اسْمَكَ الْأَرْضَ ۝
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جَعَلْنَاكُمْ رُفُفًا ۝

وَالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَالْحَقِّ نَزَلَ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

وَقَرَأْنَا لَهُ آيَاتِنَا عَلَى الْقَائِمِ عَلَى نَكْثٍ وَأَنْزَلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۝

قُلْ (مُؤْمِنِي) أَوْ لَا تُؤْمِنُوا إِنَّا الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَى عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ۝

وَيَقُولُونَ سُبْحَنَ رَبِّنَا إِن كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ۝

1 अर्थात् बनी इस्राईल को।

2 अर्थात् मिस्र से।

3 अर्थात् तेईस वर्ष की अवधि में।

4 अर्थात् वह विद्वान जिन को कुर्आन से पहले की पुस्तकों का ज्ञान है।

पालनहार! निश्चय हमारे पालनहार
का वचन पूरा हो के रहा।

109. और वह मुँह के बल रोते हुये गिर
जाते हैं। और वह उन की विनय को
अधिक कर देता है।

110. हे नबी! आप कह दें कि (अल्लाह)
कह कर पुकारो, अथवा (रहमान)
कह कर पुकारो, जिस नाम से भी
पुकारो, उस के सभी नाम शुभ^[1]
हैं। और (हे नबी!) नमाज़ में स्वर
न तो ऊँचा करो, और न उसे
नीचा करो, और इन दोनों के बीच
की राह^[2] अपनाओ।

111. तथा कहो कि सब प्रशंसा उस
अल्लाह के लिये है जिस के कोई
संतान नहीं, और न राज्य में उस
का कोई साझी है। और न अपमान
से बचाने के लिये उस का कोई
समर्थक है। और आप उस की
महिमा का वर्णन करें।

وَيَجُودُونَ بِالَّذِينَ يَبْتُلُونَ وَيُزِيدُهُمْ خُسْرًا

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَوْ ادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيُّمَا تَدْعُوا فَلَهُ الْكَلِمَةُ
الْحُسْنَىٰ وَلَا يَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا يَخَافُهَا وَابْتَغِ
بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ
شَرِيكٌ فِي الْمَلِكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِنَ الذَّلِيلِ
وَكَلِمَةٌ كَبِيرَةٌ

1 अरब में "अल्लाह" शब्द प्रचलित था, मगर "रहमान" प्रचलित न था। इस लिये, वह इस नाम पर आपत्ति करते थे। यह आयत इसी का उत्तर है।

2 हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (आरंभिक युग में) मक्का में लुप कर रहते थे। और जब अपने साथियों को ऊँचे स्वर में नमाज़ पढ़ाते थे तो मुशरिक उसे सुन कर कुर्आन को तथा जिस ने कुर्आन उतारा है, और जो उसे लाया है, सब को गालियाँ देते थे। अतः अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह आदेश दिया। (सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 4722)

सूरह कहफ़ - 18

سُورَةُ الْكَافِرَاتِ

सूरह कहफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 110 आयतें हैं।

- इस में कहफ़ (गुफा) वालों की कथा का वर्णन है, जिस से दूसरे जीवन का विश्वास दिलाया गया है।
- इस में नसारा (ईसाईयों) को चेतावनी दी गयी है जिन्होंने अल्लाह का पुत्र होने की बात घड़ ली। और शिर्क में उलझ गये, जिस से तौहीद पर आस्था का कोई अर्थ नहीं रह गया।
- इस में दो व्यक्तियों की दशा का वर्णन किया गया है जिन में एक संसारिक सुख में मग्न था और दूसरा परलोक पर विश्वास रखता था। फिर जो संसारिक सुख में मग्न था, उस का दुष्परिणाम दिखाया गया है और संसारिक जीवन का एक उदाहरण दे कर बताया गया है कि परलोक में सदाचार ही काम आयेगा।
- इस में मुसा (अलैहिस्सलाम) की यात्रा का वर्णन करते हुये अल्लाह के ज्ञान के कुछ भेद उजागर किये गये हैं, ताकि मनुष्य यह समझे की संसार में जो कुछ होता है उस में कुछ भेद अवश्य होता है जिसे वह नहीं जान सकता।
- इस में (जुल करनैन) की कथा का वर्णन कर के यह दिखाया गया है उस ने कैसे अल्लाह से डरते हुये और परलोक की जवाब देही (उत्तर दायित्व) का ध्यान रखते हुये अपने अधिकार का प्रयोग किया।
- अन्त में शिर्क और परलोक के इन्कार पर चेतावनी है।

हदीस में है कि जो सूरह कहफ़ के आरंभ की दस आयतें याद कर ले तो वह दज्जाल के उपद्रव से बचा लिया जायेगा। (सहीह मुस्लिम, 809)। दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति रात में सूरह कहफ़ पढ़ रहा था और उस का घोड़ा उस के पास ही बंधा हुआ था कि एक बादल छा गया और समीप आता गया और घोड़ा बिदकने लगा। जब सबेरा हुआ तो उस ने यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बतायी। आप ने कहा: यह शान्ति थी जो कुर्आन के कारण उतरी थी। (बुखारी: 5011, मुस्लिम: 795)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस ने अपने भक्त पर यह पुस्तक उतारी। और उस में कोई टेढ़ी बात नहीं रखी।
2. अति सीधी (पुस्तक), ताकि वह अपने पास की कड़ी यातना से सावधान कर दे, और ईमान वालों को जो सदाचार करते हों, शुभ सूचना सुना दे कि उन्हीं के लिये अच्छा बदला है।
3. जिस में वे नित्य सदावासी होंगे।
4. और उन को सावधान करे जिन्होंने कहा कि अल्लाह ने अपने लिये कोई संतान बना ली है।
5. उन्हें इस का कुछ ज्ञान है, और न उन के पूर्वजों को। बहुत बड़ी बात है जो उन के मुखों से निकल रही है, वह सरासर झूठ ही बोल रहे हैं।
6. तो संभवतः आप इन के पीछे अपना प्राण खो देंगे संताप के कारण, यदि वह इस हदीस (कुरआन) पर ईमान न लायें।
7. वास्तव में जो कुछ धरती के ऊपर है, उसे हम ने उस के लिये शोभा बनाया है, ताकि उन की परीक्षा लें कि उन में कौन कर्म में सब से अच्छा है?

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۝

قَيِّمًا لِّيُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا لِّأُولَئِئِمْ لَهُ وَيُنَبِّئَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۝

مَا كُنْشِينَ فِيهِ أَبَدًا ۝

وَنُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۝

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِآبَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ إِنَّ يَقُولُونَ إِلَّا كِبًا ۝

فَلَعَلَّكَ بَاطِلٌ غَشَاكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِذِهِ الْحَدِيثِ فِيهِ لَبَأٌ ۝

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝

8. और निश्चय हम कर देने^[1] वाले हैं, जो उस (धरती) के ऊपर है उसे (बंजर) धूल।
9. (हे नबी!) क्या आप ने समझा है कि गुफा तथा शिला लेख वाले^[2], हमारे अद्भुत लक्षणों (निशानियों) में से थे?^[3]
10. जब नवयुवकों ने गुफा की ओर शरण ली^[4], और प्रार्थना की: हे हमारे पालनहार! हमें अपनी विशेष दया प्रदान कर, और हमारे लिये प्रबंध कर दे हमारे विषय के सुधार का।

وَأَنَّا الْجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ
كَانُوا مِن آيَاتِنَا عَجَبًا ۝

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا
مِنْ كُدُوتِكَ رَحِمَةً وَهَيْئَتِي لَنَا مِنْ أَمْرِنَا
رَشْدًا ۝

- 1 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 2 कुछ भाष्यकारों ने लिखा है कि (रकीम) शब्द जिस का अर्थ: शिला लेख किया गया है, एक बस्ती का नाम है।
- 3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की उत्पत्ति हमारी शक्ति का इस से भी बड़ा लक्षण है।
- 4 अर्थात् नवयुवकों ने अपने ईमान की रक्षा के लिये गुफा में शरण ली। जिस गुफा के ऊपर आगे चलकर उन के नामों का स्मारक शिला लेख लगा दिया गया था।

उल्लेखों से यह विद्वित होता है कि नवयुवक ईसा अलैहिस्सलाम के अनुयायियों में से थे। और रोम के मुशरिक राजा की प्रजा थे। जो एकेश्वरवादियों का शत्रु था। और उन्हें मुर्ति पूजा के लिये बाध्य करता था। इस लिये वे अपने ईमान की रक्षा के लिये जार्डन की गुफा में चले गये जो नये शोध के अनुसार जार्डन की राजधानी से 8 की० मी० दूर (रजीब) में अवशेषजों को मिली है। जिस गुफा के ऊपर सात स्तंभों की मस्जिद के खंडर, और गुफा के भीतर आठ समाधियाँ तथा उत्तरी दीवार पर पुरानी यूनानी लिपी में एक शिला लेख मिला है और उस पर किसी जीव का चित्र भी है। जो कुत्ते का चित्र बताया जाता है और यह (रजीब) ही (रकीम) का बदला हुआ रूप है। (देखिये: भाष्य दाबतुल कुर्आन-2/983)

11. तो हमने उन्हें गुफा में सुला दिया कई वर्षों तक।
12. फिर हम ने उन्हें जगा दिया ताकि हम यह जान लें कि दो समुदायों में से किस ने उन के ठहरे रहने की अवधि को अधिक याद रखा है?
13. हम आप को उन की सत्य कथा सुना रहे हैं। वास्तव में वे कुछ नवयुवक थे, जो अपने पालनहार पर ईमान लाये, और हम ने उन्हें मार्गदर्शन में अधिक कर दिया।
14. और हम ने उन के दिलों को सुदृढ़ कर दिया जब वे खड़े हुये, फिर कहा: हमारा पालनहार वही है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार है। हम उस के सिवा कदापि किसी पूज्य को नहीं पुकारेंगे। (यदि हम ने ऐसा किया) तो (सत्य से) दूर की बात होगी।
15. यह हमारी जाति है, जिस ने अब्राह के सिवा बहुत से पूज्य बना लिये। क्यों वे उन पर कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत नहीं करते? उस से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अब्राह पर मिथ्या बात बनाये?
16. और जब तुम उन से विलग हो गये तथा अब्राह के अतिरिक्त उन के पूज्यों से, तो अब अमुक गुफा की ओर शरण लो, अब्राह तुम्हारे लिये अपनी दया फैला देगा, तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे विषय में जीवन के

فَقَرَّبْنَا عَلَىٰ أَذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ
عَدَدًا ۝

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْجُمُوعِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا
أَمَدًا ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْنَةٌ
أَمْتُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝

وَرَبِّطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ
كُنَّا إِذْ أَشْطَكْنَا ۝

هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ لَوْلَا يَأْتُونَ
عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ مِنْ رَبِّكَ فَهُمْ أَعْلَمُ مِنْ أَفْئِدَةٍ
عَلَىٰ الْإِثْمِ كَذِبًا ۝

وَإِذَا عَزَمْتَ لَهُمُ الْوَعْدَ وَمَا يَعْهَدُونَ إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْلَا
الْكَهْفُ يَنْشُرُ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُهَيِّئُ لَكُمْ
مِنْ أَمْرِكُمْ مِزْقًا ۝

साधनों का प्रबंध करेगा।

17. और तुम सूर्य को देखोगे, कि जब निकलता है, तो उन की गुफा से दायें झुक जाता है, और जब डूबता है, तो उन से बायें कतरा जाता है। और वह उस (गुफा) के एक विस्तृत स्थान में है। यह अल्लाह की निशानियों में से है, और जिसे अल्लाह मार्ग दिखा दे वही सुपथ पाने वाला है। और जिसे कुपथ कर दे तो तुम कदापि उस के लिये कोई सहायक मार्ग दर्शक नहीं पाओगे।

18. और तुम^[1] उन्हें समझोगे कि जाग रहे हैं जब कि वह सोये हुये हैं और हम उन्हें दायें तथा बायें पार्श्व पर फिराते रहते हैं, और उन का कुत्ता गुफा के द्वार पर अपनी दोनों बांहें फैलाये पड़ा है। यदि तुम झाँक कर देख लेते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से भय पूर्ण हो जाते।

19. और इसी प्रकार हम ने उन्हें जगा दिया ताकि वे आपस में प्रश्न करें। तो एक ने उन में से कहा: तुम कितने (समय) रहे हो? सब ने कहा: हम एक दिन रहे हैं अथवा एक दिन के कुछ (समय)। (फिर) सब ने कहा: अल्लाह अधिक जानता है कि तुम कितने (समय) रहे हो, तुम अपने में से किसी को अपना यह सिक्का दे कर नगर में भेजो, फिर देखे कि किस के पास अधिक स्वच्छ (पवित्र)

وَرَوَى الشَّمْسُ إِذَا طَلَعَتْ تَوَّارِعُنَ كَهْفِهِمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرَّبُ مِنْهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ
وَهُمْ فِي كَهْفٍ مِنْهُ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّ
يَهْدِي اللَّهُ لِقَا رُسُلِهِ وَلَعَلَّ يَسْأَلُونَ

وَنَحْنُ بِهِمْ أَعْيُنًا وَمَهُمْ رُفُودًا وَنَقُولُ لَهُمْ ذَاتَ
الْيَمِينِ وَذَاتَ الشِّمَالِ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ
فِرَاعِيهِ بِالْوَصِيدِ لَوَاعَطٌ عَلَيْهِمْ كَوَلِيَّتٌ مِنْهُمْ
فِرَارًا وَكَلِيَّتٌ مِنْهُمْ رُغْبًا ۝

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بِآيَاتِهِمْ قَالَ قَائِلٌ
مِنْهُمْ كَمْ لَكُمْ سِنِينَ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا لَوْمَةٌ مِنْ
بَعْضِ يَوْمٍ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسَ لَكُمْ قَابِعُونَ
أَحَدَكُمْ بِرُؤْيَيْكُمْ مِنْهُ إِلَى السَّاعَةِ قَالُوا
فَكَيْفَ نُنَظِّرُهَا أَنْ نَكُونَ طَعَامًا فَالْيَا لَيْسَ لَكُمْ رُؤْيَى مِنْهُ
وَلَيْسَ لَكُمْ طَعَامٌ وَلَا تَسْمَعُونَ يَوْمَكُمْ
أَحَدًا ۝

1. इस में किसी को भी संबोधित माना जा सकता है, जो उन्हें उस दशा में देख सके।

भोजन है, और उस में से कुछ जीविका (भोजन) लाये, और चाहिये कि सावधानी बरतो ऐसा न हो कि तुम्हारा किसी को अनुभव हो जाये।

20. क्यों कि यदि वे तुम्हें जान जायेंगे तो तुम्हें पथराव कर के मार डालेंगे, या तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे, और तब तुम कदापि सफल नहीं हो सकोगे।

21. इसी प्रकार हम ने उन से अवगत करा दिया, ताकि उन (नागरिकों) को ज्ञान हो जाये कि अल्लाह का वचन सत्य है, और यह कि प्रलय (होने) में कोई संदेह^[1] नहीं। जब वे^[2] आपस में विवाद करने लगे, तो कुछ ने कहा: उन पर कोई निर्माण करा दो, अल्लाह ही उन की दशा को भली भाँति जानता है। परन्तु उन्होंने ने कहा जो अपना प्रभुत्व रखते थे, हम अवश्य उन (की गुफा के स्थान) पर एक मस्जिद बनायेंगे।

22. कुछ^[3] कहेंगे कि वह तीन है, और चौथा उन का कुत्ता है। और कुछ कहेंगे कि पाँच है, और छठा उन का कुत्ता है। यह अन्धेरे में तीर चलाते

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعَذِّبُوكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا أَبَدُوا

وَكَذَلِكَ أَتَتْكُمْ أَعْيُنُكُمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُيُوتًا رُبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مِّنْجِدًا

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّاْبُعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادُسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَّبِّي أَعْلَمُ

1 जिस के आने पर सब को उन के कर्मों का फल दिया जायेगा।

2 अर्थात् जब पुराने सिक्के और भाषा के कारण उन का भेद खुल गया और वहाँ के लोगों को उन की कथा का ज्ञान हो गया तो फिर वे अपनी गुफा ही में मर गये। और उन के विषय में यह विवाद उत्पन्न हो गया।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इस्लाम में समाधियों पर मस्जिद बनाना, और उस में नमाज़ पढ़ना तथा उस पर कोई निर्माण करना अवैध है। जिस का पूरा विवरण हदीसों में मिलेगा। (सहीह बुखारी, 435, मुस्लिम, 531, 32)

3 इन से मुराद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के अहले किताब हैं।

हैं। और कहेंगे कि सात है, और आठवाँ उन का कुत्ता है। (हे नबी!) आप कह दें, कि मेरा पालनहार ही उन की संख्या भली भाँति जानता है, जिसे कुछ लोगों के सिवा कोई नहीं जानता।^[1] अतः आप उन के संबन्ध में कोई विवाद न करें सिवाये सरसरी बात के, और न उन के विषय में किसी से कुछ पूछें।^[2]

23. और कदापि किसी विषय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूँ।

24. परन्तु यह कि अब्ब्राह^[3] चाहे, तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जायें। और कहें: संभव है मेरा पालनहार मुझे इस से अधिक समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।

25. और वे गुफा में तीन सौ वर्ष रहे। और नौ वर्ष अधिक^[4] और।

26. आप कह दें कि अब्ब्राह उन के रहने की अवधि से सर्वाधिक अवगत है। आकाशों तथा धरती का परोक्ष वही जानता है। क्या ही खूब है वह देखने

بَعْدَ تِلْكَ مَا يَكْفِيهِمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ فَلَا تُخَافُ فِيهِمْ
الْأَمْوَءَ ظَاهِرًا ۚ وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ
أَحَدًا ۖ

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۖ

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ
وَقُلْ عَلَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِي رَّبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ
هَٰذَا سَبِيلًا ۖ

وَلِكَيْتُوبَانِ كَتَبْنَا لَهُمْ تِلْكَ وَمِائَةً سِنِينَ
وَأَزَادُوا تِسْعًا ۖ

قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسُوا لَهُ غِيبُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ أَبْصُرْ بِهِمْ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ
مِنْ قَوْلٍ وَلَا يَشِيرُكَ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۖ

1 भावार्थ यह है कि उन की संख्या का सहीह ज्ञान तो अब्ब्राह ही को है किन्तु वास्तव में ध्यान देने की बात यह है कि इस से हमें क्या शिक्षा मिल रही है।

2 क्योंकि आप को उन के बारे में अब्ब्राह के बताने के कारण उन लोगों से अधिक ज्ञान है। और उन के पास कोई ज्ञान नहीं। इस लिये किसी से पूछने की आवश्यकता भी नहीं।

3 अर्थात् भविष्य में कुछ करने का निश्चय करें, तो "इन् शा अब्ब्राह" कहें। अर्थात्: यदि अब्ब्राह ने चाहा तो।

4 अर्थात् सूर्य के वर्ष से तीन सौ वर्ष, और चाँद के वर्ष से नौ वर्ष अधिक गुफा में सोये रहे।

वाला और सुनने वाला! नहीं है उन का उस के सिवा कोई सहायक, और न वह अपने शासन में किसी को साझी बनाता है।

27. और आप उसे सुना दें, जो आप की ओर बह्नी (प्रकाशना) की गयी है आप के पालनहार की पुस्तक में से, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं है, और आप कदापि नहीं पायेंगे उस के सिवा कोई शरण स्थान।

28. और आप उन के साथ रहें जो अपने पालनहार की प्रातः- संध्या बंदगी करते हैं। वे उस की प्रसन्नता चाहते हैं और आप की आँखें संसारिक जीवन की शोभा के लिये^[1] उन से न फिरने पायें और उस की बात न मानें जिस के दिल को हम ने अपनी याद से निश्चेत कर दिया, और उस ने मनमानी की, और जिस का काम ही उल्लंघन (अवैज्ञा करना) है।

29. आप कह दें कि यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से तो जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ़ करे, निश्चय हम ने अत्याचारियों के लिये ऐसी अग्नि तय्यार कर रखी है जिस की

وَأَنذِرْ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا تُبَدِّلْ
الْكَلِمَاتِ وَلَكِنْ تَجِدْ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

وَأَصْبِرْ لِنَفْسِكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
بِالْعَدَاوَةِ وَالْعِشْيِ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ
عَيْنُكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ
هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ۝

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمَرْ
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِالْمُظْلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ
يَسْتَعِينُوا يُعَاثَرُوا بِهَا كَالهٰٓهِلِ يَشَوٰى

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि यह आयत उस समय उतरी जब मुशरिक कुरैश के कुछ प्रमुखों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह माँग की, कि आप अपने निर्धन अनुयायियों के साथ न रहें तो हम आप के पास आ कर आप की बातें सुनेंगे। इस लिये अब्बाह ने आप को आदेश दिया कि इन का आदर किया जाये, ऐसा नहीं होना चाहिये कि इन की उपेक्षा कर के उन धनवानों की बात मानी जाये जो अब्बाह की याद से निश्चेत हैं।

प्राचीर^[1] ने उन को घेर लिया है, और यदि वह (जल के लिये) गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा, वह क्या ही बुरा पेय है! और वह क्या ही बुरा विश्राम स्थान है!

30. निश्चय जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये, तो हम उन का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करेंगे जो सदाचारी हैं।

31. यही हैं जिन के लिये स्थायी स्वर्ग है, जिन में नहरें प्रवाहित हैं, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे।^[2] तथा महीन और गाढ़े रेशम के हरे वस्त्र पहनेंगे, उस में सिंहासनों के ऊपर आसीन होंगे। यह क्या ही अच्छा प्रतिफल और क्या ही अच्छा विश्राम स्थान है!

32. और (हे नबी!) आप उन्हें एक उदाहरण दो व्यक्तियों का दें, हम ने जिन में से एक को दो बाग दिये अँगूरों के, और घेर दिया दोनों को खजूरों से, और दोनों के बीच खेती बना दी।

33. दोनों बागों ने अपने पूरे फल दिये, और उस में कुछ कमी नहीं की, और हम ने जारी कर दी दोनों के बीच एक नहर।

الْوُجُوهَ يَشْرَبُ الشَّرَابَ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُفْدٍ وَأَسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نَبْغِمُ الثَّمَرَاتِ وَحَسِبَتْ مُرْتَفَقًا ۝

وَأَصْرَفْنَا لَهُمْ مَثَلًا لِيُحْكُمُوا بَيْنَهُمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَخَفَّفْنَاهُ بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا نَهْرًا ۝

كُلَّتِ الْجَنَّتَيْنِ بَتًّا أَكَلَتْهُمَا وَلَمْ يُطْعِمْنِي مِنْهُ شَيْئًا وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۝

1 कुरआन में «सुरादिक» शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिस का अर्थ प्राचीर, अर्थात् वह दीवार है जो नरक के चारों ओर बनाई गई है।

2 यह स्वर्ग वासियों का स्वर्ण कंगन है। किन्तु संसार में इस्लाम की शिक्षानुसार पुरुषों के लिये सोने का कंगन पहनना हराम है।

34. और उसे लाभ प्राप्त हुआ, तो एक दिन उस ने अपने साथी से कहा: और वह उस से बात कर रहा था, मैं तुझ से अधिक धनी हूँ, तथा स्वजनों में भी अधिक¹ हूँ।

35. और उस ने अपने बाग में प्रवेश किया अपने ऊपर अत्याचार करते हुये, उस ने कहा: मैं नहीं समझता कि इस का विनाश हो जायेगा कभी।

36. और न यह समझता हूँ कि प्रलय होगी। और यदि मुझे अपने पालनहार की ओर पुनः ले जाया गया, तो मैं अवश्य ही इस से उत्तम स्थान पाऊँगा।

37. उस से उस के साथी ने कहा, और वह उस से बात कर रहा था: क्या तू ने उस के साथ कुफ़्र कर दिया, जिस ने तुझे मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर वीर्य से, फिर तुझे बना दिया एक पूरा पुरुष?

38. रहा मैं तो वही अल्लाह मेरा पालनहार है, और मैं साझी नहीं बनाऊँगा अपने पालनहार का किसी को।

39. और क्यों नहीं जब तुम ने अपने बाग में प्रवेश किया, तो कहा कि "जो अल्लाह चाहे, अल्लाह की शक्ति के बिना कुछ नहीं हो सकता।" यदि तू मुझे देखता है कि मैं तुझ से कम हूँ

وَكَانَ لَهُ شَرٌّ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۝

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ هَذِهِ أَبَدًا ۝

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّدِّدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَكِيدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ۝

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ۝

لَئِن كُنَّا لَهُمُ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أَشْرَكَ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا خُوفٌ إِلَّا بِاللَّهِ إِن تَرَىٰ أَنَا أَكْفَلُ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ۝

1 अर्थात् यदि किसी का धन संतान तथा बाग इत्यादि अच्छा लगे तो ((माशा अल्लाह ला कूब्बता इल्ला बिल्ला)) कहना चाहिये। ऐसा कहने से नज़र नहीं लगती। यह इस्लाम धर्म की शिक्षा है, जिस से आपस में द्वेष नहीं होता।

धन तथा संतान में,^[1]

40. तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझे प्रदान कर दे तेरे बाग़ से अच्छा, और इस बाग़ पर आकाश से कोई आपदा भेज दे, और वह चिकनी भूमि बन जाये।

41. अथवा उस का जल भीतर उतर जाये, फिर तू उसे पा न सके।

42. (अन्ततः) उस के फलों को घेर^[2] लिया गया, फिर वह अपने दोनों हाथ मलता रह गया उस पर जो उस में खर्च किया था। और वह अपने छप्परो सहित गिरा हुआ था, और कहने लगा: क्या ही अच्छा होता कि मैं किसी को अपने पालनहार का साझी न बनाता।

43. और नहीं रह गया उस के लिये कोई जत्था जो उस की सहायता करता और न स्वयं अपनी सहायता कर सका।

44. यही सिद्ध हो गया कि सब अधिकार सत्य अल्लाह को है, वही अच्छा है प्रतिफल प्रदान करने में, तथा अच्छा है परिणाम लाने में।

45. और (हे नबी!) आप उन्हें संसारिक जीवन का उदाहरण दें उस जल से जिसे हम ने आकाश से बरसाया। फिर उस के कारण मिल गई धरती की उपज, फिर चूर हो गई जिसे वायु

فَعَسَىٰ رَبِّي أَن يُوَفِّيَنَّ خَيْرًا مِّنْ حَبَّتِكَ
وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حَبَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ صَعِيدًا
زَلَقًا

أَوْ يُصْبِحَ مَاذَا غَوْرًا فَلَن تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۝

وَأَحِيطَ بِشَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا
أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَيَقُولُ
لِيَكُنْ لِّيَ لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۝

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَتَخَضَّعُونَ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۝

هُذَا لَكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا
وَخَيْرٌ عُقْبًا ۝

وَأَضْرِبْ لَهُم مَّثَلِ الْخَيْلِ الذَّاكِيَةِ كَمَا
أَسْرَلْنَاهُمْ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيْحُ
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝

1 अर्थात् मेरे सेवक और सहायक भी तुझ से अधिक हैं।

2 अर्थात् आपदा ने घेर लिया।

उड़ाये फिरती^[1] है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।

46. धन और पुत्र संसारिक जीवन की शोभा हैं। और शेष रह जाने वाले सत्कर्म ही अच्छे हैं आप के पालनहार के यहाँ प्रतिफल में, तथा अच्छे हैं आशा रखने के लिये।

47. तथा जिस दिन हम पर्वतों को चलायेंगे, तथा तुम धरती को खुला चटेल^[2] देखोगे। और हम उन्हें एकत्र कर देंगे, फिर उन में से किसी को नहीं छोड़ेंगे।

48. और सभी आप के पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे, तुम हमारे पास आ गये जैसे हम ने तुम्हारी उत्पत्ति प्रथम बार की थी, बल्कि तुम ने समझा था कि हम तुम्हारे लिये कोई वचन का समय निर्धारित ही नहीं करेंगे।

49. और कर्म लेख^[3] (सामने) रख दिये जायेंगे, तो आप अपराधियों को देखेंगे कि उस से डर रहे हैं जो कुछ उस में (अंकित) है, तथा कहेंगे कि हाय हमारा विनाश! यह कैसी पुस्तक है जिस ने किसी छोटे और बड़े कर्म को नहीं छोड़ा है, परन्तु उसे अंकित कर रखा है? और जो कर्म उन्होंने

الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَالْبَاقِيَتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا
وَحَيْرًا آمَلُوا ۝

وَيَوْمَ نُسِطُ الْجِبَالَ
وَنَحْمِلُهُمْ فَلَمَّا نَقَاوَرْنَا مِنْهُمْ أَحَدًا ۝

وَعَرَّضْنَاهُمْ عَلَىٰ رَبِّكَ صَعًا لِّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا
خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَجْعَلَ
لَكُمْ مَوْعِدًا ۝

وَوَضِعَ الْكِتَابَ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
مُسْفِهِينَ وَتَسَاءَلُونَ وَيَقُولُونَ لِيُؤْتِنَا مَالٌ
هَذَا الْكِتَابُ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً
إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا
وَلَا يَنْظُرُ رَبُّكَ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् संसारिक जीवन और उस का सुख-सुविधा सब साम्यिक है।

2 अर्थात् न उस में कोई चिन्ह होगा तथा न छुपने का स्थान।

3 अर्थात् प्रत्येक का कर्म पत्र जो उस ने संसारिक जीवन में किया है।

ने किये हैं उन्हें वह सामने पायेंगे,
और आप का पालनहार किसी पर
अत्याचार नहीं करेगा।

50. तथा (याद करो) जब आप के
पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा: आदम
को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा
किया इब्लीस के सिवा। वह जिन्नों
में से था, अतः उस ने उल्लंघन किया
अपने पालनहार की आज्ञा का,
तो क्या तुम उस को और उस कि
संतति को सहायक मित्र बनाते हो
मुझे छोड़ कर जब कि वह तुम्हारे
शत्रु है? अत्याचारियों के लिये बुरा
बदला है।

51. मैं ने उन को उपस्थित नहीं किया
आकाशो तथा धरती की उत्पत्ति के
समय और न स्वयं उन की उत्पत्ति
के समय, और न मैं कुपथों को
सहायक^[1] बनाने वाला हूँ।

52. जिस दिन वह (अल्लाह) कहेगा कि मेरे
साक्षियों को पुकारो जिन्हें समझ रहे थे
वह उन्हें पुकारेंगे, तो वह उन का कोई
उत्तर नहीं देंगे, और हम बना देंगे उन
के बीच एक बिनाशकारी खाई।

53. और अपराधी नरक को देखेंगे तो
उन्हें विश्वास हो जायेगा कि वे उस
में गिरने वाले हैं। और उस से फिरने
का कोई स्थान नहीं पायेंगे।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا
إِلَّا إِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ
رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي
وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ يَشَاءُ الظَّالِمِينَ بَدَّلُوا

مَا أَشْهَدْتُهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّينَ
عَضُدًا ۝

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ
فَتَدْعُوهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاعِنُوهَا
وَلَمْ يَحِيقُوا بِهَا مَصْرِفًا ۝

1 भावार्थ यह है कि विश्व की उत्पत्ति के समय इन का अस्तित्व न था। यह तो
बाद में उत्पन्न किये गये हैं। उन की उत्पत्ति में भी उन से कोई सहायता नहीं
ली गई, तो फिर यह अल्लाह के बराबर कैसे हो गये?

54. और हम ने इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण से लोगों को समझाया है। और मनुष्य बड़ा ही झगड़ालू है।

55. और नहीं रोका लोगों को कि ईमान लायें जब उन के पास मार्ग दर्शन आ गया और अपने पालनहार से क्षमा याचना करें, किन्तु इसी ने कि पिछली जातियों की दशा उन की भी हो जाये, अथवा उन के समक्ष यातना आ जाये।

56. तथा हम रसूलों को नहीं भेजते परन्तु शुभ सूचना देने वाले और सावधान करने वाले बना कर। और जो काफिर है असत्य (अनृत) के सहारे विवाद करते हैं, ताकि उस के द्वारा वह सत्य को नीचा^[1] दिखायें। और उन्होंने ने बना लिया हमारी आयतों को तथा जिस बात की उन्हें चेतावनी दी गई, परिहासा।

57. और उस से बड़ा अत्याचारी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये? वास्तव में हम ने उन के दिलों पर ऐसे आवरण (पर्दे) बना दिये हैं कि उसे^[2] समझ न पायें और उन के कानों में बोझ। और यदि आप उन्हें सीधी राह की ओर बुलायें तब (भी) कभी सीधी राह नहीं पा सकेंगे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرُ ظُلْمًا ۝

وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَّا رُسُلًا بَشَرِيْنَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَيَجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا إِلَٰهًا ۝ وَمَا أَنْزَلْنَاهُ إِلَّا

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَلِئِي مَاقَمَاتِ يَدَاهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا أَلْفَاكًا ۝

1 अर्थात् सत्य को दबा दें।

2 अर्थात् कुर्आन को।

58. और आप का पालनहार अति क्षमी दयावान् है। यदि वह उन को उन के कर्तूतों पर पकड़ता तो तुरन्त यातना दे देता। बल्कि उन के लिये एक निश्चित समय का वचन है। और वे उस के सिवा कोई बचाव का स्थान नहीं पायेंगे।

59. तथा यह बस्तियाँ हैं। हम ने उन (के निवासियों) का विनाश कर दिया जब उन्होंने अत्याचार किया। और हम ने उन के विनाश के लिये एक निर्धारित समय बना दिया था।

60. तथा (याद करो) जब मूसा ने अपने सेवक से कहा: मैं बराबर चलता रहूँगा, यहाँ तक कि दोनों सागरों के संगम पर पहुँच जाऊँ, अथवा वर्षा चलता^[1] रहूँ।

61. तो जब दोनों उन के संगम पर पहुँचे तो दोनों अपनी मछली भूल गये। और उस ने सागर में अपनी राह बना ली सुरंग के समान।

62. फिर जब दोनों आगे चले गये तो उस (मूसा) ने अपने सेवक से कहा

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْيِلًا ۝

وَبَلَدِكَ الْمُرَى أَهْلَكَهُمُ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۝

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِفَتَاهُ لَا أَبْرَحُ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۝

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۝

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتَاهُ إِنِّي خَشِيتُ أَنَا لَقَدْ لَقِيتُمَا مِنْ

1 मूसा अलैहिस्सलाम की यात्रा का कारण यह बना था कि वह एक बार भाषण दे रहे थे। तो किसी ने पूछा कि इस संसार में सर्वाधिक ज्ञानी कौन है? मूसा ने कहा: मैं हूँ। यह बात अल्लाह को अप्रिय लगी। और मूसा से फरमाया कि दो सागरों के संगम के पास मेरा एक भक्त है जो तुम से अधिक ज्ञानी है। मूसा ने कहा: मैं उस से कैसे मिल सकता हूँ? अल्लाह ने फरमाया: एक मछली रख लो, और जिस स्थान पर वह खो जाये, तो वहीं वह मिलेगा। और वह अपने सेवक यूशज बिन नून को लेकर निकल पड़े। (संक्षिप्त अनुवाद सहीह बुखारी: 4725)।

سَقَرْنَا هَذَا نَصَبًا ۝

कि हमारा दिन का भोजन लाओ। हम अपनी इस यात्रा से थक गये हैं।

63. उस ने कहा: क्या आप ने देखा? जब हम ने उस शिला खण्ड के पास शरण ली थी तो मैं मछली भूल गया। और मुझे उसे शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस की चर्चा करूँ, और उस ने अपनी राह सागर में अनोखे तरीके से बना ली।

قَالَ آتَيْنَا إِذَا أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْخُوتَ وَمَا أَكْسَيْنِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَن أَذْكُرَهُ
وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۝

64. मूसा ने कहा: वही है जो हम चाहते थे। फिर दोनों अपने पदचिन्हों को देखते हुये वापिस हुये।

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي ۚ فَارْتَدَّ عَلَىٰ آثَارِهِمَا
فَصَصَّلَا ۝

65. और दोनों ने पाया, हमारे भक्तों में से एक भक्त^[1] को, जिसे हम ने अपनी विशेष दया प्रदान की थी। और उसे अपने पास से कुछ विशेष ज्ञान दिया था।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عَشْرِينَ
وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَدُنَّا عِلْمًا ۝

66. मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आप का अनुसरण करूँ, ताकि मुझे भी उस भलाई में से कुछ सिखा दें, जो आप को सिखायी गई है?

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلَىٰ أَن تُعَلِّمَنِ
مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝

67. उस ने कहा: तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे।

قَالَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

68. और कैसे धैर्य करोगे उस बात पर जिस का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं?

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۝

69. उस ने कहा: यदि अम्नाह ने चाहा तो आप मुझे सहनशील पायेंगे। और मैं आप की किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।

قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي
لَكَ أَمْرًا ۝

1 इस से अभिप्रेत: आदरणीय खिज़्र अलैहिस्सलाम है।

70. उस ने कहा: यदि तुम्हें मेरा अनुसरण करना है तो मुझ से किसी चीज़ के संबन्ध में प्रश्न न करना जब तक मैं स्वयं तुम से उस की चर्चा न करूँ।

71. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब दोनों नौका में सवार हुये तो उस (खिज़्र) ने उस में छेद कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने इस में छेद कर दिया ताकि उस के सवारों को डूबा दें, आप ने अनुचित काम कर दिया।

72. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि तुम मेरे साथ सहन नहीं कर सकोगे?

73. कहा: मुझे आप मेरी भूल पर न पकड़ें, और मेरी बात के कारण मुझे असुविधा में न डालें।

74. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक बालक से मिले तो उस (खिज़्र) ने उसे बध कर दिया। मूसा ने कहा: क्या आप ने एक निर्दोष प्राण ले लिया, वह भी किसी प्राण के बदले¹ नहीं? आप ने बहुत ही बुरा काम किया।

75. उस ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा कि वास्तव में तुम मेरे साथ धैर्य नहीं कर सकोगे?

76. मूसा ने कहा: यदि मैं आप से प्रश्न

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝

فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ۝

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ لَا تُؤْخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۝

فَانْطَلَقَا حَتَّى إِذَا الْيَاقِلَا غُلَّتَا فَعَمَلَهُ ۝ قَالَا أَفَعَمَلْتَ هَذَا بَشَرًا إِنْ هِيَ إِلَّا نَفْسُنَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا ثَكْرًا ۝

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَذَا فَلَا تُصَحِّبْنِي ۝

1 अर्थात् उस ने किसी प्राणी को नहीं मारा कि उस के बदले में उसे मारा जाये।

करूँ, किसी विषय में इस के पश्चात्, तो मुझे अपने साथ न रखें। निश्चय आप मेरी ओर से याचना को पहुँच^[1] चुके।

قَدْ بَلَغْتَ مِنَ لَدُنِّي عُذْرًا ۝

77. फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब एक गाँव के वासियों के पास आये तो उन से भोजन माँगा। उन्होंने ने उन का अतिथि सत्कार करने से इन्कार कर दिया। वहाँ उन्होंने एक दीवार पायी जो गिरा चाहती थी। उस ने उसे सीधी कर दिया। कहा: यदि आप चाहते तो इस पर पारिश्रमिक ले लेते।

فَالْتَفَعَا فِي دُفُنِ الْمَيِّتِ الْفَرِيقِ الْاِثْنَيْنِ ۚ
فَاَيُّوْا اَنْ يُصِيفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُرِيدُ
اَنْ يَنْقَضَ ۚ فَاَقَامُوْهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتُ لَفَعَدْتُ
عَلَيْهِمْ اَجْرًا ۝

78. उस ने कहा: यह मेरे तथा तुम्हारे बीच वियोग है। मैं तुम्हें उस की वास्तविकता बताऊँगा, जिस को तुम सहन नहीं कर सके।

قَالَ هٰذَا فِیْۤ اَوْدَاقِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ۚ سَالِمٌ لَّكَ بَۤاَوَّلِ
مَا لَمْ يَنْتَظِرْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

79. रही नाव तो वह कुछ निर्धनों की थी, जो सागर में काम करते थे। तो मैं ने चाहा कि उसे छिद्रित^[2] कर दूँ, और उन के आगे एक राजा था जो प्रत्येक (अच्छी), नाव का अपहरण कर लेता था।

اِنَّمَا السَّفِیْنَةُ ۚ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنٍ يَعْمَلُوْنَ فِی
الْبَحْرِ ۚ فَاَرَدْتُ اَنْ اَعِیْبَهَا ۚ وَكَانَ وَرَآءَهُمْ نَزَارٌ
يَّاخُذُ كُلَّ سَفِیْنَةٍ غَصْبًا ۝

80. और रहा बालक तो उस के माता-पिता ईमान वाले थे, अतः हम डरे कि उन्हें अपनी अवैज्ञा और अधर्म से दुख न पहुँचाये।

وَآتَا الْغُلَامَ فَكَانَ اَبُوْهُ مُؤْمِنًا ۚ فَخَشِنَا اَنْ
يُّرَۤهَقَهُمَا الْكُفْرَانُ ۚ وَكُفْرًا ۝

81. इसलिये हम ने चाहा कि उन दोनों

فَاَرَدْنَا اَنْ يُبَيِّدَ لِهٰمَارِۤاهُمَا خَيْرًا ۚ اَوْۤ اَمْنَةً ۚ وَكُوْۤا

1 अर्थात् अब कोई प्रश्न करूँ तो आप के पास मुझे अपने साथ न रखने का उचित कारण होगा।

2 अर्थात् उस में छेद कर दूँ।

وَأَقْرَبَ رَحْمًا

को उन का पालनहार, इस के बदले उस से अधिक पवित्र और अधिक प्रेमी प्रदान करे।

82. और रही दीवार तो वह दो अनाथ बालकों की थी। और उस के भीतर उन का कोष था। और उन के माता-पिता पुनीत थे तो तेरे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवा अवस्था को पहुँचें और अपना कोष निकालें, तेरे पालनहार की दया से। और मैं ने यह अपने विचार तथा अधिकार से नहीं किया^[1] यह उस की वास्तविकता है जिसे तुम सहन नहीं कर सकें।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتَهُ عَنْ أَمْرِي ذَلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا

83. और (हे नबी!) वे आप से जुलकरनैन^[2] के विषय में प्रश्न करते हैं। आप कह दें कि मैं उन की कुछ दशा तुम्हें पढ़ कर सुना देता हूँ।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقَرْيَتَيْنِ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا

- 1 यह सभी कार्य विशेष रूप से निर्दोष बालक का बंध धार्मिक नियम से उचित न था। इस लिये मूसा (अलैहिस्सलाम) इस को सहन न कर सकें। किन्तु ((ख़िज़्र)) को विशेष ज्ञान दिया गया था जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पास नहीं था। इस प्रकार अब्नाह ने जता दिया कि हर ज्ञानी के ऊपर भी कोई ज्ञानी है।

- 2 यह तीसरे प्रश्न का उत्तर है जिसे यहूदियों ने मक्का के मिश्रणवादियों द्वारा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कराया था।

जुलकरनैन के आगामी आयतों में जो गुण-कर्म बताये गये हैं उन से विद्वित होता है कि वह एक सदाचारी विजेता राजा था। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के शोध के अनुसार यह वही राजा है जिसे यूनानी साईरस, हिब्रु भाषा में खोरिस तथा अरब में ख़सरु के नाम से पुकारा जाता है। जिस का शासन काल 559 ई० पूर्व है। वह लिखते हैं कि 1838 ई० में साईरस की एक पत्थर की मूर्ति अस्तख़र के खण्डरों में मिली है। जिस में बाज पक्षी के भाँति उस के दो पैर तथा उस के सिर पर भेड़ के समान दो सींग हैं। इस में मीडिया और फारस के दो राज्यों की उपमा दो सींगों से दी गयी है। (देखिये: तर्जमानुल कुर्आन, भाग-3 पृष्ठ-436-438)

84. हम ने उसे धरती में प्रभुत्व प्रदान किया, तथा उसे प्रत्येक प्रकार का साधन दिया।

إِنَّا مَنَّكَ عَلَى الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبِيلًا ۝

85. तो वह एक राह के पीछे लगा।

فَاتَّبَعَ سَبِيلًا ۝

86. यहाँ तक कि जब सूर्यास्त के स्थान तक^[1] पहुँचा, तो उस ने पाया कि वह एक काली कीचड़ के स्रोत में डूब रहा है। और वहाँ एक जाति को पाया। हम ने कहा: हे जुलकर्नैन! तू उन्हें यातना दे अथवा उन में अच्छा व्यवहार बना।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلُوبًا يَدُ الْأَقْرَبِينَ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ تُعَذِّبُ وَإِنَّمَا أَنْتَ تُجْزَىٰ فِيهِمْ حُسْنًا ۝

87. उस ने कहा: जो अत्याचार करेगा, हम उसे दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार की ओर फेरा^[2] जायेगा, तो वह उसे कड़ी यातना देगा।

قَالَ إِنَّمَا مِنْ ظَلَمٍ فَسَوْفَ نَعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَمَرًا ۝

88. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार करे तो उसी के लिये अच्छा प्रतिफल (बदला) है। और हम उसे अपना सरल आदेश देंगे।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرٌ إِنَّا لَا نَنْسُوا ۝

89. फिर वह एक (अन्य) राह की ओर लगा।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبِيلًا ۝

90. यहाँ तक कि सूर्योदय के स्थान तक पहुँचा। उसे पाया कि ऐसी जाति पर उदय हो रहा है जिस से हम ने उन के लिये कोई आड़ नहीं बनायी है।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُمُ مِن دُونِهَا اسْتِعْرًا ۝

91. उन की दशा ऐसी ही थी, और उस (जुलकर्नैन) के पास जो कुछ था हम उस से पूर्णतः सूचित हैं।

كَذَٰلِكَ نُوَفِّي أَصْحَابَ الْكَهْفِ الَّذِي خُفِيَ ۝

1 अर्थात् पश्चिम की अन्तिम सीमा तक।

2 अर्थात् निधन के पश्चात् प्रलय के दिन।

92. फिर वह एक दूसरी राह की ओर लगा।

فَتَتَّبِعْ سَبِيلًا ۝

93. यहाँ तक कि जब दो पर्वतों के बीच पहुँचा तो उन दोनों के उस ओर एक जाति को पाया, जो नहीं समीप थी कि किसी बात को समझे^[1]

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۝

94. उन्होंने ने कहा: हे जुल करनैन! वास्तव में याजुज तथा माजुज उपद्रवी हैं इस देश में तो क्या हम निर्धारित कर दें आप के लिये कुछ धन। इसलिये कि आप हमारे और उन के बीच कोई रोक (बंध) बना दें?

قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ هَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝

95. उस ने कहा: जो कुछ मुझे मेरे पालनहार ने प्रदान किया है वह उत्तम है। तो तुम मेरी सहायता बल और शक्ति से करो, मैं बना दूँगा तुम्हारे और उन के मध्य एक दृढ़ भीत।

قَالَ مَا مَكْنِيَ فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝

96. मुझे लोहे की चादरें ला दो। और जब दोनों पर्वतों के बीच दीवार तय्यार कर दी, तो कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उस दीवार को आग (के समान लाल) कर दिया, तो कहा: मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ ताँबा उँडेल दूँ।

أَتُونِي زُرَّاجًا حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ نَارًا قَالَ أَتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۝

97. फिर वह उस पर चढ़ नहीं सकते थे और न उस में कोई सेंध लगा सकते थे।

فَمَا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝

98. उस (जुल करनैन) ने कहा: यह मेरे पालनहार की दया है। फिर जब मेरे पालनहार का वचन^[2] आयेगा तो

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِنْ رَبِّي فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۝

1 अर्थात् अपनी भाषा के सिवा कोई भाषा नहीं समझती थी।

2 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का समय है। जैसा कि सहीह बुखारी हदीस

वह इसे खण्ड-खण्ड कर देगा। और मेरे पालनहार का वचन सत्य है।

99. और हम छोड़ देंगे उस^[1] दिन लोगों को एक दूसरे में लहरें लेते हुये। तथा नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, और हम सब को एकत्रित कर देंगे।

وَتَرْكُنَا لَهُمْ يَوْمَئِذٍ بُرُوجًا فِي بَعْضٍ وَنُفَعًا فِي الصُّورِ فَجَبَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۝

100. और हम सामने कर देंगे उस दिन नरक को काफ़िरो के समक्ष।

وَعَرَّضْنَاهُمْ يُومَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرَضًا ۝

101. जिन की आँखे मेरी याद से पर्दे में थीं, और कोई बात सुन नहीं सकते थे।

لِلَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي وَكَانُوا لَا يَسْمَعُونَ سَمْعًا ۝

102. तो क्या उन्होंने सोचा है जो काफ़िर हो गये कि वह बना लेंगे मेरे दासों को मेरे सिवा सहायक? वास्तव में हम ने काफ़िरो के आतिथ्य के लिये नरक तैयार कर दी है।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَخَذُوا مِنَّا وَلِيًّا ۚ أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ لِكُفْرِهِمْ نَارًا ۚ

103. आप कह दें कि क्या हम तुम्हें बता दें कि कौन अपने कर्मों में सब से अधिक क्षतिग्रस्त हैं?

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۚ

104. वह है, जिन के संसारिक जीवन के सभी प्रयास व्यर्थ हो गये, तथा वह समझते रहे कि वे अच्छे कर्म कर रहे हैं।

الَّذِينَ ضَلَّ سَبِيلُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يُحِبُّونَ أَنَّهُمْ مُخْلِشُونَ مِنَّا ۚ

105. यही वह लोग हैं, जिन्होंने ने नहीं माना अपने पालनहार की आयतों

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ

नं० 3346 आदि में आता है कि क्यामत आने के समीप याजूज-माजूज वह दीवार तोड़ कर निकलेंगे, और धरती में उपद्रव मचा देंगे।

- 1 इस आयत में उस प्रलय के आने के समय की दशा का चित्रण किया गया है जिसे जुलकरनैन ने सत्य वचन कहा है।

तथा उस से मिलने को, अतः हम प्रलय के दिन उन का कोई भार निर्धारित नहीं करेंगे।^[1]

106. उन्हीं का बदला नरक है, इस कारण कि उन्होंने कुफ़्र किया, और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का उपहास किया।

107. निश्चय जो ईमान लाये और सदाचार किये, उन्हीं के आतिथ्य के लिये फिरदौस^[2] के बाग़ होंगे।

108. उस में वे सदावासी होंगे, उसे छोड़ कर जाना नहीं चाहेंगे।

109. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि सागर मेरे पालनहार की बातें लिखने के लिये स्याही बन जायें, तो सागर समाप्त हो जायें, इस से पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि उतनी ही स्याही और ले आयें।

110. आप कह दें मैं तो तुम जैसा एक मनुष्य पुरुष हूँ, मेरी ओर प्रकाशना (वह्नी) की जाती है कि तुम्हारा पूज्य बस एक ही पूज्य है। अतः जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो उसे चाहिये कि सदाचार करे। और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (बंदना) में किसी को।

فَجَعَلْتُ أَعْمَاءَ الْهَمُومِ لَا يُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزْنًا ۝

ذَٰلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا الْيَتَامَىٰ وَرُسُلِي هُزُوًا ۝

إِنَّ الْدِّينَ أَمْنٌ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفَذَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَذَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جُمُتُ بِشَاءِ مَدَدًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُ الْوَاحِدُ ۚ فَمَن كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَادِقًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

1 अर्थात् उन का हमारे यहाँ कोई भार न होगा। हदीस में आया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: क्यामत के दिन एक भारी भरकम व्यक्ति आयेगा। मगर अल्लाह के सदन में उस का भार मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं होगा। फिर आप ने इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी, हदीस नं॰ 4729)

2 फिरदौस: स्वर्ग के सर्वोच्च स्थान का नाम है। (सहीह बुखारी: 7423)

सूरह मर्यम - 19

سُورَةُ مَرْيَمَ

सूरह मर्यम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 98 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म की कथा का वर्णन किया गया है। इसी से इस का नाम मर्यम है। इस में सर्वप्रथम यहया (अलैहिस्सलाम) के जन्म की चर्चा है, उस के पश्चात् ईसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म का वर्णन है। और ईसाईयों को उन के विभेद पर सावधान किया गया है।
- इस में इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के तौहीद के प्रचार और उन के हिजरत करने और मुसा (अलैहिस्सलाम) तथा अन्य नबियों की चर्चा की गई है, और उन की शिक्षाओं के बिरोधियों के विनाश से सावधान किया गया है। और उन को मानने पर सफलता की शुभसूचना दी गई है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने और सुदृढ़ रहने का निर्देश दिया गया है। परलोक के इन्कारियों के संदेहों को दूर करते हुये ईमान और विश्वास के लिये कुछ स्थितियों का वर्णन किया गया है।
- जब मक्का से कुछ मुसलमान नबूवत के पाँचवें वर्ष हिजरत कर के हब्शा पहुँचे और मक्का के काफिरों ने कुछ व्यक्तियों को वापिस लाने के लिये भेजा जिन्होंने उन्हें धर्म बदल लेने का दोषी बताया तो वहाँ के ईसाई राजा नजाशी को जअफ़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसी सूरह की आरंभिक आयतें सुनाई जिसे सुन कर वह रोने लगा, और कहा: यह और जो ईसा (अलैहिस्सलाम) लाये थे एक ही नूर (प्रकाश) की दो किरणें हैं। और भूमी से एक तिनका ले कर कहा: ईसा (अलैहिस्सलाम) इस से कुछ भी अधिक नहीं थे। फिर काफिरों के प्रतिनिधियों को निष्फल वापिस कर दिया। (सीरत इब्ने हिशाम-1। 334, 338)

हदीस में है कि पुरुषों में बहुत से पूर्ण हुये और स्त्रियों में मर्यम बिनत इमरान और फिरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुयीं। (सहीह बुखारी: 3411, मुस्लिम, 2431)

दूसरी हदीस में है कि प्रत्येक शिशु जब जन्म लेता है तो शैतान उस के बाजू में अपनी दो उंगलियों से कचोके लगाता है, (तो वह चीख कर

रोता है), ईसा (अलैहिस्सलाम) के सिवा। शैतान जब उन्हें कचोके लगाने लगा तो पर्दे ही में कचोका लगा दिया। (सहीह बुखारी, 3286, मुस्लिम, 2431)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. काफ़, हा, या, ऐन, साद।
2. यह आप के पालनहार की दया की चर्चा है, अपने भक्त ज़करिया पर।
3. जब कि उस ने अपने पालनहार से विनय की, गुप्त विनय।
4. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी अस्थियाँ निर्बल हो गयीं और सिर बुढ़ापे से सफ़ेद^[1] हो गया है, तथा मेरे पालनहार! कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुझ से प्रार्थना कर के निष्फल हुआ हूँ।
5. और मुझे अपने भाई बंदों से भय^[2] है, अपने (मरण) के पश्चात्, तथा मेरी पत्नी बाँझ है, अतः मुझे अपनी ओर से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर दे।
6. वह मेरा उत्तराधिकारी हो, तथा याकूब के वंश का उत्तराधिकारी^[3] हो और है पालनहार! उसे प्रिय बना दे।

كَهَيْعَصَ

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدًا زَكِرًا

إِذْ نَادَى رَبَّهُ يَدًّا حَاجِبًا

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَثَتِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلَدًا

يُرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا

1 अर्थात् पूरे बाल सफ़ेद हो गये।

2 अर्थात् दुराचार और बुरे व्यवहार का।

3 अर्थात् नबी हो। आदरणीय ज़करिया (अलैहिस्सलाम) याकूब (अलैहिस्सलाम) के वंश में थे।

7. हे ज़करिया! हम तुझे एक बालक की शुभ सूचना दे रहे हैं, जिस का नाम यह्या होगा। हम ने नहीं बनाया है इस से पहले उस का कोई सम्नाम।
8. उस ने (आश्चर्य से) कहा: मेरे पालनहार! कहाँ से मेरे यहाँ कोई बालक होगा, जब कि मेरी पत्नी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की चरम सीमा को जा पहुँचा हूँ।
9. उस ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार ने कहा है, यह मेरे लिये सरल है, इस से पहले मैं ने तेरी उत्पत्ति की है, जब कि तू कुछ नहीं था।
10. उस (ज़करिया) ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण (चिन्ह) बना दे। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह है कि तू बोल नहीं सकेगा, लोगों से निरंतर तीन रातों^[1]।
11. फिर वह मेहराब (चाप) से निकल कर अपनी जाति के पास आया। और उन्हें संकेत द्वारा आदेश दिया कि उस (अल्लाह) की पवित्रता का वर्णन करो, प्रातः तथा संध्या।
12. हे यह्या!^[2] इस पुस्तक (तौरात) को थाम ले, और हम ने उसे बचपन ही में ज्ञान (प्रबोध) प्रदान किया।

يُزَكِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي كُنتُ مِنْ عَجُوزٍ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ حَيْثُ كَانَ وَقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُن شَيْئًا ۝

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَ آيَتُكَ الْأْتِيكُمُ النَّاسُ عَنْكَ لَيْلًا مُسَوِّيًا ۝

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۝

يَحْيَىٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَ صَبِيًّا ۝

- 1 रात से अभिप्राय दिन तथा रात दोनों ही हैं। अर्थात् जब बिना किसी रोग के लोगों से बात न कर सकोगे तो यह शुभ सूचना का लक्षण होगा।
- 2 अर्थात् जब यह्या का जन्म हो गया और कुछ बड़ा हुआ तो अल्लाह ने उसे तौरात का ज्ञान दिया।

13. तथा अपनी ओर से प्रेम भाव तथा पवित्रता, और वह बड़ा संयमी (सदाचारी) था।
14. तथा अपनी माता-पिता के साथ सुशील था, वह क्रूर तथा अवज्ञाकारी नहीं था।
15. उस पर शान्ति है, जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन मरेगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जायेगा।
16. तथा आप इस पुस्तक (कुर्आन) में मर्यम⁽¹⁾ की चर्चा करें, जब वह अपने परिजनों से अलग हो कर एक पूर्वी स्थान की ओर आयी।
17. फिर उन की ओर से पर्दा कर लिया, तो हम ने उस की ओर अपनी रूह (आत्मा)⁽²⁾ को भेजा, तो उस ने उस के लिये एक पूरे मनुष्य का रूप धारण कर लिया।
18. उस ने कहा: मैं शरण माँगती हूँ अत्यंत कृपाशील की तुझ से, यदि तुझे अन्नाह का कुछ भी भय हो।
19. उस ने कहा: मैं तेरे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि तुझे एक पुनीत बालक प्रदान कर दूँ।
20. वह बोली: यह कैसे हो सकता है कि मेरे बालक हो, जब कि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श भी नहीं किया है, और

وَحَنَانًا مِّن كُنَّا وَزَكَاةً وَكَانَ تَقِيًّا ۝

وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا عَصِيًّا ۝

وَسَلَّمَ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ مَيُوتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝

وَإِذْ كُنَّا الْكِتَابَ مَرْيَمَ إِذِ اتَّخَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْوِيًّا ۝

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ۝

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكْ بَغِيًّا ۝

1 मर्यम अदरणीय इम्रान की पुत्री दावूद अलैहिस्सलाम के वंश से थी। उन के जन्म के विषय में सूरह आले इमरान देखिये।

2 इस से अभिप्रेत फरिश्ते जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं।

न मैं व्यभिचारिणी हूँ

21. फरिश्ते ने कहा: ऐसा ही होगा, तेरे पालनहार का वचन है कि वह मेरे लिये अति सरल है, और ताकि हम उसे लोगों के लिये एक लक्षण (निशानी)^[1] बनायें तथा अपनी विशेष दया से, और यह एक निश्चित बात है।
22. फिर वह गर्भवती हो गई, तथा उस (गर्भ को ले कर) दूर स्थान पर चली गई।
23. फिर प्रसव पीड़ा उसे एक खजूर के तने तक लायी, कहने लगी: क्या ही अच्छा होता, मैं इस से पहले ही मर जाती, और भूली बिसरी हो जाती।
24. तो उस के नीचे से पुकारा^[2] कि उदासीन न हो, तेरे पालनहार ने तेरे नीचे^[3] एक स्रोत बहा दिया है।
25. और हिला दे अपनी ओर खजूर के तने को तुझ पर गिरायेगा वह ताजी पकी खजूरें।^[4]
26. अतः खा और पी तथा आँख ठण्डी कर। फिर यदि किसी पुरुष को देखे, तो कह दे: वास्तव में, मैं ने मनौती मान रखी है अत्यंत कृपाशील के

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْئٍ
وَلَنَجْعَلَ لَآئِمَّةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ
أَمْرًا مُّقْضِيًّا ۝

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۝

فَاجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جُذْعِ النَّخْلِ قَالَتْ
يَكِينِي مِنِّي قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مَّنْسِيًّا ۝

فَنَادَاهَا مِن تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ
رَبُّكَ تَحْتِكَ سَرِيًّا ۝

وَهَزَىٰ بِإِيمِكَ جُذْعَ النَّخْلِ نَسِيطَ
عَلَيْكَ رُطْبًا جَنِيًّا ۝

فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا فَإِمَّا تَرِينِ مِنَ
الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ
صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۝

1 अर्थात् अपने सामर्थ्य की निशानी कि हम नर-नारि के योग के बिना भी स्त्री के गर्भ से शिशु की उत्पत्ति कर सकते हैं।

2 अर्थात् जिवरील फरिश्ते ने घाटी के नीचे से आवाज़ दी।

3 अर्थात् मर्यम के चरणों के नीचे।

4 अल्लाह ने अस्वभाविक रूप से आदरणीय मर्यम के लिये, खाने-पीने की व्यवस्था कर दी।

लिये ब्रत की। अतः मैं आज किसी मनुष्य से बात नहीं करूँगी।

27. फिर उस (शिशु ईसा) को ले कर अपनी जाति में आयी, सब ने कहा: हे मर्यम! तू ने बहुत बुरा किया।

28. हे हारून की बहन!^[1] तेरा पिता कोई बुरा व्यक्ति न था। और न तेरी माँ व्यभिचारिणी थी।

29. मर्यम ने उस (शिशु) की ओर संकेत किया। लोगों ने कहा: हम कैसे उस से बात करें जो गोद में पड़ा हुआ एक शिशु है?

30. वह (शिशु) बोल पड़ा: मैं अब्राह का भक्त हूँ। उस ने मुझे पुस्तक (इंजील) प्रदान की है, तथा मुझे नबी बनाया है।^[2]

31. तथा मुझे शुभ बनाया है जहाँ रहूँ और मुझे आदेश दिया है, नमाज़ तथा ज़कात का जब तक जीवित रहूँ।

32. तथा अपनी माँ का सेवक, और उस ने मुझे क्रूर तथा अभागा^[3] नहीं बनाया है।

33. तथा शान्ति है मुझ पर, जिस दिन मैं ने जन्म लिया तथा जिस दिन मरूँगा और जिस दिन पुनः जीवित किया जाऊँगा।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِيْلَةً ۖ قَالُوا يَسْرِىءُ لَقَدْ جِئْتِ
بَشَيْئًا قَرِيْنًا ۝

يَا هَارُوْنَ هَؤُلَاءِ مَا كَانَ آبُوكَ أَمرًا سُوْءًا ۖ وَمَا كَانَتْ
أُمُّكَ بَعْثًا ۝

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نَكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي
الْهُدُ حَبِيْبًا ۝

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَانِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝

وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا مِّنْ مَّا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ
وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝

وَبَرَّأ بَوَالِدَنِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيْبًا ۝

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ
أُبْعَثُ حَيًّا ۝

1 अर्थात् हारून अलैहिस्सलाम के वंशज की पुत्री। अरबों के यहाँ किसी कबीले का भाई होने का अर्थ उस कबीले और वंशज का व्यक्ति लिया जाता था।

2 अर्थात् मुझे पुस्तक प्रदान करने और नबी बनाने का निर्णय कर दिया है।

3 इस में यह संकेत है कि माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करना क्रूरता तथा दुर्भाग्य है।

34. यह है ईसा मर्यम का सुत, यही सत्य बात है, जिस के विषय में लोग संदेह कर रहे हैं।

35. अल्लाह का यह काम नहीं कि अपने लिये कोई संतान बनाये, वह पवित्र है! जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है, तो उस के सिवा कुछ नहीं होता कि उसे आदेश दे कि: "हो जा" और वह हो जाता है।

36. और (ईसा ने कहा): वास्तव में अल्लाह मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, अतः उसी की इबादत (बंदना) करो, यही सुपथ (सीधी राह) है।

37. फिर सम्प्रदायो^[1] ने आपस में विभेद किया, तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये एक बड़े दिन के आ जाने के कारण।

38. वे भली भाँति सुनेंगे और देखेंगे जिस दिन हमारे पास आयेंगे, परन्तु अत्याचारी आज खुले कुपथ में हैं।

39. और (हे नबी!) आप उन्हें संताप के दिन से सावधान कर दें, जब निर्णय^[2]

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝

مَا كَانَ لِمَا كَانَ يَلْعَنُ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سَبْعَةً ۚ إِذَا فَصَّىٰ أَمْراً فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُوتَنَّا الَّذِينَ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي

1 अर्थात् अहले किताब के सम्प्रदायों ने ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तविकता जानने के पश्चात् उन के विषय में विभेद किया। यहूदियों ने उसे जादूगर तथा वर्णसंकर कहा। और ईसाइयों के एक सम्प्रदाय ने कहा कि वह स्वयं अल्लाह है। दूसरे ने कहा: वह अल्लाह का पुत्र है। और उन के तीसरे कैथुलिक सम्प्रदाय ने कहा कि वह तीन में का तीसरा है। बड़े दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

2 अर्थात् प्रत्येक के कर्मानुसार उस के लिये नरक अथवा स्वर्ग का निर्णय कर दिया जायेगा। फिर मौत को एक भेड़ के रूप में वध कर दिया जायेगा। तथा घोषणा कर दी जायेगी कि हे स्वर्गीयो! तुम्हें सदा रहना है, और अब मौत नहीं है। और हे नारकियो! तुम्हें सदा नरक में रहना है, अब मौत नहीं है। (सहीह

عَقْلًا وَمَنْ لَا يُؤْمِنُ ۝

कर दिया जायेगा जब कि वे अचेत हैं
तथा ईमान नहीं ला रहे हैं।

إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا
يُرْجَعُونَ ۝

40. निश्चय हम ही उत्तराधिकारी होंगे
धरती के तथा जो उस के ऊपर है
और हमारी ही ओर सब प्रत्यागत
किये जायेंगे।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صَادِقًا
نَبِيًّا ۝

41. तथा आप चर्चा कर दें इस पुस्तक
(कुर्आन) में इब्राहीम की। वास्तव में
वह एक सत्यावादी नबी था।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ
وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۝

42. जब उस ने कहा अपने पिता से: हे
मेरे प्रिय पिता! क्यों आप उसे पूजते
हैं, जो न सुनता है और न देखता है,
और न आप के कुछ काम आता?

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ
فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝

43. हे मेरे पिता! मेरे पास वह ज्ञान आ
गया है जो आप के पास नहीं आया,
अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं
आप को सीधी राह दिखा दूंगा।

يَا أَبَتِ لَا تَقْبَلُوا عِبَادَتِي إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ
عَصِيًّا ۝

44. हे मेरे प्रिय पिता! शैतान की पूजा
न करें, वास्तव में शैतान अत्यंत
कृपाशील (अल्लाह) का अवैज्ञाकारी है।

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابُ مِنَ الرَّحْمَنِ
فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۝

45. हे मेरे पिता! वास्तव में मुझे भय हो
रहा है कि आप को अत्यंत कृपाशील
की कोई यातना आ लगे तो आप
शैतान के मित्र हो जायेंगे।^[1]

قَالَ لَرَجُلٍ اتَّعَى الْهَيْئَ يَا إِبْرَاهِيمُ لَئِنْ لَمْ تُتَنَبَّأْ
لَأَرْسِلَنَّكَ وَالْجَرْنَ بِلَيْلٍ ۝

46. उस ने कहा: क्या तू हमारे पूज्यों से
विमुख हो रहा है? हे इब्राहीम! यदि
तू (इस से) नहीं रुका तो मैं तुझे

बुखारी, हदीस, नं०-4730)

1 अर्थात् अब मैं आप को संबोधित नहीं करूंगा।

पत्थरों से मार दूंगा। और तू मुझ से विलग हो जा सदा के लिये।

47. (इब्राहीम) ने कहा: सलाम¹ है आप को। मैं क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा आप के लिये अपने पालनहार से, मेरा पालनहार मेरे प्रति बड़ा करुणामय है।

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَتَعْفُوكَ رَبِّي
إِنَّهُ كَانَ بِي حَبِيْبًا ۝

48. तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा। और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से। मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

وَأَعِزِّلْكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي عَشْيَ الْآكُونِ بِدُعَاءِ رَبِّي شُعْبَةً ۝

49. फिर जब उन्हें छोड़ दिया तथा जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकार रहे थे, तो हम ने उसे प्रदान कर दिया इस्हाक़ तथा याकूब, और हम ने प्रत्येक को नबी बना दिया।

فَلَمَّا أَعِزَّلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا آلَ إِسْمَاعِيلَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝

50. तथा हम ने प्रदान की उन सब को अपनी दया में से, और हम ने बना दी उन की शुभ चर्चा सर्वोच्च।

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝

51. और आप इस पुस्तक में मूसा की चर्चा करें। वास्तव में वह चुना हुआ तथा रसूल एवं नबी था।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَى إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۝

52. और हम ने उसे पुकारा तूर पर्वत के दायें किनारे से, तथा उसे समीप कर लिया रहस्य की बात करते हुये।

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ۝

53. और हम ने प्रदान किया उसे अपनी दया में से, उस के भाई हारून को

وَوَهَبْنَا آلَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ۝

1 इस्हाक़, इब्राहीम अलैहिमस्सलाम के पुत्र तथा याकूब के पिता थे इन्हीं के वंश को बनी इस्राईल कहते हैं।

नबी बना कर।

54. तथा इस पुस्तक में इस्माईल^[1] की चर्चा करो, वास्तव में वह वचन का पक्का, तथा रसूल -नबी था।

55. और आदेश देता था अपने परिवार को नमाज़ तथा ज़कात का और अपने पालनहार के यहाँ प्रिय था।

56. तथा इस पुस्तक में इद्रीस की चर्चा करो, वास्तव में वह सत्यवादी नबी था।

57. तथा हम ने उसे उठाया उच्च स्थान पर।

58. यही वह लोग है, जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया नबियों में से आदम की संतति में से तथा उन में से जिन्हें हम ने (नाव पर) सवार किया नूह के साथ तथा इब्राहीम और इस्राईल के संतति में से, तथा उन में से जिन्हें हम ने मार्ग दर्शन दिया और चुन लिया, जब इन के समक्ष पड़ी जाती थी अत्यंत कृपाशील की आयतें तो वे गिर जाया करते थे सज्दा करते हुये तथा रोते हुये।

59. फिर इन के पश्चात् ऐसे कपूत पैदा हुये, जिन्होंने गँवा दिया नमाज़ को तथा अनुसरण किया मनोकामनाओं का, तो वह शीघ्र ही कुपथ (के

وَأَذْكُرْنِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ۝

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ۝

وَأَذْكُرْنِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَّبِيًّا ۝

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ وَمِنْ حَمَلَةِ نُوْحٍ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَآءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۝

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ عَذَابًا ۝

1 आप इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बड़े पुत्र थे, इन्हीं से अरबों का वंश चला और आप ही के वंश से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी बना कर भेजे गये हैं।

परिणाम) का सामना करेंगे।

60. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली, तथा ईमान लाये और सदाचार किये तो वही स्वर्ग में प्रवेश पायेंगे। और उन पर तनिक अत्याचार नहीं किया जायेगा।

61. स्थायी बिन देखे स्वर्ग, जिन का परोक्षतः वचन अत्यंत कृपाशील ने अपने भक्तों को दिया है, वास्तव में उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।

62. वे नहीं सुनेंगे, उस में कोई बकवास, सलाम के सिवा, तथा उन के लिये उस में जीविका होगी प्रातः और संध्या।

63. यही वह स्वर्ग है, जिस का हम उत्तराधिकारी बना देंगे, अपने भक्तों में से उसे जो आज्ञाकारी हो।

64. और हम^[1] नहीं उतरते परन्तु आप के पालनहार के आदेश से, उसी का है जो हमारे आगे तथा पीछे है और जो इस के बीच है, और आप का पालनहार भूलने वाला नहीं है।

65. आकाशों तथा धरती का पालनहार तथा जो उन दोनों के बीच है। अतः उसी की इबादत (बंदना) करें, तथा उस की इबादत पर स्थित रहें। क्या आप उस के समक्ष किसी को जानते हैं?

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۝

جَدَّتْ عَدْنُ الْكَافِرِ وَعَدَّ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا ۝

الْكَاثِبُونَ فِيهَا الْغَوَا الْأَسْلَمَاءُ وَأَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةٌ وَعِشْيَا ۝

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۝

وَمَا نُنَزِّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۝

رَبِّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاَعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝

1 हदीस के अनुसार एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (फ़रिश्ते) जibreel से कहा कि क्या चीज़ आप को रोक रही है कि आप मुझ से और अधिक मिला करें, इसी पर यह आयत अवतरित हुई (सहीह बुखारी, हदीस नं॰ 4731)

66. तथा मनुष्य कहता है कि क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर निकाला जाऊँगा जीवित हो कर?

67. क्या मनुष्य याद नहीं रखता कि हम ही ने उसे इस से पूर्व उत्पन्न किया है जब कि वह कुछ (भी) न था?

68. तो आप के पालनहार की शपथ! हम उन्हें अवश्य एकत्र कर देंगे और शैतानों को, फिर उन्हें अवश्य उपस्थित कर देंगे, नरक के किनारे मुँह के बल गिरे हुये।

69. फिर हम अलग कर लेंगे प्रत्येक समुदाय से उन में से जो अत्यंत कृपाशील का अधिक अवैज्ञाकारी था।

70. फिर हम ही भली-भाँति जानते हैं कि कौन अधिक योग्य है उस में झोंक दिये जाने के।

71. और नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहाँ गुजरने वाला¹ है, यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

72. फिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे, तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुँह के बल गिरे हुये।

73. तथा जब उन के समक्ष हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफिर

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِثْلُ لَسَوَفَ أَخْرِجُهُ حَيًّا ۝

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۝

فَوَرَبِّكَ لَنَحْضُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينُ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝

لَنُؤْتِيَهُمْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ أَثْمًا لَشَدُّ عَلَى الرَّعْنِ يَئِيًّا ۝

لَنُكَلِّمُنَّ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أُولَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۝

وَأَن مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝

لَنَسُخِّرَ الَّذِينَ أَتَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا

1 अर्थात् नरक से जिस पर एक पुल बनाया जायेगा। उस पर से सभी ईमान वालों और काफिरों को अवश्य गुजरना होगा। यह और बात है कि ईमान वालों को इस से कोई हानि न पहुँचे। इस की व्याख्या सहीह हदीसों में वर्णित है।

ईमान वालों से कहते हैं कि (बताओ) दोनों सम्प्रदायों में किस की दशा अच्छी है, और किस की मजलिस (सभा) अधिक भव्य है?

74. जब कि हम ध्वस्त कर चुके हैं इन से पहले बहुत सी जातियों को जो इन में उत्तम थीं संसाधन तथा मान सम्मान में।

75. (हे नबी!) आप कह दें कि जो कुपथ में ग्रस्त होता है, अत्यंत कृपाशील उसे अधिक अवसर देता है। यहाँ तक कि जब उसे देख लें जिस का वचन दिये जाते हैं, या तो यातना को अथवा प्रलय को, उस समय उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि किस की दशा बुरी और किस का जत्था अधिक निर्बल है।

76. और अल्लाह उन्हें जो सुपथ हों मार्गदर्शन में अधिक कर देता है। और शेष रह जाने वाले सदाचार ही उत्तम हैं आप के पालनहार के समीप कर्म-फल में, तथा उत्तम है परिणाम के फलस्वरूप।

77. (हे नबी!) क्या आप ने उसे देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा कहा: मैं अवश्य धन तथा संतान दिया जाऊँगा?

78. क्या वह अवगत हो गया है परोक्ष से अथवा उस ने अत्यंत दयाशील से कोई वचन ले रखा है?

لِّلَّذِينَ آمَنُوا أَتَى الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَبِيًّا ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاًا وَرِثِيًّا ۝

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدَدًا حَتَّىٰ إِذَا أَوَامِلُ يَوْمَئِذٍ تَتَقَبَضُونَ أَتَى الْعَذَابَ أُولَٰئِكَ السَّاعَةَ فَيَسْطَلِمُونَ مِنْ هَوْسِكُمْ كَانَ وَأُذْعَبَتْ جُنُودًا ۝

وَيَرْيِي اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَدَىٰ الْبَيْتَ وَالْبَيْتَ الصَّلَاحُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا أَوْ لَوْذَانًا

أَقَلَّعَ الْغَيْبَ أَمْ أَخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۝

79. कदापि नहीं, हम लिख लेंगे जो वह कहता है, और हम अधिक करते जायेंगे उस की यातना को अत्यधिक।

كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَعَذِّبُهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَذًّا ۝

80. और हम ले लेंगे जिस की वह बात कर रहा है, और वह हमारे पास अकेला⁽¹⁾ आयेगा।

وَنَرْوِيهِ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝

81. तथा उन्होंने ने बना लिये हैं अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, ताकि वह उन के सहायक हों।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝

82. ऐसा कदापि नहीं होगा, वे सब इन की पूजा (उपासना) का अस्वीकार कर⁽²⁾ देंगे और उन के विरोधी हो जायेंगे।

كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِبِرَّاتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ۝

83. क्या आप ने नहीं देखा कि हम ने भेज दिया है शैतानों को काफिरों पर जो उन्हें बराबर उकसाते रहते हैं?

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤْوُهُمْ إِلَى
الْأُفْئَادِ ۝

84. अतः शीघ्रता न करें उन पर⁽³⁾, हम तो केवल उन के दिन गिन रहे हैं।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعِدُكَ عَذَابًا ۝

85. जिस दिन हम एकत्रित कर देंगे आज्ञाकारियों को अत्यंत कृपाशील

يَوْمَ نَحْضُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۝

1 इन आयतों के अवतरित होने का कारण यह बताया गया है कि खब्बाब बिन अरत्त का आस बिन बायल (काफिर) पर कुछ श्रृण धा। जिसे माँगने के लिये गये तो उस ने कहा: मैं तुझे उस समय तक नहीं दूँगा जब तक मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कुफ्र नहीं करेगा। उन्होंने ने कहा कि यह काम तो तू मर कर पुनः जीवित हो जाये, तब भी नहीं करूँगा। उस ने कहा: क्या मैं मरने के पश्चात् पुनः जीवित कर दिया जाऊँगा? खब्बाब ने कहा: हाँ। आस ने कहा: वहाँ मुझे धन और संतान मिलेगी तो तुम्हारा श्रृण चुका दूँगा। (सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 4732)

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 अर्थात् यातना के आने का। और इस के लिये केवल उन की आयु पूरी होने की देर है।

की ओर अतिथि बना कर।

86. तथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

87. वह (काफिर) अभिस्तावना का अधिकार नहीं रखेंगे, परन्तु जिस ने बना लिया हो अत्यंत कृपाशील के पास कोई वचन।^[1]

88. तथा उन्होंने ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने अपने लिये एक पुत्र।^[2]

89. वास्तव में तुम एक भारी बात घड़ लाये हो।

90. समीप है कि इस कथन के कारण आकाश फट पड़ें तथा धरती चिर जाये, और गिर जायें पर्वत कण-कण हो कर।

91. कि वह सिद्ध करने लगे अत्यंत कृपाशील के लिये संतान।

92. तथा नहीं योग्य है अत्यंत कृपाशील के लिये कि वह कोई संतान बनाये।

93. प्रत्येक जो आकाशों तथा धरती में है आने वाले है अत्यंत कृपाशील की सेवा में दास बन कर।

وَنَسُوقُ الْمَجْرُمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وُجُوهًا ۖ

لَا يَسْأَلُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۖ

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۚ

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۚ

كَذَٰلِكَ السَّمَوَاتُ يَتَّقَنَّ مِنْهُ وَتُنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَٰبًا ۚ

أَن دَعَا الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۚ

وَالْيَتَّبِعِ الْمُؤْمِنِينَ لَن نَّجِدَ وَلَدًا ۚ

إِن كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا إِلَىٰ الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۚ

1 अर्थात् अल्लाह की अनुमति से वही सिफारिश करेगा जो ईमान लाया है।

2 अर्थात् ईसाइयों ने -जैसा कि इस सूरह के आरंभ में आया है- ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का पुत्र बना लिया। और इस भ्रम में पड़ गये कि उन्होंने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित्त चुका दिया। इस आयत में इसी कुपथ का खण्डन किया जा रहा है।

94. उस ने उन को नियंत्रण में ले रखा है, तथा उन को पूर्णतः गिन रखा है।
95. और प्रत्येक उस के समक्ष आने वाला है प्रलय के दिन अकेला।^[1]
96. निश्चय जो ईमान लाये हैं तथा सदाचार किये हैं, शीघ्र बना देगा उन के लिये अत्यंत कृपाशील (दिलों में)^[2] प्रेम।
97. अतः (हे नबी!) हम ने सरल बना दिया है, इस (क़ुर्आन) को आप की भाषा में ताकि आप इस के द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को।
98. तथा हम ने ध्वस्त कर दिया है, इन से पहले बहुत सी जातियों को, तो क्या आप देखते हैं, उन में से किसी को? अथवा सुनते हैं, उन की कोई ध्वनि?

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝

وَكُلُّهُمْ آتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۝

فَإِنَّمَا يَتَرَدَّدُ بِلسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لَّدُنَّا ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هَلْ يُخَشِ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

1 अर्थात् उस दिन कोई किसी का सहायक न होगा। और न ही किसी को उस का धन-संतान लाभ देगा।

2 अर्थात् उन के ईमान और सदाचार के कारण, लोग उस से प्रेम करने लगेंगे।

सूरह ता-हा - 20



सूरह ता-हा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 135 आयतें हैं

- इस सूरह के आरंभ में यह दोनों अक्षर आये हैं इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में बह्नी और रिसालत का उद्देश्य बताया गया है। और जो नहीं मानते उन्हें चेतावनी दी गई है, और मूसा (अलैहिस्सलाम) को रिसालत देने और उन के विरोधियों का दुष्परिणाम बताया गया है। साथ ही प्रलय की दशा का भी वर्णन किया गया है ताकि नबूवत के विरोधी सावधान हों।
- इस में आदम (अलैहिस्सलाम) की कथा का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि जब मनुष्य इस धरती पर आया तभी यह बात उजागर कर दी गई थी कि मनुष्य को सीधी राह दिखाने के लिये बह्नी तथा रिसालत का क्रम भी जारी किया जायेगा फिर जो सीधी राह अपनायेगा वही शैतान के कुपथ से सुरक्षित रहेगा।
- इस में अल्लाह की आयतों से विमुख होने का बुरा अन्त बताया गया है। तथा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से ईमान वालों को सहन और दृढ़ रहने के निर्देश दिये गये हैं। और दिलासा दी गई है कि अन्तिम तथा अच्छा परिणाम उन्हीं के लिये है।
- और अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, हा।
2. हम ने नहीं अवतरित किया है आप पर कुर्आन इस लिये कि आप दुखी हों।^[1]

طه

مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ

1 अर्थात् विरोधियों के ईमान न लाने पर।

3. परन्तु यह उस की शिक्षा के लिये है जो डरता^[1] हो।

4. उतारा जाना उस की ओर से है, जिस ने उत्पत्ति की है धरती तथा उच्च आकाशों की।

5. जो अत्यंत कृपाशील अर्श पर स्थिर है।

6. उसी का^[2] है, जो आकाशों तथा जो धरती में और जो दोनों के बीच तथा जो भूमि के नीचे है।

7. यदि तुम उच्च स्वर में बात करो, तो वास्तव में वह जानता है भेद को तथा अत्यधिक छुपे भेद को।

8. वही अल्लाह है, नहीं है कोई बंदनीय (पूज्य) परन्तु वही। उसी के उत्तम नाम हैं।

9. और (हे नबी!) क्या आप को मूसा की बात पहुँची?

10. जब उस ने देखी एक अग्नि, फिर कहा: अपने परिवार से रुको, मैं ने एक अग्नि देखी है, सम्भव है कि मैं तुम्हारे पास उस का कोई अंगार लाऊँ, अथवा पा जाऊँ आग पर मार्ग की कोई सूचना।^[3]

11. फिर जब वहाँ पहुँचा, तो पुकारा गया: हे मूसा!

إِلَّا أَنْذَرْتَهُ لِمَنْ يَخْشَى ۝

تَنْزِيلًا مِّنْ خَلْقِ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ۝

الَّتِي رُحِنُ عَلَى الْعَرْشِ السُّوَّى ۝

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۝

وَأَنْ تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۝

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

إِذْ رَأَاهُ فَتَنَالَهُ لَهْلَهً ۖ وَاتَّقَى ۖ إِتَىٰ فَاسْتَغَىٰ ۖ وَرَأَىٰ يَخْفَىٰ ۖ وَاتَّقَىٰ ۖ إِنَّكَ كَمِنَ النَّارِ ۖ هُدًى ۝

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَوْمَئِذٍ ۖ

1 अर्थात् ईमान न लाने तथा कुकर्मों के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् उसी के स्वामित्व में तथा उस के आधीन है।

3 यह उस समय की बात है, जब मूसा अपने परिवार के साथ मद्यन नगर से मिस्र आ रहे थे और मार्ग भूल गये थे।

12. वास्तव में मैं ही तेरा पालनहार हूँ, तू उतार दे अपने दोनों जूते, क्योंकि तू पवित्रवादी (उपत्यका) "तुवा" में है।
13. और मैं ने तुझ को चुन^[1] लिया है। अतः ध्यान से सुन, जो वही की जा रही है।
14. निःसन्देह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही इबादत (बंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिये नमाज़ की स्थापना^[2] कर।
15. निश्चय प्रलय आने वाली है, मैं उसे गुप्त रखना चाहता हूँ, ताकि प्रतिकार (बदला) दिया जाये, प्रत्येक प्राणी को उस के प्रयास के अनुसार।
16. अतः तुम को न रोक दे, उस (के विश्वास) से, जो उस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता, और जिस ने अनुसरण किया हो अपनी इच्छा का। अन्यथा तेरा नाश हो जायेगा।
17. और हे मूसा! यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?
18. उत्तर दिया: यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लेता हूँ तथा इस से अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ तथा मेरी इस में दूसरी आवश्यकतायें (भी) हैं।
19. कहा: उसे फेंकिये, हे मूसा!

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاحْكُم بَيْنَكَ بَأْسَ الْوَالِدِ
الْمُفْعَسِ طُوًى ۝

وَأَنَّا اخْتَرْنَاكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ۝

إِنَّمَا أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ
الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِيُجْزَىٰ كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۝

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ
فَتَوَدَّىٰ ۝

وَأَمَّا لَكَ بِجَيْبِكَ يَهُودَىٰ ۝

قَالَ هِيَ عَصَايَ أَنُوكِّ وَأَعْلِيهَا هَشَشٌ بِلْعَالِ
غَيْمِي وَلِيَ فِيهَا مَآرِبُ أُخْرَىٰ ۝

قَالَ أَلْقِهَا يَهُودَىٰ ۝

1 अर्थात् नबी बना दिया।

2 इबादत में नमाज़ सम्मिलित है, फिर भी उस का महत्व दिखाने के लिये उस का विशेष आदेश दिया गया है।

20. तो उस ने उसे फेंक दिया, और सहसा वह एक सर्प थी, जो दौड़ रहा था।
21. कहा: पकड़ ले इस को, और डर नहीं, हम उसे फेर देंगे उस की प्रथम स्थिति की ओर।
22. और अपना हाथ लगा दे अपनी कांख (बगल) की ओर, वह निकलेगा चमकता हुआ बिना किसी रोग के, यह दूसरा चमत्कार है।
23. ताकि हम तुझे दिखायें, अपनी बड़ी निशानियाँ।
24. तुम फिरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है।
25. मूसा ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! खोल दे, मेरे लिये मेरा सीना।
26. तथा सरल कर दे, मेरे लिये मेरा काम।
27. और खोल दे, मेरी जुबान की गाँठ।
28. ताकि लोग मेरी बात समझें।
29. तथा बना दे, मेरा एक सहायक मेरे परिवार में से।
30. मेरे भाई हारून को।
31. उस के द्वारा दृढ़ कर दे मेरी शक्ति को।
32. और साझी बना दे, उसे मेरे काम में।
33. ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता का गान अधिक करें।

فَالْقَمَهِمَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَى ۝

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْزَنْ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَى ۝

وَأَنصُرْ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْوِبُ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ
سُوءِ آيَةٍ أُخْرَى ۝

لِنُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۝

إِذْ هَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۝

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۝

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ۝

يَقْتَضُوا أَقْوَابِي ۝

وَاجْعَلْ لِي وَدِيْعًا مِنْ أَهْلِي ۝

هَارُونَ أَخِي ۝

اشْدُدْ يَدِي إِلَى رِبِّي ۝

وَاشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۝

لِيُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ۝

34. तथा तुझे अधिक स्मरण (याद) करें।

وَذُنُّكَ كَظِيمٍ ۝

35. निःसन्देह तू हमें भली प्रकार देखने भालने वाला है।

إِنَّكَ كُنْتَ بَصِيرًا ۝

36. अल्लाह ने कहा: हे मूसा! तेरी सब माँग पूरी कर दी गयी।

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَا مُوسَى ۝

37. और हम उपकार कर चुके हैं तुम पर एक बार और^[1] (भी)।

وَلَعَدْنَاكَ عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۝

38. जब हम ने उतार दिया तेरी माँ के दिल में जिस की बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है।

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ۝

39. कि इसे रख दे ताबूत (सन्दूक) में, फिर उसे नदी में डाल दे, फिर नदी उसे किनारे लगा देगी, जिसे उठा लेगा मेरा शत्रु तथा उस का शत्रु^[2], और मैं ने डाल दिया तुझ पर अपनी ओर से विशेष^[3] प्रेम ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी रक्षा में हो।

أَنۢ أَقْدِرُ فِيهِ فِي الثَّابُوتِ ۖ أَقْدِرُ فِيهِ فِي الْيَمِّ ۖ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّي وَعَدُوٌّ لَّهُ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي ۝

40. जब चल रही थी तेरी बहन^[4], फिर कह रही थी: क्या मैं तुम्हें उसे बता दूँ, जो इस का लालन-पालन करे? फिर हम ने पुनः तुम्हें पहुँचा दिया तुम्हारी माँ के पास, ताकि उस की आँख ठण्डी हो, और उदासीन न हो। तथा हे मूसा! तू ने मार दिया एक व्यक्ति को, तो हम ने तुझे मुक्त कर

إِذْ تَمْشِي أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ ۖ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَكَتَلَتْ نَفْسًا أَفْجَعْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفُتِنَاكَ فُتُونًا ۚ فَلَمَّتْ سَيْنَانَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ يَا مُوسَىٰ ۝

1 यह उस समय की बात है जब मूसा का जन्म हुआ। उस समय फिरऔन का आदेश था कि बनी इस्राईल में जो भी शिशु जन्म ले, उसे बध कर दिया जाये।

2 इस से तात्पर्य मिस्र का राजा फिरऔन है।

3 अर्थात् तुम्हें सब का प्रिय अथवा फिरऔन का भी प्रिय बना दिया।

4 अर्थात् सन्दूक के पीछे नदी के किनारे।

दिया चिन्ता^[1] से। और हम ने तेरी भली-भाँति परीक्षा ली। फिर तू रह गया वर्षाँ मद्यन के लोगों में, फिर तू (मद्यन से) अपने निश्चित समय पर आ गया।

41. और मैं ने बना लिया है तुझे विशेष अपने लिये।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۖ

42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियाँ ले कर, और दोनों आलस्य न करना मेरे स्मरण (याद) में।

إِذْ هَبْ أَنْتَ وَأَخُوكَ بِالنِّفْيِ وَلَا تَبَيَّنَا فِي ذُرِّي ۖ

43. तुम दोनों फिरौन के पास जाओ, वास्तव में वह उल्लंघन कर गया है।

إِذْ هَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۖ

44. फिर उस से कोमल बोल बोलो, कदाचित वह शिक्षा ग्रहण करे अथवा डरे।

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لِّنَا لَعَنَهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَحْشَىٰ ۖ

45. दोनों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमें भय है कि वह हम पर अत्याचार अथवा अतिक्रमण कर दे।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يُفْرَطَ عَلَيْكَ أَوَّانٌ يُّطْغَىٰ ۖ

46. उस (अल्लाह) ने कहा: तुम भय न करो, मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुनता तथा देखता हूँ।

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۖ

47. तुम उस के पास जाओ, और कहो कि हम तेरे पालनहार के रसूल हैं। अतः हमारे साथ बनी इस्राईल को जाने दे, और उन्हें यातना न दे, हम तेरे पास तेरे पालनहार की निशानी लाये हैं, और शान्ति उस के लिये है,

فَأْتِيهِ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَا تَحْذِقْهُمْ مَّذْجُكَ بِآيَةِ مِنْ رَبِّكَ وَالتَّلَامُ عَلَىٰ مِنَ النَّبَةِ الْهَلْدَىٰ ۖ

1 अर्थात् एक फिरौनी को मारा और वह मर गया, तो तुम मद्यन चले गये, इस का वर्णन सूरह कसस में आयेगा।

जो मार्ग दर्शन का अनुसरण करे।

48. वास्तव में हमारी ओर बह्यी (प्रकाशना) की गई है कि यातना उसी के लिये है, जो झुठलाये और मुख फेरे।

49. उस ने कहा: हे मूसा! कौन है तुम दोनों का पालनहार?

50. मूसा ने कहा: हमारा पालनहार वह है जिस ने प्रत्येक वस्तु को उस का विशेष रूप प्रदान किया है, फिर मार्ग दर्शन⁽¹⁾ दिया।

51. उस ने कहा: फिर उन की दशा क्या होनी है जो पूर्व के लोग हैं?

52. मूसा ने कहा: उस का ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक लेख्य में सुरक्षित है, मेरा पालनहार न तो चूकता है और न⁽²⁾ भूलता है।

53. जिस ने तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर बनाया है और तुम्हारे चलने के लिये उस में मार्ग बनाये हैं, और तुम्हारे लिये आकाश से जल बरसाया, फिर उस के द्वारा विभिन्न प्रकार की उपज निकाली।

54. तुम स्वयं खाओ तथा अपने पशुओं को चराओ, वस्तुतः इस में बहुत सी निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُوسُفُ

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَىٰ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَىٰ

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَىٰ

قَالَ عَلِيمٌ عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَىٰ

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ نَبَاتٍ شَتَّىٰ

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَىٰ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने प्रत्येक जीव जन्तु के योग्य उस का रूप बनाया है। और उस के जीवन की आवश्यकता के अनुसार उसे खाने पीने तथा निवास की विधि समझा दी है।

2 अर्थात् उन्होंने ने जैसा किया होगा, उन के आगे उन का परिणाम आयेगा।

55. इसी (धरती) से हम ने तुम्हारी उत्पत्ति की है, और उसी में तुम्हें वापिस ले जायेंगे, और उसी से तुम सब को पुनः^[1] निकालेंगे।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ۝

56. और हम ने उसे दिखा दी अपनी सभी निशानियाँ, फिर भी उस ने झुठला दिया और नहीं माना।

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ الْآيَاتِ كُلَّهَا فَلْكَذَّبَ وَأَلَّى ۝

57. उस ने कहा: क्या तू हमारे पास इस लिये आया है कि हमें हमारी धरती (देश) से अपने जादू (के बल) से निकाल दे, हे मूसा?

قَالَ اجْعَلْنِي مِثْلَ الْخَرِجَاتِ أَمْ أَنْزِلْنِي بِعَمْرِكَ يُمُوسَى ۝

58. फिर तो हम तेरे पास अवश्य इसी के समान जादू लायेंगे, अतः हमारे और अपने बीच एक समय निर्धारित कर ले, जिस के विरुद्ध न हम करेंगे और न तुम, एक खुले मैदान में।

فَلَمَّا آتَيْتَكَ بِعَمْرِ مِثْلِهِ فَأَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝

59. मूसा ने कहा: तुम्हारा निर्धारित समय शौभा (उत्सव) का दिन^[2] है, तथा यह कि लोग दिन चढ़े एकत्रित हो जायें।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُخَشِّرَ النَّاسُ ضِعْفِي ۝

60. फिर फिरऔन लोट गया^[3], और अपने हथकण्डे एकत्र किये, और फिर आया।

فَمَوَّلَ فِرْعَوْنَ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ۝

61. मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा: तुम्हारा विनाश हो! अल्लाह पर मिथ्या आरोप न लगाओ कि वह तुम्हारा किसी यातना द्वारा सर्वनाश कर दे, और वह निष्फल ही रहा है जिस ने मिथ्यारोपण किया।

قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَنْفَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْجَنَكُمْ بَعْدَ آيٍ وَقَدْ خَابَ مَنْ افْتَرَى ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन पुनः जीवित निकालेंगे।

2 इस से अभिप्राय उन का कोई वार्षिक उत्सव (मेले) का दिन था।

3 मूसा के सत्य को न मान कर, मुकाबले की तैयारी में व्यस्त हो गया।

62. फिर^[1] उन के बीच विवाद हो गया, और वे चुपके-चुपके गुप्त मंत्रणा करने लगे।

فَنَادَوْا آمُرُكُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسْرِوا السُّجُوتِ ۝

63. कुछ ने कहा: यह दोनों वास्तव में जादूगर हैं, दोनों चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी धरती से अपने जादू द्वारा निकाल दें, और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें।

قَالُوا إِنَّ هَٰذَيْنِ سَٰحِرَانِ يُرِيدَانِ أَنْ يُخْرِجُوكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذَبَّابَطْرَيْتُكُمْ أَمْثِلَ ۝

64. अतः अपने सब उपाय एकत्र कर लो, फिर एक पंक्ति में हो कर आ जाओ, और आज वही सफल हो गया जो ऊपर रहा।

فَاجْمِعُوا كُفْرَكُمْ أَشْوَاعًا وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَ ۝

65. उन्होंने ने कहा: हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंके?

قَالُوا لِمُوسَىٰ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْقَلَبٌ ۚ وَآمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنِ الْمُنْقَلَبِ ۝

66. मूसा ने कहा: बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उन की रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उन के जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।

قَالَ بَلْ أَتَاكُمْ أَفَادِ اجِبَالِهِمْ وَعَصِيدُهُمْ يُخِيلُ إِلَيْهِمْ يَخِرُّونَ مِنْ حُجْرِهِمْ أَنَّهُمْ تُكْسَفُ ۝

67. इस से मूसा अपने मन में डर गया।^[2]

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ۝

68. हम ने कहा: मत डर, तू ही ऊपर रहेगा।

فَلَمَّا رَٰعَفَتْ إِذْكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ۝

69. और फेंक दे जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जायेगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बना कर लाये हैं। तथा जादूगर सफल नहीं होता जहाँ से आये।

وَأَلْقَىٰ مَا فِي يَمِينِهِ تَلَفَتْ حَٰصِرُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدًا سَٰعِرًا وَلَا يَفْلَحُ الْكَافِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۝

1 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात सुन कर उन में मतभेद हो गया। कुछ ने कहा कि यह नबी की बात लग रही है। और कुछ ने कहा कि यह जादूगर है।

2 मूसा अलैहिस्सलाम को यह भय हुआ कि लोग जादूगरों के धोखे में न आ जायें।

70. अन्ततः जादूगर सज्दे में गिर गये,
उन्होंने ने कहा कि हम ईमान लाये
हारून तथा मूसा के पालनहार पर।

فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ
وَمُوسَى ۝

71. फिरऔन बोला: क्या तुम ने उस का
विश्वास कर लिया इस से पूर्व कि मैं
तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा
बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू
सिखाया है। तो मैं अवश्य कटवा दूँगा
तुम्हारे हाथों तथा पावों को विपरीत
दिशा¹ से, और तुम्हें सूली दे दूँगा
खजूर के तनों पर, तथा तुम्हें अवश्य
ज्ञान हो जायेगा कि हम में से किस की
यातना अधिक कड़ी तथा स्थायी है।

قَالَ امْنُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَيْدٌ
الَّذِي عَلَّمَ السَّحَرَةَ فَلَا تَقْطَعْنَ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ
مِنْ خَلْفٍ وَلَا وَصَلْكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ
وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ۝

72. उन्होंने ने कहा: हम तुझे कभी उन
खुली निशानियों (तर्कों) पर प्रधानता
नहीं देंगे जो हमारे पास आ गयी है,
और न उस (अल्लाह) पर जिस ने हमें
पैदा किया है, तू जो करना चाहे कर
ले, तू बस इसी संसारिक जीवन में
आदेश दे सकता है।

قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ
وَالَّذِي قَطَرْنَا فَافْضُ مَا أَنْتَ قَائِمٌ إِنَّنَا
نَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

73. हम तो अपने पालनहार पर ईमान
लाये हैं, ताकि वह क्षमा कर दे
हमारे लिये हमारे पापों को तथा जिस
जादू पर तू ने हमें बाध्य किया, और
अल्लाह सर्वोत्तम तथा अनन्त² है।

إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا وَمَا لَنَا مِنْكَ
عَلَيْهِ مِنَ الشَّعْرِ وَاللَّهُ خَبِيرٌ وَابْقَى ۝

74. वास्तव में जो जायेगा अपने
पालनहार के पास पापी बन कर तो
उसी के लिये नरक है, जिस में न

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ
لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝

1 अर्थात् दाहिना हाथ और बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ और दाहिना पैर।

2 और तेरा राज्य तथा जीवन तो साम्यिक है।

वह मरेगा और न जीवित रहेगा।^[1]

75. तथा जो उस के पास ईमान ले कर आयेगा, तो उन्हीं के लिये उच्च श्रेणियाँ होंगी।

76. स्थायी स्वर्ग जिन में नहरें बहती होंगी, जिस में सदावासी होंगे, और यही उस का प्रतिफल है जो पवित्र हो गया।

77. और हम ने मूसा की ओर बह्ती की, कि रातों-रात चल पड़ मेरे भक्तों को ले कर, और उन के लिये सागर में सूखा मार्ग बना ले^[2], तुझे पा लिये जाने का कोई भय नहीं होगा और न डरेगा।

78. फिर उन का पीछा किया फिरऔन ने अपनी सेना के साथ, तो उन पर सागर छा गया जैसा कुछ छा गया।

79. और कुपथ कर दिया फिरऔन ने अपनी जाति को और सुपथ नहीं दिखाया।

80. हे इस्राईल के पुत्रो! हम ने तुम्हें मुक्त कर दिया तुम्हारे शत्रु से, और बचन दिया तुम्हें तूर पर्वत से दाहिनी^[3] ओर का, तथा तुम पर उतारा "मन्न" तथा "सल्वा"^[4]

81. खाओ उन स्वच्छ चीजों में से जो

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ

جَنَّاتٌ عَدْنٍ يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْيَمِينَ فَاصْرُبْ لَهُم مَّيْمَنًا فِی الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَحْضُكَ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَتَحْمُودُ ۖ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَاءٌ غَاشِيَهُمْ

وَأَصْلَ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَآ هَدَىٰ

يَنفَىٰ إِسْرَآءِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكَ مِنْ عَدُوِّكَ وَوَعَدْنَاكَ حَآئِبَ الْوُجُوهِ ۖ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَىٰ

كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ

1 अर्थात् उसे जीवन का कोई सुख नहीं मिलेगा।

2 इस का सविस्तार वर्णन सूरह शुअरा-26 में आ रहा है।

3 अर्थात् तुम पर तौरात उतारने के लिये।

4 मन्न तथा सल्वा के भाष्य के लिये देखिये: बकरा, आयत: 57।

जीविका हम ने तुम्हें दी है, तथा
उल्लंघन न करो उस में, अन्यथा
उतर जायेगा तुम पर मेरा प्रकोप।
तथा जिस पर उतर जायेगा मेरा
प्रकोप, तो निःसंदेह वह गिर गया।

82. और मैं निश्चय बड़ा क्षमाशील हूँ
उस के लिये जिस ने क्षमा याचना
की, तथा ईमान लाया और सदाचार
किया फिर सुपथ पर रहा।

83. और हे मूसा! क्या चीज तुम्हें ले आई
अपनी जाति से पहले?^[1]

84. उस ने कहा: वे मेरे पीछे आ ही रहे
हैं, और मैं तेरी सेवा में शीघ्र आ
गया, हे मेरे पालनहार! ताकि तू
प्रसन्न हो जाये।

85. अब्राह ने कहा: हम ने परीक्षा में
डाल दिया तेरी जाति को तेरे (आने
के) पश्चात्, और कुपथ कर दिया है
उन को सामरी^[2] ने।

86. तो मूसा वापिस आया अपनी जाति
की ओर अति क्रुद्ध-शोकातुर हो कर।
उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो!
क्या तुम्हें वचन नहीं दिया था तुम्हारे
पालनहार ने एक अच्छा वचन?^[3] तो
क्या तुम्हें बहुत दिन लग^[4] गये?

فَجَعَلْنَا عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ وَمَنْ يَّخْلُلْ عَلَيْهِ
غَضَبِيْ فَقَدْ هَوَىٰ ۝

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝

وَمَا آَعَجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوسَىٰ ۝

قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِيْ وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ
رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝

قَالَ فَإِنَّكَ قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ أَجْدِكَ
وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝

فَرَجَعْنَا مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ يَقَوْمِ اذْكُرُوا مِيثَاقَكُمْ وَوَعْدَ احْسَاءَ أَفْطَانِ
عَلَيْكُمْ الْعَهْدُ أَمَّا زِدْنَاهُمْ أَنْ يَجْعَلَ عَلَيْكُمْ
غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمُ مَّوْعِدِي ۝

1 अर्थात् तुम पर्वत की दाहिनी ओर अपनी जाति से पहले क्यों आ गये और उन्हें पीछे क्यों छोड़ दिया?

2 सामरी बनी इस्राईल के एक व्यक्ति का नाम है।

3 अर्थात् धर्म-पुस्तक तौरात देने का वचन।

4 अर्थात् वचन की अवधि दीर्घ प्रतीत होने लगी।

अथवा तुम ने चाहा कि उतर जाये तुम पर कोई प्रकोप तुम्हारे पालनहार की ओर से? अतः तुम ने मेरे वचन^[1] को भंग कर दिया।

87. उन्होंने ने उत्तर दिया कि हम ने नहीं भंग किया है तेरा वचन अपनी इच्छा से, परन्तु हम पर लाद दिया गया था जाति^[2] के आभूषणों का बोझ, तो हम ने उसे फेंक^[3] दिया, और ऐसे ही फेंक^[4] दिया सामरी ने।

88. फिर वह^[5] निकाल लाया उन के लिये एक बछड़े की मूर्ति जिस की गाय जैसी ध्वनि (आवाज़) थी, तो सब ने कहा: यह है तुम्हारा पूज्य तथा मूसा का पूज्य, (परन्तु) मूसा इसे भूल गया है।

89. तो क्या वे नहीं देखते कि वह न उन की किसी बात का उत्तर देता है, और न अधिकार रखता है उन के लिये किसी हानि का न किसी लाभ का?^[6]

90. और कह दिया था हारून ने इस से पहले ही कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारी परीक्षा की गई है

قَالُوا مَا آخِضْتَنَا مَوْيِدًا بِمَلِكِنَا وَلَكِنَّا حُمِلْنَا أَوْثَارًا
مِّن رِّبَاةِ الْقَوْمِ فَقَدْ فَتَنَاهَا فَكَذَّبِكَ الْعَقَى
السَّامِرِيُّ ۝

فَأَخْرَجَ لَهُمْ جَحَلًا جَسَدًا آلِهَةً خُورُوا فَقَالُوا هَذَا
إِلَهُهُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ فَتَنِي ۝

أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُرْجَعُونَ قَوْلًا وَلَا يَمْلِكُونَ
لَهُمْ صَرْفٌ وَلَا نَفْعٌ ۝

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلِ يَوْمِ الْبَاقِ مَتَكُمْ
يَوْمَ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۝

1 अर्थात् मेरे वापिस आने तक, अल्लाह की इबादत पर स्थिर रहने की जो प्रतिज्ञा की थी।

2 जाति से अभिप्रेत फिरऔन की जाति है, जिन के आभूषण उन्होंने ने उधार ले रखे थे।

3 अर्थात् अपने पास रखना नहीं चाहा, और एक अग्नि कुण्ड में फेंक दिया।

4 अर्थात् जो कुछ उस के पास था।

5 अर्थात् सामरी ने आभूषणों को पिघला कर बछड़ा बना लिया।

6 फिर वह पूज्य कैसे हो सकता है?

इस के द्वारा, और वास्तव में तुम्हारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है। अतः मेरा अनुसरण करो तथा मेरे आदेश का पालन करो।

91. उन्होंने ने कहा: हम सब उसी के पुजारी रहेंगे जब तक (तूर से) हमारे पास मूसा वापिस न आ जाये।

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْكَ مَعْكِفِينَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَى ۝

92. मूसा ने कहा: हे हारून! किस बात ने तुझे रोक दिया जब तू ने उन्हें देखा कि कुपथ हो गये?

قَالَ يَهُرُونَ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۝

93. कि मेरा अनुसरण न करो? क्या तू ने अवैज्ञा कर दी मेरे आदेश की?

أَلَا تَتَّبِعُنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي ۝

94. उस ने कहा: मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। वास्तव में मुझे भय हुआ कि आप कहेंगे कि तू ने विभेद उत्पन्न कर दिया बनी इस्राईल में, और^[1] प्रतीक्षा नहीं की मेरी बात (आदेश) की।

قَالَ يَسْمُؤَ مَرَلَا أَحَدٌ بِإِحْشَائِي وَلَا بِرَأْسِي إِلَيَّ خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝

95. (मूसा ने) पूछा: तेरा समाचार क्या है, हे सामरी?

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مِصْرِي ۝

96. उस ने कहा: मैं ने वह चीज देखी जिसे उन्होंने ने नहीं देखा, तो मैं ने ले ली एक मुट्ठी रसूल के पदचिन्ह से, फिर उसे फेंक दिया, और इसी प्रकार सुझा दिया मुझे^[2] मेरे मन ने।

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۝

1 (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 142)

2 अधिकांश भाष्यकारों ने रसूल से आभिप्राय जिब्रील (फरिश्ता) लिया है। और अर्थ यह है कि सामरी ने यह बात बनाई कि जब उस ने फिरऔन और उस की सेना के डूबने के समय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को घोड़े पर सवार वहाँ देखा तो उन के घोड़े के पदचिन्ह की मिट्टी रख ली। और जब सोने का बछड़ा

97. मूसा ने कहा: जा तेरे लिये जीवन में यह होना है कि तू कहता रहे: मुझे स्पर्श न करना।^[1] तथा तेरे लिये एक और^[2] वचन है जिस के विरुद्ध कदापि न होगा, और अपने पूज्य को देख जिस का पुजारी बना रहा, हम अवश्य उसे जला देंगे, फिर उसे उड़ा देंगे नदी में चूर-चूर कर के।

98. निःसंदेह तुम सभी का पूज्य बस अल्लाह है, कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा। वह समोये हुये है प्रत्येक वस्तु को (अपने) ज्ञान में।

99. इसी प्रकार (हे नबी!) हम आप के समक्ष विगत समाचारों में से कुछ का वर्णन कर रहे हैं, और हम ने आप को प्रदान कर दी है अपने पास से एक शिक्षा (कुरआन)।

100. जो उस से मुँह फेरेगा तो वह निश्चय प्रलय के दिन लादे हुये होगा भारी^[3] बोझ।

101. वे सदा रहने वाले होंगे उस में, और प्रलय के दिन उन के लिये बुरा बोझ होगा।

قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا مِسَاسَ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُ وَانْظُرْ إِلَى إِلَهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْبِفَنَّهُ فِي الْيَوْمِ نَسْفًا ۝

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلُّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۝

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ۝

خَالِدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ۝

बना कर उस धूल को उस पर फेंक दिया तो उस के प्रभाव से उस में से एक प्रकार की आवाज़ निकलने लगी जो उन के कुपथ होने का कारण बनी।

1 अर्थात् मेरे समीप न आना और न मुझे छूना, मैं अछूत हूँ।

2 अर्थात् परलोक की यातना का।

3 अर्थात् पापों का बोझ।

102. जिस दिन फूंक दिया जायेगा सूर^[1]
(नरसिंघा) में, और हम एकत्र कर
देंगे पापियों को उस दिन इस दशा
में कि उन की आँखें (भय से) नीली
होंगी।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ
رُؤُوفًا ۝

103. वे आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि
तुम (संसार में) बस दस दिन रहे हो।

يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا عَشْرٌ ۝

104. हम भली-भाँति जानते हैं, जो कुछ
वह कहेंगे, जिस समय कहेगा उन
में से सब से चतुर कि तुम केवल
एक ही दिन रहे^[2] हो।

عَنْ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً
إِنْ لَيْسَ إِلَّا يَوْمًا ۝

105. वे आप से प्रश्न कर रहे हैं पर्वतों
के संबन्ध में? आप कह दें कि उड़ा
देगा उन्हें मेरा पालनहार चूर-चूर
कर के।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝

106. फिर धरती को छोड़ देगा सम्तल
मैदान बना कर।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝

107. तुम नहीं देखोगे उस में कोई
टेढ़ापन और न नीच-ऊँच।

لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝

108. उस दिन लोग पीछे चलेंगे पुकारने
वाले के, कोई उस से कतरायेगा
नहीं, और धीमी हो जायेंगी आवाजें
अत्यंत कृपाशील के लिये, फिर तुम
नहीं सुनोगे कानाफूँसी की आवाज़
के सिवा।

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ
الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝

1 «सूर» का अर्थ नरसिंघा है, जिस में अल्लाह के आदेश से एक फरिश्ता इसाफील अलैहिस्सलाम फूकेगा, और प्रलय आ जायेगी। (मुस्नद अहमद: 2191)
और पुनः फूकेगा तो सब जीवित हो कर हथ के मैदान में आ जायेंगे।

2 अर्थात् उन्हें संसारिक जीवन क्षण दो क्षण प्रतीत होगा।

109. उस दिन लाभ नहीं देगी सिफारिश परन्तु जिसे आज्ञा दे अत्यंत कृपाशील, और प्रसन्न हो उस के⁽¹⁾ लिये बात करने से।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَفِئَ لَهُ قَوْلُهُ ۝

110. वह जानता है जो कुछ उन के आगे तथा पीछे है, और वे उस का पूरा ज्ञान नहीं रखते।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۝

111. तथा सभी के सिर झुक जायेंगे जीवित नित्य स्थायी (अल्लाह) के लिये। और निश्चय वह निष्फल हो गया जिस ने अत्याचार लाद⁽²⁾ लिया।

وَصَبَّتِ السَّجُودَ لِلَّهِ الْغَافِقِينَ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝

112. तथा जो सदाचार करेगा और वह ईमान वाला भी हो, तो वह नहीं डरेगा अत्याचार से न अधिकार हनन से।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝

113. और इसी प्रकार हम ने इस अर्बी कूर्आन को अवतरित किया है तथा विभिन्न प्रकार से वर्णन कर दिया है उस में चेतावनी का, ताकि लोग आज्ञाकारी हो जायें अथवा वह उन के लिये उत्पन्न कर दे एक शिक्षा।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝

114. अतः उच्च है अल्लाह वास्तविक स्वामी। और (हे नबी!) आप शीघ्रता⁽³⁾ न करें कूर्आन के साथ इस से पूर्व कि पूरी कर दी

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝

1 अर्थात् जिस के लिये सिफारिश कर रहा है।

2 संसार में किसी पर अत्याचार, तथा अल्लाह के साथ शिर्क किया हो।

3 जब जिब्रील अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वही (प्रकाशना) लाते, तो आप इस भय से कि कुछ भूल न जाये, उन के साथ साथ ही पढ़ने लगते। अल्लाह ने आप को ऐसा करने से रोक दिया। इस का वर्णन सूरह कियामा, आयत: 75 में आ रहा है।

जाये आप की ओर इस की वही
(प्रकाशना)। तथा प्रार्थना करें कि
हे मेरे पालनहार! मुझे अधिक ज्ञान
प्रदान कर।

115. और हम ने आदेश दिया आदम को
इस से पहले, तो वह भूल गया,
और हम ने नहीं पाया उस में कोई
दृढ़ संकल्प।^[1]

116. तथा जब हम ने कहा फ़रिश्तों से
कि सज्दा करो आदम को, तो सब
ने सज्दा किया इब्लीस के सिवा,
उस ने इन्कार कर दिया।

117. तब हम ने कहा: हे आदम! वास्तव
में यह शत्रु है तेरा तथा तेरी पत्नी
का, तो ऐसा न हो कि तुम दोनों
को निकलवा दे स्वर्ग से और तू
आपदा में पड़ जाये।

118. यहाँ तुझे यह सुविधा है कि न भूखा
रहता है और न नग्न रहता है।

119. और न प्यासा होता है और न तुझे
धूप सताती है।

120. तो फुसलाया उसे शैतान ने, कहा:
हे आदम! क्या मैं तुझे न बताऊँ
शाश्वत जीवन का वृक्ष तथा ऐसा
राज्य जो पतनशील न हो?

121. तो दोनों ने उस (वृक्ष) से खा लिया,
फिर उन के गुप्तांग उन दोनों के
लिये खुल गये। और दोनों चिपकाने

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِن قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ
لَهُ عَزْمًا ۝

وَلَقَدْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا
إِلَّا إِبْلِيسَ ۝

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجُكَمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَىٰ ۝

إِنَّ لَكَ الْأَنْحُورَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۝

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۝

فَوَسَّوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا آدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ
عَلَىٰ شَجَرَةٍ الْخَالِدِ وَمَلَكَ لَا يُبْلَىٰ ۝

فَاكَلَا مِنْهَا فَبَدَّتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا
يَخُصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن دَرَقِ الْجَنَّةِ وَعَصَىٰ آدَمُ

1 अर्थात् वह भूल से शैतान की बात में आ गया, उस ने जानबूझ कर हमारे
आदेश का उल्लंघन नहीं किया।

رَبِّهِ تَعَالَى

लगे अपने ऊपर स्वर्ग के पत्ते।
और आदम अबज्ञा कर गया अपने
पालनहार की और कुपथ हो गया।

122. फिर उस (अब्लाह) ने उसे चुन
लिया और उसे क्षमा कर दिया और
सुपथ दिखा दिया।

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَاهُ

123. कहा: तुम दोनों (आदम तथा
शैतान) यहाँ से उतर जाओ, तुम
एक दूसरे के शत्रु हो। अब यदि आये
तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन
तो जो अनुपालन करेगा मेरे
मार्गदर्शन का, वह कुपथ नहीं होगा
और न दुर्भाग्य ग्रस्त होगा।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
فَأَمَّا يَا آدَمُ اقْنِطْ مِنْ هَٰذِهِ فَتَمَسَّهَا فَتَكُنَ مِنَ
الضَّالِّينَ

124. तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण
से, तो उसी का संसारिक जीवन
संकीर्ण (तंग)¹ होगा, तथा हम
उसे उठावेंगे प्रलय के दिन अन्धा
कर के।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَى

125. वह कहेगा: मेरे पालनहार! मुझे
अन्धा क्यों उठाया, मैं तो (संसार
में) आँखों वाला था?

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا

126. अब्लाह कहेगा: इसी प्रकार तेरे पास
हमारी आयतें आयीं तो तू ने उन्हें
भुला दिया। अतः इसी प्रकार आज तू
भुला दिया जायेगा।

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ
نُنْسِي

127. तथा इसी प्रकार हम बदला देते हैं
उसे जो सीमा का उल्लंघन करे,
और ईमान न लाये अपने पालनहार

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَوْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِ رَبِّهِ
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشدُّ وَأَبْغَى

1 अर्थात् वह संसार में धनी हो तब भी उसे संतोष नहीं होगा। और सदा चिन्तित और व्याकुल रहेगा।

की आयतों पर। और निश्चय
आखिरत की यातना अति कड़ी तथा
अधिक स्थायी है।

128. तो क्या उन्हें मार्ग दर्शन नहीं
दिया इस बात ने कि हम ने ध्वस्त
कर दिया इन से पहले बहुत सी
जातियों को, जो चल फिर-रही थीं
अपनी बस्तियों में, निःसंदेह इस में
निशानियाँ हैं बुद्धिमानों के लिये।
129. और यदि एक बात पहले से निश्चित
न होती आप के पालनहार की ओर
से, तो यातना आ चुकी होती, और
एक निर्धारित समय न होता।^[1]
130. अतः आप सहन करें उन की बातों
को तथा अपने पालनहार की
पवित्रता का वर्णन उस की प्रशंसा
के साथ करते रहें सूर्योदय से पहले^[2]
तथा सूर्यास्त से^[3] पहले, तथा रात्रि
के क्षणों^[4] में और दिन के किनारों^[5]
में, ताकि आप प्रसन्न हो जायें।
131. और कदापि न देखिये आप उस
आनन्द की ओर जो हम ने उन^[6] में
से विभिन्न प्रकार के लोगों को दे रखा

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَفَلَكُنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ
يَسْتَوُونَ فِي مَسْكِهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَى

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزِمَامِ الْجَنَّةِ
مُنْهَى

فَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ
الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ
وَاطَّرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَى

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَى مَا مَتَّعْتُمُوهُ أَزْوَاجًا
مِّنْكُمْ وَهَرَّةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْثِهِمْ قَبِيلٌ

1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह का यह निर्णय है कि वह किसी जाति का उस
के विरुद्ध तर्क तथा उस की निश्चित अवधि पूरी होने पर ही विनाश करता है,
यदि यह बात न होती तो इन मक्का के मिश्रणवादियों पर यातना आ चुकी होती।

2 अर्थात् फज्र की नमाज़ में।

3 अर्थात् अस्त्र की नमाज़ में।

4 अर्थात् इशा की नमाज़ में।

5 अर्थात् जुहर तथा मग़िब की नमाज़ में।

6 अर्थात् मिश्रणवादियों में से।

है, वह संसारिक जीवन की शोभा है, ताकि हम उन की परीक्षा लें, और आप के पालनहार का प्रदान^[1] ही उत्तम तथा अति स्थायी है।

132. और आप अपने परिवार को नमाज़ का आदेश दें, और स्वयं भी उस पर स्थित रहें, हम आप से कोई जीविका नहीं मांगते, हम ही आप को जीविका प्रदान करते हैं। और अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिये है।

133. तथा उन्होंने कहा: क्यों वह हमारे पास कोई निशानी अपने पालनहार की ओर से नहीं लाता? क्या उन के पास उस का प्रत्यक्ष प्रमाण (कुर्आन) नहीं आ गया जिस में अगली पुस्तकों की (शिक्षायें) हैं?

134. और यदि हम ध्वस्त कर देते उन्हें किसी यातना से इस से^[2] पहले, तो वे अवश्य कहते कि हे हमारे पालनहार! तू ने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुपालन करते इस से पहले कि हम अपमानित और हीन होते।

135. आप कह दें कि प्रत्येक, (परिणाम की) प्रतीक्षा में है। अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन सीधी राह वाले है, और किस ने सीधी राह पाई है।

وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا،
لَا تَسْأَلْكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَنَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ أَوْ لَمْ يَأْتِهِمْ
بَيِّنَةٌ نَافِي الصُّغُفِ الْأُولَى ۝

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِنْ قَبْلِهِ لَقَالُوا
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ
مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْذِلَ وَغَوَّيْ ۝

قُلْ كُلٌّ مُتَرَبِّعٌ فَتَرَبَّعُوا ۚ فَسَتَعْلَمُونَ
مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى ۝

1 अर्थात् परलोक का प्रतिफल।

2 अर्थात् नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन के आने से पहले।

सूरह अम्बिया - 21

سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ

सूरह अम्बिया के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 112 आयतें हैं।

इस सूरह में अनेक नबियों की चर्चा के कारण इस का नाम «अम्बिया» है।

- इस में बताया गया है कि सभी नबियों ने अपनी जातियों को बराबर यह शिक्षा दी कि उन्हें अल्लाह के लिये अपने कर्मों का उत्तर देना है फिर भी वह संभलने के बजाये विरोध ही करते रहे और अल्लाह की सहायता सदा नबियों के साथ रही।
- यह भी बताया गया है कि अल्लाह ने संसार को खेल के लिये नहीं बनाया है बल्कि सत्य और असत्य के बीच संघर्ष के लिये बनाया है।
- इस में तौहीद का वर्णन है जो सभी नबियों का संदेश था। और रिसालत से संबंधित संदेशों का जवाब किया गया है तथा रसूलों का उपहास करने वालों को चेतावनी दी गई है।
- नबियों की शिक्षाओं और उन पर अल्लाह के अनुग्रह और दया को दिखाया गया है।
- अन्त में विरोधियों को यातना की धमकी तथा ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है। और यह बताया गया है कि नबियों को भेजना संसार वासियों के लिये सर्वथा दया है, और उन का अपमान करना स्वयं अपने ही लिये हानिकारक है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गया है लोगों के हिसाब^[1] का समय, जब कि वे अचेतना में मुँह फेरे हुये हैं।

إِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ

1 अर्थात् प्रलय का समय, फिर भी लोग उस से अचेत माया मोह में लिप्त हैं।

2. नहीं आती उन के पास उन के पालनहार की ओर से कोई नई शिक्षा^[1], परन्तु उसे सुनते हैं और खेलते रह जाते हैं।

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُجَدِّدٍ إِلَّا صُغُرُوا
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿١٠﴾

3. निश्चेत हैं उन के दिल, और उन्होंने ने चुपके-चुपके आपस में बातें की जो अत्याचारी हो गये: यह (नबी) तो बस एक पुरुष है तुम्हारे समान, तो क्या तुम जादू के पास जाते हो जब कि तुम देखते हो?^[2]

لَا هِمَّةَ لِقَائِهِمْ وَأَمْتُوا وَالْحَقُّوَ الَّذِينَ ظَلَمُوا هَٰلَ
هَٰذَا الْأَمْرَ فَيَسْأَلُكُمْ أَفَاتُؤُونَ النَّحْرَ وَأَنْتُمْ
تُخَيَّرُونَ ﴿١١﴾

4. आप कह दें कि मेरा पालनहार जानता है प्रत्येक बात को जो आकाश तथा धरती में है। और वह सब सुनने जानने वाला है।

قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١٢﴾

5. बल्कि उन्होंने ने कह दिया कि यह^[3] बिखरे स्वप्न है। बल्कि उस (नबी) ने इसे स्वयं बना लिया है, बल्कि वह कवि है। अन्यथा उसे चाहिये कि हमारे पास कोई निशानी ला दे जैसे पूर्व के रसूल (निशानियों के साथ) भेजे गये।

بَلْ قَالُوا أَضْغَاتٌ أَلْخَلَخَ فِي الْأُفُوقِ رَبُّهُ
شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ﴿١٣﴾

6. नहीं ईमान^[4] लायी इन से पहले कोई बस्ती जिस का हम ने विनाश किया, तो क्या यह ईमान लायेंगे?

مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٤﴾

7. और (हे नबी!) हम ने आप से पहले

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ

1 अर्थात् कुरआन की कोई आयत अवतरित होती है तो उस में चिन्तन और विचार नहीं करते।

2 अर्थात् यह कि वह तुम्हारे जैसा मनुष्य है, अतः इस का जो भी प्रभाव है वह जादू के कारण है।

3 अर्थात् कुरआन की आयतें।

4 अर्थात् निशानियाँ देख कर भी ईमान नहीं लायी।

मनुष्य पुरुषों को ही रसूल बना कर भेजा, जिन की ओर बह्नी भेजते रहे। फिर तुम ज्ञानियों^[1] से पूछ लो, यदि तुम (स्वयं) नहीं^[2] जानते हो।

8. तथा नहीं बनाये हम ने उन के ऐसे शरीर^[3] जो भोजन न करते हों। तथा न वे सदावासी थे।

9. फिर हम ने पूरे कर दिये उन से किये हुये वचन, और हम ने बचा लिया उन्हें, और जिसे हम ने चाहा। और विनाश कर दिया उल्लंघनकारियों का।

10. निःसंदेह हम ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक पुस्तक (कूर्आन) जिस में तुम्हारे लिये शिक्षा है। तो क्या तुम समझते नहीं हो?

11. और हम ने तोड़ कर रख दिया बहुत सी बस्तियों को जो अत्याचारी थीं, और हम ने पैदा कर दिया उन के पश्चात् दूसरी जाति को।

12. फिर जब उन्हें संवेदन हो गया हमारे प्रकोप का, तो अकस्मात् वहाँ से भागने लगे।

13. (कहा गया) भागो नहीं। तथा तुम वापिस जाओ जिस सुख-सुविधा में थे, तथा अपने घरों की ओर, ताकि

فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَداً لَّا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ۝

لَمَّا صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَدَاجَيْنَاهُمْ وَمِنْ شَرِّ مَا أَهْلَكْنَا
الْمُسْرِفِينَ ۝

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

وَكَمْ قَصَبْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا
بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝

فَلَمَّا أَحْسَبُوا أَنَّنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ۝

لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

1 अर्थात् आदि आकाशीय पुस्तकों के ज्ञानियों से।

2 देखिये: सूरह नहल, आयत: 43।

3 अर्थात् उन में मनुष्य की ही सब विशेषताएँ थीं।

तुम से पूछा^[1] जाये।

14. उन्होंने ने कहा: हाय हमारा विनाश!
वास्तव में हम अत्याचारी थे।

15. और फिर बराबर यही उन की पुकार
रही यहाँ तक कि हम ने बना दिया
उन्हें कटी खेती के समान बुझे हुये।

16. और हम ने नहीं पैदा किया है
आकाश और धरती को तथा जो कुछ
दोनों के बीच है खेल के लिये।

17. यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो
उसे अपने पास ही से बना^[2] लेते,
यदि हमें यह करना होता।

18. बल्कि हम मारते हैं सत्य से असत्य
पर, तो वह उस का सिर कुचल देता
है, और वह अकस्मात समाप्त हो
जाता है, और तुम्हारे लिये विनाश है
उन बातों के कारण जो तुम बनाते हो।

19. और उसी का है जो आकाशों तथा
धरती में है, और जो फ़रिश्ते उस के
पास हैं वे उस की इबादत (बंदना) से
अभिमान नहीं करते, और न थकते हैं।

20. वे रात और दिन उस की पवित्रता का
गान करते हैं, तथा आलस्य नहीं करते।

قَالُوا يَوَيْكَ لَآئِكَ كُنَّا لَظَّالِمِينَ ۝

فَمَا زِلْنَا إِلَيْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا
خَمِيدِينَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا الْبَاطِلِينَ ۝

لَوْ أَرَادْنَا أَنْ نَتَّخِذَ لَهُمْ آلَافًا مِّنْ لَّدُنَّا
إِن كُنَّا فَاعِلِينَ ۝

بَلْ نَقْذِرُ الْبَاطِلَ عَلَى الْبَاطِلِ مُبْدِئَةً ۖ وَإِذَا
هُوَ زَائِقٌ ۖ وَالْكَافِرُ الْوَيْلُ مِنْهُ أَصْحَابُونَ ۝

وَلَهُمْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ عِنْدَهُ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ ۖ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝

يُسَبِّحُونَ أَثِيلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْطُرُونَ ۝

1 अर्थात् यह कि यातना आने पर तुम्हारी क्या दशा हुयी?

2 अर्थात् इस विशाल विश्व के बनाने की आवश्यकता न थी। इस आयत में यह बताया जा रहा है कि इस विश्व को खेल नहीं बनाया गया है। यहाँ एक साधारण नियम काम कर रहा है। और वह सत्य और असत्य के बीच संघर्ष का नियम है। अर्थात् यहाँ जो कुछ होता है वह सत्य की विजय और असत्य की पराजय के लिये होता है। और सत्य के आगे असत्य समाप्त हो कर रह जाता है।

21. क्या इन के बनाये हुये पार्थिव पूज्य ऐसे हैं जो (निर्जीव) को जीवित कर देते हैं।
22. यदि होते उन दोनों^[1] में अन्य पूज्य अल्लाह के सिवा तो निश्चय दोनों की व्यवस्था बिगड़^[2] जाती। अतः पवित्र है अल्लाह अर्श (सिंहासन) का स्वामी उन बातों से जो वे बता रहे हैं।
23. वह उत्तर दायी नहीं है अपने कार्य का और सभी (उस के समक्ष) उत्तर दायी हैं।
24. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा अनेक पूज्य? (हे नबी!) आप कहें कि अपना प्रमाण लाओ। यह (क़ुर्आन) उन के लिये शिक्षा है जो मेरे साथ हैं और यह मुझ से पूर्व के लोगों की शिक्षा^[3] है, बल्कि उन में से अधिकतर सत्य का ज्ञान नहीं रखते। इसी कारण वह विमुख है।
25. और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वही (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही इबादत (बंदना) करो।

أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُبْشِرُونَ ﴿٢١﴾

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلَ اللَّهِ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَسَيَحْشُرَ اللَّهُ رَبَّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٢٢﴾

لَا يَسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُونَ ﴿٢٣﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ هَذَا إِذْ كُورَ مِن مَّعِي وَذُكِرَ مَن قَبْلِي بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٤﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

1 आकाश तथा धरती में।

2 क्योंकि दोनों अपनी अपनी शक्ति का प्रयोग करते और उन के आपस के संघर्ष के कारण इस विश्व की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती। अतः इस विश्व की व्यवस्था स्वयं बता रही है कि इस का स्वामी एक ही है। और वही अकेला पूज्य है।

3 आयत का भावार्थ यह है कि यह क़ुर्आन है और यह तौरात तथा इंजील हैं। इन में कोई प्रमाण दिखा दो कि अल्लाह के अन्य साझी और पूज्य हैं। बल्कि यह मिश्रणवादी निर्मूल बातें कर रहे हैं।

26. और उन (मुशरिकों) ने कहा कि बना लिया है अत्यंत कृपाशील ने संतति। वह पवित्र है। बल्कि वे (फरिश्ते)^[1] आदरणीय भक्त हैं।

27. वे उस के समक्ष बढ़ कर नहीं बोलते और उस के आदेशानुसार काम करते हैं।

28. वह जानता है जो उन के सामने है और जो उन से ओझल है। वह किसी की सिफारिश नहीं करेंगे उस के सिवा जिस से वह (अल्लाह) प्रसन्न^[2] हो, तथा वह उस के भय से सहमे रहते हैं।

29. और जो कह दे उन में से कि मैं पूज्य हूँ अल्लाह के सिवा तो वही है जिसे हम दण्ड देंगे नरक का, इसी प्रकार हम दण्ड दिया करते हैं अत्याचारियों को।

30. और क्या उन्होंने ने विचार नहीं किया जो काफिर हो गये कि आकाश तथा धरती दोनों मिले हुये^[3] थे, तो हम ने दोनों को अलग-अलग किया। तथा हम ने बनाया पानी से प्रत्येक जीवित चीज को? फिर क्या वह (इस बात पर) विश्वास नहीं करते?

31. और हम ने बना दिये धरती में पर्वत

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

لَا يَسْأَلُونَهُ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهٖ يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُم مِّنْ حَشِيَّتِهِ مُتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِّنْ دُونِهِ فَذَلِكْ نَجْرُهُ جَهَنَّمَ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيًا أَنْ تُبْسِلَ بِهِمُ وَجَعَلْنَا

1 अर्थात् अरब के मिश्रणवादी जिन फरिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते हैं, वास्तव में वह उस के भक्त तथा दास हैं।

2 अर्थात् जो एकेश्वरवादी होंगे।

3 अर्थात् अपनी उत्पत्ति के आरंभ में।

ताकि झुक न^[1] जाये उन के साथ,
और बना दिये उन (पर्वतों) में चोड़े
रास्ते ताकि लोग राह पायें।

32. और हम ने बना दिया आकाश को
सुरक्षित छत, फिर भी वह उस के
प्रतीकों (निशानियों) से मुंह फेरे
हुये है।

33. तथा वही है जिस ने उत्पत्ति की है
रात्रि तथा दिवस की और सूर्य तथा
चाँद की, प्रत्येक एक मण्डल में तैर
रहे^[2] है।

34. और (हे नबी!) हम ने नहीं बनायी है
किसी मनुष्य के लिये आप से पहले
नित्यता। तो यदि आप मर^[3] जायें,
तो क्या वह नित्य जीवी है?

35. प्रत्येक जीव को मरण का स्वाद
चखना है, और हम तुम्हारी
परीक्षा कर रहे हैं अच्छी तथा बुरी
परिस्थितियों से, तथा तुम्हें हमारी ही
ओर फिर आना है।

فِيهَا فُجُجًا سُبُلًا لِّعَلَّاهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

وَمَوَازِيءُ يَخْلَقُ الْيَلَّ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

وَمَا جَعَلْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ قَبْلِكَ الْخَالِدَ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُ
مِنْكَ فَهَمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُمُ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

1 अर्थात् यह पर्वत न होते तो धरती सदा हिलती रहती।

2 कुर्आन अपनी शिक्षा में विश्व की व्यवस्था से एक के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यहाँ भी आयत: 30 से 33 तक एक अल्लाह के पूज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

3 जब मनुष्य किसी का विरोधी बन जाता है तो उस के मरण की कामना करता है। यही दशा मक्का के काफ़िरों की भी थी। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरण की कामना कर रहे थे। फिर यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक जीव को मरना है। यह कोई बड़ी बात नहीं, बड़ी बात तो यह है कि अल्लाह इस संसार में सब के कर्मों की परीक्षा कर रहा है। और फिर सब को अपने कर्मों का फल भी परलोक में मिलना है तो कौन इस परीक्षा में सफल होता है?

36. तथा जब देखते हैं आप को जो काफिर हो गये तो बना लेते हैं आप को उपहास, (वे कहते हैं) क्या यही है जो तुम्हारे पूज्यों की चर्चा किया करता है? जब कि वे स्वयं रहमान (अत्यंत कृपाशील) के स्मरण के^[1] निवर्ती हैं।

37. मनुष्य जन्मजात व्यग्र (अधीर) है, मैं शीघ्र तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा दूँगा। अतः तुम जल्दी न करो।

38. तथा वह कहते हैं कि कब पूरी होगी यह^[2] धमकी, यदि तुम लोग सच्चे हो?

39. यदि जान लें जो काफिर हो गये हैं उस समय को जब वह नहीं बचा सकेंगे अपने मुखों को अग्नि से और न अपनी पीठों को, और न उन की कोई सहायता की जायेगी (तो ऐसी बातें नहीं करेंगे)।

40. बल्कि वह समय उन पर आ जायेगा अचानक, और उन्हें आश्चर्य चकित कर देगा, जिसे वह फेर नहीं सकेंगे और न उन्हें समय दिया जायेगा।

41. और उपहास किया गया बहुत से रसूलों का आप से पहले, तो घेर लिया उन को जिन्होंने उपहास किया उन में से उस चीज़ ने जिस^[3]

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَمِينِكَ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَمِينِكَ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَمِينِكَ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَمِينِكَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ
فَلَا تَسْجُدُوا لَهُ

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونُ عَنْ
وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ

وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلِهِ مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ
بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِه
يَسْتَهْزِئُونَ

1 अर्थात् अल्लाह को नहीं मानते।

2 अर्थात् हमारे न मानने पर यातना आने की धमकी।

3 अर्थात् यातना ने।

का उपहास कर रहे थे।

42. आप पूछिये कि कौन तुम्हारी रक्षा करेगा रात तथा दिन में अत्यंत कृपाशील^[1] से? बल्कि वह अपने पालनहार की शिक्षा (कुर्आन) से विमुख है।

43. क्या उन के पूज्य हैं जो उन्हें बचायेंगे हम से? वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे और न हमारी ओर से उन का साथ दिया जायेगा।

44. बल्कि हम ने जीवन का लाभ पहुँचाया है उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि (सुखों में) उन की बड़ी आयु गुज़र^[2] गई, तो क्या वह नहीं देखते कि हम धरती को कम करते आ रहे हैं उस के किनारों से, फिर क्या वह विजयी हो रहे हैं?

45. (हे नबी!) आप कह दें कि मैं तो बह्यी ही के आधार पर तुम्हें सावधान कर रहा हूँ। (परन्तु) बहरे पुकार नहीं सुनते जब उन्हें सावधान किया जाता है।

46. और यदि छू जाये उन को आप के पालनहार की तनिक भी यातना, तो अवश्य पुकारेंगे कि हाये,

قُلْ مَنْ يَكْفُلُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ
بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ لَهُمُ إِلَهَةٌ تَنْصَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا
لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا
يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

بَلْ مَتَّعْنَا مَوْلَاهُ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ
عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّ آبَاءَ الْأَرْضِ
تَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ
إِذَا مَا يُنَادُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَئِنْ مَسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِنْ عَذَابِ رَبِّكَ
لَيَقُولُنَّ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَنَا ظُلُمَاتِنَا ۖ ﴿٤٦﴾

1 अर्थात् उस की यातना से।

2 अर्थ यह है कि वह मक्का के काफिर सुख-सुविधा मंद रहने के कारण अल्लाह से विमुख हो गये हैं, और सोचते हैं कि उन पर यातना नहीं आयेगी और वही विजयी होंगे। जब कि दशा यह है कि उन के अधिकार का क्षेत्र कम होता जा रहा है और इस्लाम बराबर फैलता जा रहा है। फिर भी वे इस भ्रम में हैं कि वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे।

हमारा विनाश! निश्चय ही हम
अत्याचारी^[1] थे।

47. और हम रख देंगे न्याय का तराजू^[2]
प्रलय के दिन, फिर नहीं अत्याचार
किया जायेगा किसी पर कुछ भी,
तथा यदि होगा राई के दाने के
बराबर (किसी का कर्म) तो हम
उसे सामने ला देंगे, और हम बस
(काफी) हैं हिसाब लेने वाले।

48. और हम दे चुके हैं मूसा तथा
हारून को विवेक तथा प्रकाश
और शिक्षाप्रद पुस्तक आज्ञाकारियों
के लिये।

49. जो डरते हों अपने पालनहार
से बिन देखे, और वे प्रलय से
भयभीत हों।

50. और यह (कुर्आन) एक शुभ शिक्षा है
जिसे हम ने उतारा है, तो क्या तुम
इस के इन्कारी हो?

51. और हम ने प्रदान की थी इब्राहीम
को उस की चेतना इस से पहले,
और हम उस से भली भाँति
अवगत थे।

52. जब उस ने अपने बाप तथा अपनी
जाति से कहा: यह प्रतिमायें (मूर्तियाँ)
कैसी हैं जिन की पूजा में तुम लगे
हुये हो?

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ فَلَا تُظْلَمُ
نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ
خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ۝

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِنْ
السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبَرِّكٌ أَنزَلْنَاهُ أَتَى لَّكُمُ الْهَدَى
مُتَذَكِّرُونَ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا
بِهِ عَلِيمِينَ ۝

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي
أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ۝

1 अर्थात् अपने पापों को स्वीकार कर लेंगे।

2 अर्थात् कर्मों को तौलने और हिसाब करने के लिये, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को
उस के कर्मानुसार बदला दिया जाये।

53. उन्होंने ने कहा: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को इन की पूजा करते हुये।
54. उस (इब्राहीम) ने कहा: निश्चय तुम और तुम्हारे पूर्वज खुले कुपथ में हो।
55. उन्होंने ने कहा: क्या तुम लाये हो हमारे पास सत्य या तुम उपहास कर रहे हो?
56. उस ने कहा: बल्कि तुम्हारा पालनहार आकाशों तथा धरती का पालनहार है जिस ने उन्हें पैदा किया है, और मैं तो इसी का साक्षी हूँ।
57. तथा अल्लाह की शपथ! मैं अवश्य चाल चलूँगा तुम्हारी मुर्तियों के साथ, इस के पश्चात् कि तुम चले जाओ।
58. फिर उस ने कर दिया उन्हें खण्ड-खण्ड, उन के बड़े के सिवा, ताकि वह उस की ओर फिरें।
59. उन्होंने ने कहा: किस ने यह दशा कर दी है हमारे पूज्यों (देवताओं) की? वास्तव में वह कोई अत्याचारी होगा।
60. लोगों ने कहा: हम ने सुना है एक नवयुवक को उन की चर्चा करते जिसे इब्राहीम कहा जाता है।
61. लोगों ने कहा: उसे लाओ लोगों के सामने ताकि लोग देखें।
62. उन्होंने ने पूछा: क्या तू ने ही यह किया है हमारे पूज्यों के साथ, हे इब्राहीम?

قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ هَٰذَا لَمَّا خَلَّيْنَا

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلٰلٍ مُّبِينٍ ۝

قَالُوا اِحْسِنَا بِالْحَقِّ لَمَ اَنْتَ مِنَ الْبٰغِيْنَ ۝

قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۚ وَآءَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِنَ الشَّٰهِدِيْنَ ۝

وَاللّٰهُ لَا يَكِيْدُ ۚ اَصْنٰمُكُمْ بَعْدَ اَنْ تَوَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝

فَجَعَلَهُمْ جُذَآءً اِلَّا كِبٰرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِالِهَيْتَةِ اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ اِبْرٰهِيْمُ ۝

قَالُوا اَتَاؤٰوِيْهِ عَلٰى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ ۝

قَالُوا اَنْتَ تَعْلَمْتَ هٰذَا اِلَهَيْنَا يَا اِبْرٰهِيْمُ ۝

63. उस ने कहा: बल्कि इसे इन के इस बड़े ने किया^[1] है, तो उन्हीं से पूछ लो यदि वह बोलते हों?

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَاسْأَلُوهُمْ
إِنْ كَانُوا يَنْطِقُونَ ۝

64. फिर अपने मन में वे सोच में पड़ गये और (अपने मन में) कहा: वास्तव में तुम्हीं अत्याचारी हो।

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا لَوْلَا إِلَهُكُمُ
الظَّالِمُونَ ۝

65. फिर वह ओंधे कर दिये गये अपने सिरों के बल^[2] (और बोले): तू जानता है कि यह बोलते नहीं हैं।

ثُمَّ نُنَكِّسُكَ عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ فَأَمَّا عِلَّتْ
مَا هُوَ إِلَّا يَنْطِقُونَ ۝

66. इब्राहीम ने कहा: तो क्या तुम इबादत (वंदना) अल्लाह के सिवा उस की करते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते हैं और न तुम्हें हानि पहुँचा सकते हैं?

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا
وَلَا يَضُرُّكُمْ ۝

67. तुफ़ (धू) है तुम पर और उस पर जिस की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह को छोड़ कर। तो क्या तुम समझ नहीं रखते हो?

أَفِيفٌ لَّكُمْ وَلَمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

68. उन्होंने ने कहा: इस को जला दो तथा सहायता करो अपने पूज्यों की, यदि तुम्हें कुछ करना है।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
فَاعِلِينَ ۝

69. हम ने कहा: हे अग्नि! तू शीतल तथा शान्ति बन जा इब्राहीम पर।

فَلَمَّا يَنْتَارُ كُونٍ بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝

70. और उन्होंने ने उस के साथ बुराई चाही, तो हम ने उन्हीं को क्षतिग्रस्त कर दिया।

وَأَمَّا آدَاوَاهُ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْخَسِرِينَ ۝

1 यह बात इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन्हें उन के पूज्यों की विवशता दिखाने के लिये कही।

2 अर्थात् सत्य को स्वीकार कर के उस से फिर गये।

71. और हम उस (इब्राहीम) को बचा कर ले गये तथा लूत^[1] को उस भूमि^[2] की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता रखी है विश्व वासियों के लिये।

72. और हम ने उसे प्रदान किया (पुत्र) इस्हाक और (पौत्र) याकूब उस पर अधिक, और प्रत्येक को हम ने सत्कर्म बनाया।

73. और हम ने उन्हें अग्रणी (प्रमुख) बना दिया जो हमारे आदेशानुसार (लोगों को) सुपथ दर्शाते हैं तथा हम ने वहयी (प्रकाशना) की उन की ओर सत्कर्मों के करने तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने की, तथा वे हमारे ही उपासक थे।

74. तथा लूत को हम ने निर्णय शक्ति और ज्ञान दिया, और बचा लिया उस बस्ती से जो दुष्कर्म कर रही थी, वास्तव में वे बुरे अवैज्ञाकारी लोग थे।

75. और हम ने प्रवेश दिया उसे अपनी दया में, वास्तव में वह सदाचारियों में से था।

76. तथा नूह को (याद करो) जब उस ने पुकारा इन (नबियों) से पहले। तो हम ने उस की पुकार सुन ली, फिर उसे और उस के घराने को मुक्ति दी महा पीड़ा से।

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۝

وَوَعَدْنَاهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۝ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۝

وَجَعَلْنَاهُمْ أِمْنَةً يُهْدُونَ بِالْمِزْنِ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا تَاغِيذِينَ ۝

وَلُوطًا الَّتِي هُتِّمَ عَلَيْهَا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ الْغَبِيثَ إِنَّهُمْ كَانُوا أَقْوَمَ سَوَاءً فَيَقِينُ ۝

وَادْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝

1 लूत अलैहिस्सलाम इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे।

2 इस से अभिप्राय सीरिया देश है। और अर्थ यह है कि अब्राह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अग्नि से रक्षा करने के पश्चात् उन्हें सीरिया देश की ओर प्रस्थान कर जाने का आदेश दिया। और वह सीरिया चले गये।

77. और उस की सहायता की उस जाति के मुकाबले में जिन्होंने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया, वास्तव में वे बुरे लोग थे। अतः हम ने डुबो दिया उन सभी को।

78. तथा दावूद और सुलैमान को (याद करो) जब वह दोनों निर्णय कर रहे थे खेत के विषय में जब रात्रि में चर गईं उसे दूसरों की बकरियाँ, और हम उन का निर्णय देख रहे थे।

79. तो हम ने उस का उचित निर्णय समझा दिया सुलैमान^[1] को, और प्रत्येक को हम ने प्रदान किया था निर्णय शक्ति तथा ज्ञान, और हम ने आधीन कर दिया था दावूद के साथ पर्वतों को जो (अब्राह की पवित्रता का) वर्णन करते थे तथा पक्षियों को, और हम ही इस कार्य के करने वाले थे।

80. तथा हम ने उस (दावूद) को सिखाया तुम्हारे लिये कवच बनाना ताकि तुम्हें बचाये तुम्हारे आक्रमण से, तो क्या तुम कृतज्ञ हो?

81. और सुलैमान के आधीन कर दिया

وَصَوْنَهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ
نَفَثَتْ فِيهِمْ غَمَمُ الْقَوْمِ وَكَُنَّا الْحَاكِمِينَ
شَهِيدِينَ ۝

فَقَعَمْنَاهُمَا سُلَيْمَانَ ۖ وَكُلًّا آتَيْنَاهُمَا حُكْمًا وَعِلْمًا
وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ
وَالطَّيْرَ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ۝

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُؤٍ لَّكُمْ
لِيُخَصِّنْكُمْ مِّنْ بَأْسِكُمْ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ
شَاكِرُونَ ۝

وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِهِ إِلَى

1 हदीस में वर्णित है कि दो नारियों के साथ शिशु थे। भेड़िया आया और एक को ले गया तो एक ने दूसरी से कहा कि तुम्हारे शिशु को ले गया है और निर्णय के लिये दावूद के पास गयीं। उन्होंने ने बड़ी के लिये निर्णय कर दिया। फिर वह सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आयीं, उन्होंने ने कहा, छुरी लाओ मैं तुम दोनों के लिये दो भाग कर दूँ। तो छोटी ने कहा: ऐसा न करे अब्राह आप पर दया करे, यह उसी का शिशु है। यह सुन कर उन्होंने ने छोटी के पक्ष में निर्णय कर दिया। (बुखारी, 3427, मुस्लिम, 1720)

उग्र वायु को, जो चल रही थी उस के आदेश से^[1] उस धरती की ओर जिस में हम ने सम्पन्नता (विभूतियाँ) रखी हैं, और हम ही सर्वज्ञ हैं।

الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ
خَالِطِينَ ۝

82. तथा शैतानों में से उन्हें (उस के आधीन कर दिया) जो उस के लिये डुबकी लगाते^[2] तथा इस के सिवा दूसरे कार्य करते थे, और हम ही उन के निरीक्षक^[3] थे।

وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَغْوِي صُورًا لَهُ وَيَعْمَلُونَ
عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ۝

83. तथा अय्यूब (की उस स्थिति) को (याद करो) जब उस ने पुकारा अपने पालनहार को कि मुझे रोग लग गया है और तू सब से अधिक दयावान् है।

وَأَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝

84. तो हम ने उस की गुहार सुन ली^[4] और दूर कर दिया जो दुख उसे था, और प्रदान कर दिया उसे उस का परिवार तथा उतने ही और उन के साथ, अपनी विशेष दया से तथा शिक्षा के लिये उपासकों की।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضِرٍّ وَأَيُّوبَ
أَهْلَهُ وَوَسَّلْنَاهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا وَنُذِيرًا
لِّلْعَادِينَ ۝

85. तथा इस्माईल और इद्रीस तथा जुल किफल को (याद करो), सभी सहनशीलों में से थे।

وَالْإِسْحَاقَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ
الضَّالِّينَ ۝

1 अर्थात् वायु उन के सिंहासन को उन के राज्य में जहाँ चाहते क्षणों में पहुँचा देती थी।

2 अर्थात् मोतियाँ तथा जवाहिरात निकालने के लिये।

3 ताकि शैतान उन को कोई हानि न पहुँचाये।

4 आदरणीय अय्यूब अलैहिस्सलाम की अल्लाह ने उन के धन-धान्य तथा परिवार में परीक्षा ली। वह स्वयं रोगग्रस्त हो गये। परन्तु उन के धैर्य के कारण अल्लाह ने उन को फिर स्वस्थ कर दिया और धन-धान्य के साथ ही पहले से दो गुने पुत्र प्रदान किये।

86. और हम ने प्रवेश दिया उन को अपनी दया में, वास्तव में वे सदाचारी थे।

وَادْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ
الظَّالِمِينَ ۝

87. तथा जुन्नन^[1] को जब वह चला^[2] गया क्रोधित हो कर और सोचा कि हम उसे पकड़ेंगे नहीं, अन्ततः उस ने पुकारा अंधेरी में कि नहीं है कोई पूज्य तेरे सिवा, तू पवित्र है, वास्तव में मैं ही दोषी^[3] हूँ।

وَذَالتُ الْوُجُوهُ إِذْ ذُهِبَ مُغَاضِبًا أَقْطَنَ أَنَّ
كَفَّ رَأْيَهُ وَقَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَن لَّا
إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ
الظَّالِمِينَ ۝

88. तब हम ने उस की पुकार सुन ली, तथा उसे मुक्त कर दिया शोक से, और इसी प्रकार हम बचा लिया करते हैं ईमान वालों को।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ
وَكَذَٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِينَ ۝

89. तथा ज़करिय्या को (याद करो) जब पुकारा उस ने अपने पालनहार^[4] को, हे मेरे पालनहार! मुझे मत छोड़ दे अकेला, और तू सब से अच्छा उत्तराधिकारी है।

وَرَكِبْنَا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي
فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ۝

90. तो हम ने सुन ली उस की पुकार तथा प्रदान कर दिया उसे यह्था, और सुधार दिया उस के लिये उस

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَاهُ
ذُوحَاةٍ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِئُونَ فِي الْخَيْرَاتِ

1 जुन्नून से अभिप्रेत यूनूस अलैहिस्सलाम है। नून का अर्थ अरबी भाषा में मछली है। उन को "साहिबुल हूत" भी कहा गया है। अर्थात् मछली वाला। क्यों कि उन को अल्लाह के आदेश से एक मछली ने निगल लिया था। इस का कुछ वर्णन सूरह यूनूस में आ चुका है। और कुछ सूरह साफ़ात में आ रहा है।

2 अर्थात् अपनी जाति से क्रोधित हो कर अल्लाह के आदेश के बिना अपनी बस्ती से चले गये। इसी पर उन्हें पकड़ लिया गया।

3 सहीह हदीस में आता है कि जो भी मुसलमान इस शब्द के साथ किसी विषय में दुआ करेगा तो अल्लाह उस की दुआ को स्वीकार करेगा। (तिर्मिजी-3505)

4 आदरणीय ज़करिय्या ने एक पुत्र के लिये प्रार्थना की, जिस का वर्णन सूरह आले इमरान तथा सूरह ता-हा में आ चुका है।

की पत्नी को। वास्तव में वह सभी दौड़-धूप करते थे सत्कर्मों में और हम से प्रार्थना करते थे रुचि तथा भय के साथ, और हमारे आगे झुके हुये थे।

91. तथा जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व^[1] की, तो फूंक दी हम ने उस के भीतर अपनी आत्मा से, और उसे तथा उस के पुत्र को बना दिया एक निशानी संसार वासियों के लिये।

92. वास्तव में तुम्हारा धर्म एक ही धर्म^[2] है, और मैं ही तुम सब का पालनहार (पूज्य) हूँ। अतः मेरी ही इबादत (वंदना) करो।

93. और खण्ड-खण्ड कर दिया लोगों ने अपने धर्म को (विभेद कर के) आपस में, सब को हमारी ओर ही फिर आना है।

94. फिर जो सदाचार करेगा और वह एकेश्वरवादी हो, तो उस के प्रयास की उपेक्षा नहीं की जायेगी, और हम उसे लिख रहे हैं।

95. और असंभव है किसी भी बस्ती पर जिस का हम ने विनाश कर^[3] दिया

وَيَدْعُونَآ رَعِبًا أَوْ رَهْبًا أَوْ كَانُوا آلِنَا
خُشِعِينَ ①

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا مِنْ
رُوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ②

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ③

وَنَقُطِعُ رَأْسَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلَّ إِلَهٍ إِلَّا جَعَلْنَاهُ

فَنَنْعَمَ عَلَى الْغَالِبِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا كُفْرَ أَنْ لِسَعِيهِمْ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ④

وَحَرَامٌ عَلَى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ⑤

1 इस से संकेत मर्यम तथा उस के पुत्र ईसा (अलैहिस्सलाम) की ओर है।

2 अर्थात् सब नबियों का मूल धर्म एक है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मर्यम के पुत्र ईसा से अधिक संबंध रखता हूँ। क्यों कि सब नबी भाई भाई हैं उन की मायें अलग अलग हैं, सब का धर्म एक है। (सहीह बुखारी: 3443)। और दूसरी हदीस में यह अधिक है कि: मेरे और उस के बीच कोई और नबी नहीं है। (सहीह बुखारी: 3442)

3 अर्थात् उस के वासियों के दुराचार के कारण।

है कि वह फिर (संसार में) आ जाये।

96. यहाँ तक कि जब खोल दिये जायेंगे याजूज तथा माजूज^[1] और वे प्रत्येक ऊँचाई से उतर रहे होंगे।

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾

97. और समीप आ जायेगा सत्य^[2] बचन, तो अकस्मात् खुली रह जायेंगी काफिरों की आँखें, (वे कहेंगे): "हाय हमारा विनाश"! हम असावधान रह गये इस से, बल्कि हम अत्याचारी थे।

وَأَقْرَبَ الْوَعْدِ الْحَقُّ فَأَنذَرْنَاهِ شَأْنَهُ ۖ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِيَوْمِنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾

98. निश्चय तुम सब तथा तुम जिन (मूर्तियों) को पूज रहे हो अन्नाह के अतिरिक्त नरक के ईंधन है, तुम सब वहाँ पहुँचने वाले हो।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ أَنْتُمْ لَهَا وَرَدُونَ ﴿٩٨﴾

99. यदि वे वास्तव में पूज्य होते, तो नरक में प्रवेश नहीं करते, और प्रत्येक उस में सदावासी होंगे।

لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ إِلَهًا مَا وَرَدُوا مَا وَكُلُّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾

100. उन की उस में चीखें होंगी तथा वे उस में (कुछ) सुन नहीं सकेंगे।

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

101. (परन्तु) जिन के लिये पहले ही से हमारी ओर से भलाई का निर्णय हो चुका है, वही उस से दूर रखे जायेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

102. वे उस (नरक) की सरसर भी नहीं सुनेंगे, और अपनी मन चाही चीजों में सदा (मग्न) रहेंगे।

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خِلَدُونَ ﴿١٠٢﴾

103. उन्हें उदासीन नहीं करेगी (प्रलय के दिन की) बड़ी व्यग्रता, तथा फरिश्ते

لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُم الْمَلَائِكَةُ

1 याजूज तथा माजूज के विषय में देखिये सूरह कहफ़, आयत: 93 से 100 तक का अनुवाद।

2 सत्य बचन से अभिप्राय प्रलय का बचन है।

उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे (तथा कहेंगे):
यही तुम्हारा वह दिन है जिस का
तुम्हें वचन दिया जा रहा था।

104. जिस दिन हम लपेट^[1] देंगे आकाश
को पंजिका के पन्नों को लपेट देने
के समान, जैसे हम ने आरंभ किया
था प्रथम उत्पत्ति का उसी प्रकार
उसे^[2] दुहरायेंगे, इस (वचन) को
पूरा करना हम पर है, और हम
पूरा कर के रहेंगे।

105. तथा हम ने लिख दिया है ज़बूर^[3] में
शिक्षा के पश्चात् कि धरती के
उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी भक्त होंगे।

106. वस्तुतः इस (बात) में एक बड़ा
उपदेश है उपासकों के लिये।

107. और (हे नबी!) हम ने आप को
नहीं भेजा है किन्तु समस्त संसार के
लिये दया बना^[4] कर।

108. आप कह दें कि मेरी ओर तो बस
यही बह्नी की जा रही है कि तुम सब
का पूज्य बस एक ही पूज्य है, फिर
क्या तुम उस के आज्ञाकारी^[5] हो?

هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٤﴾

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِّينِ لِكُتِّيبٍ كَمَا
بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نَعْمِدُهُ وَوَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا
فَاعِلِينَ ﴿١٠٥﴾

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٦﴾

إِنِّي فِي هَذَا بَلَاءٌ لِّقَوْمٍ غِيْبِينَ ﴿١٠٧﴾

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾

قُلْ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِإِنِّكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٩﴾

1 (देखिये: सूरह जुमर, आयत: 67)

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भाषण दिया कि लोग अल्लाह के पास बिना जूते के, नग्न, तथा बिना खतुने के एकत्र किये जायेंगे। फिर इब्राहीम अलैहिस्सलाम को सर्वप्रथम वस्त्र पहनाये जायेंगे। (सहीह बुखारी, 3349)

3 ज़बूर वह पुस्तक है जो दावूद अलैहिस्सलाम को प्रदान की गयी।

4 अर्थात् जो आप पर ईमान लायेगा, वही लोक-परलोक में अल्लाह की दया का अधिकारी होगा।

5 अर्थात् दया एकेश्वरवाद में है, मिश्रणवाद में नहीं।

109. फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें समान रूप से सावधान कर दिया^[1], और मैं नहीं जानता कि समीप है अथवा दूर जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।
110. वास्तव में वही जानता है खुली बात को तथा जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो।
111. तथा मुझे यह ज्ञान (भी) नहीं, संभव है यह^[2] तुम्हारे लिये कोई परीक्षा हो तथा लाभ हो एक निर्धारित समय तक?
112. उस (नबी) ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! सत्य के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार अत्यंत कृपाशील है जिस से सहायता मांगी जाये उन बातों पर जो तुम लोग बना रहे हो।

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ إِنِّي نَذَرْتُ عَلَى سَوَاءٍ وَإِنْ أَدْرِي
أَقْرَبُ أَمْرِ بَعِيدٍ مَا تُوْعَدُونَ ۝

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُونَ ۝

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّه فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝

قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

1 अर्थात् ईमान न लाने और मिश्रणवाद के दुष्परिणाम से।

2 अर्थात् यातना में बिलम्ब।

सूरह हज्ज - 22



सूरह हज्ज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह में हज्ज की साधारण घोषणा की चर्चा है इस लिये इस का नाम सूरह हज्ज है।
- आरंभिक आयतों में प्रलय के कड़े भूकम्प पर सावधान करते हुये इस बात से सूचित किया गया है कि शैतान के उकसाने से कितने ही लोग अल्लाह के बारे में निर्मूल बातों में उलझे रहते हैं जिस के कारण वह नरक की आग में जा गिरेंगे।
- दूसरे जीवन के प्रमाण और गुमराही की बातों के परिणाम बताये गये हैं।
- अल्लाह की असुद्ध वंदना को व्यर्थ बताते हुये शिर्क का खण्डन किया गया है।
- यह बताया गया है कि कॉबा एक अल्लाह की वंदना के लिये बनाया गया है। तथा हज्ज के कर्मों को बताया गया है। और मुसलमानों को अनुमति दी गई है कि जिहाद कर के कॉबा को मुक्त करायें।
- यातना की जल्दी मचाने पर अत्याचारी जातियों के विनाश की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की राह में हिज्रत करने पर शूभसूचना सुनाई गई है।
- अल्लाह के उपकारों का वर्णन तथा विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये शिर्क को निर्मूल बताया गया है।
- अन्त में मुसलमानों को अपने कर्तव्य का पालन करने और अल्लाह की राह में प्रयास करने और लोगों के सामने उस के धर्म की गवाही देने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे मनुष्यो! अपने पालनहार से डरो, वास्तव में क्यामत (प्रलय) का भूकम्प बड़ा ही घोर विषय है।
2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, सुध न होगी प्रत्येक दूध पिलाने वाली को अपने दूध पीते शिशु की, और गिरा देगी प्रत्येक गर्भवती अपना गर्भ, तथा तुम देखोगे लोगों को मतवाले जब कि वे मतवाले नहीं होंगे, परन्तु अल्लाह की यातना बहुत कड़ी¹ होगी।
3. और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय में बिना किसी ज्ञान के, तथा अनुसरण करते हैं प्रत्येक उद्धत शैतान का।
4. जिस के भाग्य में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनायेगा वह उसे कुपथ कर देगा और उसे राह दिखायेगा नरक की यातना की ओर।
5. हे लोगो! यदि तुम किसी संदेह में हो

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ
شَكٌّ عَظِيمٌ

يَوْمَ تَرَوْهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا
أَرْضَعَتْ وَكُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى
وَلَكِنْ عَذَابُ اللَّهِ شَدِيدٌ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مُرِيدٍ ۝

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَإِنَّهُ يُضِلَّهُ
وَيَهْدِيهِ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अल्लाह प्रलय के दिन कहेगा: हे आदम! वह कहेंगे: मैं उपस्थित हूँ। फिर पुकारा जायेगा कि अल्लाह आदेश देता है कि अपनी संतान में से नरक में भेजने के लिये निकालो। वह कहेंगे कितने? वह कहेगा: हजार में से नौ सौ निन्नानवे। तो उसी समय गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और शिशु के बाल सफेद हो जायेंगे। और तुम लोगों को मतवाले समझोगे। जब कि वे मतवाले नहीं होंगे किन्तु अल्लाह की यातना कड़ी होगी। यह बात लोगों को भारी लगी और उनके चेहरे बदल गये। तब आप ने कहा: याजूज और माजूज में से नौ सौ निन्नानवे होंगे और तुम में से एक। (संक्षिप्त हदीस, बुखारी: 4741)

पुनः जीवित होने के विषय में, तो (सोचो कि) हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर मांस के खण्ड से जो चित्रित तथा चीत्रविहीन होता है^[1], ताकि हम उजागर कर^[2] दें तुम्हारे लिये, और स्थिर रखते हैं गर्भाशयों में जब तक चाहें एक निर्धारित अवधि तक, फिर तुम्हें निकालते हैं शिशु बना कर, फिर ताकि तुम पहुँचो अपने यौवन को, और तुम में से कुछ (पहले ही) मर जाते हैं और तुम में से कुछ जीर्ण आयु की ओर फेर दिये जाते हैं ताकि उसे कुछ ज्ञान न रह जाये ज्ञान के पश्चात्,

خَلَقْنَاهُ مِنْ شَرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِنَبِّينَ لَكُمْ وَنُقَرِّئُ الْأَرْحَامَ مَا شَاءَ إِلَىٰ آجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى وَمِنْكُمْ مَنْ يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا وَشَرَى الْأَرْضَ صَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝

- 1 अर्थात: यह वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी रक्त बन जाता है। फिर गोश्त का लोथड़ा बन जाता है। फिर उस से सहीह सलामत बच्चा बन जाता है। और ऐसे बच्चे में जान फूँक दी जाती है। और अपने समय पर उस की पैदाइश हो जाती है। और -अल्लाह की इच्छा से- कभी कुछ कारणों फलस्वरूप ऐसा भी होता है कि खून का वह लोथड़ा अपना सहीह रूप नहीं धार पाता। और उस में रूह भी नहीं फूँकी जाती। और वह अपने पैदाइश के समय से पहले ही गिर जाता है। सहीह हदीसों में भी माँ के पेट में बच्चे की पैदाइश की इन अवस्थाओं की चर्चा मिलती है। उदाहरण स्वरूप, एक हदीस में है कि वीर्य चालीस दिन के बाद गाढ़ी खून बन जाता है। फिर चालीस दिन के बाद लोथड़ा अथवा गोश्त की बोटी बन जाता है। फिर अल्लाह की ओर से एक फरिश्ता चार शब्द ले कर आता है: वह संसार में क्या काम करेगा, उस की आयु कितनी होगी, उस को क्या और कितनी जीविका मिलेगी, और वह शुभ होगा अथवा अशुभ। फिर वह उस में जान डालता है। (देखिये: सहीह बुखारी, 3332)

अर्थात: चार महीने का बाद उस में जान डाली जाती है। और बच्चा एक सहीह रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार आज जिस को वैज्ञानिकों ने बहुत दोड़ धूप के बाद सिद्ध किया है उस को कुर्आन ने चौदह सौ साल पूर्व ही बता दिया था। यह इस बात का प्रमाण है कि यह किताब (कुर्आन) किसी मानव की बनाई हुई नहीं है, बल्कि अल्लाह की ओर से है।

- 2 अर्थात् अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य को।

तथा तुम देखते हो धरती को सूखी,
फिर जब हम उस पर जल-वर्षा
करते हैं, तो सहसा लहलहाने और
उभरने लगी, तथा उगा देती है
प्रत्येक प्रकार की सुदृश्य वनस्पतियों।

6. यह इस लिये है कि अल्लाह ही सत्य
है तथा वही जीवित करता है मुर्दों
को, तथा वास्तव में वह जो चाहे
कर सकता है।

7. यह इस कारण है कि क्यामत
(प्रलय) अवश्य आनी है जिस में कोई
संदेह नहीं, और अल्लाह ही उन्हें पुनः
जीवित करेगा जो समाधियों (कब्रों)
में हैं।

8. तथा लोगों में वह (भी) है जो विवाद
करता है अल्लाह के विषय में बिना
किसी ज्ञान और मार्ग दर्शन एवं बिना
किसी ज्योतिमय पुस्तक के।

9. अपना पहलु फेर कर ताकि अल्लाह
की राह^[1] से कुपथ कर दे। उसी के
लिये संसार में अपमान है और हम
उसे प्रलय के दिन दहन की यातना
चखायेंगे।

10. यह उन कर्मों का परिणाम है जिसे
तेरे हाथों ने आगे भेजा है, और
अल्लाह अत्याचारी नहीं है (अपने)
भक्तों के लिये।

11. तथा लोगों में वह (भी) है जो इबादत
(बंदना) करता है अल्लाह की एक

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخَيِّ
الْمَوْتَى وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكْرِمُ فِيهَا ذُرِّيَّةَ اللَّهِ
يَبْعَثُ فِي الْقُبُورِ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

ثَانِي عَظِيمٍ لِّيُفْسِلَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَهُ فِي
الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنَذِيرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَذَابُ
الْحَرِيقِ ۝

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَمٍ
لِّلْعَمِيدِ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَوْفٍ فَإِنْ

1 अर्थात् अभिमान करते हुये।

किनारे पर हो कर^[1], फिर यदि उसे कोई लाभ पहुँचता है तो वह संतोष हो जाता है। और यदि उसे कोई परीक्षा आ लगे तो मुँह के बल फिर जाता है। वह क्षति में पड़ गया लोक तथा परलोक की, और यही खुली क्षति है।

12. वह पुकारता है अब्बाह के अतिरिक्त उसे जो न हानि पहुँचा सके उसे और न लाभ, यही दूर^[2] का कुपथ है।

13. वह उसे पुकारता है जिस की हानि अधिक समीप है उस के लाभ से, वास्तव में वह बुरा संरक्षक तथा बुरा साथी है।

14. निश्चय अब्बाह उन्हें प्रवेश देगा जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वास्तव में अब्बाह करता है जो चाहता है।

15. जो सोचता है कि उस^[3] की सहायता नहीं करेगा अब्बाह लोक तथा परलोक में, तो उसे चाहिये कि तान ले कोई रस्सी आकाश की ओर फिर फाँसी दे कर मर जाये। फिर देखे कि क्या दूर कर देती है उस का उपाय उस के रोष (क्रोध)^[4] को?

16. तथा इसी प्रकार हम ने इस (कुरआन)

أَصَابَهُ خَيْرٌ لِّمَا كَانَ بِهِ وَإِنْ أَصَابَتْهُ
فِتْنَةٌ اِنْتَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
ذَلِكَ هُوَ الْخَيْرَانِ الْبُعِيدَيْنِ ①

يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُ
ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ②

يَدْعُو مَنْ هَرَّةٌ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ لَيْسَ
الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ③

إِنَّ اللَّهَ يَدْعُ الْذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ④

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِرَسْمٍ إِلَى السَّمَاءِ
ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُدْهِمُهُ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ⑤

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي

1 आर्थात् सदिग्ध हो कर।

2 अर्थात् कोई दुख होने पर अब्बाह के सिवा दूसरों को पुकारना।

3 अर्थात् अपने रसूल की।

4 अर्थ यह है कि अब्बाह अपने नबी की सहायता अवश्य करेगा।

को खुली आयतों में अवतरित किया है। और अल्लाह सुपथ दर्शा देता है जिसे चाहता है।

مَنْ يُرِيدْ ۝

17. जो ईमान लाये तथा जो यहूदी हुये, और जो साबई तथा ईसाई है और जो मजसी है तथा जिन्होंने शिर्क किया है, अल्लाह निर्णय^[1] कर देगा उन के बीच प्रलय के दिन। निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ
وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ۝

18. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह ही को सज्दा^[2] करते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं तथा सूर्य और चाँद तथा तारे और पर्वत एवं वृक्ष और पशु तथा बहुत से मनुष्य, और बहुत से वह भी हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसे अल्लाह अपमानित कर दे उसे कोई सम्मान देने वाला नहीं है। निःसंदेह अल्लाह करता है जो चाहता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ
وَالشَّجَرُ وَالذَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ وَكَثِيرٌ
حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ
مُكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝

19. यह दो पक्ष है जिन्होंने विभेद किया^[3] अपने पालनहार के विषय में, तो इन में से काफिरों के लिये ब्योत दिये गये हैं

هَذَيْنِ خَصَمَيْنِ اِخْتَصَمَا إِنَّ رَبَّهُمْ فَالَّذِينَ
كَفَرُوا وَقَطَعَتْ لَهُمْ شِيَائٌ مِنْ ثَمَرٍ يَصْبُ مِنْ

1 अर्थात् प्रत्येक को अपने कर्म की वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा।

2 इस आयत में यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ही अकेला पूज्य है उस का कोई साझी नहीं। क्यों कि इस विश्व की सभी उत्पत्ति उसी के आगे झुक रही है और बहुत से मनुष्य भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी को सज्दा कर रहे हैं। अतः तुम भी उस के आज्ञाकारी हो कर उसी के आगे झुको। क्यों कि उस की अवैज्ञा यातना को अनिवार्य कर देती है। और ऐसे व्यक्ति को अपमान के सिवा कुछ हाथ न आयेगा।

3 अर्थात् संसार में कितने ही धर्म क्यों न हों वास्तव में दो ही पक्ष हैं: एक सत्धर्म का विरोधी और दूसरा सत्धर्म का अनुयायी, अर्थात् काफिर और मोमिन और प्रत्येक का परिणाम बताया जा रहा है।

अग्नि के वस्त्र, उन के सिरों पर धारा
बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।

قُوِيَ رُءُوسُهُمُ الْحَمِيمُ ۝

20. जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के
भीतर की वस्तुयें और उन की खालें।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ۝

21. और उन्हीं के लिये लोहे के आँकुश
हैं।

وَلَهُمْ مَقَامِعٌ مِنْ حَدِيدٍ ۝

22. जब भी उस (अग्नि) से निकलना
चाहेंगे व्याकुल हो कर, तो उसी में
फेर दिये जायेंगे, तथा (कहा जायेगा
कि) दहन की यातना चखो।

كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ
أُجِيدُوا فِيهَا وَقَدْ أُفُتِحَ بَابُ الْحَقِيقِ ۝

23. निश्चय अब्ब्राह प्रवेश देगा उन्हें जो
ईमान लाये तथा सत्कर्म किये ऐसे
स्वर्गों में जिन में नहरें प्रवाहित होंगी,
उन में उन्हें सोने के कंगन पहनाये
जायेंगे तथा मोती, और उन का वस्त्र
उस में रेशम का होगा।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحْسِنُونَ فِيهَا مِنْ لَسَاوٍ مِنْ ذَهَبٍ
وَلَوْلُؤٍ وَأَلْبَاسُهُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۝

24. तथा उन्हें मार्ग दर्शा दिया गया पवित्र
बात^[1] का, और उन्हें दर्शा दिया
गया प्रशंसित (अब्राह) का^[2] मार्ग।

وَمَهْدٌ إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهَدُوا إِلَى
صِرَاطِ الْحَمِيدِ ۝

25. जो काफिर हो गये^[3] और रोकते
हैं अब्राह की राह से और उस
मस्जिदे हराम से जिसे सब के लिये
हम ने एक जैसा बना दिया है: उस
के वासी हों अथवा प्रवासी। तथा
जो उस में अत्याचार से अधर्म का

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ
سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ
بِالْعَادِ يُظْلَمْ تُدْفَعُ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ ۝

1 अर्थात् स्वर्ग का, जहाँ पवित्र बातें ही होंगी, वहाँ व्यर्थ पाप की बातें नहीं होंगी।

2 अर्थात् संसार में इस्लाम तथा कुर्आन का मार्ग।

3 इस आयत में मक्का के काफिरों को चेतावनी दी गई है, जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इस्लाम के विरोधी थे। और उन्होंने आप को तथा मुसलमानों को "हुदैबिया" के वर्ष मस्जिदे हराम से रोक दिया था।

विचार करेगा, हम उसे दुःखदायी यातना चखायेंगे।^[1]

26. तथा वह समय याद करो जब हम ने निश्चित कर दिया इब्राहीम के लिये इस घर (काबा) का स्थान^[2] (इस प्रतिबंध के साथ) कि साझी न बनाना मेरा किसी चीज़ को, तथा पवित्र रखना मेरे घर को परिक्रमा करने, खड़े होने, रुकूअ (झुकना) और सज्दा करने वालों के लिये।

27. और घोषणा कर दो लोगों में हज्ज की, वे आयेंगे तेरे पास पैदल तथा प्रत्येक दुबली पतली स्वारियों पर, जो प्रत्येक दूरस्थ मार्ग से आयेंगी।

28. ताकि वह उपस्थित हों अपने लाभ प्राप्त करने के लिये, और ताकि अल्लाह का नाम^[3] ले निश्चित^[4] दिनों में उस पर जो उन्हें प्रदान किया है पालतू चौपायों में से। फिर उस में से स्वयं खाओ तथा भूखे निर्धन को खिलाओ।

29. फिर अपना मैल कुचैल दूर^[5] करें

وَأَذِّنْ لِلْعِبَادِ أَنَّ الْبَيْتَ أَنَا لِلنَّاسِ
بَيْنَ شَيْءٍ أَطْهَرُ لِنَبِيِّ الْكَافِرِينَ وَالْعَاقِلِينَ
وَالزُّكْمِ الشُّجُونِ ۝

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۝

لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
آيَاتِهِ مَعْلُومَاتٍ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ مِنْ
بِهِمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا
أَمْرَ الْعَزِيزِ ۝

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلِيُتَوَضَّئُوا مِنْهُمْ

1 यह मक्का की मुख्य विशेषताओं में से है कि वहाँ रहने वाला अगर कुफ़र और शिर्क या किसी बिद्अत का विचार भी दिल में लाये तो उस के लिये घोर यातना है।

2 अर्थात् उस का निर्माण करने के लिये। क्यों कि नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान के कारण सब बह गया था इस लिये अल्लाह ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के लिये बैतुल्लाह का वास्तविक स्थान निर्धारित कर दिया। और उन्होंने ने अपने पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के साथ उसे दोबारा स्थापित किया।

3 अर्थात् उसे बध करते समय अल्लाह का नाम लें।

4 निश्चित दिनों से अभिप्राय 10, 11, 12 तथा 13 ज़िल हिज्जा के दिन हैं।

5 अर्थात् 10 ज़िल हिज्जा को बड़े ((जमरे)) को जिस को लोग शैतान कहते हैं

तथा अपनी मनौतियाँ पूरी करें, और परिक्रमा करें प्राचीन घर^[1] की।

30. यह है (आदेश), और जो अल्लाह के निर्धारित किये प्रतिबंधों का आदर करे, तो यह उस के लिये अच्छा है उस के पालनहार के पास। और हलाल (वैध) कर दिये गये तुम्हारे लिये चौपाये उन के सिवा जिन का वर्णन तुम्हारे समक्ष कर दिया^[2] गया है, अतः मूर्तियों की गन्दगी से बचो, तथा झूठ बोलने से बचो।

31. अल्लाह के लिये एकेश्वरवादी होते हुये उस का साझी न बनाते हुये। और जो साझी बनाता हो अल्लाह का तो मानो वह आकाश से गिर गया फिर उसे पक्षी उचक ले जाये अथवा वायु का झोंका किसी दूर स्थान पर फेंक^[3] दे।

32. यह (अल्लाह का आदेश है), और जो आदर करे अल्लाह के प्रतीकों (निशानों)^[4] का, तो यह निःसन्देह दिलों के आज्ञाकारी होने की बात है।

وَلْيَقْرَءُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ①

ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ
عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأَجَلْتُ لَكُمْ الْأَتْعَامَ إِلَّا مَا يَمِثُلُ
عَلَيْكُمْ فَأَجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ
وَأَجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ②

حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ
أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ③

ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعْظَمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى
الْقُلُوبِ ④

कंकरियाँ मारने के पश्चात् एहराम उतार दें। और बाल नाखून साफ़ कर के स्नान करें।

1 अर्थात् कौबा का।

2 (देखिये सूरह माइदा, आयत: 3)

3 यह शिर्क के परिणाम का उदाहरण है कि मनुष्य शिर्क के कारण स्वाभाविक ऊँचाई से गिर जाता है। फिर उसे शैतान पक्षियों के समान उचक ले जाते हैं, और वह नीच बन जाता है। फिर उस में कभी ऊँचा विचार उत्पन्न नहीं होता, और वह मांसिक तथा नैतिक पतन की ओर ही झुका रहता है।

4 अर्थात् भक्ति के लिये उस के निश्चित किये हुये प्रतीकों की।

33. तुम्हारे लिये उन में बहुत से लाभ^[1] हैं एक निर्धारित समय तक, फिर उन के वध करने का स्थान प्राचीन घर के पास है।

34. तथा प्रत्येक समुदाय के लिये हम ने बलि की विधि निर्धारित की है, ताकि वह अल्लाह का नाम लें उस पर जो प्रदान किये हैं उन को पालतू चौपायों में से। अतः तुम्हारा पूज्य एक ही पूज्य है, उसी के आज्ञाकारी रहो। और (हे नबी!) आप शुभ सूचना सुना दें विनीतों को।

35. जिन की दशा यह है कि जब अल्लाह की चर्चा की जाये तो उन के दिल डर जाते हैं तथा धैर्य रखते हैं उस विपदा पर जो उन्हें पहुँचे, और नमाज़ की स्थापना करने वाले हैं, तथा उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।

36. और ऊँटों को हम ने बनाया है तुम्हारे लिये अल्लाह की निशानियों में, तुम्हारे लिये उन में भलाई है। अतः अल्लाह का नाम लो उन पर (वध करते समय) खड़े कर के। और जब धरती से लग जायें^[2] उन के पहलू तो स्वयं खाओ उन में से और खिलाओ उस में से संतोषी तथा भिक्षु को, इसी प्रकार हम ने उसे वश

لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۖ

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۚ وَالْهَكْمُ إِلَهُ وَاحِدٌ ۚ قُلْ أَطِيعُوا أَوْيُطِيعُوا الْمُخَيَّمِينَ ۖ

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالضَّالِّينَ عَلَىٰ مَا آصَابَهُمْ وَالْمُتَّقِينَ الصَّلَاةَ وَبِمَا رَزَقَهُمْ يَشْكُرُونَ ۝

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافٍ ۚ فَإِذَا وُجِبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا الْقَانِعَ وَالْمَعْرُوفَ ۚ كَذَلِكَ نَحْنُ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

1 अर्थात् कुर्बानी के पशु पर सवारी तथा उन के दूध और उन से लाभ प्राप्त करना उचित है।

2 अर्थात् उस का प्राण पूरी तरह निकल जाये।

में कर दिया है तुम्हारे, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

37. नहीं पहुँचते अल्लाह को उन के माँस न उन के रक्त, परन्तु उस को पहुँचता है तुम्हारा आज्ञा पालन। इसी प्रकार उस (अल्लाह) ने उन (पशुओं) को तुम्हारे वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह की महिमा का वर्णन करो^[1] उस मार्गदर्शन पर जो तुम्हें दिया है। और आप सत्कर्मियों को शुभ सूचना सुना दें।

38. निश्चय ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है उन की ओर से जो ईमान लाये हैं, वास्तव में अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न से प्रेम नहीं करता।

39. उन्हें अनुमति दे दी गई जिन से युद्ध किया जा रहा है क्यों कि उन पर अत्याचार किया गया है, और निश्चय अल्लाह उन की सहायता पर पूर्णतः सामर्थ्यवान है।^[2]

40. जिन को इन के घरों से अकारण निकाल दिया गया केवल इस बात पर कि वह कहते थे कि हमारा पालनहार अल्लाह है, और यदि अल्लाह प्रतिरक्षा न कराता कुछ लोगों की कुछ लोगों द्वारा तो ध्वस्त कर दिये

لَنْ يَبَالِ اللَّهُ لُحُومَهَا وَلَا دِمَافَهَا وَلَكِنْ
يَبَالِ اللَّهُ التَّقْوَى مِنْكُمْ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَى مَا هَدَاكُمْ وَيُبَيِّرَ
الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُجِبُ كُلَّ ظَوَّارٍ كُفُّوا

أُولَ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى
نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ

إِلَّا أَنْ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ
يَقُولُوا رَبَّنَا اللَّهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَفُتَّتْ صَوَامِعُ دِيَارِهِمْ
وَصَلُوتٌ وَمَسْجِدُ يُذَكَّرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا
وَلْيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَمُتَّقُونَ عَزِيزٌ ۝

1 बध करते समय (बिस्मिल्लाह अल्लाह अकबर) कहो।

2 यह प्रथम आयत है जिस में जिहाद की अनुमति दी गयी है। और कारण यह बताया गया है कि मुसलमान शत्रु के अत्याचार से अपनी रक्षा करें। फिर आगे चल कर सूरह बकरा, आयत: 190 से 193 और 216 तथा 226 में युद्ध का आदेश दिया गया है। जो (बद्र) के युद्ध से कुछ पहले दिया गया।

जाते आश्रम तथा गिरजे और यहूदियों के धर्म स्थल तथा मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम अधिक लिया जाता है। और अल्लाह अवश्य उस की सहायता करेगा जो उस (के सत्य) की सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

41. यह^[1] वह लोग है कि यदि हम इन्हें धरती में अधिपत्य प्रदान कर दें, तो नमाज़ की स्थापना करेंगे और ज़कात देंगे, तथा भलाई का आदेश देंगे, और बुराई से रोकेंगे, और अल्लाह के अधिकार में है सब कर्मों का परिणाम।
42. और (हे नबी!) यदि वह आप को झुठलायें तो इन से पूर्व झुठला चुकी है नूह की जाति और (आद) तथा (समूद)।
43. तथा इब्राहीम की जाति और लूत की (जाति)।
44. तथा मद्यन वाले^[2], और मूसा (भी) झुठलाये गये, तो मैं ने अवसर दिया काफ़िरों को, फिर उन्हें पकड़ लिया, तो मेरा दण्ड कैसा रहा?
45. तो कितनी ही बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने ध्वस्त कर दिया, जो अत्याचारी थी, वह अपनी छतों के समेत गिरी हुई है और बेकार कुएँ तथा पक्के ऊँचे भवन।
46. तो क्या वह धरती में फिरे नहीं? तो उन के ऐसे दिल होते जिन से

الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَاتُوا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ
الْمُنكَرِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَافِقٌ الْأُمُورِ ۝

وَإِنْ يَكُذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ
وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۝

وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۝

وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكَذَّبَ مُوسَىٰ فَأَمْلَكْتُ لِلْكَافِرِينَ
ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

فَكَأَيُّنَ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَبَقِيَ خَلْوَةٌ
عَلَىٰ غُرُوبِهَا ۚ وَيَبْقَىٰ مَعْطَلَةٌ وَقَصْرٌ مَشِيدٌ ۝

أَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَكَلِمَ لَهُمْ ثُلُوبٌ ۝

1 अर्थात् उत्पीड़ित मुसलमान।

2 अर्थात् शुऐब अलैहिस्सलाम की जाति।

समझते, अथवा ऐसे कान होते जिन से सुनते, वास्तव में आँखें अन्धी नहीं हो जाती, परन्तु वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में^[1] है।

47. तथा वे आप से शीघ्र यातना की माँग कर रहे हैं, और अल्लाह कदापि अपने वचन को भंग नहीं करेगा। और निश्चय आप के पालनहार के यहाँ एक दिन तुम्हारी गणना से हजार वर्ष के बराबर^[2] है।

48. और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने अवसर दिया जब कि वह अत्याचारी थीं, फिर मैं ने उन्हें पकड़ लिया। और मेरी ही ओर (सब को) वापिस आना है।

49. (हे नबी!) आप कह दें कि हे लोगो! मैं तो बस तुम्हें खुला सावधान करने वाला हूँ।

50. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये, उन्हीं के लिये क्षमा और सम्मानित जीविका है।

51. और जिन्होंने प्रयास किया हमारी आयतों में विवश करने का, तो वही नारकी है।

52. और (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी रसूल और न किसी नबी

يَعْمَلُونَ بِهَا أَوْ إِذَا نَسَمِعُونَ بِهَا فَيَآئِلُهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۝

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَإِنْ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَالْفَسْفَسَةِ فَيَوْمًا تَعْدُونَ ۝

وَكَايْنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ أَكَلَتْ لَهَا وَهَىٰ ظَالِمَةٌ لِّمَّا أَخَذَتْهَا آلُؤَالُ الْبَصِيرِ ۝

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُدْعِي الْمُسْلِمِينَ ۝

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ ۝

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا

1 आयत का भावार्थ यह है कि दिल की सुझ-बुझ चली जाती है तो आँखें भी अन्धी हो जाती हैं और देखते हुये भी सत्य को नहीं देख सकती।

2 अर्थात् वह शीघ्र यातना नहीं देता, पहले अवसर देता है जैसा कि इस के पश्चात् की आयत में बताया जा रहा है।

को किन्तु जब उस ने (पुस्तक) पढ़ी तो संशय डाल दिया शैतान ने उस के पढ़ने में फिर निरस्त कर देता है अल्लाह शैतान के संशय को, फिर सुदृढ़ कर देता है अल्लाह अपनी आयतों को और अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ^[1] है।

53. यह इस लिये ताकि अल्लाह शैतानी संशय को उन के लिये परीक्षा बना दे जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है और जिन के दिल कड़े हैं। और वास्तव में अत्याचारी विरोध में बहुत दूर चले गये हैं।

54. और इस लिये (भी) ताकि विश्वास हो जाये उन्हें जो ज्ञान दिये गये हैं कि यह (कुरआन) सत्य है आप के पालनहार की ओर से, और इस पर ईमान लायें और इस के लिये झुक जायें उन के दिल, और निःसंदेह अल्लाह ही पथ प्रदर्शक है उन का जो ईमान लायें सुपथ की ओर।

55. तथा जो काफिर हो गये तो वह सदा संदेह में रहेंगे इस (कुरआन) से, यहाँ तक कि उन के पास सहसा प्रलय आ जाये, अथवा उन के पास बाझ^[2] दिन की यातना आ जाये।

56. राज्य उस दिन अल्लाह ही का होगा, वही उन के बीच निर्णय करेगा, तो जो ईमान लाये और सदाचार किये

إِذَا تَنَزَّلَ عَلَى الشَّيْطَانِ فِي أَمْرِيكُمْ فَيَنْتَعِمُ اللَّهُ مَا يَلْقَى الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكُمُ اللَّهُ إِلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

لِيَجْعَلَ مَا يَلْقَى الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادٍ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِنْهُ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝

أَلَمْ تَكُنْ يَوْمَ مَدْيَنَ تِلْكَ بِعَلَمٍ بَيْنَهُمْ فَأَلْزَمْتَ الْفَرِيقَ ۝

1 आयत का अर्थ यह है कि जब नबी धर्मपुस्तक की आयतें सुनाते हैं तो शैतान, लोगों को उस के अनुपालन से रोकने के लिये संशय उत्पन्न करता है।

2 बाझ दिन से अभिप्राय प्रलय का दिन है क्योंकि उस की रात नहीं होगी।

तो वह सुख के स्वर्गों में होंगे।

57. और जो काफिर हो गये, और हमारी आयतों को झूठलाया, उन्हीं के लिये अपमानकारी यातना है।

58. तथा जिन लोगों ने हिजरत (प्रस्थान) की अल्लाह की राह में, फिर मारे गये अथवा मर गये तो उन्हें अल्लाह अवश्य उत्तम जीविका प्रदान करेगा। और वास्तव में अल्लाह ही सर्वोत्तम जीविका प्रदान करने वाला है।

59. वह उन्हें प्रवेश देगा ऐसे स्थान में जिस से वह प्रसन्न हो जायेंगे, और वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ सहन्शील है।

60. यह वास्तविकता है, और जिस ने बदला लिया वैसा ही जो उस के साथ किया गया फिर उस के साथ अत्याचार किया जाये, तो अल्लाह उस की अवश्य सहायता करेगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षान्त क्षमाशील है।

61. यह इस लिये कि अल्लाह प्रवेश देता है रात्रि को दिन में, और प्रवेश देता है दिन को रात्रि में। और अल्लाह सब कुछ सुनने देखने वाला^[1] है।

62. यह इस लिये कि अल्लाह ही सत्य है, और जिसे वह अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वही असत्य है, और अल्लाह ही सर्वोच्च महान् है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا الْيَوْمَ نَرْزُقُهُمْ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ۝

لَيَدْخُلَنَّهُمْ مِنْ دَخَلٍ لَّا يُرْضَوْنَ بِهِ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ خَلِيمٌ ۝

ذَٰلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوِّقَ بِهِ ثُمَّ نَغَىٰ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ غَفُورٌ ۝

ذَٰلِكَ يَأَنَّ اللَّهَ يُؤَلِّمُ الْبَيِّنَاتِ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّمُ الْبَيِّنَاتِ فِي اللَّيْلِ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

ذَٰلِكَ يَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

1 अर्थात् उस का नियम अन्धा नहीं है कि जिस के साथ अत्याचार किया जाये उस की सहायता न की जाये। रात्रि तथा दिन का परिवर्तन बता रहा है कि एक ही स्थिति सदा नहीं रहती।

63. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से जल बरसाता है तो भूमि हरी हो जाती है, वास्तव में अल्लाह सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है।

64. उसी का है जो आकाशों में तथा जो धरती में है। और वास्तव में अल्लाह ही निस्पृह प्रशंसित है।

65. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने बश में कर दिया^[1] है तुम्हारे, जो कुछ धरती में है, तथा नाव को (जो) चलती है सागर में उस के आदेश से, और रोकता है आकाश को धरती पर गिरने से परन्तु उस की अनुमति से? वास्तव में अल्लाह लोगों के लिये अति करुणामय दयावान् है।

66. तथा वही है जिस नें तुम्हें जीवित किया, फिर तुम्हें मारेगा, फिर तुम्हें जीवित करेगा, वास्तव में मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

67. (हे नबी!) हम ने प्रत्येक समुदाय के लिये (इबादत की) विधि निर्धारित कर दी थी, जिस का वह पालन करते रहे, अतः उन्हें आप से इस (इस्लाम के नियम) के संबंध में विवाद नहीं करना चाहिये। और आप अपने पालनहार की ओर लोगों को बुलायें, वास्तव में आप सीधी राह पर हैं।^[2]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ

لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ الْعِلْمُ الْحَمِيدُ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرؤُوفٌ رَحِيمٌ

وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنَاسِكًا لَهُمْ فَاسْكُوهَا ۖ فَلَا تَتَنَزَّعُوكَ فِي الْأُمُورِ ۚ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَّ هُدًى مُّسْتَقِيمٌ

1 अर्थात् तुम उन से लाभान्वित हो रहे हो।

2 अर्थात् जिस प्रकार प्रत्येक युग में लोगों के लिये धार्मिक नियम निर्धारित किये गये उसी प्रकार अब कुर्आन धर्म विधान तथा जीवन विधान है। इस लिये अब प्राचीन धर्मों के अनुयायियों को चाहिये कि इस पर ईमान लायें, न कि इस

68. और यदि वह आप से विवाद करें, तो कह दें कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भली भाँति अवगत है।

وَأِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

69. अल्लाह ही तुम्हारे बीच निर्णय करेगा क्यामत (प्रलय) के दिन जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

70. (हे नबी!) क्या आप नहीं जानते कि अल्लाह जानता है जो आकाश तथा धरती में है, यह सब एक किताब में (अंकित) है। वास्तव में यह अल्लाह के लिये अति सरल है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

71. और वह इबादत (बंदना) अल्लाह के अतिरिक्त उस की कर रहे हैं जिस का उस ने कोई प्रमाण नहीं उतारा है, और न उन्हें उस का कोई ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं होगा।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانٌ وَمَا لَمْ يَكُنْ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٧١﴾

72. और जब उन को सुनायी जाती है हमारी खुली आयतें तो आप पहचान लेते हैं उन के चेहरों में जो काफिर हो गये बिगाड़ को। और लगता है कि वह आक्रमण कर देंगे उन पर जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। आप कह दें: क्या मैं तुम्हें इस से बुरी चीज़ बता दूँ? वह अग्नि है जिस का वचन अल्लाह ने काफिरों को दिया है, और वह बहुत ही बुरा आवास है।

وَإِذَا شَأْنٌ عَلَيْهِمُ اتَّخَذْتُمْ عِزًّا فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْمُنْكَرُ بِيَدِهِمْ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَسْتَلُونَ عَلَيْهِمُ الْبَيِّنَاتِ قُلْ أَفَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ بِشَرِّ مَنْ ذَلِكُمْ الْكَافِرُونَ وَعَدَّاهُ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَوْشَى الْمَصِيرُ ﴿٧٢﴾

विषय में आप से विवाद करें। और आप निश्चिन्त हो कर लोगों को इस्लाम की ओर बुलायें क्यों कि आप सत्धर्म पर हैं। और अब आप के बाद सारे पुराने धर्म निरस्त कर दिये गये हैं।

73. हे लोगो! एक उदाहरण दिया गया है इसे ध्यान से सुनो, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह सब एक मक्खी नहीं पैदा कर सकते यद्यपि सब इस के लिये मिल जायें। और यदि उन से मक्खी कुछ छीन ले तो उस से वापिस नहीं ले सकते। माँगने वाले निर्बल, और जिन से माँगा जाये वह दोनों ही निर्बल हैं।

74. उन्होंने ने अल्लाह का आदर किया ही नहीं जैसे उस का आदर करना चाहिये! वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभुत्वशाली है।

75. अल्लाह ही निर्वाचित करता है फरिश्तों में से तथा मनुष्यों में से रसूलों को। वास्तव में वह सुनने तथा देखने^[1] वाला है।

76. वह जानता है जो उन के सामने है और जो कुछ उन से ओझल है, और उसी की ओर सब काम फेरे जाते हैं।

77. हे ईमान वालो! रुकूअ करो तथा सज्दा करो, और अपने पालनहार की इबादत (बंदना) करो, और भलाई करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

78. तथा अल्लाह के लिये जिहाद करो जैसे जिहाद करना^[2] चाहिये। उसी

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُوبَ مَثَلٍ فَاسْتَمِعُوا الْقُرْآنَ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ
يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ وَلَا
يَسْلُبُهُمْ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْفِدُوا مِنْهُ
شَيْئًا ۖ الظَّالِمُ وَالْمُظْلَمُ ۚ

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِنَّ اللَّهَ لَعَزِيزٌ
عَزِيزٌ

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ
النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَأَلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا
وَاعْبُدُوا رَبَّكُمُ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ

1 अर्थात् वही जानता है कि रसूल (संदेशवाहक) बनाये जाने के योग्य कौन है।

2 एक व्यक्ति ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि कोई धन के लिये लड़ता है, कोई नाम के लिये और कोई वीरता दिखाने के लिये। तो कौन अल्लाह के लिये लड़ता है? आप ने फरमाया: जो अल्लाह का शब्द ऊँचा करने के लिये लड़ता है। (सहीह बुखारी: 123, 2810)

ने तुम्हें निर्वाचित किया है और नहीं बनाई तुम पर धर्म में कोई संकीर्णता (तंगी)। यह तुम्हारे पिता इब्राहीम का धर्म है, उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा है इस (क़ुरआन) से पहले तथा इस में भी ताकि रसूल गवाह हों तुम पर, और तुम गवाह^[1] बनो सब लोगों पर। अतः नमाज़ की स्थापना करो तथा ज़कात दो, और अल्लाह को सुदृढ़ पकड़^[2] लो। वही तुम्हारा संरक्षक है। तो वह क्या ही अच्छा संरक्षक तथा क्या ही अच्छा सहायक है।

اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ
حَرَجٍ مِّلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ هُوَ سَمَّيَكُمُ
الْمُسْلِمِينَ ذَٰلِكَ مِنْ قَبْلِ وَفِي هَٰذَا لِيَكُونَ
الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى
النَّاسِ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَاعْتَصِمُوا بِاللهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ
الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ

1 व्याख्या के लिये देखिये सूरह बकरा, आयत: 143।

2 अर्थात् उस की आज्ञा और धर्म विधान का पालन करो।

सूरह मुमिनून - 23

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ

सूरह मुमिनून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 118 आयतें हैं।

- इस सूरह में ईमान वालों की सफलता तथा उन के गुणों को बताया गया है।
- और जिस आस्था पर सफलता निर्भर है उस के सत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और संदेहों को दूर किया गया है।
- यह बताया गया है कि सब नबियों का धर्म एक था, लोगों ने विभेद कर के अनेक धर्म बना लिये।
- जो लोग अचेत हैं उन्हें सावधान करने के साथ साथ मौत तथा प्रलय के दिन उनकी दुर्दशा को बताया गया है।
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मुसलमानों को अल्लाह की क्षमा तथा दया के लिये प्रार्थना की शिक्षा दी गयी है।
- हदीस में है कि जिस में तीन बातें हों उसे ईमान की मिठास मिल जाती है: जिस को अल्लाह और उस के रसूल सब से अधिक प्रिय हों। और जो किसी से मात्र अल्लाह के लिये प्रेम करे। और जिसे यह अप्रिय हो कि इस के पश्चात् कुफ्र में वापिस जाये जब कि अल्लाह ने उसे उस से निकाल दिया। जैसे की उसे यह अप्रिय हो कि उसे नरक में फेंक दिया जाये। (सहीह बुखारी, 21, मुस्लिम, 43)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सफल हो गये ईमान वाले।
2. जो अपनी नमाज़ों में विनीत रहने वाले हैं।

فَإِنَّ أَقْلَهُرَ الْمُؤْمِنُونَ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ۝

3. और जो व्यर्थ^[1] से विमुख रहने वाले हैं।
4. तथा जो ज़कात देने वाले हैं।
5. और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।
6. परन्तु अपनी पत्नियों तथा अपने स्वामित्व में आयी दासियों से, तो वही निन्दित नहीं है।
7. फिर जो इस के अतिरिक्त चाहें, तो वही उल्लंघनकारी है।
8. और जो अपनी धरोहरों तथा वचन का पालन करने वाले हैं।
9. तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करने वाले हैं।
10. यही उत्तराधिकारी है।
11. जो उत्तराधिकारी होंगे फ़िर्दौस^[2] के, जिस में वे सदावासी होंगे।
12. और हम ने उत्पन्न किया है मनुष्य को मिट्टी के सार^[3] से।
13. फिर हम ने उसे वीर्य बना कर रख दिया एक सुरक्षित स्थान^[4] में।
14. फिर बदल दिया वीर्य को जमे हुये रक्त में, फिर हम ने उसे मांस का

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ﴿٣﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ﴿٤﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأُفْجُوهُهُمْ حَافِظُونَ ﴿٥﴾

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٦﴾

فَمَن ابْتِغَىٰ وَّرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَواتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٩﴾

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿١٠﴾

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ﴿١٢﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نَظْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾

ثُمَّ خَلَقْنَا النَّظْفَةَ عِلْقَةً فَخَلَقْنَا الْعِلْقَةَ مَضْغَةً

1 अर्थात् प्रत्येक व्यर्थ कार्य तथा कथन से। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो अल्लाह और प्रलय के दिन पर ईमान रखता हो वह अच्छी बात बोले अन्यथा चुप रहे। (सहीह बुख़ारी, 6019, मुस्लिम, 48)

2 फ़िर्दौस: स्वर्ग का सर्वोच्च स्थान।

3 अर्थात् वीर्य से।

4 अर्थात् गर्भाशय में।

लोथड़ा बना दिया, फिर हम ने लोथड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ने पहना दिया हड्डियों को मांस, फिर उसे एक अन्य रूप में उत्पन्न कर दिया। तो शुभ है अल्लाह जो सब से अच्छी उत्पत्ति करने वाला है।

15. फिर तुम सब इस के पश्चात् अवश्य मरने वाले हो।

16. फिर निश्चय तुम सब (प्रलय) के दिन जीवित किये जाओगे।

17. और हम ने बना दिये तुम्हारे ऊपर सात आकाश, और हम उत्पत्ति से अचेत नहीं^[1] हैं।

18. और हम ने आकाश से उचित मात्रा में पानी बरसाया, और उसे धरती में रोक दिया तथा हम उसे विलुप्त कर देने पर निश्चय सामर्थ्यवान हैं।

19. फिर हम ने उपजा दिये तुम्हारे लिये उस (पानी) के द्वारा खजूरों तथा अंगूरों के बाग, तुम्हारे लिये उस में बहुत से फल हैं, और उसी में से तुम खाते हो।

20. तथा वृक्ष जो निकलता है सैना पर्वत से जो तेल लिये उगता है। तथा सालन है खाने वालों के लिये।

21. और वास्तव में तुम्हारे लिये पशुओं में एक शिक्षा है, हम तुम्हें पिलाते हैं उस में से जो उन के पेटों में^[2] है।

فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكَسَّوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ فَبَرَكْنَا إِلَهُهُ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تُبْعَثُونَ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا أَفْوَاجَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقٍ وَأَنَّا هَمِّنُ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝

وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْإَرْضِ ۝ وَأَنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَنَارُونَ ۝

فَأَنشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّاتٍ مِّنْ نَّجِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

وَصَجْرَةٍ تَخْرُجُ مِنْ تَحْتِ سِينَاءَ تُنَبِّتُ بِأَلْفِ هِجْرٍ وَصَبْغٍ لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً لِّتُنْقِضُوا مِمَّا فِى بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

1 अर्थात् उत्पत्ति की आवश्यकता तथा जीवन के संसाधन की व्यवस्था भी कर रहे हैं।

2 अर्थात् दूध।

तथा तुम्हारे लिये उन में अन्य बहुत से लाभ हैं, और उन में से कुछ को तुम खाते हो।

22. तथा उन पर और नावों पर तुम सवार किये जाते हो।

23. तथा हम ने भेजा नूह^[1] को उस की जाति की ओर, उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (बंदना) अल्लाह की करो, तुम्हारा कोई पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

24. तो उन प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये उस की जाति में से, यह तो एक मनुष्य है, तुम्हारे जैसा, यह तुम पर प्रधानता चाहता है। और यदि अल्लाह चाहता तो किसी फरिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे^[2] सुना ही नहीं अपने पूर्वजों में।

25. यह बस एक ऐसा पुरुष है जो पागल हो गया है, तो तुम उस की प्रतीक्षा करो कुछ समय तक।

26. नूह ने कहा: हे मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उन के मुझे झुठलाने पर।

27. तो हम ने उस की ओर वह्यी की, कि नाव बना हमारी रक्षा में हमारी वह्यी के अनुसार, और जब हमारा

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَأَسْمِعْنَا هَذَا الْقَوْمَ الْآيَاتِ ﴿٢٤﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فُتَوَضَّعُوا لَهُ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ﴿٢٦﴾

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلَ يَا عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ خُذْهَا بِأَمْرِنَا وَأَقَرِّ النَّفُورَ فَاذْهَبْ

1 यहाँ यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ने जिस प्रकार तुम्हारे आर्थिक जीवन के साधन बनाये उसी प्रकार तुम्हारे आत्मिक मार्ग दर्शन की व्यवस्था की और रसूलों को भेजा जिन में नूह अलैहिस्सलाम प्रथम रसूल थे।

2 अर्थात् एकेश्वरवाद की बात अपने पूर्वजों के समय में सुनी ही नहीं।

आदेश आ जाये तथा तन्नूर उबल पड़े, तो रख ले प्रत्येक (जीव) के एक-एक जोड़े तथा अपने परिवार को, उस के सिवा जिस पर पहले निर्णय हो चुका है उन में से, और मुझे संबोधित न करना उन के विषय में जिन्होंने अत्याचार किये हैं, निश्चय वे डुबो दिये जायेंगे।

28. और जब स्थिर हो जाये तू और जो तेरे साथी हैं नाव पर, तो कह: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।

29. तथा कह: हे मेरे पालनहार! मुझे शुभ स्थान में उतार, और तू उत्तम स्थान देने वाला है।

30. निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं, तथा निःसंदेह हम परीक्षा लेने¹ वाले हैं।

31. फिर हम ने पैदा किया उन के पश्चात् दूसरे समुदाय को।

32. फिर हम ने भेजा उन में रसूल उन्हीं में से कि तुम इबादत (बंदना) करो अल्लाह की, तुम्हारा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है उस के सिवा, तो क्या तुम डरते नहीं हो?

33. और उस की जाति के प्रमुखों ने कहा जो काफिर हो गये तथा आखिरत (परलोक) का सामना करने को झुठला दिया, तथा हम ने उन्हें सम्पन्न किया था संसारिक जीवन में:

فِيهَا مِنْ كُلِّ ذَوْجَيْنِ اشْتَكَيْنِ وَأَمَّاكَ إِلَّا
مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تَحْطِطُنَّ
فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُخْرَجُونَ ﴿٢٨﴾

وَإِذَا السَّيْفُ اتَّيَّتْ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِ فَقُلِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بَعَثَنَا مِنْ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

وَقُلِ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنزِلِينَ ﴿٣٠﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَبَاسِينَ ﴿٣١﴾

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ﴿٣٢﴾

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمُ
مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
الْآخِرَةِ وَأَتَوَقَّعُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا
تَشْرَبُونَ ﴿٣٤﴾

1 अर्थात् रसूलों के द्वारा परीक्षा लेते रहे हैं।

यह तो बस एक मनुष्य है तुम्हारे
जैसा, खाता है जो तुम खाते हो और
पीता है जो तुम पीते हो।

34. और यदि तुम ने मान लिया अपने
जैसे एक मनुज को तो निश्चय तुम
क्षतिग्रस्त हो।

35. क्या वह तुम को वचन देता है कि
जब तुम मर जाओगे और धूल तथा
हड्डियाँ हो जाओगे तो तुम फिर
जीवित निकाले जाओगे?

36. बहुत दूर की बात है जिस का तुम्हें
वचन दिया जा रहा है।

37. जीवन तो बस संसारिक जीवन है,
हम मरते-जीते हैं, और हम फिर
जीवित नहीं किये जायेंगे।

38. यह तो बस एक व्यक्ति है जिस ने
अल्लाह पर एक झूठ घड़ लिया है।
और हम उस का विश्वास करने
वाले नहीं हैं।

39. नबी ने प्रार्थना की: मेरे पालनहार!
मेरी सहायता कर उन के झुठलाने
पर मुझे।

40. (अल्लाह ने) कहा: शीघ्र ही वह (अपने
किये पर) पछतायेंगे।

41. अन्ततः पकड़ लिया उन्हें कोलाहल ने
सत्यानुसार, और हम ने उन्हें कचरा
बना दिया, तो दूरी हो अत्याचारियों
के लिये।

42. फिर हम ने पैदा किया उन के

وَلَكِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ إِنَّكُمْ إِذًا خَيْرُونَ ﴿٣٤﴾

أَيُّدُكُمْ أَكْثَرُ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا أَأَنْتُمْ
أَخْرَجُونَ ﴿٣٥﴾

هِيَئَاتَ هِيَئَاتَ لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ
بِعَاثِرِينَ ﴿٣٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ
لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كُنْتُ بَرًّا ﴿٣٩﴾

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَدِيمِينَ ﴿٤٠﴾

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ خِثَاءً
فَبَعَثْنَا الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾

पश्चात् दूसरे युग के लोगों को।

43. नहीं आगे होती है कोई जाति अपने समय से और न पीछे।^[1]

44. फिर हम ने भेजा अपने रसूलों को निरन्तर, जब जब किसी समुदाय के पास उस का रसूल आया, उन्होंने उस को झुठला दिया, तो हम ने पीछे लगा^[2] दिया उन के एक को दूसरे के और उन्हें कहानी बना दिया। तो दूरी है उन के लिये जो ईमान नहीं लाते।

45. फिर हम ने भेजा मूसा तथा उस के भाई हारून को अपनी निशानियों तथा खुले तर्क के साथ।

46. फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर तो उन्होंने ने गर्व किया, तथा बंधे ही अभिमानी लोग।

47. उन्होंने ने कहा: क्या हम ईमान लायें अपने जैसे दो व्यक्तियों पर, जब कि उन दोनों की जाति हमारे आधीन है?

48. तो उन्होंने ने दोनों को झुठला दिया, तथा हो गये विनाशों में।

49. और हम ने प्रदान की मूसा को पुस्तक^[3], ताकि वह मार्ग दर्शन पा जायें।

50. और हम ने बना दिया मर्यम के पुत्र

مَائِثِينَ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْجِرُونَ ﴿٤٣﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رُسُلَهُمْ كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا لَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثًا فَبِعَذَابِ الْقَوْمِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٤٤﴾

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَى وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٤٥﴾

إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ﴿٤٦﴾

فَخَالُوا اتَّخَذُوا الْمُؤْمِنِينَ لِبَشَرَتِهِمْ مَثَلًا وَقَوْمُهُمْ لَهَا غِبْدُونَ ﴿٤٧﴾

فَلَمَّا بُوهُمَا فَكَرَ الْمُؤْمِنُ الْهَٰلِكِينَ ﴿٤٨﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةً آيَةً وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ

1 अर्थात् किसी जाति के विनाश का समय आ जाता है तो एक क्षण की भी देर-सवेर नहीं होती।

2 अर्थात् विनाश में।

3 अर्थात् तौरात।

तथा उस की माँ को एक निशानी,
तथा दोनों को शरण दी एक उच्च
बसने योग्य तथा प्रवाहित स्रोत के
स्थान की ओर।^[1]

رَبُّو ذَاتِ قُرَارٍ مَّعِينٍ ﴿١﴾

51. हे रसूलो! खाओ स्वच्छ^[2] चीजों में
से तथा अच्छे कर्म करो, वास्तव में,
मैं उस से जो तुम कर रहे हो भली
भाँति अवगत हूँ।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا الصَّالِحَاتِ
إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿١﴾

52. और वास्तव में यह तुम्हारा धर्म एक
ही धर्म है और मैं ही तुम सब का
पालनहार हूँ, अतः मुझी से डरो।

وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ
فَاتَّقُونِ ﴿٢﴾

53. तो उन्होंने ने खण्ड कर लिया अपने
धर्म का आपस में कई खण्ड, प्रत्येक
सम्प्रदाय उसी में जो उन के पास^[3]
है मग्न है।

فَنَقَطَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا
لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣﴾

54. अतः (हे नबी!) आप उन्हें छोड़ दें
उन की अचेतना में कुछ समय तक।

فَذَرْنَهُمْ فِي غَمَرَاتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٤﴾

55. क्या वे समझते हैं कि हम जो
सहायता कर रहे हैं उन की धन तथा
संतान से।

أَيَحْسَبُونَ أَنَّمَا نُسْقِيهِم مِّنْ تَالِيٍّ وَنَسِينٍ ﴿٥﴾

56. शीघ्रता कर रहे हैं उन के लिये

نَسَارًا لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ بَل لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦﴾

1 इस से अभिप्राय बैतुल मक्दिस है।

2 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: अल्लाह स्वच्छ है और स्वच्छ ही को स्वीकार करता है। और ईमान वालों को वही आदेश दिया है जो रसूलों को दिया है। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (संक्षिप्त अनुवाद, मुस्लिम: 1015)

3 इन आयतों में कहा गया है कि सब रसूलों ने यही शिक्षा दी है कि स्वच्छ पवित्र चीजें खाओ और सदाचार करो। तुम्हारा पालनहार एक है और तुम सभी का धर्म एक है। परन्तु लोगों ने धर्म में बिभेद कर के बहुत से सम्प्रदाय बना लिये, और अब प्रत्येक सम्प्रदाय अपने विश्वास तथा कर्म में मग्न है भले ही वह सत्य से दूर हो।

भलाईयों में? बल्कि वह समझते नहीं हैं।^[1]

57. वास्तव में जो अपने पालनहार के भय से डरने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ تُشْفِقُونَ ۝

58. और जो अपने पालनहार की आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ يَا آيَاتِ رَبِّهِمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

59. और जो अपने पालनहार का साझी नहीं बनाते हैं।

وَالَّذِينَ هُمْ رَبَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَ ۝

60. और जो करते हैं जो कुछ भी करें, और उन के दिल कांपते रहते हैं कि वे अपने पालनहार की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ آلَهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝

61. वही शीघ्रता कर रहे हैं भलाईयों में, तथा वही उन के लिये अग्रसर हैं।

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْحَيَاتِ وَهُمْ لَهَا شَاقِقُونَ ۝

62. और हम बोझ नहीं रखते किसी प्राणी पर परन्तु उस के सामर्थ्य के अनुसार। तथा हमारे पास एक पुस्तक है जो सत्य बोलती है, और उन पर अत्याचार नहीं किया^[2] जायेगा।

وَلَا تَحْمِلُ نَفْسٌ إِلَّا أَوْسَعَهَا وَلَدَيْنَا مَكْتُبٌ يَّتَذَقَّنُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُكَذِّبُونَ ۝

63. बल्कि उन के दिल अचेत हैं इस से, तथा उन के बहुत से कर्म हैं इस के सिवा जिसे वे करने वाले हैं।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمَرٍ ذُوْنٍ هَذَا أُولَٰئِكَ أَعْمَالُ قَوْمٍ دُونِ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ۝

64. यहाँ तक कि जब हम पकड़ लेंगे उन के सुखियों को यातना में, तो वे विलाप करने लगेंगे।

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ يَجْعَلُونَ ۝

65. आज विलाप न करो, निःसंदेह तुम हमारी ओर से सहायता नहीं दिये जाओगे।

لَا تَجْعَلُوا الْيَوْمَ لَكُمْ مَسَالًا تَصْخَرُونَ ۝

1 अर्थात् यह कि हम उन्हें अबसर दे रहे हैं।

2 अर्थात् प्रत्येक का कर्म लेख है जिस के अनुसार ही उसे बदला दिया जायेगा।

66. मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती रही तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिरते रहे।
67. अभिमान करते हुये, उसे कथा बना कर बकवास करते रहे।
68. क्या उन्होंने ने इस कथन (कुर्आन) पर विचार नहीं किया, अथवा इन के पास वह^[1] आ गया जो उन के पूर्वजों के पास नहीं आया?
69. अथवा वह अपने रसूल से परिचित नहीं हुये, इस लिये वह उस का इन्कार कर रहे^[2] हैं?
70. अथवा वे कहते हैं कि वह पागलपन है? बल्कि वह तो उन के पास सत्य लाये हैं, और उन में से अधिकतर को सत्य अप्रिय है।
71. और यदि अनुसरण करने लगे सत्य उन की मनमानी का, तो अस्त-व्यस्त हो जाये आकाश तथा धरती और जो उन के बीच है, बल्कि हम ने दे दी है उन को उन की शिक्षा, फिर (भी) वे अपनी शिक्षा से विमुख हो रहे हैं।
72. (हे नबी!) क्या आप उन से कुछ (धन) माँग रहे हैं? आप के लिये तो आप के पालनहार का दिया हुआ ही उत्तम है। और वह सर्वोत्तम जीविका देने वाला है।

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُنْذِرُكُمْ فَلَوْلَمْ تَكُونُوا
مُتَذَكِّرِينَ ۝

مُسْتَكْبِرِينَ ۝ سُبْحَانَ إِلَهِكُمْ

أَفَلَمْ يَذْكُرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا يَكُونُ
الْأَوَّلِينَ ۝

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ مَجْهُولٌ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ وَكَانُوا
لِلْحَقِّ كَافِرِينَ ۝

وَلَوْ أَسْمِعُ الْحَقُّ الْقَوَائِمَ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ
وَمَنْ فِيهِنَّ بَلْ آتَيْنَاهُمْ مِنْكُمْ مِنْهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُعْضُونَ ۝

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَقَوْلَاهُمْ نَبِيُّكَ خَيْرٌ وَأَوْحَيْنَا
الرُّزْقَ ۝

1 अर्थात् कुर्आन तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ गये। इस पर तो इन्हें अल्लाह का कृतज्ञ होना और इसे स्वीकार करना चाहिये।

2 इस में चेतावनी है कि वह अपने रसूल की सत्यता - अमानत तथा उन के चरित्र और वंश से भली भाँति अवगत हैं।

73. निश्चय आप तो उन्हें सुपथ की ओर बुला रहे हैं।
74. और जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते वे सुपथ से कतराने वाले हैं।
75. और यदि हम उन पर दया कर दें और दूर कर दें जो दुःख उन के साथ है^[1] तो वह अपने कुकर्मों में और अधिक बहकते जायेंगे।
76. और हम ने उन्हें यातना में ग्रस्त (भी) किया, तो अपने पालनहार के समक्ष नहीं झुके और न विनय करते हैं।
77. यहाँ तक कि जब हम उन पर खोल देंगे कड़ी यातना के^[2] द्वार, तो सहसा वह उस समय निराश हो जायेंगे^[3]।
78. वही है जिस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये कान तथा आँखें और दिल^[4], (फिर भी) तुम बहुत कम कृतज्ञ होते हो।
79. और उसी ने तुम्हें धरती में फैलाया है, और उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।
80. तथा वही है जो जीवन देता और मारता है, और उसी के अधिकार में है रात्रि तथा दिन का फेर बदल, तो क्या तुम समझ नहीं रखते?

وَإِنَّكَ لَتَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصَّوْءِ
لَكُيُؤْتُوا ۝

وَلَوْ جِئْتَهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلْجُوفَى
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

وَلَقَدْ أَخَذْنَا لَهُمُ الْبَاقِيَ فَكَانُوا لِلزَّيْمِ
وَيَا بَيْتَضَّرُّونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ
إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْلِغُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ
قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي يُنْجِي وَيُمْسِكُ وَلَهُ أَسْرَافُ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

1 इस से अभिप्राय वह अकाल है जो मक्का के काफिरों पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा के कारण आ पड़ा था। (देखिये, बुखारी: 4823)

2 कड़ी यातना से अभिप्राय परलोक की यातना है।

3 अर्थात् प्रत्येक भलाई से।

4 सत्य को सुनने-देखने और उस पर विचार कर के उसे स्वीकार करने के लिये।

81. बल्कि उन्होंने ने वही बात कही जो अगलों ने कही।

82. उन्होंने ने कहा: क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी तथा हड्डियाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर अवश्य जीवित किये जायेंगे?

83. हम को तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले यही वचन दिया जा चुका है, यह तो बस अगलों की कल्पित कथायें हैं।

84. (हे नबी!) उन से कहो: किस की है धरती और जो उस में है, यदि तुम जानते हो?

85. वे कहेंगे कि अल्लाह की। आप कहिये: फिर तुम क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

86. आप पूछिये कि कौन है सातों आकाशों का स्वामी तथा महा सिंहासन का स्वामी?

87. वे कहेंगे: अल्लाह है। आप कहिये: फिर तुम उस से डरते क्यों नहीं हो?

88. आप उन से कहिये कि किस के हाथ में है प्रत्येक वस्तु का अधिकार? और वह शरण देता है और उसे कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम ज्ञान रखते हो?

89. वे अवश्य कहेंगे कि (यह सब गुण) अल्लाह ही के हैं। आप कहिये: फिर तुम पर कहाँ से जादू^[1] हो जाता है?

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾

قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ أَأَنبَعُوثُ ۚ ﴿٨٢﴾

لَقَدْ وَعدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُهُمْ هَٰذَا مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾

قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْعَرُونَ ﴿٨٩﴾

1 अर्थात् जब यह मानते हो कि सब अधिकार अल्लाह के हाथ में है और शरण भी

90. बल्कि हम ने उन्हें सत्य पहुँचा दिया है, और निश्चय यही मिथ्यावादी हैं।

91. अल्लाह ने नहीं बनायी है अपनी कोई संतान, और न उस के साथ कोई अन्य पूज्य है। यदि ऐसा होता तो प्रत्येक पूज्य अलग हो जाता अपनी उत्पत्ति को ले कर, और एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ता। पवित्र है अल्लाह उन बातों से जो यह लोग बनाते हैं।

92. वह परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्यक्ष (खुले) का ज्ञानी है, तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे करते हैं।

93. (हे नबी!) आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! यदि तू मुझे वह दिखाये जिस की उन्हें धमकी दी जा रही है।

94. तो मेरे पालनहार! मुझे इन अत्याचारियों में सम्मिलित न करना।

95. तथा वास्तव में हम आप को उसे दिखाने पर जिस की उन्हें धमकी दे रहे हैं अवश्य सामर्थ्यवान हैं।

96. (हे नबी!) आप दूर करें उस (व्यवहार) से जो उत्तम हो बुराई को। हम भली भाँति अवगत हैं उन बातों से जो वे बनाते हैं।

97. तथा आप प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार! मैं तेरी शरण माँगता हूँ, शैतानों की शंकाओं से।

بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٩٠﴾

مَا اخْتَفَا اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنَ الذَّوْلِ إِذْ أَنْشَبَ كُلَّ الْوَلَدِ مَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٩١﴾

عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٩٢﴾

قُلْ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ يَأْتِيَ عَذَابُكَ ﴿٩٣﴾

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾

وَإِنَّا عَلَى أَنْ نُثَبِّتَ مَا نَعُودُ هُمْ أَقْدَرُونَ ﴿٩٥﴾

إِذْ كُنَّا بِأَلْفَيْنِ مِنْ أَحْسَنِ السَّيِّئَةِ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾

वही देता है तो फिर उस के साझी कहां से आ गये। और उन्हें कहां से अधिकार मिल गया?

98. तथा मैं तेरी शरण माँगता हूँ, मेरे पालनहार! कि वह मेरे पास आयें।

99. यहाँ तक कि जब उन में किसी की मौत आने लगे तो कहता है: मेरे पालनहार! मुझे (संसार में) वापिस कर दे।^[1]

100. संभवतः मैं अच्छा कर्म करूँगा, उस (संसार में) जिसे छोड़ आया हूँ। कदापि ऐसा नहीं होगा। वह केवल एक कथन है जिसे वह कह रहा^[2] है। और उन के पीछे एक आड़^[3] है उन के पुनः जीवित किये जाने के दिन तक।

101. तो जब नरसिंघा में फूँक दिया जायेगा, तो कोई संबंध नहीं होगा उन के बीच उस^[4] दिन और न वे एक दूसरे को पूछेंगे।

102. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे, वही सफल होने वाले हैं।

103. और जिस के पलड़े हल्के होंगे, तो उन्होंने ने ही स्वयं को क्षतिग्रस्त कर लिया, जो नरक में सदावासी होंगे।

104. झुलस देगी उन के चेहरों को अग्नि तथा उस में उन के जबड़े (झुलस कर) बाहर निकले होंगे।

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۝

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۝

لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۝

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝

تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ۝

1 यहाँ मरण के समय काफिर की दशा को बताया जा रहा है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् उस के कथन का कोई प्रभाव नहीं होगा।

3 आड़ जिस के लिये बर्ज़ख़ शब्द आया है, उस अवधि का नाम है जो मृत्यु तथा प्रलय के बीच होगी।

4 अर्थात् प्रलय के दिन उस दिन भय के कारण सब को अपनी चिन्ता होगी।

105. (उन से कहा जायेगा): क्या जब मेरी आयतें तुम्हें सुनायी जाती थीं तो तुम उन को झुठलाते नहीं थे?
106. वे कहेंगे: हमारे पालनहार! हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया^[1], और वास्तव में हम कुपथ थे।
107. हमारे पालनहार! हमें इस से निकाल दे, यदि अब हम ऐसा करें तो निश्चय हम अत्याचारी होंगे।
108. वह (अब्लाह) कहेगा: इसी में अपमानित हो कर पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।
109. मेरे भक्तों में एक समुदाय था जो कहता था कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये। तू हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर, और तू सब दयावानों से उत्तम है।
110. तो तुम ने उन का उपहास किया, यहाँ तक कि तुम को मेरी याद भुला दी, और तुम उन पर हँसते रहे।
111. मैं ने उन को आज बदला (प्रतिफल) दे दिया है उन के धैर्य का, वास्तव में वही सफल हैं।
112. (अब्लाह) उन से कहेगा: तुम धरती में कितने वर्ष रहे?
113. वे कहेंगे: हम एक दिन या दिन के कुछ भाग रहे। तो गणना करने वालों से पूछ लें।

أَلَمْ تَكُنْ إِذْ نُتِلَىٰ عَلَيْكُمْ فَلْتَنَّمُ بِهَا
كَاذِبُونَ ﴿١٠٥﴾

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا
ضَالِّينَ ﴿١٠٦﴾

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ﴿١٠٧﴾

قَالَ اسْكُتُوا إِنِّي لَا أَكَلِمُونَ ﴿١٠٨﴾

إِنَّهُ كَانَ قَوِيًّا مِّنْ عِبَادِي يَقُولُ رَبَّنَا
امْنَا فَاعْفُ رُبَّنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّاحِمِينَ ﴿١٠٩﴾

فَاتَّخَذَ ثَمُودُ مِصْرًا حَتَّىٰ اسْتَوَلَوْا عَلَىٰ
وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ تَضْحَكُونَ ﴿١١٠﴾

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا أَلَّهِمُّهُمْ
الْعَاقِبُونَ ﴿١١١﴾

قُلْ كَمْ لَكُمْ لِسْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدُ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

قَالُوا الْبَيْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضُ يَوْمٍ فَمَسَّلِ
الْعَاقِبِينَ ﴿١١٣﴾

1 अर्थात् अपने दुर्भाग्य के कारण हम ने तेरी आयतों को अस्वीकार कर दिया।

114. वह कहेगा: तुम नहीं रहे परन्तु बहुत कम! क्या ही अच्छा होता कि तुम ने (पहले ही) जान लिया^[1] होता।

قُلْ إِنْ أَيْسَّرْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لِّأُولَئِكَ لَنْ يُصَلُّوا
تَعْلَمُونَ ۝

115. क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये^[2] जाओगे?

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا
لَا تُرْجَعُونَ ۝

116. तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति। नहीं है कोई सच्चा पूज्य परन्तु वही महिमावान अर्श (सिंहासन) का स्वामी।

فَتَعَلَى اللَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝

117. और जो (भी) पुकारेगा अल्लाह के साथ किसी अन्य पूज्य को जिस के लिये उस के पास कोई प्रमाण नहीं, तो उस का हिसाब केवल उस के पालनहार के पास है, वास्तव में काफिर सफल नहीं^[3] होंगे।

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ
لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ
الْكُفْرُ ۝

118. तथा आप प्रार्थना करें कि मेरे पालनहार! तू क्षमा कर तथा दया कर, और तू ही सब दयावानों से उत्तम (दयावान्) है।

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّاحِمِينَ ۝

1 आयत का भावार्थ है कि यदि तुम यह जानते कि परलोक का जीवन स्थायी है तथा संसार का आस्थायी तो आज तुम भी ईमान वालों के समान अल्लाह की आज्ञा का पालन कर के सफल हो जाते, और अवज्ञा तथा दुराचार न करते।

2 अर्थात् परलोक में।

3 अर्थात् परलोक में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी, और न मुक्ति ही मिलेगी।

सूरह नूर - 24

سُورَةُ النُّورِ

सूरह नूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 64 आयतें हैं।

- इस सूरह में व्यभिचार और उस का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है।
- मुनाफिकों को झूठे कलंक घड़ कर समाज में फैलाने पर चेतावनी दी गयी है।
- मान मर्यादा की रक्षा पर बल दिया गया है।
- अब्बाह की राह में चलने और उस के इन्कार पर लाभ और हानि का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को अधिकार प्रदान करने की शुभ सूचना दी गयी है।
- घरेलू आदाब बताये गये हैं।
- और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आदर करने पर बल दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. यह एक सूरह है जिसे हम ने उतारा तथा अनिवार्य किया है। और उतारी हैं इस में बहुत सी खुली आयतें (निशानियाँ), ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾

2. व्यभिचारिणी तथा^[1] व्यभिचारी दोनों

الرَّائِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا

- 1 व्यभिचार से संबंधित आरंभिक आदेश सूरह निसा, आयत 15 में आ चुका है। अब यहाँ निश्चित रूप से उस का दण्ड नियत कर दिया गया है। आयत में वर्णित सौ कोड़े दण्ड अविवाहित व्यभिचारी तथा व्यभिचारिणी के लिये हैं। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अविवाहित व्यभिचारी को सौ कोड़े मारने का और एक वर्ष देश से निकाल देने का आदेश देते थे। (सहीह बुखारी, 6831)

में से प्रत्येक को सौ कोड़े मारो, और तुम्हें उन दोनों पर कोई तरस न आये अल्लाह के धर्म के विषय^[1] में, यदि तुम अल्लाह तथा अन्तिम दिन पर ईमान (विश्वास) रखते हो। और चाहिये कि उन के दण्ड के समय उपस्थित रहे ईमान वालों का एक^[2] गिरोह।

3. व्यभिचारी^[3] नहीं विवाह करता परन्तु व्यभिचारिणी अथवा मिश्रणवादिनी से, और व्यभिचारिणी नहीं विवाह करती परन्तु व्यभिचारी अथवा मिश्रणवादी से और इसे हराम (अवैध) कर दिया गया है ईमान वालों पर।

مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَئِذَا هَذَا عَذَابُهُمَا طَائِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ①

الَّذِينَ لَا يَنْكِحُوا الْأَزْوَاجَ أَوْ مُشْرِكَةٌ
وَالْأَزْوَاجُ لَا يَنْكِحُهَا الْأَزْوَاجُ أَوْ مُشْرِكٌ
وَحُزْمٌ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ②

किन्तु यदि दोनों में से कोई विवाहित है तो उस के लिये रज्म (पत्थरों से मार डालने) का दण्ड है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझ से (शिक्षा) ले लो, मुझ से (शिक्षा) ले लो। अल्लाह ने उन के लिये राह बना दी। अविवाहित के लिये सौ कोड़े और विवाहित के लिये रज्म है। (सहीह मुस्लिम, 1690, अबूदाऊद, 4418) इत्यादि।

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने युग में रज्म का दण्ड दिया जिस के सहीह हदीसों में कई उदाहरण हैं। और खुलफ़ाये राशिदीन के युग में भी यही दण्ड दिया गया। और इस पर मुस्लिम समुदाय का इज्मा (मतैक्य) है।

व्यभिचार ऐसा घोर पाप है जिस से परिवारिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। पति-पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास नहीं रह जाता। और यदि कोई शिशु जन्म ले तो उस के पालन पोषण की भीषण समस्या सामने आती है। इसी लिये इस्लाम ने इस का घोर दण्ड रखा है ताकि समाज और समाज वालों को शान्त और सुरक्षित रखा जाये।

- 1 अर्थात् दया भाव के कारण दण्ड देने से न रुक जाओ।
- 2 ताकि लोग दण्ड से शिक्षा लें।
- 3 आयत का अर्थ यह है कि साधारणतः कुकर्म विवाह के लिये अपने ही जैसों की ओर आकर्षित होते हैं। अतः व्यभिचारिणी व्यभिचारी से ही विवाह करने में रुचि रखती हैं। इस में ईमान वालों को सतर्क किया गया है कि जिस प्रकार व्यभिचार महा पाप है उसी प्रकार व्यभिचारियों के साथ विवाह संबन्ध स्थापित करना भी निषेध है। कुछ भाष्यकारों ने यहाँ विवाह का अर्थ व्यभिचार लिया है।

4. तथा जो आरोप^[1] लगायें व्यभिचार का सतवन्ती स्त्रियों को, फिर न लायें चार साक्षी तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और न स्वीकार करो उन का साक्ष्य कभी भी, और वह स्वयं अवैज्ञाकारी है।
5. परन्तु जिन्होंने क्षमा माँग ली इस के पश्चात्, तथा अपना सुधार कर लिया, तो निःसंदेह अल्लाह अति क्षमी दयावान्^[2] है।
6. और जो व्यभिचार का आरोप लगाये अपनी पत्नियों पर, और उन के साक्षी न हों^[3] परन्तु वह स्वयं, तो चार साक्ष्य अल्लाह की शपथ लेकर देना है कि वास्तव में वह सच्चा है।^[4]
7. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार है यदि वह झूठा हो।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَا يَأْتُوا
بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا
بِالشُّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِندَ اللَّهِ
الضَّالُّونَ ﴿٤﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥﴾

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ
شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ
شَهْدَتُهُ بِأَلَمِهِ إِنَّهُ لِمِنَ الضَّالِّينَ ﴿٦﴾

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ
الْكَاذِبِينَ ﴿٧﴾

1 इस में किसी पवित्र पुरुष या स्त्री पर व्यभिचार का कलंक लगाने का दण्ड बताया गया है। कि जो पुरुष अथवा स्त्री किसी पर कलंक लगाये, तो वह चार ऐसे साक्षी लाये जिन्होंने उन को व्यभिचार करते अपनी आँखों से देखा हो। और यदि वह प्रमाण स्वरूप चार साक्षी न लायें तो उस के तीन आदेश हैं:

(क) उसे अस्सी कोड़े लगाये जायें।

(ख) उस का साक्ष्य कभी स्वीकार न किया जाये।

(ग) वह अल्लाह तथा लोगों के समक्ष दुराचारी है।

2 सभी विद्वानों का मतैक्य है कि क्षमा याचना से उसे दण्ड (अस्सी कोड़े) से क्षमा नहीं मिलेगी। बल्कि क्षमा के पश्चात् वह भी अवैज्ञाकारी नहीं रह जायेगा, तथा उस का साक्ष्य स्वीकार किया जायेगा। अधिकतर विद्वानों का यही विचार है।

3 अर्थात् चार साक्षी।

4 अर्थात् आरोप लगाने में।

8. और स्त्री से दण्ड^[1] इस प्रकार दूर होगा कि वह चार बार साक्ष्य दे अल्लाह की शपथ ले कर कि निःसंदेह वह (पति) मिथ्यावादियों में से है।
9. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की धिक्कार हो यदि वह सच्चा^[2] हो।
10. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और दया न होती, और यह कि अल्लाह अति क्षमी तत्वज्ञ है (तो समस्या बढ़ जाती)।
11. वास्तव^[3] में जो कलंक घड़ लाये हैं

وَيَذَرُوهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ
شَهَادَاتٍ بِاللَّهِ أَنَّهُ لَيْسَ بِالْكَافِرِ ۖ

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَ ۚ إِنَّ كَانَ مِنَ
الضَّالِّينَ ۖ

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ
حَكِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِمَّنْكُمْ ۚ

1 अर्थात् व्यभिचार का दण्ड।

2 शरीअत की परिभाषा में इसे "लिआन" कहा जाता है। यह लिआन न्यायालय में अथवा न्यायालय के अधिकारी के समक्ष होना चाहिये। लिआन की माँग पुरुष की ओर से भी हो सकती है और स्त्री की ओर से भी। लिआन के पश्चात् दोनों सदा के लिये अलग हो जायेंगे। लिआन का अर्थ होता है: धिक्कार। और इस में पति और पत्नी दोनों अपने को मिथ्यावादी होने की अवस्था में धिक्कार का पात्र स्वीकार करते हैं। यदि पति अपनी पत्नि के गर्भ का इन्कार करे तब भी लिआन होता है। (बुखारी: 4746, 4747, 4748)

3 यहाँ से आयत 26 तक उस मिथ्यारोपण का वर्णन किया गया है जो मुनाफ़िकों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) पर बनी मुस्तलिक के युद्ध से वापसी के समय लगाया था। इस युद्ध से वापसी के समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक स्थान पर पड़ाव किया। अभी कुछ रात रह गयी थी कि यात्रा की तय्यारी होने लगी। उस समय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) उस स्थान से दूर शौच के लिये गई, और उन का हार टूट कर गिर गया। वह उस की खोज में रह गयी। सेवकों ने उन की पालकी को सवारी पर यह समझ कर लाद दिया कि वह उस में होंगी। वह आई तो वहीं लेट गयी कि कोई अवश्य खोजने आयेगा। थोड़ी देर में सफ़्वान पुत्र मोअत्तल (रज़ियल्लाहु अन्हु) जो यात्रियों के पीछे उन की गिरी-पड़ी चीज़ों को संभालने का काम करते थे वहाँ आ गये। और इन्ना लिअल्लाहु पड़ी, जिस से आप जाग गयी। और उन को पहचान लिया। क्योंकि उन्होंने पर्दे का आदेश आने से पहले उन्हें देखा था। उन्होंने आप

तुम्हारे ही भीतर का एक गिरोह है, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा^[1] है। उन में से प्रत्येक के लिये जितना भाग लिया उतना पाप है और जिस ने भार लिया उस के बड़े भाग^[2] का तो उस के लिये बड़ी यातना है।

12. क्यों जब उसे ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है?

13. वे क्यों नहीं लाये इस पर चार साक्षी? (जब साक्षी नहीं लाये) तो निःसंदेह अब्बाह के समीप वही झूठे है।

14. और यदि तुम पर अब्बाह का अनुग्रह और दया न होती लोक तथा परलोक में, तो जिन बातों में तुम पड़ गये उन के बदले तुम पर कड़ी यातना आ जाती।

15. जब कि (बिना सोचे) तुम अपनी जुबानों से इसे लेने लगे, और अपने मुखों से वह बात कहने लगे जिस का तुम्हें कोई ज्ञान न था, तथा तुम इसे

لَا تَحْسِبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لَئِنْ اُمِرْتُمْ
مِنْهُمْ تَاكْتَسِبُ مِنَ الْاِثْمِ الَّذِي تُوَلُّوْنَ كِبْرًا
مِّنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

لَوْلَا اِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ
بِاَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا اِفْكٌ مُّبِينٌ ۝

لَوْلَا جَاءَتْهُ عَلَيْهِ اَرْبَعَةٌ شَاهِدَةٌ وَلَوْلَا
بِالشَّهَادَةِ قَالُوْا لَكَ عِنْدَ اللّٰهِ الْكُفْرُ بَوْنٌ ۝

لَوْلَا فَضَّلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ
لَتَكُنَّ فِيْ مَا اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

اِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِالْهَيْبَةِ وَقُلُّوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَا لَيْسَ
لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسِبُوْنَهُ هَيِّئًا وَهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ۝

को अपने ऊँट पर सवार किया और स्वयं पैदल चल कर यात्रियों से जा मिले। द्विधावादियों ने इस अवसर को उचित जाना, और उन के मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा कि यह एकांत अकारण नहीं था। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को सफ़वान के साथ कलंकित कर दिया। और उस के षड्यंत्र में कुछ सच्चे मुसलमान भी आ गये। इस का पूरा विवरण हदीस में मिलेगा। (देखिये: सहीह बुखारी, 4750)

1 अर्थ यह है कि इस दुख पर तुम्हें प्रतिफल मिलेगा।

2 इस से तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन उबय्य द्विधावादियों का मुखिया है।

सरल समझ रहे थे, जब कि अल्लाह के समीप वह बहुत बड़ी बात थी।

16. और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना, तो कह दिया कि हमारे लिये योग्य नहीं कि यह बात बोलो? हे अल्लाह! तू पवित्र है! यह तो बहुत बड़ा आरोप है।

17. अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है कि पुनः कभी इस जैसी बात न कहना। यदि तुम ईमान वाले हो।

18. और अल्लाह उजागर कर रहा है तुम्हारे लिये आयतों (आदेशों) को। तथा अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

19. जो लोग चाहते हैं कि उन में अशलीलता¹ फैले जो ईमान लाये हैं, तो उन के लिये दुःखदायी यातना है लोक तथा परलोक में, तथा अल्लाह जानता² है और तुम नहीं जानते।

20. और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह तथा उस की दया न होती (तो तुम पर यातना आ जाती)। और वास्तव में अल्लाह अति करुणामय दयावान् है।

21. हे ईमान वालो! शैतान के पदचिन्हों पर न चलो, और जो उस के पदचिन्हों पर चलेगा, तो वह अशलील कार्य तथा बुराई का ही आदेश देगा, और यदि तुम पर अल्लाह का अनुग्रह और उस की दया

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ

يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِلْبِئْسَةِ أَبَدًا إِنَّ كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ

وَيَسِّرُ اللَّهُ لَكُمْ الْأَيْتَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ وَفُورٌ رَحِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا زَكَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

1 अशलीलता, व्याभिचार और व्याभिचार के निर्मूल आरोप की चर्चा दोनों को कहा गया है।

2 उन के मिथ्यारोपण को।

न होती, तो तुम में से कोई पवित्र कभी नहीं होता। परन्तु अब्बाह पवित्र करता है जिसे चाहे, और अब्बाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

22. और न शपथ लें^[1] तुम में से धनी और सुखी कि नहीं देंगे समीपवर्तियों तथा निर्धनों को और जो हिज्रत कर गये अब्बाह की राह में, और चाहिये कि क्षमा कर दें तथा जाने दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अब्बाह तुम्हें क्षमा कर दे, और अब्बाह अति क्षमी सहनशील है।

23. जो लोग आरोप लगाते हैं सतवन्ती भोली-भाली ईमान वाली स्त्रियों को, वह धिक्कार दिये गये लोक तथा परलोक में और उन्हीं के लिये बड़ी यातना है।

24. जिस दिन साक्ष्य (गवाही) देंगी उन की जीभें तथा उन के हाथ और उन के पैर उन के कर्मों की।

25. उस दिन अब्बाह उन को उन का पूरा न्यायपूर्वक बदला देगा, तथा वह जान लेंगे कि अब्बाह ही सत्य है,

وَلَا يَأْكُلُ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولَى الْقُرْبَىٰ وَالسَّيِّئِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْفَاضِلَاتِ الْمُسْلِمَاتِ لَعْنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

يَوْمَ يَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

يَوْمَ يَنْفَعُ يَتُوبُهُمْ اللَّهُ وَيُنْفَعُ الْحَقُّ وَلَيَعْلَمُونَ ۝
إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ۝

1 आदरणीय मिस्तह पुत्र उसासा (रज़ियल्लाहु अन्हु) निर्धन, और आदरणीय अबूबक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के समीपवर्ती थे। और वह उन की सहायता किया करते थे। वह भी आदरणीय आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विरुद्ध आक्षेप में लिप्त हो गये थे। अतः आदरणीय आइशा के निर्दोष होने के बारे में आयतें उतरने के पश्चात् आदरणीय अबूबक्र ने शपथ ली कि अब वह मिस्तह की कोई सहायता नहीं करेंगे। उसी पर यह आयत उतरी। और उन्होंने ने कहा: निश्चय मैं चाहता हूँ कि अब्बाह मुझे क्षमा कर दे। और पुनः उन की सहायता करने लगे। (सहीह बुखारी, 4750)

(सच्च को) उजागर करने वाला।

26. अपवित्र स्त्रियाँ अपवित्र पुरुषों के लिये है, तथा अपवित्र पुरुष अपवित्र स्त्रियों के लिये, और पवित्र स्त्रियाँ पवित्र पुरुषों के लिये है, तथा पवित्र पुरुष पवित्र स्त्रियों के^[1] लिये। वही निर्दोष है उन बातों से जो वह कहते हैं। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

27. हे ईमान वालो!^[2] मत प्रवेश करो किसी घर में अपने घरों के सिवा यहाँ तक कि अनुमति ले लो, और उन के वासियों को सलाम कर^[3] लो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है, ताकि तुम याद रखो।

28. और यदि उन में किसी को न पाओ तो उन में प्रवेश न करो, यहाँ तक कि तुम्हें अनुमति दे दी जाये, और यदि तुम से कहा जाये कि वापिस हो जाओ तो वापिस हो जाओ, यह तुम्हारे लिये अधिक पवित्र है, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो भली-भाँति जानने वाला है।

29. तुम पर कोई दोष नहीं है कि प्रवेश

الْمُحْصَنَاتِ وَالْمُحْصِنِينَ وَالطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبَاتِ أُولَئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسَأَلَوا رِجَالَهُمْ وَعَلَىٰ أَهْلِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ

1 इस में यह संकेत है कि जिन पुरुषों तथा स्त्रियों ने आदरणीय आइशा (रजियल्लाहु अन्हा) पर आरोप लगाया वह मन के मलीन तथा अपवित्र हैं।

2 सूरह के आरंभ में यह आदेश दिये गये थे कि समाज में कोई बुराई हो जाये तो उस का निवारण कैसे किया जाये? अब वह आदेश दिये जा रहे हैं जिन से समाज में बुराईयों को जन्म लेने ही से रोक दिया जाये।

3 हदीस में इस का नियम यह बताया गया है कि (द्वार पर दायें या बायें खड़े हो कर) सलाम करो। फिर कहो कि क्या भीतर आ जाऊँ? ऐसे तीन बार करो, और अनुमति न मिलने पर वापिस हो जाओ। (बुखारी, 6245, मुस्लिम, 2153)

करो निर्जन घरों में जिन में तुम्हारा सामान हो, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम बोलते हो और जो मन में रखते हो।

30. (हे नबी!) आप ईमान वालों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उन के लिये अधिक पवित्र है, वास्तव में अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ वह कर रहे हैं।

31. और ईमान वालियों से कहें कि अपनी आँखें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपनी शोभा^[1] का प्रदर्शन न करें सिवाय उस के जो प्रकट हो जाये। तथा अपनी ओढ़नियाँ अपने वक्षस्थलों (सीनों) पर डाली रहें। और अपनी शोभा का प्रदर्शन न करें, परन्तु अपने पतियों के लिये अथवा अपने पिताओं अथवा अपने ससुरों के लिये अथवा अपने पुत्रों^[2] अथवा अपने पति के पुत्रों के लिये अथवा अपने भाईयों^[3] अथवा भतीजों अथवा अपने भांजों के^[4] लिये अथवा अपनी स्त्रियों^[5] अथवा अपने

فِي مَآئِمَّتِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَدْرُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٣٠﴾

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكُمْ أَكْبَرُ لَعَلَّهُمْ يَخْتَفُونَ ﴿٣١﴾

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا يَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أُولَٰئِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ بَنِيهِنَّ أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ بَنَاتٍ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ الشَّيْبَعِينَ غَيْرَ أُولَىٰ إِلَٰهَةٍ مِنَ الرِّجَالِ أَوْ الْوَلَدِ الَّذِينَ لَهُمْ يَضَعُوا عَلَىٰ عَوَاتِقِ النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا إِنَّهُ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٢﴾

1 शोभा से तात्पर्य वस्त्र तथा आभूषण हैं।

2 पुत्रों में पौत्र तथा नाती परनाती सब सम्मिलित हैं, इस में सगे सौतीले का कोई अन्तर नहीं।

3 भाईयों में सगे और सौतीले तथा माँ जाये सब भाई आते हैं।

4 भतीजों और भांजों में उन के पुत्र तथा पौत्र और नाती सभी आते हैं।

5 अपनी स्त्रियों से अभिप्रेत मुस्लिम स्त्रियाँ हैं।

दास-दासियों अथवा ऐसे आधीन^[1] पुरुषों के लिये जो किसी और प्रकार का प्रयोजन न रखते हों, अथवा उन बच्चों के लिये जो स्त्रियों की गुप्त बातें न जानते हों और अपने पैर (धरती पर) मारती हुयी न चलें कि उस का ज्ञान हो जाये जो शोभा उन्हों ने छुपा रखी है। और तुम सब मिल कर अल्लाह से क्षमा माँगो, हे ईमान वालो! ताकि तुम सफल हो जाओ।

32. तथा तुम विवाह कर दो^[2] अपनों में से अविवाहित पुरुषों तथा स्त्रियों का, और अपने सदाचारी दासों और अपनी दासियों का, यदि वह निर्धन होंगे तो अल्लाह उन्हें धनी बना देगा अपने अनुग्रह से, और अल्लाह उदार सर्वज्ञ है।

33. और उन को पवित्र रहना चाहिये जो विवाह करने का सामर्थ्य नहीं रखते, यहाँ तक कि उन को धनी कर दे अल्लाह अपने अनुग्रह से। तथा जो स्वाधीनता लेख की माँग करें तुम्हारे दास-दासियों में से, तो तुम उन को लिख दो, यदि तुम उन में कुछ भलाई जानो^[3], और उन्हें अल्लाह के

وَأَكْمُوا الْأَيَّامَ مِنْكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ
وَأَمَّا كُمُورُكُمْ يَكُونُوا قَرَّاءَ يُفْنِيهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

وَلَيْسَ كَثِيفٌ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى
يُفْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ
مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَمَا لَيْتُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ
خَيْرًا آتَاؤُهُمْ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ وَلَا
تُكْرَهُوا قَاتِلِيكُمْ عَلَى الْبَغَاءِ إِنْ أَرَادَنْ مَخْصَنًا لَتَبْتَغُوا
عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ
مِنْ بَعْدِ الْكَرَاهِيهِمْ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

1 अर्थात् जो आधीन होने के कारण घर की महिलाओं के साथ कोई अनुचित इच्छा का साहस न कर सकेंगे। कुछ ने इस का अर्थ नपुंसक लिया है। (इब्ने कसीर) इस में घर के भीतर उन पर शोभा के प्रदर्शन से रोका गया है जिन से विवाह हो सकता है

2 विवाह के विषय में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है: "जो मेरी सुन्नत से विमुख होगा" वह मुझ से नहीं है। (बुखारी-5063 तथा मुस्लिम, 1020)

3 इस्लाम ने दास-दासियों की स्वाधीनता के जो साधन बनाये हैं उन में यह भी है कि वह कुछ धनराशि देकर स्वाधीनता लेख की माँग करें, तो यदि उन में इस

उस माल में से दो जो उस ने तुम्हें प्रदान किया है, तथा बाध्य न करो अपनी दासियों को व्यभिचार पर जब वे पवित्र रहना चाहती हैं^[1] ताकि तुम संसारिक जीवन का लाभ प्राप्त करो। और जो उन्हें बाध्य करेगा, तो अल्लाह उन के बाध्य किये जाने के पश्चात्^[2] अति क्षमी दयावान् है।

34. तथा हम ने तुम्हारी ओर खुली आयतें उतारी हैं और उन का उदाहरण जो तुम से पहले गुजर गये तथा आज्ञाकारियों के लिये शिक्षा।

35. अल्लाह आकाशों तथा धरती का^[3] प्रकाश है, उस के प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताखा हो जिस में दीप हो, दीप कांच के झाड़ में हो, झाड़ मोती जैसे चमकते तारे के

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَمَثَلًا مِنَ
الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مَثَلُ نُورِهِ كَمِثْقَا
فِيهَا مِصْبَاحٌ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ الزُّجَاجَةُ
كَأَنَّهُ كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ
زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ

धनराशि को चुकाने की योग्यता हो तो आयत में बल दिया गया है कि उन को स्वाधीनता-लेख दे दो।

- 1 अज्ञानकाल में स्वामी, धन अर्जित करने के लिये अपनी दासियों को व्यभिचार के लिये बाध्य करते थे। इस्लाम ने इस व्यवसाय को वर्जित कर दिया। हदीस में आया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम ने कुत्ते के मूल्य तथा वैश्या और ज्योतिषी की कमाई से रोक दिया। (बुखारी, 2237, मुस्लिम, 1567)
- 2 अर्थात् दासी से बल पूर्वक व्यभिचार कराने का पाप स्वामी पर होगा, दासी पर नहीं।
- 3 अर्थात् आकाशों तथा धरती की व्यवस्था करता और उन के वासियों को संमार्ग दर्शाता है। और अल्लाह की पुस्तक और उस का मार्ग दर्शन उस का प्रकाश है। यदि उस का प्रकाश न होता तो यह विश्व अन्धेरा होता। फिर कहा कि उस की ज्योति ईमान वालों के दिलों में ऐसे है जैसे किसी ताखा में अति प्रकाशमान दीप रखा हो, जो आगामी वर्णित गुणों से युक्त हो। पूर्वी तथा पश्चिमी न होने का अर्थ यह है कि उस पर पूरे दिन धूप पड़ती हो जिस के कारण उस का तेल अति शुद्ध तथा साफ हो।

समान हो, वह ऐसे शुभ जैतून के वृक्ष के तेल से जलाया जाता हो जो न पूर्वी हो और न पश्चिमी, उस का तेल समीप (संभव) है कि स्वयं प्रकाश देने लगे, यद्यपि उसे आग न लगे। प्रकाश पर प्रकाश है, अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखा देता है जिसे चाहे। और अल्लाह लोगों को उदाहरण दे रहा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।

36. (यह प्रकाश) उन घरों^[1] में है अल्लाह ने जिन्हें ऊँचा करने और उन में अपने नाम की चर्चा करने का आदेश दिया है, उस की महिमा का गान करते हैं जिन में प्रातः तथा संध्या।

37. ऐसे लोग जिन्हें अचेत नहीं करता व्यापार तथा सौदा अल्लाह के स्मरण तथा नमाज़ की स्थापना करने और ज़कात देने से। वह उस दिन^[2] से डरते हैं जिस में दिल तथा आँखें उलट जायेंगी।

38. ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सर्वोत्तम कर्मों का और उन्हें अधिक प्रदान करे अपने अनुग्रह से। और अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत जीविका देता है।

39. तथा जो काफिर^[3] हो गये उन के

وَلَوْلَمْ تَسْسِئْهُ نَارًا تَوْرَعَلْ نُورٌ يَهْدِي اللَّهُ لِلنُّورِ
مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

فِي بُيُوتِ الَّذِينَ أُذِنَ اللَّهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ
يَسْتَعِزُّونَ فِيهَا بِالْعُلُوِّ وَالْأَصْلَالِ

وَجَالٍ لَا تُلْهِهِمْ عِبَادَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ
الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ
الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ

لِيَجْزِيَ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ
وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا الْعَمَلُ كَسْرًا بِمَقْعَةٍ تُخْصِيهِ

1 इस से तात्पर्य मस्जिदें हैं।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

3 आयत का अर्थ यह है कि काफिरों के कर्म, अल्लाह पर ईमान न होने के कारण अल्लाह के समक्ष व्यर्थ हो जायेंगे।

कर्म उस चमकते सुराब^[1] के समान हैं जो किसी मैदान में हो, जिसे प्यासा पानी समझता हो। परन्तु जब उस के पास आये तो कुछ न पाये, और वहाँ अल्लाह को पाये जो उस का पूरा हिसाब चुका दे, और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

الظَّالِمَانُ مَاءٌ حَقٌّ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ جَدُّهُ قَوْمَهُ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

40. अथवा उन अन्धकारों के समान है जो किसी गहरे सागर में हो और जिस पर तरंग छायी हो जिस के ऊपर तरंग, उस के ऊपर बादल हो, अन्धकार पर अन्धकार हो, जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख सके। और अल्लाह जिसे प्रकाश न दे उस के लिये कोई प्रकाश^[2] नहीं।

أَوْ كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّغِي يَخِفُّهُ مَوْجٌ مِّنْ قَوْمٍ مَّوْجٌ مِّنْ قَوْمٍ سَحَابٌ لَّظُلُمَاتٍ بَعْضُهُمْ قَوْمٌ يَّبْغُونَ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكُنْ يَرَاهُمْ وَمَنْ يُجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۝

41. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही की पवित्रता का गान कर रहे हैं जो आकाशों तथा धरती में है तथा पंख फैलाये हुये पक्षी? प्रत्येक ने अपनी बंदगी तथा पवित्रता गान को जान लिया^[3] है, और अल्लाह भली-भाँति जानने वाला है जो बे कर रहे हैं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْمِعُهُ مَنِ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْكَلِمُ مَضْمُونٌ كُلُّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

42. अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। और अल्लाह ही की

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

1 कड़ी गर्मी के समय रेगिस्तान में जो चमकती हुई रेत पानी जैसी लगती है उसे सुराब कहते हैं।

2 अर्थात् काफिर, अविश्वास और कुकर्मों के अन्धकार में घिरा रहता है। और यह अन्धकार उसे मार्ग दर्शन की ओर नहीं आने देते।

3 अर्थात् तुम भी उस की पवित्रता का गान गाओ। और उस की आज्ञा का पालन करो।

और फिर कर^[1] जाना है।

43. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को चलाता है फिर उसे परस्पर मिला देता है, फिर उसे घंघोर मेघ बना देता है, फिर आप देखते हैं बूंद को उस के मध्य से निकलती हुयी, और वही पर्वतों जैसे बादल से ओले बरसाता है, फिर जिस पर चाहे आपदा उतारता है और जिस से चाहे फेर देता है। उस की बिजली की चमक संभव होता है कि आँखों को उचक ले।

44. अल्लाह ही रात और दिन को बदलता^[2] है। बेशक इस में बड़ी शिक्षा है समझ-बूझ वालों के लिये।

45. अल्लाह ही ने प्रत्येक जीव धारी को पानी से पैदा किया है। तो उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं। और कुछ दो पैर पर, तथा कुछ चार पैर पर चलते हैं। अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

46. हम ने खुली आयतें (कुरआन) अवतरित कर दी है। और अल्लाह जिसे चाहता है सुपथ दिखा देता है।

47. और^[3] वे कहते हैं कि हम अल्लाह

الَّذِينَ أَنْزَلَ اللَّهُ بِرُوحِنَا مَزِيدًا مِمَّا يُوْفَىٰ بِرَبِّهِ ثُمَّ يَجْعَلُهُ
رُكُومًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ
السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ
يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سَنَاقِرُهُ
يَذْهَبَ بِالْأَبْصَارِ ۝

يَقْلِبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي
الْأَبْصَارِ ۝

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ
بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي
عَلَىٰ أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

2 अर्थात् रात के पश्चात् दिन और दिन के पश्चात् रात होती है। इसी प्रकार कभी दिन बड़ा रात छोटी, और कभी रात बड़ी दिन छोटा होता है।

3 यहाँ से मुनाफ़िकों (द्विधावादियों) की दशा का वर्णन किया जा रहा है, तथा

तथा रसूल पर ईमान लाये, और हम आज्ञाकारी हो गये, फिर मुँह फेर लेता है उन में से एक गिरोह इस के पश्चात् वास्तव में वे ईमान वाले हैं ही नहीं।

48. और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर, ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का), तो अकस्मात् उन में से एक गिरोह मुँह फेर लेता है।

49. और यदि उन्हीं को अधिकार पहुँचता हो, तो आप के पास सिर झुकाये चले आते हैं।

50. क्या उन के दिलों में रोग है अथवा द्विधा में पड़े हुये हैं, अथवा डर रहे हैं कि अल्लाह अत्याचार कर देगा उन पर और उस के रसूल? बल्कि वही अत्याचारी हैं।

51. ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जायें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें, तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया, और वही सफल होने वाले हैं।

52. तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें, और उस की (यातना से) डरें, तो वही सफल होने वाले हैं।

يَقُولُ فَرَيْقٌ مِنْهُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٨﴾

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٩﴾

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا اللَّهَ مِنْ عَيْنٍ ﴿٥٠﴾

أَفَلَمْ يَكُونُوا يَحْقُقُونَ أَنْ يُخَيِّنَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولَهُ نَعْلَمُ لَهُمُ الْكُفْرَ ﴿٥١﴾

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥٢﴾

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهُ فَإِنَّكَ مِنْ الْفَائِزِينَ ﴿٥٣﴾

यह बताया जा रहा है कि ईमान के लिये अल्लाह के सभी आदेशों तथा नियमों का पालन आवश्यक है। और कुर्आन तथा सुन्नत के निर्णय का पालन करना ही ईमान है।

53. और इन (द्विधावादियों) ने बल पूर्वक शपथ ली कि यदि आप उन्हें आदेश दें तो अवश्य वह (घरों से) निकल पड़ेंगे। उन से कह दें: शपथ न लो। तुम्हारे आज्ञापालन की दशा जानी पहचानी है। वास्तव में अल्लाह तुम्हारे कर्मों से सूचित है।

54. (हे नबी!) आप कह दें कि अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, और यदि वह विमुख हों, तो आप का कर्तव्य केवल वही है जिस का भार आप पर रखा गया है, और तुम्हारा वह है जिस का भार तुम पर रखा गया है। और रसूल का दायित्व केवल खुला आदेश पहुँचा देना है।

55. अल्लाह ने वचन^[1] दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे, तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसंद किया है, तथा उन (की दशा) को उन के भय के पश्चात् शान्ति में बदल देगा, वह मेरी इबादत (बंदना) करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें और जो कुफ़र करें इस के

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ
لَيُخْرِجُنَّ قُلُوبُهُمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ قُلُوبُهُمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٣﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ كُنُوا
فِرَاقًا عَلَيْكُمْ مَا جِئْتُ وَعَلَيْكُمْ مَا جِئْتُ وَإِنْ
تُطِيعُوا تَهْتَدُوا وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَىٰ لَهُمْ
وَلَيَكْبِلَنَّ لَهُم مِّنْ بَعْدِهِمْ آمَنًا يَّعْبُدُونَ مِنِّي
لَا يَكْفُرُونَ بِي سَيِّئًا وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

1 इस आयत में अल्लाह ने जो वचन दिया है, वह उस समय पूरा हो गया जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायियों को जो काफिरों से डर रहे थे उन की धरती पर अधिकार दे दिया। और इस्लाम पूरे अरब का धर्म बन गया और यह वचन अब भी है, जो ईमान तथा सत्कर्म के साथ प्रतिबंधित है।

पश्चात् तो बही उल्लंघनकारी है।

56. तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो, तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुम पर दया की जाये।

57. और (हे नबी!) कदापि आप न समझें कि जो काफ़िर हो गये, वे (अल्लाह को) धरती में विवश कर देने वाले हैं। और उन का स्थान नरक है और वह बुरा निवास स्थान है।

58. हे ईमान वालो! तुम^[1] से अनुमति लेना आवश्यक है तुम्हारे स्वामित्व के दास-दासियों को और जो तुम में से (अभी) युवा अवस्था को न पहुँचे हों तीन समय: फ़ज्र (भोर) की नमाज़ से पहले, और जिस समय तुम अपने वस्त्र उतारते हो दोपहर में, तथा इशा (रात्रि) की नमाज़ के पश्चात्। यह तीन (एकान्त) पर्दे के समय है तुम्हारे लिये। (फिर) तुम पर और उन पर कोई दोष नहीं है इन के पश्चात्, तुम अधिकतर आने-जाने वाले हो एक दूसरे के पास। अल्लाह तुम्हारे लिये आदेशों का वर्णन कर रहा है। और अल्लाह सर्वज्ञ निपुण है।

59. और जब तुम में से बच्चे युवा अवस्था को पहुँचें, तो वह भी वैसे ही अनुमति

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا الرُّسُولَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَمَا أُولَئِكَ إِلَّا فِي النَّارِ وَلَيْسَ الْمَصِيرُ ﴿٥٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَ الَّذِينَ مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ
مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ
ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهْرِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ
ثَلَاثَ غُرُوبٍ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ
جُنَاحٌ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا أَنْ تَعْصُوا عَلَى
بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ

1 आयत: 27 में आदेश दिया गया है कि जब किसी दूसरे के यहाँ जाओ तो अनुमति ले कर घर में प्रवेश करो। और यहाँ पर आदेश दिया जा रहा है कि स्वयं अपने घर में एक-दूसरे के पास जाने के लिये भी अनुमति लेना तीन समय में आवश्यक है।

लें जैसे उन से पूर्व के (बड़े) अनुमति माँगते हैं, इसी प्रकार अब्बाह उजागर करता है तुम्हारे लिये अपनी आयतों को, तथा अब्बाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।

60. तथा जो बूढ़ी स्त्रियाँ विवाह की आशा न रखती हों, तो उन पर कोई दोष नहीं कि अपनी (पर्दे की) चादरें उतार कर रख दें, प्रतिबंध यह है कि अपनी शोभा का प्रदर्शन करने वाली न हों, और यदि सुरक्षित रहें^[1] तो उन के लिये अच्छा है।

61. अन्धे पर कोई दोष नहीं है और न लंगड़े पर कोई दोष^[2] है, और न रोगी पर कोई दोष है और न स्वयं तुम पर कि खाओ अपने घरों^[3] से अथवा अपने बापों के घरों से अथवा अपनी माँओं के घरों से अथवा अपने भाईयों के घरों से अथवा अपनी बहनो के घरों से अथवा अपने चाचाओं के घरों से अथवा अपनी फूफियों के घरों से अथवा अपने मामाओं के घरों से अथवा अपनी मौसियों के घरों से अथवा जिस की चाबियों के तुम स्वामी^[4] हो, अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई दोष नहीं एक साथ खाओ या अलग अलग, फिर जब तुम प्रवेश

فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ
مَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَالْمَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ بَكَاحًا
فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ
غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ
خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ
حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى
أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ
بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ
أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَلِكُمْ أَوْ مِمَّا مَلَكَتُمْ
مَقَاتِلَةً أَوْ صَدِيقَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا بَعْضًا مِنْ شَيْءٍ أَنْ تَزِدَ
دَخْلَكُمْ بُيُوتًا فَلْيَمْنُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ
تَجِيءُ مِنَ عِنْدِ اللَّهِ مُبَرَكةٌ طَيِّبَةٌ
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ
تَعْقِلُونَ ۝

1 अर्थात् पर्दे की चादर न उतारें।

2 इस्लाम से पहले विकलांगों के साथ खाने पीने को दोष समझा जाता था जिस का निवारण इस आयत में किया गया है।

3 अपने घरों से अभिप्राय अपने पुत्रों के घर हैं जो अपने ही होते हैं।

4 अर्थात् जो अपनी अनुपस्थिति में तुम्हें रक्षा के लिये अपने घरों की चाबियाँ दे जायें।

करो घरों में^[1] तो अपनों को सलाम किया करो, एक आशीर्वाद है अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ जो शुभ पवित्र है। इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन करता है ताकि तुम समझ लो।

62. वास्तव में ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब आप के साथ किसी सामुहिक कार्य पर होते हैं तो जाते नहीं जब तक आप से अनुमति न लें, वास्तव में जो आप से अनुमति लेते हैं वही अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, तो जब वह आप से अपने किसी कार्य के लिये अनुमति माँगें, तो आप उन में से जिसे चाहें अनुमति दें। और उन के लिये अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

63. और तुम मत बनाओ रसूल के पुकारने को परस्पर एक-दूसरे को पुकारने जैसा^[2], अल्लाह तुम में से उन को जानता है जो सरक जाते हैं एक-दूसरे की आड़ ले कर। तो उन्हें सावधान रहना चाहिये जो आप के आदेश का विरोध करते हैं कि उन

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَى أَمْرٍ جَامِعٍ لَمْ يَذْهَبُوا
حَتَّى يَسْتَأْذِنُوا إِنْ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
أُولَئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِذَا
اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ
مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ
بَعْضًا قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ مِنْكُمْ
يَا إِذَا قُلُوبُ الَّذِينَ يَخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ
تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

1 अर्थात् वह साधारण भोजन जो सब के लिये पकाया गया हो। इस में वह भोजन सम्मिलित नहीं जो किसी विशेष व्यक्ति के लिये तैयार किया गया हो।

2 अर्थात्: «हे मुहम्मद!» न कहो। बल्कि आप को हे अल्लाह के नबी! हे अल्लाह के रसूल! कह कर पुकारो। इस का यह अर्थ भी किया गया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रार्थना को अपनी प्रार्थना के समान न समझो, क्यों कि आप की प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती है।

पर कोई आपदा आ पड़े अथवा उन पर कोई दुःखदायी यातना आ जाये।

64. सावधान! अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है, वह जानता है जिस (दशा) पर तुम हो, और जिस दिन वे उस की ओर फेरे जायेंगे तो उन्हें बता^[1] देगा जो उन्होंने ने किया है। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ का अति ज्ञानी है।

الْأَلَيْنَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قَدْ يَعْلَمُ
مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِمْ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ
فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

1 अर्थात् प्रलय के दिन तुम्हें तुम्हारे कर्मों का फल देगा।

सूरह फुर्कान - 25

سُورَةُ الْفُرْقَانِ

सूरह फुर्कान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 77 आयतें हैं।

- इस सूरह में उस का परिचय कराते हुए जिस ने फुर्कान उतारा है शिर्क का खण्डन तथा बह्यी और रिसालत से सम्बन्धित संदेहों को चेतावनी की शैली में दूर किया गया है।
- अल्लाह के एक होने की निशानियों की ओर ध्यान आकर्षित कराया गया है।
- अल्लाह के भक्तों के गुण और मानव पर कुर्आन की शिक्षा का प्रभाव बताया गया है।
- अन्त में उन्हें चेतावनी दी गयी है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सावधान करने पर भी सत्य को नहीं मानते।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह (अल्लाह) जिस ने फुर्कान^[1] अवतरित किया अपने भक्त^[2] पर, ताकि पूरे संसार वासियों को सावधान करने वाला हो।
2. जिस के लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा उस ने अपने लिये

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا

وَالَّذِي لَهُ نُفُوسُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ جَهَنَّمُ وَلِئَامًا

- 1 फुर्कान का अर्थ वह पुस्तक है जिस के द्वारा सच्च और झूठ में विवेक किया जाये और इस से अभिप्राय कुर्आन है।
- 2 भक्त से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जो पूरे मानव संसार के लिये नबी बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुझे से पहले नबी अपनी विशेष जाति के लिये भेजे जाते थे, और मुझे सर्व साधारण लोगों की ओर नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुखारी, 335, सहीह मुस्लिम, 521)

कोई संतान नहीं बनायी। और न उस का कोई साझी है राज्य में, तथा उस ने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की फिर उस को एक निर्धारित रूप दिया।

3. और उन्होंने ने उस के अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिये हैं जो किसी चीज़ की उत्पत्ति नहीं कर सकते, और वह स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं, और न वह अधिकार रखते हैं अपने लिये किसी हानि का और न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, तथा न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनः^[1] जीवित करने का।

4. तथा काफ़िरों ने कहा: यह^[2] तो बस एक मन घड़त बात है जिसे इस^[3] ने स्वयं घड़ लिया है, और इस पर अन्य लोगों ने उस की सहायता की है। तो वास्तव में वह (काफ़िर) बड़ा अत्याचार और झूठ बना लाये हैं।

5. और कहा कि यह तो पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं जिसे उस ने स्वयं लिख लिया है, और वह पढ़ी जाती हैं उस के समक्ष प्रातः और संध्या।

6. आप कह दें कि इसे उस ने अवतरित किया है जो आकाशों तथा धरती का भेद जानता है। वास्तव में वह^[4] अति क्षमाशील दयावान् है।

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ
فَقَدَرًا مَّعْدُودًا ۝

وَأَخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا
وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا شُورًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا إِفْكُ
إِفْتَرِيهِ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ فَقَدْ
جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ۝

وَقَالُوا سَاطِرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلَى
عَلَيْهِ بَكْرَةً وَأَمِينًا ۝

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के पश्चात्।

2 अर्थात् कुर्आन।

3 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने।

4 इसी लिये क्षमा याचना का अवसर देता है।

7. तथा उन्होंने ने कहा: यह कैसा रसूल है जो भोजन करता है तथा बाजारों में चलता है? क्यों नहीं उतार दिया गया उस की ओर कोई फरिश्ता, तो वह उस के साथ सावधान करने वाला होता?
8. अथवा उस की ओर कोई कोष उतार दिया जाता अथवा उस का कोई बाग होता जिस में से वह खाता? तथा अत्याचारियों ने कहा: तुम तो बस एक जादू किये हुये व्यक्ति का अनुसरण कर रहे हो।
9. देखो! आप के संबंध में यह कैसी कैसी बातें कर रहे हैं? अतः वह कुपथ हो गये हैं, वह सुपथ पा ही नहीं सकते।
10. शुभकारी है वह (अब्लाह) जो यदि चाहे तो बना दे आप के लिये इस^[1] से उत्तम बहुत से बाग जिन में नहरें प्रवाहित हों, और बना दे आप के लिये बहुत से भवन।
11. वास्तविक बात यह है कि उन्होंने ने झुठला दिया है क़्यामत (प्रलय) को, और हम ने तय्यार किया है उस के लिये जो प्रलय को झुठलाये भड़कती हुई अग्नि।
12. जब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी, तो सुन लेंगे उस के क्रोध तथा आवेग की ध्वनि को।
13. और जब वह फेंक दिये जायेंगे

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ
وَيَسْعَىٰ فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ
فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ۝

أَوْ يُنْفَخِ إِلَيْهِ كَفَرًا أَوْ تُدْعَىٰ لَهُ جِبَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا
وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِنَّا تَعَيَّمُونَ الْأَرْجُلَ
مَشْهُورًا ۝

أَنظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا
فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ
ذَلِكَ جَلَّتْ تَجَربَتِي مِنْ تَخَوُّمِهَا أَزْكُرَ
وَيَجْعَلُ لَكَ قَصْرًا ۝

بَلْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاعْتَدُوا لِلْعَذَابِ
بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝

إِذَا رَأَوْهُم مِّنْ مَّكَانٍ يَبِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا
وَزَفِيرًا ۝

وَإِذَا الْقَوَاوِمُ مَكَّانًا مَّضْمُورًا يَدْعُوا

1 अर्थात् उन के विचार से उत्तम।

هَذَا لَكَ نُبُورًا ۝

उस के किसी संकीर्ण स्थान में बंधे हुये, (तो) वहाँ विनाश को पुकारेंगे।

14. (उन से कहा जायेगा): आज एक विनाश को मत पुकारो, बहुत से विनाश को पुकारो।^[1]

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ نُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا نُبُورًا كَثِيرًا ۝

15. (हे नबी!) आप उन से कहिये कि क्या यह अच्छा है या स्थायी स्वर्ग जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है, जो उन का प्रतिफल तथा आवास है?

قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ۝

16. उन्हीं को उस में जो इच्छा वे करेंगे मिलेगा। वे सदावासी होंगे, आप के पालनहार पर (यह) वचन (पूरा करना) अनिवार्य है।

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُورًا ۝

17. तथा जिस दिन वह एकत्र करेगा उन को और जिस की वह इबादत (बंदना) करते थे अल्लाह के सिवाय, तो वह (अल्लाह) कहेगा: क्या तुम्हीं ने मेरे इन भक्तों को कुपथ किया है अथवा वे स्वयं कुपथ हो गये?

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ يَمْقُولُونَ ۚ أَنْتُمْ أَضَلُّهُمْ عِبَادِيَ هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۝

18. वे कहेंगे: तू पवित्र है! हमारे लिये यह योग्य नहीं था कि तेरे सिवा कोई संरक्षक^[2] बनायें, परन्तु तू ने सुखी बना दिया उन को तथा उन के पूर्वजों को यहाँ तक कि वह शिक्षा को भूल गये, और वह थे ही विनाश के योग्य।

قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَإِبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْمًا بُورًا ۝

1 अर्थात् आज तुम्हारे लिये विनाश ही विनाश है।

2 अर्थात् जब हम स्वयं दूसरे को अपना संरक्षक नहीं समझे, तो फिर अपने विषय में यह कैसे कह सकते हैं कि हमें अपना रक्षक बना लो?

19. उन्होंने^[1] ने तो तुम्हें झुठला दिया तुम्हारी बातों में, तो तुम न यातना को फेर सकोगे और न अपनी सहायता कर सकोगे। और जो भी अत्याचार^[2] करेगा तुम में से हम उसे घोर यातना चखायेंगे।

20. और नहीं भेजा हम ने आप से पूर्व किसी रसूल को, परन्तु वे भोजन करते और बाजारों में (भी) चलते^[3] फिरते थे। तथा हम ने बना दिया तुम में से एक को दूसरे के लिये परीक्षा का साधन, तो क्या तुम धैर्य रखोगे? तथा आप का पालनहार सब कुछ देखने^[4] वाला है।

21. तथा उन्होंने ने कहा जो हम से मिलने की आशा नहीं रखते: हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम अपने पालनहार को देख लेते? उन्होंने ने अपने में बड़ा अभिमान कर लिया है तथा बड़ी अवैज्ञा^[5] की है।

22. जिस दिन^[6] वे फरिश्तों को देख लेंगे

فَعَدَّ كَذِبُكُمْ بِمَا تَقُولُونَ ۖ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَظْلِمِ مِنْكُمْ نَذِيرُهُ ۚ عَذَابًا كَثِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا أَنْهُمْ لِيَأْكُلُوا الطَّعَامَ وَيَمْشُوا فِي الْأَسْوَاقِ ۚ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ۚ أَنْتَضِرُوكُمْ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُولَٰئِكَ نُرِثُ الْآلِهَةَ ۚ وَنُرِثُ رَبَّنَا الْقَدِيرَ ۚ اسْتَغْبِرُوا لَنَا فِي الْأَرْضِ وَغَرَبُوا عَنْهَا ۚ كَثِيرًا ۝

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ

1 यह अल्लाह का कथन है, जिसे वह मिश्रणवादियों से कहेगा कि तुम्हारे पूज्यों ने स्वयं अपने पूज्य होने को नकार दिया।

2 अत्याचार से तात्पर्य शिर्क (मिश्रणवाद) है। (सूरह लुक़्मान, आयत:13)

3 अर्थात् वे मानव पुरुष थे।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह चाहता तो पूरा संसार रसूलों का साथ देता। परन्तु वह लोगों की रसूलों द्वारा तथा रसूलों की लोगों के द्वारा परीक्षा लेना चाहता है कि लोग ईमान लाते हैं या नहीं और रसूल धैर्य रखते हैं या नहीं।

5 अर्थात् ईमान लाने के लिये अपने समक्ष फरिश्तों के उतरने तथा अल्लाह को देखने की माँग कर के।

6 अर्थात् मरने के समय। (देखिये: अन्फाल-13) अथवा प्रलय के दिन।

وَيَقُولُونَ حَبْرًا مَّخْجُورًا ۝

उस दिन कोई शुभ सूचना नहीं होगी
अपराधियों के लिये। तथा वह कहेंगे:^[1]
बंचित बंचित है।

23. और उनके कर्मों^[2] को हम ले कर
धूल के समान उड़ा देंगे।

وَقَدْ مَنَّآلِ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً
مَّنْثُورًا ۝

24. स्वर्ग के अधिकारी उस दिन अच्छे
स्थान तथा सुखद शयनकक्ष में होंगे।

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْقَرًا وَأَحْسَنُ
مَبْقِيَاتٍ ۝

25. जिस दिन चिर जायेगा आकाश
बादल के साथ^[3] और फरिश्ते
निरन्तर उतार दिये जायेंगे।

وَيَوْمَ تَشْقَىٰ السَّمَاءُ زُرَّامًا وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝

26. उस दिन वास्तविक राज्य अति
दयावान् का होगा, और काफिरों पर
एक कड़ा दिन होगा।

أَلَيْسَ يَوْمَئِذٍ لِلْعَالِ الْرَحْمَنُ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى
الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝

27. उस दिन अत्याचारी अपने दोनों हाथ
चबायेगा, वह कहेगा: क्या ही अच्छा
होता कि मैं ने रसूल का साथ दिया
होता।

وَيَوْمَ يَعْصُ الْكَلَامُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي
أَتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝

28. हाये मेरा दुर्भाग्य! काश मैं ने अमुक
को मित्र न बनाया होता।

يَوَيْلَئِي لَيْتَنِي لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ۝

29. उस ने मुझे कुपथ कर दिया शिक्षा
(कुर्आन) से इस के पश्चात् कि मेरे
पास आयी, और शैतान मनुष्य को
(समय पर) धोखा देने वाला है।

لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي. وَكَانَ
الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدُوًّا ۝

1 अर्थात् वह कहेंगे कि हमारे लिये सफलता तथा स्वर्ग निषेधित है।

2 अर्थात् ईमान न होने के कारण उनके पुण्य के कार्य व्यर्थ कर दिये जायेंगे।

3 अर्थात् आकाश चीरता हुआ बादल छा जायेगा और अल्लाह अपने फरिश्तों के साथ लोगों का हिसाब करने के लिये हथ्र के मैदान में आ जायेगा। (देखिये सूरह, बकरा, आयत: 210)

30. तथा रसूल ^[1] कहेगा: हे मेरे पालनहार! मेरी जाति ने इस कुर्आन को त्याग ^[2] दिया।

31. और इसी प्रकार हम ने बना दिया प्रत्येक का शत्रु कुछ अपराधियों को। और आप का पालनहार मार्गदर्शन देने तथा सहायता कर ने को बहुत है।

32. तथा काफ़िरो ने कहा: क्यों नहीं उतार दिया गया आप पर कुर्आन पूरा एक ही बार? ^[3] इसी प्रकार (इस लिये किया गया) ताकि हम आप के दिल को दृढ़ता प्रदान करें, और हम ने इस का क्रमशः प्रस्तुत किया है।

33. (और इस लिये भी कि) वह आप के पास कोई उदाहरण लायें तो हम आप के पास सत्य ला दें और उत्तम व्याख्या।

34. जो अपने मुखों के बल नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे, उन्हीं का सब से बुरा स्थान है तथा सब से अधिक कुपथ है।

35. तथा हम ने ही मूसा को पुस्तक (तौरात) प्रदान की और उस के साथ उस के भाई हारून को सहायक बनाया।

36. फिर हम ने कहा: तुम दोनों उस

وَقَالَ الرَّسُولُ يَرْبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ ۚ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْوَلَا يُزَالُ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً كَذَلِكَ لِيُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ۝

وَلَا يَأْتِيَنَّكَ بِشَيْءٍ الْاِجْتِنَاكَ بِالْحَقِّ وَالْحَسَنَ نَصِيرًا ۝

الَّذِينَ يُخْتَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ سَرَقَانَا ۚ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا لَمُوسَى الْهَارُونَ وَنَصِيرًا ۝

فَقُلْنَا أَذْهَبَ إِلَى الْغُورِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا

1 अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि बसल्लम। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात इसे मिश्रणवादियों ने नहीं सुना और न माना।

3 अर्थात तौरात तथा इंजील के समान एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, आगामी आयतों में उस का कारण बताया जा रहा है कि कुर्आन 23 वर्ष में क्रमशः आवश्यकतानुसार क्यों उतारा गया।

فَذَرْنَاهُمْ تَذَمُّرًا ۝

जाति की ओर जाओ जिस ने हमारी आयतों (निशानियों) को झुठला दिया। अन्ततः हम ने उन को ध्वस्त निरस्त कर दिया।

37. और नूह की जाति ने जब रसूलों को झुठलाया तो हम ने उन को डुबो दिया और लोगों के लिये उन को शिक्षाप्रद प्रतीक बना दिया तथा हम ने^[1] तय्यार की है अत्याचारियों के लिये दुःखदायी यातना।

وَقَوْمُ نُوحٍ إِذْ أَكْذَبُوا الرُّسُلَ، أَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ دَارِهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ هَذِهِ آيَاتُنَا وَاعْتَدَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

38. तथा आद और समूद एवं कूबे वालों तथा बहुत से समुदायों को इस के बीच।

وَعَادًا وَثَمُودَ وَأَصْحَابَ الرَّيْسِ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۝

39. और प्रत्येक को हम ने उदाहरण दिये, तथा प्रत्येक को पूर्णतः नाश कर^[2] दिया।

وَكُلًّا صَبَرْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ وَكُلًّا نَبْرَأُ تَنْبِيْرًا ۝

40. तथा यह^[3] लोग उस बस्ती^[4] पर आये गये हैं जिन पर बुरी वर्षा की गई, तो क्या उन्होंने ने उसे नहीं देखा? बल्कि यह लोग पुनः जीवित होने का विश्वास नहीं रखते।

وَلَقَدْ آتَيْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا مَطَرًا شَدِيدًا أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرَوْنها بَلْ كَانُوا لَا يَتَنَبَّهُونَ شُعُورًا ۝

41. और (हे नबी!) जब वह आप को देखते हैं, तो आप को उपहास बना लेते हैं कि क्या यही है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

وَإِذَا رَأَوْا أَنْ يَنْجِذُوكَ الْاَهُرُوا أَهْدًا الْكَذِبِ بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۝

42. इस ने तो हमें अपने पूज्यों से कुपथ

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْمَنَ الْوَلَا أَنْ صَبَرْنَا

1 अर्थात् परलोक में नरक की यातना।

2 सत्य को स्वीकार न करने पर।

3 अर्थात् मक्का के मुशरिक।

4 अर्थात् लूत जाति की बस्ती पर जिस का नाम "सदूम" था जिस पर पत्थरों की वर्षा हुई। फिर भी शिक्षा ग्रहण नहीं की।

कर दिया होता यदि हम उन पर अडिग न रहते। और वे शीघ्र ही जान लेंगे जिस समय यातना देखेंगे कि कौन अधिक कुपथ है?

عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

43. क्या आप ने उसे देखा जिस ने अपना पूज्य अपनी अभिलाषा को बना लिया है, तो क्या आप उस के संरक्षक^[1] हो सकते हैं?

أَرَأَيْتَ مَنِ اخْتَرَالِهَ هَوَاهُ أَأَنْتَ تَكُونُ
عَلَيْهِ وَكِيلًا ۝

44. क्या आप सझते हैं कि उन में से अधिकतर सुनते और समझते हैं? वे पशुओं के समान हैं बल्कि उन से भी अधिक कुपथ हैं।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ الْغُرُوهَ يَفْقَهُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ
إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

45. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के पालनहार ने कैसे छाया को फैला दिया और यदि वह चाहता तो उसे स्थिर^[2] बना देता फिर हम ने सूर्य को उस पर प्रमाण^[3] बना दिया।

أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ
سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝

46. फिर हम उस (छाया को) समेट लेते हैं अपनी ओर धीरे-धीरे।

فَنَقْصُضُهُ الْيَنَابِضَ يُبَيِّرُهَا ۝

47. और वही है जिस ने रात्रि को तुम्हारे लिये बस्त्र^[4] बनाया, तथा निद्रा को शान्ति, तथा दिन को जागने का समय।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا وَالنَّوْمَ مُبَاتًا
وَجَعَلَ النَّهَارَ لِكُتُوبٍ ۝

48. तथा वही है जिस ने भेजा वायुओं को शुभ सूचना बनाकर अपनी दया (वर्षा) से पूर्व, तथा हम ने आकाश

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَنِي
رَحْمَتِهِ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝

1 अर्थात् उसे सुपथ दर्शा सकते हैं ?

2 अर्थात् सदा छाया ही रहती।

3 अर्थात् छाया सूर्य के साथ फैलती तथा सिमटती है। और यह अल्लाह के सामर्थ्य तथा उस के एकमात्र पूज्य होने का प्रमाण है।

4 अर्थात् रात्रि का अंधेरा बस्त्र के समान सब को छुपा लेता है।

से स्वच्छ जल बरसाया।

49. ताकि जीवित कर दें उस के द्वारा निजीब नगर को तथा उसे पिलायें उन में से जिन्हें पैदा किया है बहुत से पशुओं तथा मानव को।

50. तथा हम ने विभिन्न प्रकार से इसे वर्णन कर दिया है, ताकि वे शिक्षाग्रहण करें। परन्तु अधिकतर लोगों ने अस्वीकार करते हुये कुफ्र ग्रहण कर लिया।

51. और यदि हम चाहते तो भेज देते प्रत्येक बस्ती में एक सचेत करने ^[1] वाला।

52. अतः आप काफिरों की बात न मानें और इस (कुर्आन के) द्वारा उन से भारी जिहाद (संघर्ष) ^[2] करें।

53. वही है जिस ने मिला दिया दो सागरों को, यह मीठा सचिकार है, और वह नमकीन खारा, और उस ने बना दिया दोनों के बीच एक पर्दा ^[3] एवं रोक।

54. तथा वही है जिस ने पानी (वीर्य) से मनुष्य को उत्पन्न किया, फिर उस के वंश तथा ससुराल के संबन्ध बना दिये, आप का पालनहार अति सामर्थ्यवान है।

55. और वे लोग इबादत (बंदना) करते हैं अल्लाह के सिवा उन की जो न उन

لِنُخَيِّرَ بِهِ بَلَدًا مِّمَّنَّا وَنُسَوِّيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا
وَأَنبِيَائَ كَثِيرًا ۝

وَلَعَدَّ صَرْفَهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّبُوا إِلَى الثَّرَائِيسِ
إِلَّا كُفُورًا ۝

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ قَرْيَةٍ نَذِيرًا ۝

لَا تُطِيعُ الْكُفْرَيْنَ وَجَاهِدْهُمْ
جِهَادًا كَبِيرًا ۝

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا
مِلْحٌ أَمَّاخٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزًا وَحِجْرًا مَحْجُورًا ۝

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا
وَصِهْرًا وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا

1 अर्थात् रसूल। इस में यह संकेत है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पूरे मनुष्य विश्व के लिये एक अन्तिम रसूल है।

2 अर्थात् कुर्आन के प्रचार-प्रसार के लिये भरपूर प्रयास करें।

3 ताकि एक का पानी और स्वाद दूसरे में न मिले।

को लाभ पहुँचा सकते और न हानि पहुँचा सकते हैं, और काफिर अपने पालनहार का विरोधी बन गया है।

56. और हम ने आप को बस शुभसूचना देने, सावधान करने वाला बनाकर भेजा है।

57. आप कह दें: मैं इस^[1] पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता, परन्तु यह कि जो चाहे अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले।

58. तथा आप भरोसा कीजिये उस नित्य जीवी पर जो मरेगा नहीं, और उस की पवित्रता का गान कीजिये उसकी प्रशंसा के साथ, और आप का पालनहार पर्याप्त है अपने भक्तों के पापों से सूचित होने को।

59. जिस ने उत्पन्न कर दिया आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उनके बीच है छः दिनों में, फिर (सिंहासन) पर स्थिर हो गया अति दयावान्, उसकी महिमा किसी ज्ञानी से पूछो।

60. और जब उन से कहा जाता है कि रहमान (अति दयावान्) को सज्दा करो, तो कहते हैं कि रहमान क्या है? क्या हम सज्दा करने लगेँ जिसे आप आदेश दें? और इस (आमंत्रण) ने उन को और अधिक भड़का दिया।

61. शुभ है वह जिसने आकाश में राशि चक्र बनाये तथा उस में सूर्य और

يَضْرُهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۝

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ شَاءَ
أَنْ يَخُودَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعِزِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَيَعْرِضُ عَنَّا
وَكفىٰ بِهِ بَدُوًّا ذُوًّا حَيْثُورًا ۝

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي
سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ الرَّحْمَنُ فَسَلِّ
بِهِ حَيْثُورًا ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَنُ أَتَعْبُدُونَ إِنَّا مَرْنَاهُ إِذْ هُمْ يُقْوَرُونَ ۝

ثُمَّ لَكَ الْكِبَرُ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا

1 अर्थात् कुर्आन पहुँचाने पर।

प्रकाशित चाँद को बनाया।

62. वही है जिस ने रात्रि तथा दिन को एक दूसरे के पीछे आते-जाते बनाया उस के लिये जो शिक्षा ग्रहण करना चाहे या कृतज्ञ होना चाहे।

63. और अति दयावान् के भक्त वह है जो धरती पर नम्रता से चलते^[1] हैं और अशिक्षित (अक्खड़) लोग उन से बात करते हैं तो सलाम करके अलग^[2] हो जाते हैं।

64. और जो रात्रि व्यतीत करते हैं अपने पालनहार के लिये सज्दा करते हुये तथा खड़े^[3] हो कर।

65. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! फेर दे हम से नरक की यातना को, वास्तव में उस की यातना चिपक जाने वाली है।

66. वास्तव में वह बुरा आवास और स्थान है।

67. तथा जो व्यय (खर्च) करते समय अपव्यय नहीं करते और न कृपण (कंजूसी) करते हैं और वह इस के बीच संतुलित रहता है।

68. और जो नहीं पुकारते हैं अल्लाह के साथ किसी दूसरे^[4] पूज्य को और

وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۝

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنۢ أَرَادَ أَنۢ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيۦنَ يَمْشُوۡنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوۡنًا ۚ وَاذۡحَاۡطَہُمُ الْجِبۡلُۦنَ قَالُوۡا سَلٰمًا ۝

وَالَّذِيۦنَ يَسۡبُحُوۡنَ لِرَبِّہُمۡ سُجَّدًا وَّاقِفًا مَّكۡلًا ۝

وَالَّذِيۦنَ يَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَا اصۡرِفۡ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۚ اِنَّ عَذَابَہَا كَانَ عَرۡمًا مَّآ ۝

اِنَّہَا سَاءَ اٰتٍ مُّسۡتَقَرًّا وَّ مُعٰمَلًا ۝

وَالَّذِيۦنَ اِذَا نَفَقُوۡا لِمٰی سَرَفُوۡا وَاُولٰٓئِکَ یَقۡتُرُوۡا ۚ وَكَانَ بَیۡنَ ذٰلِکَ قَوَامًا ۝

وَالَّذِيۦنَ لَا یَدۡعُوۡنَ مَعَ اللّٰہِ اِلٰہًا اٰخَرَ

1 अर्थात् घमंड से अकड़ कर नहीं चलते।

2 अर्थात् उन से उलझते नहीं।

3 अर्थात् अल्लाह की इबादत करते हुये।

4 अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद कहते हैं कि मैं ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

न बध करते हैं उस प्राण को जिसे अल्लाह ने वर्जित किया है परन्तु उचित कारण से, और न व्यभिचार करते हैं। और जो ऐसा करेगा वह पाप का सामना करेगा।

وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ
وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۖ

69. दुगनी की जायेगी उस के लिये यातना प्रलय के दिन, तथा सदा उस में अपमानित^[1] हो कर रहेगा।

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَيَخَذُّ فِيهِ
مُهْلًا ۖ

70. उस के सिवा जिस ने क्षमा याचना कर ली, और ईमान लाया तथा कर्म किया अच्छा कर्म, तो वही है बदल देगा अल्लाह जिन के पापों को पुण्य से। तथा अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ
يَبْدِلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا
رَحِيمًا ۖ

71. और जिस ने क्षमा याचना कर ली और सदाचार किये तो वास्तव में वही अल्लाह की ओर झुक जाता है।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ
مَتَابًا ۖ

72. तथा जो मिथ्या साक्ष्य नहीं देते, और जब व्यर्थ के पास से गुजरते हैं तो सज्जन बन कर गुजर जाते हैं।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِالْغَوْرِ
مُرُّوا كَرَامًا ۖ

73. और जब उन्हें शिक्षा दी जाये उनके पालनहार की आयतों द्वारा उन पर नहीं गिरते अन्धे तथा बहरे हो^[2] करा।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا
صُمًّا وَعُمْيَانًا ۖ

प्रश्न किया कि कौन सा पाप सब से बड़ा है? फरमाया: यह कि तुम अल्लाह का साझी बनाओ जब कि उस ने तुम को पैदा किया है। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फरमाया: अपनी संतान को इस भय से मार दो कि वह तुम्हारे साथ खायेगी। मैं ने कहा: फिर कौन सा? फरमाया: अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करना। यह आयत इसी पर उतरी। (देखिये: सहीह बुखारी, 4761)

1 इब्ने अब्बास ने कहा: जब यह आयत उतरी तो मक्का वासियों ने कहा: हम ने अल्लाह का साझी बनाया है और अवैध जान भी मारी है तथा व्यभिचार भी किया है। तो अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह बुखारी, 4765)

2 अर्थात् आयतों में सोच-विचार करते हैं।

74. तथा जो प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें हमारी पत्नियों तथा संतानों से आँखों की ठण्डक प्रदान कर और हमें आज्ञाकारियों का अग्रणी बना दे।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا
وَذُرِّيَّتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْ لَنَا لِمَتَّقِينَ إِمَامًا ۝

75. यही लोग उच्च भवन अपने धैर्य के बदले में पायेंगे, और स्वागत किये जायेंगे उस में आशीर्वाद तथा सलाम के साथ।

أُولَئِكَ يَجُوزُونَ الْعُقُبَةَ يَصْبِرُونَ وَيُكْفَوْنَ فِيهَا
حِجَّةً وَسَلَامًا ۝

76. वे उस में सदावासी होंगे, वह अच्छा निवास तथा स्थान है।

خَالِدِينَ فِيهَا أَحْسَنَتْ مَسَافِرًا أَوْ مَقَامًا ۝

77. (हे नबी!) आप कह दें कि यदि तुम्हारा उसे पुकारना न^[1] हो तो मेरा पालनहार तुम्हारी क्या परवाह करेगा? तुम ने तो झुठला दिया है, तो शीघ्र ही (उसका दण्ड) चिपक जाने वाला होगा।

قُلْ مَا يَعْبُدُ إِلَهُكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ
كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِإِمَامًا ۝

1 अर्थात् उस से प्रार्थना तथा उस की इबादत न करो।

सूरह शुअरा - 26

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

सूरह शुअरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 227 आयतें हैं

- इस में मक्का के मुर्ति पूजकों के आरोप का खण्डन किया गया है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शायर (कवि) कहते थे। और कवि और नबी के बीच अन्तर बताया गया है।
- इस में धर्म प्रचार के लिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चिन्ता और विरोधियों के आप के साथ उपहास की चर्चा है।
- इस में मूसा अलैहिस्सलाम तथा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के एकेश्वरवाद के उपदेश को प्रस्तुत किया गया है जो उन्होंने अपनी जाति को दिया था।
- इस में कई नबियों के धर्म प्रचार और उन के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- अनेक युग में नबियों के आने और उन के उपदेश में समानता का भी वर्णन है।
- कुर्आन तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طس

1. ता, सीन, मीमा
2. यह प्रकाशमय पुस्तक की आयतें हैं।
3. संभवतः आप अपना प्राण^[1] खो देने वाले हैं कि वे ईमान लाने वाले नहीं हैं!

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

لَعَلَّكَ بِأَعْيُنِنَا نَفْسَكَ الْآيَةُ كُنُوزًا مُّؤْمِنِينَ

1 अर्थात उन के ईमान न लाने के शोक में।

4. यदि हम चाहें तो उतार दें उन पर आकाश से ऐसी निशानी कि उन की गर्दनें उस के आगे झुकी कि झुकी रह जायें।^[1]
5. और नहीं आती है उन के पालनहार अति दयावान् की ओर से कोई नई शिक्षा परन्तु वे उस से मुख फेरने वाले बन जाते हैं।
6. तो उन्होंने ने झुठला दिया, अब उनके पास शीघ्र ही उस की सूचनायें आ जायेंगी जिस का उपहास वे कर रहे थे।
7. और क्या उन्होंने ने धरती की ओर नहीं देखा कि हम ने उस में उगाई है बहुत सी प्रत्येक प्रकार की अच्छी वनस्पतियाँ?
8. निश्चय ही इस में बड़ी निशानी (लक्षण)^[2] है। फिर उन में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
9. तथा वास्तव में आप का पालनहार ही प्रभुत्वशाली अति दयावान् है।
10. (उन्हें उस समय की कथा सुनाओ) जब पुकारा आप के पालनहार ने मूसा को, कि जाओ अत्याचारी जाति^[3] के पास।

إِنْ تَفَأْزَعُ عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْيُنُهُمْ لَهَا خَفِيرَةً ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْتَهُ مُفْرِضِينَ ۝

فَقَدْ كَذَّبُوا إِسْيَاءَ بَيْنَهُمْ ابْتُغُوا مَا كَانُوا يَاسْتَهْزِئُونَ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمَا أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَزْجٍ ۝

إِنْ فِي ذَلِكَ آيَةٌ لِقَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ۝

وَأَنَّ رَبَّكَ لَهْوَالْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

1 परन्तु ऐसा नहीं किया, क्यों कि दबाव का ईमान स्वीकार्य तथा मान्य नहीं होता।

2 अर्थात् अल्लाह के सामर्थ्य की।

3 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) दस वर्ष मद्यन में रह कर मिस्र वापिस आ रहे थे।

11. फिरऔन की जाति के पास, क्या वे डरते नहीं?
12. उस ने कहा: मेरे पालनहार वास्तव में मुझे भय है कि वह मुझे झुठला देंगे।
13. और संकुचित हो रहा है मेरा सीना, और नहीं चल रही है मेरी जुबान, अतः वही भेज दे हारून की ओर (भी)।
14. और उन का मुझ पर एक अपराध भी है। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे।
15. अल्लाह ने कहा: कदापि ऐसा नहीं होगा। तुम दोनों हमारी निशानियाँ ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने⁽¹⁾ वाले हैं।
16. तो तुम दोनों जाओ, और कहो कि हम विश्व के पालनहार के भेजे हुये (रसूल) हैं।
17. कि तू हमारे साथ बनी इसाईल को जाने दे।
18. (फिरऔन ने) कहा: क्या हम ने तेरा पालन नहीं किया है अपने यहाँ बाल्यवस्था में, और तू रहा है हम में अपनी आयु के कई वर्ष?
19. और तू कर गया वह कार्य⁽²⁾ जो किया, और तू कृतघ्नों में से है।

قَوْمٌ فَارِعُونَ الْآيَاتُونَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ۝

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝

قَالَ كَلَّا فَإِذْ هَبْ بآيَاتِنَا أَنَا مَعَكُمْ مُسْمِعُونَ ۝

فَاتَّبَعُوا عُونَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

إِنْ أَرَادَ مَعَالِي (إِسْرَائِيلَ)

قَالَ آلَهُ تُزَيِّنُ فِينَا وَلَيْدًا أَوَّلَيْتَ فِينَا مِنْ غَيْرِكَ يَسِينُ ۝

وَصَلَّاتُكَ الْبَنَى صَلَّاتُكَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् तुम दोनों की सहायता करते रहेंगे।

2 यह उस हत्या काण्ड की ओर संकेत है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) से नबी होने से पहले हो गया था। (देखिये: सूरह कसस)

20. (मूसा ने) कहा: मैं ने ऐसा उस समय कर दिया, जब कि मैं अनजान था।
21. फिर मैं तुम से भाग गया जब तुम से भय हुआ। फिर प्रदान कर दिया मुझे मेरे पालनहार ने तत्वदर्शिता और मुझे बना दिया रसूलों में से।
22. और यह कोई उपकार है जो तू मुझे जता रहा है कि तू ने दास बना लिया है इस्राईल के पुत्रों को।
23. फिरऔन ने कहा: विश्व का पालनहार क्या है?
24. (मूसा ने) कहा: आकाशों तथा धरती और उसका पालनहार जो कुछ दोनों के बीच है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।
25. उस ने उन से कहा जो उस के आस पास थे: क्या तुम सुन नहीं रहे हो?
26. (मूसा ने) कहा: तुम्हारा पालनहार तथा तुम्हारे पूर्वजों का पालनहार है।
27. (फिरऔन ने) कहा: वास्तव में तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है पागल है।
28. (मूसा ने) कहा: वह, पूर्व तथा पश्चिम, तथा दोनों के मध्य जो कुछ है सब का पालनहार है।
29. (फिरऔन ने) कहा। यदि तू ने कोई पूज्य बना लिया मेरे अतिरिक्त, तो तुझे बंदियों में कर दूंगा।

قَالَ قَلِيلًا إِذَا أَنَا مِنَ الصَّاغِينَ ۝

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا
وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

وَبِذَلِكَ نَعَمَةٌ مُّمْتَنًّا عَلَيْ أَن عَبَدْتَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝

قَالَ يٰرُءُوفُ وَ مَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝

قَالَ لَيْسَ حَوْلَكَ إِلَّا مَعْجُونٌ ۝

قَالَ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۝

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِن تَعْتَلُونَ ۝

قَالَ لَيْسَ الْمُحَدَّثَاتُ إِلَّا غَيْرِي أَجْعَلْتَكَ مِنَ
الْمُجْرِمِينَ ۝

30. (मूसा ने) कहा: क्या यद्यपि मैं ला दूँ
तेरे पास एक खुली चीज़?
31. उसने कहा: तू उसे ला दे यदि सच्चा है।
32. फिर उस ने अपनी लाठी को फेंक
दिया, तो अकस्मात् वह एक प्रत्यक्ष
अजगर बन गयी।
33. तथा अपना हाथ निकाला तो
अकस्मात् वह उज्ज्वल था देखने
वालों के लिये।
34. उस ने अपने प्रमुखों से कहा जो उस
के पास थे: वास्तव में यह तो बड़ा
दक्ष जादूगर है।
35. वह चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी धरती
से निकाल^[1] दे अपने जादू के बल
से, तो अब तुम क्या आदेश देते हो?
36. सब ने कहा: अवसर (समय) दो मूसा
और उसके भाई (के विषय) को, और
भेज दो नगरों में एकत्र करने वालों को।
37. वह तुम्हारे पास प्रत्येक बड़े दक्ष
जादूगर को लायें।
38. तो एकत्र कर लिये गये जादूगर एक
निश्चित दिन के समय के लिये।
39. तथा लोगों से कहा गया कि क्या तुम
एकत्र होने वाले^[2] हो?
40. ताकि हम पीछे चलें जादूगरों के यदि
वही प्रभुत्वशाली (विजयी) हो जायें।

قَالَ أَوْ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۝

قَالَ فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝

فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضٌ لِلنَّظَرِیْنَ ۝

قَالَ لِلْمَلَآئِكَةِ إِنَّ هَٰذَا الشَّجَرُ عَلِيمٌ ۝

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا
تَأْمُرُونَ ۝

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْعِ فِي الْمَدَآئِنِ حُثُرِينَ ۝

يَا تُوَكِّلُ عَلَىٰ سِحْرِهِ عَلِيمٌ ۝

فَجِئِمَ الشَّعْرَةُ لِبَيْقَاتٍ يَوْمَ مَعْلُومٍ ۝

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ۝

لَعَلَّكَانَ تَبِيعُ الشَّعْرَةَ إِنْ كَانُوا هُمْ الْغَالِبِينَ ۝

1 अर्थात् यह उग्रवाद कर के हमारे देश पर अधिकार कर ले।

2 अर्थात् लोगों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस प्रतियोगिता में अवश्य उपस्थित हों।

41. और जब जादूगर आये, तो फिरऔन से कहा: क्या हमें कुछ पुरस्कार मिलेगा यदि हम ही प्रभुत्वशाली होंगे?
42. उसने कहा: हाँ, और तुम उस समय (मेरे) समीपवर्तियों में हो जाओगे।
43. मूसा ने उन से कहा: फेंको जो कुछ तुम फेंकने वाले हो।
44. तो उन्होंने ने फेंक दी अपनी रस्सियाँ तथा अपनी लाठियाँ, तथा कहा: फिरऔन के प्रभुत्व की शपथ! हम ही अवश्य प्रभुत्वशाली (विजयी) होंगे।
45. अब मूसा ने फेंक दी अपनी लाठी, तो तत्क्षण वह निगलने लगी जो झूठ वह बना रहे थे।
46. तो गिर गये सभी जादूगर^[1] सज्दा करते हुये।
47. और सब ने कह दिया: हम विश्व के पालनहार पर ईमान लाये।
48. मूसा तथा हारून के पालनहार पर।
49. (फिरऔन ने) कहा: तुम उस का विश्वास कर बैठे इस से पहले कि मैं तुम्हें आज्ञा दूँ वास्तव में वह तुम्हारा बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, तो तुम्हें शीघ्र ज्ञान हो जायेगा, मैं अवश्य तुम्हारे हाथों तथा पैरों को विपरीत दिशा^[2] से काट दूँगा

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَإِنَّا لَمَّا لَآئِحًا
إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا أَنِ الْغَافِقِينَ ﴿٤٢﴾

قَالَ لَهُمُ مُوسَى الْقَوْمَ إِنَّمَا أَنتُم مُّثَقَوْنَ ﴿٤٣﴾

فَالْقَوَاجِبَ لَهُمْ وَوعِيتَهُمْ وَقَالُوا بَعْرَةٌ فَرَعَوْنَ
إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

فَأُلْقَى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿٤٦﴾

قَالُوا الْمَلَأَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

قَالَ امْنَحْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ إِنَّهُ لَكَيْدٌ وَكَذَّابٌ
عَلَيْكُمْ السَّحَرَةُ قَالُوا نَعْلَمُونَ فَلَا تَقْطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ
وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلْ بَيْنَكُمْ
أَجْعَلِينَ ﴿٤٩﴾

1 क्यों कि उन्हें विश्वास हो गया कि मूसा (अलैहिस्सलाम) जादूगर नहीं, बल्कि वह सत्य के उपदेशक है।

2 अर्थात् दायाँ हाथ और बायाँ पैर या बायाँ हाथ और दायाँ पैर।

तथा तुम सभी को फाँसी दे दूंगा।

50. सब ने कहा: कोई चिन्ता नहीं, हम तो अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।

51. हम आशा रखते हैं कि क्षमा कर देगा हमारे लिये हमारा पालन-हार हमारे पापों को क्यों कि हम सब से पहले ईमान लाने वाले हैं।

52. और हम ने मूसा की ओर बह्दी की, कि रातों - रात निकल जा मेरे भक्तों को ले कर, तुम सब का पीछा किया जायेगा।

53. तो फिरऔन ने भेज दिया नगरों में (सेना) एकत्र करने ^[1] वालों को।

54. कि वह बहुत थोड़े लोग हैं।

55. और (इस पर भी) वह हमें अति क्रोधित कर रहे हैं।

56. और वास्तव में हम एक गिरोह है सावधान रहने वाले।

57. अन्ततः हम ने निकाल दिया उन को बागों तथा स्रोतों से।

58. तथा कोषों और उत्तम निवास स्थानों से।

59. इसी प्रकार हुआ, और हम ने उन का उत्तराधिकारी बना दिया इस्राईल की संतान को।

فَالْوَالِضِينَ إِذَا إِلَى رَبِّكَ مُتَعَلِّبِينَ ۝

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَكُم مَّا تَخْطِئُونَ ۚ إِنَّكُمْ أَعْدَاؤُا
الشُّؤْمِينِ ۝

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعَبِيدِي ۚ إِنَّكُمْ تَرْجِعُونَ ۝

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ خَيْرِينَ ۝

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشُرُومَةٌ ۚ قَلِيلُونَ ۝

وَالَهُمْ لَعَالٍ يَنْظُرُونَ ۝

وَمَا لَكُمْ أَجْمَعٌ حَذِرُونَ ۝

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝

كَذَٰلِكَ وَأَوْصَيْنَاهَا بَنِي إِسْرَآءِيلَ ۝

1 जब मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के आदेशानुसार अपने साथियों को ले कर निकल गये तो फिरऔन ने उन का पीछा करने के लिये नगरों में हरकारे भेजे।

60. तो उन्होंने ने उनका पीछा किया प्रातः होते ही।

فَاتَّبَعُوهُمْ تَشْرِيقِينَ ۝

61. और जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा: हम तो निश्चय ही पकड़ लिये^[1] गये।

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَيْنِ قَالَ اصْطَبُّ مُوسَى إِنَّا لَمُدْرِكُونَ ۝

62. (मूसा ने) कहा: कदापि नहीं, निश्चय मेरे साथ मेरा पालनहार है।

قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝

63. तो हम ने मूसा को बह्नी की, कि मार अपनी लाठी से सागर को, अकस्मात् सागर फट गया, तथा प्रत्येक भाग भारी पर्वत के समान^[2] हो गया।

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۝

64. तथा हमने समीप कर दिया उसी स्थान के दूसरे गिरोह को।

وَأَزَلَيْنَاهُمُ الْآخَرِينَ ۝

65. और मुक्ति प्रदान कर दी मूसा और उसके सब साथियों को।

وَأَخْرَجْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۝

66. फिर हमने डुबो दिया दूसरों को।

كُلًّا مَخْرُوجًا الْآخَرِينَ ۝

67. वास्तव में इस में बड़ी शिक्षा है, और उन में से अधिकतर लोग ईमान वाले नहीं थे।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ كَانَ لَهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

68. तथा वास्तव में आप का पालनहार निश्चय अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

69. तथा आप उन्हें सुना दें इब्राहीम का समाचार (भी)।

وَأُتِلَ عَلَيْهِمْ نَبَأُ إِبْرَاهِيمَ ۝

70. जब उस ने कहा: अपने बाप तथा

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝

1 क्यों कि अब सामने सागर और पीछे फिरौन की सेना थी।

2 अर्थात् बीच से मार्ग बन गया और दोनों ओर पानी पर्वत के समान खड़ा हो गया।

अपनी जाति से कि तुम क्या पूज रहे हो?

71. उन्होंने ने कहा: हम मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं और उन्हीं की सेवा में लगे रहते हैं।

72. उसने काह: क्या वे तुम्हारी सुनती हैं जब पुकारते हो?

73. या तुम्हें लाभ पहुँचाती या हानि पहुँचाती है?

74. उन्होंने ने कहा: बल्कि हम ने अपने पूर्वजों को इसी प्रकार करते हुये पाया है।

75. उस ने कहा: क्या तुम ने कभी (आँख खोल कर) उसे देखा जिसे तुम पूज रहे हो।

76. तुम तथा तुम्हारे पहले पूर्वज?

77. क्यों कि यह सब मेरे शत्रु है पूरे विश्व के पालनहार के सिवा।

78. जिस ने मुझे पैदा किया, फिर वही मुझे मार्ग दर्शा रहा है।

79. और जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

80. और जब रोगी होता हूँ तो वही मुझे स्वस्थ करता है।

81. तथा वही मुझे मारेगा फिर^[1] मुझे जीवित करेगा।

82. तथा मैं आशा रखता हूँ कि क्षमा

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَانًا فَنَنْظُرُ لَهُمْ فَلْيَبْصِرْ

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذَا تَدْعُونَ

أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ

قَالُوا بَلَىٰ وَعِبَادَنَا إِذَا نَاكَذِبْتَ يَقْعَلُونَ

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ

فَالْهَمُّ عِنْدَ رَبِّي الْأَرْكَبُ الْعَالَمِينَ

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ

وَإِذَا امْرَأَتِي فَهُوَ شَافِقِينَ

وَالَّذِي يُبَيِّتُنِي تَوْبَةً حَسَنَةً

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों का फल भोगने के लिये ।

कर देगा मेरे लिये मेरे पाप प्रतिकार
(प्रलय) के दिन।

83. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर दे मुझे
तत्त्वदर्शिता और मुझे सम्मिलित कर
सदाचारियों में।

84. और मुझे सच्ची ख्याति प्रदान कर
आगामी लोगों में।

85. और बना दे मुझ को सुख के स्वर्ग
का उत्तराधिकारी।

86. तथा मेरे बाप को क्षमा कर दे^[1]
वास्तव में वह कुपथों में है।

87. तथा मुझे निरादर न कर जिस दिन
सब जीवित किये जायेंगे^[2]।

88. जिस दिन लाभ नहीं देगा कोई धन
और न संतान।

89. परन्तु जो अल्लाह के पास स्वच्छ
दिल ले कर आयेगा।

90. और समीप कर दी जायेगी स्वर्ग
आज्ञाकारियों के लिये।

91. तथा खोल दी जायेगी नरक कुपथों
के लिये।

92. तथा कहा जायेगा: कहाँ है वह जिन्हें
तुम पूज रहे थे?

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَارْحَمْنِي بِطُغْيَانِ

وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ

وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ

وَاعْفُ عَنِّي إِنَّكَ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ

يَوْمَ لَا يُنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ

إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ

وَأَلْفَتِ الْجَنَّةُ الْمُتَّقِينَ

وَبُرِزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغُورِ

وَقِيلَ لَهُمْ أَيُّكُمْ تَعْبُدُونَ

1 (देखिये: सूरह तौबा, आयत: 114)

2 हदीस में वर्णित है कि प्रलय के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने बाप से मिलेंगे। और कहेंगे: हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे वचन दिया था कि मुझे पुनः जीवित होने के दिन अपमानित नहीं करेगा। तो अल्लाह कहेगा: मैं ने स्वर्ग को काफिरों के लिये अवैध कर दिया है। (सहीह बुखारी, 4769)

93. अन्नाह के सिवा, क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे अथवा स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं?
94. फिर उस में औधे झोंक दिये जायेंगे वह और सभी कुपथ।
95. और इब्लीस की सेना सभी।
96. और वह उस में आपस में झगड़ते हुये कहेंगे:
97. अल्लाह की शपथ! वास्तव में हम खुले कुपथ में थे।
98. जब हम तुम्हें बराबर समझ रहे थे विश्व के पालनहार के।
99. और हमें कुपथ नहीं किया परन्तु अपराधियों ने।
100. तो हमारा कोई अभिस्तावक (सिफारशी) नहीं रह गया।
101. तथा न कोई प्रेमी मित्र।
102. तो यदि हमें पुनः संसार में जाना होता^[1] तो हम ईमान वालों में हो जाते।
103. निःसंदेह इस में बड़ी निशानी है। और उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।
104. और वास्तव में आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली^[2] दयावान् है।

مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ يَبْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْصَرُونَ ﴿٩٣﴾

فَلْيَكُونُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾

وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾

تَاللَّهِ إِنَّ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٩٧﴾

إِذْ كُنْتُمْ بَيْنَ يَدَيْهِ الْعَالِمِينَ ﴿٩٨﴾

وَمَا أَضَلُّوا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾

وَلَا صِدْقٍ عِنْدَهُ ﴿١٠١﴾

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَتُخَرُّ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ آيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

وَلَنْ رَبُّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

1 इस आयत में संकेत है कि संसार में एक ही जीवन कर्म के लिये मिलता है। और दूसरा जीवन प्रलोक में कर्मों के फल के लिये मिलेगा।

2 परन्तु लोग स्वयं अत्याचार कर के नरक के भागी बन रहे हैं।

105. नूह की जाति ने भी रसूलों को झुठलाया।
كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾
106. जब उन से उन के भाई नूह ने कहा: क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो?
إِذْ قَالَ لَهُمُّ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾
107. वास्तव में मैं तुम्हारे लिये एक ^[1] रसूल हूँ।
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾
108. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी बात मानो।
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ﴿١٠٨﴾
109. मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾
110. अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ﴿١١٠﴾
111. उन्होंने ने कहा: क्या हम तुझे मान लें, जब कि तेरा अनुसरण पतित (नीच) लोग ^[2] कर रहे हैं।
قَالُوا أَنُؤْمِنُ بِكَ وَكَذَّبُوا بِعَمَلِكَ الْكَافِرُونَ ﴿١١١﴾
112. (नूह ने) कहा: मुझे क्या ज्ञान कि वे क्या कर्म करते रहे हैं?
قَالَ وَمَا عَلَيَّ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾
113. उन का हिसाब तो बस मेरे पालनहार के ऊपर है यदि तुम समझो।
إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾
114. और मैं धुतकारने वाला ^[3] नहीं हूँ ईमान वालों को।
وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

1 अल्लाह का संदेश बिना कमी और अधिक्ता के तुम्हें पहुँचा रहा हूँ।

2 अर्थात् धनी नहीं, निर्धन लोग कर रहे हैं।

3 अर्थात् मैं हीन वर्ग के लोगों को जो ईमान लाये हैं अपने से दूर नहीं कर सकता जैसा कि तुम चाहते हो।

115. मैं तो बस खुला सावधान करने वाला हूँ।
116. उन्होंने ने कहा: यदि रुका नहीं, हे नूह! तो तू अवश्य पथराव कर के मारे हुये मैं होगा।
117. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी जाति ने मुझे झुठला दिया।
118. अतः तू निर्णय कर दे मेरे और उनके बीच, और मुक्त कर दे मुझ को तथा जो मेरे साथ है ईमान वालों में से।
119. तो हम ने उसे मुक्त कर दिया तथा जो उसके साथ भरी नाव में थे।
120. फिर हम ने डुबो दिया उस के पश्चात् शेष लोगों को।
121. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है, तथा उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं।
122. और निश्चय आप का पालनहार ही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
123. झुठला दिया आद (जाति) ने (भी) रसूलों को।
124. जब कहा उन से उनके भाई हूद^[1] ने: क्या तुम डरते नहीं हो?
125. वस्तुतः मैं तुम्हारे लिये एक न्यासिक (अमानतदार) रसूल हूँ।
126. अतः अब्राह से डरो और मेरा

- إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾
- قَالُوا لَيْسَ لَكَ تِلْكَ بِأُتُوخَ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾
- قَالَ رَبِّ إِنِّي قَوْلِي كَذَّابُونَ ﴿١١٧﴾
- فَأَنقَضْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ قِصْحًا وَبَيْنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾
- فَأَنجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِ الْمَشْحُونِ ﴿١١٩﴾
- لَمْ نَعْرِضْكَ بَعْدَ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾
- إِنِّي فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾
- وَإِنَّكَ لَهُو الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾
- كَذَّبَتْ عَادُ الرُّسُلِينَ ﴿١٢٣﴾
- إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودُ الْآتِفُونَ ﴿١٢٤﴾
- إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾
- فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

1 आद जाति के नबी हूद (अलैहिस्सलाम) को उन का भाई कहा गया है क्यों कि वह भी उन्हीं के समुदाय में से थे।

अनुपालन करो।

127. और मैं तुम से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

128. क्यों तुम बना लेते हो हर ऊँचे स्थान पर एक यादगार भवन व्यर्थ में।

129. तथा बनाते हो बड़े-बड़े भवन जैसे कि तुम सदा रहोगे।

130. और जब किसी को पकड़ते हो तो पकड़ते हो महा अत्याचारी बन कर।

131. तो अब्ब्राह से डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो।

132. तथा उस से भय रखो जिस ने तुम्हारी सहायता की है उस से जो तुम जानते हो।

133. उस ने सहायता की है तुम्हारी चौपायों तथा संतान से।

134. तथा बागों (उद्यानों) तथा जल स्रोतों से।

135. मैं तुम पर डरता हूँ भीषण दिन की यातना से।

136. उन्होंने ने कहा: नसीहत करो या न करो, हम पर सब समान है।

137. यह बात तो बस प्राचीन लोगों की नीति^[1] है।

138. और हम उन में से नहीं हैं जिन को

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرْتُ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلَدُونَ ﴿١٢٩﴾

وَإِذَا بَشِئْشُمُ طِفْشُكُمْ جَبَّارِينَ ﴿١٣٠﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٣١﴾

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَّاكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿١٣٢﴾

أَمَّاكُمْ بِأَنْعَامٍ وَأَنْبِيَاءٍ ﴿١٣٣﴾

وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٣٤﴾

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٣٥﴾

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَصْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٦﴾

إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٣٧﴾

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ ﴿١٣٨﴾

1 अर्थात् प्राचीन युग से होती चली आ रही है।

यातना दी जायेगी।

139. अन्ततः उन्होंने ने हमें झुठला दिया तो हम ने उन्हें ध्वस्त कर दिया। निश्चय इस में एक बड़ी निशानी (शिक्षा) है। और लोगों में अधिकतर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

140. और वास्तव में आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

141. झुठला दिया समूद ने भी⁽¹⁾ रसूलों को।

142. जब कहा, उन से उनके भाई सालेह ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

143. वास्तव में, मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ।

144. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो।

145. तथा मैं नहीं माँगता इस पर तुम से कोई परिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

146. क्या तुम छोड़ दिये जाओगे उस में जो यहाँ है निश्चिन्त रह कर?

147. बागों तथा स्रोतों में।

148. तथा खेतों और खजूरों में जिन के गुच्छे रस भरे हैं।

149. तथा तुम पर्वतों को तराश कर घर बनाते हो गर्व करते हुये।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٤٠﴾

كَذَّابَتْ سَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤١﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هَارُونَ لَا تَتَّقُوا اللَّهَ أَتَتَّقُونَ ﴿١٤٢﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٤٣﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَنِ اللَّهِ الْعَلِيمِ ﴿١٤٥﴾

أَتُركُونَ فِي مَالِهِمْ آمِنِينَ ﴿١٤٦﴾

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٤٧﴾

وَزُدُّوا نَحْلًا وَنَخْلًا طَلْعًا مَغِيصًا ﴿١٤٨﴾

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا لِزِينَةٍ ﴿١٤٩﴾

1 यहाँ यह बात याद रखने की है कि एक रसूल का इन्कार सभी रसूलों का इन्कार है क्यों कि सब का उपदेश एक ही था।

150. अतः अब्बाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا^①
151. और पालन न करो उल्लंघनकारियों के आदेश का।
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الشَّرِيقِينَ^②
152. जो उपद्रव करते हैं धरती में और सुधार नहीं करते।
الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ^③
153. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ^④
154. तू तो बस हमारे समान एक मानव है। तो कोई चमत्कार ला दे, यदि तू सच्चा है।
مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَاتٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ^⑤
155. कहा: यह ऊँटनी है¹ इस के लिये पानी पीने का एक दिन है और तुम्हारे लिये पानी लेने का निश्चित दिन है।
قَالَ هَذِهِ نَاقَةُ آلِ عَادٍ تَأْكُلُ عُشْبَ رَبْوٍ يَوْمَ مَعْلُومٍ^⑥
156. तथा उसे हाथ न लगाना बुराई से, अन्यथा तुम्हें पकड़ लेगी एक भीषण दिन की यातना।
وَلَا تَسْخَرُوا مِنْهَا فَإِنَّهَا تَكُومُ عَذَابٍ يَوْمَ عَظِيمٍ^⑦
157. तो उन्होंने ने बध कर दिया उसे, अन्ततः पछताने वाले हो गये।
فَعَصَوْا وَهُمْ أَصْبَحُوا عَادٍ^⑧
158. और पकड़ लिया उन्हें यातना ने। वस्तुतः इस में बड़ी निशानी है, और नहीं थे उन में से अधिकतर ईमान लाने वाले।
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ^⑨
159. और निश्चय आप का पालनहार ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ^⑩
160. झुठला दिया लूत की जाति ने (भी) रसूलों को।
كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ^⑪

1 अर्थात् यह ऊँटनी चमत्कार है जो उन की माँग पर पत्थर से निकली थी।

161. जब कहा उन से उन के भाई लूत ने: क्या तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٦١﴾

162. वास्तव में, मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

163. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरा अनुपालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا

164. और मैं तुम से प्रश्न नहीं करता इस पर किसी पारिश्रमिक (बदले) का। मेरा बदला तो बस सर्वलोक के पालनहार पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عِلَّ رِبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

165. क्या तुम जाते^[1] हो पुरुषों के पास संसार वासियों में से?

إِنَّا لَنُؤْتِيكَ الذِّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

166. तथा छोड़ देते हो जिसे पैदा किया है तुम्हारे पालनहार ने अर्थात् अपनी पत्नियों को, बल्कि तुम एक जाति हो सीमा का उल्लंघन करने वाली।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَنْفُسَكُمْ فَوَمَّ يَذُّونَ ﴿١٦٦﴾

167. उन्होंने ने कहा: यदि तू नहीं रुका, हे लूत! तो अवश्य तेरा बहिष्कार कर दिया जायेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿١٦٧﴾

168. उस ने कहा: वास्तव में मैं तुम्हारे कर्तूत से बहुत अप्रसन्न हूँ।

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

169. मेरे पालनहार! मुझे बचा ले तथा मेरे परिवार को उस से जो बह कर रहे हैं।

رَبِّ عَجِّزِي وَأَهْلِي وَمَنْ يَتَّبِعُنِي ﴿١٦٩﴾

170. तो हम ने उसे बचा लिया तथा उस के सभी परिवार को।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

1 इस कुकर्म का आरंभ संसार में लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति से हुआ। और अब यह कुकर्म पूरे विश्व में विशेष रूप से यूरोपीय सभ्य देशों में व्यापक है। और समलैंगिक विवाह को यूरोप के बहुत से देशों में वैध मान लिया गया है। जिस के कारण कभी भी उन पर अल्लाह की यातना आ सकती है।

171. परन्तु एक बुढ़िया^[1] को जो पीछे
रह जाने वालों में थी।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ۝

172. फिर हम ने विनाश कर दिया दूसरों
का।

ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۝

173. और वर्षा की उन पर एक घोर^[2]
वर्षा। तो बुरी हो गई डराये हुये
लोगों की वर्षा।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا مُّصَادِمًا ۝

174. वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी
(शिक्षा) है। और उन में अधिकतर
ईमान लाने वाले नहीं थे।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝

175. और निश्चय आप का पालनहार ही
अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।

وَأَنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

176. झुठला दिया ऐय्का^[3] वालों ने
रसूलों को।

كَذَّبَ أَصْحَابُ آلِكَاهِلِينَ ۝

177. जब कहा, उन से शुऐब ने: क्या
तुम डरते नहीं हो?

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝

178. मैं तुम्हारे लिये एक विश्वासनीय
रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

179. अतः अल्लाह से डरो तथा मेरी आज्ञा
का पालन करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝

180. और मैं नहीं माँगता तुम से इस पर
कोई पारिश्रमिक, मेरा पारिश्रमिक
तो बस समस्त विश्व के पालनहार
पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝

1 इस से अभिप्रेत लूत (अलैहिस्सलाम) की काफिर पत्नी है।

2 अर्थात् पत्थरों की वर्षा। (देखिये: सूरह हूद, आयत: 82 - 83)

3 ऐय्का का अर्थ झाड़ी है। यह मद्यन का क्षेत्र है जिस में शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया था।

181. तुम नाप-तौल पूरा करो, और न बनो कम देने वालों में।

182. और तौलो सीधे तराजू से।

183. और मत कम दो लोगों को उन की चीजें, और मत फिरो धरती में उपद्रव फैलाते।

184. और डरो उस से जिस ने पैदा किया है तुम्हें तथा अगले लोगों को।

185. उन्होंने ने कहा: वास्तव में तू उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

186. और तू तो बस एक पुरुष^[1] है हमारे समान। और हम तो तुझे झूठों में समझते हैं।

187. तो हम पर गिरा दे कोई खण्ड आकाश का यदि तू सच्चा है।

188. उस ने कहा: मेरा पालनहार भली प्रकार जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝

وَزِنُوا بِالْقِسْطِ أَسْبَغِ الْمُسْتَقِيمِ ۝

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِيلَ الْأَوَّلِينَ ۝

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَطَّلُكَ لَإِنَّا الْكَافِرِينَ ۝

فَأَنقِطْ عَلَيْنَا كَمَا مَنَ السَّمَاءُ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1 यहाँ यह बात विचारणीय है कि सभी विगत जातियों ने अपने रसूलों को उन के मानव होने के कारण नकार दिया। और जिस ने स्वीकार भी किया तो उस ने कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात अति कर के अपने रसूलों को प्रभु अथवा प्रभु का अंश बना कर उन्हीं को पूज्य बना लिया। तथा ऐकेश्वरवाद को कड़ा आघात पहुँचा कर मिश्रणवाद का द्वार खोल लिया और कुपथ हो गये। वर्तमान युग में भी इसी का प्रचलन है और इस का आधार अपने पूर्वजों की रीतियों को बनाया जाता है। इस्लाम इसी कुपथ का निवारण कर के ऐकेश्वरवाद की स्थापना के लिये आया है और वास्तव में यही सत्धर्म है।

हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मुझे वैसे न बड़ा चढ़ाना जैसे ईसाईयों ने मर्यम के पुत्र (ईसा) को बड़ा चढ़ा दिया। वास्तव में मैं उस का दास हूँ। अतः मुझे अब्बाह का दास और उस का रसूल कहो। (देखिये: सहीह बुखारी, 3445)

189. तो उन्होंने ने उसे झुठला दिया।
अन्ततः पकड़ लिया उन्हें छाया के^[1]
दिन की यातना ने। वस्तुतः वह एक
भीषण दिन की यातना थी।
190. निश्चय इस में एक बड़ी निशानी
(शिक्षा) है। और नहीं थे उन में
अधिकतर ईमान लाने वाले।
191. और वास्तव में आप का पालनहार
ही अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् है।
192. तथा निःसंदेह यह (कुर्आन) पूरे विश्व
के पालनहार का उतारा हुआ है।
193. इसे ले कर रूहुल अमीन^[2] उतरा।
194. आप के दिल पर ताकि आप हो
जायें सावधान करने वालों में।
195. खुली अर्बी भाषा में।
196. तथा इस की चर्चा^[3] अगले रसूलों
की पुस्तको में (भी) है।
197. क्या और उन के लिये यह निशानी
नहीं है कि इस्राईलियों के विद्वान^[4]

فَكَذَّبُوهُمَا فَأُخَذَ مِنْهُمَا يَوْمَ الظُّلُمَةِ إِذْ كَانَ
عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

وَأَنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ۝

بِلِسَانٍ عَرَبٍ مُبِينٍ ۝

وَإِنَّهُ لَكُنْزٌ وَهُوَ الْاَوَّلِينَ ۝

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَأْتِيَهِمُ الْبُيُوتُ يَغْرَابُونَ ۝

- 1 अर्थात् उनकी यातना के दिन उन पर बादल छा गया। फिर आग बरसने लगी और धरती कंपित हो गई। फिर एक कड़ी ध्वनी ने उन की जाने ले ली। (इब्ने कसीर)
- 2 रूहुल अमीन से अभिप्राय आदरणीय फरिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है। जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह की ओर से वही ले कर उतरते थे जिस के कारण आप रसूलों की और उन की जातियों की दशा से अवगत हुये। अतः यह आप के सत्य रसूल होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
- 3 अर्थात् सभी आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन तथा आप पर पुस्तक कुर्आन के अवतरित होने की भविष्यवाणी की गई है। और सब नबियों ने इस की शुभ सूचना दी है।
- 4 वनी इस्राईल के विद्वान अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि

इसे जानते हैं।

198. और यदि हम इसे उतार देते किसी अजमी^[1] पर।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِ ۝

199. और वह इसे उन के समक्ष पढ़ता तो वह उस पर ईमान लाने वाले न होते^[2]।

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝

200. इसी प्रकार हम ने घुसा दिया है इस (कुरआन के इन्कार) को पापियों के दिलों में।

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُخْرِجِينَ ۝

201. वह नहीं ईमान लायेंगे उस पर जब तक देख न लेंगे दुख दायी यातना।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

202. फिर उन पर सहसा आ जायेगी और वह समझ भी नहीं पायेंगे।

فَبِئْسَ لَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

203. तो कहेंगे: क्या हमें अवसर दिया जायेगा?

فَيَقُولُوا هَلْ عَمَّنْ مُنْظَرُونَ ۝

204. तो क्या वह हमारी यातना की जल्दी मचा रहे हैं?

أَفَعَدَّ إِنَّا نَسْتَعْجِلُونَ ۝

205. (हे नबी!) तो क्या आप ने विचार किया कि यदि हम लाभ पहुँचायें इन्हें वर्षों।

أَفَرَأَيْتَ إِن مَسَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۝

206. फिर आ जाये उन पर जिस की उन्हें धमकी दी जा रही थी।

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

207. तो क्या काम आयेगा उनके जो

مَا آغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْتَعْوُونَ ۝

बसल्लम और कुरआन पर ईमान लाये वह इस के सत्य होने का खुला प्रमाण है।

1 अर्थात् ऐसे व्यक्ति पर जो अरब देश और जाति के अतिरिक्त किसी अन्य जाति का हो।

2 अर्थात् अरबी भाषा में न होता तो कहते कि यह हमारी समझ में नहीं आता। (देखिये: सूरह, हा, मीम, सज्दा, आयत: 44)

उन्हें लाभ पहुँचाया जाता रहा?

208. और हम ने किसी बस्ती का विनाश नहीं किया परन्तु उस के लिये सावधान करने वाले थे।

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۝

209. शिक्षा देने के लिये, और हम अत्याचारी नहीं हैं।

ذِكْرَىٰ تَذَكَّرْنَا لِلظَّالِمِينَ ۝

210. तथा नहीं उतरे हैं (इस कुआँन) को ले कर शैतान।

وَمَا تَزَالُ تَطَايُرُ الشَّيْطَانِ ۝

211. और न योग्य है उन के लिये और न वह इस की शक्ति रखते हैं।

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۝

212. वास्तव में वह तो (इस के) सुनने से भी दूर^[1] कर दिये गये हैं।

إِنَّمَا عَنْ السَّمْعِ لَمَعَزُؤُونَ ۝

213. अतः आप न पुकारें अब्राह के साथ किसी अन्य पूज्य को अन्यथा आप दण्डितों में हो जायेंगे।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا الْخَرَفَتُكُونَ مِنَ الْمُعَذِّبِينَ ۝

214. और आप सावधान कर दें अपने समीपवर्ती^[2] सम्बन्धियों को।

وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ۝

1 अर्थात् इस के अवतरित होने के समय शैतान आकाश की ओर जाते हैं तो उल्का उन्हें भस्म कर देते हैं।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि जब यह आयत उतरी तो आप सफ़ा पर्वत पर चढ़े। और कुरैश के परिवारों को पुकारा। और जब सब एकत्र हो गये, और जो स्वयं नहीं आ सका तो उस ने किसी प्रतिनीधि को भेज दिया। और अबू लहब तथा कुरैश आ गये तो आप ने फरमाया: यदि मैं तुम से कहूँ कि उस बादी में एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने वाली है, तो क्या तुम मुझे सच्चा मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने आप को सदा ही सच्चा पाया है। आप ने कहा: मैं तुम्हें आगामी कड़ी यातना से सावधान कर रहा हूँ। इस पर अबू लहब ने कहा: तेरा पूरे दिन नाश हो! क्या हमें इसी के लिये एकत्र किया है? और इसी पर सूरह लहब उतरी। (सहीह बुखारी, 4770)

215. और झुका दें अपना बाहु^[1] उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾

216. और यदि वह आप की अवज्ञा करें तो आप कह दें कि मैं निर्दोष हूँ उस से जो तुम कर रहे हो।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢١٦﴾

217. तथा आप भरोसा करें अत्यंत प्रभुत्वशाली दयावान् पर।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

218. जो देखता है आप को जिस समय (नमाज़ में) खड़े होते हैं।

الَّذِي يَرَبُّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

219. और आप के फिरने को सज्दा करने^[2] वालों में।

وَقَفَّيْكَ فِي الْمُجِيدِينَ ﴿٢١٩﴾

220. निःसंदेह वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

221. क्या मैं तुम सब को बताऊँ कि किस पर शैतान उतरते हैं?

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

222. वे उतरते हैं प्रत्येक झूठे पापी^[3] पर।

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢٢٢﴾

223. वह पहुँचा देते हैं सुनी-सुनाई बातों को और उन में अधिकतर झूठे हैं।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَهُمْ كَاذِبُونَ ﴿٢٢٣﴾

224. और कवियों का अनुसरण वहकें हुये लोग करते हैं।

وَالشُّعْرَاءُ يُتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢٢٤﴾

225. क्या आप नहीं देखते कि वह प्रत्येक

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٥﴾

1 अर्थात् उस के साथ विनम्रता का व्यवहार करें।

2 अर्थात् प्रत्येक समय अकेले हों या लोगों के बीच हों।

3 हदीस में है कि फ़रिश्ते बादल में उतरते हैं, और आकाश के निर्णय की बात करते हैं, जिसे शैतान चोरी से सुन लेते हैं। और ज्योतिषियों को पहुँचा देते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिलाते हैं। (सहीह बुखारी, 3210)

वादी में फिरते^[1] हैं।

226. और ऐसी बात कहते हैं जो करते नहीं।

227. परन्तु वह (कवि) जो^[2] ईमान लाये तथा सदाचार किये और अब्राह का बहुत स्मरण किया, तथा बदला लिया इस के पश्चात् कि उन के ऊपर अत्याचार किया गया। तथा शीघ्र ही जान लेंगे जिन्होंने अत्याचार किया है कि वह किस दुष्परिणाम की ओर फिरते हैं।

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢٢٦﴾

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ
كَثِيرًا وَأَنصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظَلَمُوا وَسِعِلُوا
الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنَّىٰ مُنْقَلَبُ الْمُتَعَلِّبُونَ ﴿٢٢٧﴾

1 अर्थात् कल्पना की उड़ान में रहते हैं।

2 इन से अभिप्रेत हस्सान बिन साबित आदि कवि हैं जो कुरैश के कवियों की भर्त्सना किया करते थे। (देखिये: सहीह बुखारी, 4124)

सूरह नम्ल - 27

سُورَةُ النَّملِ

सूरह नम्ल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 93 आयतें हैं।

- इस सूरह में बताया गया है कि कुर्आन को अल्लाह की किताब न मानने और शिर्क से न रुकने का सब से बड़ा कारण सत्य को नकारना है। जो मायामोह में मग्न रहते हैं उन पर कुर्आन की शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं होता और वे नवियों के इतिहास से कोई शिक्षा नहीं लेते।
- इस में मुसा (अलैहिस्सलाम) को फिरऔन तथा उस की जाति की ओर भेजने और उन के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया उस का दुष्परिणाम बताया गया है।
- दावूद तथा सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के विशाल राज्य की चर्चा कर के बताया गया है कि वह कैसे अल्लाह के आभारी भक्त बने रहे जिस के कारण (सबा) की रानी बिल्कीस इस्लाम लायी।
- इस में लूत तथा सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति के उपद्रव का दुष्परिणाम बताया गया है तथा एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- यह घोषणा भी की गई है कि कुर्आन ने मार्ग दर्शन की राह खोल दी है और भविष्य में भी इस के सत्य होने के लक्षण उजागर होते रहेंगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. ता, सीन, मीमा। यह कुर्आन तथा प्रत्यक्ष पुस्तक की आयतें हैं।
2. मार्ग दर्शन तथा शुभसूचना है उन ईमान लाने वालों के लिये।
3. जो नमाज़ की स्थापना करते तथा जकात देते हैं और वही हैं जो अन्तिम दिन (परलोक) पर विश्वास रखते हैं।

هَٰذَا نَزَّلْنَا الْقُرْآنَ وَكَتَابٍ مُبِينٍ ۝

هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝

4. वास्तव में जो विश्वास नहीं करते परलोक पर हम ने शोभनीय बना दिया है उन के कर्मों को, इस लिये वह बहके जा रहे हैं।
5. यही हैं जिन के लिये बुरी यातना है तथा परलोक में वही सर्वाधिक क्षति ग्रस्त रहने वाले हैं।
6. और (हे नबी!) वास्तव में आप को दिया जा रहा है कुर्आन एक तत्वज्ञ सर्वज्ञ की ओर से।
7. (याद करो) जब कहा, ⁽¹⁾ मुसा ने अपने परिजनो में ने आग देखी है, मैं तुम्हारे पास कोई सूचना लाऊँगा या लाऊँगा आग का कोई अँगार, ताकि तुम तापो।
8. फिर जब आया वहाँ, तो पुकारा गया: शुभ है वह जो अग्नि में है और जो उस के आस-पास है, और पवित्र है अब्राह सर्वलोक का पालनहार।
9. हे मूसा यह मैं हूँ अब्राह अति प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ।
10. और फेंक दे अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा की रेंग रही है जैसे वह कोई सर्प हो तो पीठ फेर कर भागा और पीछे फिर कर देखा भी नहीं। (हम ने कहा): हे मूसा भय न कर, वास्तव में नहीं भय करते मेरे पास रसूल।
11. उस के सिवा जिस ने अत्याचार

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ
أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسُونَ ۝

وَأَنَّا كَلَّمْنَا الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ۝

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا سَائِغًا فِيهَا
مَخَبِرًا أَوْ أَنِيرُمْ بِهَا فَمَنْ يَعْلَمُ مَقْصُودَهَا ۝

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ يُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ مَنْ
حَوْلَهَا وَسُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

يُوسَىٰ إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَالَّذِي عَصَا إِيَّاهُ فَأَمَّا هَهُنَا بَكَاتُهَا جَانٌّ وَلِي
مُدِيرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَمُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخِيفُ
لَدُنِّي الْمُرْسَلُونَ ۝

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلْ حِسَابًا بَدَّلَ سُوءَ قَرَانٍ

1 यह उस समय की बात है जब मूसा (अलैहिस्सलाम) मदन से आ रहे थे रात्री के समय वह मार्ग भूल गये और शीत से बचाव के लिये आग की अवश्यता थी।

عَفْوًا رَحِيمًا ۝

किया हो, फिर जिस ने बदल लिया अपना कर्म भलाई से बुराई के पश्चात्, तो निश्चय मैं अति क्षमी दयावान् हूँ।

12. और डाल दे अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के, नौ निशानियों में से है, फिरऔन तथा उस की जाति की ओर (ले जाने के लिये) वास्तव में वे उल्लंघन कारियों में हैं।

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجَ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ سُوءٍ سَأَلْتَنِيبَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

13. फिर जब आयी उन के पास हमारी निशानियाँ आँख खोलने वाली, तो कह दिया कि यह तो खुला जादू है।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝

14. तथा उन्होंने नकार दिया उन्हें, अत्याचार तथा अभिमान के कारण, जब कि उन के दिलों ने उन का विश्वास कर लिया, तो देखो कि कैसा रहा उपद्रवियों का परिणाम?

وَيَحْدُوا بِهَا وَاسْتَفْتَتْهَا أَنْفُسُهُمْ ظُلُمًا وَعُلُوًّا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝

15. और हम ने प्रदान किया दावूद तथा सुलैमान को ज्ञान^[1], और दोनों ने कहा: प्रशंसा है उस अब्राह के लिये जिस ने हमें प्रधानता दी अपने बहुत से ईमान वाले भक्तों पर।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ جِبَالًا وَقَالَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

16. और उत्तराधिकारी हुआ सुलैमान दावूद का, तथा उस ने कहा: हे लोगो! हमें सिखाई गई है पक्षियों की बोली, तथा हमें प्रदान की गई है सब चीज़ से कुछ। वास्तव में

وَوَرِّثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مِنْطِقَ الطَّيْرِ وَأَوْثَقْنَا بِهِنَّ كُلَّ شَيْءٍ لَنَا هَذَا لَقَدْ فَضَّلْنَا الْيُسُفَى ۝

1 अर्थात् विशेष ज्ञान जो नबूवत का ज्ञान है जैसे मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किया और इसी प्रकार अन्तिम रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस कुर्आन द्वारा प्रदान किया है।

यह प्रत्यक्ष अनुग्रह है।

17. तथा एकत्र कर दी गयी सुलैमान के लिये उस की सेनायें जिन्नों तथा मानवों और पक्षी की, और वह व्यवस्थित रखे जाते थे।
18. यहाँ तक कि वे (एक बार) जब पहुँचे च्यूटियों की घाटी पर, तो एक च्यूटी ने कहा: हे च्यूटियो! प्रवेश कर जाओ अपने घरों में ऐसा न हो कि तुम्हें कुचल दे सुलैमान तथा उस की सेनायें, और उन्हें ज्ञान न हो।
19. तो वह (सुलैमान) मुस्करा कर हँस पड़ा उस की बात पर, और कहा: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमता प्रदान कर कि मैं कृतज्ञ रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो पुरस्कार तू ने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर किया है। तथा यह कि मैं सदाचार करता रहूँ जिस से तू प्रसन्न रहे और मुझे प्रवेश दे अपनी दया से अपने सदाचारी भक्तों में।
20. और उस ने निरीक्षण किया पक्षियों का तो कहा: क्या बात है कि मैं नहीं देख रहा हूँ हुदहुद को, या वह अनुपस्थितों में है?
21. मैं उसे कड़ी यातना दूँगा या उसे बध कर दूँगा, या मेरे पास कोई खुला प्रमाण लाये।
22. तो कुछ अधिक समय नहीं बीता कि उस ने (आकर) कहा: मैं ने ऐसी बात

وَجِئْنَا لِسُلَيْمَانَ جُنُودَهُ مِنَ الْجِبِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ
فَهُمْ يُورَثُونَ ﴿١٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا
النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ
وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ
وَالِدَيَّ وَلَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي
بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدَّ هُدًى لِّمَنِ
كَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾

لَأَعْلَبَنَّكَ يَا أَبَا شَيْدٍ الْأُولَٰئِكَ إِحْبَابُهُ الْوَلِيَّاتِنِ
يَسْطُونَ عَلَيْهِمْ ﴿٢١﴾

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ مَحْطُ بِهِ

का ज्ञान प्राप्त किया है जो आप के ज्ञान में नहीं आयी है, और मैं लाया हूँ आप के पास "सबा"^[1] से एक विश्वासनीय सूचना।

23. मैं ने एक स्त्री को पाया जो उन पर राज्य कर रही है, और उसे प्रदान किया गया है कुछ न कुछ प्रत्येक वस्तु से तथा उस के पास एक बड़ा भव्य सिंहासन है।
24. मैं ने उसे तथा उस की जाति को पाया कि सज्दा करते हैं सूर्य को अल्लाह के सिवा, और शोभनीय बना दिया है उन के लिये शैतान ने उन के कर्मों को और उन्हें रोक दिया है सुपथ से, अतः वह सुपथ पर नहीं आते।
25. (शैतान ने शोभनीय बना दिया है उन के लिये) कि उस अल्लाह को सज्दा न करें जो निकालता है गुप्त वस्तु को^[2] आकाशों तथा धरती में, तथा जानता वह सब कुछ जिसे तुम छुपाते हो तथा जिसे व्यक्त करते हो।
26. अल्लाह जिस के अतिरक्ति कोई बंदनीय नहीं, जो महा सिंहासन का स्वामी है।
27. (सुलैमान ने) कहा: हम देखेंगे कि तू सत्य वादी है अथवा मिथ्यावादियों में से है।
28. जाओ यह मेरा पत्र लेकर, और उसे

وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ۝

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۝

وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝

الَّذِي يَخُورُ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

قَالَ سَتَنظُرُونِي أَعْدَدْتُ لَكُمْ مِنْ الْكَذِبِ ۝

إِذْ هَبْ بِنُفُوسِنَا هَذَا الْقَوْمَ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّاهُمْ

1 सबा यमन का एक नगर है।

2 अर्थात् वर्षा तथा पौधों को।

डाल दो उन की ओर, फिर वापिस आ जाओ उन के पास से, फिर देखो कि वह क्या उत्तर देते हैं?

فَانْظُرُوا مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

29. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मेरी ओर एक महत्व पूर्ण पत्र डाला गया है।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ الْإِنِّي آلِيَتْكِ كَرِيمًا ﴿٢٩﴾

30. वह सुलैमान की ओर से है, और वह अल्लाह अत्यंत कृपाशील दयावान् के नाम से (आरंभ) है।

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾

31. कि तुम मुझ पर अभिमान न करो तथा आ जाओ मेरे पास आज्ञाकारी हो कर।

الْأَعْلُوَاعِلَىٰ وَأَتَوَقَّئُ مَسِيرِينَ ﴿٣١﴾

32. उस ने कहा: हे प्रमुखो! मुझे परामर्श दो मेरे विषय में, मैं कोई निर्णय करने वाली नहीं हूँ जब तक तुम उपस्थित न रहो।

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ دَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿٣٢﴾

33. सब ने उत्तर दिया कि हम शक्ति शाली तथा बड़े योद्धा हैं, आप स्वयं देख लें कि आप को क्या आदेश देना है।

قَالُوا لَنْ نَمْنُكَ إِلَّا بِأَمْرٍ أَوْ أَمْرٍ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِي مَاذَا قَالَ مُرْسَلٌ ﴿٣٣﴾

34. उस ने कहा: राजा जब प्रवेश करते हैं किसी बस्ती में तो उसे उजाड़ देते हैं और उस के आदरणीय वासियों को अपमानित बना देते हैं और वे ऐसा ही करेंगे।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعْرَافَ أَهْلِهَا آذِلَّةً ۚ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿٣٤﴾

35. और मैं भेजने वाली हूँ उन की ओर एक उपहार फिर देखती हूँ कि क्या लेकर आते हैं दूत?

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرُهُمْ كَيْفَ يَرْجِعُونَ ﴿٣٥﴾

36. तो जब वह (दूत) आया सुलैमान के पास, तो कहा: क्या तुम मेरी सहायता धन से करते हो? मुझे अल्लाह ने जो दिया है उस से उत्तम है

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمْنُونِ بِمَا أَنَا أَنِيسٌ ۚ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا تُمْنُونَ ۚ إِنَّمَا بَهَّيْتُكُمْ تَقْرَحُونَ ﴿٣٦﴾

जो तुम्हें दिया है, बल्कि तुम्हीं अपने उपहार से प्रसन्न हो रहे हो।

37. वापिस हो जाओ उन की ओर, हम लायेंगे उनके पास ऐसी सेनायें जिन का वह सामना नहीं कर सकेंगे, और हम अवश्य उन्हें उस (वस्ती) से निकाल देंगे अपमानित कर के और वह तुच्छ (हीन) हो कर रहेंगे।

38. सुलैमान ने कहा: हे प्रमुखो! तुम में से कौन लायेगा^[1] उस का सिंहासन इस से पहले कि वह आ जायें आज्ञाकारी हो कर।

39. कहा एक अतिकाय ने जिन्नों में से: मैं ला दूँगा आप के पास उसे इस से पूर्व कि आप खड़े हों अपने स्थान से, और इस पर मुझे शक्ति है मैं विश्वासनीय हूँ।

40. कहा उस ने जिस के पास पुस्तक का ज्ञान था: मैं ला दूँगा उसे आप के पास इस से पहले कि आप की पलक झपके, और जब देखा उसे अपने पास रखा हुआ, तो कहा: यह मेरे पालनहार का अनुग्रह है, ताकि मेरी परीक्षा ले कि मैं कृतज्ञता दिखाता हूँ या कृतघ्नता। और जो कृतज्ञ होता है वह अपने लाभ के लिये होता है तथा जो कृतघ्न हो तो निश्चय मेरा पालनहार निस्पृह महान् है।

إِرجِعْ إِلَيْهِمْ قَلِيلًا يَتَّبِعُهُمْ يَمْشُونَ لَا يَكُنْ لَهُمْ فِيهَا
وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ﴿٣٧﴾

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَؤُا ائْتُونِي بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ
يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ عِفْرِيتٌ مِنَ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ
مِنْ مَقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ أَقْوَىٰ أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ
بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَآهُ
مُسْتَقِرًّا عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي
لِيَتْلُوَنِي وَأَشْكُرَ أَمْرًا الْفَرُّ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا
يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَافِيَ عَاقِبَتِي
كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾

1 जब सुलैमान ने उपहार वापिस कर दिया और धमकी दी तो रानी ने स्वयं सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की सेवा में उपस्थित होना उचित समझा। और अपने सेवकों के साथ फलस्तीन के लिये प्रस्थान किया, उस समय उन्होंने ने राज्यसदस्यों से यह बात कही।

41. कहा: परिवर्तन कर दो उस के लिये उसके सिंहासन में, हम देखेंगे कि वह उसे पहचान जाती है या उन में से हो जाती है जो पहचानते न हों।
42. तो जब वह आई, तो कहा गया: क्या ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने कहा: वह तो मानो वही है। और हम तो जान गये थे इस से पहले ही और आज्ञाकारी हो गये थे।
43. और रोक रखा था उसे (ईमान से) उन (पूज्यों ने) जिस की वह इबादत (वंदना) कर रही थी अल्लाह के सिवा। निश्चय वह काफिरों की जाति में से थी।
44. उस से कहा गया कि भवन में प्रवेश कर। तो जब उसे देखा तो उसे कोई जलाशय (हौद) समझी और खोल दी^[1] अपनी दोनों पिंडलियाँ, (सुलैमान ने) कहा: यह शीशे से निर्मित भवन है। उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने अत्याचार किया अपने प्राण^[2] पर और (अब) मैं इस्लाम लाई सुलैमान के साथ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये।
45. और हम ने भेजा समूद की ओर उनके भाई सालेह को, कि तुम सब इबादत (वंदना) करो अल्लाह की, तो अकस्मात् वे दो गिरोह होकर लड़ने लगे।
46. उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्यों तुम

قَالَ تَكْرَهُوا هَٰؤُلَاءِ عَنْكُمْ فَانظُرْ إِلَهُ رَبِّكَ قَالُوا مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٤١﴾

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَصَرْتِكُمْ قَالَتْ كَاذِبَةٌ هَٰؤُلَاءِ وَأُولَٰئِذَا الْعِلْمُ مِنْ قِبَلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِينَ ﴿٤٢﴾

وَصَدَّ هَٰمَا مَا كَانَتْ تُعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَبِطَتْ إِلَيْهِ وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِيهَا قَالَتْ إِنَّهُ صَرْحٌ مُسَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ ﴿٤٥﴾

قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ

1 पानी से बचाव के लिये कपड़े पाईचे ऊपर कर लिये।

2 अर्थात् अन्य की पूजा-उपासना कर के।

शीघ्र चाहते हो बुराई^[1] को भलाई से पहले? क्यों तुम क्षमा नहीं माँगते अल्लाह से, ताकि तुम पर दया की जाये?

الْحَسَنَةَ، لَوْلَا اسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠﴾

47. उन्होंने ने कहा: हम ने अपशकुन लिया है तुम से तथा उन से जो तेरे साथ हैं। (सालेह ने) कहा: तुम्हारा अपशकुन अल्लाह के पास^[2] है, बल्कि तुम लोगों की परीक्षा हो रही है।

قَالُوا الظُّرُونَالَيْكَ وَبِمَنْ مَعَكَ قَالِ ظُورُكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٢١﴾

48. और उस नगर में नौ व्यक्तियों का एक गिरोह था जो उपद्रव करते थे धरती में, और सुधार नहीं करते थे।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ سَعَةُ الرَّهْطِ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

49. उन्होंने ने कहा: आपस में शपथ लो अल्लाह की कि हम अवश्य रात्री में छापा मार देंगे सालेह तथा उसके परिवार पर, फिर कहेंगे उस (सालेह) के उत्तराधिकारी से, हम उपस्थित नहीं थे उस के परिवार के विनाश के समय, और निःसंदेह हम सत्यवादी (सच्चे) हैं।

قَالُوا نَاقِسُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا لَمْ يَنْهَأْنَا مِنْهُ لِكَأَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٢٣﴾

50. और उन्होंने ने एक षड्यंत्र रचा, और हम ने भी एक उपाय किया, और वे समझ नहीं रहे थे।

وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكْرًا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٤﴾

51. तो देखो कैसा रहा उन के षड्यंत्र का परिणाम? हम ने विनाश कर दिया उन का तथा उन की पूरी जाति का।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مُكْرِهِمْ إِنَّ آدَمْرَهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٢٥﴾

52. तो यह उन के घर है उजाड़ पड़े हुये

فَإِنَّكَ بِبُيُوتِهِمْ خَاوِيَةٌ يُسَالِفُونَ فِي ذَلِكَ

1 अर्थात ईमान लाने के बजाये इन्कार क्यों कर रहे हो?

2 अर्थात तुम पर जो अकाल पड़ा है वह अल्लाह की ओर से है जिसे तुम्हारे कुकर्मों के कारण अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में लिख दिया है। और यह अशुभ मेरे कारण नहीं बल्कि तुम्हारे कुफ्र के कारण है। (फ़तुल क़दीर)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يُعَلِّمُونُ ۝

उन के अत्याचार के कारण, निश्चय इस में एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिये जो ज्ञान रखते हैं।

53. तथा हम ने बचा लिया उन्हें जो ईमान लाये, और (अब्राह से) डर रहे थे।

وَأَنجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

54. तथा लूत को (भेजा), जब उस ने अपनी जाति से कहा: क्या तुम कुकर्म कर रहे हो जब कि तुम^[1] आँखें रखते हो?

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَكَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ۝

55. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो काम वासना की पूर्ति के लिये? तुम लोग बड़े ना समझ हो।

أَيُنَافِئُكُمْ كِتَابُ الْإِنشَاءِ الْفَاحِشَةِ مِنَ الذُّنُوبِ الْبِغَاةِ ۚ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۝

56. तो उस की जाति का उत्तर बस यह था कि उन्होंने ने कहा: लूत के परिजनों को निकाल दो अपने नगर से, वास्तव में यह लोग बड़े पवित्र बन रहे हैं।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُو آلَ لُوطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ۝

57. तो हम ने बचा लिया उसे तथा उस के परिवार को, उस की पत्नी के सिवा, जिसे हम ने नियत कर दिया पीछे रह जाने वालों में।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

58. और हम ने उन पर बहुत अधिक वर्षा कर दी। तो बुरी हो गई सावधान किये हुये लोगों की वर्षा।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ قَسَبًا ۖ مَّطَرًا مُّثَنًّا ۚ إِنَّهُمْ

59. आप कह दें: सब प्रशंसा अब्राह के लिये है, और सलाम है उस के उन भक्तों पर जिन को उस ने चुन

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

1 (देखिये: सूरह आराफ़, 84, और सूरह हूद, 82, 83)। इस्लाम में स्त्री से भी अस्वभाविक संभोग वर्जित है। (सुनन नसाई, हदीस नं॰ - 8985, और सुनन इब्ने माजा, हदीस नं॰ - 1924)।

लिया। क्या अल्लाह उत्तम है या जिसे वह साझी बनाते हैं?

60. या वह है जिस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की और उतारा है तुम्हारे लिये आकाश से जल, फिर हम ने उगा दिया उस के द्वारा भव्य बाग, तुम्हारे बस में न था कि उगा देते उस के वृक्ष, तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि यही लोग (सत्य से) कतरा रहे हैं।

61. या वह है जिस ने धरती को रहने योग्य बनाया तथा उस के बीच नहरें बनायीं, और उस के लिये पर्वत बनाये, और बना दी दो सागरों के बीच एक रोका तो क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? बल्कि उन में से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।

62. या वह है जो व्याकुल की प्रार्थना सुनता है जब उसे पुकारे और दूर करता है दुख को, तथा तुम्हें बनाता है धरती का अधिकारी, क्या कोई पूज्य है अल्लाह के साथ? तुम बहुत कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

63. या वह है जो तुम्हें राह दिखाता है सूखे तथा सागर के अँधेरों में, तथा भेजता है वायुओं को शुभ सूचना देने के लिये अपनी दया (वर्षा) से पहले, क्या कोई और पूज्य है अल्लाह के साथ? उच्च है अल्लाह उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

64. या वह है जो आरंभ करता है

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنبِتُوا شَجَرَهَا ۚ عَالِمُ مَعْرِئِهِمْ ثُمَّ يَوْمَ يُعِيدُهُمْ ۝

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِي وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ عَالِمُ مَعْرِئِهِمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُ لَكُمْ خُلُقَاءَ الْأَرْضِ ۚ عَالِمُ مَعْرِئِهِمْ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيَّحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ عَالِمُ مَعْرِئِهِمْ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ

उत्पत्ति को, फिर उसे दुहरायेगा
तथा जो तुम्हें जीविका देता है
आकाश तथा धरती से, क्या कोई
पुज्य है अल्लाह के साथ? आप कह
दें कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम
सच्चे^[1] हो।

65. आप कह दें कि नहीं जानता है जो
आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को
अल्लाह के सिवा, और वे नहीं जानते
कि कब फिर जीवित किये जायेंगे।

66. बल्कि समाप्त हो गया है उन का
ज्ञान आखिरत (परलोक) के विषय
में, बल्कि वे द्विधा में हैं, बल्कि वे
उस से अंधे हैं।

67. और कहा काफिरों ने: क्या जब
हम हो जायेंगे मिट्टी तथा हमारे
पूर्वज तो क्या हम अवश्य निकाले^[2]
जायेंगे।

68. हमें इस का वचन दिया जा चुका है
तथा हमारे पूर्वजों को इस से पहले,
यह तो बस अगलों की बनायी हुई
कथायें हैं।

69. (हे नबी!) आप कह दें कि
चलो-फिरो धरती में फिर देखो कि
कैसा हुआ अपराधियों का परिणाम।

يُرْزَقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ عَالَهُ مَعَ اللَّهِ
قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ
إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۝

بَلِ الْأُفْكُ عَلَيْهِمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِي
شَكٍّ مِنْهَا ۚ بَلْ هُمْ فِيهَا عَمَوُونَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِذَا كُنَّا تُرَابًا
وَأَبَاؤُنَا إِنَّا الْمَخْرُجُونَ ۝

لَقَدْ وَعدْنَا هَذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ
إِنْ هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

1 आयत नं० 60 से यहाँ तक का सारांश यह है कि जब अल्लाह ने ही पूरे विश्व की उत्पत्ति की है और सब की व्यवस्था वही कर रहा है, और उस का कोई साक्षी नहीं तो फिर यह मिथ्या पूज्य अल्लाह के साथ कहाँ से आ गये? यह तो ज्ञान और समझ में आने की बात नहीं और न इस का कोई प्रमाण है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी समाधियों से जीवित निकाले जायेंगे।

70. और आप शोक न करें उन पर और न किसी संकीर्णता में रहें उस से जो चालें वह चल रहे हैं।
71. तथा वह कहते हैं: कब यह धमकी पूरी होगी यदि तुम सच्चे हो?
72. आप कह दें: संभव है कि तुम्हारे समीप हो उस में से कुछ जिसे तुम शीघ्र चाहते हो।
73. तथा निःसंदेह आप का पालनहार बड़ा दयालु है लोगों⁽¹⁾ पर, परन्तु उन में से अधिकतर कृतज्ञ नहीं होते।
74. और वास्तव में आप का पालनहार जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।
75. और कोई छुपी चीज़ नहीं है आकाश तथा धरती में परन्तु वह खुली पुस्तक में⁽²⁾ है।
76. निःसंदेह यह कुर्आन वर्णन कर रहा है इस्राईल के संतान की समक्ष उन अधिकतर बातों को जिस में वह विभेद कर रहे हैं।
77. और वास्तव में वह मार्ग दर्शन तथा दया है ईमान वालों के लिये।
78. निःसंदेह आप का पालनहार⁽³⁾ निर्णय कर देगा उन के बीच अपने आदेश

- وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ﴿٧٠﴾
- وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٧١﴾
- قُلْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٧٢﴾
- وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾
- وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾
- وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٧٥﴾
- إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفُضُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَآءَ نِيلَ أَكْثَرِ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾
- وَإِنَّهُ لَهْدَىٰ ذُرِّيَّةَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾
- إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ﴿٧٨﴾

1 अर्थात् लोगों को अपने अनुग्रह से अवसर देता रहता है।

2 इस से तात्पर्य (लौहे महफूज़) सुरक्षित पुस्तक है जिस में सब कुछ अंकित है।

3 अर्थात् प्रलय के दिन। और सत्य तथा असत्य को अलग कर के उस का बदला देगा।

से, तथा वही प्रबल सब कुछ जानने वाला है।

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

79. अतः आप भरोसा करें अल्लाह पर, वस्तुतः आप खुले सत्य पर हैं।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝

80. वास्तव में आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों को। और न सुना सकेंगे बहरों को अपनी पुकार, जब वह भागे जा रहे हों पीठ फेर^[1] कर।

إِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمِعُ الْقُمْرَ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝

81. तथा आप अंधे को मार्ग दर्शन नहीं दे सकते उन के कुपथ से, आप तो बस उसी को सुना सकते हैं जो ईमान रखता हो हमारी आयतों पर फिर वह आज्ञाकारी हो।

وَمَا آتَاكَ بِهَدْيٍ النُّعْيَىٰ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۚ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝

82. और जब आ जायेगा बात पूरी होने का समय उन के ऊपर^[2], तो हम निकालेंगे उन के लिये एक पशु धरती से जो बात करेगा उन^[3] से कि लोग हमारी आयतों पर

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَالْوَالِدِ الَّذِي يُؤْتِي نَفْسًا فَتَرُونَ ۝

1 अर्थात् जिन की अंतरात्मा मर चुकी हो, और जिन की दुराग्रह ने सत्य और असत्य का अन्तर समझने की क्षमता खो दी हो।

2 अर्थात् प्रलय होने का समय।

3 यह पशु वही है जो प्रलय के समीप होने का एक लक्षण है जैसा कि हदीस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि प्रलय उस समय तक नहीं होगी जब तक तुम दस लक्षण न देख लो, उन में से एक पशु का निकलना है। (देखिये: सहीह मुस्लिम हदीस नं॰: 2901)

आप का दूसरा कथन यह है कि सर्व प्रथम जो लक्षण होगा वह सूर्य का पश्चिम से निकलना होगा तथा पूर्वान्ह से पहले पशु का निकलना इन में से जो भी पहले होगा शीघ्र ही दूसरा उस के पश्चात् होगा। (देखिये: सहीह मुस्लिम हदीस नं॰: 2941)

और यह पशु मानव-भाषा में बात करेगा जो अल्लाह के सामर्थ्य का एक चिन्ह होगा।

विश्वास नहीं करते थे।

83. तथा जिस दिन हम घेर लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह उन का जो झुठलाते रहे हमारी आयतों को, फिर वह सब (एकत्र किये जाने के लिये) रोक दिये जायेंगे।

84. यहाँ तक कि जब सब आ जायेंगे तो अल्लाह उन से कहेगा: क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया जब कि तुम ने उन का पूरा ज्ञान नहीं किया, अन्यथा तुम और क्या कर रहे थे?

85. और सिद्ध हो जायेगा यातना का वचन उन के ऊपर उन के अत्याचार के कारण। तब वह बात नहीं कर सकेंगे।

86. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने रात बनाई ताकि वह शान्त रहें उस में, तथा दिन को दिखाने वाला।^[1] वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ (लक्षण) हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

87. और जिस दिन फूँका जायेगा^[2] सूर (नरसिंघा) में, तो घबरा जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु वह जिसे अल्लाह चाहे, तथा सब उस (अल्लाह) के समक्ष आ जायेंगे बिबश हो कर।

88. और तुम देखते हो पर्वतों को तो उन्हें समझते हो स्थिर (अचल) हैं, जब

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِمَّنْ
يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿٨٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ فَقَالَ الْكَاذِبُ بَلْ يَأْتِيهِ وَلَمْ
تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّا أَذْكُرْ تَعْصَلُونَ ﴿٨٤﴾

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ
لَا يَنْطِقُونَ ﴿٨٥﴾

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مَبْصُرًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَقَرَّبَ مِنْ فِي
السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ
اللَّهُ وَكُلٌّ أَتَوْهُ ذُخْرَيْنَ ﴿٨٧﴾

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدًا وَهِيَ كُومٌ

1 जिस के प्रकाश में वह देखें और अपनी जीविका के लिये प्रयास करें।

2 अर्थात् प्रलय के दिन।

कि वह (उस दिन) उड़ेंगे बादल के समान, यह अल्लाह की रचना है जिस ने सुदृढ़ किया है प्रत्येक चीज को, निश्चय वह भली-भाँति सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

89. जो भलाई^[1] लायेगा, तो उस के लिये उस से उत्तम(प्रतिफल) है और वह उस दिन की व्यग्रता से निर्भय रहने वाले होंगे।

90. और जो बुराई लायेगा, तो वही झोंक दिये जायेंगे औंधे मुँह नरक में (तथा कहा जायेगा): तुम्हें वही बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे हो।

91. मुझे तो बस यही आदेश दिया गया है कि इस नगर (मक्का) के पालनहार की इबादत (बंदना) करूँ जिस ने उसे आदरणीय बनाया है, तथा उसी के अधिकार में है प्रत्येक चीज, और मुझे आदेश दिया गया है कि आज्ञाकारियों में से रहूँ।

92. तथा कुर्आन पढ़ता रहूँ, तो जिस ने सुपथ अपनाया तो वह अपने ही लाभ के लिये सुपथ अपनायेगा। और जो कुपथ हो जाये तो आप कह दें कि वास्तव में मैं तो बस सावधान करने वालों में से हूँ।

93. तथा आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, वह शीघ्र तुम्हें दिखा देगा अपनी निशानियाँ जिन्हें

السَّحَابِ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقَنَ كُلُّ شَيْءٍ
إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨٩﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَهُمْ مِنْ فَزَعٍ
يَوْمَئِذٍ آمِنُونَ ﴿٩٠﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُنْتُمْ وَجُوهَكُمْ فِي النَّارِ هَلَكٍ
مُجْرِمُونَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩١﴾

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَٰذَا الْبَلَدِ الَّذِي
حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ
الْمُسْلِمِينَ ﴿٩٢﴾

وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ
وَمَنْ ضَلَّ فَلَا رَافِعَ لَهُ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿٩٣﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَصَبِّرُوا وَلَهَا
وَمَا يَكُ بِكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

1 अर्थात् एक अल्लाह के प्रति आस्था तथा तदानुसार कर्म ले कर प्रलय के दिन आयेगा।

तुम पहचान⁽¹⁾ लोगे और तुम्हारा
पालनहार उस से अचेत नहीं है जो
कुछ तुम कर रहे हो।

1 (देखिये सूरह हा, मीम सज्दा, आयत- 53)

सूरह कसस - 28

سُورَةُ الْقَصَصِ

सूरह कसस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

इस सूरह का नाम इस की आयत नं० 25 में आये हुये शब्द ((कसस)) से लिया गया है। जिस का अर्थ: वाक्य क्रम का वर्णन करना है। इस सूरह में मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म, उन का अपने शत्रु के भवन में पालन-पोषण, फिर उन के मर्दन जाने और दस वर्ष के पश्चात् अपने परिजनों के साथ अपने देश वापिस आने और राह में नबूवत और चमत्कार मिलने और फिरऔन तथा उस की जाति के ईमान न लाने के कारण अपनी सेना के साथ डुबो दिये जाने का पूरा विवरण है। जिस से यह बताया गया है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है उस के संसाधन इस प्रकार बना देता है कि किसी को उस का ज्ञान भी नहीं होता। इसी प्रकार किसी को नबी बनाने के लिये आकाश और धरती में कोई एलान नहीं किया जाता। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे और कब नबी हो गये।

- इस में यह बताया गया है कि अल्लाह जिस से काम लेना चाहता है उसे किसी राज्य और सेना की सहायता की आवश्यकता नहीं होती और अन्ततः वही सफल होता है।
- इस में यह संकेत भी है कि सत्य के विरोधी चमत्कार की माँग तो करते हैं किन्तु वह चमत्कार देख कर भी ईमान नहीं लाते जैसा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की जाति ने किया और स्वयं अपना विनाश कर लिया।
- यह पूरी सूरह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य नबी होने का प्रमाण भी है क्योंकि हजारों वर्ष पुरानी मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी स्थिति का विवरण इस प्रकार वही दे सकता है जिसे अल्लाह ने वही द्वारा यह सब कुछ बताया हो। अन्यथा आप स्वयं निरक्षर थे और अरब में आप के पास ऐसे साधन भी नहीं थे जिस से आप यह सब कुछ जान सकें।
- इस में मक्का के काफ़िरों को कुछ ईसाईयों के कुर्बान पाक सुन कर ईमान लाने पर लज्जित किया गया है कि तुम ने अपने घर की बात नहीं मानी।

- और इस के अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा देते हुये सत्य पर स्थित रहने का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طس

1. ता, सीन, मीम।
2. यह इस खुली पुस्तक की आयतें हैं।
3. हम आप के समक्ष सुना रहें हैं मूसा तथा फिरऔन के कुछ समाचार सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।
4. वास्तव में फिरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह को उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चय वह उपद्रवियों में से था।
5. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्हीं को^[1] उत्तराधिकारी।
6. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फिरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे^[2] थे।

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

نَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَفْئَلَهَا شِيعَةً يَسْتَضِعُّ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَدَّيْنِهِ أِبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَكْبِي نِسَاءَهُمْ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ

وَنُكَلِّمُنَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنَرَى فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ

1 अर्थात् मिस्र देश का राज्य उन्हीं को प्रदान कर दें।

2 अर्थात् बनी इस्राईल के हाथों अपने राज्य के पतन से।

7. और हम ने बह्वी^[1] की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम वीपस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।
8. तो ले लिया उसे फिरऔन के कर्मचारियों ने^[2] ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुख का कारण। वास्तव में फिरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थीं।
9. और फिरऔन की पत्नी ने कहा: यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुँचाये या उसे हम पुत्र बना लें। और वह समझ नहीं रहे थे।
10. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल, समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते उस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।
11. तथा (मूसा की माँ ने) कहा: उस की बहन से कि तू इस के पीछे-पीछे जा। तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।
12. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خَفِيَ عَلَيْهِ الْفَيْسُ فِي الْبَيْتِ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۚ إِنَّا رَأَيْنَاهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

فَالْقِطْعَةُ الْفِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۚ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ۝

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قَوَتْ عَيْنِي يَٰ لَيْلَ ۚ لَا تَقْسُ لَوْهَدًا عَلَيَّ أَنْ يَنْفَعَنِي أَوْ تَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَأَصْبَحَ قُودُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَانًا ۚ كَادَتْ لَتَسْبِدَ بِهِ ۖ لَوْلَا أَنْ تَبَطَّنَا عَلَيَّ قَلْبُهَا لَتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَقَالَتِ لِأُخْتِهِ تُصِيبُهُ قُبُورُهُمْ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلٍ فَقَالَتْ هَلْ

- 1 जब मूसा का जन्म हुआ तो अब्राह ने उन के माता के मन में यह बातें डाल दी।
- 2 अर्थात् उसे एक संदूक में रख कर सागर में डाल दिया जिसे फिरऔन की पत्नी ने निकाल कर उसे (मूसा को) अपना पुत्र बना लिया।

उस (मूसा) पर दाईयों को इस से^[1] पूर्वा तो उस (की बहन) ने कहा: क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुभचिन्तक हों?

13. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्लाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते।

14. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देते हैं सदाचारियों को।

15. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के वासियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लड़ते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दूसरा उस के शत्रु में^[2] से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे धूसा मारा और वह मर गया। मूसा ने कहा: यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।

16. उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं ने

أَدْرَكْتُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِكُمْ لِكْفَلَتِهِ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَصِيبٌ ۝

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ
وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا
فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَةِ
وَهَٰذَا مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَنَافَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ
عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ
قَالَ هَٰذَا امْرِئٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ

1 अर्थात् उस की माता के पास आने से पूर्वा

2 अर्थात् एक इस्राईली तथा दूसरा किब्ती फिरऔन की जाति से था।

अपने ऊपर अत्याचार कर लिया,
तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने
उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह
क्षमाशील अति दयावान् है।

17. उस ने कहा: उस के कारण जो तू
ने मुझे पर पुरस्कार किया है अब मैं
कदापि अपराधियों का सहायक नहीं
बनूंगा।

18. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ
समाचार लेने गया तो सहसा वही
जिस ने उस से कल सहायता माँगी
थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से
कहा: वास्तव में तू ही खुला कुपथ है।

19. फिर जब पकड़ना चाहा उसे जो
उन दोनों का शत्रु था, तो उस ने
कहा: हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना
चाहता है जैसे मार दिया एक व्यक्ति
को कल? तू तो चाहता है कि बड़ा
उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में
और तू नहीं चाहता कि सुधार करने
वालों में से हो।

20. और आया एक पुरुष नगर के किनारे
से दौड़ता हुआ, उस ने कहा: हे
मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर
रहे हैं तेरे विषय में कि तुझे बध कर
दें, अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं
तेरे शुभचिन्तकों में से हूँ।

21. तो वह निकल गया उस (नगर) से
डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना
की: हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले
अत्याचारी जाति से।

إِنَّهُ هُوَ الْعَفُوُّ الرَّحِيمُ ①

قَالَ رَبِّ إِنَّمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا
لِلْمُجْرِمِينَ ②

فَصَبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي
اسْتَصْرَعَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ قَالَ لَهُ مُوسَى
إِنَّكَ لَمِنَ الْغَوِيِّينَ ③

فَكَتَمْنَا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ
لَهُمَا قَالِ يٰمُوسَى أَتُرِيدُ أَنْ نَمَسَكَ بِمَا
قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ إِنْ تَرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ
جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تَرِيدُ أَنْ نَكُونَ مِنَ
الْمُصْلِحِينَ ④

وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَى قَالَ
يٰمُوسَى إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ
فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الضَّالِّينَ ⑤

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ⑥

22. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहा: मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।

23. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों का एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुई। उस ने कहा: तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहा: हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे चले न जायें, और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

24. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर, और कहने लगा: हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।

25. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहा: मेरे पिता^[1] आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का पारिश्रमिक दें जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब (मूसा) उस के पास पहुँचा और पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहा: भय न कर। तू मुक्त हो गया अत्याचारी^[2] जाति से।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ بِلِقَاءِ مَدْيَنَ قَالَ عَلَىٰ رَاقٍ أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ النَّبِيلِ ۝

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۖ قَالَتَا لَا سَقَىٰ حَتَّىٰ يُصَدِّقَ الْبَعَاءَ ۚ وَالْيَوْنَا شَيْخُ كِبِيرٍ ۝

سَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي عَلَىٰ اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ أَبِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَضَىٰ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۖ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

1 व्याख्या कारों ने लिखा है कि वह आदरणीय शूऐब (अलैहिस्सलाम) थे जो मद्यन के नबी थे। (देखिये: इब्ने कसीर)

2 अर्थात् फिरऔनियों से।

26. कहा उन दोनों में से एक ने: हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।
27. उस ने कहा: मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से, इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर बोझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।
28. मूसा ने कहा: यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।
29. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपने परिवार से कहा: रुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुम्हारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अंगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।
30. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया बादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष से: हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।
31. और फेंक दो अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई

قَالَتْ لِأُحَدِّثُ أَبَاكِ إِن كَانَ خَيْرَ مِمَّنْ
اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ۝

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكَ إحدَى ابْنَتَيْ هَاتَيْنِ
عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَتَّىٰ تَمُوتَ عَشْرًا
فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكَ عَلَيْكَ مُجْدِي
إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَبَتَاهُ أَفْلَاحُ
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۝

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا تَئَلَّىٰ إِن كُنتُمْ مِّنْكُمْ
مُّبْخِرُونَ ۝

فَلَمَّا أَنَاثَ تَوَدَّىٰ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي
الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يَتُوسَّىٰ إِلَىٰ
آلِ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاهُ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا

सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।

32. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फिरऔन तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जाति है।

33. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने बध किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।

34. और मेरा भाई हारून मुझ से अधिक सुभाषी है, तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।

35. उस ने कहा: हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।

36. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्होंने ने कह दिया कि यह तो केवल घड़ा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।

جَآنَ وَلِي مُدْرَأَو لَمْ يُعَقِّبْ يَمُوسَى أَفِيلُ
وَلَا خَفَّتْ رَأَكَ مِنَ الْإِمْنِيْنَ ۝

أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْشَى بَيَظَّةَ مِنْ
عَبْرَسُوهُ وَأَضْمَرَ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ
فَذَلَّلْنَاهُ لِي مِنْ رَبِّكَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ
يَقْتُلُونِ ۝

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْضَلُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسَلْهُ
مَعِيَ رَدْأً يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَجُعَلْ
لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا
أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا يَبْتَغِي قَالُوا مَا هَذَا
إِلَّا سِحْرٌ مُتَعَمَّرٌ وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا
الْأَوَّلِينَ ۝

37. तथा मूसा ने कहा: मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्ग दर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होना है? वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होंगे।

38. तथा फिरऔन ने कहा: हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! ईंटें पकवा कर मेरे लिये एक ऊँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।

39. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्होंने ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।

40. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में, तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।

41. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाते हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जायेगी।

42. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।

43. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने

وَقَالَ مُوسَى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِہٖ وَمَنْ تَتَّبِعُوْا لَّہٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّہٗ لَا یُعْلِمُ الظَّالِمُوْنَ ﴿٣٧﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ یٰٓاَیُّهَا الْمَلٰٓئِکَةُ عَلِمْتُ لَکُمْ مِنْ اِلٰہِ عٰثِرِیْ فَاَوْصِدْ لِّیْ یَہَامُنُ عَلٰی الطِّیْنِ فَاَجْعَلْ لِّیْ صَرْحًا لَّعَلَّیْ اُظْلِعُ اِلَیْہِ مُوسٰی وَرَآئِیْ لَآ اُظْہِہٖ مِنْ الْکَذِبِیْنَ ﴿٣٨﴾

وَاسْتَکْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُہٗ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَیْنَا لَا یَرْجِعُوْنَ ﴿٣٩﴾

فَاَخَذْنٰہُ وَجُنُوْدَہٗ فَغَشَّیْنٰہُمْ فِی الْیَمِّ فَانْظُرْ کَیْفَ کَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِیْنَ ﴿٤٠﴾

وَجَعَلْنٰہُمْ اٰیَةً یَّذُکُّوْنَ اِلَی الْتَّارِۃِ وَیَوْمَ الْقِیَمَةِ لَا یُنصَرُوْنَ ﴿٤١﴾

وَاسْتَبَعْنٰہُمْ فِیْ ہٰذِہٖ الدُّنْیَا الْعَذَابَ وَیَوْمَ الْقِیَمَةِ هُمْ مِنَ الْمَغْضُوْبِیْنَ ﴿٤٢﴾

وَلَقَدْ اٰتٰیْنَا مُوسٰی الْکِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَا

विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।

أَهْلَكْنَا الْقُرُونِ الْأُولَىٰ بِمَا كَانُوا لِلنَّاسِ لَدَيْ وَرَحْمَةٍ لِّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٦٠﴾

44. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में^[1] जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों^[2] में।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٦١﴾

45. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मद्यन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतों और परन्तु हम ही रसूलों को भेजने^[3] वाले हैं।

وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٦٢﴾

46. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِنَّا لَوْلَا أَن نَّهَيَّكَ لَمُنَّ رِقَمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَّذِيرٍ ﴿٦٣﴾

47. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तूतों के कारण, तो कहते कि

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ لِّمَا قَدَّمَتْ آيَاتُنَا لَمَا فَعَلُوا لِآيَاتِنَا إِلَّا نَكِلَ الْإِنْسَانُ

1 पश्चिमी दिशा से अभिप्राय तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ मूसा (अलैहिस्सलाम) को तौरात प्रदान की गई।

2 इन से अभिप्राय वह बनी इस्राईल हैं जिन से धर्मविधान प्रदान करते समय उस का पालन करने का वचन लिया गया था।

3 भावार्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हजारों वर्ष पहले के जो समाचार इस समय सुना रहे हैं जैसे आँखों से देखे हों वह अल्लाह की ओर से बड़ी के कारण ही सुना रहे हैं जो आप के सच्चे नबी होने का प्रमाण है।

हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।^[1]

48. फिर जब आ गया उन के पास सत्य हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उसे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्होंने ने कुफ़ (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्होंने ने कहा: दो^[2] जादूगर हैं दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं। और कहा: हम किसी को नहीं मानते।

49. (हे नबी!) आप कह दें तब तुम्ही ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों^[3] से, मैं चलूँगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।

50. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे हैं, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।

رَسُولًا مِّنْ بَيْنِكَ وَتَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالَ الْأُولَىٰ
أَوْفَىٰ بِمِثْلِ مَا آتَىٰ مُوسَىٰ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا
بِمَا آتَىٰ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالَ الْآخَرَىٰ خِرَانٌ
كَذَّاهُمْ سَوَاءُ الْقَوْلِ إِلَّا يَخُنِ الْكَافِرُونَ ۝

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ
مِنْهُمَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

إِن كُنتُمْ تَحِبُّونَ الْآلَ فَأَعْلَمَ أَنَّهَا يَتَّبِعُونَ
أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝

1 अर्थात् आप को उन की ओर रसूल बना कर इस लिये भेजा है ताकि प्रलय के दिन उन को यह कहने का अवसर न मिले कि हमारे पास कोई रसूल नहीं आया ताकि हम ईमान लाते।

2 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम)। और भावार्थ यह है कि चमत्कारों की माँग, न मानने का एक बहाना है।

3 अर्थात् कुर्आन और तौरात से।

51. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी बात, (कुर्आन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
52. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक^[1] इस (कुर्आन) से पहले वह^[2] इस पर ईमान लाते हैं।
53. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैं: हम इस (कुर्आन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इस के (उतारने के) पहले ही से मुस्लिम हैं।^[3]
54. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा^[4] अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करते हैं अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।
55. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैं: हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।
56. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें,^[5] परन्तु अल्लाह

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

وَإِذَا بُدِّلَ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّآ كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذَا مَسَّحُوا الْقُرْآنَ عَرَضُوا عَلَيْهِمْ وَقَالُوا لَآ أَعْمَالُنَا وَلَكُمُ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِ الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

1 अर्थात् तौरात तथा इंजील।

2 अर्थात् उन में से जिन्होंने ने अपनी मूल पुस्तक में परिवर्तन नहीं किया है।

3 अर्थात् आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी हैं।

4 अपनी पुस्तक तथा कुर्आन दोनों पर ईमान लाने के कारण। (देखिये: सहीह बुखारी -97, मुस्लिम- 154)

5 हदीस में वर्णित है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के (काफिर)

सुपथ दर्शाता है जिसे चाहे, और वह भली - भाँति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।

57. तथा उन्होंने ने कहा: यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उचक^[1] लिये जायेंगे। क्या हम ने निवास स्थान नहीं बनाया है उन के लिये भयरहित ((हरम))^[2] को उन के लिये, खिंचे चले आ रहे हैं जिस की ओर प्रत्येक प्रकार के फल जीविका स्वरूप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।

58. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी बस्तियों का इतराने लगी जिन की जीविका। तो यह है उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोड़े और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।

59. और नहीं है आप का पालन- हार विनाश करने वाला बस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रसूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हामरी आयतें, और हम बस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

وَقَالُوا إِنَّا نَتَّبِعُ الْهُدَىٰ مَعَكَ نَتَّخِظُكَ مِنَ الْأَرْضِ مَاوَةً لَّنُكُنَّ فِيهَا حَرَمًا مِّمَّا تَتَّبِعَنِ الْيَهُودَ تَمَرَّتْ كُلُّ شَيْءٍ رَّزَمُوا مِنْ لَدُنَّا وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا أَهْلَكْنَا مَسْكِنَهُمْ لَمْ تَكُنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا الْوَرِثَيْنِ ۝

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝

चाचा अबू तालिब के निधन का समय हुआ, तो आप उन के पास गये। उस समय उन के पास अबू जह्ल तथा अब्दुल्लाह बिन अबि उमय्या उपस्थित थे। आप ने कहा: चाचा ((ला इलाहा इल्लाह)) कह दें ताकि मैं क़्यामत के दिन अब्दुल्लाह से आप की क्षमा के लिये सिफारिश कर सकूँ। परन्तु दोनों के कहने पर उन्होंने ने अस्वीकार कर दिया और उन का अन्त कुफ़्र पर हुआ। इसी विषय में यह आयत उतरी। (सहीह बुख़ारी हदीस नं॰, 4772)

1 अर्थात् हमारे विरोधी हम पर आक्रमण कर देंगे।

2 अर्थात् मक्का नगर को।

उस के निवासी अत्याचारी हों।

60. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह संसारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

وَمَا أَوْفَيْتُمْ مِّن شَيْءٍ مِّمَّا نَزَّلَ الْحَيَوةِ الدُّنْيَا
وَرَبِّتُمْهَا ۖ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

61. तो क्या जिसे हम ने वचन दिया है एक अच्छा वचन और वह पाने वाला हो उसे, उस के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है संसारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा?^[1]

أَفَمَنۢ وَعَدْنَاهُ وَعَدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنۢ مَّتَعْنَاهُ
مَّتَاعًا الْحَيَوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ
الْمُخْضَرِينَ ۝

62. और जिस दिन वह^[2] उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ है मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?

وَيَوْمَ يَنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

63. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बात^[3]: हे हमारे पालनहार! यही है जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहके, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष, यह हमारी पूजा^[4] नहीं कर रहे थे।

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ
مَا كَانُوا إِلَّا بَاعُوا نَفْسَهُمْ بِبَخْسٍ مِّن دُونِ
مَّا كَانُوا يَاجِدُونَ ۝

64. तथा कहा जायेगा: पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे, तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ۖ قَدْ غَوَّيْتُمْ قُلُوبَكُمْ
فَلَا تَسْمَعُونَ ۚ أَلَمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لِلْعَذَابِ لَوْ أَنَّهُمْ
كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝

1 अर्थात् दण्ड और यातना का अधिकारी होगा।

2 अर्थात् अल्लाह प्रलय के दिन पुकारेगा।

3 अर्थात् दण्ड और यातना के अधिकारी होने की।

4 यह हमारे नहीं बल्कि अपने मन के पूजारी थे।

65. और वह (अब्राह) उस दिन उन को पुकारेगा, फिर कहेगा: तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?

66. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक-दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे।

67. फिर जिस ने क्षमा माँग ली^[1] तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकता है कि वह सफल होने वालों में से होगा।

68. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।

69. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

70. तथा वही अब्राह^[2] है कोई बन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फेरे^[3] जाओगे।

71. (हे नबी!) आप कहिये: तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क़यामत के दिन तक, तो

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

فَعَمِيَّتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَقَعِيَ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِسِينَ ﴿٦٧﴾

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ يَشْعُنُ اللَّهُ وَيَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحُكْمُ فِي الْأَوَّلِ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ

1 अर्थात् संसार में से।

2 अर्थात् जो उत्पत्ति करता तथा सब अधिकार और ज्ञान रखता है।

3 अर्थात् हिसाब और प्रतिफल के लिये।

कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?

أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝

72. आप कहिये: तुम बताओ, यदि अल्लाह कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखते नहीं^[1] हो?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمُ الْبَيْلُ تُسْكِنُونَ فِيهِ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

73. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह(जीविका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

74. और अल्लाह जिस दिन उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ हैं वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?

وَيَوْمَ يَنَادُهُمْ فَيَقُولُ أَيُّ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

75. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगे: लाओ अपने^[2] तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और उन से खो जायेंगी जो बातें वे घड़ रहे थे।

وَنَرْوِعُهُمْ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَاتُّوا بِرُءُوسِهِمْ فَعَبَّوْا أَنْ الْحَقُّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

76. कारून^[3] धा मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया

إِنْ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاسِدَهُ لَسَمُورًا

1 अर्थात् रात्रि तथा दिन के परिवर्तन को।

2 अर्थात् शिर्क के प्रमाण।

3 यहाँ से धन के गर्व तथा उस के दुष्परिणाम का एक उदाहरण दिया जा रहा है कि कारून, मूसा (अलैहिस्सलाम) के युग का एक धनी व्यक्ति था।

इतने कोष कि उस की कुंजियाँ भारी थीं एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति ने: मत इतरा, वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।

بِالنُّصْبَةِ إِلَى الْقَوْمِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ⑥

77. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आखिरत (परलोक) का घर, और मत भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अल्लाह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ⑦

78. उस ने कहा: मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह ने विनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता^[1] अपने पापों के सम्बन्ध में अपराधियों से।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ كَذَلِكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَعًا وَلَا يَتْلُو عَنْ ذُرِّيَّتِهِ الْمُجْرِمُونَ ⑧

79. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवन: क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन- धान्य) होता जो दिया गया है कारून को! वास्तव में वह बड़ा शौभाग्यशाली है।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلْبَسُنَّ مِثْلَ مَا أَتَانِي قَالَ ذُوقُوا عَذَابَ اللَّهِ وَعَذَابَ الْآلِ الْأُولَىٰ ⑨

80. तथा उन्होंने ने कहा जिन को ज्ञान

وَقَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْعَالَمَ إِنَّهُ لَأُولَىٰ ⑩

1 अर्थात् विनाश के समय।

दिया गया: तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे, और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।

لِمَنِ امْنٌ وَعِلٌّ صَالِحًا وَلَا يُكْفَمُ إِلَّا
الضُّمُّونَ ۝

81. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं अपनी सहायता कर सका।

فَخَسَفْنَا لَهُ وَبَدَارِهِ الْأَرْضَ فَكَانَ لَهُ مِنَ فِتْنَةٍ
يَصُورُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُتَصَرِّينَ ۝

82. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगे: क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दासों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का, तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते नहीं कि काफिर (कृतघ्न) सफल नहीं होते।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَرْضِ يَقُولُونَ
وَيَكُنَّ اللَّهُ يَبْسُطُ الزُّرْقَى لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَوْ أَنَّ مِنَ اللَّهِ عَلَيْنَا الْخَسَفَ بَيِّنًا
وَيَكُنَّ لَهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝

83. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बड़ाई करना धरती में और न उपद्रव करना, और अच्छा परिणाम आज्ञा-कारियों^[1] के लिये है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا
يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فُسَادًا فِي الْعَالَمِ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

84. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِمَّا وَمَنْ جَاءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

1. इस में संकेत है कि धरती में गर्व तथा उपद्रव का मूलाधार अल्लाह की अवैज्ञा है।

परन्तु वही जो बे करते रहे।

85. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुर्आन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की^[1] ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कुपथ में है।

86. और आप आशा नहीं रखते थे कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक^[2], परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफ़िरों के।

87. और वह आप को न रोकें अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गई आप की ओर, और बुलाते रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुश्रिकों में से।

88. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई बंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक वस्तु नाशवान है सिवाय उस के स्वरूप के। उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे^[3] जाओगे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأْدُكَ إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ قَوْلِي ضَلَّىٰ مُبِينٌ ۝

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَلَا يَصُدُّكَ عَنِ الْبَيْتِ اللَّهُ بَعْدَ إِذْ أَنزَلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

1 अर्थात् आप जिस शहर मक्का से निकाले गये हैं उसे विजय कर लेंगे। और यह भविष्य वाणी सन् 8 हिजरी में पूरी हुई (सहीह बुखारी: 4773)

2 अर्थात् कुर्आन पाक।

3 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब तथा अपने कर्मों का फल पाने के लिये।

सूरह अन्कबूत - 29

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ

सूरह अन्कबूत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 69 आयतें हैं।

- इस सूरह का यह नाम इस की आयत नं० (41) में आये हुये शब्द ((अन्कबूत)) से लिया गया है। जिस का अर्थ मकड़ी है। इस सूरह में, जो अल्लाह के सिवा दूसरों को अपना संरक्षक बनाते हैं उन की उपमा मकड़ी से दी गई है। जिस का घर सब से अधिक निर्बल होता है। इसी प्रकार मुश्रिकों का भी कोई सहारा नहीं होगा।
- इस में उन लोगों को निर्देश दिये गये हैं जो ईमान लाने के कारण सताये जाते हैं और अनेक प्रकार की परीक्षाओं से जूझते हैं। और कई नबियों के उदाहरण दिये गये हैं जिन्होंने अपनी जातियों के अत्याचार का सामना किया। और धैर्य के साथ सत्य तथा तौहीद पर स्थित रहे और अन्ततः सफल हुये।
- इस में मुश्रिकों के लिये सोच-विचार का आमंत्रण तथा विरोधियों के संदेहों का निवारण किया गया है। और तौहीद तथा परलोक की वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाया गया है और उस के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।
- अन्तिम आयत में अल्लाह की राह में प्रयास करने पर उस की सहायता और उस के वचन के पूरा होने की ओर संकेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. क्या लोगों ने समझ रखा है कि वह छोड़ दिये जायेंगे कि वह कहते हैं, हम ईमान लाये और उन की परीक्षा नहीं ली जायेगी?

الْعَمْرُ

أَحْسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ

3. और हम ने परीक्षा ली है उन से पूर्व के लोगों की, तो अल्लाह अवश्य जानेगा^[1] उन को जो सच्चे हैं, तथा अवश्य जानेगा झूठों को।
4. क्या समझ रखा है उन लोगों ने जो कुकर्म कर रहे हैं कि हम से अग्रसर^[2] हो जायेंगे? क्या ही बुरा निर्णय कर रहे हैं!
5. जो आशा रखता हो अल्लाह से मिलने^[3] की, तो अल्लाह की ओर से निर्धारित किया हुआ समय^[4] अवश्य आने वाला है। और वह सब कुछ सुनने जानने^[5] वाला है।
6. और जो प्रयास करता है तो वह प्रयास करता है अपने ही भले के लिये, निश्चय अल्लाह निस्पृह है संसार वासियों से।
7. तथा जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, हम अवश्य दूर कर देंगे उन से उन की बुराईयाँ, तथा उन्हें प्रतिफल देंगे उन के उत्तम कर्मों का।
8. और हम ने निर्देश दिया मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ उपकार

وَلَقَدْ قَدَّمْنَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلْيَعْلَمَنَّ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلْيَعْلَمَنَّ الْكَذَّابِينَ ﴿٣﴾

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الشَّيْءَاتِ أَنْ
يَسْبِقُونَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٤﴾

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنْ أَجَلَ اللَّهُ لَكَ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٥﴾

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ
لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٦﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ

- 1 अर्थात् आपदाओं द्वारा परीक्षा ले कर जैसा कि उस का नियम है उन में विवेक कर देगा। (इब्ने कसीर)
- 2 अर्थात् हमें विवश कर देंगे और हमारे नियंत्रण में नहीं आयेंगे।
- 3 अर्थात् प्रलय के दिन।
- 4 अर्थात् प्रलय का दिन।
- 5 अर्थात् प्रत्येक के कथन और कर्म को उस का प्रतिकार देने के लिये।

करने का^[1], और यदि दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरे साथ उस चीज़ को जिस का तुम को ज्ञान नहीं, तो उन दोनों की बात न मानो^[2] मेरी ओर ही तुम्हें फिर कर आना है, फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूंगा उस कर्म से जो तुम करते रहे हो।

9. और जो ईमान लाये तथा सदाचार किये हम उन्हें अवश्य सम्मिलित कर देंगे सदाचारियों में।

10. और लोगों में वे (भी) हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाये अल्लाह पर। फिर जब सताये गये अल्लाह के बारे में तो समझ लिया लोगों की परीक्षा को अल्लाह की यातना के समान। और यदि आ जाये कोई सहायता आप के पालनहार की ओर से, तो अवश्य कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ थे। तो क्या अल्लाह भली-भाँति अवगत नहीं है उस से जो संसारवासियों के दिलों में है?

11. और अल्लाह अवश्य जान लेगा उन को जो ईमान लाये हैं, तथा अवश्य जान लेगा द्विधावादियों^[3] को।

12. और कहा काफ़िरों ने उन से जो

جَهْدًا لِّتُشْرِكَ بِمَالِكَ رَبِّهِ عِلْمٌ
فَلَا تُطْعَمُهُمْ إِلَّا أَنْ يُجْعَلُوا لِيَتَكَلَّمُوا
كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ
فِي الصَّالِحِينَ ۝

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ
فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةً لِلنَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ
وَلَكِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا
مَعَكُمْ أَوْ لَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ
الْعَالَمِينَ ۝

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنَافِقِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اسْمِعُوا

1 हदीस में है कि जब साद बिन अबी बक्कास इस्लाम लाये तो उन की माँ ने दबाव डाला और शपथ ली कि जब तक इस्लाम न छोड़ दें वह न उन से बात करेगी और न खायेगी न पियेगी, इसी पर यह आयत उतरी (सहीह मुस्लिम: 1748)

2 इस्लाम का यह नियम है जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि ((किसी के आदेश का पालन अल्लाह की अवैज्ञा मैं नहीं है।)) (मुस् नद अहमद-1/66, सिलसिला सहीहा- अल्बानी: 179)

3 अर्थात् जो लोगों के भय के कारण दिल से ईमान नहीं लाते।

ईमान लाये हैं: अनुसरण करो हमारे पथ का, और हम भार ले लेंगे तुम्हारे पापों का, जब की वह भार लेने वाले नहीं हैं उन के पापों का कुछ भी, वास्तव में वह झूठे हैं।

13. और वह अवश्य प्रभारी होंगे अपने बोझों के और कुछ^[1] बोझों के अपने बोझों के साथ, और उन से अवश्य प्रश्न किया जायेगा प्रलय के दिन उस झूठ के बारे में जो घड़ते रहे।

14. तथा हम^[2] ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, तो वह रहा उन में हजार वर्ष किन्तु पचास^[3] वर्ष, फिर उन्हें पकड़ लिया तूफान ने, तथा वे अत्याचारी थे।

15. तो हम ने बचा लिया उस को और नाव वालों को, और बना दिया उसे एक निशानी (शिक्षा) विश्व वासियों के लिये।

16. तथा इब्राहीम को जब उस ने अपनी जाति से कहा: इबादत (बंदना) करो अल्लाह की तथा उस से डरो, यह तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।

17. तुम तो अल्लाह के सिवा बस उन की बंदना कर रहे हो जो मूर्तियाँ हैं, तथा तुम झूठ घड़ रहे हो, वास्तव में जिन

سَيَلَّمْنَا وَلَنَحْمِلُ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا أَنتُمْ بِمُعِيبِينَ
مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ
وَلَيَسْأَلُنَّ يَوْمَ الْعِقَمَةِ عَنْكَ كَا تَوَاقِفُتُرُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ
سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ
وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ۝

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَانْتَفُوا
ذِكْرِي خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا
وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ

1 अर्थात् दूसरों को कुपथ करने के पापों का।

2 यहाँ से कुछ नबियों की चर्चा की जा रही है जिन्होंने धैर्य से काम लिया।

3 अर्थात् नूह (अलैहिस्सलाम) (950) वर्ष तक अपनी जाति में धर्म का प्रचार करते रहे।

को तुम पूज रहे हो अल्लाह के सिवा वे नहीं अधिकार रखते हैं तुम्हारे लिये जीविका देने का। अतः खोज करो अल्लाह के पास जीविका की तथा इबादत (बंदना) करो उस की और कृतज्ञ बनो उस के, उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।

18. और यदि तुम झुठलाओ तो झुठलाया है बहुत से समुदायों ने तुम से पहले, और नहीं है रसूल^[1] का दायित्व परन्तु खुला उपदेश पहुँचा देना।
19. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभ करता है फिर उसे दुहरायेगा^[2], निश्चय यह अल्लाह पर अति सरल है।
20. (हे नबी!) कह दें कि चलो- फिरो धरती में फिर देखो कि उस ने कैसे उत्पत्ति का आरंभ किया है, फिर अल्लाह दूसरी बार भी उत्पन्न^[3] करेगा, वास्तव में अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
21. वह यातना देगा जिसे चाहेगा तथा दया करेगा जिस पर चाहेगा, और उसी की ओर तुम फेरे जाओगे।
22. तुम उसे विवश करने वाले नहीं हो, न धरती में न आकाश में, तथा नहीं है तुम्हारा उस के सिवा कोई

مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا تَسْجُدُونَ لَهُمْ رَبًّا فَاذْبَعُوا عَنْكَ اللَّهُ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ إِلَهُهُ تُرْجَعُونَ ﴿٢٠﴾

وَإِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٢١﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٣﴾

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ ۚ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢٤﴾

وَمَا أَنتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ

1 अर्थात् अल्लाह का उपदेश मनवा देना रसूल का कर्तव्य नहीं है।

2 इस आयत में आखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है।

3 अर्थात् प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल देने के लिये।

संरक्षक और न सहायक।

23. तथा जिन लोगों ने इन्कार किया अल्लाह की आयतों और उस से मिलने का, वही निराश हो गये हैं मेरी दया से और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।

24. तो उस (इब्राहीम) की जाति का उत्तर बस यही था कि उन्हीं ने कहा: इसे बध कर दो या इसे जला दो, तो अल्लाह ने उसे बचा लिया अग्नि से। वास्तव में इस में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो ईमान रखते हैं।

25. और कहा: तुम ने तो अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों को प्रेम का साधन बना लिया है अपने बीच संसारिक जीवन में, फिर प्रलय के दिन तुम एक-दूसरे का इन्कार करोगे तथा धिक्कारोगे एक-दूसरे को, और तुम्हारा आवास नरक होगा, और नहीं होगा तुम्हारा कोई सहायक।

26. तो मान लिया उस को लूत^[1] ने, और इब्राहीम ने कहा: मैं हिजरत कर रहा हूँ अपने पालनहार^[2] की ओर। निश्चय वही प्रबल तथा गुणी है।

27. और हम ने प्रदान किया उसे इसहाक तथा याकूब तथा हम ने रख दी उस की संतान में नबूवत तथा पुस्तक,

وَلَا نُصِيبُ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَكُونُونَ لَكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَلَيَعَنَّ بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن نَّاصِرِينَ

فَأَمِنَ لَهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ

1 लूत (अलैहिस्सलाम) इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के भतीजे थे। जो उन पर ईमान लाये।

2 अर्थात् अल्लाह के आदेशानुसार शाम जा रहा हूँ।

और हम ने प्रदान किया उसे उस का प्रतिफल संसार में, और निश्चय वह परलोक में सदाचारियों में से होगा।

28. तथा लूत को (भेजा)। जब उस ने अपनी जाति से कहा: तुम तो वह निर्लज्जा कर रहे हो जो तुम से पहले नहीं किया है किसी ने संसार वासियों में से।

29. क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो, और डकैती करते हो तथा अपनी सभाओं में निर्लज्जा के कार्य करते हो? तो नहीं था उस की जाति का उत्तर इस के अतिरिक्त कि उन्होंने ने कहा: तू ला दे हमारे पास अल्लाह की यातना, यदि तू सच्चों में से है।

30. लूत ने कहा: मेरे पालनहार! मेरी सहायता कर उपद्रवी जाति पर।

31. और जब आये हमारे भेजे हुये (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना ले कर, तो उन्होंने ने कहा: हम विनाश करने वाले हैं इस बस्ती के वासियों का। वस्तुतः इस के वासी अत्याचारी हैं।

32. इब्राहीम ने कहा: उस में तो लूत है। उन्होंने ने कहा: हम भली-भाँति जानने वाले हैं जो उस में है। हम अवश्य बचा लेंगे उसे और उस के परिवार को उस की पत्नी के सिवा, वह पीछे रह जाने वालों में थी।

33. और जब आ गये हमारे भेजे हुये लूत

فِي الدُّنْيَا وَأُورِثَهُ فِي الْآخِرَةِ لَمَنِ الصَّالِحِينَ ﴿٢٩﴾

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَنَا نُسُونَ
الْفَاحِشَةُ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ
الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾

أَيُّكُمْ لَنَا نُسُونَ الرِّجَالِ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ
وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ قَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اسْتِنَاعَ ابْنِ الْهَوَىٰ إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣١﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٢﴾

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ قَالُوا
إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ
إِنْ أَهْلُهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣٣﴾

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ
فِيهَا فَاسْتَجِبْنَاهُ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَرْأَتَهُ كَانَتْ
مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٣٤﴾

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيقَىٰ إِلَيْهِ

के पास तो उसे बुरा लगा और वह उदासीन हो गया^[1] उन के आने पर। और उन्होंने ने कहा: भय न कर और न उदासीन हो, हम तुझे बचा लेने वाले हैं तथा तेरे परिवार को, परन्तु तेरी पत्नी को, वह पीछे रह जाने वालों में है।

34. वास्तव में हम उतारने वाले हैं इस बस्ती के वासियों पर आकाश से यातना इस कारण कि वह उल्लंघन कर रहे हैं।

35. तथा हम ने छोड़ दी है उस में एक खुली निशानी उन लोगों के लिये जो समझ-बूझ रखते हैं।

36. तथा मद्यन की ओर उन के भाई शुऐब को (भेजा) तो उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! इबादत (बंदना) करो अल्लाह की, तथा आशा रखो प्रलय के दिन^[2] की और मत फिरो धरती में उपद्रव करते हुये।

37. किन्तु उन्होंने ने उसे झुठला दिया तो पकड़ लिया उन्हें भूकम्प ने और वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

38. तथा आद और समूद का (विनाश किया)। और उजागर है तुम्हारे लिये उन के घरों के कुछ अवशेष, और शोभनीय बना दिया शैतान ने उन के कर्मों को और रोक दिया उन्हें सुपथ

وَصَاقٍ بِهِمْ دُرُيًّا وَقَالُوا لَا تَنْخَفُ
وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنْجُوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا
أَمْرًا تَكُ كَانَتْ مِنَ الْغَيْرِينَ ۝

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ
السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

وَلَقَدْ تَرَكْنَا مَتْنَهَا آيَةً لِّیَنذَرَ الْقَوْمَ
یَعْقِلُونَ ۝

وَالِی مَدِیْنٍ أَخَاهُمْ شُعَیْبًا فَقَالَ یَقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْیَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْتُوا
فِی الْأَرْضِ مُفْسِدِینَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِی دَارِهِمْ جِثْمِینَ ۝

وَعَادَ الْأَشْجَادَ وَقَدْ بَیِّنَ لَكُمْ مِنْ مَّسْکِنِهِمْ
وَرِیقَ لَهُمُ الْغَیْظِ أَصَابَهُمْ فَصَدَّ عَنْ
السَّبِیلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِینَ ۝

1 क्योंकि लूत (अलैहिस्सलाम) को अपनी जाति की निर्लज्जा का ज्ञान था।

2 अर्थात् संसारिक जीवन ही को सब कुछ न समझो, परलोक के अच्छे परिणाम की भी आशा रखो और सदाचार करो।

से, जब कि वह समझ-बूझ रखते थे।

39. और कारून तथा फिरऔन और हामान का, और लाये उन के पास मूसा खुली निशानियाँ, तो उन्होंने ने अभिमान किया और वह हम से आगे^[1] होने वाले न थे।

40. तो प्रत्येक को हम ने पकड़ लिया उस के पाप के कारण, तो इन में से कुछ पर पत्थर बरसाये^[2] और उन में से कुछ को पकड़ा^[3] कड़ी ध्वनि ने तथा कुछ को धंसा दिया धरती में, और कुछ को डुबो^[4] दिया। तथा नहीं था अल्लाह कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

41. उन का उदाहरण जिन्होंने बना लिये अल्लाह को छोड़ कर संरक्षक, मकड़ी जैसा है जिस ने एक घर बनाया, और वास्तव में घरों में सब से अधिक निर्बल घर^[5] मकड़ी का है यदि वह जानते।

42. वास्तव में अल्लाह जानता है कि वे जिसे पुकारते हैं^[6] अल्लाह को छोड़

وَقَالُوا لَا إِلَهَ إِلَّا هُمْ وَكَانُوا كَافِرِينَ
مُوسَىٰ يَا لَيْتَ كُنْتُ فَأَسْتَكْبِرُ إِلَىٰ الْأَرْضِ وَمَا كُنْتُ سَاقِيًا

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ إِتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُدْعَوْنَ مِنْ دُونِهِ مِنْ

1 अर्थात् हमारी पकड़ से नहीं बच सकते थे।

2 अर्थात् लूत की जाति पर।

3 अर्थात् सालेह और शूऐब (अलैहिमस्सलाम) की जाति को।

4 जैसे कारून को।

5 अर्थात् नूह तथा मूसा (अलैहिमस्सलाम) की जातियों को।

6 जिस प्रकार मकड़ी का घर उस की रक्षा नहीं करता वैसे ही अल्लाह की यातना के समय इन जातियों के पूज्य उन की रक्षा नहीं कर सके।

कर वह कुछ नहीं है। और वही प्रबल गुणी (प्रवीण) है।

شَيْءٌ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٠﴾

43. और यह उदाहरण हम लोगों के लिये दे रहे हैं और इसे नहीं समझेंगे परन्तु ज्ञानी लोग (ही)।

وَبِذَلِكَ الْأَمْثَالِ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٢١﴾

44. उत्पत्ति की है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती की सत्य के साथ। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी (लक्षण) है ईमान लाने वालों के^[1] लिये।

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢﴾

45. आप उस पुस्तक को पढ़ें जो बह्नी (प्रकाशना) की गई है आप की ओर, तथा स्थापना करें नमाज़ की। वास्तव में नमाज़ रोकती है निर्लज्जा तथा दुराचार से और अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान् है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते^[2] हो।

أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٢٣﴾

46. और तुम वाद-विवाद न करो अहले किताब^[3] से परन्तु ऐसी विधि से जो सर्वोत्तम हो, उन के सिवा जिन्होंने अत्याचार किया है उन में से। तथा तुम कहो कि हम ईमान लाये उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उतारा गया तुम्हारी ओर, तथा हमारा पूज्य और तुम्हारा पूज्य एक ही^[4] है। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं^[5]।

وَلَا تَجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَالْهَتَا وَالْهَئَا وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٢٤﴾

1 अर्थात् इस विश्व की उत्पत्ति तथा व्यवस्था ही इस का प्रमाण है कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है।

2 अर्थात् जो भला- बुरा करते हो उस का प्रतिफल तुम्हें देगा।

3 अहले किताब से अभिप्रेत यहूदी तथा ईसाई हैं।

4 अर्थात् उस का कोई साझी नहीं।

5 अतः तुम भी उस की आज्ञा के आधीन हो जाओ और सभी आकाशीय पुस्तकों

47. और इसी प्रकार हम ने उतारी है आप की ओर यह पुस्तक, तो जिन को हम ने पुस्तक प्रदान की है वह इस (कुर्आन) पर ईमान लाते^[1] है और इन में से (भी) कुछ^[2] इस (कुर्आन) पर ईमान ला रहे हैं। और हमारी आयतों को काफिर ही नहीं मानते हैं।

48. और आप इस से पूर्व न कोई पुस्तक पढ़ सकते थे और न अपने हाथ से लिख सकते थे। यदि ऐसा होता तो झूठे लोग संदेह^[3] में पड़ सकते थे।

49. बल्कि यह खुली आयतें है जो उन के दिलों में सुरक्षित हैं जिन को ज्ञान दिया गया है। तथा हमारी आयतों (कुर्आन) का इन्कार^[4] अत्याचारी ही करते हैं।

50. तथा (अत्याचारियों) ने कहा: क्यों नहीं उतारी गयी आप पर निशानियाँ आप के पालनहार की ओर से? आप कह दें कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास^[5] हैं। और मैं तो खुला सावधान करने वाला हूँ।

وَكَذَلِكَ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ
الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ
وَمَا يَجْعَلُ إِلَّا الْإِصْرَ ۚ

وَمَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ
بِأَيْمِينِكُمْ إِذَا لَرَقَابِ الْمُبْطِلُونَ ۝

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
وَمَا يَجْعَلُ إِلَّا الْإِصْرَ ۚ

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ
عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝

को कुर्आन सहित स्वीकार करो।

1 अर्थात् अहले किताब में से जो अपनी पुस्तकों के सत्य अनुयायी हैं।

2 अर्थात् मक्का वासियों में से।

3 अर्थात् यह संदेह करते कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह बातें आदि ग्रन्थों से सीख ली या लिख ली हैं। आप तो निरक्षर थे लिखना-पढ़ना जानते ही नहीं थे तो फिर आप के नबी होने और कुर्आन के अल्लाह की ओर से अवतरित किये जाने में क्या संदेह हो सकता है।

4 अर्थात् जो सत्य से आज्ञान हैं।

5 अर्थात् उसे उतारना-न उतारना मेरे अधिकार में नहीं, मैं तो अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूँ।

- s1. क्या उन्हें पर्याप्त नहीं कि हम ने उतारी है आप पर यह पुस्तक (कुरआन) जो पढ़ी जा रही है उन पर। वास्तव में इस में दया और शिक्षा है उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।
- s2. आप कह दें: पर्याप्त है अल्लाह मेरे तथा तुम्हारे बीच साक्षी।^[1] वह जानता है जो आकाशों तथा धरती में है। और जिन लोगों ने मान लिया है असत्य को और अल्लाह से कुफ़ किया है वही विनाश होने वाले हैं।
- s3. और वे^[2] आप से शीघ्र माँग कर रहे हैं यातना की। और यदि एक निर्धारित समय न होता तो आजाती उन के पास यातना, और अवश्य आयेगी उन के पास अचानक और उन्हें ज्ञान (भी) न होगा।
- s4. वे शीघ्र माँग^[3] कर रहे हैं आप से यातना की। और निश्चय नरक घेरने वाली है काफ़िरों^[4] को।
- s5. जिस दिन छा जायेगी उन पर यातना उन के ऊपर से तथा उन के पैरों के नीचे से। और अल्लाह कहेगा: चखो जो कुछ तुम कर रहे थे।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٢﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّكَاءَ هُمُ الْعَذَابِ وَلَئِن آتَيْنَهُمْ بَقَعَةً وَمِمَّا لَا يُشْعُرُونَ ﴿٣﴾

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنْ جَهَنَّمُ مُّحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٤﴾

يَوْمَ يُخَشِهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥﴾

1 अर्थात् मेरे नबी होने पर।

2 अर्थात् मक्का के काफ़िर।

3 अर्थात् संसार ही में उपहास स्वरूप यातना की माँग कर रहे हैं।

4 अर्थात् परलोक में।

56. हे मेरे भक्तों जो ईमान लाये हो! वास्तव में मेरी धरती विशाल है, अतः तुम मेरी ही इबादत (बंदना)^[1] करो।

57. प्रत्येक प्राणी मौत का स्वाद चखने वाला है फिर तुम हमारी ही ओर फेरे^[2] जाओगे।

58. तथा जो ईमान लाये, और सदा चार किये तो हम अवश्य उन्हें स्थान देंगे स्वर्ग के उच्च भवनों में, प्रवाहित होंगी जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में, तो क्या ही उत्तम है कर्म करने वालों का प्रतिफल।

59. जिन लोगों ने सहन किया तथा वह अपने पालनहार ही पर भरोसा करते हैं।

60. कितने ही जीव हैं जो नहीं लादे फिरते^[3] अपनी जीविका, अल्लाह ही उन्हें जीविका प्रदान करता है तथा तुम को, और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

61. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की, और (किस ने) बश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो

يُعَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِنِّي
فَلْتَعْبُدُونِ ۝

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ مِنَ
الْجَنَّةِ عُرُفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا يُعْمَلُ أَجْرًا عَمِيلِينَ ۝

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

وَكَايُنْ مِنْ دَائِلَةٍ لَّا يَحْصِي رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا
وَأَيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَشَجَر
الشَّجَرِ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝

1 अर्थात् किसी धरती में अल्लाह की इबादत न कर सको तो वहाँ से निकल जाओ जैसा कि आरंभिक युग में मक्का के काफ़िरों ने अल्लाह की इबादत से रोक दिया तो मुसलमान हब्शा और फिर मदीना चले गये।

2 अर्थात् अपने कर्मों का फल भोगने के लिये।

3 हदीस में है कि यदि तुम अल्लाह पर पूरा पूरा भरोसा करो तो तुम्हें पक्षी के समान जीविका देगा जो सवेरे भूखा जाते हैं और शाम को अघा कर आते हैं। (तिर्मिजी- 2344, यह हदीस हसन सहीह है।)

फिर वह कहाँ बहके जा रहे हैं?

62. अल्लाह ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से और नाप कर देता है उस के लिये। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

63. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने उतारा है आकाश से जल, फिर उस के द्वारा जीवित किया है धरती को उस के मरण के पश्चात् तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कह दें कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है। किन्तु उन में से अधिकतर लोग समझते नहीं।^[1]

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَأَهُمُ
الْأَرْضُ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا يَقُولُ اللَّهُ قُلِ الْحَمْدُ
لِلَّهِ بَلْ أَنتُمْ لَأَعْيِلُونَ ﴿٦٣﴾

64. और नहीं है यह संसारिक^[2] जीवन किन्तु मनोरंजन और खेल और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ
الْآخِرَةَ لَهِىَ الْحَيَاةِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾

65. और जब वह नाव पर सवार होते हैं, तो अल्लाह के लिये धर्म को शुद्ध कर के उसे पुकारते हैं। फिर जब वह बचा लाता है उन्हें थल तक, तो फिर शिर्क करने लगते हैं।

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِ دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ
الْدِّينَ وَذَكَرْنَا عَنْهُمْ إِلَى الْبَرَاءَةِ أَهْمُ
يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾

1 अर्थात् जब उन्हें यह स्वीकार है कि रचयिता अल्लाह है और जीवन के साधन की व्यवस्था भी वही करता है तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की करनी चाहिये और उस की वंदना तथा उस के शुभगुणों में किसी को उस का साझी नहीं बनाना चाहिये। यह तो मूर्खता की बात है कि रचयिता तथा जीवन के साधनों की व्यवस्था तो अल्लाह करे और उस की वंदना में अन्य को साझी बनाया जाये।

2 अर्थात् जिस संसारिक जीवन का संबंध अल्लाह से न हो तो उस का सुख साम्यिक है। वास्तविक तथा स्थायी जीवन तो परलोक का है अतः उस के लिये प्रयास करना चाहिये।

66. ताकि वह कुफ़ करे उस के साथ जो हम ने उन्हें प्रदान किया है, और ताकि आनन्द लेते रहें, तो शीघ्र ही इन्हें ज्ञान हो जायेगा।
67. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम ने बना दिया है हरम (मक्का) को शान्ति स्थल, जब कि उचक लिये जाते है लोग उन के आस- पास से? तो क्या वह असत्य ही को मानते है और अल्लाह के पुरस्कार को नहीं मानते?
68. तथा कौन अधिक अत्याचारी होगा उस से जो अल्लाह पर झूठ घड़े या झूठ कहे सच्च को जब उस के पास आ जाये, तो क्या नहीं होगा नरक में आवास काफ़िरों का?
69. तथा जिन्हों ने हमारी राह में प्रयास किया तो हम अवश्य दिखा^[1] देंगे उन को अपनी राह। और निश्चय अल्लाह सदाचारियों के साथ है।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَمْتَنِعُوا فَسَوْفَ يَكْفُرُونَ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مَّا يُضِلُّ النَّاسَ مِنْ حَوْلِهِمْ أَفَبَالِ الْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ۝

1 अर्थात् अपनी राह पर चलने की अधिक क्षमता प्रदान करेंगे।

सूरह रूम - 30



सूरह रूम के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- इस सूरह में रूमियों के बारे में एक भविष्यवाणी की गई है इसी लिये इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में आखिरत का विश्वास दिलाया गया है जो संसार की वास्तविकता पर विचार करने से पैदा होता है तथा इस से कि अल्लाह का प्रत्येक वचन पूरा होता है।
- इस में रूमियों की विजय की भविष्यवाणी की गई है और इस से विश्व के स्वामी तथा आखिरत की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- अल्लाह की निशानियों में सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है जो आकाशों तथा धरती में फैली हुई है और परलोक का विश्वास दिलाती है।
- तौहीद के सत्य तथा शिर्क के असत्य होने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं और यह बताया गया है कि तौहीद स्वाभाविक धर्म है। अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा पाप से बचने के निर्देश दिये गये हैं और इस पर उत्तम परिणाम की शुभ सूचना दी गई है।
- अन्त में फिर बात प्रलय तथा परलोक की ओर फिर गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम मीम।
2. पराजित हो गये रूमि।
3. समीप की धरती में, और वह अपने पराजित होने के पश्चात् जल्द ही विजयी हो जायेंगे।
4. कुछ वर्षों में, अल्लाह ही का अधिकार

الْقُرْ
عُلِّمَتِ الرُّومُ
فِي الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ
سَيُغْلِبُونَ
فِي بَعْضِ سِنِينَ هَٰذَا لِلْأُمُورِ قَبْلُ وَزَيْنَ

है पहले (भी) और बाद में (भी)। और उस दिन प्रशन्न होंगे ईमान वाले।

5. अल्लाह की सहायता से, तथा वही अति प्रभुत्वशाली दयावान् है।
6. यह अल्लाह का वचन है, नहीं विरुद्ध करेगा अल्लाह अपने वचन^[1] के, और परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।
7. वह तो जानते हैं बस ऊपरी संसारिक जीवन को। तथा^[2] वह परलोक से अचेत हैं।
8. क्या और उन्होंने ने अपने में सोच-विचार नहीं किया कि नहीं उत्पन्न किया है अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को और जो कुछ उन^[3] दोनों के बीच है परन्तु सत्यानुसार

يَعْدُو وَيَوْمَئِذٍ يَقَرُّ الْمُؤْمِنُونَ ۝

يَنْصُرُ اللَّهُ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

وَعَدَ اللَّهُ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ
الْآخِرَةِ هُمْ غَفِلُونَ ۝

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنَّهُمْ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا يَأْتِيهِمْ أَجَلٌ مُّسَمًّى
وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِآيَاتِنَا لَكُفْرُونَ ۝

- 1 इन आयतों के अन्दर दो भविष्य वाणियों की गई हैं। जो कुर्आन शरीफ तथा स्वयं नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य होने का ऐतिहासिक प्रमाण है। यह वह युग था जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मक्का के कुरैश के बीच युद्ध आरंभ हो गया था। रूम के राजा कैसर को उस समय, ईरान के राजा (किस्रा) ने पराजित कर दिया था। जिस से मक्कावासी प्रसन्न थे। क्यों कि वह अग्नि के पुजारी थे। और रूमी ईसाई आकाशीय धर्म के अनुयायी थे। और कह रहे थे कि हम मिश्रणवादी भी इसी प्रकार मुसलमानों को पराजित कर देंगे जिस प्रकार रूमियों को ईरानियों ने पराजय किया। इसी पर यह दो भविष्य वाणी की गई कि रूमी कुछ वर्षों में फिर विजयी हो जायेंगे और यह भविष्य वाणी इस के साथ पूरी होगी कि मुसलमान भी उसी समय विजयी हो कर प्रसन्न हो रहे होंगे। और ऐसा ही हुआ कि 9 वर्ष के भीतर रूमियों ने ईरानियों को पराजित कर दिया।
- 2 अर्थात् सुख-सुविधा और आनन्द को। और वह इस से अचेत है कि एक और जीवन भी है जिस में कर्मों के परिणाम सामने आयेंगे। बल्कि यही देखा जाता है कि कभी एक जाति उन्नति कर लेने के पश्चात् असफल हो जाती है।
- 3 विश्व की व्यवस्था बता रही है कि यह अकारण नहीं, बल्कि इस का कुछ अभिप्राय है।

और एक निश्चित अवधि के लिये?
और बहुत से लोग अपने पालनहार
से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।

9. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में,
फिर देखते कि कैसा रहा उन का
परिणाम जो इन से पहले थे? वह
इन से अधिक थे शक्ति में। उन्होंने
ने जोता-बोया धरती को और उसे
आबाद किया, उस से अधिक जितना
इन्होंने ने आबाद किया, और आये
उन के पास उन के रसूल खुली
निशानियाँ (प्रमाण) ले कर। तो नहीं
था अल्लाह कि उन पर अत्याचार
करता, और परन्तु वह स्वयं अपने
ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

10. फिर हो गया उन का बुरा अन्त जिन्होंने
ने बुराई की, इस लिये कि उन्होंने ने
झूठ कहा अल्लाह की आयतों को, और
वह उन का उपहास कर रहे थे।

11. अल्लाह ही उत्पत्ति का आरंभकरता है
फिर उसे दुहरायेगा, तथा उसी की
ओर तुम फेरे⁽¹⁾ जाओगे।

12. और जब स्थापित होगी प्रलय, तो
निराश⁽²⁾ हो जायेंगे अपराधी।

13. और नहीं होगा उन के साक्षियों में
उन का अभिस्तावक (सिफारशी)
और वह अपने साक्षियों का इन्कार

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا
عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

كَمْ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ إِسَاءُوا وَالشُّؤْأَى
أَنْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِآيَاتِهِ لَا يَنْصَحُونَ ۝

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ۝

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ
وَكَانُوا إِشْرَكَآ بِهَيْمٍ كُفِرَ بِنَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन अपने संसारिक अच्छे बुरे कर्मों का प्रतिकार पाने के लिये।

2 अर्थात् अपनी मुक्ति से और चकित हो कर रह जायेंगे।

करने वाले⁽¹⁾ होंगे।

14. और जिस दिन स्थापित होगी प्रलय, तो उस दिन सब अलग अलग हो जायेंगे।
15. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार किये वही स्वर्ग में प्रसन्न किये जायेंगे।
16. और जिन्होंने कुफ़ किया और झुठलाया हमारी आयतों को और परलोक के मिलन को, तो वही यातना में उपस्थित किये हुये होंगे।
17. अतः तुम अल्लाह की पवित्रता का वर्णन संध्या तथा सवेरे किया करो।
18. तथा उसी की प्रशंसा है आकाशों तथा धरती में तीसरे पहर तथा जब दोपहर हो।
19. वह निकालता है⁽²⁾ जीवित से निर्जीव को, तथा निकालता है निर्जीव से जीव को, और जीवित कर देता है धरती को उस के मरण (सूखने) के पश्चात् और इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे।
20. और उस की (शक्ति) के लक्षणों में से यह (भी) है कि तुम्हें उत्पन्न किया मिट्टी से, फिर अब तुम मनुष्य हो (कि धरती में) फैलते जा रहे हो।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْفَخُونَ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝

فَسُبِّحْنَ لِلَّهِ جِئِينَ ثَمُونًا وَجِئِينَ نَصِيحُونَ ۝

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًا وَجِئِينَ نَظِيرُونَ ۝

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُخْلِقُ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۝

1 क्यों कि यह देख लेंगे कि उन्हें सिफारिश करने का कोई अधिकार नहीं होगा। (देखिये सूरह, अन्आम आयत: 23)

2 यहाँ से यह बताया जा रहा है कि प्रलय होकर परलोक में सब को पुनः जीवित किया जाना संभव है और उस का प्रमाण दिया जा रहा है। इसी के साथ यह भी बताया जा रहा है कि इस विश्व का स्वामी और व्यवस्थापक अल्लाह ही है, अतः पूज्य भी केवल वही है।

21. तथा उस की निशानियों (लक्षणों) में से यह (भी) है कि उत्पन्न किया तुम्हारे लिये तुम्हीं में से जोड़े, ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उन के पास तथा उत्पन्न कर दिया तुम्हारे बीच प्रेम तथा दया, वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगो के लिये जो सोच-विचार करते हैं।
22. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती को पैदा करना, तथा तुम्हारी बोलियों और रंगों का विभिन्न होना। निश्चय इस में कई निशानियाँ हैं ज्ञानियों^[1] के लिये।
23. तथा उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात्री में तथा दिन में, और तुम्हारा खोज करना उस के अनुग्रह (जीविका) का। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सुनते हैं।
24. और उस की निशानियों में से (यह भी) है कि वह दिखाता है तुम्हें बिजली को भय तथा आशा बना कर और उतारता है आकाश से जल, फिर जीवित करता है उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्,

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

وَمِنَ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْخِلَافِ أَلْسِنَتِكُمْ وَاللُّوَاكِمِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝

وَمِنَ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ نَضْلِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُسْمَعُونَ ۝

وَمِنَ آيَاتِهِ يُرْسِلُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

1 कुर्आन ने यह कह कर कि भाषाओं और वर्ग-वर्ण का भेद अल्लाह की रचना की निशानियाँ हैं, उस भेद-भाव को सदा के लिये समाप्त कर दिया जो पक्षताप, आपसी बैर और गर्व का आधार बनते हैं। और संसार की शान्ति का भेद करने का कारण होते हैं। (देखिये: सूरह हुजुरात, आयत: 13)
यदि आज भी इस्लाम की इस शिक्षा को अपना लिया जाये तो संसार शान्ति का गहवारा बन सकता है।

वस्तुतः इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोचते हैं।

25. और उस की निशानियों में से है कि स्थापित है आकाश तथा धरती उस के आदेश से। फिर जब तुम्हें पुकारेगा एक बार धरती से तो सहसा तुम निकल पड़ोगे।
26. और उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है, सब उसी के आधीन है।
27. तथा वही है जो आरंभ करता है उत्पत्ति को, फिर वह उसे दुहरायेगा। और वह अति सरल है उस पर। और उसी का सर्वोच्च गुण है आकाशों तथा धरती में, और वही प्रभुत्व शाली तत्त्वज्ञ है।
28. उस ने एक उदाहरण दिया है स्वयं तुम्हारा: क्या तुम्हारे^[1] दासों में से तुम्हारा कोई साझी है उस में जो जीविका प्रदान की है हम ने तुम को, तो तुम उस में उस के बराबर हो, उन से डरते हो जैसे अपनों से डरते हो? इसी प्रकार हम वर्णन करते हैं आयतों का उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं।
29. बल्कि चले हैं अत्याचारी अपनी मनमानी पर बिना समझे, तो कौन राह दिखाये उसे जिस को अल्लाह ने कुपथ कर दिया हो? और नहीं है उन

وَمِنَ الْآيَةِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرٍ ثُمَّ
لَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنتُمُ
تَخْرُجُونَ ۝

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلِّ لَئِن
تَعْتَبُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ
عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ
مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَا
رَزَقْنَاهُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ
كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ۝

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ
يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ ۝

- 1 परलोक और एकेश्वरवाद के तर्कों का वर्णन करने के पश्चात् इस आयत में शुद्ध एकेश्वरवाद के प्रमाण प्रस्तुत किये जा रहे हैं कि जब तुम स्वयं अपने दासों को अपनी जीविका में साझी नहीं बना सकते तो जिस अल्लाह ने सब को बनाया है उस की बंदना उपासना में दूसरों को कैसे साझी बनाते हो?

का कोई सहायक।

30. तो (हे नबी!) आप सीधा रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस^[1] पर। बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को, यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं^[2] जानते।

31. ध्यान कर के अल्लाह की ओर, और डरो उस से तथा स्थापना करो नमाज की, और न हो जाओ मुश्रिकों में से।

32. उन में से जिन्होंने ने अलग बना लिया अपना धर्म। और हो गये कई गिरोह, प्रत्येक गिरोह उसी में^[3] जो उस के पास है मग्न है।

33. और जब पहुँचता है मनुष्यों को कोई दुख तो वह पुकारते हैं अपने पालनहार को ध्यान लगा कर उस की ओर। फिर जब वह चखाता है उन को अपनी ओर से कोई दया, तो सहसा एक गिरोह उन में से अपने पालनहार के

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

مُتَّبِعِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

مِنَ الَّذِينَ قَرَّوْا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا كُلُّ جَزِئٍ مِّنَ الدِّينِ لَهُمْ فِرْعَوْنٌ ۝

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَاوُا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَفْضَهُ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝

1 एक हदीस में कुछ इस प्रकार आया है कि प्रत्येक शिशु प्राकृति (नेचर, अर्थात् इस्लाम) पर जन्म लेता है। परन्तु उस के माँ-बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बना देते हैं। (देखिये: सहीह मुस्लिम: 2656) और यदि उस के माता पिता हिन्दु अथवा बुद्ध या और कुछ हैं तो वे अपने शिशु को अपने धर्म के रंग में रंग देते हैं।

आयत का भावार्थ यह है कि स्वभाविक धर्म इस्लाम और तौहीद को न बदलो बल्कि सहीह पालन पोषण द्वारा अपने शिशु को इसी स्वभाविक धर्म इस्लाम की शिक्षा दो।

2 इसी लिये वह इस्लाम और तौहीद को नहीं पहचानते।

3 वह समझता है कि मैं ही सत्य पर हूँ और उन्हें तथ्य की कोई चिन्ता नहीं।

साथ शिर्क करने लगता है।

34. ताकि वह उस के कृतघ्न हो जायें जो हम ने प्रदान किया है उन को। तो तुम आनन्द ले लो, तुम को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा।

35. क्या हम ने उतारा है उन पर कोई प्रमाण जो वर्णन करता है उस का जिसे वह अब्राह का साझी बना^[1] रहे हैं।

36. और जब हम चखाते हैं लोगों को कुछ दया तो वह उस पर इतराने लगते हैं। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के करतूतों के कारण तो वह सहसा निराश हो जाते हैं।

37. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि अब्राह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहता है और नाप कर देता है? निश्चय इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं।

38. तो दो समीपवर्तियों को उस का अधिकार तथा निर्धनों और यात्रियों को। यह उत्तम है उन लोगों के लिये जो चाहते हों अल्लाह की प्रसन्नता, और वही सफल होने वाले हैं।

39. और जो तुम व्याज देते हो ताकि अधिक हो जाये लोगो के धनो^[2] में

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَمْتَعُوا قَلِيلًا تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

أَمْ أَنْزَلْنَاهُمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

وَلَا إِذْ مَنَّا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ يَفَافِدْكَ مَتَى آيَاتُهُمْ إِذْ هُمْ يَقْتَضُونَ ﴿٣٦﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

قَالَتْ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقُّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ ذَلِكَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

وَمَا يَتَّبِعُ مَنْ رَبًّا لِّيَرْبُوهُ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ

1 यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात् उन के पास इस का कोई प्रमाण नहीं है।

2 इस आयत में सामाजिक अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया गया है कि जब सब कुछ अल्लाह ही का दिया हुआ है तो तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता के लिये सब का अधिकार देना चाहिये। हदीस में है कि जो व्याज खाता-खिलाता है और उसे लिखता तथा उस पर गवाही देता है उस पर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम्)

मिलकर तो वह अधिक नहीं होता
अल्लाह के यहाँ। तथा तुम जो ज़कात
देते हो चाहते हुये अल्लाह की प्रसन्नता
तो वही लोग सफल होने वाले हैं।

40. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया है
तुम को, फिर तुम्हें जीविका प्रदान
की फिर तुम्हें मारेगा, फिर^[1] जीवित
करेगा, तो क्या तुम्हारे साझियों में से
कोई है जो इस में से कुछ कर सके?
वह पवित्र है और उच्च है उन के
साझी बनाने से।

41. फैल गया उपद्रव जल तथा^[2] धूल में
लोगों के करतूतों के कारण, ताकि
वह चखाये उन को उन का कुछ
कर्म, संभवतः वह रुक जायें।

42. आप कह दें चलो-फिरो धरती में
फिर देखो कि कैसा रहा उन का
अन्त जो इन से पहले थे। उन में
अधिकतर मुश्रिक थे।

43. अतः आप सीधा रखें अपना मुख
सत्धर्म की दिशा में इस से पहले कि
आ जाये वह दिन जिसे फिरना नहीं
है अल्लाह की ओर से, उस दिन

ने धिक्कार किया है।

فَلَا تَرْجُوا عِنْدَ اللَّهِ مَوْتًا تَتَّبِعُونَ مِنْكُمْ مَنْ رَكِبُوا
مُؤَيَّدُونَ وَحَاجَةُ اللَّهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٤٠﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ ثُمَّ
يُعَذِّبُكُمْ ۚ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَفْعَلُ
مِنْ ذَلِكَ مِمَّنْ شِئْنَا سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي
النَّاسِ لِيُبَذَّ لِقَبْهِمْ بَعْضُ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٤٢﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٣﴾

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَدِيمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
يَوْمَ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصَدَّقُونَ ﴿٤٤﴾

1 इस में फिर एकेश्वरवाद का वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया है।

2 आयत में बताया गया है कि इस विश्व में जो उपद्रव तथा अत्याचार हो रहा
है यह सब शिर्क के कारण हो रहा है। जब लोगों ने एकेश्वरवाद को छोड़ कर
शिर्क अपना लिया तो अत्याचार और उपद्रव होने लगा। क्यों कि न एक अल्लाह
का भय रह गया और न उस के नियमों का पालन।

लोग अलग-अलग हो^[1]जायेंगे।

44. जिस ने कुफ़ किया तो उसी पर उस का कुफ़ है और जिस ने सदाचार किया तो वे अपने ही लिये (सफलता का मार्ग) बना रहे हैं।

45. ताकि अल्लाह बदला दे उन को जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये अपने अनुग्रह से। निश्चय वह प्रेम नहीं करता काफ़िरों से।

46. और उस की निशानियों में से है कि भेजता है वायु को शुभसूचना देने के लिये और ताकि चखाये तुम्हें अपनी दया (वर्षा) में से, और ताकि नाव चले उस के आदेश से, और ताकि तुम खोजो उस जीविका और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

47. और हम ने भेजा आप से पहले रसूलों को उन की जातियों की ओर। तो वह लाये उन के पास खुली निशानियाँ, अन्ततः हम ने बदला ले लिया उन से जिन्होंने अपराध किया। और अनिवार्य था हम पर ईमान वालों की सहायता^[2] करना।

48. अल्लाह ही है जो वायुओं को भेजता है, फिर वह उसे फैलाता है आकाश में जैसे चाहता है, और उसे घंघोर बना देता है। तो तुम देखते हो बूंदों

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نُفْسِيهِمْ يُنْهَدُونَ ﴿٤٤﴾

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾

وَمِنَ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُنْذِرَكُمْ مِنْ وَعْدِهِ وَلِيَجْزِيَ الْفُلُكَ بِأَمْرِهِ وَلِيَجْعَلَ أَمْرَكُمْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَقْبَلُوا الَّذِينَ آجُرُمُوا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

إِنَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثَوِّبُ سَحَابًا يَبْسُطُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَنَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ فَإِذَا

1 अर्थात् ईमान वाले और काफ़िर।

2 आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के अनुयायियों को सान्त्वना दी जा रही है।

को निकलते उस के बीच से, फिर जब उसे पहुँचाता है जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से तो सहसा वह प्रफुल्ल हो जाते हैं।

49. यद्यपि वह थे इस से पहले कि उन पर उतारी जाये, अति निराशा।

50. तो देखो अल्लाह की दया के लक्षणों को, वह कैसे जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात्, निश्चय वही जीवित करने वाला है मुर्दों को तथा वह सब कुछ कर सकता है।

51. और यदि हम भेज दें उग्र वायु फिर वह देख लें उस (खेती) को पीली तो इस के पश्चात् कुफ़ करने लगते हैं।

52. तो (हे नबी) आप नहीं सुना सकेंगे मुर्दों¹ को और नहीं सुना सकेंगे बहरों को पुकार जब वह भाग रहे हों पीठ फेर कर।

53. तथा नहीं है आप मार्ग दर्शाने वाले अँधों को उन के कुपथ से, आप सुना सकेंगे उन्हीं को जो ईमान लाते हैं हमारी आयतों पर फिर वही मुस्लिम हैं।

54. अल्लाह ही है जिस ने उत्पन्न किया तुम्हें निर्बल दशा से फिर प्रदान किया निर्बलता के पश्चात् बल फिर कर दिया बल के पश्चात् निर्बल तथा बूढ़ा², वह उत्पन्न करता है

أَصَابَ بِهِ مَنْ يَتْلُو مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَشِرُّونَ ۝

وَأِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِي أَنْ يَنْزِلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِيُونَ ۝

فَانْظُرْ إِلَى الثَّوْحِ حَتَّى اللَّهُ كَيْفَ يُغَيِّ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ الْمُؤْتَى وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَلَمَّا أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا طَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۝

وَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمِعُ الْقُبُورَ الدُّعَاءَ إِذَا دُاعُوا مِنْ بَيْنِ يَدَيْنِ ۝

وَمَا أَنْتَ بِهَادٍ الْعُمَى عَنْ صَلَاتِهِمْ إِنَّ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝

أَلَلَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۝

1 अर्थात् जिन की अन्तरात्मा मर चुकी हो और सत्य सुनने के लिये तय्यार न हों।

2 अर्थात् एक व्यक्ति जन्म से मरण तक अल्लाह के सामर्थ्य के आधीन रहता है फिर उस की वंदना में उस के आधीन होने और उस के पुनः पैदा

जो चाहता है और वही सर्वज्ञ सब सामर्थ्य रखने वाला है।

55. और जिस दिन व्याप्त होगी प्रलय तो शपथ लेंगे अपराधी कि वह नहीं रहे क्षणभर^[1] के सिवा। और इसी प्रकार वह बहकते रहे।

56. तथा कहेंगे जो ज्ञान दिये गये तथा ईमान, कि तुम रहे हो अल्लाह के लेख में प्रलय के दिन तक, तो अब यह प्रलय का दिन है। और परन्तु तुम विश्वास नहीं रखते थे।

57. तो उस दिन नहीं काम देगा अत्याचारियों को उन का तर्क और न उन से क्षमायाचना कराई जायेगी।

58. और हम ने वर्णन कर दिया है लोगों के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण का, और यदि आप ला दें उन के पास कोई निशानी तब भी अवश्य कह देंगे जो काफिर हो गये कि तुम तो केवल झूठ बनाते हो।

59. इसी प्रकार मुहर लगा देता है अल्लाह उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते।

60. तो आप सहन करें, वास्तव में अल्लाह का वचन सत्य है, और

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِئُوا غِيَرًا سَاعَةً كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْكَلُونَ ﴿٥٥﴾

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِئْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَعْيُنُكُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

وَلَقَدْ فَتَرْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَكِنْ حَسِبْتُمْ بَايَةً لَيَقُولُنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

كَذَلِكَ يَضَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ

कर देने के सामर्थ्य को अस्वीकार क्यों करता है?

1 अर्थात् संसार में।

कदापि वह आप^[1] को हलका न
समझें जो विश्वास नहीं रखते।

الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

1 अन्तिम आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य तथा साहस रखने का आदेश दिया गया है। और अब्बाह ने जो विजय देने तथा सहायता करने का वचन दिया है उस के पूरा होने और निराश न होने के लिये कहा जा रहा है।

सूरह लुकमान - 31

سُورَةُ لُقْمَانَ

सूरह लुकमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 34 आयतें हैं।

- इस सूरह में लुकमान को ज्ञान देने की बात है इस लिये इस का नाम सूरह लुकमान है।
- इस में धर्म के विषय में विचार करने तथा अंध विश्वास से बचने तथा उन निशानियों से शिक्षा लेने के निर्देश दिये गये हैं जिन से जीवन सुधरता है।
- अल्लाह तथा धर्म के बारे में बिना ज्ञान के बात करने पर सावधान किया गया है और कर्म सुधारने पर उत्तम परिणाम की शुभसूचना दी गई है।
- लुकमान की उत्तम बातों का वर्णन किया गया है जो कुर्आन पाक की शिक्षाओं के अनुसार हैं।
- उन निशानियों को बताया गया है जिन से तौहीद तथा आखिरत की राह खुलती है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के सामने उपस्थित होने के दिन से डराया गया है और बताया गया है कि वह सब कुछ जानता है ताकि उस की आखिरत के बारे में सूचना का विश्वास हो जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ लाम मीम।
2. यह आयतें हैं ज्ञानपूर्ण पुस्तक की।
3. मार्ग दर्शन तथा दया है सदाचारियों के लिये।
4. जो नमाज़ की स्थापना करते हैं तथा ज़कात देते हैं और परलोक पर (पूरा) विश्वास रखते हैं।

الْقُرْآنِ

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ

بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

5. वही लोग
अपने पालनहार के शुपथों पर हैं।
तथा वही लोग सफल होने वाले हैं।
6. तथा लोगों में वह (भी) है जो
खरीदता है खेल की¹ बात ताकि
कुपथ करे अल्लाह की राह (इस्लाम)
से बिना किसी ज्ञान के और उसे
उपहास बनाये। यही है जिन के लिये
अपमानकारी यातना है।
7. और जब पढ़ी जायें उस के समक्ष
हमारी आयतें तो वह मुख फेर लेता
है घमंड करते हुये। जैसे उस के
दोनों कान बहरे हों, तो आप उसे
शुभसूचना सुना दें दुखदायी यातना की।
8. वस्तुतः जो ईमान लाये तथा सदाचार
किये तो उन्हीं के लिये सुख के बाग हैं।
9. वह सदावासी होंगे उन में, अल्लाह
का सत्य वचन है, और वही
प्रभुत्वशाली सर्व ज्ञानी है।
10. उस ने उत्पन्न किया है आकाशों
को बिना किसी स्तम्भ के जिन्हें तुम
देख रहे हो, और बना दिये धरती
में पर्वत ताकि डोल न जाये तुम्हें
लेकर, और फैला दिये उन में हर
प्रकार के जीव, तथा हम ने उतारा
आकाश से जल, फिर हम ने उगाये
उस में प्रत्येक प्रकार के सुन्दर जोड़े।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٦﴾

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّى مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ
يَسْمَعْهَا كَأَن فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا فُتِّيرُهُ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
الْنَعِيمِ ﴿٨﴾

خَالِدِينَ فِيهَا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَآلِثَىٰ فِي
الْأَرْضِ رَوَايَ أَن تُعِيدَ بِكُمْ وَبَيْنَكُمْ فِيمَا مَن كُلِّ
دَابَّةٍ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ذَا بَنَاتٍ فَيَخْشَعْنَ
كُلُّ ذُو جُنْحٍ وَجُودٍ ﴿١٠﴾

1 इस से अभिप्राय गाना-बजाना तथा संगीत और प्रत्येक वह साधन है जो सदाचार से अचेत कर दें। इस में किस्से, कहानियाँ, काम संबंधी साहित्य सब सम्मिलित हैं।

11. यह अल्लाह की उत्पत्ति है, तो तुम दिखाओ, क्या उत्पन्न किया है उन्होंने ने जो उस के अतिरिक्त है? बल्कि अत्याचारी खुले कुपथ में है?

12. और हमने लुकमान को प्रबोध प्रदान किया कि कृतज्ञ बनो अल्लाह के, तथा जो (अल्लाह का) आभारी हो वह आभारी है अपने ही (लाभ) के लिये। और जो आभारी न हो तो अल्लाह निःस्वार्थ सराहनीय है।

13. तथा (याद करो) जब लुकमान ने कहा अपने पुत्र से जब वह समझा रहा था उसे: हे मेरे पुत्र! साझी मत बना अल्लाह का, वास्तव में शिर्क (मिश्रण बाद) बड़ा घोर अत्याचार^[1] है।

14. और हम ने आदेश दिया है मनुष्यों को अपने माता-पिता के संबन्ध में, अपने गर्भ में रखा उसे उस की माता ने दुख पर दुख झेल कर, और उस का दूध छुड़ाया दो वर्ष में कि तुम कृतज्ञ रहो मेरे और अपनी माता-पिता के, और मेरी ही ओर (तुम्हें) फिर आना है।

15. और यदि वह दोनों दबाव डालें तुम पर कि तुम साझी बनाओ मेरा उसे जिस का तुम को कोई ज्ञान नहीं, तो न^[2] मानो उन दोनों की

هَذَا اخْلَقَ اللَّهُ فَأَرُونِي مَاذَا اخْلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَمِيدٌ ۝

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَبْنَىٰ لِأَنْتَ وَكَرِهَ لِلَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝

وَوَضَّيْنَا لِلْإِنْسَانِ يُولَدُهُ حَمْلَتُهُ أُمَّهُ وَهِيَ آعِلٌ وَهِيَ وَفَضْلُهُ فِي عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَلَوْلَا الَّذِي دُرِّي إِلَى الْمَصِيرِ ۝

وَلَنْ جَهْدَكَ عَلَىٰ أَنْ تَشْرِكَنِي مَا لِي بِكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبِ عَمَانِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۝ وَإِثْمُهُ سَيِّئٌ مَنْ أَنْابَ إِلَيَّ ثُمَّ إِلَىٰ تَرْجِعُكُمْ

1 हदीस में है कि घोर पापों में से: अल्लाह के साथ शिर्क करना, माँ-बाप के साथ बुरा व्यवहार, जान मारना तथा झूठी शपथ लेना है। (सहीह बुखारी: हदीस नं॰: 6675)

2 हदीस में है कि पाप में किसी की बात नहीं माननी है पुण्य में माननी है। (सहीह बुखारी: 7257)

बात। और उन के साथ रहो संसार^[1] में सुचारू रूप से, तथा राह चलो उस की जो ध्यान मग्न हो मेरी ओर, फिर मेरी ही ओर तुम्हें फिर कर आना है तो मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा उस से जो तुम कर रहे थे।

16. हे मेरे पुत्र! यदि हो (कोई कर्म) राई के दाने के बराबर, फिर वह यदि हो किसी पत्थर के भीतर या आकाशों में या धरती में, तो उसे भी उपस्थित करेगा^[2] अल्लाह। वास्तव में वह सब महीन बातों से सूचित है।

17. हे मेरे पुत्र! स्थापना कर नमाज़ की और आदेश दे भलाई का तथा रोक बुराई से और सहन कर उस (दुख) पर जो तुझे पहुँचे, वास्तव में यह बड़े साहस की बात है।

18. और मत बल दे अपने माथे पर^[3] लोगों के लिये तथा मत चल धरती में अकड़ कर। निःसंदेह अल्लाह प्रेम नहीं करता^[4] किसी अहंकारी गर्व करने वाले से।

19. और संतुलन रख अपनी चाल^[5] में तथा धीमी रख अपनी आवाज़,

فَأَنبِئْكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠﴾

يَلْقَى إِلَهُكُمُ الْمَلَكُ تَفْكَرُ مَقَال حَبَّةٍ مِنْ حَرْدَلٍ
فَتَكُنْ فِي صَفْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ
يَأْتِ رَبُّهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

يُذَكِّرُ أَقِيمِ الصَّلَاةَ وَامْرُءٍ بِالْمَعْرُوفِ وَإِنِّ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصْبِرْ عَلَى مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٢﴾

وَلَا تَصْعَقْ رَعْدَكَ لِلْمَنَاسِكِ وَلَا تَمْسُقْ فِي الْأَرْضِ
مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَكُنُوزٌ كُلِّ غَتَّالٍ غَوْرٍ ﴿١٣﴾

وَأَقْبِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْصُصْ مِنْ صَوْتِكَ

1 अर्थात् माता-पिता यदि मिश्रणवादी और काफिर हों तब भी उन की संसार में सहायता करो।

2 प्रलय के दिन उस का प्रतिफल देने के लिये।

3 अर्थात् गर्व से।

4 सहीह हदीस में कहा गया है कि, वह स्वर्ग में नहीं जायेगा जिस के दिल में राई के दाने के बराबर भी अहंकार हो। (मुस्नद अहमद: 1/412)

5 (देखिये: सूरह फुर्कान, आयत नं: 63)

वास्तव में सब से बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

20. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने बश में कर दिया^[1] है तुम्हारे लिये जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, तथा पूर्ण कर दिया है तुम पर अपना पुरस्कार खुला तथा छुपा? और कुछ लोग विवाद करते हैं अल्लाह के विषय^[2] में बिना किसी ज्ञान तथा बिना किसी मार्गदर्शन और बिना किसी दिव्य (रोशन) पुस्तक के।

21. और जब कहा जाता है उन से कि पालन करो उस (कुर्आन) का जिसे उतारा है अल्लाह ने, तो कहते हैं: बल्कि हम तो उसी का पालन करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया है। क्या यद्यपि शैतान उन्हें बुला रहा हो नरक की यातना की^[3] और?

22. और समर्पित कर देगा स्वयं को अल्लाह के तथा वह एकेश्वर वादी हो तो उस ने पकड़ लिया सुदृढ़ कड़ा तथा अल्लाह ही की ओर कर्मों का परिणाम है।

23. तथा जो काफिर हो गया तो आप को उदासीन न करे उस का कुफ्र। हमारी ओर ही उन्हें लौटना है, फिर हम सूचित कर देंगे उन को उन के कर्मों से। निःसंदेह अल्लाह अति ज्ञानी

إِنَّ أَكْثَرَ الصَّوَاتِ لَصَوْتُ الْغَافِلِينَ

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ ثَوْنِي السَّمَوتِ وَثَوْنِي الْأَرْضِ وَاسْتَبَعَ عَلَيْكُمْ نَجْمَةَ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ الثَّانِي مَنْ يَبْذُلُونَ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلَىٰ نَتَّبِعُهُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

وَمَنْ يُسَلِّمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

1 अर्थात् तुम्हारी सेवा में लगा रखा है।

2 अर्थात् उस के अस्तित्व और उस के अकेले पूज्य होने के विषय में।

3 अर्थात् क्या वह सत्य और असत्य में अन्तर किये बिना असत्य ही का पालन करेंगे, और न समझ से काम लेंगे, न धर्म पुस्तक को मानेंगे?

है दिलों के भेदों का।

24. हम उन्हें लाभ पहुँचायेंगे बहुत^[1],
थोड़ा फिर हम विवश कर देंगे उन्हें
घोर यातना की ओर।

25. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि
किस ने उत्पन्न किया है आकाशों
तथा धरती को, तो अवश्य कहेंगे
कि अल्लाह ने, आप कह दें कि सब
प्रशंसा अल्लाह के लिये^[2] है, बल्कि
उन में अधिकतर ज्ञान नहीं रखते।

26. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों
ताथ धरती में है, वास्तव में अल्लाह
निस्पृह सराहनीय है।

27. और यदि जो भी धरती में वृक्ष हैं
सब लेखनियाँ बन जायें तथा उस के
पश्चात् सागर स्याही हो जायें सात
सागरों तक, तो भी समाप्त नहीं होंगे
अल्लाह (कि प्रशंसा) के शब्द, वास्तव
में अल्लाह प्रभाव शाली गुणी है।

28. और तुम्हें उत्पन्न करना और पुनः
जीवित करना केवल एक प्राण के
समान^[3] है। निःसंदेह अल्लाह सब कुछ
सुनने जानने वाला है।

29. क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह
मिला^[4] देता है रात्री को दिन में और

نُتِعَهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
لَيَقُولَنَّ اللَّهُ فَبِئْسَ الْهَمْدُ لِلَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَلَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الْغَفِيُّ الْخَبِيرُ ۝

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ
يَمْدٌ ۙ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ
كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذِكْرُهُ ۝

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَعْزَلُكُمْ إِلَّا كَفَّةً وَاحِدَةً
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُؤَلِّمُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّمُ النَّهَارَ

1 अर्थात् संसारिक जीवन का लाभ।

2 कि उन्होंने ने सत्य को स्वीकार कर लिया।

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य से सब को एक प्राणी के पैदा करने तथा जीवित करने के समान पुनः जीवित कर देगा।

4 कुर्आन ने एकेश्वरवाद का आमंत्रण देने तथा मिश्रणवाद का खण्डन करने के

मिला देता है दिन को^[1] रात्री में, तथा बश में कर रखा है सूर्य तथा चाँद को, प्रत्येक चल रहा है एक निर्धारित समय तक, और अल्लाह उस से जो तुम कर रहे हो भली भाँती अवगत है।

30. यह सब इस कारण है कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वह पुकारते हैं अल्लाह के सिवा असत्य है, तथा अल्लाह ही सब से ऊँचा, सब से बड़ा है।
31. क्या तुम ने नहीं देखा कि नाव चलती है सागर में अल्लाह के अनुग्रह के साथ, ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ है प्रत्येक सहनशील कृतज्ञ के लिये।
32. और जब छा जाती है उन पर लहर छत्रों के समान, तो पुकारने लगते हैं अल्लाह को उस के लिये शुद्ध कर के धर्म को, और जब उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है थल तक तो उन में से कुछ संतुलित रहने वाले होते हैं। और हमारी निशानियों को प्रत्येक वचनभंगी अति कृतघ्न ही नकारते हैं।
33. हे लोगों! डरो अपने पालनहार से तथा भय करो उस दिन का जिस

فِي الْيَلِّ وَسَحَرَ الشَّهْسَ وَالْقَمَرَ كُلَّ يَوْمٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ يَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُزَيِّنَ لَكُمْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ؕ فَلَمَّا غَشَاهُمْ إِلَى الْمَدَىٰ فَهُمْ مُّقْتَصِدُونَ وَمَا يَجْحَدُوا بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَصَّافٍ كَفُورٍ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاسْأَلُوا نَوْمًا لَّيَجْرِيَ

लिये फिर इस का वर्णन किया है कि जब विश्व का रचयिता तथा विधाता अल्लाह ही है तो पूज्य भी वही है, फिर भी यह विश्वव्यापी कुपथ है कि लोग अल्लाह के सिवा अन्य कि पूजा करते तथा सूर्य और चाँद को सज्दा करते हैं, निर्धारित समय से अभिप्राय प्रलय है।

1. तो कभी दिन बड़ा होता है तो कभी रात्री।

दिन नहीं काम आयेगा कोई पिता अपनी संतान के और न कोई पुत्र काम आने वाला होगा अपने पिता के कुछ^[1] भी। निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें कदापि धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से प्रवंचक (शैतान)।

وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلَودٌ هُوَ جَانِبُ
وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمُ الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿٢٠﴾

34. निःसंदेह अल्लाह ही के पास है प्रलय^[2] का ज्ञान, और वही उतारता है वर्षा, और जानता है जो कुछ गर्भाशयों में है, और नहीं जानता कोई प्राणी कि वह क्या कमायेगा कल, और नहीं

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُرْسِلُ الْغَيْثَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا
تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ
تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿٢١﴾

1 अर्थात् परलोक की यातना संसारिक दण्ड के सामान नहीं होगी कि कोई किसी की सहायता से दण्ड मुक्त हो जाये।

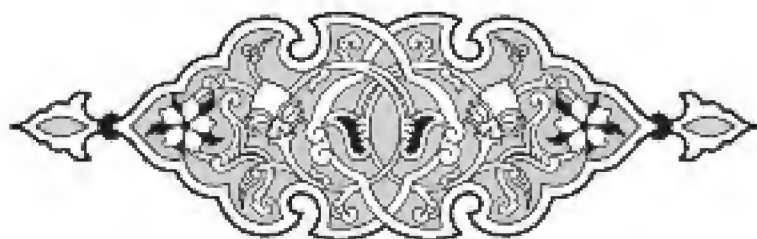
2 अबू हुरैरह (रजियल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन लोगों के बीच बैठे हुये थे कि एक व्यक्ति आया, और प्रश्न किया कि अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है? आप ने कहा: ईमान यह है कि तुम अल्लाह पर तथा उस के फरिश्तों, उस के सब रसूलों और उस से मिलने और फिर दौबारा जीवित किये जाने पर ईमान लाओ।

उस ने कहा: इस्लाम क्या है? आप ने कहा: इस्लाम यह है कि केवल अल्लाह की इबादत करो और किसी वस्तु को उस का साझी न बनाओ, तथा नमाज़ की स्थापना करो और जकात दो, तथा रमजान के रोजे रखो।

उस ने कहा: इहसान क्या है? आप ने कहा: इहसान यह है कि अल्लाह की इबादत ऐसे करो जैसे कि तुम उसे देख रहे हो। यदि यह न हो सके तो यह ख्याल रखो कि वह तुम्हें देख रहा है।

उस ने कहा: प्रलय कब होगी? आप ने कहा: मैं प्रश्नकर्ता से अधिक नहीं जानता। परन्तु मैं तुम्हें उस की कुछ निशानियाँ बताऊँगा: जब स्त्री अपने स्वामिनी को जन्म देगी और जब नंगे निः वस्त्र लोग मुखिया हो जायेंगे। पाँच बातों में जिन को अल्लाह ही जानता है। और आप ने यही आयत पढ़ी। फिर वह व्यक्ति चला गया। आप ने कहा: उसे बुलाओ, तो वह नहीं मिला। आप ने फरमाया: वह जिब्रील थे, तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये थे। (सहीह बुखारी 4777)

जानता कोई प्राणी कि किस धरती
में मरेगा, वास्तव में अल्लाह ही सब
कुछ जानने वाला सब से सूचित है।



सूरह सज्दा - 32



सूरह सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 15 में ईमान वालों का यह गुण बताया गया है कि उन्हें अल्लाह की आयतों द्वारा शिक्षा दी जाती है तो वह सज्दे में गिर पड़ते हैं। इसी लिये इस का यह नाम है।
- इस में तौहीद तथा आखिरत की बातों को ऐसे वर्णन किया गया है कि संदेह दूर हो कर दिल को विश्वास हो जाये। और बताया गया है कि यह पुस्तक (क़र्आन) लोगों को सावधान करने के लिये उतारी गई है। तौहीद के साथ ही मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा भी की गई है।
- इस में आखिरत का विषय तथा ईमान वालों की कुछ विशेषतायें तथा उन का शुभ परिणाम बताया गया है और झुठलाने वालों का दुष्परिणाम भी दिखाया गया है।
- यह बताया गया है कि नबी का आना कोई अनोखी बात नहीं है। इस से पहले भी मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा दूसरे नबी आते रहे। और विनाशित जातियों के परिणाम पर विचार करने को कहा गया है।
- अन्त में विरोधियों की आपत्तियों का जवाब देते हुये उन्हें सावधान किया गया है। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस सूरह को जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ में पढ़ते थे। (सहीह बुख़ारी: 891)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़ लाम मीम।

الْقُرْآنِ

2. इस पुस्तक का उतारना जिस में कोई संदेह नहीं पूरे संसार के पालनहार की ओर से है।

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَرَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْعَلِيمُ

3. क्या वे कहते हैं कि इसे इस ने घड़

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ

लिया है? बल्कि यह सत्य है आप के पालनहार कि ओर से ताकि आप सावधान करें उन लोगों को जिन^[1] के पास नहीं आया है कोई सावधान करने वाला आप से पहले। संभव है वह सीधी राह पर आ जायें।

4. अल्लाह वही है जिस ने पैदा किया आकाशों तथा धरती को और जो दोनों के मध्य है छः दिनों में। फिर स्थित हो गया अर्श पर। नहीं है उस के सिवा तुम्हारा कोई संरक्षक और न कोई अभिस्तावक (सिफारशी) तो क्या तुम शिक्षा नहीं लेते?
5. वह उपाय करता है प्रत्येक कार्य की आकाश से धरती तक, फिर प्रत्येक कार्य ऊपर उस के पास जाता है एक दिन में जिस का माप एक हजार वर्ष है तुम्हारी गणना से।
6. वही है ज्ञानी छुपे तथा खुले का अति प्रभुत्वशाली दयावान्।
7. जिस ने सुन्दर बनाई प्रत्येक चीज़ जो उत्पन्न की, और आरंभ की मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से।
8. फिर बनाया उस का वंश एक तुच्छजल के निचोड़ (वीर्य) से।
9. फिर बराबर किया उस को और फूंक दिया उस में अपनी आत्मा (प्राण)। तथा बनाये तुम्हारे लिये कान और आँख तथा दिला तुम कम

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَّذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٦﴾

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ
دُونِهِ مِنْ دُونِ ۚ وَلَا سَفِيحَةٍ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٧﴾

يَذَرُ الْأَمْوَانَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ
فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ﴿٨﴾

ذَٰلِكَ عَلِيمُ الْعَيْبِ وَاللَّهُ آذَنُ الْعَرْشِ الرَّحِيمِ ﴿٩﴾

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ﴿١٠﴾

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ﴿١١﴾

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ ۚ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

1. इस से अभिप्राय मक्का वासी है।

ही कृतज्ञ होते हो।

10. तथा उन्होंने ने कहा: क्या जब हम खो जायेंगे धरती में तो क्या हम नई उत्पत्ति में होंगे? बल्कि वह अपने पालनहार से मिलने का इन्कार करने वाले हैं।
11. आप कह दें कि तुम्हारा प्राण निकाल लेगा मौत का फरिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर अपने पालनहार की ओर फेर दिये जाओगे।^[1]
12. और यदि आप देखते जब अपराधी अपने सिर झुकाये होंगे अपने पालनहार के समक्ष (वह कह रहे होंगे): हे हमारे पालनहार! हम ने देख लिया और सुन लिया, अतः हमें फेर दे (संसार में) हम सदाचार करेंगे। हमें पुरा विश्वास हो गया।
13. और यदि हम चाहते तो प्रदान कर देते प्रत्येक प्राणी को उस का मार्गदर्शन। परन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि मैं अवश्य भरूँगा नरक को जिनों तथा मानव से।
14. तो चखो अपने भूल जाने के कारण अपने इस दिन के मिलने को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया^[2] है। चखो सदा की यातना उस के बदले जो तुम कर रहे थे।

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ بَلْ هُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ كَفِرُونَ ۝

ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ مَلَكَ الْمَوْتِ الَّذِي ذُكِّرَ بِكُمْ ثُمَّ
إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذَا وَقَرِّبْنَا لِقَاءَكَ فَارْجِعْنَا لَعْمَلِ صَلَاحِنَا
مُؤْمِنِينَ ۝

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًىٰ وَلَٰكِن حَقَّ
الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْإِنسِ وَالنَّاسِ
أَجْمَعِينَ ۝

فَذُوقُوا بِمَا لَبِيتُمْ لِإِقَامِ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ
وَذُوقُوا عَذَابَ الْعُلْدِ إِنَّكُمْ تَعْمَلُونَ ۝

- 1 अर्थात् नई उत्पत्ति पर आश्चर्य करने से पहले इस पर विचार करो कि मरण तो आत्मा के शरीर से विलग हो जाने का नाम है जो दूसरे स्थान पर चली जाती है। और परलोक में उसे नया जन्म दे दिया जायेगा फिर उसे अपने कर्म के अनुसार स्वर्ग अथवा नरक में पहुँचा दिया जायेगा।
- 2 अर्थात् आज तुम पर मेरी कोई दया नहीं होगी।

15. हमारी आयतों पर बस वही ईमान लाते हैं जिन को जब समझाया जाये उन से तो गिर जाते हैं सज्दा करते हुये और पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ और अभिमान नहीं करते।^[1]
16. अलग रहते हैं उन के पार्श्व (पहलू) बिस्तारों से, वह प्रार्थना करते रहते हैं अपने पालनहार से भय तथा आशा रखते हुये, तथा उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है दान करते रहते हैं।
17. तो नहीं जानता कोई प्राणी उसे जो छुपा रखा है हम ने उन के लिये आँखों की ठंडक^[2] उस के प्रतिफल में जो वह कर रहे थे।
18. फिर क्या जो ईमान वाला हो उस के समान है जो अवज्ञाकारी हो? वह सब समान नहीं हो सकेंगे।
19. जो ईमान लाये तथा सदाचार किये तो उन्हीं के लिये स्थायी स्वर्ग है, अतिथि सत्कार के लिये उस के बदले जो वह करते रहे।
20. और जो अवज्ञा कर गये, उन का आवास नरक है। जब जब वह निकलना चाहेंगे उस में से तो फेर दिये जायेंगे उस में, तथा कहा

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا حُزُّوا
سُجَّدًا أَوْ سَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ۝

إِنَّمَا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ
الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا
أَن يُخْرَجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا
عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

1 यहाँ सज्दा तिलावत करना चाहिये।

2 हदीस में है कि अब्बाह ने कहा है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीजें तैयार की हैं जिन्हें न किसी आँख ने देखा है और न किसी कान ने सुना और न किसी मनुष्य के दिल में उन का विचार आया। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 4780)

जायेगा उन से कि चखो उस अग्नि की यातना जिसे तुम झुठला रहे थे।

21. और हम अवश्य चखायेंगे उन को संसारिक यातना, बड़ी यातना से पूर्व ताकि वह फिर^[1] आयें।

22. और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा, फिर विमुख हो जाये उन से? वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

23. तथा हम ने मूसा को प्रदान की (तौरात) तो आप न हों किसी संदेह में उस^[2] से मिलने में। तथा बनाया हम ने उसे (तौरात को) मार्गदर्शन इस्राईल की संतान के लिये।

24. तथा हम ने उन में से अग्रणी बनाये जो मार्गदर्शन देते रहे हमारे आदेश द्वारा जब उन्होंने ने सहन किया तथा हमारी आयतों पर विश्वास^[3] करते रहे।

25. वस्तुतः आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस में वह विभेद करते रहे।

26. तो क्या मार्गदर्शन नहीं कराया उन्हें

وَلَنُؤَذِّبَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ
الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ
أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي
مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى
لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ ﴿٢٣﴾

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا آلَ
صِبْرَةَ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا هَلَكَ نَاصِرِينَ ﴿٢٦﴾

1 अर्थात् ईमान लायें और अपने कुकर्म से क्षमा याचना कर लें।

2 इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मेराज की रात्रि में मूसा (अलैहिस्सलाम) से मिलने की ओर संकेत है। जिस में मूसा (अलैहिस्सलाम) ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह से पचास नमाज़ों को पाँच कराने का प्रामर्श दिया। (सहीह बुखारी: 3207, मुस्लिम: 164)

3 अर्थ यह है कि आप भी धैर्य तथा पूरे विश्वास के साथ लोगों को सुपथ दर्शायें।

कि हम ने ध्वस्त कर दिया इस से पूर्व बहुत से युग के लोगों को जो चल-फिर रहे थे अपने घरों में वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ (शिक्षायें) हैं, तो क्या वह सुनते नहीं हैं?

27. क्या उन्होंने ने नहीं देखा कि हम बहा ले जाते हैं जल को सूखी भूमि की ओर फिर उपजाते हैं उस के द्वारा खेतियों, खाते हैं जिस में से उन के चौपाये तथा वह स्वयं तो क्या वह गौर नहीं करते?

28. तथा कहते हैं कि कब होगा वह निर्णय यदि तुम सच्चे हो?

29. आप कह दें निर्णय के दिन लाभ नहीं देगा काफिरों को उन का ईमान लाना^[1] और न उन्हें अवसर दिया जायेगा।

30. अतः आप विमुख हो जायें उन से तथा प्रतीक्षा करें, यह भी प्रतीक्षा करने वाले हैं

الْعَرُودِ يَمْشُونَ فِي مَكِيدِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ
فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا نَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ
وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيْمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٣٠﴾

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرِ الْإِهْمُ مُنْتَظَرُونَ ﴿٣١﴾

1 इन आयतों में मक्का के काफिरों को सावधान किया गया है कि इतिहास से शिक्षा ग्रहण करो, जिस जाति ने भी अल्लाह के रसूलों का विरोध किया उस को संसार से निरस्त कर दिया गया। तुम निर्णय की मांग करते हो तो जब निर्णय का दिन आ जायेगा तो तुम्हारे संभाले नहीं संभलेगी और उस समय का ईमान कोई लाभ नहीं देगा।

सूरह अहज़ाब - 33

سُورَةُ الْأَحْزَابِ

सूरह अहज़ाब के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 73 आयतें हैं।

- इस सूरह में अहज़ाब (जत्था या सेनाओं) की चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में काफ़िरों और मुनाफ़िकों के धोखे में न आने तथा केवल अल्लाह पर भरोसा करने पर बल दिया गया है। फिर जाहिलिय्यत के मुंह बोले पुत्र की परम्परा का सुधार करने के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों का पद बताया गया है।
- अहज़ाब के युद्ध में अल्लाह की सहायता तथा मुनाफ़िकों की दुर्गत बताई गई है।
- इस में मुंह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के विवाह का वर्णन किया गया है।
- ईमान वालों को, अल्लाह को याद करने का निर्देश देते हुये उस पर दया तथा बड़े प्रतिफल की शुभ सूचना दी गई है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा को उजागर किया गया है।
- तलाक़ और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों के विषय में कुछ विशेष आदेश दिये गये हैं।
- पर्दे का आदेश दिया गया है, तथा प्रलय की चर्चा की गई है।
- अन्त में मुसलमानों का दायित्व याद दिलाते हुये मुनाफ़िकों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! अल्लाह से डरो, और

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ

काफ़िरों तथा मुनाफ़िकों की आज्ञापालन न करो। वास्तव में अल्लाह हिक्मत वाला सब कुछ जानने^[1] वाला है।

2. तथा पालन करो उस का जो वही (प्रकाशना) की जा रही है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से निश्चय अल्लाह जो तुम कर रहे हो उस से सूचित है।
3. और आप भरोसा करें अल्लाह पर, तथा अल्लाह पर्याप्त है रक्षा करने वाला।
4. और नहीं रखे है अल्लाह ने किसी के दो दिल उस के भीतर और नहीं बनाया है तुम्हारी पत्नियों को जिन से तुम जिहार^[2] करते हो उन में से तुम्हारी मातायें तथा नहीं बनाया है तुम्हारे मुँह बोले पुत्रों को तुम्हारा पुत्र। यह तुम्हारी मौखिक बातें हैं। और अल्लाह सच्च कहता है तथा वही सुपथ दिखाता है।
5. उन्हें पुकारो उन के बापों से संबन्धित कर के, यह अधिक न्याय

وَالْمُتَّقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَأَتَّبِعْ مَا تَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِلرَّجُلِ مِنْ قَلْبَيْنِ فِي جُودَةٍ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمْ أَلَىٰ تَطَهُّرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتُكُمْ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۝

ادْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَإِنْ لَمْ

- 1 अतः उसी की आज्ञा तथा प्रकाशना का अनुसरण और पालन करो।
- 2 इस आयत का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं होते वैसे ही उस की पत्नी जिहार कर लेने से उस की माता तथा उस का मुँह बोला पुत्र उस का पुत्र नहीं हो जाता।
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने नबी होने से पहले अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद बिन हारिसा को अपना पुत्र बनाया था और उन को हारिसा पुत्र मुहम्मद कहा जाता था जिस पर यह आयत उतरती। (सहीह बुखारी: 4782)
जिहार का विवरण सूरह मुजादला में आ रहा है।

की बात है अल्लाह के समीप। और यदि तुम नहीं जानते उन के बापों को तो वह तुम्हारे धर्म बन्धु तथा मित्र हैं। और तुम्हारे ऊपर कोई दोष नहीं है उस में जो तुम से चूक हुई है, परन्तु (उस में है) जिस का निश्चय तुम्हारे दिल करें। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

6. नबी^[1] अधिक समीप (प्रिय) है ईमान वालों से उन के प्राणों से, और आप की पत्नियाँ^[2] उन की मातायें हैं। और समीपवर्ती संबन्धी एक दूसरे से अधिक समीप^[3] हैं, अल्लाह के लेख में ईमान वालों और मुहाजिरों से। परन्तु यह कि करते रहो अपने मित्रों के साथ भलाई, और यह पुस्तक में लिखा हुआ है।
7. तथा (याद करो) जब हम ने नबियों से उन का वचन^[4] लिया तथा आप से और नूह तथा इब्राहीम और मूसा तथा मर्यम के पुत्र ईसा से, और हम ने लिया उन से दृढ़ वचन।

تَعْلَمُوا أَنَّ آبَاءَهُمْ وَأَحِبَّاءَهُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيَهُمْ
وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُم بِهِ وَلَكِنْ
بِالْعَمْدِ تَلْوُونَ أَلْسِنَتَكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

الَّذِينَ أُولَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ
أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ
فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ
تَفْعَلُوا إِلَىٰ أُولِيكُم مَّعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ
مَسْطُورًا ۝

وَلَا تَحْذَرُوا مِنَ الْمَنَافِقِينَ بَيْنَمَا أَتَوْهُمْ وَمِنْكُمْ وَرِجَالُ
نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ فَأَخَذْنَا
مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝

1. हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं मुसलमानों का अधिक समीपवर्ती हूँ। यह आयत पढ़ो, तो जो माल छोड़ जाये वह उस के वारिस का है और जो कर्ज तथा निर्बल संतान छोड़ जाये तो मैं उस का रक्षक हूँ। (सहीह बुखारी: 4781)
2. अर्थात् उन का सम्मान माताओं के बराबर है और आप के पश्चात् उन से बिवाह निषेधित है।
3. अर्थात् धर्म विधानानुसार उत्तराधिकार समीपवर्ती संबंधियों का है, इस्लाम के आरंभिक युग में हिजरत तथा ईमान के आधार पर एक दूसरे के उत्तराधिकारी होते थे जिसे मीरास की आयत द्वारा निरस्त कर दिया गया।
4. अर्थात् अपना उपदेश पहुँचाने का।

8. ताकि वह प्रश्न^[1] करे सच्चों से उन के सच्च के संबंध में तथा तय्यार की है काफ़िरो के लिये दुःखदायी यातना।
9. हे ईमान वालो! याद करो अल्लाह के पुरस्कार को अपने ऊपर जब आ गई तुम्हारे पास जत्थे, तो भेजी हम ने उन पर आँधी और ऐसी सेनायें जिन को तुम ने नहीं देखा, और अल्लाह जो तुम कर रहे थे उसे देख रहा था।
10. जब वह तुम्हारे पास आ गये तुम्हारे ऊपर से तथा तुम्हारे नीचे से और जब पत्थरा गई आँखें, तथा आने लगे दिल मुँह^[2] को तथा तुम विचारने लगे अल्लाह के संबंध में विभिन्न विचार।
11. यही परीक्षा ली गई ईमान वालों की और वह झंझोड़ दिये गये पूर्ण रूप से।
12. और जब कहने लगे मुश्रिक और जिन के दिलों में कुछ रोग था कि अल्लाह तथा उस के रसूल ने नहीं बचन दिया हमें परन्तु धोखे का।
13. और जब कहा उन के एक गिरोह ने: हे यस्रिब^[3] वालो! कोई स्थान नहीं

لَيَمْتَلِ الضَّيِّقِينَ عَنْ صَدَقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا أَلِيمًا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ
جَاءَكُمْ جُنُودُهُ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ
تَرَوْهَا وَكَانَ اللَّهُ يَتْلُو لَكُمْ الصِّبْرَانَ

إِذْ جَاءَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ
رَأَيْتُمُ الْمُؤْمِنِينَ مُكْفَرِينَ وَكَانَ اللَّهُ يَتْلُو لَكُمْ
الصِّبْرَانَ

هَٰذَا لِكَيْ تَبْلُغَ الْمُؤْمِنُونَ وَإِنَّ لَكُمْ لَآلَاءَ الْاِسْتِغْنَاءِ

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا

وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ

1 अर्थात् प्रलय के दिन (देखिये: सूरह आराफ़, आयत: 6)

2 इन आयतों में अहज़ाब के युद्ध की चर्चा की गई है। जिस का दूसरा नाम (खन्दक का युद्ध) भी है। क्यों कि इस में खन्दक (खाई) खोद कर मदीना की रक्षा की गई। सन् 5 हिजरी में मक्का के काफ़िरो ने अपने पूरे सहयोगी कबीलों के साथ एक भारी सेना लेकर मदीना को घेर लिया और नीचे वादी और ऊपर पर्वतों से आक्रमण कर दिया। उस समय अल्लाह ने ईमान वालों की रक्षा आँधी तथा फ़रिश्तों की सेना भेज कर की। और शत्रु पराजित हो कर भागे। और फिर कभी मदीना पर आक्रमण करने का साहस न कर सकें।

3 यह मदीने का प्राचीन नाम है।

है तुम्हारे लिये, अतः लौट^[1] चलो।
तथा अनुमति माँगने लगा उन में
से एक गिरोह नबी से, कहने लगा:
हमारे घर खाली है, जब कि वह
खाली न थे। वह तो बस निश्चय कर
रहे थे भाग जाने का।

14. और यदि प्रवेश कर जातीं उन पर
मदीने के चारों ओर से (सेनायें) फिर
उन से माँग की जाती उपद्रव^[2] की
तो अवश्य उपद्रव कर देते। और उस
में तनिक भी देर नहीं करते।

15. जब कि उन्होंने ने वचन दिया था
अल्लाह को इस से पूर्व कि पीछा नहीं
दिखायेंगे और अल्लाह के वचन का
प्रश्न अवश्य किया जायेगा।

16. आप कह दें: कदापि लाभ नहीं
पहुँचायेगा तुम्हें भागना यदि तुम
भाग जाओ मरण से या मारे जाने से।
और तब तुम थोड़ा ही^[3] लाभ प्राप्त
कर सकोगे।

17. आप पूछिये कि वह कौन है जो तुम्हें
बचा सके अल्लाह से यदि वह तुम्हारे
साथ बुराई चाहे अथवा तुम्हारे साथ
भलाई चाहे? और वह अपने लिये
नहीं पायेंगे अल्लाह के सिवा कोई
संरक्षक और न कोई सहायक।

18. जानता है अल्लाह जो रोकने वाले है तुम

لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنَ النَّبِيِّ
يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ
إِنَّ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ
لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّتْ بِهَا الْأَرْسِلُ ۝

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا لَِّ اللَّهِ مِنْ قَبْلُ لَا يُوْثِقُونَ
الْأَذْفَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مُسْتَوْثَقًا ۝

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ قُرْئْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ
أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَا تُمْسِكُونَ إِلَّا قُلَيْدًا ۝

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِيكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَكُمْ
سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نِعْمَةً وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

وَلَيَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَذِّبِينَ مِنْكُمُ الْعَالِينَ إِخْوَانِهِمْ

1 अर्थात् रणक्षेत्र से अपने घरों को।

2 अर्थात् इस्लाम से फिर जाने तथा शिर्क करने की।

3 अर्थात् अपनी सीमित आयु तक जो परलोक की अपेक्षा बहुत थोड़ी है।

में से तथा कहने वाले हैं अपने भाईयों से कि हमारे पास चले आओ, तथा नहीं आते हैं युद्ध में परन्तु कभी कभी।

19. वह बड़े कंजूस है तुम पर। फिर जब आजाये भय का^[1] समय, तो आप उन्हें देखेंगे कि आप की ओर तक रहे हैं फिर रही है उन की आँखें, उस के समान जो मरणासन्न दशा में हो, और जब दूर हो जाये भय तो वह मिलेंगे तुम से तेज़ जुबानों^[2] से बड़े लोभी हो कर धन को वह ईमान नहीं लाये हैं। अतः व्यर्थ कर दिये अल्लाह ने उन के सभी कर्म, तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।

20. वह समझते हैं कि जत्थे नहीं^[3] गये और यदि आ जायें सेनायें तो वह चाहेंगे कि वह गाँव में हों, गाँव वालों के बीच तथा पूछते रहें तुम्हारे समाचार, और यदि तुम में होते भी तो वह युद्ध में कम ही भाग लेते।

21. तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में उत्तम^[4] आदर्श है, उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह और अन्तिम दिन (प्रलय) की, तथा याद करे अल्लाह को अत्यधिक।

22. और जब ईमान वालों ने सेनायें देखी तो कहा: यही है जिस का वचन दिया

هَلُمَّ الْيَنَّا وَلَا يَأْتُونَ الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

أَتَيْتُهُمْ عَلَى كُرْهٍ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يُنْظَرُونَ إِلَيْكَ تَوَدُّرُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْتَمُ عَلَى عَيْنٍ مِنَ الْمَوْتِ فَإِذَا ذُهِبَ الْخَوْفُ سَلَفُوا أَمْ يَأْتِيَنَّهُمْ كَدَادِ أَيْشَةٍ عَلَى الْغَيْرِ أُولَئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْنَ أَلَّا يُلَاقَهُمْ بِالْأَوَّلِينَ فِي الْأَحْزَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ آبَائِكُمْ وَأَوْلَاكُمْ فَانْصَرُوا إِلَى الْوَالِدِينَ ۝

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝

وَلَقَدْ آتَى الْمُؤْمِنِينَ الْأَحْزَابَ قَالَ الْوَالِدُ امَّا

1 अर्थात् युद्ध का समय।

2 अर्थात् मर्म भेदी बातें करेंगे, और विजय में प्राप्त धन के लोभ में बातें बनायेंगे।

3 अर्थात् ये मुनाफ़िक इतने कायर हैं कि अब भी उन्हें सेनाओं का भय है।

4 अर्थात् आप के सहन, साहस तथा वीरता में।

था हमें अल्लाह और उस के रसूल ने। और सचच कहा अल्लाह तथा उस के रसूल ने और इस ने नहीं अधिक किया परन्तु (उन के) ईमान तथा स्वीकार को।

23. ईमान वालों में कुछ वह भी है जिन्होंने सचच कर दिखाया अल्लाह से किये हुये अपने वचन को। तो उन में कुछ ने अपना वचन^[1] पूरा कर दिया, और उन में से कुछ प्रतीक्षा कर रहे हैं। और उन्होंने तनिक भी परिवर्तन नहीं किया।

24. ताकि अल्लाह प्रतिफल प्रदान करे सचचों को उन के सचच का। तथा यातना दे मुनाफ़िकों को अथवा उन को क्षमा कर दे। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील और दयावान् है।

25. तथा फेर दिया अल्लाह ने काफ़िरों को (मदीना से) उन के क्रोध के साथ। वह नहीं प्राप्त कर सके कोई भलाई। और पर्याप्त हो गया अल्लाह ईमान वालों के लिये युद्ध में। और अल्लाह अति शक्तिशाली तथा प्रभुत्वशाली है।

26. और उतार दिया अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने सहायता की उन (सेनाओं) की उन के दुर्गों से। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय।^[2]

وَعَدَا اللَّهُ رَسُولَهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَمَا أَزَادَهُمُ الْآرَائِنَا وَتَسْلِيمًا

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ
عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ
وَمَا بَدَّلُوا بَدْلًا

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَيْثِهِمْ لَمْ يَأْتُوا خَيْرًا
وَكُلَّى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْغَلَالَ وَكَانَ اللَّهُ
قَوِيًّا عَزِيزًا

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوا مِنْهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرَمَقًا
تَقْتُلُونَ وَتَأْبِرُونَ فَرَمَقًا

1 अर्थात् युद्ध में शहीद कर दिये गये।

2 इस आयत में बनी कुरैज़ा के युद्ध की ओर संकेत है। इस यहूदी कबीले की नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ संधि थी। फिर भी उन्होंने संधि भंग कर के ख़न्दक के युद्ध में कुरैशे मक्का का साथ दिया। अतः युद्ध समाप्त होते

उन के एक गिरोह को तुम बध कर रहे थे तथा बंदी बना रहे थे एक दूसरे गिरोह को।

27. और तुम्हारे अधिकार में दे दी उन की भूमी, तथा उन के घरों और धनों को, और ऐसी धरती को जिस पर तुम ने पग नहीं रखे थे। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

28. हे नबी! आप अपनी पत्नियों से कह दें कि यदि तुम चाहती हो संसारिक जीवन तथा उस की शोभा तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दूँ तथा विदा कर दूँ अच्छाई के साथ।

29. और यदि तुम चाहती हो अल्लाह और उस के रसूल तथा आखिरत के घर को तो अल्लाह ने तय्यार कर रखा है तुम में से सदाचारिणियों के लिये भारी प्रतिफल^[1]

وَأُورِثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّهُمْ تَطَوَّهَآ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُمْ تُرِيدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأَسْرِحْكُمْ سَرَاحًا جَبِيلًا ۝

وَإِن كُنْتُمْ تُرِيدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

ही आप ने उन से युद्ध की घोषणा कर दी। और उनकी घेरा बंदी कर ली गई। पच्चीस दिन के बाद उन्होंने सअद बिन मुआज़ को अपना मध्यस्थ मान लिया। और उन के निर्णय के अनुसार उन के लड़ाकुओं को बध कर दिया गया। और बच्चों, बूढ़ों तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया गया। इस प्रकार मदीना से इस आतंकवादी कबीले को सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया।

- 1 इस आयत में अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ये आदेश दिया है कि आप की पत्नियाँ जो आप से अपने खर्च अधिक करने की माँग कर रही हैं, तो आप उन्हें अपने साथ रहने या न रहने का अधिकार दे दें। और जब आप ने उन्हें अधिकार दिया तो सब ने आप के साथ रहने का निर्णय किया। इस को इस्लामी विधान में (तख्यीर) कहा जाता है। अर्थात् पत्नि को तलाक लेने का अधिकार दे देना।

हदीस में है कि जब यह आयत उतरी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी पत्नी आईशा से पहले कहा कि मैं तुम्हें एक बात बता रहा हूँ। तुम अपने माता-पिता से परामर्श किये बिना जल्दी न करना। फिर आप ने यह आयत

30. हे नबी की पत्नियों! जो तुम में से खुला दुराचार करेगी उस के लिये दुगुनी कर दी जायेगी यातना और यह अल्लाह पर अति सरल है।

31. तथा जो मानेंगे तुम में से अल्लाह तथा उस के रसूल की बात और सदाचार करेंगी हम उन्हें प्रदान करेंगे उन का प्रतिफल दोहरा। और हम ने तय्यार की है उन के लिये उत्तम जीविका।^[1]

32. हे नबी की पत्नियों! तुम नहीं हो अन्य स्त्रियों के समान। यदि तुम अल्लाह से डरती हो तो कोमल भाव से बात न करो, कि लोभ करने लगे वह जिस के दिल में रोग हो और सभ्य बात बोलो।

33. और रहो अपने घरों में, और सौन्दर्य का प्रदर्शन न करो प्रथम अज्ञान युग के प्रदर्शन के समान। तथा नमाज़ की स्थापना करो और ज़कात दो तथा आज्ञा पालन करो अल्लाह और उस के रसूल की। अल्लाह चाहता है कि मलिनता को दूर कर दे तुम से, हे नबी के घर वालियों! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र।

34. तथा याद रखो उसे जो पढ़ी जाती

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ مَنْ يَّاتِي مِنْكُمْ بِفَاحِشَةٍ
مُّبِينَةٍ يُّضَاعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝

وَمَنْ يُقِنْتَ مِنْكُمْ دِيْنَهُ وَرَسُوْلَهُ وَتَعْمَلْ
صَالِحًا ثَوْبَتِهَا اَجْرًا مَّرْكُومًا وَاعْتَدْنَا لَهَا
رِزْقًا كَوِيْمًا ۝

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لَسْتُ مِنْ كَاٰحِدٍ مِنَ النِّسَاءِ اِنْ
اَتَقَبْتُ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي
فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ كَوَلَا تَعْرُوْنَ ۝

وَقَرْنَ فِى بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ
الْأُوْلَىٰ وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاَتِينَ الزَّكٰوةَ
وَاطْعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ اِنَّهٗ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ
عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ
تَطْهِيرًا ۝

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِى بُيُوْتِكُنَّ مِنْ الْكِتٰبِ

सुनाई। तो आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैं इस के बारे में भी अपने माता-पिता से परामर्श करूँगी? मैं अल्लाह तथा उस के रसूल और आखिरत के घर को चाहती हूँ। और फिर आप की दूसरी पत्नियों ने भी ऐसा ही किया (देखिये: सहीह बुख़ारी: 4786)

1. स्वर्ग में।

है तुम्हारे घरों में अन्नाह की आयतें
तथा हिक्मत।^[1] वास्तव में अन्नाह
सूक्ष्मदर्शी सर्व सूचित है।

35. निःसंदेह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ तथा ईमान वाली स्त्रियाँ तथा आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ, तथा सच्चे पुरुष तथा सच्ची स्त्रियाँ तथा सहनशील पुरुष और सहनशील स्त्रियाँ तथा विनीत पुरुष और विनीत स्त्रियाँ तथा दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ तथा रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ तथा अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष तथा रक्षा करने वाली स्त्रियाँ, तथा अल्लाह को अत्यधिक याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली स्त्रियाँ, तय्यार कर रखा है अल्लाह ने इन्हीं के लिये क्षमा तथा महान् प्रतिफल।^[2]

विषय में। और जो अवैज्ञा करेगा
अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह
खुले कुपथ में^[1] पड़ गया।

37. तथा (हे नबी!) आप वह समय याद
करें जब आप उस से कह रहे थे
उपकार किया अल्लाह ने जिस पर
तथा आप ने उपकार किया जिस
पर, रोक ले अपनी पत्नी को तथा
अल्लाह से डर, और आप छुपा रहे
थे अपने मन में जिसे अल्लाह उजागर
करने वाला^[2] था, तथा डर रहे थे
तुम लोगों से, जब कि अल्लाह अधिक
योग्य था कि उस से डरते, तो जब
जैद ने पूरी कर ली उस (स्त्री) से
अपनी अवश्यता तो हम ने विवाह
दिया उस को आप से, ताकि ईमान
वालों पर कोई दोष न रहे अपने मुँह
बोले पुत्रों की पत्नियों के विषय^[3] में

وَأَذِّنْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَآتَمَّتْ عَلَيْهِمْ
أَمْرًا عَلَيْهِمْ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي
نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ
أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَىٰ رَبِّيَ مِنْهَا حَظًّا
رَزَقْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ لَئَلَّيْكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي
أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذْ اقْتَضُوا مَوْتَهُنَّ وَحَرًّا
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

- 1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी किन्तु जो इन्कार करे। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप ने कहा: जिस ने मेरी बात मानी वह स्वर्ग में जायेगा और जिस ने नहीं मानी तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुखारी: 2780)
- 2 हदीस में है कि यह आयत जैनब बिनते जहश तथा (उस के पति) जैद बिन हारिसा के बारे में उतरी। (सहीह बुखारी, हदीस नं: 4787)
जैद बिन हारिसा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दास थे। आप ने उन्हें मुक्त कर के अपना पुत्र बना लिया। और जैनब से विवाह दिया। परन्तु दोनों में निभाव न हो सका। और जैद ने अपनी पत्नी को तलाक दे दी। और जब मुँह बोले पुत्र की परम्परा को तोड़ दिया गया तो इसे पूर्णतः खण्डित करने के लिये आप को जैनब से आकाशीय आदेश द्वारा विवाह दिया गया। इस आयत में उसी की ओर संकेत है। (इब्ने कसीर)
- 3 अर्थात् उन से विवाह करने में जब वह उन्हें तलाक दे दें। क्योंकि जाहिली समय में मुँह बोले पुत्र की पत्नी से विवाह वैसे ही निषेध था जैसे सगे पुत्र की पत्नी से। अल्लाह ने इस नियम को तोड़ने के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

जब वह पूरी कर लें उन से अपनी आवश्यकता तथा अल्लाह का आदेश पूरा हो कर रहा।

38. नहीं है नबी पर कोई तंगी उस में जिस का आदेश दिया है अल्लाह ने उन के लिये।^[1] अल्लाह का यही नियम रहा है उन नबियों में जो हुये हैं आप से पहले। तथा अल्लाह का निश्चित किया आदेश पूरा होना ही है।

39. जो पहुँचाते हैं अल्लाह के आदेश तथा उस से डरते हैं, वह नहीं डरते हैं किसी से उस के सिवा। और पर्याप्त है अल्लाह हिसाब लेने के लिये।

40. मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं है। किन्तु वह^[2] अल्लाह के रसूल और सब नबियों में अन्तिम^[3] है। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ
وَمَا كَانَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْ يَتَمَدَّدَ

إِلَّا الَّذِينَ يُبَيِّنُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَحْشُرُونَ
وَلَا يَحْشُرُونَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ
اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمًا

का विवाह अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से कराया। ताकि मुसलमानों को इस से शिक्षा मिले कि ऐसा करने में कोई दोष नहीं है।

- 1 अर्थात् अपने मुँह बोले पुत्र की पत्नी से उस के तलाक़ देने के पश्चात् विवाह करने में।

- 2 अर्थात् आप ज़ैद के पिता नहीं हैं। उस के वास्तविक पिता हारिसा हैं।

- 3 अर्थात् अब आप के पश्चात् प्रलय तक कोई नबी नहीं आयेगा। आप ही संसार के अन्तिम रसूल हैं। हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: मेरी मिसाल तथा नबियों का उदाहरण ऐसा है जैसे किसी ने एक सुन्दर भवन बनाया। और एक ईंट की जगह छोड़ दी। तो उसे देख कर लोग आश्चर्य करने लगे कि इस में एक ईंट की जगह के सिवा कोई कमी नहीं थी। तो मैं वह ईंट हूँ। मैं ने उस ईंट की जगह भर दी। और भवन पूरा हो गया। और मेरे द्वारा नबियों की कड़ी का अन्त कर दिया गया। (सहीह बुखारी, हदीस नं०: 3535, सहीह मुस्लिम- 2286)

41. हे ईमान वालो! याद करते रहो अल्लाह को अत्यधिक^[1]
42. तथा पवित्रता बयान करते रहो उस की प्रातः तथा संध्या।
43. वही है जो दया कर रहा है तुम पर तथा प्रार्थना कर रहे हैं (तुम्हारे लिये) उस के फ़रिश्ते। ताकि वह निकाल दे तुम को अंधेरो से प्रकाश^[2] की ओर। तथा ईमान वालों पर अत्यंत दयावान् है।
44. उन का स्वागत जिस दिन उस से मिलेंगे सलाम से होगा। और उस ने तय्यार कर रखा है उन के लिये सम्मानित प्रतिफल।
45. हे नबी! हम ने भेजा है आप को साक्षी^[3] तथा शुभसूचक^[4] और सचेत कर्ता^[5] बना कर।
46. तथा बुलाने वाला बना कर अल्लाह की ओर उस की अनुमति से, तथा प्रकाशित प्रदीप बना कर।^[6]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ذُكِّرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝

يَجْعَلُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامًا ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّبِينًا ۝

1 अपने मुखों, कर्मों तथा दिलों से नमाज़ों के पश्चात् तथा अन्य समय में। हदीस में है कि जो अल्लाह को याद करता हो और जो याद न करता हो दोनों में वही अन्तर है जो जीवित तथा मरे हुये में है। (सहीह बुखारी, हदीस नं: 6407, मुस्लिम: 779)

2 अर्थात् अज्ञानता तथा कुपथ से, इस्लाम के प्रकाश की ओर।

3 अर्थात् लोगों को अल्लाह का उपदेश पहुँचाने का साक्षी। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143, तथा सूरह निसा, आयत: 41)

4 अल्लाह की दया तथा स्वर्ग का, आज्ञाकारियों के लिये।

5 अल्लाह की यातना तथा नरक से, अवैज्ञाकारियों के लिये।

6 इस आयत में यह संकेत है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दिव्य प्रदीप

47. तथा आप शुभसूचना सुना दें ईमान वालों को कि उन के लिये अल्लाह की ओर से बड़ा अनुग्रह है।
48. तथा न बात मानें काफ़िरो और मुनाफ़िकों की, तथा न चिन्ता करें उन के दुख पहुँचाने की और भरोसा करें अल्लाह पर। तथा पर्याप्त है अल्लाह काम बनाने के लिये।
49. हे ईमान वालो! जब तुम विवाह करो ईमान वालियों से फिर तलाक़ दो उन्हें इस से पूर्व कि हाथ लगाओ उन को तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कोई इद्दत^[1] जिस की तुम गणना करो। तो तुम उन्हें कुछ लाभ पहुँचाओ, और उन्हें विदा करो भलाई के साथ।
50. हे नबी! हम ने हलाल (वैध) कर दिया है आप के लिये आप की पत्नियों को जिन्हें चुका दिया हो आप ने उन का महर (विवाह उपहार), तथा जो आप के स्वामित्व में हों उस में से जो प्रदान किया है अल्लाह ने आप^[2] को, तथा आप के चाचा की पुत्रियों और आप की फूफी की पुत्रियों तथा आप के मामा की पुत्रियों

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ أَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا كَثِيرًا ۝

وَلَا تَطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ أَذَاهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَكَهَّمُ الْمُؤْمِنَاتُ أَنْ تَكُنَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمِنْ تَعْمُوهُنَّ وَمَسْرُوحَهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنْ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِنْهُنَّ فَقَدْ آفَأَهُ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمَتِكَ وَبَنَاتِ خَالَكَ وَبَنَاتِ خَلَتِكَ الَّتِي فَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَرَوْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا

के समान पूरे मानव विश्व को सत्य के प्रकाश से जो एकेश्वरवाद तथा एक अल्लाह की इबादत (बंदना) है प्रकाशित करने के लिये आये हैं। और यही आप की विशेषता है कि आप किसी जाति या देश अथवा वर्ण-वर्ग के लिये नहीं आये हैं। और अब प्रलय तक सत्य का प्रकाश आप ही के अनुसरण से प्राप्त हो सकता है।

1 अर्थात् तलाक़ के पश्चात् की निर्धारित अवधि जिस के भीतर दूसरे से विवाह करने की अनुमति नहीं है।

2 अर्थात् वह दासियाँ जो युद्ध में आप के हाथ आई हों।

तथा मौसी की पुत्रियों को, जिन्होंने हिजरत की है आप के साथ, तथा किसी भी ईमान वाली नारी को यदि वह स्वयं को दान कर दे नबी के लिये, यदि नबी चाहें कि उस से विवाह कर लें। यह विशेष है आप के लिये अन्य ईमान वालों को छोड़ कर। हमें ज्ञान है उस का जो हम ने अनिवार्य किया है उन पर उन की पत्नियों तथा उन के स्वामित्व में आयी दासियों के संबंध^[1] में। ताकि तुम पर कोई संकीर्णता (तंगी) न हो। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

51. (आप को अधिकार है कि) जिसे आप चाहें अलग रखें अपनी पत्नियों में से, और अपने साथ रखें जिसे चाहें। और जिसे आप चाहें बुला लें उन में से जिसे अलग किया है। आप पर कोई दोष नहीं है। इस प्रकार अधिक आशा है कि उन की आँखें शीतल हों, और वह उदासीन न हों तथा प्रसन्न रहें उस से जो आप उन सब को दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों^[2] में है। और अल्लाह अति ज्ञानी सहनशील^[3] है।

52. (हे नबी!) नहीं हलाल (वैध) है आप के लिये पत्नियाँ इस के पश्चात्, और

يَكُونُ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

تَرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ
وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ
أَدْنَىٰ أَنْ تَقْرَءَ عَيْنَهُنَّ وَلَا تَعْرَظَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا
الْيَدُ يَنْهَنَ كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ

1 अर्थात् यह कि चार पत्नियों से अधिक न रखो तथा महर (विवाह उपहार) और विवाह के समय दो साक्षी बनाना और दासियों के लिये चार का प्रतिबंध न होना एवं सब का भरण-पोषण और सब के साथ अच्छा व्यवहार करना इत्यादि।

2 अर्थात् किसी एक पत्नी में रुची।

3 इसीलिये तुरंत यातना नहीं देता।

न यह कि आप बदलें उन को दूसरी पत्नियों^[1] से यद्यपि आप को भाये उन का सौन्दर्य। परन्तु जो दासी आप के स्वामित्व में आ जाये। तथा अन्नाह प्रत्येक वस्तु का (पूर्ण) रक्षक है।

53. हे ईमान वालो! मत प्रवेश करो नबी के घरों में परन्तु यह कि अनुमति दी जाये तुम को भोज के लिये। परन्तु भोजन पकने की प्रतिक्षा न करते रहो। किन्तु जब तुम बुलाये जाओ तो प्रवेश करो, फिर जब भोजन कर लो तो निकल जाओ। लीन न रहो बातों में। वास्तव में इस से नबी को दुःख होता है, अतः वह तुम से लजातै है। और अन्नाह नहीं लजाता है सत्य^[2] से तथा जब तुम नबी की पत्नियों से कुछ माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो, यह अधिक पवित्रता का कारण है तुम्हारे दिलों तथा उन के दिलों के लिये। और तुम्हारे लिये उचित नहीं है कि नबी को दुःख दो, न यह कि विवाह करो उन की पत्नियों से आप के पश्चात् कभी भी। वास्तव में यह अन्नाह के समीप महा (पाप) है।

54. यदि तुम कुछ बोलो अथवा उसे मन

يَهْنُ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ
إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
رَقِيبًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرِ نَظِيرٍ مِنْهُ
وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ
فَانْتَشِرُوا وَلَا مُسْتَأْذِنِينَ لِحَدِيثِ إِنَّ ذَلِكُمْ
كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَعْجِلُ مِنْكُمْ وَاللَّهُ
لَا يَسْتَعْجِلُ مِنَ الْحَقِّ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ
مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ
لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ
اللَّهِ وَلَا أَنْ تَكُونُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا
إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

إِنْ شَبَّ وَأَشِيئَ أَوْ قَعَوْا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ

- 1 अर्थात् उन में से किसी को छोड़ कर उस के स्थान पर किसी दूसरी स्त्री से विवाह करें।

- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ सभ्य व्यवहार करने की शिक्षा दी जा रही है। हुआ यह कि जब आप ने जैनब से विवाह किया तो भोजन बनवाया और कुछ लोगों को आमंत्रित किया। कुछ लोग भोजन कर के वही बातें करने लगे जिस से आप को दुःख पहुँचा। इसी पर यह आयत उतरी। फिर पर्दे का आदेश दे दिया गया। (सहीह बुखारी नं: 4792)

شَيْءٍ عِلْمًا ۝

में रखो तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का अत्यंत ज्ञानी है।

- ss. कोई दोष नहीं है उन (स्त्रियों) पर अपने पिताओं, न अपने पुत्रों एवं भाईयों और न भतीजों तथा न अपनी (मेल-जोल की) स्त्रियों और न अपने स्वामित्व (दासी तथा दास) के सामने होने में, यदि वह अल्लाह से डरती रहे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أُمَّهَاتِهِمْ وَلَا أُمَّهَاتِكُمْ إِنَّمَا هُنَّ أُمَّهَاتُكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

56. अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद^[1] भेजते हैं नबी पर। हे ईमान वालो! उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

57. जो लोग दुख देते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल को तो अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है लोक तथा परलोक में। और तय्यार की है उन के लिये अपमानकारी यातना।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝

58. और जो दुख देते हैं ईमान वालों तथा ईमान वालियों को बिना किसी दोष के जो उन्होंने ने किया हो, तो उन्होंने ने

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا ظَالِمًا كَتَبْنَا عَلَيْهِمُ إِثْمَهُمْ وَأِثْمًا مُّهِينًا ۝

1 अल्लाह के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि फरिश्तों के समक्ष आप की प्रशंसा करता है। तथा आप पर अपनी दया भेजता है।

और फरिश्तों के दरूद भेजने का अर्थ यह है कि वह आप के लिये अल्लाह से दया की प्रार्थना करते हैं। हदीस में आता है कि आप से प्रश्न किया गया कि हम सलाम तो जानते हैं पर आप पर दरूद कैसे भेजें? तो आप ने फरमाया: यह कहो: ((अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद, कमा सल्लैता अला आलि इब्राहीम, इब्रका हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा बारक्ता अला आलि इब्राहीम इब्रका हमीदुम मजीद।)) (सहीह बुखारी: 4797)

दूसरी हदीस में है कि: जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह उस पर दस बार दया भेजता है। (सहीह मुस्लिम: 408)

लाद लिया आरोप तथा खुले पाप को।

59. हे नबी! कह दो अपनी पत्नियों से तथा अपनी पुत्रियों एवं ईमान वालों की स्त्रियों से कि डाल लिया करें अपने ऊपर अपनी चादरें। यह अधिक समीप है कि वह पहचान ली जायें। फिर उन्हें दुःख न दिया^[1] जाये। और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

60. यदि न रुके मुनाफ़िक^[2] तथा जिन के दिलों में रोग है और मदीना में अफ़्वाह फैलाने वाले तो हम आप को भड़का देंगे उन पर। फिर वह आप के साथ नहीं रह सकेंगे उस में परन्तु कुछ ही दिन।

61. धिक्कारे हूये। वे जहाँ पाये जायें पकड़ लिये जायेंगे तथा जान से मार दिये जायेंगे।

62. यही अल्लाह का नियम रहा है उन में जो इन से पूर्व रहे। तथा आप कदापि नहीं पायेंगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

63. प्रश्न करते हैं आप से लोग^[3] प्रलय

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهُوا الْمُتَفِئُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُخَالِفُوا بِرُءُوكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝

مُتَعَذِّبِينَ ۚ إِنَّمَا تُنْفِئُوا الْخِذْلَ وَأَقْتُلُوا النَّفَثَاتِ ۝

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَكِنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पत्नियों तथा पुत्रियों और साधारण मुस्लिम महिलाओं को यह आदेश दिया गया है कि घर से निकलें तो पर्दे के साथ निकलें। जिस का लाभ यह है कि इस से एक सम्मानित तथा सभ्य महिला की असभ्य तथा कुकर्मी महिला से पहचान होगी और कोई उस से छेड़ छाड़ का साहस नहीं करेगा।

2 मुश्रिक (द्विधावादी) मुसलमानों को हताश करने के लिये कभी मुसलमानों की पराजय और कभी किसी भारी सेना के आक्रमण की अफ़्वाह मदीना में फैला दिया करते थे। जिस के दुष्परिणाम से उन्हें सावधान किया गया है।

3 यह प्रश्न उपहास स्वरूप किया करते थे। इसलिये उस की दशा का चित्रण

के विषय में। तो आप कह दें कि उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। संभव है कि प्रलय समीप हो।

64. अल्लाह ने धिक्कार दिया है काफ़िरों को। और तय्यार कर रखी है उन के लिये दहकती अग्नि।

65. वे सदावासी होंगे उस में। नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।

66. जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में, वे कहेंगे: हमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!

67. तथा कहेंगे: हमारे पालनहार! हम ने कहा माना अपने प्रमुखों एवं बड़ों का। तो उन्होंने हमें कुपथ कर दिया सुपथ से।

68. हमारे पालनहार! उन्हें दुगुनी यातना दे। तथा उन्हें धिक्कार दे बड़ी धिक्कार।

69. हे ईमान वालो! न हो जाओ उन के समान जिन्होंने ने मूसा को दुख दिया, तो अल्लाह ने निर्दोष कर दिया^[1] उसे उन की बनाई बातों से। और वह था अल्लाह के समक्ष सम्मानित।

اللَّهُ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

يَوْمَ تَقُفُّ أُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلًا ۝

رَبَّنَا إِنَّهُمْ ضَعَفْنَا مِنْ عَذَابٍ لَعَنَّا كِبِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا الَّذِينَ إِذْ مَا مَوْسَىٰ فَبَرَأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۝

किया गया है।

1 हदीस में आया है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) बड़े लज्जशील थे। प्रत्येक समय वस्त्र धारण किये रहते थे। जिस से लोग समझने लगे कि संभवतः उन में कुछ रोग है। परन्तु अल्लाह ने एक बार उन्हें नग्न अवस्था में लोगों को दिखा दिया और संदेह दूर हो गया। (सहीह बुखारी: 3404, मुस्लिम: 155)

70. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सहीह और सीधी बात बोलो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝

71. वह सुधार देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्मों को, तथा क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और जो अनुपालन करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल का तो उस ने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

يُضِلُّكُمْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

72. हम ने प्रस्तुत किया अमानत^[1] को आकाशों तथा धरती एवं पर्वतों पर तो उन सब ने इन्कार कर दिया उन का भार उठाने से। तथा डर गये उस से। किन्तु उस का भार ले लिया मनुष्य ने। वास्तव में वह बड़ा अत्याचारी^[2] अज्ञान है।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝

73. (यह अमानत का भार इस लिये लिया है) ताकि अल्लाह दण्ड दे मुनाफिक पुरुष तथा मुनाफिक स्त्रियों को, और मुशरिक पुरुष तथा स्त्रियों को। तथा क्षमा कर दे अल्लाह ईमान वालों तथा ईमान वालियों को और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

1 अमानत से अभिप्राय: धार्मिक नियम हैं जिन के पालन का दायित्व तथा भार अल्लाह ने मनुष्य पर रखा है। और उस में उन का पालन करने की योग्यता रखी है जो योग्यता आकाशों तथा धरती और पर्वतों को नहीं दी है।

2 अर्थात् इस अमानत का भार ले कर भी अपने दायित्व को पूरा न कर के स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करता है।

सूरह सबा - 34

سُورَةُ سَبْأٍ

सूरह सबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस में सबा जाति के चर्चा के कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में संदेहों को दूर करते हुये अल्लाह का परिचय ऐसे कराया गया है जिस से तौहीद तथा आखिरत के प्रति विश्वास हो जाता है।
- इस में दावूद तथा सुलैमान (अलैहिमस्सलाम) पर अल्लाह के पुरस्कारों और उन पर उन के आभारी होने का वर्णन तथा सबा जाति की कृतघ्नता और उस के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- शिर्क का खण्डन तथा विरोधियों का जवाब देते हुये परलोक के कुछ तथ्य प्रस्तुत किये गये हैं।
- सूरह के अन्त में सोच-विचार कर के निर्णय करने का सुझाव दिया गया है और इस बात पर सावधान किया गया है कि समय निकल जाने पर पछतावे के सिवा कुछ हाथ नहीं आयेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जिस के अधिकार में है जो आकाशों तथा धरती में है। और उसी की प्रशंसा है आखिरत (परलोक) में। और वही उपाय जानने वाला सब से सूचित है।
2. वह जानता है जो कुछ घुसता है धरती के भीतर तथा जो¹ निकलता है उस से, तथा जो उतरता है

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْحَكِيمُ

يَعْلَمُ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَرْجِعُ فِيهَا

1 जैसे वर्षा, कोष और निधि आदि।

आकाश^[1] से और चढ़ता है उस में^[2]
तथा वह अति दयावान् क्षमी है।

وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ

3. तथा कहा काफ़िरों ने कि हम पर प्रलय नहीं आयेगी। आप कह दें: क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! वह तुम पर अवश्य आयेगी जो परोक्ष का ज्ञानी है। नहीं छुपा रह सकता उस से कण बराबर (भी) आकाशों तथा धरती में, न उस से छोटी कोई चीज़ और न बड़ी किन्तु वह खुली पुस्तक में (अंकित) है।^[3]

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِنَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ لَا يُعْزِبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ

4. ताकि^[4] वह बदला दे उन को जो ईमान लाये तथा सुकर्म किये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा सम्मानित जीविका है।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ

5. तथा जिन्होंने प्रयत्न किये हमारी आयतों में विवश^[5] करने का तो यही है जिन के लिये यातना है अति घोर दुःखदायी।

وَالَّذِينَ سَعَوْا عَلَيْنَا فُعِلْ بِهِمْ مَا وَعَدْنَا مَلْعُوجِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رَّجْزٍ أَلِيمٌ

6. तथा (साक्षात्) देख^[6] लेंगे जिन को उस का ज्ञान दिया गया है जो अवतरित किया गया है आप की ओर आप के पालनहार की ओर से। वही सत्य है, तथा सुपथ दर्शाता है, अति प्रभुत्वशाली प्रशंसित का सुपथ।

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَنَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ

1 जैसे वर्षा, ओला, फ़रिश्ते और आकाशीय पुस्तकें आदि।

2 जैसे फ़रिश्ते तथा कर्म।

3 अर्थात् लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में।

4 यह प्रलय के होने का कारण है।

5 अर्थात् हमारी आयतों से रोकते हैं और समझते हैं कि हम उन को पकड़ने से विवश होंगे।

6 अर्थात् प्रलय के दिन कि कुर्आन ने जो सूचना दी है वह साक्षात् सत्य है।

7. तथा काफिरों ने कहा: क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति को बतायें जो तुम्हें सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः चूर-चूर हो जाओगे तो अवश्य तुम एक नई उत्पत्ति में होगे?
8. उस ने बना ली है अल्लाह पर एक मिथ्या बात, अथवा वह पागल हो गया है। बल्कि जो विश्वास (इमान) नहीं रखते आखिरत (परलोक) पर, वह यातना¹ तथा दूर के कुपथ में है।
9. क्या उन्होंने ने नहीं देखा उस की ओर जो उन के आगे तथा उन के पीछे आकाश और धरती है। यदि हम चाहें तो धंसा दें उन के सहित धरती को अथवा गिरा दें उन पर कोई खण्ड आकाश से। वास्तव में इस में एक बड़ी निशानी है प्रत्येक भक्त के लिये जो ध्यानमग्न हो।
10. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को अपना कुछ अनुग्रह² हे पर्वतो! सरुचि महिमा गान करो³ उस के साथ, तथा हे पक्षियो! तथा हम ने कोमल कर दिया उस के लिये लोहा को।
11. कि बनाओ भरपूर कवचें तथा अनुमति रखो उस की कड़ियों को, तथा सदाचार करो। जो कुछ तुम कर रहे हो उसे मैं देख रहा हूँ।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَهَلْ تَدْعُونَ عَلَىٰ رِجَالٍ
يُؤْتِكُمْ إِذَا امْرَأَتْكُمْ كُلُّ مُمْرِقٍ إِنَّكُمْ
لَئِن كُنْتُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ مُّبِينٍ ۝

أَفَعَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِمْ جِنَّةٌ يَبْصُرُ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ
الْبُعِيدِ ۝

أَفَعَرَىٰ بِرَّوَالِئ مَا يَبِينُ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنْ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِن نَّشَاءُ خَفِيفٌ بِهِمُ الْأَرْضُ
أَوْ نُسْقِطُ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِمَّا فُضِّلَ بِهِ جِبَالٍ آوِيٍّ
مَّعَهُ وَالظُّلُمَ وَالْكَالَةَ الْحَدِيدَ ۝

أَنِ اعْمَلْ سَابِغَةً وَقَدْ رِئِي السَّرْدَ وَاعْمَلُوا
صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात् इस का दूष्परिणाम नरक की यातना है।

2 अर्थात् उन को नबी बनाया और पुस्तक का ज्ञान प्रदान किया।

3 अल्लाह के इस आदेश अनुसार पर्वत तथा पक्षी उन के लिये अल्लाह की महिमा गान के समय उन की ध्वनी को दुहराते थे।

12. तथा (हम ने बश में कर दिया) सुलैमान^[1] के लिये वायु को। उस का प्रातः चलना एक महीने का तथा संध्या का चलना एक महीने का^[2] होता था। तथा हम ने बहा दिये उस के लिये तांबे के स्रोत। तथा कुछ जिन्न कार्यरत थे उस के समक्ष उस के पालनहार की अनुमति से। तथा उन में से जो फिरेगा हमारे आदेश से तो हम चखायेंगे^[3] उसे भड़कती अग्नि की यातना।

13. वह बनाते थे उस के लिये जो वह चाहता था भवन (मस्जिदें) और चित्र तथा बड़े लगन जलाशयों (तालाबों) के समान तथा भारी देगें जो हिल न सकें। हे दावूद के परिजनो! कर्म करो कृतज्ञ हो कर, और मेरे भक्तों में धौड़े ही कृतज्ञ होते हैं।

14. फिर जब हम ने उस (सुलैमान) पर मौत का निर्णय कर दिया तो जिन्नों को उन के मरण पर एक घुन के सिवा किसी ने सूचित नहीं किया जो उस की छड़ी खा रहा था।^[4] फिर जब वह गिर गया तो जिन्नों पर यह

وَلَسْلِمِينَ الزَّيْحَ عُدُّهَا شَهْرًا وَرَوَّاحَهَا شَهْرًا
وَأَسْلَمْنَا لَهُ عَيْنَ الْفُطُورِ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَعْمَلُ بَيْنَ
يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّكَ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذَرُهُ
مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُونَ مِنْ مَّحَارِبٍ وَكَمَا يُتْلَىٰ وَحَفَافٍ
كَالْجُحَابِ وَقَدْ دُورِثِيَّتًا إِنْ عَمِلُوا إِلَّا دَاوُدَ وَشُعْرًا
وَقُلُوبًا مِّنْ عِبَادِيَ الشَّاكِرِينَ ۝

فَلَمَّا أَفْضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ
إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنشَأَنَهُ فَلَمَّا خَوَّتُ بِهِِنَّ
الْجِبْنَ أَنْ لَّوْكَأَنَّوْا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِئُوا فِي
الْعَذَابِ الْمُحْضِينَ ۝

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) दावूद (अलैहिस्सलाम) के पुत्र तथा नबी थे।

2 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) अपने राज्य के अधिकारियों के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते। और उन के आदेश से वायु उसे इतनी तीव्र गति से उड़ा ले जाती कि आधे दिन में एक महीने की यात्रा पूरी कर लेती। इस प्रकार प्रातः संध्या मिला कर दो महीने की यात्रा पूरी हो जाती। (देखिये: इब्ने कसीर)

3 अर्थात् नरक की यातना।

4 जिस के सहारे वह खड़े थे तथा घुन के खाने पर उन का शव धरती पर गिर पड़ा।

बात खुली कि यदि वे परोक्ष का ज्ञान रखते तो इस अपमान कारी^[1] यातना में नहीं पड़े रहते।

15. सबा^[2] की जाति के लिये उन की बस्तियों में एक निशानी^[3] थी: बाग़ थे दायें और बायें। खाओ अपने पालनहार का दिया हुआ, और उस के कृतज्ञ रहो। स्वच्छ नगर है तथा अति क्षमी पालनहार।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَانِهِمْ آيَةٌ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ
وَشِمَالٍ كُنُوزٌ مِنْ دُونِكُمْ وَأَشْكُرُوا إِلَهُ
بَلَدِهِمْ طَيْبَةً ذَرْبُ الْعُقُورِ ۝

16. परन्तु उन्होंने मुँह फेर लिया तो भेज दी हम ने उन पर बांध तोड़ बाढ़। तथा बदल दिया हम ने उन के दो बागों को दो कड़वे फलों के बागों और झाऊ तथा कुछ बैरी से।

فَاَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعُورِ وَبَدَّلْنَاهُمْ
بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ الْأَكْمَلِ خَضِطٍ وَأَثَلٍ وَتَوَّى
مِنْ يَدِ الْفِيلِ ۝

17. यह कुफल दिया हम ने उन के कृतघ्न होने के कारण। तथा हम कृतघ्नों ही को कुफल दिया करते हैं।

ذَٰلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَهَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَافِرِينَ ۝

18. और हम ने बना दी थी उन के बीच तथा उन की बस्तियों के बीच जिस में हम ने समपन्नता^[4] प्रदान की थी खुली बस्तियाँ तथा नियत कर दिया था उन में चलने का स्थान^[5] (कि) चलो उस में रात्रि तथा दिनों के

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُم وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى
ظَاهِرَةً وَخَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لِيَالٍ
وَأَيَّامًا آمِنِينَ ۝

1 सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के युग में यह भ्रम था कि जिन्हें को परोक्ष का ज्ञान होता है। जिसे अल्लाह ने माननीय सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के निधन द्वारा तोड़ दिया कि अल्लाह के सिवा किसी को परोक्ष का ज्ञान नहीं है। (इब्ने कसीर)

2 यह जाति यमन में निवास करती थी।

3 अर्थात् अल्लाह के सामर्थ्य की।

4 अर्थात् सबा तथा शाम (सीरिया) के बीच है।

5 अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा की सुविधा रखी थी।

समय शान्त^[1] हो कर।

19. तो उन्होंने कहा: हे हमारे पालनहार! दूरी^[2] कर दे हमारी यात्राओं के बीच। तथा उन्होंने अत्याचार किया अपने ऊपर। अंततः हम ने उन्हें कहानियाँ^[3] बना दिया, और तित्तर बित्तर कर दिया। वास्तव में इस में कई निशानियाँ (शिक्षायें) हैं प्रत्येक अति धैर्यवान कृतज्ञ के लिये।

20. तथा सच्च कर दिया इब्लीस ने उन पर अपना अंकलन।^[4] तो उन्होंने अनुसरण किया उस का एक समुदाय को छोड़ कर ईमान वालों के।

21. और नहीं था उस का उन पर कुछ अधिकार (दबाव) किन्तु ताकि हम जान लें कि कौन ईमान रखता है आखिरत (परलोक) पर उन में से जो उस के विषय में किसी संदेह में है। तथा आप का पालनहार प्रत्येक चीज़ का निरीक्षक है।^[5]

22. आप कह दें: उन (पूज्यों) को पुकारो^[6] जिन को तुम समझते हो अल्लाह के सिवा। वह नहीं अधिकार रखते कण

فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَرَّفْنَاهُمْ كُلَّ مَسْرَرٍ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ
إِلَّا قَلِيلًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ
يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنهَا فِي شَكٍّ
وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ دُونِ اللَّهِ
لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي

1 शत्रु तथा भूख-प्यास से निर्भय हो कर।

2 हमारी यात्रा के बीच कोई बस्ती न हो।

3 उन की कथायें रह गई, और उन का अस्तित्व नहीं रह गया।

4 अर्थात् यह अनुमान कि वह आदम के पुत्रों को कुपथ करेगा। (देखिये सूरह आराफ़, आयत: 16, तथा सूरह साद, आयत: 82)

5 ताकि उन का प्रतिकार बदला दे।

6 इस में संकेत उन की ओर है जो फरिश्तों को पूजते तथा उन्हें अपना सिफारशी मानते थे।

बराबर भी आकाशों में न धरती में तथा नहीं है उन का उन दोनों में कोई भाग। और नहीं है उस अल्लाह का उन में से कोई सहायक।

23. तथा नहीं लाभ देगी अभिस्ताबना (सिफारिश) अल्लाह के पास परन्तु जिस के लिये अनुमति देगा।^[1] यहाँ^[2] तक कि जब दूर कर दिया जाता है उद्वेग उन के दिलों से तो वह (फरिश्ते) कहते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा? वे कहते हैं कि सत्य कहा। तथा वह अति उच्च महान् है।

24. आप (मुश्रिकों) से प्रश्न करें कि कौन जीविका प्रदान करता है तुम्हें आकाशों^[3] तथा धरती से? आप कह दें कि अल्लाह। तथा हम अथवा तुम अवश्य सुपथ पर हैं अथवा खुले कुपथ में हैं।

25. आप कह दें: तुम से नहीं प्रश्न किया जायेगा हमारे अपराधों के विषय में, और न हम से प्रश्न किया जायेगा तुम्हारे कर्मों के^[4] संबंध में।

الْأَرْضِ وَمَالُهُمْ فِيهِمَا مِنْ شَيْءٍ وَمَالَهُ مِنْهُمْ مِنْ ظُهُورٍ ۝

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ ۚ وَإِنَّا لَفِي سَمْعٍ مُبِينٍ ۝

قُلْ لَا اسْتَفْلُوتُنَا جِنَّتُمْ أُولَٰئِكَ لَاسْتَفْلُوتُنَا ۝

1 (देखिये सूरह बकरा, आयत: 255, तथा सूरह अम्बिया, आयत: 28)

2 अर्थात् जब अल्लाह आकाशों में कोई निर्णय करता है तो फरिश्ते भय से काँपने और अपने पंखों को फड़फड़ाने लगते हैं। फिर जब उन की उद्विग्नता दूर हो जाती है तो प्रश्न करते हैं कि तुम्हारे पालनहार ने क्या आदेश दिया है? तो वे कहते हैं कि उस ने सत्य कहा है। और वह अति उच्च महान् है। (संक्षिप्त अनुवाद हदीस, सहीह बुखारी नं॰: 4800)

3 आकाशों की वर्षा तथा धरती की उपज से।

4 क्योंकि हम तुम्हारे शिर्क से विरक्त हैं।

26. आप कह दें कि एकत्रित^[1] कर देगा हमें हमारा पालनहार। फिर निर्णय कर देगा हमारे बीच सत्य के साथ। तथा वही अति निर्णय कारी सर्वज्ञ है।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا الْحَقَّ
وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝

27. आप कह दें कि तनिक मुझे उन को दिखा दो जिन को तुम ने मिला दिया है अल्लाह के साथ साझी^[2] बना कर? ऐसा कदापि नहीं। बल्कि वही अल्लाह है अत्यंत प्रभावशाली तथा गुणी।

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا
بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

28. तथा नहीं भेजा है हम ने आप^[3] को

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا آتِيًا لِلنَّاسِ بِشِيرَازٍ وَذِكْرًا وَلَكِنْ

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 अर्थात् पूजा-आराधना में।

3 इस आयत में अल्लाह ने जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विश्वव्यापी रसूल तथा सर्व मनुष्य जाति के पथ प्रदर्शक होने की घोषणा की है। जिसे सूरह आराफ़, आयत नं॰ 158, तथा सूरह फुर्कान आयत नं॰ 1, में भी वर्णित किया गया है। इसी प्रकार आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि मुझे पाँच ऐसी चीज़ दी गई है जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गई। और वे ये हैं:

1- एक महीने की दूरी तक शत्रुओं के दिलों में मेरी धाक द्वारा मेरी सहायता की गई है।

2- पूरी धर्ती मेरे लिये मस्जिद तथा पवित्र बना दी गई है।

3- युद्ध में प्राप्त धन मेरे लिये वैध कर दिया गया है जो पहले किसी नबी के लिये वैध नहीं किया गया।

4- मुझे सिफारिश का अधिकार दिया गया है।

5- मुझ से पहले के नबी मात्र अपने समुदाय के लिये भेजा जाता था परन्तु मुझे सम्पूर्ण मानव जाति के लिये नबी बना कर भेजा गया है। (सहीह बुखारी: 335)

आयत का भावार्थ यह है कि आप के आगमन के पश्चात् आप पर ईमान लाना तथा आप के लाये धर्म विधान कुरआन का अनुपालन करना पूरे मानव विश्व पर अनिवार्य है। और यही सत्धर्म तथा मुक्ति-मार्ग है। जिसे अधिकतर लोग नहीं जानते।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: उस की शपथ जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं! इस उम्मत का कोई यहूदी और ईसाई मुझे सुनेगा और मौत से पहले मेरे धर्म पर ईमान नहीं लायेगा तो वह नरक में जायेगा। (सहीह मुस्लिम: 153)

اَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

परन्तु सब मनुष्यों के लिये शुभसूचना देने तथा सचेत करने वाला बनाकर। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

29. तथा वह कहते^[1] हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सत्यवादी हो?

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣١﴾

30. आप उन से कह दें कि एक दिन वचन का निश्चित^[2] है। वे नहीं पीछे होंगे उस से क्षण भर और न आगे होंगे।

كُلُّ لَكُمْ مِيعَادٌ يَوْمَ لَا تَسْتَأْذِنُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَعْتِدُّ مَوْتًا ﴿٣٢﴾

31. तथा काफिरों ने कहा कि हम कदापि ईमान नहीं लायेंगे इस कुर्आन पर और न उस पर जो इस से पूर्व की पुस्तक है। और यदि आप देखेंगे इन अत्याचारियों को खड़े हुये अपने पालनहार के समक्ष तो वे दोषारोपण कर रहे होंगे एक दूसरे पर। जो निर्बल समझे जा रहे थे वे कहेंगे उन से जो बड़े बन रहे थे: यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान लाने वालों^[3] में होते।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ يُرْجَعُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ إِلَى الْقَوْلِ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣٣﴾

32. वह कहेंगे जो बड़े बने हुये थे उन से जो निर्बल समझे जा रहे थे: क्या हम ने तुम्हें रोका सुपथ से जब वह तुम्हारे पास आया? बल्कि तुम ही अपराधी थे।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لَقَدْ صَدَقَ لَكُمْ عَنْ الْهَادِي بَعْدَ إِذْ جَاءَ كُرْبَلًا كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

33. तथा कहेंगे जो निर्बल होंगे उन से जो बड़े (अहंकारी) होंगे: बल्कि

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا

1 अर्थात् उपहास करते हैं।

2 प्रलय का दिन।

3 तुम्हीं ने हमें सत्य से रोक दिया।

रात-दिन के षड्यंत्र^[1] ने, जब तुम हमें आदेश दे रहे थे कि हम कुफ़ करें अब्राह के साथ तथा बनायें उस के साक्षी, तथा अपने मन में पछतायेंगे जब यातना देखेंगे। और हम तौक डाल देंगे उन के गलों में जो काफ़िर हो गये, वह नहीं बदला दिये जायेंगे परन्तु उसी का जो वह कर रहे थे।

34. और नहीं भेजा हम ने किसी बस्ती में कोई सचेतकर्ता (नबी) परन्तु कहा उस के सम्पन्न लोगों ने: हम जिस चीज़ के साथ तुम भेजे गये हो उसे नहीं मानते हैं।^[2]

35. तथा कहा कि हम अधिक हैं तुम से धन और संतान में। तथा हम यातना ग्रस्त होने वाले नहीं हैं।

36. आप कह दें कि वास्तव में मेरा पालनहार फैला देता है जीविका को जिस के लिये चाहता है। और नाप कर देता है। किन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।

37. और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी नहीं है कि तुम्हें हमारे कुछ

مَكْرًا كَيْدًا وَاللَّهُ يَرَادُ أَنْ يُنْفِثَ أَنْ تَكْفُرَ بِاللَّهِ
وَيَحْتَسِبَ لَهُ أَنْتُمْ إِذَا مَاتُوا الشَّامَةَ لَتَأْتِيَنَّ
الْعَذَابَ وَجَعَلْنَا الْأَعْمَلُ فِي آغْثَى الَّذِينَ
كَفَرُوا هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٤﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا
إِنْ يَأْتِيَنَّكُمْ نَذِيرٌ بِهِ كُفُّوا ۖ ﴿٣٥﴾

وَقَالُوا مَعْنُ الْكُفْرِ أَمْوَالُ الْأَوْلَادِ أَوْ مَا مَعْنُ
بِمُعَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

قُلْ إِنْ رَزَقْنِي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا أَمْوَالُ الْكُفْرِ وَلَا أَوْلَادُ الْكُفْرِ بِالْبَيْتِ تُكْفَرُ بِكُمْ

1 अर्थात् तुम्हारे षड्यंत्र ने हमें रोका था।

2 नबियों के उपदेश का विरोध सब से पहले सम्पन्न वर्ग ने किया है। क्योंकि वे यह समझते हैं कि यदि सत्य सफल हो गया तो समाज पर उन का अधिकार समाप्त हो जायेगा। वे इस आधार पर भी नबियों का विरोध करते रहे कि हम ही अब्राह के प्रिय हैं। यदि वह हम से प्रसन्न न होता तो हमें धन-धान्य क्यों प्रदान करता। अतः हम परलोक की यातना में ग्रस्त नहीं होंगे। कुर्आन ने अनेक आयतों में उन के इस भ्रम का खण्डन किया है।

समीप^[1] कर दे। परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार करे तो यही है जिन के लिये दोहरा प्रतिफल है। और यही ऊँचे भवनों में शान्त रहने वाले हैं।

38. तथा जो प्रयास करते हैं हमारी आयतों में विवश करने के लिये^[2] तो वही यातना में ग्रस्त होंगे।

39. आप कह दें: मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिये चाहता है अपने भक्तों में से। और तंग करता है उस के लिये। और जो भी तुम दान करोगे तो वह उस का पूरा बदला देगा। और वही उत्तम जीविका देने वाला है।

40. तथा जिस दिन एकत्र करेगा उन सब को, फिर कहेगा फ़रिश्तों से: क्या यही तुम्हारी इबादत (बंदना) कर रहे थे।

41. वह कहेंगे: तू पवित्र है! तू ही हमारा संरक्षक है न कि यहाँ बल्कि यह इबादत करते रहे जिन्नों^[3] की। इन में अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले हैं।

42. तो आज तुम^[4] में से कोई एक-दूसरे को लाभ अथवा हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं रखेगा। तथा हम कह देंगे अत्याचारियों से कि तुम अग्नि की

عِنْدَنَا زُلْفَىٰ ۖ أَلَا مَن مِّنْكُمْ وَمَعِلٍّ صَالِحًا
فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعِيفِ بِمَا عَمِلُوا ۖ وَهُمْ
فِي الْعُرْفِ الْمُنَوَّنِ ۝

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ فَهُمْ
فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ۝

قُلْ إِنِّي بَرَأءٌ مِّنْ عِبَادَةِ الْإِنسَانِ
وَالْإِنْسَانُ أَكْفَرُ ۚ وَمَا أَفْقَحْتُ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ يَخْلِفُهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزَاقِينَ ۝

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ
أَهْلُوا لَهُ أَيْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْعِبَادَةُ ۝

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلَكِنَّا مِنْ دُونِهِمْ ۚ قَالُوا
يَعْبُدُونَ إِلَٰهًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۚ لَئِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُمْ
إِلَٰهٌ مِّنْ دُونِ اللَّهِ لَفِي عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُم لِبَعْضٍ نَّفَعًا وَلَا ضَرًّا
وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي
كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

1 अर्थात् हमारा प्रिय बना दे।

2 अर्थात् हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिये।

3 अरब के कुछ मुशरिक लोग, फ़रिश्तों को पूज्य समझते थे। अतः उन से यह प्रश्न किया जायेगा।

4 अर्थात् मिथ्या पूज्य तथा उन के पुजारी।

यातना चखो जिसे तुम झुठला रहे थे।

43. और जब सुनाई जाती है उन के समक्ष हमारी खुली आयतें तो कहते हैं: यह तो एक पुरुष है जो चाहता है कि तुम्हें रोक दे उन पुज्यों से जिन की इबादत करते रहे हैं तुम्हारे पूर्वज। तथा उन्होंने कहा कि यह तो बस एक झूठी बनायी हुयी बात है। तथा कहा काफ़िरों ने इस सत्य को कि यह तो बस एक प्रत्यक्ष (खुला) जादू है।

44. जब कि हम ने नहीं प्रदान की है इन (मक्का वासियों) को कोई पुस्तक जिसे वे पढ़ते हों। तथा न हम ने भेजा है इन की ओर आप से पहले कोई सचेत करने वाला।^[1]

45. तथा झुठलाया था इन से पूर्व के लोगों ने और नहीं पहुँचे यह उस के दसवें भाग को भी जो हम ने प्रदान किया था उन को। तो उन्होंने झुठला दिया मेरे रसूलों को अन्ततः मेरा इन्कार कैसा रहा?^[2]

46. आप कह दें कि मैं बस तुम्हें एक बात की नसीहत कर रहा हूँ कि तुम अब्राह के लिये दो-दो तथा अकेले-अकेले खड़े हो जाओ। फिर

وَإِذَا شَتَّىٰ عَلَيْهِمُ الْيَتْمَانُ يَتْلُبُ ٱلْوَامِلَ هَٰذَا
ٱلرَّجُلُ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانُ يَتَّبِعُ
أَبَاؤُكُمْ وَٱلْوَامِلَ هَٰذَا ٱلْأُفْكُ مُفْتَرًى
وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا ٱلْحَقَّ لَمَّا جَاءَهُمْ
إِنَّ هَٰذَا ٱلْأَسْعَرُ يُبَيِّنُ ۝

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا
إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ۝

وَكَذَّبَ ٱلَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَٱبْتِغَوْا مِمَّا شَاءُوا
مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلًا تَكْفِيرًا ۝

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۖ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ شَرُّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۚ مَالِصًا جِئَكُمْ
مِنْ جَنَّةٍ ۖ إِنَّ هُوَ ٱلَّذِي يُرِيكُمْ بَيْنَ يَدَيِ

1 तो इन्हें कैसे ज्ञान हो गया कि यह कुर्आन खुला जादू है? क्यों कि यह ऐतिहासिक सत्य है कि आप से पहले मक्का में कोई नबी नहीं आया। इसलिये कुर्आन के प्रभाव को स्वीकार करना चाहिये न कि उस पर जादू होने का आरोप लगा दिया जाये।

2 अर्थात् आद और समूद ने। अतः मेरे इन्कार के दुष्परिणाम अर्थात् उन के विनाश से इन्हें शिक्षा लेनी चाहिये। जो धन-बल तथा शक्ति में इन से अधिक थे।

عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝

सोचो। तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं है।^[1] वह तो बस सचेत करने वाले है तुम्हें आगामी कड़ी यातना से।

47. आप कह दें: मैं ने तुम से कोई बदला माँगा है तो वह तुम्हारे^[2] ही लिये है। मेरा बदला तो बस अल्लाह पर है। और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنَّ الْآخِرَىٰ
إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

48. आप कह दें कि मेरा पालनहार वही करता है सत्य की। वह परोक्षों का अति ज्ञानी है।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَغْفِرُ بِالْحَقِّ عَمَلَكُمْ الْغُيُوبَ ۝

49. आप कह दें कि सत्य आ गया। और असत्य न (कुछ का) आरंभ कर सकता है और न (उसे) पुनः ला सकता है।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝

50. आप कह दें कि यदि मैं कुपथ हो गया तो मेरे कुपथ होने का (भार) मुझ पर है। और यदि मैं सुपथ पर हूँ तो उस वही के कारण जिसे मेरी ओर मेरा पालनहार उतार रहा है। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है।

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ فَإِنَّمَا أَصِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي وَإِنْ
اهْتَدَيْتُ فَمَا يُبْدِي إِلَيَّ رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝

51. तथा यदि आप देखेंगे जब वह घबराये हुये^[3] होंगे तो उन के खो जाने का कोई उपाय न होगा। तथा पकड़ लिये जायेंगे समीप स्थान से।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فِرْعَوْنُ أَقْلَقُونَ وَانْحَضُوا مِنْ
مَكَانٍ قَرِيبٍ ۝

52. और कहेंगे: हम उस^[4] पर ईमान

وَقَالُوا الْمَكَايِبُ ۚ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَادُشُ مِنْ

1 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दशा के बारे में।

2 कि तुम संमार्ग अपनाकर आगामी प्रलय की यातना से सुरक्षित हो जाओ।

3 प्रलय की यातना देख कर।

4 अर्थात् अल्लाह तथा उस के रसूल पर।

مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

लाये। तथा कहाँ हाथ आ सकता है
उन के (ईमान) इतने दूर स्थान^[1] से?

53. जब कि उन्होंने कुफ़र कर दिया पहले
उस के साथ। और तीर मारते रहे
बिना देखे दूर^[2] से।

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْدُونَ بِالْغَيْبِ
مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

54. और रोक बना दी जायेगी उन
के तथा उस के बीच जिस की वे
कामना करेंगे जैसे किया गया इन के
जैसों के साथ इस से पहले। वास्तव
में वे संदेह में पड़े थे।

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ
مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُذِيبٍ ۝

1 ईमान लाने का स्थान तो संसार था। परन्तु संसार में उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया।

2 अर्थात् अपने अनुमान से असत्य बातें करते रहे।

सूरह फातिर - 35

سُورَةُ فَاطِرٍ

सूरह फातिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह में फातिर शब्द आया है जिस का अर्थ: उत्पत्तिकार है। इसी कारण इसे यह नाम दिया गया है।
- इस में अल्लाह के उत्पत्ति तथा पालन-पोषण करने के शुभगुणों को उजागर करके लोगों को एकेश्वरवाद तथा परलोक और रिसालत पर ईमान लाने को कहा गया है। इस की आरंभिक आयतों में ही पूरी सूरह का सारांश आ गया है।
- इस में तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा परलोक का सविस्तार वर्णन तथा शिर्क का खण्डन किया गया है। और रिसालत पर ईमान न लाने का दुष्परिणाम बताया गया है।
- इस में बताया गया है कि अल्लाह की निशानियों की पहचान तथा धार्मिक ग्रन्थों द्वारा जो ज्ञान मिलता है वह मार्गदर्शन की राह खोल कर सफल बनाता है। और इस पहचान और ज्ञान से विमुख होने का परिणाम विनाश है।
- अन्त में मुश्रिकों को चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो उत्पन्न करने वाला है आकाशों तथा धरती का, (और) बनाने वाला^[1] है संदेशवाहक फरिश्तों को दो-दो तीन-तीन चार-चार पदों वाला। वह अधिक करता है उत्पत्ति में जो चाहता है, निःसंदेह अल्लाह जो

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ
الْمَلَكَةَ رُسُلًا أُولَىٰ أَجْنَعَةٍ مَّتَنَّىٰ وَتِلْكَ وَرِثَةُ
يَزِيدُنِي الْخَلْقَ مَا يَكُونُ لِلَّهِ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

1. अर्थात् फरिश्तों के द्वारा नबियों तक अपनी प्रकाशना तथा संदेश पहुँचाता है।

चाहे कर सकता है।

2. जो खोल दे अल्लाह लोगों के लिये अपनी दया^[1] तो उसे कोई रोकने वाला नहीं। तथा जिसे रोक दे तो कोई खोलने वाला नहीं उस का उस के पश्चात्। तथा वही प्रभावशाली चतुर है।

3. हे मनुष्यो! याद करो अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को, क्या कोई उत्पत्तिकर्ता है अल्लाह के सिवा जो तुम्हें जीविका प्रदान करता हो आकाश तथा धरती से? नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही। फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो।

4. और यदि वह आप को झुठलाते है, तो झुठलाये जा चुके हैं बहुत से रसूल आप से पहले। और अल्लाह ही की ओर फेरे जायेंगे सब विषय^[2]।

5. हे लोगो! निश्चय अल्लाह का वचन सत्य है। अतः तुम्हें धोखे में न रखे संसारिक जीवन और न धोखे में रखे अल्लाह से अति प्रवंचक (शैतान)।

6. वास्तव में शैतान तुम्हारा शत्रु है। अतः तुम उसे अपना शत्रु ही समझो। वह बुलाता है अपने गिरोह को इसी लिये ताकि वह नारकियों में हो जायें।

7. जो काफिर हो गये उन्हीं के लिये

مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا
وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ طَلَّ مِنْ
خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ قَالِ تَوْفَكُونُ ۝

وَأَنْ يَكْذِبُوا فَعُدَّ كَذِبَاتٍ مِنْ رَبِّكَ تَوَالِي
اللَّهُ سَوْجِدَ الْأُمُورِ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمْ
الْعِوَةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُ
لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا

1 अर्थात् स्वास्थ्य, धन, ज्ञान आदि प्रदान करे।

2 अर्थात् अन्ततः सभी विषयों का निर्णय हमें ही करना है तो यह कहाँ जायेंगे? अतः आप धैर्य से काम लें।

कड़ी यातना है। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तो उन के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

8. तथा क्या शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का कुकर्म, और वह उसे अच्छा समझता हो? तो अल्लाह की कुपथ करता है जिसे चाहे और सुपथ दिखाता है जिसे चाहे। अतः न खोयें आप अपना प्राण इन^[1] पर संताप के कारण। वास्तव में अल्लाह जानता है जो कुछ वे कर रहे हैं।

9. तथा अल्लाह वही है जो वायु को भेजता है। जो बादलों को उठाती है, फिर हम होंक देते हैं उसे निर्जीव नगर की ओर। फिर जीवित कर देते हैं उस के द्वारा धरती को उस के मरण के पश्चात्। इसी प्रकार फिर जीना (भी)^[2] होगा।

10. जो सम्मान चाहता हो तो अल्लाह ही के लिये है सब सम्मान। और उसी की ओर चढ़ते हैं पवित्र वाक्य^[3] तथा सत्कर्म ही उन को ऊपर ले जाता^[4] है, तथा जो दाब घात में

وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ

أَفَمَنْ دُرِينَ لَهُ سَوْءٌ عَلَيْهِمْ أَرَاهُمْ حَسَنًا فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ فَلَا تَذْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٨﴾

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فُسْقَنَهُ إِلَى بَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا كَذَلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَكْرُ أُولَئِكَ هُوَ يَبُورُ ﴿١٠﴾

1 अर्थात् इन के ईमान न लाने पर संताप न करें।

2 अर्थात् जिस प्रकार वर्षा से सूखी धरती हरी हो जाती है इसी प्रकार प्रलय के दिन तुम्हें भी जीवित कर दिया जायेगा।

3 पवित्र वाक्य से अभिप्राय ((ला इलाहा इल्लल्लाह)) है। जो तौहीद का शब्द है। तथा चढ़ने का अर्थ है: अल्लाह के यहाँ स्वीकार होना।

4 आयत का भावार्थ यह है कि सम्मान अल्लाह की वंदना से मिलता है अन्य की पूजा से नहीं। और तौहीद के साथ सत्कर्म का होना भी अनिवार्य है। और जब

लगे रहते हैं बुराईयों की, तो उन्हीं के लिये कड़ी यातना है और उन्हीं के षड्यंत्र नाश हो जायेंगे।

11. अल्लाह ने उत्पन्न किया तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य से, फिर बनाये तुम को जोड़े। और नहीं गर्भ धारण करती कोई नारी और न जन्म देती परन्तु उस के ज्ञान से। और नहीं आयु दिया जाता कोई अधिक और न कम की जाती है उस की आयु परन्तु वह एक लेख में¹ है। वास्तव में यह अल्लाह पर अति सरल है।

12. तथा बराबर नहीं होते दो सागर, यह मधुर प्यास बुझाने वाला है, रुचिकर है जिस का पीना। और वह (दूसरा) खारी कड़वा है, तथा प्रत्येक में से तुम खाते हो ताजा मांस, तथा निकालते हो आभूषण जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो नाव को उस में पानी फाड़ती हुई, ताकि तुम खोज करो अल्लाह के अनुग्रह की। और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

13. वह प्रवेश करता है रात को दिन में, तथा प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा बश में कर रखा है सूर्य तथा चन्द्रा को, प्रत्येक चलते रहेंगे एक निश्चित समय तक। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। उसी का राज्य है। तथा जिन को तुम पुकारते हो

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعْتَمِرٍ وَلَا يُنْفِقُ مِنْ غَيْرِ إِلَّا فِي كَيْبٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾

وَمَا يَنْتَوَى الْبَحْرَيْنِ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمِنْ كُلِّ شَأْنٍ لَّحَاطٌ لَّهُ فَاصْطَبِرْ وَاصْطَبِرْ حَتَّىٰ تَكُونُوا مِنْ غُرَرٍ فَالْكَافُ فِيهِ مَوَاجِرُ لِيَسْتَعْمُوا مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ذَٰلِكُمْ اللَّهُ يُلَكِّمُ لَهُ الْمُلُوكَ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطِيرٍ ﴿١٣﴾

ऐसा होगा तो उसे अल्लाह स्वीकार कर लेगा।

1. अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की पूरी दशा उस के भाग्य लेख में पहले ही से अंकित है।

उस के सिवा वह स्वामी नहीं है एक
तिनके के भी।

14. यदि तुम उन्हें पुकारते हो तो वह
नहीं सुनते तुम्हारी पुकार को। और
यदि सुन भी लें तो नहीं उत्तर दे
सकते तुम्हें। और प्रलय के दिन वह
नकार देंगे तुम्हारे शिर्क (साझी
बनाने) को। और आप को कोई
सूचना नहीं देगा सर्वसूचित जैसी।^[1]

15. हे मनुष्यो! तुम सभी भिक्षु हो अल्लाह
को तथा अल्लाह ही निस्वार्थ प्रशंसित है।

16. यदि वह चाहे तो तुम्हें ध्वस्त कर दे,
और नई^[2] उत्पत्ति ला दे।

17. और यह नहीं है अल्लाह पर कुछ कठिन।

18. तथा नहीं लादेगा कोई लादने वाला
दूसरे का बोझ अपने ऊपर।^[3] और
यदि पुकारेगा कोई बोझल उसे लादने
के लिये तो वह नहीं लादेगा उस में
से कुछ, चाहे वह उस का समीपवर्ती

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دَعَاءَكُمْ وَهُمْ يُحْسِنُونَ
مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُكْفَرُونَ
بِشْرِكِكُمْ وَلَا يَنْبِتُ لَكُمْ مِنْ شَيْءٍ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ
وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ

وَلَا تَحْزَنْ زُرَّةً أَوْ لُزَّةً وَذُرَّ آخَرِي وَإِنْ تَدْعُهُمْ
إِلَى جِهْلِمَا لَا يَسْمَعْنَ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا
قُرْبَىٰ إِنَّهُمْ تَشْتَدُّ بِالنَّارِ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَمِنْ تَرَكِي

1 इस आयत में प्रलय के दिन उन के पूज्य की दशा का वर्णन किया गया है। कि यह प्रलय के दिन उन के शिर्क को अस्वीकार कर देंगे। और अपने पुजारियों से विरक्त होने की घोषणा कर देंगे। जिस से विद्वित हुआ कि अल्लाह का कोई साझी नहीं। और जिन को मुश्रिकों ने साझी बना रखा है वह सब धोखा है।

2 भावार्थ यह है कि मनुष्य को प्रत्येक क्षण अपने अस्तित्व तथा स्थायित्व के लिये अल्लाह की आवश्यकता है। और अल्लाह ने निर्लोभ होने के साथ ही उस के जीवन के संसाधन की व्यवस्था कर दी है। अतः यह न सोचो कि तुम्हारा विनाश हो गया तो उस की महिमा में कोई अन्तर आ जायेगा। वह चाहे तो तुम्हें एक क्षण में ध्वस्त कर के दूसरी उत्पत्ति ले आये क्योंकि वह एक शब्द ((कुन्)) (जिस का अनुबाद है: हो जा) से जो चाहे पैदा कर दे।

3 अर्थात् पापों का बोझ। अर्थ यह है कि प्रलय के दिन कोई किसी की सहायता नहीं करेगा।

ही क्यों न हों। आप तो बस उन्हीं को सचेत कर रहे हैं जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे। तथा जो स्थापना करते हैं नमाज़ की। तथा जो पवित्र हुआ तो वह पवित्र होगा अपने ही लाभ के लिये। और अल्लाह ही की ओर (सब को) जाना है।

19. तथा समान नहीं हो सकता अँधा तथा आँख वाला।

20. और न अंधकार तथा प्रकाश।

21. और न छाया तथा न धूप।

22. तथा समान नहीं हो सकते जीवित तथा निर्जीव।¹ वास्तव में अल्लाह ही सुनाता है जिसे चाहता है। और आप नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हों।

23. आप तो बस सचेत कर्ता हैं।

24. वास्तव में हम ने आप को सत्य के साथ शुभसूचक तथा सचेतकर्ता बना कर भेजा है। और कोई ऐसा समुदाय नहीं जिस में कोई सचेत कर्ता न आया हो।

25. और यदि ये आप को झुठलायें तो इन से पूर्व लोगों ने भी झुठलाया है, जिन के पास हमारे रसूल खुले प्रमाण तथा ग्रंथ और प्रकाशित पुस्तकें लाये।

26. फिर मैं ने पकड़ लिया उन्हें जो काफ़िर हो गये। तो कैसा रहा मेरा इन्कार।

27. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ने

فَاتِمَا يَكْرِي لِنَفْسِهِ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ ۝

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۝

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَشَاءُ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَنْ فِي
الْقُبُورِ ۝

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا
وَأِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝

وَأِنْ يَكْذِبُوا لَوْ فَتَنَّاكَ بِالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ
الْمُنِيرِ ۝

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً

1 अर्थात् जो कुफ़ के कारण अपनी ज्ञान शक्ति खो चुके हों।

उतारा आकाश से जल, फिर हम ने निकाल दिये उस के द्वारा बहुत से फल विभिन्न रंगों के। तथा पर्वतों के विभिन्न भाग है श्वेत तथा लाल विभिन्न रंगों के तथा गहरे काले।

28. तथा मनुष्य एवं जीवों तथा पशुओं में भी विभिन्न रंगों के है इसी प्रकार। वास्तव में डरते है अल्लाह से उस के भक्तों में से वही जो ज्ञानी⁽¹⁾ हों। निस्संदेह अल्लाह अति प्रभुत्वशाली क्षमी है।

29. वास्तव में जो पढ़ते है अल्लाह की पुस्तक (कुर्आन), तथा उन्होंने स्थापना की नमाज़ की, एवं दान किया उस में से जो हम ने उन्हें प्रदान किया है खुले तथा छुपे तो वही आशा रखते है ऐसे व्यापार की जो कदापि हानिकर नहीं होगा।

30. ताकि अल्लाह प्रदान करे उन्हें भरपूर उन का प्रतिफल। तथा उन्हें अधिक दे अपने अनुग्रह से। वास्तव में वह अति क्षमी आदर करने वाला है।

31. तथा जो हम ने प्रकाशना की है आप की ओर यह पुस्तक। वही सर्वथा सच्च है, और सच्च बताती है अपने पूर्व की पुस्तकों को। वास्तव में अल्लाह अपने भक्तों से सूचित

فَأَخْرَجْنَا مِنْ ثَوَابِ غَمَلٍ الْوَأَنَّهُ وَرَيْنَ
الْجِبَالِ جُدْرِيَّضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ
الْوَأَنَّهُ وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۝

وَمِنَ النَّاسِ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ
الْوَأَنُهُ كَذَلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ
الْعُلَمَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوْا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ۝

لِيُؤْتِيَهُمْ أَجْرَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَصَدِّقُ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

1 अर्थात अल्लाह के इन सामर्थ्यों तथा रचनात्मक गुणों को जान सकते है जिन को कुर्आन तथा हदीसों का ज्ञान हो। और उन्हें जितना ही अल्लाह का आत्मिक ज्ञान होता है उतना ही वह अल्लाह से डरते है। मानो जो अल्लाह से नहीं डरते वह ज्ञानशून्य होते है। (इब्ने कसीर)

भली-भाँति देखने वाला है।^[1]

32. फिर हम ने उत्तरधिकारी बनाया इस पुस्तक का उन को जिन्हें हम ने चुन लिया अपने भक्तों में^[2] से। तो उन में कुछ अत्याचारी है अपने ही लिये तथा उन में से कुछ मध्यवर्ती है और कुछ अग्रसर है भलाईयों में अल्लाह की अनुमति से, तथा यही महान् अनुग्रह है।
33. सदावास के स्वर्ग हैं, वे प्रवेश करेंगे उन में और पहनाये जायेंगे उन में सोने के कंगन तथा मोती। और उन के वस्त्र उस में रेशम के होंगे।
34. तथा वे कहेंगे: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने दूर कर दिया हम से शोक। वास्तव में हमारा पालनहार अति क्षमी गुणग्राही है।
35. जिस ने हमें उतार दिया स्थायी घर में अपने अनुग्रह से। नहीं छूयेगी उस में हमें कोई आपदा और न छूयेगी उस में कोई थकान।
36. तथा जो काफिर है उन्हीं के लिये नरक की अग्नि है। न तो उन की मौत ही आयेगी कि वह मर जायें, और न हलकी की जायेगी उन से उस की कुछ यातना। इसी प्रकार हम बदला देते हैं प्रत्येक नाशुके को।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ
سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ يُؤْتِنُ اللَّهُ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ
أَسَاوِرٍ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلَهُمْ فِيهَا خَيْرٌ ﴿٣٣﴾

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

إِلَّذِي أَحْكَمَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ
لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نُصَبٌ وَلَا نَمَسٌ وَلَا فِيهَا تَأْوِيلٌ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ
فِيمَوْتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا
كَذَٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَافِرٍ ﴿٣٦﴾

- 1 कि कौन उस के अनुग्रह के योग्य है। इसी कारण उस ने नबियों को सब पर प्रधानता दी है। तथा नबियों को भी एक-दूसरे पर प्रधानता दी है। (देखिये: इब्ने कसीर)
- 2 इस आयत में कुर्आन के अनुयायियों की तीन श्रेणियाँ बताई गई हैं। और तीनों ही स्वर्ग में प्रवेश करेंगी: अग्रगामी बिना हिसाब के। मध्यवर्ती सरल हिसाब के पश्चात्। तथा अत्याचारी दण्ड भुगतने के पश्चात् शिफाअत द्वारा। (फतहल कदीर)

37. और वह उस में चिल्लायेगे: हे हमारे पालनहार! हमें निकाल दे, हम सदाचार करेंगे उस के अतिरिक्त जो कर रहे थे। क्या हम ने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी जिस में शिक्षा ग्रहण कर ले जो शिक्षा ग्रहण करो। तथा आया तुम्हारे पास सचेतकर्ता (नबी)? अतः तुम चखो। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं है।

38. वास्तव में अल्लाह ही ज्ञानी है आकाशों तथा धरती के भेद का। वास्तव में वही भली-भाँति जानने वाला है सीनों की बातों का।

39. वही है जिस ने तुम्हें एक दूसरे के पश्चात् बसाया है धरती में तो जो कुफ़्र करेगा तो उस के लिये है उस का कुफ़्र, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ़्र उन के पालनहार के यहाँ परन्तु क्रोध ही, और नहीं बढ़ायेगा काफ़िरों के लिये उन का कुफ़्र परन्तु क्षति ही।

40. (हे नबी^[1]!) उन से कहो: क्या तुम ने देखा है अपने साक्षियों को जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के अतिरिक्त? मुझे भी दिखाओ कि उन्होंने कितना भाग बनाया है धरती में से? या उन का आकाशों में कुछ साझा है? या हम ने प्रदान की है उन्हें कोई पुस्तक, तो यह उस के खुले प्रमाणों पर हैं? बल्कि (बात यह है कि) अत्याचारी एक-दूसरे को केवल धोखे

وَهُمْ يَصْطَرِحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلْ أَوْ لَمْ تُنَبِّرْهُمْ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن تَذَكَّرَ وَجَاءَكُمْ النَّذِيرُ فَذُوقُوا الْعَذَابَ مِنَ النَّارِ ۖ

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمُ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ أَمْ آتَيْنَهُم كِتَابًا فَهُمْ عَلَى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ بَلْ إِنَّ يَعْذِبُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُودًا ۝

1. यहाँ से अन्तिम सूरह तक शिर्क (मिश्रणवाद) का खण्डन किया जा रहा है।

का बचन दे रहे हैं।

41. अल्लाह ही रोकता^[1] है आकाशों तथा धरती को खिसक जाने से। और यदि खिसक जायें वे दोनों तो नहीं रोक सकेगा उन को कोई उस (अल्लाह) के पश्चात्। वास्तव में वह अत्यंत सहनशील क्षमाशील है।

42. और उन काफिरों ने शपथ ली थी अल्लाह की पक्की शपथ! कि यदि आ गया उन के पास कोई सचेतकर्ता (नबी) तो वह अवश्य हो जायेंगे सर्वाधिक संमार्ग पर समुदायों में से किसी एक से। फिर जब आ गये उन के पास एक रसूल^[2] तो उन की दूरी ही अधिक हुई।

43. अभिमान के कारण धरती में तथा बुरे षड्यंत्र के कारण। और नहीं घेरता है बुरा षड्यंत्र परन्तु अपने करने वाले ही को। तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं पूर्व के लोगों की नीति की?^[3] तो नहीं पायेंगे आप अल्लाह के नियम में कोई अन्तर।^[4]

44. और क्या वह नहीं चले-फिरे धरती में, तो देख लेते कि कैसा रहा उन का दुष्परिणाम जो इन से पूर्व रहे जब कि वह इन से कड़े थे बल में?

إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ أَضَلِّ الْأُمَمِ قَلَمًا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ فَأَمَّا زَادَهُمْ الظُّلُمَاتِ

إِسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ وَلَا يَجْنُونَ السَّكَرَ السَّيِّئِ إِلَّا يَأْخُذُهُمْ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُغْنِيَ عَنْهُمْ

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात में नमाज़ के लिये जागते तो आकाश की ओर देखते और यह पूरी आयत पढ़ते थे। (सहीह बुखारी: 7452)

2 मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

3 अर्थात् यातना की।

4 अर्थात् प्रत्येक युग और स्थान के लिये अल्लाह का नियम एक ही रहा है।

तथा अल्लाह ऐसा नहीं, वास्तव में वह सर्वज्ञ अति सामर्थ्यवान है।

45. और यदि पकड़ने लगता अल्लाह लोगों को उन के कर्मों के कारण, तो नहीं छोड़ता धरती के ऊपर कोई जीवा किन्तु अवसर दे रहा है उन्हें एक निश्चित अवधि तक, फिर जब आजायेगा उन का निश्चित समय तो निश्चय अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा^[1] है।

شَيْءٌ فِي السَّمُوتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهِمْ شَيْءًا وَاحِدًا وَلَا يَجِئُ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ۝

1 अर्थात् उस दिन उन के कर्मों का बदला चुका देगा।

सूरह यासीन - 36

سُورَةُ الْيَاسِينِ

सूरह यासीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 83 आयतें हैं।

- सूरह के प्रथम दो शब्दों से इस को यह नाम दिया गया है।
- इस में रसूल के सत्य होने पर कुर्आन की गवाही से यह बताया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अचेत लोगों को जगाने के लिये भेजा गया है। और इस में उस का एक उदाहरण दिया गया है।
- तौहीद की निशानियाँ बता कर विरोधियों का खण्डन किया गया है। और इस प्रकार सावधान किया गया है जिस से लगता है कि प्रलय आ गई है।
- रिसालत, तौहीद तथा दूसरे जीवन के संबंध में विरोधियों की अपत्तियों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. या सीन।
2. शपथ है सुदृढ़ कुर्आन की।
3. वस्तुतः आप रसूलों में से हैं।
4. सुपथ पर हैं।
5. (यह कुर्आन) प्रभुत्वशाली अति दयावान् का अवतरित किया हुआ है।
6. ताकि आप सावधान करें उस जाति^[1] को, नहीं सावधान किये गये हैं जिन के पूर्वज। इसलिये वह अचेत हैं।

يَسِينَ

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ

لِيُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَتْهُمُ غَيْفَةٌ مِّمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ

1 मक्का वासियों को जिन के पास इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के पश्चात् कोई नबी नहीं आया।

7. सिद्ध हो चुका है वचन^[1] उन में से अधिकतर लोगों पर। अतः वह ईमान नहीं लायेंगे।

8. तथा हम ने डाल दिये हैं तौक उन के गलों में, जो हड्डियों तक^[2] हैं। इसलिये वह सिर ऊपर किये हुये हैं।

9. तथा हम ने बना दी है उन के आगे एक आड़ और उन के पीछे एक आड़। फिर ढाँक दिया है उन को, तो^[3] वह देख नहीं रहे हैं।

10. तथा समान है उन पर कि आप उन्हें सावधान करें अथवा सावधान न करें वह ईमान नहीं लायेंगे।

11. आप तो बस उसे सचेत कर सकेंगे जो माने इस शिक्षा (कुर्आन) को, तथा डरे अत्यंत कृपाशील से बिन देखे। तो आप शुभसूचना सुना दें उसे क्षमा की तथा सम्मानित प्रतिफल की।

12. निश्चय हम ही जीवित करेंगे मुर्दा को, तथा लिख रहे हैं जो कर्म उन्होंने किया है और उन के पद चिन्हों^[4] को, तथा प्रत्येक वस्तु को हम ने गिन रखा है खुली पुस्तक में।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمِقُونَ ۝

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنََ الْغَيْبَ قِمِيزَةً بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝

1 अर्थात् अल्लाह का यह वचन कि: ((मैं जिन्हों तथा मनुष्यों से नरक को भर दूंगा।)) (देखिये: सूरह: सज्दा, आयत: 13)

2 इस से अभिप्राय उन का कुफ़र पर दुराग्रह तथा ईमान न लाना है।

3 अर्थात् सत्य की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं, और न उस से लाभान्वित हो रहे हैं।

4 अर्थात् पुण्य अथवा पाप करने के लिये आते-जाते जो उन के पदचिन्ह धरती पर बने हैं उन्हें भी लिख रखा है। इसी में उन के अच्छे-बुरे वह कर्म भी आते हैं जो उन्होंने किये हैं। और जिन का अनुसरण उन के पश्चात् किया जा रहा है।

13. तथा आप उन को^[1] एक उदाहरण दीजिये नगरवासियों का। जब आये उस में कई रसूल।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَاتِ إِذْ جَاءَهُمَا الْمُرْسَلُونَ ۝

14. जब हम ने भेजा उन की ओर दो को। तो उन्होंने ने झूठला दिया उन दोनों को। फिर हम ने समर्थन दिया तीसरे के द्वारा। तो तीनों ने कहा: हम तुम्हारी ओर भेजे गये हैं।

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَهُكُم مُّرْسَلُونَ ۝

15. उन्होंने कहा: तुम सब तो मनुष्य ही हो हमारे^[2] समान। और नहीं अवतरित किया है अत्यंत कृपाशील ने कुछ भी। तुम सब तो बस झूठ बोल रहे हो।

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ۝

16. उन रसूलों ने कहा: हमारा पालनहार जानता है कि वास्तव में हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गये हैं।

قَالُوا رَبَّنَا عَلِّمْنَا لَنَا الْكِتَابَ لِمُرْسَلُونَ ۝

17. तथा हमारा दायित्व नहीं है खुला उपदेश पहुँचा देने के सिवा।

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝

18. उन्होंने कहा: हम तुम्हें अशुभ समझ रहे हैं। यदि तुम रुके नहीं तो हम तुम्हें अवश्य पथराव कर के मार डालेंगे। और तुम्हें अवश्य हमारी ओर से पहुँचेगी दुःखदायी यातना।

قَالُوا إِنَّا نَطَّعُرُكُمْ وَإِنَّا كَافِرٌ بِكُمْ كَيْفَ نَعْبُدُكُمْ وَلَيْسَ لَكُم مِّنَّا عِدَابٌ أَلَيْسَ ۝

19. उन्होंने कहा: तुम्हारा अशुभ तुम्हारे

قَالُوا طَائِفُكُمْ مَّعَكُمْ أَهَلْ ذِكْرُكُمْ ۝

1 अर्थात् अपने आमंत्रण के विरोधियों को।

2 प्राचीन युग से मुशरिकों तथा कुपथों ने अल्लाह के रसूलों को इसी कारण नहीं माना कि एक मनुष्य पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? यह तो खाता-पीता तथा बाजारों में चलता-फिरता है। (देखिये: सूरह फुर्कान, आयत: 7-20, सूरह अम्बिया, आयत: 3, 7, 8, सूरह मूमिनून, आयत: 24-33-34, सूरह इब्राहीम, आयत: 10-11, सूरह इस्रा, आयत: 94-95, और सूरह तगाबुन, आयत: 6)

साथ है। क्या यदि तुम्हें शिक्षा दी जाये (तो अशुभ समझते हो)? बल्कि तुम उल्लंघन करी जाति हो।

بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝

20. तथा आया नगर के अन्तिम किनारे से एक पुरुष दौड़ता हुआ। उस ने कहा: हे मेरी जाति के लोगो! अनुसरण करो रसूलों का।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝

21. अनुसरण करो उन का जो तुम से नहीं माँगते कोई पारिश्रमिक (बदला) तथा वह सुपथ पर है।

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝

22. तथा मुझे क्या हुआ है कि मैं उस की इबादत (बंदना) न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया है? और तुम सब उसी की ओर फेरे जाओगे।^[1]

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَالَّذِي تُرْجَعُونَ ۝

23. क्या मैं बना लूँ उस को छोड़ कर बहुत से पूज्य? यदि अत्यंत कृपाशील मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो नहीं लाभ पहुँचायेगी मुझे उन की अनुशंसा (सिफारिश) कुछ, और न वह मुझे बचा सकेंगे।

أَتَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِذَا نُزِّلَ الرُّزْءُ بَعْضًا لِّأُتَىٰ بَعْضًا سَعَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝

24. वास्तव में तब तो मैं खुले कुपथ में हूँ

إِنِّي إِذْ أُلْقِيَ ضَلِيلٌ مُّبِينٌ ۝

25. निश्चय मैं ईमान लाया तुम्हारे पालनहार पर, अतः मेरी सुनो।

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِي ۝

26. (उस से) कहा गया: तुम प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में। उस ने कहा: काश मेरी जाति जानती।

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ لَئِيتُ قَوْمِي بِعِلْمُونَ ۝

1 अर्थात् मैं तो उसी की बंदना करता हूँ। और करता रहूँगा। और उसी की बंदना करनी भी चाहिये। क्योंकि वही बंदना किये जाने के योग्य है। उस के अतिरिक्त कोई बंदना के योग्य हो ही नहीं सकता।

27. जिस कारण क्षमा^[1] कर दिया मुझे
को मेरे पालनहार ने और मुझे
सम्मिलित कर दिया सम्मानितों में।

يَسْأَلُنِي رَبِّي وَيَصَلِّي لِي مِنَ الْمَكْرُمِينَ ۝

28. तथा हम ने नहीं उतारी उस की
जाति पर उस के पश्चात् कोई सेना^[2]
आकाश से। और न हमें उतारने की
आवश्यकता थी।

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا نُنْزِلُ فِيهِ

29. वह तो बस एक कड़ी ध्वनि थी। फिर
सहसा सब के सब बुझ गये।^[3]

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خُمُودٌ ۝

30. हाये संताप है^[4] भक्तों पर! नहीं
आया उन के पास रसूल परन्तु वे
उस का उपहास करते रहे।

يَحْسِرُ عَلَى الْوَيْلِ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ
إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से
पहले विनाश कर दिया बहुत से
समुदायों का। वे उन की ओर दौबारा
फिर कर नहीं आयेंगे।

الْمُرُوءَ كَمَا هُكِّنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ
إِلَٰهٌ لَّهُمْ أَتَرْتَدُّونَ ۝

32. तथा सब के सब हमारे समक्ष
उपस्थित किये^[5] जायेंगे।

وَأَن كُلُّ لَمَنَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

33. तथा उन^[6] के लिये एक निशानी
है निर्जीव (सूखी) धरती। जिसे हम

وَإِنَّ لَهُمُ الْأَرْضَ الْمَيْتَةَ ۖ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا

1 अर्थात् एकेश्वरवाद तथा अब्बाह की आज्ञा के पालन पर धैर्य के कारण।

2 अर्थात् यातना देने के लिये सेनायें नहीं उतारते ।

3 अर्थात् एक चीख ने उन को बुझी हुई राख के समान कर दिया। इस से ज्ञात होता है कि मनुष्य कितना निर्बल है।

4 अर्थात् प्रलय के दिन रसूलों का उपहास भक्तों के लिये संताप का कारण होगा।

5 प्रलय के दिन हिसाब तथा प्रतिकार के लिये।

6 यहाँ से एकेश्वरवाद तथा आखिरत (परलोक) के विषय का वर्णन किया जा रहा है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा मक्का के काफ़िरो के बीच विवाद का कारण था।

ने जीवित कर दिया, और हम ने निकाले उस से अन्न, तो तुम उसी में से खाते हो।

34. तथा पैदा कर दिये उस में बाग़ खजूरों तथा अँगूरों के, और फाड़ दिये उस में जल स्रोत।

35. ताकि वह खाये उस के फल। और नहीं बनाया है उसे उन के हाथों ने। तो क्या वह कृतज्ञ नहीं होते?

36. पवित्र हे वह जिस ने पैदा किये प्रत्येक जोड़े उस के जिसे उगाती है धरती, तथा स्वयं उन कि अपनी जाति को और उस के जिसे तुम नहीं जानते हो।

37. तथा एक निशानी (चिन्ह) है उन के लिये रात्रि। खींच लेते हैं हम जिस से दिन को तो सहसा वह अँधेरो में हो जाते हैं।

38. तथा सूर्य चला जा रहा है अपने निर्धारित स्थान कि ओर। यह प्रभुत्वशाली सर्वज्ञ का निर्धारित किया हुआ है।

39. तथा चन्द्रमा के हम ने निर्धारित कर दिये हैं गंतव्य स्थान। यहाँ तक की फिर वह हो जाता है पुरानी खजूर की सूखी शाखा के समान।

40. न तो सूर्य के लिये ही उचित है कि चन्द्रमा को पा जाये। और न रात अग्रगामी हो सकती है दिन से। सब एक मण्डल में तैर रहे हैं।

مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٦﴾

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِنْ نَحِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرًا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ﴿٣٧﴾

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

بُخْسَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُثْمِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

وَايَةَ لَهِرٍ لَيْلٍ سَنَسُجُدُ مِنْهُ الْهَارِ قَدْ أَهْمُ مُظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿٤١﴾

وَالْقَمَرَ قَدَّارُهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ سَادَ كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ﴿٤٢﴾

إِنَّ الشَّمْسُ يَنْتَعِي لَهَا أَنْ تَذُرِكَ الْقَمَرُ وَلَا الْيَلُ سَابِقُ الْقَهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٣﴾

41. तथा उन के लिये एक निशानी (लक्षण) (यह भी) है कि हम ने सवार किया उन की संतान को भरी हुई नाव में।

42. तथा हम ने पैदा किया उन के लिये उस के समान वह चिज़ जिस पर वह सवार होते हैं।

43. और यदि हम चाहें तो उन्हें जलमग्न कर दें। तो न कोई सहायक होगा उन का, और न वह निकाले (बचाये) जायेंगे।

44. परन्तु हमारी दया से तथा लाभ देने के लिये एक समय तक।

45. और^[1] जब उन से कहा जाता है कि डरो उस (यातना) से जो तुम्हारे आगे तथा तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये।

46. तथा नहीं आती उन के पास कोई निशानी उन के पालनहार की निशानियों में से परन्तु वह उस से मँह फेर लेते हैं।

47. तथा जब उन से कहा जाता है कि दान करो उस में से जो प्रदान किया है अब्बाह ने तुम को, तो कहते हैं जो काफ़िर हो गये उन से जो ईमान लाये हैं: क्या हम उसे

وَاِيَّةٌ لَهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِ الْمَخْجُونِ ۝

وَعَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝

وَإِنْ نَشَاءُ غَرِقُوا فَلَا صِرَاطَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ۝

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اقْرَأُوا مِمَّا زَكَّرْتُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا الَّذِينَ اسْمُوا أَطْغَمُوا مِنْ تَوْبَةِ اللَّهِ أَلْطَغَا إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا أَنْتُمْ يَوْمَئِذٍ ۝

1 आयत नं० 33 से यहाँ तक एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाणों, जिन्हें सभी लोग देखते तथा सुनते हैं, और जो सभी इस विश्व की व्यवस्था तथा जीवन के संसाधनों से संबंधित हैं, उन का वर्णन करने के पश्चात् अब मिश्रणवादियों तथा काफ़िरी कि दशा और उन के अचरण का वर्णन किया जा रहा है।

खाना खिलायें जिसे यदि अल्लाह चाहे
तो खिला सकता है? तुम तो खुले
कुपथ में हो।

48. और वे कहते हैं कि कब यह
(प्रलय) का वचन पूरा होगा यदि तुम
सत्यवादी हो?

49. वह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं परन्तु
एक कड़ी ध्वनि^[1] की जो उन्हें
पकड़ लेगी और वह झगड़ रहे
होंगे।

50. तो न वह कोई बसिय्यत कर सकेंगे,
और न अपने परिजनों में वापिस आ
सकेंगे।

51. तथा फूँका^[2] जायेगा सूर (नरसिंघा)
में, तो वह सहसा समाधियों से
अपने पालनहार की ओर भागते हुये
चलने लगेंगे।

52. वह कहेंगे: हाय हमारा विनाश! किस
ने हमें जगा दिया हमारी विश्रामगृह
से? यह वह है जिस का वचन दिया
था अत्यंत कृपाशील ने, तथा सच्च
कहा था रसूलों ने।

53. नहीं होगी वह परन्तु एक कड़ी ध्वनि।
फिर सहसा वह सब के सब हमारे
समक्ष उपस्थित कर दिये जायेंगे।

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٨﴾

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ
يَخِصِّمُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٠﴾

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ
يَسْلُكُونَ ﴿٥١﴾

قَالُوا الْيَوْمَ لَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِنْ مَرْقَدِنَا ۚ هَذَا
مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٢﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّعَيْنًا
مُخْرَجُونَ ﴿٥٣﴾

1 इस से अभिप्राय प्रथम सूर है जिस में फूँकते ही अल्लाह के सिवा सब बिलय हो जायेंगे।

2 इस से अभिप्राय दूसरी बार सूर फूँकना है जिस से सभी जीवित हो कर अपनी समाधियों से निकल पड़ेंगे।

54. तो आज नहीं अत्याचार किया जायेगा किसी प्राणी पर कुछ। और तुम्हें उसी का प्रतिफल (बदला) दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे।

فَالْيَوْمَ لَا ظُلْمَ لِمَنْ شَاءَ وَلَا يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٤﴾

55. वास्तव में स्वर्गीय आज अपने आनन्द में लगे हुये हैं।

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فَكَّهُونَ ﴿٥٥﴾

56. वे तथा उन की पत्नियाँ सायों में हैं, मसूनों पर तकिये लगाये हुये।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَائِكِ مُتَكئونَ ﴿٥٦﴾

57. उन के लिये उस में प्रत्येक प्रकार के फल है तथा उन के लिये वह है जिस की वह माँग करें।

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدْعُونَ ﴿٥٧﴾

58. (उन को) सलाम कहा गया है अति दयावान् पालनहार की ओर से।

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾

59. तथा तुम अलग^[1] हो जाओ आज, हे अपराधियों!

وَأَمَّا زُوا الْيَوْمَ إِنَّا الْعَاثِرُونَ ﴿٥٩﴾

60. हे आदम की संतान! क्या मैं ने तुम से बल दे कर नहीं^[2] कहा था कि इबादत (बंदना) न करना शैतान की? वास्तव में वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰٓأَدَمُ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾

61. तथा इबादत (बंदना) करना मेरी ही, यही सीधी डगर है।

وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ فَمَا أَخْرَاطُمْ عَنْكَ ﴿٦١﴾

62. तथा वह कुपथ कर चुका है तुम में से बहुत से समुदायों को, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾

63. यही नरक है जिस का वचन तुम्हें

هٰذَا ۖ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾

1 अर्थात् ईमान वालों से।

2 भाष्य के लिये देखिये: सूरह, आराफ़, आयत: 172।

दिया जा रहा था।

64. आज प्रवेश कर जाओ उस में उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

65. आज हम मुहर (मुद्रा) लगा देंगे उन के मुखों पर। और हम से बात करेंगे उन के हाथ, तथा साक्ष्य (गवाही) देंगे उन के पैर उन के कर्मों की जो वे कर रहे थे।^[1]

66. और यदि हम चाहते तो उन की आँखें अँधी कर देते। फिर वे दोड़ते संमार्ग की ओर, परन्तु कहाँ से देखते?

67. और यदि हम चाहते तो विकृत कर देते उन को उन के स्थान पर, तो न वह आगे जा सकते थे न पीछे फिर सकते थे।

68. तथा जिसे हम अधिक आयु देते हैं, तो उसे उत्पत्ति में प्रथम दशा^[2] की ओर फेर देते हैं। तो क्या वह समझते नहीं हैं?

69. और हम ने नहीं सिखाया नबी को काव्य^[3] और न यह उन के लिये योग्य है। यह तो मात्र एक शिक्षा तथा खुला कुर्आन है।

70. ताकि वह सचेत करें उसे जो जीवित

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَنَنصِتُهُمْ ۖ أَمَّا بِأَرْجُلِهِمْ فَأَنذَرُونَا أَتَاكِتَبُونَ ۝

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَمَسْنَاهُم بِأَيْمِينِنَا فَهَلْ أَنتَبِهُوا بِالْضُرَاطِ ۚ إِنَّا نَبْصِرُونَ ۝

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَمَسْنَاهُم عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ۝

وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۝

لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

1 यह उस समय होगा जब मिश्रणवादी शपथ लेंगे कि वह मिश्रण (शिरक) नहीं करते थे। देखिये: सूरह अन्राम, आयत: 23।

2 अर्थात् वह शिशु की तरह निर्बल तथा निर्बोध हो जाता है।

3 मक्का के मुर्तिपूजक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के संबंध में कई प्रकार की बातें कहते थे जिन में यह बात भी थी कि आप कवि हैं। अल्लाह ने इस आयत में इसी का खण्डन किया है।

हो^[1] तथा सिद्ध हो जाये यातना की बात काफिरों पर।

71. क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हम ने पैदा किये है उन के लिये उस में से जिसे बनाया है हमारे हाथों ने चौपाये। तो वह उन के स्वामी है?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا إِنسًا مَّا فَعَّمُوا
لَهُم مِّلْكُونَ ﴿٧١﴾

72. तथा हम ने बश में कर दिया उन्हें उन के, तो उन में से कुछ उन की सवारी है। तथा उन में से कुछ को वे खाते हैं।

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾

73. तथा उन के लिये उन में बहुत से लाभ तथा पेय है। तो क्या (फिर भी) वह कृतज्ञ नहीं होते?

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

74. और उन्होंने बना लिया अल्लाह के सिवा बहुत से पूज्य, कि संभवतः वे उन की सहायता करेंगे।

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُم يُنصَرُونَ ﴿٧٤﴾

75. वह स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकेंगे। तथा वे उन की सेना है, (यातना) में^[2] उपस्थित।

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَلَهُمْ جُنُودٌ غَضَرُونَ ﴿٧٥﴾

76. अतः आप को उदासीन न करे उन की बात। वस्तुतः हम जानते है जो वह मन में रखते है तथा जो बोलते है।

فَلَا يَخْرُجُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُبْرُونَ وَمَا يَلْعَلُونَ ﴿٧٦﴾

77. और क्या नहीं देखा मनुष्य ने कि पैदा किया हम ने उसे वीर्य से? फिर भी वह खुला झगड़ालू है।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٧٧﴾

78. और उस ने वर्णन किया हमारे लिये एक उदाहरण, और अपनी उत्पत्ति

وَصَرَبَ لَنَا مِثْلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ

1 जीवित होने का अर्थ अन्तरात्मा का जीवित होना और सत्य को समझने के योग्य होना है।

2 अर्थात् वह अपने पूज्यों सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ

को भूल गया। उस ने कहा: कौन जीवित करेगा इन अस्थियों को जब कि वह जीर्ण हो चुकी होंगी?

79. आप कह दें: वही जिस ने पैदा किया है प्रथम बार। और वह प्रत्येक उत्पत्ति को भली-भाँति जानने वाला है।

عَلَىٰ يَمِينِهِ الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ
وَهُوَ يَكُنْ خَلْقٍ عَلِيمٌ

80. जिस ने बना दी तुम्हारे लिये हरे वृक्ष से अग्नि, तो तुम उस से आग^[1] सुलगाते हो।

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ
مِنْهُ تُوقِدُونَ

81. तथा क्या जिस ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है वह सामर्थ्य नहीं रखता इस पर कि पैदा करे उस के समान? क्यों नहीं? और वह रचयिता अति ज्ञाता है।

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ
عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ

82. उस का आदेश जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करना चाहे तो बस यह कह देना है: हो जा। तत्क्षण वह हो जाती है।

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ

83. तो पवित्र है वह जिस के हाथ में प्रत्येक वस्तु का राज्य है, और तुम सब उसी की ओर फेरे^[2] जाओगे।

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ

1 भावार्थ यह है कि जो अल्लाह जल से हरे वृक्ष पैदा करता है फिर उसे सुखा देता है जिस से तुम आग सुलगाते हो, तो क्या वह इसी प्रकार तुम्हारे मरने गलने के पश्चात् फिर तुम्हें जीवित नहीं कर सकता?

2 प्रलय के दिन अपने कर्मों का प्रतिकार प्राप्त करने के लिये।

सूरह साफ़ात - 37

سُورَةُ الصَّافَّاتِ

सूरह साफ़ात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 182 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((बस साफ़ात)) से हुआ है जिस का अर्थ है: पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों की शपथ! इस लिये इस का नाम सूरह साफ़ात है।
- इस में आयत 1 से 10 तक अब्बाह के अकेले पूज्य होने पर फ़रिश्तों की गवाही प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि शैतान, फ़रिश्तों की उच्च सभा तक जाने से रोक दिये गये हैं। फिर दूसरे जीवन की दशा का वर्णन करके उन के दुष्परिणाम को बताया गया है जो अब्बाह के सिवा दूसरों को पूजते हैं तथा अब्बाह के पूजारियों का उत्तम परिणाम बताया गया है।
- आयत 75 से 148 तक अनेक नबियों की चर्चा है जिन्होंने तौहीद (एकेश्वरवाद) का प्रचार करते हुये अनेक प्रकार के दुख सहे। तथा अब्बाह ने उन्हें उन के प्रयासों का उत्तम प्रतिफल प्रदान किया।
- आयत 149 से 166 तक फ़रिश्तों के बारे में मुश्रिकों के गलत विचारों का खण्डन करते हुये फ़रिश्तों ही द्वारा यह बताया गया है कि वास्तव में वह क्या है?
- फिर सूरह की अन्तिम आयतों में अब्बाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा अब्बाह की सेना अर्थात् रसूल के अनुयायियों को अब्बाह की सहायता तथा विजय की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है पंक्तिबद्ध(फ़रिश्तों) की।
2. फिर झिड़कियाँ देने वालों की।
3. फिर स्मरण करके पढ़ने वालों^[1] की।

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا

فَالرَّجُزَاتِ رَجُزًا

فَالثَّلَاثِينَ ذِكْرًا

1 यह तीनों गुण फ़रिश्तों के हैं जो आकाशों में अब्बाह की इबादत के लिये

4. निश्चय तुम्हारा पूज्य एक ही है।
5. आकाशों तथा धरती का पालनहार, तथा जो कुछ उन के मध्य है, और सूर्योदय होने के स्थानों का रब।
6. हम ने अलंकृत किया है संसार (समीप) के आकाश को तारों की शोभा से।
7. तथा रक्षा करने के लिये प्रत्येक उध्दत शैतान से।
8. वह नहीं सुन सकते (जा कर) उच्च सभा तक फरिश्तों की बात, तथा मारे जाते हैं प्रत्येक दिशा से।
9. राँदने के लिये, तथा उन के लिये स्थायी यातना है।
10. परन्तु जो ले उड़े कुछ तो पीछा करती है उस का दहकती ज्वाला^[1]।
11. तो आप इन (काफ़िरों) से प्रश्न करें कि क्या उन को पैदा करना अधिक कठिन है या जिन^[2] को हम ने पैदा किया है? हम ने उन को ^[3]पैदा किया है लेसदार मिट्टी से।
12. बल्कि आप ने आश्चर्य किया (उन

إِنَّ الْعِلْمَ لَوَاحِدٌ ۝

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَسَارِقِ ۝

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَكِبِ ۝

وَجَعَلْنَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ تَارِدًا ۝

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى وَيَقْدِرُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝

دُخُورًا وَلَهُمْ عَذَابٌ وَأَصِيبٌ ۝

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا إِنَّا خَائِفُهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ۝

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝

पंक्तिवद्ध रहते तथा बादलों को हॉकते और अल्लाह के स्मरण जैसे कुआन तथा नमाज़ पढ़ने और उस की पवित्रता का गान करने इत्यादि में लगे रहते हैं।

- 1 फिर यदि उस से बचा रह जाये तो आकाश की बात अपने नीचे के शैतानों तक पहुँचाता है और वह उसे काहिनों तथा ज्योतिषियों को बताते हैं। फिर वह उस में सौ झूठ मिला कर लोगों को बताते हैं। (सहीह बुखारी: 6213, सहीह मुस्लिम: 2228)

2 अर्थात् फरिश्तों तथा आकाशों को?

3 उन के पिता आदम (अलैहिस्सलाम) को।

के अस्वीकार पर) तथा वह उपहास करते हैं।

13. और जब शिक्षा दी जाये तो शिक्षा ग्रहण नहीं करते।

وَلَا يُذَكِّرُوا الْآيَةَ لَكُوفُونَ ۝

14. और जब देखते हैं कोई निशानी तो उपहास करने लगते हैं।

وَلَا إِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝

15. तथा कहते हैं कि यह तो मात्र खुला जादू है।

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

16. (कहते हैं कि) क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे, तो हम निश्चय पुनः जीवित किये जायेंगे?

مَرَدًا امْتَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِطَابًا إِنَّا سَبْعُونَ ۝

17. और क्या हमारे पहले पूर्वज भी (जीवित किये जायेंगे)?

أَوَإِنَّا كُنَّا الْأَوَّلُونَ ۝

18. आप कह दें कि हाँ, तथा तुम अपमानित (भी) होगे।

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَارِعُونَ ۝

19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर सहसा वह देख रहे होंगे।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝

20. तथा कहेंगे: हाय हमारा विनाश! यह तो बदले (प्रलय) का दिन है।

وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝

21. यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठला रहे थे।

هَذَا يَوْمُ الْقَضَى الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ۝

22. (आदेश होगा कि) घेर लाओ सब अत्याचारियों को तथा उन के साथियों को और जिस की वे इबादत (बंदना) कर रहे थे।

اسْخَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝

23. अब्राहम के सिवा। फिर दिखा दो उन को नरक की राह।

مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ هَذَا هُوَ إِلَى صِرَاطٍ مُبِينٍ ۝

24. और उन्हें रोक^[1] लो। उन से प्रश्न किया जाये।

وَيَقُولُ لَهُمْ إِنَّهُمْ مُسْتَلَوُونَ ﴿٢٤﴾

25. क्या हो गया है तुम्हें कि एक-दूसरे की सहायता नहीं करते?

مَا لَكُمْ لَا تَنصُرُونَ ﴿٢٥﴾

26. बल्कि वह उस दिन सिर झुकाये खड़े होंगे।

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾

27. और एक-दूसरे के सम्मुख हो कर परस्पर प्रश्न करेंगे:^[2]

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٧﴾

28. कहेंगे कि तुम हमारे पास आया करते थे दायें^[3] से।

قَالُوا لَوْلَا جَاءَكُمْ رَبُّنَا عَنْ اليمينِ ﴿٢٨﴾

29. वह^[4] कहेंगे: बल्कि तुम स्वयं ईमान वाले न थे।

قَالُوا بَلَىٰ لَوْ كُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٢٩﴾

30. तथा नहीं था हमारा तुम पर कोई अधिकार,^[5] बल्कि तुम स्वयं अवैज्ञाकारी थे।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طَافِينَ ﴿٣٠﴾

31. तो सिद्ध हो गया हम पर हमारे पालनहार का कथन कि हम (यातना) चखने वाले हैं।

خُبِّرْنَا عَلَىٰ مَا قَوْلُ رَبِّنَا إِنَّا لَذَائِقُونَ ﴿٣١﴾

32. तो हम ने तुम्हें कुपथ कर दिया। हम तो स्वयं कुपथ थे।

فَأَنصَرَفْنَا كَمَا كُنَّا مُهْمِينَ ﴿٣٢﴾

33. फिर वह सभी उस दिन यातना में साझी होंगे।

وَيَا أَنَّهُمْ يُؤْمِدُونَ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٣﴾

1 नरक में झोंकने से पहले।

2 अर्थात् एक - दूसरे को धिक्कारेंगे।

3 इस से अभिप्राय यह है कि धर्म तथा सत्य के नाम से आते थे अर्थात् यह विश्वास दिलाते थे कि यही मिश्रणवाद मूल तथा सत्धर्म है।

4 इस से अभिप्राय उन के प्रमुख लोग हैं।

5 देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 22।

34. हम इसी प्रकार किया करते हैं
अपराधियों के साथ।
35. यह वह है कि जब कहा जाता था उन
से कि कोई पूज्य (बंदनीय) नहीं अल्लाह
के अतिरिक्त तो वह अभिमान करते थे।
36. तथा कह रहे थे: क्या हम त्याग देने
वाले हैं अपने पूज्यों को एक उन्मत्त
कवि के कारण?
37. बल्कि वह (नबी) सच्च लाये हैं तथा
पुष्टि की है सब रसूलों की।
38. निश्चय तुम दुःखदायी यातना चखने
वाले हो।
39. तथा तुम उस का प्रतिकार (बदला)
दिये जाओगे जो तुम कर रहे थे।
40. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्ता।
41. यही है जिन के लिये विदित जीविका है।
42. प्रत्येक प्रकार के फल तथा वही
आदरणीय होंगे।
43. सुख के स्वर्गों में।
44. आसनों पर एक-दूसरे के सम्मुख
असीन होंगे।
45. फिराये जायेंगे उन पर प्याले प्रवाहित
पेय के।
46. श्वेत आस्वाद पीने वालों के लिये।
47. नहीं होगी उस में शारिरिक पीड़ा
और न वह उस से बहकेंगे।

إِنَّا كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ﴿٣٤﴾

إِنَّكُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾

وَيَقُولُونَ إِنَّا لَأَنبِيَائُنَا إِنَّمَا الْإِنشَاءُ لِمِثْلِهِمْ يُحْمَلُونَ ﴿٣٦﴾

بَلْ جَاءُوا بِالْحَقِّ وَصَدَّقُوا الْمُرْسَلِينَ ﴿٣٧﴾

إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْإِلِيمِ ﴿٣٨﴾

وَمَا تَحْزَنُونَ إِلَّا مَا أَنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾

فَوَاكِهُ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾

عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِنْ مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾

بِضَاءٍ لَدَى لَشَرِيقِينَ ﴿٤٦﴾

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنَزَّلُونَ ﴿٤٧﴾

48. तथा उन के पास आँखें झुकाये (सति)
बड़ी आँखों वाली (नारियाँ) होंगी।
49. वह छुपाये हुये अन्डों के मानिन्द होंगी।^[1]
50. वह एक - दूसरे से सम्मुख हो कर
प्रश्न करेंगे।
51. तो कहेगा एक कहने वाला उन में से:
मेरा एक साथी था।
52. जो कहता था कि क्या तुम (पलय
का) विश्वास करने वालों में से हो?
53. क्या जब हम मर जायेंगे तथा मिट्टी
और अस्थियाँ हो जायेंगे तो क्या हमें
(कर्माँ का) प्रतिफल दिया जायेगा।
54. वह कहेगा: क्या तुम झाँक कर देखने
वाले हो?
55. फिर झाँकते ही उसे देख लेगा नरक
के बीच।
56. उस से कहेगा: अब्बाह की शपथ! तुम
तो मेरा विनाश कर देने के समीप थे।
57. और यदि मेरे पालनहार का अनुग्रह
न होता तो मैं (नरक के) उपस्थितों
में होता।
58. फिर वह कहेगा: क्या (यह सहीह
नहीं है कि) हम मरने वाले नहीं हैं?
59. सिवाये अपनी प्रथम मौत के और न
हम को यातना दी जायेगी।

وَعِنْدَهُمْ قُمْحَرُ الطَّرْفَيْنِ ۝

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ لُّكُونٌ ۝

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ۝

يَقُولُ أَأُنْكَ لَبِنَ الْمُصَدِّقِينَ ۝

أَوَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّنَا لَمُدُّ يُتُوبُونَ ۝

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُظْلِمُونَ ۝

فَأَقْصَرَ كُرْسِيُّهُ فَرَآ فِي سَوَاءٍ الْجَحِيمِ ۝

قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كُنْتُ لَأَفْرَسٍ ۝

وَلَوْلَا رَحْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُخْضَرِّينَ ۝

أَفَسَاءَ أَخْسُ بِمَتِّينَ ۝

إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝

1 अर्थात जिस प्रकार पक्षी के पंखों के नीचे छुपे हुये अण्डे सुरक्षित होते हैं वैसे ही वह नारियाँ सुरक्षित, सुन्दर रंग और रूप की होंगी।

60. वास्तव में यही बड़ी सफलता है।
61. इसी (जैसी सफलता) के लिये चाहिये कि कर्म करें कर्म करने वाले।
62. क्या यह आतिथ्य उत्तम है अथवा धोहड़ का वृक्ष?
63. हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।
64. वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़ (तह) से निकलता है।
65. उस के गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।
66. तो वह (नरकवासी) खाने वाले हैं उस से। फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।
67. फिर उन के लिये उस के ऊपर से खौलता गरम पानी है।
68. फिर उन्हें प्रत्यागत होना है नरक की ओर।
69. वास्तव में उन्होंने पाया अपने पूर्वजों को कुपथ।
70. फिर वह उन्हीं के पदचिन्हों पर^[1] दौड़े चले जा रहे हैं।
71. और कुपथ हो चुके हैं इन से पूर्व अगले लोगों में से अधिकतर।
72. तथा हम भेज चुके हैं उन में सचेत

- إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٠﴾
- لِيُمَثِّلَ هَذِهِ الْقِيَمَةَ الْعَمَلُونَ ﴿٦١﴾
- أَذَلِكَ خَيْرٌ مُّزْلاً أَمْ شَجَرَةُ الزُّوْمِ ﴿٦٢﴾
- إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾
- إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾
- كُلُّهَا كَأَنَّهُ رِئَوسُ الشَّيَاطِينِ ﴿٦٥﴾
- فَإِنَّهُمْ لَا يَكُونُونَ فِيهَا لَمَّا أُلْقُوا مِنْهَا لَیْطُونَ ﴿٦٦﴾
- ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾
- ثُمَّ إِنَّهُمْ مَرْجِعُهُمْ إِلَى الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾
- إِنَّهُمْ أَقْبَوْا الْأَبَاءَ هُمُ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾
- فَهُمْ عَلَىٰ أَثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾
- وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾
- وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٧٢﴾

1 इस में नरक में जाने का जो सब से बड़ा कारण बताया गया है वह है नबी को न मानना, और अपने पूर्वजों के पंथ पर ही चलते रहना।

(सावधान) करने वाले।

73. तो देखो कि कैसा रहा सावधान किये हुये लोगों का परिणाम?^[1]
74. हमारे शुद्ध भक्तों के सिवा।
75. तथा हमें पुकारा नूह ने। तो हम क्या ही अच्छे प्रार्थना स्वीकार करने वाले हैं।
76. और हम ने बचा लिया उस को और उस के परिजनों को घोर आपदा से।
77. तथा कर दिया हम ने उस की संतति को शेष^[2] रह जाने वालों में।
78. तथा शेष रखा हम ने उस की सराहना तथा प्रशंसा को पिछलों में।
79. सलाम (सुरक्षा)^[3] है नूह के लिये समस्त विश्ववासियों में।
80. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
81. वास्तव में वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
82. फिर हम ने जलमग्न कर दिया दूसरों को।
83. और उस के अनुयायियों में निश्चय इब्राहीम है।
84. जब लाया वह अपने पालनहार के पास स्वच्छ दिल।

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَدَبِّرِينَ ﴿٧٣﴾

الْأَعْبَادَ لِلَّهِ الْمُتَخَلِّصِينَ ﴿٧٤﴾

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ السَّامِعُونَ ﴿٧٥﴾

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿٧٧﴾

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٧٨﴾

سَلَامٌ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ﴿٧٩﴾

إِنَّا أَكَّدَ لِلَّذِي نَجَّيْنَا الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٠﴾

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٨١﴾

ثُمَّ أَخْرَجْنَا الْآخَرِينَ ﴿٨٢﴾

وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ﴿٨٣﴾

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿٨٤﴾

1 अतः उन के दुष्परिणाम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

2 उस की जाति के जलमग्न हो जाने के पश्चात्।

3 अर्थात् उस की बुरी चर्चा से।

85. जब कहा उस ने अपने पिता तथा अपनी जाती से: तुम किस की इबादत (बंदना) कर रहे हो?
86. क्या अपने बनाये पूज्यों को अल्लाह के सिवा चाहते हो?
87. तो तुम्हारा क्या विचार है विश्व के पालनहार के विषय में?
88. फिर उस ने देखा तारों की^[1] ओर।
89. तथा उन से कहा: मैं रोगी हूँ।
90. तो उसे छोड़ कर चले गये।
91. फिर वह जा पहुँचा उन के उपास्यों (पूज्यों) की ओर। कहा कि (वह प्रसाद) क्यों नहीं खाते?
92. तुम्हें क्या हुआ है कि बोलते नहीं?
93. फिर पिल पड़ा उन पर मारते हुये दायें हाथ से।
94. तो वह आये उस की ओर दौड़ते हुये।
95. इब्राहीम ने कहा: क्या तुम इबादत (बंदना) करते हो उस की जिसे पत्थरों से तराशते हो?
96. जब कि अल्लाह ने पैदा किया है तुम को तथा जो तुम करते हो।
97. उन्होंने कहा: इस के लिये एक (अग्निशाला का) निर्माण करो। और उसे झोंक दो दहकती अग्नि में।
98. तो उन्होंने उस के साथ षड्यंत्र रचा,

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ﴿٨٥﴾

أَفَعِمَّا إِلَهُةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ﴿٨٦﴾

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ﴿٨٨﴾

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ﴿٨٩﴾

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ﴿٩٠﴾

فَرَاغَ إِلَى إِلَهِهِمْ فَقَالَ آلَا تَأْكُلُونَ ﴿٩١﴾

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ﴿٩٢﴾

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ﴿٩٣﴾

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُونَ ﴿٩٤﴾

قَالَ تَعْبُدُونَ مَا تَشْتَكُونَ ﴿٩٥﴾

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿٩٦﴾

قَالُوا بُنِيَ الْإِنْسَانُ أَلَّا يَشْكُرَ ﴿٩٧﴾

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ﴿٩٨﴾

1 यह सोचते हुये कि इन के उत्सव में न जाने के लिये क्या बहाना करूँ।

तो हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

99. तथा उस ने कहा: मैं जाने वाला हूँ
अपने पालनहार की^[1] ओर। वह
मुझे सुपथ दर्शायेगा।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝

100. हे मेरे पालनहार! प्रदान कर मुझे
एक सदाचारी (पूनीत) पुत्र।

رَبِّ قَبْلِي مِنَ الضَّالِّينَ ۝

101. तो हम ने शुभ सूचना दी उसे एक
सहनशील पुत्र की।

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝

102. फिर जब वह पहुँचा उस के साथ
चलने-फिरने की आयु को, तो
इबराहीम ने कहा: हे मेरे प्रिय पुत्र!
मैं देख रहा हूँ स्वपन में कि मैं तुझे
बध कर रहा हूँ। अब तू बता कि
तेरा क्या विचार है? उस ने कहा: हे
पिता! पालन करें जिस का अदेश
आप को दिया जा रहा है। आप
पायेंगे मुझे सहनशीलों में से यदि
अल्लाह की इच्छा हुई।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَؤُ إِلَىٰ أَرَىٰ فِي
الْمَنَامِ إِنِّي أَدْبَحْتُ فَأَنْظُرُ مَاذَا تَرَىٰ ۖ قَالَ يَا بَتِ
أَفْعَلْ مَا تَوْصَرُّ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ مِنَ
الضَّالِّينَ ۝

103. अन्ततः जब दोनों ने स्वयं को अर्पित
कर दिया, और उस (पिता) ने उसे
गिरा दिया माथे के बल।

فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝

104. तब हम ने उसे आवाज़ दी कि हे
इब्राहीम!

وَنَادَيْنَاهُ أَنِ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝

105. तू ने सच्च कर दिया अपना स्वप्न।
इसी प्रकार हम प्रति फल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَّاكَ تَجْزَى
الْمُحْسِنِينَ ۝

106. वास्तव में यह खुली परीक्षा थी।

إِنَّ هَذَا لَهُوَّ الْبَلَاءِ الْمُبْتَلِينَ ۝

107. और हम ने उस के मुक्ति- प्रतिदान

وَقَدْ يَنْبَغُ عِزُّهُ ۝

1 अर्थात् ऐसे स्थान की ओर जहाँ अपने पालनहार की इबादत कर सकूँ।

के रूप में प्रदान कर दी एक महान्^[1]
बलि।

108. तथा हम ने शेष रखी उस की शुभ
चर्चा पिछलों में।

وَوَكَّلْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾

109. सलाम है इब्राहीम पर।

سَلَامٌ عَلَى إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾

110. इसी प्रकार हम प्रतिफल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾

111. निश्चय ही वह हमारे ईमान वाले
भक्तों में से था।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾

112. तथा हम ने उसे शुभसूचना दी
इसहाक नबी की, जो सदा-चारियों
में^[2] होगा।

وَبَشِّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾

113. तथा हम ने बरकत
(विभूति) अवतरित की उस पर
तथा इसहाक पर। और उन दोनों
की संतति में से कोई सदाचारी
है और कोई अपने लिये खुला
अत्याचारी।

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا الْحُسَيْنُ ﴿١١٣﴾
وَعَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١١٤﴾

114. तथा हम ने उपकार किया मूसा
और हारून पर।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ﴿١١٤﴾

115. तथा मुक्त किया दोनों को और उन

وَجَعَلْنَاهُمْ أَقْوَمًا مِّنَ الْكَوْثَرِ الْعَظِيمِ ﴿١١٥﴾

1 यह महान् बलि एक मेंढा था। जिसे जibreel (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्वर्ग से भेजा गया। जो आप के प्रिय पुत्र इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के स्थान पर बलि दिया गया। फिर इस विधि को प्रलय तक के लिये अल्लाह के समिप्य का एक साधन तथा इंदुल अज्हा (बकरईद) का प्रियवर कर्म बना दिया गया। जिसे संसार के सभी मुसलमान इंदुल अज्हा में करते हैं।

2 इस आयत से विद्वित होता है कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को इस बलि के पश्चात् दूसरे पुत्र आदरणीय इसहाक की शुभ सूचना दी गई। इस से ज्ञान हुआ कि बलि इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की दी गई थी। और दोनों की आयु में लग-भग चौदह वर्ष का अन्तर है।

कि जाति को घोर व्यग्रता से।

116. तथा हम ने सहायता की उन की
तो वही प्रभावशाली हो गये।

117. तथा हम ने प्रदान की दोनों को
प्रकाशमय पुस्तक (तौरात)।

118. और हम ने दर्शाई दोनों को सीधी
डगर।

119. तथा शेष रखी दोनों की शुभ चर्चा
पिछलों में।

120. सलाम है मूसा तथा हारून पर।

121. हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान
करते हैं सदाचारियों को।

122. वस्तुतः वह दोनों हमारे ईमान वाले
भक्तों में थे।

123. तथा निश्चय इलयास नबियों में से
था।

124. जब कहा उस ने अपनी जाति से:
क्या तुम डरते नहीं हो?

125. क्या तुम बअल (नामक मूर्ति) को
पुकारते हो? तथा त्याग रहे हो
सर्वोत्तम उत्पत्ति कर्ता को?

126. अब्राह ही तुम्हारा पालनहार है,
तथा तुम्हारे प्रथम पूर्वजों का
पालनहार है।

127. अन्ततः उन्होंने झुठला दिया उस
को। तो निश्चय वही (नरक में)
उपस्थित होंगे।

وَقَضَيْنَاهُمْ فَكَأَنَّهُمُ الْغُلَبَيْنِ ۝

وَأَنزَلْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُبِينِ ۝

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْأَخْيَرَيْنِ ۝

سَلَامٌ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

إِنَّا كَذَّلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ الْيَأْسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ الْأَتَقُونَ ۝

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝

اللَّهُ رَبُّكُمْ رَبُّ الْأَوَّلِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَنَّهُمُ الْمَحْضَرُونَ ۝

128. किन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त।
 129. तथा शेष रखी हम ने उसकी शुभ चर्चा पिछलों में।
 130. सलाम है इलयासीन^[1] पर।
 131. वास्तव में हम इसी प्रकार प्रतिफल प्रदान करते हैं सदाचारियों को।
 132. वस्तुतः वह हमारे ईमान वाले भक्तों में से था।
 133. तथा निश्चय लूत नबियों में से था।
 134. जब हम ने मुक्त किया उस को तथा उस के सब परिजनों को।
 135. एक बुढ़िया^[2] के सिवा, जो पीछे रह जाने वालों में थी।
 136. फिर हम ने अन्यो को तहस नहस कर दिया।
 137. तथा तुम^[3] गुज़रते हो उन (की निर्जन बस्तियों) पर प्रातः के समय।
 138. तथा रात्रि में। तो क्या तुम समझते नहीं हो?
 139. तथा निश्चय यूनस नबियों में से था।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝

وَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِن لُّوطًا لِّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ۝

كَمْ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۝

وَالَكُمْ لَتَمُوتُنَّ عَلَيْهِمْ مُّصْحِحِينَ ۝

وَبِأَيِّ آلَاءِ اللَّهِ تَعْمَلُونَ ۝

وَإِن يُونُسَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

1 इलयासीन: इलयास ही का एक उच्चारण है। उन्हें अन्य धर्म ग्रन्थों में इलया भी कहा गया है।

2 यह लूत (अलैहिस्सलाम) की काफ़िर पत्नी थी।

3 मक्का वासियों को संबोधित किया गया है।

140. जब वह भाग^[1] गया भरी नाव की ओर।
141. फिर नाम निकाला गया तो वह हो गया फेंके हुआओं में से।
142. तो निगल लिया उसे मछली ने, और वह निन्दित था।
143. तो यदि न होता अब्बाह की पवित्रता का वर्णन करने वालों में।
144. तो वह रह जाता उस के उदर में उस दिन तक जब सब पुनः जीवित किये^[2] जायेंगे।
145. तो हम ने फेंक दिया उसे खुले मैदान में और वह रोगी^[3] था।
146. और उगा दिया उस^[4] पर लताओं का एक वृक्ष।
147. तथा हम ने उसे रसूल बना कर भेजा एक लाख बलिक अधिक की ओर।
148. तो वह ईमान लाये। फिर हम ने उन्हें सुख - सुविधा प्रदान की एक समय^[5] तक।

إِذْ أَتَى إِلَى الْفُلِّ الشَّعْرَى ۝

فَآهَرَمَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝

فَالْتَمَتَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۝

لَكُنَّا فِي بَاطِنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

فَبَدَّلْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝

وَأَنْشَأْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۝

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝

فَأَمِنُوا فَمَنْحَتْهُمْ إِلَى جَنٍّ ۝

1 अब्बाह की अनुमति के बिना अपने नगर से नगर वासियों को यातना के आने की सूचना देकर निकल गये। और नाव पर सवार हो गये। नाव सागर की लहरों में घिर गई। इसलिये बौझ कम करने के लिये नाम निकाला गया। तो यूनस (अलैहिस्सलाम) का नाम निकला और उन्हें समुद्र में फेंक दिया गया।

2 अर्थात् प्रलय के दिन तक। (देखिये: सूरह अम्बिया, आयत: 87)

3 अर्थात् निर्बल नवजात शिशु के समान।

4 रक्षा के लिये।

5 देखिये: सूरह यूनस।

149. तो (हे नबी!) आप उन से प्रश्न करें कि क्या आप के पालनहार के लिये तो पुत्रियाँ हों और उन के लिये पुत्र?
150. अथवा क्या हम ने पैदा किया है फ़रिश्तों को नारियाँ। और वह उस समय उपस्थित⁽¹⁾ थे?
151. सावधान! वास्तव में वह अपने मन से बना कर यह बात कह रहे हैं।
152. कि अल्लाह ने संतान बनाई है। और निश्चय वह मिथ्या भाषी हैं।
153. क्या अल्लाह ने प्राथमिकता दी है पुत्रियों को पुत्रों पर?
154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय दे रहे हो?
155. तो क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?
156. अथवा तुम्हारे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण है?
157. तो अपनी पुस्तक लाओ यदि तुम सत्यवादी हो?
158. और उन्होंने बना दिया अल्लाह तथा जिन्नों के मध्य वंश-संबंध। जब कि जिन्न स्वयं जानते हैं कि वह अल्लाह के समक्ष निश्चय उपस्थित किये⁽²⁾ जायेंगे।

فَاسْتَفْتِهِمُ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ﴿١٥٠﴾

أَلَا إِنَّهُمْ مِنْ أَفْكَهِمْ لَمُتَوَلُونَ ﴿١٥١﴾

وَلَدَ اللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٥٢﴾

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

مَا لَكُمْ سَكُنْتُمْ تُخَلَّفُونَ ﴿١٥٤﴾

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُبِينٌ ﴿١٥٦﴾

فَاتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٥٧﴾

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَبَاً وَلَقَدْ عَلِمَتِ
الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

1 इस में मक्का के मिश्रणवादियों का खण्डन किया जा रहा है जो फ़रिश्तों को देवियाँ तथा अल्लाह की पुत्रियाँ कहते थे। जब कि वह स्वयं पुत्रियों के जन्म को अप्रिय मानते थे।

2 अर्थात् यातना के लिये। तो यदि वे उस के संबंधी होते तो उन्हें यातना क्यों देता?

159. अल्लाह पवित्र है उन गुणों से जिस का वह वर्णन कर रहे हैं।

سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿١٥٩﴾

160. परन्तु अल्लाह के शुद्ध भक्त^[1]

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٦٠﴾

161. तो निश्चय तुम तथा तुम्हारे पूज्य।

فَاتَّكُمُومًا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾

162. तुम सब किसी एक को भी कुपथ नहीं कर सकते।

مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاعِلِينَ ﴿١٦٢﴾

163. उस के सिवा जो नरक में झोंका जाने वाला है।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالٍ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾

164. और नहीं है हम (फरिश्तों) में से कोई परन्तु उस का एक नियमित स्थान है।

وَمَا أَمْثَلُ إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾

165. तथा हम ही (आज्ञापालन के लिये) पंक्तिबद्ध हैं।

وَأَنتَ الْخَاشِعُ الْمَقَاتِلُ ﴿١٦٥﴾

166. और हम ही तस्बीह (पवित्रता गान) करने वाले हैं।

وَأَنتَ الْخَاشِعُ الْمُسَبِّحُ ﴿١٦٦﴾

167. तथा वह (मुश्रिक) तो कहा करते थे कि:

فَإِنْ كَانُوا يَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾

168. यदि हमारे पास कोई स्मृति (पुस्तक) होती जो पहले लोगों में आई...

لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾

169. तो हम अवश्य अल्लाह के शुद्ध भक्तों में से हो जाते।

لَكِنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿١٦٩﴾

170. (फिर जब आ गयी) तो उन्होंने कूर्आन के साथ कुफ़ कर दिया अतः शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

فَلَقَرُوا بِهِ فَمَنَونَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

171. और पहले ही हमारा वचन हो चुका

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾

1 वह अल्लाह को ऐसे दुर्गुणों से युक्त नहीं करते।

है अपने भेजे हुये भक्तों के लिये।

172. कि निश्चय उन्हीं की सहायता की जायेगी।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾

173. तथा वास्तव में हमारी सेना ही प्रभावशाली (विजयी) होने वाली है।

وَأِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾

174. तो आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

فَوَلِّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾

175. तथा उन्हें देखते रहें। वह भी शीघ्र ही देख लेंगे।

وَأَبْصِرْهُمْ فَهُمْ يَصِيرُونَ ﴿١٧٥﴾

176. तो क्या वह हमारी यातना की शीघ्र माँग कर रहे हैं।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾

177. तो जब वह उतर आयेगी उन के मैदानों में तो बुरा हो जायेगा सावधान किये हुआँ का सबेरा।

فَإِذَا نُزِّلَ سَحَابُهُمْ فَسَاءَ مَا يَنْذِرُ نَارُهَا ﴿١٧٧﴾

178. और आप मुँह फेर लें उन से कुछ समय तक।

وَوَلِّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾

179. तथा देखते रहें, अन्ततः वह (भी) देख लेंगे।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُصِيرُونَ ﴿١٧٩﴾

180. पवित्र है आप का पालनहार गौरव का स्वामी उस बात से जो वह बना रहे है।

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾

181. तथा सलाम है रसूलों पर।

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾

182. तथा सभी प्रशंसा अल्लाह सर्वलोक के पालनहार के लिये है।

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

सूरह साद - 38



सूरह साद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

- इस में पहले अच्छर (साद) आया है जिस के कारण इस का नाम ((सूरह साद)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन के शिक्षाप्रद पुस्तक होने की चर्चा करते हुये यह चेतावनी दी गई है कि जो इसे नहीं मानेंगे वह अपने आप को बुरे परिणाम तक पहुँचायेंगे।
- आयत 12 से 16 तक उन जातियों का बुरा अन्त बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 17 से 24 तक नबियों के, अल्लाह की ओर ध्यानमग्न होने की चर्चा की गई है। फिर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और न करने दोनों का परलोक में अलग-अलग परिणाम बताया गया है।
- आयत 65 से 85 तक में बताया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सावधान करने के लिये आये हैं। और आप के विरोध करने का वही फल होगा जो इब्लीस के अभिमान का हुआ।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सत्य होने तथा कुर्आन की बताई हुयी बातों के अवश्य पूरी होने की ओर संकेत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. साद। शपथ है शिक्षा प्रद कुर्आन की!
2. बल्कि जो काफिर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त है।
3. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे। और नहीं होता वह बचने का समय।

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ۝

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَنَادُوا ذُرِّيَّتَهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِبْ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْ يَنْصُرَهُمْ ۚ

4. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने^[1] वाला! और कह दिया काफ़िरो ने कि यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।
5. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।
6. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य^[2] है।
7. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मन- घड़त बात है।
8. क्या उसी पर उतारी गई है यह शिक्षा (कुर्आन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में है मेरी शिक्षा से। बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।
9. अथवा उन के पास है आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष^[3]।
10. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ
هَذَا صِرَاطٌ كَذَابٌ ۝

اجْعَلِ الْاِلٰهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ ۝

وَالطَّلَقِ الْمَلَائِكَةُ اِنْ اْمْسُوا وَاَصْبِرُوا عَلٰى الْهَمِّ ۚ
اِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۝

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمَلَاِ الْاُولٰٓئِ ۚ اِنَّ هَذَا اِلَّا
اِخْلَاقٌ ۝

ۚ اَنْزَلَ عَلَيْهِ الَّذِي اٰتٰنَا بِلْهُمُ فِي شَاۡئِكَ مِنَ
ذِكْرِ بَلْ لَّيْسَ اِلَّا يَدُ وُقُوۡا عَذَابٌ ۝

اَمْرَعِنَدَ مُوَحِّدًا ۚ اِنَّ رَحْمَةً رَّبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝

اَعْلَمُوۡا مَثَلُ السَّمٰوٰتِ وَاْلْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فَاِنَّهٗنَّ وَاٰفِ الْاَسْبَابِ ۝

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात एकेश्वरवाद की यह बात सत्य नहीं है और ऐसी बात अपने किसी स्वार्थ के लिये की जा रही है।

3 कि वह जिसे चाहें नबी बनायें।

चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में)
रसियाँ तान^[1] कर।

11. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित
सेनाओं^[2] में से।

12. झुठलाया इन से पहले नूह तथा
आद और शक्तिवान फिरऔन की
जाति ने।

13. तथा समूद और लूत की जाति एवं
बन के वासियों^[3] ने। यही सेनायें हैं।

14. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो
मेरी यातना सिद्ध हो गई।

15. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं
परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के
लिये कुछ भी देर नहीं होगी।

16. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे
पालनहार! शीघ्र प्रदान कर दे हमारे
लिये हमारी (यातना का) भाग
हिसाब के दिन से पहले।^[4]

17. आप सहन करें उस पर जो वे कह
रहे हैं। तथा याद करें हमारे भक्त
दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था
निश्चय वह ध्यान मग्न था।

جُنُودًا هَٰؤُلَاءِ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۝

كَذَّابَت قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَارِ ۝

وَسَمُودٌ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ أُولَٰئِكَ
الْأَحْزَابُ ۝

إِنَّ كُلَّ الْكَاذِبِ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابُ ۝

وَمَا يَنْظُرُ مُرُواةٌ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مَّا لَهَا
مِنْ قُوَّةٍ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْعَانًا قَبْلَ يَوْمِ
الْحِسَابِ ۝

إِصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدَكَ دَاوُدَ
ذَ الْأَيْبِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

1 और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना के अवतरण को रोक दें।

2 अर्थात् इन मक्का वासियों के पराजित होने में देर नहीं होगी।

3 इस से अभिप्राय शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जाति है। (देखिये: सूरह, शुअरा आयत: 176)

4 अर्थात् वह उपहास स्वरूप कहते हैं कि प्रलय से पहले ही संसार में हमें यातना मिल जाये। अर्थ यह है कि हमें कोई यातना नहीं दी जायेगी।

18. हम ने वश्वर्ती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रातः।
19. तथा पक्षियों को एकत्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान मगन रहते थे।
20. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।
21. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फांद कर मेहराब (वंदना स्थल) में आ गये?
22. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहा: डरिये नहीं। हम दो पक्ष हैं अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दें हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमें दर्शा दें सीधी राह।
23. यह मेरा भाई है उस के पास निन्हावे भेड़ हैं। और मेरे एक भेड़ हैं। तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।
24. दावूद ने कहा: उस ने तुम पर अवश्य अत्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) माँग कर के अपनी भेड़ों में। तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَمِيِّ
وَالْإِشْرَاقِ ۝

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لِّأَعْيُنِنَا ۝

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَاهُ الْكِتَابَ وَفُضِّلَ الْخَطَابِ ۝

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَعْظَمْ
خَصْمِينَ بَغَى بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ فَأَخْلُمَ بَيْنَنَا
يَا هَئِنِ وَلَا تَشْطِطْ وَاهِدًا إِلَى سَوَاءِ الْقَرَارِ ۝

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعَجَةً وَإِيَّيَ نَعْجَةً
وَاحِدَةً فَقَالَ الْفُلَيْنِهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۝

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعَجِكَ إِلَى زَعَايِهِ وَإِنْ
كَثِيرٌ مِّنَ الْخُلَطَاءِ لِيَنبَغِي بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَفَلِيلَ تَأْمُرُ

ईमान लाये तथा सदाचार किये। और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भीष लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली। और गिर गया सज्दे में तथा ध्यान मग्न हो गया।

25. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वही तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।

26. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में। अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुसरण न कर आकांक्षा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसदिह जो कुपथ हो जायेंगे अल्लाह की राह ^[1] से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।

27. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफिर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये अग्नि से।

28. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के समान जो उपद्रवी हैं धरती में? या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान?^[2]

وَلَقَدْ دَاوُدُ إِنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا
وَأَنَابَ ۖ

فَقَعَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِن لَهُ عِندَنَا الزُّلْفَىٰ وَحُسْنُ
مَالٍ ۖ

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَصُلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ يَوْمَ الرَّجَاۥ ۖ

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا
ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا
مِنَ النَّارِ ۚ

أَمْ جَعَلُوا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ
فِي الْأَرْضِ أَمْ جَعَلُوا الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۚ

1 अल्लाह की राह से अभिप्राय उस का धर्म विधान है।

2 यह प्रश्न नकारात्मक है और अर्थ यह कि दोनों का परिणाम समान नहीं होगा।

29. यह (कुरआन) एक शुभ पुस्तक है। जिसे हम ने अवतरित किया है आप की ओर, ताकि लोग विचार करें उस की आयतों पर। और ताकि शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।

كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا الْبَيِّنَاتِ
وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

30. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति ध्यान मग्न था।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ دَاوُسَ بْنَ يَسْمَعِيلَ الْعَجْدَانَةَ ۚ إِنَّ آيَاتِ

31. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष संध्या के समय सवे हूये वेग गामी घोड़े।

إِدْعُ رُحُصَ عَلَيْهِ بِالْعَبَسِ الصَّفِينَتِ الْحَيَاتِ ۝

32. तो कहा: मैं ने प्राथमिकता दी इन घोड़ों के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण पर। यहाँ तक कि वह ओझल हो गये।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝

33. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों तथा गर्दनो पर।

رُدُّوهُمْ عَلَى ظُهُورِهِمْ سَحًّا يَلْبَسُونَ ۚ وَالْأَعْيُنُ ۝

34. और हम ने परीक्षा¹ ली सुलैमान कि तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर एक धड़ा फिर वह ध्यान मग्न हो गया।

وَلَعَدْ فِتْنَتًا لِلْيَسِينَ وَالْقَبِيلَةِ ۚ وَكَرِهُتَهُ جَدًّا ثُمَّ
أَنَابَ ۝

35. उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे। तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَفْنَى ۚ وَكَذَٰلِكَ
مِنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

1 हदीस से भाष्यकारों ने लिखा है कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों जिन की संख्या 70 अथवा 90 थी, से संभोग करूँगा। जिन से योद्धा घुड़ सवार पैदा होंगे जो अब्बाह की राह में जिहाद करेंगे। तथा उन्होंने यह नहीं कहा: यदि अब्बाह ने चाहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि केवल एक ही पत्नी गर्भवती हुई। और उस ने भी अधूरे शिशु को जन्म दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: वह ((यदि अब्बाह ने चाहा)) कह देते तो सब योद्धा पैदा होते। (सहीह बुखारी, हदीस: 6639, सहीह मुस्लिम, हदीस: 1656)

न हो किसी के लिये मेरे पश्चात्।
वास्तव में तू ही अति प्रदाता है।

36. तो हम ने बश में कर दिया उस के
लिये वायु को जो चल रही थी धीमी
गति से उस के आदेश से वह जहाँ
चाहता।

37. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के
निर्माता, तथा गोता खोर को।

38. तथा दूसरों को बंधे हुये बेड़ियों में।

39. यह हमारा प्रदान है। तो उपकार करो
अथवा रोक लो, कोई हिसाब नहीं।

40. और वास्तव में उस के लिये हमारे
पास सामिप्य तथा उत्तम स्थान है।

41. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब
को। जब उस ने पुकारा अपने
पालनहार को कि शैतान ने मुझे को
पहुँचाया^[1] है दुःख, तथा यातना।

42. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है
शीतल स्नान तथा पीने का जल।

43. और हम ने प्रदान किया उसे उस
का परिवार तथा उनके साथ और
उन के समान। अपनी दया से, और
मतिमानों की शिक्षा के लिये।

44. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की
एक झाड़, तथा उस से मार और

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝

وَالشَّيْطَانِ كُلِّ بَنَاءٍ وَعَوَاصٍ ۝

وَالْآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآلٍ ۝

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ دَلَاىِ رُبَّهُ أَنْ مَسَّيَ
الشَّيْطَانُ نَصْصًا وَعَذَابًا ۝

أَرْكَضَ بِرِجْلَيْهِ هَذَا مُمَسَّكًا بِأُورْدٍ وَشَرَابٍ ۝

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مِّمَّا رَحِمْنَا
وَوَدَّعَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۝

وَحَذَّيْبًا لِغُلَامَيْهِ فَاصْرَبْ يَمًّا وَلَا تَحْنُتْ إِنْ

1 अर्थात् मेरे दुःख तथा यातना के कारण मुझे शैतान उकसा रहा है तथा वह मुझे
तेरी दया से निराश करना चाहता है।

अपनी शपथ भंग न कर। वास्तव^[1]
में हम ने उसे पाया धीर्य वान।
निश्चय वह बड़ा ध्यान मग्न था।

45. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम
तथा इस्हाक एवं याकूब को, जो कर्म
शक्ति तथा ज्ञानचक्षू^[2] वाले थे।

46. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी
विशेषता परलोक (आखिरत) की
याद के साथ।

47. वास्तव में वह हमारे यहाँ उत्तम
निर्वाचितों में से थे।

48. तथा आप चर्चा करें इस्माईल तथा
यसअ एवं जुलकिफल की। और यह
सभी निर्वाचितों में से थे।

49. यह (कूर्आन) एक शिक्षा है तथा
निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम
स्थान है।

50. स्थायी स्वर्ग खुले हुये हैं उन के लिये
(उन के) द्वारा।

51. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मागेंगे
उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।

52. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने
वाली समायु पत्नियाँ होंगी।

53. यह है जिस का वचन दिया जा रहा
था तुम्हें हिसाब के दिन।

وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٤٥﴾

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ وَنَحْنُ أَقْرَبُ
الْأَنبِيَاءِ وَالْأَنْصَارِ ﴿٤٦﴾

إِنَّا اخْتَصَمْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَىٰ الْغَالِيَةِ

وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا مِنَ الْمُصْطَفَيْنِ الْخَيْرِ ﴿٤٧﴾

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِنَ
الْأَخْيَارِ ﴿٤٨﴾

هَذَا ذِكْرُنَا لِمَن تَعْتَمِدُ لِحُسنِ بَابِ

جَنَّتِ عَيْنٌ مُّفْتَحَةً لَهُمُ الْأَنْبَابُ ﴿٤٩﴾

مُتَكِبِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِكُم مِّمَّا كَثَبُوا
وَشَرَابٌ ﴿٥٠﴾

وَعِنْدَهُمْ قُصُورٌ الطَّرِيقِ أَتْرَابٌ ﴿٥١﴾

هَذَا مَا تُوَعَّدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٢﴾

1 अय्युब (अलैहिस्सलाम) की पत्नी से कुछ चूक हो गई जिस पर उन्होंने उसे सौ कोड़े मारने की शपथ ली थी।

2 अर्थात् आज्ञा पालन में शक्तिवान तथा धर्म का बोध रखते थे।

54. यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है।
55. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये निश्चय बुरा स्थान है।
56. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही बुरा आवास है!
57. यह है। तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।
58. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।
59. यह^[1] एक और जत्था है जो घुसा आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक में प्रवेश करने वाले हैं।
60. वह उत्तर देंगे: बल्कि तुम। तुम्हारा कोई स्वागत नहीं। तुम्हीं आगे लाये हो इस (यातना) को हमारे। तो यह बुरा निवास है।
61. (फिर) वह कहेंगे: हमारे पालनहार! जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को दुगुनी यातना दे नरक में।
62. तथा (नारकी) कहेंगे: हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर^[2] रहे थे?

إِنَّ هَذَا الرِّزْقُ مِمَّا لَهُ مِنْ تَفَادٍ ۝

هَذَا وَإِنَّ لِلظَّالِمِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ۝

جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَيُشْفَى السَّامِدُ ۝

هَذَا قَلِيلٌ وَقُوَّةٌ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝

وَالْأَعْرَابُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝

هَذَا فَوْجٌ مُتَعَبٌ مُتَعَبٌ لَأَمْرَجَبٍ إِلَيْهِمْ
إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَأَمْرَجَبٌ أَنْتُمْ قَدْ مُنِمُّوهُ
لَمَّا قُضِيَ الْقَرَارُ ۝

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدْ مَرَّ بِهَذَا قُرْذُفًا بِأَضْعَافٍ
فِي النَّارِ ۝

وَقَالُوا مَا لَنَا إِلَّا نَارٌ يَبَايَعُ الْكَافِرُ نَعْدَهُمْ مِنَ
الْأَشْرَارِ ۝

1 यह बात काफिरों के प्रमुख जो पहले से नरक में होंगे अपने उन अनुयायियों से कहेंगे जो संसार में उन के अनुयायी बने रहे उस समय जब उन के अनुयायियों का गिरोह नरक में आने लगेगा।

2 इस से उन का संकेत उन निर्धन-निर्बल मुसलमानों की ओर होगा जिन्हें वह

63. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही है उन से हमारी आँखें?

أَلْخَذْنَا لَهُمْ بِحُجْرٍ يَا أَعْمَى اذْهَبْ عَنْهُمْ الْبَصَارَ ۝

64. निश्चय सत्य है नारकियों का आपस में झगड़ना।

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَافُهُمُ أَهْلُ النَّارِ ۝

65. हे नबी! आप कह दें: मैं तो मात्र सचेत करने वाला^[1] हूँ तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَنْ إِلَهٌ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

66. वह आकाशों तथा धरती का और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभावशाली क्षमी है।

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝

67. आप कह दें कि यह^[2] बहुत बड़ी सूचना है।

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝

68. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝

69. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फरिश्ते) जब वाद-विवाद कर रहे थे।

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَائِكَةِ الْأَعْلَى إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝

70. मेरी ओर तो मात्र इस लिये बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।

إِنْ يُلَاحِظْ إِلَىٰ إِلَهِكَ فَقَدْ أَعْيَتِ ۝

71. जब कि कहा आप के पालनहार ने फरिश्तों से: मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ طِينٍ ۝

संसार में उपद्रवी कह रहे थे।

1 कुर्आन ने इसे बहुत सी आयतों में दुहराया है कि नबियों का कर्तव्य मात्र सत्य को पहुँचाना है। किसी को बल पूर्वक सत्य को मनवाना नहीं है।

2 परलोक की यातना तथा तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की जो बातें तुम्हें बता रहा हूँ।

72. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये सज्दा करते हुये।

73. तो सज्दा किया सभी फ़रिश्तों ने एक साथ।

74. इब्लीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफ़िरों में से।

75. अब्राह ने कहा: हे इब्लीस! किस चिज़ ने तुझे रोक दिया सज्दा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?

76. उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी से।

77. अब्राह ने कहा: तू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।

78. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी है प्रलय के दिन तक।

79. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पुनः जीवित किये जायेंगे।

80. अब्राह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया।

81. निर्धारित समय के दिन तक।

82. उस ने कहा: तो तेरे प्रताप की

فَإِذَا سَوَّيْنَاهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ يَٰجُودُونَ ﴿٧٢﴾

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

قَالَ يَٰإِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ سَجَدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ اسْتَكْبَرْتَ ۖ أَفَكُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ﴿٧٥﴾

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ﴿٧٦﴾

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا ۖ فَإِنَّكَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٧٧﴾

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٨﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٨٠﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَعْدِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

शपथ! मैं अवश्य कुपथ कर के
रहूँगा सब को।

83. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।

84. अब्बाह ने कहा: तो यह सत्य है और
मैं सत्य ही कहा करता हूँ:

85. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को
तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे
उन सब से।

86. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग
करता हूँ तुम से इस पर किसी
पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ
अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।

87. नहीं है यह (कुर्आन) परन्तु एक
शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।

88. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा
उस के समाचार (तथ्य) का एक
समय के पश्चात्।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُتَّخِصِينَ ۝

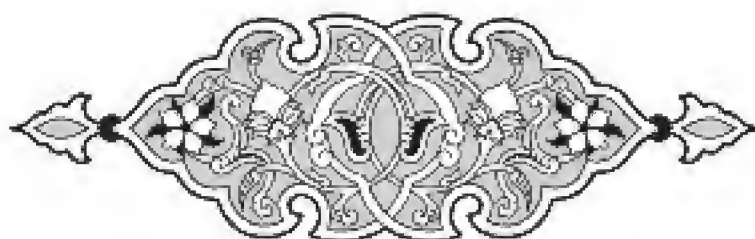
قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ۝

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبِعُكَ مِنْهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ
الْمُتَكَلِّفِينَ ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝



सूरह जुमर - 39

سُورَةُ الزُّمَرِ

सूरह जुमर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 75 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 71 तथा 73 में (जुमर) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: समूह तथा गिरोह। और इसी से सूरह का नाम लिया गया है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन की मूल शिक्षा को प्रमाणों (दलीलों) के साथ प्रस्तुत किया गया है कि आज्ञा पालन (बंदना) मात्र अल्लाह ही के लिये है। फिर आगे आयत 20 तक दोनों गिरोह: जो धर्म का पालन करते और केवल अल्लाह की बंदना (इबादत) करते हैं तथा जो दूसरों की पूजा करते हैं उन के मध्य अन्तर बताया गया है। फिर आयत 35 तक कुर्आन को मानने वालों की विशेषतायें और उन का प्रतिफल बताया गया है और विरोधियों को बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 36 से 52 तक ऐसे समझाया गया है कि (तौहीद) उभर कर सामने आ जाये। और ईमान लाने की भावना पैदा हो जाये। फिर आयत 63 तक अल्लाह को मानने की प्रेरणा दी गई है।
- अन्तिम आयतों में यह बताया गया है कि एक अल्लाह की बंदना ही सच्च है। फिर प्रलय की कुछ दशाओं की झलक दिखा कर (नेकों) सदाचारियों और बुरों के अलग-अलग स्थानों की ओर जाने, और उन के अन्तिम परिणाम को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इस पुस्तक का अवतरित होना अल्लाह अति प्रभावशाली तत्त्वज्ञ की ओर से है।
2. हम ने आप की ओर यह पुस्तक सत्य के साथ अवतरित की है। अतः इबादत (बंदना) करो अल्लाह की शुद्ध

تَنْوِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ
مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ

करते हुये उस के लिये धर्म को।

3. सुन लो! शुद्ध धर्म अल्लाह ही के लिये (योग्य) है। तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की बंदना इस लिये करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह^[1] से। वास्तव में अल्लाह ही निर्णय करेगा उन के बीच जिस में वे विभेद कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह उसे सुपथ नहीं दर्शाता जो बड़ा मिथ्यावादी कृतघ्न हो।

4. यदि अल्लाह चाहता कि अपने लिये संतान बनाये तो चुन लेता उस में से जिसे पैदा करता है जिसे चाहता। वह पवित्र है। वही अल्लाह अकेला सब पर प्रभावशाली है।

5. उस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को सत्य के आधार पर। वह लपेट देता है रात्रि को दिन पर तथा दिन को रात्रि पर तथा वशवर्ती किया है सूर्य और चन्द्रमा को। प्रत्येक चल रहा है अपनी निर्धारित अवधि के लिये। सावधान! वही अत्यंत प्रभावशाली क्षमी है।

6. उस ने तुम को पैदा किया एक प्राण

الْاِلهِ الَّذِيْنَ خَالِصٌ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذَ مِنْ دُونِهِ
اَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقْرِئُوْنَا اِلَى الْاِلهِ رُفْقًا
اِنَّ الْاِلهَ يَخْتَارُ بَيْنَهُمْ فَمَنْ فِيْهِمْ يَخْلُفُوْنَ
اِنَّ الْاِلهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كَذِبٌ كَفَّارٌ

اَوْ اَرَادَ الْاِلهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا الرَّصْطُفٰى مِمَّا يَخْلُقُ
مَا يَشَآءُ سُبْحٰنَهُ هُوَ الْاِلهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ يَكُوْرُ الْيَلَّ عَلَى
النَّٰرِ وَيَكُوْرُ النَّهَارُ عَلَى الْيَلِّ وَتَحْمُرُ الشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ كُلٌّ يَّجْرِئُ اِكْبٰلٍ مُّسَمًّى
اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجًا

1. मक्का के काफिर यह मानते थे कि अल्लाह ही वास्तविक पूज्य है। परन्तु वह यह समझते थे कि उस का दरबार बहुत ऊँचा है इसलिये वह इन पूज्यों को माध्यम बनाते थे। ताकि इन के द्वारा उन की प्रार्थनायें अल्लाह तक पहुँच जायें। यही बात साधारणतः मुश्रिक कहते आये हैं। इन तीन आयतों में उन के इसी कुविचार का खण्डन किया गया है। फिर उन में कुछ ऐसे थे जो समझते थे कि अल्लाह के संतान है। कुछ, फरिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ कहते, और कुछ, नबियों (ईसा) को अल्लाह का पुत्र कहते थे। यहाँ इसी का खण्डन किया गया है।

सा। वास्तव में तू नारकियों में से है।

9. तो क्या जो आज्ञाकारी रहा हो रात्रि के क्षणों में सज्जदा करते हुये, तथा खड़ा रह कर, (और) डर रहा हो परलोक से, तथा आशा रखता हो अल्लाह की दया की, आप कहें कि क्या समान हो जायेंगे जो ज्ञान रखते हैं तथा जो ज्ञान नहीं रखते? वास्तव में शिक्षा ग्रहण करते हैं मतिमान लोग ही।
10. आप कह दें उन भक्तों से जो ईमान लाये तथा डरे अपने पालनहार से कि उन्हीं के लिये जिन्होंने सदाचार किये इस संसार में बड़ी भलाई है। तथा अल्लाह की धरती विस्तृत है। और धैर्यवान ही अपना पूरा प्रतिफल अगणित दिये जायेंगे।
11. आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि इबादत (वन्दना) करूँ अल्लाह की शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को।
12. तथा मुझे आदेश दिया गया है कि प्रथम आज्ञाकारी हो जाऊँ।
13. आप कह दें: मैं डरता हूँ यदि मैं अबैज्ञा करूँ अपने पालनहार की, एक बड़े दिन की यातना से।
14. आप कह दें: अल्लाह ही की इबादत (वन्दना) मैं कर रहा हूँ शुद्ध कर के उस के लिये अपने धर्म को।
15. अतः तुम इबादत (वन्दना) करो जिस की चाहो उस के सिवा। आप कह दें: वास्तव में क्षतिग्रस्त वही हैं जिन्होंने

أَمَّنْ هُوَ قَائِلٌ إِنَّهُ الْبَيْتُ سَاجِدٌ أَوْ قَائِلٌ يَحْذَرُ
الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةً رَبِّهِ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي
الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

قُلْ يُعْبَادُ الَّذِينَ آمَنُوا الْفُقَرَاءُ لَكُمْ وَلَكِنَّ
أَحْسَنَ مَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَأَرْضُ اللَّهِ
وَأَسْعَىٰ إِنَّمَا يُؤْتِي الضَّعِيفُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۝

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۝

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

قُلْ اللَّهُ أَعْبُدْ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۝

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

क्षतिग्रस्त कर लिया स्वयं को तथा
अपने परिवार को प्रलय के दिन।
सावधान! यही खुली क्षति है।

16. उन्हीं के लिये छत्र होंगे अग्नि के,
उन के ऊपर से तथा उन के नीचे से
छत्र होंगे। यही है डरा रहा है अल्लाह
जिस से अपने भक्तों को। हे मेरे
भक्तो! मुझी से डरो।

17. जो बचे रहे तागूत (असुर)^[1] की
पूजा से तथा ध्यान मग्न हो गये
अल्लाह की ओर तो उन्हीं के लिये
शुभसूचना है। अतः आप शुभ सूचना
सुना दें मेरे भक्तों को।

18. जो ध्यान से सुनते हैं इस बात को फिर
अनुसरण करते हैं इस सर्वोत्तम बात
का तो वही है जिन्हें सुपथ दर्शन दिया
है अल्लाह ने, तथा वही मतिमान हैं।

19. तो क्या जिस पर यातना की बात
सिद्ध हो गई, क्या आप निकाल
सकेंगे उसे जो नरक में है?

20. किन्तु जो अपने पालनहार से डरे
उन्हीं के लिये उच्च भवन हैं। जिन
के ऊपर निर्मित भवन हैं। प्रवाहित है
जिन में नहरें, यह अल्लाह का वचन
है। और अल्लाह वचन भंग नहीं करता।

21. क्या तुम ने नहीं देखा^[2] कि अल्लाह ने

أَلَاذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝

لَهُمْ مِنْ قُوَّتِهِ طَلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ قُوَّتِهِمْ طَلَلٌ
ذَلِكَ يَخَوْفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَهُ يُعْبَادُونَ فَاتَّقُوا ۝

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَن يَّعْبُدُوهَا
وَأَذْنَبُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝

الَّذِينَ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ يَنْتَبِعُونَ أَحْسَنَ أَوَّلِيكَ
الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ وَأُولَئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

أَفَمَن حَقَّ عَلَيْهِ كِتَابُ الْعَذَابِ أَتَنُتِفِدُ
مَنْ فِي النَّارِ ۝

لَكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا لَهُمْ عَرْقٌ مِّنْ قُوَّتِهِ عَرَقٌ
مَّيِّتَةٌ تَخْرُجُ مِنْ قُوَّتِهَا الْأَنْهَارُ وَعَدَّ اللَّهُ لَا يَخْلِفُ
اللَّهُ الْمِيعَادَ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعُ

1 अल्लाह के अतिरिक्त मिथ्या पूज्यों से।

2 इस आयत में अल्लाह के एक नियम की ओर संकेत है जो सब में समान रूप से
प्रचलित है। अर्थात् वर्षा से खेती का उगना और अनेक स्थितियों से गुजर कर
नाश हो जाना। इसे मतिमानों के लिये शिक्षा कहा गया है। क्योंकि मनुष्य की

उतारा आकाश से जल? फिर प्रवाहित कर दिये उस के स्रोत धरती में। फिर निकालता है उस से खेतियाँ विभिन्न रंगों की। फिर सूख जाती है, तो तुम देखते हो उन्हें पीली, फिर उसे चूर-चूर कर देता है। निश्चय इस में बड़ी शिक्षा है मतिमानों के लिये।

22. तो क्या खोल दिया हो अल्लाह ने जिस का सीना इस्लाम के लिये तो वह एक प्रकाश पर हो अपने पालनहार की ओर से। तो विनाश है जिन के दिल कड़े हो गये अल्लाह के स्मरण से वही खुले कुपथ में हैं।

23. अल्लाह ही है जिस ने सर्वोत्तम हदीस (कुरआन) को अवतरित किया है। ऐसी पुस्तक जिस की आयतें मिलती जुलती बार-बार दुहराई जाने वाली हैं। जिसे (सुन कर) खड़े हो जाते हैं उन के रूंगटे जो डरते हैं अपने पालनहार से। फिर कोमल हो जाते हैं उन के अंग तथा दिल अल्लाह के स्मरण कि ओर। यही है अल्लाह का मार्गदर्शन जिस के द्वारा वह संमार्ग पर लगा देता जिसे चाहता है। और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ दर्शक नहीं है।

24. तो क्या जो अपनी रक्षा करेगा अपने मुख^[1] से बुरी यातना से प्रलय के

فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُخَضَّعًا ثُمَّ يُجْعَلُ حُطَامًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَى لَأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَى نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانٍ تَشْتَرِي مِنْهُ جُلُودَ الْدِّينِ يَتَشَوَّنُ رِجَاهُمْ ثُمَّ تَلْبِينَ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُدَىٰ اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ۝

أَفَمَنْ يَتَّقِ يُوَفِّقْهُ سُبُوحَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ

भी यही दशा होती है। वह शिशु जन्म लेता है फिर युवक और बूढ़ा हो जाता है। और अन्ततः संसार से चला जाता है।

1. इस लियेकि उस के हाथ पीछे बंधे होंगे। वह अच्छा है या जो स्वर्ग के सुख में

दिन? तथा कहा जायेगा अत्याचारियों से: चखो जो तुम कर रहे थे।

وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٥﴾

25. झुठला दिया उन्होंने जो इन से पूर्व थे। तो आ गई यातना उन के पास जहाँ से उन्हें अनुमान (भी) न था।

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاتَّسُمُّوا الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

26. तो चखा दिया अल्लाह ने उन को अपमान संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना निश्चय अत्यधिक बड़ी है। क्या ही अच्छा होता यदि वह जानते।

فَأَذَاقَهُمُ اللَّهُ الْغُرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلِلْعَذَابِ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

27. और हम ने मनुष्य के लिये इस कुर्आन में प्रत्येक उदाहरण दिये है ताकि वह शिक्षा ग्रहण करे।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

28. अर्बी भाषा में कुर्आन जिस में कोई टेढ़ापन नहीं है, ताकि वह अल्लाह से डरे।

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٩﴾

29. अल्लाह ने एक उदाहरण दिया है एक व्यक्ति का जिस में बहुत से परस्पर विरोधी साझी हैं। तथा एक व्यक्ति पूरा एक व्यक्ति का (दास) है। तो क्या दशा में दोनों समान हो जायेंगे?⁽¹⁾ सब प्रशंसा अल्लाह के लिये है, बल्कि उन में से अधिकतर नहीं जानते।

صَرَفَ اللَّهُ مَثَلًا لِرَجُلَيْنِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ قُلٌّ يَتَّبِعِينَ مَثَلًا الْخِطْبَةِ بَيْنَ الْكُفْرِ وَالْإِيمَانِ ﴿٣٠﴾

30. (हे नबी!) निश्चय आप को मरना है तथा उन्हें भी मरना है।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ يَمُوتُونَ ﴿٣١﴾

होगा वह अच्छा है?

1 इस आयत में मिश्रणवादी और एकेश्वरवादी की दशा का वर्णन किया गया है कि मिश्रणवादी अनेक पूज्यों को प्रसन्न करने में व्याकुल रहता है। तथा एकेश्वरवादी शान्त हो कर केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और एक ही को प्रसन्न करता है।

31. फिर तुम सभी^[1] प्रलय के दिन अल्लाह के समक्ष झगड़ोगे।
32. तो उस से बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ बोले तथा सच्च को झूठलाये जब उस के पास आ गया? तो क्या नरक में नहीं है ऐसे काफिरों का स्थान?
33. तथा जो सत्य लाये^[2] और जिस ने उसे सच्च माना तो वही (यातना से) सुरक्षित रहने वाले है।
34. उन्हीं के लिये है जो वह चाहेंगे उन के पालनहार के यहाँ। और यही सदाचारियों का प्रतिफल है।
35. ताकि अल्लाह क्षमा कर दे जो कुकर्म उन्होंने किये हैं। तथा उन्हें प्रदान करे उन का प्रतिफल उन के उत्तम कर्मों के बदले जो वे कर रहे थे।
36. क्या अल्लाह पर्याप्त नहीं है अपने भक्त के लिये? तथा वह डराते है आप को उन से जो उस के सिवा है। तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो नहीं है उसे कोई सुपथ दर्शाने वाला।
37. और जिसे अल्लाह सुपथ दर्शा दे तो नहीं है उसे कोई कुपथ करने वाला। क्या नहीं है अल्लाह प्रभुत्वशाली

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

لِيَكْفِرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّتُكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

1 और वहाँ तुम्हारे झगड़े का निर्णय और सब का अन्त सामने आ जायेगा। इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मौत को सिद्ध किया गया है। जिस प्रकार (सूरह आले इमरान, आयत: 144, में आप की मौत का प्रमाण बताया गया है।

2 इस से अभिप्राय अन्तिम नबी जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) है।

बदला लेने वाला?

38. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। आप कहिये कि तुम बताओ जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो: यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या यह उस की हानि को दूर कर सकता है? अथवा मेरे साथ दया करना चाहे, तो क्या वह रोक सकता है उस की दया को? आप कह दें कि मुझे पर्याप्त है अल्लाह। और उसी पर भरोसा करते हैं भरोसा करने वाले।

39. आप कह दें कि हे मेरी जाति के लोगो! तुम काम करो अपने स्थान पर, मैं भी काम कर रहा हूँ। तो शीघ्र ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा।

40. कि किस के पास आती है ऐसी यातना जो उसे अपमानित कर दे तथा उतरती है किस के ऊपर स्थायी यातना?

41. वास्तव में हम ने ही अवतरित की है आप पर यह पुस्तक लोगों के लिये सत्य के साथ। तो जिस ने मार्गदर्शन प्राप्त कर लिया तो उस के अपने (लाभ के) लिये है। तथा जो कुपथ हो गया तो वह कुपथ होता है अपने ऊपर। तथा आप उन पर संरक्षक नहीं हैं।

42. अल्लाह ही खींचता है प्राणों को उन के मरण के समय, तथा जिस के

وَلَيْسَ سَاءَ لَهُمْ مَن خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
لَيَقُوْلَنَّ اللّٰهُ قُلْ اَنْتُمْ مِمَّنْ اَنْشَأْتُ
مِمَّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ
مَّا تَدْرِيْ بِرَحْمَةٍ مِّنْ مُّجِبَتِ قُلْ
مَنْ مَّيْلَتْ رَحْمَتِيْ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝

قُلْ يٰٓعٰمِلُوْا عَلٰى مَكَاَنَتِكُمْ اِنِّىْٓ اَعْمَلُ
مِمَّنْ تَعْمَلُوْنَ ۝

مَنْ يَّاتِيْهِ عَذَابٌ مُّجْتَرِبٌ وَّيَعُوْذُ عَلَيْهِ
مُقِيْمٌ ۝

اِنَّا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ الْفٰرِسِ بِالْحَقِّ فَمَنْ
اَهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ
عَلَيْهَا وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

اللّٰهُ يَتَوَكَّلُ الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّذِيْ لَمْ

मरण का समय नहीं आया उस की निद्रा में। फिर रोक लेता है जिस पर निर्णय कर दिया हो मरण का। तथा भेज देता है अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिये। वास्तव में इस में कई निशानियाँ हैं उन के लिये जो मनन-चिन्तन^[1] करते हों।

43. क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफारशी)? आप कह दें: क्या (यह सिफारिश करेंगे) यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समझ रखते हों?
44. आप कह दें कि अनुशंसा (सिफारिश) तो सब अल्लाह के अधिकार में है। उसी के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। फिर उसी की ओर तुम फिराये जाओगे।
45. तथा जब वर्णन किया जाता है अकेले अल्लाह का तो संकीर्ण होने लगते हैं उन के दिल जो ईमान नहीं रखते आखिरत^[2] पर। तथा जब वर्णन किया जाता है उन का जो उस के सिवा है तो वह सहसा प्रसन्न हो जाते हैं।

تَمُتْ فِي مَنَاسِمِهَا فَتَمِيتُكَ الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا
الْمَوْتُ وَيُرْسِلُ الْآخَرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ
كَانُوا إِلَّا يَنبَغِيكَونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۝

قُلْ لِلَّهِ الشُّفَاعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْبَحَتْ قُلُوبُ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن
دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝

1. इस आयत में बताया जा रहा है कि मरण तथा जीवन अल्लाह के नियंत्रण में है। निद्रा में प्राणों को खींचने का अर्थ है उन की संवेदन शक्ति को समाप्त कर देना। अतः कोई इस निद्रा की दशा पर विचार करे तो यह समझ सकता है कि अल्लाह मुर्दों को भी जीवित कर सकता है।
2. इस में मुशरिकों की दशा का वर्णन किया जा रहा है कि वह अल्लाह की महिमा और प्रेम को स्वीकार तो करते हैं फिर भी जब अकेले अल्लाह की महिमा तथा प्रशंसा का वर्णन किया जाता है तो प्रसन्न नहीं होते जब तक दूसरे पीरों-फकीरों तथा देवताओं के चमत्कार की चर्चा न की जाये।

46. (हे नबी!) आप कहें: हे अल्लाह आकाशों तथा धरती के पैदा करने वाले, परोक्ष तथा प्रत्यक्ष के ज्ञानी! तु ही निर्णय करेगा अपने भक्तों के बीच, जिस बात में वह झगड़ रहे थे।

47. और यदि उन का जिन्होंने अत्याचार किया है जो कुछ धरती में है सब हो जाये तथा उस के समान उस के साथ और आ जाये तो वह उसे दण्ड में दे देंगे^[1] घोर यातना के बदले प्रलय के दिन। तथा खुल जायेगी उन के लिये अल्लाह की ओर से वह बात जिसे वह समझ नहीं रहे थे।

48. तथा खुल जायेगी उन के लिये उन के करतूतों की बुराईयाँ। और उन्हें घेर लेगा जिस का वह उपहास कर रहे थे।

49. और जब पहुँचता है मनुष्य को कोई दुःख तो हमें पुकारता है। फिर जब हम प्रदान करते हैं कोई सुख अपनी ओर से, तो कहता है: यह तो मुझे प्रदान किया गया है ज्ञान के कारण। बल्कि यह एक परीक्षा है। किन्तु लोगों में से अधिकतर (इसे) नहीं जानते।

50. यही बात उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पूर्व थे। तो नहीं काम आया उन के जो कुछ वह कमा रहे थे।

51. फिर आ पड़े उन पर उन के सब कुकर्म, और जो अत्याचार किये

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِيمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ
فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَّ اللَّهُ مَا لَهُمْ
يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝

وَبَدَّ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا كَسَبُوا وَخَافَى بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا نَجَاتَهُ إِذَا خَوَّلَهُ
نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلِ هِيَ
فِتْنَةٌ وَلَكِنَ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

قَدْ قَالُوا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مَتَىٰ آخِذُنَا
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا

1 परन्तु वह सब स्वीकार्य नहीं होगा। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 48, तथा सूरह आले इमरान, आयत: 91)

हैं इन में से आ पड़ेंगे उन पर
(भी) उन के कुकर्म। तथा वह (हमें)
विवश करने वाले नहीं है।

مِنْ هَؤُلَاءِ سَيَصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَتَبُوا وَبِأَنفُسِهِمْ
يُسْجَرُونَ ﴿٥٠﴾

52. क्या उन्हें ज्ञान नहीं कि अल्लाह
फैलाता है जीविका जिस के लिये
चाहता है, तथा नाप कर देता है
(जिस के लिये चाहता है)? निश्चय
इस में कई निशानियाँ हैं उन लोगों
के लिये जो ईमान रखते हैं।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

53. आप कह दें मेरे उन भक्तों से
जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये
हैं कि तुम निराश^[1] न हो अल्लाह की
दया से। वास्तव में अल्लाह क्षमा कर
देता है सब पापों को। निश्चय वह
अति क्षमी दयावान् है।

ثُلٌّ يَجْعَلُ آلِي الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ
جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٢﴾

54. तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की
ओर, और आज्ञाकारी हो जाओ उस
के इस से पूर्व कि तुम पर यातना
आ जाये, फिर तुम्हारी सहायता न
की जाये।

وَإِنِّيَبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلُمُوْا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَأْتِيَكُمْ الْعَذَابُ كُمْ لَا تُخْصِرُونَ ﴿٥٣﴾

55. तथा पालन करो उस सर्वोत्तम
(कुर्आन) का जो अवतरित किया गया
है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालनहार की
ओर से इस से पूर्व कि आ पड़े तुम
पर यातना और तुम्हें ज्ञान न हो।

وَأَسْمِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مَنْ
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمْ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ
لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٤﴾

56. (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ لِّمَحْسَرَتِي عَلَى مَا ظَلَمْتُ فِي

1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास कुछ मुश्रिक आये जिन्होंने बहुत जानें मारी और बहुत व्यभिचार किये थे। और कहा: वास्तव में आप जो कुछ कह रहे हैं वह बहुत अच्छा है। तो आप बतायें कि हम ने जो कुकर्म किये हैं उन के लिये कोई कफ़ारा (प्रायश्चित्त) है? उसी पर फुर्कान की आयत 68 और यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4810)

हाय संताप! इस बात पर कि मैं ने आलस्य किया अन्नाह के पक्ष में, तथा मैं उपहास करने वालों में रह गया।

جَدُّكَ اللَّهُ وَإِنْ كُنْتُ لِمَنِ السَّخِرُونَ ﴿٦﴾

57. अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे सुपथ दिखाता तो मैं डरने वालों में से हो जाता।

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُمْتُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ﴿٤٦﴾

58. अथवा कहे जब देख ले यातना को,
कि यदि मुझे (संसार में) फिर कर
जाने का अवसर हो जाये तो मैं
अवश्य सदाचारियों में से हो जाऊँगा।

أَوْ تَقُولَ حَتَّى تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ فِي كَذِبٍ
فَأَكْفُرُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ⑤

59. हाँ, आई तुम्हारे पास मेरी निशानियाँ
तो तुम ने उन्हें झुठला दिया और
अभिमान किया तथा तुम थे ही
काफिरों में से।

بَلَىٰ قَدْ جَاءَ ثُكَّالُ الْإِيمِ فَلَذَّبْتُمْ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتُمْ
وَكُنْتُمْ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٥﴾

60. और प्रलय के दिन आप उन्हें देखेंगे जिन्होंने अन्नाह पर झूठ बोले कि उन के मुख काले होंगे। तो क्या नरक में नहीं है अभिमानियों का स्थान?

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ اللَّهِ
وُجُوهُهُم مُّسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۝

61. तथा बचा लेगा अन्नाह जो आज्ञाकारी रहे उन को उन की सफलता के साथ। नहीं लगेगा उन को कोई दुःख और न वह उदासीन होंगे।

وَيُخَيِّبُ اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَا فِيهِمْ لَا يَمَسُّهُمْ الشُّوْبُ وَلَا هُمْ يَخْرُتُونَ ﴿٥٠﴾

62. अब्राहम ही प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला तथा वही प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝

63. उसी के अधिकार में हैं आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ^[1] तथा जिन्होंने

لَهُمْ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

1. अर्थात् सब का विधाता तथा स्वामी वही है। वही सब की व्यवस्था करता है। और सब उसी के आधीन तथा अधिकार में है।

नकार दिया अल्लाह की आयतों को वही क्षति में है।

64. आप कह दें: तो क्या अल्लाह से अन्य की तुम मुझे इबादत (बंदना) करने का आदेश देते हो, है अज्ञानो?
65. तथा वही की गई है आप की ओर तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म। तथा आप हो जायेंगे^[1] क्षति ग्रस्तों में से।
66. बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (बंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।
67. तथा उन्होंने अल्लाह का सम्मान नहीं किया जैसे उस का सम्मान करना चाहिये था। और धरती पूरी उस की एक मुट्ठी में होगी प्रलय के दिन। तथा आकाश लपेटे हुये होंगे उस के हाथ^[2]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا هَؤُلَاءِ هُمْ الْخَيْرُونَ ۖ

قُلْ أَفَعَبَدُكُمْ مِثْلَ عِبَادَةِ اللَّهِ وَأَمْرًا مِثْلَ عِبَادَةِ اللَّهِ الْغَيْبُوتِ ۖ

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ أَنِ لَا تَسْرُكُوا لِلَّهِ لِيُخْطِئَ عَمَلُكُمْ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۖ

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا بِيَمِينِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمُوتُ مَطْوِيَاتٌ بِسِمِينِهِ ۚ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ

1. इस आयत का भावार्थ यह है कि यदि मान लिया जाये कि आप के जीवन का अन्त शिर्क पर हुआ, और क्षमा याचना नहीं की तो आप के भी कर्म नष्ट हो जायेंगे। हालाँकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और सभी नबी शिर्क से پاک थे। इसलिये कि उन का संदेश ही एकेश्वरवाद और शिर्क का खंडन है। फिर भी इस में संबोधित नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया। और यह साधारण नियम बताया गया कि शिर्क के साथ अल्लाह के हों कोई कर्म स्वीकार्य नहीं। तथा ऐसे सभी कर्म निष्फल होंगे जो एकेश्वरवाद की आस्था पर आधारित न हों। चाहे वह नबी हो या उस का अनुयायी हो।
2. हदीस में आता है कि एक यहूदी विद्वान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और कहा: हम अल्लाह के विषय में (अपनी धर्म पुस्तकों में) यह पाते हैं कि प्रलय के दिन आकाशों को एक उँगली, तथा भूमि को एक उँगली पर और पेड़ों को एक उँगली, जल तथा तरी को एक उँगली पर और समस्त उत्पत्ति को एक उँगली पर रख लेगा, तथा कहेगा: ((मैं ही राजा हूँ)) यह सुन

में। वह पवित्र तथा उच्च है उस शिर्क से जो वे कर रहे हैं।

68. तथा सूर (नरसिंघा) फूँका^[1] जायेगा तो निश्चेत हो कर गिर जायेंगे जो आकाशों तथा धरती में हैं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहे, फिर उसे पुनः फूँका जायेगा तो सहसा सब खड़े देख रहे होंगे।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصُيِقَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ بِهِ أُخْرَىٰ وَإِذَا هُمْ بِأَمْرِ يُنْظَرُونَ ﴿٦٨﴾

69. तथा जगमगाने लगेगी धरती अपने पालनहार की ज्योती से। और परस्तुत किये जायेंगे कर्म लेख तथा लाया जायेगा नबियों और साक्षियों को। तथा निर्णय किया जायेगा उन के बीच सत्य (न्याय) के साथ, और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِئَتْ بِالشَّاهِدِينَ وَالشُّهَدَاءُ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

70. तथा पूरा-पूरा दिया जायेगा प्रत्येक जीव को उस का कर्मफल तथा वह भली-भाँति जानने वाला है उस को जो वह कर रहे हैं।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾

71. तथा हाँके जायेंगे जो काफिर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वह उस के पास

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ مُرَاغِبِينَ إِذَا جَاءُوهَا فَصَبَحَتْ أِبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

कर आप हँस पड़े। और इसी आयत को पढ़ा। (सहीह बुखारी, हदीस: 4812, 6519, 7382, 7413)

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: दूसरी फूँक के पश्चात् सब से पहले मैं सिर उठाऊँगा। तो मूसा अर्श पकड़े हुये खड़े होंगे। मुझे ज्ञान नहीं कि वह ऐसे ही रह गये थे, या फूँकने के पश्चात् मुझ से पहले उठ चुके होंगे। (सहीह बुखारी: 4813)

दूसरी हदीस में है कि दोनों फूँकों के बीच चालीस की अवधि होगी। और मनुष्य की दुमची की हड्डी के सिवा सब सड़ जायेगा। और उसी से उस को फिर बनाया जायेगा। (सहीह बुखारी: 4814)

आयेंगे तो खोल दिये जायेंगे उस के द्वार। तथा उन से कहेंगे उस के रक्षक (फरिश्ते): क्या नहीं आये तुम्हारे पास रसूल तुम में से जो तुम्हें सुनाते तुम्हारे पालनहार की आयतें तथा सचेत करते तुम्हें इस दिन का सामना करने से? वह कहेंगे: क्यों नहीं। परन्तु सिद्ध हो गया यातना का शब्द काफ़िरोँ पर।

72. कहा जायेगा कि प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो बुरा है घमंडियों का निवास स्थान।

73. तथा भेज दिये जायेंगे जो लोग डरते रहे अपने पालनहार से स्वर्ग की ओर झुण्ड बना कर। यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे उस के पास तथा खोल दिये जायेंगे उस के द्वार और कहेंगे उन से उस के रक्षक: सलाम है तुम पर, तुम प्रसन्न रहो। तुम प्रवेश कर जाओ उस में सदावासी हो कर।

74. तथा वह कहेंगे: सब प्रशंसा अब्बाह के लिये है जिस ने सच्च कर दिया हम से अपना वचन। तथा हमें उत्तराधिकारी बना दिया इस धरती का हम रहें स्वर्ग में जहाँ चाहें। क्या ही अच्छा है कार्य कर्ताओं⁽¹⁾ का प्रतिफल।

75. तथा आप देखेंगे फरिश्तों को घरे हुये अर्श (सिंहासन) के चतुर्दिक वह पवित्रतागान कर रहे होंगे अपने

أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمُ الْآيَاتِ
رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا
بَلَىٰ وَلَٰكِن حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

قِيلَ ادْخُلُوا الْبُؤَابَٰ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا
ۚ هَٰذَا مَثْوًى الشَّاكِرِينَ ۝

وَسَيُنَادِيَنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْبَيْتَةِ زُمْرًا مَّحْتَمِينَ
إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ
خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طَابَ لَكُمْ مَا كُنْتُمْ
عَمَلِينَ ۝

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ
وَأَوْثَرَ لَنَا الْأَرْضَ وَنَجَّىٰ نَسَبَنَا مِنَ الْغَيْثِ وَنَجَّىٰ
نَسَبَنَا فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝

وَرَوَى الْمَلَائِكَةُ حَافِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَأَوْفَىٰ بِذَنبِهِمْ بِالنَّحْيِ

1 अर्थात् एकेश्वरवादी सदाचारियों का।

पालनहार की प्रशंसा के साथ।
तथा निर्णय कर दिया जायेगा लोगों
के बीच सत्य के साथ। तथा कह
दिया जायेगा कि सब प्रशंसा अब्बाह
सर्वलोक के पालनहार के लिये है।^[1]

وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

1 अर्थात् जब ईमान वाले स्वर्ग में और मुशरिक नरक में चले जायेंगे तो उस समय का चित्र यह होगा कि अब्बाह के अर्श को फरिश्ते हर ओर से घेरे हुये उस की पवित्रता तथा प्रशंसा का गान कर रहे होंगे।

सूरह मुमिन - 40

سُورَةُ الْمُؤْمِنِينَ

सूरह मुमिन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 85 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत नं० 28 में एक मुमिन व्यक्ति की कथा का वर्णन किया गया है जिस ने फिरऔन के दरबार में मूसा (अलैहिस्सलाम) का खुल कर साथ दिया था। इसलिये इस का नाम सूरह मुमिन रखा गया है।
- इस सूरह का दूसरा नाम (सूरह गाफिर) भी है। क्योंकि इस की आयत नं० 3 में (गाफिरुज्जम्ब) अर्थात: (पाप क्षमा करने वाला) का शब्द आया है।
- इस की आरंभिक आयतों में उस अल्लाह के गुण बताये गये हैं जिस ने कुर्आन उतारा है। फिर आयत 4 से 6 तक उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है जो अल्लाह की आयतों में विवाद खड़ा करते हैं।
- आयत 7 से 9 तक ईमान वालों को यह शुभसूचना सुनाई गई है कि फ़रिश्ते उन की क्षमा के लिये दुआ करते हैं। इस के पश्चात् काफ़िरों और मुश्रिकों को सावधान किया गया है। और उन्हें शिक्षा दी गई है।
- आयत 23 से 46 तक मूसा (अलैहिस्सलाम) के विरुद्ध फिरऔन के विवाद और एक मुमिन के मूसा (अलैहिस्सलाम) का भरपूर साथ देने तथा फिरऔन के परिणाम को विस्तार के साथ बताया गया है। फिर उन को सावधान किया गया जो अंधे हो कर बड़े बनने वालों के पीछे चलते हैं और ईमान वालों को साहस दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के धर्म में विवाद करने वालों को सावधान करते हुये कुफ़्र तथा शिर्क के बुरे परिणाम से सचेत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।

لَحَوٍّ

2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह की
ओर से है जो सब चीज़ों और गुणों

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

को जानने वाला है।

3. पाप क्षमा करने, तौबा स्वीकार करने, क्षमायाचना का स्वीकारी, कड़ी यातना देने वाला, समाई वाला जिस के सिवा कोई (सच्चा) बंदनीय नहीं। उसी की ओर (सब को) जाना है।
4. नहीं झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में उन के सिवा जो काफिर हो गये। अतः धोखे में न डाल दे आप को उन की यातायात देशों में।
5. झुठलाया इन से पूर्व नूह की जाति ने तथा बहुत से समुदायों ने उन के पश्चात्, तथा विचार किया प्रत्येक समुदाय ने अपने रसूल को बंदी बना लेने का। तथा विवाद किया असत्य के सहारे, ताकि असत्य बना दें सत्य को। तो हम ने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही हमारी यातना?
6. और इसी प्रकार सिद्ध हो गई आप के पालनहार की बात उन पर जो काफिर हो गये कि वही नारकी है।
7. वह (फ़रिश्ते) जो अपने ऊपर उठाये हुये हैं अर्श (सिंहासन) को तथा जो उस के आस पास हैं वह पवित्रतागान करते रहते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ। तथा उस पर ईमान रखते हैं और क्षमा याचना करते रहते हैं उन के लिये जो ईमान लाये हैं।¹ हे

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّلَاقِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَهُ الْمُسْلِمِينَ ۝

مَا يَجْعَلُونَ فِي آلِهِ آلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْفِرُكَ تَعْلِبُهُمْ فِي الْيَلَامِ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَاءُوا بِالبِاطِلِ لِيُذْخِرُوا بِهِ الْحَقُّ فَأَخَذْتَهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

1 यहाँ फ़रिश्तों के दो गिरोह का वर्णन किया गया है। एक वह जो अर्श को उठाये हुया है। और दूसरा वह जो अर्श के चारों ओर घूम कर अल्लाह की प्रशंसा का गान और ईमान वालों के लिये क्षमायाचना कर रहा है।

हमारे पालनहार! तू ने घेर रखा है
प्रत्येक वस्तु को (अपनी) दया तथा ज्ञान
से। अतः क्षमा कर दे उन को जो क्षमा
माँगें, तथा चलें तेरे मार्ग पर तथा
बचा ले उन्हें नरक की यातना से।

8. हे हमारे पालनहार! तथा प्रवेश कर
दे उन्हें उन स्थाई स्वर्गों में जिन का
तू ने उन को वचन दिया है। तथा
जो सदाचारी हैं उन के पूर्वजों तथा
पत्नियों और उन की संतानों में से।
निश्चय तू सब चीजों और गुणों को
जानने वाला है।

9. तथा उन्हें सुरक्षित रख दुष्कर्मों से,
तथा तू ने जिसे बचा दिया दुष्कर्मों से
उस दिन, तो दया कर दी उस पर।
और यही बड़ी सफलता है।

10. जिन लोगों ने कुफ़ किया है उन्हें
(प्रलय के दिन) पुकारा जायेगा कि
अब्राह का क्रोध तुम पर उस से
अधिक था जितना तुम्हें (आज) अपने
ऊपर क्रोध आ रहा है जब तुम
(संसार में) ईमान की ओर बुलाये^[1]
जा रहे थे।

11. वे कहेंगे: हे हमारे पालनहार! तू ने
हमें दो बार मारा^[2] तथा जीवित

رَبَّنَا وَأَدْخِلْنَاهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ
وَدُرَرِيَّتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ
فَعَدَا رِجْمَتَهُ ۚ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

إِنَّ السَّيِّئِينَ كَفَرُوا وَأَيْنَادُونَ لَمَقَّتْ اللَّهُ
أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى
الْإِيمَانِ تَكْفُرُونَ ۝

قَالُوا رَبَّنَا أَمَكَّنَا السَّيِّئِينَ وَأَحْيَيْنَا السَّيِّئِينَ

1 आयत का अर्थ यह है कि जब काफ़िर लोग प्रलय के दिन यातना देखेंगे तो अपने ऊपर क्रोधित होंगे। उस समय उन से पुकार कर यह कहा जायेगा कि जब संसार में तुम्हें ईमान की ओर बुलाया जाता था फिर भी तुम कुफ़र करते थे तो अब्राह का इस से अधिक क्रोध होता था जितना आज तुम्हें अपने ऊपर हो रहा है।

2 देखिये: सूरह बक्रा, आयत: 28।

(भी) दो बार किया। अतः हम ने मान लिया अपने पापों को। तो क्या (यातना से) निकलने की कोई राह (उपाय) है?

12. (यह यातना) इस कारण है कि जब तुम्हें (संसार में) बुलाया गया अकेले अल्लाह की ओर तो तुम ने कुफ़र कर दिया। और यदि शिकं किया जाता उस के साथ तो तुम मान लेते थे। तो आदेश देने का अधिकार अल्लाह को है जो सर्वोच्च सर्वमहान् है।
13. वही दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ तथा उतारता है तुम्हारे लिये आकाश से जीविका। और शिक्षा ग्रहण नहीं करता परन्तु वही जो (उस की ओर) ध्यान करता है।
14. तो तुम पुकारो अल्लाह को शुद्ध कर के उस के लिये धर्म को यद्यपि बुरा लगे काफ़िरों को।
15. वह उच्च श्रेणियों वाला अर्श का स्वामी है। वह उतारता है अपने आदेश से रूह^[1] (बह्नी) को जिस पर चाहता है अपने भक्तों में से। ताकि वह सचेत करे मिलने के दिन से।
16. जिस दिन सब लोग (जीवित हो कर) निकल पड़ेंगे। नहीं छुपी होगी अल्लाह पर उन की कोई चीज़। किस का राज्य है आज?^[2] अकेले

فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ﴿١٠﴾

ذَلِكَ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ وَلَنْ يُتْرَكَ بِهِ تَوَلَّوْا وَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١١﴾

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ﴿١٢﴾

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٣﴾

رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٤﴾

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ لَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٥﴾

1 यहाँ बह्नी को रूह कहा गया है क्यों कि जिस प्रकार रूह (आत्मा) मनुष्य के जीवन का कारण होती है वैसे ही प्रकाशना भी अन्तरात्मा को जीवित करती है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन। (सहीह बुखारी: 4812)

प्रभुत्वशाली अल्लाह का।

17. आज प्रतिकार दिया जायेगा प्रत्येक प्राणी को उस के करतूत का। कोई अत्याचार नहीं है आज। वास्तव में अल्लाह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है।
18. तथा आप सावधान कर दें उन को आगामी समीप दिन से जब दिल मुँह को आ रहे होंगे। लोग शोक से भरे होंगे। नहीं होगा अत्याचारियों का कोई मित्र न कोई सिफारशी जिस की बात मानी जाये।
19. वह जानता है आँखों की चोरी तथा जो (भेद) सीने छुपाते हैं।
20. अल्लाह ही निर्णय करेगा सत्य के साथ। तथा जिन को वह पुकारते हैं अल्लाह के अतिरिक्त वह कोई निर्णय नहीं कर सकते। निश्चय अल्लाह ही भली-भाँति सुनने-देखने वाला है।
21. क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो इन से पूर्व थे? वह इन से अधिक थे बल में तथा अधिक चिन्ह छोड़ गये धरती में। तो पकड़ लिया अल्लाह ने उन को उन के पापों के कारण, और नहीं था उन के लिये अल्लाह से कोई बचाने वाला।
22. यह इस कारण हुआ कि उन के पास लाते थे हमारे रसूल खुली निशानियाँ, तो उन्होंने कुफ्र किया। अन्ततः पकड़ लिया उन्हें अल्लाह ने। वस्तुतः वह अति

الْيَوْمَ تُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

وَأَنذَرَهُمْ يَوْمَ الْأَرْفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاطِطِينَ ؕ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُونَ ۝

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تُرَابُهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَآخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

शक्तिशाली घोर यातना देने वाला है।

23. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों और हर प्रकार के प्रामाण के साथ।

24. फिरऔन और (उस के मंत्री) हामान तथा कारून के पास। तो उन्होंने ने कहा: यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।

25. तो जब वह उन के पास सत्य लाया हमारी ओर से तो सब ने कहा: बध कर दो उन के पुत्रों को जो ईमान लाये हैं उस के साथ, तथा जीवित रहने दो उन की स्त्रियों को। और काफिरों का षड्यंत्र निष्फल (व्यर्थ) ही हुआ।^[1]

26. और कहा फिरऔन ने (अपने प्रमुखों से): मुझे छोड़ो, मैं बध कर दूँ मूसा को। और उसे चाहिये कि पुकारे अपने पालनहार को। वास्तव में मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारे धर्म को।^[2] अथवा पैदा कर देगा इस धरती (मिस्र) में उपद्रव।

27. तथा मूसा ने कहा: मैं ने शरण ली है अपने पालनहार तथा तुम्हारे पालनहार की प्रत्येक अहंकारी से जो ईमान नहीं रखता हिसाब के दिन पर।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۚ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ۝

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بَيُّومِ الْحِسَابِ ۝

1 अर्थात् फिरऔन और उस की जाति का। जब मूसा (अलैहिस्सलाम) और उन की जाति बनी इस्राईल को कोई हानि नहीं हुई। इस से उन की शक्ति बढ़ती ही गई यहाँ तक कि वह पवित्र स्थान के स्वामी बन गये।

2 अर्थात् शिर्क तथा देवी-देवता की पूजा से रोक कर एक अल्लाह की इबादत में लगा देगा। जो उपद्रव तथा अशान्ति का कारण बन जायेगा और देश हमारे हाथ से निकल जायेगा।

28. तथा कहा एक ईमान वाले व्यक्ति ने फिरऔन के घराने के, जो छुपा रहा था अपना ईमान: क्या तुम बध कर दोगे एक व्यक्ति को कि वह कह रहा है: मेरा पालनहार अल्लाह है? जब कि वह तुम्हारे पास लाया है खुली निशानियाँ तुम्हारे पालनहार की ओर से? और यदि वह झूठा हो तो उसी के ऊपर है उन का झूठा। और यदि सच्चा हो तो आ पड़ेगा वह कुछ जिसकी तुम्हें धमकी दे रहा है। वास्तव में अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता उसे जो उल्लंघनकारी बहुत झूठा हो।

29. हे मेरी जाति के लोगो! तुम्हारा राज्य है आज, तुम प्रभावशाली हो धरती में, तो कौन हमारी रक्षा करेगा अल्लाह की यातना से यदि वह हम पर आ जाये? फिरऔन ने कहा: मैं तुम सब को वही समझा रहा हूँ जिसे मैं उचित समझता हूँ और तुम्हें सीधी ही राह दिखा रहा हूँ।

30. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मैं तुम पर डरता हूँ (अगले) समुदायों के दिन जैसे (दिन^[1]) से।

31. नूह की जाति की जैसी दशा से, तथा आद और समूद की एवं जो उन के पश्चात् हुये। तथा अल्लाह नहीं चाहता कोई अत्याचार भक्तों के लिये।

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

يَقَوْمِ لَكُمْ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَهَرْنَا فِي الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنَ بَنِي الْأَعْدَاءِ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَئِذٍ آلِ فِرْعَوْنَ أَنَّهُمْ عَلَيَّ كُفْرًا كَمَا عَلَيَّ الْيَوْمَ الْأَوَّلِ ۝

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثمودَ الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ۝

1 अर्थात् उन की यातना के दिन जैसे दिन से।

32. तथा हे मेरी जाति! मैं डर रहा हूँ
तुम पर एक - दूसरे को पुकारने के
दिन^[1] से।

وَيَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ ۝

33. जिस दिन तुम पीछे फिर कर
भागोगे, नहीं होगा तुम्हें अल्लाह से
कोई बचाने वाला। तथा जिसे अल्लाह
कुपथ कर दे तो उस का कोई पथ
प्रदर्शक नहीं।

يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُذْهِبِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ
وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

34. तथा आये यूसुफ तुम्हारे पास इस
से पूर्व खुले प्रमाणों के साथ, तो
तुम बराबर संदेह में रहे उस से जो
तुम्हारे पास लाये। यहाँ तक कि जब
वह मर गये तो तुम ने कहा कि
कदापि नहीं भेजेगा अल्लाह उन के
पश्चात् कोई रसूल^[2] इसी प्रकार
अल्लाह कुपथ कर देता है। उसे जो
उल्लंघनकारी डाँवाडोल हो।

وَلَقَدْ جَاءَكَ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ بِالْبَيِّنَاتِ قَبَا
رِلْهُنَّ فِي شَاكٍ مِمَّا جَاءَكَ يُرِيهِمْ حَتَّى إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ
لَنْ نَبْعَثَ اللَّهَ مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا كَذَلِكَ يُضِلُّ
اللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِئٌ مُرَبِّبٌ ۝

35. जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में
बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो उन के
पास आया हो। तो यह बड़े क्रोध की
बात है अल्लाह के समीप तथा उन के
समीप जो ईमान लाये हैं। इसी प्रकार
अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक
अहंकारी अत्याचारी के दिल पर।

إِلَّا الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ وَيَخْتَلِفُونَ
كِبْرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ
يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُنْكَرٍ جِتَارٍ ۝

36. तथा कहा फिरऔन ने कि हे हामान!
मेरे लिये बना दो एक उच्च भवन,
संभवतः मैं उन मार्गों तक पहुँच सकूँ।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَاسِنُ إِنِّي صَرَحًا لَعَلِّي آتِلُهُ
الْأَسْبَابَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन से जब भय के कारण एक-दूसरे को पुकारेंगे।

2 अर्थात् तुम्हारा आचरण ही प्रत्येक नबी का विरोध रहा है। इसीलिये तुम समझते थे कि अब कोई रसूल नहीं आयेगा।

37. आकाश के मार्गों तक ताकि मैं देखूँ मुसा के पज्य (उपास्य) को। और निश्चय मैं उसे झूठा समझ रहा हूँ। और इसी प्रकार शोभनीय बना दिया गया फिरऔन के लिये उस का दुष्कर्म तथा रोक दिया गया संमार्ग से। और फिरऔन का षड्यंत्र विनाश ही में रहा।

38. तथा उस ने कहा जो ईमान लाया: हे मेरी जाति! मेरी बात मानो, मैं तुम्हें सीधी राह बता रहा हूँ।

39. हे मेरी जाति! यह संसारिक जीवन कुछ साम्यिक लाभ है। तथा वास्तव में प्रलोक ही स्थायी निवास है।

40. जिस ने दुष्कर्म किया तो उस को उसी के समान प्रतिकार दिया जायेगा। तथा जो सुकर्म करेगा नर अथवा नारी में से और वह ईमान वाला (एकेश्वरवादी) हो तो वही प्रवेश करेंगे स्वर्ग में। जीविका दिये जायेंगे उस में अगणित।

41. तथा हे मेरी जाति! क्या बात है कि मैं बुला रहा हूँ तुम्हें मुक्ति की ओर तथा तुम बुला रहे हो मुझे नरक की ओर।

42. तुम मुझे बुला रहे हो ताकि मैं कुफ़्र करूँ अल्लाह के साथ और साझी बनाऊँ उस का उसे जिस का मुझे कोई ज्ञान नहीं है। तथा मैं बुला रहा हूँ तुम्हें प्रभावशाली अति क्षमी की ओर।

43. निश्चित है कि तुम जिस की ओर

أَسْبَابَ السَّمُوتِ فَأَطِيعَ إِلَى الْوُثْنِ وَإِنِّي
لَكَاظِمَةٌ كَذَلِكَ لِيَمْنَعُكَ يُرِيدُونَ سَوْءَ عَمَلِهِمْ
وَصَدَّ عَنِ السَّبِيلِ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي
نِيَابٍ ۝

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ الرَّسُولِ أَهْدَيْكُمْ سَبِيلَ
الرَّشَادِ ۝

يَقُومُ إِنَّمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ
الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْمَوْنَ فِيهَا
بِعُشْرِ حِسَابٍ ۝

وَيَقُومُ مَا لِي أَدْعُوكُمْ إِلَى التَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي
إِلَى النَّارِ ۝

تَدْعُونَنِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ
بِي بِهِ جَاهِلٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْعَظِيمِ ۝

لَا جُورَ لِمَنْ تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي

मुझे बुला^[1] रहे हो वह पुकारने योग्य नहीं है न लोक में न परलोक में। तथा हमें जाना है अल्लाह ही की ओर, तथा वास्तव में अतिक्रमी ही नारकी हैं।

الَّذِينَ لَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْ مَّرْكَا إِلَى اللَّهِ
وَأَنْ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ

44. तो तुम याद करोगे जो मैं कह रहा हूँ, तथा मैं समर्पित करता हूँ अपना मामला अल्लाह को। वास्तव में अल्लाह देख रहा है भक्तों को।

مَنْتَ لَكُمْ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَقُولُ إِلَى
اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِصِيرٍ بِالْبَيِّنَاتِ

45. तो अल्लाह ने उसे सुरक्षित कर दिया उन के षडयंत्र की बुराईयों से। और घेर लिया फिरऔनियों को बुरी यातना ने।

قَوْلُهُ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكْرُوا وَحَقَّ
بِالْفِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ

46. वे^[2] प्रस्तुत किये जाते हैं अग्नि पर प्रातः तथा संध्या। तथा जिस दिन प्रलय स्थापित होगी (यह आदेश होगा) कि डाल दो फिरऔनियों को कड़ी यातना में।

النَّارِ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ
تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ
أَشَدَّ الْعَذَابِ

47. तथा जब वह झगड़ेंगे अग्नि में, तो कहेंगे निर्बल उन से जो बड़े बन कर रहे: हम तुम्हारे अनुयायी थे, तो क्या तुम दूर करोगे हम से अग्नि का कुछ भाग?

وَأَذِيتَ تَجْعَلُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضَّعِيفُ
لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَقُلْ أَنْتُمْ تُعَذِّبُونَ عَمَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ

48. वे कहेंगे जो बड़े बन कर रहे: हम सब इसी में हैं। अल्लाह निर्णय कर

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا إِنَّ اللَّهَ

1 क्योंकि लोक तथा परलोक में कोई सहायता नहीं कर सकते। (देखिये: सूरह फातिर, आयत: 140, तथा सूरह अहकाफ, आयत: 5)

2 हदीस में है कि जब तुम में से कोई मरता है तो (कब्र में) उस पर प्रातः संध्या उस का स्थान प्रस्तुत किया जाता है। (अर्थात् स्वर्गी है तो स्वर्ग और नारकी है तो नरक)। और कहा जाता है कि यही प्रलय के दिन तेरा स्थान होगा। (सहीह बुखारी: 1379, मुस्लिम: 2866)

चुका है भक्तों (बंदों) के बीच।

قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝

49. तथा कहेंगे जो अग्नि में हैं नरक के रक्षकों से: अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि हम से हल्की कर दे किसी दिन कुछ यातना।

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۝

50. वह कहेंगे: क्या नहीं आये तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुले प्रमाण ले कर? वे कहेंगे क्यों नहीं। वह कहेंगे तो तुम ही प्रार्थना करो। और काफ़िरो की प्रार्थना व्यर्थ ही होगी।

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ قَالَ الْوَائِلِيُّ قَالَ أُو۟لَٔئِكَ أَدْعَاؤُهُمْ مَا دُعُوا ۚ الْكَافِرِينَ ۚ أَإِلَٰهٌ إِلَّا هُوَ ۚ

51. निश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लायें, संसारिक जीवन में, तथा जिस दिन^[1] साक्षी खड़े होंगे।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝

52. जिस दिन नहीं लाभ पहुँचायेगी अत्याचारियों को उन की क्षमा याचना। तथा उन्हीं के लिये धिक्कार और उन्हीं के लिये बुरा घर है।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعُونَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝

53. तथा हम ने प्रदान किया मूसा को मार्ग दर्शन और हम ने उत्तराधिकारी बनाया इस्राईल की संतान को पुस्तक (तौरात) का।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَٰءِيلَ الْكِتَابَ ۝

54. जो मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी समझ वालों के लिये।

هُدًى وَذِكْرَىٰ لِأُولَى الْأَلْبَابِ ۝

55. तो (हे नबी!) आप धैर्य रखें। वास्तव में अब्राह का वचन^[2] सत्य है। तथा

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ

1 अर्थात् प्रलय के दिन, जब अम्बिया और फ़रिश्ते गवाही देंगे।

2 नबियों की सहायता करने का।

क्षमा माँगें अपने पाप^[1] की। तथा पवित्रता का वर्णन करते रहें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ संध्या और प्रातः।

56. वास्तव में जो झगड़ते हैं अल्लाह की आयतों में बिना किसी प्रमाण के जो आया^[2] हो उन के पास, तो उन के दिलों में बड़ाई के सिवा कुछ नहीं है, जिस तक वह पहुँचने वाले नहीं हैं। अतः आप अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

57. निश्चय आकाशों तथा धरती को पैदा करना अधिक बड़ा है मनुष्य को पैदा करने से। परन्तु अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।^[3]

58. तथा समान नहीं होता अंधा तथा आँख वाला। और न जो ईमान लाये और सत्कर्म किये हैं और दुष्कर्मी। तुम (बहुत) कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।

59. निश्चय प्रलय आनी ही है। जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

60. तथा कहा है तुम्हारे पालनहार ने कि

لَذُنُوبِكَ وَتَنَزَّ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ يَعْمُرُونَ
سُلْطٰنٍ اٰتٰهُمْ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلٰكِبٌ
مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ فَاَسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
اِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيْرُ ۝

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْاَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ
النَّاسِ وَاللَّيْلِ اَكْبَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَلْمِزْكُمْ اَمَّا تَعْلَمُوْنَ ۝

إِنَّ السَّاعَةَ لَا يَتْلٰهُ اَرَبٌ يِّنْهَا وَلَٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۝

1 अर्थात् भूल-चूक की। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मैं दिन में 70 बार क्षमा माँगता हूँ। और 70 बार से अधिक तौबा करता हूँ। (सहीह बुखारी: 6307)

जब कि अल्लाह ने आप को निर्दोष (मासूम) बनाया है।

2 अर्थात् बिना किसी ऐसे प्रमाण के जो अल्लाह की ओर से आया हो। उन के सब प्रमाण वे हैं जो उन्होंने अपने पूर्वजों से सीखे हैं। जिन की कोई वास्तविकता नहीं है।

3 और मनुष्य के पुनः जीवित किये जाने का इन्कार करते हैं।

मुझी से प्रार्थना^[1] करो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। वास्तव में जो अभिमान (अहंकार) करेंगे मेरी इबादत (बंदना-प्रार्थना) से तो वह प्रवेश करेंगे नरक में अपमानित हो कर।

إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ ذُخْرَيْنَ ۖ

61. अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये रात्रि बनाई ताकि तुम विश्राम करो उस में, तथा दिन को प्रकाशमान बनाया^[2] वस्तुतः अल्लाह बड़ा उपकारी है लोगों के लिये किन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهَا
وَالنَّهَارَ مُبْهِرًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

62. यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, प्रत्येक वस्तु का रचयिता, उत्पत्तिकार। नहीं है कोई (सच्चा) बंदनीय उस के सिवा, फिर तुम कहाँ बहके जाते हो?

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَإَنَّى تُؤْفَكُونَ ۝

63. इसी प्रकार बहका दिये जाते हैं वह जो अल्लाह की आयतों को नकारते हैं।

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا يَآئِبُونَ اللَّهَ
بِجَعْدُونِ ۝

64. अल्लाह ही है जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को निवास स्थान तथा आकाश को छत, और तुम्हारा रूप बनाया तो सुन्दर रूप बनाया। तथा तुम्हें जीविका प्रदान की स्वच्छ चीजों से। वही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, तो शुभ है अल्लाह सर्वलोक का पालनहार।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ
بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ
رَبُّكُمْ فَتَبَرَّكُ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝

65. वह जीवित है, कोई (सच्चा) बंदनीय नहीं है उस के सिवा। अतः विशेष रूप

هُوَ الْحَيُّ لَّا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ

1 हदीस में है कि प्रार्थना ही बंदना है। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यही आयत पढ़ी। (तिर्मिज़ी: 2969) इस हदीस की सनद हसन है।

2 ताकि तुम जीविका प्राप्त करने के लिये दौड़ धूप करो।

से उस की इबादत करते हुये उसी को पुकारो। सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार अल्लाह के लिये है।

66. आप कह दें निश्चय मुझे रोक दिया गया है कि इबादत करूँ उन की जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा जब आ गये मेरे पास खुले प्रमाण। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सर्वलोक के पालनहार का आज्ञाकारी रहूँ।

67. वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर वीर्य से, फिर बंधे रक्त से, फिर तुम्हें निकालता है (गर्भाशयों से) शिशु बना कर। फिर बड़ा करता है ताकि तुम अपनी पूरी शक्ति को पहुँचो। फिर बूढ़े हो जाओ तथा तुम में कुछ इस से पहले ही मर जाते हैं और यह इसलिये होता है ताकि तुम अपनी निश्चित आयु को पहुँच जाओ, तथा ताकि तुम समझो।^[1]

68. वही है जो तुम्हें जीवन देता तथा मारता है फिर जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो कहता है: ((हो जा)) तो वह हो जाता है।

69. क्या आप ने नहीं देखा कि जो झगड़ते^[2] है अल्लाह की आयतों में, वह कहाँ बहकाये जा रहे है?

لَهُ الدِّينَ الْحَمْدُ يَلُو رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تَرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّ كُمُ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوعًا ۚ وَمِنْكُمْ مَنْ يَمُوتُ مِنْ قَبْلٍ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى ۚ وَلَكُمْ تَعْقِيلُونَ ۝

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَخَادِلُونَ فِي آلِ اللَّهِ إِلَىٰ يُضَرُّونَ ۝

1 अर्थात तुम यह समझो कि जो अल्लाह तुम्हें अस्तित्व में लाता है तथा गर्भ से लेकर आयु पूरी होने तक तुम्हारा पालन-पोषण करता है तुम स्वयं अपने जीवन और मरण के विषय में कोई अधिकार नहीं रखते तो फिर तुम्हें बंदना भी उसी एक की करनी चाहिये। यही समझ-बूझ का निर्णय है।

2 अर्थात अल्लाह की आयतों का विरोध करते हैं।

70. जिन्हों ने झूठला दिया पुस्तक को और उसे जिस के साथ हम ने भेजा अपने रसूलों को, तो शीघ्र ही वह जान लेंगे।
71. जब तौक होंगे उन के गलों में तथा बेड़ियाँ, वह खींचे जायेंगे।
72. खौलते पानी में फिर अग्नि में झोंक दिये जायेंगे।
73. फिर कहा जायेगा उन से: कहाँ हैं वह जिन्हें तुम साझी बना रहे थे।
74. अब्राह के सिवा? वह कहेंगे कि वह खो गये हम से, बल्कि हम नहीं पुकारते थे इस से पूर्व किसी चीज़ को, इसी प्रकार अब्राह कुपथ कर देता है काफ़िरो को।
75. यह यातना इसलिये है कि तुम धरती में अबैध इतराते थे, तथा इस कारण कि तुम अकड़ते थे।
76. प्रवेश कर जाओ नरक के द्वारों में सदावासी हो कर उस में। तो बुरा स्थान है अभिमानियों का।
77. तो आप धैर्य रखें निश्चय अब्राह का वचन सत्य है। फिर यदि आप को दिखा दें उस (यातना) में से जिस का उन्हें वचन दे रहे हैं, या आप का निधन कर दें तो वह हमारी ओर ही फेरे जायेंगे।^[1]
78. तथा (हे नबी!) हम भेज चुके हैं बहुत से रसूलों को आप से पूर्व जिन

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِهِاءُ أَرْسَلْنَا بِهِ
رُسُلَنَا فَتُؤْتُونَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

إِذَا الْأَغْصَانُ فِيْ أَعْنَاقِهِمْ وَالشَّيْلُ
يُسَبَّحُونَ ﴿٧١﴾

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ
نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ
الْكَاذِبِينَ ﴿٧٤﴾

ذَلِكَ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ ﴿٧٥﴾

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا فَبَشِّرْ
مَشْغُورِي الْمُنكَرِ ﴿٧٦﴾

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَإِنِّي لَأُبَشِّرُكَ بِغُصٍّ
الَّذِي تُوعَدُ لَهُمْ أَوتَوْكَ بِتِلْكَ وَإِنَّا لَيُجْعَلُونَ ﴿٧٧﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ

1 अर्थात् प्रलय के दिन। फिर वह अपनी यातना देख लेंगे।

में से कुछ का वर्णन हम आप से कर चुके हैं तथा कुछ का वर्णन आप से नहीं किया है तथा किसी रसूल के (वश^[1]) में यह नहीं था कि वह कोई आयत (चमत्कार) ला दे परन्तु अल्लाह की अनुमति से। फिर जब आ जायेगा अल्लाह का आदेश तो निर्णय कर दिया जायेगा सत्य के साथ और क्षति में पड़ जायेंगे वहाँ झूठे लोग।

79. अल्लाह ही है जिस ने बनाये तुम्हारे लिये चौपाये ताकि सवारी करो कुछ पर और कुछ को खाओ।

80. तथा तुम्हारे लिये उन में बहुत लाभ है और ताकि तुम उन पर पहुँचो उस आवश्यकता को जो तुम्हारे^[2] दिलों में है तथा उन पर और नावों पर तुम्हें सवार किया जाता है।

81. तथा वह दिखाता है तुम्हें अपनी निशानियाँ। तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे?

82. तो क्या वह चले-फिरे नहीं धरती में ताकि देखते कि कैसा रहा उन का परिणाम जो उन से पूर्व थे? वह उन से अधिक कड़े थे शक्ति में और धरती में अधिक चिन्ह^[3] छोड़ गये। तो नहीं आया उन के काम जो वे कर रहे थे।

قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ يَنْقُصْ عَلَيْكَ
وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فُجِئَ بِالنَّجِيِّ وَخِمْ مِّنَ ذَلِكَ
الْمُتَظَلِّينَ ۝

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا
مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً
فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَتَأْتِي الْآيَاتُ الْمُنِيرُونَ ۝

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرُ
مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ
فَمَا آخَرَهُ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يُكْسَبُونَ ۝

1 मक्का के काफिर लोग, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह माँग कर रहे थे कि आप अपने सत्य रसूल होने के प्रमाण में कोई चमत्कार दिखायें। जिस के अनैक उत्तर आगामी आयतों में दिये जा रहे हैं।

2 अर्थात् दूर की यात्रा करो।

3 अर्थात् निर्माण तथा भवन इत्यादि।

83. जब आये उन के पास हमारे रसूल निशानियाँ लेकर तो वे इतराने लगे उस ज्ञान पर^[1] जो उन के पास था और घेर लिया उन को उस ने जिस का वे उपहास कर रहे थे।
84. तो जब उन्होंने देखा हमारी यातना को तो कहने लगे: हम ईमान लाये अकेले अब्राह पर तथा नकार दिया उसे जिसे उस का साझी बना रहे थे।
85. तो ऐसा नहीं हुआ कि उन्हें लाभ पहुँचाता उन का ईमान जब उन्होंने देख लिया हमारी यातना को। यही अब्राह का नियम है जो उसके भक्तों में चला आ रहा है। और क्षति में पड़ गये यही काफिर।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا بِبَيِّنَاتٍ فَرِحُوا بِمَا عِنْدَهُمْ
مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا امْكُتُوا بِاللهِ وَحْدَهُ
وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۝

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا
سُئِلَ اللهُ إِنِّي قَدْ خَلَقْتُ فِي عَبَادِهِ
وَخَيْرَهُمْ ذَلِكَ الْكَافِرُونَ ۝

1 अर्थात् सत्यविरोधी ज्ञान।

सूरह हा मीम सज्दा - 41

سُورَةُ الْحَمْدِ

सूरह हा मीम सज्दा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 54 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम (हा, मीम सज्दा) है। क्योंकि इस का आरंभ अक्षर: (हा, मीम) से हुआ है। और आयत 37 में केवल अल्लाह ही को सज्दा करने का आदेश दिया गया है। और इस सूरह की तीसरी आयत में (फुस्सिलत) का शब्द आया है। इसलिये इस का दूसरा नाम (फुस्सिलत) भी है।
- इस के आरंभ में कुर्आन के पहचानने पर बल देते हुये सोच-विचार की दावत, तथा बह्वी और रिसालत को झुठलाने पर यातना की चेतावनी दी गई है। फिर अल्लाह के विरोधियों के दुष्परिणाम को बताया गया है।
- आयत 30 से 36 तक उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है जो अपने धर्म पर स्थित हैं। और उन्हें विरोधियों को क्षमा कर देने के निर्देश दिये गये हैं। फिर आयत 40 तक अल्लाह के अकेले पूज्य होने तथा मुर्दों को जीवित करने का सामर्थ्य रखने की निशानियाँ प्रस्तुत की गयी हैं।
- आयत 41 से 46 तक कुर्आन के साथ उस के विरोधियों के व्यवहार तथा उस के दुष्परिणाम को बताया गया है। फिर 51 तक शिर्क करने और प्रलय के इन्कार पर पकड़ की गयी है।
- अन्त में कुर्आन के विरोधियों के संदेहों को दूर करते हुये यह भविष्यवाणी की गई है कि जल्द ही कुर्आन के सच्च होने की निशानियाँ विश्व में सामने आ जायेंगी।

भाष्यकारों ने लिखा है कि जब मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अनुयायियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी तो कुरैश के प्रमुखों ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक व्यक्ति उतबा पुत्र रबीआ को भेजा। उस ने आकर आप से कहा कि यदि आप इस नये आमंत्रण से धन चाहते हैं तो हम आप के लिये धन एकत्र कर देंगे। और यदि प्रमुख और बड़ा बनना चाहते हैं तो हम तुम्हें अपना प्रमुख बना लेंगे। और यदि किसी सुन्दरी से विवाह करना चाहते हों तो हम उस की भी व्यवस्था कर देंगे। और यदि आप पर भूत-प्रेत का प्रभाव हो तो हम उस का उपचार करा देंगे। उतबा की यह बातें सुन कर आप (सल्लल्लाहु

अलैहि बसल्लम) ने यही सूरह उसे सुनायी जिस से प्रभावित हो कर वापिस आया। और कहा कि जो बात वह पेश करता है वह जादू-ज्योतिष और काव्य-कविता नहीं है। यह बातें सुन कर कुरैश के प्रमुखों ने कहा कि तू भी उस के जादू के प्रभाव में आ गया। उस ने कहा: मैं ने अपना विचार बता दिया अब तुम्हारे मन में जो भी आये वह करो। (सीरते इब्ने हिशाम- 1। 313, 314)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ

1. हा, मीम।

2. अबतरित है अत्यंत कृपाशील
दयावान् की ओर से।

تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

3. (यह ऐसी) पुस्तक है सविस्तार वर्णित
की गई है जिस की आयतें। कुर्आन
अर्बी (भाषा में) है उन के लिये जो
ज्ञान रखते हों।^[1]

كِتَابٌ فَصَّلْتُ لَّيْلَةَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ

4. वह शुभसूचना देने तथा सचेत करने
वाला है। फिर भी मुँह फेर लिया है
उन में से अधिकतर ने, और सुन
नहीं रहे हैं।

بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

5. तथा उन्होंने कहा:^[2] हमारे दिल
आवरण (पर्दे) में हैं उस से आप
हमें जिस की ओर बुला रहे हैं। तथा
हमारे कानों में बोज़ है तथा हमारे
और आप के बीच एक आड़ है।
तो आप अपना काम करें और हम

وَقَالُوا قُلُوبُنَا فِيْ أَكْفَامٍ مَّثَانِدٍ نُّعْوِيْكَ إِلَيْهِ وَفِيْ
أَذَانِنَا وَأُفْرُؤْ مِن بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ
إِنَّا عَاكِفُونَ

1 अर्बी भाषा तथा शैली का।

2 अर्थात् मक्का के मुशरिकों ने कहा कि यह एकेश्वरवाद की बात हमें समझ में नहीं आती। इसलिये आप हमें हमारे धर्म पर ही रहने दें।

अपना काम कर रहे हैं।

6. आप कह दें कि मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम्हारे जैसा। मेरी ओर बह्नी की जा रही है कि तुम्हारा बंदनीय (पूज्य) केवल एक ही हा अतः सीधे ही जाओ उसी की ओर तथा क्षमा माँगो उस से। और बिनाश है मुशरिकों के लिये।
7. जो जकात नहीं देते तथा आखिरत को (भी) नहीं मानते।
8. निःसदेह जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन्हीं के लिये अनन्त प्रतिफल है।
9. आप कहें कि क्या तुम उसे नकारते हो जिस ने पैदा किया धरती को दो दिन में, और बनाते हो उस के साझी? वही है सर्वलोक का पालनहार।
10. तथा बनाये उस (धरती) में पर्वत उस के ऊपर तथा बरकत रख दी उस में। और अंकन किया उस में उस के वासियों के आहारों का चार^[1] दिनों में समान रूप^[2] से प्रश्न करने वालों के लिये।
11. फिर आकर्षित हुआ आकाश की ओर तथा वह धुवाँ था। तो उसे तथा धरती को आदेश दिया कि तुम दोनों आ जाओ प्रसन्न होकर अथवा दबाव से। तो दोनों ने कहा हम प्रसन्न होकर आ गये।
12. तथा बना दिया उन को सात आकाश

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَتَمِّ الْأَنْهَارِ إِلَىٰ
وَاحِدًا فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا
وَوَيْلٌ لِلْمُصْرِكِينَ ۝

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمْ كَافِرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ۝

قُلْ إِنَّمَا لَكُمْ كَلَمٌ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي
يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا ذَلِكَ رَبُّ
الْعَالَمِينَ ۝

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَابِیَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكٌ فِيهَا وَقَدَّرَ
فِيهَا أَقْوَامَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً
لِلنَّاسِ لَدَيْنَ ۝

لَمْ يَسْتَوْیَ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ
لَهَا وَإِلِلْدَارِضِ انثَبَاظُوا أَوْ كُوفُوا
قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۝

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَوَاتِرٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأُحْشِي فِي كُلِّ

1 अर्थात धरती को पैदा करने और फैलाने के कुल चार दिन हुये।

2 अर्थात धरती के सभी जीवों के आहार के संसाधन की व्यवस्था कर दी। और यह बात बता दी ताकि कोई प्रश्न करे तो उसे इस का ज्ञान करा दिया जाये।

दो दिन में। तथा बहरी कर दिया
प्रत्येक आकाश में उस का आदेश।
तथा हम ने सुसज्जित किया समीप
(संसार) के आकाश को दीपों (तारों)
से तथा सुरक्षा के^[1] लिये। यह अति
प्रभावशाली सर्वज्ञ की योजना है।

13. फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप
कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर
दिया कड़ी यातना से जो आद तथा
समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

14. जब आये उन के पास उन के रसूल
उन के आगे तथा उन के पीछे^[2] से
कि न इबादत (बंदना) करो अल्लाह
के सिवा की। तो उन्होंने कहा: यदि
हमारा पालनहार चाहता तो किसी
फरिश्ते को उतार देता।^[3] अतः तुम
जिस बात के साथ भेजे गये हो हम
उसे नहीं मानते।

15. रहे आद तो उन्होंने अभिमान किया
धरती में अवैध। तथा कहा कि कौन
हम से अधिक है बल में? क्या उन्होंने
नहीं देखा कि अल्लाह, जिस ने उन को
पैदा किया है उन से अधिक है बल में,
तथा हमारी आयतों को नकारते रहे।

16. अन्ततः हम ने भेज दी उन पर
प्रचण्ड वायु कुछ अशुभ दिनों में।

مَلَأْنَاهُمْ أَفْقًا وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِصَوَابٍ مَّحْفُوظًا
ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صِيعَةً مِّثْلَ صِيعَةِ
عَادٍ وَثَمُودَ

إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ أَلَّا يَعْْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ
مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ لَكَاذِبُونَ

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِحَيْرِ الْمَالِ
وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي
خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ مَعْسُومَاتٍ

1 अर्थात् शैतानों से रक्षा के लिये। (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 7 से 10 तक)।

2 अर्थात् प्रत्येक प्रकार से समझाते रहे।

3 वे मनुष्य को रसूल मानने के लिये तय्यार नहीं थे। (जिस प्रकार कुछ लोग जो रसूल को मानते हैं पर वे उन्हें मनुष्य मानने को तय्यार नहीं हैं)। (देखिये: सूरह अन्शाम, आयत: 9-10, सूरह मुमिनून, आयत: 24)

ताकि चखायें उन्हें अपमानकारी यातना संसारिक जीवन में। और आखिरत (परलोक) की यातना अधिक अपमानकारी है। तथा उन्हें कोई सहायता नहीं दी जायेगी।

17. और रही समूद तो हम ने उन्हें मार्ग दिखाया फिर भी उन्होंने अंधे बने रहने को मार्ग दर्शन से प्रिय समझा। अन्ततः पकड़ लिया उन को अपमानकारी यातना की कड़क ने उस के कारण जो वह कर रहे थे।
18. तथा हम ने बचा लिया उन को जो ईमान लाये तथा (अवैज्ञा से) डरते रहे।
19. और जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक की ओर एकत्र किये जायेंगे तो वह रोक लिये जायेंगे।
20. यहाँ तक की जब आजायेंगे उस (नरक) के पास तो साक्ष्य देंगे उन पर उन के कान तथा उन की आँखें और उन की खालें उस कर्म का जो वह किया करते थे।
21. और वे कहेंगे अपनी खालों से: क्यों साक्ष्य दिया तुम ने हमारे विरुद्ध? वह उत्तर देगी कि हमें बोलने की शक्ति प्रदान की है उस ने जिस ने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति दी है। तथा उसी ने तुम्हें पैदा किया प्रथम बार और उसी की ओर तुम सब फेरे जा रहे हो।

لَمَّا يَنْفَعُهُمْ عَذَابُ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَلَهُمْ لَا مُنْقَرُوءٌ ۝

وَأَمَّا شُودُودُهُمْ فَاسْتَجَبُوا نَعْيَ عَلَى الْهَدَىٰ
فَاتَّخَذَتْهُمْ سُلْبَةً الْعَذَابِ الْهُونَ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ۝

وَحَقَّقْنَا الْيَوْمَ الْإِيمَانَ كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ
يُوزَعُونَ ۝

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ
وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَقَالُوا الْجُلُودُ هِيَ أَرْشِدُنَا عَلَيْكُمْ قَالُوا
أَنْطَقَتِ اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَآلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

22. तथा तुम (पाप करते समय^[1]) छुपते नहीं थे कि कहीं साक्ष्य न दें तुम पर तुम्हारे कान तथा तुम्हारी आँख एवं तुम्हारी खालें। परन्तु तुम समझते रहे कि अब्बाह नहीं जानता उस में से अधिकतर बातों को जो तुम करते हो।
23. इसी कुविचार ने जो तुम ने किया अपने पालनहार के विषय में तुम्हें नाश कर दिया। और तुम बिनाशों में हो गये।
24. तो यदि वे धैर्य रखें तब भी नरक ही उन का आवास है। और यदि वे क्षमा माँगें तब भी वे क्षमा नहीं किये जायेंगे।
25. और हम ने बना दिये उन के लिये ऐसे साथी जो शोभनीय बना रहे थे उन के लिये उन के अगले तथा पिछले दुष्कर्मों को। तथा सिद्ध हो गया उन पर अब्बाह (की यातना) का बचन उन समुदायों में जो गुजर गये इन से पूर्व जिन्हों तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षतिग्रस्त थे।
26. तथा काफिरों ने कहा^[2] कि इस कुर्आन को न सुनो। और कोलाहल (शोर) करो उस (के सुनाने) के समय। सम्भवतः तुम प्रभुत्वशाली हो जाओ।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَعِيرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا طُلُوعُكُمْ وَلَا بُكُورُكُمْ وَلَا لَنَّا اللَّهُ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ۝

وَذَلِكُمْ فَتْنُكُمْ الَّتِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْذَلَكُمْ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ ۝

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعِينُوا فَآهُمْ مِنَ الْمُعَذِّبِينَ ۝

وَقَيَضْنَا لَهُمْ شُرَكَاءَ فَرَأَوْهُم مَّابِينَ أَيْدِيهِمْ وَمَخْلَفُهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَسْمِ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَبُونَ ۝

1 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि खाना कौबा के पास एक घर में दो कुरैशी तथा एक सकफ़ी अथवा दो सकफ़ी और एक कुरैशी थे। तो एक ने दूसरे से कहा कि तुम समझते हो कि अब्बाह हमारी बातें सुन रहा है? किसी ने कहा: यदि कुछ सुनता है तो सब कुछ सुनता है। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4816, 4817, 7521)

2 मक्का के काफिरों ने जब देखा कि लोग कुर्आन सुन कर प्रभावित हो रहे हैं तो उन्होंने यह योजना बनायी।

27. तो हम अवश्य चखायेंगे उन को जो काफिर हो गये कड़ी यातना और अवश्य उन को कुफल देंगे उस दुष्कर्म का जो वे करते रहे।

28. यह अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिकार नरक है। उन के लिये उस में स्थायी घर होंगे उस के बदले जो हमारी आयतों को नकार रहे हैं।

29. तथा वह कहेंगे जो काफिर हो गये कि हे हमारे पालनहार! हमें दिखा दे उन को जिन्होंने हमें कुपथ किया है जिन्नो तथा मनुष्यों में से। ताकि हम रोंद दें उन दोनों को अपने पैरों से। ताकि वह दोनों अधिक नीचे हो जायें।

30. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर इसी पर स्थित रह^[1] गये तो उन पर फरिश्ते उतरते हैं^[2] कि भय न करो, और न उदासीन रहो, तथा उस स्वर्ग से प्रसन्न हो जाओ जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है।

31. हम तुम्हारे सहायक हैं संसारिक जीवन में तथा परलोक में, और तुम्हारे लिये उस (स्वर्ग) में वह चीज़ है जो तुम्हारा मन चाहे तथा उस में तुम्हारे लिये वह है जिस की तुम माँग करोगे।

32. अतिथि-सत्कार स्वरूप अति क्षमी दयावान् की ओर से।

فَلَنُذِيقَنَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَثْوَابَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

ذَٰلِكَ جَزَاءُ عَدَاوَةِ اللَّهِ النَّارُ الَّتِي فِيهَا يَجْزِيَنَّ الْفٰكِرِينَ جَزَاءَ لِمَا كَانُوا يٰئِيَنَّا بِجَحْدُونَ ﴿٢٨﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِيْنِ أَصْلٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلُهُم نٰحَتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونُوا مِنِ الْاسْتَغْلٰيَنَ ﴿٢٩﴾

إِنِ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْتٰوْا مَآ تَنزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَلَّا تَكُنُوْا وَاٰتٰوْا بِالْحَقِّ ۖ أَلَمْ يَكُنْ لَّيْلٌ مِّنْ لَّيْلٍ كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾

نَحْنُ اَوْ لٰعَنُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتٰوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدْعُوْنَ ﴿٣١﴾

تٰوْلٰوْنَ عَفْوٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾

1 अर्थात् प्रत्येक दशा में आज्ञा पालन तथा एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे।

2 उन के मरण के समय।

33. और किस की बात उस से अच्छी होगी जो अल्लाह की ओर बुलाये तथा सदाचार करे। और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ।

34. और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो। तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया।^[1]

35. और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों।

36. और यदि आप को शैतान की ओर से कोई संशय हो तो अल्लाह की शरण लें। वास्तव में वही सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

37. तथा उस की निशानियों में से है रात्रि तथा दिवस तथा सूर्य तथा चन्द्रमा, तुम सज्दा न करो सूर्य तथा चन्द्रमा को। और सज्दा करो उस अल्लाह को जिस ने पैदा किया है उन को, यदि तुम उसी (अल्लाह) की इबादत (बंदना) करते हो।^[2]

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَتَّبِعُوا الْحَسَنَةَ وَلَا السَّيِّئَةَ إِذْ لَمْ يَأْتِ فِي أَحْسَنِ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

وَمَا يَكْزَعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ تُرْغُفًا فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

1 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तथा आप के माध्यम से सर्वसाधारण मुसलमानों को यह निर्देश दिया गया है कि बुराई का बदला अच्छाई से तथा अपकार का बदला उपकार से दें। जिस का प्रभाव यह होगा कि अपना शत्रु भी हार्दिक मित्र बन जायेगा।

2 अर्थात् सच्चा बंदनीय (पूज्य) अल्लाह के सिवा कोई नहीं है। यह सूर्य, चन्द्रमा और अन्य आकाशीय ग्रहें अल्लाह के बनाये हुये हैं। और उसी के आधीन हैं। इसलिये इन को सज्दा करना व्यर्थ है। और जो ऐसा करता है वह अल्लाह के साथ उस की बनाई हुई चीज़ को उस का साझी बनाता है जो शिर्क और

38. तथा यदि वह अभिमान करें तो जो (फरिश्ते) आप के पालनहार के पास हैं वह उस की पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं रात्रि तथा दिवस में, और वह थकते नहीं हैं।

39. तथा उस की निशानियों में से है कि आप देखते हैं धरती को सहमी हुई। फिर जैसे ही हम ने उस पर जल बरसाया तो वह लहलहाने लगी तथा उभर गई। निश्चय जिस ने जीवित किया है उसे अवश्य वही जीवित करने वाला है मुर्दा को। वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

40. जो टेढ़ निकालते हैं हमारी आयतों में वह हम पर छुपे नहीं रहते। तो क्या जो फेंक दिया जायेगा अग्नि में उत्तम है अथवा जो निर्भय हो कर आयेगा प्रलय के दिन? करो जो चाहो, वास्तव में वह जो तुम करते हो उसे देख रहा है।^[1]

41. निश्चय जिन्होंने कुफ़्र कर दिया इस शिक्षा (कुर्आन) के साथ जब आ गई उन के पास। और सच्च यह है कि यह एक अति सम्मानित पुस्तक है।

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ
بِالْلَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝٣٨

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا
عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْزَلَتْ وَرَبَّتْ إِنَّ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُتَّحِي
الْمُتَّى إِنَّهُ عَلَّ عَلَى شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝٣٩

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَصْعَقُونَ عَلَيْهَا
أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ
الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا تَشَاءُوا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝٤٠

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ
وَلَهُمْ لَكُتُبٌ عَزِيزَةٌ ۝٤١

अक्षम्य पाप तथा अन्याय है। सज्दा करना इबादत है। जो अल्लाह ही के लिये विशेष है। इसीलिये कहा है कि यदि अल्लाह ही की इबादत करते हो तो सज्दा भी उसी के लिये करो। उस के सिवा कोई ऐसा नहीं जिसे सज्दा करना उचित हो। क्योंकि सब अल्लाह के बनाये हुये हैं सूर्य हो या कोई मनुष्य। सज्दा आदर के लिये हो या इबादत (बंदना) के लिये। अल्लाह के सिवा किसी को भी सज्दा करना अवैध तथा शिर्क है जिस का परिणाम सदैव के लिये नर्क है। आयत 38 पूरी कर के सज्दा करें।

1 अर्थात् तुम्हारे मनमानी करने का कुफल तुम्हें अवश्य देगा।

42. नहीं आ सकता झूठ इस के आगे
से और न इस के पीछे से। उतरा है
तत्त्वज्ञ प्रशंसित (अब्राह) की ओर से।
43. आप से वही कहा जा रहा है जो आप
से पूर्व रसूलों से कहा गया।^[1] वास्तव
में आप का पालनहार क्षमा करने
(तथा) दुःखदायी यातना देने वाला है।
44. और यदि हम इसे बनाते अर्बी (के
अतिरिक्त किसी) अन्य भाषा में तो
वह अवश्य कहते कि क्यों नहीं खोल
दी गई उस की आयतें? यह क्या
कि (पुस्तक) गैर अर्बी और (नबी)
अर्बी? आप कह दें कि वह उन के
लिये जो ईमान लाये मार्गदर्शन तथा
आरोग्यकर है। और जो ईमान न
लायें उन के कानों में बोझ है और
वह उन पर अंधापन है। और वही
पुकारे जा रहे हैं दूर स्थान से।^[2]
45. तथा हम प्रदान कर चुके हैं मूसा को
पुस्तक (तौरात)। तो उस में भी विभेद
किया गया, और यदि एक बात पहले
ही से निर्धारित न होती^[3] आप के
पालनहार की ओर से, तो निर्णय कर
दिया जाता उन के बीच। निःसंदेह वह
उस के विषय में संदेह में डोँवाडोल है।

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ
تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝

مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ
إِنْ رَأَيْتَ أَنَّكَ مُغَيَّرٌ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝

وَلَوْ جَمَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجَبًا لَقَالُوا الْوَالِدُ افْتَرَىٰ
الْبَيِّنَاتِ ۖ آعَجَبِي ۖ وَغَرِبٌ قَوْلُ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا
هُدِيَ رُشْعَاءُ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي إِذَا أَنَّهُمْ
وَقُرْءَهُمْ عَلَيْهِمْ عَلَىٰ أُولَٰئِكَ يَنذَرُونَ مِنْ مُكَائِنٍ
بُعِيدٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاسْتَخْلَفَ فِيهِ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِيَ
بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝

1 अर्थात् उनको जादूगर झूठा तथा कवि इत्यादि कहा गया। (देखिये: सूरह, जारियात आयत: 52, 53)

2 अर्थात् कुरआन से प्रभावित होने के लिये ईमान आवश्यक है इस के बिना इस का कोई प्रभाव नहीं होता।

3 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की। तो संसार ही में निर्णय कर दिया जाता और उन्हें कोई अवसर नहीं दिया जाता। (देखिये: सूरह फातिर, आयत: 45)

46. जो सदाचार करेगा तो वह अपने ही लाभ के लिये करेगा। और जो दुराचार करेगा तो उस का दुष्परिणाम उसी पर होगा। और आप का पालनहार तनिक भी अत्याचार करने वाला नहीं है भक्तों पर।^[1]

47. उसी की ओर फेरा जाता है प्रलय का ज्ञान। तथा नहीं निकलते कोई फल अपने गाभों से और नहीं गर्भ धारण करती कोई मादा, और न जन्म देती है, परन्तु उस के ज्ञान से। और जिस दिन वह पुकारेगा उन को कि कहाँ है मेरे साझी? तो वह कहेंगे कि हम ने तुझे बता दिया था कि हम में से कोई उस का गवाह नहीं है।

48. और खो जायेंगे^[2] उन से वे जिन्हें पुकारते थे इस से पूर्वी तथा वह विश्वास कर लेंगे कि नहीं है उन के लिये कोई शरण का स्थान।

49. नहीं धकता मनुष्य भलाई (सुख) की प्रार्थना से और यदि उसे पहुँच जाये बुराई (दुख) तो (हताश) निराश^[3] हो जाता है।

50. और यदि हम उसे^[4] चखा दें अपनी

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا
وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

إِلَيْهِ يُرْجَعُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَحْزُبُ مِنْ
ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَلْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ
وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ
شُرَكَاءُئِي قَالُوا ذَلِكُمْ مَا مِنَّا مِنْ شَيْءٍ ۝

وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَطَلُّوا
مَالَهُمْ مِنْ عَاجِيزٍ ۝

لَا يَنْفَعُ الْإِنْسَانَ مِنْ دُعَاءِ الْغَيْرِ وَإِنْ شَاءَ الرَّؤُ
فُيَتَوَسَّسَ فَيُوقَظُ ۝

وَلَكِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِنَّا مِنْ بَعْدِ حَزْأٍ مِّمَّنْهُ

1 अर्थात् किसी को बिना पाप के यातना नहीं देता।

2 अर्थात् सब गैब की बातें अल्लाह ही जानता है। इसलिये इस की चिन्ता न करो कि प्रलय कब आयेगी। अपने परिणाम की चिन्ता करो।

3 यह साधारण लोगों की दशा है। अन्यथा मुसलमान निराश नहीं होता।

4 आयत का भावार्थ यह है कि काफिर की यह दशा होती है। उसे अल्लाह के यहाँ जाने का विश्वास नहीं होता। फिर यदि प्रलय का होना मान लें तो भी इसी

दया दुःख के पश्चात् जो उसे पहुँचा हो तो अवश्य कह देता है कि मैं तो इस के योग्य ही था। और मैं नहीं समझता कि प्रलय होनी है। और यदि मैं पुनः अपने पालनहार की ओर गया तो निश्चय ही मेरे लिये उस के पास भलाई होगी। तो हम अवश्य अवगत कर देंगे काफ़िरो को उन के कर्मों से तथा उन्हें अवश्य घोर यातना चखायेंगे।

51. तथा जब हम उपकार करते हैं मनुष्य पर तो वह विमुख हो जाता है तथा अकड़ जाता है। और जब उसे दुःख पहुँचे तो लम्बी-चौड़ी प्रार्थना करने लगता है।

52. आप कह दें: भला तुम यह तो बताओ कि यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो फिर तुम कुफ़ कर जाओ उस के साथ, तो कौन उस से अधिक कुपथ होगा जो उस के विरोध में दूर तक चला जाये?

53. हम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर। यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।^[1] और क्या

لَيَقُولَنَّ هَذَا إِلَىٰ ذَاكَ النَّاعَةُ قَائِمَةٌ
وَلَيْنَ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ الْخُسْفَىٰ
فَلَنُفِثَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ
مِنْ عَذَابٍ عَظِيمٍ ۝

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأِجِنِيهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَوَدَّ عَلَاءَ غَرِيبٍ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ نَعْمٌ كَفَرْتُمْ
بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقِ بَعِيدٍ ۝

سَرَّيْنَاهُمَا إِلَيْنَا فِي الْأَنَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ
يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

कुविचार में मग्न रहता है कि यदि अल्लाह ने मुझे संसार में सुख-सुविधा दी है तो वहाँ भी अवश्य देगा। और यह नहीं समझता कि यहाँ उसे जो कुछ दिया गया है वह परीक्षा के लिये दिया गया है। और प्रलय के दिन कर्मों के आधार पर प्रतिकार दिया जायेगा।

1 कुर्आन, और निशानियों से अभिप्राय वह विजय है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप के पश्चात् मुसलमानों को प्राप्त होंगी। जिन से उन्हें

यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी (गवाह) है?

54. सावधान! वही संदेह में हैं अपने पालनहार से मिलने के विषय से। सावधान! वही (अल्लाह) प्रत्येक वस्तु को घेरे हुये है।

أَلَا أُنْهَىٰ فِي مَرْيَمَ مِّنْ لَّا تَأْكُلُ رَيْحًا
أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّخِيطٌ ۝

विश्वास हो जायेगा कि कुर्आन ही सत्य है। इस आयत का एक दूसरा भावार्थ यह भी लिया गया है कि अल्लाह इस विश्व में तथा स्वयं तुम्हारे भीतर ऐसी निशानियाँ दिखायेगा। और यह निशानियाँ निरन्तर वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा सामने आ रही हैं। और प्रलय तक आती रहेंगी जिन से कुर्आन पाक का सत्य होना सिद्ध होता रहेगा।

सूरह शूरा - 42

سُورَةُ الشُّورَى

सूरह शूरा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 53 आयतें हैं।

- इस की आयत 38 में ईमान वालों को आपस में प्रामर्श करने का नियम बताया गया है। इसलिये इस का नाम ((सूरह शूरा)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में उन बातों को बताया गया है जिन से बह्वी को समझने में सहायता मिलती है। फिर आयत 20 तक बताया गया है कि यह वही धर्म है जिस की बह्वी सभी नबियों की ओर की गई थी। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह निर्देश दिया गया है कि इस पर स्थित रह कर इस धर्म की ओर आमंत्रण दें। और जो लोग विवाद में उलझे हुये हैं उन के पास सत्य का कोई प्रमाण नहीं है।
- आयत 21 से 35 तक उन की पकड़ की गई है जो मनमानी धर्म बना कर उस पर चलते हैं। और सत्धर्म पर ईमान लाने तथा सदाचार करने पर शुभसूचना दी गई है और विरोधियों के कुछ संदेहों को दूर किया गया है,
- आयत 36 से 40 तक सत्धर्म के अनुयायियों के वह गुण बताये गये हैं जो संघर्ष की घड़ी में उन्हें सफल बनायेंगे। फिर विरोधियों को सावधान करते हुये अपने पालनहार की पुकार को स्वीकार कर लेने का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्तिम आयतों में सूरह के आरंभिक विषय अर्थात् बह्वी को और अधिक उजागर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. ऐन, सीन, काफ ।

حَوْرٍ

عَسَقِ ①

3. इसी प्रकार (अब्राह) ने प्रकाशना^[1] भेजी है आप, तथा उन (रसूलों) की ओर जो आप से पूर्व हुये हैं। अब्राह सब से प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।
4. उसी का है जो आकाशों तथा धरती में है और वह बड़ा उच्च- महान् है।
5. समीप है कि आकाश फट^[2] पड़े अपने ऊपर से, जब कि फरिश्ते पवित्रता का गान करते हैं अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ, तथा क्षमायाचना करते हैं उन के लिये जो धरती में हैं। सुनो! वास्तव में अब्राह ही अत्यंत क्षमा करने तथा दया करने वाला है।
6. तथा जिन लोगों ने बना लिये हैं अब्राह के सिवा संरक्षक, अब्राह ही उन पर निरीक्षक (निगराँ) है और आप उन के उत्तर दायी^[3] नहीं हैं।
7. तथा इसी प्रकार हम ने बह्वी (प्रकाशना) की है आप की ओर अर्बी कुर्आन की। ताकि आप सावधान कर दें मक्का^[4] वासियों को, और जो उस

كَذَلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ
اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَّقْنَ مِنْ قُوَّتِهِ وَالْمَلَائِكَةُ
يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَّبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي
الْأَرْضِ إِلَّا إِنْ اللَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ
وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَتُنذِرَ
أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ الَّذِينَ
فِيهِ قُلُوبٌ نِيٍّ فِي الْحَدَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ۝

1 आरंभ में यह बताया जा रहा है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कोई नई बात नहीं कर रहे हैं और न यह बह्वी (प्रकाशना) का विषय ही इस संसार के इतिहास में प्रथम बार सामने आया है। इस से पूर्व भी पहले अम्बिया पर प्रकाशना आ चुकी है और वह एकेश्वरवाद का संदेश सुनाते रहे हैं।

2 अब्राह की महिमा तथा प्रताप के भय से।

3 आप का दायित्व मात्र सावधान कर देना है।

4 आयत में मक्का को उम्मुल कुरा कहा गया है। जो मक्का का एक नाम है जिस का शाब्दिक अर्थ: (वस्तियों की माँ) है। बताया जाता है कि मक्का अरब की मूल

के आस-पास हैं। तथा सावधान कर दें एकत्र होने के दिन^[1] से जिस दिन के होने में कोई संशय नहीं। एक पक्ष स्वर्ग में तथा एक पक्ष नरक में होगा।

8. और यदि अल्लाह चाहता तो सभी को एक समुदाय^[2] बना देता। परन्तु वह प्रवेश कराता है जिसे चाहे अपनी दया में। तथा अत्याचारियों का कोई संरक्षक तथा सहायक न होगा।

9. क्या उन्होंने बना लिये हैं उस के सिवा संरक्षक? तो अल्लाह ही संरक्षक है और जीवित करेगा मुर्दा को। और वही जो चाहे कर सकता है।^[3]

10. और जिस बात में भी तुम ने विभेद किया है उस का निर्णय अल्लाह ही को करना है।^[4] वही अल्लाह मेरा पालनहार है, उसी पर मैं ने भरोसा किया है तथा उसी की ओर ध्यान मग्न होता हूँ।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَدْعِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَالَ اللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَمَوْئِي السَّمَوَاتِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَمَا خَلَقْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

बस्ती है और उस के आस-पास से अभिप्राय पूरा भूमण्डल है। आधुनिक भूगोल शास्त्र के अनुसार मक्का पूरे भूमण्डल का केन्द्र है। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं कि कुर्आन इसी तथ्य की ओर संकेत कर रहा हो। सारांश यह है कि इस आयत में इस्लाम के विश्वव्यापी धर्म होने की ओर संकेत किया गया है।

- 1 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है जिस दिन कर्मों के प्रतिकार स्वरूप एक पक्ष स्वर्ग में और एक पक्ष नरक में जायेगा।
- 2 अर्थात् एक ही सत्धर्म पर कर देता। किन्तु उस ने प्रत्येक को अपनी इच्छा से सत्य या असत्य को अपनाने की स्वाधीनता दे रखी है। और दोनों का परिणाम बता दिया है।
- 3 अतः उसी को संरक्षक बनाओ और उसी की आज्ञा का पालन करो।
- 4 अतः उस का निर्णय अल्लाह की पुस्तक कुर्आन से तथा उस के रसूल की सुन्नत से लो।

11. वह आकाशों तथा धरती का रचयिता है। उस ने बनाये हैं तुम्हारी जाति में से तुम्हारे जोड़े तथा पशुओं के जोड़े। वह फैला रहा है तुम को इस प्रकार। उस की कोई प्रतिमा^[1] नहीं। और वह सब कुछ सुनने-जानने वाला है।

12. उसी के^[2] अधिकार में है आकाशों तथा धरती की कुंजियाँ। वह फैला देता है जीविका जिस के लिये चाहे तथा नाप कर देता है। वास्तव में वही प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।

13. उस ने नियत^[3] किया है तुम्हारे लिये वही धर्म जिस का आदेश दिया था नूह को, और जिसे बह्यी किया है आप की ओर, तथा जिस का आदेश दिया था इब्राहीम तथा मूसा और ईसा को। कि इस धर्म की स्थापना करो और इस में भेद भाव न करो। यही बात अप्रिय लगी है मुश्रिकों

فَاطْرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذُرُّوْكُمْ فِيْهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ يَحِلُّ لِكُلِّ شَيْءٍ عَالِمٌ

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا الَّذِي أُوحِيَنا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ

1 अर्थात् उस के अस्तित्व तथा गुण और कर्म में कोई उस के समान नहीं है। भावार्थ यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु में उस का गुण कर्म मानना या उसे उस का अंश मानना असत्य तथा अधर्म है।

2 आयत नं० 9 से 12 तक जिन तथ्यों की चर्चा है उन में एकेश्वरवाद तथा परलोक के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। और सत्य से विमुख होने वालों को चेतावनी दी गई है।

3 इस आयत में पाँच नबियों का नाम ले कर बताया गया है कि सब को एक ही धर्म दे कर भेजा गया है। जिस का अर्थ यह है कि इस मानव संसार में अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक जो भी नबी आये सभी की मूल शिक्षा एक रही है। कि एक अल्लाह को मानो और उसी एक की वंदना करो। तथा वैध - अवैध के विषय में अल्लाह ही के आदेशों का पालन करो। और अपने सभी धार्मिक तथा सामाजिक और राजनैतिक विवादों का निर्णय उसी के धर्मविधान के आधार पर करो (देखिये: सूरह निसा, आयत: 163- 164)

को जिस की ओर आप बुला रहे हैं। अब्बाह ही चुनता है इस के लिये जिसे चाहे, और सीधी राह उसी को दिखाता है जो उसी की ओर ध्यान मग्न हो।

14. और उन्होंने^[1] इस के पश्चात् ही विभेद किया जब उन के पास ज्ञान आ गया आपस के विरोध के कारण, तथा यदि एक बात पहले से निश्चित^[2] न होती आप के पालनहार की ओर से तो अवश्य निर्णय कर दिया गया होता उन के बीच। और जो पुस्तक के उत्तराधिकारी बनाये^[3] गये उन के पश्चात् उस की ओर से संदेह में उलझे हुये हैं।

15. तो आप लोगों को इसी (धर्म) की ओर बुलाते रहें तथा जैसे आप को आदेश दिया गया है उस पर स्थित रहें। और उन की इच्छाओं पर न चलें। तथा कह दें कि मैं ईमान लाया उन सभी पुस्तकों पर जो अब्बाह ने उतारी^[4] हैं। तथा मुझे आदेश दिया गया है कि तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अब्बाह हमारा तथा तुम्हारा पालनहार है। हमारे लिये हमारे कर्म हैं तथा तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। हमारे और

وَمَا تَعْرَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ
بَعْنًا بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ إِلَى
أَجَلٍ مُسَمًّى لَفُضِّى بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا
الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۝

فَلِذَا لِكَ قَادِرٌ وَأَسْتَفْتُمْ كَمَا أُمِرْتُ وَلَا تَتَّبِعُوا
أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ أَمَرْتُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيَّ مِنَ
الْكِتَابِ وَأُمِرْتُ لِإِعْدَالٍ بَيْنَكُمْ أَنَّهُ رَبُّنَا
وَرَبُّكُمْ لَعَنَّا أَعْمَالَنَا وَالْأَعْمَالُ لِلَّهِ لَا حُجَّةَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا وَالْيَوْمِ
الْمُصِيرِ ۝

1 अर्थात् मुश्रिकों ने।

2 अर्थात् प्रलय के दिन निर्णय करने की।

3 अर्थात् यहूदी तथा ईसाई भी सत्य में विभेद तथा संदेह कर रहे हैं।

4 अर्थात् सभी आकाशीय पुस्तकों पर जो नबियों पर उतारी गई हैं।

तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हमें एकत्र करेगा तथा उसी की ओर सब को जाना है।^[1]

16. तथा जो लोग झगड़ते हैं अल्लाह (के धर्म के बारे) में जब कि उसे^[2] मान लिया गया है। उन का विवाद (कुतर्क) असत्य है अल्लाह के समीप, तथा उन्हीं पर क्रोध है और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।

17. अल्लाह ही ने उतारी है सब पुस्तकें सत्य के साथ तथा तराजू^[3] को। और आप को क्या पता शायद प्रलय का समय समीप हो।

18. शीघ्र माँग कर रहे हैं उस (प्रलय) की जो ईमान नहीं रखते उस पर। और जो ईमान लाये हैं वह उस से डर रहे हैं तथा विश्वास रखते हैं कि वह सच्च है। सुनो! निश्चय जो विवाद कर रहे हैं प्रलय के विषय में वह कुपथ में बहुत दूर चले गये हैं।

19. अल्लाह बड़ा दयालु है अपने भक्तों पर। वह जीविका प्रदान करता है जिसे चाहे। तथा वह बड़ा प्रबल प्रभावशाली है।

20. जो आखिरत (परलोक) की खेती^[4]

وَالَّذِينَ يُخَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتَجِيبَ لَهُ
حُجَّتُهُمْ دَاجِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ
وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ
وَمَا يَذَرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۝

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ
أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُكَاذِبُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي

1 अर्थात् प्रलय के दिन। फिर वह हमारे बीच निर्णय कर देगा।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), और इस्लाम धर्म को।

3 तराजू से अभिप्राय: न्याय का आदेश है। जो कुर्आन द्वारा दिया गया है। (देखिये: सूरह हदीद, आयत: 25)

4 अर्थात् जो अपने संसारिक सत्कर्म का प्रतिफल परलोक में चाहता है तो उसे

चाहता हो तो हम उस के लिये उस की खेती बढ़ा देते हैं। और जो संसार की खेती चाहता हो तो हम उसे उस में से कुछ दे देते हैं। और उस के लिये परलोक में कोई भाग नहीं।

21. क्या इन (मुशरिकों) के कुछ ऐसे साझी^[1] है जिन्होंने उन के लिये कोई ऐसा धार्मिक नियम बना दिया है जिस की अनुमति अल्लाह ने नहीं दी है? और यदि निर्णय की बात निश्चित न होती तो (अभी) इन के बीच निर्णय कर दिया जाता। तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये ही दुःखदायी यातना है।

22. तुम अत्याचारियों को डरते हुये देखोगे उन दुष्कर्मों के कारण जो उन्होंने किये हैं। और वह उन पर आ कर रहेगा। तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये वे स्वर्ग के बागों में होंगे। वह जिस की इच्छा करेंगे उन के पालनहार के यहाँ मिलेगा। यही बड़ी दया है।

23. यही वह (दया) है जिस की शुभसूचना देता है अल्लाह अपने भक्तों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये। आप कह दें कि मैं नहीं माँगता हूँ इस पर तुम से कोई बदला उस

حُوتِهِ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ اشْتَرَوْا لَهُم مِّنَ الدِّينِ مَالَهُمْ يَآذُنُ رَبِّهِ إِنَّهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُتِنَ بِهِمْ ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُمْ وَاقِعٌ بِهِمْ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَةٍ أَلَمْ نَقُلْ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝

ذَٰلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ قُلْ لَا أَتْلُوهُ عَلَيْكُمْ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ وَمَن يَقْرَأْ حَسَنَةً نَّزِدْنَا لَهُ فِيهَا حَسَنًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

उस का प्रतिफल परलोक में दस गुना से सात सौ गुना तक मिलेगा। और जो संसारिक फल का अभिलाषी हो तो जो उस के भाग्य में हो उसे उतना ही मिलेगा और परलोक में कुछ नहीं मिलेगा। (इब्ने कसीर)

- 1 इस से अभिप्राय उन के वह प्रमुख हैं जो वैध-अवैध का नियम बनाते थे। इस में यह संकेत है कि धार्मिक जीवन विधान बनाने का अधिकार केवल अल्लाह को है। उस के सिवा दूसरों के बनाये हुये धार्मिक जीवन विधान को मानना और उस का पालन करना शिर्क है।

प्रेम के सिवा जो संबन्धियों^[1] में (होता) है। तथा जो व्यक्ति कोई पुण्य करेगा हम उस के पुण्य को अधिक कर देंगे। वास्तव में अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला गुणग्राही है।

24. क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है? तो यदि अल्लाह चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे।^[2] और अल्लाह मिटा देता है झूठ को और सच्च को अपने आदेशों द्वारा सच्च कर दिखाता है। वह सीनों (दिलों) के भेदों का जानने वाला है।

25. वही है जो स्वीकार करता है अपने भक्तों की तौबा। तथा क्षमा करता है दोषों^[3] को और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

26. और उन की प्रार्थना स्वीकार करता है जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उन्हें अधिक प्रदान करता है अपनी दया से। और काफ़िरों ही के लिये कड़ी यातना है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنَّ يَسِّرَ اللَّهُ يَخْتَصِرَ عَلَى قَلْبِكَ وَيَمْسُخُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُخَوِّضُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّهُ عَلِيمُ نِيَّاتِ الصُّدُورِ

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ

1 भावार्थ यह है कि हे मक्का वासियों! यदि तुम सत्धर्म पर ईमान नहीं लाते हो तो मुझे इस का प्रचार तो करने दो। मुझ पर अत्याचार न करो। तुम सभी मेरे संबन्धी हो इसलिये मेरे साथ प्रेम का व्यवहार करो। (सहीह बुखारी: 4818)

2 अर्थ यह है कि हे नबी! इन्होंने आप को अपने जैसा समझ लिया है जो अपने स्वार्थ के झूठ का सहारा लेते हैं। किन्तु अल्लाह ने आप के दिल पर मुहर नहीं लगाई है जैसे इन के दिलों पर लगा रखी है।

3 तौबा का अर्थ है: अपने पाप पर लज्जित होना फिर उसे न करने का संकल्प लेना। हदीस में है कि जब बंदा अपना पाप स्वीकार कर लेता है। और फिर तौबा करता है तो अल्लाह उसे क्षमा कर देता है। (सहीह बुखारी: 4141, सहीह मुस्लिम: 2770)

27. और यदि फैला देता अल्लाह जीविका अपने भक्तों के लिये तो वह विद्रोह^[1] कर देते धरती में। परन्तु वह उतारता है एक अनुमान से जैसे वह चाहता है। वास्तव में वह अपने भक्तों से भली-भाँति सूचित है। (तथा) उन्हें देख रहा है।

28. तथा वही है जो वर्षा करता है इस के पश्चात् की लोग निराश हो जायें। तथा फैला^[2] देता है अपनी दया। और वही संरक्षक सराहनीय है।

29. तथा उस की निशानियों में से है आकाशों और धरती की उत्पत्ति, तथा जो फैलाये हैं उन दोनों में जीवा और वह उन्हें एकत्र करने पर जब चाहे^[3] सामर्थ्य रखने वाला है।

30. और जो भी दुख तुम को पहुँचता है वह तुम्हारे अपने कर्तूत से पहुँचता है। तथा वह क्षमा कर देता है तुम्हारे बहुत से पापों को।^[4]

31. और तुम विवश करने वाले नहीं हो धरती में, और न तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई संरक्षक और न सहायक है।

32. तथा उस के (सामर्थ्य) की निशानियों

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقُدْرٍ مَا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتٍّ يَوْمٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۝

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

1 अर्थात् यदि अल्लाह सभी को सम्पन्न बना देता तो धरती में अवज्ञा और अत्याचार होने लगता और कोई किसी के आधीन न रहता।

2 इस आयत में वर्षा को अल्लाह की दया कहा गया है। क्योंकि इस से धरती में उपज होती है जो अल्लाह के अधिकार में है। इसे नक्षत्रों का प्रभाव मानना शिर्क है।

3 अर्थात् प्रलय के दिन।

4 देखिये: सूरह फातिर, आयत: 45।

में से है चलती हुई नाव सागरों में
पर्वतों के समान।

33. यदि वह चाहे तो रोक दे वायु
को और वह खड़ी रह जाये उस
के ऊपर। निश्चय इस में बड़ी
निशानियाँ हैं प्रत्येक बड़े धैर्यवान^[1]
कृतज्ञ के लिये।

34. अथवा विनाश^[2] कर दे उन (नावों)
का उन के कर्तूतों के बदले। और वह
क्षमा करता है बहुत कुछ।

35. तथा वह जानता है उन को जो
झगड़ते हैं हमारी आयतों में। उन्हीं के
लिये कोई भागने का स्थान नहीं है।

36. तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह
संसारिक जीवन का संसाधन है तथा
जो कुछ अल्लाह के पास है वह उत्तम
और स्थायी^[3] है उन के लिये जो
अल्लाह पर ईमान लाये तथा अपने
पालनहार ही पर भरोसा रखते हैं।

37. तथा जो बचते हैं बड़े पापों तथा
निर्लज्जा के कर्मों से। और जब क्रोध
आ जाये तो क्षमा कर देते हैं।

38. तथा जिन्होंने अपने पालनहार के
आदेश को मान लिया तथा स्थापना
की नमाज़ की और उन के प्रत्येक
कार्य आपस के विचार-विमर्श से होते

إِنْ يَشَاءُ يُخَيِّطِ الْوَيْحَ فَيُطْلِقُ رَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ
إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ

أَوْ يُوقِظُكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ وَأَنْتُمْ عَنْ كَثِيرٍ

وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ
خَبِيرٍ

مَا أَوْفَيْتُمْ مِنْ شَيْءٍ مِمَّا عُمِلَ فِي الدُّنْيَا
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَنْفَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى
رَبِّهِمْ تَوَكَّلُونَ

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشِ
وَرَادَا مَا غَضِبُوا هُمْ يَغْفُرُونَ

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ

1 अर्थात् जो अल्लाह की आज्ञापालन पर स्थित रहे।

2 उन के सबारों को उन के पापों के कारण डुबो दे।

3 अर्थ यह है कि संसारिक साम्यिक सुख को परलोक के स्थाई जीवन तथा सुख
पर प्राथमिकता न दो।

है^[1] और जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है उस में से दान करते हैं।

39. और यदि उन पर अत्याचार किया जाये तो वह बराबरी का बदला लेते हैं।

40. और बुराई का प्रतिकार (बदला) बुराई है उसी जैसी^[2] फिर जो क्षमा कर दे तथा सुधार कर ले तो उस का प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है। वास्तव में वह प्रेम नहीं करता है अत्याचारियों से।

41. तथा जो बदला लें अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात् तो उन पर कोई दोष नहीं है।

42. दोष केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और नाहक ज़मीन में उपद्रव करते हैं। उन्हीं के लिये दर्दनाक यातना है।

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝

وَلَمَنِ انتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ۝

إِنَّ السَّبِيلَ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

1 इस आयत में ईमान वालों का एक उत्तम गुण बताया गया है कि वह अपने प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य परस्पर प्रामर्श से करते हैं। सूरह आले इमरान आयत: 159 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया है कि आप मुसलमानों से परामर्श करें। तो आप सभी महत्वपूर्ण कार्यों में उन से परामर्श करते थे। यही नीति तत्पश्चात् आदरणीय खलीफा उमर (रजियल्लाहु अन्हु) ने भी अपनाई जब आप घायल हो गये और जीवन की आशा न रही तो आप ने छः व्यक्तियों को नियुक्त कर दिया कि वह आपस के परामर्श से शासन के लिये किसी एक को निर्वाचित कर लें। और उन्होंने आदरणीय उसमान (रजियल्लाहु अन्हु) को शासक निर्वाचित कर लिया। इस्लाम पहला धर्म है जिस ने परामर्शिक व्यवस्था की नींव डाली। किन्तु यह परामर्श केवल देश का शासन चलाने के विषयों तक सीमित है। फिर भी जिन विषयों में कुरआन तथा हदीस की शिक्षायें मौजूद हों उन में किसी परामर्श की आवश्यकता नहीं है।

2 इस आयत में बुराई का बदला लेने की अनुमति दी गई है। बुराई का बदला यद्यपि बुराई नहीं, बल्कि न्याय है फिर भी बुराई के समरूप होने के कारण उसे बुराई ही कहा गया है।

43. और जो सहन करे तथा क्षमा कर दे तो यह निश्चय बड़े साहस^[1] का कार्य है।

44. तथा जिसे अल्लाह कुपथ कर दे, तो उस का कोई रक्षक नहीं है उस के पश्चात्। तथा आप देखेंगे अत्याचारियों को जब वह देखेंगे यातना को, वह कह रहे होंगे: क्या वापसी की कोई राह है?^[2]

45. तथा आप उन्हें देखेंगे कि वह प्रस्तुत किये जा रहे हैं नरक पर सिर झुकाये अपमान के कारण। वे देख रहे होंगे कन्धियों से। तथा कहेंगे जो ईमान लाये कि वास्तव में घाटे में वही है जिन्होंने घाटे में डाल दिया स्वयं को तथा अपने परिवार को प्रलय के दिन। सुनो! अत्याचारी ही स्थाई यातना में होंगे।

46. तथा नहीं होंगे उन के कोई सहायक जो अल्लाह के मुकाबले में उन की सहायता करें। और जिसे कुपथ कर दे अल्लाह, तो उस के लिये कोई मार्ग नहीं

47. मान लो अपने पालनहार की बात इस से पूर्व कि आ जाये वह दिन जिसे टलना नहीं है अल्लाह की ओर से। नहीं होगा तुम्हारे लिये कोई शरण का स्थान उस दिन और न

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ مِنْ بَعْدِ مَا تَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ يَتَوَلَّوْنَ هَلْ إِلَى مَرَدٍّ مِنْ سَبِيلٍ ۝

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غَشْحِينَ مِنَ الدُّنْيِ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرَفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخَبِيرَ مِنَ الَّذِينَ خَبَرُوا الْقَوْمَ فَأُولَئِكَ يَوْمَ الْفِتْنَةِ أُولَئِكَ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُتَقَبٍ ۝

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُوهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۝

إِسْتَجِيبُوا لِلرَّائِدِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدٍّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَأٍ وَاسْتَجِيبُوا لِلرَّائِدِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدٍّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَأٍ وَاسْتَجِيبُوا لِلرَّائِدِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدٍّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۝

- 1 इस आयत में क्षमा करने की प्रेरणा दी गई है कि यदि कोई अत्याचार कर दे तो उसे सहन करना और क्षमा कर देना और सामर्थ्य रखते हुये उस से बदला न लेना ही बड़ी सुशीलता तथा साहस की बात है जिस की बड़ी प्रधानता है।
- 2 ताकि संसार में जा कर ईमान लायें और सदाचार करें तथा परलोक की यातना से बच जायें।

छिप कर अन जान बन जाने का।

48. फिर भी यदि वह विमुख हों तो (हे नबी!) हम ने नहीं भेजा है आप को उन पर रक्षक बना कर। आप का दायित्व केवल सदिश पहुँचा देना है। और वास्तव में जब हम चखा देते हैं मनुष्य को अपनी दया तो वह इतराने लगता है उस पर। और यदि पहुँचता है उन को कोई दुख उन के कर्तूत के कारण तो मनुष्य बड़ा कृतघ्न बन जाता है।

49. अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहे पुत्रियाँ प्रदान करता है तथा जिसे चाहे पुत्र प्रदान करता है।

50. अथवा उन्हें पुत्र और^[1] पुत्रियाँ मिला कर देता है। और जिसे चाहे बाँझ बना देता है। वास्तव में वह सब कुछ जानने वाला (तथा) सामर्थ्य रखने वाला है।

51. और नहीं संभव है किसी मनुष्य के लिये कि बात करे अल्लाह उस से परन्तु वही^[2] द्वारा, अथवा पर्दे के

وَإِنْ أَعْرَضُوا فَأَسْلَمْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظْنَاكَ مِنْ عَيْنِهِمْ
إِلَّا الْبَلَاءَ وَإِنَّا إِذَا أَفْتَنَّا الْإِنْسَانَ مِمَّا رَحِمْنَا قُوَّةً
بِهِاءُ وَإِنْ تُصِيبْهُمْ سَيْئَةٌ لَيَأْتِيَنَّ عَنْ يَدِنَا
وَإِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ

لَهُ تِلْكَ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ يُهَبِّ
لِمَنْ يَشَاءُ إِنَّا ذُو تَهَبُّ لِمَنْ يَشَاءُ الْذَّكَرُ

أَوْ يَرْزُقْهُمْ ذَكَرًا وَإِنَّا لَكَاوِمَعْلٌ مِنْ يَشَاءُ عَقِيمًا
إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ

وَمَا كَانَ لِكُلٍّ أَنْ يَكْلِمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَائِ
حِجَابٍ أَوْ رُسُلٍ يُسَوِّلُ لِمَنْ يَازِيهِ مَا يَشَاءُ

1 इस आयत में संकेत है कि पुत्र-पुत्री माँगने के लिये किसी पीर, फकीर के मज़ार पर जाना उन को अल्लाह की शक्ति में साझी बनाना है। जो शिर्क है। और शिर्क ऐसा पाप है जिस के लिये बिना तौबा के कोई क्षमा नहीं।

2 वही का अर्थ: संकेत करना या गुप्त रूप से बात करना है। अर्थात् अल्लाह अपने अपने रसूलों को अपना आदेश और निर्देश इस प्रकार देता है जिसे कोई दूसरा व्यक्ति सुन नहीं सकता। जिस के तीन रूप होते हैं:

- प्रथम: रसूल के दिल में सीधे अपना ज्ञान भर दे।
- दूसरा: पर्दे के पीछे से बात करे। किन्तु वह दिखाई न दे।
- तीसरा: फरिश्ते द्वारा अपनी बात रसूल तक गुप्त रूप से पहुँचा दे।

इन में पहले और तीसरे रूप में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास

पीछे से अथवा भेज दे कोई रसूल (फरिश्ता) जो वही करे उस की अनुमति से जो कुछ वह चाहता हो। वास्तव में वह सब से ऊँचा (तथा) सभी गुण जानने वाला है।

52. और इसी प्रकार हम ने वही (प्रकाशना) की है आप की ओर अपने आदेश की रूह (कुर्आन)। आप नहीं जानते थे कि पुस्तक क्या है तथा और ईमान¹ क्या है। परन्तु हम ने इसे बना दिया एक ज्योति। हम मार्ग दिखाते हैं इस के द्वारा जिसे चाहते हैं अपने भक्तों में से। और वस्तुतः आप सीधी राह² दिखा रहे हैं।

53. अब्ब्राह की राह जिस के अधिकार में है जो कुछ आकाशों में तथा जो कुछ धरती में है। सावधान! अब्ब्राह ही की ओर फिरते हैं सभी कार्य।

إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ۝

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحَنَا ۖ مِمَّا نُمَاتُكَ عَذَابِي
مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا تَهْدِي بِهِ
مَنْ نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ۝

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
إِلَّا إِلَىٰ اللَّهِ تُصِیْرُ الْأُمُورَ ۝

वही उतरती थी। (सहीह बुखारी: 2)

- 1 मक्का वासियों को यह आश्चर्य था कि मनुष्य अब्ब्राह का नबी कैसे हो सकता है? इस पर कुर्आन बता रहा है कि आप नबी होने से पहले न तो किसी आकाशीय पुस्तक से अवगत थे और न कभी ईमान की बात ही आप के विचार में आई। और यह दोनों बातें ऐसी थीं जिन का मक्कावासी भी इन्कार नहीं कर सकते थे। और यही आप का अज्ञान होना आप के सत्य नबी होने का प्रमाण है। जिसे कुर्आन की अनेक आयतों में वर्णित किया गया है।
- 2 सीधी राह से अभिप्राय सत्धर्म इस्लाम है।

सूरह जुखरुफ - 43

سُورَةُ الزَّخْرِفِ

सूरह जुखरुफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 89 आयतें हैं।

- इस की आयत 35 में ((जुखरुफ)) शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। जिस का अर्थ है: सोना-शोभा।
- इस की आरंभिक आयतें कूर्आन के लाभ और उस की बड़ाई को उजागर करती हैं। फिर उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से अल्लाह के अकेले पूज्य होने का विश्वास होता है। फिर आयत 15 से 25 तक फरिश्तों को अल्लाह का साझी बनाने को अनुचित बताया गया है। फिर आयत 26 से 33 तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के मूर्तियों से विरक्त होने के एलान को प्रस्तुत किया गया है। और बताया गया है कि मक्कावासी जो उन्हीं के वंश से हैं वे शिर्क तथा मूर्तियों की पूजा के पक्षपाती हो गये हैं। और अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस लिये विरोधी बन गये हैं कि आप एक अल्लाह के पूज्य होने का आमंत्रण दे रहे हैं।
- आयत 34 से 45 तक तनिक संसारिक लाभ के लिये परलोक तथा वही और रिसालत के इन्कार कर देने के परिणाम को बताया गया है। और फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कुछ दशाओं का वर्णन किया गया है। जिस से यह बात सामने आती है कि वह भी तौहीद का प्रचार करते थे और उन के विरोधियों ने अपना परिणाम देख लिया।
- अन्तिम आयतों में विरोधियों के लिये चेतावनी तथा सदाचारियों के लिये शुभसूचना के साथ अपराधियों को उन के दुष्परिणाम से सावधान, और कुछ संदेहों को दूर किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

2. शपथ है प्रत्यक्ष (खुली) पुस्तक की!

3. इसे हम ने बनाया है अर्बी कुर्आन ताकि वह इसे समझ सकें।

4. तथा वह मूल पुस्तक^[1] में है हमारे पास, बड़ा उच्च तथा ज्ञान से परिपूर्ण है।

5. तो क्या हम फेर दें इस शिक्षा को तुम से इसलिये कि तुम उल्लंघनकारी लोग हो?

6. तथा हम ने भेजे हैं बहुत से नबी (गुजरी हुयी) जातियों में।

7. और नहीं आता रहा उन के पास कोई नबी परन्तु वह उस के साथ उपहास करते रहे।

8. तो हम ने विनाश कर दिया इन से^[2] अधिक शक्तिवानों का तथा गुजर चुका है अगलों का उदाहरण।

9. और यदि आप प्रश्न करें उन से कि किस ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को? तो अवश्य कहेंगे: उन्हें पैदा किया है बड़े प्रभावशाली सब कुछ जानने वाले ने।

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

وَلَا إِلَهَ إِلَّا الْإِلَهُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمْ إِلَٰهًا ذُرِّيَّةً لَّكُمْ تَوَكَّلُونَ ۝

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي الْأَوَّلِينَ ۝

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَنَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ۝

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

1 मूल पुस्तक से अभिप्राय लौहे महफूज (सुरक्षित पुस्तक) है। जिस से सभी आकाशीय पुस्तकें अलग कर के अवतारित की गई हैं। सूरह वाकिआ में इसी को ((किताबे मक्नून)) कहा गया है। सूरह बुरूज में इसे ((लौहे महफूज)) कहा गया है। सूरह शुअरा में कहा गया कि यह अगले लोगों की पुस्तक में है। सूरह ओला में कहा गया है कि यह विषय पहली पुस्तकों में भी अंकित है। सारांश यह है कि कुर्आन के इन्कार करने का कोई कारण नहीं। तथा कुर्आन का इन्कार सभी पहली पुस्तकों का इन्कार करने के बराबर है।

2 अर्थात् मक्कावासियों से।

10. जिस ने बनाया तुम्हारे लिये धरती को पालना। और बनाये उस में तुम्हारे लिये मार्ग ताकि तुम मार्ग पा सको।^[1]
11. तथा जिस ने उतारा आकाश से जल एक विशेष मात्रा में फिर जीवित कर दिया उस के द्वारा मुर्दा भूमी को। इसी प्रकार तुम (धरती से) निकाले जाओगे।
12. तथा जिस ने पैदा किये सब प्रकार के जोड़े, तथा बनाई तुम्हारे लिये नवकाये तथा पशु जिन पर तुम सवार होते हो।
13. ताकि तुम सवार हो उन के ऊपर, फिर याद करो अपने पालनहार के प्रदान को जब सवार हो जाओ उस पर और यह^[2] कहो: पवित्र है वह जिस ने वश में कर दिया हमारे लिये इस को। अन्यथा हम इसे वश में नहीं कर सकते थे।
14. तथा हम अवश्य ही अपने पालनहार ही की ओर फिर कर जाने वाले हैं।
15. और बना लिया उन्होंने^[3] उस के भक्तों में से कुछ को उस का अंश। वास्तव में मनुष्य खुला कृतघ्न है।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا
سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً يُقَدِّرُ فَأَنْفِرْنَا
بِهِ بَنَدًا مُّيْتًا كُنَّا إِلَيْكَ تُخْرَجُونَ ﴿١١﴾

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفَلَاحِ
وَالْإِنْقَامِ مَآثِرَ كِبْرًا ﴿١٢﴾

لَعَسَّأَنَّكُمْ ظَاهِرُونَ لَكُمْ أَنْ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا
اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا
هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾

وَأَنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا نَبْتَغِي الْقُرْبَ ﴿١٤﴾

وَجَعَلُوا آلَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ
مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

1 एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये।

2 आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऊँट पर सवार होते तो तीन बार: अल्लाहु अकबर कहते फिर यही आयत ((मुन्कलिबून)) तक पढ़ते और कुछ और प्रार्थना के शब्द कहते थे जो दुआओं की पुस्तकों में मिलेंगे। (सहीह मुस्लिम हदीस न०: 1342)

3 जैसे मक्का के मुशरिक लोग फरिश्तों को अल्लाह की पुत्रियाँ मानते थे। और ईसाईयों ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र माना। और किसी ने आत्मा को प्रमात्मा तथा अवतारों को प्रभु बना दिया। और फिर उन्हें पूजने लगे।

16. क्या अल्लाह ने उस में से जो पैदा करता है, पुत्रियाँ बना ली है तथा तुम्हें विशेष कर दिया है पुत्रों के साथ?
17. जब कि उन में से किसी को शुभसूचना दी जाये उस (के जन्म लेने) की जिस का उस ने उदाहरण दिया है अत्यंत कृपाशील के लिये तो उस का मुख काला^[1] हो जाता है। और शोक से भर जाता है।
18. क्या (अल्लाह के लिये) वह है जिस का पालन-पोषण अभूषण में किया जाता है। तथा वह विवाद में खुल कर बात नहीं कर सकती?
19. और उन्होंने बना दिया फरिश्तों को जो अत्यंत कृपाशील के भक्त हैं पुत्रियाँ। क्या वह उपस्थित थे उन की उत्पत्ति के समय? लिख ली जायेगी उन की गवाही और उन से पूछ होगी।
20. तथा उन्होंने कहा कि यदि अत्यंत कृपाशील चाहता तो हम उन की इबादत नहीं करते। उन्हें इस का कोई ज्ञान नहीं। वह केवल तीर तुम्हें चला रहे हैं।

أَمْ اتَّخَذَ مِنَّا غُلَقٌ بَدَلٌ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ۖ

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝

أَوْ مِّن يَّتَسْتَوِي فِي الْحَيَاةِ وَمَوْتِي الْخَصَامِ عَيْرُ مَيْمِينٍ ۝

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝

1 इस्लाम से पूर्व यही दशा थी। कि यदि किसी के हों बच्ची जन्म लेती तो लज्जा के मारे उस का मुख काला हो जाता। और कुछ अरब के कबीले उसे जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। किन्तु इस्लाम ने उस को सम्मान दिया। तथा उस की रक्षा की। और उस के पालनपोषण को पुण्य कर्म घोषित किया। हदीस में है कि जो पुत्रियों के कारण दुख झेले और उन के साथ उपकार करे तो उस के लिये वे नरक से पर्दा बनेंगी। (सहीह बुखारी: 5995, सहीह मुस्लिम: 2629) आज भी कुछ पापी लोग गर्भ में बच्ची का पता लगते ही गर्भपात करा देते हैं। जिसको इस्लाम बहुत बड़ा अत्याचार समझता है।

21. क्या हम ने उन्हें प्रदान की है कोई पुस्तक इस से पहले, जिसे वह दृढ़ता से पकड़े हुये हैं?^[1]
22. बल्कि यह कहते हैं कि हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।
23. तथा (हे नबी!) इसी प्रकार हम ने नहीं भेजा आप से पूर्व किसी बस्ती में कोई सावधान करने वाला परन्तु कहा उस के सुखी लोगों ने: हम ने पाया है अपने पूर्वजों को एक रीति पर और हम निश्चय उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।^[2]
24. नबी ने कहा: क्या (तुम उन्हीं का अनुगमन करोगे) यद्यपि मैं लाया हूँ तुम्हारे पास उस से अधिक सीधा मार्ग जिस पर तुम ने पाया है अपने पूर्वजों को? तो उन्होंने कहा: हम जिस (धर्म) के साथ तुम भेजे गये हो उसे मानने वाले नहीं हैं।
25. अन्ततः हम ने बदला चुका लिया उन से। तो देखो कि कैसा रहा झुठलाने वालों का दुष्परिणाम।
26. तथा याद करो, जब कहा इब्राहीम ने अपने पिता तथा अपनी जाति से: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की बंदना तुम करते हो।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿١﴾

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ مِثْلِ هَٰذَا عَلٰى أَثَرِهِمْ فَهُمْ تَحْتَدُونَ ﴿٢﴾

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ مِثْلِ هَٰذَا وَإِنَّا عَلَىٰ أَثَرِهِمْ ثَقِيلُونَ ﴿٣﴾

قُلْ أَوَلَمْ يَجْعَلْ لَّكُمْ يَٰهْدٰى مِثْرًا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ آيَاتًا مَّا تَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

فَاصْبِرْ لِحُكْمِهِمْ وَظَرِّكَ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿٥﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٦﴾

1 अर्थात् कुर्आन से पहले की किसी ईश- पुस्तक में अल्लाह के सिवा किसी और की उपासना की शिक्षा दी ही नहीं गई है कि वह कोई पुस्तक ला सकें।

2 आयत का भावार्थ यह है कि प्रत्येक युग के काफिर अपने पूर्वजों के अनुसरण के कारण अपने शिर्क और अंधविश्वास पर स्थित रहे।

27. उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है। वही मुझे राह दिखायेगा।

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝

28. तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को^[1] अपनी संतान में ताकि वह (शिरक से) बचते रहें।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

29. बल्कि मैं ने इन को तथा इन के बाप दादा को जीवन का सामान दिया। यहाँ तक कि आ गया उन के पास सत्य (क़ुर्आन) और एक खुला रसूल।^[2]

بَلْ مَكَّنْتُ لَهُوَالَهُ وَأَبَادَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

30. तथा जब आ गया उन के पास सत्य तो उन्होंने कह दिया कि यह जादू है तथा हम इसे मानने वाले नहीं हैं।

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالَ الْوَاحِدُ امْضَوْا أَنَا بَرٌّ كَذِبُونَ ۝

31. तथा उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारा^[3] गया यह क़ुर्आन दो बस्तियों में से किसी बड़े व्यक्ति पर?

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْغَرَبِيِّينَ عَظِيمٍ ۝

32. क्या वही बाँटते^[4] है आप के पालनहार की दया? हम ने बाँटा है उन के बीच उन की जीविका को संसारिक जीवन में। तथा हम ने उच्च किया है उन में से एक

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْعِدَتَهُمْ فِي الْغَيْبِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا حِزْبًا ۚ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝

1 आयत 26 से 28 तक का भावार्थ यह है कि यदि तुम्हें अपने पूर्वजों ही का अनुगमन करना है तो अपने पूर्वज इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का अनुगमन करो। जो शिरक से विरक्त तथा एकेश्वरवादी थे। और अपनी संतान में एकेश्वरवाद (तौहीद) की शिक्षा छोड़ गये ताकि लोग शिरक से बचते रहें।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

3 मक्का के काफिरों ने कहा कि यदि अल्लाह को रसूल ही भेजना था तो मक्का और ताइफ के नगरों में से किसी प्रधान व्यक्ति पर क़ुर्आन उतार देता। अब्दुल्लाह का अनाथ-निर्धन पुत्र मुहम्मद तो कदापि इस के योग्य नहीं है।

4 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने जैसे संसारिक धन-धान्य में लोगों की विभिन्न श्रेणियों बनाई है उसी प्रकार नबूवत और रिसालत, जो उस की दया है, उन को भी जिस के लिये चाहा प्रदान किया है।

को दूसरे पर कई श्रेणियाँ। ताकि एक-दूसरे से सेवा कार्य लें, तथा आप के पालनहार की दया^[1] उस से उत्तम है जिसे वह इकट्ठा कर रहे हैं।

33. और यदि यह बात न होती कि सभी लोग एक ही नीति पर हो जाते तो हम अवश्य बना देते उन के लिये जो कुफ़र करते हैं अत्यंत कृपाशील के साथ उन के घरों की छतें चाँदी की तथा सीढ़ियाँ जिन पर वह चढ़ते हैं।

34. तथा उन के घरों के द्वार, और तख्त जिन पर वह तकिये लगाये^[2] रहते हैं।

35. तथा बना देते शोभा। नहीं है यह सब कुछ परन्तु संसारिक जीवन के सामान। तथा आखिरत^[3] (परलोक) आप के पालनहार के यहाँ केवल आज्ञाकारियों के लिये है।

36. और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अब्राह) के स्मरण से अंधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी हो जाता है।

37. और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से। तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

38. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो यह कामना करेगा कि मेरे

وَكُلًّا لَّا يَكُونُ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُوقِّرَهُمْ سُلُوفًا مِّنْ فَضْلِهِ وَمَعَارِجَ عَلَيْهِ يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِيُوقِّرَهُمُ ابْوَابًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَسْكُنُونَ ﴿٣٤﴾

وَوَحْرًا وَإِن كُنْ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٥﴾

وَمَن يُضِلَّ عَن ذِكْرِ الرَّحْمَنِ يَقِطْ لَهُ شَيْطَانٌ فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ﴿٣٦﴾

وَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ السَّبِيلِ وَيَحْبَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَلَيْتَ يَتَّبِعُوْنِي وَبَيْنَكَ بَعْدُ

1 अर्थात् परलोक में स्वर्ग सदाचारी भक्तों को मिलेगी।

2 अर्थात् सब मायामोह में पड़ जाते।

3 भावार्थ यह है कि संसारिक धन-धान्य का अब्राह के हों कोई महत्व नहीं है।

الْمَشْرِقَيْنِ فَيَسَّ الْقَرْيُنَ ۝

तथा तेरे (शैतान के) बीच पश्चिम
तथा पूर्व की दूरी होती। तू बुरा साथी है।

وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ الْيَوْمَ مَا أَظْلَمْتُمْ فِي الْعَذَابِ
مُشْرِكُونَ ۝

39. (उन से कहा जायेगा): और तुम्हें
कदापि कोई लाभ नहीं होगा आज,
जब कि तुम ने अत्याचार कर लिया
है। वास्तव में तुम सब यातना में
साझी रहोगे।

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ
فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

40. तो (हे नबी!) क्या आप सुना लेंगे
बहरों को या सीधी राह दिखा देंगे
अंधों को तथा जो खुले कुपथ^[1] में
हों?

فَأَلَمْ يَلِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ وَكُنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ۝

41. फिर यदि हम आप को (संसार से) ले
जायें तो भी हम उन से बदला लेने
वाले हैं।

أَوْ زَيْبَكَ الذِّي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُونَ ۝

42. अथवा आप को दिखा दें जिस
(यातना) का हम ने उन को वचन
दिया है तो निश्चय हम उन पर
सामर्थ्य रखने वाले हैं।

فَأَسْمِئِكَ بِالذِّي أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَأْيَكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝

43. तो (हे नबी!) आप दृढ़ता से पकड़े
रहें उसे जो हम आप की ओर बह्नी
कर रहे हैं। वास्तव में आप सीधी राह
पर हैं।

وَأَنَّهُ لَئِنْ كُذِّبَتْ لَأَقْوَمُكُمْ وَاسْوَىٰ سَعَتُونَ ۝

44. निश्चय यह (क़ुर्आन) आप के लिये
तथा आप की जाति के लिये एक
शिक्षा^[2] है। और जल्द ही तुम से
प्रश्न^[3] किया जायेगा।

1 अर्थ यह है कि जो सच्च को न सुने तथा दिल का अंधा हो तो आप के सीधी राह दिखाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

2 इस का पालन करने के संबन्ध में।

3 पहले नबियों से पूछने का अर्थ उन की पुस्तकों तथा शिक्षाओं में यह बात

45. तथा हे नबी! आप पूछ लें उन से जिन्हें हम ने भेजा है आप से पहले अपने रसूलों में से कि क्या हम ने बनाये हैं अत्यंत कृपाशील के अतिरिक्त बंदनीय जिन की बंदना की जाये?

46. तथा हम ने भेजा मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के प्रमुखों की ओर। तो उस ने कहा: वास्तव में, मैं सर्वलोक के पालनहार का रसूल हूँ।

47. और जब वह उन के पास लाया हमारी निशानियाँ तो सहसा वह उन की हँसी उड़ाने लगे।

48. तथा हम उन को एक से बढ़ कर एक निशानी दिखाते रहे। और हम ने पकड़ लिया उन्हें यातना में ताकि वह (ठट्ठा) से रुक जायें।

49. और उन्होंने कहा: हे जादूगर! प्रार्थना कर हमारे लिये अपने पालनहार से उस वचन के आधार पर जो तुझ से किया है। वास्तव में हम सीधी राह पर आ जायेंगे।

50. तो जैसे ही हम ने दूर किया उन से यातना को, तो वह सहसा वचन तोड़ने लगे।

51. तथा पुकारा फिरऔन ने अपनी जाति में। उस ने कहा: हे मेरी जाति! क्या नहीं है मेरे लिये मिस्र का राज्य तथा यह नहरें जो वह

وَسْئَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ
فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ إِذْ أَنَّهُمْ مِنْهَا يُضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

وَمَا نُؤْتِيهِمْ مِنْ إِلَهٍ إِلَّا الْإِلَهَ الْأَكْبَرُ مِنَ أَتْلَحِبَهَا
وَإِخَذْنَا لَهُمُ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا السَّاحِرُ ادْعُ لَكَ رَبَّكَ بِمَا عَاهَدَ
عِنْدَ اللَّهِ أَنَّمَا يَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذْ أَنَّهُمْ يَتُكَلِّفُونَ ﴿٥٠﴾

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ
مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي أَنَا
بُصِيرٌ ﴿٥١﴾

देखनी है।

रही हैं मेरे नीचे से? तो क्या तुम देख नहीं रहे हो।

52. मैं अच्छा हूँ या वह जो अपमानित (हीन) है और खुल कर बोल भी नहीं सकता?

أَمْ أَدْرَأُكَ خَيْرٌ مِنْ هَذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ ۖ مَوْلَايَا ۖ يُبِينُ ۝

53. क्यों नहीं उतारे गये उस पर सोने के कंगन अथवा आये फरिश्ते उस के साथ पंक्ति बाँधे हुये?^[1]

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقَرَّرِينَ ۝

54. तो उस ने झाँसा दे दिया अपनी जाति को और सब ने उस की बात मान ली। वास्तव में वह थे ही अवज्ञाकारी लोग।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ ۖ فَطَاعُوهُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

55. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित कर दिया तो हम ने उन से बदला ले लिया और सब को डुबो दिया।

فَلَمَّا أَسْفَوْا ۖ أَنفَقْنَا فِيهِمْ الْخَافِرِينَ ۖ فَالْوَقْتُ لَهُمْ أَجْعَلِينَ ۝

56. और बना दिया हम ने उन को गया गुज़रा और एक उदाहरण पश्चात के लोगों के लिये।

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا ۖ وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ۝

57. तथा जब दिया गया मर्यम के पुत्र का^[2] उदाहरण तो सहसा आप की जाति उस से प्रसन्न हो कर शोर मचाने लगी।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝

58. तथा मुश्रिकों ने कहा कि हमारे

وَقَالُوا ۚ الْهَيْئَةُ خَيْرٌ ۚ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ

1 अर्थात् यदि मूसा (अलैहिस्सलाम) अब्राह का रसूल होता तो उस के पास राज्य, और हाथों में सोने के कंगन तथा उस की रक्षा के लिये फरिश्तों को उस के साथ रहना चाहिये था। जैसे मेरे पास राज्य, हाथों में सोने के कंगन तथा सुरक्षा के लिये सेना है।

2 आयत नं० 45 में कहा गया है कि पहले नबियों की शिक्षा पढ़ कर देखो कि क्या किसी ने यह आदेश दिया है कि अब्राह अत्यंत कृपाशील के सिवा दूसरों की इबादत की जाये? इस पर मुश्रिकों ने कहा कि इसा (अलैहिस्सलाम) की इबादत क्यों की जाती है? क्या हमारे पूज्य उन से कम है?

देवता अच्छे हैं या बे? उन्होंने नहीं दिया यह (उदाहरण) आप को परन्तु कुतर्क (झगड़ने) के लिये। बल्कि वह हैं ही बड़े झगड़ालू लोग।

بَلْ مِنْ قَوْمٍ خَصِمُونَ ﴿٩٣﴾

59. नहीं है वह^[1] (ईसा) परन्तु एक भक्त (दास) जिस पर हम ने उपकार किया। तथा उसे इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बनाया।

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٩٤﴾

60. और यदि हम चाहते तो बना देते तुम्हारे बदले फरिश्ते धरती में, जो एक-दूसरे का स्थान लेते।

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ فِرْعَوْنَ أَوْ لُوطًا ۖ لَإِذْنًا ۚ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۚ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا مِنْكُمْ رِجَالًا بِالنُّذُرِ ۚ لَقُلْنَا لَهُمْ إِنَّا هِيَ الْآيَةُ ۚ أَتُحْذَرُونَ ﴿٩٥﴾

61. तथा वास्तव में वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण^[2] है प्रलय का। अतः कदापि संदेह न करो प्रलय के विषय में। और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ لَعَنَّا لَهُمُ الْمَوْتَ وَالْمَوْتِ ۚ وَكَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٩٦﴾

62. तथा तुम्हें कदापि न रोक दे शैतान। निश्चय वह तुम्हारा खुला शत्रु है।

وَلَا يَصُدُّكُمْ عَنْهُ الشَّيْطَانُ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٩٧﴾

63. और जब आ गया ईसा खुली निशानियाँ ले कर तो कहा: मैं लाया हूँ तुम्हारे पास ज्ञान। और ताकि उजागर कर दूँ तुम्हारे लिये कुछ वह बातें जिन में तुम विभेद कर रहे हो। अतः अल्लाह से डरो और मेरा ही कहा मानो।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۚ إِنَّكُمْ تَهْتَكُونَ فِتْنًا ۚ وَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَىٰ هَٰذَا ۚ إِنَّكُمْ أَهْلَ حُسْنٍ ۚ ثُمَّ خَلَّىٰ لَهُمْ إِلَهَهُمْ ذُرِّيَّتَهُمْ ۚ فَخَلَّىٰ لَهُمُ الْبَتْنَ ۚ وَكَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٩٨﴾

1 इस आयत में बताया जा रहा है कि यह मुश्रिक, ईसा (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण पर बड़ा शोर मचा रहे हैं। और उसे कुतर्क स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं। जब कि वह पूज्य नहीं, अल्लाह के दास हैं। जिन पर अल्लाह ने पुरस्कार किया और इस्राईल की संतान के लिये एक आदर्श बना दिया।

2 हदीस शरीफ में है आया है कि प्रलय की बड़ी दस निशानियों में से ईसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश से उतरना भी एक निशानी है। (सहीह मुस्लिम: 2901)

64. वास्तव में अल्लाह ही मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है। अतः उसी की बंदना (इबादत) करो यही सीधी राह है।

65. फिर विभेद कर लिया गिरोहों^[1] ने आपस में। तो विनाश है उन के लिये जिन्होंने अत्याचार किया दुःखदायी दिन की यातना से।

66. क्या वह बस इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रलय उन पर सहसा आ पड़े और उन्हें (उस का) संवेदन (भी) न हो?

67. सभी मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु हो जायेंगे आज्ञाकारियों के सिवा।

68. हे मेरे भक्तो! कोई भय नहीं है तुम पर आज। और न तुम उदासीन होगे।

69. जो ईमान लाये हमारी आयतों पर तथा आज्ञाकारी बन के रहे।

70. प्रवेश कर जाओ स्वर्ग में तुम तथा तुम्हारी पत्नियाँ। तुम्हें प्रसन्न रखा जायेगा।

71. फिरायी जायेंगी उन पर सोने की धालें तथा प्याले। और उस में वह सब कुछ होगा जिसे उन का मन चाहेगा और जिसे उन की आँखें देख कर आनन्द लेंगी। और तुम सब उस में सदैव रहोगे।

إِنَّ اللَّهَ مُوَدِّعِي وَرَثَتِكُمْ فَلَا عُدُوَّةَ لِهَذَا صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٤﴾

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابٍ يَوْمَ الزَّلْزَلَةِ ﴿٦٥﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٦﴾

الْأَخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ﴿٦٧﴾

يَوْمَ لَا يَخَوْفُ عَلَيْكُمُ الْيَوْمُ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٦٨﴾

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ﴿٦٩﴾

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ﴿٧٠﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَا كُنْتُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْأَنْفُسُ وَكَذَلِكَ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٧١﴾

1 इस्राईली समुदायों में कुछ ने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का पुत्र, किसी ने प्रभु तथा किसी ने उसे तीन का तीसरा (तीन खुदाओं में से एक) कहा। केवल एक ही समुदाय ने उन्हें अल्लाह का भक्त तथा नबी माना।

72. और यह स्वर्ग है जिस के तुम उत्तराधिकारी बनाये गये हो अपने कर्मों के बदले जो तुम कर रहे थे।
73. तुम्हारे लिये इस में बहुत से मेवे हैं जिन में से तुम खाते रहोगे।
74. निःसंदेह अपराधी नरक की यातना में सदावासी होंगे।
75. उन से (यातना) हल्की नहीं की जायेगी तथा वे उस में निराश होंगे।
76. और हम ने अत्याचार नहीं किया उन पर, परन्तु वही अत्याचारी थे।
77. तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक!^[1] हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार। वह कहेगा: तुम्हें इसी दशा में रहना है।
78. (अब्लाह कहेगा): हम तुम्हारे पास सत्य^[2] लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।
79. क्या उन्होंने किसी बात का निर्णय कर लिया है?^[3] तो हम भी निर्णय कर देंगे।^[4]
80. क्या वह समझते हैं की हम नहीं सुनते हैं उन की गुप्त बातों तथा प्रामर्श को? क्यों नहीं, बल्कि हमारे फरिश्ते उन के पास ही

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۝

لَا يَفْقَرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۝

وَنَادُوا إِلَيْنَا لِنُقِضَ عَلَيْكَ رَبُّكَ قَالَ إِنَّكُمْ مُكْذِبُونَ ۝

لَقَدْ جِئْتُمُوهَا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَرِهُونَ ۝

أَمْ أَمْرُكُمْ أَمْ أَمَرْنَا أَمَّا مُبْرَمُونَ ۝

أَمْ يَحْسِبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۝

1 मालिक: नरक के अधिकारी फरिश्ते का नाम है।

2 अर्थात् नबियों द्वारा।

3 अर्थात् सत्य के इन्कार का।

4 अर्थात् उन्हें यातना देने का।

लिख रहे हैं।

81. (हे नबी!) आप उन से कह दें कि यदि अत्यंत कृपाशील (अब्राह)की कोई संतान होती तो सब से पहले मैं उस का पुजारी होता।
82. पवित्र है आकाशों तथा धरती का पालनहार सिंहासन का स्वामी उन बातों से जो वह कहते हैं!
83. तो आप उन्हें छोड़ दें, वह बाद-विवाद तथा खेल-कूद करते रहें, यहाँ तक की अपने उस दिन से मिल जायें जिस से उन्हें डराया जा रहा है।
84. वही है जो आकाश में बंदनीय और धरती में बंदनीय है। और वही हिक्मत और ज्ञान वाला है।
85. शुभ है वह जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा जो कुछ दोनों के मध्य है। तथा उसी के पास प्रलय का ज्ञान है। और उसी की ओर तुम सब प्रत्यागत किये जाओगे।
86. तथा नहीं अधिकार रखते हैं जिन्हें वह पुकारते हैं अब्राह के अतिरिक्त सिफारिश का। हाँ (सिफारिश के योग्य वे हैं) जो सत्य^[1] की गवाही

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ ۝

سُبْحَنَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَظِيمٍ ۝

فَذَرَهُمْ خَوْضًا وَيُلْعَابًا حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهٌ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

وَتَعْلَمُ أَنَّ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ يُرْجَعُونَ ۝

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

1 सत्य से अभिप्राय धर्म-सूत्र ((ला इलाहा इल्लाह)) है। अर्थात् जो इसे जान बूझ कर स्वीकार करते हों तो शफाअत उन्हीं के लिये होगी। उन काफिरों के लिये नहीं जो मूर्तियों को पुकारते हैं। अथवा इस से अभिप्राय यह है कि सिफारिश का अधिकार उन को मिलेगा जिन्होंने सत्य को स्वीकार किया है। जैसे अम्बिया, धर्मात्मा तथा फरिश्तों को, न कि झूठे उपास्यों को जिन को मुश्रिक अपना सिफारिशी समझते हैं।

दें, और (उसे) जानते भी हों।

87. और यदि आप उन से प्रश्न करें कि किस ने पैदा किया है उन को? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। तो फिर वह कहाँ फिरे जा रहे हैं?⁽¹⁾

88. तथा रसूल की यह बात कि, हे मेरे पालनहार! यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

89. तो आप उन से विमुख हो जायें, तथा कह दें कि सलाम⁽²⁾ है। शीघ्र ही उन्हें ज्ञान हो जायेगा।

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَلَّى يُؤْفَكُونَ ۝

وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّا هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

1 अर्थात् अल्लाह की उपासना से।

2 अर्थात् उन से न उलझें।

सूरह दुख़ान - 44

سُورَةُ الدُّخَانِ

सूरह दुख़ान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 59 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 में आकाश से दुख़ान (धुबें) के निकलने की चर्चा है इसलिये इस का नाम सूरह दुख़ान है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन का महत्व बताया गया है। फिर आयत 7-8 में कुर्आन उतारने वाले का परिचय कराया गया है।
- आयत 9 से 33 तक फिरऔन की जाति के विनाश और बनी इसराईल की सफलता को एक ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि रसूल के विरोधियों का दुष्परिणाम कैसा हुआ। और उन के अनुयायी किस प्रकार सफल हुये।
- आयत 34 से 57 तक दूसरे जीवन के इन्कार तथा उस का विश्वास कर के जीवन व्यतीत करने का अलग-अलग फल बताया गया है जो प्रलय के दिन सामने आयेगा।
- अन्तिम आयतों में उन को सावधान किया गया है जो कुर्आन का आदर नहीं करते। अर्थात इस सूरह के आरंभिक विषय ही में इस का अन्त भी किया गया है।
- हदीस में है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने अल्लाह से दुआ की, कि यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के अकाल के समान इन पर भी सात वर्ष का अकाल भेज दे। और फिर उन पर ऐसा अकाल आया कि प्रत्येक चीज़ का नाश कर दिया गया। और वह मुर्दार खाने पर बाध्य हो गये। और यह दशा हो गयी कि जब वह आकाश की ओर देखते तो भूक के कारण धूँवाँ जैसा दिखाई देता था। (देखिये: सहीह बुख़ारी: 4823, 4824)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. शपथ है इस खुली पुस्तक की।
3. हम ने ही उतारा है इस^[1] को एक
शुभ रात्री में। वास्तव में हम सावधान
करने वाले हैं।
4. उसी (रात्रि) में निर्णय किया जाता है
प्रत्येक सुदृढ़ कर्म का।
5. यह (आदेश) हमारे पास से है। हम
ही भेजने वाले हैं रसूलों को।
6. आप के पालनहार की दया से,
वास्तव में वह सब कुछ सुनने जानने
वाला है।
7. जो आकाशों तथा धरती का पालनहार
है तथा जो कुछ उन दोनों के बीच है,
यदि तुम विश्वास करने वाले हो।
8. नहीं है कोई बंदनीय परन्तु वही जो
जीवन देता तथा मारता है। तुम्हारा
पालनहार तथा तुम्हारे गुज़रे हुये
पूर्वजों का पालनहार।
9. बल्कि वह (मुश्रिक) संदेह में खेल
रहे हैं।

حَمْدٌ

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُشْرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا
مُنْذِرِينَ

فِيهَا يُفْرَأُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ

أَمْرًا مِنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ

رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنُوزَ
مُؤْتِنِينَ

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ رَبُّ الْإِبْرَاقِ
الْأُولَى

بَلْ مُمْرِنٌ فِي شَاكٍ يَلْعَبُونَ

1 शुभ रात्री से अभिप्राय (लैलतुल कद्र) है यह रमजान के महीने के अन्तिम दशक की एक विषम रात्री होती है। यहाँ आगे बताया जा रहा है कि इसी रात्री में पूरे वर्ष होने वाले विषय का निर्णय किया जाता है। इस शुभ रात की विशेषता तथा प्रधानता के लिये सूरह कद्र देखिये। इसी शुभ रात्रि में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कुर्आन उतरने का आरंभ हुआ। फिर 23 वर्षों तक आवश्यकतानुसार विभिन्न समय में उतरता रहा। (देखिये: सूरह बकरा, आयत नं॰: 185)

10. तो आप प्रतीक्षा करें उस दिन जब आकाश खुला धुबों^[1] लायेगा।
11. जो छा जायेगा सब लोगों पर। यही दुःखदायी यातना है।
12. (वे कहेंगे): हमारे पालनहार हम से यातना दूर कर दे। निश्चय हम ईमान लाने वाले हैं।
13. और उन के लिये शिक्षा का समय कहाँ रह गया? जब कि उन के पास आ गये एक रसूल (सत्य को) उजागर करने वाले।
14. फिर भी वह आप से मुँह फेर गये तथा कह दिया कि एक सिखाया हुआ पागल है।
15. हम दूर कर देने वाले हैं कुछ यातना, वास्तव में तुम फिर अपनी प्रथम स्थिति पर आ जाने वाले हो।
16. जिस दिन हम अत्यंत कड़ी पकड़^[2] में ले लेंगे। तो हम

فَارْقُبَيَّ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ دُخَانٍ مُّبِينٍ ۝

يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

رَبَّنَا أَلِثْنَا عَلَيْهِ عَذَابٌ إِذَا الْمَوْتُونَ ۝

أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

فَعَرَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّكُم مَّجْنُونٌ ۝

إِنَّا كَاشِعُوا الْعَذَابَ وَلَئِنَّا لَأَكْثَرُ عَائِدُونَ ۝

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنْتَقِمُونَ ۝

- 1 इस प्रत्यक्ष धुँवे तथा दुःखदायी यातना की व्याख्या सहीह हदीस में यह आयी है कि जब मक्कावासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कड़ा विरोध किया तो आप ने यह शाप दिया कि हे अब्बाह! उन पर सात वर्ष का आकाल भेज दे। और जब आकाल आया तो भूक के कारण उन्हें धुबों जैसा दिखायी देने लगा। तब उन्होंने आप से कहा कि आप अब्बाह से प्रार्थना कर दें वह हम से आकाल दूर कर देगा तो हम ईमान ले आयेँगे। और जब आकाल दूर हुआ तो फिर अपनी स्थिति पर आ गये। फिर अब्बाह ने बद्र के युद्ध के दिन उन से बदला लिया। (सहीह बुखारी: 4821, तथा सहीह मुस्लिम: 2798)
- 2 यह कड़ी पकड़ का दिन बद्र के युद्ध का दिन है। जिस में उन के बड़े बड़े सत्तर प्रमुख मारे गये तथा इतनी ही संख्या में बंदी बनाये गये। और उन की दूसरी पकड़ कयामत के दिन होगी जो इस से भी बड़ी और गंभीर होगी।

निश्चय बदला लेने वाले हैं।

17. तथा हम ने परीक्षा ली इन से पूर्व
फिराऊन की जाति की। तथा उन के
पास एक आदरणीय रसूल आया।

وَلَقَدْ فَتَنَّا أَقْبَلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ
رَسُولٌ كَرِيمٌ ۝

18. कि मुझे सौंप दो अल्लाह के भक्तों
को। निश्चय मैं तुम्हारे लिये एक
अमानतदार रसूल हूँ।

أَنْ أَذِلَّ إِلَى عِبَادِ اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

19. तथा अल्लाह के विपरीत घमंड न
करो। मैं तुम्हारे सामने खुला प्रमाण
प्रस्तुत करता हूँ।

وَإِنْ لَا تَعْلَمُوا عَلَى اللَّهِ مِنَّا إِلَهٌ إِنَّا إِلَهُكُمْ مُسْلِمٌ مُبِينٌ ۝

20. तथा मैं ने शरण ली है अपने पालनहार
की तथा तुम्हारे पालनहार की इस से
कि तुम मुझ पर पथराव कर दो।

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ۝

21. और यदि तुम मेरा विश्वास न करो
तो मुझ से परे हो जाओ।

وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا لِي فَأَعْتَزِلُنِي ۝

22. अन्ततः मूसा ने पुकारा अपने
पालनहार को, कि वास्तव में यह
लोग अपराधी हैं।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِ الْهَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۝

23. (हम ने आदेश दिया) कि निकल
जा रातो-रात मेरे भक्तों को लेकर।
निश्चय तुम्हारा पीछा किया जायेगा।

فَأَسْرِ بِعِبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُونَ ۝

24. तथा छोड़ दे सागर को उस की दशा
पर खुला। वास्तव में यह डूब जाने
वाली सेना है।

وَأَنزِلْ فِي الْبَحْرِ رُجُومًا لَّهُمْ جُنْدٌ مُّعْرَقُونَ ۝

25. वह छोड़ गये बहुत से बाग तथा
जल स्रोत।

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

26. तथा खेतियाँ और सुखदायी स्थान।

وَزُرُوحٍ وَأَمْكَامٍ كَثِيرٍ ۝

27. तथा सुख के साधन जिन में वह

وَنَعْمَةٍ كَالَّذِينَ هُمْ فِيهَا يَكْمَلُونَ ۝

आनन्द ले रहे थे।

28. इसी प्रकार हुआ। और हम ने उन का उत्तरधिकारी बना दिया दूसरे^[1] लोगों को।

29. तो नहीं रोया उन पर आकाश और न धरती, और न उन्हें अवसर (समय) दिया गया।

30. तथा हम ने बचा लिया इस्राईल की संतान को अपमानकारी यातना से।

31. फिरऔन से। वास्तव में वह चढ़ा हुआ उल्लंघनकारियों में से था।

32. तथा हम ने प्रधानता दी उन को जानते हुये संसारवासियों पर।

33. तथा हम ने उन्हें प्रदान की ऐसी निशानियाँ जिन में खुली परीक्षा थी।

34. वास्तव में यह^[2] कहते हैं कि

35. हमें तो बस प्रथम बार मरना है तथा हम फिर जीवित नहीं किये जायेंगे।

36. फिर यदि तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों को (जीवित कर के) ला दो।

37. यह अच्छे हैं अथवा तुब्बअ की जाति^[3], तथा जो उन से पूर्व रहे हैं?

كَذَلِكَ وَأَوْتَيْنَاهُمَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۝

وَلَقَدْ بَعَثْنَا لِنِي إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا مِنَ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

وَأَنبَيَيْنَاهُمُ مِنَ آيَاتِنَا فِيهِ بَلَاءٌ مُبِينٌ ۝

إِنْ هَؤُلَاءَ لَيَقُولُونَ ۝

إِنْ هِيَ إِلَّا أَمْوَاتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا عَنَّا بِمُنْشَرِينَ ۝

قَالُوا يَا بَأْسًا إِنَّا كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ

1 अर्थात् बनी इस्राईल (याँकूब अलैहिस्सलाम की संतान) को।

2 अर्थात् मक्का के मुश्रिक कहते हैं कि संसारिक जीवन ही अन्तिम जीवन है। इस के पश्चात् परलोक का जीवन नहीं है।

3 तुब्बअ की जाति से अभिप्राय यमन की जाति सबा है। जिस के विनाश का वर्णन सूरह सबा में किया गया है। तुब्बअ हिम्यर जाति के शासकों की उपाधि थी जिसे उन की अवैज्ञा के कारण ध्वस्त कर दिया गया। (देखिये: सूरह सबा की

हम ने उन का विनाश कर दिया।
निश्चय वह अपराधी थे।

38. तथा हम ने आकाशों और धरती को
एवं जो कुछ उन दोनों के बीच है
खेल नहीं बनाया है।

39. हम ने नहीं पैदा किया है उन दोनों
को परन्तु सत्य के आधार पर। किन्तु
अधिकतर लोग इसे नहीं जानते हैं।

40. निःसंदेह निर्णय⁽¹⁾ का दिन उन सब
का निश्चित समय है।

41. जिस दिन कोई साथी किसी साथी के
कुछ काम नहीं आयेगा और न उन
की सहायता की जायेगी।

42. परन्तु जिस पर अल्लाह की दया
हो जाये तो वास्तव में वह बड़ा
प्रभावशाली दयावान है।

43. निःसंदेह ज़कूम (थोहड़) का वृक्ष।

44. पापियों का भोजन है।

45. पिघले हुये ताँबे जैसा, जो खौलेगा
पेटों में।

46. गर्म पानी के खौलने के समान।

47. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो, तथा
धक्का देते नरक के बीच तक पहुँचा दो।

48. फिर बहाओ उस के सिर के ऊपर

أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١٠﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا الْيَمِينَ ﴿١١﴾

مَا خَلَقْنَاهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٢﴾

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ يُقَاتِلُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٣﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْكَ مَوْلَىٰ عَنِ مَوْلَىٰ شَيْءٌ وَلَا
هُمْ يُنصَرُونَ ﴿١٤﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٥﴾

إِنَّ شَجَرَتَ الزُّقُومِ ﴿١٦﴾

طَعَامُ الْآثِمِينَ ﴿١٧﴾

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿١٨﴾

كَغَلِي الْحَمِيمِ ﴿١٩﴾

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْحَحِيمِ ﴿٢٠﴾

ثُمَّ صُوتُوا فِي رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٢١﴾

आयत- 15, से 19, तक।)

1 अर्थात् आकाशों तथा धरती की रचना लोगों की परीक्षा के लिये की गई है।
और परीक्षा फल के लिये प्रलय का समय निर्धारित कर दिया गया है।

अत्यंत गर्म जल की यातना^[1]

49. (तथा कहा जायेगा कि) चख, क्योंकि तू बड़ा आदरणीय सम्मानित था।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾

50. यही वह चीज़ है जिस में तुम संदेह कर रहे थे।

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ مُتَشَكِّكُونَ ﴿٥٠﴾

51. निःसंदेह आज्ञाकारी शान्ति के स्थान में होंगे।

إِنَّ الْبَلَّغِينَ فِي مَقَامٍ آمِنٍ ﴿٥١﴾

52. बागों तथा जल स्रोतों में।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾

53. वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾

54. इसी प्रकार होगा। तथा हम विवाह देंगे उन को हूरों से^[2]

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾

55. वह माँग करेंगे उस में प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

56. वह उस स्वर्ग में मौत^[3] नहीं चखेंगे प्रथम (संसारिक) मौत के सिवा। तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَّعَهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

57. आप के पालनहार की दया से, वही

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٥٧﴾

1 हदीस में है कि इस से जो कुछ उस के भीतर होगा पिघल कर दोनों पाँव के बीच से निकल जायेगा, फिर उसे अपनी पहली दशा पर कर दिया जायेगा। (तिर्मिजी: 2582, इस हदीस की सनद हसन है।)

2 हूर: अर्थात् गोरी और बड़े बड़े नैनों वाली स्त्रियों।

3 हदीस में है कि जब स्वर्गी स्वर्ग में और नारकी नरक में चले जायेंगे तो मौत को स्वर्ग और नरक के बीच ला कर बध्न कर दिया जायेगा। और एलान कर दिया जायेगा कि अब मौत नहीं होगी। जिस से स्वर्गी प्रसन्न पर प्रसन्न हो जायेंगे और नारकियों को शोक पर शोक हो जायेगा। (सहीह बुखारी: 6548, सहीह मुस्लिम: 2850)

बड़ी सफलता है।

58. तो हम ने सरल कर दिया इस
(क़ुरआन) को आप की भाषा में ताकि
वह शिक्षा ग्रहण करें।
59. अतः आप प्रतीक्षा करें^[1] वह भी
प्रतीक्षा कर रहे हैं।

فَاِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् परिणाम की।

सूरह जासियह - 45



सूरह जासियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 37 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 28 में प्रलय के दिन प्रत्येक समुदाय के जासियह अर्थात् घुटनों के बल गिरे हुये होने की चर्चा की गई है। इसलिये इस का नाम सूरह जासियह है।
- इस की आरंभिक आयतों में तौहीद की निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। जिस की ओर कुर्आन बुला रहा है।
- इस की आयत 7 से 15 तक में अल्लाह की आयतें न सुनने पर परलोक में बुरे परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि वे विरोधियों को क्षमा कर दें।
- आयत 16 से 20 तक में बनी इस्राईल को चेतावनी दी गई है कि उन्होंने धर्म का परस्कार पा कर उस में विभेद कर लिया। और अब जो धर्म विधान उतारा जा रहा है उस का पालन करें।
- आयत 21 से 35 में परलोक के प्रतिफल के बारे में कुछ संदेहों का निवारण किया गया है।
- इस की अंतिम आयतों में अल्लाह की प्रशंसा का वर्णन किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. इस पुस्तक^[1] का उतरना अल्लाह, सब चीजों और गुणों को जानने वाले की ओर से है।

حَمْدٌ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

1 इस सूरह में भी तौहीद तथा परलोक के संबन्ध में मुश्रिकों के संदेह को दूर किया गया तथा उन की दुराग्रह की निन्दा की गई है।

3. वास्तव में आकाशों तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ईमान लाने वालों के लिये।
4. तथा तुम्हारी उत्पत्ति में तथा जो फैला⁽¹⁾ दिये हैं उस ने जीव, बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हों।
5. तथा रात और दिन के आने- जाने में, तथा अल्लाह ने आकाश से जो जीविका उतारी है, फिर जीवित किया है उस के द्वारा धरती को उस के मरने के पश्चात् तथा हवाओं के फेरने में बड़ी निशानियाँ हैं उन के लिये जो समझ-बूझ रखते हों।
6. यह अल्लाह की आयतें हैं जो वास्तव में हम तुम्हें सुना रहे हैं। फिर कौन सी बात रह गई है अल्लाह तथा उस के आयतों के पश्चात् जिस पर वह ईमान लायेंगे?
7. विनाश है प्रत्येक झूठे पापी के लिये।
8. जो अल्लाह की उन आयतों को जो उस के सामने पढ़ी जायें सुने, फिर भी वह अकड़ता हुआ (कुफ़र पर) अड़ा रहे, जैसे कि उन को सुना ही

إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَدُكُ مِنْ دَابَّةٍ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝

وَالْخَلْقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ آيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

بَلَدَكَ آيَاتُ اللَّهِ تُنَكِّلُهَا عَلَيْكَ يَا حَقُّ يَا بَئِي حَدِيثٍ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَةٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَمَنْ لَّنْ أَقَالُهُ آثِمُونَ ۝

يَسْمَعُ آيَاتُ اللَّهِ تَنْزِيلًا عَلَيْهِمْ ثُمَّ يُعْمِدُ تَكْبِيرًا كَانُكُمْ يَسْتَعْجِلُ بَعْدَ الْعَذَابِ الْيَوْمَ ۝

1. तौहीद (एकेश्वरवाद) के प्रकरण में कुर्आन ने प्रत्येक स्थान पर आकाश तथा धरती में अल्लाह के सामर्थ्य की फैली हुई निशानियों को प्रस्तुत किया है। और यह बताया है कि जैसे उस ने वर्षा द्वारा मनुष्य के आर्थिक जीवन की व्यवस्था की है वैसे ही रसूलों तथा पुस्तकों द्वारा उस के आत्मिक जीवन की भी व्यवस्था कर दी है जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिये। यह विश्व की व्यवस्था स्वयं ऐसी खुली पुस्तक है जिस के पश्चात् ईमान लाने के लिये किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

न हो! तो आप उसे दुःखदायी यातना की सूचना पहुँचा दें।

9. और जब उसे ज्ञान हो हमारी किसी आयत का तो उसे उपहास बना ले। यही है जिन के लिये अपमानकारी यातना है।
10. तथा उन के आगे नरक है। और नहीं काम आयेंगा उन के जो कुछ उन्होंने कमाया है और न जिसे उन्होंने अल्लाह के सिवा संरक्षक बनाया है। और उन्हीं के लिये कड़ी यातना है।
11. यह (क़ुर्आन) मार्गदर्शन है। तथा जिन्होंने क़ुफ़्र किया अपने पालनहार की आयतों के साथ तो उन्हीं के लिये यातना है दुःखदायी यातना।
12. अल्लाह ही ने वश में किया है तुम्हारे लिये सागर को ताकि नाव चले उस में उस के आदेश से। और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह (दया) की। और ताकि तुम उस के कृतज्ञ (आभारी) बनो।
13. तथा उस ने तुम्हारी सेवा में लगा रखा है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है सब को अपनी ओर से। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन के लिये जो सोच-विचार करें।
14. (हे नबी!) आप उन से कह दें जो ईमान लाये हैं कि क्षमा कर^[1] दें उन को जो आशा नहीं रखते हैं अल्लाह के

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰیَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

مِنْ دَرَجَاتٍ جَهَنَّمَ ۖ وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَسْبُهُمْ شَيْئًا ۚ وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

هٰذَا هُدًى وَالتَّذٰنِ كَقُرْءَانِ الْبُرْجِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رَّجِزٍ اَلِيْمٌ ۝

اللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَمَجْرِی الْفُلْکُ فِیْهِ بِاَثَرٍ ۚ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهٖ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ۚ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یَغْفِرُ اللّٰهُ لِهَیْجُوْنَ اِیَّامَ اللّٰهِ لَیَجْزِیَ قَوْمًا لِّمَآ کَانُوْا یَکْسِبُوْنَ ۝

1 अर्थात् उन की ओर से जो दुःख पहुँचता है।

दिनों^[1] की, ताकि वह बदला दे एक समुदाय को उन की कमाई का।

15. जिस ने सदाचार किया तो अपने भले के लिये किया। तथा जिस ने दुराचार किया तो अपने ऊपर किया। फिर तुम (प्रतिफल के लिये) अपने पालनहार की ओर ही फेरे^[2] जाओगे।

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا
لِنُكَرًا إِلَىٰ رَبِّكَ تَرْجَعُونَ ۝

16. तथा हम ने प्रदान की इस्राईल की संतान को पुस्तक, तथा राज्य और नबूवत (दूतत्व), और जीविका दी उन को स्वच्छ चीजों से तथा प्रधानता दी उन्हें (उन के युग के) संसारवासियों पर।

وَأَعَدَّ لِمُوسَىٰ إِسْرَءِيلَ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحَمْرَ وَالنُّفُورَ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الْغُلَبَاتِ وَقَضَيْنَاهُمْ عَلَىٰ الْعَالَمِينَ ۝

17. तथा दिये हम ने उन को खुले आदेश। तो उन्होंने विभेद नहीं किया परन्तु अपने पास ज्ञान^[3] आ जाने के पश्चात् आपस के द्वेष के कारण। निःसंदेह आप का पालनहार ही निर्णय करेगा उन के बीच प्रलय के दिन जिस बात में वह विभेद कर रहे हैं।

وَأَنبَأْنَاهُمْ بَيْنَهُ مِنَ الْأَمْرِ مَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ
مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَنِيَّابَيْنَهُمْ إِنَّ رَبَّكَ
يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ۝

18. फिर (हे नबी!) हम ने कर दिया आप को एक खुले धर्म विधान पर, तो आप अनुसरण करें इस का, तथा न चलें उन की आकांक्षाओं पर जो ज्ञान नहीं रखते।

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِّ ذُرِّيَّتِهِ مِنَ الْأُمَمِ قَاتِلَةً
وَالْأَسْبَغَةَ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

19. वास्तव में वह आप के काम न आयेंगे अल्लाह के सामने कुछ। यह

إِنَّهُمْ لَنْ يَأْتُوا غَنَمَتِكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الْظَالِمِينَ

1 अल्लाह के दिनों से अभिप्राय वे दिन हैं जिन में अल्लाह ने अपराधियों को यातनायें दी हैं। (देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 5)

2 अर्थात् प्रलय के दिन। जिस अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया है उसी के पास जाना भी है।

3 अर्थात् वैध तथा अवैध, और सत्योसत्य का ज्ञान आ जाने के पश्चात्।

अत्याचारी एक-दूसरे के मित्र हैं। और
अल्लाह आज्ञाकारियों का साथी है।

20. यह (कुरआन) सूझ की बातें हैं सब
मनुष्यों के लिये तथा मार्ग दर्शन एवं
दया है उन के लिये जो विश्वास करें।

21. क्या समझ रखा है जिन्होंने दुष्कर्म
किया है कि हम कर देंगे उन को
उन के समान जो ईमान लाये तथा
सदाचार किये हैं कि उन का जीवन
तथा मरण समान¹ हो जाये? वह
बुरा निर्णय कर रहे हैं।

22. तथा पैदा किया है अल्लाह ने आकाशों
एवं धरती को न्याय के साथ और
ताकि बदला दिया जाये प्रत्येक प्राणी
को उस के कर्म का तथा उन पर
अत्याचार नहीं किया जायेगा।

23. क्या आप ने उसे देखा जिस ने बना
लिया अपना पूज्य अपनी इच्छा को।
तथा कुपथ कर दिया अल्लाह ने उसे
जानते हुये, और मुहर लगा दी उस
के कान तथा दिल पर, और बना
दिया उस की आँख पर आवरण
(पर्दा)? फिर कौन है जो सीधी राह
दिखायेगा उसे अल्लाह के पश्चात्? तो
क्या तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते?

24. तथा उन्होंने कहा कि हमारा यही
संसारिक जीवन है। हम यही मरते
और जीते हैं। और हमारा विनाश युग
(काल) ही करता है। उन्हें इस का
कोई ज्ञान नहीं। वे केवल अनुमान की

بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ⑤

هَذَا بَصَافُ الْمُنَافِقِينَ هَدَىٰ ذُرِّيَّةً لَّقَوْمٍ
يُؤْتُونَ ⑥

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ
كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَعَهُمْ
وَمِمَّا أَنَّهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ⑦

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِيُخْرِجَ
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ⑧

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمِهِ
وَحَفَّتْهُ عَلَىٰ سَنَبِهِ وَقَلْبُهُ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غَشَاةً
فَإِنَّهُ يُعَذِّبُهُ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑨

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا أَلْهَامَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا
وَمَا إِلَهُنَا إِلَّا اللَّهُ هُوَ وَمَا لَهُمْ بِدَلَالِكَ مِنْ
عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ⑩

1 अर्थात् दोनों के परिणाम में अवश्य अन्तर होगा।

बात^[1] कर रहे हैं।

25. और जब पढ़ कर सुनाई जाती है उन्हें हमारी खुली आयतें तो उन का तर्क केवल यह होता है कि ला दो हमारे पूर्वजों को यदि तुम सच्चे हो।
26. आप कह दें: अल्लाह ही तुम्हें जीवन देता तथा मारता है, फिर एकत्र करेगा तुम्हें प्रलय के दिन जिस में कोई संदेह नहीं। परन्तु अधिकतर लोग (इस तथ्य को) नहीं^[2] जानते।
27. तथा अल्लाह ही का है आकाशों तथा धरती का राज्य और जिस दिन स्थापना होगी प्रलय की तो उस दिन क्षति में पड़ जायेंगे झूठे।
28. तथा देखेंगे आप प्रत्येक समुदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ। प्रत्येक समुदाय पुकारा जायेगा अपने कर्म-पत्र की ओर। आज बदला दिया जायेगा तुम लोगों को तुम्हारे कर्मों का।
29. यह हमारा कर्म-पत्र है जो बोल रहा है तुम पर सहीह बात। वास्तव में हम लिखवा रहे थे जो कुछ तुम कर रहे थे।
30. तो जो ईमान लाये तथा सदाचार

وَإِذَا نُتِلَ عَلَيْهِمُ الْآيَاتُ بَيَّنَّتْ مَا كَانُوا حُجَّتَهُمْ
إِلَّا أَنْ قَالُوا الشُّرَاكُ آبَاءُنَا إِنَّ كُفْرَكُمْ
صُدُوقٌ ۝

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَارِيبٍ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ
يُمِيزُ بَيْنَهُمُ الْبَاطِلُونَ ۝

وَرَأَى كُلُّ أُمَّةٍ جَائِعَةً تُعْطَى الْأَقْدَامُ إِلَى كَيْفِهَا
الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

هَذَا كِتَابُنَا يُعْطَى عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ إِنْ كُنَّا
نَسْنِسُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ

- 1 हदीस में है कि अल्लाह फरमाता है कि मनुष्य मुझे बुरा कहता है। वह युग को बुरा कहता है जब कि युग मैं हूँ। रात और दिन मेरे हाथ में है। (सहीह बुखारी: 6181) हदीस का अर्थ यह है कि युग को बुरा कहना अल्लाह को बुरा कहना है। क्योंकि युग में जो होता है उसे अल्लाह ही करता है।
- 2 आयत का अर्थ यह है कि जीवन और मौत देना अल्लाह के हाथ में है। वही जीवन देता है तथा मारता है। और उस ने संसार में मरने के बाद प्रलय के दिन फिर जीवित करने का समय रखा है। ताकि उन के कर्मों का प्रतिफल प्रदान करे।

किये उन्हें प्रवेश देगा उन का पालनहार अपनी दया में यही प्रत्यक्ष (खुली) सफलता है।

31. परन्तु जिन्होंने कुफ़ किया (उन से कहा जायेगा): क्या मेरी आयतें तुम्हें पढ़ कर नहीं सुनाई जा रही थी? तो तुम ने घमंड किया, तथा तुम अपराधी बन कर रहे।

32. तथा जब कहा जाता था कि निश्चय अब्बाह का वचन सच्च है तथा प्रलय होने में तनिक भी संदेह नहीं तो तुम कहते थे कि प्रलय क्या है? हम तो केवल एक अनुमान रखते हैं तथा हम विश्वास करने वाले नहीं हैं।

33. तथा खुल जायेंगी उन के लिये उन के दुष्कर्मों की बुराईयाँ और घेर लेगा उन को जिस का वह उपहास कर रहे थे।

34. और कहा जायेगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे⁽¹⁾ जैसे तुम ने इस दिन से मिलने को भुला दिया। और तुम्हारा कोई सहायक नहीं है।

35. यह (यातना) इस कारण है कि तुम ने बना लिया था अब्बाह की आयतों को उपहास, तथा धोखे में रखा तुम्हें

وَأَنكُمْ فِي رَحْمَتِهِ ذَلِكَ هُوَ الْغَوْرُ الْبَاسِ

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ إِلَيْنَا تَقُولُونَ
فَأَسْكَبُوا عَلَيْنَا مَا فِي بُطُونِهِمْ وَمَا تَحْمِلُ مِنْهُ

وَأَذِيقُوا الْإِنْسَانَ ذِيقَهُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ
فِيهَا فَلَنُفَصِّلُنَا تِلْكَ آيَاتِنَا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ
إِلَّا طَاعَنَا وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ بَشَائِقَ قُلُوبِهِمْ

وَبَدَأَ اللَّهُ تِلْكَ آيَاتِهِ لِقَوْمٍ كَانُوا يَكْفُرُونَ

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنفِثُكُمْ مِمَّا تَشْتَرُونَ بِمَنَاسِكُمْ لَكُمْ يَوْمَئِذٍ
مَمْنُونٌ وَاللَّهُ يَوْمَئِذٍ فَاعِلٌ

ذَلِكَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ وَمَا تَحْمِلُ مِنْهُ

1. जैसे हदीस में आता है कि अब्बाह अपने कुछ बंदों से कहेगा: क्या मैं ने तुम्हें पत्नी नहीं दी थी? क्या मैं ने तुम्हें सम्मान नहीं दिया था? क्या मैं ने घोड़े तथा बैल इत्यादि तेरे आधीन नहीं किये थे? तू सरदारी भी करता तथा चुंगी भी लेता रहा। वह कहेगा: हाँ ये सहीह है, हे मेरे पालनहार! फिर अब्बाह उस से प्रश्न करेगा: क्या तुम्हें मुझे से मिलने का विश्वास था? वह कहेगा: "नहीं।" अब्बाह फरमायेगा: (तो आज मैं तुझे नरक में डाल कर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भुला रहा। (सहीह मुस्लिम: 2968)

संसारिक जीवन ने। तो आज वे नहीं निकाले जायेंगे (यातना से)। और न उन्हें क्षमा माँगने का अवसर दिया जायेगा।^[1]

وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٠﴾

36. तो अल्लाह के लिये सब प्रशंसा है जो आकाशों तथा धरती का पालनहार एवं सर्वलोक का पालनहार है।

قُلْ لِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥١﴾

37. और उसी की महिमा^[2] है आकाशों तथा धरती में और वही प्रबल और सब गुणों को जानने वाला है।

وَلَهُ الْكِبَرُ يَأْتِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٥٢﴾

1 अर्थात् अल्लाह की निशानियों तथा आदेशों का उपहास तथा दुनिया के धोखे में लिप्त रहना। यह दो अपराध ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक की यातना का पात्र बना दिया। अब उस से निकलने की संभावना नहीं। तथा न इस बात की आशा है कि किसी प्रकार तुम्हें तौबा तथा क्षमा याचना का अवसर प्रदान कर दिया जाये। और तुम क्षमा माँग कर अल्लाह को मना लो।

2 अर्थात् महिमा और बड़ाई अल्लाह के लिये विशेष है। जैसा कि एक हदीस कुद्सी में अल्लाह तआला ने फरमाया है कि महिमा मेरी चादर है तथा बड़ाई मेरा तहबंद है। और जो भी इन दोनों में से किसी एक को मुझ से खींचेगा तो मैं उसे नरक में फेंक दूँगा। (सहीह मुस्लिम: 2620)

सूरह अहकाफ - 46

سُورَةُ الْأَحْقَافِ

सूरह अहकाफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 35 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 21 में आद जाति की बस्ती ((अहकाफ)) की चर्चा की गई है जो यमन के समीप एक रेतीला क्षेत्र है। इसी कारण इस का नाम सूरह अहकाफ है।
- इस की आयत 21 से 28 तक में कुर्आन के अल्लाह की बाणी होने का दावा प्रस्तुत करते हुये शिर्क के अनुचित होने को उजागर किया गया है। और नबूवत से संबंधित संदेहों का निवारण किया गया है। इसी के साथ ईमान वालों को दिलासा तथा शुभसूचना दी गई है। और काफिरों के बुरे परिणाम से सावधान किया गया है।
- इस में ((आद)) जाति के परिणाम से शिक्षा प्राप्त करने को कहा गया है।
- आयत 29 से 32 तक जिन्नों के कुर्आन पाक सुनने, तथा उस पर ईमान लाने का वर्णन है।
- इस में मरने के पश्चात् जीवन से संबंधित संदेह को दूर किया गया है। और नरक की यातना से सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने का निर्देश दिया गया है। क्योंकि आप से पूर्व जो नबी आये थे उन को भी विभिन्न प्रकार से सताया गया था परन्तु उन्होंने धैर्य धारण किया।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हा, मीम।
2. इस पुस्तक का उतरना अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी की ओर से है।
3. हम ने नही उत्पन्न किया है आकाशों

حَمْدٌ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا

तथा धरती को और जो कुछ उन के बीच है परन्तु सत्य के साथ एक निश्चित अवधि तक के लिये। तथा जो काफिर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुंह मोड़े हुये हैं।

4. आप कहें कि भला देखो कि जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, तनिक मुझे दिखा दो कि उन्होंने क्या उत्पन्न किया है धरती में से? अथवा उन का कोई साक्षा है आकाशों में? मेरे पास कोई पुस्तक^[1] प्रस्तुत करो इस से पूर्व की, अथवा बचा हुआ कुछ^[2] ज्ञान यदि तुम सच्चे हो।
5. तथा उस से अधिक बहका हुआ कौन हो सकता है जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता हो जो उस की प्रार्थना स्वीकार न कर सके प्रलय तक। और वह उस की प्रार्थना से निश्चेत (अन्जान) हों?
6. तथा जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उन के शत्रु हो जायेंगे और उन की इबादत का इन्कार कर^[3] देंगे।

بِالْحَقِّ وَالْحَقْلُ يُسَمَّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا
مُعْرِضُونَ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي
مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي
السَّمَوَاتِ أَمْ لِيُنشِئُنَّ يَكْنُثُ مِنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَشْرَافُ
مَنْ عَلِمَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مِمَّنْ
كَرِهَتْ لَهُمْ أَلْفٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ۝

وَإِذَا احْبَرَتِ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا
بِعِمَاءِ دِيَارِهِمْ كَافِرِينَ ۝

1 अर्थात् यदि तुम्हें मेरी शिक्षा का सत्य होना स्वीकार नहीं तो किसी धर्म की आकाशीय पुस्तक ही से सिद्ध कर के दिखा दो कि सत्य की शिक्षा कुछ और है। और यह भी न हो सके तो किसी ज्ञान पर आधारित कथन और रिवायत ही से सिद्ध कर दो कि यह शिक्षा पूर्व के नबियों ने नहीं दी है। अर्थ यह है कि जब आकाशों और धरती की रचना अल्लाह ही ने की है तो उस के साथ दूसरों को पूज्य क्यों बनाते हो?

2 अर्थात् इस से पहले वाली आकाशीय पुस्तकों का।

3 इस विषय की चर्चा कुर्आन की अनेक आयतों में आई है। जैसे सूरह यूनस, आयत:

7. और जब पढ़ कर सुनाई गई उन को हमारी खुली आयतें तो काफिरों ने उस सत्य को जो उन के पास आ चुका है, कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
8. क्या वह कहते हैं कि आप ने इसे^[1] स्वयं बना लिया है? आप कह दें कि यदि मैं ने इसे स्वयं बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का कोई अधिकार नहीं रखते।^[2] वही अधिक ज्ञानी है उन बातों का जो तुम बना रहे हो। वही पर्याप्त है गवाह के लिये मेरे तथा तुम्हारे बीच। और वह बड़ा क्षमाशील दयावान् है।
9. आप कह दें कि मैं कोई नया रसूल नहीं हूँ, और न मैं जानता कि मेरे साथ क्या होगा^[3] और न तुम्हारे साथ। मैं तो केवल अनुसरण कर रहा हूँ उस का जो मेरी ओर वही (प्रकाशना) की जा रही है। मैं तो केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
10. आप कह दें: तुम बताओ यदि यह (कुर्आन) अल्लाह की ओर से हो और तुम उसे न मानो जब कि गवाही दे चुका है एक गवाह, इस्राईल की

وَاِذَا نُسِّلَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَنَجَاءَهُمْ هَذَا بِسِحْرِ مُبِينٍ ۝

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَاعٍ مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ إِنْ أَنِيعُوا لِي أَمْرًا يَأْتِي إِلَىٰ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَرَّمَهُ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ قَامَنَ وَاسْتَكْبَرُوا ثُمَّ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

290, सूरह मर्यम, आयत: 81, 82, सूरह अन्कबूत, आयत: 25, आदि।

- 1 अर्थात् कुर्आन को।
- 2 अर्थात् अल्लाह की यातना से मेरी कोई रक्षा नहीं कर सकता। (देखिये: सूरह अहकाफ, आयत: 44, 47)
- 3 अर्थात् संसार में। अन्यथा यह निश्चित है कि परलोक में ईमान वाले के लिये स्वर्ग तथा काफिर के लिये नरक है। किन्तु किसी निश्चित व्यक्ति के परिणाम का ज्ञान किसी को नहीं।

संतान में से इसी जैसी बात^[1] पर,
फिर वह ईमान लाया तथा तुम
घमंड कर गये। तो वास्तव में अल्लाह
सुपथ नहीं दिखाता अत्याचारी जाति
को^[2]

11. और काफिरों ने कहा, उन से जो
ईमान लाये यदि यह (धर्म) उत्तम होता
तो वह पहले नहीं आते हम से उस की
ओर। और जब नहीं पाया मार्ग दर्शन
उन्होंने ने इस (क़ुर्आन) से तो अब यही
कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।
12. जब कि इस से पूर्व मूसा की पुस्तक
मार्गदर्शक तथा दया बन कर आ
चुकी। और यह पुस्तक (क़ुर्आन)
सच्चा^[3] बताने वाली है अर्बी भाषा
में^[4] ताकि वह सावधान कर दे
अत्याचारियों को और शुभसूचना हो
सदाचारियों के लिये।
13. निश्चय जिन्होंने कहा कि हमारा
पालनहार अल्लाह है। फिर उस पर

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَا
سَبَقُونَا إِلَيْهِ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ قَسِيغُوا لَهُ
إِذَا كُنَّا قَدِيرًا ۝

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً وَهَذَا كِتَابٌ
مُّصَدِّقٌ لِّسَانٍ عَرَبِيٍّ لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا
وَنُبَيِّنُ لِلْمُتَعِينِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفْتَاؤُا فَلَا حُكْمَ

- 1 जैसे इस्राईली विद्वान अब्दुल्लाह पुत्र सलाम ने इसी क़ुर्आन जैसी बात के तौरात में होने की गवाही दी कि तौरात में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नबी होने का वर्णन है। और वे आप पर ईमान भी लाये। (सहीह बुख़ारी: 3813, सहीह मुस्लिम: 2484)
- 2 अर्थात् अत्याचारियों को उन के अत्याचार के कारण ही कुपथ में रहने देता है। ज़बरदस्ती किसी को सीधी राह पर नहीं चलाता।
- 3 अपने पूर्व की आकाशीय पुस्तकों को।
- 4 अर्थात् इस की कोई मूल शिक्षा ऐसी नहीं जो मूसा की पुस्तक में न हो। किन्तु यह अर्बी भाषा में है। इसलिये कि इस से प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे। फिर सारे लोग। इसीलिये क़ुर्आन का अनुवाद प्राचीन काल ही से दूसरी भाषाओं में किया जा रहा है। ताकि जो अर्बी नहीं समझते वह भी उस से शिक्षा ग्रहण करें।

स्थित रह गये तो कोई भय नहीं होगा
उन पर, और न वह^[1] उदासीन होंगे।

14. यही स्वर्गीय है जो सदावासी होंगे
उस में उन कर्मों के प्रतिफल (बदले)
में जो वे करते रहे।

15. और हम ने निर्देश दिया है मनुष्य को
अपने माता पिता के साथ उपकार
करने का। उसे गर्भ में रखा है
उस की माँ ने दुख झेल कर। तथा
जन्म दिया उस को दुख झेल कर।
तथा उस के गर्भ में रखने तथा
दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने
रही।^[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी
पूरी शक्ति को पहुँचा तथा चालीस
वर्ष का हुआ, तो कहने लगा: हे मेरे
पालनहार! मुझे क्षमता दे कि कृतज्ञ
रहूँ तेरे उस पुरस्कार का जो तुने
प्रदान किया है मुझे को तथा मेरे
माता-पिता को। तथा ऐसा सत्कर्म
करूँ जिस से तू प्रसन्न हो जाये। तथा

عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٦﴾

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا بِمَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٤٧﴾

وَوَضَعْنَا لِلْإِنْسَانِ يَوْمَ الذِّكْرِ إِحْسِنًا فَهَنَّاهُ أُمَّهُ
كُرْهًا وَوَضَعْنَاهُ كُرْهًا وَحَمَلُهُ وَفِطْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ
أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ
وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي
دُرَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٤٨﴾

- 1 (देखिये: सूरह, हा, मीम सजदा, आयत: 31)

हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा: हे अन्नाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम)! मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी बात बतायें कि फिर किसी से कुछ पछना
न पड़े। आप ने फरमाया: कहो कि मैं अन्नाह पर ईमान लाया फिर उसी पर
स्थित हो जाओ। (सहीह मुस्लिम: 38)

- 2 इस आयत तथा कुरआन की अन्य आयतों में भी माता-पिता के साथ अच्छा
व्यवहार करने पर विशेष बल दिया गया है। तथा उन के लिये प्रार्थना करने
का आदेश दिया गया है। देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 170। हदीसों में
भी इस विषय पर अति बल दिया गया है। आदरणीय अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु
अन्हु) कहते हैं कि एक व्यक्ति ने आप से पूछा कि मेरे सदव्यवहार का अधिक
योग्य कौन है? आप ने फरमाया: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने
कहा: तेरी माँ। उस ने कहा: फिर कौन है? आप ने कहा: तेरी माँ। तथा चौथी बार
आप ने कहा: तेरे पिता। (सहीह बुखारी: 5971, तथा सहीह मुस्लिम: 2548)

सुधार दे मेरे लिये मेरी संतान को, मैं ध्यानमग्न हो गया तेरी ओर। तथा मैं निश्चय मुस्लिमों में से हूँ।

16. वही है स्वीकार कर लेंगे हम जिन से उन के सर्वोत्तम कर्मों को, तथा क्षमा कर देंगे उन के दुष्कर्मों को। (वह) स्वर्ग वासियों में है उस सत्य वचन के अनुसार जो उन से किया जाता था।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ تَقْبَلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَتَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ وَعَدَ الصَّادِقُ الَّذِي كَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿١٦﴾

17. तथा जिस ने कहा अपने माता-पिता से: धिक् है तुम दोनों पर! क्या मुझे डरा रहे हो कि मैं (धरती से) निकाला^[1] जाऊँगा जब कि बहुत से युग बीत गये^[2] इस से पूर्व? और वह दोनों दुहाई दे रहे थे अल्लाह की: तेरा विनाश हो! तू ईमान ला! निश्चय अल्लाह का वचन सच्च है। तो वह कह रहा था कि यह अगलों की कहानियाँ हैं।^[3]

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ إِفْكًا لَمَّا تَعِدَيْنِي أَنَّ هَٰذَا أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَيْتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۖ وَهُمَا يَسْتَنْبِئَانِ اللَّهَ وَبِكَ آمِنٌ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

18. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की यातना का वचन सिद्ध हो गया उन समुदायों में जो गुज़र चुके इन से पूर्व जिन तथा मनुष्यों में से। वास्तव में वही क्षति में थे।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ عَلَىٰ عَنَقِهِمُ الْقَوْلُ فِي آيَةٍ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالإِنسِ أُنْظَرُوا ۖ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾

19. तथा प्रत्येक के लिये श्रेणियाँ हैं उन के

وَأَحْزَنُ دَرَجَاتٍ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَالْوِاقِعُ فِيهِمْ أَعْمَالُهُمْ

1 अर्थात् मौत के पश्चात् प्रलय के दिन पुनः जीवित कर के समाधि से निकाला जाऊँगा। इस आयत में बुरी संतान का व्यवहार बताया गया है।

2 और कोई फिर जीवित हो कर नहीं आया।

3 इस आयत में मुसलमान माता-पिता का विवाद एक काफिर पुत्र के साथ हो रहा है जिस का वर्णन उदाहरण के लिये इस आयत में किया गया है। और इस प्रकार का वाद-विवाद किसी भी मुसलमान तथा काफिर में हो सकता है। जैसा कि आज अनेक पश्चिमि आदि देशों में हो रहा है।

وَهُمْ لَا يَظْلُمُونَ ﴿٥٠﴾

कर्मानुसार। और उन्हें भरपूर बदला दिया जायेगा उन के कर्मों का तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

20. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये अग्नि को। (उन से कहा जायेगा): तुम ले चुके अपना आनन्द अपने संसारिक जीवन में और लाभान्वित हो चुके उन से। तो आज तुम को अपमान की यातना दी जायेगी उस के बदले जो तुम घमंड करते रहे धरती में अनुचित तथा उस के बदले जो उल्लंघन करते रहे।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَذَّيْتُمْ
طَبَعَتْكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَعْتَضْتُمْ بِهَا
فَالْيَوْمَ تُجْرَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ
تُسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٥١﴾

21. तथा याद करो आद के भाई (हूद^[1]) को। जब उस ने अपनी जाति को सावधान किया, अहकाफ^[2] में जब कि गुजर चुके सावधान करने वाले (रसूल) उस के पहले और उस के पश्चात्, कि इबादत (वंदना) न करो अल्लाह के अतिरिक्त की। मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन की यातना से।

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَقَ الشُّدُرُومِ بَيْنَ يَدَيْهِ وَمِنْ
خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٢﴾

22. तो उन्होंने कहा कि क्या तुम हमें फेरने आये हो हमारे पूज्यों से? तो ला दो हमारे पास जिस की हमें धमकी दे रहे हो यदि तुम सच्चे हो।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَأْفِكَنَّ عَنِ آلِهَتِنَا فَإِنَّا
بِمَا تَعْبُدُونَ كُنتُمْ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٥٣﴾

1 इस में मक्का के प्रमुखों को जिन्हें अपने धन तथा बल पर बड़ा गर्व था अरब क्षेत्र की एक प्राचीन जाति की कथा सुनाने को कहा जा रहा है जो बड़ी सम्पन्न तथा शक्तिशाली थी।

2 अहकाफ: अर्थात: ऊँचा रेत का टीला है। यह जाति उसी क्षेत्र में निवास करती थी जिसे ((रब्बअल खाली)) (अर्थात अरब टापू का चौथाई भाग जो केवल मरुस्थल है) कहा जाता है। यह क्षेत्र ओमान से यमन तक फैला हुआ था। जहाँ आज कोई आबादी नहीं है। इसी जाति को प्रथम आद भी कहा गया है।

23. हूद ने कहा: उस का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। और मैं तुम्हें वही उपदेश पहुँचा रहा हूँ जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ। परन्तु मैं देख रहा हूँ तुम को कि तुम अज्ञानता की बातें कर रहे हो।

24. फिर जब उन्होंने देखा एक बादल आते हुये अपनी वादियों की ओर तो कहा: यह एक बादल है हम पर बरसने वाला। बल्कि यह वही है जिस की तुम ने जल्दी मचाई है। यह आँधी है जिस में दुःखदायी यातना है।^[1]

25. वह विनाश कर देगी प्रत्येक वस्तु को अपने पालनहार के आदेश से, तो वे हो गये ऐसे कि नहीं दिखाई देता था कुछ उन के घरों के अतिरिक्त। इसी प्रकार हम बदला दिया करते हैं अपराधि लोगों को।

26. तथा हम ने उन को वह शक्ति दी थी जो इन^[2] को नहीं दी है। हम ने बनाये थे उन के कान तथा आँखें और दिल, तो नहीं काम आये उन के कान और उन की आँखें तथा न उन

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَيِّتُكُمْ مَا أُرِيدُكُمْ بِهِ وَلِكُنِّي أَنْتُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقِيلًا دَبِرَتِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُسْطَرٌّ عَلَيْنَا يَمْحُو مَا اسْتَعْلَمْتُمْ بِهِ يَوْمَ فِيهَا عَادَ ابْنُ الْعِمْ ﴿٢٤﴾

تَدْمُرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَاصْبِرْ أَلَا يَرَى إِلَّا مَلَكُوتَهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيْمَا أَنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَبَصَرًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ

1 हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बादल या आँधी देखते तो व्याकुल हो जाते। आईशा (रजियल्लाहु अन्हा) ने कहा: अल्लाह के रसूल! लोग बादल देख कर वर्षा की आशा में प्रसन्न होते हैं और आप क्यों व्याकुल हो जाते हैं? आप ने कहा: आईशा! मुझे भय रहता है कि इस में कोई यातना न हो? एक जाति को आँधी से यातना दी गई। और एक जाति ने यातना देखी तो कहा: यह बादल हम पर वर्षा करेगा। (सहीह बुखारी: 4829, तथा सहीह मुस्लिम: 899)

2 अर्थात् मक्का के काफिरों को।

के दिल कुछ भी। क्योंकि वे इन्कार करते थे अल्लाह की आयतों का तथा घेर लिया उन को उस ने जिस का वह उपहास कर रहे थे।

27. तथा हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे आस पास की बस्तियों को। तथा हम ने उन्हें अनेक प्रकार से आयतें सुना दी ताकि वह वापिस आ जायें।

28. तो क्यों नहीं सहायता की उन की उन्होंने जिन को बनाया था अल्लाह के अतिरिक्त (अल्लाह के) समिप्य के लिये पूज्य (उपास्य)? बल्कि वह खो गये उन से, और यह^[1] उन का झूठ था, तथा जिसे स्वयं वे घड़ रहे थे।

29. तथा याद करें जब हम ने फेर दिया आप की ओर जिन्नों के एक^[2] गिरोह को ताकि वह कुर्आन सुनें। तो जब वह

بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَّ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٧﴾

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَى
وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ
اللَّهِ ثُرِيًّا إِنَّ اللَّهَ يَلْصِقُ الَّذِينَ هَدَىٰ
أَمْ لَهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ صَرَّفْنَا إِلَيْكَ قَافِرًا مِنَ الْيَهُودِ
يَسْمَعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَصَرُّهُ قَالُوا أَتُصَلُّونَا
فَكَفَىٰ قُتًى وَتَوَلَّىٰ قَوْمَهُ مُنْذِرًا ﴿٣٠﴾

1 अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त को पूज्य बनाना।

2 आदरणीय इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि एक बार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने कुछ अनुयायियों (सहाबा) के साथ उकाज के बाज़ार की ओर जा रहे थे। इन दिनों शैतानों को आकाश की सूचनायें मिलनी बंद हो गई थीं। तथा उन पर आकाश से अंगारे फेंके जा रहे थे। तो वे इस खोज में पूर्व तथा पश्चिम की दिशाओं में निकले कि इस का क्या कारण है? कुछ शैतान तिहामा (हिजाज़) की ओर भी आये और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तक पहुँच गये। उस समय आप ((नल्ला)) में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो उस की ओर कान लगा दिये। फिर कहा कि यही वह चीज़ है जिस के कारण हम को आकाश की सूचना मिलनी बंद हो गई है। और अपनी जाति से जा कर यह बात कही। तथा अल्लाह ने यह आयत अपने नबी पर उतारी। (सहीह बुखारी: 4921)

इन आयतों में संकेत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जैसे मनुष्यों के नबी थे वैसे ही जिन्नों के भी नबी थे। और सभी नबी मनुष्यों में आये। (देखिये: सूरह नहल, आयत: 43, सूरह फुर्कान, आयत: 20)

उपस्थित हुये आप के पास तो उन्होंने कहा कि चुप रहो। और जब पढ़ लिया गया तो वे फिर गये अपनी जाति की ओर सावधान करने वाले हो कर।

30. उन्होंने कहा: हे हमारी जाति! हम ने सुनी है एक पुस्तक जो उतारी गई है मूसा के पश्चात्। वह अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करती है। और सत्य तथा सीधी राह दिखाती है।

قَالُوا يَوْمَئِذٍ أَنَا نَحْنُ نَكُفِّرُ بَعْدَ
مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ
وَرَأٰى طَرِيقًا مُّسْتَقِيمًا ۝

31. हे हमारी जाति! मान लो अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात को। तथा ईमान लाओ उस पर, वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को तथा बचा देगा तुम्हें दुःखदायी यातना से।

يَقُومَنَّ أَجْمَعِينَ ۖ ادْعِ اللَّهَ وَامْنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِمَّنْ
دُونِكُمْ وَيُجْزِيَكُمْ مِنْ عَذَابِ إِلَهِكُمْ ۝

32. तथा जो मानेगा नहीं अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात तो नहीं है वह विवश करने वाला धरती में। और नहीं है उस के लिये अल्लाह के अतिरिक्त कोई सहायक। यही लोग खुले कुपथ में हैं।

وَمَنْ لَا يُحِبِّ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعِजٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَولِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

33. और क्या उन लोगों ने नहीं समझा कि अल्लाह, जिस ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को, और नहीं थका उन को बनाने से, वह सामर्थ्यवान है कि जीवित कर दे मुर्दों को? क्यों नहीं? वास्तव में वह जो चाहे कर सकता है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
ذِكْرٌ لِّعِبَادِهِمْ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ عَلَىٰ أَنْ يُخَيَّرَ الْمَوْتَىٰ
بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

34. और जिस दिन सामने लाये जायेंगे जो काफिर हो गये नरक के, (और उन से कहा जायेगा): क्या यह सच्च नहीं है? वे कहेंगे: क्यों नहीं? हमारे

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا
بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

पालनहार की शपथ! वह कहेगा: तब चखो यातना उस कुफ़्र के बदले जो तुम कर रहे थे।

35. तो (हे नबी!) आप सहन करें जैसे साहसी रसूलों ने सहन किया। तथा जल्दी न करें उन (की यातना) के लिये। जिस दिन वह देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है तो समझेंगे कि जैसे वह नहीं रहे हैं परन्तु दिन के कुछ^[1] क्षण। बात पहुँचा दी गई है, तो अब उन्हीं का विनाश होगा जो अवैज्ञाकारी हैं।

فَأَصْبِرْ كَمَا صَبَرْنَا الْأَنْبِيَاءُ مِنَ الرُّسُلِ
وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ
مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبِسُوا إِلَّا السَّاعَةَ مِنْ تَحَارُفٍ
بَلَاءٍ قَهْلٍ يَهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ۝

1 अर्थात् प्रलय की भीषणता के आगे संसारिक सुख क्षणभर प्रतीत होगा। हदीस में है कि नारकियों में से प्रलय के दिन संसार के सब से सुखी व्यक्ति को ला कर नरक में एक बार डाल कर कहा जायेगा: क्या कभी तुम ने सुख देखा है? वह कहेगा: मेरे पालनहार! (कभी) नहीं (देखा)। (सहीह मुस्लिम शरीफ: 2807)

सूरह मुहम्मद - 47

سُورَةُ مُحَمَّدٍ

सूरह मुहम्मद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 38 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 27 में नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का नाम आया है। जिस के कारण इस का नाम सूरह मुहम्मद है। इस का एक दूसरा नाम ((किताल)) भी है जो इस की आयत 20 से लिया गया है।
- इस में बताया गया है कि काफ़िरो तथा ईमान वालों की कार्य प्रणाली विभिन्न है। इसलिये उन के साथ अल्लाह का व्यवहार भी अलग-अलग होगा। वह काफ़िरो के कर्म असफल कर देगा। और ईमान वालों की दशा सुधार देगा।
- इस में आयत 4 से 15 तक ईमान वालों को युद्ध के संबन्ध में निर्देश दिये गये हैं। और परलोक के उत्तम फल की शुभसूचना दी गयी है।
- आयत 16 से 32 तक मुनाफ़िकों की दशा बतायी गयी है जो जिहाद के डर से काफ़िरो से मिल कर षड्यंत्र रचते थे।
- इस की आयत 33 से 38 तक साधारण मुसलमानों को जिहाद करने तथा अल्लाह की राह में दान करने की प्रेरणा दी गयी है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिन लोगों ने कुफ़्र (अविश्वास) किया तथा अल्लाह की राह से रोका, (अल्लाह ने) व्यर्थ (निष्फल) कर दिया उन के कर्मों को।

الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصْطَدُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَصْلًا
أَعْمَالُهُمْ ۝

2. तथा जो ईमान लाये और सदाचार किये तथा उस (कुआन) पर ईमान लाये जो उतारा गया है मुहम्मद पर, और वह सच्च है उन के पालनहार

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَالْمُؤْمِنَاتُ نَزَلَ
عَلَى مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَفَّرَ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝

की ओर से, तो दूर कर दिया उन से उन के पापों को तथा सुधार दिया उन की दशा को।

3. यह इस कारण कि जिन्होंने कुफ्र किया और चले असत्य पर तथा जो ईमान लाये वह चले सत्य पर अपने पालनहार की ओर से (आये हुये) इसी प्रकार बता देता है अल्लाह लोगों को उन की सहीह दशायें।^[1]

4. तो जब (युद्ध में) भिड़ जाओ काफ़िरो से तो गर्दन उड़ाओ, यहाँ तक की जब कुचल दो उन को तो उन्हें दूढ़ता से बाँधो। फिर उस के बाद या तो उपकार कर के छोड़ दो या अर्थदण्ड ले कर। यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार रख दे।^[2] यह आदेश है। और यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं उन से बदला ले लेता। किन्तु (यह आदेश इस लिये दिया) ताकि तुम्हारी एक-दूसरे द्वारा परीक्षा ले। और जो मार दिये गये अल्लाह की राह में तो वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा उन के कर्मों को।

5. वह उन्हें मार्गदर्शन देगा तथा सुधार देगा उन की दशा।

6. और प्रवेश करायेगा उन्हें स्वर्ग में

ذَٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ كَذَٰلِكَ يَصُوبُ إِلَهُهُ لِلَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ

وَإِذَا الْقِيَمَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَصْحَابُ الرَّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْتُم مِّنْ فَتْنَةٍ وَالْوِتَاقَ فَاَمَّا مَنَّا بَعْدَ وَاتِنَا فَنَاءٌ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرْتُمْ بِهِمْ ۚ وَالْحَسْبُ لِلَّهِ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْيُنُهُمْ

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُهُم بِاللَّهِ

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ

1 यह सूरह बद्र के युद्ध से पहले उतरी। जिस में मक्का के काफ़िरो के आक्रमण से अपने धर्म और प्राण तथा मान-मर्यादा की रक्षा के लिये युद्ध करने की प्रेरणा तथा साहस और आवश्यक निर्देश दिये गये हैं।

2 इस्लाम से पहले युद्ध के बंदियों को दास बना लिया जाता था किन्तु इस्लाम उन्हें उपकार कर के या अर्थ दण्ड ले कर मुक्त करने का आदेश देता है। इस आयत में यह संकेत है कि इस्लाम जिहाद की अनुमति दूसरों के आक्रमण से रक्षा के लिये देता है।

जिस की पहचान दे चुका है उन को।

7. हे ईमान वालो! यदि तुम सहायता करोगे अल्लाह (के धर्म) की तो वह सहायता करेगा तुम्हारी। तथा दृढ़ (स्थिर) कर देगा तुम्हारे पैरों को।
8. और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को
9. यह इसलिये कि उन्होंने बुरा माना उसे जो अल्लाह ने उतारा और उस ने उन के कर्म व्यर्थ कर^[1] दिये।
10. तो क्या वह चले- फिरे नहीं धरती में कि देखते उन लोगों का परिणाम जो इन से पहले गुजरे? विनाश कर दिया अल्लाह ने उन का तथा काफिरों के लिये इसी के समान (यातनायें) है।
11. यह इसलिये कि अल्लाह संरक्षक (सहायक) है उन का जो ईमान लाये और काफिरों का कोई संरक्षक (सहायक)^[2] नहीं।
12. निःसंदेह अल्लाह प्रवेश देगा उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये ऐसे स्वर्गों में जिन में नहरें बहती होंगी। तथा जो काफिर हो गये वह आनन्द लेते तथा खाते हैं जैसे^[3] पशु

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا اللَّهُ يَنْصُرُكُمْ وَيُثَبِّتُ أَقْدَامَكُمْ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ دُمِّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَمَوْلَى لَهُمْ ۝

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۝

1 इस में इस ओर संकेत है कि बिना ईमान के अल्लाह के हों कोई सत्कर्म मान्य नहीं है।

2 उहुद के युद्ध में जब काफिरों ने कहा कि हमारे पास उज्जा (देवी) है, और तुम्हारे पास उज्जा नहीं। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा। उन का उत्तर इसी आयत से दो। (सहीह बखारी: 4043)

3 अर्थात् परलोक से निश्चिन्त संसारिक जीवन ही को सब कुछ समझते हैं।

खाते हैं। और अग्नि उन का आवास (स्थान) है।

13. तथा बहुत सी बस्तियों को जो अधिक शक्तिशाली थीं आप की बस्ती से, जिस ने आप को निकाल दिया, हम ने ध्वस्त कर दिया, तो कोई सहायक न हुआ उन का।

14. तो क्या जो अपने पालनहार के खुले प्रमाण पर हो वह उस के समान हो सकता है शोभनीय बना दिया गया हो जिस के लिये उस का दुष्कर्म तथा चलता हो अपनी मनमानी पर?

15. उस स्वर्ग की विशेषता जिस का बचन दिया गया है आज्ञाकरियों को, उस में नहरें हैं निर्मल जल की, तथा नहरें हैं दूध की, नही बदलेगा जिस का स्वाद, तथा नहरें हैं मदिरा की पीने वालों के स्वाद के लिये, तथा नहरें हैं मधु की स्वच्छ। तथा उन्हीं के लिये उन में प्रत्येक प्रकार के फल हैं, तथा उन के पालनहार की ओर से क्षमा। (क्या यह) उस के समान होंगे जो सदावासी होंगे नरक में तथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड-खण्ड कर देगा उन की आँतों को?

16. तथा उन में से कुछ वह है जो कान धरते हैं आप की ओर यहाँ तक कि जब निकलते हैं आप के पास से तो कहते हैं उन से जिन को ज्ञान दिया गया है कि अभी क्या^[1] कहा है? यही

وَكَايْنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ أَشَدَّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْنَاكَ أَهْلَكْنَاهُمْ فَلَا تَاجِرُ لَهُمْ ۝

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيْتَةٍ مِّنْ رَبِّهِ كَذِبَ كُنُوزٍ لَهُ سُوءٍ عَلَيْهِ وَابْتِغَاوْا هَوَاءَهُمْ ۝

مِثْلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَبِّهِمْ كَمَن يَمْشِي فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۝

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْمَعُ إِلَيْكَ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنِيعًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۝

1 यह कुछ मुनाफ़िकों की दशा का वर्णन है जिन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व

वह है कि मुहर लगा दी है अल्लाह ने उन के दिलों पर और वही चल रहे हैं अपनी मनोकामनाओं पर।

17. और जो सीधी राह पर है अल्लाह ने अधिक कर दिया है उन को मार्ग दर्शन में और प्रदान किया है उन को उन का सदाचार।

18. तो क्या वह प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रलय ही की, कि आ जाये उन के पास सहसा? तो आ चुके हैं उस के लक्षण।^[1] फिर कहाँ होगा उन के शिक्षा लेने का समय, जब वह (क्यामत) आ जायेगी उन के पास?

19. तो (हे नबी!) आप विश्वास रखिये कि नहीं है कोई बंदनीय अल्लाह के सिवा तथा क्षमा^[2] माँगिये अपने पाप के लिये, तथा ईमान वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिये। और अल्लाह जानता है तुम्हारे फिरने तथा रहने के स्थान को।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ ۝

فَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً
فَعَدَّ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا جَاءَتْهُمْ
ذِكْرُهَا ۝

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنبِكَ
وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ
وَمَثُوبَكُمْ ۝

सल्लम) की बातें समझ में नहीं आती थीं। क्योंकि वे आप की बातें दिल लगा कर नहीं सुनते थे। तथा आप की बातों का इस प्रकार उपहास करते थे।

- 1 आयत में कहा गया है कि प्रलय के लक्षण आ चुके हैं। और उन में सब से बड़ा लक्षण आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आगमन है। जैसा कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन है कि आप ने फरमाया: ((मेरा आगमन तथा प्रलय इन दो ऊंगलियों के समान है।)) (सहीह बुखारी: 4936) अर्थात् बहुत समीप है। जिस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार दो ऊंगलियों के बीच कोई तीसरी ऊंगली नहीं इसी प्रकार मेरे और प्रलय के बीच कोई नबी नहीं। मेरे आगमन के पश्चात् अब प्रलय ही आयेगी।
- 2 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मैं दिन में सत्तर बार से अधिक अल्लाह से क्षमा माँगता तथा तौबा करता हूँ। (बुखारी: 6307) और फरमाया कि लोगो! अल्लाह से क्षमा माँगो। मैं दिन में सौ बार क्षमा माँगता हूँ। (सहीह मुस्लिम: 2702)

20. तथा जो ईमान लाये उन्होंने कहा कि क्यों नहीं उतारी जाती कोई सूरह (जिस में युद्ध का आदेश हो)? तो जब एक दृढ़ सूरह उतार दी गई तथा उस में वर्णन कर दिया गया युद्ध का तो आप ने उन्हें देख लिया जिन के दिलों में रोग (द्विधा) है कि वह आप की ओर उस के समान देख रहे हैं जो मौत के समय अचेत पड़ा हुआ हो। तो उन के लिये उत्तम है।

21. आज्ञा पालन तथा उचित बात बोलना। तो जब (युद्ध का) आदेश निर्धारित हो गया तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें तो उन के लिये उत्तम है।

22. फिर यदि तुम विमुख^[1] हो गये तो दूर नहीं कि तुम उपद्रव करोगे धरती में तथा तोड़ोगे अपने रिश्तों (संबंधों) को।

23. यही है जिन को अपनी दया से दूर कर दिया है अल्लाह ने, और उन्हें बहरा, तथा उन की आँखें अंधी कर दी हैं।^[2]

24. तो क्या लोग सोच-विचार नहीं करते या उन के दिलों पर ताले लगे हुये हैं?

25. वास्तव में जो फिर गये पीछे इस के

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِّرَ فِيهَا الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يُنْظَرُونَ إِلَيْكَ نَظْرَ الْمُسْتَعِثِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ قُلُوبُهُمْ قُلُوبًا
اللَّهُ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُ اللَّهُ فَاصْفَهُمْ وَأَعْمَى
أَبْصَارَهُمْ

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْفُرَانَ أَمْ عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

1 अर्थात् अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करने से। इस आयत में संकेत है कि धरती में उपद्रव, तथा रक्तपात का कारण अल्लाह तथा उस के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा से विमुख होने का परिणाम है। हदीस में है कि जो रिश्ते (संबंध) को जोड़ेगा तो अल्लाह उस को (अपनी दया से) जोड़ेगा। और जो तोड़ेगा तो उसे (अपनी दया से) दूर कर देगा। (सहीह बखारी: 4820)

2 अतः वे न तो सत्य को देख सकते हैं और न ही सुन सकते हैं।

पश्चात् कि उजागर हो गया उन के लिये मार्ग दर्शन तो शैतान ने सुन्दर बना दिया (पापों को) उन के लिये, तथा उन को बड़ी आशा दिलाई है।

الْهُدَى الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَ لَهُمْ ۝

26. यह इस कारण हुआ कि उन्होंने कहा उन से जिन्होंने बुरा माना उस (कुर्आन) को जिसे उतारा अल्लाह ने कि हम तुम्हारी बात मानेंगे कुछ कार्य में। तथा अल्लाह जानता है उन की गुप्त बातों को।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا الَّذِي نَكُرُّهُمَا إِنَّا نِئْزِلُ اللَّهُ سَطِطَكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمُورِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۝

27. तो कैसी दुर्गत होगी उन की जब प्राण निकाल रहे होंगे फरिश्ते मारते हुये उन के मुखों तथा उन की पीठों पर।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَلَّوْا عَنْ الْمَلَائِكَةِ يُفْرَوْنَ وَيُوْجَّهُهُمْ وَأَذْبَارُهُمْ ۝

28. यह इसलिये कि वे चले उस राह पर जिस ने अप्रसन्न कर दिया अल्लाह को, तथा बुरा माना उस की प्रसन्नता को तो उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को^[1]

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا أَصْحَبَ اللَّهُ وَكَرَّوْا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۝

29. क्या समझ रखा है उन्होंने जिन के दिलों में रोग है कि नहीं खोलेगा अल्लाह उन के द्वेषों को?^[2]

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۝

30. और (हे नबी!) यदि हम चाहें तो दिखा दें आप को उन्हें, तो पहचान लेंगे आप उन को उन के मुख से। और आप अवश्य पहचान लेंगे उन को^[3] (उन की) बात के ढंग से। तथा

وَلَوْ نَشَاءُ لَكُنَّا مُّذَكِّرُونَ فَلَمَّعَتْ لَهُمْ نِيصَابُهُمْ وَتَتَعَرَّفُونَ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝

1 आयत में उन के दुष्परिणाम की ओर संकेत है जो इस्लाम के साथ उस के विरोधी नियमों और विधानों को मानते हैं। और युद्ध के समय काफिरों का साथ देते हैं।

2 अर्थात् जो द्वेष और बैर इस्लाम और मुसलामनों से रखते हैं उसे अल्लाह उजागर अवश्य कर के रहेगा।

3 अर्थात् उन के बात करने की रीति से।

अल्लाह जानता है उन के कर्मों को।

31. और हम अवश्य परीक्षा लेंगे तुम्हारी, ताकि जाँच लें तुम में से मुजाहिदों तथा धैर्यवानों को तथा जाँच लें तुम्हारी दशाओं को।

32. जिन लोगों ने कुफ़ किया और रोका अल्लाह की राह (धर्म) से तथा विरोध किया रसूल का इस के पश्चात् कि उजागर हो गया उनके लिये मार्गदर्शन, वह कदापि हानि नहीं पहुँचा सकेंगे अल्लाह को कुछ। तथा वह व्यर्थ कर देगा उन के कर्मों को।

33. हे लोगो जो ईमान लाये हो! आज्ञा मानो अल्लाह की, तथा आज्ञा मानो^[1] रसूल की तथा व्यर्थ न करो अपने कर्मों को।

34. जिन लोगों ने कुफ़ किया तथा रोका अल्लाह की राह से, फिर वे मर गये कुफ़ की स्थिति में तो कदापि क्षमा नहीं करेगा अल्लाह उन को।

35. अतः तुम निर्बल न बनो और न (शत्रु को) संधि की ओर^[2] पुकारो।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِينَ مِنكُمْ وَالصَّابِرِينَ
وَنَبْلُوَنَّكُمْ أَخْبَارًا ۖ وَلَكُمْ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَسَأَوْا الرُّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ
الْهُدَىٰ لَنْ يُضِلَّهُ اللَّهُ شَيْئًا وَنُصِيطُ أَعْمَالِهِمْ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرُّسُولَ
وَلَا تَبْطُلُوا أَعْمَالَكُمْ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۝

فَلَا تَهِنُوا دَعْوَةَ إِلَى السَّلَامِ ۚ وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ ۝

1 इस आयत में कहा गया है कि जिस प्रकार क़र्आन को मानना अनिवार्य है उसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत (हदीसों) का पालन करना भी अनिवार्य है। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मेरी पूरी उम्मत स्वर्ग में जायेगी उस के सिवा जिस ने इन्कार किया। कहा गया कि कोन इन्कार करेगा, हे अल्लाह के रसूल? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जिस ने मेरी आज्ञाकारी की तो वह स्वर्ग में जायेगा। और जिस ने मेरी आज्ञाकारी नहीं की तो उस ने इन्कार किया। (सहीह बुखारी: 7280)

2 आयत का अर्थ यह नहीं कि इस्लाम संधि का विरोधी है। इस का अर्थ यह है कि ऐसी दशा में शत्रु से संधि न करो कि वह तुम्हें निर्बल समझने लगे। बल्कि

तथा तुम्हीं उच्च रहने वाले हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह कदापि व्यर्थ नहीं करेगा तुम्हारे कर्मों को।

وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّبْزُقَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝

36. यह संसारिक जीवन तो एक खेल कूद है और यदि तुम ईमान लाओ तथा अल्लाह से डरते रहो तो वह प्रदान करेगा तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल। और नहीं माँग करेगा तुम से तुम्हारे धनों की।

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَاِنْ تُوْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْتَلْكُمْ اَمْوَالُكُمْ ۝

37. और यदि वह तुम से माँगे और तुम्हारा पूरा धन माँगे तो तुम कंजूसी करने लगोगे, और वह खोल^[1] देगा तुम्हारे द्वेषों को।

اِنْ يَسْأَلْكُمْ فَمَا يَفْقَهُكُمْ يَبْخُلُوْا وَخُيِّرُوا ضَعْفَانَكُمْ ۝

38. सुनो! तुम लोग हो जिन को बुलाया जा रहा है ताकि दान करो अल्लाह की राह में, तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं। और जो कंजूसी करता^[2] है तो वह अपने आप ही से कंजूसी करता है। और अल्लाह धनी है तथा तुम निर्धन हो। और यदि तुम मुँह फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर दूसरों को ला देगा, फिर वे नहीं होंगे तुम्हारे जैसे।^[3]

هَآلَكُمْ هٰذَا لَآ تَدْعُوْنَ لِتُقْفَلُوْا اِنْ سَبَّحَ اللّٰهُ فَمِنْكُمْ مَنْ يَّبْخُلُ وَمَنْ يَّبْخُلُ فَاِنَّمَا يَخْشَىٰ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَاَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْا اَمَنًا لَّكُمْ ۝

अपनी शक्ति का लोहा मनवाने के पश्चात् संधि करो। ताकि वह तुम्हें निर्बल समझ कर जैसे चाहें संधि के लिये बाध्य न कर लें।

1 अर्थात् तुम्हारा पूरा धन माँगे तो यह स्वभाविक है कि तुम कंजूसी कर के दोषी बन जाओगे। इसलिये इस्लाम ने केवल ज़कात अनिवार्य की है। जो कुल धन का ढाई प्रतिशत है।

2 अर्थात् कंजूसी कर के अपने ही को हानि पहुँचाता है।

3 तो कंजूस नहीं होंगे। (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 54)

सूरह फ़तह - 48

سُورَةُ الْفَتْحِ

सूरह फ़तह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 29 आयतें हैं।

- फ़तह का अर्थ: विजय है। और इस की प्रथम आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विजय की शुभसूचना दी गई है। इसलिये इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में विजय की शुभसूचना देते हुये आप तथा आप के साथियों के लिये उन पुरस्कारों की चर्चा की गई है जो इस विजय के द्वारा प्राप्त हुये। साथ ही मुनाफ़िकों तथा मुश्रिकों को चेतावनी दी गई कि उन के बुरे दिन आ गये हैं।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हाथ पर बैअत (वचन) को अल्लाह के हाथ पर वचन कह कर आप के पद को बताया गया है। तथा इस में मुनाफ़िकों को जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ नहीं निकले और अपने धन-परिवार की चिन्ता में रह गये चेतावनी दी गई है। और जो विवश थे उन्हें निर्दोष करार दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को जो रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान देने को तय्यार हो गये अल्लाह की प्रसन्नता की शुभसूचना दी गई है। और बताया गया है कि उन का भविष्य उज्ज्वल होगा तथा उन की सहायता होगी।
- इस में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मस्जिदे हराम में प्रवेश का जो सपना देखा है वह सच्चा है। और वह पूरा होगा। आप को ऐसे साथी मिल गये हैं जिन का चित्र तौरात और इंजील में देखा जा सकता है।
- यह सूरह जी कादा के महीने, सन् 6 हिजरी में हुदैबिया से वापसी के समय हुदैबिया तथा मदीना के बीच उतरी। (सहीह बुखारी: 4833)। और दो वर्ष बाद मक्का विजय हो गया। और अल्लाह ने आप के स्वप्न को सच्च कर दिया।

हुदैबिया की संधि:

मदीना हिज्रत के पश्चात् मक्का के मुशरिकों ने मस्जिदे हराम (काँबा) पर अधिकार कर लिया। और मुसलमानों को हज्ज तथा उमरा करने से रोक दिया।

अब तक मुसलमानों और काफिरों के बीच तीन युद्ध हो चुके थे कि सन् 6 हिजरी में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह सपना देखा कि आप मस्जिदे हराम में प्रवेश कर गये हैं। इसलिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उमरे का एलान कर दिया। और अपने चौदह सौ साथियों के साथ 1 जीकादा सन् 6 हिजरी को मक्का की ओर चल दिये। मदीना से 6 मील जा कर जुल हुलैफा में एहराम बाँधा। और कुर्वानी के पशु साथ लिये। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से 22 कि॰मी॰ दूर हुदैबिया तक पहुँच गये तो उसमान (रजियल्लाहु अन्हु) को मक्का भेजा कि हम उमरा के लिये आये हैं। मक्का वासियों ने उन का आदर किया। किन्तु इस के लिये तय्यार नहीं हुये कि नबी अपने साथियों के साथ मक्का में प्रवेश करें। इस विवाद के कारण उसमान (रजियल्लाहु अन्हु) की वापसी में कुछ देर हो गई। जिस से ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि अब बलपूर्वक ही मक्का में प्रवेश करना पड़ेगा। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने साथियों से जिहाद के लिये बैअत (बचन) ली। इस एतिहासिक बचन को ((बैअत रिजवान)) के नाम से याद किया जाता है। जब मक्का वासियों को इस की सूचना मिली तो वह संधि के लिये तय्यार हो गये। और संधि के लिये कुछ प्रतिनिधि भेजे। और निम्नलिखित बातों पर संधि हुई:

- 1- मुसलमान आगामी वर्ष आ कर उमरा करेंगे।
- 2- वह अपने साथ केवल तलवार लायेंगे जो नियाम में होगी।
- 3- वह केवल तीन दिन मक्का में रहेंगे।
- 4- मुसलमान और उन के बीच दस वर्ष युद्ध विराम रहेगा।
- 5- मक्का का कोई व्यक्ति मदीना जाये तो उसे वापिस करना होगा। किन्तु यदि कोई मुसलमान काफिर बन कर मक्का आये तो वे उसे वापिस नहीं करेंगे।
- 6- हरम के आस पास के कबीले जिस पक्ष के साथ चाहें हो जायें। और उन पर वही दायित्व होगा जो उन के पक्ष पर होगा।

7- यदि इन कबीलों में किसी ने दूसरे पक्ष के किसी कबीले के साथ अत्याचार किया तो इसे संधि भंग माना जायेगा। यह संधि मुसलमानों ने बहुत दब कर की थी। मगर इस से उन्हें दो बड़े लाभ प्राप्त हुये:

क- मस्जिदे हराम में प्रवेश की राह खुल गई।

ख- इस्लाम और मुसलमानों पर आक्रमण की स्थिति समाप्त हो गई। जिस से इस्लाम के प्रचार-प्रसार की बाधा दूर हो गई। और इस्लाम तेजी से फैलने लगा। और जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का वासियों के संधि भंग कर देने के कारण सन् 10 हिजरी में मक्का विजय किया तो उस समय आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथियों की संख्या दस हजार थी। और मक्का की विजय के साथ ही पूरे मक्का वासी तथा आस-पास के कबीले मुसलमान हो गये। इस प्रकार धीरे धीरे आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग ही में सारे अरब, मुसलमान हो गये। इसीलिये कुर्आन ने हुदैबिया कि संधि को फत्हे मुबीन (खुली विजय) कहा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! हम ने विजय^[1] प्रदान कर दी आप को खुली विजय।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا

2. ताकि क्षमा कर दे^[2] अब्बाह आप के लिये आप के अगले तथा पिछले दोषों को तथा पूरा करे अपना पुरस्कार आप के ऊपर और दिखाये आप को सीधी राह।

لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ
بِعَمَلِهِ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا

1 हदीस में है कि इस से अभिप्राय हुदैबिया की संधि है। (बुखारी: 4834)

2 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात्री में इतनी नमाज़ पढ़ा करते थे कि आप के पाँव सूज जाते थे। तो आप से कहा गया कि आप ऐसा क्यों करते हैं? अब्बाह ने तो आप के बिगत तथा भविष्य के पाप क्षमा कर दिये हैं। तो आप ने फरमाया। तो क्या मैं कृतज्ञ भक्त न बनूँ। (सहीह बुखारी: 4837)

3. तथा अल्लाह आप की सहायता करे
भरपूर सहायता।
4. वही है जिस ने उतारी शान्ति ईमान
वालों के दिलों में ताकि अधिक हो जाये
उन का ईमान अपने ईमान के साथ।
तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा
धरती की सेनायें, तथा अल्लाह सब कुछ
और सब गुणों को जानने वाला है।
5. ताकि वह प्रवेश कराये ईमान वाले
पुरुषों तथा स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में वह
रही है जिन में नहरों और वे सदैव रहेंगे
उन में। और ताकि दूर कर दे उन से
उन की बुराईयों को। और अल्लाह के
यहाँ यही बहुत बड़ी सफलता है।
6. तथा यातना दे मुनाफ़िक पुरुषों तथा
स्त्रियों और मुशरिफ पुरुषों तथा
स्त्रियों को जो बुरा विचार रखने वाले
हैं अल्लाह के संबन्ध में। उन्हीं पर
बुरी आपदा आ पड़ी। तथा अल्लाह
का प्रकोप हुआ उन पर, और उस
ने धिक्कार दिया उन को। तथा तय्यार
कर दी उन के लिये नरक, और वह
बुरा जाने का स्थान है।
7. तथा अल्लाह ही की है आकाशों तथा
धरती की सेनायें और अल्लाह प्रबल
तथा सब गुणों को जानने वाला है।^[1]
8. (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को
गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने
एवं सावधान करने वाला बना कर।

وَيَنْصُرُوا اللَّهَ فَغَوْرًا ۝

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ
لِيُزِيدُوا إِيمَانًا تَامِعًا بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفَّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ
وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قُوْرًا عَظِيمًا ۝

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ
وَالْمُشْرِكَاتِ الْكَافِرِينَ بِاللَّهِ هُنَّ لَكُمْ سَوْءٌ
وَأَعْدَاءُكُمْ وَكُنْتُمْ لَهُمْ خِزْيَانًا غَاطَسًا ۝

وَاللَّهُ جَمُّدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا
حَكِيمًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

1. इसलिये वह जिस को चाहे, और जब चाहे, हिलाक और नष्ट कर सकता है।

9. ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर। और सहायता करो आप की, तथा आदर करो आप का, और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रातः तथा संध्या।

10. (हे नबी!) जो बैअत कर रहे हैं आप से, वह वास्तव में बैअत^[1] कर रहे हैं अल्लाह से। अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है। फिर जिस ने वचन तोड़ा तो वह अपने ऊपर ही वचन तोड़ेगा। तथा जिस ने पूरा किया जो वचन अल्लाह से किया है तो वह उसे बड़ा प्रतिफल (बदला) प्रदान करेगा।

11. (हे नबी!) वह^[2] शीघ्र ही आप से कहेंगे, जो पीछे छोड़ दिये गये बददुओं में से कि हम लगे रह गये अपने धनों तथा परिवार में। अतः आप क्षमा की प्रार्थना कर दें हमारे लिये। वह अपने मुखों से ऐसी बात कहेंगे जो उन के दिलों में नहीं है। आप उन से कहिये कि कौन है जो अधिकार रखता हो तुम्हारे लिये अल्लाह के सामने किसी चीज़ का यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि

لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ
وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ①

إِنَّ الَّذِينَ يَبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَمِنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ②

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا يَقُولُونَ
يَا لَيْسَ بِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ
لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ
نِعْمَةً بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ③

1 बैअत का अर्थ है हाथ पर हाथ मार कर वचन देना। यह बैअत नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने युद्ध के लिये हुदैबिया में अपने चौदह सौ साथियों से एक वक्ष के नीचे ली थी। जो इस्लामी इतिहास में «बैअते रिज़वान» के नाम से प्रसिद्ध है। रही वह बैअत जो पीर अपने मुरीदों से लेते हैं तो उस का इस्लाम से कोई संबन्ध नहीं है।

2 आयत 11, 12 में मदीना के आस-पास के मुनाफिकों की दशा बतायी गयी है जो नबी के साथ उमरा के लिये मक्का नहीं गये। उन्होंने इस डर से कि मुसलमान सब के सब मार दिये जायेंगे, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का साथ नहीं दिया।

पहुँचाना चाहे या कोई लाभ पहुँचाना चाहे? बल्कि अल्लाह सूचित है उस से जो तुम कर रहे हो।

12. बल्कि तुम ने सोचा था कि कदापि वापिस नहीं आयेंगे रसूल, और न ईमान वाले अपने परिजनों की ओर कभी भी। और भली लगी यह बात तुम्हारे दिलों को, और तुम ने बुरी सोच सोची। और थे ही तुम विनाश होने वाले लोग।

13. और जो ईमान नहीं लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, तो हम ने तय्यार कर रखी है काफ़िरों के लिये दहकती अग्नि।

14. अल्लाह के लिये है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह क्षमा कर दे जिसे चाहे और यातना दे जिसे चाहे। और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

15. वह लोग जो पीछे छोड़ दिये गये कहेंगे, जब तुम चलोगे ग़नीमतों की ओर ताकि उन्हें प्राप्त करो कि हमें (भी) अपने साथ ^[1] चलने दो। वह चाहते हैं कि बदल दें अल्लाह के

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَمْلِكَبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۖ وَزَيَّنَ ذَٰلِكُمْ قُلُوبُكُمْ وَظَنَنْتُمْ أَنْ السَّوْءَ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّوَلَّوْنَ ۝

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِإِلَٰهِهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝

وِلَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ يُغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَٰزِمَ لِنَآخِذُهَا ذُرُوءًا نَّجْعُكُمْ يَبْدُونَ أَنْ يُبَيِّنَ لَكُمْ ٱللَّهُ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ ٱللَّهُ مِنْ قَبْلُ سَيَقُولُونَ

1 हुदैबिया से वापिस आकर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खैबर पर आक्रमण किया जहाँ के यहूदियों ने संधि भंग कर के अहज़ाब के युद्ध में मक्का के काफ़िरों का साथ दिया था। तो जो बददु हुदैबिया में नहीं गये वह अब खैबर के युद्ध में इसलिये आप के साथ जाने के लिये तय्यार हो गये कि वहाँ ग़नीमत का धन मिलने की आशा थी। अतः आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से यह कहा गया कि उन्हें बता दें कि यह पहले ही से अल्लाह का आदेश है कि तुम हमारे साथ नहीं जा सकते। खैबर मदीने से डेढ़ सौ कि॰मी॰ दूर मदीने के उत्तर पूर्वी दिशा में है। यह युद्ध मुहर्रम सन् 7 हिजरी में हुआ।

आदेश को। आप कह दें कि कदापि हमारे साथ न चला इसी प्रकार कहा है अल्लाह ने इस से पहले। फिर वह कहेंगे कि बल्कि तुम द्वेष (जलन) रखते हो हम से। बल्कि वह कम ही बात समझते हैं।

16. आप कह दें पीछे छोड़ दिये गये बददुओं से कि शीघ्र तुम बुलाये जाओगे एक अति योद्धा जाति (से युद्ध) की ओर।^[1] जिन से तुम युद्ध करोगे अथवा वह इस्लाम ले आये। तो यदि तुम आज्ञा का पालन करोगे तो प्रदान करेगा अल्लाह तुम्हें उत्तम बदला तथा यदि तुम विमुख हो गये जैसे इस से पूर्व (मक्का जाने से) विमुख हो गये तो तुम्हें यातना देगा दुःखदायी यातना।

17. नहीं है अंधे पर कोई दोष^[2] और न लंगड़े पर कोई दोष और न रोगी पर कोई दोष। तथा जो आज्ञा का पालन करेगा अल्लाह एवं उस के रसूल की तो वह प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें, तथा जो मुख फेरेगा तो वह यातना देगा उसे दुःखदायी यातना।

18. अल्लाह प्रसन्न हो गया ईमान वालों से जब वह आप (नबी) से बैअत कर रहे थे वृक्ष के नीचे। उस ने जान लिया

بَلْ تَحَسَدُ وَتَنَاتِلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتَدْعُونَ إِلَى قَوْمٍ
أُولَىٰ بِآيِسٍ شَدِيدٍ فَقَاتِلُوا لَهُمُ أَوْ سَلِمُونَ فَإِنْ
تُطِيعُوا أَمْرًا اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا
تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا
عَلَى الْمَرْيُومِ حَرَجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يَدْخُلْهُ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَنْ يَتَوَلَّ يَُعَذِّبْهُ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ
الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ

1 इस से अभिप्राय हुनैन का युद्ध है जो सन् 8 हिजरी में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। जिस में पहले पराजय, फिर विजय हुई और बहुत सा गनीमत का धन प्राप्त हुआ, फिर वह भी इस्लाम ले आये।

2 अर्थात् जिहाद में भाग न लेने पर।

जो कुछ उन के दिलों में था इसलिये उतार दी शान्ति उन पर, तथा उन्हें बदले में दी समीप की विजय।^[1]

عَلَيْهِمْ وَأَنَّا لَهُم مِّنْ قَدِيرٍ ۝

19. तथा बहुत से गनीमत के धन (परिहार) जिन को वह प्राप्त करेंगे, और अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।

وَمَعَانِهِمْ كَثِيرَةٌ يَّتَّخِذُ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

20. अल्लाह ने वचन दिया है तुम्हें बहुत से परिहार (गनीमतों) का जिसे तुम प्राप्त करोगे। तो शीघ्र प्रदान कर दी तुम्हें यह (खैबर की गनीमत)। तथा रोक दिया लोगों के हाथों को तुम से ताकि^[2] वह एक निशानी बन जाये ईमान वालों के लिये, और तुम्हें सीधी राह चलाये।

وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُ مِنْهَا فَاعْبِلْ لَكُمْ هَذِهِ وَكُفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝

21. और दूसरी गनीमतें भी जिन को तुम प्राप्त नहीं कर सके हो, अल्लाह ने उन को नियन्त्रण में कर रखा है, तथा अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है।

وَالْآخَرَى لَمْ تَقْبُضُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

22. और यदि तुम से युद्ध करते जो काफिर^[3] है तो अवश्य पीछा दिखा देते, फिर नहीं पाते कोई संरक्षक और न कोई सहायक।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

23. यह अल्लाह का नियम है उन में जो चला आ रहा है पहले से। और तुम कदापि नहीं पाओगे अल्लाह के नियम में कोई परिवर्तन।

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ كُنَّ تَجِدَ لَسُنَّةَ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

24. तथा वही है जिस ने रोक दिया उन

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ

1 इस से अभिप्राय खैबर की विजय है।

2 अर्थात् खैबर की विजय और मक्का की विजय के समय शत्रुओं के हाथों को रोक दिया ताकि यह विश्वास हो जाये कि अल्लाह ही तुम्हारा रक्षक तथा सहायक है।

3 अर्थात् मक्का में प्रवेश के समय युद्ध हो जाता।

के हाथों को तुम से तथा तुम्हारे हाथों को उन से मक्का की वादी^[1] में, इस के पश्चात् कि तुम्हें विजय प्रदान कर की उन पर। तथा अल्लाह देख रहा था जो कुछ तुम कर रहे थे।

25. यह वे लोग है जिन्होंने कुफ़ किया और रोक दिया तुम्हें मस्जिदे हराम से। तथा बलि के पशु को उन के स्थान तक पहुँचने से रोक दिया। और यदि यह भय न होता कि तुम कुछ मुसलमान पुरुषों तथा कुछ मुसलमान स्त्रियों को जिन्हें तुम नहीं जानते थे रौद दोगे जिस से तुम पर दोष आ जायेगा^[2] (तो युद्ध से न रोका जाता।) ताकि प्रवेश कराये अल्लाह जिसे चाहे अपनी दया में। यदि वह (मुसलमान) अलग होते तो हम अवश्य यातना देते उन को जो काफ़िर हो गये उन में से दुखदायी यातना।

26. जब काफ़िरों ने अपने दिलों में पक्षपात को स्थान दे दिया जो वास्तव में जाहिलाना पक्षपात है तो अल्लाह ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर शान्ति उतार दी, तथा उन को पाबन्द रखा सदाचार की बात का,

يُظَنُّ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ
وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَالْهَدْيِ مَعْكُومًا أَنْ تَبْلُغَ حِلَّةُ وَلَوْلَا رِجَالُ
مُؤْمِنُونَ وَبَنَاءُ مُؤْمِنَاتٍ لَمْ تُعَلِّمُوا هُمْ أَنْ تُطِئُوهُمْ
فَتُضَيِّبُكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةً يَغَيِّرُ عَلَيَّ لِيُذْخِلَ اللَّهُ
فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ لَوْلَا الْعِدَّةُ بِنَا الَّذِينَ
كَفَرُوا وَامْنَهُمْ عَدَا إِبْرَاهِيمَ ۝

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَبِيَّةَ
حَبِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى
رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ
التَّقْوَى وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

- 1 जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हुदैबिया में थे तो काफ़िरों ने 80 सशस्त्र युवकों को भेजा कि वह आप तथा आप के साथियों के विरुद्ध काररवाही कर के सब को समाप्त कर दें। परन्तु वह सभी पकड़ लिये गये। और आप ने सब को क्षमा कर दिया। तो यह आयत इसी अवसर पर उतरी। (सहीह मुस्लिम: 1808)
- 2 अर्थात् यदि हुदैबिया के अवसर पर संधि न होती और युद्ध हो जाता तो अनजाने में मक्का में कई मुसलमान भी मारे जाते जो अपना ईमान छुपाये हुये थे। और हिज्रत नहीं कर सके थे। फिर तुम पर दोष आ जाता कि तुम एक ओर इस्लाम का संदेश देते हो, तथा दूसरी ओर स्वयं मुसलमानों को मार रहे हो।

तथा वह^[1] उस के अधिक योग्य और पात्र थे। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानने वाला है।

27. निश्चय अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा सपना दिखाया सच्च के अनुसार। तुम अवश्य प्रवेश करोगे मस्जिदे हराम में यदि अल्लाह ने चाहा निर्भय हो कर, अपने सिर मुंडाते तथा बाल कतरवाते हुये तुम को किसी प्रकार का भय नहीं होगा^[2], वह जानता है जिस को तुम नहीं जानते। इसलिये प्रदान कर दी तुम्हें इस (मस्जिदे हराम में प्रवेश) से पहले एक समीप (जल्दी) की^[3] विजय।

28. वही है जिस ने भेजा अपने रसूल को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म के साथ, ताकि उसे प्रभुत्व प्रदान कर दे प्रत्येक धर्म पर। तथा पर्याप्त है (इस

لَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الْوَيْلَ بِالْحَقِّ لَقَدْ خُلِقَ
الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لِمَنْ يَخْلُقُ
وَمَا يَسْكُو وَمَقْصُورٌ لِّأَعْيُنِنَا فَوْنٌ فَعَلُوا مَا لَمْ
تَعْلَمُوا فَبَجَلْ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتَحْنَا قُرَيْبًا ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكُنِيَ بِاللَّهِ
شَاهِدًا ۝

- 1 सदाचार की बात से अभिप्राय (ला इलाहा इल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) है। हदैबिया का संधिलेख जब लिखा गया और आप ने पहले ((बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम)) लिखवाई तो कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहा: हम रहमान रहीम नहीं जानते। इसलिये ((बिस्मिका अल्लाहुम्मा)) लिखा जाये। और जब आप ने लिखवाया कि यह संधिपत्र है जिस पर ((मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह)) ने संधि की है तो उन्होंने कहा: ((मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह)) लिखा जाये। यदि हम आप को अल्लाह का रसूल ही मानते तो अल्लाह के घर से नहीं रोकते। आप ने उन की सब बातें मान लीं। और मुसलमानों ने भी सब कुछ सहन कर लिया। और अल्लाह ने उन के दिलों को शान्त रखा और संधि हो गई।
- 2 अर्थात् ((उमरा)) करते हुये जिस में सिर के बाल मुंडाये या कटाये जाते हैं। इसी प्रकार ((हज्ज)) में भी मुंडाये या कटाये जाते हैं।
- 3 इस से अभिप्राय खैबर की विजय है जो हदैबिया से वापसी के पश्चात् कुछ दिनों के बाद हुई। और दूसरे वर्ष संधि के अनुसार आप ने अपने अनुयायियों के साथ उमरा किया और आप का सपना अल्लाह ने साकार कर दिया।

पर) अल्लाह का गवाह होना।

29. मुहम्मद ^[1] अल्लाह के रसूल हैं, तथा जो लोग आप के साथ हैं वह काफिरों के लिये कड़े, और आपस में दयालु हैं। तुम देखोगे उन्हें रुकूअ-सज्दा करते हुये वह खोज कर रहे होंगे अल्लाह की दया तथा प्रसन्नता की। उन के लक्षण उन के चेहरों पर सज्दों के चिन्ह होंगे। यह उन की विशेषता तौरात में है। तथा उन के गुण इंजील में उस खेती के समान बताये गये हैं जिस ने निकाला अपना अंकुर, फिर उसे बल दिया, फिर वह कड़ा हो गया फिर वह (खेती) खड़ी हो गई अपने तने पर। प्रसन्न करने लगी किसानों को, ताकि काफिर उन से जलें। बचन दे रखा है अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन में से क्षमा तथा बड़े प्रतिफल का।

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ
رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ أَوْفَاءً سَوَادًا يَتَّبِعُونَ فَضْلًا مِّنَ
اللَّهِ وَيُؤْتُونَ إِنْسَانًا مِّنْهُم مِّنْ أَثَرِ الشُّجُوذِ
ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ شَجَرٍ
أَخْرَجَ سَطَافًا فَازْدَرَاهُ فَاسْتَفَلَّكَ فَأَسْتَوَىٰ عَلَى
سَوْدِهِ يَجِدُ الْفُرَّاعَ لِيَصَيِّبَهُمُ الْكُفَّارُ وَعَدَ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً
وَأَجْرًا عَظِيمًا

1 इस अन्तिम आयत में सहाबा (नबी के साथियों) के गुणों का वर्णन करते हुये यह सूचना दी गई है कि इस्लाम क्रमशः प्रगतिशील हो कर प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा। तथा ऐसा ही हुआ कि इस्लाम जो आरंभ में खेती के अंकुर के समान था क्रमशः उन्नति कर के एक दृढ़ प्रभुत्वशाली धर्म बन गया। और काफिर अपने द्वेष की अग्नि में जल-भुन कर ही रह गये।

हदीस में है कि ईमान वाले आपस के प्रेम तथा दया और करुणा में एक शरीर के समान हैं। यदि उस के एक अंग को दुख हो तो पूरा शरीर ताप और अनिद्रा में ग्रस्त हो जाता है। (सहीह बुखारी: 6011, सहीह मुस्लिम: 2596)

सूरह हुजुरात - 49

سُورَةُ الْحُجُرَاتِ

सूरह हुजुरात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस की आयत 4 में हुजुरों के बाहर से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पुकारने पर पकड़ की गई है इस लिये इस का नाम सूरह हुजुरात है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में इस बात पर बल दिया गया है कि अपनी बात प्रस्तुत करने में अल्लाह के रसूल से आगे न बढ़ो। और आप के मान-मर्यादा का ध्यान रखो। तथा ऐसी बात न बोलो जो इस्लामी भाई चारे के लिये हानिकारक हो, और न्याय की नीति अपनाओ।
- इस की आयत 11 से 12 में उन नैतिक बुराईयों से बचने का निर्देश दिया गया है जो आपस में घृणा उत्पन्न करती तथा उपद्रव का कारण बनती हैं।
- इस की आयत 13 में वर्ग-वर्ण और जातिवाद के गर्व का खण्डन करते हुये यह बताया गया है कि सभी जातियाँ और कबीले एक ही नर-नारी की संतान हैं। इसलिये वर्ण-वर्ग और जाति पर गर्व का कोई आधार नहीं। किसी की प्रधानता का कारण केवल अल्लाह की आज्ञा का पालन है।
- इस की अन्तिम आयतों में उन की पकड़ की गई है जो मुख से तो इस्लाम को मानते हैं किन्तु ईमान उन के दिलों में नहीं उतरा है। और उन्हें बताया गया है कि सच्चा ईमान वह है जिस में निफ़ाक़ न हो तथा सच्चा ईमान उस का है जो अल्लाह की राह में धन और प्राण के साथ जिहाद (संघर्ष) करता हो।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे लोगो! जो ईमान लाये हो आगे न बढ़ो अल्लाह तथा उस के रसूल⁽¹⁾ से।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْوَا مُؤَايِدَ الَّذِينَ كَفَرُوا

- 1 अर्थात् दीन धर्म तथा अन्य दूसरे मामलात के बारे में प्रमुख न बनो। अनुयायी बन कर रहो। और स्वयं किसी बात का निर्णय न करो।

और डरो अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

2. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊँची न करो। और न आप से ऊँची आवाज़ में बात करो जैसे एक दूसरे से ऊँची आवाज़ में बात करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें और तुम्हें पता (भी) न हो।

3. निःसंदेह जो धीमी रखते हैं अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल के सामने, वही लोग हैं जाँच लिया है अल्लाह ने जिन के दिलों को सदाचार के लिये। उन्हीं के लिये क्षमा तथा बड़ा प्रतिफल है।

4. वास्तव में जो आप को पुकारते^[1] हैं कमरों के पीछे से उन में से

وَرَسُولِهِ أَتَقْوَى اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ ينادونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ

1 हदीस में है कि बनी तमीम के कुछ सवार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये तो आदरणीय अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि काकाअ बिन उमर को इन का प्रमुख बनाया जाये। और आदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: बल्कि अकरअ बिन हाबिस को बनाया जाये। तो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: तुम केवल मेरा विरोध करना चाहते हो। उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: यह बात नहीं है। और दोनों में विवाद होने लगा और उन के स्वर ऊँचे हो गये। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4847)

इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान-मर्यादा तथा आप का आदर-सम्मान करने की शिक्षा और आदेश दिये गये हैं। एक हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने साबित बिन कैस (रज़ियल्लाहु अन्हु) को नहीं पाया तो एक व्यक्ति से पता लगाने को कहा। वह उन के घर गये तो वह सिर झुकाये बैठे थे। पूछने पर कहा: बुरा हो गया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास ऊँची आवाज़ से बोलता था, जिस के कारण मेरे सारे कर्म व्यर्थ हो गये। आप ने यह सुन कर कहा: उसे बता दो कि वह नारकी नहीं वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी शरीफ: 4846)

अधिकतर निर्बोध हैं।

5. और यदि वह सहन^[1] करते यहाँ तक कि आप निकल कर आते उन की ओर तो यह उत्तम होता उन के लिये। तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला दयावान् है।
6. हे ईमान वालो! यदि तुम्हारे पास कोई दुराचारी^[2] कोई सूचना लाये तो भली-भाँति उस का अनुसंधान (छान बीन) कर लिया करो। ऐसा न हो कि तुम हानि पहुँचा दो किसी समुदाय को आज्ञानता के कारण, फिर अपने किये पर पछताओ।
7. तथा जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं। यदि वह तुम्हारी बात मानते रहे बहुत से विषय में तो तुम आपदा में पड़ जाओगे। परन्तु

لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا
أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِمَجْهَالِكُمْ فَتَضِلُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ
ذَٰلِكُمْ مِمَّا فَعَلْتُمْ ۝

وَاعْلَمُوا أَن فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ
مِّنَ الْأُمُورِ لَخَيْرٌ وَلَكِنْ أَفْتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ الْإِنشَانَ
وَدَنِّي فِي قُلُوبِكُمْ ذِكْرًا لِّكُمْ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ

- 1 हदीस में है कि अकरअ बिन हाबिस (रज़ियल्लाहु अन्हु) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आये और कहा: हे मुहम्मद! बाहर निकलिये। उसी पर यह आयत उतरी। (मुस्नद अहमद: 3/588, 6/394)
- 2 इस में इस्लाम का यह नियम बताया गया है कि बिना छान बीन के किसी की ऐसी बात न मानी जाये जिस का सम्बंध दीन अथवा किसी बहुत गंभीर समस्या से हो। अथवा उस के कारण कोई बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो सकती हो। और जैसा कि आप जानते हैं अब यह नियम संसार के कोने कोने में फैल गया है। सारे न्यायालयों में इसी के अनुसार न्याय किया जाता है। और जो इस के विरुद्ध निर्णय करता है उस की कड़ी आलोचना की जाती है। तथा अब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात् यह नियम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस पाक के लिये भी है। कि यह छान बीन किये बगैर कि वह सहीह है या नहीं उस पर अमल नहीं किया जाना चाहिये। और इस चीज़ को इस्लाम के विद्वानों ने पूरा कर दिया है कि अल्लाह के रसूल की वे हदीसें कौन सी हैं जो सहीह हैं तथा वह कौन सी हदीसें हैं जो सहीह नहीं हैं। और यह विशेषता केवल इस्लाम की है। संसार का कोई धर्म यह विशेषता नहीं रखता।

अल्लाह ने प्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये ईमान को तथा सुशोभित कर दिया है उसे तुम्हारे दिलों में और अप्रिय बना दिया है तुम्हारे लिये कुफ़र तथा उल्लंघन और अवैज्ञा को, और यही लोग संमार्ग पर हैं।

وَالْعَصِيَّانَ أَُولَئِكَ هُمُ الرّٰثِدُونَ ﴿١٠﴾

8. अल्लाह की दया तथा उपकार से, और अल्लाह सब कुछ तथा सब गुणों को जानने वाला है।

فَضَّلَا مِنَ اللَّهِ وَنِعْمَ اللَّهُ عَلِيمٌ ﴿١١﴾

9. और यदि ईमान वालों के दो गिरोह लड़^[1] पड़े तो संधि करा दो उन के बीच। फिर दोनों में से एक दूसरे पर अत्याचार करे तो उस से लड़ो जो अत्याचार कर रहा है यहाँ तक कि फिर जाये अल्लाह के आदेश की ओर। फिर यदि वह फिर^[2] आये तो उन के बीच संधि करा दो न्याय के साथ। तथा न्याय करो, वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय करने वालों से।

وَكَانَ كَلَامُ بَعْضٍ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا فَإِنْ بَغَتْ أَحَدُهُمَا عَلَى الْآخَرَىٰ فَقَاتِلُوا أَلَّيْكَ تَبَعِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلَحُوا بَيْنَهُمَا بِمَا الْعَدْلُ فَاِصْطُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿١٢﴾

10. वास्तव में सब ईमान वाले भाई भाई हैं। अतः संधि (मेल) करा दो अपने दो भाईयों के बीच तथा अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلَحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣﴾

11. हे लोगो जो ईमान लाये हो!^[3] हँसी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْخَرُوا قَوْمًا مِنْ قَوْمٍ عَلَىٰ أَنْ

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: मेरे पश्चात् काफ़िरो के समान हो कर एक दूसरे की गर्दन न मारना। (सहीह बुख़ारी: 121, सहीह मुस्लिम: 65)

2 अर्थात् किताब और सुन्नत के अनुसार अपना झगड़ा चुकाने के लिये तय्यार हो जाये।

3 आयत 11 तथा 12 में उन सामाजिक बुराईयों से रोका गया है जो भाईचारे को खंडित करती हैं। जैसे किसी मुसलमान पर व्यंग करना, उस की हँसी उड़ाना,

न उड़ाये कोई जाति किसी अन्य जाति की। हो सकता है वह उन से अच्छी हो। और न नारी अन्य नारियों की। हो सकता है कि वह उन से अच्छी हों। तथा आक्षेप न लगाओ एक-दूसरे को और न किसी को बुरी उपाधि दो। बुरा नाम है अपशब्द ईमान के पश्चात्। और जो क्षमा न माँगे तो वही लोग अत्याचारी हैं।

12. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचो अधिकांश गुमानों से। वास्तव में कुछ गुमान पाप है। और किसी का भेद न लो। और न एक-दूसरे की गीबत^[1] करो। क्या चाहेगा तुम में से कोई अपने मरे भाई का मांस खाना? अतः तुम्हें इस से घृणा होगी। तथा अल्लाह से डरते रहो। वास्तव में अल्लाह अति क्षमावान् दयावान् है।

يَكُونُوا خَيْرًا لِّمَنَّهُمْ وَلَا يَسَاءَ لِمَن يَسَاءُ وَعَلَىٰ أَن يَكُنْ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا تَلْمِزُوا أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِاللِّغَابِ بِبُحْسِ الْفُسُوقِ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبِ بَعْضُكُم بَعْضًا يَخِبُ أَحَدُكُم أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝

उसे बुरे नाम से पुकारना, उस के बारे में बुरा गुमान रखना, किसी के भेद की खोज करना आदि। इसी प्रकार गीबत करना। जिस का अर्थ यह है कि किसी की अनुपस्थिति में उस की निन्दा की जाये। यह वह सामाजिक बुराईयाँ हैं जिन से कुर्आन तथा हदीसों में रोका गया है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने हज्जतुल वदाअ के भाषण में फरमाया: मुसलमानों! तुम्हारे प्राण, तुम्हारे धन तथा तुम्हारी मर्यादा एक दूसरे के लिये उसी प्रकार आदर्णीय है जिस प्रकार यह महीना तथा यह दिन आदर्णीय है। (सहीह बुखारी: 1741, सहीह मुस्लिम: 1679) दूसरी हदीस में है कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। वह न उस पर अत्याचार करे और न किसी को अत्याचार करने दे। और न उसे नीच समझे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपने सीने की ओर संकेत कर के कहा: अल्लाह का डर यहाँ होता है। (सहीह मुस्लिम: 2564)

1. हदीस में है कि तुम्हारा अपने भाई की चर्चा ऐसी बात से करना जो उसे बुरी लगे वह गीबत कहलाती है। पूछा गया कि यदि उस में वह बुराई हो तो फिर? आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: यही तो गीबत है। यदि न हो तो फिर वह आरोप है। (सहीह मुस्लिम: 2589)

13. हे मनुष्यो!^[1] हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर-नारी से। तथा बना दी है तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो। वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلَكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

1. इस आयत में सभी मनुष्यों को संबोधित कर के यह बताया गया है कि सब जातियों और कबीलों के मूल माँ-बाप एक ही हैं। इसलिये वर्ग-वर्ण तथा जाति और देश पर गर्व और भेद-भाव करना उचित नहीं। जिस से आपस में घृणा पैदा होती है। इस्लाम की सामाजिक व्यवस्था में कोई भेद-भाव नहीं है। और न ऊँच नीच का कोई विचार है, और न जात-पात का, तथा न कोई छूवा-छूत है। नमाज़ में सब एक साथ खड़े होते हैं। विवाह में भी कोई वर्ग-वर्ण और जाति का भेद-भाव नहीं। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कुरैशी जाति की स्त्री जैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) का विवाह अपने मुक्त किये हुये दास ज़ैद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से किया था। और जब उन्होंने उसे तलाक़ दे दी तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जैनब से विवाह कर लिया। इसलिये कोई अपने को सय्यद कहते हुये अपनी पुत्री का विवाह किसी व्यक्ति से इसलिये न करे कि वह सय्यद नहीं है तो यह जाहिली युग का विचार समझा जायेगा। जिस से इस्लाम का कोई सम्बंध नहीं है। बल्कि इस्लाम ने इस का खण्डन किया है। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में अफ़्रीका के एक आदमी बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) तथा रोम के एक आदमी सुहैब (रज़ियल्लाहु अन्हु) बिना रंग और देश के भेद-भाव के एक साथ रहते थे।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: अल्लाह ने मुझे उपदेश भेजा है कि आपस में झुक कर रहो। और कोई किसी पर गर्व न करे। और न कोई किसी पर अत्याचार करे। (सहीह मुस्लिम: 2865)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: लोग अपने मरे हुये बापों पर गर्व न करें। अन्यथा वे उस कीड़े से हीन हो जायेंगे जो अपने नाक से गन्दगी ढकेलता है। अल्लाह ने जाहिलिय्यत का पक्षपात और बापों पर गर्व को दूर कर दिया। अब या तो सदाचारी ईमान वाला है या कुकर्मी अभागा। सभी आदम की संतान हैं। (सुनन अबू दाऊद: 5116। इस हदीस की सनद हसन है।)

यदि आज भी इस्लाम की इस व्यवस्था और विचार को मान लिया जाये तो पूरे विश्व में शान्ति तथा मानवता का राज्य हो जायेगा।

सब से सूचित है।

14. कहा कुछ बददुओं (देहातियों) ने कि हम ईमान लाये। आप कह दें कि तुम ईमान नहीं लाये। परन्तु कहो कि हम इस्लाम लाये। और ईमान अभी तक तुम्हारे दिलों में प्रवेश नहीं किया। तथा यदि तुम आज्ञा का पालन करते रहे अल्लाह तथा उस के रसूल की, तो नहीं कम करेगा वह (अल्लाह) तुम्हारे कर्मों में से कुछ। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान्^[1] है।
15. वास्तव में ईमान वाले वही हैं जो ईमान लाये अल्लाह तथा उस के रसूल पर, फिर सदेह नहीं किया और जिहाद किया अपने प्राणों तथा धनों से अल्लाह की राह में, यही सच्चे हैं।
16. आप कह दें कि क्या तुम अवगत करा रहे हो अल्लाह को अपने धर्म से? जब कि अल्लाह जानता है जो कुछ (भी) आकाशों तथा धरती में है तथा वह प्रत्येक वस्तु का अति ज्ञानी है।
17. वे उपकार जता रहे हैं आप के ऊपर कि वह इस्लाम लाये हैं। आप कह दें कि उपकार न जताओ मुझ पर अपने इस्लाम का। बल्कि अल्लाह का उपकार है तुम पर कि उस ने राह दिखायी है तुम्हें ईमान की, यदि तुम सच्चे हो।

قَالَتِ الْكَافِرَاتُ امَّا قُلْ ثُمَّ تُوْمِنُوْنَ وَلٰكِنْ قُلُوْا
اَسْلَمْنَا وَلٰمَّا يَدْخُلِ الْاِنْسَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ
وَ اِنْ تُطِيعُوْا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلْبِسْكُمْ مِنْ اَعْمَالِكُمْ
شَيْئًا اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

اِنَّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ كَفَرُوْا
بِرَبِّهٖمْ اَوْ جَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْ لِيْكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ

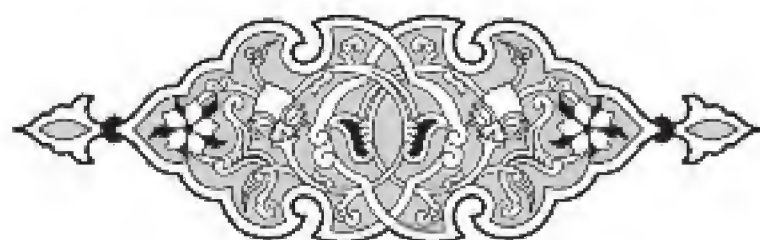
قُلْ اَعْلَمُوْنَ اللّٰهُ يَدْبِرُ بَيْنَكُمْ وَاَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلِلّٰهِ يَحْكُمُ كُلُّ شَيْءٍ عَلَيْهِ

يَعْتَمِدُوْنَ عَلَيْكَ اِنْ اَسْلَمُوْا قُلْ لَا اَسْتَوْعِلُ
اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اِنْ
هَدٰكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि मुख से इस्लाम को स्वीकार कर लेने से मुसलमान तो हो जाता है किन्तु जब तक ईमान दिल में न उतरे वह अल्लाह के समीप ईमान वाला नहीं होता। और ईमान ही आज्ञा पालन की प्रेरणा देता है जिस का प्रतिफल मिलेगा।

18. निःसंदेह अल्लाह ही जानता है आकाशों तथा धरती के गैब (छुपी बात) को, तथा अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम कर रहे हो।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ لِّمَا تَعْمَلُونَ ۝



सूरह काफ - 50



सूरह काफ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 45 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ, अक्षर (काफ) से हुआ है। जो इस का यह नाम रखने का कारण है।
- इस में कुर्आन की महिमा का वर्णन करते हुये मौत के पश्चात् जीवन से संबन्धित संदेहो को दूर किया गया है। और आकाश तथा धरती के उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन पर विचार करने से मौत के पश्चात् जीवन का विश्वास होता है।
- इस में उन जातियों के परिणाम द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने उन रसूलों को झुठलाया जो दूसरे जीवन की सूचना दे रहे थे।
- इस में कर्मों के अभिलेख तथा नरक और स्वर्ग का ऐसा चित्र दिखाया गया है जिस से लगता है कि यह सब सामने हो रहा है।
- आयत 36 और 38 में शिक्षा दी गई है, और अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपने स्थान पर स्थित रह कर कुर्आन द्वारा शिक्षा देते रहने के निर्देश दिये गये हैं।

हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) प्रत्येक जुमुआ को मिम्बर पर यह सूरह पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम: 873)

इसी प्रकार आप इसे दोनो ईद की नमाज़, और फ़ज्र की नमाज़ में भी पढ़ते थे। (मुस्लिम: 878, 458)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. काफ़ शपथ है आदरणीय कुर्आन की!
2. बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ
गया उन के पास एक सबधान करने

قَالَ وَالْقُرْآنُ الْمَجِيدُ
بَلْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُنْذَرُونَ فَقَالَ الْكَافِرُونَ

هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝

वाला उन्हीं में से। तो कहा काफ़िरो
ने यह तो बड़े आश्चर्य^[1] की बात है।

مَا ذَا امْتَنَّا وَلَكُمَا اَشْرَآءُ ۚ ذَٰلِكَ رَجْعُ بَعِيدٍ ۝

3. क्या जब हम मर जायेंगे और धूल हो
जायेंगे? तो यह वापसी दूर की बात^[2]
(असंभव) है।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ
حَفِيفٌ ۝

4. हमें ज्ञान है जो कम करती है धरती
उन का अंश, तथा हमारे पास एक
सुरक्षित पुस्तक है।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَهُمْ فِي اَمْرٍ مُّرْتَبٍ ۝

5. बल्कि उन्होंने झुठला दिया सत्य को
जब आ गया उन के पास। इसलिये
उलझन में पड़े हुये हैं।

اَفَلَمْ يَنْظُرُوا اِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَرَافَعَهَا
وَمَا اَلْهَامُنْ فُتُوهُ ۝

6. क्या उन्होंने नहीं देखा आकाश की
ओर अपने ऊपर कि कैसा बनाया है
हम ने उसे और सजाया है उस को
और नहीं है उस में कोई दराड़?

وَالْاَرْضَ مَدَدْنَاهَا ۖ وَالْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِي ۖ وَابْنَيْنَا
فِيهَا مِنْ كُلِّ ذَوْجٍ يَهْتَجُونَ ۝

7. तथा हम ने धरती को फैलाया,
और डाल दिये उस में पर्वत। तथा
उपजायीं उस में प्रत्येक प्रकार की
सुन्दर वनस्पतियाँ।

نَجْوَرةٌ وَذُكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّشْتَبٍ ۝

8. आँख खोलने तथा शिक्षा देने के लिये
प्रत्येक अल्लाह की ओर ध्यानमग्न
भक्त के लिये।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا ۖ فَاَنْبَتْنَا لِهٖ جَنَّةً
وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۝

9. तथा हम ने उतारा आकाश से शुभ
जल, फिर उगाये उस के द्वारा बाग़
तथा अन्न जो काटे जायें।

1 कि हमारे जैसा एक मनुष्य रसूल कैसे हो गया?

2 सुरक्षित पुस्तक से अभिप्राय ((लौहे महफूज़)) है। जिस में जो कुछ उन के
जीवन-मरण की दशायें हैं वह पहले ही से लिखी हुई हैं। और जब अल्लाह का
आदेश होगा तो उन्हें फिर बनाकर तय्यार कर दिया जायेगा।

10. तथा खजूर के ऊँचे वृक्ष जिन के गुच्छे गुथे हुये हैं।
11. जीविका के लिये भक्तों की, तथा हम ने जीवित कर दिया निर्जीव नगर को। इसी प्रकार (तुम्हें भी) निकलना है।
12. झुठलाया इस से पहले नूह की जाति तथा कूबे के वासियों एवं समूद ने।
13. तथा आद और फिरऔन एवं लूत के भाईयों ने।
14. तथा ऐका के वासियों ने, और तुब्बअ^[1] की जाति ने। प्रत्येक ने झुठलाया^[2] रसूलों को। अन्ततः सच्च हो गई (उन पर) हमारी धमकी।
15. तो क्या हम थक गये हैं प्रथम बार पैदा कर के? बल्कि यह लोग संदेह में पड़े हुये हैं नये जीवन के बारे में।
16. जब कि हम ने ही पैदा किया है मनुष्य को और हम जानते हैं जो विचार आते हैं उस के मन में। तथा हम अधिक समीप हैं उस से (उस की) प्राणनाड़ी^[3] से।

وَالنَّخْلَ يَسْقِيهَا طَلْعُ نَضِيدٍ ۝

رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَحْيَيْنَاهُ بَدَنًا قَبْلَ أَنْ كُنَّا كَذَلِكَ
الْمُرُومِ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّيْسِ وَشُعُوبٌ ۝

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَالْحَوَانُ لُوطٌ ۝

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ وَعِيدُ ۝

أَفَحَسِبْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ
خَلْقٍ حِينٍ ۝

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ
وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝

1 देखिये: सूरह दुखान, आयत: 37।

2 इन आयतों में इन जातियों के विनाश की चर्चा कर के कुआँन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को न मानने के परिणाम से सावधान किया गया है।

3 अर्थात् हम उस के बारे में उस से अधिक जानते हैं।

17. जब कि^[1] (उस के) दायें-बायें बैठे दो फरिश्ते लिख रहे हैं।
18. वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।
19. आ पहुँची मौत की अचेतना (बे होशी) सत्य ले कर। यह वही है जिस से तू भाग रहा था।
20. और फूँक दिया गया सूर (नरसिंघा) में। यही यातना के बचन का दिन है।
21. तथा आयेगा प्रत्येक प्राणी इस दशा में कि उस के साथ एक हॉकने^[2] वाला और एक गवाह होगा।
22. तू इसी से अचेत था, तो हम ने दूर कर दिया तेरे पर्दे को, तो तेरी आँख आज खूब देख रही है।
23. तथा कहा उस के साथी^[3] ने: यह है जो मेरे पास तय्यार है।
24. दोनों (फरिश्तों को आदेश होगा कि) फेंक दो नरक में प्रत्येक काफिर (सत्य के) विरोधी को।
25. भलाई के रोकने वाले, अधर्मी,

إِذْ يَتَلَفَّى الثَّالِثَتَيْنِ عَنْ يَسَمِينِ وَعَنْ اِثْمَالِ قَبِيلٍ ۝

مَا يَلْفُظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَيْنُهُ ۝

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ فَانْطَبَحَتْ مِنْهُ ۝

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَلِكُمْ يَوْمَ الْوَعْدِ ۝

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَها سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۝

اَلَّذِي كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكُفَّ عَنْكَ عِطْلُكَ ذَلِكُمْ فَانْصُرَكَ الْيَوْمَ حَذِيدٌ ۝

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَيَّ عَيْنِي ۝

اَلَّذِي فِي جَهَنَّمَ كُلٌّ لِّغَارِ عَيْنِي ۝

مِّنْ اِلٰهِ الْغَايِبِ مُنْقِيبٌ ۝

- 1 अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति के दायें तथा बायें दो फरिश्ते नियुक्त हैं जो उस की बातों तथा कर्मों को लिखते रहते हैं। जो दायें है वह पुण्य को लिखता है। और जो बायें है वह पाप को लिखता है।
- 2 यह दो फरिश्ते होंगे एक उसे हिसाब के लिये हॉक कर लायेगा, और दूसरा उस का कर्म-पत्र प्रस्तुत करेगा।
- 3 साथी से अभिप्राय वह फरिश्ता है जो संसार में उस का कर्म लिख रहा था। वह उस का कर्म-पत्र उपस्थित कर देगा।

संदेह करने वाले को।

26. जिस ने बना लिये अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य, तो दोनों को फेंक दो कड़ी यातना में।

لَاذَى جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝

27. उस के साथी (शैतान) ने कहा: हे हमारे पालनहार! मैं ने इसे कुपथ नहीं किया, परन्तु वह स्वयं दूर के कुपथ में था।

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

28. अल्लाह ने कहा: झगड़ा न करो मेरे पास। मैं ने तो पहले ही (संसार में) तुम्हारी ओर चेतावनी भेज दी थी।

قَالَ لَا تَحْشَرْنَا لَدُنِّي وَتَقَدَّمَ مَتَّ إِلَيْنَا بِالْوَعِيدِ ۝

29. नहीं बदली जाती बात मेरे पास^[1], और न मैं तनिक भी अत्याचारी हूँ भक्तों के लिये।

يَا بَيْتِلُ الْقَوْلِ لَدُنِّي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ لِلْعَبِيدِ ۝

30. जिस दिन हम कहेंगे नरक से कि तू भर गई! और वह कहेगी क्या कुछ और है?^[2]

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَنَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ ۝

31. तथा समीप कर दी जायेगी स्वर्ग, वह सदाचारियों से कुछ दूर न होगी।

وَأَزَلَّتِ الْجَنَّةُ الْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝

32. यह है जिस का तुम को वचन दिया जाता था, प्रत्येक ध्यानमग्न रक्षक^[3] के लिये।

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لَكُنْ أَزَابٍ حَفِظَ ۝

33. जो डरा अत्यंत कृपाशील से बिन देखे तथा ले कर आया ध्यान मग्न दिला।

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ۝

34. प्रवेश कर जाओ इस में शान्ति के

إِذْ خُلُوْهُ سَلِمُوا ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝

1 अर्थात् मेरे नियम अनुसार कर्मों का प्रतिकार दिया गया है।

2 अल्लाह ने कहा है कि वह नरक को अवश्य भर देगा। (देखिये: सूरह सज्दा, आयत: 13)। और जब वह कहेगी कि क्या कुछ और है? तो अल्लाह उस में अपना पैर रख देगा। और वह बस-बस कहने लगेगी। (बुखारी: 4848)

3 अर्थात् जो अल्लाह के आदेशों का पालन करता था।

साथ। यह सदैव रहने का दिन है।

35. उन्हीं के लिये जो वे इच्छा करेंगे उस में मिलेगा। तथा हमारे पास (इस से भी) अधिक है।^[1]

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝

36. तथा हम विनाश कर चुके हैं इन से पूर्व बहुत से समुदायों का जो इन से अधिक थे शक्ति में। तो वह फिरते रहे नगरों में, तो क्या कहीं कोई भागने की जगह पा सके?^[2]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَخْرُجٍ ۝

37. वास्तव में इस में निश्चय शिक्षा है उस के लिये जिस के दिल हो, अथवा कान धरे और वह उपस्थित^[3] हो।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝

38. तथा निश्चय हम ने पैदा किया है आकाशों तथा धरती को और जो कुछ दोनों के बीच है छः दिनों में, और हमें कोई थकान नहीं हुई।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُؤْلُؤٍ ۝

39. तो आप सहन करें उन की बातों को तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ सूर्य के निकलने से पहले तथा डूबने से पहले^[4]

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝

1 अधिक से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है। (देखिये: सूरह यूनस, आयत: 26, की व्याख्या में: सहीह मुस्लिम: 181)

2 जब उन पर यातना आ गई।

3 अर्थात् ध्यान से सुनता हो।

4 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चांद की ओर देखा। और कहा: तुम अल्लाह को ऐसे ही देखोगे। उस के देखने में तुम्हें कोई बाधा न होगी। इसलिये यदि यह हो सके कि सूर्य निकलने तथा डूबने से पहले की नमाजों से पीछे न रहो तो यह अवश्य करो। फिर आप ने यही आयत पढ़ी। (सहीह बुखारी: 554, सहीह मुस्लिम: 633)

यह दोनों फज्र और अस्म की नमाजें हैं। हदीस में है कि प्रत्येक नमाज के पश्चात्

40. तथा रात के कुछ भाग में उस की पवित्रता का वर्णन करें और सज्दों (नमाजों) के पश्चात् (भी)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ النُّجُومِ ۝

41. तथा ध्यान से सुनो, जिस दिन पुकारने वाला¹ पुकारेगा समीप स्थान से।

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

42. जिस दिन सब सुनेंगे कड़ी आवाज़ सत्य के साथ, वही निकलने का दिन होगा।

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝

43. वास्तव में हम ही जीवन देते तथा मारते हैं और हमारी ओर ही फिर कर आना है।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝

44. जिस दिन फट जायेगी धरती उन से, वह दौड़ते हुये (निकलेंगे) यह एकत्र करना हम पर बहुत सरल है।

يَوْمَ نَشَقُّ الْأَرْضَ عَنْهُمْ فَرَاسًا ذَلِكُمْ فَسَمِعْنَا يُسِيرُونَ ۝

45. तथा हम भली-भाँति जानते हैं उसे जो कुछ वे कह रहे हैं। और आप उन्हें बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं हैं। तो आप शिक्षा दें कुर्आन द्वारा उसे जो डरता हो मेरी यातना से।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۝ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ۝

अल्लाह की तस्बीह और हम्द तथा तक्बीर 33, 33 बार करो। (सहीह बुखारी: 843, सहीह मुस्लिम: 595)

1 इस से अभिप्राय प्रलय के दिन सूर में फूँकने वाला फरिश्ता है।

सूरह ज़ारियात - 51



सूरह ज़ारियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 60 आयतें हैं।

- ज़ारियात का अर्थ है ऐसी वायु जो धूल उड़ाती हो। इस की आयत 1 से 6 तक में तूफानी तथा वर्षा करने वाली हवाओं और संसार की रचना तथा व्यवस्था में जो मनुष्य को सचेत कर देती है, उन के द्वारा इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि कर्मों का प्रतिफल मिलना आवश्यक है। तथा इसी प्रकार कर्मफल के इन्कार और उपहास के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है।
- आयत 15 से 19 तक में अल्लाह से डरने तथा सदाचार का जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। और उस का उत्तम फल बताया गया है।
- आयत 20 से 23 तक में उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो आकाश तथा धरती में और स्वयं मनुष्य में हैं। जो इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह की यातना का नियम इस संसार में भी काफ़िरों पर लागू होता रहा है।
- अन्त में आयत 47 से 60 तक अल्लाह की शक्ति तथा महिमा का वर्णन करते हुये उस की ओर लपकने और उस की बंदना करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है (बादलों को) बिखरने
वालियों की!

وَالَّذِينَ تَدْرِوْنَ

2. फिर (बादलों का) बोझ लादने
वालियों की!

فَالْجَلَلِ وَتَوَّارِ

3. फिर धीमी गति से चलने वालियों की!

فَالْجَوْنِ يَسْرَارِ

4. फिर (अल्लाह का) आदेश बोटने वाले (फरिश्तों की)!
5. निश्चय जिस (प्रलय) से तुम्हें डराया जा रहा है वह सच्ची है।^[1]
6. तथा कर्मों का फल अवश्य मिलने वाला है।
7. शपथ है रास्तों वाले आकाश की!
8. वास्तव में तुम विभिन्न^[2] बातों में हो।
9. उस से वही फेर दिया जाता है जो (सत्य से) फिरा हुआ हो।
10. नाश कर दिये गये अनुमान लगाने वाले।
11. जो अपनी अचेतना में भूले हुये हैं।
12. वह प्रश्न^[3] करते हैं कि प्रतिकार का दिन कब है?
13. (उस दिन है) जिस दिन वह अग्नि पर तपाये जायेंगे।
14. (उन से कहा जायेगा): स्वाद चखो अपने उपद्रव का। यही वह है जिस की तुम शीघ्र माँग कर रहे थे।
15. वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे।

فَالْقَائِمَاتِ أَمْرًا ۝

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۝

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُلِ ۝

إِنَّمَا لَكُمْ قَوْلٌ مُّخْتَلِفٌ ۝

يُؤْتِكُ عَنْهُ مَنْ آوَلَكُ ۝

مِثْلَ الْغَرَضُونِ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ ۝

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارٍ يُقْتَلُونَ ۝

ذُوقُوا مَسْئَمَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُسْتَعْجَلُونَ ۝

إِنَّ السَّعِيرِينَ فِي جَذَبٍ وَعُيُونٍ ۝

1 इन आयतों में हवाओं की शपथ ली गई है कि हवा (वायु) तथा वर्षा की यह व्यवस्था गवाह है कि प्रलय तथा परलोक का वचन सत्य तथा न्याय का होना आवश्यक है।

2 अर्थात् कुर्आन तथा प्रलय के विषय में विभिन्न बातें कर रहे हैं।

3 अर्थात् उपहास स्वरूप प्रश्न करते हैं।

16. लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उन को उन के पालनहार ने। वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे।
17. वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे।^[1]
18. तथा भोरों^[2] में क्षमा माँगते थे।
19. और उन के धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले^[3] का भाग था।
20. तथा धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिये।
21. तथा स्वयं तुम्हारे भीतर (भी)। फिर क्या तुम देखते नहीं?
22. और आकाश में तुम्हारी जीविका^[4] है, तथा जिस का तुम्हें वचन दिया जा रहा है।
23. तो शपथ है आकाश एवं धरती के पालनहार की यह (बात) ऐसे ही सच्च है जैसे तुम बोल रहे हो।^[5]
24. (हे नबी!) क्या आई आप के पास

الْخَبِيرِينَ مَا آتَاهُمُ رَبُّهُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُجِيبِينَ ﴿١٦﴾

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٧﴾

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْزُومِ ﴿١٩﴾

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُتَوَقِّينَ ﴿٢٠﴾

وَفِي النَّفْسِ أَفْلا تَبْصُرُونَ ﴿٢١﴾

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾

قُورَبِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُمْ يُشْهِدُونَ ﴿٢٣﴾

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثٌ ضَلَّيْتُ فِيهِ رُبِّكُمْ الْمَكْرُمِينَ ﴿٢٤﴾

- 1 अर्थात् अपना अधिक समय अल्लाह के स्मरण में लगाते थे। जैसे तहज्जुद की नमाज़ और तस्बीह आदि।
- 2 हदीस में है कि अल्लाह प्रत्येक रात में जब तिहाई रात रह जाये तो संसार के आकाश की ओर उतरता है। और कहता है: है कोई जो मुझे पुकारे तो मैं उस की पुकार सुनूँ? है कोई जो माँगे, तो मैं उसे दूँ? है कोई जो मुझ से क्षमा माँगे, तो मैं उसे क्षमा करूँ। (बुखारी: 1145, मुस्लिम: 758)
- 3 अर्थात् जो निर्धन होते हुये भी नहीं माँगता था इसलिये उसे नहीं मिलता था।
- 4 अर्थात् आकाश की वर्षा तुम्हारी जीविका का साधन बनती है। तथा स्वर्ग और नरक आकाशों में हैं।
- 5 अर्थात् अपने बोलने का विश्वास है।

इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की सूचना?

25. जब वे आये उस के पास तो सलाम किया। इब्राहीम ने (भी) सलाम किया (तथा कहा): अपरिचित लोग हैं।

26. फिर चुपके से अपने परिजनों की ओर गया। और एक मोटा (भुना हुआ) बछड़ा लाया।

27. फिर रख दिया उन के पास, उस ने कहा: तुम क्यों नहीं खाते हो?

28. फिर अपने दिल में उन से कुछ डरा, उन्होंने कहा: डरो नहीं। और उसे शुभसूचना दी एक ज्ञानी पुत्र की।

29. तो सामने आई उस की पत्नी, और उस ने मार लिया (आश्चर्य से) अपने मुँह पर हाथ। तथा कहा: मैं बाँझ बुढ़िया हूँ।

30. उन्होंने कहा: इसी प्रकार तेरे पालनहार ने कहा है। वास्तव में वह सब गुण और सब कुछ जानने वाला है।

31. उस (इब्राहीम) ने कहा: तो तुम्हारा क्या अभियान है, हे भेजे हुये (फरिश्तो!)?

32. उन्होंने कहा: वास्तव में हम भेजे गये हैं एक अपराधी जाति की ओर।

33. ताकि हम बरसायें उन पर पत्थर की कंकरी।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّنتَكِرُونَ ﴿٢٥﴾

فَوَاغَر إِلَىٰ أَهْلِهِ فَأَجْرًا يُعْجِلُ سَمِينٌ ﴿٢٦﴾

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً. قَالُوا لَا تَفْتِنْهُ. وَبَشِّرُوهُ بَعْلًا عَلَيْهِ ﴿٢٨﴾

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَخَةٍ مُّصَدِّقَةٍ وَجْهَهَا وَتَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمًا ﴿٢٩﴾

قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارَاتٍ مِّنْ طِينٍ ﴿٣٣﴾

34. नामांकित^[1] तुम्हारे पालनहार की ओर से उल्लंघनकारियों के लिये।

مُسَوِّیَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِیْنَ ۝

35. फिर हम ने निकाल दिया जो भी उस (बस्ती) में ईमान वाले थे।

فَاَخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝

36. और हम ने उस में मुमिनों का केवल एक ही घर^[2] पाया।

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ السَّالِمِیْنَ ۝

37. तथा छोड़ दी हम ने उस (बस्ती) में एक निशानी उन के लिये जो डरते हों दुःखदायी यातना से।

وَوَكَّلْنَا فِيْهَا آيَةً لِّلَّذِیْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْكَبِیْرَ ۝

38. तथा मूसा (की कथा) में, जब हम ने भेजा उसे फिरऔन की ओर प्रत्यक्ष (खुले) प्रमाण के साथ।

وَفِیْ مُوسٰی اِذَا اَرْسَلْنٰهُ اِلٰی فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ۝

39. तो वह विमुख हो गया अपने बल-बूते के कारण, और कह दिया की जादूगर अथवा पागल है।

فَتَوَلٰی مُرْیَاةً وَقَالَ مِسْمَارٌ اَوْ یَحْنُوْنَ ۝

40. अन्ततः हम ने पकड़ लिया उस को तथा उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया उन को सागर में और वह निन्दित हो कर रह गया।

فَاَخَذْنٰهُ وَجُودًا مَّبْدُوْلًا فَهَمَرْنٰ بِالْبَیْرِ وَهُوَ مُلْمِیٌّ ۝

41. तथा आद में (शिक्षाप्रद निशानी है)। जब हम ने भेज दी उन पर बाँझ^[3] आँधी।

وَفِیْ عَادٍ اِذَا رَسَلْنَا عَلَیْهِمُ الرِّیْحَ الْعَاقِبِیْرَ ۝

42. वह नहीं छोड़ती थी किसी वस्तु को जिस पर गुजरती परन्तु उसे बना देती थी जीर्ण चूर-चूर हड्डी के समान।

مَا تَذَرُیْنَ شَیْءًا اَنْتَ عَلَیْهِ اِلَّا جَعَلْنٰهُ كَالرِّیْمِیْرِ ۝

1 अर्थात प्रत्येक पत्थर पर पापी का नाम है।

2 जो आदर्णीय लूत (अलैहिस्सलाम) का घर था।

3 अर्थात अशुभा (देखिये: सूरह हाक्का. आयत: 7)

43. तथा समुद्र में जब उन से कहा गया कि लाभान्वित हो लो एक निश्चित समय तक।

وَفِي شَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا خَلْقِي جُنًى ۝

44. तो उन्होंने अवैज्ञा की अपने पालनहार के आदेश की तो सहसा पकड़ लिया उन्हें कड़क ने, और वह देखते रह गये।

فَعَبَّوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الضُّعْفَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝

45. तो वे न खड़े हो सके और न (हम से) बदला ले सके।

فَمَا السَّطَّاعُونَ مِنْ يَوْمٍ وَمَا كَانُوا مُنْتَصِرِينَ ۝

46. तथा नूह^[1] की जाति को इस से पहले (याद करो)। वास्तव में वह अवैज्ञाकारी जाति थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

47. तथा आकाश को हम ने बनाया है हाथों^[2] से और हम निश्चय विस्तार करने वाले हैं।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا يَأْمِنُ ذُرِّيَّتُنَا الْمُوسِعُونَ ۝

48. तथा धरती को हम ने बिछाया है तो हम क्या^[3] ही अच्छे बिछाने वाले हैं।

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمُبِيدُونَ ۝

49. तथा प्रत्येक वस्तु का हम ने उत्पन्न किया है जोड़ा, ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝

50. तो तुम दौड़ो अल्लाह की ओर, वास्तव

فَعَرِّضُوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝

1 आयत 31 से 46 तक नबियों तथा विगत जातियों के परिणाम की ओर निरंतर संकेत कर के सावधान किया गया है कि अल्लाह के बदले का नियम बराबर काम कर रहा है।

2 अर्थात् अपनी शक्ति से।

3 आयत का भावार्थ यह है कि जब सब जिन्हें तथा मनुष्यों को अल्लाह ने अपनी वंदना के लिये उत्पन्न किया है तो अल्लाह के सिवा या उस के साथ किसी जिन या मनुष्य अथवा फरिश्ते और देवी देवता की वंदना अवैध और शिर्क है। जिस के लिये क्षमा नहीं है। (देखिये: सूरह निसा, आयत: 48, 116)। और जो व्यक्ति शिर्क कर लेता है तो उस के लिये स्वर्ग निषेध है। (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 72)

मैं मैं तुम्हें उस की ओर से प्रत्यक्ष रूप से (खुला) सावधान करने वाला हूँ

51. और मत बनाओ अन्नाह के साथ कोई दूसरा पूज्या वास्तव में मैं तुम्हें इस से खुला सावधान करने वाला हूँ

52. इसी प्रकार नहीं आया उन के पास जो इन (मक्का वासियों) से पूर्व रहे कोई रसूल परन्तु उन्होंने ने कहा कि जादूगर या पागल है।

53. क्या वह एक दूसरे को वसियत¹ कर चुके हैं इस की? बल्कि वे उल्लंघनकारी लोग हैं।

54. तो आप मुख फेर लें उन से। आप की कोई निन्दा नहीं है।

55. और आप शिक्षा देते रहें। इसलिये कि शिक्षा लाभप्रद है ईमान वालों के लिये।

56. और नहीं उत्पन्न किया है मैं ने जिन तथा मनुष्य को परन्तु ताकि मेरी ही इबादत करें।

57. मैं नहीं चाहता हूँ उन से कोई जीविका, और न चाहता हूँ कि वह मुझे खिलायें।

58. अवश्य अन्नाह ही जीविका दाता शक्तिशाली बलवान् है।

59. तो इन अत्याचारियों के पाप हैं इन

وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا خَرَائِفَ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيرٌ
مُّبِينٌ ۝

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ
إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجُنُّونٌ ۝

أَتَوْا بِهِ بَلِّغْهُمْ قَوْلَ طَاعُونَ ۝

فَقَوْلُ عَنَّا إِنَّكَ لَمَلُومٌ ۝

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَ يَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَمَا خَلَقْتُ الْإِنْسَ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ
يُطْعَمُونِ ۝

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْعَمِيمِ ۝

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ

1 वसियत का अर्थ है: मरणसत्र आदेश। अर्थ यह कि क्या वे रसूलों के इन्कार का अपने मरण के समय आदेश देते आ रहे हैं कि यह भी अपने पूर्व के लोगों के समान रसूल का इन्कार कर रहे हैं?

के साथियों के पापों के समान अतः
वह उतावले न बनें।

60. अन्ततः विनाश है काफ़िरों के लिये
उन के उस दिन^[1] से जिस से वह
डराये जा रहे हैं।

فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ۝

قَوْلِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي
يُوعَدُونَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

सूरह तूर - 52



सूरह तूर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 49 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में तूर (पर्वत) की शपथ लेने के कारण इस का नाम सूरह तूर है।
- इस में प्रतिफल के दिन को न मानने पर चेतावनी है कि अल्लाह की यातना उन पर अवश्य आ कर रहेगी। और इस पर विश्वास करने के साक्ष्य प्रस्तुत किये गये हैं तथा यातना का चित्र भी।
- अल्लाह की आज्ञा के पालन तथा अपने कर्तव्य को समझते हुये जीवन यापन करने पर अल्लाह के पुरस्कारों से सम्मानित किये जाने का चित्रण भी किया गया है।
- विरोधियों के आगे ऐसे प्रश्न रख दिये गये हैं जिन से संदेह स्वयं दूर हो जाते हैं।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सहन करने तथा अल्लाह की प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है तूर^[1] (पर्वत) की!
2. और लिखी हुई पुस्तक^[2] की!
3. जो झिल्ली के खुले पन्नों में लिखी हुई है।

وَالطُّورِ

وَكُتِّبَ مَسْطُورٍ

فِي رُبِّي مَشْهُورٍ

1 यह उस पर्वत का नाम है जिस पर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह से वार्तालाप की थी।

2 इस से अभिप्राय कुर्आन है।

4. तथा बैतुल मअमूर (आबाद¹) घर) की!
5. तथा ऊँची छत (आकाश) की!
6. और भड़काये हुये सागर² की!
7. वस्तुतः आप के पालनहार की यातना हो कर रहेगी।
8. नहीं है उसे कोई रोकने वाला।
9. जिस दिन आकाश डगमगायेगा।
10. तथा पर्वत चलेंगे।
11. तो बिनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
12. जो विवाद में खेल रहे हैं।
13. जिस दिन वे धक्का दिये जायेंगे नरक की अग्नि की ओर।
14. (उन से कहा जायेगा): यही वह नरक है जिसे तुम झुठला रहे थे।
15. तो क्या यह जादू है या तुम्हें सुझाई नहीं देता?
16. इस में प्रवेश कर जाओ फिर सहन करो या सहन न करो तुम पर समान है। तुम उसी का बदला दिये जा रहे हो जो तुम कर रहे थे।
17. निश्चय, आज्ञाकारी बागों तथा

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝

ثَالِثٌ مِنْ دَافِعٍ ۝

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ دُورًا ۝

وَتُسِيرُ الْجِبَالُ سِيرًا ۝

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا يَوْمَ يَكْفُرُ ۝

الَّذِينَ هُمْ فِي غَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝

يَوْمَ يَدْعُؤْنَ إِلَى تَارِيحِهِمْ دَعَا ۝

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

أَفَحِرَفْدٌ أَمْ أَرَأَيْتُمْ لَا تُصِيرُونَ ۝

إِصْلَافًا فَاصِدًا وَلَا تَصِيرُوا سَوَاءً عَلَيْكُمْ ۝

إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

1 यह आकाश में एक घर है जिस की फ़रिश्ते सदेव परिक्रमा करते रहते हैं। कुछ व्याख्या कारों ने इस का अर्थ: कौबा लिया है। जो उपासकों से प्रत्येक समय आबाद रहता है। क्योंकि मअमूर का अर्थ: ((आबाद)) है।

2 (देखिये: सूरह तकवीर, आयत: 6)

सुखों में होंगे।

18. प्रसन्न हो कर उस से जो प्रदान किया होगा उन को उन के पालनहार ने, तथा बचा लेगा उन को उन का पालनहार नरक की यातना से।

فَكَيْفَ يُعَذِّبُهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَدْ عَلَّمَهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

19. (उन से कहा जायेगा): खाओ और पीओ मनमानी उस के बदले में जो तुम कर रहे थे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ أَمَّا لَكُمْ تَعْلَمُونَ ۝

20. तकिये लगाये हुये होंगे तख्तों पर बराबर बिछे हुये तथा हम विवाह देंगे उन को बड़ी आँखों वाली स्त्रियों से।

مُتَكِبِينَ عَلَى سُرُرٍ مَصْفُوفَةٍ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِمُحَوَّرِينَ ۝

21. और जो लोग ईमान लाये और अनुसरण किया उन का उन की संतान ने ईमान के साथ तो हम मिला देंगे उन की संतान को उन के साथ तथा नहीं कम करेंगे उन के कर्मों में से कुछ, प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का बंधक^[1] है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِإِمْكَانٍ رَهِينٌ ۝

22. तथा हम अधिक देंगे उन को मेवे तथा मांस जिस की वह रुचि रखेंगे।

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِكَاهِنٍ وَنَحْمٍ وَمَا يَشْتَهُونَ ۝

23. वे एक-दूसरे से उस में लेते रहेंगे मदिरा के प्याले जिस में न कोई व्यर्थ बात होगी, न कोई पाप की बात।

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأَنٍّ ۝

24. और फिरते रहेंगे उन की सेवा में (सुन्दर) बालक जैसे वह छुपाये हुये मोती हों।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَكْنُونٌ ۝

25. और वह (स्वर्ग वासी) सम्मुख होंगे एक-दूसरे के प्रश्न करते हुये।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝

1 अर्थात् जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

26. वह कहेंगे: इस से पूर्व^[1] हम अपने परिजनों में डरते थे।

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ۝

27. तो अल्लाह ने उपकार किया हम पर, तथा हमें सुरक्षित कर दिया तापलहरी की यातना से।

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَدْنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

28. इस से पूर्व^[2] हम बंदना किया करते थे उस की। निश्चय वह अति परोपकारी दयावान् है।

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۝

29. तो आप शिक्षा देते रहें। क्योंकि आप के पालनहार के अनुग्रह से न आप काहिन (ज्योतिषी) हैं, और न पागल।^[3]

فَذَكِّرْنَا أَنْتَ يَعْصِي رَّبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَلَا مَجْنُونٍ ۝

30. क्या वह कहते हैं कि यह कवि है हम प्रतीक्षा कर रहे हैं उस के साथ कालचक्र की?^[4]

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَتَرَقَّصُ بِهِ رَيْبَ
الْمُنُونِ ۝

31. आप कह दें कि तुम प्रतीक्षा करते रहो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

كُلٌّ تَرَاقُّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُرْتَصِّينَ ۝

32. क्या उन्हें सिखाती है उन की समझ यह बातें, अथवा वह उल्लंघनकारी लोग हैं?

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَائِفُونَ ۝

33. क्या वह कहते हैं कि इस (नबी) ने इस (कुरआन) को स्वयं बना लिया है? वास्तव में वह ईमान नहीं लाना चाहते।

أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

1 अर्थात् संसार में अल्लाह की यातना से।

2 अर्थात् संसार में।

3 जैसा कि वह आप पर यह आरोप लगा कर हताश करना चाहते हैं।

4 अर्थात् कुरैश इस प्रतीक्षा में हैं कि संभवतः आप को मौत आ जाये तो हमें चैन मिल जाये।

34. तो वे ला दें इस (कुर्आन) के समान कोई एक बात यदि वह सच्चे हैं।
35. क्या वह पैदा हो गये हैं बिना^[1] किसी के पैदा किये, अथवा वह स्वयं पैदा करने वाले हैं?
36. या उन्होंने ही उत्पत्ति की है आकाशों तथा धरती की? वास्तव में वह विश्वास ही नहीं रखते।
37. अथवा उन के पास आप के पालनहार के कोषागार हैं या वही (उस के) अधिकारी हैं?
38. अथवा उन के पास कोई सीढ़ी है जिसे लगा कर सुनते^[2] हैं? तो उन का सुनने वाला कोई खुला प्रमाण प्रस्तुत करे।
39. क्या अल्लाह के लिये पुत्रियाँ हों तुम्हारे लिये पुत्र हों।
40. या आप माँग कर रहे हैं उन से किसी पारिश्रमिक^[3] की तो वे उस के बोझ से दबे जा रहे हैं?
41. अथवा उन के पास परोक्ष (का ज्ञान) है जिसे वे लिख^[4] रहे हैं?

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْغَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿٣٦﴾

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُضْتَبِرُونَ ﴿٣٧﴾

أَمْ لَهُمْ سُلُسَاتُ يَنْصَتُونَ فِيهِ قَلِيلًا مِمَّا سَمِعُوهُمْ يُبْلِغُنَّ قُبُلِينَ ﴿٣٨﴾

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَقْرُومٍ يَنْتَقِلُونَ ﴿٤٠﴾

أَمْ عِنْدَهُمْ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

1 जुबैर बिन मुत्इम कहते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मग़िब की नमाज़ में सूरह तूर पढ़ रहे थे। जब इन आयतों पर पहुँचे तो मेरे दिल की दशा यह हुई कि वह उड़ जायेगा। (सहीह बुख़ारी: 4854)

2 अर्थात् आकाश की बातें। और जब उन के पास आकाश की बातें जानने का कोई साधन नहीं तो यह लोग, अल्लाह, फ़रिश्ते और धर्म की बातें किस आधार पर करते हैं?

3 अर्थात् सत्धर्म के प्रचार पर।

4 इसीलिये इस बह्वी (कुर्आन) को नहीं मानते हैं।

42. या बे चाहते हैं कोई चाल चलना?
तो जो काफिर हो गये वे उस चाल
में ग्रस्त होंगे।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمْ
الْمُكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

43. अथवा उन का कोई और उपास्य
(पूज्य) है अल्लाह के सिवा? अल्लाह
पवित्र है उन के शिर्क से।

أَمْ لَهُمْ آلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَتَّبِعُونَ اللَّهَ وَغَالُوا بَيْنَهُ ۖ كُونُوا

44. यदि वे देख लें कोई खण्ड आकाश
से गिरता हुआ तो कहेंगे कि तह पर
तह बादल है।^[1]

وَأَن تَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

45. अतः आप छोड़ दें उन को यहाँ तक
कि मिल जायें अपने उस दिन से
जिस में^[2] इन्हें अपनी सुध नहीं होगी।

فَذَرُوهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ
يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

46. उस दिन नहीं काम आयेगी उन के
उन की चाल कुछ, और न उन की
सहायता की जायेगी।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

47. तथा निश्चय अत्याचारियों के लिये
एक यातना है इस के अतिरिक्त^[3]
(भी)। परन्तु उन में से अधिकतर
ज्ञान नहीं रखते हैं।

وَأَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَٰكِن
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

48. और (हे नबी!) आप सहन करें अपने
पालनहार का आदेश आने तक।
वास्तव में आप हमारी रक्षा में हैं।
तथा पवित्रता का वर्णन करें अपने
पालनहार की प्रशंसा के साथ जब
जागते हों।^[4]

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

1 अर्थात् तब भी अपने कुफ़्र से नहीं रुकेंगे जब तक कि उन पर यातना न आ जाये।

2 अर्थात् प्रलय के दिन से।

3 इस से संकेत संसारिक यातनाओं की ओर है। (देखिये: सूरह सज्दा आयत: 21)

4 इस में संकेत है आधी रात्री के बाद की नमाज़ (तहज्जुद) की ओर।

49. तथा रात्री में (भी) उस की पवित्रता
का वर्णन करें और तारों के डूबने
के^[1] पश्चात् (भी)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

1 रात्री में तथा तारों के डूबने के समय से संकेत मग़िब तथा इशा और फ़ज्र की नमाज़ की ओर है जिन में यह सब नमाज़ें भी आती हैं।

सूरह नज्म - 53



सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 62 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ नज्म (तारे) की शपथ से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह नज्म है।
- इस में बह्नी तथा रिसालत से सम्बंधित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। जिन से ईमान तथा विश्वास पैदा होता है। और ज्योतिष के आरोप का खण्डन होता है।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्बंधित संदेहों को दूर किया गया है। जो बह्नी के बारे में किये जाते थे। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ आकाशों में देखा उसे प्रस्तुत किया गया है।
- बह्नी (प्रकाशना) को छोड़ कर मनमानी तथा शिर्क करने और प्रतिफल के इन्कार पर पकड़ की गई है। जिन से इन विचारों का व्यर्थ होना उजागर होता है।
- सदाचारियों को क्षमा और पुरस्कार की शुभ सूचना दी गई है। और इन्कारियों को सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सावधान कर्ता होने का वर्णन है। तथा प्रलय के दिन से सावधान करने के साथ ही अल्लाह ही को सज्दा करने तथा उसी की बंदना करने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे!
2. नहीं कुपथ हुआ है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुआ है।
3. और वह नहीं बोलते अपनी इच्छा से।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ

وَمَا يَنْطَلِقُ عَنِ الْهَوَىٰ

- | | |
|--|---|
| 4. वह तो बस बह्नी (प्रकाशना) है। जो
(उन की ओर) की जाती है। | إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝ |
| 5. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने ^[1] | عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝ |
| 6. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा
खड़ा हो गया। | ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۝ |
| 7. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे
पर था। | وَمُوَيْدَاتٍ الْاَلْفِی الْأَعْلَىٰ ۝ |
| 8. फिर समीप हुआ, और फिर लटक
गया। | ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝ |
| 9. फिर हो गया दो कमान के बराबर
अथवा उस से भी समीप। | فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝ |
| 10. फिर उस ने बह्नी की उस (अल्लाह)
के भक्त ^[2] की ओर जो भी बह्नी की। | فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝ |
| 11. नहीं झुठलाया उन के दिल ने जो
कुछ उन्होंने देखा। | مَا كَذَّبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۝ |
| 12. तो क्या तुम उन से झगड़ते हो उस
पर जिसे वह (आँखों से) देखते हैं? | أَفَتُؤْمِرُونَ عَلَىٰ مَا رَأَوْىٰ ۝ |
| 13. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और
भी उतरते देखा। | وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝ |

1 इस से अभिप्राय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) हैं जो बह्नी लाते थे।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर। इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिब्रील (फरिश्ते) को उन के वास्तविक रूप में दो बार देखने का वर्णन है। आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: जो कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अल्लाह को देखा है तो वह झूठा है। और जो कहे कि आप कल (भविष्य) की बात जानते थे तो वह झूठा है। तथा जो कहे कि आप ने धर्म की कुछ बातें छुपा लीं तो वह झूठा है। किन्तु आप ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को उन के रूप में दो बार देखा। (बुखारी: 4855) इब्ने मसूद ने कहा कि आप ने जिब्रील को देखा जिन के छः सौ पंख थे। (बुखारी: 4856)

14. सिद्रतुल मुन्तहा^[1] के पास।
15. जिस के पास जबतुल^[2] मावा है।
16. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।^[3]
17. न तो निगाह चुँधियाई और न सीमा से आगे हुई।
18. निश्चय आप ने अपने पालनहार की बड़ी निशानिया देखीं।^[4]
19. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख लिया लात्त तथा उज्जा को।
20. तथा एक तीसरे मनात को? ^[5]
21. क्या तुम्हारे लिये पुत्र हैं और उस अब्बाह के लिये पुत्रियाँ?
22. यह तो बड़ा भौंडा विभाजन है।
23. वास्तव में यह कुछ केवल नाम हैं जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। नहीं उतारा है अब्बाह ने उन का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान।^[6]

- عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ﴿١﴾
 عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ﴿٢﴾
 إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى ﴿٣﴾
 مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ﴿٤﴾
 لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ﴿٥﴾
 أَوَلَمْ يَرَوْا اللَّهَ وَالْعَزَى ﴿٦﴾
 وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْاُخْرَى ﴿٧﴾
 أَكُمُ النَّكْرُ وَلَهُ الْاُنْثَى ﴿٨﴾
 بَلْكَ إِذَا فِصْلُهُ ضَيَّزَى ﴿٩﴾
 إِنَّ هِيَ إِلَّا اْأَسْمَاءُ سَمَّيْتُمُوهَا اْأَنْتُمْ وَالْآبَاؤُكُمْ
 مِمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ
 إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى اْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ

1 सिद्रतुल मुन्तहा यह छठे या सातवें आकाश पर बैरी का एक वृक्ष है। जिस तक धरती की चीज़ पहुँचती है तथा ऊपर की चीज़ उतरती है। (सहीह मुस्लिम: 173)

2 यह आठ स्वर्गों में से एक का नाम है।

3 हदीस में है कि वह सोने के पतंगे थे। (सहीह मुस्लिम: 173)

4 इस में मेअराज की रात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आकाशों में अब्बाह की निशानियाँ देखने का वर्णन है।

5 लात्त उज्जा और मनात यह तीनों मक्का के मुश्रिकों की देवियों के नाम हैं। और अर्थ यह है कि क्या इन की भी कोई वास्तविकता है?

6 मुश्रिक अपनी मुर्तियों को अब्बाह की पुत्रियाँ कह कर उन की पूजा करते थे। जिस का यहाँ खण्डन किया जा रहा है।

पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।

مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ ۝

24. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे?

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَشْتَىٰ ۝

25. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आखिरत (प्रलोक) तथा संसार।

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۝

26. और आकाशों में बहुत से फरिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चात् कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।^[1]

وَكَلَّمَ مَلَكٌ فِي السَّمَوَاتِ لَا تَعْنِي شَفَاعَةُهُمْ شَيْئًا ۝
إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُرْفُضُ ۝

27. वास्तव में जो ईमान नहीं लाते परलोक पर, वे नाम देते हैं फरिश्तों को स्त्रियों के नाम।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَعْمُونَ الْمَلَائِكَةَ
نُسُبَةَ الْأُنثَىٰ ۝

28. उन्हें इस का कोई ज्ञान। नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुतः गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।

وَاللَّهُمَّ مِنْ عَمَلِهِمْ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ
وَأِنَّ الظَّنَّ لَا يَكُونُ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝

29. अतः आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुँह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ
إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

30. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो

ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ
ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ۝

1 अरब के मुशरिक यह समझते थे कि यदि हम फरिश्तों की पूजा करेंगे तो वह अल्लाह से सिफारिश कर के हमें यातना से मुक्त करा देंगे। इसी का खण्डन यहाँ किया जा रहा है।

गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।

31. तथा अब्बाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।

وَيَلْوِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ
الَّذِينَ أَسَاءُوا سَاءَ عَمَلِهِمْ وَيَجْزِيَ الَّذِينَ
أَحْسَنُوا حَسَنًا ۝

32. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्जा^[1] से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उस ने पैदा किया तुम को धरती^[2] से तथा जब तुम भ्रूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अतः अपने में पवित्र न बनो। वही भली-भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।

لَّذِينَ يَحْتَسِبُونَ كَثِيرَ الْإِنْتِهَاءِ وَالْعَوَاجِشَ إِلَّا اللَّعَمَ
إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذَا أَنْشَأَكُمْ
مِنَ الْأَرْضِ وَإِذَا أَنْتُمْ أَرْضٌ فِي بَطْنٍ أُمّهتِكُمْ
فَلَا تَرَوْا النَّفْسَ كُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ النَّفْسُ ۝

33. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى

34. और तनिक दान किया फिर रुक गया।

وَأَعْطَى قَلِيلًا وَأَكْذَى

35. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है

أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهَوْاْ رَءَى ۝

1 निर्लज्जा से अभिप्राय: निर्लज्जा पर आधारित कुकर्म हैं। जैसे बाल-मैथुन, व्यभिचार, नारियों का अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन और पर्दे का त्याग, मिश्रित शिक्षा, मिश्रित सभायें, सौन्दर्य की प्रतियोगिता आदि। जिसे आधुनिक युग में सभ्यता का नाम दिया जाता है। और मुस्लिम समाज भी इस से प्रभावित हो रहा है। हदीस में है कि सात बिनाशकारी कर्मों से बचो: 1- अब्बाह का साझी बनाने से। 2- जादू करना। 3- अकारण जान मारना। 4- मदिरा पीना। 5- अनाथ का धन खाना। 6- युद्ध के दिन भागना। 7- तथा भोली भाली पवित्र स्त्री को कलंक लगाना। (सहीह बुखारी: 2766, मुस्लिम: 89)

2 अर्थात् तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

कि वह (सब कुछ) देख^[1] रहा है?

36. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है?

37. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।

38. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।

39. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।

40. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।

41. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।

42. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।

43. तथा वही है जिस ने (संसार में) हँसाया तथा रुलाया।

44. तथा उसी ने मारा और जियाया।

45. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न किये: नर और नारी।

46. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।

47. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार^[2] उत्पन्न करना है।

أَمْ لَوْ نَبِّأُ بِمَا فِي صُفْحِ مُوسَىٰ

وَأِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ

أَلَا سِرُّرٌ وَآيَازٌ وَذُرَّ آخِرَىٰ

وَأَنْ يَكُنَّ لِلنَّاسِ بِلَا مَا سَعَىٰ

وَأَنْ سَعْيُهُ سَوْفَ يُرَىٰ

فَتُجْزَاهُ الْخِزْيَاءُ الْأَوَّلَىٰ

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزُّوْجَيْنِ الذَّكَوَّةَ الْأُنثَىٰ

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ

وَأَنَّ عَلَيْهِ الْمُنَاشَاةَ الْآخِرَىٰ

1 इस आयत में जो परम्परागत धर्म को मोक्ष का साधन समझता है उस से कहा जा रहा है कि क्या वह जानता है कि प्रलय के दिन इतने ही से सफल हो जायेगा? जब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वही के आधार पर जो प्रस्तुत कर रहे हैं वही सत्य है। और अब्राहम की वही ही परोक्ष के ज्ञान का साधन है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन प्रतिफल प्रदान करने के लिये।

48. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।
وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ﴿٤٨﴾
49. और वही शेअरा^[1] का स्वामी है।
وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعَرَىٰ ﴿٤٩﴾
50. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम^[2] आद को।
وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ﴿٥٠﴾
51. तथा समूद को। किसी को शेष नहीं रखा।
وَسَمُودَ أَهْلًا أَبْقَىٰ ﴿٥١﴾
52. तथा नूह की जाति को इस से पहले, वस्तुतः वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।
وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْلَمَ ﴿٥٢﴾
53. तथा औधी की हुई बस्ती^[3] को उस ने गिरा दिया।
وَالْبُؤْسَةَ الْأَعْمَىٰ ﴿٥٣﴾
54. फिर उस पर छा दिया जो छा^[4] दिया।
فَنَحْنُهَا مَا عَشَىٰ ﴿٥٤﴾
55. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।
يَأْتِي الْآلَ رَبِّكَ تَكْمَلَىٰ ﴿٥٥﴾
56. यह^[5] सचेतकर्ता हैं प्रथम सचेतकर्ताओं में से।
هَذَا الَّذِي يُرْوَىٰ التَّنْذِيرَ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾
57. समीप आ लगी समीप आने वाली।
أَمِنْ فَتِ الْأَرْقَىٰ ﴿٥٧﴾
58. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।
لَيْسَ لَهُامِنْ دُونِ اللَّهِ مَا تُشْفَىٰ ﴿٥٨﴾

1 शेअरा एक तारे का नाम है। जिस की पूजा कुछ अरब के लोग किया करते थे। (इब्ने कसीर)। अर्थ यह है कि यह तारा पूज्य नहीं, वास्तविक पूज्य उस का स्वामी अल्लाह है।

2 यह हूद (अलैहिस्सलाम) की जाति थे।

3 अर्थात् सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

4 अर्थात् लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति की बस्तियों को।

5 अर्थात् पत्थरों की वर्षा कर के उन की बस्ती को ढाँक दिया।

59. तो क्या तुम इस^[1] कुर्आन पर
आश्चर्य करते हो?

60. तथा हँसते हो, और रोते नहीं।

61. तथा विमुख हो रहे हो।

62. अतः सज्दा करो अल्लाह के लिये तथा
उसी की बंदना^[2] करो।

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۖ

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۖ

وَأَنْتُمْ سَمِيدُونَ ۖ

فَسَجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۖ

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी एक रसूल है प्रथम रसूलों के समान।

2 हदीस में है कि जब सज्दे की प्रथम सूरह: «नज्म» उतरी तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो आप के पास थे सब ने सज्दा किया एक व्यक्ति के सिवा। उस ने कुछ धूल ली, और उस पर सज्दा किया। तो मैं ने इस के पश्चात् देखा कि वह काफिर रहते हुये मारा गया। और वह उमय्या बिन खलफ है। (सहीह बुखारी: 4863)

सूरह क़मर - 54

سُورَةُ الْقَمَرِ

सूरह क़मर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 55 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़मर (चाँद) के दो भाग हो जाने का वर्णन है। इसलिये इसे सूरह क़मर कहा जाता है।
- इस में काफ़ि़रों को झंझोड़ा गया है कि जब प्रलय का लक्षण उजागर हो गया है, और वह ऐतिहासिक बातें भी आ गई हैं जिन में शिक्षा है तो फिर वह कैसे अपने कुफ़्र पर अड़े हुये हैं? यह काफ़िर उसी समय सचेत होंगे जब प्रलय आ जायेगी।
- उन जातियों का कुछ परिणाम बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। और संसार ही में यातना की भागी बन गई। और मक्का के काफ़ि़रों को प्रलय की आपदा से सावधान किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. समीप आ गई^[1] प्रलय, तथा दो खण्ड हो गया चाँद।
2. और यदि वह देखते हैं कोई निशानी तो मुँह फेर लेते हैं। और कहते हैं: यह तो जादू है जो होता रहा है।

اقْرَبَتْ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وِجْهَهُمْ مُّتْمِرِينَ

1 आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मक्का वासियों ने माँग की, कि आप कोई चमत्कार दिखायें। अतः आप ने चाँद को दो भाग होते उन्हें दिखा दिया। (बुखारी: 4867)

आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसूद कहते हैं कि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के युग में चाँद दो खण्ड हो गया: एक खण्ड पर्वत के ऊपर और दूसरा उस के नीचे। और आप ने कहा: तुम सभी गवाह रहो। (सहीह बुखारी: 4864)

3. और उन्होंने झुठलाया और अनुसरण किया अपनी आकांक्षाओं का। और प्रत्येक कार्य का एक निश्चित समय है।
4. और निश्चय आ चुके हैं उन के पास कुछ ऐसे समाचार जिन में चेतवानी है।
5. यह (कुरआन) पूर्णतः तत्त्वदर्शिता (ज्ञान) है फिर भी नहीं काम आई उन के चेतावनियाँ।
6. तो आप विमुख हो जायें उन से, जिस दिन पुकारने वाला पुकारेगा एक अप्रिय चीज़ की^[1] और।
7. झुकी होंगी उन की आँख। वह निकल रहे होंगे समाधियों से जैसे कि वह टिड्डी दल हों बिखरे हुये।
8. दौड़ रहे होंगे पुकारने वाले की ओर। काफिर कहेंगे: यह तो बड़ा भीषण दिन है।
9. झुठलाया इन से पहले नूह की जाति ने। तो झुठलाया उन्होंने हमारे भक्त को और कहा कि (पागल) है। और (उसे) झड़का गया।
10. तो उस ने प्रार्थना की अपने पालनहार से कि मैं विवश हूँ, अतः मेरा बदला ले ले।
11. तो हम ने खोल दिये आकाश के द्वार धारा प्रवाह जल के साथ।
12. तथा फाड़ दिये धरती के स्रोत, तो मिल गया (आकाश और धरती

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّهُمْ مُسْتَقَرٌّ ۝

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْآبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۝

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ التُّدَارُ ۝

فَقُولْ عَنْهُمْ يَوْمَ يُدْعَى الدَّاعِ إِلَىٰ تَعْنَىٰ تُكْرِمُ ۝

خُشَعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ
جَرَادٌ مُنْتَشِرٌ ۝

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا
يَوْمٌ مَّجْرُومٌ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا
مَجْنُونٌ وَارْدُجِرَ ۝

فَدَعَا رَبُّكَ إِلَىٰ مَغْلُوبٍ فَأَنْتَصِرُ ۝

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۝

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब के लिये।

का) जल उस कार्य के अनुसार जो निश्चित किया गया।

13. और सवार कर दिया हम ने उस (नूह) को तख्तों तथा कीलों वाली (नाव) पर।

وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ الْأَوْبَارِ وَوُضِعَ

14. जो चल रही थी हमारी रक्षा में उस का बदला लेने के लिये जिस के साथ कुफ़ किया गया था।

نَحْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءَ الَّذِينَ كَانُوا

15. और हम ने छोड़ दिया इसे एक शिक्षा बना कर। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدْرِكٍ

16. फिर (देख लो!) कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَكَيْفَ كَانِ عَذَابِي وَنُذُرٍ

17. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْرِكٍ

18. झुठलाया आद ने तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانِ عَذَابِي وَنُذُرٍ

19. हम ने भेज दी उन पर कड़ी आँधी एक निरन्तर अशुभ दिन में।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ مِهْمًا صَوْرًا فِي يَوْمٍ نَخَسٍ
مُتَمَيِّزٍ

20. जो उखाड़ रही थी लोगों को जैसे वह खजूर के खोखले तने हों।

تَنَزُّؤٍ النَّاسِ كَالَّذِينَ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ

21. तो कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?

فَكَيْفَ كَانِ عَذَابِي وَنُذُرٍ

22. और हम ने सरल बना दिया है कुर्आन को शिक्षा के लिये। तो क्या है कोई शिक्षा ग्रहण करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُدْرِكٍ

23. झुठला दिया समूह^[1] ने चेतावनियों को।
24. और कहा: क्या अपने ही में से एक मनुष्य का हम अनुसरण करें? वास्तव में तब तो हम निश्चय बड़े कुपथ तथा पागलपन में हैं।
25. क्या उतारी गई है शिक्षा उसी पर हमारे बीच में से? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूठा अहंकारी है।
26. उन्हें कल ही ज्ञान हो जायेगा कि कौन बड़ा झूठा अहंकारी है?
27. वास्तव में हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उन की परीक्षा के लिये। अतः (हे सालेह!) तुम उन के (परिणाम की) प्रतीक्षा करो तथा धैर्य रखो।
28. और उन्हें सूचित कर दो कि जल विभाजित होगा उन के बीच, और प्रत्येक अपनी बारी के दिन^[2] उपस्थित होगा।
29. तो उन्होंने पुकारा अपने साथी को। तो उस ने आक्रमण किया और उसे बध कर दिया।
30. फिर कैसी रही मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियाँ?
31. हम ने भेज दी उन पर कर्कश ध्वनी,

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝

فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّمَّنَّا وَاحِدٌ أَلْتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَفِي ضَلَالٍ
وَسُعُرٍ ۝

أَلَيْسَ الَّذِي كُرِّهَ لَهُ مِنْ بَيْنِنَا لَوْلَا أَنَّا لَكَا بِلِهْزِمٍ ۝

سَيَعْلَمُونَ عَذَابِ الْكَذَّابِ الْإِثْمِ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا النَّاقُوتَ نَفْسَهُ لَهُمْ يَوْمَ تُنْفَخُ الْأَشْجَارُ
وَأَصْطَفِرُ ۝

وَنَبِّئُهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قَسَمٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شَرْبٍ
مُخْتَصِرٌ ۝

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ۝

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيِّحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا

1 यह सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति थी। उन्होंने उन से चमत्कार की माँग की तो अब्बाह ने पर्वत से एक ऊँटनी निकाल दी। फिर भी वह ईमान नहीं लाये। क्योंकि उन के विचार से अब्बाह का रसूल कोई मनुष्य नहीं फ़रिश्ता होना चाहिये था। जैसा की मक्का के मुश्रिकों का विचार था।

2 अर्थात् एक दिन जल स्रोत का पानी ऊँटनी पियेगी और एक दिन तुम सब।

كَوْثِيرٍ الْمُحْطَرِّ ۝

तो बे हो गये बाड़ा बनाने वाले की
रौंदी हुई बाड़ के समान (चूर-चूर)।

وَلَقَدْ يَمْرَأُ الْعُرَّانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۝

32. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन
को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई
शिक्षा ग्रहण करने वाला?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذْرِ ۝

33. झूठला दिया लूत की जाति ने
चेतावनियों को।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ
نَجَّيْنَاهُمْ بِبَحْرٍ ۝

34. तो हम ने भेज दिये उन पर, पत्थर
लूत के परिजनों के सिवा, हम ने
उन्हें बचा लिया रात्री के पिछले पहर।

يَعْبَهُ مِنْ عِنْدِنَا كَذَلِكَ يَجْزِي مَنْ شَكَرَ ۝

35. अपने विषेश अनुग्रह से। इसी प्रकार हम
बदला देते हैं उस को जो कृतज्ञ हो।

وَلَقَدْ آتَيْنَاهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذْرِ ۝

36. और निःसंदेह (लूत) ने सावधान किया
उन को हमारी पकड़ से। परन्तु उन्होंने
संदेह किया चेतावनियों के विषय में।

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُكُّوا
عَنَّا إِنِ وَنُذَرٍ ۝

37. और बहलाना चाहा उस (लूत) को
उस के अतिथियों^[1] से तो हम ने
अंधी कर दी उन की आँखें। कि चखो
मेरी यातना तथा मेरी चेतावनियों
(का परिणाम)।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بِبُكْرَةٍ عَنَّا أَرْسِلُوا فُتُورًا ۝

38. और उन पर आ पहुँची प्रातः भोर ही
में स्थायी यातना।

فَذُكُّوا عَنَّا إِنِ وَنُذَرٍ ۝

39. तो चखो मेरी यातना तथा मेरी
चेतावनियाँ।

وَلَقَدْ يَمْرَأُ الْعُرَّانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۝

40. और हम ने सरल कर दिया है कुर्आन
को शिक्षा के लिये तो क्या है कोई
शिक्षा ग्रहण करने वाला?

1 अर्थात् उन्होंने अपने दुराचार के लिये फरिश्तों को जो सुन्दर युवकों के रूप में
आये थे, उन को लूत (अलैहिस्सलाम) से अपने सुपुर्द करने की माँग की।

41. तथा फिरऔनियों के पास भी चेतावनियाँ आईं।
42. उन्होंने झुठलाया हमारी प्रत्येक निशानियों को तो हम ने पकड़ लिया उन को अति प्रभावी आधिपति के पकड़ने के समान।
43. (हे मक्का वासियों!) क्या तुम्हारे काफिर उत्तम है उन से अथवा तुम्हारी मुक्ति लिखी हुई है आकाशीय पुस्तकों में?
44. अथवा वह कहते हैं कि हम विजेता समूह हैं।
45. शीघ्र ही पराजित कर दिया जायेगा यह समूह, और वह पीठ दिखा^[1] देंगे।
46. बल्कि प्रलय उन के वचन का समय है तथा प्रलय अधिक कड़ी और तीखी है।
47. वस्तुतः यह पापी कुपथ तथा अग्नि में हैं।
48. जिस दिन वे घसीटे जायेंगे यातना में अपने मुखों के बल (उन से कहा जायेगा कि) चखो नरक की यातना का स्वाद।
49. निश्चय हम ने प्रत्येक वस्तु को उत्पन्न किया है एक अनुमान से।
50. और हमारा आदेश बस एक ही बार

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّذِيرُ

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ

أَلَمْ نَكُ خَيْرًا مِنْ آلِ لُوطَ أَمْ لَهُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ

أَمْ يَقُولُونَ غَيْرُ جَمِيعٍ نُنْتَصِرُ

سَيَهْوِمُ الْجَمْعُ وَيُولُونَ الدُّبُرُ

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمُ وَالسَّاعَةُ أَذَى وَأَمْرٌ

إِنَّ النَّجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ

يَوْمَ يُنْفَخُ الْوَسْطَانُ فِي النَّارِ عَلَى وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ

1 इस में मक्का के काफिरों की पराजय की भविष्यवाणी है जो बद्र के युद्ध में पूरी हुई। हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बद्र के दिन एक खैमे में अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे। फिर यही आयत पढ़ते हुये निकले। (सहीह बुखारी: 4875)

होता है आँख झपकने के समान।^[1]

51. और हम ध्वस्त कर चुके हैं तुम्हारे जैसे बहुत से समुदायों को।

52. जो कुछ उन्होंने किया है कर्मपत्र में है।^[2]

53. और प्रत्येक तुच्छ तथा बड़ी बात अंकित है।

54. वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरों में होंगे।

55. सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान् स्वामी के पास।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَ عَمَّرْتُمْ فِيهَا مِنْ مُنْكَرٍ ۖ

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ۖ

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُسْتَطَرٌ ۖ

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۖ

فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ ۖ عِنْدَ مَلِكٍ مُّقْتَدِرٍ ۖ

1 अर्थात् प्रलय होने में देर नहीं होगी। अब्राह का आदेश होते ही तत्क्षण प्रलय आ जायेगी।

2 जिसे उन फरिश्तों ने जो दायें तथा बायें रहते हैं लिख रखा है।

सूरह रहमान - 55

سُورَةُ الرَّحْمَنِ

सूरह रहमान के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है इस में 78 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ अल्लाह के शुभ नाम ((रहमान)) से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह रहमान है।
- इस की आरंभिक आयतों में रहमान (अत्यंत कृपाशील) की सब से बड़ी दया का वर्णन हुआ है कि उस ने मनुष्य को कुर्आन का ज्ञान प्रदान किया और उसे बात करने की शक्ति दी जो उस का विशेष गुण है।
- फिर आयत 12 तक धरती तथा आकाश की विचित्र चीजों का वर्णन कर के यह प्रश्न किया गया है कि तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों तथा गुणों को नकारोगे?
- इस की आयत 13 से 30 तक जिन्नों तथा मनुष्यों की उत्पत्ति, दो पूर्व तथा पश्चिमों की दूरी, दो सागरों का संगम तथा इस प्रकार की अन्य विचित्र निशानियों और अल्लाह की दया की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- आयत 31 से 45 तक मनुष्यों तथा जिन्नों को उन के पापों पर कड़ी चेतावनी दी गई है कि वह दिन आ ही रहा है जब तुम्हारे किये का दुखदायी दण्ड तुम्हें मिलेगा।
- अन्त में उन का शुभ परिणाम बताया गया है जो अल्लाह से डरते रहे। और फिर स्वर्ग के सुखों की एक झलक दिखायी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अत्यंत कृपाशील ने।
2. शिक्षा दी कुर्आन की।
3. उसी ने उत्पन्न किया मनुष्य को।
4. सिखाया उसे साफ़ साफ़ बोलना।

الرَّحْمَنُ

عَلَّمَ الْقُرْآنَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ

5. सूर्य तथा चन्द्रमा एक (नियमित) हिसाब से हैं।
6. तथा तारे और वृक्ष दोनों (उसे) सज्दा करते हैं।
7. और आकाश को ऊँचा किया और रख दी तराजू^[1]।
8. ताकि तुम उल्लंघन न करो तराजू (न्याय) में।
9. तथा सीधी रखो तराजू न्याय के साथ और कम न तौलो।
10. धरती को उस ने (रहने योग्य) बनाया पूरी उत्पत्ति के लिये।
11. जिस में मेवे तथा गुच्छे वाले खजूर हैं।
12. और भूसे वाले अन्न तथा सुगंधित (पुष्प) फूल हैं।
13. तो (हे मनुष्य तथा जिन!) तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
14. उस ने उत्पन्न किया मनुष्य को खनखनाते ठीकरी जैसे सूखे गारे से।
15. तथा उत्पन्न किया जिन्हों को अग्नि की ज्वाला से।
16. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

- الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ يُحْسَبَانِ ﴿٥﴾
وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ﴿٦﴾
وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ﴿٧﴾
أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ﴿٨﴾
وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ﴿٩﴾
وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ﴿١٠﴾
فِيهَا فَالَكُمُ الْغُلَّةُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾
وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٣﴾
خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾
وَخَلَقَ الْبَاقِيَ مِنْ تُرَابٍ مِنْ أَنْثَرٍ ﴿١٥﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿١٦﴾

1 (देखिये: सूरह हदीद, आयत: 25) अर्थ यह है कि धरती में न्याय का नियम बनाया और उस के पालन का आदेश दिया।

17. वह दोनों सूर्योदय^[1] के स्थानों तथा दोनों सूर्यास्त के स्थानों का स्वामी है।
18. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन पुरस्कारों को झुठलाओगे?
19. उस ने दो सागर बहा दिये जिन का संगम होता है।
20. उन दोनों के बीच एक आड़ है। वह एक-दूसरे से मिल नहीं सकते।
21. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
22. निकलता है उन दोनों से मोती तथा मूँगा।
23. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
24. तथा उसी के अधिकार में है जहाज़ खड़े किये हुये सागर में पर्वतों जैसे।
25. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
26. प्रत्येक जो धरती पर है नाशवान है।
27. तथा शेष रह जायेगा आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का मुख (अस्तित्व)।

رَبُّ الشَّرْقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

فَيَأْتِي الْآءَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

كُلٌّ مِّنْ عِندِهَا فَإِنَّ ۝

وَيَسْأَلُ وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝

1 गर्मी तथा जाड़े में सूर्योदय तथा सूर्यास्त के स्थानों का। इस से अभिप्राय पूर्व तथा पश्चिम की दिशा नहीं है।

28. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
29. उसी से माँगते हैं जो आकाशों तथा धरती में हैं। प्रत्येक दिन वह एक नये कार्य में है।^[1]
30. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
31. और शीघ्र ही हम पूर्णतः आकर्षित हो जायेंगे तुम्हारी ओर, हे (धरती के) दोनों बोलूँ^[2] (जिन्नो और मनुष्यों!)^[3]
32. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?
33. हे जिन्न तथा मनुष्य के समूह! यदि निकल सकते हो आकाशों तथा धरती के किनारों से तो निकल भागो। और तुम निकल नहीं सकोगे बिना बड़ी शक्ति^[4] के।
34. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?
35. तुम दोनों पर अग्नि की ज्वाला तथा धूबाँ छोड़ा जायेगा। तो तुम अपनी सहायता नहीं कर सकोगे।

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا لَمَّا تَذُبْنِ ۝

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا لَمَّا تَذُبْنِ ۝

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيَّامَ الثَّقَلِ ۝

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا لَمَّا تَذُبْنِ ۝

يَعْتَصِرُ الْجَنِّ وَالْإِنسَ إِنْ اسْتَطَعُوا أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَافْذُوا أَلَا تَسْتَعِدُّونَ الْإِسْلَافَ ۝

فَيَأْتِي الْآلَهُ رَبُّكُمَا لَمَّا تَذُبْنِ ۝

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝

1 अर्थात् वह अपनी उत्पत्ति की आवश्यकतायें पूरी करता, प्रार्थनायें सुनता, सहायता करता, रोगी को निरोग करता, अपनी दया प्रदान करता, तथा अपमान-सम्मान और विजय-प्राजय देता और अगणित कार्य करता है।

2 इस वाक्य का अर्थ मुहावरे में धमकी देना और सावधान करना है।

3 इस में प्रलय के दिन की ओर संकेत है जब सब मनुष्यों और जिन्नो के कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

4 अर्थ यह है कि अल्लाह की पकड़ से बच निकलना तुम्हारे बस में नहीं है।

36. फिर तुम दोनों अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَا أَيُّ الْآلِهَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٦﴾

37. जब आकाश (प्रलय के दिन) फट जायेगा तो लाल हो जायेगा लाल चमड़े के समान।

وَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

38. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَا أَيُّ الْآلِهَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٣٨﴾

39. तो उस दिन नहीं प्रश्न किया जायेगा अपने पाप का किसी मनुष्य से न जिन्न से।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾

40. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَا أَيُّ الْآلِهَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٠﴾

41. पहचान लिये जायेंगे अपराधी अपने मुखों से, तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

يَعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

42. तो तुम अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَا أَيُّ الْآلِهَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٢﴾

43. यही वह नरक है जिसे झूठ कह रहे थे अपराधी।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾

44. वह फिरते रहेंगे उस के बीच तथा खौलते पानी के बीच।

يَطُوفُونَ فِيهَا وَبَيْنَ حَيْنٍ ﴿٤٤﴾

45. तो तुम दोनों अपने पालनहार के किन - किन उपकारों को झुठलाओगे?

يَا أَيُّ الْآلِهَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٥﴾

46. और उस के लिये जो डरा अपने पालनहार के समक्ष खड़े होने से दो बाग़ हैं।

وَلَمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ﴿٤٦﴾

47. तो तुम अपने पालनहार के

يَا أَيُّ الْآلِهَ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾

किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

48. दो बाग़ हरी भरी शाखाओं वाले।

49. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

50. उन दोनों में दो जल स्रोत बहते होंगे।

51. तो तुम दोनों अपने पालनहार
के किन - किन पुरस्कारों को
झुठलाओगे?

52. उन में प्रत्येक फल के दो प्रकार होंगे।

53. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

54. वह ऐसे बिस्तरों पर तकिये लगाये
हुये होंगे जिन के अस्तर दबीज़
रेशम के होंगे। और दोनों बाग़ों (की
शाखायें) फलों से झुकी हुई होंगी।

55. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

56. उन में लजीली आँखों वाली स्त्रियाँ
होंगी जिन को हाथ नहीं लगाया
होगा किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और
न किसी जिन ने।

57. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

58. जैसे वह हीरे और मूंगे हों।

59. तो तुम अपने पालनहार के
किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

60. उपकार का बदला उपकार ही है।

ذَوَاتِ أَفْنَانٍ ۝

فَيَأْتِي الْآدَمُكُمَا التَّلْذِيزِ ۝

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝

فَيَأْتِي الْآدَمُكُمَا التَّلْذِيزِ ۝

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۝

فَيَأْتِي الْآدَمُكُمَا التَّلْذِيزِ ۝

مُتَّكِئِينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ وَجَنَّاتٍ
الْجَنَّتَيْنِ دَانِ ۝

فَيَأْتِي الْآدَمُكُمَا التَّلْذِيزِ ۝

فِيهِمْ ثَمَرَاتُ النَّظِيرِ - كَمْ يَطْمِئِنُّنَ إِذْ لَا يَلْمُهُمْ وَلَا
يَجَانِبُ ۝

فَيَأْتِي الْآدَمُكُمَا التَّلْذِيزِ ۝

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۝

فَيَأْتِي الْآدَمُكُمَا التَّلْذِيزِ ۝

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝

61. तो तुम अपने पालनहार
के किन-किन उपकारों को
झुठलाओगे?
62. तथा उन दोनों के सिवा^[1] दो बाग होंगे।
63. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?
64. दोनों हरे-भरे होंगे।
65. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?
66. उन दोनों में दो जल स्रोत होंगे
उबलते हुये।
67. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?
68. उन में फल तथा खजूर और अनार
होंगे।
69. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?
70. उन में सुचरिता सुन्दरियाँ होंगी।
71. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?
72. गोरियाँ सुरक्षित होंगी खेमों में।
73. तो तुम अपने पालनहार के किन -
किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا كَذَبْتُمْ ۝

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ۝

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا تَكْذَبْتُمْ ۝

مُدْمَعَتَيْنِ ۝

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا كَذَبْتُمْ ۝

فِيهِمَا عَيْنَيْنِ تَظَّاحَتَيْنِ ۝

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا كَذَبْتُمْ ۝

فِيهِمَا نَارُكُمُةٌ وَعُشُّ لَدُورِمَانٍ ۝

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا كَذَبْتُمْ ۝

فِيهِنَّ حَيْرَاتٌ حِسَانٍ ۝

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا كَذَبْتُمْ ۝

حُورٌ مُّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝

فَيَأْتِي آلَهُ رَبِّكُمْ لَمَّا كَذَبْتُمْ ۝

1 हदीस में है कि दो स्वर्ग चाँदी की हैं। जिन के बर्तन तथा सब कुछ चाँदी के हैं। और दो स्वर्ग सोने की, जिन के बर्तन तथा सब कुछ सोने का है। और स्वर्ग वासियों तथा अल्लाह के दर्शन के बीच अल्लाह के मुख पर महिमा के पर्दे के सिवा कुछ नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 4878)

74. नहीं हाथ लगाया होगा^[1] उन्हें किसी मनुष्य ने इस से पूर्व और न किसी जिन ने।

لَمْ يَطْمِئِنُّوْا اِلَّا اِنْ شَاءَ رَبُّهُمْ وَاَلَّا يَآئِيْ

75. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَاَيُّ الْاَلْوَانِ كَمَا تَكْذِبُوْنَ

76. वे तकिये लगाये हुये होंगे हरे गलीचों तथा सुन्दर बिस्तारों पर।

مُكَيِّدِيْنَ عَلَى رَفْرَفٍ خُضِرٍ وَجَبْرِئٍ حَسْبَانِ

77. तो तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे?

فَاَيُّ الْاَلْوَانِ كَمَا تَكْذِبُوْنَ

78. शुभ है आप के प्रतापी सम्मानित पालनहार का नाम।

تَبَارَكَ اَسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

1 हदीस में है कि यदि स्वर्ग की कोई सुन्दरी संसार वासियों की ओर झाँक दे, तो दोनों के बीच उजाला हो जाये। और सुगंध से भर जायें। (सहीह बुखारी शरीफ: 2796)

सूरह वाकिआ - 56



सूरह वाकिआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 96 आयत है।

- वाकिआ प्रलय का एक नाम है। जो इस सूरह की प्रथम आयत में आया है। जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।
- इस में प्रलय का भ्यावः चित्रण है जिस में लोगों को तीन भागों में कर दिया जायेगा। फिर प्रत्येक के परिणाम को बताया गया है। और उन तथ्यों का वर्णन किया गया है जिन से प्रतिफल के प्रति विश्वास होता है।
- सूरह के अन्त में कुर्आन से विमुख होने पर झंझोड़ा गया है कि कुर्आन जो प्रलय तथा प्रतिफल की बातें बता रहा है वह सर्वथा अल्लाह का संदेश है। उस में शैतान का कोई हस्तक्षेप नहीं है।
- अन्त में मौत के समय की बिबशता का वर्णन करते हुये अन्तिम परिणाम से सावधान किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब होने वाली हो जायेगी।
2. उस का होना कोई झूठ नहीं है।
3. नीचा-ऊँचा करने^[1] वाली।
4. जब धरती तेज़ी से डोलने लगेगी।
5. और चूर-चूर कर दिये जायेंगे पर्वत।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

لَيْسَ لَوْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝

إِذَا رَجَّبتِ الْأَرْضُ رَجًّا ۝

وَكُنَّتِ الْجِبَالُ كَسًّا ۝

1 इस से अभिप्राय प्रलय है। जो सत्य के विरोधियों को नीचा कर के नरक तक पहुँचायेगी। तथा आज्ञाकारियों को स्वर्ग के ऊँचे स्थान तक पहुँचायेगी। आरंभिक आयतों में प्रलय के होने की चर्चा, फिर उस दिन लोगों के तीन भागों में विभाजित होने का वर्णन किया गया है।

6. फिर हो जायेंगे बिखरी हुई धूल।
7. तथा तुम हो जाओगे तीन समूह।
8. तो दायें वाले, तो क्या है दायें वाले!^[1]
9. और बायें वाले, तो क्या है बायें वाले!
10. और आग्रगामी तो आग्रगामी ही हैं।
11. वही समीप किये^[2] हुये हैं।
12. वह सुखों के स्वर्गों में होंगे।
13. बहुत से अगले लोगों में से।
14. तथा कुछ पिछले लोगों में से होंगे।
15. स्वर्ण से बुने हुये तख्तों पर।
16. तकिये लगाये उन पर एक-दूसरे के सम्मुख (आसीन) होंगे।
17. फिरते होंगे उन की सेवा के लिये बालक जो सदा (बालक) रहेंगे।
18. प्याले तथा सुराहियाँ लेकर तथा मदिरा के छलकते प्याले।
19. न तो सिर चकरायेगा उन से न वह निर्बाध होंगी।
20. तथा जो फल वह चाहेंगे।
21. तथा पक्षी का जो मांस वे चाहेंगे।
22. और गोरियाँ बड़े नैनों वाली।
23. छुपा कर रखी हुई मोतियों के समान।

- كَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ۝
وَأَنْتُمْ أَزْوَاجٌ ثَلَاثَةٌ ۝
فَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝
وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۖ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝
وَالشَّاقِقُونَ الشَّاقِقُونَ ۝
أُولَٰئِكَ الْمَقَرُّونَ ۝
فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۝
ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَقْلَامِ ۝
وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۝
عَلَىٰ سُرُرٍ مُّوَضَّعَةٍ ۝
مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۝
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝
بِأَكْوَابٍ ۖ وَالْكَافُّونَ ۖ ذَوَاتُ الْأَيْدِي مِنَ مَعِينٍ ۝
لَا يُصَدَّ عَنْهُنَّ ۖ عَنْهَا وَلَا يَذَرُونَّ ۝
وَقَالَهُمْ مَنْ يَتَعَفَّرُونَ ۝
وَلَحْمٌ طَيْرٍ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝
وَحُورٌ عِينٌ ۝
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝

1 दायें वालों से अभिप्राय वह हैं जिन का कर्मपत्र दायें हाथ में दिया जायेगा। तथा बायें वाले वह दुराचारी होंगे जिन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा।

2 अर्थात् अल्लाह के प्रियवर और उस के समीप होंगे।

24. उस के बदले जो वह (संसार में) करते रहे। جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾
25. नहीं सुनैंगे उन में व्यर्थ बात और न पाप की बात। لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ﴿٢٥﴾
26. केवल सलाम ही सलाम की ध्वनी होगी। إِلَّا قَوْلًا سَلَامًا ﴿٢٦﴾
27. और दायें वाले, (क्या ही भाग्य शाली) है दायें वाले! وَالْأَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٧﴾ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ﴿٢٨﴾
28. बिन काँटे की बैरी में होंगे। فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ﴿٢٩﴾
29. तथा तह पर तह केलों में। وَطَلْحٍ مَّنْضُودٍ ﴿٣٠﴾
30. फैली हुई छाया^[1] में। وَظِلِّ مَمْدُودٍ ﴿٣١﴾
31. और प्रवाहित जल में। وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ﴿٣٢﴾
32. तथा बहुत से फलों में। وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ﴿٣٣﴾
33. जो न समाप्त होंगे, न रोके जायेंगे। لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ﴿٣٤﴾
34. और ऊँचे बिस्तर पर। وَفُورٍ مَّرْقُوعٍ ﴿٣٥﴾
35. हम ने बनाया है (उन की) पत्नियों को एक विशेष रूप से। إِنَّا أَنشَأْنَهُمْ إِنْسَاءً ﴿٣٦﴾
36. हम ने बनाया है उन्हें कुमारियाँ। فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ﴿٣٧﴾
37. प्रेमिकायें समायु। عُرُبًا أَتْرَابًا ﴿٣٨﴾
38. दाहिने वालों के लिये। لِأَصْحَابِ الْبَیْمَنِ ﴿٣٩﴾
39. बहुत से अगलों में से होंगे। ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿٤٠﴾
40. तथा बहुत से पिछलों में से। وَثَلَاثَةٌ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿٤١﴾

1 हदीस में है कि स्वर्ग में एक वृक्ष है जिस की छाया में सवार सौ वर्ष चलेगा फिर भी वह समाप्त नहीं होगी। (सहीह बुखारी: 4881)

41. और बायें वाले, क्या हैं बायें वाले!

وَأَصْحَابُ الْيَمَانِ ۖ ذَٰلِكَ أَصْحَابُ الْيَمَانِ ۝

42. वह गर्म वायु तथा खौलते जल में (होंगे)।

فِي سَمُومٍ وَجَمِيمٍ ۝

43. तथा काले धूबें की छाया में।

وَطِلَّ مِنَ الْخُمُومِ ۝

44. जो न शीतल होगा और न सुखदा।

لَا بَارِدٌ وَلَا كَرِيمٌ ۝

45. वास्तव में वह इस से पहले (संसार में) सम्पन्न (सुखी) थे।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝

46. तथा दुराग्रह करते थे महा पापों पर।

وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحَنثِ الْعَظِيمِ ۝

47. तथा कहा करते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे तथा हो जायेंगे धूल और अस्थियाँ तो क्या हम अवश्य पुनः जीवित होंगे?

وَكَانُوا يَقُولُونَ ۖ هَٰذَا إِلَٰهَانَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝

48. और क्या हमारे पूर्वज (भी)?

أَوَإِنَّا الْأَوَّلُونَ ۝

49. आप कह दें कि निःसंदेह सब अगले तथा पिछले।

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝

50. अवश्य एकत्रित किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय।

لَمَجْمُوعُونَ ۖ إِلَىٰ يَوْمَاتٍ يُؤَمَّرُونَ ۝

51. फिर तुम, हे कुपथी! झुठलाने वाली!!

ثُمَّ إِنَّا جَعَلْنَاهَا صُفًّا لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝

52. अवश्य खाने वाले हो जकूम (थोहड़) के वृक्ष से।^[1]

لَّا يَكُونُ مِنْ شَجَرٍ مِنْ زُفُورٍ ۝

53. तथा भरने वाले हो उस से (अपने) उदर।

فَبَالِغُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝

54. तथा पीने वाले हो उस पर से खौलता जल।

فَنَشْرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝

1 (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 62)

55. फिर पीने वाले हो प्यासे^[1] ऊँट के समान।

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهِيمِ ۝

56. यही उन का अतिथि-सत्कार है प्रतिकार (प्रलय) के दिन।

هَذَا نَزْلُهمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝

57. हम ने ही उत्पन्न किया है तुम को फिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?

مَنْ خَلَقَكُمْ فَلَوْلَا تَصَدَّقُونَ ۝

58. क्या तुम ने यह विचार किया की जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो।

أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

59. क्या तुम उसे शिशु बनाते हो या हम बनाने वाले हैं।

وَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ عَنِ الْفَلَاقُونَ ۝

60. हम ने निर्धारित किया है तुम्हारे बीच मरण को तथा हम बिबश होने वाले नहीं हैं।

مَنْ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا عَنِ بَسْطِ قُوَّتِنَا ۝

61. कि बदल दें तुम्हारे रूप, और तुम्हें बना दें उस रूप में जिसे तुम नहीं जानते।

عَلَى أَنْ يُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَتُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

62. तथा तुम ने तो जान लिया है प्रथम उत्पत्ति को फिर तुम शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करते?

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۝

63. फिर क्या तुम ने विचार किया कि उस में जो तुम बोते हो?

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْمِلُونَ ۝

64. क्या तुम उसे उगाते हो या हम उसे उगाने वाले हैं?

وَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ عَنِ الزُّرْعُونَ ۝

65. यदि हम चाहें तो उसे भुस बना दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ।

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۝

1 आयत में प्यासे ऊँटों के लिये ((हीम)) शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह ऊँट में एक विशेष रोग होता है जिस से उस की प्यास नहीं जाती।

66. वस्तुतः हम दण्डित कर दिये गये।
 67. बल्कि हम (जीविका से) वंचित कर दिये गये।
 68. फिर तुम ने विचार किया उस पानी में जो तुम पीते हो।
 69. क्या तुम ने उसे बरसाया है उसे बादल से अथवा हम उसे बरसाने वाले हैं।
 70. यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर तुम आभारी (कृतज्ञ) क्यों नहीं होते?
 71. क्या तुम ने उस अग्नि को देखा जिसे तुम सुलगाते हो।
 72. क्या तुम ने उत्पन्न किया है उस के वृक्ष को या हम उत्पन्न करने वाले हैं।
 73. हम ने ही बनाया उस को शिक्षाप्रद तथा यात्रियों के लाभदायक।
 74. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का वर्णन करें अपने महा पालनहार के नाम की।
 75. मैं शपथ लेता हूँ सितारों के स्थानों की!
 76. और यह निश्चय एक बड़ी शपथ है यदि तुम समझो।
 77. वास्तव में यह आदरणीय^[1] कुर्आन है।
 78. सुरक्षित^[2] पुस्तक में है।

- إِنَّا لَمَعْرُومُونَ ﴿٦٦﴾
 بَلْ عَنَّا مَعْرُومُونَ ﴿٦٧﴾
 أَقْرَبَ يَتَرُمُ الْمَاءِ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾
 ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ عَنَّا النَّزْلُونَ ﴿٦٩﴾
 لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أَجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾
 أَقْرَبَ يَتَرُمُ النَّارِ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾
 ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَهَا أَمْ عَنَّا الشَّيْطُونَ ﴿٧٢﴾
 عَنَّا جَعَلْنَاهَا ذِكْرًا وَمَتَاعًا لِّلْمُعْتَمِرِينَ ﴿٧٣﴾
 فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾
 فَلَا أُقْسِمُ بِوَقْعِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾
 وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَعْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾
 إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾
 فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾

1 तारों की शपथ का अर्थ यह है कि जिस प्रकार आकाश के तारों की एक दृढ़ व्यवस्था है उसी प्रकार यह कुर्आन भी अति ऊँचा तथा सुदृढ़ है।

2 इस से अभिप्रायः ((लौहे महफूज)) है।

79. इसे पवित्र लोग ही छूते हैं।^[1]
80. अवतरित किया गया है सर्वलोक के पालनहार की ओर से।
81. फिर क्या तुम इस वाणी (कुर्आन) की अपेक्षा करते हो?
82. तथा बनाते हो अपना भाग कि इसे तुम झुठलाते हो?
83. फिर क्यों नहीं जब प्राण गले को पहुँचते हैं।
84. और तुम उस समय देखते रहते हो।
85. तथा हम अधिक समीप होते हैं उस के तुम से, परन्तु तुम नहीं देख सकते।
86. तो यदि तुम किसी के आधीन नहीं हो।
87. तो उस (प्राण) को फेर क्यों नहीं लाते, यदि तुम सच्चे हो?
88. फिर यदि वह (प्राणी) समीपवर्तियों में है।
89. तो उस के लिये सुख तथा उत्तम जीविका तथा सुख भरी स्वर्ग है।
90. और यदि वह दायें वालों में से है।
91. तो सलाम है तेरे लिये दायें वालों में होने के कारण।^[2]
92. और यदि वह है झुठलाने वाले कुपथों में से।

- لَا يَسْمَعُ إِلَّا السَّامِعُونَ ﴿٧٩﴾
- نُنَزِّلُ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾
- أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ﴿٨١﴾
- وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ مُكْذِبُونَ ﴿٨٢﴾
- فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ﴿٨٣﴾
- وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ﴿٨٤﴾
- وَمَنْ أَأَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ﴿٨٥﴾
- فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٦﴾
- تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٧﴾
- فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٨﴾
- فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ﴿٨٩﴾
- وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٠﴾
- فَسَلَامٌ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾
- وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٢﴾

1 पवित्र लोगों से अभिप्राय: फ़रिश्ते हैं। (देखिये: सूरह अबस, आयत: 15, 16)

2 अर्थात् उस का स्वागत सलाम से होगा।

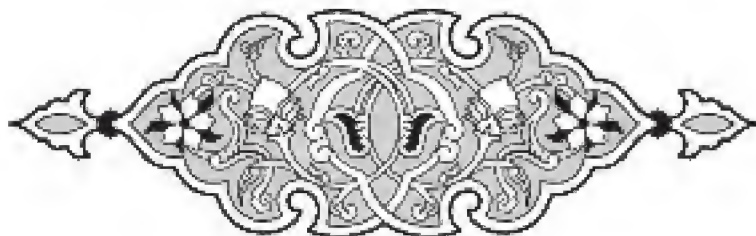
93. तो अतिथि सत्कार है खौलते पानी से।
 94. तथा नरक में प्रवेश।
 95. वास्तव में यही निश्चय सत्य है।
 96. अतः (हे नबी!) आप पवित्रता का
 वर्णन करें अपने महा पालनहार के
 नाम की।

فَأَنزَلْنَا مِنْ حَيْنِهِ ۝

وَأَنصَلِيَهُ جَحِيمٍ ۝

إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝



सूरह हदीद - 57

سُورَةُ الْحَدِيدِ

सूरह हदीद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयत हैं।

- इस सूरह की आयत 25 में हदीद शब्द आया है। जिस का अर्थ: ((लोहा)) है इस लिये इस का नाम सूरह हदीद पड़ा है।
- इस में अब्राह की पवित्रता तथा उस के गुणों का वर्णन किया गया है। और शुद्ध मन से ईमान लाने तथा उस की माँगों को पूरा करने का निर्देश दिया गया है।
- इस में ईमान वालों को शुभसूचना दी गई है कि प्रलय के दिन के लिये ज्योति होगी। जिस से मुनाफ़िक बंचित रहेंगे और उन की यातना की दशा को दिखाया गया है।
- आयत 16 से 24 तक में बताया गया है कि ईमान क्या चाहता है? और संसार का अपेक्षा परलोक को लक्ष्य बनाने की प्रेरणा दी गई है।
- आयत 25 से 27 तक न्याय की स्थापना के लिये बल प्रयोग को आवश्यक करार देते हुये जिहाद की प्रेरणा दी गई है। और सहबानिय्यत (सन्यास) का खण्डन किया गया है।
- अन्तिम आयतों में आज्ञाकारी ईमान वालों को प्रकाश तथा बड़ी दया प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अब्राह की पवित्रता का गान करता है जो भी आकाशों तथा धरती में है और वह प्रबल गुणी है।
2. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य। वह जीवन देता है तथा मारता है और वह जो चाहे कर सकता है।

سُبْحَانَ اللَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَلِيمُ ۝

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ
وَمَوْعِدُهُ لِكُلِّ شَيْءٍ نَذِيرٌ ۝

3. वही प्रथम तथा वही अन्तिम और प्रत्यक्ष तथा गुप्त है। और वह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।
4. उसी ने उत्पन्न किया है आकाशों तथा धरती को छः दिनों में फिर स्थित हो गया अर्श (सिंहासन) पर। वह जानता है जो प्रवेश करता है धरती में तथा जो निकलता है उस से। और जो उतरता है आकाश से तथा चढ़ता है उस में। और वह तुम्हारे साथ¹ है जहाँ भी तुम रहो, और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।
5. उसी का है आकाशों तथा धरती का राज्य और उसी की ओर फेरे जाते हैं सब मामले (निर्णय के लिये)।
6. वह प्रवेश करता है रात्रि को दिन में और प्रवेश करता है दिन को रात्रि में। तथा वह सीनों के भेदों से पूर्णतः अवगत है।
7. तुम सभी ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और व्यय करो उस में से जिस में उस ने अधिकार दिया है तुम को। तो जो लोग ईमान लायेंगे तुम में से तथा दान करेंगे तो उन्हीं के लिये बड़ा प्रतिफल है।
8. और तुम्हें क्या हो गया है कि ईमान

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ
وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَكُونُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

أَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلِفِينَ فِيهِ تَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا اللَّهُمَّ أَجْرُ كَثِيرٍ ۝

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُم لِتُؤْمِنُوا

- 1 अर्थात् अपने सामर्थ्य तथा ज्ञान द्वारा। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह सदा से है। और सदा रहेगा। प्रत्येक चीज़ का अस्तित्व उस के अस्तित्व के पश्चात् है। वही नित्य है, विश्व की प्रत्येक वस्तु उस के होने को बता रही है फिर भी वह ऐसा गुप्त है कि दिखाई नहीं देता।

नहीं लाते अल्लाह पर जब कि रसूल^[1] तुम्हें पुकार रहा है ताकि तुम ईमान लाओ अपने पालनहार पर, जब कि अल्लाह ले चुका है तुम से वचन,^[2] यदि तुम ईमान वाले हो।

9. वही है जो उतार रहा है अपने भक्त पर खुली आयतें ताकि वह तुम्हें निकाले अंधेरो से प्रकाश की ओर। तथा वास्तव में अल्लाह तुम्हारे लिये अवश्य करुणामय दयावान् है।

10. और क्या कारण है कि तुम व्यय नहीं करते अल्लाह की राह में, जब अल्लाह ही के लिये है आकाशों तथा धरती का उत्तराधिकार। नहीं बराबर हो सकते तुम में से वे जिन्होंने दान किया (मक्का) की विजय से पहले तथा धर्मयुद्ध किया। वही लोग पद में अधिक ऊँचे हैं उन से जिन्होंने दान किया उस के पश्चात्^[3] तथा धर्मयुद्ध किया। तथा प्रत्येक को अल्लाह ने वचन दिया है भलाई का, तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से पूर्णतः सूचित है।

يَرْبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِنْكُمْ أَكْثَرُ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ٥

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدٍ آيَاتٍ يَبَيِّنُ
لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ ٥

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُسْفِهُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاتُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا يَسْتَوِي مَنكُمْ مَن أَنْفَقَ
مِّن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَالُوا لَوْلَا أَنَّا كُنَّا لَكُمْ رُجُوعًا
وَمَنْ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِّن بَعْدِ وَقَالُوا لَوْلَا وَعَدَ
اللَّهُ الْخُسْفَىٰ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ٥

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 (देखिये: सूरह आराफ, आयत: 172)। इब्ने कसीर ने इस से अभिप्राय वह वचन लिया है जिस का वर्णन (सूरह माइदा, आयत: 7) में है। जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के द्वारा सहाबा से लिया गया कि वह आप की बातें सुनेंगे तथा सुख-दुख में अनुपालन करेंगे। और प्रिय और अप्रिय में सच्च बोलेंगे। तथा किसी की निन्दा से नहीं डरेंगे। (बुखारी: 7199, मुस्लिम: 1709)

3 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में धन दान करना है।

11. कौन है जो ऋण^[1] दे अल्लाह को अच्छा ऋण? जिसे वह दुगुना कर दे उस के लिये और उसी के लिये अच्छा प्रतिदान है।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝

12. जिस दिन तुम देखोगे ईमान वालों तथा ईमान वालियों को, कि दौड़ रहा^[2] होगा उन का प्रकाश उन के आगे तथा उन के दायें। तुम्हें शुभसूचना है ऐसे स्वर्गों की बहती है जिन में नहरें, जिन में तुम सदावासी होगे, वही बड़ी सफलता है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَبَّتْ تَعْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

13. जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक पुरुष तथा मुनाफ़िक स्त्रियाँ उन से जो ईमान लाये कि हमारी प्रतीक्षा करो हम प्राप्त कर लें तुम्हारे प्रकाश में से कुछ। उन से कहा जायेगा: तुम अपने पीछे वापिस जाओ, और प्रकाश की खोज करो।^[3] फिर बना दी जायेगी उन के बीच एक दीवार जिस में एक द्वार होगा। उस के भीतर दया होगी तथा उस के बाहर यातना होगी।

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا وَاتَّخِذُوا مِنْ نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ لَهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

14. वह उन को पुकारेंगे: क्या हम (संसार में) तुम्हारे साथ नहीं थे? (वह कहेंगे): परन्तु तुम ने उपद्रव में डाल लिया अपने आप को, और

يَنَادُونَ لَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَمْتُمْ وَعَنْزَلْتُمْ الْأُمَانُ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَعَزَّكُمْ بِالْمُنَافِقِينَ ۝

1 हदीस में है कि कोई उहुद (पर्वत) बराबर भी सोना दान करे तो मेरे सहाबा के चौथाई अथवा आधा किलो के बराबर भी नहीं होगा। (सहीह बुखारी: 3673, सहीह मुस्लिम: 2541)

2 यह प्रलय के दिन होगा जब वह अपने ईमान के प्रकाश में स्वर्ग तक पहुँचेंगे।

3 अर्थात् संसार में जा कर ईमान तथा सदाचार के प्रकाश की खोज करो किन्तु यह असंभव होगा।

प्रतीक्षा में^[1] रहे तथा संदेह किया और धोखे में रखा तुम्हें तुम्हारी मिथ्या कामनाओं ने। यहाँ तक की आ पहुँचा अब्राह का आदेश। और धोखे ही में रखा तुम्हें बड़े बंचक (शैतान) ने।

15. तो आज तुम से कोई अर्थ-दण्ड नहीं लिया जायेगा और न काफिरों से। तुम्हारा आवास नरक है, वही तुम्हारे योग्य है, और वह बुरा निवास है।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ
مَأْوَاكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

16. क्या समय नहीं आया ईमान वालों के लिये कि झुक जायें उन के दिल अब्राह के स्मरण (याद) के लिये, तथा जो उतरा है सत्य, और न हो जायें उन के समान जिन को प्रदान की गई पुस्तकें इस से पूर्व, फिर लम्बी अवधि व्यतीत हो गई उन पर, तो कठोर हो गये उन के दिल।^[2] तथा उन में अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ
اللَّهِ وَمَا نُزِّلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ
قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝

17. जान लो कि अब्राह ही जीवित करता है धरती को उस के मरण के पश्चात, हम ने उजागर कर दी है तुम्हारे लिये निशानियाँ ताकि तुम समझो।

إِذْ عَلَّمْنَا أَنْ يَتْلُو الرَّسْمَ بَعْدَ مَوْتِهَا فَذَكِّرْنَا
لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

18. वस्तुतः दान करने वाले पुरुष तथा दान करने वाली स्त्रियाँ तथा जिन्होंने ऋण दिया है अब्राह को अच्छा ऋण,^[3] उसे बढ़ाया जायेगा उन

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا
حَسَنًا يُضَاعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝

1 कि मुसलमानों पर कोई आपदा आये।

2 (देखिये: सूरह माइदा, आयत: 13)

3 हदीस में है कि जो पवित्र कमाई से एक खजूर के बराबर भी दान करता है

के लिये, और उन्हीं के लिये अच्छा प्रतिदान है।

19. तथा जो ईमान लाये अल्लाह और उस के रसूलों^[1] पर वही सिद्दीक तथा शहीद^[2] है अपने पालनहार के समीप। उन्हीं के लिये उन का प्रतिफल तथा उन की दिव्य ज्योति है। और जो काफिर हो गये और झुठलाया हमारी आयतों को तो वही नारकीय है।

20. जान लो कि संसारिक जीवन एक खेल तथा मनोरंजन और शोभा^[3] एवं आपस में गर्व तथा एक-दूसरे से बढ़ जाने का प्रयास है धनों तथा संतान में। उस वर्षा के समान भा गई किसानों को जिस की उपज, फिर वह पक गई तो तुम उसे देखने लगे पीली, फिर वह हो जाती है चूर-चूर। और परलोक में कड़ी यातना है, तथा अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता है। और संसारिक जीवन तो बस धोखे का संसाधन है।

21. एक-दूसरे से आगे बढ़ो अपने

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ وَالشَّاهِدُونَ أَعْمَدُونَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ
وَنُورُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۖ

إِغْلُظُوا إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ زِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ
يَبِينُكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ خَيْثٍ
أَعْجَبَ الْفُقَرَاءَ بَنَاتُهُ ثُمَّ يَهَيِّجُ قَتْلَهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ
يَكُونُ حَطَامًا وَفِي الْأُخْرَىٰ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَمْتَاعٌ
الْعُرُورُ ۝

سَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ

तो अल्लाह उसे पोसता है जैसे कोई घोड़ा के बच्चे को पोसता है यहाँ तक कि पर्वत के समान हो जाता है। (सहीह बुखारी: 1014)

- 1 अर्थात् बिना अन्तर और भेद-भाव किये सभी रसूलों पर ईमान लाये।
- 2 सिद्दीक का अर्थ है: बड़ा सच्चा। और शहीद का अर्थ गवाह है। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143, और सूरह हज्ज, आयत: 78)। शहीद का अर्थ अल्लाह की राह में मारा गया व्यक्ति भी है।
- 3 इस में संसारिक जीवन की शोभा की उपमा वर्षा की उपज की शोभा से दी गई है। जो कुछ ही दिन रहती है फिर चूर-चूर हो जाती है।

पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर जिस का विस्तार आकाश तथा धरती के विस्तार के^[1] समान है। जो तैयार की गई है उन के लिये जो ईमान लायें अल्लाह और उस के रसूलों पर। यह अल्लाह का अनुग्रह है वह प्रदान करता है उसे जिस को चाहता है और अल्लाह बड़ा उदार (दयाशील) है।

22. नहीं पहुँचती कोई आपदा धरती में और न तुम्हारे प्राणों में परन्तु वह एक पुस्तक में लिखी है इस से पूर्व कि हम उसे उत्पन्न करें^[2] और यह अल्लाह के लिये अति सरल है।
23. ताकि तुम शोक न करो उस पर जो तुम से खो जाये। और न इतराओ उस पर जो तुम्हें प्रदान किया है। और अल्लाह प्रेम नहीं करता किसी इतराने गर्व करने वाले से।
24. जो कंजूसी करते हैं और आदेश देते हैं लोगों को कंजूसी करने का। तथा जो विमुख होगा तो निश्चय अल्लाह निस्पृह सराहनीय है।
25. निःसंदेह हम ने भेजा है अपने रसूलों को खुले प्रमाणों के साथ, तथा उतारी है उन के साथ पुस्तक, तथा तुला

السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَعَدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرُسُلِهِ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ إِلَّا
فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ

الَّذِينَ يَخْتَفُونَ دِيَارَهُمْ مِنَ النَّاسِ بِالسُّعْيِ
وَمَنْ يُتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَبْدُ الْحَمِيدُ

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ
الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ

1 (देखिये: सूरह आले इमरान, आयत: 133)

2 अर्थात् इस विश्व और मनुष्य के अस्तित्व से पूर्व ही अल्लाह ने अपने ज्ञान अनुसार ((लौहे महफूज)) (सुरक्षित पुस्तक) में लिख रखा है। हदीस में है कि अल्लाह ने पूरी उत्पत्ति का भाग्य आकाशों तथा धरती की रचना से पचास हजार वर्ष पहले लिख दिया। जब कि उस का अर्श पानी पर था। (सहीह मुस्लिम: 2653)

(न्याय का नियम), ताकि लोग स्थित रहें न्याय पर। तथा हम ने उतारा लोहा जिस में बड़ा बल^[1] है तथा लोगों के लिये बहुत से लाभ। और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उस की सहायता करता है तथा उस के रसूलों की बिना देखे। वस्तुतः अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।

26. हम ने (रसूल बना कर) भेजा नूह को तथा इब्राहीम को और रख दी उन की संतति में नबूवत (दुतत्व) तथा पुस्तक। तो उन में से कुछ ने मार्गदर्शन अपनाया और उन में से बहुत से अवैज्ञाकारी हैं।

27. फिर हम ने निरन्तर उन के पश्चात् अपने रसूल भेजे और उन के पश्चात् भेजा मर्यम के पुत्र ईसा को तथा प्रदान की उसे इंजील, और कर दिया उस का अनुसरण करने वालों के दिलों में करुणा तथा दया, और संसार^[2] त्याग को उन्होंने स्वयं बना लिया, हम ने नहीं अनिवार्य किया उसे उन के ऊपर। परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिये (उन्होंने

وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ٢٦

لَقَدْ قَرَّبْنَا عَلَىٰ آثَارِهِمْ رُسُلَنَا وَفَعَّلْنَا بَعْضُنَا فِي مَرْيَمَ وَآلِئِنَّهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهَ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ٢٧

1. उस से अस्त्र-शस्त्र बनाये जाते हैं।

2. संसार त्याग अर्थात् सन्यास के विषय में यह बताया गया है कि अल्लाह ने उन्हें इस का आदेश नहीं दिया। उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिये स्वयं इसे अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया। फिर भी इसे निभा नहीं सके। इस में यह संकेत है कि योग तथा सन्यास का धर्म में कभी कोई आदेश नहीं दिया गया है। इस्लाम में भी शरीअत के स्थान पर तरीकत बना कर नई बातें बनाई गई। और सत्धर्म का रूप बदल दिया गया। हदीस में है कि कोई हमारे धर्म में नई बात निकाले जो उस में नहीं है तो वह मान्य नहीं। (सहीह बुखारी: 2697, सहीह मुस्लिम: 1718)

ऐसा किया) तो उन्होंने नहीं किया उस का पूर्ण पालन। फिर (भी) हम ने प्रदान किया उन को जो ईमान लाये उन में से उन का बदला। और उन में से अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

28. हे लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो और ईमान लाओ उस के रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा^[1] प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिस के साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।

29. ताकि ज्ञान हो जाये (इन बातों से) अहले^[2] किताब को कि वह कुछ शक्ति नहीं रखते अल्लाह के अनुग्रह पर। और यह कि अनुग्रह अल्लाह ही के हाथ में है। वह प्रदान करता है जिसे चाहे, और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرُسُولِهِ
يُؤْتِكُمْ كُفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

إِنَّمَا يَعْلَمُ آفُلُ الْكِتَابِ أَقْيَبُ رُؤًى عَلَى شَيْءٍ
مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

1 हदीस में है कि तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिन को दोहरा प्रतिफल मिलेगा। इन में एक, अहले किताब में से वह व्यक्ति है जो अपने नबी पर ईमान लाया था फिर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी ईमान लाया। (सहीह बुखारी: 97, 2544, सहीह मुस्लिम: 154)

2 अहले किताब से अभिप्राय: यहूदी तथा ईसाई हैं।

सूरह मुजादला - 58

سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ

सूरह मुजादला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 22 आयतें हैं।

- मुजादला का अर्थ है: झगड़ा और तकरार। इस के आरंभ में एक नारी की तकरार का वर्णन है। इसलिये इस का नाम सूरह मुजादला है।
- इस में ज़िहार के विषय में धार्मिक नियमों को बताया गया है। साथ ही इन नियमों का इन्कार करने पर कड़े दण्ड की चेतावनी दी गई है।
- आयत 7 से 11 तक मुनाफ़िकों के षडयंत्र और उपद्रव की चर्चा करते हुये ईमान वालों के सामाजिक नियमों के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 12 और 13 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ काना फूसी के सम्बंध में एक विशेष आदेश दिया गया है।
- अन्त में द्विधावादियों (मुनाफ़िकों) की पकड़ करते हुये सच्चे ईमान वालों के लक्षण बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) अब्राह ने सुन ली है उस स्त्री की बात जो आप से झगड़ रही थी अपने पति के विषय में तथा गुहार रही थी अब्राह को। और अब्राह सुन रहा था तुम दोनों की वार्तालाप, वास्तव में वह सब कुछ सुनने-देखने वाला है।

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ خَوَائِفَهُمْ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ

2. जो ज़िहार^[1] करते हैं तुम में से

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنكُم مَّن سَاءَ مَا يَكُونُ لَكُمْ أَعْمَالُهُمْ

- 1 ज़िहार का अर्थ है: पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के समान है। इस्लाम से पूर्व अरब समाज में यह कुरीति थी कि पति अपनी पत्नी से यह कह देता तो पत्नी को तलाक़ हो जाती थी। और सदा के लिये पति से बिलग हो जाती थी। और इस का नाम ((ज़िहार)) था। इस्लाम में

अपनी पत्नियों से तो वे उन की माँ नहीं हैं। उन की माँ तो वे हैं जिन्होंने उन को जन्म दिया है। और वह बोलते हैं अप्रिय तथा झूठी बात। और वास्तव में अल्लाह माफ़ करने वाला क्षमाशील है।

3. और जो ज़िहार कर लेते हैं अपनी पत्नियों से, फिर वापिस लेना चाहते हों अपनी बात तो (उस का दण्ड) एक दास मुक्त करना है, इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगायें।^[1] इसी की तुम्हें शिक्षा दी जा रही है। और अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।

4. फिर जो (दास) न पाये तो दो महीने निरन्तर रोज़ा (व्रत) रखना है इस से पूर्व कि एक-दूसरे को हाथ लगाये। फिर जो सकत न रखे तो साठ निर्धनों को भोजन कराना है। यह आदेश इस लिये है ताकि तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर। और यह अल्लाह की सीमायें हैं तथा काफ़िरों के लिये दुखदायी यातना है।

5. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह

إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ
وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ بَنَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ
إِلَيْهَا فَالْوَالِئُ أَنْ يُرَدِّدَهُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَّخِذُوا ذَلِكَ
تُوعِظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ بَنَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ
إِلَيْهَا فَالْوَالِئُ أَنْ يُرَدِّدَهُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَّخِذُوا ذَلِكَ
تُوعِظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

فَمَنْ كَرِهَ جِدَافَ صِيَامِ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ
أَنْ يَتَّخِذَا فَمَنْ كَرِهَ جِدَافَ صِيَامِ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
ذَلِكَ بَلَاغٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنَّكَ خَدُودُ اللَّهِ
وَاللَّكْفَرَيْنِ عَذَابُ الْبَعْرِ

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُنْتُمْ أَكْثَرُ

एक स्त्री जिस का नाम ((खौला)) (रज़ियल्लाहु अन्हा) है उस से उस के पति: औस पुत्र सामित (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने ज़िहार कर लिया। खौला (रज़ियल्लाहु अन्हा) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आई। और आप से इस विषय में झगड़ने लगी। उस पर यह आयतें उतरीं। (सहीह अबुदाऊद- 2214)। आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: मैं उस की बात नहीं सुन सकी। और अल्लाह ने सुन ली। (इब्ने माजा: 156, यह हदीस सहीह है।)

1. हाथ लगाने का अर्थ संभोग करना है। अर्थात् संभोग से पहले प्रायश्चित्त चुका दे।

तथा उस के रसूल का, वे अपमानित कर दिये जायेंगे जैसे अपमानित कर दिये गये जो इन से पूर्व हुये। और हम ने उतार दी है खुली आयतें और काफ़िरो के लिये अपमान कारी यातना है।

6. जिस दिन जीवित करेगा उन सब को अल्लाह तो उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से। गिन रखा है उसे अल्लाह ने और वह भूल गये हैं उसे। और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर गवाह है।
7. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो (भी) आकाशों तथा धरती में है? नहीं होती किसी तीन की काना फूसी परन्तु वह उन का चौथा होता है। और न पाँच की परन्तु वह उन का छठा होता है। और न इस से कम की और न इस से अधिक की परन्तु वह उन के साथ होता^[1] है, वे जहाँ भी हों। फिर वह उन्हें सूचित कर देगा उन के कर्मों से प्रलय के दिन। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु से भली-भाँति अवगत है।
8. क्या आप ने नहीं देखा उन्हें जो रोके गये हैं काना फूसी^[2] से? फिर (भी) वही करते हैं जिस से रोके गये हैं। तथा काना फूसी करते हैं पाप और अत्याचार, तथा रसूल की अवैज्ञा

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا الْبَيِّنَاتِ
وَالْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا
أَحْصَاهُ اللَّهُ وَسُورَةُ اللَّهِ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
مَا يَكُونُ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عَلَّمَهُ الْأَمُورَ أَلَيْسَ لَهُ
إِلَهُ مُسَاوِيهِمْ وَلَا أَذَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا الْعَرَّ الْأَمُ
مَعَهُمْ إِنْ مَا كَانُوا تُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ
إِنَّ اللَّهَ لَكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ الْمُجْمُوعِ ثُمَّ يَعُودُونَ لَهَا
نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْأَثَرِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَتَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحْيِكَ بِهِ اللَّهُ
وَيَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُهُ اللَّهُ بِمَا نَقُولُ

1 अर्थात् जानता और सुनता है।

2 इन से अभिप्राय मुनाफिक हैं। क्योंकि उन की काना फूसी बुराई के लिये होती थी। (देखिये: सूरह निसा, आयत: 114)

की। और जब वे आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे (शब्द से) सलाम करते हैं जिस से आप पर सलाम नहीं भेजा अल्लाह ने। तथा कहते हैं अपने मनों में: क्यों अल्लाह हमें यातना नहीं देता उस पर जो हम कहते^[1] हैं? पर्याप्त है उन को नरक जिस में वह प्रवेश करेंगे, तो बुरा है उन का ठिकाना।

9. हे लोगो जो ईमान लाये हो! जब तुम काना फूसी करो तो काना फूसी न करो पाप तथा अत्याचार एवं रसूल की अवैज्ञा की। और काना फूसी करो पुण्य तथा सदाचार की। और डरते रहो अल्लाह से जिस की ओर ही तुम एकत्र किये जाओगे।
10. वास्तव में काना फूसी शैतानी काम है ताकि वह उदासीन हों^[2] जो ईमान लाये। जब कि नहीं है वह हानिकर उन को कुछ, परन्तु अल्लाह की अनुमति से। और अल्लाह ही पर

حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَيُفْسِنُ الْعَصِیْرُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَأَقِمْوْا لِلَّهِ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

إِنَّمَا الشَّيْطَانُ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارٍّ لَهُمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

1 मुनाफिक और यहूदी जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में आते तो (अस्सलामु अलैकुम) (अनुवाद: आप पर सलाम और शान्ति हो।) की जगह (अस्सामु अलैकुम) (अनुवाद: आप पर मौत आये।) कहते थे। और अपने मन में यह सोचते थे कि यदि आप अल्लाह के सत्य रसूल होते तो हमारे इस दुराचार के कारण हम पर यातना आ जाती। और जब कोई यातना नहीं आई तो आप अल्लाह के रसूल नहीं हो सकते। हदीस में है कि यहूदी तुम को सलाम करें तो वह ((अस्सामु अलैका)) कहते हैं, तो तुम ((व अलैका)) कहो। अर्थात: और तुम पर भी। (सहीह बुखारी: 6257, सहीह मुस्लिम: 2164)

2 हदीस में है कि जब तुम तीन एक साथ रहो तो दो आपस में काना फूसी न करें। क्योंकि इस से तीसरे को दुख होता है। (सहीह बुखारी: 6290, सहीह मुस्लिम: 2184)

चाहिये कि भरोसा करें ईमान वाले।

11. हे ईमान वाले! जब तुम से कहा जाये कि विस्तार कर दो अपनी सभावों में तो विस्तार^[1] कर दो, विस्तार कर देगा अल्लाह तुम्हारे लिये। तथा जब कहा जाये कि सुकड़ जाओ तो सुकड़ जाओ। ऊँचा^[2] कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियों। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति अवगत है।
12. हे ईमान वाले! जब तुम अकेले बात करो रसूल से तो बात करने से पहले कुछ दान करो।^[3] यह तुम्हारे लिये उत्तम तथा अधिक पवित्र है। फिर यदि तुम (दान के लिये कुछ) न पाओ तो अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
13. क्या तुम (इस आदेश से) डर गये कि एकान्त में बात करने से पहले कुछ दान कर दो? फिर जब तुम ने ऐसा नहीं किया तो स्थापना करो नमाज़ की तथा ज़कात दो और आज्ञा पालन करो अल्लाह तथा उस के रसूल की। और अल्लाह सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانْشُزُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الرَّسُولُ فَعَدِمُوا بَيْنَ يَدَيْهِ جُزْءًا مِّنْ صَدَقَتِكُمْ فَذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْرَفٌ فَإِنْ كُنْتُمْ تَعْدُونَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

وَأَشْفَقْتُمْ أَنَّ تُفْعَلُوا بَيْنَ يَدَيْ جُزْءٍ مِّنْكُمْ صَدَقَاتٍ فَإِذَا لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

1. भावार्थ यह है कि कोई आये तो उसे भी खिसक कर और आपस में सुकड़ कर जगह दो।
2. हदीस में है कि जो अल्लाह के लिये झुकता और अच्छा व्यवहार चयन करता है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। (सहीह मुस्लिम: 2588)
3. प्रत्येक मुसलमान नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से एकान्त में बात करना चाहता था। जिस से आप को परेशानी होती थी। इसलिये यह आदेश दिया गया।

14. क्या आप ने उन्हें देखा^[1] जिन्होंने मित्र बना लिया उस समुदाय को जिस पर क्रोधित हो गया अब्बाह? न वह तुम्हारे है और न उन को और वह शपथ लेते है झूठी बात पर जान बूझ कर।
15. तय्यार की है अब्बाह ने उन के लिये कड़ी यातना, वास्तव में वह बुरा है जो वे कर रहे है।
16. उन्होंने बना लिया अपनी शपथों को एक ढाल। फिर रोक दिया (लोगों को) अब्बाह की राह से, तो उन्हीं के लिये अपमान कारी यातना है।
17. कदापि नहीं काम आयेंगे उन के धन और न उन की संतान अब्बाह के समक्ष कुछ। वही नारकी है, वह उस में सदावासी होंगे।
18. जिस दिन खड़ा करेगा उन को अब्बाह तो वह शपथ लेंगे अब्बाह के समक्ष जैसे वह शपथ ले रहे है तुम्हारे समक्ष। और वह समझ रहे हैं कि वह कुछ (तर्क)^[2] पर है। सुन लो! वास्तव में वही झूठे हैं।
19. छा^[3] गया है उन पर शैतान और भुला दी है उन को अब्बाह की याद। यही शैतान की सेना है। सुन लो! शैतान की सेना ही क्षतिग्रस्त होने वाली है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قَالُوا اقْبَلُوا عَصِيبَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ مَا لَهُمْ بَشْتِكُمْ وَلَا مِنْكُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

إِذْ أَخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

لَنْ تَنفَعِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝

إِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَاهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

1 इस से संकेत मुनाफिकों की ओर है जिन्होंने यहूदियों को अपना मित्र बना रखा था।

2 अर्थात् उन्हें अपनी शपथ का कुछ लाभ मिल जायेगा जैसे संसार में मिलता रहा।

3 अर्थात् उन को अपने नियंत्रण में ले रखा है।

20. वास्तव में जो विरोध करते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल का, वही अपमानितों में से हैं।
21. लिख रखा है अल्लाह ने कि अवश्य मैं प्रभावशाली (विजयी) रहूँगा^[1] तथा मेरे रसूल। वास्तव में अल्लाह अति शक्तिशाली प्रभावशाली है।
22. आप नहीं पायेंगे उन को जो ईमान रखते हों अल्लाह तथा अन्त- दिवस (प्रलय) पर कि वह मैत्री करते हों उन से जिन्होंने विरोध किया अल्लाह और उस के रसूल का, चाहे वह उन के पिता हों अथवा उन के पुत्र अथवा उन के भाई अथवा उन के परिजन^[2] हों। वही है लिख दिया है (अल्लाह ने) जिन के दिलों में ईमान और समर्थन दिया है जिन को अपनी ओर से रूह (आत्मा) द्वारा। तथा प्रवेश देगा उन को ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे जिन में। प्रसन्न हो गया अल्लाह उन से तथा वह प्रसन्न हो गये उस से। वह अल्लाह का समूह है। सुन लो अल्लाह का समूह ही सफल होने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝

كَتَبَ اللَّهُ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَرَسُولِهِ أَنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحِهِمْ وَمَنَّا وَهُمْ خَلَفَ بِحَبِيبٍ مُّجْرِيٍّ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَضَىٰ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

1 (देखिये: सूरह मुमिन, आयत: 51- 52)

2 इस आयत में इस बात का वर्णन किया गया है कि ईमान, और काफिर जो इस्लाम और मुसलमानों के जानी दुश्मन हों उन से सच्ची मैत्री करना एकत्र नहीं हो सकते। अतः जो इस्लाम और इस्लाम के विरोधियों से एक साथ सच्चे सम्बंध रखते हों तो उन का ईमान सत्य नहीं है।

सूरह हथ - 59

سُورَةُ الْحُثُوفِ

सूरह हथ के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मदनी है, इस में 24 आयतें हैं।

- इस सूरह की दूसरी आयत में हथ का शब्द आया है। जिस का अर्थ: एकत्र होना है। और इसी से यह नाम लिया गया है।
- इस में अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों को मदीना के यहूदी कबीले के अपमानकारी परिणाम से चेतावनी दी गयी है।
- आरंभ में बताया गया है कि आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ अल्लाह की पवित्रता का गान करती है। फिर यहूदी कबीले बनी नजीर के, अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करने का परिणाम बताया गया है। और ईमान वालों को कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 11 से 17 तक में उन मुनाफ़िकों की पकड़ की गई है जो यहूदियों से मिल कर इस्लाम और मुसलमानों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे थे।
- अन्त में प्रभावी शिक्षा तथा अल्लाह से डरने की बातों का वर्णन किया गया है। तथा आज्ञा पालन और अवैज्ञा का अन्तर बताया गया है।
- इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा: कि यह सूरह बनी नजीर के बारे में उतरी। इसे सूरह बनी नजीर कहो। (सहीह बुखारी: 4883)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का गान किया है उस ने जो भी आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।
2. वही है जिस ने अहले किताब में से काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही आक्रमण में निकाल दिया। तुम ने नहीं समझा था कि वे निकल जायेंगे, और

يَسْعَوْنَ إِلَى النَّارِ وَمَأْوَى الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا
أَنْهُمْ لَا يَعْلَمُونَ خُصْمُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَشْرَكُوا مِنْ

उन्होंने समझा था कि रक्षक होंगे उन के दुर्गा^[1] अल्लाह से। तो आ गया उन के पास अल्लाह (का निर्णय)। ऐसा उन्होंने सोचा भी न था। तथा डाल दिया उन के दिलों में भय। वह उजाड़ रहे थे अपने घरों को अपने हाथों से तथा ईमान वालों के हाथों^[2] से। तो शिक्षा लो, हे आँख वालो!

3. और यदि अल्लाह ने न लिख दिया होता उन (के भाग्य में) देश निकाला, तो उन्हें यातना दे देता संसार (ही) में। तथा उन के लिये आखिरत (परलोक) में नरक की यातना है।

4. यह इसलिये कि उन्होंने विरोध किया अल्लाह तथा उस के रसूल का, और जो विरोध करेगा अल्लाह का तो निश्चय अल्लाह कड़ी यातना देने वाला है।

حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدْ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرَّعْبُ
يُخَوِّتُوْنَ بِمَوْتِهِمْ يَأْتِيهِمْ وَأَلَيْدَى الْمُؤْمِنِيْنَ
فَاعْتَدُوا يَوْمَ الْاِنْصَارِ ۝

وَلَوْلَا اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَالَ لَعَذَّبَهُمُ فِي
الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ ثَوِيْلٌ ۝

ذٰلِكَ بِاَنْهُمْ شَاكَوْا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَمَنْ يُشَاقِقِ اللّٰهَ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدٌ مُّعَذِّبٌ ۝

1. नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब मदीना पहुँचे तो वहाँ यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे: बनी नजीर, बनी कुरैजा तथा बनी कैनुका। आप ने उन सभी से संधि कर ली। परन्तु वह इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। और एक समय जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बनी नजीर के पास गये तो उन्होंने ऊपर से एक पत्थर फेंक कर आप को मार डालने की योजना बनाई। जिस से बह्वी द्वारा अल्लाह ने आप को सूचित कर दिया। उन के इस संधि भंग तथा षड्यंत्र के कारण आप ने उन पर आक्रमण किया। वह कुछ दिन अपने दुर्गों में बंद रहे। अन्ततः उन्होंने प्राण क्षमा के रूप में देश निकाल को स्वीकार किया। और यह मदीना से यहूद का प्रथम देश निकाला था। यहाँ से वह खैबर पहुँचे और अदरणीय उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में उन्हें फिर देश निकाला दिया गया। और वह वहाँ से शाम चले गये जो हथ्र का मैदान होगा।
2. जब वे अपने घरों से जाने लगे तो घरों को तोड़-तोड़ कर जो कुछ साथ ले जा सकते थे ले गये। और शेष सामान मुसलमानों ने निकाला।

5. (हे मुसलमानो!) तुम ने नहीं काटा^[1] कोई खजूर का वृक्ष और न छोड़ा उसे खड़ा अपने तने पर, तो यह सब अल्लाह के आदेश से हुआ। और ताकि वह अपमानित करे पथभ्रष्टों को।
6. और जो धन दिला दिया अल्लाह ने अपने रसूल को उन से, तो नहीं दौड़ाये तुम ने उस के लिये घोड़े और न ऊँट। परन्तु अल्लाह प्रभुत्व प्रदान कर देता है अपने रसूल को जिस पर चाहता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
7. अल्लाह ने जो धन दिलाया है अपने रसूल को इस बस्ती वालों^[2] से, वह अल्लाह तथा रसूल, तथा (आप के) समीपवर्तियों तथा अनाथों और निर्धनों तथा यात्रियों के लिये है। ताकि वह फिरता न रहे^[3] जाये

مَا تَقَطَّعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمْهَا قَائِمَةً عَلَى أَصُولِهَا
فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ۝

وَمَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا آوَجِفْتُمْ عَلَيْهِ
مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رَسُولَهُ
عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

مَا آتَاكَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى فَلِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ وَلِلَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْقُرَى وَالْمَسْكِينِ
وَابْنِ السَّبِيلِ لَا يَكُنْ دُولُهُ بَيْنَ الْأُغْنِيَاءِ
وَمَثَلُوا وَالشُّكْرُ لِلرَّسُولِ فَخُذُوا وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ
فَأَن تَهْمَوْا إِنَّا نَعْلَمُ اللَّهُ أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

- 1 बनी नजीर के घिराव के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आदेशानुसार उन के खजूरों के कुछ वृक्ष जला दिये और काट दिये गये और कुछ छोड़ दिये गये। ताकि शत्रु की आड़ को समाप्त किया जाये। इस आयत में उसी का वर्णन किया गया है। (सहीह बुखारी: 4884)
- 2 अर्थात् यहूदी कबीला बनी नजीर से जो धन बिना युद्ध के प्राप्त हुआ उस का नियम बताया गया है कि वह पूरा धन इस्लामी बैतुल माल का होगा उसे मुजाहिदों में विभाजित नहीं किया जायेगा। हदीस में है कि यह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये विशेष था जिस से आप अपनी पत्नियों को खर्च देते थे। फिर जो बच जाता तो उसे अल्लाह की राह में शस्त्र और सवारी में लगा देते थे। (बुखारी: 4885)
- 3 इस को फ़ैय का माल कहते हैं जो ग़नीमत के माल से अलग है।
- 4 इस में इस्लाम की अर्थ व्यवस्था के मूल नियम का वर्णन किया गया है। पूँजी पति व्यवस्था में धन का प्रवाह सदा धनवानों की ओर होता है। और निर्धन दरिद्रता की चक्की में पिसता रहता है। कम्युनिज़्म में धन का प्रवाह सदा शासक

तुम्हारे धनवानों के बीच और जो प्रदान कर दें रसूल, तुम उसे ले लो और रोक दें तुम को जिस से तो तुम रुक जाओ। तथा अब्बाह से डरते रहो, निश्चय अब्बाह कड़ी यातना देने वाला है।

8. उन निर्धन मुहाजिरों के लिये है जो निकाल दिये गये अपने घरों तथा धनों से। वह चाहते हैं अब्बाह का अनुग्रह तथा प्रसन्नता, और सहायता करते हैं अब्बाह तथा उस के रसूल की, यही सच्चे हैं।

9. तथा उन लोगों^[1] के लिये (भी) जिन्होंने आवास बना लिया इस घर (मदीना) को तथा उन (मुहाजिरों के आने) से पहले ईमान लाये, वह प्रेम करते हैं उन से जो हिजरत कर के आ गये उन के यहाँ। और वे नहीं पाते अपने दिलों में कोई आवश्यकता उस की जो उन्हें दिया जाये। और प्रथामिकता देते हैं (दूसरों को) अपने ऊपर चाहे स्वयं भूखे^[2] हों। और जो

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّيْنَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

बर्ग की ओर होता है। जब कि इस्लाम में धन का प्रवाह निर्धन वर्ग की ओर होता है।

1. इस से अभिप्राय मदीना के निवासी: अनुसार हैं। जो मुहाजिरीन के मदीना में आने से पहले ईमान लाये थे। इस का यह अर्थ नहीं है कि वह मुहाजिरीन से पहले ईमान लाये थे।
2. हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास एक अतिथि आया और कहा: हे अब्बाह के रसूल! मैं भूखा हूँ। आप ने अपनी पत्नियों के पास भेजा तो वहाँ कुछ नहीं था। एक अन्सारी उसे घर ले गये। घर पहुँचे तो पत्नि ने कहा: घर में केवल बच्चों का खाना है। उन्होंने परस्पर प्रामर्श किया कि बच्चों को बहला कर सुला दिया जाये। तथा पत्नि से कहा कि जब अतिथि खाने लगे तो

बचा लिये गये अपने मन की तंगी से, तो वही सफल होने वाले हैं।

10. और जो आये उन के पश्चात् वे कहते हैं: हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे तथा हमारे उन भाईयों को जो हम से पहले ईमान लाये। और न रख हमारे दिलों में कोई बैर उन के लिये जो ईमान लाये। हे हमारे पालनहार! तू अति करुणामय दयावान् है।

11. क्या आप ने उन्हें^[1] नहीं देखा जो मुनाफिक (अवसरवादी) हो गये, और कहते हैं अपने अहले किताब भाईयों से कि यदि तुम्हें देश निकाला दिया गया तो हम अवश्य निकल जायेंगे तुम्हारे साथ। और नहीं मानेंगे तुम्हारे बारे में किसी की (बात) कभी। और यदि तुम से युद्ध हुआ तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। तथा अब्बाह गवाह है कि वह झूठे हैं।

12. यदि वे निकाले गये तो यह उन के

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَأْفِكُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجُوا لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا تَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا

तुम दीप बुझा देना। उस ने ऐसा ही किया। सब भूखे सो गये और अतिथि को खिला दिया। जब वह अन्सारी भोर में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास पहुँचे तो आप ने कहा: अमुल पुरुष (अबू तल्हा) और अमुल स्त्री (उम्मे सुलैम) से अब्बाह प्रसन्न हो गया। और उस ने यह आयत उतारी है। (सहीह बुखारी: 4889)

- 1 इस से अभिप्राय अब्दुल्लाह बिन उबेय्य मुनाफिक और उस के साथी हैं। जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यहूद को उन के वचन भंग तथा षड्यंत्र के कारण दस दिन के भीतर निकल जाने की चेतावनी दी, तो उस ने उन से कहा कि तुम अड़ जाओ। मेरे बीस हजार शस्त्र युवक तुम्हारे साथ मिल कर युद्ध करेंगे। और यदि तुम्हें निकाला गया तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे। परन्तु यह सब मैखिक बातें थीं।

साथ नहीं निकालेंगे। और यदि उन से युद्ध हो तो वे उन की सहायता नहीं करेंगे। और यदि उन की सहायता की (भी) तो अवश्य पीठ दिखा देंगे, फिर (कहीं से) कोई सहायता नहीं पायेंगे।

13. निश्चय अधिक भय है तुम्हारा उन के दिलों में अल्लाह (के भय) से। यह इसलिये कि वे समझ-बूझ नहीं रखते।

14. वह नहीं युद्ध करेंगे तुम से एकत्र हो कर परन्तु यह कि दुर्ग बंद बस्तियों में हों, अथवा किसी दीवार की आड़ से। उन का युद्ध आपस में बहुत कड़ा है। आप उन्हें एकत्र समझते हैं जब कि उन के दिलों में अलग अलग हैं। यह इसलिये कि वह निर्बोध होते हैं।

15. उन के समान जो उन से कुछ ही पूर्व चख चुके⁽¹⁾ हैं अपने किये का स्वाद। और इन के लिये दुःखदायी यातना है।

16. (उन का उदाहरण) शैतान जैसा है कि वह कहता है मनुष्य से कि कुफ़र कर, फिर जब वह काफिर हो गया तो कह दिया कि मैं तुझ से विरक्त (अलग) हूँ। मैं तो डरता हूँ अल्लाह सर्वलोक के पालनहार से।

17. तो हो गया उन दोनों का दुष्परिणाम यह कि वे दोनों नरक में सदावासी रहेंगे। और यही है अत्याचारियों का कुफल।

لَا يَنْصَرُواكُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوكُمْ لَيُنَازِلَنَّ
كُمُ الْيَوْمَ ۝

لَا تَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

لَا يَتَأْتَلُونَكُمْ جَمِيعًا ۖ الْآلِ فِي قَوْمٍ مُّخَصَّنَةٍ
أَوْ مِنْ وَرَاءِ حُدُودِ بِلَادِهِمْ يَنْتَهُمُ شَدِيدًا
تَحِبُّهُمْ جَمِيعًا ۖ وَكَلُوا مِنْهُمْ شَقًّ ۚ ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا
وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اقْنَطِرْ فَلَمَّا
كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ
الْعَالَمِينَ ۝

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا
وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

1 इस में संकेत बद्र में मक्का के काफिरों तथा कैनुकाअ कबीले की पराजय की ओर है।

18. हे लोगो जो ईमान लाये हो! अब्राह से डरो, और देखना चाहिये प्रत्येक को कि उस ने क्या भेजा है कल के लिये। तथा डरते रहो अब्राह से, निश्चय अब्राह सूचित है उस से जो तुम करते हो।

19. और न हो जाओ उन के समान जो भूल गये अब्राह को तो भुला दिया (अब्राह ने) उन्हें अपने आप से, यही अवैज्ञकारी है।

20. नहीं बराबर हो सकते नारकी तथा स्वर्गी। स्वर्गी ही वास्तव में सफल होने वाले हैं।

21. यदि हम अवतरित करते इस कुर्आन को किसी पर्वत पर तो आप उसे देखते कि झुका जा रहा है तथा कण-कण होता जा रहा है अब्राह के भय^[1] से। और इन उदाहरणों का वर्णन हम लोगों के लिये कर रहे हैं ताकि वह सोच-विचार करें। वह खुले तथा छुपे का जानने वाला है। वही अत्यंत कृपाशील दयावान् है।

22. वह अब्राह ही है जिस के अतिरिक्त कोई (सत्य) पूज्य नहीं है।

23. वह अब्राह ही है जिस के अतिरिक्त नहीं है^[2] कोई सच्चा वंदनीय। वह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلَنْظُرْ نَفْسٍ مَا قَدَّمَتْ لِإِعَادَةٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسُهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاهُ خَادِعًا يُثَصِّدُ عَنْ مِّنْ حَشِيَّةِ اللَّهِ ذَٰلِكَ الْأَمْثَالُ نَضَرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ

1 इस में कुर्आन का प्रभाव बताया गया है कि यदि अब्राह पर्वत को ज्ञान और समझ-बुझ दे कर उस पर उतारता तो उस के भय से दब जाता और फट पड़ता। किन्तु मनुष्य की यह दशा है कि कुर्आन सुन कर उस का दिल नहीं पसीजता। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 74)

2 इन आयतों में अब्राह के शुभनामों और गुणों का वर्णन कर के बताया गया है

सब का स्वामी, अत्यंत पवित्र,
सर्वथा शान्ति प्रदान करने वाला,
रक्षक, प्रभावशाली, शक्तिशाली
बल पूर्वक आदेश लागू करने वाला,
बड़ाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस
से जिसे वे (उस का) साझी बनाते हैं।

24. वही अल्लाह है पैदा करने वाला,
बनाने वाला, रूप देने वाला। उसी
के लिये शुभनाम है, उस की
पवित्रता का वर्णन करता है जो (भी)
आकाशों तथा धरती में है, और वह
प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيِّمُ الْعَزِيزُ
الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ٥

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ٦

कि वह अल्लाह कैसा है जिस ने यह कुर्आन उतारा है। इस आयत में अल्लाह के ग्यारह शुभनामों का वर्णन है। हदीस में है कि अल्लाह के निबावे नाम है, जो उन्हें गिनेगा तो वह स्वर्ग में जायेगा। (सहीह बुखारी: 7392, सहीह मुस्लिम: 2677)

सूरह मुम्तहिना - 60

سُورَةُ الْمُتَحَنِّنِ

सूरह मुम्तहिना के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 13 आयतें हैं।

- इस की आयत 10 से यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 7 तक में इस्लाम के विरोधियों से मैत्री रखने पर कड़ी चेतावनी दी गई है। और अपने स्वार्थ के लिये उन्हें भेद की बातें पहुँचाने से रोका गया है। तथा इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और उन के साथियों के, काफिर जाति से विरक्त होने के एलान को आदर्श के लिये प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 8 और 9 में बताया गया है कि जो काफिर युद्ध नहीं करते तो उन के साथ न्याय तथा अच्छा व्यवहार करो।
- आयत 10 से 12 तक मक्का से हिज्रत कर के आई हुई तथा उन नारियों के बारे में जो मुसलमानों के विवाह में थी और उन के हिज्रत कर जाने पर मक्का ही में रह गई थी निर्देश दिये गये गये हैं।
- अन्त में उन्हीं बातों पर बल दिया गया है जिन से सूरह का आरंभ हुआ है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे लोगो जो ईमान लाये हो! मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री^[1] का, जब कि उन्हीं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ
تُلَفُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ
الرَّسُولِ وَإِذَا كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ

- 1 मक्का वासियों ने जब हुदैबिया की संधि का उल्लंघन किया, तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मक्का पर आक्रमण करने के लिये गुप्त रूप से मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उसी बीच आप की इस योजना से सूचित करने के लिये हातिब बिन अबी बलतआ ने एक पत्र एक नारी के माध्यम से मक्का वासियों को भेज दिया। जिस की सूचना नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को

ने कुफ़ किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है। वह देश निकाला देते हैं रसूल को तथा तुम को इस कारण कि तुम ईमान लाये हो अल्लाह अपने पालनहार पर? यदि तुम निकले हो जिहाद के लिये मेरी राह में और मेरी प्रसन्नता की खोज के लिये तो गुप्त रूप से उन को मैत्री का संदेश भेजते हो? जब कि मैं भली-भाँति जानता हूँ उसे जो तुम छुपाते हो और जो खुल कर करते हो? तथा जो करेगा ऐसा, तो निश्चय वह कुपथ हो गया सीधी राह से।

2. और यदि वश में पा जायें तुम को तो तुम्हारे शत्रु बन जायें तथा तुम्हें अपने हाथों और जुबानों से दुख पहुँचायें। और चाहने लगेंगे कि तुम (फिर) काफिर हो जाओ।

3. तुम्हें लाभ नहीं देंगे तुम्हारे सम्बन्धी और न तुम्हारी संतान प्रलय के दिन। वह (अल्लाह) अलगाव कर देगा

إِنْ كُنْتُمْ حَرِبْتُمْ جَاهِدُوا فِي سَبِيلِي وَابْتَغِ الْوَعْدَ الْمَرْغُوبَ
يُؤْتِيهِمُ اللَّهُ بِالْوَعْدِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا كُفَيْتُمْ وَمَا
أَعْلَمْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ
السَّبِيلِ ۝

إِنْ يَتَّبِعْكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَعْدَاءُكُمْ وَيَسْتَظْفِرُوا إِلَيْكُمْ
يَزِيدْكُمْ سَاءَ الْمَقَادِيرِ وَالشُّرُوءَ وَوَدَّ الْكَافِرُونَ ۝

لَنْ نَنْفَعَكُمْ أَرْحَامَكُمْ وَلَا أَوْدَادَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
يُفَصِّلُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ اللَّهِ مَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

बह्वी द्वारा दे दी गई। आप ने आदरणीय अली, मिकदाद तथा जुबैर से कहा कि जाओ, रौजा खाख (एक स्थान का नाम) में एक स्त्री मिलेगी जो मक्का जा रही होगी। उस के पास एक पत्र है वह ले आओ। यह लोग वह पत्र लाये। तब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: हे हातिव! यह क्या है? उन्होंने कहा: यह काम मैं ने कुफ़ तथा अपने धर्म से फिर जाने के कारण नहीं किया है। बल्कि इस का कारण यह है कि अन्य मुहाजिरीन के मक्का में सम्बन्धी हैं जो उन के परिवार तथा धनों की रक्षा करते हैं। पर मेरा वहाँ कोई सम्बन्धी नहीं है। इसलिये मैं ने चाहा कि उन्हें सूचित कर दूँ। ताकि वे मेरे आभारी रहें। और मेरे समीपवर्तियों की रक्षा करें। आप ने उन की सच्चाई के कारण उन्हें कुछ नहीं कहा। फिर भी अल्लाह ने चेतवनी के रूप में यह आयतें उतारी ताकि भविष्य में कोई मुसलमान काफिरों से ऐसा मैत्री सम्बन्ध न रखे। (सहीह बुखारी: 4890)

तुम्हारे बीच। और अल्लाह जो कुछ तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

4. तुम्हारे लिये इब्राहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है। जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा: निश्चय हम विरक्त है तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वन्दना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। हम ने तुम से कुफ़ किया। खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये। जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर, परन्तु इब्राहीम का (यह) कथन अपने पिता से कि मैं अवश्य तेरे लिये क्षमा की प्रार्थना^[1] करूँगा। और मैं नहीं अधिकार रखता हूँ अल्लाह के समक्ष कुछ। हे हमारे पालनहार! हम ने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही ओर ध्यान किया है और तेरी ही ओर फिर आना है।

5. हे हमारे पालनहार! हमें न बना परीक्षा^[2] (का साधन) काफ़िरों के लिये और हमें क्षमा कर दे, हे हमारे पालनहार! वास्तव में तू ही प्रभुत्वशाली गुणी है।
6. निःसन्देह तुम्हारे लिये उन में एक

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا الْقَوْمُ هُمْ رِثَا بَنِيكُمْ وَإِيتَكُمْ وَمِمَّا اتَّفَقُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ كُفَرًا بِكُمْ وَيَدَّ ابْنُكُمَا وَبَيْنَكُمْ الْخَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدُّكَ الْآقُولُ إِبْرَاهِيمَ لَا يَبِيدُ اسْتَغْفِرُكَ لَكَ وَمَا أَتَىكَ مِنْ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ زَيْنًا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝

رَبِّ الْأَعْمَلِينَ فَتَقَرُّ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَآخِرُ لَكَ رَبِّتَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ

1 इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने जो प्रार्थनायें अपने पिता के लिये की उन के लिये देखिये: सूरह इब्राहीम, आयत: 41, तथा सूरह शुअरा, आयत: 86। फिर जब आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) को यह ज्ञान हो गया कि उन का पिता अल्लाह का शत्रु है तो आप उस से विरक्त हो गये। (देखिये: सूरह तौबा, आयत: 114)

2 इस आयत में मक्का की विजय और अधिकांश मुश्रिकों के ईमान लाने की भविष्यवाणी है जो कुछ ही सप्ताह के पश्चात् पूरी हुई और पूरा मक्का ईमान ले आया।

अच्छा आदर्श है उस के लिये जो आशा रखता हो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (प्रलय) की। और जो विमुख हो तो निश्चय अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الْحَبِيدُ

7. कुछ दूर नहीं कि अल्लाह बना दे तुम्हारे बीच तथा उन के बीच जिन से तुम बैर रखते हो प्रेम।^[1] और अल्लाह बड़ा सामर्थ्यवान है, और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

عَنِ اللَّهِ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

8. अल्लाह तुम को नहीं रोकता उन से जिन्होंने तुम से युद्ध न किया हो धर्म के विषय में, और न बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे देश से, इस से कि तुम उन से अच्छा व्यवहार करो और न्याय करो उन से। वास्तव में अल्लाह प्रेम करता है न्याय^[2] करियों से।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا كُفِّرُوا فِي الدِّينِ وَلَمْ يَخْرُجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ أَنْ تَبْرَأَهُمْ وَتُقْسَطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ

9. तुम्हें अल्लाह बस उन से रोकता है जिन्होंने युद्ध किया हो तुम से धर्म के विषय में तथा बहिष्कार किया हो तुम्हारा तुम्हारे घरों से, और सहायता की हो तुम्हारा बहिष्कार कराने में, कि तुम मैत्री रखो उन से। और जो मैत्री करेंगे उन से तो वही अत्याचारी है।

إِنَّمَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُواكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَظَاهَرُوا بِمَا كُفِّرُوا أَنْ تَوَلَّوْهُمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَإِنَّهُ هُوَ الظَّالِمُونَ

1 अर्थात: उन को मुसलमान कर के तुम्हारा दीनी भाई बना दे। और फिर ऐसा ही हुआ कि मक्का की विजय के बाद लोग तेज़ी के साथ मुसलमान होना आरंभ हो गये। और जो पुरानी दुश्मनी थी वह प्रेम में बदल गई।

2 इस आयत में सभी मनुष्यों के साथ अच्छे व्यवहार तथा न्याय करने की मूल शिक्षा दी गई है। उन के सिवा जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध करते हों और मुसलमानों से बैर रखते हों।

10. हे ईमान वालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान स्त्रियाँ हिजरत कर के आयें तो उन की परीक्षा ले लिया करो। अल्लाह अधिक जानता है उन के ईमान को, फिर यदि तुम्हें यह ज्ञान हो जाये कि वह ईमान वालीयाँ हैं तो उन्हें वापिस न करो^[1] काफिरों की ओर। न वे औरतों हलाल (वैध) हैं उन के लिये और न वे काफिर हलाल (वैध) हैं उन औरतों के लिये^[2] और चुका दो उन काफिरों को जो उन्होंने खर्च किया हो। तथा तुम पर कोई दोष नहीं है कि विवाह कर लो उन से जब दे दो उन को उन का महर (स्त्री उपहार)। तथा न रखो काफिर स्त्रियों को अपने विवाह में, तथा माँग लो जो तुम ने खर्च किया हो। और चाहिये कि वह काफिर माँग लें जो उन्होंने खर्च किया हो। यह अल्लाह का आदेश है, वह निर्णय कर रहा है तुम्हारे बीच, तथा अल्लाह सब जानने वाला गुणी है।

11. और यदि तुम्हारे हाथ से निकल जाये तुम्हारी कोई पत्नी काफिरों की ओर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ
فَأَمْتَحِنُوهُنَّ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ
عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ
لَهُنَّ جُلُوسٌ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُعْرَضُونَ لَهُنَّ وَلَا تُوْهِمُنَّ
أَنْفُسَكُمْ أَوِ الْبَنَاتِ عَلَيْهِمْ أَنْ يَتَخَفَوْهُنَّ إِذَا اتَّيَعْتُمُوهُنَّ
أَجُورُهُنَّ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَافِرَاتِ ۚ وَتَسْأَلُوا
مَا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ أَنْ تَنْفِقُوا إِلَيْكُمْ حُكْمُ اللَّهِ
يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

وَأِنْ فَاتَكُمْ سَتِيٌّ مِنْ أَوْلَادِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ

- 1 इस आयत में यह आदेश दिया जा रहा है कि जो स्त्री ईमान ला कर मदीना हिजरत कर के आ जाये उसे काफिरों को वापिस न करो। यदि वह काफिर की पत्नी रही है तो उस के पती को जो स्त्री उपहार (महर) उस ने दिया हो उसे दे दो। और उन से विवाह कर लो। और अपने विवाह का महर भी उस स्त्री को दो। ऐसे ही जो काफिर स्त्री किसी मुसलमान के विवाह में हो अब उस का विवाह उस के साथ अवैध है। इसलिये वह मक्का जा कर किसी काफिर से विवाह करे तो उस के पती से जो स्त्री उपहार तुम ने उसे दिया है माँग लो।
- 2 अर्थात् अब मुसलमान स्त्री का विवाह काफिर के साथ, तथा काफिर स्त्री का मुसलमान के साथ अवैध (हराम) कर दिया गया है।

और तुम को बदले^[1] का अवसर मिल जाये तो चुका दो उन को जिन की पत्नियाँ चली गई है उस के बराबर जो उन्होंने खर्च किया है। तथा डरते रहो उस अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो।

12. हे नबी! जब आयें आप के पास ईमान वालियाँ ताकि^[2] वचन दें आप को इस पर कि वह साझी नहीं बनायेंगी अल्लाह का किसी को और न चोरी करेगी और व्यभिचार करेगी और न बध करेगी अपनी संतान को और न कोई ऐसा आरोप (कलंक) लगायेंगी जिसे उन्होंने घड़ लिया हो आपने हाथों तथा पैरों के आगे और नहीं अवैजा करेगी आप की किसी भले काम में तो आप वचन ले लिया करें उन से तथा क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अल्लाह से। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील तथा दयावान् है।

13. हे ईमान वालो! तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ क्रोधित हो गया है अल्लाह जिन पर। वह निराश हो चुके

فَعَاقِبْتُمْ مَنَاقِبَ الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَا آتَوْا وَاللَّهُ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يَبْتَاعُكِ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِهَتَّالٍ يُفْتَرِيْنَ بَيْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْبِيَنَّكِ فِي مَعْرُوفٍ قَبَائِعَهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَظُنُّوْنَ مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَبْغِي الْكَافِرُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

1 भावार्थ यह है कि मुसलमान हो कर जो स्त्री आ गई है उस का महर जो उस के काफिर पति को देना है वह उसे न दे कर उस के बराबर उस मुसलमान को दे दो जिस की काफिर पत्नी उस के हाथ से निकल गई है।

2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस आयत द्वारा उन की परीक्षा लेते और जो मान लेती उस से कहते कि जाओ मैं ने तुम से वचन ले लिया। और आप ने (अपनी पत्नियों के इलावा) कभी किसी नारी के हाथ को हाथ नहीं लगाया। (सहीह बुखारी: 4891, 93, 94, 95)

हैं आखिरत^[1] (परलोक) से उसी प्रकार
जैसे काफिर समाधियों में पड़े हुये
लोगों (के जीवित होने) से निराश हैं।

1 आखिरत से निराश होने का अर्थ उस का इन्कार है जैसे उन्हें मरने के पश्चात् जीवन का इन्कार है।

सूरह सफ़ - 61

سُورَةُ الصَّفِّ

सूरह सफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 14 आयतें हैं।

- इस सूरह की आयत 4 में ((सफ़)) शब्द आया है जिस का अर्थ पंक्ति है। उसी से यह नाम लिया गया है। और प्रथम आयत में आकाशों तथा धरती की प्रत्येक चीज़ के अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता का गुण गान करने) की चर्चा की गई है। फिर मुसलमानों पर जो अपनी बात के अनुसार कर्म नहीं करते और वचन भंग करते हैं उन की निन्दा है। तथा उन की सराहना है जो मिल कर अल्लाह की राह में संघर्ष करते और अपना वचन पूरा करते हैं।
- आयत 5 और 6 में मुसलमानों को सावधान किया गया है कि यहूदियों की नीति पर न चलें जिन्होंने मुसा (अलैहिस्सलाम) को दुख दिया। और कुरीति अपनाई जिस से उन के दिल टेढ़े हो गये। फिर उन्होंने अपने सभी रसूलों का इन्कार किया जो खुली निशानियाँ लाये।
- इस में इस्लाम के विरोधियों को सावधान करते हुये बताया गया है कि अल्लाह अपना प्रकाश पूरा करेगा और उस का धर्म सभी धर्मों पर प्रभुत्वशाली होगा। काफ़िरों और मुश्रिकों को कितना ही बुरा क्यों न लगे।
- मुसलमानों को ईमान की माँग पूरी करने तथा जिहाद करने का आदेश देते हुये परलोक में उस के प्रतिफल, तथा संसार में सहायता और विजय की शुभ सूचना दी गई है।
- ईसा (अलैहिस्सलाम) के साथियों का उदाहरण दे कर अल्लाह के धर्म की सहायता करने का आमंत्रण दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का गान करती है जो वस्तु आकाशों तथा धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली गुणी है।

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

2. हे ईमान वालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं।
3. अत्यंत अप्रिय है अल्लाह को तुम्हारी वह बात कहना जिसे तुम (स्वयं) करते नहीं।
4. निःसंदेह अल्लाह प्रेम करता है उन से जो युद्ध करते हैं उस की राह में पंक्तिबंद हो कर जैसे कि वह सीसा पिलायी दीवार हों।
5. तथा याद करो जब कहा मूसा ने अपनी जाति से: हे मेरे समुदाय! तुम क्यों दुःख देते हो मुझ को जब कि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी ओर? फिर जब वह टेढ़े हो रह गये तो टेढ़े कर दिये अल्लाह ने उन के दिल। और अल्लाह संमार्ग नहीं दिखाता उल्लंघनकारियों को।
6. तथा याद करो जब कहा, मर्यम के पुत्र ईसा ने: हे इस्राईल की संतान! मैं तुम्हारी अरि रसूल हूँ, और पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझ से पूर्व आयी है। तथा शुभ सूचना देने वाला हूँ एक रसूल की जो आयेगा मेरे पश्चात्, जिस का नाम अहमद है। फिर जब वह आ गये उन के पास खुले प्रमाणों को ले कर तो उन्होंने कह दिया कि यह तो खुला जादू है।
7. और उस से अधिक अत्याचारी कौन होगा जो झूठ घड़े अल्लाह पर जब कि वह बुलाया जा रहा हो इस्लाम

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ۖ

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۖ

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا
كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُومٌ ۖ

وَلَذَ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ
تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَلَمَّا تَرَ أَفْوَازًا عَاثَرَهُ
اللَّهُ فَكَلَّمَهُمْ وَأَنَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الضَّالِّينَ ۖ

وَلَذَ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ
اللَّهُ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِن بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ
فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۖ

وَمِنَ الظَّالِمِينَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الذَّنْبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ
إِلَى الْإِسْلَامِ وَأَنَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۖ

की ओर। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारी जाति को।

8. वह चाहते हैं कि बुझा दें अल्लाह के प्रकाश को अपने मुखों से। तथा अल्लाह पूरा करने वाला है अपने प्रकाश को, यद्यपि बुरा लगे काफ़िरो को।
9. वही है जिस ने भेजा है अपने रसूल को संमार्ग तथा सत्धर्म के साथ ताकि प्रभावित कर दे उसे प्रत्येक धर्म पर चाहे बुरा लगे मुश्रिकों को।
10. हे ईमान वालो! क्या मैं बता दूँ तुम्हें ऐसा व्यापार जो बचा ले तुम को दुःखदायी यातना से?
11. तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल पर और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से यही तुम्हारे लिये उत्तम है यदि तुम जानो।
12. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे पापों को और प्रवेश देगा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती हैं जिन में नहरें तथा स्वच्छ घरों में स्थायी स्वर्गों में। यही बड़ी सफलता है।
13. और एक अन्य (प्रदान) जिस से तुम प्रेम करते हो। वह अल्लाह की सहायता तथा शीघ्र विजय है। तथा शुभसूचना सुना दो ईमान वालों को।
14. हे ईमान वालो! तुम बन जाओ अल्लाह (के धर्म) के सहायक जैसे मर्यम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था कि कौन मेरा सहायक है

يُرِيدُونَ لِيُظْفِقُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ مُرِيدُ نُورِهِ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿٨﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ
عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٠﴾

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

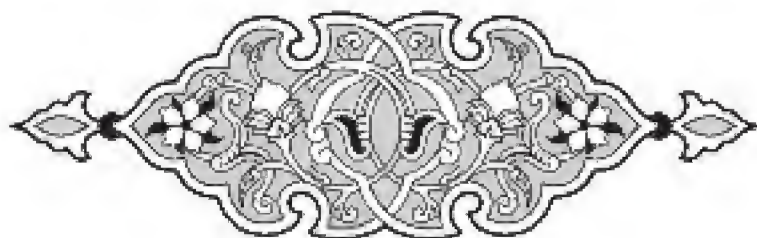
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ كُلِّبَةٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

وَأُخْرَى يُحِبُّونَهَا تَصَدَّقُونَ بِاللَّهِ وَقَوْمٍ قَرِيبٍ
وَبَشِيرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّخَذَ اللَّهُ لَكُمْ آيَةً قَالَ عِيسَى
ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ
الْحَوَارِيُّونَ مَنْ أَنْصَارَ اللَّهِ فَأَمْنَتْ ظُلُمَةُ مِنْ بَنِي

अल्लाह (के धर्म के प्रचार में)? तो हवारियों ने कहा: हम हैं अल्लाह के (धर्म के) सहायक। तो ईमान लाया ईसाईलियों का एक समूह और कुफ़्र किया दूसरे समूह ने। तो हम ने समर्थन दिया उन को जो ईमान लाये उन के शत्रु के विरुद्ध, तो वही विजयी रहे।

إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ
أَمْتُوا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ٥١



सूरह जुमुआ - 62

سُورَةُ الْجُمُعَةِ

सूरह जुमुआ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की आयत 9 में जुमुआ का महत्व बताया गया है। इसलिये इस का नाम सूरह जुमुआ है।
- इस की आरंभिक आयत में अल्लाह की तस्बीह (पवित्रता) और उस के गुणों का वर्णन है।
- इस में अल्लाह के अनुग्रह को बताया गया है कि उस ने उम्मियों (अरबों) में एक रसूल भेजा है और यहूदियों के कुकर्म और निर्मूल दावों पर पकड़ की गई है।
- मुसलमानों को जुमुआ की नमाज़ का पालन करने पर बल दिया गया है।
- हदीस में है कि उत्तम दिन जिस में सूर्य निकलता है जुमुआ का दिन है। उसी में आदम (अलैहिस्सलाम) पैदा किये गये। उसी दिन स्वर्ग में रखे गये। और उसी दिन स्वर्ग से निकाले गये। तथा प्रलय भी इसी दिन आयेगी। (सहीह मुस्लिम: 854) एक दूसरी हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: लोग जुमुआ छोड़ने से रुक जायें अन्यथा अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देगा। (सहीह मुस्लिम: 856)
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ की नमाज़ में यह सूरह और सूरह मुनाफ़िकून पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: 877)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती है वह सब चीज़ें जो आकाशों तथा धरती में हैं। जो अधिपति, अति पवित्र, प्रभावशाली गुणी (दक्ष) है।

يَسْمُوهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكُ
الْقُدُّوسُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

2. वही है जिस ने निरक्षरों^[1] में एक रसूल भेजा उन्हीं में से। जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतें और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक (कुर्आन) तथा तत्वदर्शिता (सुन्नत^[2]) की। यद्यपि वह इस से पूर्व खुले कुपथ में थे।
3. तथा दूसरों के लिये भी उन में से जो अभी उन से नहीं^[3] मिले हैं। वह अल्लाह प्रभुत्वशाली गुणी है।
4. यह^[4] अल्लाह का अनुग्रह है जिसे वह प्रदान करता है उस के लिये जिस के लिये वह चाहता है। और अल्लाह बड़े अनुग्रह वाला है।
5. उन की दशा जिन पर तौरात का भार रखा गया फिर तदानुसार कर्म

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَكَانَ الْأَوَّلِينَ قَبْلَ لُقْيِ صَلِّ بْنِ تَيْمِيَّةٍ ۝

وَالْآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَثَلُ الَّذِينَ خَسِرُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ كَانُوا يَحْمِلُونَهَا كَنَصْلٍ

- 1 अनभिज्ञों से अभिप्राय: अरब हैं। अर्थात् जो अहले किताब नहीं हैं। भावार्थ यह है कि पहले रसूल इस्राईल की संतति में आते रहे। और अब अन्तिम रसूल इस्माईल की संतति में आया है। जो अल्लाह की पुस्तक कुर्आन पढ़ कर सुनाते हैं। यह केवल अरबों के नबी नहीं पूरे मनुष्य जाति के नबी हैं।
- 2 सुन्नत जिस के लिये हिक्मत शब्द आया है उस से अभिप्राय साधारण परिभाषा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस, अर्थात् आप का कथन और कर्म इत्यादि है।
- 3 अर्थात् आप अरब के सिवा प्रलय तक के लिये पूरे मानव संसार के लिये भी रसूल बना कर भेजे गये हैं। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से प्रश्न किया गया कि वह कौन हैं? तो आप ने अपना हाथ सल्मान फारसी के ऊपर रख दिया। और कहा: यदि ईमान सुरध्या (आकाश के कुछ तारों का नाम) के पास भी हो तो कुछ लोग उस को वहाँ से भी प्राप्त कर लेंगे। (सहीह बुखारी: 4897)
- 4 अर्थात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अरबों तथा पूरे मानव संसार के लिये रसूल बनाना।

नहीं किया उस गधे के समान है जिस के ऊपर पुस्तकें^[1] लदी हुई हों। बुरा है उस जाति का उदाहरण जिन्होंने झुठला दिया अल्लाह की आयतों को। और अल्लाह मार्ग दर्शन नहीं देता अत्याचारियों को।

6. आप कह दें कि हे यहूदियों! यदि तुम समझते हो कि तुम्हीं अल्लाह के मित्र हो अन्य लोगों के अतिरिक्त, तो कामना करो मरण की यदि तुम सच्चे^[2] हो?

7. तथा वह अपने किये हुये कर्तूतों के कारण कदापि उस की कामना नहीं करेंगे। और अल्लाह भली-भाँति अवगत है अत्याचारियों से।

8. आप कह दें कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह अवश्य तुम से मिल कर रहेगी। फिर तुम अवश्य फेर दिये जाओगे परोक्ष (छुपे) तथा प्रत्येक (खुले) के ज्ञानी की ओर। फिर वह तुम को सूचित कर देगा उस से जो तुम करते रहे^[3]

9. हे ईमान वालो! जब अज्ञान दी जाये नमाज़ के लिये जुमुआ के दिन तो

الْحَبَرُ عَمِلَ لِنَفْسِهِ مِثْلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادَوْا إِن زَعَمْتُمْ أَن لَّيَالِيُنَا
مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ

وَلَا يَتَمَنَّوْنَ إِلَهًا قَدْ مَتَّ أَيْدِيَهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ

قُلْ إِن الْمَوْتَ الَّذِي تَخِفُونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ مُلْقِيكُمْ
مُتَشَرِّدُونَ إِلَىٰ ظِلِّ الْقَيْبِ وَالشَّهَادَةِ يَتَبَيَّنُّكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ

1 अर्थात् जैसे गधे को अपने ऊपर लदी हुई पुस्तकों का ज्ञान नहीं होता कि उन में क्या लिखा है वैसे ही यह यहूदी तौरात के आदेशानुसार कर्म न कर के गधे के समान हो गये हैं।

2 यहूदियों का दावा था कि वही अल्लाह के प्रियवर हैं। (देखिये: सूरह बक़रा, आयत: 111, तथा सूरह माइदा, आयत: 18) इसलिये कहा जा रहा है कि स्वर्ग में पहुँचने के लिये मौत की कामना करो।

3 अर्थात् तुम्हारे दुष्कर्मों के परिणाम से।

दौड़^[1] जाओ अल्लाह की याद की ओर
तथा त्याग दो क्रय-विक्रय।^[2] यह
उत्तम है तुम्हारे लिये यदि तुम जानो।

10. फिर जब नमाज़ हो जाये तो फैल
जाओ धरती में। तथा खोज करो
अल्लाह के अनुग्रह की तथा वर्णन
करते रहो अल्लाह का अत्यधिक ताकि
तुम सफल हो जाओ।

11. और जब वह देख लेते हैं कोई
व्यापार अथवा खेल तो उस की ओर
दौड़ पड़ते हैं।^[3] तथा आप को छोड़
देते हैं खड़े। आप कह दें कि जो कुछ
अल्लाह के पास है वह उत्तम है खेल
तथा व्यापार से। और अल्लाह सर्वोत्तम
जीविका प्रदान करने वाला है।

الْجُمُعَةَ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ
ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا
مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَادْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١١﴾

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ
قُلُوبًا قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ اللَّهْوِ وَمِنَ
التِّجَارَةِ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١٢﴾

1 अर्थ यह है कि जुमुआ की अज़ान हो जाये तो अपने सारे कारोबार बंद कर के
जुमुआ का खुतबा सुनने, और जुमुआ की नमाज़ पढ़ने के लिये चल पड़ो।

2 इस से अभिप्राय संसारिक कारोबार है।

3 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जुमुआ का खुतबा (भाषण)
दे रहे थे कि एक कारवाँ गुल्ला लेकर आ गया। और सब लोग उस की ओर
दौड़ पड़े। बारह व्यक्ति ही आप के साथ रह गये। उसी पर अल्लाह ने यह आयत
उतारी (सहीह बुखारी: 4899)

सूरह मुनाफिकून - 63

سُورَةُ الْمُنَافِقِينَ

सूरह मुनाफिकून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है।
- इस में मुनाफिकों के उस दुर्व्यवहार का वर्णन है जो उन्होंने इस्लाम के विरोध में अपना रखा था जिस के कारण वह अक्षम्य अपराध के दोषी बन गये।
- आयत 9 से 11 तक में ईमान वालों को संबोधित कर के अल्लाह का स्मरण (याद) करने तथा उस की राह में दान करने पर बल दिया गया है। जिस से निफाक (द्विधा) के रोग का पता भी लगता है। और उसे दूर करने का उपाय भी सामने आ जाता है।
- हदीस में है कि मुनाफिक के लक्षण तीन हैं: जब वह बात करे तो झूठ बोले। और जब वादा करे तो मुकर जाये। और जब उस के पास अमानत रखी जाये तो उस में ख्यानत (विश्वासघात) करे। (सहीह बुखारी: 33, सहीह मुस्लिम: 59)
- दूसरी हदीस में एक चौथा लक्षण यह बताया गया है कि जब वह झगड़ा करे तो गाली दे। (सहीह बुखारी: 34, तथा सहीह मुस्लिम: 58)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आते हैं आप के पास मुनाफिक तो कहते हैं कि हम साक्ष्य (गवाही) देते हैं कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। तथा अल्लाह जानता है कि वास्तव में आप अल्लाह के रसूल हैं। और अल्लाह गवाही देता है कि

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ
لَكَاذِبُونَ ۝

मुनाफिक निश्चय झूठे^[1] हैं।

2. उन्होंने बना रखा है अपनी शपथों को एक ढाल और रुक गये अल्लाह की राह से। वास्तव में वह बड़ा दुष्कर्म कर रहे हैं।
3. यह सब कुछ इस कारण है कि वे ईमान लाये फिर कुफ्र कर गये तो मुहर लगा दी अल्लाह ने उन के दिलों पर, अतः वह समझते नहीं।
4. और यदि आप उन्हें देखें तो आप को भा जायें उन के शरीर। और यदि वह बात करें तो आप सुनने लगे उन की बात, जैसे कि वह लकड़ियाँ हों दीवार के सहारे लगाई^[2] हुई। वह प्रत्येक कड़ी ध्वनी को अपने विरुद्ध^[3] समझते हैं। वही शत्रु है, आप उन से सावधान रहें। अल्लाह उन को नाश करे, वह किधर फिरे जा रहे हैं।

اَتَّخَذُوا اٰيٰتِهِمْ حُجَّةً فَاَعَنَ يٰۤاَيُّهَا اللّٰهُ
اِنَّهُمْ سَآءُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَغَضِبَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَنُفِثَ
لَهُمْ فِىْ قُلُوْبِهِمْ ۝

وَاِذَا رَاٰتِهِمْ تَحِيَّكَ اَجْسَامُهُمْ وَانْ يُقُوْلُوْا سَمِعَ
الْقَوْلَ لَهِمْ كَانَتْ لَهُمْ قُلُوْبٌ فَاسْتَدَّاهُمْ يَحْسِبُوْنَ كُلَّ صِيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوْا فَاَحْزَنُوْهُمْ قَالَتْ لَهُمْ اِلٰهَةُ اٰلِ يٰۤاُوْفٍ كُوْنُوْا ۝

- 1 आदरणीय जैद पुत्र अर्कम (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक युद्ध में मैं ने (मुनाफिकों के प्रमुख) अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को कहते हुये सुना कि उन पर खर्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास हैं। यहाँ तक कि वह बिखर जायें आप के आस-पास से। और यदि हम मदीना वापिस गये तो हम सम्मानित उस से अपमानित (इस से अभिप्राय वह मुसलमानों को ले रहे थे) को अवश्य निकाल दूँगे। मैं ने अपने चाचा को यह बात बता दी। और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बता दी। तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अब्दुल्लाह पुत्र उबय्य को बुलाया। उस ने और उस के साथियों ने शपथ ले ली कि उन्होंने यह बात नहीं कही है। इस कारण आप ने मुझे (अर्थात: जैद पुत्र अर्कम) झूठा समझ लिया। जिस पर मुझे बड़ा शोक हुआ। और मैं घर में रहने लगा। फिर अल्लाह ने यह सूरह उतारी तो आप ने मुझे बुला कर सुनायी। और कहा कि हे जैद! अल्लाह ने तुम्हें सच्चा सिद्ध कर दिया है। (सहीह बुखारी: 4900)

- 2 जो देखने में सुन्दर परन्तु निर्बोध होती हैं।

- 3 अर्थात प्रत्येक समय उन्हें धड़का लगा रहता है कि उन के अपराध खुल न जायें।

5. जब उन से कहा जाता है कि आओ, ताकि क्षमा की प्रार्थना करें तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल, तो मोड़ लेते हैं अपने सिर। तथा आप उन्हें देखते हैं कि वह रुक जाते हैं अभिमान (घमंड) करते हुये।
6. हे नबी! उन के समीप समान है कि आप क्षमा की प्रार्थना करें उन के लिये अथवा क्षमा की प्रार्थना न करें उन के लिये। कदापि नहीं क्षमा करेगा अल्लाह उन को। वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अवैज्ञाकारियों को।
7. यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि मत खर्च करो उन पर जो अल्लाह के रसूल के पास रहते हैं ताकि वह बिखर जायें। जब कि अल्लाह ही के अधिकार में है आकाशों तथा धरती के सभी कोष (खजाने)। परन्तु मुनाफिक समझते नहीं हैं।
8. वे कहते हैं कि यदि हम वापिस पहुँच गये मदीना तक तो निकाल^[1] देगा सम्मानित उस से अपमानित को। जब कि अल्लाह ही के लिये सम्मान है एवं उस के रसूल तथा ईमान वालों के लिये। परन्तु मुनाफिक जानते नहीं।
9. हे ईमान वालो! तुम्हें अचेत न करें तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण (याद) से। और जो ऐसा करेंगे वही क्षति ग्रस्त है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَتَخَفَتُوا لَكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ ذَا
رَوْوَسَاءُكُمْ وَرَأَيْتُمْ بُصَادُونَ وَهُمْ يُسْتَكْبَرُونَ ①

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ
يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ②

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَيَّ مِنْ عِنْدَ رَسُولِ
اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُوا أَبْطُلُهُمْ خَزَائِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ③

يَقُولُونَ لَوْ لَمْ تَجْعَلْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ
مِنْهَا الْإَذْنَ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ④

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ
عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْخَاسِرُونَ ⑤

1 सम्मानित: मुनाफिकों के मुख्या अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल्लय ने स्वयं को, तथा अपमानित: रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहा था।

10. तथा दान करो उस में से जो प्रदान किया है हम ने तुम को, इस से पूर्व कि आ जाये तुम में से किसी के मरण का^[1] समय, तो कहे कि मेरे पालनहार! क्यों नहीं अवसर दे दिया मुझ को कुछ समय का ताकि मैं दान करता तथा सदाचारियों में हो जाता।
11. और कदापि अवसर नहीं देता अल्लाह किसी प्राणी को जब आ जाये उस का निर्धारित समय। और अल्लाह भली-भाँति सूचित है उस से जो कुछ तुम कर रहे हो।

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِنَ الصَّالِحِينَ ①

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ②

1 हदीस में है कि मनुष्य का वास्तविक धन वही है जिस को वह इस संसार में दान कर जाये। और जिसे वह छोड़ जाये तो वह उस का नहीं बल्कि उस के वारिस का धन है। (सहीह बुखारी: 6442)

सूरह तगाबुन - 64

سُورَةُ التَّغَابُنِ

सूरह तगाबुन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 18 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की आयत 9 में ((तगाबुन)) शब्द से लिया गया है। इस में अल्लाह का परिचय देते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व की रचना सत्य के साथ हुई है। तथा नबूवत और परलोक के इन्कार के परिणाम से सावधान किया गया है। और ईमान लाने का आदेश दे कर हानि के दिन से सतर्क किया गया है। और ईमान तथा इन्कार दोनों का अन्त बताया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में समझाया गया है कि संसारिक जीवन के भय से अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा पालन से मूँह न फेरना अन्यथा इस का अन्त विनाश कारी होगा।
- इस की आयत 14 से 18 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों और संतान की ओर से सावधान रहने का निर्देश दिया गया है कि वह उन्हें कुपथ न कर दें। और धन तथा संतान के मोह में परलोक से अचेत न हो जायें। और जितना हो सके अल्लाह से डरते रहें। और अल्लाह की राह में दान करते रहें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह की पवित्रता वर्णन करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों में है तथा जो धरती में है। उसी का राज्य है, और उसी के लिये प्रशंसा है। तथा वह जो चाहे कर सकता है।

يَسْبِغْ يَدَايَ السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَهُ
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَبْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١

2. वही है जिस ने उत्पन्न किया है तुम को, तो तुम में से कुछ काफिर है, और तुम में से कोई ईमान वाला है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسِهِ فَاتَّبِعُوهُ أَفِرُّوْا مِنْكُمْ
مُؤْمِنٌ وَاللَّهُ يَمَّا تَعْمَلُونَ ٢

उसे देख रहा है।^[1]

3. उस ने उत्पन्न किया आकाशों तथा धरती को सत्य के साथ, तथा रूप बनाया तुम्हारा तो सुन्दर बनाया तुम्हारा रूप, और उसी की ओर फिर कर जाना है।^[2]

4. वह जानता है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, और जानता है जो तुम मन में रखते हो और जो बोलते हो। तथा अल्लाह भली-भाँति अवगत है दिलों के भेदों से।

5. क्या नहीं आई तुम्हारे पास उन की सूचना जिन्होंने कुफ़ किया इस से पूर्व? तो उन्होंने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम। और उन्हीं के लिये दुःखदायी यातना है।^[3]

6. यह इस लिये कि आते रहे उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ ले कर। तो उन्होंने कहा: क्या कोई मनुष्य हमें मार्ग दर्शन^[4] देगा? अतः उन्होंने कुफ़ किया। तथा मुँह फेर लिया और अल्लाह (भी उन से) निश्चिन्त हो गया तथा अल्लाह निस्पृह प्रशंसित है।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِدَاخِ الْغُضُوفِ ۝

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُوءُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَدْ آتَوْا دِيَارَ آلِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا آلُوا آيَاتِهَا وَتَوَلَّوْا فَكُنَّا مُتَعَفِّينَ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَمِيدٌ ۝

1 देखने का अर्थ कर्मों के अनुसार बदला देना है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन कर्मों का प्रतिफल पाने के लिये।

3 अर्थात् परलोक में नरक की यातना है।

4 अर्थात् रसूल मनुष्य कैसे हो सकता है। यह कितनी विचित्र बात है कि पत्थर की मूर्तियों को तो पूज्य बना लिया जाये इसी प्रकार मनुष्य को अल्लाह का अवतार और पुत्र बना लिया जाये, पर यदि रसूल सत्य ले कर आये तो उसे न माना जाये। इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य कुपथ करे तो यह मान्य है, और यदि वह सीधी राह दिखाये तो मान्य नहीं।

7. समझ रखा है काफ़िरों ने कि वह कदापि फिर जीवित नहीं किये जायेंगे। आप कह दें कि क्यों नहीं? मेरे पालनहार की शपथ! तुम अवश्य जीवित किये जाओगे। फिर तुम्हें बताया जायेगा कि तुम ने (संसार में) क्या किया है। तथा यह अल्लाह पर अति सरल है।
8. अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह तथा उस के रसूल^[1] पर। तथा उस नूर (ज्योति^[2]) पर जिसे हम ने उतारा है। तथा अल्लाह उस से जो तुम करते हो भली-भाँति सूचित है।
9. जिस दिन वह तुम को एकत्र करेगा एकत्र किये जाने वाले दिन। तो वह क्षति (हानि) के खुल जाने^[3] का दिन होगा। और जो ईमान लाया अल्लाह पर तथा सदाचार करता है तो वह क्षमा कर देगा उस के दोषों को, और प्रवेश देगा उसे ऐसे स्वर्गों में बहती होंगी जिन में नहरें वह सदावासी होंगे उन में। यही बड़ी सफलता है।
10. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और झुठलाया हमारी आयतों (निशानियों) को तो वही नारकी हैं जो सदावासी होंगे उस (नरक) में। तथा वह बुरा ठिकाना है।

رَعِمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا
بَلْ وَرَقِ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ

فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ
وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ النُّورُ الْعَظِيمُ

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

1. इस से अभिप्राय अन्तिम रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।

2. ज्योति से अभिप्राय अन्तिम ईश-वाणी कुर्आन है।

3. अर्थात् काफ़िरों के लिये, जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया।

11. जो आपदा आती है वह अल्लाह ही की अनुमति से आती है। तथा जो अल्लाह पर ईमान^[1] लाये तो वह मार्ग दर्शन देता^[2] है उस के दिल को। तथा अल्लाह प्रत्येक चीज़ को जानता है।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

12. तथा आज्ञा का पालन करो अल्लाह की तथा आज्ञा का पालन करो उस के रसूल की। फिर यदि तुम विमुख हुये तो हमारे रसूल का दायित्व केवल खुले रूप से (उपदेश) पहुँचा देना है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝

13. अल्लाह वह है जिस के सिवा कोई बंदनीय (सच्चा पूज्य) नहीं है। अतः अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये ईमान वालों को।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

14. हे लोगो जो ईमान लाये हो! वास्तव में तुम्हारी कुछ पत्नियाँ तथा संतान तुम्हारी शत्रु^[3] हैं। अतः उन से सावधान रहो। और यदि तुम क्षमा से काम लो तथा सुधार करो और क्षमा कर दो तो वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

15. तुम्हारे धन तथा तुम्हारी संतान तो तुम्हारे लिये एक परीक्षा है।

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ عِنْدَ

1 अर्थ यह है कि जो व्यक्ति आपदा को यह समझ कर सहन करता है कि अल्लाह ने यही उस के भाग्य में लिखा है।

2 हदीस में है कि ईमान वाले की दशा विभिन्न होती है। और उस की दशा उत्तम ही होती है। जब उसे सुख मिले तो कृतज्ञ होता है। और दुख हो तो सहन करता है। और यह उस के लिये उत्तम है। (मुस्लिम: 2999)

3 अर्थात् जो तुम्हें सदाचार एवं अल्लाह के आज्ञापालन से रोकते हों, फिर भी उन का सुधार करने और क्षमा करने का निर्देश दिया गया है।

أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

तथा अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल^[1]
(बदला) है।

16. तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके तथा सुनो और आज्ञा पालन करो और दान करो। यह उत्तम है तुम्हारे लिये। और जो बचा लिया गया अपने मन की कंजूसी से तो वही सफल होने वाले हैं।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا
وَأَقْبُوا خَيْرَ الْأَنْفُسِ كُمْ وَمَنْ يُؤْتِ شَيْئًا
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

17. यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण^[2] दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बड़ा कर देगा, और क्षमा कर देगा तुम्हें। और अल्लाह बड़ा गुणग्राही सहनशील है।

إِنْ تَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعِفْهُ لَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝

18. वह परोक्ष और हाज़िर का ज्ञान रखने वाला है। वह अति प्रभावी तथा गुणी है।

عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

1 भावार्थ यह है कि धन और संतान के मोह में अल्लाह की अवैज्ञा न करो।

2 ऋण से अभिप्राय अल्लाह की राह में दान करना है।

सूरह तलाक - 65

سُورَةُ الطَّلَاقِ

सूरह तलाक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस सूरह में तलाक के नियम और आदेश बताये गये हैं। और मुसलमानों को चेतावनी दी गई है कि अल्लाह के आदेशों से मुंह न फेरें। और अवैज्ञाकारी जातियों के परिणाम को याद रखें। दूसरे शब्दों में इस्लाम के परिवारिक नियमों का पालन करें।
- «इद्दत» उस निश्चित अवधि का नाम है जिस के भीतर स्त्री के लिये तलाक या पति की मौत के पश्चात् दूसरे से विवाह करना अवैध और वर्जित होता है। तलाक के मूल नियम सूरह बकरा तथा सूरह अहज़ाब में वर्णित हुये हैं। इस आयत में तलाक देने का समय बताया गया है कि तलाक ऐसे समय में दी जाये जब इद्दत का आरंभ हो सके। अर्थात् मासिक धर्म की स्थिति में तलाक न दी जाये। और मासिक धर्म से पवित्र होने पर संभोग न किया गया हो तब तलाक दी जाये। «इद्दत के समय» से अभिप्राय यहाँ यही है। फिर यदि «तलाक रजई» दी हो तो निर्धारित अवधि पूरी होने तक वह अपने पति के घर ही में रहेगी। परन्तु यदि व्यभिचार कर जाये तो उसे घर से निकाला जा सकता है। नई बात उत्पन्न करने का अर्थ यह है कि अवधि के भीतर पति अपनी पत्नी को वापिस कर ले जिसे «रजअत» करना कहा जाता है। और यह बात «रजई तलाक» में ही होती है। अर्थात् जब एक या दो तलाक ही दी हों। इस में यह संकेत भी है कि यदि पति तीन तलाक दे चुका हो जिस के पश्चात् पति को रजअत का अधिकार नहीं होता तो पत्नी को भी उस के घर में रहने का अधिकार नहीं रह जाता। और न पति पर इस अवधि में उस के खाने-कपड़े का भार होता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! जब तुम लोग तलाक दो
अपनी पत्नियों को तो उन्हें तलाक

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ مِنْ بَعْدِ تِهْنٍ

दो उन की «इद्दत» के लिये, और गणना करो «इद्दत» की। तथा डरो अपने पालनहार, अल्लाह से। और न निकालो उन को उन के घरों से, और न वह स्वयं निकलें परन्तु यह कि वह कोई खुली बुराई कर जायें। तथा यह अल्लाह की सीमायें हैं। और जो उल्लंघन करेगा अल्लाह की सीमाओं का तो उस ने अत्याचार कर लिया अपने ऊपर। तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह कोई नई बात उत्पन्न कर दे इस के पश्चात्।

2. फिर जब पहुँचने लगें अपने निर्धारित अवधि को तो उन्हें रोक लो नियमानुसार अथवा अलग कर दो नियमानुसार^[1] और गवाह (साक्षी) बनालो^[2] अपने में से दो न्यायकारियों को। तथा सीधी गवाही दो अल्लाह के^[3] लिये। इस की शिक्षा दी जा रही है उसे जो ईमान रखता हो अल्लाह तथा अन्त-दिवस (प्रलय) पर। और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उस के लिये कोई निकलने का उपाय।
3. और उस को जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो। तथा जो अल्लाह पर निर्भर रहेगा तो वही उसे पर्याप्त है। निश्चय अल्लाह अपना कार्य पूरा कर

وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمُ الَّذِي تَخْرُجُونَ مِنْ
بُيُوتِهِمْ وَلَا يَخْرُجُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِمَا جِئْتُمُ بِهِ
وَذَلِكَ حَدُّوَدِ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُخْدِثُ بِمَذَلِكَ أَمْرًا ۝

وَإِذَا بَلَغَ أَجَلُهُنَّ فَامْسُكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ
كَارِهٍ ۚ وَمَنْ يَمْسُكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنكُمْ
وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكَ يُوَفِّيهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَشْتَقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ
مَخْرَجًا ۝

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ
فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بِالْأَمْرِ قَدِيرٌ ۝ جَعَلَ اللَّهُ لِلْغُلَّ
مَنْ تَدْرُكُ ۝

1. अर्थात् तलाक तथा रज्अत पर।

2. यदि एक या दो तलाक दी हो। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 229)

3. अर्थात् निष्पक्ष हो कर।

के रहेगा।^[1] अल्लाह ने प्रत्येक वस्तु के लिये एक अनुमान (समय) नियत कर रखा है।

4. तथा जो निराश^[2] हो जाती है मासिक धर्म से तुम्हारी स्त्रियों में से यदि तुम्हें संदेह हो तो उन की निर्धारित अवधि तीन मास है। तथा उन की जिन्हें मासिक धर्म न आता हो। और गर्भवती स्त्रियों की निर्धारित अवधि यह है कि प्रसव हो जाये। तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उस के लिये उस का कार्य सरल कर देगा।

5. यह अल्लाह का आदेश है जिसे उतारा है तुम्हारी ओर, अतः जो अल्लाह से डरेगा^[3] वह क्षमा कर देगा उस से उस के दोषों को तथा प्रदान करेगा उसे बड़ा प्रतिफल।

6. और उन को (निर्धारित अवधि में)

وَالَّذِي يَخْشَى مِنَ الْمَعْصِيَةِ مِنْ رَبِّهِ إِنْ أَرْتَبْتُمْ
فَعِدَّةٌ لَهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ يَحِضْ وَأُولَئِكَ
الْأَحْصَاءُ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ
يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلْنَاهُ الْكِتَابَ وَمَنْ يُتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ
سَبِيلًا وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ⑥

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ دُونِكُمْ

- 1 अर्थात् जो दुख तथा सुख भाग्य में अल्लाह ने लिखा है वह अपने समय में अवश्य पूरा होगा।

- 2 निश्चित अवधि से अभिप्राय वह अवधि है जिस के भीतर कोई स्त्री तलाक़ पाने के पश्चात् दूसरा विवाह नहीं कर सकती। और यह अवधि उस स्त्री के लिये जिसे दीर्घायु अथवा अल्पायु होने के कारण मासिक धर्म न आये तीन मास तथा गर्भवती के लिये प्रसव है। और मासिक धर्म आने की स्थिति में तीन मासिक धर्म पूरा होना है।

हदीस में है कि सुबैआ असलमिय्या (रज़ियल्लाहु अन्हा) के पति मारे गये तो वह गर्भवती थी। फिर चालीस दिन बाद उस ने शिशु जन्म दिया। और जब उस की मंगनी हुई तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उसे विवाह दिया। (सहीह बुखारी: 4909)

पति की मौत पर चार महीना दस दिन की अवधि उस के लिये है जो गर्भवती न हो। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 226)

- 3 अर्थात् उस के आदेश का पालन करेगा।

रखो जहाँ तुम रहते हो अपनी शक्ति अनुसार। और उन्हें हानि न पहुँचाओ उन्हें तंग करने के लिये। और यदि वह गर्भवती हों तो उन पर खर्च करो यहाँ तक की प्रसव हो जाये। फिर यदि दूध पिलायें तुम्हारे (शिशु) लिये तो उन्हें उन का परिश्रामिक दो। और विचार-विमर्श कर लो आपस में उचित रूप^[1] से। और यदि तुम दोनों में तनाव हो जाये तो दूध पिलायेगी उस को कोई दूसरी स्त्री।

7. चाहिये की सम्पन्न (सुखी) खर्च दे अपनी कमाई के अनुसार, और तंग हो जिस पर उस की जीविका तो चाहिये कि खर्च दे उस में से जो दिया है उस को अल्लाह ने। अल्लाह भार नहीं रखता किसी प्राणी पर परन्तु उतना ही जो उसे दिया है। शीघ्र ही कर देगा अल्लाह तंगी के पश्चात् सुविधा।
8. कितनी बस्तियाँ^[2] थी जिन के वासियों ने अवैज्ञा की अपने पालनहार और उस के रसूलों के आदेश की, तो हम ने हिसाब ले लिया उन का कड़ा हिसाब, और उन्हें यातना दी बुरी यातना।
9. तो उस ने चख लिया अपने कर्म का दुष्परिणाम और उन का कार्य-परिणाम विनाश ही रहा।
10. तय्यार कर रखी है अल्लाह ने उन

وَلَا تَصَارُؤُمْ اِنْ تَصِيْقُوا عَلَيْهِمْ اِنْ كُنْ اُولَاٰءِ عَمَلٍ
فَاتَّقُوا عَلَيْهِمْ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ اِنْ اَرْضَعْنَ لَكُمْ
فَالْوُؤْمُ اَجُورُهُنَّ وَاَنْتُمْ وَاَمِنْكُمْ سَعَرَةٌ اِنْ
تَعَالَوْكُمْ فَضَعُّوْهُ اُخْرٰى ۝

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعِيَّتِهِ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ
فَلْيَتَّقِ مَوْلَاهُ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَكْفُلُ الْاَنفُسَ الْاِذَا اَلَا اللّٰهُ
سَيَجْعَلُ اللّٰهُ بَعْدَ عَذْرَتِمْ ۝

وَكَايْنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ عَمَتْ عَنْ اُورثَتِهَا وَرَسُولُهُ حَسِبَهَا
حِسَابًا شَدِيدًا وَعَدَّ بَيْنَهَا عَدَاۤءًا شَدِيدًا ۝

فَدَاثَتْ وَبَالَ اَوْهَا وَاَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝

اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يَا اُولٰٓئِ

1 अर्थात् परिश्रामिक के विषय में।

2 यहाँ से अल्लाह की अवैज्ञा के दुष्परिणाम से सावधान किया जा रहा है।

के लिये भीषण यातना। अतः अल्लाह से डरो, हे समझ वालो, जो ईमान लाये हो! निःसंदेह अल्लाह ने उतार दी है तुम्हारी ओर एक शिक्षा।

11. (अर्थात्) एक रसूल¹ जो पढ़ कर सुनाते हैं तुम को अल्लाह की खुली आयतें ताकि वह निकाले उन को जो ईमान लाये तथा सदाचार किये अन्धकारों से प्रकाश की ओर। और जो ईमान लाये तथा सदाचार करेगा वह उसे प्रवेश देगा ऐसे स्वर्गों में प्रवाहित है जिन में नहरें, वह सदावासी होंगे उन में। अल्लाह ने उस के लिये उत्तम जीविका तैयार कर रखी है।

12. अल्लाह वह है जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश तथा धरती में से उन्हीं के समान। वह उतारता है आदेश उन के बीच, ताकि तुम विश्वास करो कि अल्लाह जो कुछ चाहे कर सकता है। और यह की अल्लाह ने घेर रखा है प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की पतिधि में।

الْكِتَابِۙ ؕ الَّذِيۙنَ اٰمَنُوْاۙ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ الْيَقِيۙنَ ۝

رَّسُوۡلًاۙ لِّتُلٰٓذِقُوۡا اٰیٰتِ اللّٰهِ مَبِيۡنٰتٍ لِّمُخْرِجِۙنَ الَّذِيۙنَ اٰمَنُوۡاۙ وَغُلُوۡا الصَّلٰۤیٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَیۡ التُّوۡرَةِۙ وَمِنۡ یُّؤْمِنُۙ بِاِلٰهِهِ وَیَعْمَلُ صَالِحًاۙ یُّدۡخِلُهٗ جَنَّٰتٍۭ جَعَزٰتِۭ مَعۡرِیۡۙنَ مِنْۢ نَّحۡوِهَاۙ الَّذِیۙنَ اَخْلَدُوۡۤنَ فِیۡهَاۙ اَبۡنَآۙ قَدْ اَحۡسَنَ اللّٰهُ لَهۭٗ رِزۡقًا ۝

اِنَّهٗ الَّذِیۙ خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ وَمِنَ الْاَرْضِۭ مِثۡلِهِنَّۙ یَۡزۡكٰۤیۙ اَلۡاُمۡرَ بَیۡنَهُنَّۙ لِتَعْلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰۤی كُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیۡءٍ عِلۡمًا ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को। अंधकारों से अभिप्राय: कुफ्र, तथा प्रकाश से अभिप्राय: इमान है।

सूरह तहरीम - 66

سُورَةُ التَّحْرِيمِ

सूरह तहरीम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 12 आयतें हैं।

- इस का नाम इस की प्रथम आयत से लिया गया है। जिस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक चूक पर सावधान किया गया है। जो आप से आप की अपनी पत्नियों से प्रेम के कारण हुई। और आप की पत्नियों की भी पकड़ की गई है। और उन्हें अपना सुधार करने की ओर ध्यान दिलाया गया है।
- इस की आयत 6 से 8 तक में ईमान वालों को अपनी पत्नियों का सुधार करने से निश्चिन्त न होने और अपना दायित्व निभाने का निर्देश दिया गया है कि उन्हें प्रलोक के दण्ड से बचाने के लिये भरपूर प्रयास करें।
- आयत 9 में काफ़िरों तथा मुनाफ़िकों से जिहाद करने का आदेश दिया गया है। जो सदा आप के तथा मुसलमान स्त्रियों के बारे में कोई न कोई उपद्रव मचाते थे।
- आयत 10 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की दो पत्नियों को चेतावनी दी गई है। और अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे नबी! क्यों हराम (अवैध) करते है उसे जो हलाल (वैध) किया है अल्लाह ने आप के लिये? आप अपनी पत्नियों की प्रसन्नता^[1] चाहते है? तथा अल्लाह

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَعَزْتُمْ مِمَّا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ فَتَبَتُّنِ
مَرْضَاتِ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

- 1 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अस्त्र की नमाज़ के पश्चात् अपनी सब पत्नियों के यहाँ कुछ देर के लिये जाया करते थे। एक बार कई दिन अपनी पत्नी जैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) के यहाँ अधिक देर तक रह गये। कारण यह था कि वह आप को मधु पिलाती थी। आप की पत्नी आईशा तथा

अति क्षमी दयावान् है।

2. नियम बना दिया है अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी शपथों से निकलने^[1] का। तथा अल्लाह संरक्षक है तुम्हारा, और वही सर्व ज्ञानी गुणी है।
3. और जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक^[2] बात कही, तो उस ने उसे बता दिया, और अल्लाह ने उसे खोल दिया नबी पर, तो नबी ने कुछ से सूचित किया और कुछ को छोड़ दिया। फिर जब सूचित किया आप ने पत्नी को उस से तो उस ने कहा: किस ने सूचित किया आप को इस बात से? आप ने कहा: मुझे सूचित किया है सब जानने और सब से सूचित रहने वाले ने।
4. यदि तुम^[3] दोनों (हे नबी की पत्नियो!) क्षमा माँग लो अल्लाह से (तो तुम्हारे लिये उत्तम है), क्योंकि तुम दोनों के दिल कुछ झुक गये हैं। और यदि तुम दोनों एक-दूसरे की

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

وَإِذْ أَمَرُ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا بَيَّنَّاتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضُهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا بَيَّنَّاهُ لَهُ قَالَتْ مَنْ أَتَاكَ هَذَا قَالَ بَيَّنَّانِي الْعِلْمُ الْحَبِيرُ ۝

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرُتٌ ۝ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝

हफ्सा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने योजना बनाई कि जब आप आयें तो जिस के पास जायें वह यह कहे कि आप के मुँह से मगाफीर (एक दुर्गाधित फूल) की गन्ध आ रही है। और उन्होंने यही किया। जिस पर आप ने शपथ ले ली कि अब मधु नहीं पीऊँगा। उसी पर यह आयत उतरी। (बुखारी: 4912) इस में यह संकेत भी है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को भी किसी हलाल को हARAM करने अथवा हARAM को हलाल करने का कोई अधिकार नहीं था।

- 1 अर्थात् प्रयाश्चित दे कर उस को करने का जिस के न करने की शपथ ली हो। शपथ के प्रयाश्चित (कफ़ारा) के लिये देखिये: माइदा, आयत: 81।
- 2 अर्थात् मधु न पीने की बात।
- 3 दोनों से अभिप्राय: आदरणीय आईशा तथा आदरणीय हफ्सा हैं।

सहायता करोगी आप के विरुद्ध तो निःसंदेह अल्लाह आप का सहायक है तथा जibreel और सदाचारी ईमान वाले और फरिश्ते (भी) इन के अतिरिक्त सहायक हैं।

5. कुछ दूर नहीं कि आप का पालनहार यदि आप तलाक़ दे दें तुम सभी को तो बदले में दे आप को पत्नियाँ तुम से उत्तम, इस्लाम वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, आज्ञा पालन करने वालियाँ, क्षमा माँगने वालियाँ, व्रत रखने वालियाँ, विधवायें तथा कुमारियाँ।
6. हे लोगो जो ईमान लाये हो! बचाओ^[1] अपने आप को तथा अपने परिजनों को उस अग्नि से जिस का ईंधन मनुष्य तथा पत्थर होंगे। जिस पर फरिश्ते नियुक्त हैं कड़े दिल, कड़े स्वभाव वाले। वह अवैज्ञा नहीं करते अल्लाह के आदेश की तथा वही करते हैं जिस का आदेश उन्हें दिया जाये।
7. हे काफ़िरो! बहाना न बनाओ आज, तुम्हें उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते रहे।
8. हे ईमान वाले! अल्लाह के आगे

عَلَىٰ رُبِّكَ إِن تَكْفُرْ أَنَّ يُبَدِّلَ أَرْوَاجًا
خَيْرًا مِّنكَ مَسْلُومَاتٍ مِّمَّنْ دَلَّ عَلَىٰ يَدَيْكَ
عِدَّتْ سَبِيحَتِ يَدَيْكَ وَأَبْكَارًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا
وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ
شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ
وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّا
كُنَّا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوَلَّوْا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ۝

- 1 अर्थात् तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने परिजनों को इस्लाम की शिक्षा दो ताकि वह इस्लामी जीवन व्यतीत करें। और नरक का ईंधन बनने से बच जायें। हदीस में है कि जब बच्चा सात वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ पढ़ने का आदेश दो। और जब दस वर्ष का हो जाये तो उसे नमाज़ के लिये (यदि ज़रूरत पड़े तो) मारो। (तिर्मिज़ी- 407)

पत्थर से अभिप्राय वह मुर्तियाँ हैं जिन्हें देवता और पूज्य बनाया गया था।

सच्ची^[1] तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा पालनहार दूर कर दे तुम्हारी बुराईयाँ तुम से, तथा प्रवेश करा दे तुम्हें ऐसे स्वर्गों में बहती है जिन में नहरों। जिस दिन वह अपमानित नहीं करेगा नबी को और न उन को जो ईमान लाये हैं उन के साथ। उन का प्रकाश^[2] दौड़ रहा होगा उन के आगे तथा उन के दायें, वह प्रार्थना कर रहे होंगे: हे हमारे पालनहार! पूर्ण कर दे हमारे लिये हमारे प्रकाश को, तथा क्षमा कर दे हम को। वास्तव में तू जो चाहे कर सकता है।

9. हे नबी! आप जिहाद करें काफिरों और मुनाफिकों से और उन पर कड़ाई करें।^[3] उन का स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है।

10. अल्लाह ने उदाहरण दिया है उन के लिये जो काफिर हो गये नूह की पत्नी तथा लूत की पत्नी का। जो दोनों विवाह में थीं दो भक्तों के हमारे सदाचारी भक्तों में से। फिर दोनों ने विश्वासघात^[4] किया उन से।

عَنِ رَبِّكُمْ أَنْ يَغْفِرَ عَنْكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَى بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا أُولَئِكَ بِجَهَنَّمَ ۚ وَبَشِ الْمَصِيرِ ۝

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتِ نُوحٍ وَامْرَأَتِ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّاسِخِينَ ۝

1 सच्ची तौबा का अर्थ यह है कि पाप को त्याग दे। और उस पर लज्जित हो तथा भविष्य में पाप न करने का संकल्प ले। और यदि किसी का कुछ लिया है तो उसे भरे और अत्याचार किया है तो क्षमा माँग ले।

2 देखिये: सूरह हदीद, आयत: 12)।

3 अर्थात् जो काफिर इस्लाम के प्रचार से रोकते हैं, और जो मुनाफिक उपद्रव फैलाते हैं उन से कड़ा संघर्ष करें।

4 विश्वासघात का अर्थ यह है कि आदरणीय नूह (अलैहिस्सलाम) की पत्नी ने ईमान तथा धर्म में उन का साथ नहीं दिया। आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह के यहाँ कर्म काम आयेगा। सम्बंध नहीं काम नहीं आयेगा।

तो दोनों उन के, अब्राह के यहाँ कुछ काम नहीं आये। तथा (दोनों स्त्रियों से) कहा गया कि प्रवेश कर जाओ नरक में प्रवेश करने वालों के साथ।

11. तथा उदाहरण^[1] दिया है अब्राह ने उन के लिये जो ईमान लाये फिरऔन की पत्नी का। जब उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! बना दे मेरे लिये अपने पास एक घर स्वर्ग में, तथा मुझे मुक्त कर दे फिरऔन तथा उस के कर्म से, और मुझे मुक्त कर दे अत्याचारी जाति से।

12. तथा मर्यम, इम्रान की पुत्री का, जिस ने रक्षा की अपने सतीत्व की, तो फूँक दी हम ने उस में अपनी ओर से रूह (आत्मा)। तथा उस (मर्यम) ने सच्च माना अपने पालनहार की बातों और उस की पुस्तकों को। और वह इबादत करने वालों में से थी।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَاتِ فِرْعَوْنَ
إِذْ قَالَتِ رَبِّ ابْنِ لِّي عِنْدَكَ يَتًا فِي الْجَنَّةِ وَخَجِّنِي مِن
فِرْعَوْنَ وَهَمَجِهِ وَخَجِّنِي مِنَ الْغَوْرِ الظُّلُمِیْنَ ۝

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا
وَكُتِبَ لَهَا فَكَرٌّ مِّنَ الْغَیْبِیْنَ ۝

1 हदीस में है कि पुरुषों में से बहुत पूर्ण हुये। पर स्त्रियों में इमरान की पुत्री मर्यम और फिरऔन की पत्नी आसिया ही पूर्ण हुई। और आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की प्रधानता नारियों पर वही है जो सरीद (एक प्रकार का खाना) की सब खानों पर है। (सहीह बुखारी: 3411, सहीह मुस्लिम: 2431)

सूरह मुल्क - 67

سُورَةُ الْمُلُوكِ

सूरह मुल्क के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में अल्लाह के मुल्क (राज्य) की चर्चा की गई है जिस से यह नाम लिया गया है।
- इस में मरण तथा जीवन का उद्देश्य बताते हुये आकाश तथा धरती की व्यवस्था पर विचार करने का आमंत्रण दिया गया है जिस से विश्व विधाता का ज्ञान होता है। और यह बात भी उजागर होती है कि मनुष्य का यह जीवन परीक्षा का जीवन है। और इस कुर्आन की बताई हुई बातों के इन्कार का दुष्परिणाम बताया गया है।
- आयत 13, 14 में उन का शुभपरिणाम बताया गया है जो अपने पालनहार से डरते रहते हैं। जो प्रत्येक खुली और छुपी बात को जानता है और उस से कोई बात छुपी नहीं रह सकती।
- अन्त में मनुष्य को सोच-विचार का आमंत्रण देते हुये उसे अचेतना से चौकाने का सामान किया गया है। यदि मनुष्य आँखें खोल कर इस विश्व को देखे तो कुर्आन का सच्च उजागर हो जायेगा। और वह अपने जीवन के लक्ष्य को समझ जायेगा। हदीस में है कि कुर्आन में तीस आयतों की एक सूरह है जिस ने एक व्यक्ति के लिये सिफारिश की यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया गया। (सुनन अबू दाऊद: 1400, हाकिम 1/565)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शुभ है वह अल्लाह जिस के हाथ में राज्य है। तथा वह जो कुछ चाहे कर सकता है।

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

2. जिस ने उत्पन्न किया है मृत्यु तथा जीवन को, ताकि तुम्हारी परीक्षा

يَا أَيُّهَا خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ

ले कि तुम में किस का कर्म अधिक अच्छा है? तथा वह प्रभुत्वशाली अति क्षमावान् है।^[1]

3. जिस ने उत्पन्न किये सात आकाश ऊपर तले। तो क्या तुम देखते हो अत्यंत कृपाशील की उत्पत्ति में कोई असंगति? फिर पुनः देखो, क्या तुम देखते हो कोई दराड़?
4. फिर बार-बार देखो, वापिस आयेगी तुम्हारी ओर निगाह थक-हार कर।
5. और हम ने सजाया है संसार के आकाशों को प्रदीपों (ग्रहों) से। तथा बनाया है उन्हें (तारों को) मार भगाने का साधन शैतानों^[2] को, और तय्यार की है हम ने उन के लिये दहकती अग्नि की यातना।
6. और जिन्होंने कुफ़ किया अपने पालनहार के साथ तो उनके लिये नरक की यातना है। और वह बुरा स्थान है।
7. जब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।
8. प्रतीत होगा की फट पड़ेगी रोष (क्रोध) से, जब-जब फेंका जायेगा उस में कोई समूह तो प्रश्न करेंगे उन से उस के प्रहरी: क्या नहीं आया तुम्हारे पास कोई सावधान करने वाला (रसूल)?

أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَا تَرَى فِي خَلْقِ
الرَّحْمَنِ مِنْ تَفَوُّتٍ فَأَرْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى
مِنْ فُتُورٍ ۝

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ
خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ
وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابَ السَّعِيرِ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ
وَيُسْأَلُونَ الصَّيْرُ ۝

إِذَا انْفُوزَ فِيهَا سَمْعُهَا لَهَا شُعْبَةٌ وَهِيَ تَفُورُ ۝

تَكَادُ تَمَيَّرُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أَلْقَى فِيهَا لُوبُ
سَالَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝

1 इस में आज्ञा पालन की प्रेरणा तथा अवैज्ञा पर चेतावनी है।

2 जो चोरी से आकाश की बातें सुनते हैं। (देखिये: सूरह साफ़ात आयत: 7, 10)

9. वह कहेंगे: हाँ हमारे पास आया सावधान करने वाला। पर हम ने झुठला दिया, और कहा कि नहीं उतारा है अल्लाह ने कुछ। तुम ही बड़े कुपथ में हो।
10. तथा वह कहेंगे: यदि हम ने सुना और समझा होता तो नरक के वासियों में न होते।
11. ऐसे वह स्वीकार कर लेंगे अपने पापों को। तो दूरी^[1] है नरक वासियों के लिये।
12. निःसंदेह जो डरते हों अपने पालनहार से बिन देखे उन्हीं के लिये क्षमा है तथा बड़ा प्रतिफल है।^[2]
13. तुम चुपके बोलो अपनी बात अथवा ऊँचे स्वर में। वास्तव में वह भली-भाँति जानता है सीनों के भेदों को।
14. क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया? और वह सूक्ष्मदर्शक^[3] सर्व सूचित है?
15. वही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती, तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका। और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ إِنَّا أَنشَأُوا لَكَ فِي صَلَاتِكَ خَيْرٌ ۝

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

وَأَمَّا زُورُ أَقْوَامٍ فَهُمْ فِي أَوْحَادٍ مُّطَهَّرِينَ ۝ إِنَّهُمْ عَلَىٰ يَدَايِهِ الضُّلُوعِ ۝

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝

1 अर्थात् अल्लाह की दया से।

2 हदीस में है कि मैं ने अपने सदाचारी भक्तों के लिये ऐसी चीज तय्यार की है जिसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी दिल ने सोचा। (सहीह बुखारी: 3244, सहीह मुस्लिम: 2824)

3 बारीक बातों को जानने वाला।

16. क्या तुम निर्भय हो गये हो उस से जो आकाश में है कि वह धँसा दे धरती में फिर वह अचानक कौंपने लगे।
17. अथवा निर्भय हो गये उस से जो आकाश में है कि वह भेज दे तुम पर पथरीली वायु तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कैसा रहा मेरा सावधान करना?
18. झुठला चुके हैं इन^[1] से पूर्व के लोग तो कैसी रही मेरी पकड़?
19. क्या उन्होंने नहीं देखा पक्षियों की ओर अपने ऊपर पंख फैलाते तथा सिकोड़ते। उन को अत्यंत कृपाशील ही धामता है। निःसंदेह वह प्रत्येक वस्तु को देख रहा है।
20. कौन है वह तुम्हारी सेना जो तुम्हारी सहायता कर सकेगी अल्लाह के मुकाबले में? काफिर तो बस धोखे ही में हैं।
21. या कौन है जो तुम्हें जीविका प्रदान कर सके यदि रोक ले वह अपनी जीविका? बल्कि वह घुस गये हैं अवैज्ञा तथा घृणा में।^[2]
22. तो क्या जो चल रहा हो औंधा हो कर अपने मुँह के बल वह अधिक मार्गदर्शन पर है या जो सीधा हो कर चल रहा हो सीधी राह पर?^[3]

أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخِفَّ بِكُمْ
الْأَرْضُ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۝

أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا أَفَنَسْتَعْلُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ
نَكِيرِ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفٌّ وَتَقْبَضُ
بِأَيْدِيهِمْ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدُ لَكُمْ يَنْصَرُّكُمْ مِنْ
دُونِ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفْرَ فَوْتٌ إِلَّا لِمَنْ غُرِرَ ۝

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ بَلْ لَجُوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَى وَجْهِهِ أَهْدَى
أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

1 अर्थात मक्का बासियों से पहले आद, समूद आदि जातियों ने। तो लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति पर पत्थरों की वर्षा हुई।

2 अर्थात सत्य से घृणा में।

3 इस में काफिर तथा ईमानधारी का उदाहरण है। और दोनों के जीवन- लक्ष्य को बताया गया है कि काफिर सदा मायामोह में रहते हैं।

23. हे नबी! आप कह दें कि वही है जिस ने पैदा किया है तुम्हें और बनाये हैं तुम्हारे कान तथा आँख और दिल। बहुत ही कम आभारी (कृतज्ञ) होते हो।
24. आप कह दें: उसी ने फैलाया है तुम्हें धरती में और उसी की ओर एकत्रित^[1] किये जाओगे।
25. तथा वह कहते हैं कि यह वचन कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो?
26. आप कह दें: उस का ज्ञान बस अल्लाह ही को है। और मैं केवल खुला सावधान करने वाला हूँ।
27. फिर जब वह देखेंगे उसे समीप, तो बिगड़ जायेंगे उन के चेहरे जो काफिर हो गये। तथा कहा जायेगा: यह वही है जिस की तुम माँग कर रहे थे।
28. आप कह दें: देखो यदि अल्लाह नाश कर दे मुझ को तथा मेरे साथियों को अथवा दया करे हम पर, तो (बताओ कि) कौन है जो शरण देगा काफिरों को दुःखदायी^[2] यातना से?
29. आप कह दें: वह अत्यंत कृपाशील है। हम उस पर ईमान लाये तथा उसी पर भरोसा किया, तो तुम्हें ज्ञान हो जायेगा कि कौन खुले कुपथ में है।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٢٦﴾

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَمْلَكَنِیَ اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ جَعَلَنَا قَوْمًا تُجِیرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ﴿٢٨﴾

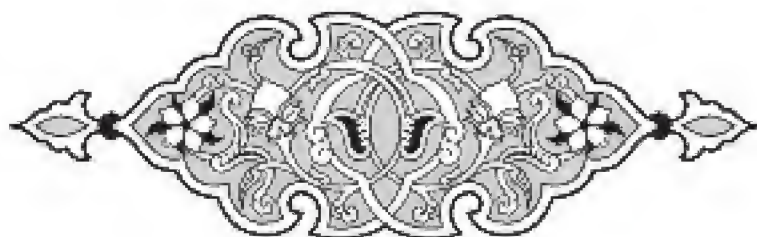
قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ الْمُتَّابُ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَتَعَلَّوْنَ مِنْ قَوْمِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٢٩﴾

1 प्रलय के दिन अपने कर्मों के लेख-जोखा तथा प्रतिकार के लिये।

2 अर्थात् तुम हमारा बुरा तो चाहते हो परन्तु अपनी चिन्ता नहीं करते।

30. आप कह दें भला देखो यदि तुम्हारा
पानी गहराई में चला जाये, तो कौन है
जो तुम्हें ला कर देगा बहता हुआ जल?

قُلْ لَّوْ يَتَّبِعُنَّ أَصْحَابَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ
يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ﴿٣٠﴾



सूरह कलम - 68

سُورَةُ الْفَلَمِ

सूरह कलम के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ ही में कलम शब्द आया है। जिस से यह नाम लिया गया है। और इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में बताया गया है कि आप का चरित्र क्या है। और जो आप के विरोधी आप को पागल कहते हैं वह कितने पतित (गिरे हुये) हैं।
- इस में शिक्षा के लिये एक बाग़ के स्वामियों का उदाहरण दिया गया है। जिन्होंने अब्राह के कृतज्ञ न होने के कारण अपने बाग़ के फल खो दिये। फिर आज्ञाकारियों को स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। और विरोधियों के इस विचार का खण्डन किया गया है कि आज्ञाकारी और अपराधी बराबर हो जायेंगे।
- इस में बताया गया है कि आज जो अब्राह को सज्दा करने से इन्कार करते हैं वह परलोक में भी उसे सज्दा नहीं कर सकेंगे।
- आयत 48 से 50 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को काफ़िरों के विरोध पर सहन करने के निर्देश दिये गये हैं।
- अन्त में बताया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अब्राह की बात बता रहे हैं, जो सब मनुष्यों के लिये सर्वथा शिक्षा है, आप पागल नहीं हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. नून। और शपथ है लेखनी (कलम) की तथा उस⁽¹⁾ की जिसे वह लिखते हैं।

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝

- 1 अर्थात् कुर्आन की। जिसे उतरने के साथ ही नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लेखको से लिखवाते थे। जैसे ही कोई सूरह या आयत उतरती लेखक कलम तथा चमड़ों और झिल्लियों के साथ उपस्थित हो जाते थे, ताकि पूरे संसार के मनुष्यों

2. नहीं है आप अपने पालनहार के अनुग्रह से पागल।
3. तथा निश्चय प्रतिफल (बदला) है आप के लिये अनन्त।
4. तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।
5. तो शीघ्र आप देख लेंगे, तथा वह (काफिर भी) देख लेंगे।
6. कि पागल कौन है।
7. वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो गया उस की राह से। और वही अधिक जानता है उन्हें जो सीधी राह पर हैं।
8. तो आप बात न माने झुठलाने वालों की।
9. वह चाहते हैं कि आप ढीले हो जायें तो वह भी ढीले हो^[1] जायें।
10. और बात न मानें^[2] आप किसी अधिक

مَا أَنْتَ بِغَفَّةٍ رَّبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَسْنُونٍ ۝

وَأَنْتَ لَعَلَّ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝

فَسَبِّحْهُ وَيُبْحِرُ وَيَصْبِرُ ۝

بِأَيِّكُمُ الْمَفْسُونُ ۝

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ۝

وَذُوالْوُدِّ مِنْ قُبْدٍ هُنُونٌ ۝

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ۝

को कुर्आन अपने वास्तविक रूप में पहुँच सके। और सदा के लिये सुरक्षित हो जाये। क्योंकि अब आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पश्चात् कोई नबी और कोई पुस्तक नहीं आयेगी। और प्रलय तक के लिये अब पूरे संसार के नबी आप ही हैं। और उन के मार्ग दर्शन के लिये कुर्आन ही एकमात्र धर्म पुस्तक है। इसीलिये इसे सुरक्षित कर दिया गया है। और यह विशेषता किसी भी आकाशीय ग्रन्थ को प्राप्त नहीं है। इसलिये अब मोक्ष के लिये अन्तिम नबी तथा अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुर्आन पर ईमान लाना अनिवार्य है।

- 1 जब काफिर, इस्लाम के प्रभाव को रोकने में असफल हो गये तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धमकी और लालच देने के पश्चात्, कुछ लो और कुछ दो की नीति पर आ गये। इसलिये कहा गया कि आप उन की बातों में न आयें। और परिणाम की प्रतीक्षा करें।
- 2 इन आयतों में किसी विशेष काफिर की दशा का वर्णन नहीं बल्कि काफिरों के

शपथ लेने वाले हीन व्यक्ति की।

11. जो व्यंग करने वाला, चुगलियाँ खाता फिरता है।

هَذَا مَشَاءٌ يُسْمِيهِ

12. भलाई से रोकने वाला, अत्याचारी, बड़ा पापी है।

مَنَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَبِرٍ شَرٌّ

13. घमंडी है और इस के पश्चात् कुवंश (वर्णन संकर) है।

عُتِلَ بَعْدَ ذَلِكَ زَنْجٌ

14. इस लिये कि वह धन तथा पुत्रों वाला है।

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ

15. जब पढ़ी जाती है उस पर हमारी आयतें तो कहता है: यह पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ

16. शीघ्र ही हम दाग लगा देंगे उस के सूँड⁽¹⁾ पर।

سَنَسِفُهُ عَلَىٰ الرُّعُودِ

17. निःसंदेह हम ने उन को परीक्षा में डाला⁽²⁾ है जिस प्रकार बाग वालों को परीक्षा में डाला था। जब उन्होंने शपथ ली कि अवश्य तोड़ लेंगे उस के फल भोर होते ही।

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ
إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرُنَّهَا مُصْبِحِينَ

18. और इन्शा अल्लाह (यदि अल्लाह ने

وَلَا يَسْتَنْوُونَ

प्रमुखों के नैतिक पतन तथा कुविचारों और दुराचारों को बताया गया है जो लोगों को इस्लाम के विरोध उकसा रहे थे तो फिर क्या इन की बात मानी जा सकती है?

- 1 अर्थात् नाक पर जिसे वह घमंड से ऊँची रखना चाहता है। और दाग लगाने का अर्थ अपमानित करना है।

- 2 अर्थात् मक्का वालों को। इसलिये यदि वह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लायेंगे तो उन पर सफलता की राह खुलेगी। अन्यथा संसार और परलोक दोनों की यातना के भागी होंगे।

चाहा) नहीं कहा।

19. तो फिर गया उस (बाग) पर एक कुचक्र आप के पालनहार की ओर से, और वह सोये हुये थे।

20. तो वह हो गया जैसे उजाड़ खेती हो।

21. अब वे एक-दूसरे को पुकारने लगे भोर होते ही:

22. कि तड़के चलो अपनी खेती पर यदि फल तोड़ने हैं।

23. फिर वह चल दिये आपस में चुपके-चुपके बातें करते हुये।

24. कि कदापि न आने पाये उस (बाग) के भीतर आज तुम्हारे पास कोई निर्धन।^[1]

25. और प्रातः ही पहुँच गये कि वह फल तोड़ सकेंगे।

26. फिर जब उसे देखा तो कहा: निश्चय हम राह भूल गये।

27. बल्कि हम बंचित हो^[2] गये।

28. तो उन में से बिचले भाई ने कहा: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम (अल्लाह की) पवित्रता का वर्णन क्यों नहीं करते?

29. वह कहने लगे: पवित्र है हमारा

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾

فَتَنَادَوُا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾

أَنِ اغْدُوا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٢﴾

فَالطَّلَعُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ﴿٢٣﴾

أَن لَّا يَدْخُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ﴿٢٤﴾

وَعَدُوا عَلٰى حَرْدٍ قَدِيرِينَ ﴿٢٥﴾

فَكَتَبَرُوا هَاهُنَا وَالْوَاكِلَةُ إِذَا تُؤْتُونَ ﴿٢٦﴾

بَلْ تَخُنْ مَخْرُومُونَ ﴿٢٧﴾

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾

قَالُوا سُبْحٰنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾

1 ताकि उन्हें कुछ दान न करना पड़े।

2 पहले तो सोचा कि राह भूल गये हैं। किन्तु फिर देखा कि बाग तो उन्हीं का है तो कहा कि यह तो ऐसा उजाड़ हो गया है कि अब कुछ तोड़ने के लिये रह ही नहीं गया है। वास्तव में यह हमारा दुर्भाग्य है।

पालनहार! वास्तव में हम ही
अत्याचारी थे।

30. फिर सम्मुख हो गया एक-दूसरे की
निन्दा करते हुये।

31. कहने लगे हाय अफ़सोस! हम ही
विद्रोही थे।

32. संभव है हमारा पालनहार हमें बदले
में प्रदान करे इस से उत्तम (बाग़)।
हम अपने पालनहार ही की ओर रुचि
रखते हैं।

33. ऐसे ही यातना होती है और आखिरत
(परलोक) की यातना इस से भी बड़ी
है। काश वह जानते!

34. निस्संदेह सदाचारियों के लिये उन के
पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं।

35. क्या हम आज्ञाकारियों^[1] को पापियों
के समान कर देंगे?

36. तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा
निर्णय कर रहे हो?

37. क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिस
में तुम पढ़ते हो?

38. कि तुम्हें वही मिलेगा जो तुम चाहोगे?

39. या तुम ने हम से शपथें ले रखी हैं जो
प्रलय तक चली जायेंगी कि तुम्हें वही
मिलेगा जिस का तुम निर्णय करोगे?

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتْلَا زُجُورًا ۝

قَالُوا يَٰوَيْكُنَّا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

عَلَىٰ رَبِّنَا أَن يُّبَدِّلَ لَنَا خَيْرَ امْنِهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا
رُغَبُونَ ۝

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ وَالْعَذَابُ الْآخِرَةُ أَكْبَرُ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ۝

أَفَجَعَلَ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَنذُرُونَ ۝

إِنْ لَكُمْ فِتْنَةٌ لِّمَا أَفْكُرُونَ ۝

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالْغَةِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
إِنَّ لَكُمْ لِمَا أَفْكُرُونَ ۝

1 मक्का के प्रमुख कहते थे कि यदि प्रलय हुई तो वहाँ भी हमें यही संसारिक
सुख-सुविधा प्राप्त होगी। जिस का खण्डन इस आयत में किया जा रहा है।
अभिप्राय यह है कि अब्बाह के हाँ देर है पर अंधेर नहीं है।

40. आप उन से पूछिये कि उन में कौन इस की ज़मानत लेता है?

سَلِّمْهُمْ أَنَّهُمْ بِذَلِكَ رَٰعِيُونَ ﴿٤٠﴾

41. क्या उन के कुछ साझी हैं? फिर तो वह अपने साझियों को लायें^[1] यदि वह सच्चे हैं।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فُلْيَا تُوَابِسُوا بِهِمُ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٤١﴾

42. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और वह बुलाये जायेंगे सज्दा करने के लिये तो (सज्दा) नहीं कर सकेंगे।^[2]

يَوْمَ يَكْشَعُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾

43. उन की आँखें झुकी होंगी, और उन पर अपमान छाया होगा। वह (संसार में) सज्दा करने के लिये बुलाये जाते रहे और वह स्वस्थ थे।

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُفُهُمْ ذُلُّهُ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ ﴿٤٣﴾

44. अतः आप छोड़ दें मुझे तथा उसे जो झुठला रहा है इस बात (कुर्आन) को, हम उन्हें धीरे-धीरे खींच लायेंगे^[3] इस प्रकार कि उन्हें ज्ञान भी नहीं होगा।

فَذَرْنِي وَمَنْ يَكْذِبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ إِنَّا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٤﴾

45. तथा हम उन्हें अवसर दे रहे हैं।^[4] वस्तुतः हमारा उपाय सुदृढ़ है।

وَأَمِلْ لَهُمُ إِن كُنتَ مِنِّي تَبَتُّنًا ﴿٤٥﴾

46. तो क्या आप माँग कर रहे हैं किसी परिश्रामिक^[5] की, तो वह बोझ से

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾

1 ताकि वह उन्हें अच्छा स्थान दिला दें।

2 हदीस में है कि प्रलय के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा तो प्रत्येक मोमिन पुरुष तथा स्त्री सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ वह शेष रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिये (संसार में) सज्दे किया करते थे। वह सज्दा करना चाहेंगे परन्तु उन की रीढ़ की हड्डी तख्त के समान बन जायेगी जिस के कारण उन के लिये सज्दा करना असंभव हो जायेगा। (बुखारी: 4919)

3 अर्थात् उन के बुरे परिणाम की ओर।

4 अर्थात् संसारिक सुख-सुविधा में मग्न रखेंगे। फिर अन्ततः वह यातना में ग्रस्त हो जायेंगे।

5 अर्थात् धर्म के प्रचार पर।

दबे जा रहे हैं?

47. या उन के पास गैब का ज्ञान है जिसे वह लिख^[1] रहे हैं?

48. तो आप धैर्य रखें अपने पालनहार के निर्णय तक और न हो जायें मछली वाले के समान^[2] जब उस ने पुकारा और वह शोक पूर्ण था।

49. और यदि न पा लेती उसे उस के पालनहार की दया तो वह फेंक दिया जाता बंजर में, और वह बुरी दशा में होता।

50. फिर चुन लिया उसे उस के पालनहार ने और बना दिया उसे सदाचारियों में से।

51. और ऐसा लगता है कि जो काफिर हो गये वह अवश्य फिसला देंगे आप को अपनी आँखों से (घूर कर) जब वह सुनते हों कुर्आन को। तथा कहते हैं कि वह अवश्य पागल है।

52. जब कि यह (कुर्आन) तो बस एक^[3] शिक्षा है पूरे संसार वासियों के लिये।

أَمْعِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ﴿٤٧﴾

فَأَصْبَحَ يَوْمَ رَدِّكَ إِلَىكَ كَصَاحِبٍ الْخُوْنِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾

لَوْلَا أَن تَذَكَّرَهُ نِعْمَةً مِّن رَّبِّهِ لَيُنَادَىٰ بِالْعُرَاءِ وَهُوَ يَكْفُومٌ ﴿٤٩﴾

فَأَخْتَبِهٖ رَحْمَةً فَنَجَلَهُ مِّنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾

وَأَن يَكْذِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْوَعْدِ بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

1 या लौहे महफूज (सुरक्षित पुस्तक) उन के अधिकार में है इस लिये आप का आज्ञा पालन नहीं करते और उसी से ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं?

2 इस से अभिप्राय यूनस (अलैहिस्सलाम) है जिन को मछली ने निगल लिया था। (देखिये: सूरह साफ़ात, आयत: 139)

3 इस में यह बताया गया है कि कुर्आन केवल अरबों के लिये नहीं, संसार के सभी देशों और जातियों की शिक्षा के लिये उतरा है।

सूरह हाक्का - 69



सूरह हाक्का के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 52 आयतें हैं।

- इस का प्रथम शब्द ((अल हाक्का)) है जिस से यह नाम लिया गया है। और इस का अर्थ है: वह घड़ी जिस का आना सच्च है। इस में प्रलय के अवश्य आने की सूचना दी गई है।
- आयत 4 से 12 तक उन जातियों की यातना द्वारा शिक्षा दी गई है जिन्होंने प्रलय का इन्कार किया तथा रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 13 से 18 तक प्रलय का भ्यावः दृश्य दिखाया गया है।
- आयत 19 से 37 तक सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है। फिर काफिरों को संबोधित कर के उन पर कुर्आन तथा रसूल की सच्चाई को उजागर किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अब्राह की तस्बीह (पवित्रतागान) बयान करते रहने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जिस का होना सच्च है।
2. वह क्या है जिस का होना सच्च है?
3. तथा आप क्या जानें कि क्या है जिस का होना सच्च है?
4. झुठलाया समूद तथा आद (जाति) ने अचानक आ पड़ने वाली (प्रलय) को।
5. फिर समूद, तो वह ध्वस्त कर दिये गये अति कड़ी ध्वनी से।
6. तथा आद, तो वह ध्वस्त कर दिये

الْحَاقَّةُ ۝

مَا الْحَاقَّةُ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحَاقَّةُ ۝

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهُمْ إِذِ انبَعَثَ أَشْقَى ۝

فَأَمَّا ثَمُودُ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ غَاوِيَةٍ ۝

وَأَمَّا عَادُ فَاتَّبَعُوا إِمْرَئِيلَ بْنَ مَرْيَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ ۝

गये एक तेज़ शीतल औंधी से।

7. लगाये रखा उसे उन पर सात रातें तथा आठ दिन निरन्तर, तो आप देखते कि वह जाति उस में ऐसे पछाड़ी हुई है जैसे खजूर के खोकले तने^[1]
8. तो क्या आप देखते हैं कि उन में से कोई शेष रह गया है?
9. और किया यही पाप फिरऔन ने और जो उस के पूर्व थे, तथा जिन की बस्तियाँ औंधी कर दी गईं।
10. उन्होंने नहीं माना अपने पालनहार के रसूल को। अन्ततः उस ने पकड़ लिया उन्हें, कड़ी पकड़।
11. हम ने, जब सीमा पार कर गया जल, तो तुम्हें सवार कर दिया नाव^[2] में।
12. ताकि हम बना दें उसे तुम्हारे लिये एक शिक्षा प्रद यादगार। और ताकि सुरक्षित रख लें इसे सुनने वाले कान।
13. फिर जब फूँक दी जायेगी सूर नरसिंघा) में एक फूँक।
14. और उठाया जायेगा धरती तथा पर्वतों को तो दोनों चूर-चूर कर दिये जायेंगे^[3] एक ही बार में।
15. तो उसी दिन होनी हो जायेगी।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَينَةَ أَيَّامٍ
خُسُوفًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ
أَعْيَارٌ تُغْلَى حَاوِيَةً ۝

فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ بَاقِيَةٍ ۝

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتُ
بِالْحَاطِطَةِ ۝

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ لَخِذَةً
بِأَيْمَةٍ ۝

إِنَّا كَانُوا عَلَى الْمَاءِ حَمَلَكُمُ فِي الْفَارِجَةِ ۝

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكُرَةً وَفَعِيلًا أَدْنَى
وَأَعْيَةٍ ۝

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً
وَاحِدَةً ۝

يَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

- 1 उन के भारी और लम्बे होने की उपमा खजूर के तने से दी गई है।
- 2 इस में नूह (अलैहिससलाम) के तूफान की ओर संकेत है। और सभी मनुष्य उन की संतान हैं इसलिये यह दया सब पर हुई है।
- 3 देखिये: सूरह ताहा, आयत: 20, आयत: 103, 108।

16. तथा फट जायेगा आकाश, तो वह उस दिन क्षीण निर्बल हो जायेगा।
17. और फरिश्ते उस के किनारों पर होंगे तथा उठाये होंगे आप के पालनहार के अर्श (सिंहासन) को अपने ऊपर उस दिन आठ फरिश्ते।
18. उस दिन तुम (अल्लाह के पास) उपस्थित किये जाओगे, नहीं छुपा रह जायेगा तुम में से कोई।
19. फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा: यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो।
20. मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।
21. तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।
22. उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।
23. जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।
24. (उन से कहा जायेगा): खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों (संसार) में।
25. और जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगा: हाय! मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता।
26. तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?!

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝

وَالْمَلَائِكَةُ عَلَى السَّجَابِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ
فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۝

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ
خَافِيَةٌ ۝

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ مَا أَوْمَرُ
أَقْرَأُ وَكَتَبْتُ ۝

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَّةٍ ۝

فَهُمَنِي عِيشَةً رَّاضِيَةً ۝

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝

تَطْرُقُهَا دَانِيَةٌ ۝

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي
الْآيَاتِ الْخَالِيَةِ ۝

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ
يَلَيْتَنِي لَمْ أَذِكْ كِتَابِيَةَ ۝

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَةَ ۝

27. काश मेरी मौत ही निर्णायक^[1] होती!

يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝

28. नहीं काम आया मेरा धन।

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيهِ ۝

29. मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व^[2]।

هَكَكَ عَنِّي سُلْطَانِيهِ ۝

30. (आदेश होगा कि) उसे पकड़ो और
उस के गले में तौक डाल दो।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝

31. फिर नरक में उसे झोंक दो।

ثُمَّ الْوَجْهَ صَوِّوهُ ۝

32. फिर उसे एक जंजीर, जिस की
लम्बाई सत्तर गज है में जकड़ दो।

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا
فَأَسْلِكُوهُ ۝

33. वह ईमान नहीं रखता था
महिमाशाली अल्लाह पर।

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِإِلَهِ الْعَظِيمِ ۝

34. और न प्रेरणा देता था दरिद्र को
भोजन कराने की।

وَلَا يَخْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۝

35. अतः नहीं है उस का आज यहाँ कोई
मित्र।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيرٌ ۝

36. और न कोई भोजन, पीप के सिवा।

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَنِيلٍ ۝

37. जिसे पापी ही खायेंगे।

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

38. तो मैं शपथ लेता हूँ उस की जो तुम
देखते हो।

فَلَا أَقْسَمُ بِمَا تُبْصَرُونَ ۝

39. तथा जो तुम नहीं देखते हो।

وَمَا لَا تُبْصَرُونَ ۝

40. निःसंदेह यह (कुर्आन) अदरणीय रसूल
का कथन^[3] है।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

1 अर्थात् उस के पश्चात् मैं फिर जीवित न किया जाता।

2 इस का दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि परलोक के इन्कार पर जितने तर्क दिया करता था आज सब निष्फल हो गये।

3 यहाँ अदरणीय रसूल से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं।
तथा सूरह तकवीर आयत 19 में फरिश्ते जिब्रील (अलैहिससलाम) जो बही

41. और वह किसी कवि का कथन नहीं है।
तुम लोग कम ही विश्वास करते हो।
42. और न यह किसी ज्योतिषी का कथन
है, तुम कम ही शिक्षा ग्रहण करते हो।
43. सर्वलोक के पालनहार का उतारा
हुआ है।
44. और यदि इस (नबी) ने हम पर कोई
बात बनाई^[1] होती।
45. तो अवश्य हम पकड़ लेते उस का
सीधा हाथ।
46. फिर अवश्य काट देते उस के गले
की रग।
47. फिर तुम से कोई (मुझे) उस से
रोकने वाला न होता।
48. निःसंदेह यह एक शिक्षा है सदाचारियों
के लिये।
49. तथा वास्तव में हम जानते हैं कि तुम
में कुछ झुठलाने वाले हैं।
50. और निश्चय यह पछतावे का कारण
होगा काफ़िरों^[2] के लिये।

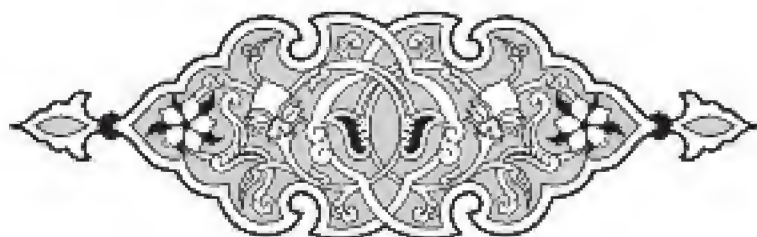
- وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾
وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾
تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾
وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾
لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ﴿٤٥﴾
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾
فَمَا يَنْكُرُونَ أَحَدٌ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾
وَلَئِنَّ لَكُم مِّنْ ذِكْرِنَا وَلَبَّيِّنٌ ﴿٤٨﴾
وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُم مَّكَذِبِينَ ﴿٤٩﴾
وَلَأِنَّ حَشْرَةً عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

लाते थे वह अभिप्राय हैं। यहाँ कुर्आन को आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन इस अर्थ में कहा गया है कि लोग उसे आप से सुन रहे थे। और इसी प्रकार आप जिब्रील (अलैहिस्सलाम) से सुन रहे थे। अन्यथा वास्तव में कुर्आन अल्लाह ही का कथन है जैसा कि आगामी आयत: 43 में आ रहा है।

- 1 इस आयत का भावार्थ यह है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अपनी ओर से वही (प्रकाशना) में कुछ अधिक या कम करने का अधिकार नहीं है। यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें कड़ी यातना दी जायेगी।
- 2 अर्थात् जो कुर्आन को नहीं मानते वह अन्ततः पछतायेंगे।

- s1. वस्तुतः यह विश्वासनीय सत्य है।
- s2. अतः आप पवित्रता का वर्णन करें अपने
महिमावान पालनहार के नाम की।

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝



सूरह मआरिज - 70

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 44 आयतें हैं।

- इस की आयत 3 में ((ज़िल मआरिज)) का शब्द आया है। उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ है: ऊँचाईयों वाला।
- इस में क्यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी। फिर प्रलय की दशा को बताया गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत 19 से 25 तक मनुष्य की साधारण कमज़ोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और कुर्आन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने^[1] वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।
2. काफ़िरों पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।
3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ

لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ

- 1 कहा जाता है कि नज़्र पुत्र हारिस अथवा अबू जहल ने यह माँग की थी, कि ((हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे))। (देखिये: सूरह अन्फ़ाल, आयत: 32)

4. चढ़ते हैं फरिश्ते तथा रूह^[1] जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हजार वर्ष है।
5. अतः (हे नबी!) आप सहन^[2] करें अच्छे प्रकार से।
6. वह समझते हैं उस को दूर।
7. और हम देख रहे हैं उसे समीप।
8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धातु के समान।
9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा-रंग धुने हुये ऊन के समान।^[3]
10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।
11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।
12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।
13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।
14. और जो धरती में है सभी^[4] को फिर

تَعْرَجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ النَّبِيُّ فِي يَوْمٍ كَانَ
مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝

فَأَصْبَحُوا صَبْرًا جَمِيلًا ۝

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝

وَنُرَاهُ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ۝

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝

وَلَا يَسْأَلُ حِمِيمٌ حِمِيمًا ۝

يُبْقَرُونَ لَهُمْ يَوْمَ الْمَجْزُمِ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ
عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ بَنِينَ ۝

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَنُحْجِيهِ ۝

1 रूह से अभिप्राय फरिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है।

2 अर्थात् संसार में सत्य को स्वीकार करने से।

3 देखिये: सूरह कारिआ।

4 हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी, उस से अल्लाह कहेगा: क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगे? वह कहेगा: हाँ। अल्लाह कहेगा: तुम आदम की पीठ में थे, तो मैं ने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किसी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार

- वह उसे यातना से बचा दे।
 15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)।
 16. वह अग्नि की ज्वाला होगी।
 17. खाल उधेड़ने वाली।
 18. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा
 दिखाया^[1] तथा मुँह फेरा।
 19. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौत
 कर रखा।
 20. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल
 का पैदा किया गया है।
 21. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न
 हो जाता है।
 22. और जब उसे धन मिलता है तो
 कंजूसी करने लगता है।
 23. परन्तु जो नमाज़ी हैं।
 24. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन^[2]
 करते हैं।
 25. और जिन के धनों में निश्चित भाग
 है याचक (माँगने वाला), तथा
 बंचित^[3] का।
 26. तथा जो सत्य मानते हैं प्रतिकार
 (प्रलय) के दिन को।

- كَلَّا إِنَّهَا لَأُفْلِقُ ۝
 سُرَّاعَةٌ لِّلشَّوْءِ ۝
 تَدْعُو مَنْ أَذْبَرَ وَثْقَىٰ ۝
 وَجَمَعَ فَأَوْعَىٰ ۝
 إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝
 إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝
 وَإِذَا مَسَّهُ الْغَيْرُ مَنُوعًا ۝
 إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝
 الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝
 وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝
 لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝
 وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بَيِّاتِ الْيَوْمِ ۝

किया और शिर्क किया। (सहीह बुखारी: 6557, सहीह मुस्लिम: 2805)

1 अर्थात् सत्य से।

2 अर्थात् बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हों।

3 अर्थात् जो न माँगने के कारण बंचित रह जाता है।

27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।
28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।
29. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।
30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों^[1] के तो वही निन्दित नहीं है।
31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।
32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।
33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।
34. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।
35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।
36. तो क्या हो गया है उन काफ़िरों को, कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।
37. दायें तथा बायें से समूहों में हो^[2] कर।

- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ عَذَابٍ رَبِّهِمْ مُتَّقُونَ ﴿٢٧﴾
- إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا تُوعَدُونَ ﴿٢٨﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ أَرْوَاحِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾
- إِلَّا عَمَلُ آبَائِهِمْ وَإِنْ كَانَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾
- فَمَنْ ابْتَغَى وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ أَمَانَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ﴿٣٢﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾
- وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يَحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾
- أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾
- فَبَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَكُنْكَ مُنْطَبِعِينَ ﴿٣٦﴾
- عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

1 इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना-पति ने गनीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्यभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात् ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

2 अर्थात् जब आप कुर्आन सुनाते हैं तो उस का उपहास करने के समूहों में हो

38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?
39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे^[1] जानते हैं।
40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वी (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।
41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।
42. अतः आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।
43. जिस दिन वह निकलेंगे क़ब्रों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों^[2]।
44. झुकी होंगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा^[3] रहा था।

أَيُّظْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةً نَعِيمٍ ۝

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝

فَلَا أَقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
إِنَّا لَقَائِدُونَ ۝

عَلَى أَنْ تُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمُسْتَوْدِعِينَ ۝

وَذَرْهُمْ يُخْرُصُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي يُوْعَدُونَ ۝

يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْعِبَادِ أَيْرَآءًا كَالَّذِينَ إِلَى
نُصْبٍ يُؤْتَصُونَ ۝

خَالِشَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْفَعُهُمْ ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ
الَّذِي كَانُوا يُوْعَدُونَ ۝

कर आ जाते हैं। और इन का दावा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

- 1 अर्थात् हीन जल (बीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अल्लाह और उस के रसूल को नहीं मानते।
- 2 या उन के धानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ते थे।
- 3 अर्थात् रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्यम से।

सूरह नूह - 71

سُورَةُ نُوحٍ

सूरह नूह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में नूह (अलैहिस्सलाम) के उपदेश का पूरा वर्णन है जिस से इस का नाम सूरह नूह है। और इस में उन की कथा का वर्णन ऐसे किया गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोधी चौक जायें।
- इस में अल्लाह से नूह (अलैहिस्सलाम) की गुहार को प्रस्तुत किया गया है। और आयत 25 में उस यातना की चर्चा है जो उन की जाति पर आई थी।
- अन्त में नूह (अलैहिस्सलाम) की उस प्रार्थना का वर्णन है जो उन्होंने इस यातना के समय की थी जो उन की जाति पर आई।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने भेजा नूह को उस की जाति की ओर, कि सावधान कर अपनी जाति को इस से पूर्व कि आये उन के पास दुःखदायी यातना।
2. उस ने कहा: हे मेरी जाति! वास्तव में मैं खुला सावधान करने वाला हूँ तुम्हें।
3. कि इबादत (बंदना) करो अल्लाह की तथा डरो उस से और बात मानो मेरी।
4. वह क्षमा कर देगा तुम्हारे लिये तुम्हारे पापों को, तथा अवसर देगा तुम्हें निर्धारित समय^[1] तक। वास्तव में जब अल्लाह का निर्धारित समय आ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

قَالَ يَوْمَرَأَىٰ لَكُمْ تَذِيرُنِّي ۝

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۝

يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسْقًّى ۖ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۚ لَنْ تَنْصُرُوهُمْ ۝

1 अर्थात् तुम्हारी निश्चित आयु तक।

जायेगा तो उस में देर न होगी। काश
तुम जानते।

5. नूह ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने
बुलाया अपनी जाति को (तेरी ओर)
रात और दिन।

6. तो मेरे बुलावे ने उन के भागने ही
को अधिक किया।

7. और मैं ने जब-जब उन्हें बुलाया तो
उन्होंने दे ली अपनी ऊँगलियाँ अपने
कानों में, तथा ओढ़ लिये अपने
कपड़े,^[1] तथा अड़े रह गये और
बड़ा घमंड किया।

8. फिर मैं ने उन्हें उच्च स्वर से बुलाया।

9. फिर मैं ने उन से खुल कर कहा और
उन से धीरे-धीरे (भी) कहा।

10. मैं ने कहा: क्षमा माँगो अपने
पालनहार से, वास्तव में वह बड़ा
क्षमाशील है।

11. वह वर्षा करेगा आकाश से तुम पर
धाराप्रवाह वर्षा।

12. तथा अधिक देगा तुम्हें पुत्र तथा धन
और बना देगा तुम्हारे लिये बाग
तथा नहरें।

13. क्या हो गया है तुम्हें कि नहीं डरते
हो अब्राह की महिमा से?

14. जब कि उस ने पैदा किया है तुम्हें

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۝

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ
فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَعْصَمُوا بِأَيْدِيهِمْ وَأَصْرُوا
وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۝

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝

يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ
لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ بِرَبِّهِ وَقَارًا ۝

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝

1 ताकि मेरी बात न सुन सकें।

विभिन्न प्रकार^[1] से।

15. क्या तुम ने नहीं देखा कि कैसे पैदा किये है अल्लाह ने सात आकाश ऊपर-तले?
16. और बनाया है चन्द्रमा को उन में प्रकाश, और बनाया है सूर्य को प्रदीप।
17. और अल्लाह ही ने उगाया है तुम्हें धरती^[2] से अद्भुत रूप से।
18. फिर वह वापिस ले जायेगा तुम्हें उस में और निकालेगा तुम को उस से।
19. और अल्लाह ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को बिस्तर।
20. ताकि तुम चलो उस की खुली राहों में।
21. नूह ने निवेदन किया: मेरे पालनहार! उन्होंने मेरी अवैज्ञा की, और अनुसरण किया उस का^[3] जिस के धन और संतान ने उस की क्षति ही को बढ़ाया।
22. और उन्होंने बड़ी चाल चली।
23. और उन्होंने कहा: तुम कदापि न छोड़ना अपने पूज्यों को, और कदापि न छोड़ना वह को, न सुबाअ को और न यगूस को और यऊक् को तथा न नस्र^[4] को।

أَلَمْ تَرَ أَنفَعُ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ
سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۝

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ
سِرَاجًا ۝

وَاللَّهُ أَنشَأَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاً ۝

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ أَخرًا ۝

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝

لِتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مِن كُرْ
يُودِهِ مَالَهُ وَوَلَدَهُ الْاِخْسَارُ ۝

وَمَكَرُوا مَكْرًا كَبِيرًا ۝

وَقَالُوا لَا تَدْرِكُ الْهَمَّتْ وَلَا تَدْرِكُ وَدًّا
وَلَا سَوْاعًا وَلَا يُغْنُوكَ وَيَعُوقُ وَفَسْرًا ۝

1 अर्थात वीर्य से, फिर रक्त से, फिर माँस और हड्डियों से।

2 अर्थात तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

3 अर्थात अपने प्रमुखों का।

4 यह सभी नूह (अलैहिस्सलाम) की जाति के बुतों के नाम हैं। यह पाँच सदाचारी व्यक्ति थे जिन के मरने के पश्चात् शैतान ने उन्हें समझाया कि इन की मुर्तियाँ

24. और कुपथ (गुमराह) कर दिया है उन्होंने बहुतों को, और अधिक कर दे तू (भी) अत्याचारियों के कुपथ^[1] (कुमार्ग) को।

25. वह अपने पापों के कारण डुबो^[2] दिये गये फिर पहुँचा दिये गये नरक में। और नहीं पाया उन्होंने अपने लिये अल्लाह के मुक़ाबिले में कोई सहायक।

26. तथा कहा नूह ने: मेरे पालनहार! न छोड़ धरती पर काफ़िरों का कोई घराना।

27. (क्यों कि) यदि तू उन्हें छोड़ेगा तो वह कुपथ करेंगे तेरे भक्तों को, और नहीं जन्म देंगे परन्तु दुष्कर्मी बड़े काफ़िर को।

28. मेरे पालनहार! क्षमा कर दे मुझ को तथा मेरे माता-पिता को और उसे जो प्रवेश करे मेरे घर में ईमान ला कर, तथा ईमान वालों और ईमान वालियों को। तथा काफ़िरों के विनाश ही को अधिक कर।

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝

مِمَّا خَطِيئَتُهُمْ أُعْرِضُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا لَا تَخْرُجُونَ ۝
يَجِدُوا وَالْهُدَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنْ الْكَافِرِينَ دِيَارًا ۝

إِنَّكَ إِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا أَفْجَارًا كَذَّارًا ۝

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝

बना लो। जिस से तुम्हें इबादत की प्रेरणा मिलेगी। फिर कुछ युग व्यतीत होने के पश्चात् समझाया कि यही पूज्य है। और उन की पूजा अरब तक फैल गई।

1 नूह (अलैहिस्सलाम) ने 950 वर्ष तक उन्हें समझाया। (देखिये: सूरह अन्कबूत, आयत: 14) और जब नहीं माने तो यह निवेदन किया।

2 इस का संकेत नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफ़ान की ओर है। (देखिये: सूरह हूद, आयत: 40, 44)

सूरह जिन्न - 72



सूरह जिन्न के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 28 आयतें हैं।

- इस में जिन्नों की बातें बताई गई हैं। इसलिये इस का यह नाम है। जिन्होंने कुर्आन सुना और उस के सच्च होने की गवाही दी। फिर मक्का के मुशरिकों को सावधान किया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुख से नबूवत के बारे में बातें उजागर की गई हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न मानने पर नरक की यातना से सूचित किया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो: मेरी ओर बह्नी (प्रकाशना^[1]) की गई है कि ध्यान से सुना जिन्नों के एक समूह ने। फिर कहा कि हम ने सुना है एक विचित्र कुर्आन।
2. जो दिखाता है सीधी राह, तो हम ईमान लाये उस पर। और हम कदापि साझी नहीं बनायेंगे अपने पालनहार के साथ किसी को।
3. तथा निस्सदेह महान् है हमारे पालनहार की महिमा, नहीं बनाई है उस ने कोई संगीनी (पत्नी) और न कोई संतान।

قُلْ أُذِىُّ إِلَىٰ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ قَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ قَالُوا بِهِ تَوَلَّيْنَا شُرُكًا بَرَيْنًا أَحَدًا

وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا

- 1 सूरह अहकाफ आयत: 29, में इस का वर्णन किया गया है। इस सूरह में यह बताया गया है कि जब जिन्नों ने कुर्आन सुना तो आप ने न जिन्नों को देखा और न आप को उस का ज्ञान हुआ। बल्कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बह्नी (प्रकाशना) द्वारा इस से सूचित किया गया।

4. तथा निश्चय हम अज्ञान में कह रहे थे अल्लाह के संबंध में झूठी बातें।
5. और यह कि हम ने समझा कि मनुष्य तथा जिन्न नहीं बोल सकते अल्लाह पर कोई झूठ बात।
6. और वास्तविकता यह है कि मनुष्य में से कुछ लोग शरण माँगते थे जिन्नों में से कुछ लोगों की तो उन्होंने ने अधिक कर दिया उन के गर्व को।
7. और यह कि मनुष्यों ने भी वही समझा जो तुम ने अनुमान लगाया कि कभी अल्लाह फिर जीवित नहीं करेगा किसी को।
8. तथा हम ने स्पर्श किया आकाश को तो पाया कि भर दिया गया है प्रहरियों तथा उल्कावों से।
9. और यह कि हम बैठते थे उस (आकाश) में सुन गुन लेने के स्थानों में, और जो अब सुनने का प्रयास करेगा वह पायेगा अपने लिये एक उल्का घात में लगा हुआ।
10. और यह कि हम नहीं समझ पाते कि क्या किसी बुराई का इरादा किया गया धरती वालों के साथ या इरादा किया है उन के साथ उन के पालनहार ने सीधी राह पर लाने का?
11. और हम में से कुछ सदाचारी हैं और हम में से कुछ इस के विपरीत हैं। हम विभिन्न प्रकारों में विभाजित हैं।

وَأَنَّهُ كَانَ يَفُولُ سَفِيهًا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝

وَأَنَّا كَلَّمْنَا أَنْ كُنْ تَقُولُ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

وَأَنَّهُ كَانَ يَجَالُ مِنْ الْإِنْسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالِ
مِنَ الْجِنِّ فَرَادُهُمْ ذَهَابًا ۝

وَأَنَّهُمْ قَالُوا كَمَا كَلَّمْنَاكُمْ إِنْ كُنْ يُبْعَثُ اللَّهُ أَحَدًا ۝

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا مُلْأَتْ
حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمَنْ
يُسْمِعُ الْآنَ يَجِدْ لَهُ مِنْهَا بِأَرَصَدًا ۝

وَأَنَّا لَآئِدُونَ فِي أَشْرَارٍ أُرِيدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ
أَمْرٌ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَلِكَ كُنَّا
طَرَائِقَ قِدْدًا ۝

12. तथा हमें विश्वास हो गया है कि हम कदापि विवश नहीं कर सकते अल्लाह को धरती में और न विवश कर सकते हैं उसे भाग कर।
13. तथा जब हम ने सुनी मार्ग दर्शन की बात तो उस पर इमान ला आये, अब जो भी इमान लायेगा अपने पालनहार पर तो नहीं भय होगा उसे अधिकार हनन का और न किसी अत्याचार का।
14. और यह कि हम में से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और कुछ अत्याचारी हैं। तो जो आज्ञाकारी हो गये तो उन्होंने खोज ली सीधी राह।
15. तथा जो अत्याचारी हैं तो वह नरक का ईंधन हो गये।
16. और यह कि यदि वह स्थित रहते सीधी राह (अर्थात इस्लाम) पर तो हम सींचते उन्हें भरपूर जल से।
17. ताकि उन की परीक्षा लें इस में, और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से, तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।
18. और यह कि मस्जिदें^[1] अल्लाह के लिये हैं। अतः मत पुकारो अल्लाह के साथ किसी को।
19. और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का

وَإِنَّا ظَنَنَّاهُ أَن لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَئِنْ
نُعْجِزُهُ هَرَبًا ۝

وَإِنَّا لَنَاسِمِعُكَ الْهُدَاىِ الْمُنَالِیۡمَ ۖ فَمَنِ یُّؤْمِنُ
بِرَبِّهِ فَلَا یَحْزَنُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝

وَإِنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ لَّسَمَ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاغِبُونَ ۝

وَإِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَكَأَنَّا لِلْجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِیقَةِ لَأَسْقِیَنَّهُمْ
مَّاءً عَذَّاقًا ۝

لِنَعْلَمَ نِعْمَهُمْ فِیۡهِ ۖ وَمَنْ یُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّیۡ
یَسْخَرْهُ عَذَابًا مُّصَنَعًا ۝

وَإِن السَّجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ
أَحَدًا ۝

وَإِنَّهُ لَنَآقَامُ عَبْدُ اللَّهِ یَدْعُوهُ كَادُوا

1 मस्जिद का अर्थ सज्दा करने का स्थान है। भावार्थ यह है कि अल्लाह के सिवा किसी अन्य की इबादत तथा उस के सिवा किसी से प्रार्थना तथा विनय करना अवैध है।

يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝

भक्त^[1] उसे पुकारता हुआ तो समीप था कि वह लोग उस पर पिल पड़ते।

20. आप कह दें कि मैं तो केवल अपने पालनहार को पुकारता हूँ। और साझी नहीं बनाता उस का किसी अन्य को।

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝

21. आप कह दें कि मैं अधिकार नहीं रखता तुम्हारे लिये किसी हानि का न सीधी राह पर लगा देने का।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝

22. आप कह दें कि मुझे कदापि नहीं बचा सकेगा अल्लाह से कोई^[2] और न मैं पा सकूँगा उस के सिवा कोई शरणागार (बचने का स्थान)।

قُلْ إِنِّي لَنْ يُخَيِّرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝

23. परन्तु पहुँचा सकता हूँ अल्लाह का आदेश तथा उस का उपदेश। और जो अवैज्ञा करेगा अल्लाह तथा उस के रसूल की तो वास्तव में उसी के लिये नरक की अग्नि है जिस में वह नित्य सदावासी होगा।

إِلَّا بِلَعْنٍ مِنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ۝

24. यहाँ तक कि जब देख लेंगे जिस का उन्हें वचन दिया जाता है तो उन्हें विश्वास हो जायेगा कि किस के सहायक निर्बल और किस की संख्या कम है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْأَلُونَ مَنْ أَصْنَعْتَ نَاجِرًا ۖ وَقَلَّ غَدًا ۝

25. आप कह दें कि मैं नहीं जानता कि समीप है जिस का वचन तुम्हें दिया जा रहा है अथवा बनायेगा मेरा

قُلْ إِنِّي أَدْرِي أَقْرَبُ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝

1 अल्लाह के भक्त से अभिप्राय मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। तथा भावार्थ यह है कि जिन्न तथा मनुष्य मिल कर कुर्आन तथा इस्लाम की राह से रोकना चाहते हैं।

2 अर्थात् यदि मैं उस की अवैज्ञा करूँ और वह मुझे यातना देना चाहे।

पालनहार उस के लिये कोई अवधि?

26. वह गैब (परोक्ष) का ज्ञानी है अतः वह अवगत नहीं कराता है अपने परोक्ष पर किसी को।

27. सिवाये रसूल के जिसे उस ने प्रिय बना लिया है फिर वह लगा देता है उस वही के आगे तथा उस के पीछे रक्षक।^[1]

28. ताकि वह देख ले कि उन्होंने पहुँचा दिये हैं अपने पालनहार के उपदेश।^[2] और उस ने घेर रखा है जो कुछ उन के पास है और प्रत्येक वस्तु को गिन रखा है।

عَلِمَ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا ۝

إِلَّا مَنِ امْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ
يَسْأَلُكَ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ ۖ وَمِنْ خَلْفِهِ
رَصَدًا ۝

لِيَعْلَمَ أَنْ تَدَّ إِلَهُهُمُ الرَّسُولَ رَبَّهُمْ ۖ وَأَحَاطَ
بِمَالِ دِيْنِهِمْ ۖ وَآخَصَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

1 अर्थात् गैब (परोक्ष) का ज्ञान तो अल्लाह ही को है। किन्तु यदि धर्म के विषय में कुछ परोक्ष की बातों की वही अपने किसी रसूल की ओर करता है तो फ़रिश्तों द्वारा उस की रक्षा की व्यवस्था भी करता है ताकि उस में कुछ मिलाया न जा सके। रसूल को जितना गैब का ज्ञान दिया जाता है वह इस आयत से उजागर हो जाता है। फिर भी कुछ लोग आप (सल्लल्लुआहु अलैहि व सल्लम) को पूरे गैब का ज्ञानी मानते हैं। और आप को गुहारते और सब जगह उपस्थित कहते हैं। और तौहीद को आधात पहुँचा कर शिर्क करते हैं।

2 अर्थात् वह रसूलों की दशा को जानता है। उस ने प्रत्येक चीज़ को गिन रखा है ताकि रसूलों के उपदेश पहुँचाने में कोई कमी और अधिकता न हो। इसलिये लोगों को रसूलों की बातें मान लेनी चाहिये।

सूरह मुज्जम्मिल - 73

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

सूरह मुज्जम्मिल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को 'अल मुज्जम्मिल' (चादर ओढ़ने वाला) कह कर संबोधित किया गया है जो इस सूरह का यह नाम रखे जाने का कारण है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को रात्री में नमाज़ पढ़ने का निर्देश दिया गया है। और इस का लाभ बताया गया है। और विरोधियों की बातों को सहन करने और उन के परिणाम को बताया गया है।
- मक्का के काफ़िरों को सावधान किया गया है कि जैसे फिरऔन की ओर हम ने रसूल भेजा वैसे ही तुम्हारी ओर रसूल भेजा है। तो उस का जो दुष्परिणाम हुआ उस से शिक्षा लो अन्यथा कुफ़र के परलोक की यातना से कैसे बच सकोगे?
- और इस सूरह के अन्त में, रात्री में नमाज़ का जो आदेश दिया गया था, उसे सरल कर दिया गया। इसी प्रकार लस में फ़र्ज (अनिवार्य) नमाज़ों के पालन तथा ज़कात देने के आदेश दिये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे चादर ओढ़ने वाले!
2. खड़े रहो (नमाज़ में) रात्री के समय
परन्तु कुछ^[1] समय।

يَا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُ

مُؤَاتِّلِ الْآفِلَاكِ

1 हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रात में इतनी नमाज़ पढ़ते थे कि आप के पैर सूज जाते थे। आप से कहा गया: ऐसा क्यों करते हैं? जब कि अल्लाह ने आप के पहले और पिछले गुनाह क्षमा कर दिये हैं? आप ने कहा: क्या मैं उस का कृतज्ञ भक्त न बनूँ? (बुखारी: 1130, मुस्लिम: 2819)

3. (अर्थात्) आधी रात अथवा उस से कुछ कम।
4. या उस से कुछ अधिक, और पढ़ो कुर्आन रुक-रुक कर।
5. हम उतारेंगे (हे नबी!) आप पर एक भारी बात (कुर्आन)।
6. वास्तव में रात में जो इबादत होती है वह अधिक प्रभावी है (मन को) एकाग्र करने में तथा अधिक उचित है बात (प्रार्थना) के लिये।
7. आप के लिये दिन में बहुत से कार्य हैं।
8. और स्मरण (याद) करें अपने पालनहार के नाम की, और सब से अलग हो कर उसी के हो जायें।
9. वह पूर्व तथा पश्चिम का पालनहार है। नहीं है कोई पूज्य (वन्दनीय) उस के सिवा, अतः उसी को अपना करता धरता बना लें।
10. और सहन करें उन बातों को जो वे बना रहे हैं^[1] और अलग हो जायें उन से सुशीलता के साथ।
11. तथा छोड़ दें मुझे तथा झुठलाने वाले सुखी (सम्पन्न) लोगों को। और उन्हें अवसर दें कुछ देर।
12. वस्तुतः हमारे पास (उनके लिये) बहुत सी बेड़ियाँ तथा दहकती अग्नि है।
13. और भोजन जो गले में फंस जाये

نُصْفَةَ أَوْ تُلْفُضٍ مِنْهُ قَلِيلًا ۝

أَوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَقِلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۝

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ۝

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۝

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَمْعًا وَبَصِيرًا ۝
وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَشَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۝

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۝

وَاصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيلًا ۝

إِنَّ لَدَيْنَا آكَالًا وَجَحِيمًا ۝

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् आप के तथा सत्धर्म के विरुद्ध।

और दुःखदायी यातना है।

14. जिस दिन काँपेगी धरती और पर्वत, तथा हो जायेंगे पर्वत भुरभुरी रेत के ढेर।
15. हम ने भेजा है तुम्हारी ओर एक रसूल^[1] तुम पर गवाह (साक्षी) बना कर जैसे भेजा फिरऔन की ओर एक रसूल (मूसा) को।
16. तो अवैज्ञा की फिरऔन ने उस रसूल की ओर हम ने पकड़ लिया उस को कड़ी पकड़।
17. तो कैसे बचोगे यदि कुफ़ किया तुम ने उस दिन से जो बना देगा बच्चों को (शोक के कारण) बूढ़ा?
18. आकाश फट जायेगा उस दिन। उस का वचन पूरा हो कर रहेगा।
19. वास्तव में यह (आयतें) एक शिक्षा हैं। तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर राह बना ले।^[2]
20. निःसंदेह आप का पालनहार जानता है कि आप खड़े होते हैं (तहज्जुद की नमाज़ के लिये) दो तिहाई रात्री के लग-भग, तथा आधी रात और तिहाई रात, तथा एक समूह उन लोगों का जो आप के साथ है और

يَوْمَ تَوَجَّهَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَغِيَابِ مُهِيلٍ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبُيُوتًا ۝

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝

إِلَّا سَّمَاءٌ مُّنفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ خُلْفَىٰ الْاَيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ الْاَيْلَ وَالنَّهَارَ عَلِيمٌ أَن تُنْ تُحْصُوهُ ۚ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمْنَا أَن سَيَكُونُ

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को गवाह होने के अर्थ के लिये। (देखिये: सूरह बकरा, आयत: 143, तथा सूरह हज्ज, आयत: 78) इस में चेतावनी है कि यदि तुम ने अवैज्ञा की तो तुम्हारी दशा भी फिरऔन जैसी होगी।

2 अर्थात् इन आयतों का पालन कर के अब्बाह की प्रसन्नता प्राप्त कर लें।

अल्लाह ही हिसाब रखता है रात तथा दिन का। वह जानता है कि तुम पूरी रात नमाज़ के लिये खड़े नहीं हो सकोगे। अतः उस ने दया कर दी तुम पर। तो पढ़ो जितना सरल हो कुर्आन में से।^[1] वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी होंगे और कुछ दूसरे यात्रा करेंगे धरती में खोज करते हुये अल्लाह के अनुग्रह (जीविका) की, और कुछ दूसरे युद्ध करेंगे अल्लाह की राह में, अतः पढ़ो जितना सरल हो उस में से। तथा स्थापना करो नमाज़ की, और ज़कात देते रहो, और ऋण दो अल्लाह को अच्छा ऋण।^[2] तथा जो भी आगे भेजोगे भलाई में से तो उसे अल्लाह के पास पाओगे। वही उत्तम और उस का बहुत बड़ा प्रतिफल होगा। और क्षमा मांगते रहो अल्लाह से, वास्तव में वह अति क्षमाशील दयावान् है।

مِنْكُمْ مُرْضَىٰ وَالْآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَالْآخَرُونَ
يُقَارِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَأُفِرُّوا
مَا تَيْسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَأَشْرُوا لِلَّهِ قَرْضًا حَسَنًا لَّوَمَا تَفْقَهُوا
لِأَنْفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ
هُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

1 कुर्आन पढ़ने से अभिप्राय तहज्जुद की नमाज़ है। और अर्थ यह है कि रात्री में जितनी नमाज़ हो सके पढ़ लो। हदीस में है कि भक्त अल्लाह के सब से समीप अन्तिम रात्री में होता है। तो तुम यदि हो सके कि उस समय अल्लाह को याद करो तो याद करो। (तिर्मिज़ी: 3579, यह हदीस सहीह है।)

2 अच्छे ऋण से अभिप्राय अपने उचित साधन से अर्जित किये हुये धन को अल्लाह की प्रसन्नता के लिये उस के मार्ग में खर्च करना है। इसी को अल्लाह अपने ऊपर ऋण करार देता है। जिस का बदला वह सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी अधिक प्रदान करेगा।

(देखिये: सूरह बकरा, आयत: 261)

सूरह मुद्स्सिर - 74

سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ

सूरह मुद्स्सिर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है , इस में 56 आयतें हैं।

- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ((अल मुद्स्सिर)) कह कर संबोधित किया गया है। अर्थात् चादर ओढ़ने वाले। इस लिये इस को यह नाम दिया गया है। और आप को सावधान करने का निर्देश देते हुये अच्छे स्वभाव तथा शुभकर्म की शिक्षा दी गई है।
- आयत 11 से 31 तक कुरैश के प्रमुखों को जो इस्लाम का विरोध कर रहे थे नरक की यातना की धमकी दी गई है। तथा 32 से 48 तक परलोक के बारे में चेतावनी है।
- अन्त में कुर्आन के शिक्षा होने को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि बात दिल में उतर जाये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. हे चादर ओढ़ने^[1] वाले!

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ

2. खड़े हो जाओ, फिर सावधान करो।

ثُمَّ قُمْ فَاذْهَبْ

- 1 नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रथम बह्नी के पश्चात् कुछ दिनों तक बह्नी नहीं आई। फिर एक बार आप जा रहे थे कि आकाश से एक आवाज़ सुनी। ऊपर देखा तो वही फरिश्ता जो आप के पास हिरा गुफा में आया था आकाश तथा धरती के बीच एक कुर्सी पर विराजमान था। जिस से आप डर गये और धरती पर गिर गये। फिर घर आये, और अपनी पत्नी से कहा: मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो। उस ने चादर ओढ़ा दी। और अल्लाह ने यह सूरह उतारी। फिर निरन्तर बह्नी आने लगी। (सहीह बुखारी: 4925, 4926, सहीह मुस्लिम: 161) प्रथम बह्नी से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को नबी बनाया गया। और अब आप पर धर्म के प्रचार का भार रख दिया गया। इन आयतों में आप के माध्यम से मुसलमानों को पवित्र रहने के निर्देश दिये गये हैं।

3. तथा अपने पालनहार की महिमा का वर्णन करो।
4. तथा अपने कपड़ों को पवित्र रखो।
5. और मलीनता को त्याग दो।
6. तथा उपकार न करो इसलिये कि उस के द्वारा अधिक लो।
7. और अपने पालनहार ही के लिये सहन करो।
8. फिर जब फूँका जायेगा^[1] नरसिंघा में।
9. तो उस दिन अति भीषण दिन होगा।
10. काफ़िरों पर सरल न होगा।
11. आप छोड़ दें मुझे और उसे जिस को मैं ने पैदा किया अकेला।
12. फिर दे दिया उसे अत्यधिक धन।
13. और पुत्र उपस्थित रहने^[2] वाले।
14. और दिया मैं ने उसे प्रत्येक प्रकार का संसाधन।
15. फिर भी वह लोभ रखता है कि उसे और अधिक दूँ।
16. कदापि नहीं। वह हमारी आयतों का विरोधी है।
17. मैं उसे चढ़ाऊँगा कड़ी^[3] चढ़ाई।

وَرَبِّكَ فَكَبِّرْ ۝

وَمِنَ الْبَلَدِ فَطَهِّرْ ۝

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝

وَلَا تَتَّبِعْ تَتَكَبِّرْ ۝

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝

فَإِذَا نُفِخَ فِي الْنَافِثَاتِ ۝

فَإِنَّكَ يَوْمَ يَوْمِ عَصِيرٍ ۝

عَلَى الْكَافِرِينَ عَذَابٌ عَصِيرٌ ۝

ذُرِّيٍّ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۝

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝

وَمَهْدًا لَهُ تَمْهِيدًا ۝

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝

كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِإِتْتِاعِنًا ۝

سَارِقُهُ صَعُودًا ۝

1 अर्थात् प्रलय के दिन।

2 जो उस की सेवा में उपस्थित रहते हैं। कहा गया है कि इस से अभिप्राय बलीद पुत्र मुगीरा है जिस के दस पुत्र थे।

3 अर्थात् कड़ी यातना दूँगा। (इब्ने कसीर)

18. उस ने विचार किया और अनुमान लगाया^[1] إِنَّهُ فَكَرَوْنَاهُ ۝
19. वह मारा जाये! फिर उस ने कैसा अनुमान लगाया? فَعَمِلَ كَيْفَ فَعَدَّ ۝
20. फिर (उस पर अल्लाह की) मार! उस ने कैसा अनुमान लगाया? ثُمَّ قِيلَ كَيْفَ فَدَدَّ ۝
21. फिर पुनः विचार किया। ثُمَّ نَظَرَ ۝
22. फिर माथे पर बल दिया और मुँह विदोरा। ثُمَّ عَيَّنَ وَيَسَّرَ ۝
23. फिर (सत्य से) पीछे फिरा और घमंड किया। ثُمَّ أَذْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝
24. और बोला कि यह तो पहले से चला आ रहा एक जादू है^[2] فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۝
25. यह तो बस मनुष्य^[3] का कथन है। إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝
26. मैं उसे शीघ्र ही नरक में झोंक दूंगा। سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ۝
27. और आप क्या जानें कि नरक क्या है। وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُهُ ۝
28. न शेष रखेगी, और न छोड़ेगी। لَا تَبْقَىٰ وَلَا تَذَرُ ۝
29. वह खाल झुलसा देने वाली। لَوَّاحَةٌ لِلْبَشَرِ ۝
30. नियुक्त है उन पर उन्नीस (रक्षक फरिश्ते)। عَلَيْهَا تِسْعَةُ عَشْرَ ۝
31. और हम ने नरक के रक्षक फरिश्ते وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۝

1 कुर्आन के संबन्ध में प्रश्न किया गया तो वह सोचने लगा कि कौन सी बात बनाये, और उस के बारे में क्या कहे? (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह किसी से सीख लिया है। कहा जाता है कि वलीद पुत्र मुगीरा ने अबू जह्ल से कहा था कि लोगों में कुर्आन के जादू होने का प्रचार किया जाये।

3 अर्थात् अल्लाह की बाणी नहीं है।

ही बनाये हैं। और उन की संख्या को काफ़िरो के लिये परीक्षा बना दिया गया है। ताकि विश्वास कर लें अहले^[1] किताब, और बढ़ जायें जो ईमान लाये हैं ईमान में। और संदेह न करें जो पुस्तक दिये गये हैं और ईमान वाले। और ताकि कहें वे जिन के दिलों में (द्विधा का) रोग है तथा काफ़िर^[2] कि क्या तात्पर्य है अब्राह का इस उदाहरण से? ऐसे ही कुपथ करता है अब्राह जिसे चाहता है, और संमार्ग दर्शाता है जिसे चाहता है। और नहीं जानता है आप के पालनहार की सेनाओं को उस के सिवा कोई और। तथा नहीं है यह (नरक की चर्चा) किन्तु मनुष्य की शिक्षा के लिये।

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا
لِيَسْتَيِّقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزِدَّ الَّذِينَ
آمَنُوا إِيمَانًا وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وََالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا
كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن
يَشَاءُ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ

32. ऐसी बात नहीं, शपथ है चाँद की!

كَلَّا وَالْقَمَرِ

33. तथा रात्री की जब व्यतीत होने लगे!

وَالْيَلِ إِذَا دُبُرٌ

34. और प्रातः की जब प्रकाशित हो जाये!

وَالضُّبُرِ إِذَا أَاسْفَرُ

35. वास्तव में (नरक) एक^[3] बहुत बड़ी चीज़ है।

إِنَّمَا الْجَنَدَى الْكَبِيرُ

36. डराने के लिये लोगों को।

نَذِيرٌ لِلْبَشَرِ

1 क्योंकि यहूदियों तथा ईसाईयों की पुस्तकों में भी नरक के अधिकारियों की यही संख्या बताई गई है।

2 जब कुरैश ने नरक के अधिकारियों की चर्चा सुनी तो अबू जहल ने कहा: हे कुरैश के समूह! क्या तुम में से दस-दस लोग, एक-एक फरिश्ते के लिये काफ़ी नहीं हैं? और एक व्यक्ति ने जिसे अपने बल पर बड़ा गर्व था कहा कि 17 को मैं अकेला देख लूँगा। और तुम सब मिल कर दो को देख लेना। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् जैसे रात्री के पश्चात् दिन होता है उसी प्रकार कर्मों का भी परिणाम सामने आना है। और दुष्कर्मों का परिणाम नरक है।

37. उस के लिये तुम में से जो चाहे^[1]
आगे होना अथवा पीछे रहना।
38. प्रत्येक प्राणी अपने कर्मों के बदले में
बंधक है।^[2]
39. दाहिने वालों के सिवा।
40. वह स्वर्गों में होंगे, वह प्रश्न करेंगे।
41. अपराधियों से।
42. तुम्हें क्या चीज़ ले गई नरक में।
43. वह कहेंगे: हम नहीं थे नमाज़ियों में से।
44. और नहीं भोजन कराते थे निर्धन को।
45. तथा कुरेद करते थे कुरेद करने वालों
के साथ।
46. और हम झुठलाया करते थे प्रतिफल
के दिन (प्रलय) को।
47. यहाँ तक की हमारी मौत आ गई।
48. तो उन्हें लाभ नहीं देगी सिफारिशियों
(अभिस्तावकों) की सिफारिश।^[3]
49. तो उन्हें क्या हो गया है कि इस
शिक्षा (कुर्आन) से मुँह फेर रहे हैं।
50. मानो वह (जंगली) गधे है बिदकाये हुये।
51. जो शिकारी से भागे है।

- لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۚ
- كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۖ
- إِلَّا الصَّالِبِينَ ۖ
- فِي جَنَّاتٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ
- عَنِ النَّجْوِينَ ۖ
- مَا سَأَلَكُمْ فِي مَقَرٍّ ۖ
- قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۖ
- وَلَمْ نَكُ نَطْعُمُ الْيُسْكِينَ ۖ
- وَكُنَّا نَخْرُصُ مَعَ الْخَائِبِينَ ۖ
- وَكُنَّا نَكْذِبُ يَوْمَ الدِّينِ ۖ
- حَتَّىٰ أَصْبَا الْيَقِينَ ۖ
- فَمَا نَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۖ
- فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكُرَةِ مُعْرِضِينَ ۖ
- كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۖ
- فَرَّتْ مِنْ قَبْرِهِ ۖ

1 अर्थात् आज्ञा पालन द्वारा अग्रसर हो जाये, अथवा अवज्ञा कर के पीछे रह जाये।

2 यदि सत्कर्म किया तो मुक्त हो जायेगा।

3 अर्थात् नबियों और फरिश्तों इत्यादि की। किन्तु जिस से अल्लाह प्रसन्न हो और उस के लिये सिफारिश की अनुमति दे।

52. बल्कि चाहता है प्रत्येक व्यक्ति उन में से कि उसे खुली¹ पुस्तक दी जाये।
53. कदापि यह नही (हो सकता) बल्कि वह आखिरत (परलोक) से नही डरते हैं।
54. निश्चय यह (कुरआन) तो एक शिक्षा है।
55. अब जो चाहे शिक्षा ग्रहण करे।
56. और वह शिक्षा ग्रहण नही कर सकते, परन्तु यह कि अब्बाह चाह ले। वही योग्य है कि उस से डरा जाये और योग्य है कि क्षमा कर दे।

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَى صُحُفًا مُنشَرَةً ۝

كَلَّا لَنْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝

كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۝

فَمَنْ مَشَاءُ ذَكَرْهُ ۝

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ فَوَاقِلٌ
الْمُتَّقِينَ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

1 अर्थात वे चाहते हैं कि प्रत्येक के ऊपर वैसे ही पुस्तक उतारी जाये जैसे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है। तब वे ईमान लायेंगे। (इब्ने कसीर)

सूरह कियामा - 75

سُورَةُ الْقِيَامَةِ

सूरह कियामा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत (प्रलय) की शपथ ली गई है जिस से इस का नाम «सूरह कियामा» है।
- इस में प्रलय के निश्चित होने का वर्णन करते हुये संदेहों को दूर किया गया है। और उस की कुछ स्थितियों को प्रस्तुत किया गया है।
- इस में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बह्नी ग्रहण करने के विषय में कुछ निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 20 से 25 तक विरोधियों को मायामोह पर चेतावनी देते हुये, प्रलय के दिन सदाचारियों की सफलता तथा दुराचारियों की विफलता दिखाई गई है।
- आयत 26 में मौत की दशा दिखाई गई है।
- आयत 31 से 35 तक प्रलय को न मानने वालों की निन्दा की गई है।
- अन्त में फिर जीवित किये जाने के प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. मैं शपथ लेता हूँ क़्यामत (प्रलय) के
दिन^[1] की।

لَا أُقْسِرُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ

2. तथा शपथ लेता हूँ निन्दा^[2] करने
वाली अन्तरात्मा की।

وَلَا أُقْسِرُ بِالنَّفْسِ الْكَافِرَةِ

1 किसी चीज़ की शपथ लेने का अर्थ होता है: उस का निश्चित होना। अर्थात् प्रलय का होना निश्चित है।

2 मनुष्य के अन्तरात्मा की यह विशेषता है कि वह बुराई करने पर उस की निन्दा करती है।

3. क्या मनुष्य समझता है कि हम एकत्र नहीं कर सकेंगे दोबारा उस की अस्थियों को?
4. क्यों नहीं? हम सामर्थ्यवान हैं इस बात पर कि सीधी कर दें उस की ऊंगलियों की पोर-पोर।
5. बल्कि मनुष्य चाहता है कि वह कुकर्म करता रहे अपने आगे^[1] भी।
6. वह प्रश्न करता है कि कब आना है प्रलय का दिन?
7. तो जब चुंधिया जायेगी आँख।
8. और गहना जायेगा चाँद।
9. और एकत्र कर दिये^[2] जायेंगे सूर्य और चाँद।
10. कहेगा मनुष्य उस दिन कि कहाँ है भागने का स्थान?
11. कदापि नहीं, कोई शरणागार नहीं।
12. तेरे पालनहार की ओर ही उस दिन जा कर रुकना है।
13. सूचित कर दिया जायेगा मनुष्य को उस दिन उस से जो उस ने आगे भेजा, तथा जो पीछे^[3] छोड़ा।
14. बल्कि मनुष्य स्वयं अपने विरुद्ध एक

يَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنَّهُ لَنْ نُجْمَعَ عِظَامُهُ ۝

بَلَىٰ قَدِيرٌ عَلَيْنَا نُنْفِئُ بَنَانَهُ ۝

بَلَىٰ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝

يَسْأَلُ أَفْأَن يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

فَإِذَا ابْرُؤِ الْبَصَرِ ۝

وَحُفَّتِ الْقَمَرُ ۝

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُ ۝

كَلَّا لَا وَدَّرَ ۝

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝

يُنَبِّئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝

بَلَىٰ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝

- 1 अर्थात् वह प्रलय तथा हिसाब का इन्कार इसलिये है ताकि वह पूरी आयु कुकर्म करता रहे।
- 2 अर्थात् दोनों पश्चिम से अंधेरे हो कर निकलेंगे।
- 3 अर्थात् संसार में जो कर्म किया। और जो करना चाहिये था फिर भी नहीं किया।

खुला^[1] प्रमाण है।

15. चाहे वह कितने ही बहाने बनाये।

16. हे नबी! आप न हिलायें^[2] अपनी जुबान, ताकि शीघ्र याद कर लें इस कुर्आन को।

17. निश्चय हम पर है उसे याद कराना और उस को पढ़ाना।

18. अतः जब हम उसे पढ़ लें तो आप उस के पीछे पड़ें।

19. फिर हमारे ही ऊपर है उस का अर्थ बताना।

20. कदापि नहीं^[3], बल्कि तुम प्रेम करते हो शीघ्र प्राप्त होने वाली चीज (संसार) से।

21. और छोड़ देते हो परलोक को।

22. बहुत से मुख उस दिन प्रफुल्ल होंगे।

23. अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे।

24. और बहुत से मुख उदास होंगे।

25. वह समझ रहे होंगे कि उन के साथ कड़ा व्यवहार किया जायेगा।

وَلَوْ أَلْقَى مَعَاذِيرُهُ ۝

لَا تَحْرِكْ لِي لِسَانَكَ لِتَكْفُرَ بِهِ ۝

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝

فَإِذَا قُرَأَتْهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۝

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّضْرَةٌ ۝

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝

تَكُنُ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝

1 अर्थात् वह अपने अपराधों को स्वयं भी जानता है क्योंकि पापी का मन स्वयं अपने पाप की गवाही देता है।

2 हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रिश्ते जिवरील से वही पूरी होने से पहले इस भय से उसे दुहराने लगते कि कुछ भूल न जायें। उसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी: 4928, 4929)
इसी विषय को सूरह ताहा तथा सूरह आला में भी दुहराया गया है।

3 यहाँ से बात फिर काफ़िरों की ओर फिर रही है।

26. कदापि नहीं^[1], जब पहुँचेगी प्राण
हंसलियों (गलों) तक।

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ النَّحْرَاقِي ۝

27. और कहा जायेगा: कौन झाड़-फूँक
करने वाला है?

تَقِيلَ مَنْ عَازَى ۝

28. और विश्वास हो जायेगा कि यह
(संसार से) जुदाई का समय है।

وَوَقَّنْ أَنَّهَ الْغُرَاقِي ۝

29. और मिल जायेगी पिंडली- पिंडली^[2] से।

وَالْتَقَّتِ السَّائِي بِالسَّائِي ۝

30. तेरे पालनहार की ओर उसी दिन
जाना है।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسَائِي ۝

31. तो न उस ने सत्य को माना और न
नमाज़ पढ़ी।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۝

32. किन्तु झुठलाया और मुँह फेर लिया।

وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝

33. फिर गया अपने परिजनों की ओर
अकड़ता हुआ।

فَتَوَلَّىٰ إِلَىٰ أَهْلِهِ بِتَمَكُّلٍ ۝

34. शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।

أَوَّلَ لَكَ فَأَوَّلَىٰ ۝

35. फिर शोक है तेरे लिये, फिर शोक है।

فَعَرَّأَوَّلَ لَكَ فَأَوَّلَىٰ ۝

36. क्या मनुष्य समझता है कि वह छोड़
दिया जायेगा बयर्थ^[3]?

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۝

37. क्या वह नहीं था वीर्य की बूंद जो
(गर्भाशय में) बूंद-बूंद गिराई जाती है?

أَلَمْ يَكُنْ نُطْقَةً مِنْ مِثْنٍ يُمْنَىٰ ۝

38. फिर वह बंधा रक्त हुआ, फिर

فَعُرَّكَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَىٰ ۝

1 अर्थात् यह विचार सहीह नहीं कि मौत के पश्चात् सड़-गल जायेंगे और दोबारा जीवित नहीं किये जायेंगे। क्योंकि आत्मा रह जाती है जो मौत के साथ ही अपने पालनहार की ओर चली जाती है।

2 अर्थात् मौत का समय आ जायेगा जो निरन्तर दुख का समय होगा। (इब्ने कसीर)

3 अर्थात् न उसे किसी बात का आदेश दिया जायेगा और न रोका जायेगा और न उस से कर्मों का हिसाब लिया जायेगा।

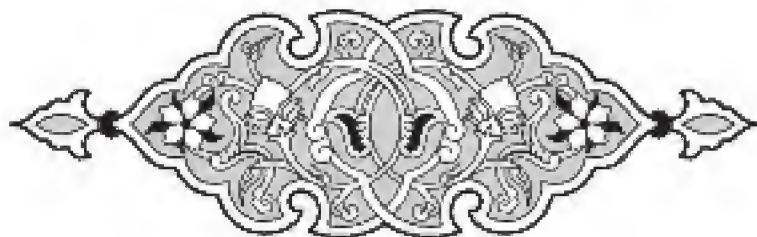
अब्राह ने उसे पैदा किया और उसे
बराबर बनाया।

39. फिर उस का जोड़ा: नर और नारी
बनाया।

40. तो क्या वह सामर्थ्यवान नहीं कि मुर्दों
को जीवित करे दे?

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ۝

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ
الْمَوْتَىٰ ۝



सूरह दहर - 76

سُورَةُ الدَّهْرِ

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 31 आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह दहर) है। इस का दूसरा नाम (सूरह इन्सान) भी है। दहर का अर्थ: ((युग)) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़िरों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत 5 से 22 तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है। और 23 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य, नमाज़ तथा तस्बीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक से अचेत हो कर मायामोह में लिप्त हैं।
- अन्त में कुर्आन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर
युग का एक समय जब वह कोई
विचर्चित^[1] वस्तु न था?
2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को
मिश्रित (मिले हुये) वीर्य^[2] से, ताकि
उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे
सुनने तथा देखने वाला।

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ
شَيْئًا مَّذْكُورًا

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ
فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

1 अर्थात् उस का कोई अस्तित्व न था।

2 अर्थात् नर-नारी के मिश्रित वीर्य से।

3. हम ने उसे राह दर्शा दी।^[1] (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।
4. निःसंदेह हम ने तय्यार की है काफिरों (कृतघ्नों) के लिये जंजीर तथा तौक और दहकती अग्नि।
5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।
6. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)।^[2]
7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ^[3] और डरते रहे उस दिन से^[4] जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।
8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।
9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।
10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस

إِنَّا مَدِينَةُ النَّاسِ لِلْكَافِرِينَ إِنَّا مَدِينَةُ النَّاسِ لِلْكَافِرِينَ
كَافِرُونَ ۝

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَاقًا وَسَعِيرًا ۝

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا
كَافُورًا ۝

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝

يُؤْتُونَ بِالنَّدَى وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهَا
سُّطُورًا ۝

وَيَطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا
وَأَسِيرًا ۝

إِنَّمَا نَطْعَمُكُمْ لَوَجْهِ اللَّهِ لَا لِنَرِيٍّ مِنْكُمْ جَزَاءً
وَلَا شُكُورًا ۝

إِنَّا خَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَتَطُورًا ۝

1 अर्थात् नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बता दिया गया।

2 अर्थात् उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसे: घर, बैठक आदि।

3 नज़र (मनौती) का अर्थ है: अल्लाह के समिप्य के लिये कोई कर्म अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना। और किसी देवी-देवता तथा पीर फकीर के लिये मनौती मानना शिर्क है। जिस को अल्लाह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। अर्थात् अल्लाह के लिये जो भी मनौतियाँ मानते रहे उसे पूरी करते रहे।

4 अर्थात् प्रलय और हिसाब के दिन से।

दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

11. तो बचा लिया अब्बाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।

12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।

13. वह तकिये लगाये उस में तख्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।

14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।

15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशों के होंगे।

16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।^[1]

17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।

18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।

19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुये मोती हैं।

20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।

تَوَفَّاهُمْ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ۝

وَجَزَّاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَخَيْرًا ۝

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝

قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَاكِبًا كَانَ مَرَاجُهَا زَهْرِبًا ۝

عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ۝

وَيُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ ولدَانٌ تَجْلِدُونَ إِذَا أَرَادْتَهُمْ خَسِمَتَهُمْ لَوْلَا مَنْشُورًا ۝

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَرًا رَأَيْتَ ثَمَرًا وَمِثْلًا مِثْرًا ۝

1 अर्थात् सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यकता से कम होंगे और न अधिक।

21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चांदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेय।
22. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।
23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर कुर्आन थोड़ा - थोड़ा कर^[1] को।
24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।
25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।
26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।
27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन^[2] को।
28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंदा तथा जब हम चाहें बदला दें उन^[3] के जैसे (दूसरों को)।

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌوَاسْتَبْرَقُ
وَحُلُوفُ أَسَافِرٍ مِنْ نَضْرَةٍ وَسَقْبُهُمْ رُثْمُهُمْ شَرَابًا
طَهُورًا ۝

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيَكُمْ مَشْكُورًا ۝

إِنَّا نَخُصُّ نَزْلًا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۝

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آيَةً أَوْ كُفُورًا ۝

وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَیَجْعِلُونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا بَشَرْنَا
بَدَلًا مِمَّا الْهَرَبُ يَبْدِيلُ ۝

1 अर्थात् नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 106।

2 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

3 अर्थात् इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है।
अतः जो चाहे अपने पालनहार की
ओर (जाने की) राह बना ले।

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ
سَبِيلًا ۝

30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना
कुछ भी नहीं चाह सकते।^[1] वास्तव
में अल्लाह सब चीज़ों और गुणों को
जानने वाला है।

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी
दया में। और अत्याचारियों के लिये
उस ने तय्यार की है दुखदायी
यातना।

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۖ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि जो चाहे कर ले। जो भलाई चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।

सूरह मुर्सलात - 77

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

सूरह मुर्सलात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 50 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में मुर्सलात (हवाओं) की शपथ ली गई है। इसलिये इस का नाम सूरह मुर्सलात है। इस में झकड़ को प्रलय के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है। फिर प्रलय का भ्यावः चित्र दिखाया गया है।
- आयत 16 से 28 तक प्रतिफल के दिन के होने के प्रमाण प्रस्तुत करते हुये उस पर सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- इस में क्यामत के झुठलाने वालों को उस दिन जिस दुर्दशा का सामना होगा उस का चित्रण किया गया है। और आयत 41 से 44 तक सदाचारियों के सुफल का चित्रण किया गया है।
- अन्त में झुठलाने वालों की अपराधिक नीति पर कड़ी चेतावनी दी गई है।
- अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि हम मिना की बादी में थे। और सूरह मुर्सलात उतरी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसे पढ़ रहे थे और हम उसे आप से सीख रहे थे। (सहीह बुखारी: 4930, 4931)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भेजी हुई निरन्तर धीमी
वायुओं की!

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۝

2. फिर झकड़ वाली हवाओं की!

فَالْعَصْفَاتِ ۝

3. और बादलों को फैलाने वालियों की!^[1]

وَالنَّشْوَاتِ نَشْرًا ۝

4. फिर अन्तर करने^[2] वालों की!

فَالْفُرَاتِ نَزْيًا ۝

1 अर्थात् जो हवायें अब्बाह के आदेशानुसार बादलों को फैलाती हैं।

2 अर्थात् सत्योसत्य तथा वैध और अवैध के बीच अन्तर करने के लिये आदेश लाते हैं।

5. फिर पहुँचाने वालों की बह्नी
(प्रकाशना^[1]) को! فَالْمُلَاقِيَاتِ زَوَايَا
6. क्षमा के लिये अथवा चेतावनी^[2] के
लिये! عَذْرًا أَوْ تَذَرًا
7. निश्चय जिस का वचन तुम्हें दिया
जा रहा है वह अवश्य आनी है। إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ
8. फिर जब तारे धुमिल हो जायेंगे। فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ
9. तथा जब आकाश खोल दिया जायेगा। وَإِذَا السَّمَاءُ فُتِحَتْ
10. तथा जब पर्वत चूर-चूर कर के उड़ा
दिये जायेंगे। وَلَاذَ الْجِبَالِ يُفِشَتْ
11. और जब रसूलों का एक समय
निर्धारित किया जायेगा।^[3] وَلَاذَ الرُّسُلِ أَقْنَتَتْ
12. किस दिन के लिये इस को निलम्बित
रखा गया है? إِلَّا فِي يَوْمٍ أُخِّلَتْ
13. निर्णय के दिन के लिये। لِيَوْمِ الْقَضَى
14. आप क्या जानें कि क्या है वह निर्णय
का दिन? وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الْقَضَى
15. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के
लिये। وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ الْمَكِيدِ بَيْنَ
16. क्या हम ने विनाश नहीं कर दिया
(अवैज्ञा के कारण) अगली जातियों का? أَلَمُ تُهْلِكَ الْأَوَّلِينَ
17. फिर पीछे लगा^[4] दोगे उन के पिछलो को। ثُمَّ تُثَبِّعُهُمُ الْآخِرِينَ

1 अर्थात् जो बह्नी (प्रकाशना) ग्रहण कर के उसे रसूलों तक पहुँचाते हैं।

2 अर्थात् ईमान लाने वालों के लिये क्षमा का वचन तथा काफिरों के लिये यातना की सूचना लाते हैं।

3 उन के तथा उन के समुदायों के बीच निर्णय करने के लिये। और रसूल गवाही देंगे।

4 अर्थात् उन्हीं के समान यातना-ग्रस्त कर देंगे।

18. इसी प्रकार हम करते हैं अपराधियों के साथ।
19. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
20. क्या हम ने पैदा नहीं किया है तुम्हें तुच्छ जल (वीर्य) से?
21. फिर हम ने रख दिया उसे एक सुदृढ़ स्थान (गर्भाशय) में।
22. एक निश्चित अवधि तक।^[1]
23. तो हम ने सामर्थ्य^[2] रखवा, अतः हम अच्छा सामर्थ्य रखने वाले हैं।
24. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
25. क्या हम ने नहीं बनाया धरती को समेट^[3] कर रखने वाली।
26. जीवित तथा मुर्दा को।
27. तथा बना दिये हम ने उस में बहुत से ऊँचे पर्वत। और पिलाया हम ने तुम्हें मीठा जल।
28. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
29. (कहा जायेगा): चलो उस (नरक) की ओर जिसे तुम झुठलाते रहे।

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۝

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝

فَقَدَرْنَا ۖ وَنُحْمَ الْقَدِرُونَ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَاخِصَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً قُرًّاتًا ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنظِرُّهُمْ إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

1 अर्थात् गर्भ की अवधि तक।

2 अर्थात् उसे पैदा करने पर।

3 अर्थात् जब तक लोग जीवित रहते हैं तो उस के ऊपर रहते तथा बस्ते हैं। और मरण के पश्चात् उसी में चले जाते हैं।

30. चलो ऐसी छाया^[1] की ओर जो तीन शाखाओं वाली है।
31. जो न छाया देगी और न ज्वाला से बचायेगी।
32. वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियाँ भवन के समान।
33. जैसे वह पीले ऊँट हों।
34. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
35. यह वह दिन है कि वह बोल^[2] नहीं सकेंगे।
36. और न उन्हें अनुमति दी जायेगी कि वह बहाने बना सकें।
37. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
38. यह निर्णय का दिन है, हम ने एकत्र कर लिया है तुम को तथा पूर्व के लोगों को।
39. तो यदि तुम्हारे पास कोई चाल^[3] हो तो चल लो?
40. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
41. निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे।

إِنطِفِئُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ۝

لَا ظِلِيلٌ وَلَا يُنْقِئُ مِنَ الْلَّهَبِ ۝

إِنهَاتْنِي بِشَرِّ كَالْقَصْرِ ۝

كَأَنَّهُ جُمُلتُ صُغُرٍ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

هَذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۝

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

هَذَا يَوْمُ الْقُصْلِ جَمَعْنَاهُ وَالْأَوَّلِينَ ۝

إِن كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

إِنَّ الْمُسْتَعِينَ فِي ظِلِّ وَعْيُونٍ ۝

1 छाया से अभिप्राय: नरक के धुवें की छाया है जो तीन दिशाओं में फैला होगा।

2 अर्थात् उन के विरुद्ध ऐसे तर्क प्रस्तुत कर दिये जायेंगे कि वह अवाक रह जायेंगे।

3 अर्थात् मेरी पकड़ से बचने की।

42. तथा मन चाहे फलों में।
 43. खाओ तथा पिओ मनमानी उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे।
 44. हम इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं।
 45. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
 46. (हे झुठलाने वालो!) तुम खा लो तथा आनन्द ले लो कुछ^[1] दिन। वास्तव में तुम अपराधी हो।
 47. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
 48. जब उन से कहा जाता है कि (अब्राह के समक्ष) झुको तो झुकते नहीं।
 49. विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिये।
 50. तो (अब) वह किस बात पर इस (क़ुर्आन) के पश्चात् ईमान^[2] लायेंगे?

- وَقَوَائِمَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾
 كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾
 إِنْ كَذَّبَكَ نَجَرُى الْمُحَرِّىنَ ﴿٤٤﴾
 وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾
 كُلُوا وَشَبَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾
 وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾
 وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا لِلرَّكَّعُونَ ﴿٤٨﴾
 وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾
 فَبِأَنَّى حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

1 अर्थात् संसारिक जीवन में।

2 अर्थात् जब अब्राह की अन्तिम पुस्तक पर ईमान नहीं लाते तो फिर कोई दूसरी पुस्तक नहीं हो सकती जिस पर वह ईमान लायें। इसलिये कि अब कोई और पुस्तक आसमान से आने वाली नहीं है।

सूरह नबा⁽¹⁾ - 78

سُورَةُ النَّبَاِ

सूरह नबा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 40 आयतें हैं।

- इस सूरह का नाम ((नबा)) है जिस का अर्थ है: महत्व पूर्ण सूचना। जिस से अभिप्राय प्रलय तथा फिर से जीवित किये जाने की सूचना है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में उन को चेतावनी दी गई है जो क़्यामत का उपहास करते हैं कि वह समय दूर नहीं जब वह आ जायेगी और वह अन्नाह के सामने उपस्थित होंगे।
- आयत 6 से 16 तक में अन्नाह की शक्ति की निशानियाँ बताई गई हैं जो मरण के पश्चात् जीवन के होने का प्रमाण हैं और गवाही देती हैं

1 इस सूरह में प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आखिरत) के विश्वास पर बल दिया गया है। तथा इन पर विश्वास करने और न करने का परिणाम बताया गया है। मक्का के वासी इस की हँसी उड़ाते थे। कोई कहता कि यह हो ही नहीं सकता। किसी को संदेह था। किसी का विचार था कि यदि ऐसा हुआ तो भी हमारे देवी देवता हमारी अभिस्तावना कर देंगे, जैसा कि आगामी आयतों से विद्वित होता है।

"भारी सूचना" का अर्थ: क़र्आन द्वारा दी गई प्रलय और परलोक की सूचना है। प्रलय और परलोक पर विश्वास सत्य धर्म की मूल आस्था है। यदि प्रलय और परलोक पर विश्वास न हो तो धर्म का कोई महत्व नहीं रह जाता। क्योंकि जब कर्म का कोई फल ही न हो, और न कोई न्याय और प्रतिकार का दिन हो तो फिर सभी अपने स्वार्थ के लिये मनमानी करने के लिये आजाद होंगे, और अत्याचार तथा अन्याय के कारण पूरा मानव संसार नरक बन जायेगा।

इन प्रश्नात्मक वाक्यों में प्रकृति द्वारा मानव जाति के प्रतिपालन जीवन रक्षा और सुख सुविधा की जिस व्यवस्था की चर्चा की गई है उस पर विचार किया जाये तो इस का उत्तर यही होगा कि यह व्यवस्थापक के बिना नहीं हो सकती। और पूरी प्रकृति एक निर्धारित नियमानुसार काम कर रही है। तो जिस के लिये यह सब हो रहा है उस का भी कोई स्वाभाविक कर्तव्य अवश्य होगा जिस की पूछ होगी। जिस के लिये न्याय और प्रतिकार का दिन होना चाहिये जिस में सब को न्याय पूर्वक प्रतिकार दिया जाये। और जिस शक्ति ने यह सारी व्यवस्था की है उस दिन को निर्धारित करना भी उसी का काम है।

कि प्रतिफल का दिन अनिवार्य है।

- आयत 17 से 20 तक में बताया गया है कि प्रतिफल का दिन निश्चित समय पर होगा। उस दिन आकाश तथा धरती की व्यवस्था में भारी परिवर्तन हो जायेगा और सब मनुष्य अल्लाह के न्यायालय की ओर चल पड़ेंगे।
- आयत 21 से 36 तक में दुराचारियों के दुष्परिणाम तथा सदाचारियों के शुभपरिणाम को बताया है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति का चित्र दिखाया गया है और यह बताया गया है कि सिफारिश के बल पर कोई जवाबदेही से नहीं बच सकेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. वे आपस में किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं?
2. बहुत बड़ी सूचना के विषय में।
3. जिस में मतभेद कर रहे हैं।
4. निश्चय वे जान लेंगे।
5. फिर निश्चय वे जान लेंगे।⁽¹⁾
6. क्या हम ने धरती को पालना नहीं बनाया?
7. और पर्वतों को मेख?
8. तथा तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया।
9. तथा तुम्हारी निद्रा को स्थिरता

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيمِ

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا

- 1 (1-5) इन आयतों में उन को धिक्कारा गया है, जो प्रलय की हँसी उड़ाते हैं। जैसे उन के लिये प्रलय की सूचना किसी गंभीर चिन्ता के योग्य नहीं। परन्तु वह दिन दूर नहीं जब प्रलय उन के आगे आ जायेगी और वे विश्व विधाता के सामने उत्तरदायित्व के लिये उपस्थित होंगे।

(आराम) बनाया।

10. और रात को बस्त्र बनाया।
11. और दिन को कमाने के लिये बनाया।
12. तथा हम ने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आकाश बनाये।
13. और एक दमकता दीप (सूर्य) बनाया।
14. और बादलों से मूसलाधार वर्षा की।
15. ताकि उस से अन्न और वनस्पति उपजायें।
16. और घने घने बाग।^[1]
17. निश्चय निर्णय (फैसले) का दिन निश्चित है।
18. जिस दिन सूर में फूँका जायेगा। फिर तुम दलों ही दलों में चले आओगे।
19. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उसमें द्वार ही द्वार हो जायेंगे।
20. और पर्वत चला दिये जायेंगे तो वे मरीचिका बन जायेंगे।^[2]

وَجَعَلْنَا النِّيلَ لِبَاسًا ۝

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝

وَبَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝

وَأَنزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝

وَجَدَّتِ الْعَنَّا ۝

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝

يَوْمَ يُنْفَعُ فِي الصُّورِ قَتَاتُونَ أَفْوَاجًا ۝

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝

وُسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝

- 1 (6-16) इन आयतों में अल्लाह की शक्ति प्रतिपालन (स्वबुवियत) और प्रज्ञा के लक्षण दर्शाये गये हैं जो यह साक्ष्य देते हैं कि प्रतिकार (बदले) का दिन आवश्यक है, क्योंकि जिस के लिये इतनी बड़ी व्यवस्था की गई हो और उसे कर्मों के अधिकार भी दिये गये हों तो उस के कर्मों का पुरस्कार या दण्ड तो मिलना ही चाहिये।
- 2 (17-20) इन आयतों में बताया जा रहा है कि निर्णय का दिन अपने निश्चित समय पर आकर रहेगा, उस दिन आकाश तथा धरती में एक बड़ी उथल पुथल होगी। इस के लिये सूर में एक फूँक मारने की देर है। फिर जिस की सूचना दी जा रही है तुम्हारे सामने आ जायेगी। तुम्हारे मानने या न मानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। और सब अपना हिसाब देने के लिये अल्लाह के न्यायालय

21. वास्तव में नरक घात में है।
22. जो दुराचारियों का स्थान है।
23. जिस में वे असंख्य वर्षों तक रहेंगे।
24. उस में ठंडी तथा पेय (पीने की चीज) नहीं चखेंगे।
25. केवल गर्म पानी और पीप रक्त के।
26. यह पूरा पूरा प्रतिफल है।
27. निःसंदेह वे हिसाब की आशा नहीं रखते थे।
28. तथा वे हमारी आयतों को झुठलाते थे।
29. और हम ने सब विषय लिख कर सुरक्षित कर लिये हैं।
30. तो चखो, हम तुम्हारी यातना अधिक ही करते रहेंगे।^[1]
31. वास्तव में जो डरते हैं उन्हीं के लिये सफलता है।
32. बाग़ तथा अँगूर है।
33. और नवयुवति कुमारियों।
34. और छलकते प्याले।
35. उस में बकवाद और मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे।

- إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝
 لِلطَّغْيَيْنِ مَابًا ۝
 لِّمُتِّئِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝
 لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝
 إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝
 جَزَاءً وَفَاءً ۝
 إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝
 وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۝
 وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝
 فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِتُرْبٍ كُفْرًا ۝
 إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝
 حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ۝
 وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۝
 وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝
 لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَابًا ۝

की ओर चल पड़ेंगे।

- 1 (21-30) इन आयतों में बताया गया है कि जो हिसाब की आशा नहीं रखते और हमारी आयतों को नहीं मानते हम ने उन के एक एक करतूत को गिन कर अपने यहाँ लिख रखा है। और उन की खबर लेने के लिये नरक घात लगाये तैयार है, जहाँ उन के कुकर्मों का भरपूर बदला दिया जायेगा।

36. यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है।
37. जो आकाश, धरती तथा जो उन के बीच है का अति करुणामय पालनहार है। जिस से बात करने का वे साहस नहीं कर सकेंगे।
38. जिस दिन रूह (जिब्रील) तथा फरिश्ते पंक्तियों में खड़े होंगे, वही बात कर सकेगा जिसे रहमान (अल्लाह) आज्ञा देगा, और सहीह बात करेगा।
39. वह दिन निःसंदेह होना ही है। अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर (जाने का) ठिकाना बना ले।^[1]
40. हम ने तुम को समीप यातना से सावधान कर दिया जिस दिन इन्सान अपना करतूत देखेगा, और काफ़िर (विश्वास हीन) कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो जाता!^[2]

جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءٌ حَسَبًا ۝

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنُ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَن اُوْنَ لَهٗ الرِّضٰى وَقَالَ صٰوِبًا ۝

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ اِلٰى رَبِّهِ مَآبًا ۝

اِذَا اَنْذَرْنٰكَ عَذَابًا قَرِيْبًا ۙ يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكَافِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ شَرًّا ۝

- 1 (37-39) इन आयतों में अल्लाह के न्यायालय में उपस्थिति (हाज़िरी) का चित्र दिखाया गया है। और जो इस भ्रम में पड़े हैं कि उन के देवी देवता आदि अभिस्तावना करेंगे उन को सावधान किया गया है कि उस दिन कोई बिना उस की आज्ञा के मुँह नहीं खोलेगा और अल्लाह की आज्ञा से अभिस्तावना भी करेगा तो उसी के लिये जो संसार में सत्य वचन "ला इलाहा इल्लल्लाह" को मानता हो। अल्लाह के द्रोही और सत्य के विरोधी किसी अभिस्तावना के योग्य नहीं होंगे।
- 2 (40) बात को इस चेतावनी पर समाप्त किया गया है कि जिस दिन के आने की सूचना दी जा रही है, उस का आना सत्य है, उसे दूर न समझो। अब जिस का दिल चाहे इसे मान कर अपने पालनहार की ओर मार्ग बना ले। परन्तु इस चेतावनी के होते जो इन्कार करेगा उस का किया धरा सामने आयेगा तो पछता पछता कर यह कामना करेगा कि मैं संसार में पैदा ही न होता। उस समय इस संसार के बारे में उस का यह विचार होगा जिस के प्रेम में आज वह परलोक से अंधा बना हुआ है।

सूरह नाज़िआत^[1] - 79

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

सूरह नाज़िआत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 46 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अन्नाज़िआत)) शब्द से हुआ है। जिस का अर्थ है: प्राण खींचने वाले फरिश्ते, इसी से इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 14 तक में प्रतिफल के दिन पर गवाही प्रस्तुत की गई है। फिर क़्यामत का चित्र दिखाते हुये उस का इन्कार करने वालों की आपत्ति की चर्चा की गई है।
- आयत 15 से 26 तक में फिरऔन के मूसा (अलैहिस्सलाम) की बात न मानने के शिक्षाप्रद परिणाम को बताया गया है जो प्रतिफल के होने का ऐतिहासिक प्रमाण है।

1 इस सूरह का विषय प्रलय तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है। और इस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी न मानने के दुष्परिणाम से सावधान किया गया है। और फरिश्तों के कार्यों की चर्चा कर के यह विश्वास दिलाया गया है कि प्रलय अवश्य आयेगी, और दूसरा जीवन हो कर रहेगा। यही फरिश्ते अल्लाह के आदेश से इस विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त कर देंगे। यह कार्य जिसे असंभव समझा जा रहा है अल्लाह के लिये अति सरल है। एक क्षण में वह संसार को विलय कर देगा और दूसरे क्षण में, सहसा दूसरे संसार में स्वयं को जीवित पाओगे।

फिर फिरऔन की कथा का वर्णन कर के नबियों (ईश दूतों) को न मानने का दुष्परिणाम बताया गया है जिस से शिक्षा लेनी चाहिये।

27 से 33 तक परलोक तथा दोबारा उठाये जाने का वर्णन है।

34 से 41 तक बताया गया है कि परलोक के स्थायी जीवन का निर्णय इस आधार पर होगा कि किस ने आज्ञा का उल्लंघन किया है। और माया मोह को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया, तथा किस ने अपने पालनहार के सामने खड़े होने का भय किया। और मनमानी करने से बचा। यह समय अवश्य आना है। अब जिस के जो मन में आये करें। जो इसी संसार को सब कुछ समझते थे यह अनुभव करेंगे कि वह संसार में मात्र पल भर ही रहे, उस समय समझ में आयेगा कि इस पल भर के सुख के लिये उस ने सदा के लिये अपने भविष्य का विनाश कर लिया।

- आयत 34 से 41 तक में क़्यामत के दिन अवैज्ञाकारियों की दुर्दशा और आज्ञाकारियों के उत्तम परिणाम को दिखाया गया है।
- अन्त में क़्यामत के नकारने वालों का जवाब दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|--|---|
| 1. शपथ है उन फरिश्तों की जो डूब कर (प्राण) निकालते हैं! | وَالْبُرْعَتِ عُرْفًا ۝ |
| 2. और जो सरलता से (प्राण) निकालते हैं | وَاللَّسْطِ نَسْطًا ۝ |
| 3. और जो तैरते रहते हैं। | وَالشَّحِطِ سَبْحًا ۝ |
| 4. फिर जो आगे निकल जाते हैं। | فَالشِّقْطِ شَقًّا ۝ |
| 5. फिर जो कार्य की व्यवस्था करते हैं ^[1] | فَالْمُدْبِرِتِ أَمْرًا ۝ |
| 6. जिस दिन धरती काँपेगी। | يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ |
| 7. जिस के पीछे ही दूसरी कम्प आ जायेगी। | تَتَّبِعُهَا الْوَّارِقَةُ ۝ |
| 8. उस दिन बहुत से दिल धड़क रहे होंगे। | فُلُوكٌ يَوْمَئِذٍ رَاجِفَةٌ ۝ |
| 9. उन की आंखें झुकी होगी। | أَبْصَارُهُمْ خَائِفَةٌ ۝ |
| 10. वे कहते हैं कि क्या हम फिर पहली स्थिति में लाये जायेंगे? | يَقُولُونَ مَاءًا سَرَّوْدُونَ فِي الْحَافِرَةِ ۝ |
| 11. जब हम (भुरभुरी) (खोखली) स्थियाँ (हड्डियाँ) हो जायेंगे। | إِذَا كُنَّا عِظَامًا تَخِرَّةٌ ۝ |
| 12. उन्होंने ने कहा: तब तो इस वापसी में क्षति है। | قَالُوا يٰوَيْلَكَ إِذَا انْزَعْتَ حَاسِرَةٌ ۝ |

1 (1-5) यहाँ से बताया गया है कि प्रलय का आरंभ भारी भूकम्प से होगा और दूसरे ही क्षण सब जीवित हो कर धरती के ऊपर होंगे।

13. बस वह एक झिड़की होगी।
14. तब वे अकस्मात धरती के ऊपर होंगे।
15. (हे नबी) क्या तुम को मूसा का समाचार पहुँचा?^[1]
16. जब पवित्र वादी "तुवा" में उसे उसके पालनहार ने पुकारा।
17. फिरऔन के पास जाओ वह विद्रोही हो गया है।
18. तथा उस से कहो कि क्या तुम पवित्र होना चाहोगे?
19. और मैं तुम्हें तुम्हारे पालनहार की सीधी राह दिखाऊँ तो तुम डरोगे?
20. फिर उस को सब से बड़ा चिन्ह (चमत्कार) दिखाया।
21. तो उस ने उसे झुठला दिया और बात न मानी।
22. फिर प्रयास करने लगा।
23. फिर लोगों को एकत्र किया फिर पुकारा।
24. और कहा: मैं तुम्हारा परम पालनहार हूँ।
25. तो अल्लाह ने उसे संसार तथा परलोक की यातना में घेर लिया।
26. वास्तव में इस में उस के लिये शिक्षा है जो डरता है।

- فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾
 فَإِذَا هُمْ بِالنَّاهِرِ ﴿١٤﴾
 هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ﴿١٥﴾
 إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾
 إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ﴿١٧﴾
 فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَى أَنْ تَزُولَ ﴿١٨﴾
 وَاهْدِيكَ إِلَى رَبِّكَ فَتَخْشَى ﴿١٩﴾
 فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَى ﴿٢٠﴾
 فَكَذَّبَ وَعَصَى ﴿٢١﴾
 ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَى ﴿٢٢﴾
 فَخَشَرَهُ فَأَدَّى ﴿٢٣﴾
 فَقَالَ إِنَّا رَبُّكَ الْأَعْلَى ﴿٢٤﴾
 فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْغَصَّةِ وَالْأُولَى ﴿٢٥﴾
 إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَخْشَى ﴿٢٦﴾

1 (6-15) इन आयतों में प्रलय दिवस का चित्र पेश किया गया है। और काफिरों की अवस्था बतायी गई है कि वे उस दिन किस प्रकार अपने आप को एक खुले मैदान में पायेंगे।

27. क्या तुम को पैदा करना कठिन है
अथवा आकाश को, जिसे उस ने
बनाया।^[1]

أَلَمْ أَنْشَأْ خَلْقًا مِّن مَّاءٍ بَينَهُمَا ۖ

28. उस की छत ऊँची की और चौरस
किया।

رَفَعَ سَنَكهَا فَمَوْبَهَا ۖ

29. और उस की रात को अंधेरी, तथा
दिन को उजाला किया।

وَأَعْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۖ

30. और इस के बाद धरती को फैलाया।

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ

31. और उस से पानी और चारा
निकाला।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْغِهَا ۖ

32. और पर्वतों को गाड़ दिया।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۖ

33. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लाभ
के लिये।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۖ

34. तो जब प्रलय आयेगी।^[2]

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ۖ

35. उस दिन इन्सान अपना करतूत याद
करेगा।^[3]

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَىٰ ۖ

36. और देखने वाले के लिये नरक सामने
कर दी जायेगी।

وَبُورِيتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَىٰ ۖ

1 (16-27) यहाँ से प्रलय के होने और पुनः जीवित करने के तर्क आकाश तथा धरती की रचना से दिये जा रहे हैं कि: जिस शक्ति ने यह सब बनाया और तुम्हारे जीवन रक्षा की व्यवस्था की है, प्रलय करना और फिर सब को जीवित करना उस के लिये असंभव कैसे हो सकता है? तुम स्वयं विचार कर के निर्णय करो।

2 (28-34) "बड़ी आपदा" प्रलय को कहा गया है जो उस की घोर स्थिति का चित्रण है।

3 (35) यह प्रलय का तीसरा चरण होगा जब कि वह सामने होगी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसारिक कर्म याद आयेंगे और कर्मानुसार जिस ने सत्य धर्म की शिक्षा का पालन किया होगा उसे स्वर्ग का सुख मिलेगा और जिस ने सत्य धर्म और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नकारा और मनमानी धर्म और कर्म किया होगा वह नरक का स्थायी दुख भोगेगा।

37. तो जिस ने बिद्रोह किया।
 38. और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी।
 39. तो नरक ही उस का आवास होगी।
 40. परन्तु जो अपने पालनहार की महानता से डरा तथा अपने आप को मनमानी करने से रोका।
 41. तो निश्चय ही उस का आवास स्वर्ग है।
 42. वे आप से प्रश्न करते हैं कि वह समय कब आयेगा?^[1]
 43. तुम उस की चर्चा में क्यों पड़े हो?
 44. उस के होने के समय का ज्ञान तुम्हारे पालनहार के पास है।
 45. तुम तो उसे सावधान करने के लिये हो जो उस से डरता है।^[2]
 46. वह जिस दिन उस का दर्शन करेंगे उन्हें ऐसा लगेगा कि वह संसार में एक संध्या या उस के सबेरे से अधिक नहीं ठहरे।

- فَأَمَّا مَنْ طَغَىٰ
 وَاشْتَرَىٰ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا
 فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ
 وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَتَقَىٰ النَّفْسَ الْهَوَىٰ
 فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ
 يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسِيهَا
 فِيمَا أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا
 إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَىٰ
 إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَّنْ يُخَشِّهَا
 كَذَّبُوا بِيَوْمِ رَبِّهِمْ وَلَهُمْ أَلْوَمٌ لِّتُكُنَّ الْأَعْشَىٰ
 أَوْ صُلْحَىٰ

1 (42) काफ़िरोँ का यह प्रश्न समय जानने के लिये नहीं, बल्कि हंसी उड़ाने के लिये था।

2 (45) इस आयत में कहा गया है कि (हे नबी) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप का दायित्व मात्र उस दिन से सावधान करना है। धर्म बल पूर्वक मनवाने के लिये नहीं। जो नहीं मानेगा उसे स्वयं उस दिन समझ में आ जायेगा कि उस ने क्षण भर के सांसारिक जीवन के स्वर्थ के लिये अपना स्थायी सुख खो दिया। और उस समय पछतावे का कुछ लाभ नहीं होगा।

सूरह अबस^[1] - 80

سُوْرَةُ عَبَسَ

सूरह अबस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 42 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अबस)) शब्द से हुआ है जिस का अर्थ ((मुंह बसोरना)) है। इसी से इस सूरह का नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 10 तक में एक विशेष घटना की ओर संकेत कर के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को ध्यान दिलाया गया है कि आप अभिमानियों तथा दुराग्रहियों के पीछे न पड़ें। उस पर ध्यान दें जो सत्य की खोज करता और अपना सुधार चाहता है।
- आयत 11 से 16 तक में कुरआन की महिमा का वर्णन किया गया तथा बताया गया है कि जिस की ओर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बुला रहे हैं वह कितनी बड़ी चीज़ है। इस लिये जो इस का अपमान करेंगे वह स्वयं अपना ही बुरा करेंगे।
- आयत 17 से 23 तक में प्रलय के इन्कारियों को चेतावनी दी गई है। तथा फिर से जीवित किये जाने के प्रमाण अल्लाह के पालनहार होने से प्रस्तुत किये गये हैं।

1 यह सूरह मक्की है। भाष्य कारों ने इस के उतरने का कारण यह लिखा है कि एक बार ईशदूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का के प्रमुखों को इस्लाम के विषय में समझा रहे थे कि एक अनुयायी अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम (रजियल्लाहु अन्हु) ने आ कर धार्मिक विषय में प्रश्न किया। आप उसे बुरा मान गये और मुंह फेर लिया। इस पर आप को सावधान किया गया कि धर्म में संसारिक मान मर्यादा का कोई महत्व नहीं, आप उसी पर प्रथम ध्यान दें जो सत्य को मानता तथा उस का पालन करता है। आप का दायित्व यह भी नहीं है कि किसी को सत्य मनवा दें। फिर कुरआन ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विनय और खुशामद से प्रस्तुत किया जाये। बल्कि जो उस पर विचार करेगा तो स्वयं ही इस सत्य को पा लेगा। और जान लेगा कि जिस निराकार शक्ति ने सब कुछ किया है तो पूजा भी मात्र उसी की करें और उसी के कृतज्ञ हों। फिर यदि वह अपनी कृतघ्नता पर अड़े रह गये तो एक दिन आयेगा जब यह मान मर्यादा और उन का कोई सहायक नहीं रह जायेगा और प्रत्येक के कर्मों का फल उस के सामने आ जायेगा।

- अन्त में आयत 42 तक क्यामत का भ्यावह चित्र तथा सदाचारियों और दुराचारियों के अलग-अलग परिणाम बताये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (नबी ने) त्योरी चढ़ाई तथा मुँह फेर लिया।
2. इस कारण कि उस के पास एक अँधा आया।
3. और तुम क्या जानो शायद वह पवित्रता प्राप्त करे।
4. या नसीहत ग्रहण करे जो उस को लाभ देती।
5. परन्तु जो विमुख (निश्चन्त) है।
6. तुम उन की ओर ध्यान दे रहे हो।
7. जब कि तुम पर कोई दोष नहीं यदि वह पवित्रता ग्रहण न करे।
8. तथा जो तुम्हारे पास दौड़ता आया।
9. और वह डर भी रहा है।
10. तुम उस की ओर ध्यान नहीं देते।^[1]
11. कदापि यह न करो, यह (अर्थात् कुर्आन) एक स्मृति (याद दहानी) है।

عَبَسَ وَتَوَلَّى ۝

أَن جَاءَهُ الْأَعْمَى ۝

وَمَا يَذِّبُكَ لَعَلَّةَ يَوْمٍ ۝

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى ۝

أَمَّا مَنِ اسْتَعْنَى ۝

فَأَن تِلْهُ تَصَدَّى ۝

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزِلَّ ۝

وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَى ۝

وَهُوَ يَخْشَى ۝

فَأَن تَعْنَى تَلْهَى ۝

كَلَّا إِنهَا تَذَكُّرَةٌ ۝

- 1 (1-10) भावार्थ यह है कि सत्य के प्रचारक का यह कर्तव्य है कि जो सत्य की खोज में हो भले ही वह दरिद्र हो उसी के सुधार पर ध्यान दे। और जो अभीमान के कारण सत्य की परवाह नहीं करते उन के पीछे समय न गवायें। आप का यह दायित्व भी नहीं है कि उन्हें अपनी बात मनवा दें।

- | | |
|---|---|
| 12. अतः जो चाहे स्मरण (याद) करे। | فَمَنْ شَاءَ ذَكِّرْهُ ۝ |
| 13. माननीय शास्त्रों में है। | فِي صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۝ |
| 14. जो ऊँचे तथा पवित्र हैं। | مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ |
| 15. ऐसे लेखकों (फ़रिश्तों) के हाथों में है। | بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝ |
| 16. जो सम्मानित और आदरणीय हैं। ^[1] | كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ |
| 17. इन्सान मारा जाये वह कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है। | كُلُّ الْإِنْسَانِ مَا أَكْفَرُ ۝ |
| 18. उसे किस वस्तु से (अल्लाह) ने पैदा किया? | مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ |
| 19. उसे वीर्य से पैदा किया, फिर उस का भाग्य बनाया। | مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۝ |
| 20. फिर उस के लिये मार्ग सरल किया। | ثُمَّ السَّبِيلَ يَسْرَهُ ۝ |
| 21. फिर मौत दी फिर समाधि में डाल दिया। | ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝ |
| 22. फिर जब चाहेगा उसे जीवित कर लेगा। | ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۝ |
| 23. वस्तुतः उस ने उस की आज्ञा का पालन नहीं किया। ^[2] | كَلَّا لَئِنْ أَيْقُنْ مَا أَمَرَهُ ۝ |
| 24. इन्सान अपने भोजन की ओर ध्यान दे | فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۝ |

1 (11-16) इन में कुर्आन की महानता को बताया गया है कि यह एक स्मृति (याद दहानी) है। किसी पर थोपने के लिये नहीं आया है। बल्कि वह तो फ़रिश्तों के हाथों में स्वर्ग में एक पवित्र शास्त्र के अन्दर सुरक्षित है। और वहीं से वह (कुर्आन) इस संसार में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारा जा रहा है।

2 (17-23) तक विश्वास हीनों पर धिक्कार है कि यदि वह अपने अस्तित्व पर विचार करें कि हम ने कितनी तुच्छ वीर्य की बूंद से उस की रचना की तथा अपनी दया से उसे चेतना और समझ दी परन्तु इन सब उपकारों को भूल कर कृतघ्न बना हुआ है, और पूजा उपासना अन्य की करता है।

25. हम ने मूसलाधार वर्षा की।
26. फिर धरती को चीरा फाड़ा।
27. फिर उस से अन्न उगाया।
28. तथा अंगूर और तरकारियाँ।
29. तथा जैतून एवं खजूर।
30. तथा घने बाग।
31. एवं फल तथा वनस्पतियों।
32. तुम्हारे तथा तुम्हारे पशुओं के लिये।⁽¹⁾
33. तो जब कान फाड़ देने वाली (प्रलय) आ जायेगी।
34. उस दिन इन्सान अपने भाई से भागेगा।
35. तथा अपने माता और पिता से।
36. एवं अपनी पत्नी तथा अपने पुत्रों से।
37. प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन अपनी पड़ी होगी।
38. उस दिन बहुत से चेहरे उज्ज्वल होंगे।
39. हंसते एवं प्रसन्न होंगे।
40. तथा बहुत से चेहरों पर धूल पड़ी होगी।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝

فَأَنبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝

وَعِنَبًا وَقَضْبًا ۝

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝

وَحَدَائِقَ غُلَبًا ۝

وَنَاقِلَةً وَأَنْكًا ۝

مِمَّا عَمَلَكُمْ وَتِلْكَ مَكْرًا ۝

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاعَةُ ۝

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝

لِكُلِّ امْرَأَةٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهَا ۝

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝

ضَاحِكَةٌ مُّتَبَشِّرَةٌ ۝

وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝

1 (24-32) इन आयतों में इन्सान के जीवन साधनों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अल्लाह की अपार दया के परिचायक हैं। अतः जब सारी व्यवस्था वही करता है तो फिर उस के इन उपकारों पर इन्सान के लिये उचित था कि उसी की बात माने और उसी के आदेशों का पालन करे जो कुरआन के माध्यम से अन्तिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है। (दावतुल कुर्आन)

41. उन पर कालिमा छाई होगी।

تَرَهْقَافًا ذُرَّةً ۝

42. वही काफिर और कुकर्मि लोग
हैं।^[1]

أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

1 (33-42) इन आयतों का भावार्थ यह है कि संसार में किसी पर कोई आपदा आती है तो उस के अपने लोग उस की सहायता और रक्षा करते हैं। परन्तु प्रलय के दिन सब को अपनी अपनी पड़ी होगी और उस के कर्म ही उस की रक्षा करेंगे।

सूरह तक्वीर^[1] - 81

سُورَةُ التَّكْوِيْرِ

सूरह तक्वीर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 29 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन सूर्य के लपेट दिये जाने के लिये ((कुव्विरत)) शब्द आया है। इस लिये इस का नाम सूरह तक्वीर है। जिस का अर्थ लपेटना है।^[1]
- इस की आयत 1 से 6 तक प्रलय की प्रथम घटना और आयत 7 से 14 तक में दूसरी घटना का चित्रण किया गया है।
- आयत 15 से 25 तक में यह बताया गया है कि कुर्आन और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सूचना दे रहे हैं वह सत्य पर आधारित है।
- आयत 26 से 29 तक में इन्कार करने वालों को चेतावनी दी गई है कि कुर्आन को न मानना सत्य का इन्कार है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब सूर्य लपेट दिया जायेगा।
2. और जब तारे धुमिल हो जायेंगे।
3. जब पर्वत चलाये जायेंगे।
4. और जब दस महीने की गाभिन
ऊँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।
5. और जब बन् पशु एकत्र कर दिये
जायेंगे
6. और जब सागर भड़काये जायेंगे।^[2]

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝

1 यह सूरह आरंभिक सूरतों में से है। इस में प्रलय तथा दूतत्व (रिसालत) का वर्णन है।

2 (1-6) इन में प्रलय के प्रथम चरण में विश्व में जो उथल पुथल होगी उस को

7. और जब प्राण जोड़ दिये जायेंगे।
8. और जब जीवित गाड़ी गई कन्या से प्रश्न किया जायेगा:
9. कि वह किस अपराध के कारण बध की गई।
10. तथा जब कर्म पत्र फैला दिये जायेंगे।
11. और जब आकाश की खाल उतार दी जायेगी।
12. और जब नरक धहकाई जायेगी।
13. और जब स्वर्ग समीप लाई जायेगी।
14. तो प्रत्येक प्राणी जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।^[1]
15. मैं शपथ लेता हूँ उन तारों की जो पीछे हट जाते हैं।
16. जो चलते चलते छुप जाते हैं।
17. और रात की (शपथ), जब समाप्त होने लगती है।

وَإِذَا النُّفُوسُ رُوِّجَتْ ۝

وَإِذَا الْمَوْدَّةُ سُيِّجَتْ ۝

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرتْ ۝

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِرَتْ ۝

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ۝

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝

فَلَا أَمْسِرُ بِالْمُنْجِسِ ۝

الْمَوَارِثِ الْكَثِيرِ ۝

وَالَيْلِ إِذَا غَمَسَ ۝

दिखाया गया है कि आकाश, धरती और पर्वत, सागर तथा जीव जन्तुओं की क्या दशा होगी। और माया मोह में पड़ा इन्सान इसी संसार में अपने प्रियवर धन से कैसा बे परवाह हो जायेगा। वन् पशु भी भय के मारे एकत्र हो जायेंगे। सागरों के जल प्लावन से धरती जल थल हो जायेगी।

- 1 (7-14) इन आयतों में प्रलय के दूसरे चरण की दशा को दर्शाया गया है कि इन्सानों की आस्था और कर्मों के अनुसार श्रेणियाँ बनेंगी। नृशंसितों (मजलूमों) के साथ न्याय किया जायेगा। कर्म पत्र खोल दिये जायेंगे। नरक भड़काई जायेगी। स्वर्ग सामने कर दी जायेगी। और उस समय सभी को वास्तविकता का ज्ञान हो जायेगा। इस्लाम के उदय के समय अरब में कुछ लोग पुत्रियों को जन्म लेते ही जीवित गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने नारियों को जीवन प्रदान किया। और उन्हें जीवित गाड़ देने को घोर अपराध घोषित किया। आयत नं० 8 में उन्हीं नृशंस अपराधियों को धिक्कारा गया है।

18. तथा भोर की जब उजाला होने लगता है। وَالضُّبُرُ إِذَا انْتَفَسَ ۝
19. यह (कुर्आन) एक मान्यवर स्वर्ग दूत का लाया हुआ कथन है। إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝
20. जो शक्ति शाली है। अर्श (सिंहासन) के मालिक के पास उच्च पद वाला है। ذِي ثَوَرٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝
21. जिस की बात मानी जाती है और बड़ा अमानतदार है।^[1] مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝
22. और तुम्हारा साथी उन्मत्त नहीं है। وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۝
23. उस ने उस को आकाश में खुले रूप से देखा है। وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْقِ الْمُبِينِ ۝
24. वह परोक्ष (गैब) की बात बताने में प्रलोभी नहीं है।^[2] وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۝
25. यह धिक्कारी शैतान का कथन नहीं है। وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيزٍ ۝
26. फिर तुम कहाँ जा रहे हो? فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝
27. यह संसार वासियों के लिये एक स्मृति (शास्त्र) है। إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝
28. तुम में से उस के लिये जो सुधरना चाहता हो। لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَوِيَرَهُ ۝

1 (15-21) तारों की व्यवस्था गति तथा अंधेरे के पश्चात नियमित रूप से उजाला की शपथ इस बात की गवाही है कि कुर्आन ज्योतिष की बकवास नहीं। बल्कि यह ईश वाणी है। जिस को एक शक्तिशाली तथा सम्मान वाला फ़रिश्ता ले कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। और अमानतदारी से इसे पहुँचाया।

2 (22-24) इन में यह चेतावनी दी गई है कि महा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो सुना रहे हैं, और जो फ़रिश्ता बह्वी (प्रकाशना) लाता है उन्होंने उसे देखा है। वह परोक्ष की बातें प्रस्तुत कर रहे हैं कोई ज्योतिष की बात नहीं, जो धिक्कारे शैतान ज्योतिषियों को दिया करते हैं।

29. तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे | وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾
 बिना कुछ नहीं कर सकते।^[1]

1 (27-29) इन साक्ष्यों के पश्चात् सावधान किया गया है कि कुर्आन मात्र याद दहानी है। इस विश्व में इस के सत्य होने के सभी लक्षण सब के सामने हैं। इन का अध्ययन कर के स्वयं सत्य की राह अपना लो अन्यथा अपना ही बिगाड़ोगे।

सूरह इन्फितार^[1] - 82

سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ

सूरह इन्फितार के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- "इन्फितार" का अर्थ ((फटना)) है। इस में प्रलय के दिन आकाश के फट जाने की सूचना दी गई है। इसी कारण इस का यह नाम है।
- इस की आयत 1 से 5 तक में प्रलय का दृश्य प्रस्तुत किया गया है कि जब प्रलय आयेगी तो मनुष्य का सब किया धरा सामने आ जायेगा।
- फिर आयत 6 से 8 तक में मनुष्य को यह बताया गया है कि जिस अल्लाह ने उसे पैदा किया है क्या उसे मनमानी करने के लिये छोड़ देगा?
- आयत 9 से 12 तक में बताया गया है कि मनुष्य का प्रत्येक कर्म लिखा जा रहा है।
- आयत 13 से 19 तक में सदाचारियों और दुराचारियों के परिणाम बताते हुये सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन किसी के बस में कुछ न होगा, उस दिन सभी अधिकार अल्लाह के हाथ में होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. तथा जब तारे झड़ जायेंगे।
3. और जब सागर उबल पड़ेंगे।
4. और जब समाधियाँ (कबरें) खोल दी जायेंगी।
5. तब प्रत्येक प्राणी को ज्ञान हो जायेगा जो उस ने किया है और नहीं किया है।^[1]

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝

وَإِذَا النُّجُومُ انشَثَرَتْ ۝

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا نَدِمَتْ وَأَعْرَتْ ۝

1 (1-5) इन में प्रलय के दिन आकाश गहों तथा धरती और समाधियों पर जो

6. हे इन्सान! तुझे किस वस्तु ने तेरे उदार पालनहार से बहका दिया।
7. जिस ने तेरी रचना की फिर तुझे संतुलित बनाया।
8. जिस रूप में चाहा बना दिया।^[1]
9. वास्तव में तुम प्रतिफल (प्रलय) के दिन को नहीं मानते।
10. जब कि तुम पर निरीक्षक (पासबान) हैं।
11. जो माननीय लेखक हैं।
12. वे जो कुछ तुम करते हो जानते हैं।^[2]
13. निःसंदेह सदाचारी सुखों में होंगे।
14. और दुराचारी नरक में।
15. प्रतिकार (बदले) के दिन उस में झोंक दिये जायेंगे।
16. और वे उस से बच रहने वाले नहीं।^[3]

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّبَكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّدَكَ مَتَدًا ۝

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ۝

كَلَّا بَلْ لَّكَ دُبُونٌ بِالْأَيْنِ ۝

وَأَنْ عَلَيْكُمْ حِطَاطِينَ ۝

كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝

يَعْلَمُونَ مَا تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّ الْآبِرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

وَأِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الَّذِينَ ۝

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝

दशा गुजरेगी उस का बित्रण किया गया है। तथा चेतावनी दी गई है कि सब के कर्तुत उस के सामने आ जायेंगे।

- 1 (6-8) भावार्थ यह है कि इन्सान की पैदाइश में अल्लाह की शक्ति, दक्षाता तथा दया के जो लक्षण हैं, उन के दर्पण में यह बताया गया है कि प्रलय को असंभव न समझो। यह सब व्यवस्था इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ नहीं है कि मनमानी करो। (देखिये: तर्जुमानुल कुरआन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद) इस का अर्थ यह भी हो सकता है कि जब तुम्हारा अस्तित्व और रूप रेखा कुछ भी तुम्हारे बस नहीं, तो फिर जिस शक्ति ने सब किया उसी की शक्ति में प्रलय तथा प्रतिकार के होने को क्यों नहीं मानते?
- 2 (9-12) इन आयतों में इस भ्रम का खण्डन किया गया है कि सभी कर्मों और कथनों का ज्ञान कैसे हो सकता है।
- 3 (13-16) इन आयतों में सदाचारियों तथा दुराचारियों का परिणाम बताया गया है कि एक स्वर्ग के सुखों में रहेगा। और दूसरा नरक के दण्ड का भागी बनेगा।

17. और तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

18. फिर तुम क्या जानो कि बदले का दिन क्या है?

كَلَّا مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

19. जिस दिन किसी का किसी के लिये कोई अधिकार नहीं होगा, और उस दिन सब अधिकार अल्लाह का होगा।^[1]

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ
لِیَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

1 (17-19) इन आयतों में दो वाक्यों में प्रलय की चर्चा दोहरा कर उस की भयानकता को दर्शाते हुये बताया गया है कि निर्णय बे लाग होगा। कोई किसी की सहायता नहीं कर सकेगा। सत्य आस्था और सत्कर्म ही सहायक होंगे जिस का मार्ग कुर्आन दिखा रहा है। कुर्आन की सभी आयतों में प्रतिकार का दिन प्रलय के दिन को ही बताया गया है जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मानुसार प्रतिकार मिलेगा।

83 - सूरह मुतफ़िफ़ीन^[1]

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरह मुतफ़िफ़ीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 36 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में ((मुतफ़िफ़ीन)) शब्द आया है। जिस का अर्थ है: नापने-तौलने में कमी करने वाले, इसी से इस का नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 6 तक में व्यवसायिक विषय में विश्वासघात को विनाशकारी कर्म बताया गया है।
- आयत 7 से 28 तक में बताया गया है कि कुकर्मियों के कर्म एक विशेष पंजी जिस का नाम ((सिज्जीन)) है, में लिखे हुये हैं और सदाचारियों के ((इल्लियीन)) में, जिन के अनुसार उन का निर्णय किया जायेगा और दोनों का परिणाम बताया गया है।
- आयत 29 से अन्त तक ईमान वालों को दिलासा दी गई है कि विरोधियों के व्यंग से दुखी न हों आज वह तुम पर हँस रहे हैं कल तुम उन पर हँसोगे।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश है डंडी मारने वालों का।
2. जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लेते हैं।
3. और जब उन को नाप या तोल कर देते हैं तो कम देते हैं।
4. क्या वे नहीं सोचते कि फिर जीवित किये जायेंगे?

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ

الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوَّزَوْهُمْ يَخْسِرُونَ

أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ

- 1 नाप तौल में कमी बहुत बड़ी समाजिक खराबी है। और यह रोग विगत समुदायों में भी विशेष रूप से पाया जाता था। सूरह मुतफ़िफ़ीन में इस बुराई की कड़ी निंदा की गई है। और प्रलय दिवस में उन को कठोर यातना की सूचना दी गई है।

5. एक भीषण दिन के लिये।
6. जिस दिन सभी विश्व के पालनहार के सामने खड़े होंगे।^[1]
7. कदापि ऐसा न करो, निश्चय बुरों का कर्म पत्र "सिज्जीन" में है।
8. और तुम क्या जानो कि "सिज्जीन" क्या है?
9. वह लिखित महान् पुस्तक है।
10. उस दिन झुठलाने वालों के लिये विनाश है
11. जो प्रतिकार (बदले) के दिन को झुठलाते हैं।
12. तथा उसे वही झुठलाता है जो महा अत्याचारी और पापी है।
13. जब उन के सामने हमारी आयतों का अध्ययन किया जाता है तो कहते हैं: पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं।
14. सुनो! उन के दिलों पर कुकर्मों के कारण लोहमल लग गया है।
15. निश्चय वे उस दिन अपने पालनहार (के दर्शन) से रोक दिये जायेंगे।
16. फिर वे नरक में जायेंगे।

- لَيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
 يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
 كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ۝
 وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ ۝
 كِتَابٌ مُرْقُومٌ ۝
 وَيَلَى يَوْمَئِذٍ الْفُكَّانُ ۝
 الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝
 وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُنْ مُعْتَدٍ أَثِيمٌ ۝
 إِذَا شُئِلَ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا سَاطِرُ أَوَّلَيْنِ ۝
 كَلَّا لَئِنْ حُصِرَافٌ عَلَى فَلْيُؤَيِّمْنَا كَأَنَّا كَائِدُونَ ۝
 كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَحْجُورُونَ ۝
 ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝

1 (1-6) इस सुरह की प्रथम छः आयतों में इसी व्यवसायिक विश्वास घात पर पकड़ की गई है कि न्याय तो यह है कि अपने लिये अन्याय नहीं चाहते तो दूसरों के साथ न्याय करो। और इस रोग का निवारण अल्लाह के भय तथा परलोक पर विश्वास ही से हो सकता है। क्योंकि इस स्थिति में निक्षेप (अमानतदारी) एक नीति ही नहीं बल्कि धार्मिक कर्तव्य होगा और इस पर स्थित रहना लाभ तथा हानि पर निर्भर नहीं रहेगा।

17. फिर कहा जायेगा कि यही है जिसे तुम मिथ्या मानते थे।^[1]
18. सच्च यह है कि सदाचारियों के कर्म पत्र "इल्लियीन" में है।
19. और तुम क्या जानो कि "इल्लियीन" क्या है?
20. एक अंकित पुस्तक है।
21. जिस के पास समीपवर्ती (फरिश्ते) उपस्थित रहते हैं।
22. निश्चय सदाचारी आनंद में होंगे।
23. सिंहासनों के ऊपर बैठ कर सब कुछ देख रहे होंगे।
24. तुम उन के मुखों से आनंद के चिह्न अनुभव करोगे।
25. उन्हें मुहर लगी शुद्ध मदिरा पिलायी जायेगी।
26. यह मुहर कस्तूरी की होगी। तो इस की अभिलाषा करने वालों को इस की अभिलाषा करनी चाहिये।
27. उस में तसनीम मिली होगी।

ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْإِبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾

وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾

كِتَابٌ مَرْفُوعٌ ﴿٢٠﴾

يَشْهَدُهُ الْمَلَائِكَةُ بِئْسَ الَّذِي كُنْتُمْ تُكْفِرُونَ ﴿٢١﴾

إِنَّ الْإِبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

عَلَى الْأَرْسَالِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٢٣﴾

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ ﴿٢٥﴾

خَمْرٌ مِثْلُ بِخْرِ فِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَفِسُونَ ﴿٢٦﴾

وَمَزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

1 (7-17) इन आयतों में कुकर्मियों के दुष्परिणाम का विवरण दिया गया है। तथा यह बताया गया है कि उन के कुकर्म पहले ही से अपराध पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं। तथा वे परलोक में कड़ी यातना का सामना करेंगे। और नरक में झोंक दिये जायेंगे।

"सिज्जीन" से अभिप्राय: एक जगह है जहाँ पर काफ़िरों, अत्याचारियों और मुशिरकों के कुकर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। दिलों का लोहमल: पापों की कालिमा को कहा गया है। पाप अंतरात्मा को अन्धकार बना देते हैं तो सत्य को स्वीकार करने की स्वभाविक योग्यता खो देते हैं।

28. वह एक स्रोत है जिस से (अल्लाह के) समीप बर्ती पियेंगे।^[1]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُعْرِضُونَ ۝

29. पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝

30. और जब उन के पास से गुज़रते तो आँखें मिचकाते थे।

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝

31. और जब अपने परिवार में वापिस जाते तो आनंद लेते हुये वापिस होते थे।

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝

32. और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे: यही भटके हुये लोग हैं।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ تَبَٰرَكُوا إِلَٰهًا ۝

33. जब कि वे उन के निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये थे।

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ۝

34. तो जो ईमान लाये आज काफ़िरों पर हंस रहे हैं।

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّٰرِ يَضْحَكُونَ ۝

35. सिंहासनों के ऊपर से उन्हें देख रहे हैं।

عَلَىٰ الْأَرْآئِكِ يَنْظُرُونَ ۝

36. क्या काफ़िरों (विश्वास हीनों) को उन का बदला दे दिया गया?^[2]

مَلَأُوا ثُبُوبَ الْكُفَّٰرِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

1 (18-28) इन आयतों में बताया गया है कि सदाचारियों के कर्म ऊँचे पत्रों में अंकित किये जा रहे हैं जो फ़रिश्तों के पास सुरक्षित हैं और वे स्वर्ग में सुख के साथ रहेंगे। "इल्लिय्यीन" से अभिप्रायः जन्नत में एक जगह है। जहाँ पर नेक लोगों के कर्म पत्र तथा प्राण एकत्र किये जाते हैं। वहाँ पर समीपवर्ती फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं।

2 (29-36) इन आयतों में बताया गया है कि परलोक में कर्मों का फल दिया जायेगा तो संसारिक परिस्थितियाँ बदल जायेंगी। संसार में तो सब के लिये अल्लाह की दया है, परन्तु न्याय के दिन जो अपने सुख सुविधा पर गर्व करते थे और जिन निर्धन मुसलमानों को देख कर आँखें मारते थे, वहाँ पर वही उन के दुष्परिणाम को देख कर प्रसन्न होंगे। अंतिम आयत में विश्वास हीनों के दुष्परिणाम को उन का कर्म कहा गया है। जिस में यह संकेत है कि सुफल और कुफल स्वयं इन्सान के अपने कर्मों का स्वभाविक प्रभाव होगा।

सूरह इन्शिकाक^[1] - 84

سُورَةُ الْاِنْشِقَاقِ

सूरह इन्शिकाक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 25 आयतें हैं।

- इन्शिकाक का अर्थ: फटना है। इस में आकाश के फटने की सूचना दी गई है, इस कारण इस का यह नाम है।^[1]
- आयत 1 से 5 तक में उस उथल पुथल का संक्षेप में वर्णन है जो प्रलय आते ही इस धरती और आकाश में होगी।
- आयत 6 से 15 तक में मनुष्य के अल्लाह के न्यायालय में पहुँचने, कर्मपत्र दिये जाने और अपने परिणाम को पहुँचने का वर्णन है।
- आयत 16 से 20 तक विश्व की निशानियों से प्रमाणित किया गया है कि मनुष्य को मौत के पश्चात् विभिन्न स्थितियों से गुज़रना होगा।
- अन्तिम आयतों में उन्हें धमकी दी गई है जो कुर्आन सुनकर अल्लाह के आगे नहीं झुकते बल्कि उसे झुठलाते हैं। और उन्हें अनन्त प्रतिफल की शुभसूचना दी गई है जो ईमान ला कर सदाचार करते हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब आकाश फट जायेगा।
2. और अपने पालनहार की सुनेगा और यही उसे करना भी चाहिये।
3. तथा जब धरती फैला दी जायेगी।
4. और जो उसके भीतर है फैक देगी तथा खाली हो जायेगी।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝

وَأُذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۝

وَأُلْقَتْ مَا فِيهَا وَخُلَّتْ ۝

1. इस सूरह का शीर्षक भी प्रलय (क्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है।

5. और अपने पालनहार की सुनेगी और यही उसे करना भी चाहिये।^[1]
6. हे इन्सान! वस्तुतः तू अपने पालनहार से मिलने के लिये परिश्रम कर रहा है, और तू उस से अवश्य मिलेगा।
7. फिर जिस किसी को उस का कर्म पत्र दाहिने हाथ में दिया जायेगा।
8. तो उस का सरल हिसाब लिया जायेगा।
9. तथा वह अपनों में प्रसन्न होकर वापस जायेगा।
10. और जिन को उन का कर्म पत्र बायें हाथ में दिया जायेगा
11. तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा।
12. तथा नरक में जायेगा।
13. वह अपनों में प्रसन्न रहता था।
14. उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।
15. क्यों नहीं? निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।^[2]

- وَأَذِّنْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝
يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًّا
فَمُلَاقِيهِ ۝
فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝
فَسَوْفَ يُحَاسِبُ بِهِ سَائِرًا ۝
وَيَتَغَلَّبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝
وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝
فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ۝
وَيَصِلُ سَجِيرًا ۝
إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝
إِنَّهُ ظَنَّ أَن لَّنْ يَحُورَ ۝
بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

1 (1-5) इन आयतों में प्रलय के समय आकाश एवं धरती में जो हलचल होगी उस का चित्रण करते हुये यह बताया गया है कि इस विश्व के विधाता के आज्ञानुसार यह आकाश और धरती कार्यरत हैं और प्रलय के समय भी उसी की आज्ञा का पालन करेंगे।

धरती को फैलाने का अर्थ यह है कि पर्वत आदि खण्ड खण्ड हो कर समस्त भूमि चौरस कर दी जायेगी।

2 (6-15) इन आयतों में इन्सान को सावधान किया गया है कि तुझे भी अपने पालनहार से मिलना है। और धीरे धीरे उसी की ओर जा रहा है। वहाँ अपने

16. मैं सांध्य लालिमा की शपथ लेता हूँ।
17. तथा रात की, और जिसे वह ऐकत्र करे।
18. तथा चाँद की जब पूरा हो जायें।
19. फिर तुम अवश्य एक दशा से दूसरी दशा पर सवार होगे।
20. फिर क्यों वे विश्वास नहीं करते।
21. और जब उन के पास कुर्आन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते।^[1]
22. बल्कि काफिर तो उसे झुठलाते हैं।
23. और अल्लाह उन के विचारों को भलि भाँति जानता है।
24. अतः उन्हें दुख दायी यातना की शुभ सूचना सुना दो।
25. परन्तु जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के लिये समाप्त न होने वाला बदला है।^[2]

- فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۖ
وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۖ
وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۖ
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۖ
فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ
وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۖ
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَكْذِبُونَ ۖ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُؤْمِنُونَ ۖ
فَيَسِّرْ لَهُمُ الْعَذَابَ يَوْمَ الْقِيَامِ ۖ
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۖ

कर्मानुसार जिसे दायें हाथ में कर्म पत्र मिलेगा वह अपनों से प्रसन्न होकर मिलेगा। और जिस को बायें हाथ में कर्म पत्र दिया जायेगा तो वह विनाश को पुकारेगा। यह वही होगा जिस ने माया मोह में कुर्आन को नकार दिया था। और सोचा कि इस संसारिक जीवन के पश्चात् कोई जीवन नहीं आयेगा।

- 1 (16-21) इन आयतों में विश्व के कुछ लक्षणों को साक्ष्य स्वरूप प्रस्तुत कर के सावधान किया गया है कि जिस प्रकार यह विश्व तीन स्थितियों से गुजरता है इसी प्रकार तुम्हें भी तीन स्थितियों से गुजरना है: संसारिक जीवन, फिर मरण, फिर परलोक का स्थायी जीवन जिस का सुख दुःख संसारिक कर्मों के आधार पर होगा।
- 2 (22-25) इन आयतों में उन के लिये चेतावनी है जो इन स्वभाविक साक्ष्यों के होते हुये कुर्आन को न मानने पर अड़े हुये हैं। और उन के लिये शुभ सूचना है जो इसे मान कर विश्वास (ईमान) तथा सुकर्म की राह पर अग्रसर हैं।

सूरह बुरूज^[1] - 85

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरह बुरूज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 22 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयतों में बुर्जों (राशि चक्र) वाले आकाश की शपथ ली गई है। जिस से इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 3 तक प्रतिफल के दिन के होने का दावा किया गया है।
- आयत 4 से 11 तक उन को धमकी दी गई है जो मुसलमानों पर केवल इस लिये अत्याचार करते हैं कि वह एक अल्लाह पर ईमान लाये हैं और जो इस अत्याचार के होते ईमान पर स्थित रहें उन्हें स्वर्ग की शुभसूचना दी गई है। फिर आयत 16 तक अत्याचारियों को सूचित किया गया है कि अल्लाह की पकड़ कड़ी है। साथ ही अल्लाह के उन गुणों का वर्णन किया गया है जिन से भय पैदा होता है और क्षमा माँगने की प्रेरणा मिलती है।
- आयत 17 से 20 तक अत्याचारियों की शिक्षाप्रद यातना की ओर संकेत है और यह चेतावनी है कि विरोधी अल्लाह के घेरे में हैं।
- अन्त में कुर्आन को एक ऊँची पुस्तक बताया है जिस का स्रोत पवित्र तथा सुरक्षित है और जिस की कोई बात असत्य नहीं हो सकती।

1 यह सूरह मक्का के उस युग में उतरी जब मुसलमानों को घोर यातनायें दे कर इस्लाम से फेरने का प्रयास ज़ोरों पर था। ऐसी परिस्थितियों में एक ओर तो मुसलमानों को दिलासा दिया जा रहा है, और दूसरी ओर काफ़िरी को सावधान किया जा रहा है। और इस के लिये "अस्हाबे उख़्दूद" (खाईयों वालों) की कथा का वर्णन किया जा रहा है।

दक्षिणी अरब में नजरान, जहाँ ईसाई रहते थे, को बड़ा महत्व प्राप्त था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र था। तथा सामाजिक कारणों से "जू-नवास" यमन के यहूदी सम्राट ने उस पर आक्रमण कर दिया। और आग से भरे गढ़ों में नर नारियों तथा बच्चों को फिकवा दिया जिस के बदले 525 ई० में हब्शा के ईसाईयों ने यमन पर अक्रमण कर के "जू-नवास" तथा उस के हिम्यरी राज्य का अन्त कर दिया। इस की पुष्टि "गुराब" के शिला लेख से होती है जो वर्तमान में अवशेषजों को मिला है। (तर्जुमानुल कुर्आन)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है बुर्जों वाले आकाश की!
2. शपथ है उस दिन की जिस का वचन दिया गया!
3. शपथ है साक्षी की और जिस पर साक्षय देगा!
4. खाईयों वालों का नाश हो गया!^[1]
5. जिन में भड़कते हुये ईंधन की अग्नि थी।
6. जब कि वे उन पर बैठे हुये थे।
7. और वे ईमान वालों के साथ जो कर रहे थे उसे देख रहे थे।
8. और उन का दोष केवल यही था कि वे प्रभावी प्रशंसा किये अल्लाह के प्रति विश्वास किये हुये थे।
9. जो आकाशों तथा धरती के राज्य का

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ۝

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝

وَشَهِيدٍ وَشَهِودٍ ۝

كُلُّ أَصْحَابِ الْأُخْدُودِ ۝

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۝

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝

وَمَا تَنْقُصُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ
الْمُسْتَعِذِّ ۝

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ

1 (1-4) इन में तीन चीजों की शपथ ली गई है:

(1) बुर्जों वाले आकाश की,

(2) प्रलय की, जिस का वचन दिया गया है,

(3) प्रलय के भ्यावह दृश्य की और उस पूरी उत्पत्ति की जो उसे देखेगी।

प्रथम शपथ इस बात की गवाही दे रही है कि जो शक्ति इस आकाश के ग्रहों पर राज कर रही है उस की पकड़ से यह तुच्छ इन्सान बच कर कहाँ जा सकता है?

दूसरी शपथ इस बात पर है कि संसार में इन्सान जो अत्याचार करना चाहे कर ले, परन्तु वह दिन अवश्य आना है जिस से उसे सावधान किया जा रहा है, जिस में सब के साथ न्याय किया जायेगा, और अत्याचारियों की पकड़ की जायेगी। तीसरी शपथ इस पर है कि जैसे इन अत्यचारियों ने बिबश आस्तिकों के जलने का दृश्य देखा, इसी प्रकार प्रलय के दिन पूरी मानवजाति देखेगी कि उन की क्या दुर्गत है।

स्वामी है। और अल्लाह सब कुछ देख रहा है।

كُلُّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

10. जिन्होंने ने ईमान लाने वाले नर नारियों को परिक्षा में डाला, फिर क्षमा याचना न की उन के लिये नरक का दण्ड तथा भड़कती आग की यातना है।

إِنَّ الَّذِينَ قَتَلُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمُ وَأَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝

11. वास्तव में जो ईमान लाये और सदाचारी बने, उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन के तले नहरें बह रही हैं और यही बड़ी सफलता है।^[1]

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

12. निश्चय तेरे पालनहार की पकड़ बहुत कड़ी है।

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

13. वही पहले पैदा करता है और फिर दूसरी बार पैदा करेगा।

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِي وَيُعِيدُ ۝

14. और वह अति क्षमा तथा प्रेम करने वाला है।

وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ ۝

15. वह सिंहासन का महान स्वामी है।

دُورُ الْعَرْشِ الْمَجِيدِ ۝

16. वह जो चाहे करता है।^[2]

فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۝

1 (5-11) इन आयतों में जो आस्तिक सताये गये उन के लिये सहायता का वचन तथा यदि वे अपने विश्वास (ईमान) पर स्थित रहे तो उन के लिये स्वर्ग की शुभ सूचना और अत्यचारियों के लिये नरक की धमकी है जिन्होंने ने उन को सताया और फिर अल्लाह से क्षमा याचना आदि कर के सत्य को नहीं माना।

2 (12-16) इन आयतों में बताया गया है कि अल्लाह की पकड़ के साथ ही जो क्षमा याचना कर के उस पर ईमान लाये, उस के लिये क्षमा और दया का द्वार खुला हुआ है।

कुर्आन ने इस कुविचार का खण्डन किया है कि अल्लाह, पापों को क्षमा नहीं कर सकता। क्योंकि इस से संसार पापों से भर जायेगा और कोई स्वार्थी पाप कर के क्षमा याचना कर लेगा फिर पाप करेगा। यह कुविचार उस समय सहीह हो सकता है जब अल्लाह को एक इन्सान मान लिया जाये, जो यह न जानता हो कि जो व्यक्ति क्षमा माँग रहा है उस के मन में क्या है? अल्लाह तो मर्मज्ञ

- | | |
|---|---------------------------------------|
| 17. हे नबी! क्या तुम को सेनाओं की सूचना मिली? | هَلْ أَتَاكَ خَبْرُ الْجُنُودِ |
| 18. फिरऔन तथा समूद की ^[1] | فِرْعَوْنَ وَنَمُودَ |
| 19. बल्कि काफ़िर (विश्वासहीन) झुठलाने में लगे हुये हैं। | بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ |
| 20. और अल्लाह उन को हर ओर से घेरे हुये है। ^[2] | وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ |
| 21. बल्कि वह गौरव वाला कुर्आन है। | بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ |
| 22. जो लेख पत्र (लौहे महफूज़) में सुरक्षित है। ^[3] | فِي لَوْحٍ مَحْذُوظٍ |

है, वह जानता है कि किस के मन में क्या है? फिर "तौबा" इस का नाम नहीं कि मुख से इस शब्द को बोल दिया जाये। तौबा (पश्चानुताप) मन से पाप न करने के प्रयत्न का नाम है और इसे अल्लाह तआला जानता है कि किस के मन में क्या है?

- (17-18) इन में अतीत की कुछ अत्यचारी जातियों की ओर संकेत है, जिन का सविस्तार वर्णन कुर्आन की अनेक सूरतों में आया है। जिन्होंने आस्तिकों पर अत्यचार किये जैसे मक्का के कुरैश मुसलमानों पर कर रहे थे। जब कि उन को पता था कि पिछली जातियों के साथ क्या हुआ। परन्तु वे अपने परिणाम से निश्चेत थे।
- (19-20) इन दो आयतों में उन के दुर्भाग्य को बताया जा रहा है जो अपने प्रभुत्व के गर्व में कुर्आन को नहीं मानते। जब कि उसे माने बिना कोई उपाय नहीं, और वह अल्लाह के अधिकार के भीतर ही है।
- (21-22) इन आयतों में बताया गया है कि यह कुर्आन कविता और ज्योतिष नहीं है जैसा कि वह सोचते हैं, यह श्रेष्ठ और उच्चतम् अल्लाह का कथन है जिस का उद्गम "लौहे महफूज़" में सुरक्षित है।

सूरह तारिक^[1] - 86

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरह तारिक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 17 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में ((तारिक)) शब्द आया है जिस का अर्थ ((तारा)) है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 4 तक में आकाश तथा तारों की इस बात पर गवाही प्रस्तुत की गई है कि प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी हो रही है और एक दिन उस को हिसाब के लिये लाया जायेगा।
- आयत 5 से 8 तक मनुष्य की उत्पत्ति को उस के दोबारा पैदा किये जाने का प्रमाण बनाया गया है। और आयत 9 से 10 तक में यह वर्णन है कि उस दिन सब भेद परखे जायेंगे और मनुष्य विवश और असहाय होगा।
- आयत 11 से 14 तक में इस बात पर आकाश तथा धरती की गवाही प्रस्तुत की गई है कि कुर्आन जो प्रतिफल के दिन की सूचना दे रहा है वह अकाट्य है।
- अन्त में काफ़िरो को चेतावनी देते हुये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि उन की चालें एक दिन उन्हीं के लिये उलटी पड़ेंगी। उन्हें कुछ अवसर दे दो। उन का परिणाम सामने आने में देर नहीं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है आकाश तथा रात के
"प्रकाश प्रदान करने वाले" की!

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝

1. इस सूरह में दो विषयों का वर्णन किया गया है:
एक यह कि इन्सान को मौत के पश्चात अब्बाह के सामने उपस्थित होना है।
दूसरा यह कि कुर्आन एक निर्णायक वचन है। जिसे विश्वास हीनों (काफ़िरो) की कोई चाल और उपाय विफल नहीं कर सकती।

2. और तुम क्या जानो कि वह "रात में प्रकाश प्रदान करने वाला" क्या है?
3. वह ज्योतिमय सितारा है।
4. प्रत्येक प्राणी पर एक रक्षक है।^[1]
5. इन्सान यह तो विचार करे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया?
6. उछलते पानी (वीर्य) से पैदा किया गया है।
7. जो पीठ तथा सीने के पंजरों के मध्य से निकलता है।
8. निश्चय वह उसे लौटाने की शक्ति रखता है।^[2]
9. जिस दिन मन के भेद परखे जायेंगे।
10. तो उसे न कोई बल होगा और न उस का कोई सहायक।^[3]
11. शपथ है आकाश की जो बरसता है!
12. तथा फटने वाली धरती की।
13. वास्तव में यह (कुर्आन) दो टुक निर्णय (फैसला) करने वाला है।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّنَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۝

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۝

وَالسَّمَاءُ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝

وَالْأَرْضُ ذَاتِ الصُّدُوعِ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝

- 1 (1-4) इन में आकाश के तारों को इस बात की गवाही में लाया गया है कि विश्व की कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक रक्षा के बिना अपने स्थान पर स्थित रह सकती है, और वह रक्षक स्वयं अल्लाह है।
- 2 (5-8) इन आयतों में इन्सान का ध्यान उस के अस्तित्व की ओर आकर्षित किया गया है कि वह विचार तो करे कि कैसे पैदा किया गया है वीर्य से? फिर उस की निरन्तर रक्षा कर रहा है। फिर वही उसे मृत्यु के पश्चात् पुनः पैदा करने की शक्ति भी रखता है।
- 3 (9-10) इन आयतों में यह बताया गया है कि फिर से पैदाइश इस लिये होगी ताकि इन्सान के सभी भेदों की जांच की जाये जिन पर संसार में पर्दा पड़ा रह गया था और सब का बदला न्याय के साथ दिया जाये।

14. हँसी की बात नहीं^[1]

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۚ

15. वह चाल बाज़ी करते हैं।

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۖ

16. मैं भी चाल बाज़ी कर रहा हूँ।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۖ

17. अतः काफ़िरों को कुछ थोड़ा अवसर
दे दो^[2]

فَسَهِّلْ الْكَفْرَ لِنِ امِّهْلَهُمْ ذُرِّيَّةً ۖ

1 (11-14) इन आयतों में बताया गया है कि आकाश से वर्षा का होना तथा धरती से पेड़ पौधों का उपजना कोई खेल नहीं एक गंभीर कर्म है। इसी प्रकार कुर्आन में जो तथ्य बताये गये हैं वह भी हँसी उपहास नहीं है पक्की और अडिग बातें हैं। काफ़िर (विश्वास हीन) इस भ्रम में न रहें कि उन की चालें इस कुर्आन की आमंत्रण को विफल कर देंगी। अल्लाह भी एक उपाय में लगा है जिस के आगे इन की चालें धरी रह जायेंगी।

2 (15-17) इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सांत्वना तथा अधर्मियों को यह धमकी दे कर बात पूरी कर दी गई है कि, आप तनिक सहन करें और विश्वासहीन को मनमानी कर लेने दें, कुछ ही देर होगी कि इन्हें अपने दुष्परिणाम का ज्ञान हो जायेगा।
और इक्कीस वर्ष ही बीते थे कि पूरे मक्का और अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा।

सूरह आला^[1] - 87

سُورَةُ الْأَعْلَى

सूरह आला के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस में अल्लाह के गुण ((आला)) अर्थात् सर्वोच्च होने का वर्णन हुआ है इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस में आयत 1 से 5 तक अल्लाह के पवित्रता के गान का आदेश देते हुये उस के गुणों का वर्णन किया गया है ताकि मनुष्य अल्लाह को पहचाने।
- आयत 6 से 8 तक बह्दी को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की स्मरण-शक्ति में सुरक्षित किये जाने का विश्वास दिलाया गया है।
- आयत 9 से 15 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को शिक्षा देने का आदेश देकर बताया गया है कि किस प्रकार के लोग शिक्षा ग्रहण करेंगे और कौन नहीं करेंगे और दोनों का परिणाम क्या होगा।
- अन्त में बताया गया है कि परलोक की अपेक्षा संसार को प्रधानता देना ग़लत है जिस के कारण मनुष्य मार्गदर्शन से वंचित हो जाता है। फिर कहा गया है कि यही बात जो इस सूरह में बताई गई है पहले के ग्रन्थों में भी बताई गई है।

1 इस सूरह में तीन महत्वपूर्ण विषयों की ओर संकेत किया गया है:

1- तौहीद (ऐकेश्वरवाद)

2- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये कुछ निर्देश।

3- परलोक (आखिरत)।

1- प्रथम आयत में तौहीद की शिक्षा को एक ही आयत में सीमित कर दिया गया है कि अल्लाह के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो, जिस का अर्थ यह है कि उसे किसी ऐसे नाम से याद न किया जाये जिस में किसी प्रकार का दोष अथवा किसी रचना से उसकी समानता का संशय हो। इसलिये कि संसार में जितनी भी ग़लत आस्थाएँ हैं सब की जड़ अल्लाह से संबन्धित कोई न कोई अशुद्ध और ग़लत विचार है जिस ने उस के लिये अवैध नाम का रूप धारण कर लिया है। आस्था का सुधार सर्व प्रथम है और अल्लाह को मात्र उन्हीं शुभनामों से याद किया जाये जो उस के लिये उचित हैं। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)

- सहीह हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दोनों ईद और जुमुआ में यह सूरह और सूरह गाशिया पढ़ते थे। (सहीह मुस्लिम: 878)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का सुमरिण करो।
2. जिस ने पैदा किया और ठीक ठीक बनाया।
3. और जिस ने अनुमान लगाकर निर्धारित किया, फिर सीधी राह दिखाई।
4. और जिस ने चारा उपजाया।^[1]
5. फिर उसे (सुखा कर) कूड़ा बना दिया।^[2]
6. (हे नबी!) हम तुम्हें ऐसा पढ़ायेंगे कि भूलोगे नहीं।
7. परन्तु जिसे अल्लाह चाहे। निश्चय ही वह सभी खुली तथा छिपी बातों को जानता है।
8. और हम तुम्हें सरल मार्ग का

بِسْمِ اسْمِ رَبِّكَ الْأَعْلَى

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى

فَجَعَلَهُ عُتَاً أَحْوَى

سَنُقَرِّئُكَ فَلَا تَكُنَّ مَلْفُوفٍ

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى

وَنُفِّثُكَ لِلْبَشَرِ

- 1 (2-4) इन आयतों में जिस पालनहार ने अपने नाम की पवित्रता का वर्णन करने का आदेश दिया है उस का परिचय दिया गया है कि वह पालनहार है जिस ने सभी को पैदा किया, फिर उन को संतुलित किया, और उन के लिये एक विशेष प्रकार का अनुमान बनाया जिस की सीमा से नहीं निकल सकते, और उन के लिये उस कार्य को पूरा करने की राह दिखाई जिस के लिये उन्हें पैदा किया है।
- 2 (4-5) इन आयतों में बताया गया है कि प्रत्येक कार्य अनुक्रम से धीरे धीरे होते हैं। धरती के पौधे धीरे धीरे गुंजान और हरे भरे होते हैं। ऐसे ही मानवी योग्यतायें भी धीरे धीरे पूरी होती हैं।

साहस दैंगे^[1]

9. तो आप धर्म की शिक्षा देते रहें। अगर शिक्षा लाभदायक हो।

فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الذِّكْرَىٰ

10. डरने वाला ही शिक्षा ग्रहण करेगा।

سَيَذَكِّرُ مَنْ يَخْشَىٰ

11. और दुर्भाग्य उस से दूर रहेगा।

وَنَجِّنَهُمُ الرَّاشِقَىٰ

12. जो भीषण अग्नि में जायेगा।

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ

13. फिर उस में न मरेगा न जीवित रहेगा^[2]

ثُمَّ لَاسَوَتْ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ

14. वह सफल हो गया जिस ने अपना शुद्धिकरण किया।

فَدَا أَقْلَمَ مَنْ تَزَكَّىٰ

15. तथा अपने पालनहार के नाम का स्मरण किया, और नमाज़ पढ़ी^[3]

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ تَصَلَّىٰ

16. बल्कि तुम लोग तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो।

بَلْ تُوْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا

17. जबकि आखिरत (परलोक) का जीवन ही उत्तम और स्थाई है।

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ

18. यही बात प्रथम ग्रन्थों में है।

إِنَّ هَذَا فِي الْفُتُوحِ الْأُولَىٰ

1 (6-8) इन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह निर्देश दिया गया है कि इस की चिन्ता न करें की कुर्आन मुझे कैसे याद होगा, इसे याद कराना हमारा काम है, और इसका सुरक्षित रहना हमारी दया से होगा। और यह उसकी दया और रक्षा है कि इस मानव संसार में किसी धार्मिक ग्रन्थ के संबंध में यह दावा नहीं किया जा सकता कि वह सुरक्षित है, यह गर्व केवल कुर्आन को ही प्राप्त है।

2 (9-13) इन में बताया गया है कि आप को मात्र इसका प्रचार प्रसार करना है। और इस की सरल राह यह है कि जो सुने और मानने को तैयार हो उसे शिक्षा दी जाये। किसी के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है। जो हत् भागे है वही नहीं सुनेंगे और नरक की यातना के रूप में अपना दुष्परिणाम देखेंगे।

3 (14-15) इन आयतों में कहा गया है कि, सफलता मात्र उन के लिये है जो आस्था, स्वभाव तथा कर्म की पवित्रता को अपनायें, और नमाज़ अदा करते रहें।

19. (अर्थात्) इब्राहीम तथा मूसा के
ग्रन्थों में⁽¹⁾

صُفِّىٰ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ۖ

1 (16-19) इन आयतों का भावार्थ यह है कि वास्तव में रोग यह है कि काफिरों को सांसारिक स्वार्थ के कारण नबी की बातें अच्छी नहीं लगती। जब कि परलोक ही स्थायी है। और यही सभी आदि ग्रन्थों की शिक्षा है।

सूरह गाशियह⁽¹⁾ - 88

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ

सूरह गाशियह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 26 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((अल गाशियह)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ ऐसी आपदा है जो सब पर छा जाये।⁽¹⁾
- इस की आयत 2 से 7 तक में उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय को नहीं मानते और 8 से 16 तक उन का परिणाम बताया गया है जो प्रलय के प्रति विश्वास रखते हैं।
- आयत 17 से 20 तक विश्व की उन निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो अल्लाह के सामर्थ्य का प्रमाण हैं। और जिन पर विचार करने से कुर्आन की बातों को समर्थन मिलता है कि अल्लाह प्रलय लाने तथा स्वर्ग और नरक का संसार बनाने की शक्ति रखता है और प्रतिफल का होना अनिवार्य है।
- आयत 21 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सम्बोधित किया गया है कि आप का काम मात्र शिक्षा देना है किसी को बलपूर्वक सत्य मनवाना नहीं है। अतः जो आप की शिक्षा सुनने को तय्यार नहीं है उन्हें अल्लाह के हवाले करो। क्यों कि आखिर उन्हें अल्लाह ही की ओर जाना है, उस दिन वह उन से हिसाब ले लेगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तेरे पास पूरी सृष्टि पर छा जाने वाली (क्यामत) का समाचार आया?

هَلْ أَتَاكَ خَبْرُ الْغَاشِيَةِ

2. उस दिन कितने मुँह सहमे होंगे।

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ

1 यह सूरह मक्की है तथा आरंभिक युग की है। इस में ऐकेश्वरवाद (तौहीद) तथा परलोक (आखिरत) के विषय को दोहराया गया है, परन्तु इस की वर्णन शैली कुछ भिन्न है।

- | | |
|---|---|
| 3. परिश्रम करते थके जा रहे होंगे। | عَابِلَةٌ أَفْبَصَتْ |
| 4. पर वे धहकती आग में जायेंगे। | تَقْلِي نَارًا حَامِيَةً |
| 5. उन्हें खोलते सोते का जल पिलाया जायेगा। | تُثْقَى مِنْ عَيْنِ آيَةٍ |
| 6. उनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी। | لَيْسَ لَهُمْ كَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيرٍ |
| 7. जो न मोटा करेगी, और न भूख दूर करेगी। ^[1] | لَا يُسَمِّنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ |
| 8. कितने मुख उस दिन निर्मल होंगे। | وَجُودًا يُومِئِدُ تَائِعَةً |
| 9. अपने प्रयास से प्रसन्न होंगे। | لَسَعِيهَا رَاضِيَةٌ |
| 10. ऊँचे स्वर्ग में होंगे। | فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ |
| 11. उस में कोई बकवास नहीं सुनेंगे। | لَا تَسْمَعُ فِيهَا الذِّمِّيَّةُ |
| 12. उस में बहता जल स्रोत होगा। | بَيْنَ عَيْنٍ جَارِيَةٍ |
| 13. और उस में ऊँचे ऊँचे सिंहासन होंगे। | فِيهَا سُرُورٌ مَرْفُوعَةٌ |
| 14. उस में बहुत सारे प्याले रखे होंगे। | وَالْكَوَابُ مَوْضُوعَةٌ |
| 15. पकितियों में गलीचे लगे होंगे। | وَتَنَابَرُكُ مَصْفُوعَةٌ |

1 (1-7) इन आयतों में प्रथम संसारिक स्वार्थ में मग्न इन्सानों को एक प्रश्न द्वारा सावधान किया गया है कि उसे उस समय की सूचना है जब एक आपदा समस्त विश्व पर छा जायेगा? फिर इसी के साथ यह विवरण भी दिया गया है कि उस समय इन्सानों के दो भेद हो जायेंगे, और दोनों के प्रतिफल भी भिन्न होंगे: एक नरक में तथा दूसरा स्वर्ग में जायेगा।

तीसरी आयत में (नासिबह) का शब्द आया है जिस का अर्थ है: थक कर चूर हो जाना, अर्थात् काफ़िरों को क्यामत के दिन इतनी कड़ी यातना दी जायेगी कि उन की दशा बहुत ख़राब हो जायेगी। और वे थके थके से दिखाई देंगे।

इस का दूसरा अर्थ यह भी है कि: उन्होंने संसार में बहुत से कर्म किये होंगे परन्तु वह सत्य धर्म के अनुसार नहीं होंगे, इस लिये वे पूजा अर्चना और कड़ी तपस्या करके भी नरक में जायेंगे, इसलिये कि सत्य आस्था के बिना कोई कर्म मान्य नहीं होगा।

16. और मखमली कालीनें बिछी होंगी।^[1]

وَرَزَّازٍ مَبْثُورَةٍ ۝

17. क्या वह ऊँटों को नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं?

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝

18. और आकाश को, कि किस प्रकार ऊँचा किया गया?

وَالِ السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝

19. और पर्वतों को कि कैसे गाड़े गये?

وَالِ الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝

20. तथा धरती को, कि कैसे पसारी गई? ^[2]

وَالِ الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝

21. अतः आप शिक्षा (नसीहत) दें, कि आप शिक्षा देने वाले हैं।

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝

22. आप उन पर अधिकारी नहीं हैं।

لَسْتُ عَلَيْهِمْ مُصِيطِرٌ ۝

23. परन्तु जो मुँह फेरेगा और नहीं मानेगा,

إِلَّا مَن تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝

24. तो अल्लाह उसे भारी यातना देगा।

فَيَعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝

25. उन्हें हमारी ओर ही वापस आना है।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝

26. फिर हमें ही उन का हिसाब लेना है।^[3]

ثُمَّ إِيَّاكَ حِسَابُهُمْ ۝

1 (8-16) इन आयतों में जो इस संसार में सत्य आस्था के साथ कुर्आन आदेशानुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं परलोक में उन के सदा के सुख का दृश्य दिखाया गया है।

2 (17-20) इन आयतों में फिर विषय बदल कर एक और प्रश्न किया जा रहा है कि: जो कुर्आन की शिक्षा तथा परलोक की सूचना को नहीं मानते अपने सामने उन चीजों को नहीं देखते जो रात दिन उन के सामने आती रहती हैं, ऊँटों तथा पर्वतों और आकाश एवं धरती पर विचार क्यों नहीं करते कि क्या यह सब अपने आप पैदा हो गये हैं या इन का कोई रचयिता है? यह तो असंभव है कि रचना हो और रचयिता न हो। यदि मानते हैं कि किसी शक्ति ने इन को बनाया है जिस का कोई साझी नहीं तो उस के अकेले पूज्य होने और उस के फिर से पैदा करने की शक्ति और सामर्थ्य का क्यों इन्कार करते हैं? (तर्जुमानुल कुर्आन)

3 (21-26) इन आयतों का भावार्थ यह है कि कुर्आन किसी को बलपूर्वक मनवाने के लिये नहीं है, और न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कर्तव्य है कि किसी को बलपूर्वक मनवायें। आप जिस से डरा रहे हैं यह मानें या न मानें वह खली बात है। फिर भी जो नहीं सुनते उनको अल्लाह ही समझेगा। यह और इस जैसी कुर्आन की अनेक आयतें इस आरोप का खण्डन करती हैं कि इस्लाम ने अपने मनवाने के लिये अस्त्र शस्त्र का प्रयोग किया।

सूरह फज्र⁽¹⁾ - 89

سُورَةُ الْفَجْرِ

सूरह फज्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 30 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((वल फज्र)) से होने के कारण इस को यह नाम दिया गया है।
- आयत 1 से 5 तक दिन-रात की प्राकृतिक स्थियों को प्रतिफल के दिन के प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। और आयत 6 से 14 तक कुछ बड़ी जातियों के शिक्षाप्रद परिणाम को इस के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है कि इस विश्व का शासक सब के कर्मों को देख रहा है और एक दिन वह हिसाब अवश्य लेगा।
- आयत 15 से 20 तक में मनुष्य के साथ दुर्यवहारों तथा निर्बलों के अधिकार हनन पर कड़ी चेतावनी दी गई और बताया गया है कि ऐसा करने का कारण परलोक का अविश्वास है।
- अन्तिम आयतों में अल्लाह के न्यायालय का चित्र प्रस्तुत करते हुये विरोधियों तथा ईमान वालों का परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है भोर की!
2. तथा दस रात्रियों की!
3. और जोड़े तथा अकेले की!
4. और रात्री की जब जाने लगे!
5. क्या उस में किसी मतिमान
(समझदार) के लिये कोई शपथ है?⁽¹⁾

وَالْفَجْرِ
وَلَيْالٍ عَشْرٍ
وَالشَّمْعِ وَالْوُتْقِ
وَالْأَيْلِ إِذَا يَسْرُ
هَلْ فِي ذَلِكَ كَسْرٌ لِّذِي حِجْرِ

1 (1-5) इन आयतों में प्रथम परलोक के सुफल विषयक चार संसारिक लक्षणों को साक्ष्य (गवाह) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिस का अर्थ यह है कि कर्मों

6. क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने "आद" के साथ क्या किया?
7. स्तम्भों वाले "इरम" के साथ?
8. जिन के समान देशों में लोग नहीं पैदा किये गये।
9. तथा "समूद" के साथ जिन्होंने घाटियों में चट्टानों को काट रखा था।
10. और मेखों वाले फिरऔन के साथ।
11. जिन्होंने नगरों में उपद्रव कर रखा था।
12. और नगरों में बड़ा उपद्रव फैला रखा था।
13. फिर तेरे पालनहार ने उन पर दण्ड का कोड़ा बरसा दिया।
14. वास्तव में तेरा पालनहार घात में है।^[1]
15. परन्तु जब इन्सान की उस का पालनहार परीक्षा लेता है और उसे

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ
إِرْمَذَاتٍ الْعِمَادِ
الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ
وَشَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخِرَ بِالتَّوَادِ
وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ
الَّذِينَ ظَنُّوا أَنَّهُم بِبِلَادِهِمْ
فَاءَكْفُورٍ مِّنْهَا الْفَسَادِ
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ
إِنَّ رَبَّكَ لَآلِيمٌ صَادٍ
فَإِنَّمَا الْإِنْسَانُ إِذَا أَتَاهُ بِلَدُهُ رَبُّهُ فَآكْرَمَهُ

का फल मिलना सत्य है। रात तथा दिन का यह अनुक्रम जिस व्यवस्था के साथ चल रहा है उस से सिद्ध होता है कि अल्हाह ही इसे चला रहा है। "दस रात्रियों" से अभिप्राय "जुल हिज्जा" मास की प्रारम्भिक दस रातें हैं। सहीह हदीसों में इन की बड़ी प्रधानता बताई गई है।

- 1 (6-14) इन आयतों में उन जातियों की चर्चा की गई है जिन्होंने माया मोह में पड़ कर परलोक और प्रतिफल का इन्कार किया, और अपने नैतिक पतन के कारण धरती में उग्रवाद किया। "आद, इरम" से अभिप्रेत वह पुरानी जाति है जिसे कुर्आन तथा अरब में "आदे ऊला" (प्रथम आद) कहा गया है। यह वह प्राचीन जाति है जिस के पास आद (अलैहिस्सलाम) को भेजा गया। और इन को "आदे इरम" इसलिये कहा गया कि यह सामी वंशक्रम की उस शाखा से संबंधित थे जो इरम बिन साम बिन नूह से चली आती थी। आयत नं० 11 में इस का संकेत है कि उग्रवाद का उद्गम भौतिकवाद एवं सत्य विश्वास का इन्कार है जिसे वर्तमान युग में भी प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है।

सम्मान और धन देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा सम्मान किया।

وَنِعْمَهُ ۖ يَقُولُ رَبِّيَ أَكْرَمَ ۝

16. परन्तु जब उस की परीक्षा लेने के लिये उस की जीविका संकीर्ण (कम) कर देता है तो कहता है कि मेरे पालनहार ने मेरा अपमान किया।

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ
فَيَقُولُ رَبِّيَ أَهَانَنِ ۝

17. ऐसा नहीं, बल्कि तुम अनाथ का आदर नहीं करते।

كَلَّا بَلْ لَّا تَعْلَمُونَ الْيَتِيمَ ۝

18. तथा गरीब को खाना खिलाने के लिये एक दूसरे को नहीं उभारते।

وَلَّا تَعْصُونَ عَلَىٰ طُعَامِ الْيَسِيرِ ۝

19. और मीरास (मृतक सम्पत्ति) के धन को समेट समेट कर खा जाते हो।

وَتَاْكُلُونَ الثَّرَاثَ أَكْلًا لَّئِيًّا ۝

20. और धन से बड़ा मोह रखते हो।^[1]

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝

21. सावधान! जब धरती खण्ड खण्ड कर दी जायेगी।

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝

22. और तेरा पालनहार स्वयं पदार्पण करेगा, और फ़रिश्ते पंक्तियों में होंगे।

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْبَلَكُ صَافًّا صَفًّا ۝

23. और उस दिन नरक लाई जायेगी, उस दिन इन्सान सावधान हो जायेगा, किन्तु सावधानी लाभ- दायक न होगी।

وَجَاءَنِيَ يَوْمَئِذٍ بَعْثُهُ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ
الْإِنْسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۝

24. वह कामना करेगा कि काश! अपने

يَقُولُ يَكِيدُنِي ۖ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝

1 (15-20) इन आयतों में समाज की साधारण नैतिक स्थिति की परीक्षा (जायज़ा) ली गई, और भौतिकवादी विचार की आलोचना की गई है जो मात्र सांसारिक धन और मान मर्यादा को सम्मान तथा अपमान का पैमाना समझता है और यह भूल गया है कि न धनी होना कोई पुरस्कार है और न निर्धन होना कोई दण्ड है। अल्हाह दोनों स्थितियों में मानव जाति (इन्सान) की परीक्षा ले रहा है। फिर यह बात किसी के बस में हो तो दूसरे का धन भी हड़प कर जाये, क्या ऐसा करना कुकर्म नहीं जिस का हिसाब लिया जाये?

सदा के जीवन के लिये कर्म किये होते।

25. उस दिन (अल्लाह) के दण्ड के समान
कोई दण्ड नहीं देगा।

26. और न उसके जैसी जकड़ कोई
जकड़ेगा।^[1]

27. हे शान्त आत्मा!

28. अपने पालनहार की ओर चल, तू उस
से प्रसन्न, और वह तुझ से प्रसन्ना।

29. तू मेरे भक्तों में प्रवेश कर जा।

30. और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।^[2]

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابَ أَحَدٍ ۝

وَلَا يُؤْثِقُ وَثَاقَ أَحَدٍ ۝

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝

وَادْخُلِي جَنَّاتٍ ۝

1 (21-26) इन आयतों में बताया गया है कि धन पूजने और उस से परलोक न बनाने का दुष्परिणाम नरक की घोर यातना के रूप में सामने आयेगा तब भौतिक वादी कुकर्मियों की समझ में आयेगा कि कुर्आन को न मान कर बड़ी भूल हुई और हाथ मलेंगे।

2 (27-30) इन आयतों में उन के सुख और सफलता का वर्णन किया गया है जो कुर्आन की शिक्षा का अनुपालन करते हुये आत्मा की शांती के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सूरह बलद^[1] - 90

سُورَةُ الْبَلَدِ

सूरह बलद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 20 आयतें हैं।^[1]

- इस की प्रथम आयत में ((अल-बलद)) (अर्थात: नगर) की शपथ ली गई है। जिस से अभिप्राय मक्का है। और इसी से इस सूरह का यह नाम लिया गया है।
- इस की आयत 1 से 4 तक में जो गवाहियाँ प्रस्तुत की गई हैं उन से अभिप्राय यह है कि यह संसार सुख विलास के लिये नहीं बनाया गया है। बल्कि इस के बनाने का एक विशेष उद्देश्य है। इसी लिये मनुष्य को दुःख की स्थिति में पैदा किया गया है।
- आयत 5 से 7 तक में यह चेतावनी दी गई है कि मनुष्य यह न समझे कि उस के ऊपर उस के कर्मों की निगरानी के लिये कोई शक्ति नहीं है।
- आयत 8 से 17 तक में बताया गया है कि मनुष्य के आचरण और कर्म की ऊँचाई तथा नीचाई की राह भी खोल दी गई है। और इस ऊँचाई पर चढ़ कर जो दुर्गम है, वह आचरण और कर्म की ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है।
- आयत 18 से 20 तक में बताया गया है कि मनुष्य ईमान के साथ आचरण की ऊँचाई द्वारा भाग्यशाली बन जाता है और कुफ्र के कारण नरक की खाई में जा गिरता है जिस से निकलने का फिर कोई उपाय नहीं होगा।

1 इस सूरह का विषय मानव जाति (इन्सान) को यह समझाना है कि अल्लाह ने सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की दोनों राहें खोल दी हैं। और उन्हें देखने और उन पर चलने के साधन भी सुलभ कर दिये हैं। अब इन्सान के अपने प्रयास पर निर्भर है कि वह कौन सा मार्ग अपनाता है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. मैं इस नगर (मक्का) की शपथ लेता हूँ!
2. तथा तुम इस नगर में प्रवेश करने वाले हो।
3. तथा सौगन्ध है पिता एवं उस की संतान की।
4. हम ने इन्सान को कष्ट में घिरा हुआ पैदा किया है।
5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बश नहीं चलेगा?^[1]
6. वह कहता है कि मैं ने बहुत धन खर्च कर दिया।
7. क्या वह समझता है कि उसे किसी ने देखा नहीं?^[2]

لَا أُقْسِرُ بِهَذَا الْبَلَدِ

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ

وَالْبَدُورُ مَا وَلَدَ

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ

أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَغْتَرَّ عَلَيْهِ أَحَدٌ

يَقُولُ أَفْلَئِكَ مَا لَا يُبَدَأُ

أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ

- 1 (1-5) इन आयतों में सर्व प्रथम मक्का नगर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो घटनायें घट रही थीं, और आप तथा आप के अनुयाईयों को सताया जा रहा था, उस को साझी के रूप में प्रस्तुत किया गया है कि: इन्सान की पैदाइश (रचना) संसार का स्वाद लेने के लिये नहीं हुई है। संसार परिश्रम तथा पीड़ायें झेलने का स्थान है। कोई इन्सान इस स्थिति से गुजरे बिना नहीं रह सकता। "पिता" से अभिप्राय: आदम अलैहिस्सलाम, और "संतान" से अभिप्राय: समस्त मानव जाति (इन्सान) है। फिर इन्सान के इस भ्रम को दूर किया है कि उस के ऊपर कोई शक्ति नहीं है जो उस के कर्मों को देख रही है, और समय आने पर उस की पकड़ करेगी।
- 2 (6-7) इन में यह बताया गया है कि संसार में बड़ाई तथा प्रधानता के ग़लत पैमाने बना लिये गये हैं, और जो दिखावे के लिये धन व्यय (खर्च) करता है उस की प्रशंसा की जाती है जब कि उस के ऊपर एक शक्ति है जो यह देख रही है कि उस ने किन राहों में और किस लिये धन खर्च किया है।

8. क्या हम ने उसे दो आँखें नहीं दीं।
9. और एक ज़बान तथा दो होंट नहीं दिये?
10. और उसे दोनों मार्ग दिखा दिये?
11. तो वह घाटी में घुसा ही नहीं।
12. और तुम क्या जानो कि घाटी क्या है?
13. किसी दास को मुक्त करना।
14. अथवा भूक के दिन (अकाल) में खाना खिलाना।
15. किसी अनाथ संबंधी को।
16. अथवा मिट्टी में पड़े निर्धन को।^[1]
17. फिर वह उन लोगों में होता है जो ईमान लाये, और जिन्होंने धैर्य (सहनशीलता) एवं उपकार के उपदेश दिये।
18. यही लोग सौभाग्यशाली (दायें हाथ वाले) हैं।
19. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को

أَلَمْ نُعَمِّرْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۖ

وَلِسَانًا وَفُتَّتَيْنِ ۖ

وَهَدَيْنَاهُ النَّهْدَيْنِ ۖ

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۖ

فَكَرَّ بِهٖ ۖ

أَوْ اظْلَعْنَا فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۖ

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۖ

أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۖ

فَكَرَّكَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۖ

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۖ

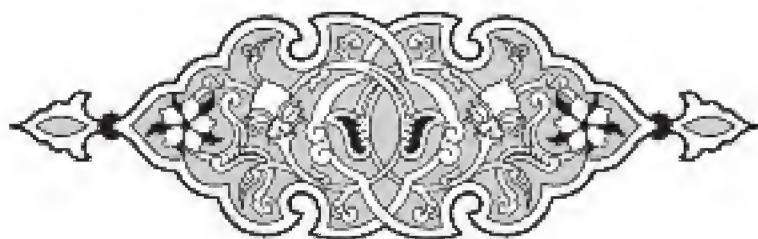
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الشُّمُولِ ۖ

- 1 (8-16) इन आयतों में फ़रमाया गया है कि: इन्सान को ज्ञान और चिन्तन के साधन और योग्यतायें दे कर हम ने उस के सामने भलाई तथा बुराई के दोनों मार्ग खोल दिये हैं, एक नैतिक पतन की ओर ले जाता है और उस में मन को अति स्वाद मिलता है। दूसरा नैतिक ऊँचाइयों की राह जिस में कठिनाईयाँ हैं। और उसी को घाटी कहा गया है। जिस में प्रवेश करने वालों के कर्त्तव्य में है कि दासों को मुक्त करें, निर्धनों को भोजन करायें इत्यादी वही लोग स्वर्ग वासी हैं। और वे जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया वे नर्क वासी हैं। आयत नं० 17 का अर्थ यह है कि सत्य विश्वास (ईमान) के बिना कोई शुभकर्म मान्य नहीं है। इस में सुखी समाज की विशेषता भी बताई गई है कि: दूसरे को सहनशीलता तथा दया का उपदेश दिया जाये और अल्लाह पर सत्य विश्वास रखा जाये।

नहीं माना यही लोग दुर्भाग्य (बायें
हाथ वाले) हैं।

20. ऐसे लोग हर ओर से आग में घिरे होंगे।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ۖ



सूरह शम्स⁽¹⁾ - 91

سُورَةُ الشَّمْسِ

सूरह शम्स के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 15 आयतें हैं।

- इस सूरह की प्रथम आयत में “शम्स” (सूर्य) की शपथ ली गई है, इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 10 तक सूर्य-चाँद और रात-दिन तथा धरती और आकाश की उन बड़ी निशानियों की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस विश्व के पैदा करने वाले की पूर्ण शक्ति तथा गुणों का ज्ञान कराती हैं। और फिर मनुष्य की आत्मा की गवाही को अच्छे तथा बुरे कर्मफल के समर्थन में प्रस्तुत किया गया है।
- आयत 11 से 13 तक में इस की एतिहासिक गवाही प्रस्तुत की गई है और आद तथा समूद जाति की कथा संक्षेप में बता कर उन के कुकर्मों के शिक्षाप्रद परिणाम लोगों की शिक्षा के लिये प्रस्तुत किये गये हैं ताकि वह कुर्आन तथा इस्लाम के नबी का विरोध न करें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. सूर्य तथा उस की धूप की शपथ है।
2. और चाँद की शपथ जब उस के पीछे निकले।
3. और दिन की शपथ जब उसे (अर्थात् सूर्य को) प्रकट कर दे।
4. और रात्री की सौगन्ध जब उसे (सूर्य

وَاللَّيْلِ وَضُحَاهَا

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰهَا

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰهَا

1 इस सूरह का विषय: पुन और पाप का अन्तर समझाना है, तथा उन्हें बुरे परिणाम की चेतावनी देना जो इस अंतर को समझने से इन्कार करते हैं, तथा बुराई की राह पर चलने का दुराग्रह करते हैं।

को) छुपा ले!

5. और आकाश की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे बनाया!

وَالسَّمَاءَ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝

6. तथा धरती की सौगन्ध और जिस ने उसे फैलाया!^[1]

وَالْأَرْضَ وَمَا طَحَاهَا ۝

7. और जीव की सौगन्ध, तथा उस की जिस ने उसे ठीक ठीक सुधारा।

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۝

8. फिर उसे दुराचार तथा सदाचार का विवेक दिया है।^[2]

فَالْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۝

9. वह सफल हो गया जिस ने अपने जीव का सुद्धिकरण किया।

فَدَاوُدَ مِّن رَّكْمِهَا ۝

10. तथा वह क्षति में पड़ गया जिस ने उसे (पाप में) धंसा दिया।^[3]

وَقَدْ خَابَ مِّن دُونِهَا ۝

11. "समूद" जाति ने अपने दुराचार के कारण (ईश दूत) को झुठलाया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۝

12. जब उन में से एक हतभागा तैयार हुआ।

إِذْ أُنْعَتْ أَشْقَاهَا ۝

1 (1-6) इन आयतों का भावार्थ यह है कि जिस प्रकार सूर्य के विपरीत चाँद, तथा दिन के विपरीत रात है, इसी प्रकार पुन और पाप तथा इस संसार का प्रति एक दूसरा संसार परलोक भी है। और इन्हीं स्वभाविक लक्ष्यों से परलोक का विश्वास होता है।

2 (7-8) इन आयतों में कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को शारीरिक और मांसिक शक्तियाँ दे कर बस नहीं किया, बल्कि उस ने पाप और पुन का स्वभाविक ज्ञान दे कर नबियों को भी भेजा। और बह्वी (प्रकाशना) द्वारा पाप और पुन के सभी रूप समझा दिये। जिस की अन्तिम कड़ी: कुर्आन, और अन्तिम नबी: मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

3 (9-10) इन दोनों आयतों में यह बताया जा रहा है कि अब भविष्य की सफलता और विसफलता इस बात पर निर्भर है कि कौन अपनी स्वभाविक योग्यता का प्रयोग किस के लिये कितना करता है। और इस प्रकाशना: कुर्आन के आदेशों को कितना मानता और पालन करता है।

13. (ईश दूतः सालेह ने) उन से कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की रक्षा करो।
14. किन्तु उन्होंने नहीं माना, और उसे बध कर दिया जिस के कारण उन के पालनहार ने यातना भेज दी और उन को चौरस कर दिया।
15. और वह इस के परिणाम से नहीं डरता।^[1]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۖ

فَكَذَّبُوهُ فَعَبَّرُوا فَخَسَدَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ يَوْمَئِذٍ تَرَ حَسْرَتَهُمْ ۖ

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۖ

1 (11-15) इन आयतों में समूद जाति का ऐतिहासिक उदाहरण दे कर दूतत्व (रिसालत) का महत्व समझाया गया है कि नबी इसलिये भेजा जाता है ताकि भलाई और बुराई का जो स्वभाविक ज्ञान अल्लाह ने इन्सान के स्वभाव में रख दिया है उसे उभारने में उस की सहायता करे। ऐसे ही एक नबी जिन का नाम सालेह था समूद जाति की ओर भेजे गये। परन्तु उन्होंने उन को नहीं माना, तो वे ध्वस्त कर दिये गये।

उस समय मक्का के मूर्ति पूजकों की स्थिति समूद जाति से मिलती जुलती थी। इसलिये उन को "सालेह" नबी की कथा सुना कर सचेत किया जा रहा है कि सावधानः कहीं तुम लोग भी समूद की तरह यातना में न घिर जाओ। वह तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस प्राथना के कारण बच गये कि हे अल्लाह! इन्हें नष्ट न कर। क्योंकि इन्हीं में से ऐसे लोग उठेंगे जो तेरे धर्म का प्रचार करेंगे। इस लिये कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे संसारों के लिये दयालु बना कर भेजा था।

सूरह लैल^[1] - 92

سُورَةُ اللَّيْلِ

सूरह लैल के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 21 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "लैल" अर्थात रात की शपथ ली गई है, जिस के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 4 तक में कुछ गवाहियाँ प्रस्तुत कर के इस बात का तर्क दिया गया है कि जब मनुष्य के प्रयासों तथा कर्मों में अन्तर है तो उन के प्रतिफल में भी अन्तर का होना आवश्यक है।
- आयत 5 से 11 तक में सत्कर्मों और दुष्कर्मों की कुछ विशेषताओं का वर्णन कर के बताया है कि सत्कर्म पुन् की राह पर ले जाते हैं और दुष्कर्म पाप की राह पर ले जाते हैं।
- आयत 12 से 14 तक में बताया गया है कि अब्बाह का काम सीधी राह दिखा देना है और उस ने तुम्हें उसे दिखा दिया। संसार तथा परलोक का वही मालिक है। उस ने बता दिया है कि परलोक में क्या होना है।
- अन्त में दुराचारियों के बुरे अन्त तथा सदाचारियों के अच्छे अन्त को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. रात्री की शपथ जब छा जाये!
2. तथा दिन की शपथ जब उजाला हो जाये!

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ

- 1 इस सूरह का मूल विषय यह है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। वह किसी पर अन्याय नहीं करता। इसलिये सचेत कर दिया गया है कि बुरे काम का परिणाम बुरा होता है। और अच्छे काम का परिणाम अच्छा। अब यह बात तुम पर छोड़ी जा रही है कि तुम कोनसा मार्ग ग्रहण करते हो।

3. और उस की शपथ जिस ने नर और मादा पैदा किये!
4. वास्तव में तुम्हारे प्रयास अलग अलग हैं।^[1]
5. फिर जिस ने दान दिया, और भक्ति का मार्ग अपनाया,
6. और भली बात की पुष्टि करता रहा,
7. तो हम उस के लिये सरलता पैदा कर देंगे।
8. परन्तु जिस ने कंजूसी की, और ध्यान नहीं दिया,
9. और भली बात को झुठला दिया।
10. तो हम उस के लिये कठिनाई को प्राप्त करना सरल कर देंगे।^[2]

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝

فَسَيَسِّرُهُ لِيُيسِّرَىٰ ۝

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ۝

فَسَيَسِّرُهُ لِيُصْهَرَىٰ ۝

- 1 (1-4) इन आयतों का भावार्थ यह है कि: जिस प्रकार रात दिन तथा नर मादा (स्त्री-पुरुष) भिन्न हैं, और उन के लक्षण और प्रभाव भी भिन्न हैं, इसी प्रकार मानव जाति (इन्सान) के विश्वास, कर्म भी दो भिन्न प्रकार के हैं। और दोनों के प्रभाव और परिणाम भी विभिन्न हैं।
- 2 (5-10) इन आयतों में दोनों भिन्न कर्मों के प्रभाव का वर्णन है कि कोई अपना धन भलाई में लगाता है तथा अल्लाह से डरता है और भलाई को मानता है। सत्य आस्था, स्वभाव और सत्कर्म का पालन करता है। जिस का प्रभाव यह होता है कि अल्लाह उस के लिये सत्कर्मों का मार्ग सरल कर देता है। और उस में पाप करने तथा स्वार्थ के लिये अवैध धन अर्जन की भावना नहीं रह जाती। ऐसे व्यक्ति के लिये दोनों लोक में सुख है। दूसरा वह होता है जो धन का लोभी, तथा अल्लाह से निश्चिन्त होता है और भलाई को नहीं मानता। जिस का प्रभाव यह होता है कि उस का स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उसे बुराई का मार्ग सरल लगने लगता है। तथा अपने स्वार्थ और मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रयास करता है। फिर इस बात को इस वाक्य पर समाप्त कर दिया गया है कि धन के लिये वह जान देता है परन्तु वह उसे अपने साथ लेकर नहीं जायेगा। फिर वह उस के किस काम आयेगा?

11. और जब वह गढ़े में गिरेगा तो
उसका धन उसके काम नहीं
आयेगा। وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ۝
12. हमारा कर्तव्य इतना ही है कि हम
सीधा मार्ग दिखा दें। إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ۝
13. जब कि आलोक परलोक हमारे ही
हाथ में है وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَى ۝
14. मैं ने तुम को भड़कती आग से
सावधान कर दिया है।^[1] فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝
15. जिस में केवल बड़ा हत्भाग ही जायेगा। لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝
16. जिस ने झुठला दिया, तथा (सत्य से)
मुँह फेर लिया। الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝
17. परन्तु संयमी (सदाचारी) उस से बचा
लिया जायेगा। وَسَيَجْزِيهَا الْآتِقَى ۝
18. जो अपना धन दान करता है ताकि
पवित्र हो जाये। الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّى ۝
19. उस पर किसी का कोई उपकार नहीं
जिसे उतारा जा रहा है। وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى ۝
20. वह तो केवल अपने परम पालनहार
की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये है। إِلَّا الْبِغَاءَ وَجْهَ رَبِّهِ الْأَعْلَى ۝

1 (11-14) इन आयतों में मावन जाति (इन्सान) को सावधान किया गया है कि अल्लाह का, दया और न्याय के कारण मात्र यह दायित्व था कि सत्य मार्ग दिखा दे। और कुर्आन द्वारा उस ने अपना यह दायित्व पूरा कर दिया। किसी को सत्य मार्ग पर लगा देना उस का दायित्व नहीं है। अब इस सीधी राह को अपनाओगे तो तुम्हारा ही भला होगा। अन्यथा याद रखो कि संसार और परलोक दोनों ही अल्लाह के अधिकार में हैं। न यहाँ कोई तुम्हें बचा सकता है, और न वहाँ कोई तुम्हारा सहायक होगा।

21. निःसंदेह वह प्रसन्न हो जायेगा।^[1]

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ

1 (15-21) इन आयतों में यह वर्णन किया गया है कि कौन से कुकर्मों नरक में पड़ेंगे और कौन सुकर्मों उस से सुरक्षित रखे जायेंगे। और उन्हें क्या फल मिलेगा।
आयत नं० 10 के बारे में यह बात याद रखने की है कि अल्लाह ने सभी वस्तुओं और कर्मों का अपने नियमानुसार स्वभाविक प्रभाव रखा है। और कुर्आन इसी लिये सभी कर्मों के स्वभाविक प्रभाव और फल को अल्लाह से जोड़ता है। और यूँ कहता है कि अल्लाह ने उस के लिये बुराई की राह सरल कर दी। कभी कहता है कि उन के दिलों पर मुहर लगा दी, जिस का अर्थ यह होता है कि यह अल्लाह के बनाये हुये नियमों के विरोध का स्वभाविक फल है। (देखिये: उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह जुहा⁽¹⁾ - 93

سُورَةُ الضُّحَى

सूरह जुहा के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस के आरंभ में “जुहा” (दिन के उजाले) की शपथ ग्रहण करने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 से 2 तक में दिन और रात की गवाही प्रस्तुत कर के इस की ओर संकेत किया गया है कि इस संसार में अल्लाह ने जैसे उजाला और अंधेरा दोनों बनाये हैं इसी प्रकार परीक्षा के लिये दुःख और सुख भी बनाये हैं।
- आयत 3 में बताया गया है कि सत्य की राह में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दुःख का सामना कर रहे हैं उस से यह नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह ने आप से खिन्न हो कर आप को छोड़ दिया है।
- आयत 4,5 में आप को सफलताओं की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 6 से 8 तक में उन दुःखों की चर्चा की गई है जिन से आप नबी होने से पहले जूझ रहे थे तो अल्लाह के उपकारों से आप की राहें खुलीं।

1 यह सूरह आरंभिक युग की है। भाष्य कारों ने लिखा है कि कुछ दिन के लिये नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना (बढ़ी) का उतरना रुक गया। जिस पर आप अति दुःखित और चिन्तित हो गये कि कहीं मुझ से कोई दोष तो नहीं हो गया? इस पर आप को सांत्वना देने के लिये यह सूरह अवतीर्ण हुई। इस में सर्व प्रथम प्रकाशित दिन तथा रात्री की शपथ ले कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिलाया गया है कि आप के पालनहार ने न तो आप को छोड़ा है और न ही आप से अप्रसन्न हुआ है। इसी के साथ आप को यह शुभ सूचना भी दी गई है कि आगामी समय आप के लिये प्रथम समय से उत्तम होगा। यह भविष्य वाणी उस समय की गई जब इस के दूर दूर तक कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। सम्पूर्ण मक्का आप का विरोधी हो गया था। और अल्लाह के सिवा आप का कोई सहायक नहीं था। परन्तु मात्र इक्कीस वर्षों में पूरा मक्का इस्लाम का अनुयायी बन गया। और फिर पूरे अरब द्वीप में इस्लाम का ध्वजा लहराने लगा। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी शत प्रतिशत पूरी हुई जो कुर्आन के अल्लाह का वचन होने का पमाण बन गई।

- आयत 9 से 11 तक में यह बताया गया है कि इन उपकारों के कारण आप का व्यवहार निर्बलों तथा अनाथों की सहायता एवं अल्लाह के उपकारों का स्वीकार तथा प्रदर्शन होना चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- | | |
|---|--|
| 1. शपथ है दिन चढ़े की! | وَالضُّحَىٰ |
| 2. और शपथ है रात्री की जब उस का
सन्नाटा छा जाये! | وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ |
| 3. (हे नबी) तेरे पालनहार ने तुझे न तो
छोड़ा और न ही विमुख हुआ। | مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ |
| 4. और निश्चय ही आगामी युग तेरे
लिये प्रथम युग से उत्तम है। | وَلَا يَخُفُّ عَلَيْكَ مِنَ الْأَوَّلَىٰ |
| 5. और तेरा पालनहार तुम्हें इतना देगा
कि तू प्रसन्न हो जायेगा। | وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ |
| 6. क्या उस ने तुम्हे अनाथ पा कर
शरण नहीं दी? | أَلَمْ يَجْعَلْكَ يَتِيمًا فَالْوَىٰ |
| 7. और तुझे पथ भूला हुआ पाया तो
सीधा मार्ग नहीं दिखाया? | وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ |
| 8. और निर्धन पाया तो धनी नहीं कर
दिया? | وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ |
| 9. तो तुम अनाथ पर क्रोध न करना ^[1] | فَإِنَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَنْفَر |

- 1 (1-9) इन आयतों में अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है कि: तुम्हें यह चिन्ता कैसे हो गई कि हम अप्रसन्न हो गये? हम ने तो तुम्हारे जन्म के दिन से निरन्तर तुम पर उपकार किये हैं। तुम अनाथ थे तो तुम्हारे पालन और रक्षा की व्यवस्था की। राह से अंजान थे तो राह दिखाई। निर्धन थे तो धनी बना दिया। यह बातें बता रही हैं कि तुम आरम्भ ही से हमारे प्रियवर हो और तुम पर हमारा उपकार निरन्तर है।

10. और माँगने वाले को न झिड़कना।

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝

11. और अपने पालनहार के उपकार का वर्णन करना^[1]

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

1 (10-11) इन अन्तिम आयतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया है कि: हम ने तुम पर जो उपकार किये हैं उन के बदले में तुम अल्लाह की उत्पत्ति के साथ दया और उपकार करो यही हमारे उपकारों की कृतज्ञता होगी।

सूरह शर्ह^[1] - 94

سُورَةُ الشَّرْحِ

सूरह शर्ह के संक्षिप्त विषय
यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस सूरह के आरंभ में इन शब्दों के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है: साहस, संतोष तथा सत्य को अपनाना है।
- इस की प्रथम आयत 1 से 3 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर अल्लाह के इसी उपकार तथा आप से बोझ उतार देने का वर्णन है।^[1]
- आयत 4 में आप की शखन और चर्चा ऊंची करने की शुभसूचना दी गई है।
- आयत 5 से 6 तक में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को संतोष दिलाया गया है कि वर्तमान कठिन स्थितियों के पश्चात् अच्छी स्थितियाँ आने ही को हैं।
- आयत 7 से 8 तक में यह निर्देश दिया गया है कि जब आप अपने संसारिक कार्य पूरे कर लें तो अपने पालनहार की बंदना (उपासना) में प्रयास करें और उसी की ओर ध्यानमग्न हो जायें।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या हम ने तुम्हारे लिये
तुम्हारा वक्ष (सीना) नहीं खोल दिया?

أَلَمْ نُشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۖ

2. और तुम्हारा बोझ नहीं उतार दिया?

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۖ

1 इस सूरह का विषय सूरह जुहा ही के समान है। परन्तु इस में सत्य का उपदेश देने के समय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जिन स्थितियों का सामना करना पड़ा कि जिस समाज में आप का बड़ा आदर मान था, वही समाज अब आप का विरोधी बन गया। कोई आप की बात सुनने को तैयार न था। यह आप के लिये बड़ी घोर स्थिति थी। अतः आप को सात्वना दी गई कि आप हताश न हों बहुत शीघ्र ही यह अवस्था बदल जायेगी।

3. जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ दी थी।

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ

4. और तुम्हारी चर्चा को ऊँचा कर दिया।^[1]

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

5. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا

6. निश्चय कठिनाई के साथ आसानी भी है।^[2]

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا

1 (1-4) इन का भावार्थ यह है कि हम ने आप पर तीन ऐसे उपकार किये हैं जिन के होते आप को निराश होने की आवश्यकता नहीं। एक यह कि आप के वक्ष को खोल दिया, अर्थात् आप में स्थितियों का सामना करने का साहस पैदा कर दिया। दूसरा यह कि नबी होने से पहले जो आप के दिल में अपनी जाति की मूर्ति पूजा और सामाजिक अन्याय को देख कर चिन्ता और शोक का बोझ था जिस के कारण आप दुःखित रहा करते थे। इस्लाम का सत्य मार्ग दिखा कर उस बोझ को उतार दिया। क्योंकि यही चिन्ता आप की कमर तोड़ रही थी। और तीसरा विशेष उपकार यह कि आप का नाम ऊँचा कर दिया। जिस से अधिक तो क्या आप के बराबर भी किसी का नाम इस संसार में नहीं लिया जा रहा है। यह भविष्यवाणी कुर्आन शरीफ ने उस समय की जब एक व्यक्ति का विरोध उस की पूरी जाति और समाज तथा उस का परिवार तक कर रहा था। और यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह इतना बड़ा विश्व विख्यात व्यक्ति हो सकता है। परन्तु समस्त मानव संसार कुर्आन की इस भविष्यवाणी के सत्य होने का साक्षी है। और इस संसार का कोई क्षण ऐसा नहीं गुजरता जब इस संसार के किसी देश और क्षेत्र में अजानों में "अशहदु अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" की आवाज़ न गूँज रही हो। इस के सिवा भी पूरे विश्व में जितना आप का नाम लिया जा रहा है और जितना कुर्आन का अध्ययन किया जा रहा है वह किसी व्यक्ति और किसी धर्म पुस्तक को प्राप्त नहीं, और यही अन्तिम नबी और कुर्आन के सत्य होने का साक्ष्य है, जिस पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिये।

2 (5-6) इन आयतों में विश्व का पालनहार अपने भक्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को विश्वास दिला रहा है कि उलझनों का यह समय देर तक नहीं रहेगा इसी के साथ सरलता तथा सुविधा का समय भी लगा आ रहा है। अर्थात् आप का आगामी युग व्यतीत युग से उत्तम होगा जैसा कि "सूरह जुहा" में कहा गया है।

7. अतः जब अवसर मिले तो आराधना में प्रयास करो।

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ

8. और अपने पालनहार की ओर ध्यान मग्न हो जाओ।^[1]

وَالِلَّهِ رَبِّكَ فَاَرْعَبْ

1 (7-8) इन अन्तिम आयतों में आप को निर्देश दिया गया है कि जब अवसर मिले तो अल्लाह की उपासना में लग जाओ, और उसी में ध्यान मग्न हो जाओ, यही सफलता का मार्ग है।

सूरह तीन^[1] - 95

سُورَةُ التِّينِ

सूरह तीन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "तीन" शब्द, जिस का अर्थ: इंजीर है, के आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक उन स्थानों को गवाही में प्रस्तुत किया गया है जिन से बड़े बड़े नबी उठे और मार्गदर्शन का प्रकाश फैला।

1 "तीन" का अर्थ है: इन्जीर। इसी शब्द से इस सूरह का नाम लिया गया है। फ़लस्तीन तथा शाम जो प्राचीन युग से नबियों के केंद्र चले आ रहे थे, जैतून तथा इंजीर की उपज का क्षेत्र था। और मक्के के लोग इन देशों में व्यापार के लिये जाया करते थे, इसलिये वे उनकी मुहब्बत से भली भांती परिचित थे। "तूर" पर्वत सीना के मरुस्थल में है। यहीं पर मूसा (अलैहिस्सलाम) को धर्म विधान प्रदान किया गया था।

"शान्ति नगर" से अभिप्राय: मक्का नगर है। और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की दुआ के कारण इस का नाम शान्ति का नगर रखा गया है। जिस में अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे मानव विश्व के पथ प्रदर्शक बना कर भेजे गये।

इस की भूमिका यह है कि सर्व प्रथम उत्साह शील नबियों के केन्द्रों को शपथ अर्थात् साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत कर के यह बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को अति उत्तम रूप रेखा में सर्वोच्च स्वभाव एवं योग्यताओं के साथ पैदा किया है। परन्तु इस उच्चता को स्थित रखने तथा इन उत्तम योग्यताओं को उभारने के लिये उस का यह नियम बनाया है कि: जो ईमान (विश्वास) तथा सत्कर्म की राह अपनायेंगे, जो कुरआन की राह है और इस राह की कठिनाईयों से संघर्ष करने का साहस करेंगे तो उन्हें परलोक में अपने प्रयासों का भरपूर पुरस्कार मिलेगा। और जो संसारिक स्वार्थ और सुख के लिये इस राह की कठिनाईयों का सामना करने का साहस नहीं करेंगे, अल्लाह उन्हें उसी राह पर छोड़ देगा। और अन्ततः उस गढ़ में जा गिरेंगे जो इस के राहियों का भाग्य है।

भावार्थ यह है कि जब इन्सानों के दो भेद हैं तो न्यायोचित यही है कि उन के कर्मों के फल भी दो हों। फिर अल्लाह जो न्यायधीशों का न्यायधीश है वह न्याय क्यों नहीं करेगा?। (तर्जुमानुल कुरआन)

- आयत 4 से 6 तक में बताया गया है कि अल्लाह ने इन्सान को उत्तम रूप पर पैदा किया है ताकि वह ऊँचा स्थान प्राप्त करे। किन्तु वह नीचा बन गया और बहुत नीची खाई में जा पड़ा। फिर जिस ने ईमान और सदाचार कर के ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया, तो वह सफल हो गया। और उस के लिये अनन्त प्रतिफल है।
- आयत 7 से 8 तक में कहा गया है कि अल्लाह सब से बड़ा न्यायधीश है। तो उस के यहाँ यह कैसे हो सकता है कि अच्छे-बुरे सब परिणाम में बराबर हो जायें? या दोनों का कोई परिणाम और प्रतिफल ही न हो? यह बात न्यायोचित नहीं है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. इंजीर तथा जैतून की शपथ!
2. एंव "तूरे सीनीन" की शपथ!
3. और इस शान्ति के नगर की शपथ!
4. हम ने इन्सान को मनोहर रूप में पैदा किया है।
5. फिर उसे सब से नीचे गिरा दिया।
6. परन्तु जो ईमान लाये, तथा सदाचार किये उन के लिये ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा।
7. फिर तुम (मानव जाति) प्रतिफल (बदले) के दिन को क्यों झुठलाते हो?
8. क्या अल्लाह सब अधिकारियों से बड़ कर अधिकारी नहीं?

وَالَّتَيْنِ وَالزَّيْتُونِ

وَطُورِ سِينِينَ

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ

فَمَا يَكْفُرُ بِكَ بَعْدَ الْبَيِّنَاتِ

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَكْثَرَ الْحَكَمِ حَكِيمِينَ

सूरह अलक^[1] - 96

سُوْرَةُ الْعَلَقِ

सूरह अलक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस की आयत 2 में इन्सान के अलक अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में कुर्आन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत 6 से 8 तक इन्सान को चेतावनी दी गयी है कि वह अल्लाह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अल्लाह ही के पास पहुंचना है?
- आयत 9 से 14 तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की राह में बाधाये उत्पन्न करता था।
- आयत 15 से 18 तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अल्लाह की वंदना में लगे रहो। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिब्रिल आये और आप को यह (पाँच) आयतें पढ़ाईं। (सहीह बुखारी: 4955)

अबू जहल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौंद दूंगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहा: यदि

1 यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पाँच आयतें पहली बह्नी (प्रकाशना) है जैसा कि बुखारी (हदीस नं० 4953) और मुस्लिम (हदीस नं० 160) में आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जहल ने "काबा" के पास नमाज़ से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज़ अदा करने और धमकियों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

वह ऐसा करता तो फरिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह बुखारी: 4958)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया
2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।
3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है।
4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।
5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।^[1]

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

- 1 (1-5) इन आयतों में प्रथम बह्वी (प्रकाशना) का वर्णन है।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर "जबले नूर" (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम "हिरा" है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वहीं कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन आप इसी गुफा में थे कि: अकस्मात् आप पर प्रथम बह्वी (प्रकाशना) लेकर फरिश्ता उतरा। और आप से कहा "पढ़ो"। आप ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। इस पर फरिश्ते ने आप को अपने सीने से लगाकर दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाई। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु 40 वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उढ़ा दो। जब कुछ शांत हुये तो अपनी पत्नी खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई। उन्होंने ने आप को सांत्वना दी और अपने चचा के पुत्र "बरका बिन नौफल" के पास ले गई जो ईसाई विद्वान थे। उन्होंने ने आप की बात सुन कर कहा: यह वही फरिश्ता है जो मूसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश मैं तुम्हारी नुबुव्वत (दूतत्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? बरका ने कहा, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जो आप

6. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।
7. इसलिये कि वह स्वयं को निश्चन्त (धनवान) समझता है।
8. निःसंदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है।^[1]
9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।
10. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।
11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।
12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो?
13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो?^[2]
14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنَّاظٍ ۖ

إِنَّ رَأَاهُ اسْتَفْهَى ۖ

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۖ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۖ

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۖ

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۖ

लाये है उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मैं ने आप का वह समय पाया तो आप की भरपूर सहायता करूँगा।

परन्तु कुछ ही समय गुज़रा था कि बरका का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को 13 वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिज़रत (प्रस्थान) कर गये। (देखिये: इब्ने कसीर)

आयत नं० 1 से 5 तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेश: कुर्आन का अध्ययन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षाता से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुनः जीवित कर देने की भी शक्ति रखता है। फिर ज्ञान अर्थात् कुर्आन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

- 1 (6-8) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और इस बात से निश्चन्त हैं कि: एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।
- 2 (9-13) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज़ से रोकते हैं।

देख रहा है?

15. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝

16. झूठे और पापी माथे के बल।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ غَاطَّةٍ ۝

17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝

18. हम भी नरक के फरिश्तों को बुलायेंगे।^[1]

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝

19. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।^[2]

كَلَّا لَا تَطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝

1 (14-18) इन आयतों में सत्य के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

2 (19) इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देते हुये नमाज़ अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।

सूरह क़द्र^[1] - 97

سُورَةُ الْقَدْرِ

सूरह क़द्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं^[1]

- इस में कुर्आन के क़द्र की रात में उतारे जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है। क़द्र का अर्थ है: आदर और सम्मान।

- इस में सब से पहले बताया गया है कि कुर्आन कितनी महान् रात्रि में अवतरित किया गया है। फिर इस शुभ रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है और उसे भोर तक सर्वथा शान्ति की रात कहा गया है।

इस से अभिप्राय यह बताना है कि जो ग्रन्थ इतनी शुभ रात में उतरा उस का पालन तथा आदर न करना बड़े दुर्भाग्य की बात है।

हदीस में है कि इस रात की खोज रमज़ान के महीने की दस अन्तिम रातों की विषम (ताक) रात में करो। (सहीह बुख़ारी: 2017, तथा सहीह मुस्लिम: 1169)

दूसरी हदीस में है कि जो क़द्र की रात में ईमान के साथ पुनः प्राप्त करने के लिये नमाज़ पढ़ेगा उस के पहले के पाप क्षमा कर दिये जायेंगे। (सहीह बुख़ारी: 37, तथा सहीह मुस्लिम: 759)

1 इस सूरह को अधिकांश भाष्य कारों ने मक्की लिखा है। और कुछ ने मदीनी बताया है। परन्तु इस का प्रसंग मक्की होने के समर्थन में है।

इसी "लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्री) को सूरह दुख़ान में "लैलतुन मुबारकह" (शुभ रात्री) कहा गया है। यह शुभ रात्रि रमज़ान मुबारक ही की एक रात है। इसी कारण सूरह "बक़रः" में कहा गया है कि रमज़ान मुबारक के महीने में कुर्आन शरीफ़ उतारा गया। अर्थात् इसी रात्रि में सम्पूर्ण कुर्आन उन फ़रिश्तों को दे दिया गया जो बह्दी (प्रकाशना) लाने के लिये नियुक्त थे। फिर 23 वर्ष में आवश्यकता के अनुसार कुर्आन उतारा जाता रहा। यदि इस का अर्थ यह लिया जाये कि इस के उतारने का आरम्भ रमज़ान मुबारक से हुआ तो यह भी सहीह है। दोनों में अर्थ यही निकलता है कि कुर्आन रमज़ान मुबारक में उतरा। और इसी शुभ रात्री में सूरह अलक़ की प्रथम पाँच आयतें उतारी गईं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निःसंदेह हम ने उस (क़ुर्आन) को
"लैलतुल क़द्र" (सम्मानित रात्रि) में
उतारा।
2. और तुम क्या जानो कि वह "लैलतुल
क़द्र" (सम्मानित रात्रि) क्या है?
3. लैलतुल क़द्र (सम्मानित रात्रि) हजार
मास से उत्तम है।^[1]
4. उस में (हर काम को पूर्ण करने के
लिये) फ़रिश्ते तथा रूह (जिबरील)
अपने पालनहार की आज्ञा से उतरते
हैं।^[2]
5. वह शान्ति की रात्री है, जो भोर होने
तक रहती है।^[3]

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ

تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ
كُلِّ امْرٍءٍ

سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ

1. हजार मास से उत्तम होने का अर्थ यह है कि: इस शुभ रात्रि में इबादत की बहुत बड़ी प्रधानता है। अबु हुरैरह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत (उदघृत) है कि जो व्यक्ति इस रात में ईमान (सत्य विश्वास) के साथ तथा पुण्य की नीति से इबादत करे तो उस के सभी पहले के पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। (देखिये: सहीह बुख़ारी, हदीस नं० 35, तथा सहीह मुस्लिम, हदीस नं० 760)
2. "रूह" से अभिप्राय: जिबरील अलैहिस्सलाम हैं। उन की प्रधानता के कारण सभी फ़रिश्तों से उन की अलग चर्चा की गई है। और यह भी बताया गया है कि वे स्वयं नहीं बल्कि अपने पालनहार की आज्ञा से ही उतरते हैं।
3. इस का अर्थ यह है कि संध्या से भोर तक यह रात्रि सर्वथा शुभ तथा शान्तिमय होती है। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि यह शुभ रात्रि रमजान की अन्तिम दस रातों में से कोई एक रात है। इसलिये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन दस रातों को अल्लाह की उपासना में बिताते थे।

सूरह बय्यिनह^[1] - 98

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ

सूरह बय्यिनह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 8 आयतें हैं।^[1]

- इस की प्रथम आयत में बैयिनह अर्थात: प्रकाशित प्रमाण की चर्चा हुई है जिस से इस का यह नाम रखा गया है।
- इस की आयत 1 से 3 तक में यह बताया गया है कि लोगों को कुफ़्र से निकालने के लिये यह आवश्यक था कि एक ग्रन्थ के साथ एक रसूल भेजा जाये ताकि वह धर्म को सहीह रूप में प्रस्तुत करे।
- आयत 4,5 में बताया गया है कि अहले किताब (अर्थात यहूदी और ईसाई) के पास प्रकाशित शिक्षा आ चुकी थी किन्तु वे विभेद में पड़ गये। और उन्होंने धर्म की वास्तविक शिक्षा भुला दी।
- आयत 6 से 8 तक रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इन्कार की दुखद यातना को और रसूल पर ईमान ला कर अल्लाह से डरते हुये जीवन बिताने की सफलता को बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अहले किताब के काफ़िर, और मुशिरक लोग ईमान लाने वाले नहीं थे जब तक कि उन के पास खुला प्रमाण न आ जाये।
2. अर्थात: अल्लाह का एक रसूल, जो पवित्र ग्रन्थ पढ़ कर सुनाये।

لَا يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِينَ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝

رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ۝

- 1 इस सूरह को साधारण भाष्यकारों ने मदनी लिखा है। परन्तु कुछ सहाबा (रजियल्लाहु अन्हुम) ने इसे मक्की कहा है। इस को इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह सूरह मक्के के अन्तिम काल तथा मदीने के प्रथम काल के बीच अवतीर्ण हुई।

3. जिस में उचित आदेश है।^[1]

فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ

4. और जिन लोगों को ग्रन्थ दिये गये उन्होंने इस खुले प्रमाण के आ जाने के पश्चात ही मतभेद किया।^[2]

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَةُ

5. और उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे धर्म को शुद्ध कर रखें, और सब को तज कर केवल अल्लाह की उपासना करें, नमाज़ अदा करें, और ज़कात दें और यही शाश्वत धर्म है।^[3]

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ
الَّذِينَ دُخِنُوا وَيُفِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ
وَذَلِكَ مِنْ قِيمَةِ

6. निःसंदेह जो लोग अहले किताब में से काफिर हो गये, तथा मुशिरक (मिश्रणवादी) तो वे सदा नरक की आग में रहेंगे। और वही सब से दुष्टतम जन हैं।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ
فِي تَارِيحِهِمْ خُلِدُوا فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ

1 (1-3) इस सूरह में सर्वप्रथम यह बताया गया है कि इस पुस्तक के साथ एक रसूल (ईश दूत) भेजना क्यों आवश्यक था। इस का कारण यह है कि मानव संसार के आदि शास्त्र धारी (यहूद तथा ईसाई) हों या मिश्रणवादी अधर्म की ऐसी स्थिता में फंसे हुये थे कि एक नबी के बिना उन का इस स्थिति से निकलना संभव न था। इसलिये इस चीज़ की आवश्यकता आई कि एक रसूल भेजा जाये जो स्वयं अपनी रिसालत (दूतत्व) का ज्वलंत प्रमाण हो। और सब के सामने अल्लाह की किताब को उस के सहीह रूप में प्रस्तुत करे जो असत्य के मिश्रण से पवित्र हो जिस से आदि धर्म शास्त्रों को लिप्त कर दिया गया है।

2 इस के बाद आदि धर्म शास्त्रों के अनुयाईयों के कुटमार्ग का विवरण दिया गया है कि इस का कारण यह नहीं था कि अल्लाह ने उन को मार्गदर्शन नहीं दिया। बल्कि वे अपने धर्म ग्रन्थों में मन माना परिवर्तन कर के स्वयं कुटमार्ग का कारण बन गये।

3 इन में यह बताया गया है कि अल्लाह की ओर से जो भी नबी आये सब की शिक्षा यही थी कि सब रीतियों को त्याग कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये। इस में किसी देवी देवता की पूजा अर्चना का मिश्रण न किया जाये। नमाज़ की स्थापना की जाये, ज़कात दी जाये। यही सदा से सारे नबियों की शिक्षा थी।

7. जो लोग ईमान लाये, तथा सदाचार करते रहे तो वही सब से सर्वश्रेष्ठ जन है।
8. उन का प्रतिफल उन के पालनहार की ओर से सदा रहने वाले बाग़ है। जिन के नीचे नहरें बहती होंगी। वे उन में सदा निवास करेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ, और वे अल्लाह से प्रसन्न हुये। यह उस के लिये है जो अपने पालनहार से डरे।^[1]

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُم خَيْرُ
الْبَرِيَّةِ ۝

جَزَاءُ مَا عَمِلُوا فِيهَا لَهُمْ حُتَّىٰ يَصْرِفَهُمْ عَنْهَا
الَّذِينَ خَلَقُوا فِيهَا أَبَدًا ۖ رَاضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ
ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝

1 (6-8) इन आयतों में साफ़ साफ़ कह दिया गया है कि जो अहले किताब और मूर्तियों के पुजारी इस रसूल को मानने से इन्कार करेंगे तो वे बहुत बुरे हैं। और उन का स्थान नरक है। उसी में वे सदा रहेंगे। और जो संसार में अल्लाह से डरते हुये जीवन निर्वाह करेंगे तथा विश्वास के साथ सदाचार करेंगे तो वे सदा के स्वर्ग में रहेंगे। अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया, और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गये।

सूरह ज़िलज़ाल^[1] - 99

سُورَةُ الزَّلْزَلَةِ

सूरह ज़िलज़ाल के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस में प्रलय के दिन के भूकम्प की चर्चा हुई है जो ((ज़िलज़ाल)) का अर्थ है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धरती की उस दशा की चर्चा है जो प्रलय के दिन होगी और जिसे देख कर मनुष्य चकित रह जायेगा।
- आयत 4 से 5 तक में यह बताया गया है कि उस दिन धरती बोलेगी और अपनी कथा सुनायेगी कि मनुष्य उस के ऊपर रह कर क्या करता रहा है। जो उस की ओर से मनुष्य के कर्मों पर गवाही होगी।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि उस दिन लोग विभिन्न गिरोहों में हो कर अपने कर्मों को देखने के लिये निकल पड़ेंगे और प्रत्येक की छोटी बड़ी अच्छाई और बुराई उस के सामने आ जायेगी।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. जब धरती को पूरी तरह झंझोड़ दिया जायेगा।
2. तथा भूमी अपने बोझ बाहर निकाल देगी।
3. और इन्सान कहेगा कि इसे क्या हो गया?

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا

وَأُخْرِجَتِ الْأَرْضُ بُعْثَآهَا

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا

- 1 यह सूरह मक्की है। क्योंकि इस में वर्णित विषय इसी का समर्थन करता है। परन्तु कुछ विद्वानों का विचार है कि यह मदीने में अवतीर्ण हुई। इस सूरह के अन्दर संसार के पश्चात दूसरे जीवन तथा उस में कर्मों का पूरा हिसाब लिये जाने का वर्णन है।

4. उस दिन वह अपनी सभी सुचनायें वर्णन कर देगी।

يَوْمَئِذٍ تُخْبِرُكَ أَخْبَارُهَا ۖ

5. क्योंकि तेरे पालनहार ने उसे यही आदेश दिया है।

يَا أَيُّهَا رَبِّكَ أَوْخَىٰ لَهَا ۖ

6. उस दिन लोग तितर बितर होकर आयेंगे ताकि वह अपने कर्मों को देख लें।^[1]

يَوْمَئِذٍ يَصُدُّرُ النَّاسُ فِشْقًا فَالْيَوْمِئِزَىٰ
أَعْمَأُ الْهُمُومِ ۖ

7. तो जिस ने एक कण के बराबर भी पुण्य किया होगा उसे देख लेगा।

مَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۖ

8. और जिस ने एक कण के बराबर भी बुरा किया होगा उसे देख लेगा।^[2]

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۖ

1 (1-6) इन आयतों में बताया गया है कि जब प्रलय (क्यामत) का भूकम्प आयेगा तो धरती के भीतर जो कुछ भी है, सब उगल कर बाहर फेंक देगी। यह सब कुछ ऐसे होगा कि जीवित होने के पश्चात् सभी को आश्चर्य होगा कि यह क्या हो रहा है? उस दिन यह निर्जीव धरती प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की गवाही देगी कि किस ने क्या क्या कर्म किये हैं। यद्यपि अल्लाह सब के कर्मों को जानता है फिर भी उस का निर्णय गवाहियों से प्रमाणित कर के होगा।

2 (7-8) इन आयतों का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अकेला आयेगा, परिवार और साथी सब बिखर जायेंगे। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि इस संसार में जो किसी भी युग में मरे थे सभी दलों में चले आ रहे होंगे, और सब को अपने किये हुये कर्म दिखाये जायेंगे। और कर्मानुसार पुण्य और पाप का बदला दिया जायेगा। और किसी का पुण्य और पाप छिपा नहीं रहेगा।

सूरह आदियात⁽¹⁾ - 100

سُورَةُ الْعَادِيَاتِ

सूरह आदियात के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((आदियात)) अर्थात् दौड़ने वाले घोड़ों की शपथ ली गई है। इस लिये इस का नाम "सूरह आदियात" रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में घोड़ों को इस बात की गवाही के लिये प्रस्तुत किया गया है कि मनुष्य अपने पालनहार की प्रदान की हुई शक्तियों का कितना ग़लत प्रयोग करता है।
- आयत 6 से 8 तक में मनुष्य की धन के मोह में अल्लाह का उपकार न मानने पर निन्दा की गई है।
- अन्तिम दो आयतों में उसे सावधान किया गया है कि प्रलय के दिन उसे कब्रों से निकल कर अल्लाह के पास उपस्थित होना है। उस दिन उस के दिल की दशा खुल कर सामने आ जायेगी कि उस नें संसार में जो भी कर्म किये हैं वह किस भावना और विचार से किये हैं जिसे उस ने अपने दिल में छुपा रखा था।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. उन घोड़ों की शपथ जो दौड़ कर
हाँफ जाते हैं!
2. फिर पत्थरों पर टाप मार कर
चिंगारियाँ निकालने वालों की शपथ।
3. फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों
की शपथ।
4. जो धूल उड़ाते हैं।

وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا ۝

فَالْمُورِيَاتِ قَدْحًا ۝

فَالْغَائِرَاتِ ضُبْحًا ۝

فَالْفَارَاتِ بِهَنَعًا ۝

1 इस सूरह में वर्णित विषय बता रहे हैं कि यह आरंभिक मक्की सूरतों में से है।

- | | |
|---|--|
| 5. फिर सेना के बीच घुस जाते हैं। | تَوَسَّطْنَ بِهِ جَمْعًا ۝ |
| 6. वास्तव में इन्सान अपने पालनहार का बड़ा कृतघ्न (नाशुकरा) है। | إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ |
| 7. निश्चय रूप से वह इस पर स्वयं साक्षी (गवाह) है। ^[1] | وَرَأَاهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشِيمِدٌ ۝ |
| 8. वह धन का बड़ा प्रेमी है। ^[2] | وَرَأَاهُ حُبَّ الْغَيْرِ لَشِيدِدٌ ۝ |
| 9. क्या वह उस समय को नहीं जानता जब कुब्रों में जो कुछ है निकाल लिया जायेगा? | أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝ |
| 10. और सीनों के भेद प्रकाश में लाये जायेंगे। ^[3] | وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝ |
| 11. निश्चय उनका पालनहार उस दिन उन से पूर्ण रूप सूचित होगा। ^[4] | إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ خَبِيرٌ ۝ |

1 (1-7) इन आरंभिक आयतों में मानव जाति (इन्सान) की कृतघ्नता का वर्णन किया गया है। जिस की भूमिका के रूप में एक पशु की कृतज्ञता को शपथ स्वरूप उदाहरण के लिये प्रस्तुत किया गया है। जिसे इन्सान पोसता है, और वह अपने स्वामी का इतना भक्त होता है कि उसे अपने ऊपर सवार कर के नीचे ऊँचे मार्गों पर रात दिन की परवाह किये बिना दोड़ता और अपनी जान जोखिम में डाल देता है। परन्तु इन्सान जिसे अल्लाह ने पैदा किया, समझ बूझ दी और उस के जीवन यापन के सभी साधन बनाये, वह उस का उपकार नहीं मानता और जान बूझ कर उस की अवज्ञा करता है, उसे इस पशु से शिक्षा लेनी चाहिये।

2 इस आयत में उस की कृतघ्नता का कारण बताया गया है कि जिस इन्सान को सर्वाधिक प्रेम अल्लाह से होना चाहिये वही अत्याधिक प्रेम धन से करता है।

3 (9-10) इन आयतों में सावधान किया गया है कि संसारिक जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है तथा उस में अल्लाह के सामने अपने कर्मों का उत्तर देना है जो प्रत्येक के कर्मों का ही नहीं उन के सीनों के भेदों को भी प्रकाश ला कर दिखा देगा कि किस ने अपने धन तथा बल का कुप्रयोग कर कृतघ्नता की है, और किस ने कृतज्ञता की है। और प्रत्येक को उस का प्रतिकार भी देगा। अतः इन्सान को धन के मोह में अन्धा तथा अल्लाह का कृतघ्न नहीं होना चाहिये, और उस के सत्धर्म का पालन करना चाहिये।

4 (11) अर्थात् वह सूचित होगा कि कौन क्या है, और किस प्रतिकार का भागी है।

सूरह कारिअह^[1] - 101

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

सूरह कारिअह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 11 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में क़्यामत को ((कारिअह)) कहा गया है। अर्थात् खड़ खड़ाने वाली आपदा। और इसी से इस का यह नाम रखा गया है।
- आयत 1 से 5 तक प्रलय के समय की स्थिति से सूचित किया गया है।
- आयत 6, 7 में जिन के कर्म न्याय के तराजू में भारी होंगे उन का अच्छा परिणाम बताया गया है।^[1]
- आयत 8 से 11 तक में उन का दुष्परिणाम बताया गया है जिन के कर्म न्याय के तराजू में हल्के होंगे। और नरक की वास्तविकता बताई गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. वह खड़खड़ा देने वाली।
2. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?
3. और तुम क्या जानो कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?^[2]

الْقَارِعَةُ ۝

مَا الْقَارِعَةُ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

- 1 यह सूरह भी मक्की है और इस का विषय भी प्रलय (क़्यामत) तथा परलोक (आखिरत) है। इस में प्रश्न के रूप में सर्वप्रथम सावधान कर के दो वाक्यों में प्रलय का चित्रण कर दिया गया है कि उस दिन सभी घबरा कर इस प्रकार इधर उधर फिरेंगे जैसे पतंगे प्रकाश पर बिखरे होते हैं। और पर्वतों की यह दशा होगी कि अपने स्थान से उखड़ कर धुनी हुई ऊन के समान हो जायेंगे। फिर बताया गया है कि परलोक में हिसाब इस आधार पर होगा कि किस के सदाचार का भार दुराचार से अधिक है और किस के सदाचार का भार उस के दुराचार से हल्का है। प्रथम श्रेणी के लोगों को सुख मिलेगा। और दूसरी श्रेणी के लोगों को आग से भरी गहरी खाई में फेंक दिया जायेगा।
- 2 (1-3) "कारिअह": प्रलय ही का एक नाम है जो उस के समय की घोर दशा का

4. जिस दिन लोग बिखरे पतिंगों के समान (ब्याकुल) होंगे।
5. और पर्वत धुनी हुई ऊन के समान उड़ेंगे।^[1]
6. तो जिस के पलड़े भारी हुये
7. तो वह मन चाहे सुख में होगा।
8. तथा जिस के पलड़े हल्के हुये
9. तो उस का स्थान "हाविया" है।
10. और तुम क्या जानो कि वह (हाविया) क्या है?
11. वह दहक्ती आग है।^[2]

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۝

وَيَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعُفُوفِ الْمَنْعُوشِ ۝

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝

نَارُ حَامِيَةٍ ۝

चित्रण करता है। इस का शाब्दिक अर्थ: द्वार खटखटाना है। जब कोई अतिथि अकस्मात रात में आता है तो उसे दरवाजा खटखटाने की आवश्यकता होती है। जिस से एक तो यह ज्ञात हुआ कि प्रलय अकस्मात होगी। और दूसरा यह ज्ञात हुआ कि वह कड़ी ध्वनी और भारी उथल पुथल के साथ आयेगी। इसे प्रश्नवाचक वाक्यों में दोहराना सावधान करने और उस की गंभीरता को प्रस्तुत करने के लिये है।

- 1 (4-5) इन दोनों आयतों में उस स्थिति को दर्शाया गया है जो उस समय लोगों और पर्वतों की होगी।
- 2 (6-11) इन आयतों में यह बताया गया है कि प्रलय क्यों होगी? इसलिये कि इस संसार में जिस ने भले बुरे कर्म किये हैं उन का प्रतिकार कर्मों के आधार पर दिया जाये, जिस का परिणाम यह होगा कि जिस ने सत्य विश्वास के साथ सत्कर्म किया होगा वह सुख का भागी होगा। और जिस ने निर्मल परम्परागत रीतियों को मान कर कर्म किया होगा वह नरक में झोंक दिया जायेगा।

सूरह तकासुर^[1] - 102

سُورَةُ التَّكَوُّثِ

सूरह तकासुर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 8 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((तकासुर)) अर्थात: अधिक से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को जीवन के मूल उद्देश्य से अचेत रहने का कारण बताया गया है। इसी लिये इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 5 तक में सावधान किया गया है कि जिस धन को तुम सब कुछ समझते हो और उसे अर्जित करने में अपने भविष्य से अचेत हो तुम्हें आँख बंद करते ही पता लग जायेगा कि मौत के उस पार क्या है।
- आयत 6 से 8 तक में बताया गया है कि नरक को तुम मानो या न मानो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उसे अपनी आँखों से देख लोगे। और तुम्हें उस का विश्वास हो जायेगा किन्तु वह समय कर्म का नहीं बल्कि हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें अल्लाह के प्रत्येक प्रदान का जवाब देना होगा।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. तुम्हें अधिक (धन) के लोभ ने मग्न
कर दिया।

أَلْهَمَكُمُ التَّكَاثُرَ

2. यहाँ तक कि तुम कब्रिस्तान जा
पहुँचे।^[2]

حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ

1 इस सूरह का प्रसंग भी इस के मक्की होने का संकेत करता है।

2 (1-2) इन दोनों आयतों में उन को सावधान किया गया है जो संसारिक धन ही को सब कुछ समझते हैं और उसे अधिकाधिक प्राप्त करने की धुन उन पर ऐसी सवार है कि मौत के पार क्या होगा इसे सोचते ही नहीं। कुछ तो धन की देवी बना कर उसे पूजते हैं।

- | | |
|---|--|
| 3. निश्चय तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। | كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ |
| 4. फिर निश्चय ही तुम्हें ज्ञान हो जायेगा। | ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ |
| 5. वास्तव में यदि तुम को विश्वास होता (तो ऐसा न करते।) ^[1] | كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ۝ |
| 6. तुम नरक को अवश्य देखोगे। | لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ۝ |
| 7. फिर उसे विश्वास की आँख से देखोगे। | ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ۝ |
| 8. फिर उस दिन तुम से सुख सम्पदा के विषय में अवश्य पूछ गछ होगी। ^[2] | ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ۝ |

1 (3-5) इन आयतों में सावधान किया गया है कि मौत के पार क्या है? उन्हें आँख बन्द करते ही इस का ज्ञान हो जायेगा। यदि आज तुम्हें इस का विश्वास होता तो अपने भविष्य की ओर से निश्चिन्त न होते। और तुम पर धन प्राप्ती की धुन इतनी सवार न होती।

2 (6-8) इन आयतों में सूचित किया गया है कि तुम नरक के होने का विश्वास करो या न करो वह दिन आ कर रहेगा जब तुम उस को अपनी आँखों से देख लोगे। उस समय तुम्हें इस का पूरा विश्वास हो जायेगा। परन्तु वह दिन कर्म का नहीं हिसाब देने का दिन होगा। और तुम्हें प्रत्येक अनुकम्पा (नेमत) के बारे में अल्लाह के सामने जबाब देही करनी होगी। (अहसनुल बयान)

सूरह अस्र^[1] - 103

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरह अस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस का आरंभ ((अस्र)) अर्थात् (युग) की शपथ से होता है, इस लिये इस का नाम सूरह अस्र रखा गया है।^[1]
- इस सूरह में मात्र तीन ही आयतें हैं फिर भी इस के अर्थ में पूरे मानव जाति के उत्थान और पतन का एतिहास आ गया है। और मार्गदर्शन का मीनार बन कर व्यक्ति तथा जातियों और धार्मिक समुदायों को सीधी राह से सूचित कर रही है। ताकि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लें, और ग़लत राह पर पड़ कर विनाश के गढ़े में गिरने से बच जायें।
- युग की गवाही इस के लिये प्रस्तुत की गई है कि यदि मनुष्य के कर्म ईमान से खाली हों तो वह विनाश से नहीं बच सकता।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. निचड़ते दिन की शपथ!
2. निःसदेह इन्सान क्षति में है।^[2]

وَالْعَصْرِ

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ خَيْرٌ

1. यद्यपी यह एक छोटी सी सूरह है परन्तु इस में ज्ञान का एक समुद्र समाया हुआ है। इस सूरह का विषय इस बात पर सावधान करना है कि समस्त मानव जाति (इन्सान) विनाश की ओर जा रही है। इस से केवल वही लोग बच सकते हैं जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये।
2. (1-2) "अस्र" का अर्थ: निचोड़ना है। युग तथा संध्या के समय के भाग के लिये भी इस का प्रयोग होता है। और यहाँ इस का अर्थ युग और दिन निचड़ने का समय दोनों लिया जा सकता है। इस युग की गवाही इस बात पर पेश की गई है कि: इन्सान जब तक ईमान (सत्य विश्वास) के गुणों को नहीं अपनाता विनाश से सुरक्षित नहीं रह सकता। इसलिये कि इन्सान के पास सब से मूल्यवान् पूँजी समय है जो तेज़ी से गुज़रता है। इसलिये यदि वह परलोक का सामान न करे तो अवश्य क्षति में पड़ जायेगा।

3. अतिरिक्त उन के जो ईमान लाये।
तथा सदाचार किये, एवं एक दूसरे
को सत्य का उपदेश तथा धैर्य का
उपदेश देते रहे।⁽¹⁾

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

1 इस का अर्थ यह है कि परलोक की क्षति से बचने के लिये मात्र ईमान ही पर
बस नहीं इस के लिये सदाचार भी आवश्यक है और उस में से विशेष रूप से
सत्य और सहन शीलता और दूसरों को इन की शिक्षा देते रहना भी आवश्यक
है। (तर्जुमानुल कुर्आन, मौलाना आज़ाद)

सूरह हुमज़ह^[1] - 104

سُورَةُ الْهُمَزَةِ

सूरह हुमज़ह के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 9 आयतें हैं।

- इस का नाम ((सूरह हुमज़ह)) है क्योंकि इस की प्रथम आयत में यह शब्द आया है जिस का अर्थ है: व्यंग करना, ताना मारना, गीबत करना आदि।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में धन के पूजारियों के आचरण का चित्र दिखाया गया है और उन्हें सचेत किया गया है कि यह आचरण अवश्य विनाश का कारण है।
- आयत 4 से 9 तक में धन के पूजारियों का परलोक में दुष्परिणाम बताया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. विनाश हो उस व्यक्ति का जो
कचोके लगाता रहता है और चौटे
करता रहता है।

وَيَلْ لَّيْلٍ مُّزَّةٍ كُفْرًا ۝

2. जिस ने धन एकत्र किया और उसे
गिन गिन कर रखा।

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝

3. क्या वह समझता है कि उस का धन
उसे संसार में सदा रखेगा?^[2]

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝

1 यह सूरह भी मक्की युग की आरंभिक सूरतों में से है। इस का विषय धन के पूजारियों को सावधान करना है कि जिन की यह दशा होगी वह अवश्य अपने कुकर्म का दण्ड पायेंगे।

2 (1-3) इन आयतों में धन के पूजारियों के अपने धन के घमंड में दूसरों का अपमान करने और उन की कृपणता (कंजूसी) का चित्रण किया गया है, उन्हें चेतावनी दी गई है कि यह आचरण विनाशकारी है, धन किसी को संसार में सदा जीवित नहीं रखेगा, एक समय आयेगा कि उसे सब कुछ छोड़ कर खाली हाथ जाना पड़ेगा।

4. कदापि ऐसा नहीं होगा। वह अवश्य ही "हुतमा" में फेंका जायेगा।
5. और तुम क्या जानो कि "हुतमा" क्या है?
6. वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है।
7. जो दिलों तक जा पहुँचेगी।
8. वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे।
9. लंबे लंबे स्तम्भों में^[1]

كَلَّا لَيُنَادُّكَ فِي الْحُطَمَةِ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝

نَارُ اللَّهِ الْمَوْقُودَةُ ۝

الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّصَدَّدَةٌ ۝

فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝

1 (4-9) इन आयतों के अन्दर परलोक में धन के पुजारियों के दुष्परिणाम से अवगत कराया गया है कि उन को अपमान के साथ नरक में फेंक दिया जायेगा। जो उन्हें खण्ड कर देगी और दिलों तक जो कुबिचारों का केन्द्र है पहुँच जायेगी, और उस में इन अपराधियों को फेंक कर ऊपर से बन्द कर दिया जायेगा।

सूरह फील^[1] - 105

سُورَةُ الْفِيلِ

सूरह फील के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((फील)) शब्द आया है जिस का अर्थ हाथी है। इसी लिये इस का यह नाम है।^[1]
- इस पूरी सूरह में एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत है।
- आयत 1 में कहा गया है कि अब्रहा जिस की सेना काँबा को ढहाने आई थी उस का अल्लाह ने कैसा सत्यानाश कर दिया? उस पर विचार करो।

1 यह सूरह भी मक्की है। इस में अल्लाह की शक्ति और अपने घर "काँबा" को "अब्रहा" से सुरक्षित रखने और उसे उस की सेना सहित नाश कर देने की ओर संकेत किया गया है जिस की संक्षिप्त कथा यह है कि यमन के राजा "अब्रहा" ने अपनी राजधानी "सन्आ" में एक कलीसा (गिरजा घर) बनाया। और लोगों को काँबा के हज्ज से रोकने की घोषणा कर दी। और 570 या 571 ई. में 60 हजार सेना के साथ जिस में 13 या 9 हाथी थे काँबा पर आक्रमण करने के इरादे से चल पड़ा। और जब मक्का से तीन कोस रह गया तो "मुहस्सर" नामी स्थान पर पड़ाव किया, और उस की सेना ने कुछ ऊँट पकड़ लिये जिन में दो सौ ऊँट रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब के थे जो काँबा के पुरोहित और नगर के मुख्या थे। वह अब्रहा के पास गये जिन से वह बड़ा प्रभावित हुआ और उन्होंने अपने ऊँट माँगे। अब्रहा ने कहा: तुम ऊँट माँगते हो और काँबा के बारे में जो तुम्हारा धर्म स्थल है कुछ नहीं कहते? अब्दुल मुत्तलिब ने कहा: मैं अपने ऊँटों का मालिक हूँ रहा यह घर तो उस का स्वामी उस की रक्षा स्वयं करेगा। अब्रहा ने उन को ऊँट वापस कर दिये। और उन्होंने नागरिकों से आ कर कहा कि: अपने परिवार को लेकर (पर्वत) पर चले जायें। फिर उन्होंने कुरैश के कुछ प्रमुखों के साथ काँबा के द्वार का कड़ा पकड़ कर दुआ (प्रार्थना) की और कहा: हे अल्लाह! अपने घर और इस के सेवकों की रक्षा कर। दूसरे दिन अब्रहा ने मक्का में प्रवेश का प्रयास किया परन्तु उस का अपना हाथी बैठ गया और आँकुस पड़ने पर भी नहीं हिला। और दूसरी दशा में फेरा जाता तो दौड़ने लगता था। इतने में पक्षियों का एक झुंड चोंचों और पंजों में कंकरियाँ लिये हुये आया और इस सेना पर कंकरियों की वर्षा कर दी, जिन से उन का शरीर गलने लगा, और अब्रहा सहित उस की सेना का विनाश कर दिया गया।

- आयत 2 में बताया गया है कि कैसे उस की चाल असफल हो गई।
- आयत 3,4 में अल्लाह के अपने घर की रक्षा करने और आयत 5 में आक्रमणकारियों के बुरे अन्त की चर्चा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या तुम नहीं जानते कि तेरे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया?
2. क्या उस ने उन की चाल को विफल नहीं कर दिया?
3. और उन पर पक्षियों के दल भेजे?
4. जो उन पर पकी कंकरी के पत्थर फेंक रहे थे।
5. तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा।^[1]

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارٍ مِّنْ يَّسِيلٍ ۝

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

1 (1-5) इस सूरह का लक्ष्य यह बताना है कि काँबा को आक्रमण से बचाने के लिये तुम्हारे देवी देवता कुछ काम न आये। कुरैश के प्रमुखों ने अल्लाह ही से दुआ की थी और उन पर इस का इतना प्रभाव पड़ा था कि कई वर्षों तक साधारण नागरिकों तक ने भी अल्लाह के सिवा किसी की पूजा नहीं की थी। यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से कुछ पहले की थी और वहाँ बहुत सारे लोग अभी जीवित थे जिन्होंने यह चित्र अपने नेत्रों से देखा था। अतः उन से यह कहा जा रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो आमंत्रण दे रहे हैं वह यही तो है कि अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा न की जाये, और इस को दबाने का परिणाम वही हो सकता है जो हाथी वालों का हुआ। (इब्ने कसीर)

सूरह कुरैश⁽¹⁾ - 106

سُورَةُ الْقُرَيْشِ

सूरह कुरैश के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इस में मक्का के कबीले ((कुरैश)) की चर्चा के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक में मक्का के वासी कुरैश के अपनी व्यापारिक यात्रा से प्रेम रखने के कारण जो यात्रा वह निर्भय और शान्त रह कर किया करते थे क्योंकि कौबा के निवासी थे उन से कहा जा रहा है कि वह केवल इस घर के स्वामी अल्लाह ही की बंदना (उपासना) करें।
- आयत 4 में इस का कारण बताया गया है कि यह जीविका और शान्ति जो तुम्हें प्राप्त है वह अल्लाह ही का प्रदान है। इस लिये तुम्हें उस का आभारी होना चाहिये और मात्र उसी की इबादत (बंदना) करनी चाहिये।

1 इस सूरह के अर्थ को समझने के लिये यह जानना जरूरी है कि कुरैश जाति नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पूर्वज कुसई पुत्र किलाब के युग में "हिजाज़" में फैली हुई थी। उन्होंने सब को मक्का में एकत्र किया और अपनी सुनिती से एक राज्य की स्थापना की। और हाजियों की सेवा की ऐसी व्यवस्था की कि पूरी अरब जातियों और क्षेत्रों में उन का अच्छा प्रभाव पड़ा। कुसई के बाद उन के चार पुत्रों में राज्य पद विभाजित हो गये। परन्तु उन में अब्द मनाफ़ का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। और उन के चार पुत्रों में से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दादा अब्दुल मुत्तलिब के पिता हाशिम ने सब से पहले यह सोचा कि: अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लिया जाये, जिस के कारण कुरैश का संबंध अनेक देशों और सभ्यताओं से हो गया। मक्का अरब द्वीप का व्यापारिक केंद्र बन गया। और अब्रहा की पराजय ने कुरैश की मान मर्यादा और अधिक कर दी। इसलिये सूरह के चार वाक्यों में कुरैश से मात्र इतना ही कहा गया है कि जब तुम इस घर (कौबा) को मूर्तियों का नहीं अल्लाह का घर मानते हो कि वह अल्लाह ही है जिस ने इस घर के कारण शांति प्रदान की और तुम्हारे व्यापार को यह उन्नती दी, तथा तुम्हें भुखमरी से बचाया तो तुम्हें भी मात्र उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. कुरैश के स्वभाव बनाने के कारण।
2. उन के जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का स्वभाव बनाने के कारण^[1]
3. उन्हें चाहिये कि इस घर (काँबा) के प्रभु की पूजा करें^[2]
4. जिस ने उन्हें भूख में खिलाया तथा डर से निडर कर दिया।

إِنِّي لَأَنفِ قُرَيْشٍ

الْفَيْعِمِ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ

الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّنْ جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ

- 1 (1-2) गर्मी और जाड़े की यात्रा से अभिप्राय गर्मी के समय कुरैश की व्यापारिक यात्रा है जो शाम और फलस्तीन की ओर होती थी। और जाड़े के समय वे दक्षिण अरब की यात्रा करते थे जो गर्म क्षेत्र है।
- 2 इस घर से अभिप्राय: काँबा है। अर्थ यह है कि यह सुविधा उन्हें इसी घर के कारण प्राप्त हुई। और वह स्वयं यह मानते हैं कि 360 मूर्तियाँ उन की रब नहीं हैं जिन की पूजा कर रहे हैं। उन का रब (पालनहार) वही है जिस ने उन को अब्रहा के आक्रमण से बचाया। और उस युग में जब अरब की प्रत्येक दिशा में अशान्ति का राज्य था मात्र इसी घर के कारण इस नगर में शान्ति है। और तुम इसी घर के निवासी होने के कारण निश्चिन्त हो कर व्यापारिक यात्रायें कर रहे हो, और सुख सुविधा के साथ रहते हो। क्योंकि काबे के प्रबन्धक और सेवक होने के कारण ही लोग कुरेश का आदर करते थे। तो उन्हें स्मरण कराया जा रहा है कि फिर तुम्हारा कर्त्तव्य है कि केवल उसी की उपासना करो।

सूरह माऊन^[1] - 107

سُورَةُ الْمَاعُونِ

सूरह माऊन के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 7 आयतें हैं।

- इस सूरह की अन्तिम आयत में ((माऊन)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है। जिस का अर्थ है लोगों को देने की साधारण आवश्यकता की चीजें।^[1]
- आयत 1 में उस के आचरण पर विचार करने के लिये कहा गया है जो प्रलय के दिन के प्रतिफल को नहीं मानता।
- आयत 2,3 में यह बताया गया है कि ऐसा ही व्यक्ति समाज के अनाथों तथा निर्धनों की कोई सहायता नहीं करता। और उन के साथ बुरा व्यवहार करता है।
- आयत 4 से 6 तक में उन की निन्दा की गई है जो नमाज़ पढ़ने में आलसी होते हैं। और दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं।
- और आयत 7 में उन की कंजूसी पर पकड़ की गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) क्या तुम ने उसे देखा
जो प्रतिकार (वदले) के दिन को
झुठलाता है?
2. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को
धक्का देता है।
3. और गरीब के लिये भोजन देने पर
नहीं उभारता।^[2]

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَكْذِبُ بِالذِّينِ

فَدَّٰلِكَ الَّذِي يُدْفَعُ الْيَتِيمَ

وَلَا يَعْصِ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ

- 1 इस सूरह का विषय यह बताना है कि परलोक पर ईमान न रखना किस प्रकार का आचरण और स्वभाव पैदा करता है।
- 2 (2-3) इन आयतों में उन काफ़िरों (अधर्मियों) की दशा बताई गई है जो

4. विनाश है उन नमाज़ियों के लिये^[1]

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ

5. जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं।

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ

6. और जो दिखावे (आडंबर) के लिये करते हैं।

الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ

7. तथा माअून (प्रयोग में आने वाली मामूली चीज़) भी माँगने से नहीं देते^[2]

وَيَسْتَعِينُونَ الْمَاعُونُ

परलोक का इन्कार करते हैं।

1 इन आयतों में उन मुनाफिकों (द्वय वादियों) की दशा का वर्णन किया गया है जो ऊपर से मुसलमान हैं परन्तु उन के दिलों में परलोक और प्रतिकार का विश्वास नहीं है।

इन दोनों प्रकारों के आचरण और स्वभाव को बयान करने से अभिप्राय यह बताना है कि: इन्सान में सदाचार की भावना परलोक पर विश्वास के बिना उत्पन्न नहीं हो सकती। और इस्लाम परलोक का सहीह विश्वास दे कर इन्सानों में अनाथों और गरीबों की सहायता की भावना पैदा करता है और उसे उदार तथा परोपकारी बनाता है।

2 आयत नं० 7 में मामूली चीज़ के लिये (माअून) शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है साधारण माँगने के सामान: जैसे पानी, आग, नमक, डोल आदि। और आयत का अभिप्राय यह है कि: आखिरत का इन्कार किसी व्यक्ति को इतना तंग दिल बना देता है कि: वह साधारण उपकार के लिये भी तैयार नहीं होता।

सूरह कौसर^[1] - 108

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

सूरह कौसर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में "कौसर" शब्द आया है जिस का अर्थ है: बहुत सी भलाईयाँ। और जन्नत के अन्दर एक नहर का नाम भी है। इस लिये इस का नाम "सूरह कौसर" है।^[1]
- इस की आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को बहुत सी भलाईयाँ प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।
- और आयत 2 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस प्रदान पर नमाज़ पढ़ते रहने तथा कुर्बानी करने का आदेश दिया गया है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा दी गई है कि जो आप के शत्रु हैं वह आप का कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे बल्कि वह स्वयं बहुत बड़ी भलाई से वंचित रह जायेंगे।
- हदीस में है कि आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा कि कौसर एक नहर है जो तुम्हारे नबी को प्रदान की गई है। जिस के दोनों किनारे मोती के और वर्तन आकाश के तारों की संख्या के समान हैं। (सहीह बुखारी: 4965)

1 यह सूरह मक्का में उस समय उतरी जब मक्का वासियों ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इसलिये अपनी जाति से अलग कर दिया कि आप ने उन की मूर्तिपूजा की परम्परा का खण्डन किया। और नबी होने से पहले आप की जो जाति में मान मर्यादा थी वह नहीं रह गई।

आप अपने थोड़े से साथियों के साथ निस्सहाय हो कर रह गये थे। इसी बीच आप के एक पुत्र का निधन हो गया था जिस पर मूर्ति पूजकों ने खुशियाँ मनाईं। और कहा कि मुहम्मद के कोई पुत्र नहीं। वह निर्मूल हो गया और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेना नहीं रह जायेगा। ऐसे हृदय विदारक क्षणों में आप को यह शुभ सूचना दी गई कि आप निराश न हों आप के शत्रु ही निर्मूल होंगे। यह शुभ सूचना और भविष्य वाणी कुर्आन ने उस समय दी जब कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जाना संभव है। परन्तु कुछ ही वर्षों बाद ऐसा परिवर्तन हुआ कि मक्का के अनेकेश्वर बादियों का कोई सहायक नहीं रह गया। और उन्हें विवश हो कर हथियार डाल देने पड़े। और फिर आप के शत्रुओं का कोई नाम लेना नहीं रह गया। इस के विपरीत आज भी करोड़ों मुसलमान आप से संबंध पर गर्व करते हैं, और आप पर दरूद भेजते हैं।

- और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने कहा कि कौसर वह भलाईयाँ हैं जो अल्लाह ने आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को प्रदान की हैं। (सहीह बुखारी: 4966)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) हम ने तुम को कौसर प्रदान किया है।^[1]
2. तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।^[2]
3. निःसंदेह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम निशान है।^[3]

إِنَّا أَنْعَمْنَا عَلَى الْكَافِرِ

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَنْصِرْ

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

- 1 कौसर का अर्थ है: असीम तथा अपार शुभ। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि कौसर एक हौज़ (जलाशय) है जो मुझे परलोक में प्रदान किया जायेगा। जब प्रत्येक व्यक्ति प्यास प्यास कर रहा होगा और आप की उम्मत आप के पास आयेगी, आप पहले ही से वहाँ उपस्थित होंगे और आप उन्हें उस से पिलायेंगे जिस का जल दूध से उजला और मधु से अधिक मधुर होगा। उस की भूमी कस्तूरी होगी, उस की सीमा और बर्तनों का सविस्तार वर्णन हदीसों में आया है।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के माध्यम से सभी मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब शुभ तुम्हारे पालनहार ही ने प्रदान किये हैं तो तुम भी मात्र उसी की पूजा करो और बली भी उसी के लिये दो। मूर्ति पूजकों की भाँति देवी देवताओं की पूजा अर्चना न करो और न उन के लिये बलि दो। वह तुम्हे कोई शुभ लाभ और हानि देने का सामर्थ्य नहीं रखते।
- 3 आयत नं० 3 में "अबतर" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: जड़ से अलग कर देना जिस के बाद कोई पेड़ सूख जाता है। और इस शब्द का प्रयोग उस के लिये भी किया जाता है जो अपनी जाति से अलग हो जाये, या जिस का कोई पुत्र जीवित न रह जाये, और उस के निधन के बाद उस का कोई नाम लेना न हो। इस आयत में जो भविष्य वाणी की गई है वह सत्य सिद्ध हो कर पूरे मानव संसार को इस्लाम और कुर्आन पर विचार करने के लिये बाध्य कर रही है। (इब्ने कसीर)

सूरह काफिरून^[1] - 109

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

सूरह काफिरून के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((काफिरून)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- आयत 1 में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को निर्देश दिया गया है कि काफिरों से कह दें कि बंदना (उपासना) के विषय में मुझ में और तुम में क्या अन्तर है?
- आयत 4 से 5 तक में यह ऐलान है कि दीन (धर्म) के विषय में कोई समझौता और उदारता असंभव है।
- आयत 6 में काफिरों के धर्म से अप्रसन्न (विमुख) होने का ऐलान है।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने तवाफ़ की दो रक्अत में यह सूरह और सूरह इक्लास पढ़ी थी। (सहीह मुस्लिम: 1218)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी) कह दो: हे काफिरों!

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ

2. मैं उन (मूर्तियों) को नहीं पूजता जिन्हें

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ

- 1 यह सूरह भी मक्की है। इस सूरह की भूमिका यह है कि मक्का में यद्यपि इस्लाम का कड़ा विरोध हो रहा था फिर भी अभी मूर्ति पूजक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निराश नहीं हुये थे। और उन के प्रमुख किसी न किसी प्रकार आप को संधि के लिये तैयार कर रहे थे। और आप के पास समय समय से अनेक प्रस्ताव लेकर आया करते थे। अन्त में यह प्रस्ताव लेकर आये कि: एक वर्ष आप हमारे पूजितों (लात, उज्जा आदि) की पूजा करें, और एक वर्ष हम आप के पूज्य की पूजा करें। और इसी पर संधि हो जाये। उसी समय यह सूरह अबतीर्ण हुई, और सदा के लिये बता दिया गया कि दीन में कोई समझौता नहीं हो सकता है। इसीलिये हदीस में इसे शिर्क से रक्षा की सूरह कहा गया है।

तुम पूजते हो।

3. और न तुम उसे पूजते हो जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۖ

4. और न मैं उसे पूजुँगा जिसे तुम पूजते हो।

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عِبَدْتُمْ ۚ

5. और न तुम उसे पूजोगे जिसे मैं पूजता हूँ।

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۖ

6. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म, तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।^[1]

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۚ

1 (1-6) पूरी सूरह का भावार्थ यह है कि इस्लाम में वही ईमान (विश्वास) मान्य है जो पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ हो, अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व तथा गुणों और उस के अधिकारों में किसी को साझी न बनाया जाये। कुर्आन की शिक्षानुसार जो अल्लाह को नहीं मानता, और जो मानता है परन्तु उस के साथ देवी देवताओं को भी मानता है तो दोनों में कोई अन्तर नहीं। उस के विशेष गुणों को किसी अन्य से मानना उस को न मानने के ही बराबर है और दोनों ही काफिर हैं। (देखिये: उम्मुल किताब, मौलाना आज़ाद)

सूरह नस्र^[1] - 110

سُورَةُ النَّصْرِ

सूरह नस्र के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मदनी है, इस में 3 आयतें हैं।

- इस सूरह में ((नस्र)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ सहायता है, इस का यह नाम रखा गया है।^[1]
- इस की आयत 1 में अल्लाह की सहायता आने तथा मक्का की विजय की चर्चा है।
- आयत 2 में लोगों के समूहों में इस्लाम लाने की चर्चा है।
- आयत 3 में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का यह प्रदान प्राप्त होने पर उस की और अधिक प्रशंसा तथा पवित्रता गान का निर्देश दिया गया है।
- हदीस में है कि इस सूरह के उतरने के पश्चात् आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी नमाज़ (के रुकूअ और सज्दे) में अधिकतर ((सुब्हानका रब्बना व बिहम्दिका अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली)) पढ़ा करते थे। (सहीह बुखारी: 4967, 4968)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) जब अल्लाह की सहायता
एवं विजय आ जाये।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ

- 1 अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि यह कुर्आन की अन्तिम सूरह है जो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतरी। इस सूरह में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भविष्य वाणी के रूप में बताया गया है कि जब इस्लाम की पूर्ण विजय हो जाये, और लोग समूहों के साथ इस्लाम में प्रवेश करने लगें तो आप अल्लाह की हम्द (प्रशंसा) और तस्बीह (पवित्रता का वर्णन) करने में लग जायें और उस से क्षमा माँगते रहें।

2. और तुम लोगों को अल्लाह के धर्म में दल के दल प्रवेश करते देख लो।^[1]
3. तो अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करो। और उस से क्षमा माँगो, निःसंदेह वह बड़ा क्षमी है।^[2]

وَرَأَيْتِ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝

- 1 (1-2) इस में विजय का अर्थ वह निर्णायक विजय है जिस के बाद कोई शक्ति इस्लाम का सामना करने के योग्य नहीं रह जायेगी। और यह स्थिति सन् 8 (हिजरी) की है जब मक्का विजय हो गया। अरब के कोने कोने से प्रतिनिधि मंडल रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम लाने लगे। और सन् 10 (हिजरी) में जब आप (हज्जतुल वदाअ) (अर्थात: अन्तिम हज्ज) के लिये गये तो उस समय पूरा अरब इस्लाम के आधीन आ चुका था और देश में कोई मुशिरक (मूर्ति पूजक) नहीं रह गया था।
- 2 इस आयत में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहा गया है कि इतना बड़ा काम आप ने अल्लाह की दया से पूरा किया है, इस के लिये उस की प्रशंसा और पवित्रता का वर्णन तथा उस की कृतज्ञता व्यक्त करें। इस में सभी के लिये यह शिक्षा है कि कोई पुण्य कार्य अल्लाह की दया के बिना नहीं होता। इसलिये उस पर घमंड नहीं करना चाहिये।

सूरह तच्चत^[1]- 111

سُورَةُ تَبَّتْ

सूरह तच्चत के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की आयत 1 में (तच्चत) शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह तच्चत) है। जिस का अर्थ तबाह होना है।^[1]
- आयत 1 से 3 तक में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के शत्रु अबू लहब के बुरे परिणाम से सूचित किया गया है।
- आयत 4 और 5 में उस की पत्नी के शिक्षाप्रद परिणाम का दृश्य दिखाया गया है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से बैर रखने में अपने पति के साथ थी।
- हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आदेश दिया गया कि आप अपने समीप के परिजनो को डरायें तो आप ने सफ़ा (पर्वत) पर चढ़ कर पुकारा। और जब सब आ गये, तो कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर सवेरे या संध्या को धावा बोल देगी तो तुम मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप को झूठ बोलते नहीं देखा। आप ने कहा: मैं तुम्हें अपने सामने की दुखदायी

1 यह सूरह आरंभिक मक्की सुरतों में से है। इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को यह आदेश दिया गया कि आप समीप वर्ती संबंधियों को अल्लाह से डरायें, तो आप सफ़ा "पहाड़ी" पर गये, और पुकारा: "हाय भोर की आपदा!" यह सुन कर कुरैश के सभी परिवार जन एकत्र हो गये। तब आप ने कहा: यदि मैं तुम से कहूँ कि इस पर्वत के पीछे एक सेना है जो तुम पर आक्रमण करने को तैयार है तो तुम मेरी बात मानोगे? सब ने कहा: हाँ। हम ने कभी आप से झूठ नहीं आजमाया। आप ने फरमाया: मैं तुम्हें आग (नर्क) की बड़ी यातना से सावधान करता हूँ। इस पर किसी के कुछ बोलने से पहले आप के चचा "अबु लहब" ने कहा: तुम्हारा सत्यानास हो! क्या हमें इसी लिये एकत्र किया है?

और एक रिवायत यह भी है कि उस ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मारने के लिये पत्थर उठाया, इसी पर यह सूरह उतारी गई। (देखिये: सहीह बुखारी: 4971, और सहीह मुस्लिम: 208)

यातना से डरा रहा हूँ। इस पर अबु जहल ने कहा: तुम्हारा नाश हो! क्या इसी लिये हम को एकत्र किया है? इसी पर यह सूरह अवतरित हुई। (सहीह बुख़ारी: 4971)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अबु लहब के दोनों हाथ नाश हो गये,
और वह स्वयं भी नाश हो गया!^[1]
2. उस का धन तथा जो उस ने कमाया
उस के काम नहीं आया।
3. वह शीघ्र लावा फेंकती आग में
जायेगा।^[2]
4. तथा उस की पत्नी भी, जो ईधन

يَكُنْ يَدَايْنِ لَهَبٍ وَتَبَ ۝

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝

سَيُفْلَسُ نَارًا ۚ أَذَاتَ لَهَبٍ ۝

وَأَمْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝

- 1 अबु लहब का अर्थ: ज्वाला मुखी है। वह अति सुंदर और गोरा था। उस का नाम वास्तव में "अब्दुल उज्ज़ा" था, अर्थात: उज्ज़ा का भक्त और दास। "उज्ज़ा" उन की एक देवी का नाम था। परन्तु वह अबु लहब के नाम से जाना जाता था। इसलिये कुर्आन ने उस का यही नाम प्रयोग किया है और इस में उस के नर्क की ज्वाला में पड़ने का संकेत भी है।
- 2 (1-2) यह आयतें उस की इस्लाम को दवाने की योजना के विफल हो जाने की भविष्यवाणी हैं। और संसार ने देखा कि अभी इन आयतों के उतरे कुछ वर्ष ही हुये थे कि "बद्र" की लड़ाई में मक्के के बड़े बड़े वीर प्रमुख मारे गये। और "अबु लहब" को इस खबर से इतना दुःख हुआ कि इस के सातवें दिन मर गया। और मरा भी ऐसे कि उसे मलगिनानत पुसतुले (प्लेग जैसा कोई रोग) की बीमारी लग गई। और छूत के भय से उसे अलग फेंक दिया गया। कोई उस के पास नहीं जाता था। मृत्यु के बाद भी तीन दिन तक उस का शव पड़ा रहा। और जब उस में गंध होने लगी तो उसे दूर से लकड़ी से एक गढ़े में डाल दिया गया। और ऊपर से मिट्टी और पत्थर डाल दिये गये। और कुर्आन की यह भविष्यवाणी पूरी हुई। और जैसा कि आयत नं० 2 में कहा गया उस का धन और उस की कमाई उस के कुछ काम नहीं आई। उस की कमाई से उद्देश्य अधिकतर भाष्यकारों ने "उस की संतान" लिया है। जैसा कि सहीह हदीसों में आया है कि तुम्हारी संतान तुम्हारी उत्तम कमाई है।

लिये फिरती है।

5. उस की गर्दन में मूँज की रस्सी होगी।^[1]

فِي جَنْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّيِّدَةٍ

- 1 (1-5) अबु लहब की पत्नी का नाम "अरबा" था। और उस की उपाधि (कुनियत) "उम्मे जमील" थी। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शत्रुता में किसी प्रकार कम न थी।

लकड़ी लादने का अर्थ भाष्य कारों ने अनेक किया है। परन्तु इस का अर्थ उस को अपमानित करना है। या पापों का बोझ लाद रखने के अर्थ में है।

वह सोने का हार पहनती थी और "लात" तथा "उज्जा" की शपथ ले कर -यह दोनों उन की देवियों के नाम हैं- कहा करती थी कि मुहम्मद के विरोध में यह मूल्यवान हार भी बेच कर खर्च कर दूँगी। अतः यह कहा गया है कि आज तो वह एक धन्यवान व्यक्ति की पत्नी है। उस के गले में बहुमूल्य हार पड़ा हुआ है परन्तु आखिरत में वह ईंधन ढोने वाली लौंडी की तरह होगी। गले में आभूषण के बदले बटी हुई मूँज की रस्सी पड़ी होगी। जैसी रस्सी ईंधन ढोने वाली लौंडियों के गले में पड़ी होती है। और इस्लाम का यह चमत्कार ही तो है कि जिस "अबु लहब" और उस की पत्नी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शत्रुता की उन्हीं की औलाद: "उत्बा", "मुअत्तब", तथा "इरह" ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

सूरह इख्लास^[1] - 112

سُورَةُ الْإِخْلَاصِ

सूरह इख्लास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 4 आयतें हैं।

- इख्लास का अर्थ है अल्लाह की शुद्ध इबादत (वंदना) करना। इसी का दूसरा नाम तौहीद (अद्वैत) है, इस सूरह में तौहीद का वर्णन है, इसी लिये इस का यह नाम है।^[1]

1 यह सूरह मक्की सूरतों में से है।

यद्यपि इस के उतरने से संबंधित रिवायत से लगता है कि यह सूरह मदीने में उस समय उतरी जब मदीने के यहूदियों ने आप से प्रश्न किया कि बताइये कि वह पालनहार कैसा है जिस ने आप को भेजा है? या यह कि "नजरान" के ईसाईयों ने इसी प्रकार का प्रश्न किया कि वह कैसा है, और किस धातु का बना हुआ है? तो यह सूरह उतरी। परन्तु सब से पहले यह प्रश्न स्वयं मक्का वासियों ने ही किया था। इसलिये इसे मक्का में उतरने वाली आरम्भिक सूरतों में गणना किया जाता है।

इस का नाम "सूरह इख्लास" है। इख्लास का अर्थ है: अल्लाह पर ऐसे ईमान लाना कि उस के अस्तित्व और गुणों में किसी की साझेदारी की कोई आभा (झलक) न पाई जाये। और इसी को तौहीद खालिस (निर्मल ऐकेश्वरवाद) कहते हैं।

जहाँ तक अल्लाह को मानने की बात है तो संसार ने सदा उस को माना है परन्तु वास्तव में इस मानने में ऐसा मिश्रण भी किया है कि मानना और न मानना दोनों बराबर हो कर रह गये हैं। तौहीद को उजागर करने के लिये अल्लाह ने बराबर नबी भेजे परन्तु इन्सान बार बार इस तथ्य को खोता रहा। आदरणीय इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के लिये प्रस्थान किया, और अपने परिवार को एक बंजर वादी में बसाया कि वह मात्र एक अल्लाह की पूजा करेंगे। परन्तु उन्हीं के वंशज ने उन के बनाये तौहीद के केन्द्र अल्लाह के घर कौबा को एक देव स्थल में बदल दिया। तथा अपने बनाये हुये देवताओं का अधिकार माने बिना अल्लाह के अधिकार को स्वीकार करने के लिये तैयार न थे। यह स्थिति मात्र मक्का वासियों की न थी, ईसाई और यहूदी भी यद्यपि तौहीद के दावेदार थे फिर भी उन के यहाँ तीन पूज्यों: पिता, पुत्र और पविगात्मा के योग से तौहीद बनी थी। यहूदियों के यहाँ भी अल्लाह का पुत्र: उजैर अवश्य था। कहीं पूज्य एक तो था परन्तु बहुत से देवी देवता भी उस के साथ पूज्य थे। (देखिये: उम्मुल किताब)

- इस की आयत 1,2 में अल्लाह के सकारात्मक गुणों को और आयत 3,4 में नकारात्मक गुणों को बताया गया है ताकि धर्मों और जातियों में जिस राह से शिर्क आया है उसे रोका जा सके। हदीस में है कि अल्लाह ने कहा कि मनुष्य ने मुझे झुठला दिया। और यह उस के लिये योग्य नहीं था। ओर मुझे गाली दी, और यह उस के लिये योग्य नहीं था। उस का मुझे झुठलाना उस का यह कहना है कि अल्लाह ने जैसे मुझे प्रथम बार पैदा किया है दोबारा नहीं पैदा कर सकेगा। जब कि प्रथम बार पैदा करना मेरे लिये दोबारा पैदा करने से सरल नहीं था। और उस का मुझे गाली देना यह है कि उस ने कहा कि अल्लाह के संतान है। जब कि मैं अकेला निर्पेक्ष हूँ। न मेरी कोई संतान है और न मैं किसी की संतान हूँ। और न कोई मेरा समकक्ष है। (सहीह बुखारी- 4974)
- सहीह हदीस में है कि यह सूरह तिहाई कुर्आन के बराबर है। (सहीह बुखारी: 5015, सहीह मुस्लिम: 811)
- एक दूसरी हदीस में है कि एक व्यक्ति ने कहा कि, हे अल्लाह के रसूल! मैं इस सूरह से प्रेम करता हूँ। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: तुम्हें इस का प्रेम स्वर्ग में प्रवेश करा देगा। (सहीह बुखारी: 774)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे ईश दूत!) कह दो: अल्लाह
अकेला है।^[1]

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ

1 आयत नं० 1 में "अहद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: उस के अस्तित्व एवं गुणों में कोई साझी नहीं है। यहाँ "अहद" शब्द का प्रयोग यह बताने के लिये किया गया है कि वह अकेला है। वह वृक्ष के समान एक नहीं है जिस के अनेक शाखायें होती हैं।

आयत नं० 2 में "समद" शब्द का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ है: अब्रण होना। अर्थात् जिस में कोई छिद्र न हो जिस से कुछ निकले, या वह किसी से निकले। और आयत नं० 3 इसी अर्थ की व्याख्या करती है कि न उस की कोई संतान है और न वह किसी की संतान है।

- | | |
|--|-------------------------------------|
| 2. अल्लाह निःछिद्र है। | أَلَهُ الْقَصْدُ ۝ |
| 3. न उस की कोई संतान है, और न वह किसी की संतान है। | لَمْ يَلِدْ ۖ وَلَمْ يُولَدْ ۝ |
| 4. और न उस के बराबर कोई है। ^[1] | وَلَمْ يَلِنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ |

1 इस आयत में यह बताया गया है कि उस की प्रतिमा तथा उस के बराबर और समतुल्य कोई नहीं है। उस के कर्म, गुण, और अधिकार में कोई किसी रूप में बराबर नहीं। न उस की कोई जाति है न परिवार। इन आयतों में क़ुर्आन उन बिषयों को जो जातियों के तौहीद से फिसलने का कारण बने उसे अनेक रूप में वर्णित करता है। और देवियों और देवताओं के विवाहों और उन के पुत्र और पौत्रों का जो विवरण देव मालावों में मिलता है क़ुर्आन ने उसी का खण्डन किया है।

सूरह फलक^[1] - 113

سُورَةُ الْفَلَقِ

सूरह फलक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 5 आयतें हैं।

- इस की प्रथम आयत में ((फलक)) शब्द आने के कारण, जिस का अर्थ भोर है, इस का यह नाम रखा गया है।^[1]

1 सूरह "फलक" और सूरह "नास" को मिला कर "मुअव्वजतैन" कहा जाता है। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: आज की रात्री में मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैं ने कभी नहीं देखी। (मुस्लिम: 814)

इसी प्रकार इब्ने आबिस जुहनी (रजियल्लाहु अन्हु) से आप ने फरमाया कि: मैं तुम्हें उत्तम यंत्र न बताऊँ जिस के द्वारा शरण (पनाह) माँगी जाती है? और आप ने यह दोनों सूरतें बतायीं, और कहा कि यह "मुअव्वजतैन" अर्थात् शरण माँगने के लिये दो सूरतें हैं। (देखिये: सहीह नसई: 5020)

जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर जादू किया गया जिस का प्रभाव यह हुआ कि आप घुलते जा रहे थे, किसी काम को सोचते कि कर लिया है, और किया नहीं होता था, किसी वस्तु को देखा है जब कि देखा नहीं होता था। परन्तु जादू का यह प्रभाव आप के व्यक्तिगत जीवन तक ही सीमित था।

एक दिन नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपनी पत्नी "आइशा" (रजियल्लाहु अन्हा) के पास थे कि सो गये, और जागे तो उन को बताया की दो व्यक्ति (फरिश्ते) मेरे पास आये, एक सिराहने की ओर था, और दूसरा पैताने की ओर। एक ने पूछा: इन्हें क्या हुआ है? दूसरे ने उत्तर दिया: इन पर जादू हुआ है। उस ने पूछा: किस ने किया है? उत्तर दिया: "लबीद बिन आसम" ने। पूछा: किस वस्तु में किया है? उत्तर दिया: कंघी, बाल और नर खजूर के खोशे में। पूछा: वह कहाँ है? उत्तर दिया: बनी जुरैक के कुवें की तह में पत्थर के नीचे है। इस के बाद आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अली, अम्मार और जुबैर (रजियल्लाहु अन्हुम) को भेजा, फिर आप भी वहाँ आ गये, पानी निकाला गया, फिर जादू जिस में कंघी के दाँतों और बालों के साथ एक ताँत में ग्यारह गाँठ लगी हुई थी। और मोम का एक पुतला था जिस में सुईयाँ चुभोई हुई थीं। आदर्णीय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आ कर बताया कि: आप "मुअव्वजतैन" पढ़ें। और जैसे जैसे आप पढ़ते जा रहे थे उसी के साथ एक एक गाँठ खुलती और पुतले से एक एक सुई निकलती जा रही थी, और अन्त के साथ ही आप जादू से इस प्रकार निकल गये जैसे कोई बंधा हुआ खुल जाता है। (देखिये: सहीह

- इस की आयत 1 में यह शिक्षा दी गई है कि शरण उस से माँगो जिस के पालनहार होने की निशानी तुम रात दिन देख रहे हो।
- आयत 2 से 5 तक में यह बताया गया है कि किन चीजों की बुराई से शरण माँगनी चाहिये।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा कि इस रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें अवतरित हुई हैं जिन के समान आयतें कभी नहीं देखी गईं। वह यह सूरह, और इस के पश्चात् की सूरह है। (सहीह मुस्लिम: 814)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं भोर के पालनहार की शरण लेता हूँ।
2. हर उस की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया।
3. तथा रात्री की बुराई से जब उस का अंधेरा छा जाये।^[1]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ

बुखारी: 5766, तथा सहीह मुस्लिम: 2189)

फिर आप ने "लबीद" को बुला कर पूछा, और उस ने अपना दोष स्वीकार कर लिया। फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को क्षमा कर दिया और फरमाया कि: अल्लाह ने मुझे स्वस्थ कर दिया है।

हदीसों से यह सिद्ध होता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर रात्री में सोते समय इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अपने दोनों हाथों पर फूँकते फिर अपने दोनों हाथों को अपने पूरे शरीर पर फेरते थे।

मानो अल्लाह तआला ने इन अन्तिम दो सूरतों द्वारा जादू और अन्य बुराईयों से बचाव का एक साधन भी दे दिया जो सदा मुसलमानों की जादू तंत्र आदि से रक्षा करता रहेगा।

- 1 (1-3) इन में संबोधित तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को किया गया है, परन्तु आप के माध्यम से पूरे मुसलमानों के लिये संबोधन है। शरण माँगने के लिये तीन बातें जरूरी हैं: (1) शरण माँगना। (2) जो शरण माँगता हो। (3)

4. तथा गांठ लगा कर उन में फूँकने
वालियों की बुराई से।

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ

5. तथा द्वेष करने वाले की बुराई से जब
वह द्वेष करे।^[1]

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ

जिस के भय से शरण मांगी जाती हो। और अपने को उस से बचाने के लिये दूसरे की सुरक्षा और शरण में जाना चाहता हो। फिर शरण वही माँगता है जो यह सोचता है कि वह स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और अपनी रक्षा के लिये वह ऐसे व्यक्ति या अस्तित्व की शरण लेता है जिस के बारे में उस का यह विश्वास होता है कि वह उस की रक्षा कर सकता है। अब स्वभाविक नियमानुसार इस संसार में सुरक्षा किसी वस्तु या व्यक्ति से प्राप्त की जाती है जैसे धूप से बचने के लिये पेड़ या भवन आदि की। परन्तु एक खतरा वह भी होता है जिस से रक्षा के लिये किसी अनदेखी शक्ति से शरण मांगी जाती है जो इस विश्व पर राज करती है। और वह उस की रक्षा अवश्य कर सकती है। यही दूसरे प्रकार की शरण है जो इन दोनों सूरतों में अभिप्रेत है। और कुर्आन में जहाँ भी अल्लाह की शरण लेने की चर्चा है उस का अर्थ यही विशेष प्रकार की शरण है। और यह तौहीद पर विश्वास का अंश है। ऐसे ही शरण के लिये विश्वास हीन देवी देवताओं इत्यादि को पुकारना शिर्क और घोर पाप है।

1 (4-5) इन दोनों आयतों में जादू और डाह की बुराई से अल्लाह की शरण में आने की शिक्षा दी गई है। और डाह ऐसा रोग है जो किसी व्यक्ति को दूसरों को हानि पहुँचाने के लिये तैयार कर देता है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर भी जादू डाह के कारण ही किया गया था। यहाँ ज्ञातव्य है कि इस्लाम ने जादू को अधर्म कहा है जिस से इन्सान के परलोक का विनाश हो जाता है।

सूरह नास^[1]- 114

سُورَةُ النَّاسِ

सूरह नास के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 6 आयतें हैं।

- इस में पाँच बार ((नास)) शब्द आने के कारण इस का यह नाम है जिस का अर्थ इन्सान है।^[1]
- इस की आयत 1 से 3 तक शरण देने वाले के गुण बताये गये हैं।
- आयत 4 में जिस की बुराई से पनाह (शरण) माँगी गई है उस के घातक शत्रु होने से सावधान किया गया है।
- आयत 5 में बताया गया है कि वह इन्सान के दिल पर आक्रमण करता है।
- आयत 6 में सावधान किया गया है कि यह शत्रु जिन्न तथा इन्सान दोनों में होते हैं।
- हदीस में है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हर रात जब बिस्तर पर जाते तो सूरह इक्लास और यह और इस के पहले की सूरह (अर्थात: फलक) पढ़ कर अपनी दोनों हथेलियाँ मिला कर उन पर फूँकते, फिर जितना हो सके दोनों को अपने शरीर पर फेरते। सिर से आरंभ करते और फिर आगे के शरीर से गुज़ारते। ऐसा आप तीन बार करते थे। (सहीह बुखारी: 6319, 5748)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. (हे नबी!) कहो कि मैं इन्सानों के पालनहार की शरण में आता हूँ।
2. जो सारे इन्सानों का स्वामी है।
3. जो सारे इन्सानों का पूज्य है।^[2]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ

مَلِكِ النَّاسِ

رَبِّ النَّاسِ

1 यह सूरह मक्का में अवतरित हुई।

2 (1-3) यहाँ अल्लाह को उस के तीन गुणों के साथ याद कर के उस की शरण

4. भ्रम डालने वाले और छुप जाने वाले (राक्षस) की बुराई से।
5. जो लोगों के दिलों में भ्रम डालता रहता है।
6. जो जिनों में से है, और मनुष्यों में से भी।^[1]

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝

الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

लेने की शिक्षा दी गई है। एक उस का सब मानव जाति पालनहार और स्वामी होना। दूसरे उस का सभी इन्सानों का अधिपति और शासक होना। तीसरे उस का इन्सानों का सत्य पूज्य होना।

भावार्थ यह है कि उस अल्लाह की शरण माँगता हूँ जो इन्सानों का पालनहार शासक और पूज्य होने के कारण उन पर पूरा नियंत्रण और अधिकार रखता है। जो वास्तव में उस बुराई से इन्सानों को बचा सकता है जिस से स्वयं बचने और दूसरों को बचाने में सक्षम है उस के सिवा कोई है भी नहीं जो शरण दे सकता हो।

- 1 (4-6) आयत नं० 4 में "वस्वास" शब्द का प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: दिलों में ऐसी बुरी बातें डाल देना कि जिस के दिल में डाली जा रही हों उसे उस का ज्ञान भी न हो।

और इसी प्रकार आयत नं० 4 में "खन्नास" का शब्द प्रयोग हुआ है। जिस का अर्थ है: सुकड़ जाना, छुप जाना, पीछे हट जाना, धीरे धीरे किसी को बुराई के लिये तैयार करना आदि।

अर्थात् दिलों में भ्रम डालने वाला, और सत्य के विरुद्ध मन में बुरी भावनायें उत्पन्न करने वाला। चाहे वह जिनों में से हो, अथवा मनुष्यों में से हो। इन सब की बुराइयों से हम अल्लाह की शरण लेते हैं जो हमारा स्वामी और सच्चा पूज्य है।

فَهْرَسْتَانِ السُّورِ

सूरतों की सूची

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
1	फातिहा	1	الفاتحة
2	बकरह	5	البقرة
3	आले इमरान	92	آل عمران
4	निसा	142	النساء
5	माइदा	197	المائدة
6	अन्आम	238	الأنعام
7	आराफ़	285	الأعراف
8	अन्फाल	335	الأنفال
9	तौबा	355	التوبة
10	यूनुस	391	يونس
11	हुद	415	هود
12	यूसुफ़	442	يوسف
13	रअद	467	الرعد
14	इब्राहीम	480	إبراهيم
15	हिज्र	492	الحجر
16	नहल	505	النحل
17	बनी इस्राईल	532	بني إسرائيل
18	कहफ़	557	الكهف
19	मरयम	580	مريم
20	ता-हा	596	طه
21	अम्बिया	617	الأنبياء
22	हज्ज	637	الحج
23	मुमिनून	656	المؤمنون
24	नूर	672	النور
25	फुर्कान	692	الفرقان
26	शुअरा	706	الشعراء
27	नम्ल	730	النمل

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
28	कसस	747	القصاص
29	अन्कबूत	766	العنكبوت
30	रूम	781	الروم
31	लुकमान	794	لقمان
32	सज्दा	803	السجدة
33	अहज़ाब	809	الأحزاب
34	सबा	829	سبا
35	फातिर	843	فاطر
36	यासीन	854	يس
37	साफ़ात	866	الصافات
38	साद	883	ص
39	जुमर	895	الزمر
40	मुमिन	912	المؤمن
41	हा भीम सज्दा	929	حم السجدة
42	शूरा	942	الشورى
43	जुख़ुफ़	956	الزخرف
44	दुख़ान	971	الدخان
45	जासियह	979	الجاثية
46	अहकाफ़	987	الأحقاف
47	मुहम्मद	998	محمد
48	फत्ह	1007	الفتح
49	हुजुरात	1018	الحجرات
50	काफ़	1026	ق
51	ज़ारियात	1033	الذاريات
52	तूर	1041	الطور
53	नज्म	1048	النجم
54	कमर	1056	القمر
55	रहमान	1063	الرحمن
56	बाकिआ	1071	الواقعة

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
57	हदीद	1079	الحديد
58	मुजादला	1088	المجادلة
59	हथ	1095	الحشر
60	मुम्तहिना	1103	المنحنة
61	सफ़फ़	1110	الصف
62	जुमुआ	1114	الجمعة
63	मुनाफ़िकून	1118	المنافقون
64	तगाबुन	1122	التغابن
65	तलाक़	1127	الطلاق
66	तहरीम	1132	التحریم
67	मुल्क	1137	الملک
68	क़लम	1143	القلم
69	हाक्का	1150	الحاقة
70	मआरिज	1156	المعارج
71	नूह	1161	نوح
72	जिन्न	1165	الجن
73	मुज्जम्मिल	1170	المزمل
74	मुद्स्सिर	1174	المدثر
75	क़ियामा	1180	القيامة
76	दहर	1185	الدھر
77	मुर्सलात	1190	المرسلات
78	नबा	1195	النبا
79	नाज़िआत	1200	النازعات
80	अबस	1205	عبس
81	तक्वीर	1210	التکویر
82	इन्फ़ितार	1214	الانفطار
83	मुतफ़िफ़ीन	1217	المطففين
84	इन्शिकाक़	1221	الانشقاق
85	बुरूज	1224	البروج

क्रमशः	सूरह का नाम	पृष्ठ नं॰	السورة
86	तारिक	1228	الطارق
87	आँला	1231	الأعلى
88	गाशियह	1235	الغاشية
89	फज्र	1238	الفجر
90	बलद	1242	البلد
91	शम्स	1246	الشمس
92	लैल	1249	الليل
93	जुहा	1253	الضحى
94	शह	1256	الشرح
95	तीन	1259	التين
96	अलक	1261	الملق
97	कद्र	1265	القدر
98	बय्यिनह	1267	البينة
99	जिलजाल	1270	الزلزال
100	आदियात	1272	العاديات
101	कारिअह	1274	القارعة
102	तकासुर	1276	التكاثر
103	अस्र	1278	العصر
104	हुमजह	1280	الهمزة
105	फील	1282	الفيل
106	कुरैश	1284	قريش
107	माऊन	1286	الماعون
108	कौसर	1288	الكوثر
109	काफिरून	1290	الكافرون
110	नस्र	1292	النصر
111	तबत	1294	تبت
112	इख्लास	1297	الإخلاص
113	फलक	1300	الفلق
114	नास	1303	الناس

إِنْ وَزَارَ الشُّعُورَ الْإِسْلَامِيَّةَ وَالْأَوَاقِفَ وَالِدَّعْوَةَ وَالْإِشَادَةَ

فِي الْمَمْلَكَةِ الْعَرَبِيَّةِ السُّعُودِيَّةِ

الْمَشْرُوعَةَ عَلَى مَجْمَعِ الْمَلِكِ فَهْدٍ

إِطْبَاعَةَ الْمُصَحَّفِ الشَّرِيفِ فِي الْمَدِينَةِ الْمَشْرُوعَةِ

إِذَا سُرُّهَا أَنْ يُصَدِّرَ الْمَجْمَعُ هَذِهِ الطَّبْعَةَ مِنَ الْقُرْآنِ الْكَرِيمِ

وَتَرْجُمَةً مَعَانِيَهُ وَتَقْسِيمَهُ إِلَى اللُّغَةِ الْهِنْدِيَّةِ

نَسْأَلُ اللَّهَ أَنْ يَنْفَعَ بِهَا النَّاسَ

وَأَنْ يَجْزِيَ

خَازِنَ الْجَزَائِرِ الشَّرِيفِينَ الْمَلِكَيْنِ الْبَلَدَيْنِ عَبْدَ الْغَنِيِّ السُّعُودِيَّ

أَحْسَنَ الْجَزَاءِ عَلَى جُهُودِهِ الْعَظِيمَةِ فِي تَسْرِيَةِ كِتَابِ اللَّهِ الْكَرِيمِ

وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ

इस्लामी उमूर, औकाफ़ तथा दावत और इर्शाद
मंत्रालय, सऊदी अरब, जो किंग फहद कुर्आन
परिन्टिंग कम्पलेक्स, मदीना मुनव्वरा, पर निरिक्षक
है, को कुर्आन पाक और उस के अर्थों का हिन्दी
अनुवाद और व्याख्या को छापते हुऐ अति प्रसन्नता
हो रही है। वह अल्लाह तआला से दुआ करता है कि
इस से लोगों को लाभ पहुँचे। और हरमैन शरीफैन के
सेवक किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ आल सऊद
को कुर्आन पाक के प्रचार करने में उन के महान्
प्रयासों पर बहुत ही अच्छा प्रत्युपकार दे।



سُفُوَةُ الطَّبِّعِ تَجَمُّعُ
تَجَمُّعُ الْمَلِكِ فَهْدٍ لَطَبِّبَةِ الْمَضَجَةِ الشَّرِيفَةِ

ص.ب ٦٦٢ - المدينة المنورة

www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa



अल्लाह
की सहायता और
तौफीक से कुर्आन पाक
का यह भाग, और उस के
अर्थों का अनुवाद इस्लामी उमूर,
औकाफ़ तथा दावत और इशोद
मंत्रालय, सऊदी अरब के संरक्षण
में, किंग फहद कुर्आन परिन्टिंग
कम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा
में, वर्ष 1433 हिजरी
में छपा गया।

छपाई के अधिकार किंग फहद कुर्आन परिन्टिंग
कम्प्लेक्स, मदीना मुनव्वरा, के लिये सुरक्षित हैं।
पोस्ट बॉक्स नं- 6262

www.qurancomplex.gov.sa
contact@qurancomplex.gov.sa

ح) مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف ، ١٤٣٣ هـ
فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر .

مجمع الملك فهد لطباعة المصحف الشريف
ترجمة معاني القرآن الكريم إلى اللغة الهندية . / مجمع الملك
فهد لطباعة المصحف الشريف . - المدينة المنورة، ١٤٣٣ هـ

١٣٢٠ ص ؛ ١٤ × ٢١ سم

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٠٩٥-٣٩-٣

١- القرآن - ترجمة أ. العنوان

ديوي ٢٢١.٤٤ ١٤٣٣/٤٣١

رقم الإيداع : ١٤٣٣/٤٣١

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٠٩٥-٣٩-٣



9 786038 095393